त्रिकालदर्शि [illegible] 'मार्तण्डपञ्चाङ्गं' मिदं [illegible] ॥

पँवारकुलभूषण श्रीमद्राजाधिराज
श्री १०५ दुर्गासिंहजी बहादुर C.I.E.
सोलन

सार्वदेशिक सर्वोत्तम सर्वाङ्गशुद्ध पञ्चाङ्ग

श्रीगणेशाय नमः

मार्तण्ड के उदय से जगमग हुआ आकाश ।
क्या तारा क्या चन्द्रमा सबका छुपे प्रकाश ॥

श्रीलक्ष्म्यै नमः

राजा चन्द्रः

मन्त्री चन्द्रः

बघाटमहीमहेन्द्र धर्ममार्तण्ड श्री १०५ मद्दुर्गासिंहवर्मभिः संरक्षितम्

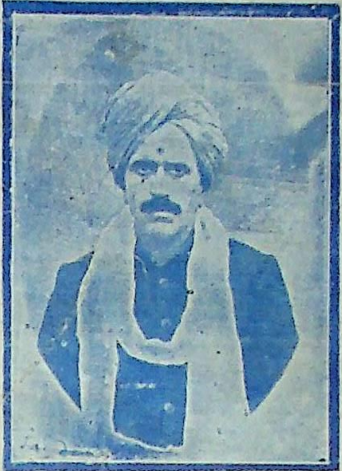

दैवज्ञरत्नराजज्योतिषी
श्रीपं० मुकुन्दवल्लभ मिश्र ज्योतिषाचार्य
कुराली (पंजाब)

रूपगढ़ीया (रूपड़) क्षवृत्तीयं दृग्गणितैक्यविषयैः

1953-54

अलंकृतम्, धर्मशास्त्रसम्मतं

BAGHAT श्रीमार्तण्डपञ्चाङ्गम् PANCHANG

श्रीविक्रमार्कीय सं० २०१०, शके १८७५, सन् १९५३-५४ ई०, जयहिन्द सं० ६, (१५ अगस्त से ७)

गुरुवर्य्य श्री ६ पूज्यपाद कै० वा० गोविन्द सदाशिव आपटे एम. ए. बी. एस. सी. गणकचक्रचूड़ामणीत्याद्युपाधिधारिणाम् एवञ्च श्रीजयपुरमहाराजाश्रित-सिद्धान्तपञ्चाननपूज्यश्री ६ पं० केदारनाथसाहित्यभूषणज्यौतिषयन्त्रालयाध्यक्षाणां शिष्येण श्रीमद्दैवज्ञवर्य पं० रामचन्द्रात्मजेन पञ्चाम्बुदेशान्तर्गतकुरालीनिवासिना बघाटनरेशाश्रितेन ज्यौतिषाचार्य्येण श्रीमुकुन्दवल्लभशर्मणा विरचितम् । गणितकर्त्तारौ—साहित्याचार्यश्रीसत्यव्रत-प्रियव्रतशास्त्रिणौ ।

बाँकीपुर
पटना

मोतीलाल बनारसिदास पुस्तक विक्रेता, पो० बक्स ७५, नेपालीखपरा बनारस

किनारी बाजार
देहली

स्थापित वि. संवत १९३२

ॐ गणेशाय नमः

स्थापित वि. संवत् १९३२
(१८७५ ई.)

ॐ गणेशाय नमः

शिमला व दिल्ली की दैनिक लग्न सारणी सहित

गणितकर्त्ता पं. विवेक शर्मा ज्योतिषी सुपुत्र पं. पन्ना लाल ज्योतिषी की असली व प्रामाणिक पंचाँग 2020-21 ई.

तिमिर हरण मंगल करण सूर्य भयो प्रकाश। सकल अंधेरा मिट गयो धरनी धवल आकाश॥

पंचांगदिवाकर

वि. २०७७

राजा बुध
मंत्री चंद्र
१०
पं० शिव राम दत्त ज्यो०
पं० देवी दयालु मशहूरे आलम ज्योतिषी
पंचाँग दिवाकर कर्ता लाहौर वाले
पं० मोहन लाल ज्यो०

षड्वर्ग फलादेश विशेषांक

मशहूरे आलम पण्डित देवी दयालु ज्योतिषी की असली, प्रामाणिक व शुद्ध पंचाँगदिवाकर, जालन्धर।

इस पंचाँग का कापी राइट नं. A 27587/80 तथा Trade Mark No. 472584 भारत सरकार द्वारा रजिस्टर्ड है।

गौरवशाली 145 वाँ प्रकाशन वर्ष
स्थापित संवत् १९३२

मशहूरे आलम
पण्डित देवी दयालु ज्योतिषी एण्ड सन्ज़
माई हीरां गेट (अड्डा होशियारपुर), जालन्धर शहर — 144008 (पं.)

एकमात्र वितरक :
जनरल बुक डिपो
चौंक अड्डा होशियारपुर, जालन्धर
फोन : 0181-2457959

मूल्य :
₹ 105/-

卐 श्रीगणेशाय नमः 卐

'पंचाँगदिवाकर' सम्बन्धी आवश्यक निर्देशन

> यस्मिन् काले यतः खेटा यान्ति दृग्गणितैक्यताम्।
> तत् एव स्फुटाः कार्याः दिक्कालौ स्फुटौ विदा।। (वृहत् पाराशर)

अर्थात्–जिस पद्धति या सिद्धान्त से दृक्-गणितैक्य युक्त वेध-सिद्ध ग्रह स्पष्ट प्राप्त हों, उसी पद्धति का अनुसरण करना चाहिए। उसी के द्वारा स्पष्ट दिशा एवं ग्रह-स्पष्ट, कालादि साधन करने चाहिएं।

(1) इस पंचाँग का निर्माण ग्रीनविच से पूर्व रेखांश (Longitude) 75°/34'E तथा अक्षांश (Latitude) 31°/19'N, उत्तर के आधार पर किया गया है। पंचाँग में दिए गए तिथि, नक्षत्र, योगादि के मान एवं सूर्य, चन्द्रादि ग्रहों का राशि-परिवर्तन (घड़ी-पलादि) में जालन्धर नगर के सूर्योदय अस्तादि का प्रयोग किया गया है।

(2) इस पंचाँग की गणित प्रक्रिया में सूक्ष्म दृक्-गणित एवं चित्रा-पक्षीय निरयण पद्धति का आश्रय लिया गया है। जोकि महर्षि पाराशर, केतकर, वसिष्ठ, भास्कराचार्य, पं. बापूदेव शास्त्री आदि प्राचीन एवं अर्वाचीन मनीषियों/ज्योतिष आचार्यों द्वारा अनुमोदित है। पंचाँग में दिए गए व्रत, पर्व एवं मुहूर्त्तों में प्रयुक्त तिथि, नक्षत्रादि की गणित शास्त्र सम्मत है तथा यह भारत सरकार द्वारा भी प्रमाणित एवं अनुमोदित है।

(3) पक्ष वाले पृष्ठों पर दैनिक सूर्योदय, सूर्यास्त भारतीय समयानुसार जालन्धर के हैं। सूर्योदयास्त में किरण वक्री भवन-संस्कार सहित होने से सूर्योदयादिष्टादि बनाने में यही ग्राह्य होते हैं। प्रत्यक्ष देखने के लिए सूर्योदय में 3 मिनट घटावें और सूर्यास्त में जमा कर लेवें।

(4) तिथि, नक्षत्र, योग एवं करणों के सामने दिए गए घड़ी पल उनका सूर्योदय से समाप्तिकाल बतलाते हैं। उनके घड़ी पलों के घण्टे-मिनट बनाकर उसमें स्थानीय (अपने नगर) का सूर्योदय जमा कर देने तिथि-नक्षत्रों आदि का समाप्तिकाल भा. स्टैं. टाईम में निकल आएगा। पाठकों की सुविधा हेतु तिथि-नक्षत्रों एवं ग्रहों आदि के समाप्तिकाल भा. स्टै. टा. घंटा मिंटों में अलग से दिए गए हैं। जहाँ पर 24, 25, 26 आदि अंक लिखे हैं। वहाँ 24 की रात्रि 12 बजे, 25 को रात्रि के 1 बजे, 26 को रात्रि के 2 बजे जानें। इसी प्रकार आगे के अंकों में भी 24 घटा करके अर्ध रात्रि के बाद का समय जानें। जब तक आगामी दिवसीय सूर्योदय न हो, तब तक भारतीय ज्योतिष शास्त्रानुसार पिछली तारीख का दिन ही माना जाता है।

(5) दिनमान घड़ी पलों में है तथा दाएँ अंग्रेज़ी तारीख एवं देशीय प्रविष्टों के पश्चात् लस्टर में चन्द्र राशि-संचार भद्रा, पंचक आदि व सूर्यादि ग्रहों के नक्षत्र राशि प्रवेश, उदयास्तादि घड़ी पलों में दिए गए हैं। निर्दिष्ट घड़ी पलों को घण्टे मिनट बनाकर उन में स्थानीय सूर्योदय जमा करके उनको घं. मिं. भा. स्टै. टा. में परिवर्तित किया जा सकता है। **ध्यान रखें**, चंद्र संचार व सूर्यादि ग्रहों के राशि, नक्षत्र प्रवेश सूर्योदयात् प्रवेश काल है, न कि समाप्ति काल हैं। पक्ष वाले पृष्ठों में तिथि, नक्षत्रादि के घंटा मिनट एवं **दैनिक ग्रह स्पष्ट भू-केन्द्रीय होने से भा. स्टैं. टा. में सर्वत्र भारतोपयोगी होंगे।** अन्तिम पृष्ठों पर भारत के मुख्य शहरों के भी सूर्योदयास्त दिए गए हैं। प्रतिवर्ष नए-नए विषयों का समावेश किया जाता है।

पंचांगदिवाकर के तिथि, नक्षत्र, योग, ग्रह-नक्षत्र प्रवेश आदि की गणित **पं. पंकज शर्मा द्वारा विकसित Computer Programme** से की जाती है।

(6) पक्ष वाले पृष्ठों में तिथि के नीचे 15 तिथि को पूर्णिमा तथा अमा. तिथि को 30 के अंकों से संकेत किया गया है। तिथि क्षय के आगे शून्य (०) के चिन्ह लगाए गए हैं तथा जहाँ कहीं, **नक्षत्र** या **योग का क्षय** हुआ है, उसे क्षय सहित दोनों नक्षत्रों (या योगों) को बारीक करके लिख दिया है। जहाँ तिथि, नक्षत्र या योग के आगे ६०।०० घड़ी लिखा है, उससे तिथि, नक्षत्रादि की वृद्धि समझें। वह तिथि, नक्षत्रादि अगले दिन तक व्याप्त रहेगा।

सरस्वति नमस्तुभ्यं वरदे कामरूपिणि। विद्यारम्भं करिष्यामि सिद्धिर्भवतु मे सर्वदा।।

क्या आप ज्योतिष सीखना चाहते हैं ?

(अनुपम ग्रन्थ माला)

हमारे संस्थान पं. देवी दयालु ज्योतिषी एण्ड सन्ज़ द्वारा ज्योतिष सीखने तथा ज्योतिषीयों के लिए परम उपयोगी ज्योतिष ग्रंथ तैयार किया है, जिन्हें पढ़कर एक सामान्य पढ़ा-लिखा व्यक्ति बिना गुरू के भी अच्छा ज्योतिषी बन सकता है। अत्यन्त सरल भाषा में पंचाँग दिवाकर के अनुभवी लेखकों द्वारा किया गया है। इनमें प्रत्येक लग्न उदाहरण कुण्डलियाँ के साथ समझाया गया है।

(1) ज्योतिष तत्त्व (गणित)–प्रारम्भिक इतिहास से लेकर ज्योतिष सम्बन्धी प्रारम्भिक ज्ञान-सम्पूर्ण बड़ी जन्मपत्री [illegible] शैली में प्रस्तुत किया गया है। **मूल्य 150/- रु.**

(2) ज्योतिष तत्त्व [illegible] फलित सम्बन्धी आरम्भिक तथा विशेष सूत्र, मेष से कन्या लग्न [illegible], दो-तीन चार ग्रहों का फल, दृष्टि फल तथा अनेक योगों को सरल शैली में प्रस्तुत किया गया है। **मूल्य 300/-**

(3) ज्योतिष तत्त्व (फलित खण्ड-भाग-II)–तुला से मीन लग्न तक प्रत्येक ग्रह का प्रत्येक भाव में फल, दो-तीन [illegible] फल, ज्योतिष सम्बन्धी विशेष योगों का फल, मंगलीक दोष [illegible] विचार तथा विंशोत्तरी एवं योगिनी दशा-अन्तर्दशाओं का फल आदि अनेक विषयों का समावेश किया गया है। **मूल्य 300/-**

(4) अनिष्ट ग्रहों के चामत्कारी उपाय व टोटके–शास्त्र सम्मत् तथा वैदिक उपायों एवं लाल किताब के सरल उपायों का विशद वर्णन किया गया है। प्रत्येक ज्योतिषी भाई के लिए अति उपयोगी पुस्तक है। **मूल्य 200/-**

(लेखक-पं. पन्ना लाल ज्यो.)

इन चारों पुस्तकों को पढ़कर आपको फलित सम्बन्धी कई नई एवं गुप्त बातों का सरल, स्पष्ट शब्दों में ज्ञान होगा, ऐसा हमारा विश्वास है। अतः आज ही मंगवाएँ। **फोन-0181-2457959**

इस पंचाँग का कापी राइट नं. A 27587/80 तथा Trade Mark No. 472584 भारत सरकार द्वारा रजिस्टर्ड है।

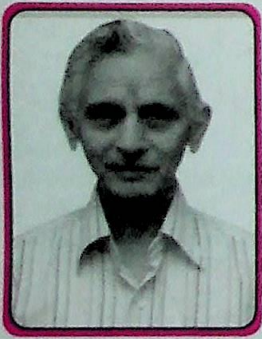

स्वर्गीय : पं. पन्ना लाल ज्योतिषी

संस्थापक : पं. देवीदयालु ज्योतिषी

श्री सरस्वत्यै नमः

स्वर्गीय : पं. चूनी लाल ज्योतिषी

अखिल भारतोपयोगी चित्रापक्षीय दृक् गणिताधारित

पंचाँग दिवाकर

नया "प्रमादी" नामक वि. संवत् पंचाँग दिवाकर के पाठकों के लिए शुभ एवं मंगलमय हो

वि. संवत् २०७७ (सन् 2020-21 ई.)

असली, शुद्ध एवं प्रामाणिक पंचाँग

राजा
बुध

मन्त्री
चंद्र

मशहूरे आलम

पं. देवी दयालु ज्योतिषी एण्ड सन्ज़ (लाहौर वाले)

लेखक एवं गणितकर्त्ता : पं. विवेक शर्मा (एम. ए. एल एल. बी.), सह-संपादक : पं. पंकज शर्मा (एम. कॉम)

सुपुत्रः स्वर्गीय पं. पन्ना लाल ज्योतिषी प्रपौत्र पं. देवी दयालु ज्योतिषी

(ज्योतिष, कर्मकाण्ड सम्बन्धी अनेक ग्रन्थों के यशस्वी लेखक)

गौरवशाली
प्रकाशन वर्ष
१४५ वां

स्थापित
वि. संवत्
१९३२

अड्डा होशियारपुर, जालन्धर-144008 (पं.) (भारत) फोन नं. 0181-2457959
प्रकाशक : जनरल बुक डिपो, अड्डा होशियारपुर, जालन्धर (पं.)। मोबाईल 94172-91325, 97799-13583

नोट-सर्वाधिकार लेखकाधीन सुरक्षित हैं; -हमारी मुफीद आलम जंत्री उर्दू, हिन्दी व पंजाबी भाषाओं में 2020 ई. की भी छपकर तैयार हैं।

Printed at : Choice Books & Printers (P) Ltd., Focal Point, Extension, Jalandhar.

सूचना-इस पंचाँग का टाईटल व विषय सामग्री ट्रेड मार्क एवं कापीराईट Act के अन्तर्गत भारत सरकार द्वारा रजिस्टर्ड है। इसके किसी भी अंश की नकल करना गैर कानूनी होगा।

आवश्यक नोट-टाईटल पर होलोग्राम देखकर ही असली 'पंचाँगदिवाकर' खरीदें।

विषय-सूची-पंचांगदिवाकर-संवत् २०७७ (सन् 2020-21 ई.)

विषय .... पृष्ठ

पर्व, त्यौहार व छुट्टियाँ 3-5
हिमाचल, जम्मू, पंजाबादि के मेले 7-8
सरकारी छुट्टियाँ, सिक्ख, मुस्लि., जैन पर्व 9
संक्रान्ति, एकादशी व्रत-एक दृष्टि में 10
गण्डमूल, पंचक विचार 12
गणेश चतुर्थी, जन्माष्टमी चन्द्रोदय 13-16
संदिग्ध व्रत-पर्वों का निर्णय 17-24
ग्रहण-विवरण 27-34
शनि-साढ़ेसाती व पायाविचार
गुरु व राहु-केतु गोचरफल 40-46
प्रदोषकाल, होम में अग्निवास 47-48
सर्वार्थ सिद्धि, अमृत सिद्धि योग 51-52
द्विपुष्कर, त्रिपुष्कर योग 52
ज्वालामुखी, यमघण्टक योग, लाभहानि चक्र 53
व्यापारिक मन्दा-तेजी ज्ञान 54-62
चामत्कारिक मन्त्र-यन्त्र एवं टोटके 63-68
बारह राशियों का मासिक फलादेश 69-76
राजा-मन्त्री, आर्द्रा प्रवेश फल 79-84
आकाशी कौंसिल, प्रमुख भविष्यवाणियां 85-96
सूर्यादि ग्रहों का राशि-नक्षत्र प्रवेश 97-100
चैत्रादि पक्ष (घड़ी-पलों में) 107-132

विषय .... पृष्ठ

तिथ्यादि पंचांग घण्टा मिंटों में 133-146
राहु-काल, कालसर्प दोष उपाय 146
चन्द्रमा का नक्षत्र चरणों में प्रवेश 147-150
कांवड़-जलाभिषेक मुहूर्त्त 150
दैनिक ग्रहस्पष्ट, सम्पातिक काल 152-163
जालंधर के दैनिक चं.उ.-चं.अ. 164-165
शुद्ध विवाह मुहूर्त्त 167-171
अशुद्ध विवाह मुहूर्त्त 172
राशियों के अनुसार विवाह मुहूर्त्त 173-175
मुण्डन, गृहप्रवेशादि मुहूर्त्त 176-180
महालक्ष्मी (दीपावली) पूजन मुहूर्त्त 181
विवाह लग्नशुद्धि, परिहार वाक्य 182-183
भद्रा, गोधूलि विचार एवं परिहार 183-184
विवाह सम्बन्धी शास्त्रीय विचार 185
आवश्यक मुहूर्त्त निर्णय 187-195
लत्तादि दस दोष विचार 196-198
घाती-नक्षत्र, राशि, वर्णे योनि चक्र 198-199
वर्णादि अष्टकूट, मंगलीक परिहार 200-205
वर-कन्या मिलान सारिणी 206-209
षोडश संस्कारों के मुहूर्त्त 211-213
अशौच व्यवस्था, प्रसूति लग्नादि विचार 213-214

विषय .... पृष्ठ

प्रमुख लग्न सारिणीयां 216-221
षड्वर्ग सारिणी 222
भारत के नगरों के अक्षांश-रेखांश 223-231
विदेशी नगरों के अक्षांश-रेखांश 232-235
किसी भी नगर का सूर्योदय निकालें 236-240
हि.प्र. के नगरों के **सूर्योदयास्त-2020** 241-244
शिमला (हि.प्र.) की दैनिक लग्न-सारणी 245-250
भारत के प्रमुख नगरों के सूर्योदयास्त 251-258
चन्द्रस्पष्ट द्वारा भोग्यदशा जानना 259-260
दशाऽन्तर्दशा, प्रत्यन्तरदशा चक्र 261-264
स्वप्न-शकुन, छिपकली, फल अंगस्फुरण 265-266
नक्षत्र एवं बाल-कष्टावली 267-269
वर्षफल सारिणी (घण्टा-मिनटों में) 272
दैनिक लग्न सारिणी-**दिल्ली** 273-278
होरा ज्ञान, चौघड़ियां मुहूर्त्त 279
दैनिक लग्न सारिणी-**जालन्धर** 281-288
उपयोगी रत्न एवं उपरत्न 289-291
द्वादश लग्नों का फल 292-293
पुस्तक सूची 294-296

इस वर्ष के कुछ नवीन, उपयोगी एवं आकर्षक विषय

कुम्भ-महापर्व (हरिद्वार) 11
सोमवती अमावस्या-माहात्म्य 11
संदिग्ध व्रत-पर्वों का शास्त्रीय निर्णय 17-24
स्मार्त-वैष्णव भेद 19
दुर्गाष्टमी (महाष्टमी) व्रत
कब, कहाँ ? (23/24 अक्तू.) 21-22
वि. संवत् 2077 में वृश्चिक
संक्रान्ति-कब ? 25-26
सचित्र कंकण (चूड़ामणि) सूर्यग्रहण 27-34
उपच्छाया ग्रहण 35
जन्मपत्री में द्रेष्कांण सप्तमांश,
नवांश फल विचार 36-39
मंगलीक दोष निवारक-
'मंगल चण्डिका स्तोत्र' 65
आश्विन अधिक मास फल 77-78
चान्द्र परम्परानुसार 'श्रावण'
मास के व्रत, पर्वों कानिर्णय-माहात्म्य 101-105
श्रावणी उपाकर्म-परिभाषा एवं माहात्म्य 105
तिथि-नक्षत्र योग तालिका व उनके स्वामी 106
नीचस्थ (मकर) गुरु का शुभाशुभ विचार 166
सोनीपत, कैथल, फरीदाबाद (हरियाणा)
नगरों के दैनिक सूर्योदयास्त 251-258

आगामी वर्ष के आकर्षक विषय

- **षड्वर्ग में नवमांश कुण्डली विचार व फल**
- **कुम्भ-महापर्व (हरिद्वार)-माहात्म्य, कथा एवं करणीय कर्म आदि**
- **श्रीगंगानगर, बीकानेर, जोधपुर (राजस्थान) के दैनिक सूर्योदयास्त**

पंचाँग दिवाकर के १४५वें गौरवमयी वर्ष प्रवेश पर

अनन्त श्री विभूषित

श्री श्री १००८ काशी धर्म पीठाधीश्वर
जगद् गुरु शंकराचार्य
स्वामी नारायणानन्द तीर्थ
महाराज जी का
शुभाशीर्वाद

भारतीय पञ्चाङ्ग पद्धतिरस्माकं हिन्दु-सभ्यताया: गौरवान्विताया: समृद्धयाश्च संस्कृतेर-भिव्यंजनां करोति।

शताधिकवर्षेभ्य: प्राक् गणिताचार्येण सुप्रसिद्धेन ज्योतिर्विद पण्डित देवीदयाल महाभागेन लवपुरे संस्थापितं प्रकाशितं च प्रसिद्धं लोकप्रियं च पञ्चाङ्गदिवाकरम् आगामिवर्षे निज १२५तमे वर्षे प्रवेशं लभमानमस्ति। सम्प्रति तस्यैव पण्डितप्रवरस्य प्रपौत्र: गणिताचार्य: पण्डित पन्नालाल शर्मा ज्योतिर्विद् निज सुयोग्य पुत्र द्वयमाध्ययेन पञ्चाङ्ग कार्ये शुद्धस्फुटसूक्ष्म-गणितागत चित्रापक्षीय निरयणपद्धतिमनुसरन् पञ्चाङ्ग दिवाकरस्य लेखनं सम्पादनं च कुर्वन्नस्ति। नवीने पञ्चाङ्गदिवाकरे ज्योतिष: व्रतपर्वादि धर्मशास्त्र विषयकानामुपयोगिविषयानां च समावेशनात् पञ्चाङ्ग दिवाकरं सम्प्रति सर्वविधर्मपरायण जनसामान्यस्य कृते सुतरामुपयोगी प्रतीयते।

आशस्यते यद् लोकहितं सम्मुखीनं कृत्वा निज कुल परम्परा परिपालने पण्डित पन्ना लाल ज्योतिर्विद् निज सुपुत्रयो: सहयोगेन पञ्चाङ्गमिदमतोऽप्यधिकं उपयोगिनं कर्तुं प्रयासरतो भविष्यति। अस्य प्रचुर: प्रचार: प्रसारश्च भवेत् अस्योन्नतिं सुतरां कामय-मान: शुभाशीरपि कामये। तिथौ

वैशाख पूर्णिमा, भृगुवासर:
प्रविष्टे १७ वैशाख, सं. २०५६ विक्रमी
श्री हस्त-मुद्रा-
१००८ स्वामी नारायणान्द तीर्थ रामेश्वर मठ:
श्री काशी धर्म पीठाधीश्वर काशीक्षेत्रम्(वाराणसी)

33 | मासस्थ (मकर) गुरु का शुभाशुभ विचार 166 | (राजस्थान) के दैनिक सूर्योदयास्त | श्री काशी धर्म पीठाधीश्वर काशीक्षेत्रम् (वाराणसी)

प्रमुख व्रत, पर्व, त्यौहार एवं छुट्टियाँ (सन् 2020-21 ई.)

जनवरी–(सन् 2020 ई.)

इंग्लिश नववर्ष 2020 ई. प्रा.	1 जन.	बुध
पुत्रदा एकादशी व्रत	6 जन.	सोम
पौष पूर्णिमा	10 जन.	शुक्र
माघस्नान प्रारम्भ	10 जन.	शुक्र
श्रीगणेश संकष्ट चतुर्थी	13 जन.	सोम
लोहड़ी पर्व	13 जन.	सोम
मकर (माघ) संक्रांति	14 जन.	मंग
माघ (मौनी) अमावस	24 जन.	शुक्र
गुप्त नवरात्र प्रारम्भ	25 जन.	शनि
गणतन्त्र दिवस(71वाँ)	26 जन.	रवि
गौरी तृतीया (गोंतरी)	28 जन.	मंग
श्रीगणेश तिल चतुर्थी	28 जन.	मंग
सरस्वती-पूजन(मध्याह्ने)	29 जन.	बुध
वसन्त (श्री) पंचमी	30 जन.	गुरु
सरस्वती पूजन	30 जन.	गुरु

फरवरी

रथ/आरोग्य सप्तमी	1 फर.	शनि
भीष्माष्टमी	2 फर.	रवि
गुप्त नवरात्र समाप्त	3 फर.	सोम
भीष्म द्वादशी, तिल १२	6 फर.	गुरु
माघ पूर्णिमा	9 फर.	रवि
माघस्नान समाप्त	9 फर.	रवि
श्रीगुरु रविदास जयंती	9 फर.	रवि
श्रीमहाशिवरात्रि व्रत	21 फर.	शुक्र

मार्च

होलाष्टक प्रारम्भ	3 मार्च	मंग
गोविन्द द्वादशी	6 मार्च	शुक्र
होलिकादहन(प्रदोषकाले)	9 मार्च	सोम
होलाष्टक समाप्त	9 मार्च	सोम
होली पर्व	10 मार्च	मंग
वसन्तोत्सव	10 मार्च	मंग
होलामेला (श्रीआनन्दपुर-व पांओटा साहिब)	10 मार्च	मंग
श्रीरंग-पंचमी	13 मार्च	शुक्र
शीतलाष्टमी व्रत	16 मार्च	सोम
महाविषुव दिन	20 मार्च	शुक्र
महावारुणी योग	21 मार्च	शनि
वारुणी पर्व	22 मार्च	रवि
मे. पिहोवातीर्थ-हरि. 2 दिन	22 मार्च	रवि
वि. संवत् 2076 पूर्ण	24 मार्च	मंग
वि. संवत् 2077 शुरु	25 मार्च	बुध
चैत्र (वासन्त) नवरात्र शुरु	25 मार्च	बुध
तैलाभ्यंग/ध्वजारोहण	25 मार्च	बुध
गौरी तृतीया (गणगौर)	27 मार्च	शुक्र
श्री (लक्ष्मी) पंचमी	29 मार्च	रवि
स्कन्द षष्ठी व्रत	30 मार्च	सोम

अप्रैल

श्रीदुर्गाष्टमी, भवान्युत्पत्ति	1 अप्रै.	बुध
बुधाष्टमी योग	1 अप्रै.	बुध
अशोकाष्टमी	1 अप्रै.	बुध
वासन्त नवरात्र समाप्त	2 अप्रै.	गुरु
श्रीरामनवमी	2 अप्रै.	गुरु
लक्ष्मीकान्त दोलोत्सव	4 अप्रै.	शनि
श्रीविष्णु दमनोत्सव	5 अप्रै.	रवि
अनङ्ग त्रयोदशी व्रत	6 अप्रै.	सोम
श्रीमहावीर-जयन्ती(जैन)	6 अप्रै.	सोम
शिव-दमनोत्सव	7 अप्रै.	मंग
वैशाख स्नान प्रारम्भ	8 अप्रै.	बुध
गुड फ्राइडे (क्रिश्चि.)	10 अप्रै.	शुक्र
वैशाखी पर्व (पंजाब)	13 अप्रै.	सोम
भगवान् परशुराम जयन्ती	25 अप्रै.	शनि
अक्षय-तृतीया	26 अप्रै.	रवि
आद्यगुरु शंकराचार्य जयं.	28 अप्रै.	मंग
श्रीगङ्गा-जयन्ती	30 अप्रै.	गुरु

मई

श्रीबगुलामुखी जयंती	1 मई	शुक्र
जानकी जयन्ती	1 मई	शुक्र
श्रीनृसिंह जयन्ती	6 मई	बुध
श्रीकूर्म-जयन्ती	6 मई	बुध
वैशाख-बुद्ध पूर्णिमा	7 मई	गुरु
वैशाख स्नान समाप्त	7 मई	गुरु
अपरा-भद्रकाली एकादशी	18 मई	सोम
वटसावित्री व्रत (अमा. पक्ष)	22 मई	शुक्र
ज्येष्ठ (भावुका) अमा.	22 मई	शुक्र
शनैश्चर जयन्ती	22 मई	शुक्र
रम्भा तृतीया व्रत	25 मई	सोम
अरण्य षष्ठी	28 मई	गुरु
विन्ध्यवासिनी पूजा	28 मई	गुरु
मेला क्षीर-भवानी(काश्मीर)	30 मई	शनि
श्रीदुर्गाष्टमी, धूमावती जयं	30 मई	शनि

जून

श्रीगङ्गा-दशहरा (हरिद्वार)	1 जून	सोम
निर्जला एकादशी व्रत	2 जून	मंग
वटसावित्री व्रत (पूर्णिमापक्ष)	5 जून	शुक्र
सन्त कबीर जयन्ती	5 जून	शुक्र
सायन दक्षिणायन प्रा.	20 जून	शनि
कंकण (चूड़ामणि) सूर्यग्रहण	21 जून	रवि
मेला फाल्गु (कुरुक्षेत्र)	21 जून	रवि
गुप्त नवरात्र प्रारम्भ	22 जून	सोम
श्रीजगन्नाथ रथयात्रा (पुरी)	23 जून	मंग
कुमार-षष्ठी	26 जून	शुक्र
विवस्वत सप्तमी	27 जून	शनि
गुप्त नवरात्र समाप्त	29 जून	सोम

जुलाई

हरिशयनी एकादशी व्रत	1 जुला.	बुध
चातुर्मास्य व्रत नियम प्रा.	1 जुला.	बुध
श्रीविष्णु शयनोत्सव	1 जुला.	बुध
श्रीशिव-शयनोत्सव	4 जुला.	शनि
कोकिला व्रत	4 जुला.	शनि
गुरु पूर्णिमा, व्यासपूजा	5 जुला.	रवि
श्रावण सोमवार व्रत शुरु	6 जुला.	सोम
मङ्गलागौरी व्रत शुरु	7 जुला.	मंग
श्रावण-शिवरात्रि	19 जुला.	रवि
हरियाली अमावस	20 जुला	सोम
सोमवती अमावस	20 जुला.	सोम
मेला चिन्तपूर्णी (हि.प्र.) प्रा.	21 जुला.	मंग
मधुस्रवा-हरियाली तीज	23 जुला.	गुरु
नाग-पञ्चमी	25 जुला.	शनि
श्रीदुर्गाष्टमी (मेला-चिंतपूर्णी हि.प्र. समा.)	27 जुला.	सोम

अगस्त

श्रावणी-पूर्णिमा	3 अग.	सोम
रक्षाबन्धन (राखी)	3 अग.	सोम
यजु-अथर्ववेदि उपाकर्म	3 अग.	सोम
ऋक् उपाकर्म	4 अग.	मंग.
कज्जली तृतीया	6 अग.	गुरु
श्रीगणेश (बहुला) चतुर्थी	7 अग.	शुक्र
चंदन षष्ठी व्रत	9 अग.	रवि
श्रीकृष्ण जन्माष्टमी व्रत (स्मा.)	11 अग.	मंग
श्रीकृष्ण जन्माष्टमी (वैष्णव)	12 अग.	बुध
श्रीगुग्गा-नवमी	13 अग.	गुरु
गोकुलाष्टमी, नन्दोत्सव	13 अग.	गुरु
भारत स्वतन्त्रता दिवस	15 अग.	शनि
वत्स द्वादशी (पूजा)	16 अग.	रवि
कुशाग्रहणी अमावस	18 अग.	मंग
पिठोरी अमावस	18 अग.	मंग
हरितालिका तृतीया	21 अग.	शुक्र
सिद्धि विनायक व्रत	22 अग.	शनि
कलंक-चतुर्थी	22 अग.	शनि
साम-उपाकर्म	22 अग.	शनि
ऋषि-पंचमी व्रत	23 अग.	रवि
सूर्य षष्ठी व्रत	24 अग.	सोम
मुक्ताभरण-सन्तान सप्तमी	24 अग.	सोम
दूर्वाष्टमी व्रत	25 अग.	मंग
श्रीराधाष्टमी	25 अग.	मंग
श्रीमहालक्ष्मी व्रत प्रा.	25 अग.	मंग
श्रीचन्द्र-नवमी (उदासीन)	27 अग.	गुरु
श्रीवामन-जयन्ती	29 अग.	शनि

सितम्बर

अनन्त चतुर्दशी व्रत	1 सितं.	मंग
मेला सोढल (जालंधर)	1 सितं.	मंग
प्रोष्ठपदी, पूर्णिमा श्राद्ध	1 सितं.	मंग
पितृपक्ष (श्राद्ध) शुरु	2 सितं.	बुध
श्रीमहालक्ष्मी व्रत समा.	10 सितं.	गुरु
जीवित्पुत्रिका व्रत	10 सितं.	गुरु
मघा-श्राद्ध	15 सितं.	मंग
सर्वपितृ-श्राद्ध	17 सितं.	गुरु
महालय/श्राद्ध समाप्त	17 सितं.	गुरु
आश्विन अधिक (मल)-मास प्रारम्भ	18 सितं.	शुक्र

अक्तूबर

महात्मा गाँधी जयन्ती	2 अक्तू.	शुक्र
आश्विन अधिक (मल)-मास समाप्त	16 अक्तू.	शुक्र
शरद् नवरात्र प्रारम्भ	17 अक्तू.	शनि
उपाङ्ग ललिता व्रत	20 अक्तू.	मंग
सरस्वती आवाहन	21 अक्तू.	बुध
सरस्वती पूजन	22 अक्तू.	गुरु
श्रीदुर्गाष्टमी (पं., हि.प्र., जम्मू)	23 अक्तू.	शुक्र
सरस्वती बलिदान	23 अक्तू.	शुक्र
श्रीदुर्गाष्टमी (हरि., शेषभारत)	24 अक्तू.	शनि
सरस्वती विसर्जन	24 अक्तू.	शनि
महानवमी (पूजा, व्रत)	24 अक्तू.	शनि
महानवमी(बलिदान)	25 अक्तू.	रवि
नवरात्र-समाप्त/पारणा	25 अक्तू.	रवि
विजयादशमी(दशहरा)	25 अक्तू.	रवि
भरत-मिलाप	26 अक्तू.	सोम
कोजागर व्रत	30 अक्तू.	शुक्र
शरद् पूर्णिमा व्रत	30 अक्तू.	शुक्र
महर्षि वाल्मीकि जयं.	31 अक्तू.	शनि
कार्तिकस्नान प्रारम्भ	31 अक्तू.	शनि

नवम्बर

व्रत करवा-चौथ	4 नवं.	बुध
अहोई अष्टमी व्रत	8 नवं.	रवि
गोवत्स द्वादशी	12 नवं.	गुरु
धन-त्रयोदशी	13 नवं.	शुक्र
श्रीहनुमान जयंती (उ.भा.)	13 नवं.	शुक्र
नरक-चतुर्दशी	14 नवं.	शनि
दीपावली	14 नवं.	शनि
श्रीमहालक्ष्मी पूजन	14 नवं.	शनि
अन्नकूट-गोवर्धन पूजा	15 नवं.	रवि

विश्वकर्मा दिवस (पं.)	15 नवं. रवि
बलिपूजा, गोक्रीड़ा	15 नवं. रवि
यमद्वितीया, भाईदूज	16 नवं. सोम
श्रीविश्वकर्मा-पूजन	16 नवं. सोम
सूर्य षष्ठी पर्व (बिहार)	20 नवं. शुक्र
गोपाष्टमी	22 नवं. रवि
अक्षय-कूष्माण्ड नवमी	23 नवं. सोम
भीष्मपंचक प्रारम्भ	25 नवं. बुध
चातुर्मास्य व्रतादि समा.	25 नवं. बुध
हरिप्रबोधिनी एका. (वैष्णव)	26 नवं. गुरु
हरिप्रबोधोत्सव	26 नवं. गुरु
वैकुण्ठ चतुर्दशी	28 नवं. शनि
त्रिपुरोत्सव	29 नवं. रवि
भीष्मपंचक समाप्त	29 नवं. रवि
कार्तिक पूर्णिमा	30 नवं. सोम
श्रीगुरु नानक जयन्ती	30 नवं. सोम

◆ दिसम्बर ◆

श्रीकालभैरवाष्टमी	7 दिसं. सोम
मार्ग.-सोमवती अमा.	14 दिसं. सोम
स्कन्द (गुह) षष्ठी	20 दिसं. रवि
मित्र (विष्णु) सप्तमी	21 दिसं. सोम
श्रीगीता-जयन्ती	25 दिसं. शुक्र
मोक्षदा एकादशी व्रत	25 दिसं. शुक्र
क्रिसमिस डे (क्रिश्चि.)	25 दिसं. शुक्र
श्रीदत्तात्रेय जयन्ती	29 दिसं. मंग

›› जनवरी–2021 ई. ››

इंग्लिश नववर्ष 2021 ई. प्रा.	1 जन. शुक्र
लोहड़ी पर्व	13 जन. बुध
मकर (माघ) संक्रान्ति	14 जन. गुरु
कुम्भ महापर्व (हरिद्वार) –स्नान माहात्म्य प्रा.	14 जन. गुरु
पुत्रदा एकादशी व्रत	24 जन. रवि
गणतन्त्र दिवस (72वाँ)	26 जन. मंग
पौष पूर्णिमा	28 जन. गुरु
माघस्नान प्रारम्भ	28 जन. गुरु
श्रीगणेश संकष्ट चतुर्थी	31 जन. रवि

›› फरवरी–2021 ई. ››

माघ (मौनी) अमावस	11 फर. गुरु
महोदय योग	11 फर. गुरु
गुप्त नवरात्र प्रारम्भ	12 फर. शुक्र
बाबा श्रीलाल दयाल–जयन्ती (ध्यानपुर)	13 फर. शनि
गौरी तृतीया (गोंतरी)	14 फर. रवि
श्रीगणेश तिल चतुर्थी	15 फर. सोम
वसन्त (श्री) पंचमी	16 फर. मंग
सरस्वती पूजन	16 फर. मंग
रथ-आरोग्य सप्तमी	19 फर. शुक्र
भीष्माष्टमी	20 फर. शनि
गुप्त-नवरात्र समाप्त	21 फर. रवि
भीष्मद्वादशी, तिल १२	24 फर. बुध
माघ पूर्णिमा	27 फर. शनि
माघस्नान समाप्त	27 फर. शनि
श्रीगुरु रविदास जयं.	27 फर. शनि

›› मार्च –2021 ई० ››

श्रीमहाशिवरात्रि व्रत	11 मार्च गुरु
होलाष्टक प्रारम्भ	21 मार्च रवि
अन्नपूर्णा-अष्टमी	21 मार्च रवि
गोविन्द द्वादशी	25 मार्च गुरु
होलिका दहन (प्रदोषे)	28 मार्च रवि
होलाष्टक समाप्त	28 मार्च रवि
होली पर्व	29 मार्च सोम
वसन्तोत्सव	29 मार्च सोम
होला मेला (श्रीआनन्दपुर–व पांओटा साहिब)	29 मार्च सोम

›› अप्रैल–2021 ई. ››

श्रीरंग-पंचमी	2 अप्रै. शुक्र
शीतलाष्टमी व्रत	4 अप्रै. रवि
वारुणी पर्व	8 अप्रै. गुरु
मेला पिहोवातीर्थ-हरि.	10 अप्रै. शनि
सोमवती अमावस	12 अप्रै. सोम
प्रमुख स्नान तिथि–कुम्भ महापर्व, हरिद्वार	12 अप्रै. सोम
वि. संवत् 2077 पूर्ण	12 अप्रै. सोम

कुम्भ महापर्व, हरिद्वार

(वि. संवत् २०७८ में)

आगामी वर्ष (वि. संवत् 2078) में 14 अप्रैल, सन् 2021 ई. को हरिद्वार नगरी में कुम्भ महापर्व का आयोजन होगा।

इस महापर्व की सभी स्नान-तिथियों, माहात्म्य का विस्तृत विवरण तथा अन्य आवश्यक जानकारी सं. २०७८ वि. के पंचांग में दी जाएगी। इस महापर्व की संक्षिप्त जानकारी हेतु देखें पृष्ठ 11.

श्रीसत्यनारायण व्रत

(सन् 2020–21 ई.)

श्रीसत्यनारायण व्रत का उदयकालिक पूर्णमाशी की तिथि से कभी-कभी एक दिन का अन्तर आ जाता है, क्योंकि चन्द्रोदयकालिक एवं प्रदोषव्यापिनी पूर्णिमा ही व्रत हेतु ग्रहण करनी चाहिए।

पौष	10 जन. शुक्र
माघ	8 फर. शनि
फाल्गुन	9 मार्च सोम
चैत्र	7 अप्रै. मंग
वैशाख	6 मई बुध
ज्येष्ठ	5 जून शुक्र
आषाढ़	4 जुला. शनि
श्रावण	3 अग. सोम
भाद्रपद	1 सितं. मंग.
प्र. अधि. (मल) आश्विन	1 अक्तू. गुरु
द्विती. शुद्ध आश्विन	31 अक्तू. शनि
कार्तिक	29 नवं. रवि
मार्गशीर्ष	29 दिसं. मंग
पौष–(2021 ई.)	28 जन. गुरु
माघ	26 फर. शुक्र
फाल्गुन	28 मार्च रवि

पूर्णिमा व्रत (2020-21 ई.)

(उदय-व्यापिनी, स्नानदानार्थ)

पौष	10 जन. शुक्र
माघ	9 फर. रवि
फाल्गुन	9 मार्च सोम
चैत्र	8 अप्रै. बुध
वैशाख	7 मई गुरु
ज्येष्ठ	5 जून शुक्र
आषाढ़	5 जुला. रवि
श्रावण	3 अग. सोम
भाद्रपद	2 सितं. बुध
प्र. अधिक आश्विन	1 अक्तू. गुरु
द्वि. शुद्ध आश्विन	31 अक्तू. शनि
कार्तिक	30 नवं. सोम
मार्गशीर्ष	30 दिसं. बुध
(सन् 2021 ई.)	
पौष	28 जन. गुरु
माघ	27 फर. शनि
फाल्गुन	28 मार्च रवि

श्रीगणेश चतुर्थी व्रत

माघ (संकष्ट चतुर्थी)	13 जन. सोम
फाल्गुन	12 फर. बुध
चैत्र	12 मार्च गुरु
वैशाख	11 अप्रै. शनि
ज्येष्ठ	10 मई रवि
आषाढ़	8 जून सोम
श्रावण	8 जुला. बुध
भाद्रपद (बहुला चतुर्थी)	7 अग. शुक्र
प्र. शुद्ध आश्विन	5 सितं. शनि
द्वि. अधि. आश्विन	5 अक्तू. सोम
कार्तिक (करवाचौथ)	4 नवं. बुध
मार्गशीर्ष	3 दिसं. गुरु
(सन् 2021 ई.)	
पौष	2 जन. शनि
माघ (संकष्ट चतुर्थी)	31 जन. रवि
फाल्गुन (अङ्गारकी)	2 मार्च मंग
चैत्र	31 मार्च बुध

निरयण संक्रान्ति प्रवेश एवं पुण्यकाल (सन् 2020–21 ई.)

नाम संक्रान्ति	ता. मास वार	प्रवेशकाल (घं. मिं.)	पुण्यकाल विवरण (भा. स्टै. टा.)
माघ संक्रान्ति	14 जन., मंग.	26-07	अगले दिन प्रात: 8:31 तक
फाल्गुन संक्रान्ति	13 फर., गुरु	15-03	प्रात: 8:39 बाद सारा दिन
चैत्र संक्रान्ति	14 मार्च, शनि	11-53	सूर्योदय बाद सारा दिन
वैशाख संक्रान्ति	13 अप्रै., सोम	20-23	दोपहर 13:59 बाद
ज्येष्ठ संक्रान्ति	14 मई, गुरु	17-16	प्रात: 10:52 बाद
आषाढ़ संक्रान्ति	14 जून, रवि	23-53	अगले दिन प्रात: 6:17 तक
श्रावण संक्रान्ति	16 जुला., गुरु	10-46	सूर्योदय से सायं 17:10 तक
भाद्र. संक्रान्ति	16 अग., रवि	19-10	दुपैहर 12:46 बाद
आश्विन संक्रान्ति	16 सितं., बुध	19-07	दुपैहर 12:43 बाद
कार्तिक संक्रान्ति	17 अक्तू., शनि	7-05	दुपैहर 13:29 तक
मार्ग. संक्रान्ति	15 नवं., रवि	30-53	अगले दिन दोपहर 13:17 तक
पौष संक्रान्ति	15 दिसं., मंग	21-31	मध्याह्न बाद
माघ संक्रान्ति(21)	14 जन., गुरु	8-14	सूर्योदय से दोपहर 14:38 तक
फाल्गुन संक्रान्ति	12 फर., शुक्र	21-11	दोपहर 2:47 से अगले दिन 13:11 तक
चैत्र संक्रान्ति	14 मार्च, रवि	18-03	मध्याह्न 11:39 बाद

28 मार्च रवि	चैत्र संक्रान्ति	14 मार्च, रवि	18-03	मध्याह्न 11:39 बाद

पितृपक्ष में श्राद्ध–2020 ई.

(आश्विन कृष्ण पक्ष में श्राद्ध तिथियाँ)

अपने पूर्वज पितरों के प्रति श्रद्धा भावना रखते हुए आश्विन कृष्ण पक्ष में पितृ-तर्पण एवं श्राद्ध कर्म करना नितान्त आवश्यक है। इससे स्वास्थ्य, समृद्धि, आयु, सुख-शान्ति तथा वंशवृद्धि एवं उत्तम सन्तान की प्राप्ति होती है। श्रद्धापूर्वक किए जाने के कारण ही इसका नाम '**श्राद्ध**' है।

प्रोष्ठपदी/पूर्णिमा श्राद्ध	1 सितं. मंग.
प्रतिपदा का श्राद्ध	2 सितं. बुध
द्वितीया का श्राद्ध	3 सितं. गुरु
तृतीया का श्राद्ध	5 सितं. शनि
चतुर्थी का श्राद्ध	6 सितं. रवि
पंचमी/भरणी श्राद्ध	7 सितं. सोम
षष्ठी का श्राद्ध	8 सितं. मंग
सप्तमी का श्राद्ध	9 सितं. बुध
अष्टमी का श्राद्ध	10 सितं. गुरु

नवमी/सौभाग्यवतीनां श्राद्ध	11 सितं. शुक्र
दशमी का श्राद्ध	12 सितं. शनि
एकादशी का श्राद्ध	13 सितं. रवि
द्वादशी/संन्यासियों का श्राद्ध	14 सितं. सोम
त्रयोदशी/मघा श्राद्ध	15 सितं. मंग
✤चतुर्दशी श्राद्ध अपमृत्यु वालों का श्राद्ध	16 सितं. बुध
अमावस, सर्वपितृ, अज्ञात मृत्युतिथि वालों का श्राद्ध	17 सितं. गुरु

✤ = चतुर्दशी तिथि को केवल शस्त्र, विष, दुर्घटनादि (अपमृत्यु) से मृतों का श्राद्ध होता है। उनकी मृत्यु चाहे किसी अन्य तिथि में हुई हो। चतुर्दशी तिथि में सामान्य मृत्यु वालों का श्राद्ध अमावस्या तिथि में करने का शास्त्र विधान है।

अमावस्याएँ (स्नान-दानार्थ)

माघ	24 जन. शुक्र
फाल्गुन	23 फर. रवि
चैत्र (भौमवती)	24 मार्च मंग
वैशाख	22 अप्रै. बुध
ज्येष्ठ	22 मई शुक्र
आषाढ़	21 जून रवि
श्रावण (सोमवती)	20 जुला. सोम
भाद्रपद	19 अग. बुध
प्र. शुद्ध आश्विन	17 सितं. गुरु
द्वि. अधि. आश्विन	16 अक्तू. शुक्र
कार्तिक	15 नवं. रवि
मार्गशीर्ष (सोमवती)	14 दिसं. सोम

(सन् 2021 ई.)

पौष	13 जन. बुध
माघ	11 फर. गुरु
फाल्गुन (शनैश्चरी)	13 मार्च शनि
चैत्र (सोमवती)	12 अप्रै. सोम

श्रीसिद्धिविनायक चतुर्थी व्रत

माघ	28 जन. मंग.
फाल्गुन	27 फर. गुरु
चैत्र	28 मार्च शनि
वैशाख	27 अप्रै. सोम
ज्येष्ठ	26 मई मंग.
आषाढ़	24 जून बुध
श्रावण	24 जुला. शुक्र
भाद्रपद	22 अग. शनि
प्र. अधि. आश्विन	20 सितं. रवि
द्वि. शुद्ध आश्विन	19 अक्तू. सोम
कार्तिक	18 नवं. बुध
मार्गशीर्ष	18 दिसं. शुक्र

(सन् 2021 ई.)

पौष	16 जन. शनि
माघ	15 फर. सोम
फाल्गुन	17 मार्च बुध

प्रदोष व्रत (सन् 2020–21 ई.)

यह व्रत शिवजी की प्रसन्नता और प्रभुत्व की प्राप्ति के लिए किया जाता है। वैसे तो सभी प्रदोष व्रत अत्यन्त कल्याणप्रद होते हैं, परन्तु **शनि प्रदोष व्रत** सन्तान प्राप्ति के लिए, **भौम-प्रदोष** ऋणमोचन, मन: शान्ति एवं सुरक्षा के लिए **सोम प्रदोष व्रत** तथा आरोग्य प्राप्ति एवं आयु वृद्धि के लिए **अर्क** (रवि) **प्रदोष व्रत** विशेष अधिक फलदायी होता है। व्रती को चाहिए कि व्रत वाले दिन सूर्यास्त के समय पुन: स्नान करके शिवपूजन एवं कथा करें और तत्पश्चात् "**भवाय भवनाशाय, महादेवाय धीमते। रूद्राय नीलकण्ठाय शर्वाय शशि मौलिने। उग्रायोग्राघनाशाय भीमाय भय हारिणे। ईशानाय नमस्तुभ्यं पशूनां पतये नम:।।**" से प्रार्थना करके भोजन करें।

पौष शुक्ल	8 जन. बुध
माघ कृष्ण	22 जन. बुध
माघ शुक्ल	7 फर. शुक्र
फाल्गुन कृष्ण	20 फर. गुरु
फाल्गुन शुक्ल (शनि)	7 मार्च शनि
चैत्र कृष्ण	21 मार्च शनि
चैत्र शुक्ल	5 अप्रै. रवि
वैशाख कृष्ण (सोम)	20 अप्रै. सोम
वैशाख शुक्ल (भौम)	5 मई मंग
ज्येष्ठ कृष्ण	20 मई बुध
ज्येष्ठ शुक्ल	3 जून बुध
आषाढ़ कृष्ण	18 जून गुरु
आषाढ़ शुक्ल	2 जुला. गुरु
श्रावण कृष्ण (शनि)	18 जुला. शनि
श्रावण शुक्ल (शनि)	1 अग. शनि
भाद्रपद कृष्ण	16 अग. रवि
भाद्रपद शुक्ल	30 अग. रवि
प्र. शुद्ध आश्विन कृष्ण	15 सितं. मंग
प्र.(अधि.) आश्विन शुक्ल	29 सितं. मंग.
द्वि.(अधि.) आश्विन कृष्ण	14 अक्तू. बुध
द्वि. शुद्ध आश्विन शुक्ल	28 अक्तू. बुध
कार्तिक कृष्ण	13 नवं. शुक्र
कार्तिक शुक्ल	27 नवं. शुक्र
मार्गशीर्ष कृष्ण (शनि)	12 दिसं. शनि
मार्गशीर्ष शुक्ल	27 दिसं. रवि

(सन् 2021 ई.)

पौष कृष्ण	10 जन. रवि
पौष शुक्ल (भौम)	26 जन. मंग.
माघ कृष्ण (भौम)	9 फर. मंग
माघ शुक्ल	24 फर. बुध
फाल्गुन कृष्ण	10 मार्च बुध
फाल्गुन शुक्ल	26 मार्च शुक्र
चैत्र कृष्ण	9 अप्रै. शुक्र

मासिक कालाष्टमी व्रत

(सन् 2020 ई.)

माघ	17 जन. शुक्र
फाल्गुन	15 फर. शनि
चैत्र	16 मार्च सोम
वैशाख	14 अप्रै. मंग
ज्येष्ठ	14 मई गुरु
आषाढ़	13 जून शनि
श्रावण	12 जुला. रवि
भाद्रपद	11 अग. मंग.
प्र. शुद्ध आश्विन	10 सितं. गुरु
द्वि. (अधि.) आश्विन	10 अक्तू. शनि
कार्तिक	8 नवं. रवि
मार्गशीर्ष *	7 दिसं. सोम

(सन् 2021 ई.)

पौष	6 जन. बुध
माघ	4 फर. गुरु
फाल्गुन *	5 मार्च शुक्र
चैत्र	4 अप्रै. रवि

*स्थानीय सूर्योदय/सूर्यास्त कालानुसार यह पर्व एक दिन बाद हो सकता है।

मासिक शिवरात्रि व्रत

(सन् 2020 ई.)

माघ	23 जन. गुरु
फाल्गुन(श्रीमहाशिवरात्रि)	21 फर. शुक्र
चैत्र	22 मार्च रवि
वैशाख	21 अप्रै. मंग
ज्येष्ठ	20 मई बुध
आषाढ़	19 जून शुक्र
श्रावण	19 जुला. रवि
भाद्रपद	17 अग. सोम
प्र. शुद्ध आश्विन	15 सितं. मंग
द्वि. (अधि.) आश्विन	15 अक्तू. गुरु
कार्तिक	13 नवं. शुक्र
मार्गशीर्ष	13 दिसं. रवि

(सन् 2021 ई.)

पौष	11 जन. सोम
माघ	10 फर. बुध
फाल्गुन (श्रीमहाशिवरात्रि)	11 मार्च गुरु
चैत्र	10 अप्रै. शनि

मासिक दुर्गाष्टमी व्रत

(सन् 2020 ई.)

पौष	3 जन. शुक्र
माघ	2 फर. रवि
फाल्गुन	3 मार्च मंग
चैत्र	1 अप्रै. बुध
वैशाख	1 मई शुक्र
ज्येष्ठ	30 मई शनि
आषाढ़	28 जून रवि
श्रावण	27 जुला. सोम
भाद्रपद	26 अग. बुध
प्र. (अधि.) आश्विन	24 सितं. गुरु
द्वि. शुद्ध आश्विन *	23 अक्तू. शुक्र
कार्तिक	22 नवं. रवि
मार्गशीर्ष	22 दिसं. मंग

(सन् 2021 ई.)

पौष	21 जन. गुरु
माघ	20 फर. शनि
फाल्गुन	22 मार्च सोम

एकादशी व्रत (सन् 2020-21 ई.)

'धर्मसिंधु' अनुसार एकादशी दो प्रकार की होती है। विद्धा और शुद्धा ॥

1. दशमी तिथि से युक्त **एकादशी तिथि विद्धा** एकादशी कहलाती है।

2. सूर्योदयकालिक एकादशी तिथि द्वादशी तिथि युक्त हो तो वह **शुद्धा** एकादशी कहलाती है।

सर्वसाधारण गृहस्थों एवं साधकों को शुद्धा एकादशी का व्रत रखना प्रशस्त एवं पुण्यप्रदायक माना गया है। इसीलिए '**स्मार्त**' (अर्थात् जिसमें साधारण गृहस्थी लोग भी सम्मिलित हैं) लोग भी वैष्णव सम्प्रदाय (संन्यासी, यति, दीक्षित) द्वारा पालनीय वैष्णव एकादशी वाला व्रत ही रखते हैं।

पुत्रदा (पौष शुक्ल)	6 जन. सोम
षट्तिला (माघ कृष्ण)	20 जन. सोम
जया (माघ शुक्ल)	5 फर. बुध
विजया (फाल्गुन कृष्ण)	19 फर. बुध
आमलकी (फाल्गुन शुक्ल)	6 मार्च शुक्र
पापमोचनी (चैत्र कृष्ण) वैष्णव*	20 मार्च शुक्र
कामदा (चैत्र शुक्ल)	4 अप्रै. शनि
वरूथिनी (वैशाख कृष्ण)	18 अप्रै. शनि
मोहिनी (वैशाख शुक्ल) वैष्णव*	4 मई सोम
अपरा (ज्येष्ठ कृष्ण)	18 मई सोम
निर्जला (ज्येष्ठ शुक्ल)	2 जून मंग
योगिनी (आषाढ़ कृष्ण)	17 जून बुध
हरिशयनी (आषाढ़ शुक्ल)	1 जुला. बुध
कामिका (श्रावण कृष्ण)	16 जुला. गुरु
पवित्रा (श्रावण शुक्ल)	30 जुला. गुरु
अजा (भाद्रपद कृष्ण)	15 अग. शनि
पद्मा (भाद्रपद शुक्ल)	29 अग. शनि
इन्दिरा (शुद्ध आश्विन कृष्ण)	13 सितं. रवि
पुरुषोत्तमा (अधि. आश्विन शुक्ल)	27 सितं. रवि
पुरुषोत्तमा (अधि. आश्विन कृष्ण)	13 अक्तू. मंग
पापांकुशा (शुद्ध आश्विन शुक्ल)	27 अक्तू. मंग
रमा (कार्तिक कृष्ण)	11 नवं. बुध
हरिप्रबोधिनी (कार्तिक शुक्ल) वैष्णव*	26 नवं. गुरु
उत्पन्ना (मार्गशीर्ष कृष्ण) वैष्णव*	11 दिसं. शुक्र
मोक्षदा (मार्गशीर्ष शुक्ल)	25 दिसं. शुक्र
(सन् 2021 ई.)	
सफला (पौष कृष्ण)	9 जन. शनि
पुत्रदा (पौष शुक्ल)	24 जन. रवि
षट्तिला (माघ कृष्ण)	8 फर. सोम
जया (माघ शुक्ल)	23 फर. मंग
विजया (फाल्गुन कृष्ण)	9 मार्च मंग
आमलकी (फाल्गुन शुक्ल)	25 मार्च गुरु
पापमोचनी (चैत्र कृष्ण)	7 अप्रै. बुध

*नोट–स्मार्तों का व्रत वैष्णवों के व्रत-दिन से एक दिन पहले होता है। जिस तिथि के आगे कुछ नहीं लिखा, उसका अभिप्राय: यह है कि यह तिथि स्मार्तों और वैष्णवों-दोनों के लिए ग्राह्य है।

दशमहाविद्या जयन्तियां-(सं. २०७७)

श्रीमहातारा जयन्ती	2 अप्रै. गुरु
श्रीमातङ्गी जयन्ती	26 अप्रै. रवि
श्रीबगुलामुखी जयन्ती	1 मई शुक्र
श्रीछिन्नमस्तिका जयन्ती	7 मई गुरु
श्रीधूमावती जयन्ती	30 मई शनि
श्रीमहाकाली जयन्ती	11 अग. मंग
श्रीभुवनेश्वरी जयन्ती	30 अग. रवि
श्रीकमला जयन्ती	14 नवं. शनि
श्रीत्रिपुरभैरवी जयन्ती	29 दिसं. मंग
श्रीललिता जयन्ती (21 ई.)	27 फर. शनि

दशावतार जयन्तियां-(सन् 2020 ई.)

श्रीमत्स्य जयन्ती	27 मार्च शुक्र
श्रीराम जयन्ती (नवमी)	2 अप्रै. गुरु
श्रीपरशुराम जयन्ती	25 अप्रै. शनि
श्रीनृसिंह जयन्ती	6 मई बुध
श्रीकूर्म जयन्ती	6 मई बुध
श्रीबुद्ध जयन्ती	7 मई गुरु
श्रीकल्कि जयन्ती	25 जुला. शनि
श्रीकृष्ण जयन्ती	11 अग. मंग
श्रीवराह जयन्ती	21 अग. शुक्र
श्रीवामन जयन्ती	29 अग. शनि

पर्व श्रीपिण्डोरीधाम (गुरदासपुर)-2020 ई.

श्रीरामानन्दाचार्य जयन्ती	1 फर. शनि
श्रीहोलिका दहन	9 मार्च सोम
श्रीभगवत्नारायण जयंती	13 मार्च शुक्र
रामनवमी पर्व	2 अप्रै. गुरु
वैशाखी पर्व	13 अप्रै. सोम
जानकी जयन्ती	1 मई शुक्र
गंगा दशहरा पर्व	1 जून सोम
गुरु पूर्णिमा	5 जुला. रवि
तुलसी जयन्ती पर्व	27 जुला. सोम
कृष्ण जयन्ती पर्व	11-13 अगस्त
महंत गु. गोबिन्ददास जयंती	27 अक्तू. मंग

सिद्ध महापुरुषों के जन्मदिन/स्मरणोत्सव

स्वामी विवेकानन्द जी	12 जन. रवि
स्वामी रामानन्दाचार्य जी	17 जन. शुक्र
स्वामी विवेकानंद (प्राचीनमत)	17 जन. शुक्र
नेताजी सुभाषचन्द्र बोस	23 जन. बुध
सिद्ध बाबा लालदयाल जी	26 जन. रवि
लाला लाजपतराय जी	28 जन. मंग
श्रीगुरु रविदास जी	9 फर. रवि
महर्षि दयानन्द सरस्वती	18 फर. मंग
छत्रपति शिवाजी	19 फर. बुध
श्रीवैद्यनाथ जयन्ती	21 फर. शुक्र
श्रीरामकृष्ण परमहंस	25 फर. मंग.
डॉ० राजेन्द्र प्रसाद स्मरण	28 फर. शुक्र
श्रीयाज्ञवल्क्य जयन्ती	28 फर. शुक्र
श्रीचैतन्य महाप्रभु	9 मार्च सोम
सन्त तुकाराम जी	11 मार्च बुध
शहीदी सः भगत सिंह	23 मार्च सोम
श्रीझूलेलाल जयन्ती	26 मार्च गुरु
श्रीमहावीर जयन्ती	6 अप्रै. सोम
श्रीहनुमान जयंती (दक्षिण-भारत)	7 अप्रै. मंग.
सती अनूसूइया जयन्ती	10 अप्रै. शुक्र
डॉ. बी.आर. अम्बेदकर	14 अप्रै. मंग.
श्रीवल्लभाचार्य जयंती	18 अप्रै. शनि
श्रीशुकदेव जयन्ती	22 अप्रै. बुध
भगवान् परशुराम	25 अप्रै. शनि
छत्रपति शिवाजी	25 अप्रै. शनि
आद्यगुरु श्रीशंकराचार्य.	28 अप्रै. मंग
श्रीसूरदास जयन्ती	28 अप्रै. मंग
स्वामी रामानुजाचार्य (उ.भा.)	29 अप्रै. बुध
महात्मा बुद्ध	7 मई गुरु
श्रीरवीन्द्रनाथ टैगोर	7 मई गुरु
श्रीनारद जयन्ती	9 मई शनि
श्रीमहाराणा प्रताप	25 मई सोम
सन्त कबीर जयन्ती	5 जून शुक्र
श्रीध्यानू भगत	24 जून बुध
ऋषि वेदव्यास	5 जुला. रवि
लोकमान्य गंगाधर तिलक	23 जुला. गुरु
गोस्वामी तुलसीदास जी	27 जुला. सोम
लोकमान्य तिलक स्मरणोत्सव	1 अग. शनि
सन्त ज्ञानेश्वर	12 अग. बुध
भक्त नवल (जोधपुर)	12 अग. बुध
श्रीदधीची जयन्ती	26 अग. बुध
श्रीचन्द्र महाराज (उदासीन)	27 अग. गुरु
स्वामी शिवानन्द जी	8 सितं. मंग.
श्री कात्यायनी जयन्ती	16 सितं. बुध
महात्मा गाँधी, शास्त्री जी	2 अक्तू. शुक्र
महाराजा अग्रसेन	17 अक्तू. शनि
स्वामी रामतीर्थ	22 अक्तू. गुरु
श्रीमाधवाचार्य जी	26 अक्तू. सोम
श्रीहनुमान जयन्ती (उ. भारत)	13 नवं. शुक्र
श्रीधनवन्तरी जयन्ती	13 नवं. शुक्र
महाराजा रणजीत सिंह	13 नवं. शुक्र
श्रीजवाहरलाल नेहरू	14 नवं. शनि
श्रीविश्वकर्मा जयन्ती	16 नवं. सोम
शहीदी लाला लाजपतराय	17 नवं. मंग
श्रीसत्यसाईं बाबा जयन्ती	23 नवं. सोम
श्रीगुरु नानकदेव जी	30 नवं. सोम
डॉ० राजेन्द्र प्रसाद	3 दिसं. गुरु
शहीदी सः ऊधम सिंह	26 दिसं. शनि
श्रीदत्तात्रेय जयन्ती	29 दिसं. मंग.
(सन् 2021 ई.)	
स्वामी विवेकानन्द जी	12 जन. मंग.
नेताजी सुभाषचन्द्र बोस	23 जन. शनि
लाला लाजपतराय जी	28 जन. गुरु
स्वामी रामानन्दाचार्य जी	4 फर. गुरु
स्वा. विवेकानन्द (प्राचीनमतेन)	4 फर. गुरु
सिद्ध बाबा लालदयाल जी	13 फर. शनि
छत्रपति शिवाजी	19 फर. शुक्र
श्रीगुरु रविदास जी	27 फर. शनि
महर्षि दयानन्द सरस्वती	8 मार्च सोम
श्रीरामकृष्ण परमहंस	15 मार्च सोम
श्रीचैतन्य महाप्रभु	28 मार्च रवि
सन्त तुकाराम जी	30 मार्च मंग.

दरबार श्रीध्यानपुर (गुरदासपुर) मुख्य पर्व-2020 ई.

बाबा श्रीलालदयाल जयन्ती	26 जन. रवि
वसंतपंचमी (पं. द्वारकादास जयं.)	30 जन. गुरु
होलिका-दहन	9 मार्च सोम
श्रीरामनवमी पर्व	2 अप्रै. गुरु
महंत श्रीनारायणदास जयं.	29 मई शुक्र
व्यास पूजा	5 जुला. रवि
श्रीकृष्ण जन्माष्टमी (वैष्णव)	12 अग. बुध
दीपावली पर्व	14 नवं. शनि
गद्दी स्वा. रामसुन्दरदास जी	1 नवं. रवि
बाबा श्रीलालदयाल जयन्ती (2021)	13 फर. शनि
वसन्तपंचमी (पं. द्वारकादास जयं.)	16 फर. मंग
होलिका-दहन	28 मार्च रवि

27 अक्तू. मंग | श्री कात्यायनी जयन्ती 16 सितं. बुध | होलिका-दहन 28 मार्च रवि

पंजाब, हरियाणा, राजस्थान, उत्तराखण्ड व उत्तरप्रदेश के मुख्य मेले-सन् 2020 ई.

मरोज पर्व (जौनसार, उत्तराखण्ड)	12 जन.
मेला लोहड़ी (पं., हरि., जम्मू आदि)	13 जन.
मेला दाऊँ (चण्डीगढ़, मोहाली)	13-14 जन.
बिन्दरख (रोपड़, पंजाब)	14 जन.
मेला माघी (मुक्तसर, पंजाब)	14 जन.
मेला मौनी-अमावस (हरिद्वार, प्रयागराज आदि)	24 जन.
मेला वसन्त पंचमी	29-30 जन.
मेला पशु-नागौर (राजस्थान)	30 जन.-2 फर.
मेला मस्तुआणा (पंजाब) (बरसी संत अतरसिंह जी)	1 फर.
मेला जैसलमेर (राजस्थान)	7-9 फर.
जयन्ती-देवी (चण्डीगढ़)	8-9 फर.
माघी पूर्णिमा (प्रयागराज, उ.प्र.)	9 फर.
मेला श्रीमहाशिवरात्रि	21 फर.
नीलकण्ठ महादेव (गढ़वाल, उ. खण्ड)	21 फर.
मेला फूलेरा-दूज (मथुरा, उ.प्र.)	25 फर.
मे. बाबा-मस्तनाथ (अस्थल बोहर, रोहतक, हरि.)	2-4 मार्च
होलियां-होलाष्टक (उ.प्र.)	3-9 मार्च
मेला श्रीखाटू श्याम जी	6-7 मार्च
मेला सावातिल्ला	7 मार्च
श्रीवीरमदास (बधौछी, पटियाला) पं.	10 मार्च
होला मेला (श्रीआनन्दपुर सा. पं.)	10 मार्च
मे. शीतलामाता शुरु (कुराली, पंजाब)	12 मार्च
मे. श्रीगुरु रामराय (देहरादून, उ.खण्ड)	13 मार्च
नवचण्डी (मेरठ, उ.प्र.) प्रा.	13 मार्च
मेला शीतलामाता (सर्वत्र)	15-16 मार्च
मे. पृथूदक (पिहोवातीर्थ, हरियाणा) (यह मेला 2 दिन चलेगा)	22-23 मार्च
मेला हथीरा (थानेसर, कुरुक्षेत्र, हरि.)	23 मा.-2 अप्रै.
मेला चीमा (नानकसर, पंजाब)	25 मार्च
मेला नवरात्रे-मनसादेवी (हरिद्वार व पंचकूला) हरि.	25 मा.-2 अप्रै.
मेला झंडेवाला (करोलबाग, दिल्ली)	25 मा.-2अप्रै.
मेला कालका जी (दिल्ली)	25 मा.-2 अप्रै.
गणगौरी तृतीया (जयपुर, राजस्थान)	27 मार्च
मे. माईसरखाना (बठिण्डा, पंजाब)	30 मार्च
मेला रामनवमी (जालन्धर, पंजाब)	2 अप्रै.
वैशाखी मेला-श्रीलक्ष्मण चौंतरा-हांसी (हरियाणा)	4-13 अप्रै.
मेला कांसादेवी (चण्डीगढ़)	7-8 अप्रै.
देवी-मेला (हथीहरा, कुरुक्षेत्र, हरि.)	7 अप्रै.
मेला वैशाखी (पंजाब)	13 अप्रै.
मे. रामथनदास (फाज़िल्का, पंजाब)	13 अप्रै.
मे. वैशाखी-गंगभेवा (बावड़ी) ढकरानी, देहरादून (उ.खण्ड)	13-18 अप्रै.
मेला ठाणा डांडा, नागी-बागीधार (उत्तराखण्ड)	16 अप्रै.
मेला पिंजौर (कालका, हरियाणा)	22 अप्रै.
गंगा-सप्तमी (हरिद्वार)	30 अप्रै.
मेला चकराता (देहरादून, उ. खण्ड)	3 मई
मे. भद्रकाली (कपूरथला, पंजाब)	18 मई
जोड़ मेला-संत खुशीराम जी गाँव-भरोमज़ारा, नवांशहर, पंजाब	23-24 मई
साईं टेऊंराम पुण्यतिथि	28 मई
गंगा-दशहरा (हरिद्वार)	1 जून
मेला जखौली (उत्तराखण्ड)	2 जून
नन्दाचौर धाम (होशियारपुर, पंजाब)	6-7 जून
मेला माता शीलावन्ती जी गाँव-भवानी, पठानकोट (पं.)	15 जून
मेला फाल्गु (कुरुक्षेत्र, हरियाणा)	21 जून
रथयात्रा उत्सव (पुरी, उड़ीसा)	23 जून
साईं टेऊंराम जयन्ती, सप्तसरोवर, भूपतवाला रोड, हरिद्वार, उ. खण्ड	26 जून
गुरु पूर्णिमा उत्सव	5 जुला
मेला काहनूवाल (गुरदासपुर, पंजाब)	5 जुला.
मेला नाग-पंचमी (राजस्थान)	10 जुला.
मेला पं. जोगराज (जंडियाला, पंजाब)	19-20 जुला
मेला सिंघारा तीज (पंजाब)	23 जुला.
मेला गौरी-तीज (जयपुर, राज.)	23 जुला.
मेला जयन्ती-देवी (मुल्लापुर-गरीबदास, चण्डीगढ़)	2-3 अग.
मेला बग्गी-देहरी (कण्डेलालोवाल, गुरदासपुर, पं.)	3 अग.
मेला नुणाई (जौनसार बावर, उ. खण्ड)	4 अग.
कृष्ण जन्माष्टमी पर्व (मथुरा, उ.प्र.)	12 अग.
गुग्गा जाहिरपीर (नकोदर, पंजाब)	13 अग.
मे. गोगामेड़ी (श्रीगंगानगर, राज.)	13 अग.
मेला भद्रराज (जौनसार, उत्तराखण्ड)	16 अग.
मेला बाबा सुथरेशाह (दिल्ली)	19 अग.
रानी सती मेला (झुंझुनूं, राजस्थान)	19 अग.
मेला श्रीगोसाईंआणा (कुराली, पं.)	20 अग.
मेला महासू देवता (दुंगरा, जागड़ा, जौनसार, उ.खण्ड)	22 अग.
मेला रामदेव रोणेचा (जोधपुर, राज.)	28 अग.
मेला वामन-द्वादशी (अम्बाला)	29 अग.
मे. छपार (मलेरकोटला, पंजाब)	31 अ.-2 सितं.
मेला बाबा सोढल (जालन्धर, पंजाब)	1 सितं.
मे. गोईंदवाल सा. (तरनतारन, पं.)	2 सितं.
मेला गुग्गापीर (लुधियाना)	2 सितं.
तपा. बाबा गोपीचन्द जी-महाराज (राहों, नवांशहर, पं.)	10-12 सितं.
देवीमेला (हथीरा, थानेसर, कुरुक्षेत्र)	15-24 अक्तू.
मे. अगरोहाधाम (हरियाणा)	17 अक्तू.
मेला आशापूर्णी (पठानकोट, पं.)	17-24 अक्तू.
मे. अचलेश्वर (बटाला, पंजाब)	24-25 नवं.
मे. पुष्करतीर्थ (राजस्थान)	25-30 नवं.
मे. वीर-वैरागी (नकोदर, पंजाब)	28 नवं.
मे. बग्गी-देहरी (कण्डे-लालोवाल, गुरदासपुर, पं.)	29-30 नवं.
भण्डारा संत प्रीतमदास (जालन्धर, पं.)	30 नवं.
मेला रामतीर्थ (अमृतसर, पंजाब)	30 नवं.
मे. कपालमोचन (जगाधरी, हरि.)	30 नवं.
वार्षिक महायज्ञ श्रीओमदरबार (नन्दाचौरधाम, होशियारपुर, पं.)	1-3 दिसं.
मे. हरिद्वार-प्रयागराज (उ. खण्ड) (सोमवती-अमावस)	14 दिसं.
पुरानी दीपावली (जौनसार, जौनपुर, उ. खण्ड)	14 दिसं.
सिद्ध बाबा कैलाशनाथ जयंती (बस्तीशेखरोड, जालन्धर, पंजाब)	14 दिसं.
कुरुक्षेत्र गीता महोत्सव (हरियाणा)	23-25 दिसं.
मेला जोड़ (फतेहगढ़ साहिब, पं.) शुरु	26 दिसं.

श्री बदरीनाथ धाम के मुख्य उत्सव

(श्रीबदरीनाथ-केदारनाथ मन्दिर समिति द्वारा प्रेषित (2020-21 ई.)

श्रीबदरीनाथ-कपाट खुलने की तिथि-निर्धारण	30 जन. गुरु
श्रीबदरी यात्रा प्रारंभ	26 अप्रै. रवि
श्रीगङ्गा-दशहरा	1 जून सोम
घण्टाकर्ण उत्सव	15/16 जून
गुरु पूर्णिमा	5 जुला. रवि
नर-नारायण जयंती	25 जुला. शनि
श्रीकृष्ण जन्माष्टमी	11 अग. मंग
नन्दा-अष्टमी	25 अग. मंग
माता-मूर्त्ति उत्सव	29 अग. शनि
नारद-उत्सव	30 अग. रवि
पितृ-श्राद्ध	2-17 सितं.
श्रीबदरीनाथ के कपाट बन्द करने की तिथि	25 अक्तू. रवि
श्रीबदरीनाथ के कपाट खुलने की तिथि निर्धारण	16 फर., 2021 ई.

हिमाचल प्रदेश के मेले व उत्सव (सन् 2020-21 ई.)

श्रीदेवता खुड्डी-जल, (देहूरी, आनी, कुल्लू)	14 जन.
श्रीब्रह्मा (न्यूल, कुल्लू)	20 जन.
वसन्त पंचमी (बिलासपुर)	30 जन.
श्रीमहाशिवरात्रि (मण्डी)	21 फर.-2 मा.
मेला काठगढ़	21 फर.
मे. रिवालसर (मण्डी)	21 फर.
मे. स्वर्गाश्रम (नूरपुर)	22 फर.
मे. बैजनाथ (कांगड़ा)	23 फर.
मे. बड़भाग सिंह (ऊना)	3-9 मार्च
सुजानपुर टिहरा (हमीरपुर)	9-13 मार्च
होला मेला (पांओटा साहिब)	10 मार्च
मेला बाबा बालकनाथ शुरु	14 मार्च
मेला कनिहारा (धर्मशाला) शुरु	14 मार्च
मेला नलवाड़ (बिलासपुर)	17-22 मार्च
मे. नलवाड़ (सुन्दरनगर)	22-29 मार्च
मे. नयनादेवी (बिलासपुर)	25 मा.-2 अप्रै.
बालासुन्दरी (सिरमौर)	25 मा.-8 अप्रै.
ललवाड़ (सुन्दरनगर)	27 मा.-1 अप्रै.
मे. नलवाड़ (बरच्छवाड़, सरकाघाट)	28 मा.-3 अ.
मेला लाहौल (मण्डी)	31 मार्च
मे. श्रीदुर्गाष्टमी (कांगड़ादेवी)	1 अप्रै.
मेला रोहरू (महासू)	4-5 अप्रै.
मे. नलवाड़ (घुमारवीं)	5-9 अप्रै.
मे. मारकण्डा (बिलासपुर)	12-15 अप्रै.
मेला नैनादेवी (धर्मपुर, बनवार)	12 अप्रै.
कालेश्वर महादेव (देहरा, काँगड़ा)	13 अप्रै.
मे. रिवालसर (मण्डी)	13 अप्रै.
मेला बिशू (सिरमौर) प्रारम्भ	13 अप्रै.
मे. राजगढ़ (सिरमौर)	13-15 अप्रै.
मे. चचौहली (जगतसुख, कुल्लू)	13-15 अप्रै.
मे. हुरला (कुल्लू)	16-17 अप्रै.
मे. त्राम्बली (कुल्लू)	16-17 अप्रै.
मे. खनाणी (गां-शिम., कुल्लू)	19-20 अप्रै.
मे. माहूनाग (करसोग)	27-28 अप्रै.
मे. पीपल-जातर (कुल्लू)	28-30 अप्रै.
मेला स्वीटी	30 अप्रै.
हरिहरघाट (मनीकरण, कुल्लू)	3-7 मई
मेला आनी (कुल्लू)	7-9 मई
मे. नारकण्डा (बिलासपुर)	13-15 मई
मे. ढुंगरी जातर (मनाली)	14-15 मई
मेला बंजार (कुल्लू)	14-18 मई
मे. घाघरस (बिलासपुर)	14 मई
मे. श्यामकाली (सरकाघाट)	15 मई
मे. कमलाहिया (धर्मपुर)	17 मई
मे. शाढ़ी जातर (नगर)	18-23 मई
पशु मेला (हमीरपुर)	18 मई
मे. लगदेवी (हमीरपुर)	22 मई
मे. शीतलादेवी (सुन्दरनगर)	22-24 मई
मे. मिरपरी (मण्डी)	24-25 मई
मे. मुरारीदेवी (सरकाघाट)	25-27 मई
मे. ग्राम पंजगाई (बिलासपुर)	29-30 मई
मे. स्थूल-मढोल	1-4 जून
मे. पीपलू (हमीरपुर)	2 जून
मे. नौवाही देवी (सरकाघाट)	14 जून
मेला बाड़ी-सरयांझ (सोलन)	14 जून
मेला उहल (हमीरपुर)	14 जून
भुन्तर मेला (कुल्लू)	15-17 जून
मे. माँ शूलिनी (सोलन)	19-21 जून
मे. टौणी-देवी (हमीरपुर)	23 जून
मेला त्रिमौणी (सिरमौर)	5 जुला
वन-महोत्सव प्रारम्भ	10 जुला
मेला नागनी (नूरपुर)	16 जुला
मे. सिद्ध बाबा शिब्बो (ज्वाली)	19 जुला.
मेला मिंजर (चम्बा)	26 जुला
मेला छिन्नमस्तिका (चिन्तपूर्णी)	21-27 जुला
मेला चामुण्डादेवी	21-27 जुला
श्रीदेवता खुड्डी जल, गाँव-देहरी, तह-आनी, जिला-कुल्लू	3-14 अग.
मे. जन्माष्टमी (कलोह, सिरमौर)	11-12 अग.
मेला बंद्राल (कुल्लू)	13 अग.
मेला गुग्गा-नवमी (बिलासपुर)	13 अग.
मे. संतोषी माता (लदरौर)	16 अग.
मे. अम्बिकादेवी (सदर, मण्डी)	17 अग.
गणपति उत्सव (मण्डी)	22 अ.-1 सितं.
मे. महासू (शिलाई, सिरमौर)	22-23 अग.
हिमाचल गणेश-उत्सव अम्बिकानगर, अम्ब (ऊना)	22 अ.-1 सितं.
मे. गुग्गामाड़ी (सुबाथू, सोलन)	25-28 अग.
यात्रा मनीमहेश (चम्बा) शुरु	25 अग.
मेला वामन द्वादशी (नाहन)	29 अग.
मेला रूद्र घड़ीकूपड़ (रोहड़ू, शिमला)	9 सितं.
मेला नलवाड़ (चिच्चोट)	16-23 सितं.
मेला लदरौर (हमीरपुर)	16 सितं.
मेला सायर (अर्की)	16-17 सितं.
मेला चामुण्डादेवी (कांगड़ा)	17-24 अक्तू.
मेला बगुलामुखी (वनखण्डी)	17-24 अक्तू.
मेला रामलीला	17-24 अक्तू.
मेला तारादेवी (शिमला)	23-25 अक्तू.
मेला ज्वालामुखी	23-24 अक्तू.
मे. शीतलामाता (मच्छिभवन, कांगड़ा)	23 अक्तू
मेला दशहरा (कुल्लू)	25-31 अक्तू.
मेला दशहरा (अर्की)	25 अक्तू.
मेला लावी (रामपुर बुशैहर)	11-14 नवं.
मेला काली-बाड़ी (शिमला)	14-15 नवं.
मेला रेणुका (नाहन, सिरमौर)	25-26 नवं.
मे. बाबा रुद्रीनन्दनारी (ऊना)	25-30 नवं.
मेला जोगी-पांगा (ऊना)	30 नवं.
बुढ़ी दीपावली (शिलाई, सिरमौर)	14-17 दिसं.

(सन् 2021 ई०)

श्रीदेवता खुड्डी-जल, (देहूरी, आनी, कुल्लू)	14 जन.
मे. ब्रह्मा (न्यूल, कुल्लू)	20 जन.
मे. वसन्त पंचमी (बिलासपुर)	16 फर.
श्रीमहाशिवरात्रि (मण्डी)	11-20 मार्च
मेला काठगढ़	11 मार्च
मे. रिवालसर (मण्डी)	11 मार्च
मे. स्वर्गाश्रम (नूरपुर)	12 मार्च
मे. बैजनाथ (कांगड़ा)	13 मार्च
मेला बाबा बालकनाथ शुरु	14 मार्च
मे. कनिहारा (धर्मशाला) शुरु	14 मार्च
मेला नलवाड़ (बिलासपुर)	17-22 मार्च
मे. बड़भाग सिंह (ऊना)	22-28 मार्च
मेला नलवाड़ (सुन्दरनगर)	22-29 मार्च
मेला सुजानपुर टिहरा (हमीरपुर)	28 मा.-1 अ.
मे. नलवाड़ (बरच्छवाड़, सरकाघाट)	28 मा.-3 अ.
होला मेला (पांओटा साहिब)	29 मार्च

जम्मू-कश्मीर के मेले

लोहड़ी पर्व	13 जन.
मार्तण्ड तीर्थयात्रा	1 फर.
मे. शिवरात्रि (पंचवटी, दवलैहड़, जम्मू)	21 फर.
देविका स्नान (ऊधमपुर)	21 फर.
मेला पुरमण्डल (जम्मू)	22-23 मार्च
मेला गुप्तगंगा (कफी, अखनूर)	23 मार्च
नवरात्र-पर्व (वैष्णोदेवी)	25 मा.-1 अप्रै.
मेला बाहूफोट (जम्मू)	1 अप्रै.
मेला रामबन	2 अप्रै.
देविका-स्नान (ऊधमपुर)	13 अप्रै.
मे. वैशाखी-हरिमन्दिर -चक रामचन्द, साम्बा	13 अप्रै.
सत्गुरु बाबा कांशीगिरी जी महाराज (सुन्दरबनी)	13-14 अप्रै.
नृसिंह चौदश (ऊधमपुर)	6 मई
मेला मानसर	28-29 मई
मे. क्षीर (खीर) भवानी (तलमुल)	30 मई
सपोरयात्रा (धारलदा, ऊधमपुर)	1 जून
शुद्ध महादेव (ऊधमपुर)	5 जून
वानसुल देवता (चब्बा, रामबन)	20-27 जून
मेला चमलियाल	25 जून
सरथलदेवी यात्रा (किश्तवाड़)	28 जून
मेला शरीक-भवानी	29 जून
मेला हरिप्रयाग (बनी)	1 जुला.
मेला ज्वालामुखी	4 जुला.
मेला रुद्रगंगा (चंद्रेणीदेसा, डोडा)	5 जुला.
श्रावण शिवरात्रि (गाँव चलाई, शिवपुरी, राजगढ़, रामबन)	19 जुला.
मेला नागपंचमी (कास्तीगढ़, डोडा)	25 जुला.
शोपियान यात्रा शुरु	31 जुला.
यात्रा श्रीअमरनाथ गुफा समाप्त	3 अग.
स्वामी शंकराचार्य (श्रीनगर)	3 अग.
कृष्ण-जन्माष्टमी (रामबन)	11 अग.
कैलाश यात्रा प्रारम्भ	17-18 अग.
मेला पात (भद्रवाह)	23-25 अग.
मेला आशापति (मार्तण्ड)	16-17 सितं.
मेला झिड़ी बाबा	30 नवं.
मेला पुरमण्डल (जम्मू)	13 दिसं.
मे. वानसुल देवता (चब्बा, रामबन)	21-28 दिसं.

जैन व्रत-पर्व व उत्सव (2020-21 ई.)

मेरू त्रयोदशी	22 जन. बुध
मर्यादा महोत्सव	1 फर. शनि
जैन महोत्सव (कांगड़ा)	7-9 मार्च
ऋषभदेव जयन्ती	15 मार्च रवि
वरसी तप प्रारम्भ	16 मार्च सोम
ओली तप प्रारम्भ	31 मार्च मंग
आचार्य भिक्षु अभिनिष्क्रमण	2 अप्रै. गुरु
श्रीमहावीर जयन्ती	6 अप्रै. सोम
ओली तप समाप्त	8 अप्रै. बुध
वरसी तप समाप्त	26 अप्रै. रवि
केवलज्ञान दिवस	3 मई रवि
मे. चक्रेश्वरी देवी	5-7 जून
चातुर्मास्य नियम शुरु	5 जुला. रवि
तेरापन्थ स्थापना दिवस	5 जुला. रवि
जैन महोत्सव	18-20 जुला.
पर्युर्षण पर्व प्रारम्भ	16 अग. रवि
सम्वत्सरी महापर्व (पंचमीपक्ष)	23 अग. रवि
श्रीकालू निर्वाण दिवस	24 अग. सोम
आचार्य श्रीतुलसी पट्टारोहण	27 अग. गुरु
आचार्य भिक्षुनिर्वाण दिवस	31 अग. सोम
श्रीमहावीर निर्वाण	14 नवं. शनि
श्रीवीर संवत् 2547 शुरु	15 नवं. रवि
आचार्य श्रीतुलसी जन्म	16 नवं. सोम
ज्ञान पंचमी	19 नवं. गुरु
चातुर्मास्य व्रत समाप्त	30 नवं. सोम
श्रीमहावीर दीक्षा दिवस	10 दिसं. गुरु
मौनी एकादशी	25 दिसं. शुक्र

—(सन् 2021 ई.)—

आचार्य श्रीतुलसी दीक्षा	3 जन. रवि
श्रीपार्श्वनाथ जयन्ती	8 जन. शुक्र
मेरू त्रयोदशी	9 फर. मंग
मर्यादा महोत्सव	19 फर. शुक्र
जैन महोत्सव (कांगड़ा)	26-28 मार्च
ऋषभदेव जयन्ती	3 अप्रै. शनि
वरसी तप प्रारम्भ	4 अप्रै. रवि

मुस्लिम त्यौहार-2020-21 ई.

उर्स मोईनुद्दीन चिश्ती (अजमेर)	26 फ.-2 मा.
जन्म श्रीहजरत अली	9 मार्च सोम
शबे-मिराज	23 मार्च सोम
शबे-बरात	9 अप्रै. गुरु
रमज़ान (रोज़े शुरु)	25 अप्रै. शनि
शहादत-ए-हजरत अली	15 मई शुक्र
शबे-कदर	21 मई गुरु
जमातुल-विदा	22 मई शुक्र
ईद-उल-फितर (मीठी ईद)	25 मई सोम
ईदुलजुहा (बकरीद)	1 अग. शनि
मुहर्रम (हिजरी 1442 शुरु)	21 अग. शुक्र
मुहर्रम (ताजिया)	30 अग. रवि
चेहलुम	8 अक्तू. गुरु
आखिरी-चहार शम्बा	14 अक्तू. बुध
शहादत-ए-इमामहसन	16 अक्तू. शुक्र
ईद-ए-मिलाद	30 अक्तू. शुक्र
ईद-ए-मौलाद	4 नवं. बुध
ग्यारहवीं शरीफ़ (फतिहायज़दहुम)	27 नवं. शुक्र

—(सन् 2021 ई.)—

उर्स मोईनुद्दीन चिश्ती (अजमेर)	14-19 फर.
जन्म श्रीहजरत अली	26 फर. शुक्र
शबे-मिराज	12 मार्च शुक्र
शब-ए-बरात	29 मार्च सोम

*नोट—स्थानभेद एवं अक्षांशभेद के कारण चन्द्रदर्शन (नया, चाँद दिखाई देना की तारीख में अन्तर आ जाने से मुस्लिम त्यौहारों की तारीखों में एक दिन का अन्तर सम्भव है।

क्रिश्चियन त्यौहार

नववर्ष प्रारम्भ	1 जन. बुध
गुड फ्राइडे	10 अप्रै. शुक्र
ईस्टर सण्डे	12 अप्रै. रवि
रोगेशन सण्डे	17 मई रवि
क्रिसमिस डे	25 दिसं. शुक्र

—(सन् 2021 ई.)—

पाम सण्डे	28 मार्च रवि
गुड फ्राइडे	2 अप्रै. शुक्र
ईस्टर सण्डे	4 अप्रै. रवि

भारत सरकार एवं प्रादेशिक सरकारों के अवकाश (सन् 2020-21 ई.)

(इस अवकाश सूची को भारत सरकार की गज़ट-सूची से अवश्य मिला लें।)

श्रीगुरु गोबिन्द सिंह जयं.	2 जन. गु.
मकर संक्रान्ति	14 जन. मं.
स्टेटहुड डे (हिमाचल प्रदेश)	25 जन. श.
गणतन्त्र दिवस (71वाँ)	26 जन. र.
वसन्त-पंचमी	30 जन. गु.
श्रीगुरु रविदास जयन्ती	9 फर. र.
महर्षि दयानन्द सरस्वती जयं.	18 फर. मं.
श्रीमहाशिवरात्रि व्रत	21 फर. शु.
जन्मदिन श्रीहजरत अली	9 मार्च चं.
होला (पं.), होली पर्व	10 मार्च मं.
शहीदी दिवस स. भगत सिंह	23 मार्च चं.
श्रीरामनवमी	2 अप्रै. गु.
श्रीमहावीर जयं. (जैन)	6 अप्रै. चं.
गुड फ्राईडे	10 अप्रै. शु.
वैशाखी (पंजाब)	13 अप्रै. चं.
डॉ. अम्बेदकर जयन्ती.	14 अप्रै. मं.
हिमाचल प्रदेश डे	15 अप्रै. बु.
भगवान् परशुराम जयन्ती	25 अप्रै. श.
श्रम-दिवस, महाराष्ट्र डे	1 मई शु.
श्रीबुद्ध-जयन्ती	7 मई गु.
रविन्द्रनाथ टैगोर जयं.(बंगा)	7 मई गु.
जमातुलविदा	22 मई शु.
महाराणा प्रताप जयन्ती	25 मई चं.
ईद-उल-फितर	25 मई चं.
सन्त कबीर जयन्ती	5 जून शु.
रथयात्रा (पुरी) उड़ीसा	23 जून मं.
महाराजा रणजीत सिंह पुण्यतिथि	28 जून र.
शही. स. ऊधमसिंह (पं.)	31 जुला. शु.
ईद-उल-जुहा (बकरीद)	1 अग. श.
रक्षा बन्धन	3 अग. चं.
श्रीकृष्ण-जन्माष्टमी (वै.)	12 अग. बु.
भारत स्वतन्त्रता दिवस	15 अग. श.
प्रका. श्रीगुरु ग्रन्थ सा., पं.	19 अग. बु.
सिद्धि विनायक व्रत (महाराष्ट्र)	22 अग. श.
बाबा श्रीचन्द्र जयन्ती (पं.)	27 अग. गु.
मुहर्रम (ताजिया)	30 अग. र.
शिक्षक-दिवस	5 सितं. श.
शहीद भगत सिंह जयं. (पं.)	28 सितं. चं.
महात्मा गाँधी जयन्ती	2 अक्तू. शु.
महाराजा अग्रसेन जयन्ती	17 अक्तू. श.
विजयादशमी (दशहरा)	25 अक्तू. र.
ईद-ए-मिलाद	30 अक्तू. शु.
महर्षि वाल्मीकि जयं.	31 अक्तू. श.
हरियाणा-दिवस	1 नवं. र.
व्रत करवा-चौथ	4 नवं. बु.
दीपावली	14 नवं. श.
श्रीविश्वकर्मा दिवस (पं.)	15 नवं. र.
भाई-दूज	16 नवं. चं.
श्रीगुरु नानकदेव जयन्ती	30 नवं. चं.
श्रीगुरु तेग़बहादुर बलिदान (पं.)	19 दिसं. श.
क्रिसमिस डे	25 दिसं. शु.

(सन् 2021 ई.)

मकर संक्रान्ति	14 जन. गु.
श्रीगुरु गोबिन्द सिंह जयं.	20 जन. बु.
स्टेटहुड डे (हिमाचल प्रदेश)	25 जन. चं.
गणतन्त्र दिवस (72वाँ)	26 जन. मं.
वसन्त-पंचमी	16 फर. मं.
जन्म श्रीहजरत अली	26 फर. शु.
श्रीगुरु रविदास जयन्ती	27 फर. श.
महर्षि दयानन्द सरस्वती जयं.	8 मार्च चं.
श्रीमहाशिवरात्रि व्रत	11 मार्च गु.
होला (पं.), होली पर्व	29 मार्च चं.

सिक्ख गुरुपर्व (सन् 2020-21 ई.)

नाम गुरु साहिबान	(प्राचीन परम्परा अनुसार)			(नानकशाही कैलेण्डर अनुसार)		
	जन्मदिन	गुरयाई	ज्योतिजोत	जन्मदिन	गुरयाई	ज्योतिजोत
1. श्रीगुरु नानक देव जी	30 नवं.	जन्म से	12 सितं.	30 नवं.	जन्म से	22 सितं.
2. श्रीगुरु अंगददेव जी	24 अप्रै.	7 सितं.	28 मार्च	18 अप्रै.	18 सितं.	16 अप्रै.
3. श्रीगुरु अमरदास जी	6 मई	25 मार्च	2 सितं.	23 मई	16 अप्रै.	16 सितं.
4. श्रीगुरु रामदास जी	2 नवं.	31 अग.	21 अग.	9 अक्तू.	16 सितं.	16 सितं.
5. श्रीगुरु अर्जुनदेव जी	14 अप्रै.	20 अग.	26 मई	2 मई	16 सितं.	16 जून
6. श्रीगुरु हरगोबिन्द जी	6 जून	15 मई	29 मार्च	5 जुला	11 जून	19 मार्च
7. श्रीगुरु हरिराय जी	7 फर. 20 ई. 25 फर. 21 ई.	22 मार्च, 20 ई. 9 अप्रै., 21 ई.	9 नवं.	31 जन.	14 मार्च	20 अक्तू.
8. श्रीगुरु हरकिशन जी	14 जुला.	9 नवं.	7 अप्रै.	23 जुला.	20 अक्तू.	16 अप्रै.
9. श्रीगुरु तेग़ बहादुर जी	12 अप्रै.	6 अप्रै.	19 दिसं.	18 अप्रै.	16 अप्रै.	24 नवं.
10. श्रीगुरु गोबिन्द सिंह जी	2 जन., 20 ई. 20 जन., 21 ई.	17 दिसं.	19 नवं.	5 जन.	24 नवं.	21 अक्तू.

I. श्रीगुरु ग्रन्थ साहिब जी का प्रथम प्रकाश = 19 अगस्त, 2020 ई. [1 सितम्बर, 2020 ई.-नानकशाही अनुसार]

II. गुरयाई–श्रीगुरु ग्रन्थ साहिब जी = 16 नवंबर, 2020 ई. [20 अक्तूबर, 2020 ई.-नानकशाही अनुसार]

III. खालसा पंथ साजना दिवस = 13 अप्रैल, 2020 ई. [13 अप्रैल, 2020 ई.-नानकशाही अनुसार १ वैशाख]

हिमाचल प्रदेश के मेले व उत्सव (सन् 2020-21 ई.)

श्रीदेवता खुड्डी-जल, (देहूरी, आनी, कुल्लू)	14 जन.
श्रीब्रह्मा (न्यूल, कुल्लू)	20 जन.
वसन्त पंचमी (बिलासपुर)	30 जन.
श्रीमहाशिवरात्रि (मण्डी)	21 फर.-2 मा.
मेला काठगढ़	21 फर.
मे. रिवालसर (मण्डी)	21 फर.
मे. स्वर्गाश्रम (नूरपुर)	22 फर.
मे. बैजनाथ (कांगड़ा)	23 फर.
मे. बड़भाग सिंह (ऊना)	3-9 मार्च
सुजानपुर टिहरा (हमीरपुर)	9-13 मार्च
होला मेला (पांओटा साहिब)	10 मार्च
मेला बाबा बालकनाथ शुरु	14 मार्च
मेला कनिहारा (धर्मशाला) शुरु	14 मार्च
मेला नलवाड़ (बिलासपुर)	17-22 मार्च
मे. नलवाड़ (सुन्दरनगर)	22-29 मार्च
मे. नयनादेवी (बिलासपुर)	25 मा.-2 अप्रै.
बालासुन्दरी (सिरमौर)	25 मा.-8 अप्रै.
ललवाड़ (सुन्दरनगर)	27 मा.-1 अप्रै.
मे. नलवाड़ (बरच्छवाड़, सरकाघाट)	28 मा.-3 अ.
मेला लाहौल (मण्डी)	31 मार्च
मे. श्रीदुर्गाष्टमी (कांगड़ादेवी)	1 अप्रै.
मेला रोहरू (महासू)	4-5 अप्रै.
मे. नलवाड़ (घुमारवीं)	5-9 अप्रै.
मे. मारकण्डा (बिलासपुर)	12-15 अप्रै.
मेला नैनादेवी (धर्मपुर, बनवार)	12 अप्रै.
कालेश्वर महादेव (देहरा, काँगड़ा)	13 अप्रै.
मे. रिवालसर (मण्डी)	13 अप्रै.
मेला बिशू (सिरमौर) प्रारम्भ	13 अप्रै.
मे. राजगढ़ (सिरमौर)	13-15 अप्रै.
मे. चचौंहली (जगतसुख, कुल्लू)	13-15 अप्रै.
मे. हुरला (कुल्लू)	16-17 अप्रै.
मे. त्राम्बली (कुल्लू)	16-17 अप्रै.
मे. खनाणी (गां-शिम., कुल्लू)	19-20 अप्रै.
मे. माहूनाग (करसोग)	27-28 अप्रै.
मे. पीपल-जातर (कुल्लू)	28-30 अप्रै.
मेला स्वीटी	30 अप्रै.
हरिहरघाट (मनीकरण, कुल्लू)	3-7 मई
मेला आनी (कुल्लू)	7-9 मई
मे. नारकण्डा (बिलासपुर)	13-15 मई
मे. ढुंगरी जातर (मनाली)	14-15 मई
मेला बंजार (कुल्लू)	14-18 मई
मे. घाघरस (बिलासपुर)	14 मई
मे. श्यामकाली (सरकाघाट)	15 मई
मे. कमलाहिया (धर्मपुर)	17 मई
मे. शाढ़ी जातर (नगर)	18-23 मई
पशु मेला (हमीरपुर)	18 मई
मे. लगदेवी (हमीरपुर)	22 मई
मे. शीतलादेवी (सुन्दरनगर)	22-24 मई
मे. मिरपरी (मण्डी)	24-25 मई
मे. मुरारीदेवी (सरकाघाट)	25-27 मई
मे. ग्राम पंजगाई (बिलासपुर)	29-30 मई
मे. स्थूल-मढोल	1-4 जून
मे. पीपलू (हमीरपुर)	2 जून
मे. नौवाही देवी (सरकाघाट)	14 जून
मेला बाड़ी-सरयांझ (सोलन)	14 जून
मेला उहल (हमीरपुर)	14 जून
भुन्तर मेला (कुल्लू)	15-17 जून
मे. माँ शूलिनी (सोलन)	19-21 जून
मे. टौणी-देवी (हमीरपुर)	23 जून
मेला त्रिमौणी (सिरमौर)	5 जुला
वन-महोत्सव प्रारम्भ	10 जुला
मेला नागनी (नूरपुर)	16 जुला
मे. सिद्ध बाबा शिब्बो (ज्वाली)	19 जुला.
मेला मिंजर (चम्बा)	26 जुला
मेला छिन्नमस्तिका (चिन्तपूर्णी)	21-27 जुला
मेला चामुण्डादेवी	21-27 जुला
श्रीदेवता खुड्डी जल, गाँव-देहरी, तह-आनी, जिला-कुल्लू	3-14 अग.
मे. जन्माष्टमी (कलोह, सिरमौर)	11-12 अग.
मेला बंद्राल (कुल्लू)	13 अग.
मेला गुग्गा-नवमी (बिलासपुर)	13 अग.
मे. संतोषी माता (लदरौर)	16 अग.
मे. अम्बिकादेवी (सदर, मण्डी)	17 अग.
गणपति उत्सव (मण्डी)	22 अ.-1 सितं.
मे. महासू (शिलाई, सिरमौर)	22-23 अग.
हिमाचल गणेश-उत्सव अम्बिकानगर, अम्ब (ऊना)	22 अ.-1 सितं.
मे. गुग्गामाड़ी (सुबाथू, सोलन)	25-28 अग.
यात्रा मनीमहेश (चम्बा) शुरु	25 अग.
मेला वामन द्वादशी (नाहन)	29 अग.
मेला रूद्र घड़ीकूपड़ (रोहड़ू, शिमला)	9 सितं.
मेला नलवाड़ (चिच्चोट)	16-23 सितं.
मेला लदरौर (हमीरपुर)	16 सितं.
मेला सायर (अर्की)	16-17 सितं.
मेला चामुण्डादेवी (कांगड़ा)	17-24 अक्तू.
मेला बगुलामुखी (वनखण्डी)	17-24 अक्तू.
मेला रामलीला	17-24 अक्तू.
मेला तारादेवी (शिमला)	23-25 अक्तू.
मेला ज्वालामुखी	23-24 अक्तू.
मे. शीतलामाता (मच्छिभवन, कांगड़ा)	23 अक्तू
मेला दशहरा (कुल्लू)	25-31 अक्तू.
मेला दशहरा (अर्की)	25 अक्तू.
मेला लावी (रामपुर बुशैहर)	11-14 नवं.
मेला काली-बाड़ी (शिमला)	14-15 नवं.
मेला रेणुका (नाहन, सिरमौर)	25-26 नवं.
मे. बाबा रुद्रीनन्दनारी (ऊना)	25-30 नवं.
मेला जोगी-पांगा (ऊना)	30 नवं.
बुढ़ी दीपावली (शिलाई, सिरमौर)	14-17 दिसं.

(सन् 2021 ई०)

श्रीदेवता खुड्डी-जल, (देहूरी, आनी, कुल्लू)	14 जन.
मे. ब्रह्मा (न्यूल, कुल्लू)	20 जन.
मे. वसन्त पंचमी (बिलासपुर)	16 फर.
श्रीमहाशिवरात्रि (मण्डी)	11-20 मार्च
मेला काठगढ़	11 मार्च
मे. रिवालसर (मण्डी)	11 मार्च
मे. स्वर्गाश्रम (नूरपुर)	12 मार्च
मे. बैजनाथ (कांगड़ा)	13 मार्च
मेला बाबा बालकनाथ शुरु	14 मार्च
मे. कनिहारा (धर्मशाला) शुरु	14 मार्च
मेला नलवाड़ (बिलासपुर)	17-22 मार्च
मे. बड़भाग सिंह (ऊना)	22-28 मार्च
मेला नलवाड़ (सुन्दरनगर)	22-29 मार्च
मेला सुजानपुर टिहरा (हमीरपुर)	28 मा.-1 अ.
मे. नलवाड़ (बरच्छवाड़, सरकाघाट)	28 मा.-3 अ.
होला मेला (पांओटा साहिब)	29 मार्च

जम्मू-कश्मीर के मेले

लोहड़ी पर्व	13 जन.
मार्तण्ड तीर्थयात्रा	1 फर.
मे. शिवरात्रि (पंचवटी, दवलैहड़, जम्मू)	21 फर.
देविका स्नान (ऊधमपुर)	21 फर.
मेला पुरमण्डल (जम्मू)	22-23 मार्च
मेला गुप्तगंगा (कफी, अखनूर)	23 मार्च
नवरात्र-पर्व (वैष्णोदेवी)	25 मा.-1 अप्रै.
मेला बाहूफोट (जम्मू)	1 अप्रै.
मेला रामबन	2 अप्रै.
देविका-स्नान (ऊधमपुर)	13 अप्रै.
मे. वैशाखी-हरिमन्दिर -चक रामचन्द, साम्बा	13 अप्रै.
सतगुरु बाबा कांशीगिरी जी महाराज (सुन्दरबनी)	13-14 अप्रै.
नृसिंह चौदश (ऊधमपुर)	6 मई
मेला मानसर	28-29 मई
मे. क्षीर (खीर) भवानी (तलमुल)	30 मई
सपोरयात्रा (धारलदा, ऊधमपुर)	1 जून
शुद्ध महादेव (ऊधमपुर)	5 जून
वानसुल देवता (चब्बा, रामबन)	20-27 जून
मेला चमलियाल	25 जून
सरथलदेवी यात्रा (किश्तवाड़)	28 जून
मेला शरीक-भवानी	29 जून
मेला हरिप्रयाग (बनी)	1 जुला.
मेला ज्वालामुखी	4 जुला.
मेला रुद्रगंगा (चंद्रेणीदेसा, डोडा)	5 जुला.
श्रावण शिवरात्रि (गाँव चलाई, शिवपुरी, राजगढ़, रामबन)	19 जुला.
मेला नागपंचमी (कास्तीगढ़, डोडा)	25 जुला.
शोपियान यात्रा शुरु	31 जुला.
यात्रा श्रीअमरनाथ गुफा समाप्त	3 अग.
स्वामी शंकराचार्य (श्रीनगर)	3 अग.
कृष्ण-जन्माष्टमी (रामबन)	11 अग.
कैलाश यात्रा प्रारम्भ	17-18 अग.
मेला पात (भद्रवाह)	23-25 अग.
मेला आशापति (मार्तण्ड)	16-17 सितं.
मेला झिड़ी बाबा	30 नवं.
मेला पुरमण्डल (जम्मू)	13 दिसं.
मे. वानसुल देवता (चब्बा, रामबन)	21-28 दिसं.

होली मेला (पाओंटा साहिब) 29 मार्च | म. वानसुल देवता (चम्बा, रामबन) 21-28 दिस.

जैन व्रत-पर्व व उत्सव (2020-21 ई.)

मेरू त्रयोदशी	22 जन. बुध
मर्यादा महोत्सव	1 फर. शनि
जैन महोत्सव (कांगड़ा)	7-9 मार्च
ऋषभदेव जयन्ती	15 मार्च रवि
वरसी तप प्रारम्भ	16 मार्च सोम
ओली तप प्रारम्भ	31 मार्च मंग
आचार्य भिक्षु अभिनिष्क्रमण	2 अप्रै. गुरु
श्रीमहावीर जयन्ती	6 अप्रै. सोम
ओली तप समाप्त	8 अप्रै. बुध
वरसी तप समाप्त	26 अप्रै. रवि
केवलज्ञान दिवस	3 मई रवि
मे. चक्रेश्वरी देवी	5-7 जून
चातुर्मास्य नियम शुरु	5 जुला. रवि
तेरापन्थ स्थापना दिवस	5 जुला. रवि
जैन महोत्सव	18-20 जुला.
पयुर्षण पर्व प्रारम्भ	16 अग. रवि
सम्वत्सरी महापर्व (पंचमीपक्ष)	23 अग. रवि
श्रीकालू निर्वाण दिवस	24 अग. सोम
आचार्य श्रीतुलसी पट्टारोहण	27 अग. गुरु
आचार्य भिक्षुनिर्वाण दिवस	31 अग. सोम
श्रीमहावीर निर्वाण	14 नवं. शनि
श्रीवीर संवत् 2547 शुरु	15 नवं. रवि
आचार्य श्रीतुलसी जन्म	16 नवं. सोम
ज्ञान पंचमी	19 नवं. गुरु
चातुर्मास्य व्रत समाप्त	30 नवं. सोम
श्रीमहावीर दीक्षा दिवस	10 दिसं. गुरु
मौनी एकादशी	25 दिसं. शुक्र
—(सन् 2021 ई.)—	
आचार्य श्रीतुलसी दीक्षा	3 जन. रवि
श्रीपार्श्वनाथ जयन्ती	8 जन. शुक्र
मेरू त्रयोदशी	9 फर. मंग
मर्यादा महोत्सव	19 फर. शुक्र
जैन महोत्सव (कांगड़ा)	26-28 मार्च
ऋषभदेव जयन्ती	3 अप्रै. शनि
वरसी तप प्रारम्भ	4 अप्रै. रवि

मुस्लिम त्यौहार-2020-21 ई.

उर्स मोईनुद्दीन चिश्ती (अजमेर)	26 फ.-2 मा.
जन्म श्रीहजरत अली	9 मार्च सोम
शबे-मिराज	23 मार्च सोम
शबे-बरात	9 अप्रै. गुरु
रमज़ान (रोज़े शुरु)	25 अप्रै. शनि
शहादत-ए-हजरत अली	15 मई शुक्र
शबे-कदर	21 मई गुरु
जमातुल-विदा	22 मई शुक्र
ईद-उल-फितर (मीठी ईद)	25 मई सोम
ईदुलजुहा (बकरीद)	1 अग. शनि
मुहर्रम (हिजरी 1442 शुरु)	21 अग. शुक्र
मुहर्रम (ताजिया)	30 अग. रवि
चेहलुम	8 अक्तू. गुरु
आखिरी-चहार शम्बा	14 अक्तू. बुध
शहादत-ए-इमामहसन	16 अक्तू. शुक्र
ईद-ए-मिलाद	30 अक्तू. शुक्र
ईद-ए-मौलाद	4 नवं. बुध
ग्यारहवीं शरीफ़ (फतिहायज़दहुम)	27 नवं. शुक्र
—(सन् 2021 ई.)—	
उर्स मोईनुद्दीन चिश्ती (अजमेर)	14-19 फर.
जन्म श्रीहजरत अली	26 फर. शुक्र
शबे-मिराज	12 मार्च शुक्र
शब-ए-बरात	29 मार्च सोम

*नोट—स्थानभेद एवं अक्षांशभेद के कारण चन्द्रदर्शन (नया, चाँद दिखाई देना की तारीख में अन्तर आ जाने से मुस्लिम त्यौहारों की तारीखों में एक दिन का अन्तर सम्भव है।

क्रिश्चियन त्यौहार

नववर्ष प्रारम्भ	1 जन. बुध
गुड फ्राइडे	10 अप्रै. शुक्र
ईस्टर सण्डे	12 अप्रै. रवि
रोगेशन सण्डे	17 मई रवि
क्रिसमिस डे	25 दिसं. शुक्र
—(सन् 2021 ई.)—	
पाम सण्डे	28 मार्च रवि
गुड फ्राइडे	2 अप्रै. शुक्र
ईस्टर सण्डे	4 अप्रै. रवि

भारत सरकार एवं प्रादेशिक सरकारों के अवकाश (सन् 2020-21 ई.)

(इस अवकाश सूची को भारत सरकार की गज़ट-सूची से अवश्य मिला लें।)

श्रीगुरु गोबिन्द सिंह जयं.	2 जन. गु.
मकर संक्रान्ति	14 जन. मं.
स्टेटहुड डे (हिमाचल प्रदेश)	25 जन. श.
गणतन्त्र दिवस (71वाँ)	26 जन. र.
वसन्त-पंचमी	30 जन. गु.
श्रीगुरु रविदास जयन्ती	9 फर. र.
महर्षि दयानन्द सरस्वती जयं.	18 फर. मं.
श्रीमहाशिवरात्रि व्रत	21 फर. शु.
जन्मदिन श्रीहजरत अली	9 मार्च चं.
होला (पं.), होली पर्व	10 मार्च मं.
शहीदी दिवस स. भगत सिंह	23 मार्च चं.
श्रीरामनवमी	2 अप्रै. गु.
श्रीमहावीर जयं. (जैन)	6 अप्रै. चं.
गुड फ्राईडे	10 अप्रै. शु.
वैशाखी (पंजाब)	13 अप्रै. चं.
डॉ. अम्बेदकर जयन्ती.	14 अप्रै. मं.
हिमाचल प्रदेश डे	15 अप्रै. बु.
भगवान् परशुराम जयन्ती	25 अप्रै. श.
श्रम-दिवस, महाराष्ट्र डे	1 मई शु.
श्रीबुद्ध-जयन्ती	7 मई गु.
रविन्द्रनाथ टैगोर जयं.(बंगा)	7 मई गु.
जमातुलविदा	22 मई शु.
महाराणा प्रताप जयन्ती	25 मई चं.
ईद-उल-फितर	25 मई चं.
सन्त कबीर जयन्ती	5 जून शु.
रथयात्रा (पुरी) उड़ीसा	23 जून मं.
महाराजा रणजीत सिंह पुण्यतिथि	28 जून र.
शही. स. ऊधमसिंह (पं.)	31 जुला. शु.
ईद-उल-जुहा (बकरीद)	1 अग. श.
रक्षा बन्धन	3 अग. चं.
श्रीकृष्ण-जन्माष्टमी (वै.)	12 अग. बु.
भारत स्वतन्त्रता दिवस	15 अग. श.
प्रका. श्रीगुरु ग्रन्थ सा., पं.	19 अग. बु.
सिद्धि विनायक व्रत (महाराष्ट्र)	22 अग. श.
बाबा श्रीचन्द्र जयन्ती (पं.)	27 अग. गु.
मुहर्रम (ताजिया)	30 अग. र.
शिक्षक-दिवस	5 सितं. श.
शहीद भगत सिंह जयं. (पं.)	28 सितं. चं.
महात्मा गाँधी जयन्ती	2 अक्तू. शु.
महाराजा अग्रसेन जयन्ती	17 अक्तू. श.
विजयादशमी (दशहरा)	25 अक्तू. र.
ईद-ए-मिलाद	30 अक्तू. शु.
महर्षि वाल्मीकि जयं.	31 अक्तू. श.
हरियाणा-दिवस	1 नवं. र.
व्रत करवा-चौथ	4 नवं. बु.
दीपावली	14 नवं. श.
श्रीविश्वकर्मा दिवस (पं.)	15 नवं. र.
भाई-दूज	16 नवं. चं.
श्रीगुरु नानकदेव जयन्ती	30 नवं. चं.
श्रीगुरु तेग़बहादुर बलिदान (पं.)	19 दिसं. श.
क्रिसमिस डे	25 दिसं. शु.
(सन् 2021 ई.)	
मकर संक्रान्ति	14 जन. गु.
श्रीगुरु गोबिन्द सिंह जयं.	20 जन. बु.
स्टेटहुड डे (हिमाचल प्रदेश)	25 जन. चं.
गणतन्त्र दिवस (72वाँ)	26 जन. मं.
वसन्त-पंचमी	16 फर. मं.
जन्म श्रीहजरत अली	26 फर. शु.
श्रीगुरु रविदास जयन्ती	27 फर. श.
महर्षि दयानन्द सरस्वती जयं.	8 मार्च चं.
श्रीमहाशिवरात्रि व्रत	11 मार्च गु.
होला (पं.), होली पर्व	29 मार्च चं.

सिक्ख गुरुपर्व (सन् 2020–21 ई.)

नाम गुरु साहिबान	(प्राचीन परम्परा अनुसार)			(नानकशाही कैलेण्डर अनुसार)		
	जन्मदिन	गुरयाई	ज्योतिजोत	जन्मदिन	गुरयाई	ज्योतिजोत
1. श्रीगुरु नानक देव जी	30 नवं.	जन्म से	12 सितं.	30 नवं.	जन्म से	22 सितं.
2. श्रीगुरु अंगददेव जी	24 अप्रै.	7 सितं.	28 मार्च	18 अप्रै.	18 सितं.	16 अप्रै.
3. श्रीगुरु अमरदास जी	6 मई	25 मार्च	2 सितं.	23 मई	16 अप्रै.	16 सितं.
4. श्रीगुरु रामदास जी	2 नवं.	31 अग.	21 अग.	9 अक्तू	16 सितं.	16 सितं.
5. श्रीगुरु अर्जुनदेव जी	14 अप्रै.	20 अग.	26 मई	2 मई	16 सितं.	16 जून
6. श्रीगुरु हरगोबिन्द जी	6 जून	15 मई	29 मार्च	5 जुला	11 जून	19 मार्च
7. श्रीगुरु हरिराय जी	7 फर. 20 ई. 25 फर. 21 ई.	22 मार्च, 20 ई. 9 अप्रै., 21 ई.	9 नवं.	31 जन.	14 मार्च	20 अक्तू
8. श्रीगुरु हरकिशन जी	14 जुला.	9 नवं.	7 अप्रै.	23 जुला.	20 अक्तू	16 अप्रै.
9. श्रीगुरु तेग़ बहादुर जी	12 अप्रै.	6 अप्रै.	19 दिसं.	18 अप्रै.	16 अप्रै.	24 नवं.
10. श्रीगुरु गोबिन्द सिंह जी	2 जन., 20 ई. 20 जन., 21 ई.	17 दिसं.	19 नवं.	5 जन.	24 नवं.	21 अक्तू

I. **श्रीगुरु ग्रन्थ साहिब जी का प्रथम प्रकाश** = 19 अगस्त, 2020 ई. [1 सितम्बर, 2020 ई.-नानकशाही अनुसार]
II. **गुरयाई–श्रीगुरु ग्रन्थ साहिब जी** = 16 नवंबर, 2020 ई. [20 अक्तूबर, 2020 ई.-नानकशाही अनुसार]
III. **खालसा पंथ साजना दिवस** = 13 अप्रैल, 2020 ई. [13 अप्रैल, 2020 ई.-नानकशाही अनुसार १ वैशाख]

वि. संवत् २०७७ में विभिन्न सम्वतों का प्रारम्भ

वर्ष का राजा–बुध **वर्ष का मन्त्री–चन्द्र**

- ☐ वि. संवत् (प्रमादी) २०७७ का शुभारम्भ = 25 मार्च, बुधवार, 2020 ई.
- ☐ कल्पादि से गत वर्ष = 1,97,29,49,121 वर्ष
- ☐ सृष्टि से आरम्भ संवत् = 1,95,58,85,121 वर्ष
- ☐ इनमें सतयुग की कुल समयावधि = 17,28,000 वर्ष
- ☞ त्रेतायुग की कुल समय अवधि = 12,96,000 वर्ष
- ☞ द्वापर युग की कुल समय अवधि = 8,64,000 वर्ष
- ☞ कलियुग की कुल समय अवधि = 4,32,000 वर्ष
- ☐ भोग्य कलि वर्ष (Balance) = 4,26,879 वर्ष
- ☐ २०७७ में कलि वर्ष = 5121वां वर्ष (25 जुलाई, शनिवार, 2020 ई.)
- ☐ श्रीकृष्ण जन्म संवत् = 5256 प्रा. (11 अगस्त, मंगलवार, 2020 ई.)
- ☐ सप्तर्षि संवत् 5096 प्रारम्भ = 25 मार्च, बुधवार, 2020 ई.
- ☐ महात्मा बुद्ध सम्वत् 2644 प्रा. = 6 मई, बुधवार, 2020 ई.
- ☐ महावीर निर्वाण संवत् 2547 प्रा. = 15 नवम्बर, रविवार, 2020 ई.
- ☐ सन् ईस्वी (क्रिश्चियन) 2021 प्रारम्भ = 1 जनवरी, शुक्रवार, 2021 ई.
- ☐ शाका संवत् 1943 प्रारम्भ = 22 मार्च, सोमवार, 2021 ई.
- ☐ हिजरी सन् 1442 (मुस्लिम) प्रा. = 21 अगस्त, शुक्रवार, 2020 ई.
- ☐ बंगाली सन् 1427 प्रारम्भ = 13 अप्रैल, सोमवार, 2020 ई.
- ☐ नानकशाही संवत् 553 प्रारम्भ = 14 मार्च, रविवार, 2021 ई.
- ☐ खालसा संवत् 322 प्रारम्भ = 13 अप्रैल, सोमवार, 2020 ई.
- ☐ जय हिन्द संवत् 74वाँ प्रारम्भ = 15 अगस्त, शनिवार, 2020 ई.
- ☐ 'पंचांगदिवाकर' का प्रवेश वर्ष 145वाँ = 25 मार्च, बुधवार, 2020 ई.

सन् 2020–21 ई. में संक्रान्ति, पूर्णिमा, अमावसादि—एक दृष्टि में

(मास) 2020–21↓	संक्रान्ति	एकादशी व्रत	प्रदोष व्रत	सत्य–नारायण व्रत	पूर्णिमा (उदय व्या.)	श्रीगणेश चतुर्थी	अमावस (स्नानदानार्थ)
जनवरी	14 (माघ)	6, 20	8, 22	10	10	13	24
फरवरी	13 (फाल्गु.)	5, 19	7, 20	8	9	12	23
मार्च	14 (चैत्र)	6,20 (वै.)	7, 21	9	9	12	24
अप्रैल	13 (वैशा.)	4, 18	5, 20	7	8	11	22-23
मई	14 (ज्ये.)	4 (वै.),18	5, 20	6	7	10	22
जून	14 (आषा.)	2, 17	3, 18	5	5	8	21
जुलाई	16 (श्राव.)	1,16,30	2, 18	4	5	8	20
अगस्त	16 (भाद्र.)	15, 29	1,16,30	3	3	7	19
सितम्बर	16 (आश्वि.)	13, 27	15, 29	1	2	5	17
अक्तूबर	17 (कार्ति.)	13, 27	14, 28	1, 31	1, 31	5	16
नवम्बर	15 (मार्ग.)*	11, 26	13, 27	29	30	4	15
दिसम्बर	15 (पौष)	11(वै.),25	12, 27	29	30	3	14
जनवरी(21)	14 (माघ)	9, 24	10, 26	28	28	2, 31	13
फरवरी(21)	12 (फाल्गु.)	8, 23	9, 24	26	27	–	11
मार्च (21)	14 (चैत्र)	9, 25	10, 26	28	28	2, 31	13
अप्रैल (21)	13 अप्रै.(वैशा.)	7	9	–	–	–	12

*नोट–स्थानभेद के अनुसार मार्गशीर्ष संक्रान्ति 16 नवम्बर (१ प्रविष्टे मार्ग.) को भी होगी। (स्पष्टता के लिए देखें पृष्ठ 25)

आगामी वि. संवत् २०७८ के सम्भावित व्रत-पर्व

(सन् 2021-22 ई.)

चैत्र नवरात्र शुरु	13 अप्रै. मं.
वैशाख संक्रान्ति	13 अप्रै. मं.
कुम्भ महापर्व (हरिद्वार)	14 अप्रै. बु.
श्रीदुर्गाष्टमी	20 अप्रै. मं.
श्रीरामनवमी	21 अप्रै. बु.
श्रीमहावीर जयंती(जैन)	25 अप्रै. र.
अक्षय तृतीया	14 मई शु.
श्रीबुद्ध जयन्ती	26 मई बु.
श्रीगङ्गा दशहरा पर्व	20 जून र.
गुरु पूर्णिमा	23 जुला. शु.
दुर्गाष्टमी (मे. चिंतपूर्णी)	15 अग. र.
रक्षा-बन्धन	22 अग. र.
श्रीकृष्ण जन्माष्टमी व्रत	30 अग. चं.
सिद्धि विनायक व्रत	10 सितं. शु.
श्राद्ध प्रारंभ	21 सितं. मं.
श्राद्ध समाप्त	6 अक्तू. बु.
शरद् नवरात्रे प्रारंभ	7 अक्तू. गु.
श्रीदुर्गाष्टमी	13 अक्तू. बु.
दशहरा(विजयादशमी)	15 अक्तू. शु.
शरद् पूर्णिमा व्रत	19 अक्तू. मं.
करवा-चौथ व्रत	24 अक्तू. र.
दीपावली	4 नवं. गु.
भाई दूज	6 नवं. श.
श्रीगुरु नानक जयं.	19 नवं. शु.
श्रीगीता जयन्ती	14 दिसं. मं.
(सन् 2022 ई.)	
मकर संक्रान्ति	14 जन. शु.
श्रीवसन्त पंचमी	5 फर. श.
श्रीगुरु रविदास जयं.	16 फर. बु.
श्रीमहाशिवरात्रि व्रत	1 मार्च मं.
होलिका दहन	17 मार्च गु.

'लघु दिवाकर पंचाँग'—वि. संवत् २०७७

गतवर्षों की भान्ति इस वर्ष भी लघु दिवाकर पंचांग प्रकाशित हो चुका है, जिसमें '**पंचांगदिवाकर**' की आवश्यक बहुमूल्य सामग्री जैसे-जैसे 24 पक्ष, घण्टे मिण्टों में तिथ्यादि पंचांग, विवाह-मुण्डनादि मुहूर्त्त, व्रत-पर्व, ग्रहण, मिलान सारिणी आदि सम्मिलित रहती है। आज ही स्थानीय बुकसेलर से अपनी प्रति प्राप्त करें अथवा हमसे वी.पी.पी. द्वारा मंगवाएं– **मूल्य–35 रु.**

जनरल बुक डिपो, [illegible] – 144008 (पंजाब)

कुम्भ महापर्व-हरिद्वार (14 अप्रैल, बुधवार, सन् 2021 ई.)

कुम्भ राशि पर बृहस्पति का और मेष राशि पर सूर्य का योग होने पर हरिद्वार में कुम्भ-महापर्व का आयोजन किया जाता है। तदनुसार आगामी वर्ष (सन् 2021 ई.) हरिद्वार के पावन तीर्थ पर कुम्भ-महापर्व का आयोजन होने जा रहा है। कुम्भ-महापर्व भारतीय संस्कृति एवं हिन्दु समाज का महान् एवं अद्वितीय महापर्व है। इस महापर्व पर भारत से ही नहीं, अपितु विश्व के अनेक देशों से भी असंख्य श्रद्धालु एवं धर्मपरायण लोग एकत्र होकर गंगा जी के तट पर स्नान, जप, तप, दान आदि करके अपने जीवन को धन्य करते हैं। इस महापर्व का **मुख्य शाही स्नान 14 अप्रैल, बुधवार, सन् 2021 ई.** (वैशाख संक्रान्ति की पुण्यकाल तिथि) को होगा। [यद्यपि वि. संवत् 2078 में वैशाख संक्रान्ति का दिन 13 अप्रैल, मंगलवार है, परन्तु अर्द्धरात्रि के बाद संक्रान्ति प्रवेश होने से संक्रान्ति के स्नान, दानादि का पुण्यकाल 14 अप्रैल, बुधवार को होगा, अतएव कुम्भ महापर्व का मुख्य शाही स्नान भी 14 अप्रैल, 2021 ई. को मान्य होगा।]

कुम्भ-महापर्व के स्नान, दान, जपानुष्ठान का लाभ एवं सिद्ध महापुरुषों के सत्संग का विशेष पुण्य लाभ प्राप्त करने के लिए धर्मपरायण श्रद्धालु साधु लोग कुम्भ महापर्व के प्रमुख स्नान दिन से लगभग तीन मास पूर्व ही श्रीगङ्गा जी (हरिद्वार, ऋषिकेश आदि) के तटों पर अस्थायी तौर पर निवास करना आरम्भ कर देते हैं। कुम्भ-महापर्व के मुख्य स्नान दिन (14 अप्रैल, 2021 ई., बुधवार) से पहिले और पश्चात् की कुछ पुण्य तिथियां होंगी, जो स्नान-दान के लिए कुम्भ-महापर्व की भान्ति ही विशेष पुण्य-प्रदायक रहेंगी-

◆ सन् 2021 ई. में कुम्भ-महापर्व की पुण्य स्नान-तिथियाँ ◆

(1) मकर-संक्रान्ति-14 जनवरी, गुरुवार, (2) पौष पूर्णिमा-28 जनवरी, गुरुवार, (3) श्रीगणेश संकष्ट चतुर्थी-31 जनवरी, रविवार, (4) माघ (मौनी) अमावस (महोदय-योग)-11 फरवरी, गुरुवार, (5) वसन्त-पंचमी-16 फरवरी, मंगलवार, (6) माघ पूर्णिमा-27 फरवरी, शनिवार, (7) श्रीमहाशिवरात्रि-स्नान-11 मार्च, गुरुवार, (8) महाविषुव दिन स्नान-20 मार्च, शनिवार, (9) फाल्गुन-पूर्णिमा-28 मार्च, रविवार, (10) वारुणी-पर्व स्नान-8 अप्रैल, गुरुवार, **(11) सोमवती (चैत्री) अमावस-12 अप्रैल, सोमवार,** (12) चैत्र शुक्ल प्रतिपदा-13 अप्रैल, मंगलवार, **(13) वैशाख संक्रान्ति-प्रमुख शाही-स्नान (14 अप्रैल, बुधवार),** (14) श्रीरामनवमी-(शाही स्नान)-21 अप्रैल, बुधवार, (15) चैत्र पूर्णिमा-27 अप्रैल, मंगलवार, (16) वैशाख अमावस-11 मई, मंगलवार, **(17) अक्षय-तृतीया (शाही स्नान)-14 मई, शुक्रवार।**

ध्यान रहे, 6 अप्रैल, मंगलवार, 2021 ई. से गुरु के कुम्भ राशि में प्रवेश होने के बाद ही कुम्भ-महापर्व का विशेष माहात्म्य प्रारम्भ होगा, परन्तु स्नान, दानादि, मास-स्नान का महत्त्व 14 जनवरी, 2021 ई. से प्रारम्भ होगा। 12 अप्रैल, 2021 ई. को सोमवती अमावस्या भी पुण्यप्रदा तिथि होने के कारण इस दिन भी शाही स्नान की उद्घोषणा की जा सकती है। क्योंकि शाही-स्नान की तिथियों का निर्णय विभिन्न आखाड़ा-परिषदों द्वारा ही किया जाता है।

कुम्भ-महापर्व (हरिद्वार) के स्नान, दान, माहात्म्य, जपानुष्ठान, कथा, आध्यात्मिक महत्त्व, गङ्गा-स्तुति आदि के सम्बन्ध में विशिष्ट एवं विस्तृत जानकारी के लिए आगामी वि. संवत् २०७८ (सन् 2021-22 ई.) के **पंचांगदिवाकर** का अवलोकन करें।

सोमवती अमावस्या का माहात्म्य (2020-21 ई.)

सोमवार से युक्त अमावस्या का शास्त्रों में विशेष माहात्म्य कहा गया है। **स्कन्द पुराण** के अनुसार सोमवार और अमावस्या का योग कभी-कभी होता है। इस दिन भगवान् शिव के दर्शन करके पूजन आदि करने का विशेष महत्त्व होता है। विशेषकर सोमेश्वर महादेव की पूजार्चना करने से कोटि (करोड़ों) यज्ञों का फल प्राप्त होता है-

अमासोमेन संयुक्ता कदाचिद् यदि लभ्यते।
तस्यां सोमेश्वरं दृष्ट्वा कोटियज्ञफलं लभेत्॥

सोमवती अमावस्या को तीर्थ स्नान, जप, पाठ एवं ब्राह्मणों को भोजन, वस्त्र, दक्षिणादि सहित दान करना विशेष पुण्यप्रद माना गया है-

सोमवारे स्वमावस्या तत्रैव बहुपुण्यदा। विप्राणां भोजनं देयं तत्र पुण्यफलेप्सुभिः॥

पुरुषार्थ-चिन्तामणि के अनुसार तो अमावस्या यदि सोमवार या **मंगलवार** अथवा **गुरुवार** को हो तो उस योग के पर्व को **पुष्कर** योग कहते हैं। इन योगों का फल सूर्यग्रहण में किए हुए स्नान, दान-पुण्य आदि से भी सौ गुणा अधिक माना गया है।

अमा सोमे तथा भौमे गुरुवारे यदा भवेत्। तत्पर्व पुष्करं नाम सूर्यपर्वशताधिकम्॥

सोमवती अमावस के पर्व पर हरिद्वार, कुरुक्षेत्र, प्रयाग, वाराणसी, गया जी, पुष्कर, आदि तीर्थों पर स्नान, दान, जपादि अनुष्ठान का विशेष माहात्म्य कहा गया है।

सिक्ख धर्म के अनुसार भी अमृतसर (श्री हरिमन्दिर साहिब), आनन्दपुर साहिब, कीरतपुर साहिब आदि तीर्थों पर भी अमावस को स्नान-दानादि का विशेष माहात्म्य होता है।

सोमवती अमावस्या के योग में, यदि चन्द्रमा अश्विनी, कृतिका, पुनर्वसु, पुष्य, रोहिणी, विशाखा, मघा, उ.फा., मूला, उ.षा., श्रवण या उ.भा.-इन नक्षत्रों में से किसी एक नक्षत्र में संचरित हो, तो ऐसे योग में तैयार की (जड़ी-बूटियों से निर्मित) गई औषधि अनेक प्रकार के कायिक एवं मानसिक रोगों में लाभकारी होती है। इसके अतिरिक्त **सोमवती अमावस के** विशिष्ट योग में पितृ-दोष की शान्ति, धन/सम्पदा सम्बन्धी परेशानियाँ, लड़के या लड़की के विवाह में विलम्ब, सन्तान कष्ट आदि बाधाएं एवं क्लिष्ट रोगों की शान्ति तथा धार्मिक एवं आध्यात्मिक क्षेत्र में आत्मशुद्धि, स्नानदान, जप पाठ आदि की दृष्टि से सोमवती अमावस का विशेष महत्त्व होता है। इस दिन व्रत धारण करके अपने इष्टदेव एवं भगवान् **विष्णु एवं शिव** पूजन, चन्द्र तथा **पीपल वृक्ष** की गंगाजल युक्त दुग्ध, पुष्पाक्षत, दुग्ध-युक्त शुद्ध जल से सींचन एवं फूल-फलों, मिष्ठान्न, क्षीर, धूप-दीप आदि द्रव्यों से पूजन करके 108 बार अथवा 7 बार प्रदक्षिणा करके ब्राह्मणों को दक्षिणा सहित भोजन, वस्त्र, फलों का दान करने का विशेष माहात्म्य होता है।

वर्ष 2020-21 ई. में सोमवती अमावस्याएँ-(*i*) श्रावण-सोमवती (20 जुलाई, 2020 ई., (*ii*) मार्गशीर्ष-सोमवती (14 दिसं., 2020 ई.), (*iii*) चैत्र-सोमवती (12 अप्रैल, 2021 ई.)। **गुरुवारी अमावस्या** का भी स्नान, दानादि में विशेष महत्त्व है-(*i*) शुद्ध आश्विन-अमावस (17 सितम्बर,), (*ii*) माघ-अमावस (11 फरवरी, 2021 ई.)

शनिवारी अमावस-फाल्गुन अमावस (13 मार्च, 2021 ई.)

गण्डमूलक नक्षत्रों का प्रारम्भ एवं समाप्तिकाल (भा. स्टै. टा.) संवत् २०७७ वि.

(1 जनवरी, सन् 2020 ई. से 12 अप्रैल 2021 ई. तक)

रेवती, अश्विनी, आश्लेषा, मघा, ज्येष्ठा एवं मूल–ये गण्डमूल नक्षत्र कहलाते हैं। इन नक्षत्रों में उत्पन्न जातक स्वयं अपने या माता-पिता के स्वास्थ्य, व्यवसाय एवं उन्नति आदि के सम्बन्ध में अशुभ होते हैं। गण्डमूल नक्षत्र में उत्पन्न जातक के नक्षत्र की लगभग 27 दिन पश्चात् उसी नक्षत्रकाल में विद्वान् एवं योग्य ब्राह्मण द्वारा शान्ति करवानी चाहिए। यदि जन्मकाल के समय शान्ति न करवाई गई हो तो, जातक के जन्मदिन के निकट उसी नक्षत्र में दान-पूजन करवा लेना शुभकारक रहता है।

नोट–हमारे कार्यालय से छपी '**सम्पूर्ण गण्डमूल नक्षत्र शान्ति प्रयोग**' पुस्तक पूजनादि कार्यों के लिए मंगवा सकते हैं। **मूल्य 75/- रु.**

पता–जनरल बुक डिपो, चौंक अड्डा होशियारपुर, जालन्धर (पं.)

प्रारम्भ काल					समाप्ति काल				
ता.	मास	नक्षत्र	घं.	मिं.	ता.	मास	नक्षत्र	घं.	मिं.
3	जन.	रेवती	7	20	5	जन.	अश्विनी	12	27
12	जन.	आश्लेषा	11	50	14	जन.	मघा	7	55
20	जन.	ज्येष्ठा	23	30	22	जन.	मूल	24	20
30	जन.	रेवती	15	12	1	फर.	अश्विनी	20	54
8	फर.	आश्लेषा	22	05	10	फर.	मघा	17	06
17	फर.	ज्येष्ठा	4	54	19	फर.	मूल	6	06
26	फर.	रेवती	22	08	29	फर.	अश्विनी	4	03
7	मार्च	आश्लेषा	9	05	9	मार्च	मघा	4	10
15	मार्च	ज्येष्ठा	11	23	17	मार्च	मूल	11	46
25	मार्च	रेवती	4	19	27	मार्च	अश्विनी	10	09
3	अप्रैल	आश्लेषा	18	41	5	अप्रैल	मघा	14	57
11	अप्रैल	ज्येष्ठा	20	12	13	अप्रैल	मूल	19	02
21	अप्रैल	रेवती	10	23	23	अप्रैल	अश्विनी	16	05
30	अप्रैल	आश्लेषा	25	53	2	मई	मघा	23	40
9	मई	ज्येष्ठा	6	33	11	मई	मूल	4	13
18	मई	रेवती	16	58	20	मई	अश्विनी	22	37
28	मई	आश्लेषा	7	27	30	मई	मघा	6	03
5	जून	ज्येष्ठा	16	44	7	जून	मूल	14	11
14	जून	रेवती	24	22	17	जून	अश्विनी	6	04
24	जून	आश्लेषा	13	10	26	जून	मघा	11	26
2	जुला.	ज्येष्ठा	25	14	4	जुला.	मूल	23	22
12	जुला.	रेवती	8	18	14	जुला.	अश्विनी	14	07
21	जुला.	आश्लेषा	20	30	23	जुला.	मघा	17	44
30	जुला.	ज्येष्ठा	7	41	1	अग.	मूल	6	48
8	अग.	रेवती	16	12	10	अग.	अश्विनी	22	06
18	अग.	आश्लेषा	5	43	19	अग.	मघा	26	07
26	अग.	ज्येष्ठा	13	04	28	अग.	मूल		
4	सितं.	रेवती	23	28	7	सितं.	अश्विनी	5	24
14	सितं.	आश्लेषा	15	52	16	सितं.	मघा	12	21
22	सितं.	ज्येष्ठा	19	19	24	सितं.	मूल	18	10
2	अक्तू.	रेवती	5	57	4	अक्तू.	अश्विनी	11	52
11	अक्तू.	आश्लेषा	25	19	13	अक्तू.	मघा	22	54
20	अक्तू.	ज्येष्ठा	3	53	21	अक्तू.	मूल	25	13
29	अक्तू.	रेवती	12	00	31	अक्तू.	अश्विनी	17	58
8	नवं.	आश्लेषा	8	45	10	नवं.	मघा	7	56
16	नवं.	ज्येष्ठा	14	37	18	नवं.	मूल	10	40
25	नवं.	रेवती	18	20	27	नवं.	अश्विनी	24	23
5	दिसं.	आश्लेषा	14	28	7	दिसं.	मघा	14	33
13	दिसं.	ज्येष्ठा	25	40	15	दिसं.	मूल	21	31
22	दिसं.	रेवती	25	37	25	दिसं.	अश्विनी	7	36

(सन् 2021 ई.)

प्रारम्भ काल					समाप्ति काल				
ता.	मास	नक्षत्र	घं.	मिं.	ता.	मास	नक्षत्र	घं.	मिं.
1	जन.	आश्लेषा	20	15	3	जन.	मघा	19	57
10	जन.	ज्येष्ठा	10	50	12	जन.	मूल	7	38
19	जन.	रेवती	9	55	21	जन.	अश्विनी	15	36
29	जन.	आश्लेषा	3	51	31	जन.	मघा	2	28
6	फर.	ज्येष्ठा	17	18	8	फर.	मूल	15	21
15	फर.	रेवती	18	29	17	फर.	अश्विनी	23	49
25	फर.	आश्लेषा	13	17	27	फर.	मघा	11	18
5	मार्च	ज्येष्ठा	22	38	7	मार्च	मूल	20	59
15	मार्च	रेवती	2	20	17	मार्च	अश्विनी	7	31
24	मार्च	आश्लेषा	23	12	26	मार्च	मघा	21	39
2	अप्रै.	ज्येष्ठा	5	19	4	अप्रै.	मूल	2	39

पंचक–आरम्भ एवं समाप्तिकाल

(सन् 2020-21 ई.)

पंचक नक्षत्र (धनिष्ठा नक्षत्र के तृतीय चरण से रेवती नक्षत्र तक) कालीन दक्षिण दिशा की ओर यात्रा करना, मकान, दुकानादि की छत डालना, चारपाई-पलंगादि बुनना, शव का दाह (मुर्दा जलाना), बाँस की चटाई, दीवार प्रारम्भ करना आदि स्तम्भारोपण, ताँबा, पीतल, तृण-काष्ठादि का संचय करना आदि कृत्यों का निषेध माना जाता है। समुचित उपाय एवं पंचक-शान्ति करवाकर ही उक्त कार्यों का सम्पादन करना कल्याणकारी होगा। **ध्यान रहे,** पंचक नक्षत्रों का विचार मात्र उपरोक्त विशेष कृत्यों के लिए ही किया जाता है। विवाह, मुण्डन, गृहारम्भ, गृह प्रवेश, वधू-प्रवेश, उपनयन, विपणि आदि मुहूर्त्तों में तो पंचक नक्षत्रों का प्रयोग शुभ माना गया है।

प्रारम्भ काल			समाप्ति काल		
ता. मास	घं.	मिं.	ता. मास	घं.	मिं.
30दिसं.-19	9	35	4 जन.-20	10	05
26जन.(20)	17	39	31 जन.	18	10
22 फर.	24	29	27 फर.	25	08
21 मार्च	6	20	26 मार्च	7	16
17 अप्रै.	12	18	22 अप्रै.	13	18
14 मई	19	22	19 मई	19	53
11 जून	3	42	16 जून	3	17
8 जुला.	12	31	13 जुला	11	14
4 अग.	20	47	9 अग.	19	06
1 सितं.	3	48	6 सितं.	2	21
28 सितं.	9	41	3 अक्तू	8	51
25अक्तू	15	26	30अक्तू	14	57
21 नवं.	22	26	26 नवं.	21	20
19 दिसं.	7	16	24 दिसं.	4	33

(सन् 2021 ई.)

प्रारम्भ काल			समाप्ति काल		
ता. मास	घं.	मिं.	ता. मास	घं.	मिं.
15 जन.	17	06	20 जन.	12	36
12 फर.	2	11	16 फर.	20	57
11 मार्च	9	21	16 मार्च	4	44

26 अग. ज्येष्ठा 13 04 28 अग. मघा 39 11 मार्च 9 21 16 मार्च 4 44

श्रीगणेश-चतुर्थी एवं श्रीकृष्ण-जन्माष्टमी व्रत

भारत के प्रसिद्ध नगरों में चन्द्रोदय का समय (वि. संवत् 2077) (भा.स्टैं.टा.)

नगर	श्री गणेश चतुर्थी चन्द्रोदय काल																										श्रीकृष्ण-जन्माष्टमी स्मार्त		वैष्णव	
	11 अप्रैल 2020		10 मई 2020		8 जून 2020		8 जुला. 2020		7 अग. 2020		5 सितं. 2020		5 अक्तू. 2020		4 नवं. 2020		3 दिसं. 2020		2 जन. 2021		31 जन* 2021		2 मार्च 2021		31 मार्च 2021		11 अग. 2020 ई.		12 अग. 2020 ई.	
	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	करवाचौथ		घं.	मिं.	घं.	मिं.	संकटचौथ		घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.
अमृतसर	22	47	22	37	22	14	22	15	21	48	20	45	20	17	20	15	19	53	20	49	20	49	21	53	21	55	23	45	24	20
अजमेर	22	37	22	25	22	2	22	8	21	47	20	48	20	26	20	29	20	8	20	59	20	54	21	50	21	47	23	53	24	31
अम्बाला	22	36	22	25	22	3	22	5	21	39	20	38	20	11	20	9	19	49	20	43	20	42	21	44	21	44	23	39	24	14
अहमदाबाद(गु.)	22	39	22	25	22	3	22	11	21	54	20	58	20	39	20	45	20	24	21	13	21	6	21	56	21	50	24	6	24	45
अलवर (राज.)	22	31	22	19	21	57	22	1	21	39	20	40	20	16	20	18	19	57	20	49	20	45	21	43	21	40	23	44	24	21
आगरा	22	25	22	12	21	50	21	55	21	34	20	34	20	11	20	13	19	52	20	44	20	40	21	37	21	34	23	39	24	16
ईलाहाबाद(प्रयाग)	22	5	21	52	21	30	21	37	21	17	20	19	19	58	20	2	19	40	20	30	20	25	21	19	21	15	23	25	24	3
इन्दौर	22	25	22	11	21	49	21	58	21	41	20	45	20	27	20	33	20	12	21	00	20	53	21	44	21	36	23	54	24	32
ऊना	22	41	22	30	22	8	22	9	21	42	20	40	20	11	20	10	19	48	20	43	20	43	21	47	21	48	23	40	24	15
उदयपुर (राज.)	22	38	22	24	22	2	22	9	21	50	20	53	20	33	20	37	20	16	21	6	21	00	21	53	21	48	24	1	24	38
ऊधमपुर (का.)	22	49	22	39	22	16	22	17	21	49	20	44	20	14	20	11	19	50	20	46	20	47	21	54	21	57	23	42	24	17
उज्जैन	22	26	22	13	21	51	21	58	21	41	20	45	20	26	20	32	20	11	21	1	20	53	21	44	21	37	23	53	24	32
कठुआ (ज.का.)	22	46	22	36	22	13	22	14	21	46	20	43	20	14	20	11	19	50	20	46	20	44	21	51	21	53	23	41	24	16
कपूरथला	22	44	22	34	22	11	22	12	21	46	20	43	20	15	20	14	19	52	20	47	20	46	21	51	21	52	23	43	24	19
करनाल	22	34	22	23	22	1	22	3	21	40	20	38	20	12	20	11	19	51	20	44	20	42	21	43	21	42	23	39	24	15
काँगड़ा(हि.प्र.)	22	42	22	32	22	10	22	10	21	43	20	40	20	11	20	8	19	46	20	42	20	43	21	47	21	50	23	39	24	14
कानपुर	22	13	22	1	21	39	21	44	21	24	20	25	20	3	20	6	19	45	20	35	20	31	21	26	21	23	23	30	24	7
कैथल	22	37	22	25	22	3	22	6	21	41	20	40	20	14	20	14	19	52	20	46	20	43	21	45	21	45	23	42	24	5
कुल्लू (हि.प्र.)	22	39	22	28	22	6	22	6	21	39	20	36	20	7	20	5	19	43	20	39	20	38	21	44	21	46	23	36	24	10
कुराली (पं.)	22	38	22	27	22	5	22	7	21	41	20	39	20	11	20	10	19	49	20	43	20	42	21	45	21	46	23	39	24	15
कुरुक्षेत्र	22	35	22	24	22	2	22	4	21	39	20	38	20	12	20	10	19	50	20	44	20	41	21	43	21	43	23	40	24	15
कालका (हरि.)	22	37	22	26	22	4	22	5	21	39	20	37	20	10	20	8	19	47	20	42	20	40	21	44	21	45	23	38	24	13
करसोग (हि.प्र.)	22	37	22	26	22	4	22	5	21	39	20	36	20	8	20	5	19	44	20	40	20	38	21	43	21	44	23	36	24	11
कोलकाता	21	32	21	19	20	57	21	6	20	50	19	54	19	36	19	40	19	20	20	8	20	1	20	51	20	44	23	2	23	41
खरड़ (पं.)	22	38	22	27	22	5	22	6	21	41	20	39	20	11	20	9	19	49	20	43	20	41	21	45	21	46	23	39	24	15
खन्ना (पं.)	22	40	22	29	22	6	22	8	21	42	20	40	20	13	20	11	19	50	20	45	20	43	21	47	21	47	23	41	24	17
गाज़ियाबाद	22	30	22	18	21	56	22	0	21	36	20	36	20	11	20	11	19	51	20	44	20	40	21	40	21	39	23	39	24	15
ग्वालियर	22	22	22	9	21	47	21	53	21	33	20	34	20	12	20	14	19	54	20	45	20	39	21	35	21	32	23	39	24	17
गुरदासपुर	22	46	22	35	22	13	22	13	21	46	20	43	20	14	20	11	19	50	20	46	20	45	21	51	21	53	23	42	24	17
गुरुग्राम	22	31	22	19	21	57	22	1	21	38	20	38	20	13	20	13	19	53	20	45	20	42	21	42	21	40	23	41	24	17
चण्डीगढ़	22	37	22	26	22	4	22	6	21	40	20	38	20	11	20	9	19	48	20	42	20	41	21	44	21	45	23	39	24	14
चम्बा	22	44	22	34	22	11	22	11	21	43	20	40	20	10	20	7	19	46	20	42	20	42	21	48	21	51	23	39	24	13

श्रीगणेश–चतुर्थी एवं श्रीकृष्ण–जन्माष्टमी व्रत

भारत के प्रसिद्ध नगरों में चन्द्रोदय का समय (वि. संवत् 2077) (भा.स्टैं.टा.)

श्री गणेश चतुर्थी चन्द्रोदय काल

नगर	11 अप्रैल 2020		10 मई 2020		8 जून 2020		8 जुला. 2020		7 अग. 2020		5 सितं. 2020		5 अक्तू. 2020		4 नवं. 2020		3 दिसं. 2020		2 जन. 2021		31 जन* 2021		2 मार्च 2021		31 मार्च 2021		श्रीकृष्ण-जन्माष्टमी स्मार्त 11 अग. 2020 ई.		वैष्णव 12 अग. 2020 ई.	
	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	करवाचौथ		घं.	मिं.	घं.	मिं.	संकटचौथ		घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.
चेन्नई	21	50	21	33	21	11	21	26	21	20	20	30	20	21	20	33	20	14	20	56	20	40	21	19	21	5	23	47	24	29
जयपुर (राज.)	22	33	22	21	21	59	22	4	21	42	20	43	20	21	20	22	20	2	20	53	20	48	21	46	21	43	23	48	24	25
जम्मू	22	50	22	40	22	17	22	17	21	49	20	45	20	15	20	11	19	50	20	47	20	47	21	54	21	57	23	43	24	18
जलालाबाद(पं.)	22	48	22	37	22	14	22	16	21	50	20	48	20	21	20	20	19	59	20	53	20	51	21	55	21	55	23	49	24	25
जलगांव(महा.)	22	23	22	9	21	47	21	56	21	41	20	47	20	30	20	36	20	17	21	4	20	54	21	43	21	35	23	57	24	36
ज्वाली (हि.प्र.)	22	44	22	33	22	11	22	11	21	44	20	41	20	12	20	8	19	47	20	43	20	43	21	49	21	51	23	40	24	15
जालन्धर	22	44	22	33	22	10	22	12	21	45	20	43	20	15	20	12	19	51	20	47	20	45	21	50	21	51	23	43	24	18
जाखल	22	39	22	28	22	6	22	8	21	44	20	42	20	16	20	15	19	54	20	48	20	46	21	48	21	48	23	44	24	20
जीन्द (हरि.)	22	36	22	25	22	2	22	5	21	41	20	40	20	15	20	14	19	54	20	47	20	44	21	45	21	45	23	43	24	19
जोधपुर	22	44	22	31	22	9	22	14	21	54	20	55	20	33	20	35	20	15	21	6	21	1	21	57	21	54	24	1	24	37
तलवाड़ा (पं.)	22	44	22	33	22	11	22	11	21	44	20	41	20	12	20	9	19	48	20	44	20	43	21	49	21	51	23	41	24	15
टोहाना (हरि.)	22	39	22	27	22	5	22	8	21	43	20	42	20	16	20	15	19	54	20	48	20	45	21	47	21	47	23	44	24	20
दिल्ली	22	31	22	19	21	57	22	1	21	37	20	37	20	12	20	12	19	52	20	45	20	41	21	41	21	40	23	40	24	16
दीनानगर (पं.)	22	46	22	36	22	13	22	13	21	46	20	43	20	14	20	11	19	50	20	45	20	45	21	51	21	53	23	42	24	17
देहरादून	22	31	22	20	21	58	22	0	21	35	20	33	20	6	20	5	19	44	20	38	20	36	21	39	21	39	23	34	24	10
धर्मशाला	22	42	22	32	22	9	22	10	21	42	20	39	20	10	20	7	19	45	20	41	20	41	21	47	21	49	23	38	24	13
धारीवाल (पं.)	22	46	22	36	22	13	22	14	21	46	20	44	20	15	20	12	19	51	20	46	20	46	21	51	21	53	23	43	24	18
नंगल (पं.)	22	40	22	30	22	7	22	8	21	42	20	39	20	11	20	9	19	48	20	43	20	42	21	46	21	48	23	39	24	15
नादौन (हि.प्र.)	22	41	22	31	22	8	22	9	21	42	20	39	20	11	20	8	19	47	20	42	20	42	21	47	21	49	23	39	24	14
नाहन	22	35	22	24	22	1	22	3	21	38	20	36	20	9	20	7	19	46	20	41	20	39	21	42	21	43	23	37	24	12
नवांशहर (पं.)	22	41	22	30	22	8	22	9	21	43	20	41	20	13	20	11	19	50	20	45	20	43	21	47	21	49	23	41	24	16
नालागढ़	22	38	22	27	22	5	22	6	21	40	20	38	20	10	20	8	19	47	20	42	20	41	21	45	21	46	23	39	24	14
नूरपुर (हि.प्र.)	22	44	22	34	22	12	22	12	21	44	20	41	20	12	20	8	19	47	20	43	20	43	21	49	21	52	23	40	24	15
पठानकोट	22	45	22	35	22	12	22	13	21	45	20	42	20	13	20	9	19	48	20	44	20	44	21	50	21	52	23	41	24	16
पटियाला	22	38	22	27	22	4	22	7	21	41	20	40	20	13	20	11	19	51	20	45	20	43	21	46	21	46	23	41	24	16
पंचकूला	22	37	22	26	22	4	22	5	21	40	20	38	20	10	20	9	19	48	20	42	20	41	21	44	21	45	23	38	24	14
पटना	21	52	21	39	21	17	21	23	21	4	20	6	19	44	19	47	19	26	20	17	20	10	21	6	21	2	23	12	23	49
पालमपुर(हि.प्र.)	22	41	22	31	22	8	22	9	21	42	20	39	20	9	20	6	19	45	20	41	20	41	21	46	21	49	23	38	24	13
पानीपत	22	33	22	22	22	1	22	3	21	39	20	38	20	12	20	11	19	51	20	44	20	41	21	43	21	42	23	40	24	16
पूना (महा.)	22	26	22	11	21	49	22	0	21	48	20	54	20	41	20	49	20	29	21	5	21	3	21	49	21	39	24	7	24	47

श्रीगणेश-चतुर्थी एवं श्रीकृष्ण-जन्माष्टमी व्रत

भारत के प्रसिद्ध नगरों में चन्द्रोदय का समय (वि. संवत् 2077) (भा.स्टैं.टा.)

श्री गणेश चतुर्थी चन्द्रोदय काल

नगर	11 अप्रैल 2020		10 मई 2020		8 जून 2020		8 जुला. 2020		7 अग. 2020		5 सितं. 2020		5 अक्तू. 2020		4 नवं. 2020		3 दिसं. 2020		2 जन. 2021		31 जन* 2021		2 मार्च 2021		31 मार्च 2021		श्रीकृष्ण-जन्माष्टमी स्मार्त 11 अग. 2020 ई.		वैष्णव 12 अग. 2020 ई.	
	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	करवाचौथ		घं.	मिं.	घं.	मिं.	संकटचौथ		घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.
पांओटा साहिब	22	33	22	22	22	0	22	2	21	36	20	35	20	8	20	6	19	45	20	40	20	37	21	41	21	41	23	36	24	11
परवाणू (हि.प्र.)	22	37	22	26	22	3	22	5	21	39	20	37	20	10	20	8	19	47	20	42	20	40	21	44	21	45	23	38	24	13
फगवाड़ा	22	43	22	32	22	9	22	11	21	44	20	42	20	14	20	12	19	51	20	46	20	45	21	49	21	50	23	42	24	17
फरीदकोट	22	46	22	35	22	12	22	14	21	48	20	46	20	19	20	17	19	57	20	51	20	49	21	53	21	53	23	47	24	23
फरीदाबाद	22	30	22	18	21	56	22	1	21	37	20	37	20	12	20	12	19	52	20	45	20	41	21	40	21	39	23	40	24	16
फाज़िल्का	22	48	22	37	22	14	22	16	21	51	20	49	20	22	20	21	20	0	20	55	20	53	21	56	21	56	23	50	24	26
फिरोज़पुर	22	46	22	36	22	13	22	15	21	49	20	47	20	19	20	17	19	56	20	51	20	49	21	53	21	54	23	47	24	22
फतेहाबाद (हरि.)	22	40	22	29	22	6	22	9	21	45	20	44	20	18	20	17	19	57	20	50	20	47	21	49	21	49	23	46	24	22
बरनाला (पं.)	22	42	22	31	22	8	22	10	21	45	20	43	20	16	20	15	19	54	20	48	20	46	21	49	21	50	23	44	24	20
बीकानेर	22	46	22	34	22	11	22	15	21	53	20	53	20	29	20	30	20	9	21	2	20	58	21	57	21	55	23	57	24	33
बनीखेत (हि.प्र.)	22	45	22	35	22	12	22	12	21	44	20	41	20	11	20	8	19	46	20	43	20	43	21	49	21	52	23	39	24	14
बरेली (उ.प्र.)	22	21	22	9	21	47	21	51	21	28	20	28	20	4	20	4	19	43	20	36	20	32	21	32	21	30	23	31	24	8
बैजनाथ (हि.प्र.)	22	41	22	30	22	8	22	8	21	41	20	38	20	9	20	6	19	45	20	41	20	40	21	46	21	48	23	37	24	12
बिलासपुर (हि.प्र.)	22	39	22	28	22	6	22	7	21	40	20	38	20	10	20	7	19	46	20	42	20	40	21	45	21	46	23	38	24	13
बैंगलूरु	22	1	21	44	21	22	21	38	21	31	20	41	20	33	20	45	20	25	21	7	20	52	21	30	21	16	23	58	24	40
भटिण्डा	22	44	22	32	22	10	22	12	21	47	20	46	20	19	20	18	19	57	20	51	20	49	21	51	21	52	23	47	24	23
मथुरा	22	27	22	15	21	52	21	57	21	35	20	36	20	12	20	13	19	53	20	45	20	40	21	38	21	36	23	40	24	16
मण्डी (हि.प्र.)	22	39	22	28	22	6	22	7	21	40	20	37	20	8	20	6	19	45	20	40	20	39	21	44	21	46	23	37	24	12
मुकेरियां (पं.)	22	45	22	34	22	12	22	12	21	45	20	42	20	13	20	10	19	49	20	45	20	44	21	50	21	52	23	42	24	17
मोहाली (पं.)	22	37	22	27	22	4	22	6	21	40	20	38	20	11	20	9	19	48	20	43	20	41	21	45	21	45	23	39	24	15
मेरठ	22	30	22	18	21	56	21	59	21	36	20	35	20	10	20	9	19	49	20	42	20	39	21	39	21	38	23	37	24	14
मुम्बई	22	31	22	16	21	54	22	5	21	52	20	58	20	44	20	52	20	32	21	18	21	7	21	53	21	44	24	11	24	50
मनाली (हि.प्र.)	22	39	22	29	22	6	22	7	21	39	20	36	20	7	20	3	19	42	20	38	20	38	21	44	21	46	23	35	24	10
मुक्तसर (पं.)	22	46	22	35	22	13	22	15	21	49	20	47	20	20	20	19	19	58	20	53	20	50	21	54	21	54	23	48	24	24
मोगा (पं.)	22	44	22	33	22	11	22	12	21	47	20	45	20	17	20	15	19	54	20	49	20	47	21	51	21	52	23	45	24	21
मलेरकोटला	22	41	22	30	22	7	22	9	21	44	20	42	20	15	20	13	19	52	20	47	20	45	21	48	21	48	23	43	24	18
महेन्द्रगढ़ (हरि.)	22	35	22	23	22	1	22	4	21	42	20	42	20	17	20	18	19	57	20	50	20	46	21	45	21	44	23	45	24	21
यमुनानगर	22	34	22	23	22	0	22	3	21	38	20	36	20	10	20	8	19	47	20	42	20	39	21	42	21	42	23	38	24	13
रिवाड़ी (हरि.)	22	32	22	21	21	58	22	2	21	40	20	40	20	15	20	16	19	55	20	48	20	44	21	43	21	42	23	43	24	19
रोहतक (हरि.)	22	34	22	22	22	1	22	3	21	40	20	39	20	14	20	14	19	53	20	46	20	43	21	44	21	43	23	42	24	18
रोहड़ू (हि.प्र.)	22	34	22	24	22	1	22	2	21	36	20	34	20	6	20	4	19	43	20	38	20	36	21	41	21	42	23	34	24	9

श्रीगणेश-चतुर्थी एवं श्रीकृष्ण-जन्माष्टमी व्रत

भारत के प्रसिद्ध नगरों में चन्द्रोदय का समय (वि. संवत् 2077) (भा.स्टैं.टा.)

श्री गणेश चतुर्थी चन्द्रोदय काल

नगर	श्री गणेश चतुर्थी चन्द्रोदय काल																										श्रीकृष्ण-जन्माष्टमी			
																											स्मार्त		वैष्णव	
	11 अप्रैल 2020		10 मई 2020		8 जून 2020		8 जुला. 2020		7 अग. 2020		5 सितं. 2020		5 अक्तू. 2020		4 नवं. 2020		3 दिसं. 2020		2 जन. 2021		31 जन* 2021		2 मार्च 2021		31 मार्च 2021		11 अग. 2020 ई.		12 अग. 2020 ई.	
	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	करवाचौथ		घं.	मिं.	घं.	मिं.	संकटचौथ		घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.
रोपड़ (पं.)	22	39	22	28	22	6	22	7	21	41	20	39	20	11	20	9	19	48	20	43	20	42	21	45	21	47	23	39	24	15
राजपुरा (पं.)	22	37	22	27	22	4	22	6	21	41	20	39	20	12	20	10	19	49	20	44	20	42	21	45	21	45	23	40	24	15
रायपुर(३६गढ़)	21	58	21	44	21	22	21	32	21	17	20	22	20	5	20	11	19	51	20	38	20	29	21	18	21	10	23	32	24	11
रामपुर बुशैहर	22	35	22	25	22	2	22	3	21	37	20	34	20	6	20	3	19	42	20	38	20	37	21	41	21	43	23	34	24	9
रूड़की (उ.खण्ड)	22	31	22	20	21	57	22	0	21	35	20	34	20	8	20	6	19	46	20	40	20	37	21	39	21	39	23	35	24	11
राजौरी (ज.का.)	22	54	22	44	22	21	22	20	21	51	20	47	20	16	20	12	19	51	20	48	20	49	21	57	22	0	23	45	24	19
लुधियाना	22	41	22	31	22	8	22	10	21	44	20	42	20	14	20	12	19	51	20	46	20	44	21	48	21	49	23	42	24	17
लखनऊ	22	12	22	0	21	37	21	43	21	22	20	23	20	1	20	2	19	41	20	32	20	27	21	24	21	21	23	27	24	4
वाराणसी	22	0	21	47	21	25	21	32	21	13	20	15	19	54	19	56	19	36	20	26	20	20	21	15	21	10	23	21	23	58
शिमला	22	36	22	26	22	3	22	5	21	39	20	36	20	8	20	6	19	45	20	40	20	39	21	43	21	44	23	37	24	12
श्रीनगर (का.)	22	53	22	44	22	21	22	19	21	49	20	45	20	13	20	8	19	47	20	44	20	46	21	55	21	59	23	41	24	15
श्रीगंगानगर	22	48	22	36	22	14	22	16	21	52	20	50	20	24	20	23	20	3	20	57	20	54	21	56	21	56	23	52	24	28
संगरूर	22	40	22	29	22	6	22	9	21	43	20	42	20	15	20	14	19	53	20	47	20	45	21	48	21	48	23	43	24	19
सरकाघाट(हि.प्र.)	22	40	22	29	22	7	22	7	21	41	20	38	20	9	20	6	19	45	20	41	20	40	21	45	21	47	23	37	24	12
सहारनपुर	22	32	22	21	21	59	22	1	21	37	20	35	20	9	20	8	19	47	20	41	20	38	21	41	21	41	23	37	24	12
सागर (म.प्र.)	22	15	22	2	21	40	21	47	21	29	20	33	20	13	20	17	19	57	20	46	20	39	21	32	21	26	23	40	24	18
सोनीपत	22	32	22	21	21	59	22	2	21	38	20	38	20	13	20	12	19	52	20	45	20	41	21	42	21	41	23	40	24	16
सिरसा	22	42	22	31	22	8	22	11	21	47	20	46	20	20	20	19	19	58	20	52	20	49	21	51	21	50	23	48	24	24
सोलन (हि.प्र.)	22	36	22	26	22	3	22	5	21	39	20	37	20	9	20	7	19	46	20	41	20	39	21	43	21	44	23	37	24	12
सुन्दरनगर	22	39	22	28	22	6	22	7	21	40	20	37	20	9	20	6	19	45	20	41	20	40	21	44	21	46	23	37	24	12
सुजानपुर टिहरा	22	41	22	30	22	8	22	9	21	42	20	39	20	10	20	7	19	46	20	42	20	41	21	46	21	48	23	38	24	13
सुन्दरबनी (का.)	22	52	22	42	22	19	22	19	21	50	20	46	20	16	20	12	19	51	20	48	20	48	21	56	21	59	23	45	24	19
सुनाम (पं.)	22	40	22	29	22	6	22	9	21	44	20	42	20	16	20	14	19	54	20	48	20	45	21	48	21	48	23	44	24	19
हमीरपुर(हि.प्र.)	22	40	22	30	22	7	22	8	21	41	20	39	20	10	20	7	19	46	20	42	20	41	21	46	21	48	23	38	24	13
हरिद्वार	22	30	22	19	21	56	21	59	21	34	20	33	20	6	20	5	19	44	20	38	20	36	21	38	21	38	23	34	24	10
हिसार (हरि.)	22	38	22	27	22	4	22	8	21	44	20	43	20	18	20	17	19	56	20	50	20	47	21	48	21	47	23	45	24	21
हाशियारपुर	22	43	22	32	22	9	22	10	21	44	20	41	20	13	20	10	19	49	20	45	20	44	21	48	21	50	23	41	24	16
हाँसी (हरि.)	22	37	22	26	22	3	22	6	21	43	20	42	20	17	20	16	19	55	20	49	20	46	21	46	21	46	23	44	24	20

नोट– *31 जनवरी, 2021 ई. को जिन नगरों का चन्द्रोदय 20घं.–25मिं. के बाद होगा, वहीं यह व्रत 31 जनवरी को होगा। 20घं.–25मिं. से पहिले जिन नगरों

के बाद होगी, वहाँ यह व्रत 31 जनवरी को होगा। 20घं.-25मिं. से पहिले जिन नगरों

संदिग्ध व्रत-पर्वों का शास्त्रीय निर्णय-वि.सं.२०७७

लेखक :-पं. विवेक शर्मा

(1) प्रदोष व्रत (चैत्र शुक्ल) (5 अप्रैल, रविवार)

प्रत्येक पक्ष (कृष्ण-शुक्ल) की प्रदोषव्यापिनी त्रयोदशी में यह व्रत किया जाता है। यह नक्त व्रत है। **ता. 5 अप्रैल, 2020 ई. को त्रयोदशी तिथि रात्रि 19घं.-25मिं. से 21घं.-04मिं. तक प्रदोष-व्यापिनी है।** अतएव **'प्रदोष व्रत'** इस दिन लिखा गया है। 5/6 अप्रैल, 2020 ई. को प्रदोषकाल भा.स्टैं.टा. अनुसार 18घं.-46मिं. से 21घं.-04मिं. तक रहेगा।

(2) श्रीहनुमान-जयन्ती (दक्षिण-भारत) (7 अप्रैल, मंगलवार)

श्रीहनुमान जी की जयन्ती की तिथि के सम्बन्ध में दो मत प्रचलित हैं-(1) **चैत्र शुक्ल पूर्णिमा** तथा (2) **कार्तिक कृष्ण चतुर्दशी।।** हनुमदुपासना-कल्पद्रुम नामक ग्रन्थ में श्रीहनुमान का जन्म चैत्र शुक्ल पूर्णिमा, मङ्गलवार के दिन मूँज की मेखला से युक्त, कौपीन से संयुक्त और यज्ञोपवीत से भूषित होना लिखा है-

चैत्रे मासि सिते पक्षे पौर्णमास्यां कुजेऽहनि।
मौञ्जीमेखलया युक्तः कौपीनपरिधारकः।।

चैत्र पूर्णिमा को श्रीहनुमान जी के जन्म वाले मत को दक्षिणी भारत में अधिक मान्यता प्राप्त है, जबकि उत्तर-भारत में श्रीहनुमान जी का जन्म-महोत्सव या विजयाभिनन्दन कार्तिक कृष्ण चतुर्दशी को मानते हैं। दोनों मतानुसार श्रीहनुमान जी का जन्म महानिशा (अर्द्धरात्रि) के समय हुआ था। तदनुसार 7 अप्रैल, 2020 ई., मंगलवार को अर्द्धरात्रि-व्यापिनी पूर्णिमा वाले दिन **'श्रीहनुमान जयन्ती'** दक्षिणी भारत में मनायी जाएगी।

जबकि उत्तरी भारत में **'श्रीहनुमान-जयन्ती'** अर्द्धरात्रि व्यापिनी कार्तिक कृ. १४ को **13 नवम्बर, 2020 ई., शुक्रवार** को मनाई जाएगी।

(3) भगवान परशुराम जयन्ती (25 अप्रैल, शनिवार)

वैशाख शुक्ल तृतीया तिथि का रात्रि के प्रथम-प्रहर (प्रदोषकाल) में भगवान् श्रीपरशुराम का अंशवतार हुआ था-

वैशाखस्य सिते पक्षे तृतीयां पुनर्वसौ।
निशायाः प्रथम यामे समाख्यः समये हरिः।। (भविष्यपुराण)

(यहाँ **'प्रथम-याम'** का अर्थ **'प्रदोष काल'** ही है।)

धर्मसिन्धु के अनुसार भी इसे प्रदोषव्यापिनी तृतीया तिथि में ग्रहण करने का निर्देश दिया है-**''इयं रात्रि प्रथमयाम-व्यापिनी ग्राह्या।।''**

इस वर्ष 25 अप्रैल, शनिवार को तृतीया तिथि सायं 18घं.-59मिं. बाद रात्रि प्रथम-प्रहर (प्रदोष) व्यापिनी है, **अतएव भगवान् परशुराम जयन्ती (जन्मोत्सव) 25 अप्रैल, शनिवार को ही शास्त्र-सम्मत होगी।** अगले दिन, 26 अप्रैल को तृतीया तिथि प्रदोष व्यापिनी नहीं है।

(4) श्री जानकी जयन्ती (वैशाख शुक्ल नवमी)

भगवती सीता का प्राकट्य वैशाख शुक्ल नवमी, पुष्य नक्षत्रकालीन, मंगलवार को मध्याह्न-काल में हुआ था। उस समय राजा जनक सन्तान प्राप्ति की कामना से यज्ञ-भूमि तैयार करने के लिए हल से भूमि जोत रहे थे। अतएव इस दिन व्रत रखकर श्री जानकी-राम का संकल्पपूर्वक जन्मोत्सव तथा पूजन करना चाहिए। वैष्णवमताब्ज भास्करानुसार-(श्लोक ६९)

'पुष्यान्वितायां तु कुजे नवम्यां श्रीमाधवे मासि सिते हलाग्रतः।
भवोऽर्चयित्वा जनकेन कर्षणे सीताविरासीद् व्रतमत्र कुर्यात्।।'

शास्त्रानुसार नवमी तिथि यदि दोनों दिन मध्याह्न में व्याप्त अथवा अव्याप्त हो, तो श्रीजानकी-जयन्ती पहिले दिन मनाई जाएगी-**'नवमी सर्वत्राष्टमीविद्धैव ग्राह्या।।'**

इस वर्ष यह नवमी दो दिन 1 और 2 मई, 2020 ई. को (दोनों-दिन) **मध्याह्न-व्यापिनी है। अतः उपरोक्त शास्त्रनियमानुसार यह पर्व 1 मई, 2020 ई. को मनाया जाएगा।**

[1/2 मई, 2020 ई. को उत्तरी-भारत में मध्याह्न-काल लगभग 11घं.-05मिं. से 13घं.-44मिं. तक रहेगा।]

(5) श्रीसत्यनारायण व्रत (वैशाख) (6 मई, बुधवार)

श्रीसत्यनारायण व्रत प्रदोषव्यापिनी एवं चन्द्रोदय-व्यापिनी पूर्णिमा के दिन किया जाता है। इस वर्ष वैशाख पूर्णिमा **7 मई, 2020 ई.** को सायं 16घं.-15मिं. पर समाप्त हो रही है, जिस कारण यह इस दिन प्रदोष-व्यापिनी नहीं होगी। इस दिन या एक दिन पहिले (6 मई) पंजाब, हिमाचल आदि पश्चिमोत्तर प्रान्तों में **'प्रदोषकाल'** लगभग 19घं.-07मिं. से 21घं.-14मिं. तक रहेगा।

ता. 6 मई को पूर्णिमा 19घं.-45मिं. से प्रारम्भ हो रही है, जिससे इसी दिन प्रदोषव्यापिनी एवं रात्रि-व्यापिनी (चन्द्रोदय) पूर्णिमा होगी। **अतएव श्रीसत्यनारायण व्रत** इसी दिन **(6 मई, 2020 ई.)** को रखना **प्रशस्त होगा।**

(6) प्रदोष व्रत (ज्येष्ठ-कृष्ण) (20 मई, बुधवार)

प्रदोष-व्यापिनी त्र्योदशी वाले दिन प्रदोष व्रत किया जाता है। सूर्यास्त के बाद त्रि-मुहूर्त्त व्यापिनी त्रयोदशी ग्रहण करनी चाहिए-

सूर्यास्तमानोत्तर त्रिमुहूर्त्तात्मक प्रदोषव्यापिनी त्रयोदशी ग्राह्या।। (धर्मसिन्धु)

परन्तु यदि दोनों दिन त्रयोदशी प्रदोष-व्यापिनी हो, तो यह व्रत दूसरे दिन करना चाहिए।

यथा–दिनद्वये प्रदोषव्याप्तौ साम्येन तदेकदेशस्पर्शे वा उत्तरा।।

'कालमाधवकार' का यह वाक्य भी इस बात की पुष्टि करता है–

प्रदोषव्यापिनी नक्ते तिथि व्याप्तिर्दिनद्वये।
अव्याप्तिर्वाथवांशेन व्याप्ति: स्यात्सर्वथोत्तरा।।

इस वर्ष (वि. सं. २०७७) ज्येष्ठ कृष्ण त्रयोदशी 19 और 20 मई, 2020 ई.–दो दिन प्रदोषव्यापिनी है। (इन दोनों दिन प्रदोषकाल लगभग 19$^{\text{घं.}}$–16$^{\text{मिं.}}$ से 21$^{\text{घं.}}$–19$^{\text{मिं.}}$ तक रहेगा।) यद्यपि दूसरे दिन 20 मई, 2020 ई. त्रयोदशी तिथि प्रदोषकाल को अपेक्षाकृत कुछ कम समय के लिए व्याप्त कर रही है। (19$^{\text{घं.}}$–43$^{\text{मिं.}}$ से 21$^{\text{घं.}}$–19$^{\text{मिं.}}$ तक) परन्तु उपरोक्त **शास्त्र प्रमाणानुसार 20 मई, 2020 ई. को ही प्रदोष व्रत ग्राह्य एवं मान्य होगा।**

(7) श्रीकल्कि जयन्ती (25 जुलाई, शनिवार)

सायाह्न–व्यापिनी श्रावण शुक्ल षष्ठी को '**श्रीकल्कि-जयन्ती**' मनाई जाती है। **इस वर्ष श्रावण शुक्ल षष्ठी 25 जुलाई, 2020 ई. को ही सायाह्न–व्यापिनी है।** इसलिए यह जयन्ती इसी दिन (**25 जुलाई**) मनाई जाएगी।

(8) ऋग्वेदि उपाकर्म (4 अगस्त, मंगलवार)

ऋग्वेदियों के उपाकर्म के तीन काल माने गए हैं–(*i*) **श्रावण शुक्ल में श्रवण नक्षत्र**, (*ii*) **श्रावण शुक्ल पंचमी**, (*iii*) **श्रावण शुक्ल के अन्तर्गत हस्त नक्षत्र।**

इनमें से '**श्रवण नक्षत्र**' को उपाकर्म का मुख्यकाल माना गया है। शास्त्र निर्देशानुसार यदि श्रवण नक्षत्र दो दिन प्रवृत्त (विद्यमान) हो और वह पहले दिन सूर्योदय से शुरु होकर दूसरे दिन सूर्योदय बाद तीन–मुहूर्त्त तक विद्यमान् हो, तो दूसरे दिन ही उपाकर्म किया जाता है, क्योंकि यहाँ धनिष्ठा नक्षत्र का योग प्रशस्त (श्रेष्ठ) है। यदि दूसरे दिन श्रवण–नक्षत्र तीन–मुहूर्त्त से न्यून हो और पहले दिन श्रवण पूरा दिन व्याप्त हो, तो पहिले दिन ही उपाकर्म किया जाता है। **परन्तु यदि पहिले दिन सूर्योदय के समय श्रवण नक्षत्र न हो और दूसरे दिन सूर्योदय के बाद दो मुहूर्त्त भी श्रवण नक्षत्र हो, तो दूसरे दिन ही उपाकर्म करने का विधान है,** क्योंकि उ.षा. विद्ध (सम्पर्क) श्रवण नक्षत्र को यहाँ वर्जित (निषिद्ध) माना गया है।

''......पूर्वेदिने सूर्योदये नास्ति परदिने सूर्योदयोत्तरं मुहूर्त्त–द्वयं वर्तते तदोत्तरदिने एव।।'' उत्तराषाढ़ावेधनिषेधात्।।''

इस वर्ष श्रावण शुक्ल में 3 अगस्त, 2020 ई. को श्रवण नक्षत्र उत्तराषाढ़ा से विद्ध (सम्पर्क में) है, तथा अगले दिन 4 अगस्त, 2020 ई. को त्रिमुहूर्त्त से कुछ मिनट न्यून है, **तदापि उपरोक्त शास्त्र–नियमानुसार ऋग्वेदियों का उपाकर्म इस वर्ष 4 अगस्त, 2020 ई. को श्रवण–नक्षत्र में जो प्रात: 8$^{\text{घं.}}$–11$^{\text{मिं.}}$ तक विद्यमान है, होगा।** यद्यपि उत्तर–पूर्वी एवं मध्य भारत में श्रवण–नक्षत्र त्रि–मुहूर्त्त ही व्याप्त रहेगा। केवल पंजाब, हरियाणा, हि.प्र. के क्षेत्रों में द्वि–मुहूर्त्त से अधिक ही व्याप्त होगा। **इस उपाकर्म को पूर्वाह्ण–काल में करने का विधान है।**

(९) श्रीकृष्ण–जन्माष्टमी व्रत

(I) 11 अगस्त, मंगलवार=**अर्धरात्रि–व्यापिनी अष्टमी** (गृहस्थियों के लिए)

(II) 12 अगस्त, बुधवार=**उदयकालिक अष्टमी** (वैष्णव, संन्यासियों के लिए)

गतवर्षों की भान्ति इस वर्ष (वि. संवत् २०७७ में) भी श्रीकृष्ण–जन्माष्टमी व्रतादि का पर्व स्मार्त और वैष्णव भेद से दो दिन आ रहा है। परम्परया इस व्रत के सम्बन्ध में दो मत प्रचलित हैं। स्मार्त्त लोग (सामान्य गृहस्थी) अर्धरात्रि का स्पर्श होने पर सप्तमीयुता अष्टमी में व्रत/उपवास करते हैं। क्योंकि इनके अनुसार भगवान् श्रीकृष्ण का अवतार अर्धरात्रि के समय (रोहिणी नक्षत्र एवं वृष राशि में चन्द्रोदय होने पर) अष्टमी तिथि में हुआ था। जबकि वैष्णव मतालम्बी अर्धरात्रि अष्टमी की उपेक्षा करके नवमी विद्धा अष्टमी में व्रतादि करने में विश्वास रखते हैं–

'स्मार्तानां गृहिणी पूर्वा पोष्या, निष्काम वनस्थेविधवाभि: वैष्णवैश्च परै वा पोष्या। वैष्णवास्तु अर्द्धरात्रिव्यापिनीमपि रोहिणी सप्तमी विद्धां अष्टमीं परित्यज्य नवमी युतैव ग्राह्या।। (धर्मसिन्धु)

अधिकांश शास्त्रकारों ने अर्धरात्रि अष्टमी में ही व्रत, पूजन एवं उत्सव मनाने की पुष्टि की है। श्रीमद्भागवत्, श्रीविष्णु पुराण, वायु पुराण, अग्नि–पुराण, भविष्य आदि पुराण भी तो अर्द्धरात्रि युक्ता अष्टमी में ही श्री भगवान् के जन्म की पुष्टि करते हैं–

''गतेऽर्धरात्रसमये सुप्ते सर्वजने निशि।। भाद्रेमास्य–सिते पक्षेऽष्टम्यां ब्रह्मर्क्षसंयुजि।। सर्वग्रहशुभे काले–प्रसन्नहृदयाशये आविरासं निजेनैव रूपेण हि अवनीपते।।'' (भविष्य–पुराण)

धर्मसिन्धुकार का भी यही अभिमत है–

कृष्ण जन्माष्टमी निशीथ व्यापिनी ग्राह्या। पूर्वदिन एव निशीथ योगे पूर्वा।।

इस प्रकार सिद्धान्तरूप में तत्काल व्यापिनी (अर्द्धरात्रि–व्यापिनी) (अर्द्धरात्रि-व्याप्त) तिथि अधिक शास्त्र–सम्मत एवं मान्य रहेगी। कुछ आचार्य तो केवल अष्टमी तिथि को ही जन्माष्टमी का निर्णायक तत्त्व मानते हैं। रोहिणी से युक्त होने पर तो श्रीकृष्ण जन्माष्टमी '**जयन्ती**' संज्ञक कहलाती है।

'कृष्णाष्टम्यां भवेद्यत्रकलैका रोहिणी यदि।
जयन्ती नाम सा प्रोक्ता उपोष्या सा प्रयत्नत:।।' (अग्निपुराण)

ध्यान रहे, भगवान् श्रीकृष्ण की जन्मभूमि मथुरा–वृन्दावन में तो वर्षों की परम्परानुसार भगवान् श्रीकृष्ण जन्माष्टमी के जन्मोत्सव सूर्य–उदयकालिक एवं नवमी विद्धा श्रीकृष्ण अष्टमी मनाने की परम्परा है, जबकि उत्तरी भारत में लगभग सभी प्रान्तों में सैंकड़ों वर्षों से अर्द्धरात्रि एवं चन्द्रोदय व्यापिनी जन्माष्टमी में व्रतादि ग्रहण करने की परम्परा है। **परन्तु** केन्द्रीय सरकार अर्धरात्रि कालिक अष्टमी की उपेक्षा करके प्राय: उदयकालिक अष्टमी (नवमीयुता) को ही सरकारी अवकाश घोषित कर देती है तथा मथुरा आदि के मन्दिरों में प्राय: उदयकालिक वाली ***श्रीकृष्ण जन्माष्टमी***

का पुण्य पर्व मनाया जाता है।

इस वर्ष 11 अगस्त, 2020 ई., मंगलवार को प्रात: $9^{\text{घं.}}$–$07^{\text{मिं.}}$ बाद, अर्द्धरात्रि-व्यापिनी अष्टमी, भरणी नक्षत्र कालीन **श्रीकृष्ण-जन्माष्टमी** के **व्रत के संकल्प, व्रत, जपानुष्ठान का माहात्म्य होगा।** स्मार्त लोग (सामान्य गृहस्थी) इसी दिन व्रत का आरम्भ करके आगामी दिवस (12 अगस्त, बुधवार) को व्रत का पारण एवं जन्मोत्सव मनाएंगे। जोकि श्रेष्ठ एवं उत्तम रहेगा।

जबकि वैष्णव (संन्यासी आदि) मतावलम्बी 12 अगस्त, 2020 ई., बुधवार को उदयकालिक अष्टमी जोकि प्रात: $11^{\text{घं.}}$–$17^{\text{मिं.}}$ तक रहेगी, तदुपरान्त अर्द्धरात्रि-व्यापिनी नवमी तिथि, कृतिका नक्षत्र, वृष राशिस्थ चन्द्रमा में व्रत, जपानुष्ठान एवं जन्मोत्सव मनाएंगे। **वास्तव में, श्रीकृष्ण-जन्माष्टमी का व्रत तथा जन्मोत्सव दो अलग-अलग स्थितियां हैं।**

हमारे मतानुसार तो 11 अगस्त मंगलवार के दिन ही श्रीकृष्ण-जन्माष्टमी का व्रत, चन्द्रमा को अर्घ्य-दान, जागरण-कीर्तन तथा कृष्ण-जन्म से सम्बद्ध अन्य सभी पूजन कार्य करने शास्त्र-सम्मत होंगे। अगले दिन 12 अगस्त, बुधवार को अष्टमी तिथि के अन्त में व्रत का पारण करना चाहिए। ता. 12 अगस्त को भी श्रीकृष्ण स्तोत्र पाठ, ध्यान, कीर्तनादि करके इन दोनों दिन मिले पुण्य सुअवसरों का लाभ लेना चाहिए।

स्मार्त्त और वैष्णव का भेद

स्मार्त्त–वेद, श्रुति-स्मृति आदि ग्रन्थों को मानने वाले धर्मपरायण प्राय: सभी गृहस्थी लोग स्मार्त्त कहलाते हैं। पंजाब, हिमाचल, जम्मू-कश्मीर, हरियाणा, दिल्ली, महाराष्ट्र, राजस्थान, गुजरात आदि राज्यों के साधारण गृहस्थी परिवार स्मार्त्त सम्प्रदाय अनुसार ही अपने सभी व्रतोपवास के साधारण नियम अनुकरणीय करते हैं। पुराण, संहिता एवं स्मृतियों में स्मार्त्तों के लिए स्थान-स्थान पर गृही या गृहस्थ शब्द का और वैष्णवों के लिए वनवासी या यति शब्दों का प्रयोग किया गया है।

वैष्णव–वे धर्मपरायण लोग जिन्होंने किसी प्रतिष्ठित वैष्णव सम्प्रदाय के गुरु से दीक्षा ग्रहण की हो, गले में श्रीगुरु द्वारा दी गई कण्ठी धारण की गई हो तथा मस्तक एवं गले पर श्री खण्ड, चन्दन या गोपी चन्दन या विष्णुचरण का तिलक, त्रिपुण्ड्र, उर्द्धपुण्ड आदि के चिन्ह धारण किए हुए एवं विशिष्ट सम्प्रदाय से सम्बन्धित भक्तजन वैष्णव कहलाते हैं।

धर्मसिन्धुकार ने एकादशी, अष्टमी आदि व्रतों में स्मार्त्त एवं गृहस्थ-जनों को पूर्वविद्धा में व्रतादि करने का निर्देश दिया है, जबकि वैष्णवों एवं विधवाओं आदि को परवर्ती तिथि में व्रतादि करने का निर्देश दिया है–

''स्मार्त्तानां गृहिणां पूर्वो पोष्या। यतिभिः निष्काम गृहिभिः वनस्थैः विधवाभिर्वैष्णवैश्च परैवोपोष्या।। (धर्मसिन्धु)

(10) कुशोत्पाटिनी अमावस्या (18 अगस्त, मंगलवार)

भाद्रपद-अमावस्या तिथि कुशोत्पाटिनी (या कुशाग्रहणी) अमावस के नाम से जानी जाती है। इसदिन कुशा-सञ्चय करने से वर्षभर उसकी शुद्धता रहती है। जिस कुश का मूल सुतीक्ष्ण हो, जिसमें पत्ती हो, अग्रभाग कटा न हो और हरा हो, वह देव तथा पितृ दोनों कार्यों के लिए उपयुक्त होती है। यह तिथि पूर्वाह्ण-व्यापिनी तथा दिन के द्वितीय प्रहर व्याप्त अमावस ली जाती है। यथा……। **'अयातयामास्ते दर्भा विनियोज्याः पुनः पुनः।।'** एवं च **'इयममावास्या द्वितीयप्रहर–व्यापिनी ग्राह्या'** (वर्षकृत्य)

स्कन्दपुराणानुसार भी **'दर्भाणां सञ्चये सङ्गवः काल ईरितः।।**

अर्थात् कुशों के संचय में **संगवकाल** (दिन के पाँच भागों में से दूसरा भाग)–व्यापिनी अमावस्या शुभ कही गई है।

आगामी वर्ष (वि. संवत् २०७७) भाद्रपद अमावस चतुर्दशी विद्धा होकर प्रात: $8^{\text{घं.}}$–$36^{\text{मिं.}}$ बाद $11^{\text{घं.}}$–$13^{\text{मिं.}}$ तक द्वितीय प्रहर (संगवकाल) को स्पर्श कर रही है। अतएव कुशोत्पाटन का कार्य 18 अगस्त, 2020 ई., मंगलवार को ही करना प्रशस्त होगा। इस तिथि को दर्भस्थल पर जाकर पूर्व या उत्तराभिमुख बैठकर निम्न मन्त्र पढ़कर और **'हुँ फट्'** कहकर दाहिने हाथ से एक बार में कुश उखाड़ें–

विरञ्चिना सहोत्पन्न परमेष्ठिन्निसर्गज। नुद सर्वाणि पापानि दर्भ स्वस्तिकरोभव।।

'पिठोरी अमावस्या' भी मध्याह्न-व्यापिनी 18 अगस्त, 2020 ई. को ही ग्राह्य होगी।

(11) मुक्ताभरण सन्तान सप्तमी व्रत (24 अगस्त, सोमवार)

यह व्रत षष्ठी-विद्धा भाद्रपद शुक्ल सप्तमी को किया जाता है। भाद्र. शुक्ल सप्तमी 24 अगस्त, सोमवार को षष्ठी-विद्धा है। अत: यह व्रत इसी दिन होगा।

(12) दूर्वाष्टमी व्रत (25 अगस्त, मंगलवार)

रौहिण मुहूर्त्त (दिन के नवम मुहूर्त्त) व्यापिनी भाद्रपद शुक्ल अष्टमी को सिंहस्थ सूर्य के काल में सन्तान सुख एवं वंशवृद्धि की कामना से यह व्रत किया जाता है। उस समय अगस्त्य तारा उदित नहीं होना चाहिए। भाद्रपद शुक्ल अष्टमी यहाँ पूर्वविद्धा ग्राह्य मानी गई है। रौहिण मुहूर्त्त (दिन का नवम मुहूर्त्त) में ही दूर्वापूजन किया जाता है।

'श्रावणी दुर्ग नवमी दूर्वा चैव हुताशनी। पूर्व विद्धैव तु कर्त्तव्या शिवरात्रिः बलेर्दिनम्।।' इति हैमाद्रौ बृहद् यम उक्तैः।।'……"भाद्रशुक्लाष्टमी दूर्वाष्टमी सा पूर्वा ग्राह्या।।'

इस वर्ष भाद्रपद शुक्ल अष्टमी 25 अगस्त, 2020 ई. को रौहिण-व्यापिनी है। 25/26 अगस्त, 2020 ई. को रौहिण मुहूर्त्त लगभग $12^{\text{घं.}}$–$56^{\text{मिं.}}$ से $13^{\text{घं.}}$–$47^{\text{मिं.}}$ तक रहेगा)। **अतएव उपरोक्त शास्त्रनियमानुसार दूर्वाष्टमी व्रत पहिले दिन 25 अगस्त, मंगलवार को ही करना चाहिए।**

(13) राधाष्टमी (25 अगस्त, मंगलवार)

भविष्यपुराणानुसार **'राधाष्टमी'** भाद्रपद शुक्ल पक्ष की अष्टमी तिथि को मध्याह्न काल, अभिजित् मुहूर्त्त और अनुराधा नक्षत्र योग में विशेष प्रशस्त मानी जाती है। यथा–

भाद्रे मासि सिते पक्षे अष्टमी या तिथिर्भवेत्।
अस्यां दिनार्द्धेऽभिजिते नक्षत्रे चानुराधिके।।

नारदपुराण में भी श्रीराधा जी का पूजन ठीक **मध्याह्न-काल** में करने का निर्देश है। इस वर्ष भाद्रपद शुक्ल अष्टमी 25 अगस्त, 2020 ई. को ही मध्याह्न-व्यापिनी है। ता. 26 अगस्त, बुधवार को मध्याह्न-काल को स्पर्श नहीं कर रही। [25/26 अगस्त को पंजाब, हरियाणा, दिल्ली आदि उत्तरी राज्यों में **मध्याह्नकाल** लगभग $11^{\text{घं.}}$–$12^{\text{मिं.}}$ से $13^{\text{घं.}}$–$46^{\text{मिं.}}$ तक रहेगा।] **स्पष्ट है,** 26 अगस्त, 2020 को अष्टमी तिथि केवल $10^{\text{घं.}}$–$40^{\text{मिं.}}$ तक है, जोकि मध्याह्न-काल से अव्याप्त है। **अतः राधाष्टमी व्रत एवं उत्सव 25 अगस्त, 2020 ई. को ही शास्त्र-सम्मत होगा।**

(14) श्रीमहालक्ष्मी व्रत प्रारम्भ (25 अगस्त, मंगलवार)

चन्द्रोदयव्यापिनी भाद्रपद शुक्ल अष्टमी के दिन यह व्रत प्रारम्भ किया जाता है। इस वर्ष (वि. संवत् २०७७) भाद्रपद शुक्ल अष्टमी 25 अगस्त, 2020 ई., मंगलवार को ही चन्द्रोदय-व्यापिनी है। इस प्रकार यह व्रत इसी दिन से प्रारम्भ किया जाएगा। ऐसा शास्त्रनिर्णय है–**'इयं चन्द्रोदयव्यापिनी ग्राह्या। तत्रैव पूजाद्युक्तेः॥········ पूर्वा वा परविद्धा वा ग्राह्या चन्द्रोदये सदा॥'**

इस प्रमाणानुसार इस वर्ष इस व्रत का प्रारम्भ 25 अगस्त, मंगलवार को ही होगा।

(15) द्वितीया का महालय श्राद्ध (3 सितम्बर, गुरुवार)

आश्विन कृष्ण पक्ष (पितृ-पक्ष) में आत्मीय मृत व्यक्ति की जो तिथि आए, उस तिथि में पार्वण श्राद्ध करने का विधान है। पार्वण श्राद्ध में पिता, पितामह, प्रपितामह, सपत्नीक अर्थात् माता, दादा और परदादी सहित छः जनों का श्राद्ध होता है। इन्हें अपराह्ण-व्यापिनी मृत्युतिथि के दिन करने की शास्त्राज्ञा है। यथा–

पूर्वाह्णे मातृकं श्राद्धमपराह्णे तु पैतृकम्॥ एकोद्दिष्टं तु मध्याह्ने प्रातर्वृद्धि निमित्तकम्॥

शास्त्रानुसार यदि मृत्यु तिथि अपराह्ण-काल को दो दिन असमान रूप से व्याप्त हो अर्थात् एक दिन अधिक और दूसरे दिन कम समय के लिए व्याप्त करें, तो वहाँ अधिक अपराह्ण काल-व्याप्ति वाले दिन श्राद्ध किया जाता है–

अपराह्न–द्वये चामा यदि स्यात् तत्रयाऽधिका।
सा ग्राह्या यदि तुल्या स्यादग्रे वृद्धौ परा स्मृता॥ (ज्योर्निबन्ध)

इस वर्ष आश्विन कृष्ण द्वितीया तिथि दो दिन (3 और 4 सितम्बर, 2020 ई. को) अपराह्ण-व्यापिनी है। **अतः उपरोक्त नियमानुसार द्वितीया तिथि का श्राद्ध 3 सितम्बर, 2020 ई. को किया जाएगा,** क्योंकि द्वितीया तिथि इसदिन अपराह्नकाल को सम्पूर्णतया व्याप्त कर रही है। जबकि 4 सितम्बर को द्वितीया तिथि अपेक्षाकृत कम समय के लिए अपराह्ण-काल को स्पर्श कर रही हैं।

3 एवं 4 सितम्बर, 2020 ई. को उत्तरी-भारत में **अपराह्नकाल** लगभग $13^{\text{घं.}}$–$43^{\text{मिं.}}$ से $16^{\text{घं.}}$–$14^{\text{मिं.}}$ तक रहेगा।

ध्यान दें–इस वर्ष (वि. संवत् २०७७ में) श्राद्धपक्ष में 4 सितम्बर, 2020 ई. को कोई तिथिश्राद्ध नहीं होगा। परन्तु जो लोग किसी कारणवश 3 सितम्बर को द्वितीया का श्राद्ध न कर सकें, वे 4 सितम्बर को भी $13^{\text{घं}}$–$43^{\text{मिं.}}$ से $14^{\text{घं}}$–$24^{\text{मिं.}}$ तक श्राद्ध–कार्य कर सकते हैं।

(16) चन्द्र-षष्ठी व्रत (आश्विन कृष्ण षष्ठी) (7/8 सितम्बर)

यह व्रत चन्द्रोदयव्यापिनी आश्विन कृष्ण षष्ठी को किया जाता है। यदि षष्ठी तिथि दोनों दिन चन्द्रोदय व्याप्त या अपव्याप्त हो, तो उस स्थिति में यह व्रत पहिले दिन किया जाता है–**सा चन्द्रोदयव्यापिनी ग्राह्या। उभयत्र तथात्वे पूर्वा।** (निर्णयसिन्धु)

इस वर्ष पंजाब, जम्मू, राजस्थान आदि में 7 एवं 8 सितम्बर, 2020 ई.–दोनों दिन ही षष्ठी चन्द्रोदय-व्यापिनी है, जिस कारण उपरोक्त **शास्त्रनियमानुसार यह व्रत 7 सितम्बर, 2020 ई. को किया जाएगा।** (इन क्षेत्रों में 7 सितम्बर, 2020 ई. को चन्द्रोदय रात्रि पंचमी तिथि की समाप्ति 21:39 के बाद हो रहा है।

ध्यान दें, हिमाचल, दिल्ली, उत्तराखण्ड, उ.प्र. आदि राज्यों में जहाँ 7 सितम्बर को चन्द्रोदय रात्रि 21:39 से पहिले (पंचमी-तिथि में) होगा, वहाँ यह व्रत 8 सितम्बर, 2020 ई. को किया जाएगा।

उदाहरणार्थ–मण्डी (हि.प्र.) में 7 सितम्बर, 2020 ई. को चन्द्रोदय $21^{\text{घं.}}$–$38^{\text{मिं.}}$ पर हो रहा है, अतएव यहाँ यह व्रत 8 सितम्बर, 2020 ई. को होगा।

(17) मघा श्राद्ध (15 सितम्बर, मंगलवार)

आश्विन कृष्ण त्रयोदशी में पितृश्राद्ध का विशेष माहात्म्य है। यदि इस दिन अपराह्ण-काल के समय मघा-नक्षत्र व्याप्त हो, तो पितृतर्पण, श्राद्ध, शान्ति के लिए विशेष महत्त्वपूर्ण हो जाता है। इस वर्ष 15 सितम्बर, 2020 ई. को मघा नक्षत्र अपराह्ण-व्यापिनी है। अतः **माघ-श्राद्ध** 15 सितम्बर को ही करना उत्तम रहेगा। इस दिन श्राद्ध में पुत्रवान् को अपिण्ड श्राद्ध करना चाहिए। **इसदिन (15 सितं. को) अपराह्ण काल लगभग $13^{\text{घं.}}$–$37^{\text{मिं.}}$ से $16^{\text{घं.}}$–$03^{\text{मिं.}}$ तक रहेगा।**

(18) आश्विन नवरात्र प्रारम्भ (आश्विन शुक्ल प्रतिपदा)

शास्त्रानुसार सूर्योदय के बाद 10 घड़ी तक या मध्याह्न में अभिजित् मुहूर्त्त (दिन के अष्टम मुहूर्त्त) के समय आश्विन शुक्ल प्रतिपदा में नवरात्रारम्भ व कलशस्थापन किया जाता है। प्रतिपदा तिथि की प्रथम 16 घड़ियां तथा चित्रा नक्षत्र और वैधृति योग का पूर्वार्द्धभाग घटस्थापन के लिए वर्जित काल है।

''प्रतिपद् आद्य–षोड्शनाड़ीनिषेधः, चित्रा–वैधृतियोग निषेधश्च उक्तकाल–अनुरोधेन सति सम्भवे पालनीयः॥'' (धर्मसिन्धु)

इस वर्ष प्रतिपदा तिथि की प्रथम 16 घड़ियां 17 अक्तू., 2020 ई. को प्रातः लगभग $7^{\text{घं.}}$–$25^{\text{मिं.}}$ तक है। अतएव अपने-अपने स्थानीय सूर्योदय के पश्चात् प्रातः $7^{\text{घं.}}$–$25^{\text{मिं.}}$ बाद ही घटस्थापन, नवरात्रारम्भ, दीपपूजन आदि करने चाहिए।

(19) उपाङ्ग ललिता व्रत (20 अक्तूबर, मंगलवार)

इस व्रत हेतु आश्विन शुक्ल पंचमी तिथि अपराह्न-व्यापिनी ग्रहण करनी चाहिए। **इस वर्ष आश्विन शुक्ल पंचमी 20 अक्तूबर, 2020 ई. को ही अपराह्ण-व्यापिनी है।** अतः यह व्रत इसी दिन होगा।

तक श्राद्ध-कार्य कर सकते हैं। | अतः यह व्रत इसी दिन होगा।

(20) श्रीदुर्गाष्टमी व्रत (महाष्टमी) (आश्विन शुक्ल अष्टमी)

(23 या 24 अक्तूबर ?)

सूर्योदय-व्यापिनी आश्विन शुक्ल अष्टमी को श्रीदुर्गाष्टमी अथवा '**महाष्टमी**' कहा जाता है। यह अष्टमी सूर्योदय बाद कम-से-कम 1 घटी व्यापिनी तथा नवमी तिथि से युक्त होनी चाहिए। सप्तमीयुता अष्टमी को सर्वथा त्याग देना चाहिए। परन्तु यदि अष्टमी पहिले दिन सप्तमी युक्त हो तथा दूसरे दिन एक घड़ी से भी कम हो, तब इसे सप्तमीयुता भी स्वीकार कर लेना चाहिए।

'अथ महाष्टमीघटिकामात्राप्यौदयिकी नवमी युता ग्राह्या।। सप्तमी स्वल्पयुता सर्वथा त्याज्या। यदा तु पूर्वत्र सप्तमीयुता परत्रोदये नास्ति घटिका न्यूना वा वर्तते तदा पूर्वा सप्तमीविद्धापि ग्राह्या।।' (धर्मसिन्धु)

इस वर्ष (वि. संवत् २०७७ में) आश्विन शुक्ल अष्टमी तिथि **24 अक्तूबर, 2020 ई. को** 1 घड़ी से भी कम (४५ पल) है। अतएव उपरोक्त शास्त्रनियम अनुसार श्रीदुर्गाष्टमी व्रत (महाष्टमी) सप्तमीयुता अष्टमी **(23 अक्तूबर, 2020 ई.)** में मनाना शास्त्र-सम्मत होगा।

परन्तु जहाँ (पंजाब से पूर्वी प्रदेशों में) 24 अक्तू., 2020 ई. को अष्टमी तिथि 1 घड़ी से अधिक (सूर्योदय बाद) व्याप्त होगी। अर्थात् जहाँ सूर्योदय प्रातः 6घं.-35मिं. या इससे पहले होगा, वहाँ दुर्गाष्टमी (महाष्टमी) 24 अक्तूबर को ही ग्राह्य होगा।

स्पष्टता के लिए इसी पृष्ठ पर चित्र (नक्शा) देखिये। यहाँ अंकित **'क-ख'** रेखा जहाँ से गुजर रही है, वहाँ **(24 अक्तूबर, 2020 ई. को)** सूर्योदय 6घं.-35मिं. पर होगा और अष्टमी तिथि ठीक 1 घड़ी व्याप्त होगी। स्पष्ट है, कि इस रेखा से दाईं (पूर्व की) ओर ज्यों-ज्यों हम आगे जाते जाएंगे, वैसे-वैसे सूर्योदय पहिले (6घं.-35मिं. से पहले) होता जाएगा तथा अष्टमी तिथि का मान 1 घड़ी से भी अधिक होता जाएगा (वह 1 घड़ी से कहीं अधिक 2-3-4 घड़ी तक होता जाएगा)। इसके परिणामस्वरूप, **'क-ख'** रेखा से दायीं ओर उत्तर-पूर्वी भारत में **'श्रीदुर्गाष्टमी (महाष्टमी)'** इसी दिन अर्थात् **24 अक्तूबर को ही मनानी चाहिए।**

इसी प्रकार, जैसे-जैसे हम **'क-ख'** रेखा से बाईं ओर बढ़ते जाएंगे, वैसे-वैसे अष्टमी तिथि की सूर्योदय बाद व्याप्ति (मान) घटती जाएगी तथा कुछ क्षेत्रों (गुजरात) में तो (जहाँ सूर्योदय 6घं.-58मिं.) के आस-पास होगा), अष्टमी तिथि का मान ३ पल हो जाएगा। वहाँ तो **निस्सन्देह दुर्गाष्टमी (महाष्टमी) व्रत 23 अक्तूबर को ही करना शास्त्रोक्त होगा। [भारत का मानचित्र (नक्शा) देखने से स्पष्ट है कि**

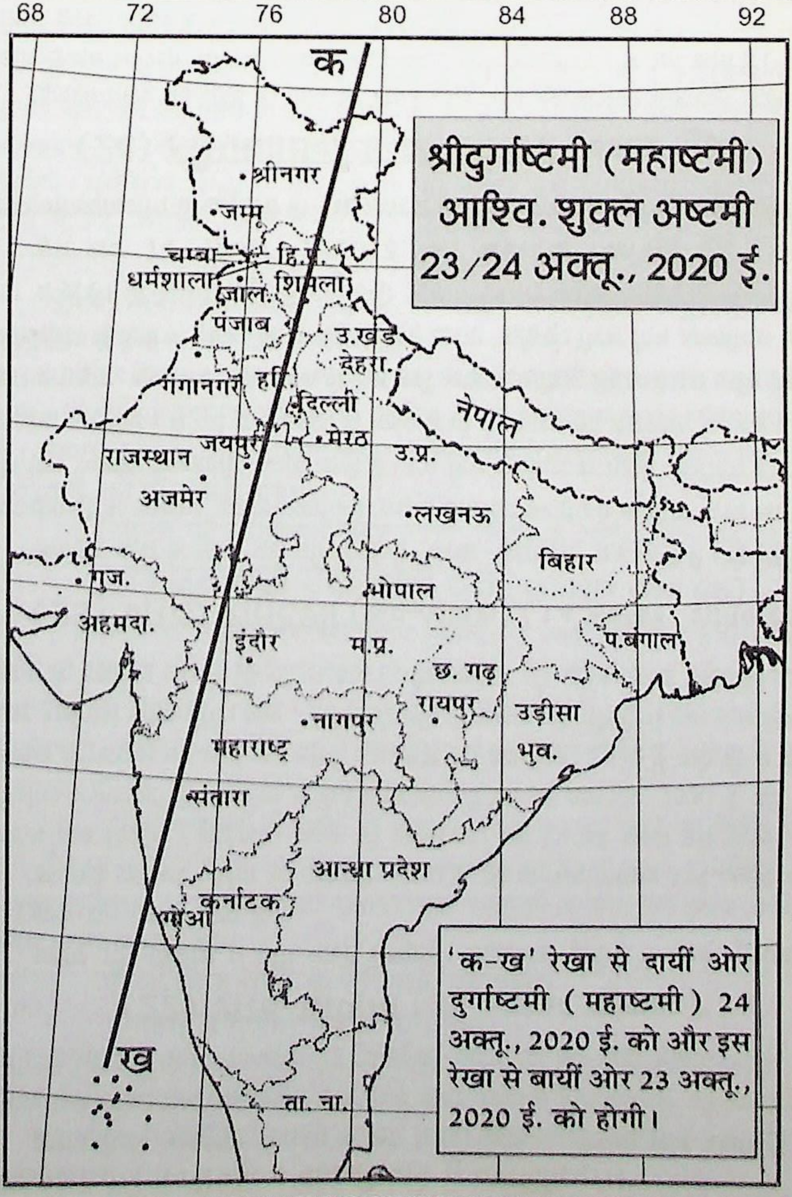
68
72
76
80
84
88
92
36
32
28
24
20
16
12
क
ख
श्रीनगर
जम्मू
चम्बा
हि.प्र.
धर्मशाला
जाल.
शिमला
पंजाब
उ.खंड
देहरा.
गंगानगर
हरि.
दिल्ली
मेरठ
नेपाल
जयपुर
राजस्थान
अजमेर
उ.प्र.
लखनऊ
बिहार
गुज.
अहमदा.
भोपाल
इंदौर
म.प्र.
प.बंगाल
छ. गढ़
रायपुर
उड़ीसा
भुव.
नागपुर
महाराष्ट्र
सतारा
आन्ध्र प्रदेश
कर्नाटक
गोआ
ता. ना.

श्रीदुर्गाष्टमी (महाष्टमी)
आश्वि. शुक्ल अष्टमी
23/24 अक्तू., 2020 ई.

'क-ख' रेखा से दायीं ओर दुर्गाष्टमी (महाष्टमी) 24 अक्तू., 2020 ई. को और इस रेखा से बायीं ओर 23 अक्तू., 2020 ई. को होगी।

पंजाब, राजस्थान, जम्मू-कश्मीर, उत्तर-पश्चिमी हि.प्र., गुजरात, महाराष्ट्र आदि प्रदेशों में दुर्गाष्टमी 23 अक्तूबर, 2020 ई. को ही होगी।]

जबकि शेष भारत (दिल्ली, हरियाणा, उ.प्र., पूर्वी राजस्थान, मध्य-पूर्वी महाराष्ट्र तथा समस्त पूर्वी भारत) में यह पर्व, व्रत 24 अक्तूबर, 2020 ई. को मनाई जाएगी।

[महाष्टमी में पुत्रवान् गृहस्थी को उपवास नहीं करना चाहिए—अष्टम्यां पुत्रवतोपवासो न कार्य:।। कुलाचारप्राप्तौ किंचित्–भक्ष्यं प्रकल्प्य कार्य:।।] कुलपरम्परा अनुसार यदि उपवास करना पड़े तो किसी विशेष भक्ष्य पदार्थ को छोड़कर अथवा जलपारणा करके रख सकते हैं।]

मुख्य नगरों का 24 अक्तूबर, 2020 ई. का सूर्योदय

[जिन नगरों का सू.उ. $6^{\text{घं.}}$–$35^{\text{मिं.}}$ से कम है, वहाँ दुर्गाष्टमी 24 अक्तूबर, 2020 ई. को तथा जिन नगरों का सू.उ. $6^{\text{घं.}}$–$35^{\text{मिं.}}$ से अधिक है, वहाँ दुर्गाष्टमी 23 अक्तूबर, 2020 ई. को होगी।]

नगर	सूर्योदय घं.	मिं.	नगर	सूर्योदय घं.	मिं.	नगर	सूर्योदय घं.	मिं.	नगर	सूर्योदय घं.	मिं.
औरंगाबाद	6	30	जलगांव	6	31	पणजी	6	33	शिमला	6	34
उज्जैन	6	32	जयपुर	6	36	पालमपुर	6	38	हमीरपुर	6	38
इन्दौर	6	31	मण्डी(हि.प्र.)	6	36	बैजनाथ	6	38	रामपुबुशै.	6	33
काँगड़ा	6	39	मदुरई	6	11	नेरचौंक	6	36	हुबली	6	27
करसोग	6	35	मैंगलुरु	6	26	गुना	6	27	रत्नागिरी	6	36
कुल्लू	6	36	मुम्बई	6	40	नासिक	6	37	रोहतक	6	34
कोटा	6	34	पूणे	6	35	सातारा	6	34	हिसार	6	38
चण्डीगढ़	6	35	ठाणे	6	39	सुन्दरनगर	6	36	लेह	6	36
						सोलन	6	35	रतलाम	6	35

(21) महानवमी (24 अक्तूबर, शनिवार)

आश्विन शुक्ल नवमी के दिन महानवमी होती है। यह दो प्रकार की मानी गई है–(1) पूजा एवं उपवास हेतु (2) बलिदान के लिए।

पूजा-उपवास के लिए नवमी अष्टमी विद्धा तथा जो सम्पूर्ण सायंकाल को व्याप्त करे, ली जाती है, जबकि बलिदान हेतु नवमी दशमीविद्धा ली जाती है। धर्मसिन्धु अनुसार–

'महानवमी तु बलिदानव्यतिरिक्तविषये पूजोपोषणादौ अष्टमीविद्धा ग्राह्या ...... । नवमीप्रयुक्त महाबलिदाने तु दशमीविद्धा।।'

इस वर्ष 24 अक्तूबर, 2020 ई. को नवमी अष्टमीयुता तथा सायं-व्यापिनी है। अत: पूजा-उपवासार्थ महानवमी इसी दिन होगी, जबकि 25 अक्तूबर को दशमीयुता होने से बलिदान हेतु महानवमी 25 अक्तूबर, 2020 ई. को ग्राह्य होगी।

(22) शरद्-पूर्णिमा (30 अक्तूबर, शुक्रवार)

प्रदोष और निशीथ में होने वाली (व्याप्त) आश्विन-पूर्णिमा में शरद्-पूर्णिमा व कोजागर व्रत किया जाता है।

इस वर्ष आश्विन पूर्णिमा 30 अक्तूबर, 2020 ई. को लगभग पूर्णतया $17^{\text{घं.}}$–$46^{\text{मिं.}}$ बाद प्रदोष तथा निशीथ (अर्द्धरात्रि) काल को व्याप्त कर रही है। इस प्रकार हमें प्रदोष और निशीथ-उभयव्यापिनी आश्विन पूर्णिमा प्राप्त हो रही है। 31 अक्तूबर, 2020 ई. को यह केवल प्रदोषकाल को स्पर्श कर रही है। **अतएव 30 अक्तूबर, 2020 ई. को ही ये दोनों व्रत, पर्व एवं पूजन होंगे।** शरद्-पूर्णिमा की रात्रि में चन्द्रमा की चाँदनी में अमृत का निवास रहता है, इसलिए उसकी किरणों से अमृत और आरोग्य की प्राप्ति सुलभ होती है।

(23) नरक-चतुर्दशी (रूप–चौदश) (14 नवम्बर, शनिवार)

कार्तिक मास के कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी '**नरक-चतुर्दशी**' कहलाती है। दो विभिन्न मान्यताओं के अनुसार चन्द्रोदयव्यापिनी अथवा अरुणोदयव्यापिनी कार्तिक कृष्ण चतुर्दशी के दिन '**नरक-चतुर्दशी**' मनाई जाती है। इस दिन सूर्योदय से पहले चन्द्रोदय होने पर अथवा अरुणोदय से पूर्व प्रत्यूषकाल में स्नान करने से मनुष्य को यमलोक का दर्शन नहीं करना पड़ता। यद्यपि कार्तिक मास में तेल नहीं लगाना चाहिए, फिर भी इस तिथि विशेष को शरीर में तेल लगाकर (तैलाभ्यंग) स्नान करना चाहिए। जिस दिन अरुणोदय काल या चन्द्रोदय के समय चतुर्दशी हो, उसी दिन तैलाभ्यंग करना चाहिए।

इस वर्ष 14 नवम्बर, 2020 ई. को चंद्रोदयी व्यापिनी एवं (पूर्व) अरुणोदयाव्यापिनी चतुर्दशी होने के कारण इसी दिन नरक-चतुर्दशी मनाई जाएगी।

(24) हरिप्रबोधिनी एकादशी व्रत (कार्तिक शुक्ल)

द्वादशी तिथि की वृद्धि हो जाने पर स्मार्त (गृहस्थी) द्वादशीयुक्ता एकादशी वाले दिन और वैष्णव सम्प्रदाय वाले षष्टिघटयात्मक (६० घड़ी) द्वादशी के दिन व्रत करते हैं। दशमी तिथि द्वारा अरुणोदय के वेध और अवेध–दोनों स्थितियों में यह नियम इसी प्रकार होगा।

तिथि द्वारा अरुणोदय के वेध और अवेध–दोनों स्थितियों में यह नियम इसी प्रकार होगा।

इस स्थिति में नारद, माधव और हेमाद्रि के वचनों में परस्पर विरोधाभास है। **'अत्रशुद्धत्वात्स्मार्तानाम् एकादश्यामेवोपवासो न द्वादश्यामिति।।'** (माधव)–यहाँ माधव मतानुसार स्मार्त्तों का व्रत द्वादशीयुता एकादशी वाले दिन और वैष्णवों का व्रत षष्ठिघटयात्मक (६० घड़ी) द्वादशी वाले दिन होना चाहिए, जबकि हेमाद्रि, पदमपुराण, नारद के मतानुसार स्मार्त्तों (गृहस्थियों) और वैष्णवों (सन्यासी, विधवा आदि) सम्प्रदाय वालों–दोनों का व्रत षष्टिघट्यात्मक द्वादशी के दिन होना चाहिए। **'सर्वत्रैकादशी कार्या द्वादशीमिश्रिताः नरैः।।'** (पद्मपुराण) मार्कण्डेय के वचनानुसार भी सन्देह होने पर द्वादशी में ही उपवास करें–**'संधिग्धेषु च वाक्येषु द्वादशीं समुपोषयेत्।।'** तथा **'विवादेषु च सर्वेषु द्वादश्यां समुपोषणम्।।' पारणं च त्रयोदशयामाज्ञेयं।** परन्तु यहाँ माधव के मत को ही अधिक अधिमान्यता दी गई है।

इस वर्ष कार्तिक शुक्ल द्वादशी की वृद्धि हुई है। यह 26 नवम्बर, 2020 ई. को अहोरात्र व्यापिनी है। **इसलिए उपरोक्त माधव-मतानुसार हरिप्रबोधिनी एकादशी स्मार्त्तों (गृहस्थियों) हेतु 25 नवम्बर, बुधवार को तथा वैष्णव सम्प्रदाय हेतु 26 नवम्बर को गुरुवार को लिखी गयी है।**

(25) भीष्मपंचक समाप्ति (29 नवम्बर, रविवार)

शास्त्रों में भीष्मपंचक व्रत का अनुष्ठान केवल पाँच दिन **(कार्तिक शुक्ल एकादशी से पूर्णिमा तक)** निर्दिष्ट है। यदि शुद्धा एकादशी से उदयकालिक पूर्णिमा तक की अवधि में कोई तिथि क्षय हो जाए और भीष्मपंचकों के दिनों की संख्या चार ही रह जाए, तब दशमीविद्धा एकादशी से ही यह व्रत प्रारम्भ करके शुद्ध (जिसमें चतुर्दशी का वेध न हो) उदयकालिक पूर्णिमा के दिन ही इसे समाप्त किया जाए। इसी प्रकार यदि इन पाँच तिथियों (एकादशी से पूर्णिमा तक) में से किसी एक तिथि की वृद्धि हो जाने पर भीष्मपंचकों के 6 दिन बनते हों, तो शुद्धा एकादशी वाले दिन से प्रारम्भ करके चतुर्दशी-विद्धा पूर्णिमा के दिन ही भीष्म-पंचकों को समाप्त करना चाहिए। धर्मसिन्धु अनुसार–

'एकादश्यादिदिनपंचके भीष्मपंचकव्रतमुक्तम्। तच्च शुद्धैकादश्यामारभ्य चतुर्दश्यविद्धौदयिक–पौर्णमास्यां समापनीयम्। यदि शुद्धैकादश्यामारंभे क्षयवशेन पौर्णमास्यां पंचदिनात्मक, व्रतसमाप्तिं घटते, तदा विद्धैकादश्यामपि आरम्भः, शुद्धैकादश्यामारम्भेऽपि दिनवृद्धिवशेन परविद्धपौर्णमास्यां समापने यदि षड्दिनापत्तिस्तदा चतुर्दशीविद्धपौर्णिमायामपि समाप्तिः कार्या।।'

इस वर्ष कार्तिक शुक्ल द्वादशी तिथि की वृद्धि होने जाने से भीष्मपञ्चकों के छः दिन बन रहे हैं। अतएव उपरोक्त शास्त्र नियमानुसार **'भीष्मपंचक व्रत'** 25 नवम्बर, 2020 ई. से चतुर्दशी विद्धा पूर्णिमा वाले दिन **29 नवम्बर, 2020 ई. तक** होंगे।

(26) कालभैरवाष्टमी (7 दिसम्बर, 2020ई., सोमवार)

मार्गशीर्ष कृष्ण अष्टमी तिथि को श्रीभैरव-जयन्ती (कालाष्टमी/कालभैरवाष्टमी) मनाई जाती है। इस तिथि के निर्णय सम्बन्धी दो मत प्रचलित हैं। प्रथम मतानुसार इसे मध्याह्न-व्यापिनी और दूसरे मतानुसार प्रदोषव्यापिनी मार्ग. कृष्ण अष्टमी को मनाना चाहिए। **धर्मसिन्धु अनुसार**–यदि अष्टमी पहिले दिन केवल प्रदोषव्यापिनी और दूसरे दिन केवल मध्याह्न-व्यापिनी हो, तो अधिकांश ग्रन्थों के अनुसार पहिले दिन प्रदोषव्यापिनी अष्टमी वाले दिन यह पर्व मनाना चाहिए। **यथा**–

'पूर्वत्र प्रदोषव्याप्तिरेव परत्र मध्याह्न एव तदा बहुशिष्टाचार–अनुरोधात्प्रदोषगा पूर्वैव।।' (धर्मसिन्धुः)

इसवर्ष 7 दिसम्बर, 2020 ई. के दिन अष्टमी तिथि केवल प्रदोषकाल (सायं 18:48 बाद) को और 8 दिसम्बर, 2020 ई. के दिन केवल मध्याह्नकाल को व्याप्त कर रही है। **अतएव उपरोक्त शास्त्रप्रमाणानुसार प्रदोषव्यापिनी अष्टमी के दिन 7 दिसम्बर, 2020 ई. को ही मनाई जाएगी।**

[7/8 दिसम्बर को प्रदोषकाल लगभग 17घं.–21मिं. से 20घं.–09मिं. तक रहेगा।]

(27) उत्पन्ना एकादशी व्रत (मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष)

'धर्मसिन्धुकार' अनुसार एकादशी तिथि मुख्यतः दो प्रकार की होती है–**(*i*) विद्धा और (*ii*) शुद्धा।।** (*i*) सूर्योदय काल में दशमी का वेध हो अथवा अरुणोदयकाल (सूर्योदय से लगभग 4 घड़ी पूर्व) में एकादशी तिथि दशमी द्वारा विद्ध हो, तो वह (एकादशी) विद्धा कहलाती है। (*ii*) अरुणोदय-काल में दशमी तिथि के वेध से रहित एकादशी हो तो उसे शुद्धा तिथि माना जाता है।

प्रायः अधिकांश शास्त्रों में दशमी से युक्त एकादशी का व्रत करने का निषेध माना गया है। परन्तु द्वादशी का क्षय हो जाने पर स्मार्त्तों (गृहस्थियों) को दशमीयुता एवं वैष्णव सम्प्रदाय वालों को द्वादशी-त्रयोदशीयुता एकादशी के दिन व्रत करना चाहिए। पद्म पुराण अनुसार भी–

'एकादशी द्वादशी च रात्रिशेषे त्रयोदशी।
उपवासं न कुर्वीत् पुत्रपौत्रसमन्वितः।।'

उपरोक्त प्रमाणानुसार 11, 12, 13 तिथियों से मिश्रित दिन में स्मार्त्तों (गृहस्थियों) के व्रत का निषेध और वैष्णवों के व्रत का विधान है। एवं च–

दशम्यैकादशीविद्धा द्वादशी च क्षयं गता। क्षीणा सा द्वादशी ······। गृहिणः पूर्वत्रोपवासः।।'

अतः शास्त्रों में प्रकारान्तरेण स्मार्त्तों को सूर्योदयवेधवती दशमी के दिन एकादशी व्रत करने की आज्ञा दी है, जोकि कण्वस्मृति के सामान्य नियम '**अरुणोदयवेलायां दशमीसंयुता यदि। तत्रोपोष्या द्वादशी स्यात् त्रयोदश्यां तु पारणम्।।**' के विरुद्ध है। परन्तु शास्त्रों में स्मार्त्तों के लिए त्रयोदशी में पारणा भी सर्वथा वर्जित मानी गयी है। यदि द्वादशी तिथि के क्षय की स्थिति में स्मार्त्त (गृहस्थियों)-वैष्णवों का व्रत एक ही दिन कर दिया जाए तो स्मार्त्तों को भी व्रत की पारणा त्रयोदशी में करनी पड़ेगी।

निर्णयसिन्धु में भी '**ऋष्यशृंग**' ने अन्य विकल्प के अभाव में स्मार्त्तों को दशमीयुता एकादशी में व्रत करने की अनुमति दी है–

''पारणाहे न लभ्येत द्वादशी कलयाऽपि चेत्।
तदानीं दशमीविद्धापि उपोष्यै एकादशी तिथिः।।''

इस प्रकार उपरोक्त शास्त्रविवेचन से स्पष्ट है कि द्वादशी तिथि का क्षय होने के कारण ही स्मार्त्तों (गृहस्थियों) का उत्पन्ना एकादशी व्रत 10 दिसम्बर, 2020 ई. को तथा वैष्णवों का एकादशी व्रत 11 दिसम्बर, 2020 ई. को लिखा गया है।

(28) स्कन्द (गुह) षष्ठी (19/20 दिसम्बर, 2020 ई.)

पूर्व (पंचमी) विद्धा मार्ग. शुक्ल षष्ठी में स्कन्द (गुह) षष्ठी का व्रत किया जाता है।–'**इयमेव स्कन्द षष्ठी सा पूर्वा ग्राह्या।।**'

इस वर्ष (वि. संवत् २०७७ में) 19 दिसम्बर, 2020 ई. को षष्ठी पञ्चमीविद्धा है, क्योंकि इस दिन पंचमी सूर्योदयानन्तर 6 मुहूर्त्त से अधिक है। इसलिए स्कन्द (गुह) षष्ठी का व्रत इसी दिन होगा।

परन्तु भृगु के वाक्यनुसार '**कृष्णाष्टमी स्कन्दषष्ठी शिवरात्रिचतुर्दशी। एताः पूर्वयुताः कार्यास्तिथ्यन्ते पारणं भवेत्।।**'

इस व्रत की पारणा तथा पूजन अगले दिन 20 दिसम्बर, 2020 ई. को मध्याह्न-काल में ही करना शास्त्रसम्मत होगा।

(29) श्रीदत्तात्रेय जयन्ती (29 दिसम्बर, मंगलवार)

मार्गशीर्ष पूर्णिमा को श्रीदत्तात्रेय जी का जन्म हुआ था। इसमें प्रदोषव्यापिनी पूर्णिमा ग्रहण की जाती है–

'**मार्गशीर्षपौर्णमास्यां दत्तात्रेयोत्पत्तिः। इयं प्रदोषव्यापिनी ग्राह्या।।**' (धर्मसिन्धु)

इस वर्ष **29 दिसम्बर, 2020 ई.** को सायं प्रदोषव्यापिनी पूर्णिमा को '**दत्तात्रेय जयन्ती**' होगी।

(30) श्रीगणेश (संकष्ट) चतुर्थी व्रत (31 जनवरी, 2021 ई.)

यह व्रत/पर्व चन्द्रोदय व्यापिनी माघ कृष्ण चतुर्थी को होता है। इस वर्ष 1 फरवरी, 2021 ई. को चतुर्थी तिथि चन्द्रोदय-व्यापिनी नहीं है। पंजाब, जम्मू-काश्मीर, हि.प्र., उत्तराखण्ड, दिल्ली, हरियाणा, राजस्थान, म.प्र., महाराष्ट्र, गुजरात तथा उत्तर-मध्य उ.प्र. (लखनऊ आदि से पूर्वी क्षेत्रों को छोड़कर) **में 31 जनवरी, 2021 ई. को तृतीया तिथि की समाप्ति** (अर्थात् 20:25) **के बाद चतुर्थी तिथि में ही चन्द्रोदय होगा। अतः यह स्पष्ट है कि इन प्रदेशों में यह व्रत इसी दिन (31 जनवरी) होगा।** देश के शेष पूर्वी भागों (पूर्वी उ.प्र., बिहार, प. बंगाल, अरु. प्रदेश, सिक्किम आदि) में दोनों दिन चतुर्थी चन्द्रोदय-व्यापिनी नहीं है। धर्मसिन्धु के निम्न प्रमाणवाक्यानुसार इन प्रदेशों में श्रीगणेश संकष्ट चतुर्थी व्रत 1 फरवरी, 2021 ई. को होगा।

'**संकष्टचतुर्थी तु चन्द्रोदयव्यापिनी ग्राह्या। परदिन एव चन्द्रोदयव्याप्तौ परैव। उभयदिने चन्द्रोदयव्याप्तौ तृतीयायुतैव ग्राह्या।। दिनद्वये चन्द्रोदयव्याप्त्यभावे परैव।**'
(धर्मसिन्धुः)

इस प्रकार यह पर्व पंजाब, हि.प्र., जम्मू-काश्मीर, दिल्ली, राजस्थान, हरियाणा, उत्तर-पश्चिमी व मध्य उ.प्र., गुजरात, महाराष्ट्र आदि में स्पष्ट रूप से 31 जनवरी, 2021 ई. को ही मनाया जाएगा।

जबकि पूर्वी प्रदेशों (बिहार, पूर्वी उ.प्र., उड़ीसा आदि में) यह पर्व 1 फरवरी, 2021 ई. को मनाया जाएगा। [विभिन्न नगरों में 'श्रीगणेश-चतुर्थी' के चन्द्रोदय हेतु देखें पृष्ठ 13-16]

(31) भीष्माष्टमी (माघ शुक्ल अष्टमी)

माघ शुक्ल अष्टमी को भीष्म पितामह का एकोद्दिष्ट श्राद्ध किया जाता है, इस श्राद्ध-पर्व को ही '**भीष्माष्टमी**' का नाम दिया गया है। क्योंकि एकोद्दिष्ट-श्राद्ध मध्याह्न-काल में किया जाता है, इसलिए मध्याह्नव्यापिनी माघ शुक्ल अष्टमी के दिन '**भीष्माष्टमी**' मनाई जाती है–

'**माघ शुक्लाष्टमी भीष्माष्टमी। अत्र मध्याह्नव्यापिन्यष्टमी ग्राह्या।। श्राद्धादेरेकोद्दिष्टत्वादिती।।**' (धर्मसिन्धुः)

यदि अष्टमी मध्याह्न काल को दोनों दिन असमान रूप से व्याप्त या अव्याप्त हो, तब भीष्माष्टमी सम्बन्धी श्राद्ध/तर्पण अगले दिन करने चाहिए।

इस वर्ष (वि. संवत् २०७७ में) माघ शुक्ल अष्टमी दो दिन (19 एवं 20 फरवरी, 2021 ई.) मध्याह्न-काल को असमान् रूप से व्याप्त कर रही है। तदनुसार उपरोक्त शास्त्रनियमानुसार '**भीष्माष्टमी**' पर्व पर श्राद्ध/तर्पणादि कृत्य **20 फरवरी, 2021 ई.** को ही मध्याह्न-काले किए जाएंगे।

वि. संवत् 2077 में भारत में वृश्चिक (मार्गशीर्ष) संक्रान्ति-दो दिन ?

[स्थानभेद (सूर्योदयभेद) से वृश्चिक संक्रान्ति 15 नवम्बर तथा 16 नवम्बर, 2020 ई. को होगी]

सूर्य जिस राशि पर संचार कर रहा हो, उसे छोड़कर जब वह दूसरी राशि में प्रवेश करे, उस समय का नाम संक्रान्ति है। जिस वार के दौरान (में) सूर्य राशि-परिवर्तन करता है, उसी वार वाले दिन पश्चिमोत्तर भारत (विशेषकर पंजाब, हिमाचल, हरियाणा, जम्मू आदि) में संक्रान्ति पर्व मनाया जाता है और वहाँ उसी वार/दिन से सौर-मास (सौर मास का प्रथम प्रविष्टा अर्थात् सौर मास की प्रथम तारीख) प्रारम्भ होता है।

[इसी भान्ति इस बात का भी ज्ञान होना चाहिए कि भारतीय ज्योतिष के अनुसार, प्रत्येक नवीन 'वार' का प्रारम्भ सूर्योदय से होता है। अतः सूर्योदय से प्रारम्भ होकर दूसरे (आगामी) दिन के सूर्योदय तक के समय को 'वार' कहा जाता है।]

संक्रान्ति-दिन और संक्रान्ति-पुण्यकाल

शास्त्र-निर्देश एवं भारतीय ज्योतिष सिद्धान्त अनुसार संक्रान्ति-प्रवेश (सूर्य का राशि-परिवर्तन) चाहे प्रातःकाल हो, मध्याह्न में हो, सायंकाल या अर्द्धरात्रि या अर्द्धरात्रि के बाद ही क्यों न हो, पश्चिमोत्तर भारतीय प्रान्तों में उसी दिन सौर-मास का प्रथम प्रविष्टा (प्रथम-तारीख) माना जाएगा। यद्यपि संक्रान्ति के स्नान-दान हेतु पुण्यकाल का नियम अलग है।

मूलतः संक्रान्ति प्रवेश से 16 घड़ी पहिले और 16 घड़ी पश्चात् में संक्रान्ति का पुण्यकाल मानना चाहिए।

संक्रान्तिकालादुभयत्र नाडिकाः पुण्या मतः षोडश-शोडशोऽगणोः।।(मु.चि.)

यदि अर्द्धरात्रि से पहिले संक्रान्ति प्रवेश हो तो उसी दिन का उत्तरार्द्धभाग (मध्याह्न बाद) पुण्यकाल और यदि अर्द्धरात्रि के उपरान्त संक्रान्ति प्रवेश हो, तो परदिन (दूसरे दिन) का पूर्वार्द्ध (मध्याह्न से पहिले) भाग में पुण्यकाल होता है-

निशीथतोऽर्वागपरत्र संक्रमे पूर्वापराहान्तिमपूर्वभागयोः।। (मु. चिन्तामणि)

उपरोक्त विवेचन से पाठक समझ गए होंगे कि संक्रान्ति-दिन और संक्रान्तिपुण्यकाल भिन्न-भिन्न दिन हो सकते हैं। एवं च, वार का आरम्भ स्थानीय नगर के सूर्योदय से होगा। यदि सूर्य का राशि-प्रवेश सूर्योदय के ही आस-पास हो, तो स्थानभेद के कारण संक्रान्ति-दिन में अन्तर आ जाना स्वाभाविक है।

इस वर्ष (वि. संवत् 2077) भारत में वृश्चिक (मार्गशीर्ष) संक्रान्ति का दिन भिन्न-भिन्न क्षेत्रों में अलग-अलग दिन रहेगा। यद्यपि सम्पूर्ण भारत (सभी क्षेत्रों) में वृश्चिक संक्रान्ति के स्नान, दानादि का पुण्यकाल 16 नवम्बर, सोमवार, 2020 ई. को दोपहर 13$^{\text{घं.}}$-17$^{\text{मिं.}}$ तक रहेगा।

वि. संवत् 2077 में सूर्य का वृश्चिक राशि में प्रवेश 16 नवम्बर, सोमवार, 2020 ई. की प्रातः 6$^{\text{घं.}}$-53$^{\text{मिं.}}$ (भा.स्टैं.टा.) पर होगा। क्योंकि इस दिन जालन्धर नगर का सूर्योदय 7$^{\text{घं.}}$-00$^{\text{मिं.}}$ है। अतः संक्रान्ति प्रवेश (सूर्य का राशिप्रवेश) सूर्योदय से पहिले होने के कारण पंचांग में संक्रान्ति-दिन अर्थात् मार्गशीर्ष सौर मास का प्रथम-प्रविष्टा (तारीख) 15 नवम्बर, रविवार, 2020 ई. को लिखा गया है। इस प्रकार भारत के जिन नगरों में सूर्योदय 6$^{\text{घं.}}$-53$^{\text{मिं.}}$ के बाद होगा, वहाँ मार्गशीर्ष सौर-मास 15 नवम्बर, 2020 ई. को ही प्रारम्भ होगा।

तथा भारत के जिन नगरों/क्षेत्रों में 16 नवम्बर, सोमवार को सूर्योदय 6$^{\text{घं.}}$-53$^{\text{मिं.}}$ से पहिले होगा, वहाँ मार्गशीर्ष सौरमास अर्थात् मार्गशीर्ष संक्रान्ति दिन 16 नवम्बर, सोमवार को होगा। इसका स्पष्टीकरण अगले पृष्ठ पर दिए गए भारत के मानचित्र में भी कर दिया है तथा आगामी पृष्ठ पर ही भारत के उन नगरों का सूर्योदय भी दे दिया गया है जहाँ संक्रान्ति प्रवेश दिन के बारे में संदेह होगा (अर्थात् जहाँ सूर्योदय प्रातः 6$^{\text{घं.}}$-53$^{\text{मिं.}}$ के आसपास होगा।) **'क-ख'** रेखा के दाईं और के नगरों/क्षेत्रों में संक्रान्ति दिन 16 नवम्बर को रहेगा। जबकि रेखा के बायीं ओर के नगरों में संक्रान्ति-दिन 15 नवम्बर, रविवार को होगा।

ध्यान दें, दोनों परिस्थितियों में मार्गशीर्ष संक्रान्ति का पुण्यकाल 16 नवम्बर, सोमवार को ही दोपहर 13$^{\text{घं.}}$-17$^{\text{मिं.}}$ तक रहेगा।

उदाहरणार्थ, देखें-16 नवम्बर, 2020 ई. को शिमला, सोलन (हि.प्र.) आदि में सूर्योदय 6$^{\text{घं.}}$-53$^{\text{मिं.}}$ (शास्त्रीय सूर्योदय) पर होगा जोकि सूर्य के वृश्चिक राशि में प्रवेशकाल 6$^{\text{घं.}}$-53$^{\text{मिं.}}$ के बिल्कुल समान है। इसलिए यहाँ संक्रान्ति-दिन (प्रविष्टा १) 15 नवम्बर, 2020 ई. जबकि संक्रान्ति पुण्यकाल 16 नवम्बर, सोमवार को मान्य होगा। परन्तु सोलन, शिमला से पूर्वी क्षेत्रों (नाहन, सराहां, पौंटा साहिब) जहाँ सूर्योदय 6$^{\text{घं.}}$-52$^{\text{मिं.}}$ पर होगा। वहाँ संक्रान्ति-दिन (प्रथम (१) प्रविष्टा तथा संक्रान्ति पुण्यकाल-एक ही दिन 16 नवम्बर, 2020 ई. को ही होगा।

दो अलग-अलग वारों में संक्रान्तिदिन होने से संक्रान्ति फल में भी अन्तर रहेगा। रविवार की संक्रान्ति अशुभ मानी गई है, जबकि सोमवार की संक्रान्ति शुभ मानी गई है।

अपने नगर के सूर्योदय अनुसार मार्गशीर्ष संक्रान्ति निर्णय करें

[16 नवम्बर, 2020 ई. को भारत के विभिन्न नगरों का सू.उ. जहाँ वृश्चिक–संक्रान्ति दिन के बारे में सन्देह होगा।]

नगर	सूर्योदय	नगर	सूर्योदय	नगर	सूर्योदय
अर्की (हि.प्र.)	6:54	चित्तौड़गढ़	6:53	वड़ौदरा	6:54
अम्बाला	6:53	चुरु (रा.)	6:57	भिवानी	6:53
अजमेर	6:55	जयपुर	6:51	मण्डी (हि.प्र.)	6:55
उदयपुर	6:56	जींद	6:53	भीलवाड़ा	6:53
कसौली	6:54	झुंझुनू	6:55	रामपुरबुशै.	6:52
करसोग	6:54	नालागढ़	6:55	रोहतक	6:52
करनाल	6:52	नवी मुम्बई	6:50	वलसाड़ (गु.)	6:53
काँगड़ा	6:59	नेरचौंक (हि.प्र.)	6:55	शिमला	6:53
कुल्लू	6:55	नाहन	6:52	शाहाबाद (ह.)	6:53
कैथल	6:54	नीमच (म.प्र.)	6:51	यमुनानगर	6:51
कुरुक्षेत्र	6:52	नासिक	6:48	सूरत	6:54
कालका	6:54	पटियाला	6:55	सोलन	6:53
कोटखाई	6:52	पिंजौर	6:54	सुन्दरनगर	6:55
डूंगरपुर	6:55	पौंटा साहिब	6:50	सीकर	6:55
गोहाना	6:52	पिंजौर	6:54	सुबाथू	6:54
चण्डीगढ़	6:54	बांसवाड़ा	6:51	हमीरपुर	6:57

नोट–जिन नगरों में सूर्योदय 6$^{घं.}$-53$^{मिं.}$ पर या पहिले होगा, वहाँ मार्गशीर्ष संक्रान्ति का पहिले प्रविष्य (तारीख) 16 नवम्बर को और जहाँ सू.उ. 6$^{घं.}$-53$^{मिं.}$ के बाद होगा, वहाँ प्रथम प्रविष्य 15 नवम्बर, रविवार को होगा।

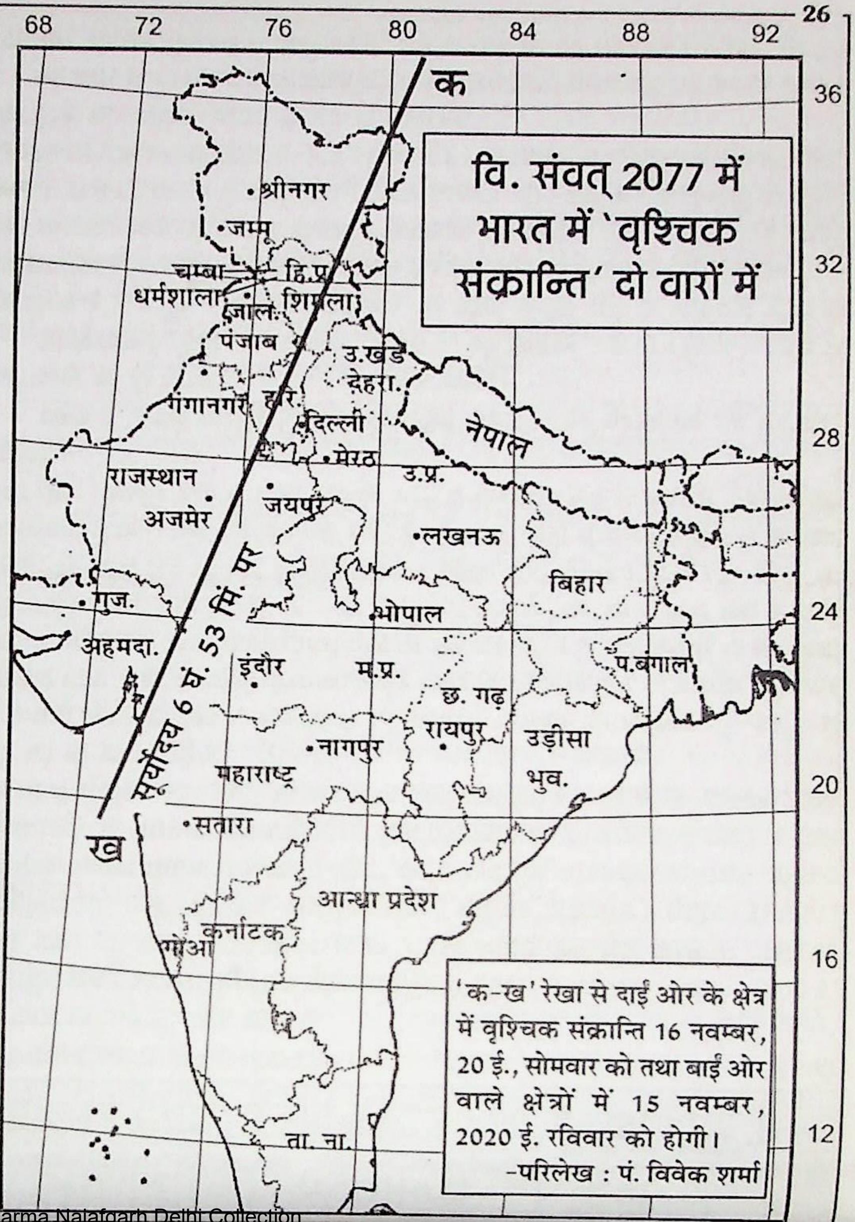
68
72
76
80
84
88
92
36
32
28
24
20
16
12
क
ख
सूर्योदय 6 घं. 53 मिं. पर
श्रीनगर
जम्मू
चम्बा
हि.प्र.
धर्मशाला
जाल.
शिमला
पंजाब
उ.खंड
देहरा.
गंगानगर
हरि.
दिल्ली
मेरठ
नेपाल
राजस्थान
जयपुर
अजमेर
उ.प्र.
लखनऊ
बिहार
गुज.
भोपाल
अहमदा.
इंदौर
म.प्र.
प.बंगाल
छ. गढ़
रायपुर
नागपुर
उड़ीसा
भुव.
महाराष्ट्र
सतारा
आन्ध्र प्रदेश
कर्नाटक
गोआ
ता. ना.

वि. संवत् 2077 में भारत में 'वृश्चिक संक्रान्ति' दो वारों में

'क-ख' रेखा से दाईं ओर के क्षेत्र में वृश्चिक संक्रान्ति 16 नवम्बर, 20 ई., सोमवार को तथा बाईं ओर वाले क्षेत्रों में 15 नवम्बर, 2020 ई. रविवार को होगी।

-परिलेख : पं. विवेक शर्मा

पं. देवीदयालु कृत **श्री दुर्गा सप्तशती (हिन्दी भाषा में)**

श्री दुर्गासप्तशती मात्र धर्मग्रन्थ ही नहीं, बल्कि एक सिद्ध ग्रंथ है। पं. पन्ना लाल ज्योतिषी द्वारा प्रणीत श्री दुर्गा-सप्तशती के प्रस्तुत सरल हिन्दी भाषा संस्करण में अनेक उपयोगी विषयों का समावेश किया गया है। इस पुस्तक में श्री दुर्गा यन्त्र, संक्षिप्त पाठ एवं संकल्प विधि, श्री देवी कवच, श्री अर्गलास्तोत्र, श्री कीलक स्तोत्र, रात्रिसूक्त, नवार्णमन्त्र, 13 पाठ अध्याय, श्री चण्डी पूजा, चरित्र एवं स्तोत्र, चालीसा एवं आरतियों सहित विस्तृत वर्णन किया है।

ध्यान रहे–बिना संकल्प विधि के किया जप-पाठ एवं कोई भी अनुष्ठान पूर्ण फल नहीं देता। मार्कीट में बिकने वाली अधिकांश हिन्दी भाषी सप्तशतियों में संकल्पविधि, पूजन विधि आदि आवश्यक विषयों का अभाव मिलता है। श्रद्धा पूर्वक सही विधि द्वारा श्री दुर्गा जी के चरित्रों का विधिपूर्वक पाठ करने से मनुष्यों के पाप नष्ट होकर उन्हें धन-धान्य, सौभाग्यादि की प्राप्ति एवं मनोवांछित कामनाओं की सहज पूर्ति होती है। **भेंट–100 रु०**

नोट–आज ही स्थानीय पुस्तक विक्रेता से खरीदें अथवा पत्र लिखकर वी.पी. द्वारा मंगवाकर एवं पाठ कर लाभान्वित हों। **–जनरल बुक डिपो, अड्डा होशियारपुर चौंक, जालन्धर (पंजाब)**

पाठ कर लाभान्वित हों। –जनरल बुक डिपो,

विस्तृत 'ग्रहण-विवरण' (वि. संवत् २०७७)

परिलेख–
–पं. विवेक शर्मा

वि. संवत् २०७७ (सन् 2020–21 ई.) में पृथ्वी (भूलोक) पर दो ग्रहण घटित होंगे–

(1) कंकण सूर्यग्रहण (21 जून, 2020 ई., रविवार)

(2) खग्रास सूर्यग्रहण (14 दिसम्बर, 2020 ई., सोमवार)

भारत में (1) नं. वाला कंकण सूर्यग्रहण (21 जून, 2020 ई.) ही दिखाई देगा (2) नं. वाला खग्रास सूर्यग्रहण (14 दिसम्बर, 2020 ई.) भारत में दिखाई नहीं देगा।

☐ भारत में अदृश्य (दिखाई न देने वाले) ग्रहण का संक्षिप्त विवरण ☐

(1) खग्रास सूर्यग्रहण (14/15 दिसम्बर, 2020 ई., सोमवार)–

यह खग्रास सूर्यग्रहण मार्गशीर्ष अमावस, सोमवार को 14 दिसम्बर, 2020 ई. की सायं भा.स्टैं.टा. अनुसार $19^{\text{घं.}}-03^{\text{मिं.}}$ से रात्रि $24^{\text{घं.}}-23^{\text{मिं.}}$ तक भूगोल पर दिखाई देगा। यह ग्रहण मध्य तथा दक्षिणी-दक्षिण अमरीका, अफ्रीका के दक्षिणी देशों-नाम्बिया, साउथ-अफ्रीका, अंगोला, बोत्सवाना, प्रशान्त तथा हिन्द महासागर में दिखाई देगा। इसकी खग्रास आकृति दक्षिण-अमरीका के दक्षिणी देशों में (अर्जन्टीना, चिली) दिखाई देगी। **भारत में यह ग्रहण दिखाई नहीं देगा।** भा.स्टैं.टा. के अनुसार इसका समय इस प्रकार होगा–

ग्रहण प्रारम्भ	$19^{\text{घं.}}-03^{\text{मिं.}}$	(भा.स्टैं.टा.)
खग्रास प्रारम्भ	$20^{\text{घं.}}-02^{\text{मिं.}}$	
ग्रहण मध्य (परमग्रास)	$21^{\text{घं.}}-39^{\text{मिं.}}$	
खग्रास समाप्त	$23^{\text{घं.}}-34^{\text{मिं.}}$	
ग्रहण समाप्त	$24^{\text{घं.}}-23^{\text{मिं.}}$	

☐ भारत में दृश्य एकमात्र ग्रहण का विस्तृत विवरण ☐

(1) कंकण (चूड़ामणि) सूर्यग्रहण (21 जून, 2020 ई., आषाढ़ अमावस, रविवार)–

यह कंकणाकृति सूर्यग्रहण 21 जून, 2020 ई. की प्रातः से दोपहर तक सम्पूर्ण भारत में खण्डग्रास रूप में ही दिखाई देगा। इस ग्रहण की कंकणाकृति केवल उत्तरी-राजस्थान, उत्तरी-हरियाणा तथा उत्तराखण्ड राज्य के उत्तरी क्षेत्रों में से गुज़रेगी। इन कंकण-मार्ग वाले क्षेत्रों में इस ग्रहण का परमग्रास लगभग 99.4 प्रतिशत (100%) रहेगा। जबकि शेष उत्तरी भारत में परमग्रास सामान्यतः 90 प्रतिशत और कई स्थलों पर इससे कुछ अधिक भी होगा। मध्य भारत में इसका परमग्रास 70 से 90 प्रतिशत तथा दक्षिणी प्रान्तों में 30 से 70 प्रतिशत तक पाया जाएगा।

भारत के अतिरिक्त यह ग्रहण दक्षिणी-पूर्वी यूरोप, ऑस्ट्रेलिया के केवल उत्तरी क्षेत्रों, न्यू-गियाना, फिजी, अधिकतर अफ्रीका (दक्षिणी देशों को छोड़कर), प्रशान्त व हिन्द महासागर, मध्य पूर्वी एशिया (अफगानिस्तान, पाकिस्तान, मध्य-दक्षिणी चीन, बर्मा, फिलीपीन्स आदि) में दिखाई देगा।

भूलोक पर इस कंकण-ग्रहण का समय इस प्रकार रहेगा–

	घं.	मिं.	सैं.	
ग्रहण प्रारम्भ	9	15	58	(भा.स्टैं.टा.) 21 जून, 2020 ई.
कंकण प्रारम्भ	10	17	45	
परमग्रास (मध्य)	12	10	04	
कंकण समाप्त	14	02	17	
ग्रहण समाप्त	15	04	01	

ग्रासमान = 99.4, **ग्रहण की अवधि** = $5^{\text{घं.}}-48^{\text{मिं.}}-03^{\text{सैं.}}$, कंकण की अवधि = $00^{\text{मिं.}}-38^{\text{सैं.}}$

भारत के प्रत्येक नगर/ग्राम में इसे अलग-अलग समय पर खण्डग्रास रूप में देखा जा सकेगा। उत्तरी भारत में इस कंकणाकृति सूर्यग्रहण का ग्रासमान अधिक होगा, जबकि मध्य तथा दक्षिणी भारत में इसकी कंकणाकृति का ग्रास कम होता जाएगा।

भारत के प्रसिद्ध-प्रसिद्ध लगभग 200 से भी अधिक नगरों में इस ग्रहण का स्पर्श (प्रारम्भ), मध्य (परमग्रास) तथा मोक्षकाल (समाप्ति) (भा.स्टै.टा.) आगे पृष्ठ 30 पर दिया गया है। इस परमग्रास (मध्य) के समय ग्रसित हुए सूर्य का प्रतिशत ग्रास भी दिया गया है। राजस्थान-हरियाणा-उत्तराखण्ड राज्यों के उत्तरी भागों में से गुज़रने वाली कंकण-मार्ग-पट्टी के आसपास स्थित प्रसिद्ध नगरों में कंकणाकृति-ग्रास का प्रारम्भ एवं समाप्तिकाल अलग से दिया गया है।

पृष्ठ 29 पर **ग्रहण चित्र (1)** में भारत के विभिन्न स्थलों परं इस ग्रहण का परमग्रास (प्रतिशत) दर्शाने वाली रेखाएं दी गई है। इससे आप अपने नगर के अक्षांश-रेखांश द्वारा इस चित्र में नगर का स्थान अंकित कर उस नगर में इस कंकणकृति का मध्यकालीन परमग्रासमान जान सकते हैं। इसी चित्र नं. 1 में **'क-ख'** और **'च-छ'** रेखाओं के मध्य एक धुंधला क्षेत्र (पट्टी) दिखाया गया है। इस पट्टी के मध्य स्थित राजस्थान, हरियाणा तथा उत्तराखण्ड के उत्तरी भागों में इस ग्रहण की कंकण-आकृति दिखाई देगी। पृष्ठ 34 पर **ग्रहण चित्र (4)** में कंकण-ग्रहण के इस मार्ग को अधिक स्पष्टता के लिए बड़ा बनाकर दिखाया गया है। इस पट्टी के मध्य से गुजरने वाली 'A-B' रेखा पर स्थित नगरों में ग्रहण की कंकणाकृति पूर्ण रूप से दिखाई देगी (99.4%)। अर्थात् वहाँ ग्रहण मध्य (परमग्रास) के समय चन्द्र-बिम्ब का केन्द्र सूर्य-बिम्ब के बिल्कुल लगभग केन्द्र पर होगा। जिससे उस समय सूर्य बिम्ब का चमकदार भाग लगभग 38 सैकिण्ड के लिए चारों ओर से समान रूप से दृश्यमान होगा। यह एक अद्भुत आकाशीय परिदृश्य होगा।

पृष्ठ 33 पर **ग्रहण चित्र (2)** में इस ग्रहण की स्पर्श रेखाएं (प्रारम्भ) तथा **ग्रहण चित्र (3)** में मोक्ष रेखाएं (समाप्ति) दी गई है। इन दोनों चित्रों से आप अपने अभीष्ट नगर के अक्षांश-रेखांश अनुसार उस नगर में इस ग्रहण का प्रारम्भ एवं समाप्तिकाल जान सकते हैं।

ध्यान दें—यह कंकण-सूर्यग्रहण रविवार के दिन घटित हो रहा है। अत: इसे **'चूड़ामणि-सूर्यग्रहण'** कहा जाता है। शास्त्रों में इस ग्रहण में स्नान-दान-जप-पाठ-पूजा आदि का बहुत माहात्म्य माना गया है। इस दिन कुरुक्षेत्र तथा गाँव-फाल्गू (ज़ि-कैथल) में बहुत बड़ा मेला भी आयोजित होता है तथा इन क्षेत्रों में स्थित पवित्र तालाबों तथा हरिद्वार, प्रयागराज आदि पवित्र तीर्थस्थलों पर स्नानादि का विशेष पुण्यफल प्राप्त होता है।

ग्रहण का ग्रासमान—ग्रहण-चित्र (1) व (4) के अनुसार राजस्थान, हरियाणा, उत्तराखण्ड के उत्तरी क्षेत्रों में ही इस ग्रहण की सम्पूर्ण कंकणकृति (99.4%) दिखाई देगी। ज्यों-ज्यों हम इस धुंधली पट्टी से दूर होते जाएंगे, वहाँ ग्रहण का ग्रासमान अर्थात् परमग्रास उतना ही कम होता जाएगा। शेष भारत में इस ग्रहण की खण्ड-आकृति ही दिखाई देगी।

ग्रहण का सूतक—इस ग्रहण का सूतक 20 जून, 2020 ई. की रात्रि लगभग 9$^{\text{घं.}}$-16$^{\text{मि.}}$ (21-16) से प्रारम्भ हो जाएगा।

ग्रहण के समय क्या करें—क्या न करें ?

जब ग्रहण का प्रारम्भ हो रहा हो, तो उस समय से पहिले ही स्नान-जप अर्थात् संकल्पादि कर ले, मध्यकाल में होम, देवपूजा, पाठ और ग्रहण का मोक्ष समीप होने पर दान तथा पूर्ण मोक्ष होने पर पुन: स्नान करना चाहिए।

स्पर्शे स्नानं जपं कुर्यान्मध्ये होमं सुरार्चनम्।
मुच्यमाने सदा दानं विभुक्तौ स्नानमाचरेत्।। (ज्यो. नि.)

सूर्यग्रहण काल में भगवान् सूर्य-उपासना, आदित्य हृदय-स्तोत्र, सूर्याष्टक स्तोत्र आदि सूर्य-स्तोत्रों का पाठ करना चाहिए। पका हुआ अन्न, कटी हुई सब्ज़ी, ग्रहणकाल में दूषित हो जाते हैं, उन्हें नहीं रखना चाहिए। परन्तु तेल, घी, दूध, लस्सी, मक्खन, पनीर, आचार, चटनी, मुरब्बा आदि में तिल या कुशातृण रख देने से ये ग्रहणकाल में दूषित नहीं होते। सूखे खाद्य पदार्थों में तिल या कुशा डालने की आवश्यकता नहीं। (मन्वर्थ मुक्तावली)

यथा— **अन्नं पक्वमिह त्याज्यं स्नानं सवसनं ग्रहे।**
वारितक्रारनालादि तिलैर्दभैर्न दुष्यते।।

ध्यान रहे, ग्रस्त सूर्य-बिम्ब को नंगी आँखों से कदापि न देखें। वैल्डिंग वाले काले ग्लास में से इसे देख सकते हैं।

सूतक एवं ग्रहणकाल में मूर्ति स्पर्श करना, अनावश्यक खाना-पीना, मैथुन, निद्रा, तैलमर्दन वर्जित है। झूट-कपटादि वृथा अलाप, मूत्र-पुरीषोत्सर्ग, नाखुन काटने आदि से परहेज़ करना चाहिए। वृद्ध, रोगी, बालक एवं गर्भवती स्त्रियों को यथानुकूल भोजन या दवाई आदि लेने में कोई दोष नहीं।

गर्भवती महिलाओं को ग्रहणकाल में सब्ज़ी काटने, शयन करने, पापड़ सेंकने आदि उत्तेजक कार्यों से परहेज़ करना चाहिए तथा धार्मिक ग्रन्थ का पाठ करते हुए प्रसन्नचित्त रहें। इससे भावी सन्तति स्वस्थ एवं सद्‌गुणी होती है। चूड़ामणि ग्रहण होने से कुरुक्षेत्र, फाल्गु, हरिद्वार, प्रयागराज आदि तीर्थों पर स्नान, दानादि का विशेष माहात्म्य होगा।

रोग शान्ति के लिए ग्रहणकाल में **'श्रीमहामृत्युञ्जय मन्त्र'** का जप करना शुभ होता है।

विशेष प्रयोग—कांसे की कटोरी में घी भरकर उसमें चान्दी का सिक्का (मन्त्रपूर्वक) डालकर अपना मुँह देखकर छायापात्र मन्त्र पढ़ें तथा ग्रहण समाप्ति पर वस्त्र, फल व दक्षिणा सहित ब्राह्मण को दान करने से क्लिष्ट रोगों से निवृत्ति होती है।

ग्रहण का राशिफल—यह ग्रहण मृगशिर तथा आर्द्रा नक्षत्र एवं मिथुन राशि में घटित होगा। अतएव इस राशि/नक्षत्र वालों को ग्रहण-दान, पाठ, आदित्य हृदय स्तोत्र, सूर्याष्टक स्तोत्र आदि का पाठ विशेष रूप से करना चाहिए। स्मृतिनिर्णय में कहा है कि सूर्यग्रहण में सूर्य का जप व दान और चन्द्रग्रहण में चंद्र तथा राहु का जप व दान करना चाहिए। विभिन्न राशि वाले जातकों के लिए इस ग्रहण का फल इस प्रकार होगा–

जन्म/नाम राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	कुंभ	मीन
फल	धन लाभ	धन हानि	दुर्घटना, चोटभय चिन्ता	धन हानि	लाभ, उन्नति	रोग, कष्ट भय	चिन्ता, संतान कष्ट	शत्रु-भय साधारण लाभ	स्त्री/ पति कष्ट	रोग, गुप्त चिन्ता	खर्च अधिक, कार्य-विलम्ब	कार्य सिद्धि

सूर्यग्रहण एवं लोक भविष्य

***(i)* ग्रहण का मास-फल**—यह कंकण चूड़ामणि सूर्यग्रहण आषाढ़ मास में घटित होने से छोटे-छोटे तालाब समाप्त तथा नदियों का प्रवाह कम हो जाएगा अर्थात् कुछ प्रान्तों में भीषण अकाल व्याप्त हो। अफगानिस्तान, काश्मीर, चीन आदि देशों/प्रदेशों में राजनीतिक तथा प्राकृतिक प्रकोपों से व्यापक जन-धन हानि हो तथा सर्वत्र खण्ड वर्षा के योग बनेंगे। फलों तथा सब्ज़ियों की हानि हो।

***(ii)* सूर्यग्रहण का वारफल एवं माहात्म्य**—सूर्यग्रहण रविवार को होने से आगे वर्षा की कमी, गेहूँ, धान्यादि का कम उत्पादन होगा। गायों के दूध में भी कमी तथा विश्व के प्रमुख राष्ट्राध्यक्षों के मध्य तनाव व युद्धजन्य वातावरण बनेगा। गेहूँ, चावल, मूँग आदि धान्य तथा गुड़, घी का संग्रह करने से दो मास अच्छा लाभ प्राप्त होगा।

कुरुक्षेत्र, फाल्गू, हरिद्वार, प्रयागराज आदि तीर्थों पर स्नानादि का अनन्त माहात्म्य होगा।

***(iii)* ग्रहण नक्षत्र-फल**—यह ग्रहण मृगशिर तथा आर्द्रा नक्षत्र में घटित होने से

परहेज करना चाहिए। वृद्ध, रोगी, बालक एवं गर्भवती स्त्रियों को यथानुकूल भोजन या दवाई होगा।

***(iii)* ग्रहण नक्षत्र-फल**–यह ग्रहण मृगशिर तथा आर्द्रा नक्षत्र में घटित होने से वस्त्रों, फलों, पुष्पों का व्यापार करने वालों, परस्त्रियों से स्नेह रखने वालों, मदिरा सेवन करने वालों तथा लेखकों को पीड़ा व कष्ट रहे।

***(iv)* ग्रहण योग-फल**–'गण्ड' तथा 'वृद्धि' योग में ग्रहण घटित होने से वैद्यों, तन्त्र विद्या करने वालों, योगी-संन्यासियों तथा दक्षिणी क्षेत्र में रहने वाले लोगों को कष्ट रहे। **(*v*) मिथुन राशिस्थ ग्रहण फल**–प्रधाननेता, पाकिस्तान, मुस्लिम देशों, केन्द्रीय सत्ता (यमुना-निकट) के लिए कठिन एवं चुनौतीपूर्ण समय होगा। कहीं अल्प वर्षा, राज्य-परिवर्तन तथा प्राकृतिक प्रकोपों से व्यापक जन-धन की हानि होगी। प्राय: सूर्यग्रहण होने के बाद कुछ समय के लिए दुर्भिक्ष (आकालजन्य) की परिस्थितियां बनती हैं और उस समय जो नक्षत्र विद्यमान हो, तो उस नक्षत्र के अक्षरों के नामवाली वस्तुएं भी महंगी हो जाती हैं।

कंकण सूर्यग्रहण (21 जून, 2020 ई.)

'कंकणाकृति'

उत्तर
पश्चिम
पूर्व
दक्षिण

कंकणाकृति सूर्यग्रहण के मार्ग में आने वाले मुख्य नगरों में कंकण प्रारम्भ/समाप्ति काल

नगर	ग्रहण प्रारम्भ घं. मिं. सैं.	कंकण आरम्भ घं. मिं. सैं.	परम ग्रास घं. मिं. सैं.	कंकण समाप्त घं. मिं. सैं.	ग्रहण समाप्त घं. मिं. सैं.	कंकण अवधि मिं. सैं.
कुरुक्षेत्र (हरि.)	10 21 03	12 01 24	12 01 46	12 02 03	13 47 26	0 39
चमोली	10 26 56	12 08 40	12 09 03	12 09 18	13 53 54	0 38
जोशीमठ	10 27 38	12 09 32	12 09 47	12 10 01	13 54 24	0 29
देहरादून	10 24 00	12 05 00	12 05 15	12 05 31	13 50 31	0 31
सिरसा	10 16 45	11 55 54	11 56 06	11 56 30	13 42 26	0 36
सूरतगढ़	10 14 25	11 52 30	11 52 56	11 53 15	13 39 25	0 45
यमुनानगर	10 22 10	12 02 42	12 03 01	12 03 20	13 48 37	0 37
लाडवा (ह.)	10 21 32	12 02 04	12 02 18	12 02 31	13 48 03	0 27

कंकण सूर्यग्रहण (21 जून, 2020 ई.)

(कंकण ग्रहणमार्ग एवं परमग्रास रेखाएं)

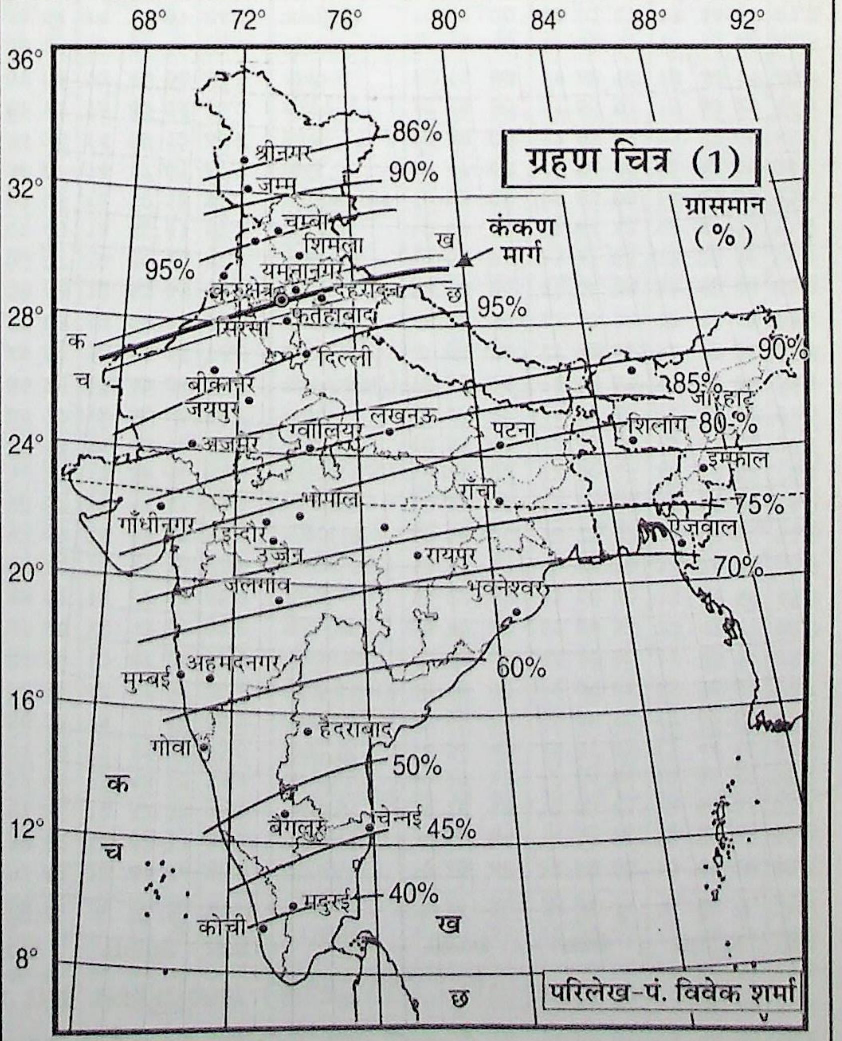
68°
72°
76°
80°
84°
88°
92°
36°
32°
28°
24°
20°
16°
12°
8°
ग्रहण चित्र (1)
ग्रासमान (%)
कंकण मार्ग
क
ख
च
छ
86%
90%
95%
95%
90%
85%
80%
75%
70%
60%
50%
45%
40%
श्रीनगर
जम्मू
चम्बा
शिमला
यमुनानगर
कुरुक्षेत्र
देहरादून
फतेहाबाद
सिरसा
दिल्ली
बीकानेर
जयपुर
अजमेर
ग्वालियर
लखनऊ
पटना
जोरहाट
शिलांग
इम्फाल
राँची
भोपाल
गाँधीनगर
इन्दौर
उज्जैन
एजवाल
रायपुर
जलगांव
भुवनेश्वर
अहमदनगर
मुम्बई
हैदराबाद
गोवा
बैंगलूरु
चेन्नई
मदुरई
कोची
परिलेख-पं. विवेक शर्मा

कंकण सूर्यग्रहण (21 जून, 2020 ई०)

[भारत के मुख्य नगरों में ग्रहण प्रारम्भ मध्य (परमग्रास) तथा समाप्तिकाल (भा.स्टैं.टा.) *सूर्यबिम्ब = 99.4%

नगर	प्रारम्भ घं. मिं. सैं.	मध्य घं. मिं. सैं.	समाप्ति घं. मिं. सैं.	ग्रास प्रतिशत	नगर	प्रारम्भ घं. मिं. सैं.	मध्य घं. मिं. सैं.	समाप्ति घं. मिं. सैं.	ग्रास प्रतिशत	नगर	प्रारम्भ घं. मिं. सैं.	मध्य घं. मिं. सैं.	समाप्ति घं. मिं. सैं.	ग्रास प्रतिशत
अगरतला	10 55 54	12 45 16	14 23 54	76.9	कण्डाघाट	10 23 03	12 03 11	13 47 58	97.0	गोरायां	10 20 38	11 59 37	13 44 20	95.7
अजमेर	10 11 53	11 52 8	13 40 58	90.5	कपूरथला	10 20 23	11 58 52	13 43 17	94.6	गाँधीधाम (गु.)	9 59 04	11 34 57	13 24 25	84.9
अनन्तनाग (का.)	10 23 59	12 00 18	13 41 52	87.4	करनाल	10 21 01	12 01 55	13 47 58	98.7	ग्वालियर	10 19 12	12 02 31	13 50 57	87.3
अमरोहा (उ.प्र.)	10 23 2	12 5 30	13 51 58	95.4	करतारपुर	10 20 40	11 59 09	13 43 29	94.4	चण्डीगढ़	10 24 22	12 04 28	13 48 40	96.5
अमृतसर	10 19 50	11 57 46	13 41 54	93.5	काँगड़ा	10 23 11	12 01 49	13 45 24	93.0	चम्बा(हि.प्र.)	10 23 40	12 01 45	13 44 46	91.5
अमेठी (उ.प्र.)	10 28 14	12 14 16	14 1 1	85.1	काँचीपुरम्	10 20 17	11 56 23	13 38 56	45.2	चन्दौसी(उ.प्र.)	10 23 13	12 06 10	13 52 52	93.8
अम्बाला	10 21 37	12 1 59	13 47 25	98.7	कानपुर	10 24 43	12 09 38	13 57 03	86.8	चमौली(उ.खण्ड)*	10 26 56	12 09 03	13 53 54	99.4
अयोध्या	10 29 50	12 15 52	14 2 4	87	कालका	10 22 28	12 02 33	13 47 28	97.2	चितौड़गढ़	10 10 03	11 50 30	13 40 11	85.8
अर्की (हि.प्र.)	10 23 4	12 2 56	13 47 30	96.3	किश्तवाड़(का.)	10 24 20	12 01 30	13 43 34	89.0	चुरू (राज.)	10 15 00	11 54 56	13 42 21	95.9
अलवर	10 17 21	11 58 58	13 46 52	92.4	कावारत्ती(लक्ष)	9 59 05	11 26 01	13 07 16	45.5	चेन्नई	10 22 02	11 59 00	13 41 30	45.6
अलीगढ़	10 20 54	12 3 34	13 50 56	92.4	कुराली(पं.)	10 21 46	12 01 35	13 46 32	97.0	छतरपुर(उ.प्र.)	10 21 32	12 06 16	13 54 45	82.4
अल्मोड़ा	10 26 37	12 9 30	13 54 57	96.9	कुरुक्षेत्र*	10 21 03	12 01 46	13 47 26	99.4	छपरा(बि.)	10 36 00	12 23 42	14 08 32	83.1
अहमदाबाद	10 3 44	11 42 02	13 32 14	82.1	कुल्लू	10 24 33	12 03 52	13 47 31	93.9	छिंदवाड़ा	10 17 38	12 01 38	13 51 05	74.0
अबोहर	10 16 8	11 54 24	13 40 5	97.4	कर्नूल (तेलं)	10 13 31	11 52 30	13 39 49	55.6	जबलपुर(म.प्र.)	10 21 02	12 06 03	13 54 52	76.8
आगरा	10 19 56	12 02 50	13 50 42	90.3	कैथल	10 19 56	12 00 18	13 46 19	99.3	जम्मू	10 21 40	11 58 40	13 41 29	90.2
आजमगढ़	10 31 48	12 18 39	14 04 33	84.4	कोटखाई(हि.प्र.)	10 24 16	12 04 37	13 49 08	96.7	जयपुर	10 14 47	11 55 55	13 44 22	91.0
आबू(राज.)	10 05 50	11 44 24	13 34 1	86.8	कोटा	10 12 51	11 54 22	13 43 51	85.7	जलगांव(म.)	10 08 26	11 49 03	13 39 32	73.3
आनन्दपुर सा.	10 22 20	12 1 46	13 46 17	95.7	कोलकाता	10 46 15	12 35 36	14 17 15	72.5	जामनगर(गु.)	9 58 13	11 33 55	13 23 31	83.1
इटावा (उ.प्र.)	10 31 31	12 17 35	14 03 12	88.5	कोहिमा	11 04 54	12 53 07	14 28 46	83.6	जालन्धर	10 20 34	11 59 13	13 43 42	94.9
इन्दौर	10 10 24	11 51 46	13 42 05	78.3	कोचीन(के.)	10 10 36	11 38 42	13 17 51	39.7	जींद	10 19 01	11 59 34	13 46 03	98.0
इम्फाल	11 04 33	12 53 07	14 28 55	80.6	खन्ना	10 20 51	12 00 27	13 45 35	97.2	जैसलमेर	10 05 24	11 41 57	13 29 46	95.3
ईटानगर	11 03 18	12 51 00	14 27 02	87.9	खरड़	10 21 45	12 01 40	13 46 41	97.3	जोधपुर	10 08 28	11 47 13	13 36 00	91.4
उज्जैन	10 10 39	11 52 02	13 42 15	79.7	खुर्जा(उ.प्र.)	10 20 48	12 03 06	13 50 15	93.7	जोगिन्द्रनगर	10 23 55	12 03 00	13 46 39	93.6
उदयपुर(राज.)	10 07 35	11 47 04	13 36 52	85.7	गंगटोक	10 48 3	12 36 07	14 17 01	87.7	जैतों	10 17 56	11 56 38	13 42 00	96.9
उन्नाव	10 25 13	12 10 13	13 57 31	87.0	गया	10 36 14	12 24 20	14 09 12	80.0	झांसी	10 20 00	12 03 44	13 52 09	86.2
ऊधमपुर(का.)	10 22 28	11 59 28	13 42 01	89.7	गाज़ियाबाद	10 20 27	12 02 15	13 49 09	95.2	झुंझुनूं	10 15 30	11 55 52	13 43 28	94.9
ऊना (हि.प्र.)	10 22 18	12 01 22	13 45 35	94.7	गुड़गांव	10 19 25	12 01 01	13 48 08	94.9	टोंक	10 13 56	11 55 16	13 44 11	88.8
कटक	10 38 00	12 26 09	14 09 58	66.2	गुरदासपुर	10 21 31	11 59 31	13 43 11	92.6	टोहाना*	10 18 43	11 58 43	13 44 52	99.4
कटनी (म.प्र.)	10 22 41	12 08 05	13 56 31	78.6	गुवाहाटी	10 57 17	12 45 54	14 24 01	84.4	डलहौज़ी	10 23 20	12 01 22	13 44 27	91.5
कठुआ(का.)	10 22 11	11 59 59	13 43 14	91.7	गोईंदवाल(पं.)	10 19 50	11 58 06	13 42 31	94.4	डूंगरपुर(रा.)	10 06 49	11 46 19	13 36 24	83.5
कन्नौज(उ.प्र.)	10 24 21	12 08 47	13 56 03	88.8	गोरखपुर	10 32 54	12 19 36	14 05 03	86.5	डोडा (का.)	10 23 41	12 00 50	13 43 05	89.3

*चिन्हित नगर ही कंकण ग्रहण के मार्ग में आएंगे अर्थात् यहाँ **'कंकण सूर्यग्रहण'** की कंकणाकृति कुछ 35-40 सैंकिंड के लिए दिखाई देगी। इन नगरों का

चिन्हित नगर ही कंकण ग्रहण के मार्ग में आएंगे अर्थात् यहाँ **'कंकण सूर्यग्रहण'** की कंकणाकृति कुछ 35-40 सैकिंड के लिए दिखाई देगी। इन नगरों का

कंकण सूर्यग्रहण (21 जून, 2020 ई०)

[भारत के मुख्य नगरों में ग्रहण प्रारम्भ मध्य (परमग्रास) तथा समाप्तिकाल (भा.स्टैं.टा.) *सूर्यबिम्ब = 99.4%

नगर	प्रारम्भ			मध्य			समाप्ति			ग्रास
	घं.	मिं.	सैं.	घं.	मिं.	सैं.	घं.	मिं.	सैं.	प्रतिशत
डिब्रूगढ़	11	07	19	12	54	22	14	29	01	89.5
त्रिवेन्द्रम्	10	14	46	11	39	55	13	15	04	34.7
दरभंगा	10	39	40	12	27	42	14	11	24	84.1
दार्जिलिंग	10	47	01	12	35	13	14	16	31	86.7
दिल्ली	10	20	00	12	01	32	13	48	30	95.2
देवबन्द	10	22	23	12	03	47	13	49	43	98.3
देवरिया	10	33	41	12	20	39	14	05	58	85.7
देवप्रयाग	10	25	00	12	06	47	13	52	05	99.1
देहरादून*	10	24	00	12	05	15	13	50	31	99.4
द्वारिका	9	56	01	11	30	34	13	19	43	83.7
दुर्ग.(छत्ती.)	10	23	47	12	09	25	13	57	27	69.9
धनबाद	10	40	22	12	29	12	14	12	51	76.5
धर्मशाला	10	23	39	12	02	11	13	45	33	92.5
धूरी(पं.)	10	19	39	11	59	12	13	44	42	97.9
नवलगढ़(रा.)	10	14	55	11	55	18	13	43	06	94.2
नकोदर	10	20	05	11	58	49	13	43	31	95.4
नरवाना(ह.)	10	19	03	11	59	17	13	45	31	98.9
नवांशहर	10	21	20	12	00	34	13	45	16	95.8
नंगल(पं.)	10	22	14	12	01	28	13	45	51	95.2
नागपुर	10	17	35	12	01	27	13	50	48	71.0
नागौर(रा.)	10	10	48	11	49	55	13	38	10	93.5
नाभा(पं.)	10	20	17	12	00	01	13	45	28	98.0
नारनौल	10	17	05	11	58	11	13	45	47	94.1
नालागढ़(हि.प्र.)	10	22	20	12	02	04	13	46	47	96.4
नाहन	10	22	47	12	03	21	13	48	31	98.3
नासिक	10	03	35	11	42	01	13	32	29	71.9
नीमच(म.प्र.)	10	09	55	11	50	33	13	40	25	84.4
नौशैहरा(का.)	10	21	25	11	57	31	13	39	41	88.4
नैनीताल	10	25	49	12	08	43	13	54	27	96.3
पंचकूला	10	22	08	12	02	15	13	47	19	97.6

नगर	प्रारम्भ			मध्य			समाप्ति			ग्रास
	घं.	मिं.	सैं.	घं.	मिं.	सैं.	घं.	मिं.	सैं.	प्रतिशत
पटना	10	36	56	12	24	52	14	09	27	82.4
पटियाला	10	20	41	12	00	42	13	46	12	98.4
पठानकोट	10	22	23	12	00	23	13	43	45	92.0
पपरोला(हि.प्र.)	10	23	40	12	02	30	13	46	06	93.2
पंजिम(गोआ)	10	01	42	11	36	32	13	24	37	58.5
पाण्डिचेरी	10	21	36	11	56	11	13	37	04	42.4
पानीपत	10	20	28	12	01	31	13	47	52	97.7
पालमपुर	10	23	43	12	02	30	13	46	02	93.1
पिथौरागढ़	10	27	49	12	11	06	13	56	23	96.5
पुंछ(का.)	10	22	22	11	57	44	13	39	00	86.3
पूना	10	02	51	11	40	27	13	30	31	67.5
पुरी	10	38	14	12	26	05	14	09	35	64.0
पोर्टब्लेयर	11	15	28	12	53	28	14	19	03	39.4
प्रतापगढ़(उ.प्र.)	10	28	23	12	14	35	14	01	24	84.1
प्रयागराज	10	27	52	12	14	07	14	01	08	83.0
फरीदकोट	10	18	00	11	56	26	13	41	36	96.2
फगवाड़ा	10	20	48	11	59	41	13	44	15	95.2
फरीदाबाद	10	19	54	12	01	43	13	48	50	94.6
फतेहाबाद(ह.)	10	17	34	11	57	17	13	43	38	99.2
फाज़िल्का	10	16	19	11	54	20	13	39	45	96.5
फिरोज़पुर	10	18	14	11	56	26	13	41	20	95.4
बटाला	10	20	40	11	58	39	13	42	35	93.1
बंगा(पं.)	10	21	08	12	00	13	13	44	51	95.5
बलाचौर(पं.)	10	21	35	12	01	01	13	45	46	96.2
बरनाला(पं.)	10	19	04	11	58	21	13	43	50	97.7
बदायूं	10	23	25	12	06	49	13	53	45	92.3
बरेली(उ.प्र.)	10	24	29	12	07	57	13	54	32	93.1
बल्लभगढ़	10	19	48	12	01	39	13	48	50	94.3
बांसवाड़ा	10	07	55	11	48	02	13	38	16	81.8
बिलासपुर(हि.प्र.)	10	22	52	12	02	26	13	46	50	95.6

नगर	प्रारम्भ			मध्य			समाप्ति			ग्रास
	घं.	मिं.	सैं.	घं.	मिं.	सैं.	घं.	मिं.	सैं.	प्रतिशत
बीकानेर	10	11	24	11	49	58	13	37	32	96.3
बैजनाथ(हि.प्र.)	10	23	46	12	02	40	13	46	17	93.3
बारामूला(का.)	10	23	17	11	58	31	13	39	22	85.5
बनिहाल(का.)	10	23	51	12	00	26	13	42	13	88.0
बुलन्दशहर	10	21	01	12	03	16	13	50	18	94.2
बैंगलुरू	10	12	55	11	47	35	13	31	43	47.4
भद्रवाह(का.)	10	23	36	12	01	00	13	43	31	89.9
भरतपुर	10	18	38	12	01	09	13	49	14	90.3
भिवानी	10	17	53	11	58	34	13	45	33	96.5
भागलपुर(बि.)	10	42	21	12	31	03	14	14	02	81.1
भुज	9	58	26	11	33	53	13	23	07	85.9
भुवनेश्वर	10	38	02	12	26	05	14	09	47	65.4
भोपाल	10	14	35	11	57	28	13	47	19	78.7
मथुरा	10	19	32	12	02	04	13	49	48	91.5
मण्डी(हि.प्र.)	10	23	54	12	03	19	13	47	16	94.5
मदुरै(ता.)	10	17	24	11	46	43	13	24	49	37.9
मन्दसौर	10	09	56	11	50	44	13	40	45	83.0
मंसूरी	10	24	16	12	05	29	13	50	36	99.1
महेन्द्रगढ़	10	17	15	11	58	10	13	45	34	94.9
मलेरकोटला	10	19	55	11	59	23	13	44	43	97.5
मुक्तसर	10	17	16	11	55	38	13	41	00	96.6
मुजफ्फरनगर	10	22	04	12	03	36	13	49	45	96.6
मुम्बई	10	00	43	11	37	38	13	27	47	69.9
मुरादाबाद	10	23	44	12	06	29	13	52	52	93.4
मोहाली	10	21	48	12	01	47	13	46	53	97.5
मेरठ	10	21	27	12	03	17	13	49	51	96.0
मैसूर	10	10	17	11	43	05	13	26	33	46.2
मोगा	10	19	00	11	57	41	13	42	43	96.1
यमुनानगर*	10	22	10	12	03	01	13	48	37	99.4
रतनगढ़(रा.)	10	13	57	11	53	39	13	41	16	95.4

नगर	प्रारम्भ			मध्य			समाप्ति			ग्रास
	घं.	मिं.	सैं.	घं.	मिं.	सैं.	घं.	मिं.	सैं.	प्रतिशत
रतलाम	10	09	12	11	49	56	13	40	11	80.7
राजकोट(गु.)	9	59	22	11	35	44	13	25	37	81.9
राँची	10	36	48	12	25	14	14	09	57	75.4
रामपुरबुशैहर	10	24	49	12	04	56	13	49	06	95.8
रामेश्वरम्	10	22	50	11	51	16	13	26	50	34.8
रायपुर(छत्ती)	10	24	49	12	10	44	13	58	31	69.9
रामबन(का.)	10	23	12	12	00	01	13	42	11	88.9
राजौरी(का.)	10	21	48	11	57	44	13	39	39	87.8
रामनगर) (का.)	10	22	43	12	00	00	13	42	40	90.2
रिवाड़ी	10	18	09	11	59	31	13	46	55	94.3
रियासी(का.)	10	22	15	11	58	56	13	41	18	89.1
रोपड़	10	21	51	12	01	32	13	46	22	96.6
रोहतक	10	19	05	12	00	07	13	46	56	96.5
रूड़की	10	23	02	12	04	29	13	50	13	98.6
रोहड़ू(हि.प्र.)	10	24	40	12	05	05	13	49	30	96.6
लखनऊ	10	26	30	12	11	41	13	58	36	87.7

नगर	प्रारम्भ			मध्य			समाप्ति			ग्रास
	घं.	मिं.	सैं.	घं.	मिं.	सैं.	घं.	मिं.	सैं.	प्रतिशत
लाडवा(ह.)*	10	21	32	12	02	18	13	48	03	99.4
लुधियाना	10	20	34	11	59	46	13	44	41	96.3
वाराणसी	10	30	46	12	17	43	14	04	03	77.3
वड़ोदरा	10	04	11	11	42	55	13	33	22	79.4
विजयवाड़ा	10	21	34	12	03	30	13	49	47	55.8
विशाखापट्नम	10	30	04	12	15	05	14	00	00	58.2
शिमला	10	23	20	12	03	24	13	48	00	96.6
शाहाबाद(ह.)	10	21	27	12	01	58	13	47	34	99.2
शिलांग	10	57	52	12	46	42	14	24	41	82.5
शाहजहांपुर	10	25	08	12	09	10	13	55	54	91.4
श्रीनगर(का.)	10	24	03	11	59	44	13	40	44	86.0
श्रीगंगानगर	10	14	58	11	53	08	13	39	07	98.1
संगरूर	10	19	26	11	59	06	13	44	46	98.5
सरहिन्द	10	21	04	12	00	52	13	46	03	97.5
सपाटू(हि.प्र.)	10	22	48	12	02	48	13	47	33	96.8
सहारनपुर	10	22	28	12	03	36	13	49	18	99.1
सरकाघाट	10	23	28	12	02	44	13	46	43	94.4
सागर(म.प्र.)	10	18	19	12	02	22	13	51	37	79.6
सिरसा*	10	16	45	11	56	06	13	42	26	99.4

नगर	प्रारम्भ			मध्य			समाप्ति			ग्रास
	घं.	मिं.	सैं.	घं.	मिं.	सैं.	घं.	मिं.	सैं.	प्रतिशत
सीकर	10	14	17	11	54	37	13	42	37	93.6
सुनाम	10	19	10	11	58	49	13	44	33	98.6
सूरतगढ़*	10	14	25	11	52	56	13	39	25	99.4
सुन्दरनगर	10	23	27	12	02	57	13	47	07	95.1
सोलन	10	23	02	12	03	12	13	48	01	97.1
सोनीपत	10	20	00	12	01	18	13	47	59	96.5
हमीरपुर(हि.प्र.)	10	22	58	12	02	04	13	46	07	94.4
हरिद्वार	10	23	46	12	05	22	13	50	57	98.9
हज़ारीबाग(झा.)	10	37	05	12	25	30	14	10	09	77.3
हनुमानगढ़	10	15	34	11	54	18	13	40	34	99.2
हाथरस	10	20	29	12	03	15	13	50	50	91.6
हापुड़	10	21	17	12	03	19	13	50	06	95.2
हाँसी	10	18	04	11	58	28	13	45	11	97.5
हाटकोटी(हि.प्र.)	10	24	36	12	05	03	13	49	31	96.7
हिसार	10	17	41	11	57	52	13	44	32	97.9
हुबली(कर्ना.)	10	05	24	11	41	18	13	29	06	56.6
हैदराबाद	10	14	46	11	55	43	13	44	03	59.9
होशंगाबाद	10	15	00	11	58	06	13	47	58	76.9
होशियारपुर	10	21	38	12	00	26	13	44	40	94.5

कंकण सूर्यग्रहण (21 जून, 2020 ई.)

(भूगोल पर ग्रहण-घटनास्थल, ग्रहणमध्य, परमग्रास और कंकण-मार्गस्थल)

(*i*) दक्षिण के उत्तर की ओर जा रही वक्र रेखाओं पर ग्रहण का मध्यकाल U.T. (Universal Time) दिया गया है। इसमें 5घं.-30मिं. जोड़ देने पर यह भा.स्टैं. टा. हो जायेगा।

(ii) पूर्व से पश्चिम की ओर जा रही वक्र रेखाओं पर ग्रहण का परम ग्रासमान (प्रतिशत) में अंकित है।

(iii) बाईं से दाईं ओर जा रही बारीक काली पट्टी 'कंकण-मार्ग' है। इसी पट्टी पर स्थित नगरों/देशों में कंकण-आकृति दिखाई देगी।

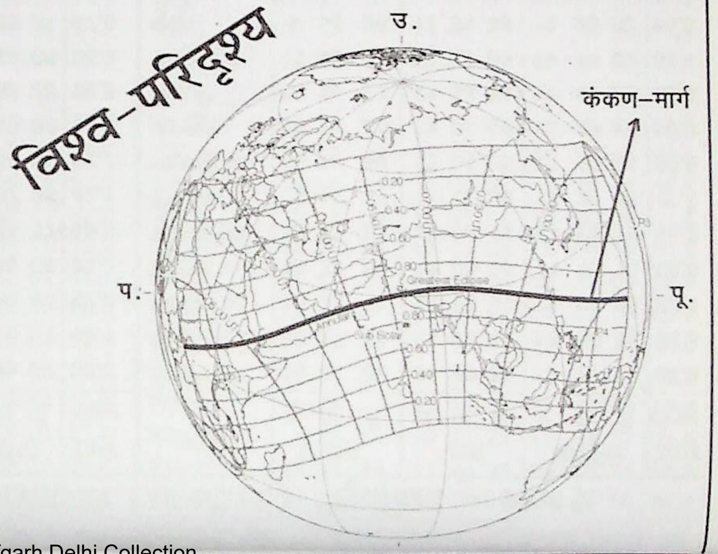

पट्टी पर स्थित नगरों/देशों में कंकण आकृति दिखाई देगी।

कंकण सूर्यग्रहण (21 जून, 2020 ई.)

[(स्पर्श रेखाएं (भा. स्टैं. टा.)]

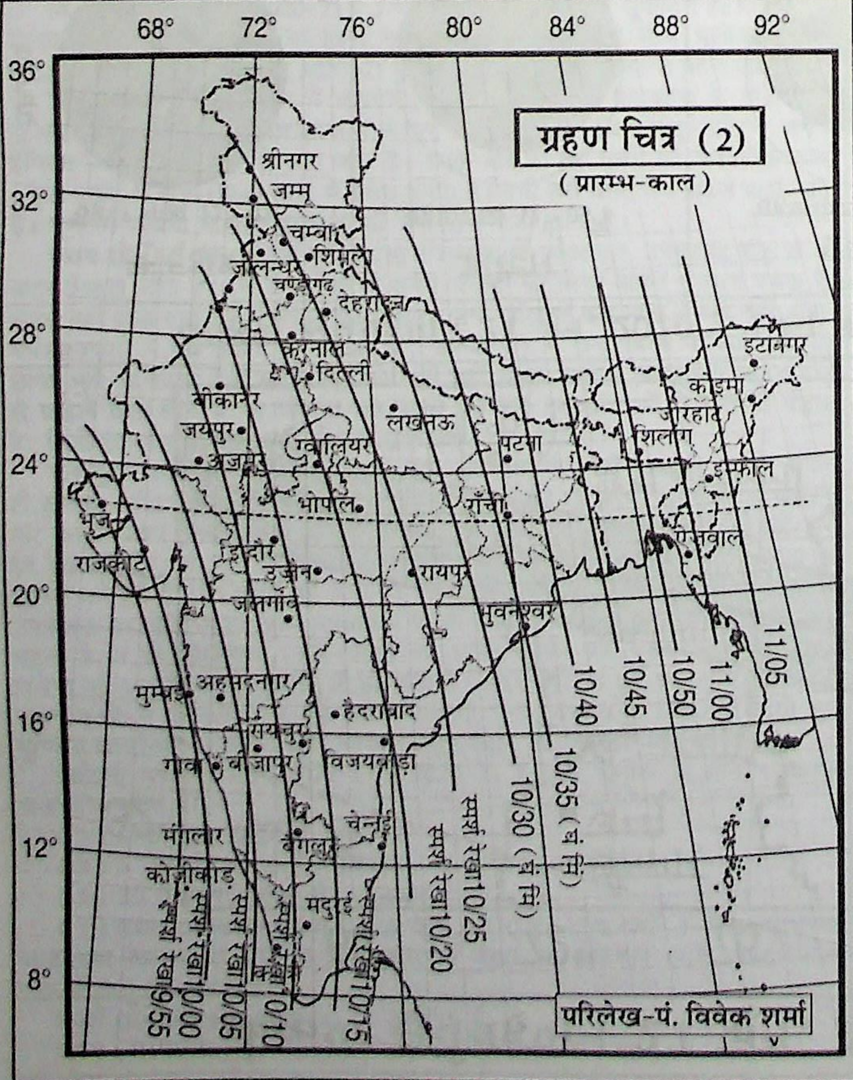
68°
72°
76°
80°
84°
88°
92°
36°
32°
28°
24°
20°
16°
12°
8°
ग्रहण चित्र (2)
(प्रारम्भ-काल)
श्रीनगर
जम्मू
चम्बा
शिमला
जालन्धर
चण्डीगढ़
देहरादून
करनाल
दिल्ली
बीकानेर
जयपुर
अजमेर
ग्वालियर
लखनऊ
पटना
इटानगर
कोहिमा
जोरहाट
शिलांग
इम्फाल
भुज
राजकोट
भोपाल
राँची
इन्दौर
उज्जैन
रायपुर
जलगांव
भुवनेश्वर
ऐज़वाल
मुम्बई
अहमदनगर
हैदराबाद
रायचूर
गोवा
बीजापुर
विजयवाड़ा
चेन्नई
मंगलोर
बैंगलूरु
कोज़ीकोड
मदुरई
स्पर्श रेखा 9/55
स्पर्श रेखा 10/00
स्पर्श रेखा 10/05
स्पर्श रेखा 10/10
स्पर्श रेखा 10/15
स्पर्श रेखा 10/20
स्पर्श रेखा 10/25
10/30 (घं मिं)
10/35 (घं मिं)
10/40
10/45
10/50
11/00
11/05
परिलेख-पं. विवेक शर्मा

कंकण सूर्यग्रहण (21 जून, 2020 ई.)

[(मोक्ष-रेखाएं (भा. स्टैं. टा.) समाप्ति काल]

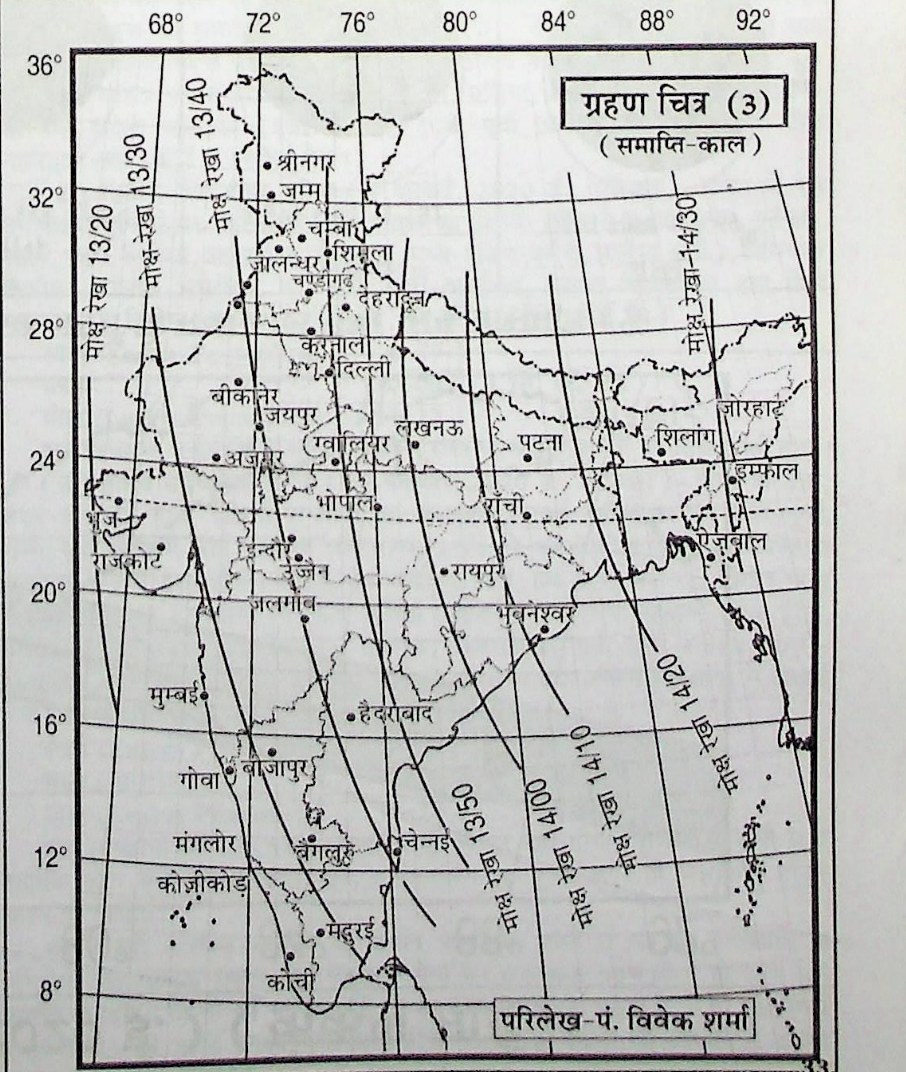
68°
72°
76°
80°
84°
88°
92°
36°
32°
28°
24°
20°
16°
12°
8°
ग्रहण चित्र (3)
(समाप्ति-काल)
श्रीनगर
जम्मू
चम्बा
शिमला
जालन्धर
चण्डीगढ़
देहरादून
करनाल
दिल्ली
बीकानेर
जयपुर
अजमेर
ग्वालियर
लखनऊ
पटना
शिलांग
जोरहाट
इम्फाल
भुज
राजकोट
भोपाल
राँची
इन्दौर
उज्जैन
रायपुर
जलगांव
भुवनेश्वर
ऐज़वाल
मुम्बई
हैदराबाद
गोवा
बीजापुर
मंगलोर
बैंगलूरु
चेन्नई
कोज़ीकोड
मदुरई
कोची
मोक्ष रेखा 13/20
मोक्ष रेखा 13/30
मोक्ष रेखा 13/40
मोक्ष रेखा 13/50
मोक्ष रेखा 14/00
मोक्ष रेखा 14/10
मोक्ष रेखा 14/20
मोक्ष रेखा 14/30
परिलेख-पं. विवेक शर्मा

कंकण सूर्यग्रहण (21 जून, 2020 ई.)–(कंकण मार्ग)

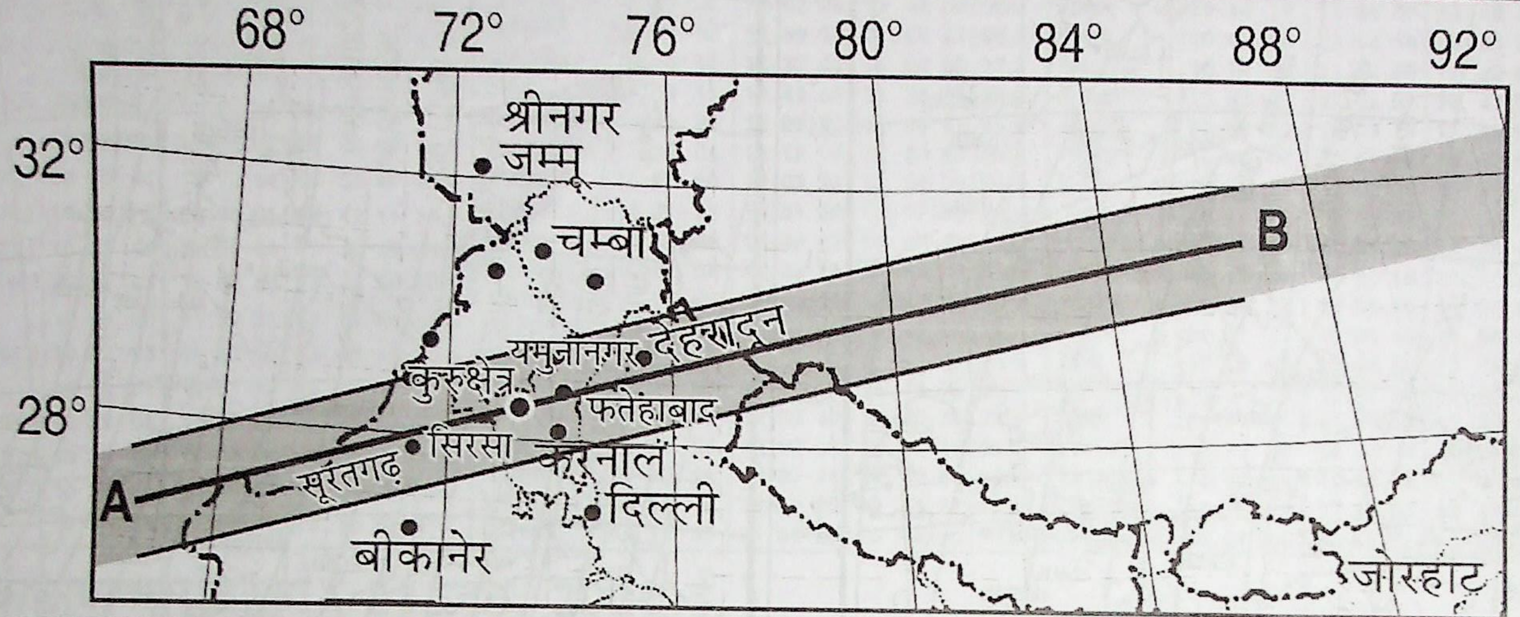
68°
72°
76°
80°
84°
88°
92°
32°
28°
श्रीनगर
जम्मू
चम्बा
देहरादून
यमुनानगर
कुरुक्षेत्र
फतेहाबाद
सिरसा
करनाल
सूरतगढ़
दिल्ली
बीकानेर
जोरहाट
A
B

कंकण सूर्यग्रहण (21 जून, 2020 ई.) का कुछ नगरों में मध्यकाल तथा परम ग्रासमान (%)

कुरुक्षेत्र

ग्रहण मध्य 12$^{\text{घं.}}$ 02$^{\text{मिं.}}$

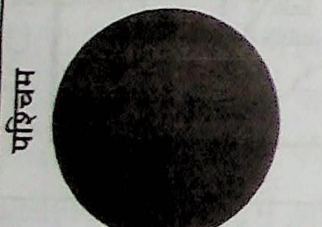

परमग्रास–99.4

हरिद्वार

ग्रहणमध्य 12$^{\text{घं.}}$ 05$^{\text{मिं.}}$

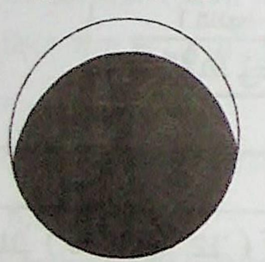

परमग्रास–98.8

उत्तर

प्रयाग

ग्रहणमध्य 12$^{\text{घं.}}$ 14$^{\text{मिं.}}$

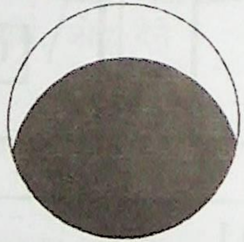

परमग्रास–83.0

दक्षिण

उज्जैन

ग्रहण मध्य 11$^{\text{घं.}}$ 52$^{\text{मिं.}}$

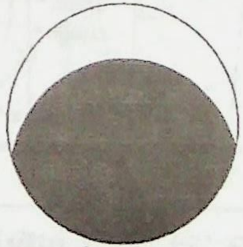

परमग्रास–79.7

जम्मू

ग्रहण मध्य 11$^{\text{घं.}}$ 59$^{\text{मिं.}}$

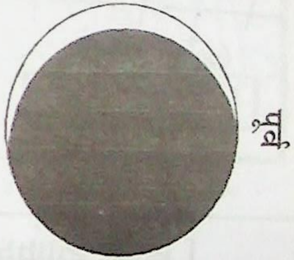

परमग्रास–90.2

चन्द्रमा के उपच्छाया ग्रहण—वि. संवत् २०७७

वि. संवत् 2077 (सन् 2020-21 ई.) मध्ये पृथ्वी पर केवल दो सूर्यग्रहण ही घटित होंगे, जिनका विवरण हम गतपृष्ठ पर लिख चुके हैं। वि. संवत् 2077 मध्य भूलोक में कोई चन्द्रग्रहण घटित नहीं होगा। सन् 2020-21 ई. में भूलोक पर तीन उपच्छाया ग्रहण घटित होंगे।

'उपच्छाया ग्रहण' वास्तव में चन्द्रग्रहण नहीं होता। प्रत्येक चन्द्रग्रहण के घटित होने से पहिले चन्द्रमा पृथ्वी की उपच्छाया में अवश्य प्रवेश करता है, जिसे चन्द्र-मालिन्य अथवा इंग्लिश में (Penumbra) भी कहा जाता है। उसके बाद ही वह पृथ्वी की वास्तविक छाया [दूसरे शब्दों में भूभा (Umbra)] में प्रवेश करता है। तभी उसे वास्तविक ग्रहण कहा जाता है। भूभा में चन्द्रमा के संक्रमणकाल को चन्द्रग्रहण कहा जाता है।

ध्यान रहे, कई बार पूर्णिमा को चन्द्रमा उपच्छाया में प्रवेश कर, उपच्छाया शंकु से ही बाहर निकल जाता है। इस उपच्छाया के समय चन्द्रमा का बिम्ब केवल धुन्धला पड़ता है, काला नहीं होता तथा इस धुंधलेपन को साधारण नंगी आँख से देख पाना सम्भव नहीं होता। धर्मशास्त्रकारों ने इस प्रकार के उप-ग्रहणों (उपच्छाया) में चन्द्र बिम्ब पर मालिन्य मात्र छाया आने के कारण **उन्हें ग्रहण की कोटि में नहीं रखा। प्रत्येक चन्द्रग्रहण घटित होने से पहिले तथा बाद में भी चन्द्रमा को पृथ्वी की इस उपच्छाया में से गुज़रना पड़ता है, जिसे ग्रहण की संज्ञा नहीं दी जा सकती।**

गत कुछ वर्षों से कई टी.वी. चैनलों तथा कुछ समाचार पत्रों द्वारा भी अपनी-अपनी टी.आर.पी. वृद्धि के उद्देश्य से उपरोक्त उपच्छाया ग्रहणों को भी ग्रहणों की कोटि में प्रदर्शित कर उनका प्रचार-प्रसार किया जा रहा है और वहाँ बैठे एंकरों तथा अल्पज्ञ पण्डितों द्वारा इन उपच्छाया ग्रहणों द्वारा बारह राशियों पर पड़ने वाले काल्पनिक प्रभावों की विवेचना भी प्रारम्भ कर देते हैं और लोगों को अकारण ही भयभीत एवं गुमराह कर देते हैं। वास्तव में उपच्छाया ग्रहणों में न तो अन्य वास्तविक ग्रहणों की भान्ति पृथ्वी पर उनकी काली छाया पड़ती है, न ही सौरपिण्डों (सूर्य-चन्द्र) की भान्ति उनका वर्ण काला होता है। केवल चन्द्रमा की आकृति थोड़ी धुंधली-सी हो जाती है। अत: धर्मनिष्ठ एवं श्रद्धालु जनों को इन्हें ग्रहण-कोटि में न मानते हुए एवं ग्रहण सम्बन्धी पथ्य-अपथ्य का विचार न करते हुए **पूर्णिमा सम्बन्धित साधारण व्रत, उपवास, दान आदि का अनुष्ठान करना चाहिए।**

आगामी वर्ष वि. संवत् 2077 (सन् 2020-21 ई.) में भूलोक पर तीन उपच्छाया चन्द्रग्रहण घटित होंगे–

(1) 5/6 जून, 2020 ई. शुक्रवार
(2) 5 जुलाई, 2020 ई., रविवार (भारत में अदृश्य)
(3) 30 नवम्बर, 2020 ई., सोमवार

(1) प्रथम उपच्छाया ग्रहण (5/6 जून, 2020 ई., शुक्र/शनि)–यह उपच्छाया चन्द्रग्रहण आरम्भ से समाप्ति तक भारत में देखा जा सकेगा। इसके स्पर्शादिकाल (भा.स्टैं.टा.) इस प्रकार है–

स्पर्श (Enters Penumbra)	**23-16**	**(भा. स्टैं. टा.)** **घं.मिं.**
मध्य (परमग्रास)	**24-55**	
मोक्ष (Leaves Penumbra)	**26-34**	

इस बात का ध्यान रहे कि यह उपच्छाया ग्रहण वास्तव में चन्द्रग्रहण नहीं होता। इस उपच्छाया ग्रहण की समयावधि में चन्द्रमा की चाँदनी में केवल कुछ धुन्धलापन आ जाता है। इस उपच्छाया ग्रहण के सूतक स्नानदानादि माहात्म्य का विचार भी नहीं होगा।

भारत सहित यह उपच्छाया अधिकतर यूरोप, एशिया, ऑस्ट्रेलिया, अफ्रीका, दक्षिण-पश्चिमी दक्षिण अमरीका (पूर्वी ब्राज़ील, उर्गवे, पूर्वी अर्जन्टीना), प्रशान्त तथा हिन्द महासागर आदि क्षेत्रों में दिखाई देगा।

(2) द्वितीय उपच्छाया ग्रहण (5 जुलाई, 2020 ई., रविवार)–भारत में यह उपच्छाया दृष्टिगोचर नहीं होगी। यह उपच्छाया दक्षिणी-पश्चिमी यूरोप (स्पेन, पुर्तगाल, इटली, फ्रांस, इंग्लैण्ड, आयरलैण्ड, बैल्जियन, मध्य-दक्षिण जर्मनी, हालैण्ड आदि), अधिकतर अफ्रीका, दक्षिणी अमरीका, अधिकतर उत्तरी-अमरीका, प्रशान्त, एटलांटिक तथा हिन्द महासागर में दिखेगी। इसके स्पर्शादिकाल (भा.स्टैं.टा.) इस प्रकार हैं–

स्पर्श (Enters Penumbra)	**8-37**	**(भा. स्टैं. टा.)** **घं.मिं.**
मध्य	**10-00**	
मोक्ष (Leaves Penumbra)	**11-22**	

इस उपच्छाया चन्द्रग्रहण के सूतकादि, ग्रहण सम्बन्धी धार्मिक कृत्यों का विचार नहीं होगा।

(3) तृतीय उपच्छाया ग्रहण (30 नवम्बर, 2020 ई., सोमवार)–भारत के उत्तर, उत्तर-पश्चिमी, मध्य, दक्षिणी प्रान्तों में यह उपच्छाया दिखाई नहीं देगी। शेष उत्तर-पूर्वी, मध्य-पूर्वी भारत में जहाँ चन्द्रोदय सायं 17घं.-23मिं. से पहिले होगा, वहाँ यह उपच्छाया ग्रस्तोदय रूप में दृश्य होगी। अर्थात् जब चन्द्रोदय होगा, तब छाया चल रही होगी। भारत के अतिरिक्त यह उपच्छाया अधिकतर एशिया (पाकिस्तान, पश्चिमी-दक्षिणी भारत, ईरान, ईराक, अफगानिस्तान को छोड़कर), इंग्लैण्ड, आयरलैण्ड, नार्वे, उत्तर-स्वीडन, उत्तरी-फिनलैण्ड, ऑस्ट्रेलिया, उत्तरी-अमरीका, दक्षिणी अमरीका तथा प्रशान्त महासागर में दिखाई देगा। इसके स्पर्श आदि का समय इस प्रकार होगा–

स्पर्श (Enters Penumbra)	**13-02**	**(भा. स्टैं. टा.)** **घं.मिं.**
मध्य (परमग्रास)	**15-13**	
मोक्ष (Leaves Penumbra)	**17-23**	

इस उपच्छाया ग्रहण के स्नान, सूतकादि का विचार नहीं होगा। पूर्णिमा सम्बन्धी सभी धार्मिक कृत्य जैसे–व्रत, उपवास, दान, सत्यनारायण व्रत-पूजन आदि तो नि:संकोच होकर करने ही चाहिएं।

ध्यान रहे, भारतीय ज्योतिष के प्राचीन प्रामाणिक ग्रन्थों में भी इस उपच्छाया या धुंधलेपन का धार्मिक महत्त्व नहीं बतलाया गया है। उपच्छाया ग्रहण में न तो अन्य पूर्ण अथवा खण्डग्रास ग्रहणों की भान्ति पृथ्वी पर उनकी काली छाया पड़ती है, न ही सौरपिण्डों (सूर्य-चन्द्र) की भान्ति उनका वर्ण काला होता है। केवल चन्द्रमा की आकृति में उसका प्रकाश कुछ धुंधला सा हो जाता है।

जन्मपत्री में षोडश वर्ग एवं षड्वर्ग फल विचार

[द्रेष्काण, सप्तमांश, नवमांश द्वारा फलित]

(गतांक से आगे)

गतवर्ष (वि. संवत् 2076) के पंचांगदिवाकर में षड्वर्ग में होरा तथा द्रेष्काण वर्ग का संक्षिप्त परिचय एवं फलादेश दिया गया था। इस वर्ष उसी क्रम में द्रेष्काण वर्ग, सप्तमांश एवं नवमांश कुण्डलियों/वर्गों का विश्लेषण करेंगे। नवमांश वर्ग/कुण्डली द्वारा फलादेश सम्बन्धी सूत्रों का विशद् प्रतिपादन आगामी वर्ष दिया जाएगा।

(1) प्रथम द्रेष्काण का फल—प्रत्येक राशि के 10 अंश तक प्रथम द्रेष्काण होता है। इसके स्वामी नारद मुनि माने जाते हैं। प्रथम द्रेष्काण में उत्पन्न जातक नारद मुनि की भान्ति प्रभु में निश्चय रखने वाले, भ्रमणशील, प्रत्येक प्राणी का भला चाहने वाले, अस्थिर एवं चंचल प्रकृति, विनोदी स्वभाव, बुद्धिमान, सम्प्रेषणशील, लोक हितकारी, किसी तथ्य या समाचार को दूर-दूर तक पहुँचाने का कार्य करने वाले, संवेदनशील तथा भ्रमण एवं पर्यटन द्वारा ही स्वयं का भाग्य बनाने वाले, आधुनिक युगानुसार समाचार पत्र, दूरसंचार, कम्पयूटर, पर्यटन, प्रकाशन आदि उद्योगों से (प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से) जुड़े होते हैं। प्रथम द्रेष्काण वाले जातक में सेवा, भक्ति, निष्ठा एवं समर्पण की विशेष भावना होती है।

(2) द्वितीय द्रेष्काण का फल—प्रत्येक राशि से (10 अंश से अधिक एवं 20 अंश तक का भाग) पंचम राशिस्थ **द्वितीय द्रेष्काण** कहलाता है। **द्वितीय द्रेष्काण** का स्वामी **अगस्त्य** मुनि माने जाते हैं। अगस्त्य ऋषि लोक-कल्याण की भावना से प्रेरित होकर आसुरी शक्तियों के संहार के लिए सदैव तत्पर रहते थे। इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए रावण जैसे अत्याचारी राक्षस के विनाश हेतु उन्होंने आदित्य हदय स्तोत्र की रचना करके श्री रामचन्द्र जी को अमोघ अस्त्र के रूप में प्रदान किया। दूसरे द्रेष्काण में उत्पन्न जातक दृढ़निश्चयी, श्रेष्ठजनों एवं साधु सन्तों की सेवा करने वाला, परोपकारी, दृढ़ संकल्प-शक्ति वाला, अत्यन्त पराक्रमी एवं परिश्रमी तथा नीति के अनुसार आचरण करने वाला एवं सुखसाधनों से सम्पन्न व्यक्ति होता है।

(3) तृतीय द्रेष्काण का फल—(राशि से 20 अंश उनमें से अधिक तथा 30 अंश तक का भाग)-तीसरा द्रेष्काण अपनी राशि से नवम राशि में पड़ता है। इस द्रेष्काण में उत्पन्न जातक श्री दुर्वासा ऋषि की भांति मुँहफट, क्रोधी, अभिमानी तथा उनमें धैर्य की कमी होती है। ऐसे जातक कर्त्तव्यनिष्ठ, नियमों का पालन करने वाले, दूसरों की भूल को जल्दी क्षमा न करने वाले, शीघ्र उत्तेजित हो जाने की प्रकृति के होते हैं।

द्रेष्काण कुण्डली के फल सम्बन्धी कुछ अन्य विशेष नियम

1. अपने द्रेष्काण में बैठा हुआ सौम्य ग्रह, केन्द्र अथवा त्रिकोण में हो तो जातक विद्वान, उच्च विद्या प्राप्त, धनवान्, कलानिपुण एवं प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।

द्रेष्काणमात्मप्रकरोति सौम्यः केन्द्रत्रिकोणे समये बलिष्ठः।
द्रव्याधिकं मानगुणैः समेतं विद्यान्वितं सर्वकलासु दक्षम्।।

2. द्रेष्काण स्वामी शुभ ग्रह की राशि में हो अथवा शुभ ग्रह द्वारा दृष्ट हो तो जातक निरोगी, उच्च-विद्यावान, सम्मानित, प्रतिष्ठित, धन-धान्यादि-सुख-सम्पदाओं से सम्पन्न, परन्तु विरोधियों एवं शत्रुओं के कारण व्यथित होगा। ऐसे जातक का अपने देश में ही भाग्योदय होता है।

द्रेष्काणपे सौम्यगते निराक्षिते शुक्रेक्षिते स्याद् विविधं च सौख्यम्।
आरोग्यतां मानयशोऽभिवृद्धिं स्वदेश कर्म प्रकटं विरुद्धम्।।

4. द्रेष्काणपति ग्रह अपनी उच्च राशि में होकर केन्द्रगत (1, 4, 7, 10) हो, तो राजा के समान, धन-सुख साधनों से युक्त, अपनी स्वराशि का हो तो धनी, यदि मित्र के घर का हो तो निर्वाह योग्य धन लाभ करता हुआ सम्मानित व्यक्ति होता है। यथा–

द्रेष्काणेशः केन्द्रगतश्चेदुच्चस्थो भूपतिं गृहे।
स्वक्षेत्रस्य स्वभूतार्थं मैत्रे सम्मानमागमम्।।

5. द्रेष्काण स्वामी पणफर (2, 5, 8, 11) भावों में स्थित अपने उच्चस्थ या मित्र के घर का अथवा स्वगृही (अपने घर का) हो, तो जातक उच्च या श्रेष्ठपद प्राप्त, राजतुल्य सुख साधनों से सम्पन्न होता है।

6. द्रेष्काण स्वामी आपोक्लिम (3, 6, 9, 12वें) भावों से अपने घर या मित्र के घर का हो, तो जातक भूमि, सन्तान, वाहन आदि सुखों से सम्पन्न, सदाचारी तथा कृषि आदि द्वारा धनवान् होता है।

7. द्रेष्काण कुण्डली में चन्द्रमा का विशेष महत्त्व है। चन्द्रमा यदि स्वयं अपने अथवा सू., मं., बु., गु. आदि शुभ एवं मित्र के द्रेष्काण में हो तो जातक आकर्षक व्यक्तित्त्व, विद्वान, गुणवान, धन, स्त्री, भूमि, वाहन सुखों से सम्पन्न, यदि चन्द्रमा शत्रु क्षेत्री हो, एवं पाप ग्रहों से युक्त या दृष्ट हो तो जातक रोगी, व्यवसाय में असफल तथा धन सम्पदा आदि सुख साधनों से परेशान रहता है। यदि चन्द्र समक्षेत्री एवं सम ग्रहों से युक्त हो तो मिश्रित प्रभाव अर्थात् आर्थिक क्षेत्र में उतार-चढ़ाव बने रहते हैं।

सप्तमांश कुण्डली विचार

एक राशि-अंशों के सातवें भाग को सप्तमांश कहते हैं। प्रत्येक भाग 4 अंश, 17 कला एवं 8½ (साढ़े आठ विकल) का होता है। विषम राशि होने की स्थिति में सप्तमांश का

आरम्भ उसी राशि से, जबकि सम राशि होने की स्थिति में उस राशि से सप्तम राशि से सप्तमांश राशि का प्रारम्भ होता है। स्पष्टता के लिए सप्तमांश चक्र आगे दिया जाता है–

सप्तमांश चक्र

अंश कलादि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	विषम राशि स्वामी	सम राशि स्वामी
प्रथम भाग 4/18/8।।	1	8	3	10	5	12	7	2	9	4	11	6	क्षार	शुद्ध जल
द्वितीय भाग 8/34/17	2	9	4	11	6	1	8	3	10	5	12	7	क्षीर	मद्य
तृतीय भाग 12/51/26	3	10	5	12	7	2	9	4	11	6	1	8	दही	इक्षु रस
चतुर्थ भाग 17/8/34	4	11	6	1	8	3	10	5	12	7	2	9	घृत	घृत (आज्य)
पंचम भाग 21/25/42	5	12	7	2	9	4	11	6	1	8	3	10	इक्षु	दही रस
षष्ठ भाग 25/42/51	6	1	8	3	10	5	12	7	2	9	4	11	मद्य	क्षीर
सप्तम भाग 30/0/00	7	2	9	4	11	6	1	8	3	10	5	12	शुद्ध	क्षार

उदाहरण-सप्तमांश कुंडली

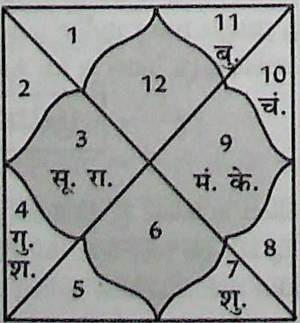

प्रारम्भ में होरा लग्न में दिए गए उदाहरण कुण्डली का लग्न-स्पष्ट 5-02°-58′-13″ था। तदनुसार सप्तमांश कुण्डली में कन्या का प्रथम भाग मीन लग्न होगा। क्योंकि लग्न स्प. 2°-58′ अंशादि प्रथम भाग के स्पष्ट 4°-17′ अंशादि के भीतर पड़ता है। अतएव होरा लग्न में दिए गए लग्न स्प. व ग्रह स्पष्टानुसार सप्तमांश कुण्डली में मीन लग्न होगा, जोकि लग्न कुं. में सप्तम राशि है सप्तमांशेश गुरु पंचम भाव में उच्च राशि का होकर लग्न भाव को स्वगृही दृष्टि से देख रहा है। साथ ही भाग्येश **मंगल** भी दशमस्थ होकर लग्न भाव को मित्र दृष्टि से देख रहा है। गुरु व मंगल दोनों पुरुष ग्रह होने से इस जातक की प्रथम **दोनों सन्तानें लड़के हुए हैं**। जबकि पंचम भाव पर पंचमेश चन्द्र की स्वगृही दृष्टि होने से एक कन्या सन्तति का भी सुख हुआ है। इसके अतिरिक्त जातक उच्च शैक्षणिक विद्या को भी प्राप्त है।

सप्तमांश कुण्डली में विचारणीय फलादेश

⇒ सप्तमांश कुण्डली से मुख्यत: सन्तान सुख का विचार किया जाता है। **सप्तमांश लग्न** विषम राशि का हो तथा उसमें शुभ पुरुष ग्रह स्थित हों, अथवा पुरुष ग्रहों द्वारा दृष्ट हो, तो पुत्र सुख प्राप्त होता है। यदि सप्तमांश लग्न राशि सम हो तथा लग्न स्त्री ग्रहों से युक्त या दृष्ट हो, तो कन्या सन्तति अधिक होती हैं।

⇒ इसी भान्ति सप्तमांशेश पुरुष ग्रह हो एवं वह पुरुष ग्रह से युक्त या दृष्ट हो तो पुत्र सुख। यदि सप्तमांशेश स्त्री ग्रह तथा स्त्री ग्रहों से युक्त या दृष्ट हो, तो कन्या सन्तति अधिक होती हैं। यदि सप्तमांश लग्न या सप्तमांशपति ग्रह पर स्त्री/पुरुष दोनों प्रकार के ग्रहों का प्रभाव हो, तो पुत्र एवं कन्या दोनों प्रकार की सन्तानों की उत्पत्ति होगी।

⇒ प्राय: जितने ग्रह सप्तमांश लग्न या सप्तमांश ग्रह को देखें, उतनी ही सन्तान संख्या होती है। देखें उपरोक्त उदाहरण कुण्डली में गुरु एवं मंगल दोनों पुरुष ग्रह सप्तमांश लग्न को देख रहे हैं।

⇒ सप्तमांश लग्न में पापी ग्रह हों अथवा पाप ग्रहों का सम्बन्ध या दृष्टि हो, तो सन्तान सुख में विघ्न-बाधाएँ अथवा चिन्ताएँ लगी रहती हैं।

⇒ यदि सप्तमांशेश बली हो, तथा शुभ ग्रहों से युक्त एवं दृष्ट होकर शुभ भावों में हो, तो उत्तम सन्तान का सुख होता है।

⇒ सप्तमांशपति गुरु, बुध या शुक्रादि शुभ ग्रहों से युक्त या दृष्ट होकर लग्न में हो, तो सन्तान उच्च विद्या प्राप्त, सुप्रतिष्ठित, धनवान् एवं भाग्यशाली होती है।

⇒ सप्तमांश स्वामी ग्रह निर्बल, अस्तंगत, पाप युक्त या पाप दृष्ट होकर लग्न, 6, 8 या 12वें भाव में हो, तो सन्तान सुख में कमी होती है। सप्तमांशेश यदि सूर्य से युक्त हो, तो सन्तान नेत्र रोगी होती है।

⇒ सप्तमांशेश बली होकर दूसरे भाव में हो, तो सन्तान धनवान्, पंचम में हो तो उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाली, नवम् में हो, तो धार्मिक एवं भाग्यशाली तथा सप्तमांश का स्वामी दशम में हो, तो सन्तान पैतृक गुणों से युक्त गुणवान् होती है।

⇒ सप्तमांश लग्न में या सप्तमांशेश ग्रह अपने उच्च या शुभ ग्रह के वर्ग में हो, तो जातक उच्च-सरकारी क्षेत्रों द्वारा लाभान्वित, अपने मनोरथों एवं कार्यों में सफल एवं धन-धान्य, सन्तान आदि सुख सम्पदाओं से सम्पन्न होता है।

नृपपूज्यो भवेद्नित्यं सर्वकार्यार्थ सम्पदा। सप्तवर्ग ग्रहाश्चैवमुच्चस्था शुभ वर्गगा:।।

⇒ सप्तमांश कुण्डली द्वारा सन्तान के सुख सम्बन्धी, अन्तिम निर्णय पर पहुँचने से पूर्व जातक की जन्म कुण्डली में पंचम भाव तथा उसमें पंचमेश ग्रह पर अन्य ग्रहों के शुभाशुभ प्रभाव को भी ध्यान में रखना चाहिए।

⇒ जन्म लग्नेश एवं सप्तमांशेश ग्रहों में परस्पर मैत्री भाव हो, तो जातक को पुत्रों का यथेष्ठ सुख प्राप्त होता है, तथा सन्तान आज्ञानुकूल आचरण करने वाली होती है। यदि जन्म लग्न स्वामी तथा सप्तमेश ग्रहों में शत्रुता हो, तो सन्तान पिता के अनुकूल व्यवहार करने वाली नहीं होती। बल्कि प्रतिकूल आचरण करने वाली तथा माता-पिता को दुख देने वाली होती है। यदि जन्म लग्नेश व सप्तमांशेश ग्रहों में समता हो, तो जातक के सन्तान के साथ सम्बन्ध सामान्य होते हैं।

सप्तमांश वर्ग के स्वामी

पूर्व पृष्ठों में सप्तमांश बोधक चक्र में सप्तमांश के प्रत्येक वर्ग के स्वामी को क्रमानुसार दर्शाया गया है। महर्षि पाराशर द्वारा अभिलक्षित इस वर्ग स्वामी अनुसार **विषम राशियों** में क्रमशः (1) क्षार, (2) क्षीर, (3) दधि, (4) घृत (आज्य), (5) इक्षुरस, (6) मद्य एवं (7) शुद्ध जल-सात सप्तमांश के स्वामी होते हैं। सम राशि में यह क्रम विपरीत (उल्ट) होता है। अर्थात् प्रथम सप्तमांश का स्वामी **शुद्ध जल** तथा अंतिम सप्तमांश का स्वामी क्षार होता है। वर्ग के स्वामी के अनुसार ही उसका फल भी जातक को वैसा ही मिलता है। ज्ञातव्य रहे कि सप्तमांश कुण्डली से सन्तानादि विषयों के फल का अन्तिम निर्णय करते समय जातक की जन्म कुण्डली में पंचम भाव एवं पंचमेश ग्रह की स्थिति व उन पर किंवा दृष्टियों का विचार अवश्य कर लेना चाहिए। वर्ग स्वामियों के विषय में आगे संक्षेप से विवरण लिखा जाता है।

(1) शुद्ध जल का सप्तमांश–सम राशि का प्रथम तथा विषम राशि में सप्तम (अंतिम) सप्तमांश शुद्ध जल सप्तमांश कहलाता है। शुद्ध जल सप्तमांश में उत्पन्न जातक शुद्ध जल की भान्ति सरल, स्वच्छ, परोपकारी स्वभाव एवं धार्मिक विचारों वाला होता है तथा ऐसे जातक की सन्तान भी सुशिक्षित तथा परिस्थितियों के अनुसार स्वयं को ढाल लेने वाली, परिश्रमी, धन सम्पदा आदि सुखों से सम्पन्न होती है।

(2) मद्य सप्तमांश–सम राशि का द्वितीय भाग तथा विषम राशि का छटा भाग **मद्य** कहलाता है। मद्य सप्तमांश में उत्पन्न जातक सन्तान पक्ष से प्रायः सुखी होता है। उसकी सन्तान आत्म केन्द्रित, स्वाभिमानी, हँसमुख, धन, वाहनों आदि से युक्त होती है। परन्तु स्वभावगत उनकी सन्तान व्ययशील (अपव्ययी), ऐश्वर्य एवं विलासादि वस्तुओं पर अधिक खर्च करने वाली होती है तथा कुछ स्वार्थी प्रकृति की होती है।

(3) इक्षुरस–सम राशि में तृतीय तथा विषम राशि में पंचम सप्तमांश इक्षु रस कहलाता है। इस सप्तमांश में उत्पन्न जातक की सन्तान ऊँचे कद एवं अच्छे व्यक्तित्त्व वाली, श्रेष्ठ गुणों से युक्त, गुणवान, परिश्रमी, मधुरभाषी, अपने परिवार एवं समाज का भला करने वाली, मिलनसार, मनोरंजन एवं उत्सवों में व्यस्त एवं सुख-सुविधाओं से सम्पन्न होती है।

(4) घृत (आज्य) सप्तमांश–सम एवं विषम दोनों राशियों में चतुर्थ सप्तमांश घृत (आज्य) कहलाता है। इस सप्तराशि में उत्पन्न जातक धार्मिक प्रवृत्ति वाले, यज्ञादि धार्मिक अनुष्ठान करने या करवाने में रूचि रखने वाले होते हैं। आज्य सप्त. में उत्पन्न जातक की सन्तान प्रायः धार्मिक विचारों वाली, व्यवहार कुशल, पराक्रमी, आत्मोत्सर्ग करने में तत्पर, भूमि, जायदाद, धन, स्त्री एवं सन्तान आदि सुखों से सम्पन्न होते हैं।

(5) दधि सप्तमांश–समराशि का पंचम तथा विषम राशि में तीसरा सप्तमांश दधि कहलाता है। इस सप्तमांश में उत्पन्न जातक को अत्यन्त कठिन परिस्थितियों एवं विशेष उतार-चढ़ाव के बाद जीवन में सफलता मिलती है। ऐसे जातक की सन्तान भी उद्यमी, कर्मठ, मेहनती तथा हालात के अनुसार स्वयं को ढाल लेने की क्षमताएँ रखती हैं। वह व्यवहार कुशल, स्वाभिमानी तथा पिता के परिवार में सुख सुविधाओं को बढ़ाने में विशेष सहायक होती है।

(6) क्षीर सप्तमांश–विषम राशि मे दूसरा तथा समराशि में छठा सप्तमांश क्षीर-सप्तमांश होता है। ऐसे जातक भौतिक सुखों के साथ-साथ धार्मिक क्षेत्र में भी समान रूप से प्रयत्नशील रहते हैं। ऐसे जातक की सन्तान भी पिता के प्रयासों में सहयोग एवं सहायता करने वाली, परोपकारी, आज्ञाकारी, उच्चशिक्षित, आवास, वाहन, परिवारिक तथा अन्य उपभोग्य वस्तुओं का सुख प्राप्त करने वाली होती है।

(7) क्षार सप्तमांश–सम राशि में अन्तिम तथा विषम राशि में प्रथम सप्तमांश **क्षार सप्तमांश** होता है। इस सप्तमांश में उत्पन्न जातक का जीवन संघर्षपूर्ण, अनियमित, तामसिक वृत्ति एवं आर्थिक परेशानियों से घिरा रहता है। ऐसे जातक की सन्तान निरंकुश, स्वच्छन्द आचरण वाली, कटुभाषी, क्रोधी तथा पिता की परेशानियों में वृद्धिकारक होती है।

सन्तान की प्रकृति कैसी होगी ?

⇒ सप्तमांशेश **सूर्य** हो, तो जातक की संतान पुष्ट शरीर, तेजस्वी, धनादि सम्पदा युक्त, चमकीले व सुन्दर बाल, साहसी, उद्यमी एवं पराक्रमी व क्रोधी होती है।

⇒ सप्तमांशेश **चन्द्र** हो तो सन्तान सुन्दर, मध्यम कद, जलीय पदार्थों का प्रिय, मधुरभाषी एवं व्यवहार-कुशल होती है।

⇒ **मंगल** सप्तमांश पति हो, तो सन्तान का वर्ण कुछ लाल वर्ण, गोल आँखें, कुछ क्रोधी स्वभाव, साहसी, खेल कूद (Sports) की शौकीन, व पित्त दोष युक्त होती है।

⇒ सप्तमांशेश **बुध हो** तो जातक की सन्तान सौम्य आकृति की, अनुपातिक शरीर, बुद्धिमान, वाक् पटु, तर्क-वितर्क करने में कुशल, उच्च विद्या प्राप्त करने वाली, धनी एवं व्यवहार कुशल होगी।

⇒ सप्तमांशेश **गुरु हो** तो सन्तान विद्यावान, विद्वान, धार्मिक विचारों वाली, भाग्यशाली, सुगठित शरीर, गुणवान, गम्भीर एवं विद्वतापूर्ण वाणी का प्रयोग करने वाली होगी।

⇒ सप्तमांशेश **शुक्र हो** तो सन्तान का सुन्दर आकर्षक शरीर, सुन्दर चक्षु, विनम्र, विनयशील, विद्यावान, सिनेमा, संगीत एवं शिल्प कला का शौक रखने वाली होगी।

विद्यावान, सिनेमा, संगीत एवं शिल्प कला का शौक रखने वाली होगी।

⇒ सप्तमांशपति **शनि हो,** तो सन्तान-बाल्यवस्था में दुबली पतली, भूरे नेत्र, काले बाल, अधिक रोम युक्त, तामसिक वृत्ति तथा आलस्य युक्त व्यवहार करने वाली होगी।

नवमांश कुण्डली विचार

किसी राशि (30 अंश) के नौंवे भाग (अर्थात् 3 अंश, 20 कला) को नवमांश कहते हैं। इस प्रकार प्रत्येक राशि के 9 भाग करने पर, उसके 9 नवमांश होते हैं। **चर राशि** का नवमांश अपनी ही राशि से प्रारम्भ होता है। स्थिर राशि में अपने से नवम राशि से नवमांश (राशि) प्रारम्भ होंति है। जबकि **द्विस्वभाव** राशि में अपने से पंचम राशि से नवमांश शुरु होगा। स्पष्टता के लिए आगे नवमांश बोधक दिया जाता है-

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	अंश-कला
प्रथम भाग	1	10	7	4	1	10	7	4	1	10	7	4	3°-20′तक
द्वितीय भाग	2	11	8	5	2	11	8	5	2	11	8	5	6°-40′तक
तृतीया भाग	3	12	9	6	3	12	9	6	3	12	9	6	10°-00′तक
चतुर्थ भाग	4	1	10	7	4	1	10	7	4	1	10	7	13°-20′तक
पंचम भाग	5	2	11	8	5	2	11	8	5	2	11	8	16°-40′तक
षष्ठ भाग	6	3	12	9	6	3	12	9	6	3	12	9	20°-00′तक
सप्तम भाग	7	4	1	10	7	4	1	10	7	4	1	10	23°-20′तक
अष्टम भाग	8	5	2	11	8	5	2	11	8	5	2	11	25°-40′तक
नवम भाग	9	6	3	12	9	6	3	12	9	6	3	12	30°-00′तक

एक अन्य गणनानुसार

अग्नि तत्त्व (1, 5, 9) राशियों में नवांश का आरम्भ **मेष से,**

पृथ्वी तत्त्व (2, 6, 10) राशियों में नवांश का आरम्भ **मकर से,**

वायु तत्त्व (3, 7, 11) राशियों में नवांश का आरम्भ **तुला से,**

जल तत्त्व (4, 8, 12) राशियों में नवांश का आरम्भ **कर्क से, होता है।**

उदाहरण–गत वर्ष के पंचांग में होरा कुण्डली के अन्तर्गत दिए गए किसी जातक का लग्न स्पष्ट ५/२°/५८/१३ के अनुसार ऊपर लिखे नवमांश चक्र में कन्या राशि के नीचे एवं २ अंश, ५८′ कला के सामने जातक के नवमांश का प्रथम भाग-अर्थात् मकर लग्न में नवमांश लग्न उदित हुआ है। नवमांशेश शनि भाग्य स्थान में मित्र राशि का, परन्तु शत्रु ग्रह सूर्य के साथ पड़ा है, दोनों पर बुध की स्वगृही शुभ दृष्टि पड़ रही है।

उदाहरण नवमांश कुण्डली

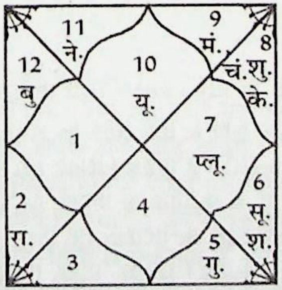

उदाहरण जन्म कुण्डली

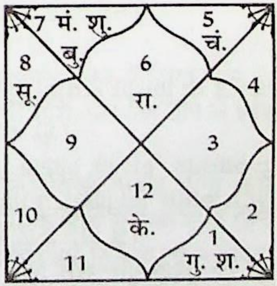

परन्तु नवमांश कुण्डली में सप्तमेश चन्द्रमा नीच राशिस्थ होकर स्त्री कारक शुक्र एवं केतु ग्रहों के साथ होने से जातक को विवाह सुख विलम्ब से (३० वर्ष की आयु के बाद) हुआ। तथा विवाह के पश्चात् पत्नी के साथ मतान्तर तथा व्यवसाय में विशेष उतार-चढ़ाव रहे। जन्म कुण्डली का सप्तमेश ग्रह गुरु नवमांश में अष्टम भाव में होने से भी दाम्पत्य सुख में कमी का कारण हुआ। जन्म कुण्डली में लग्नेश बुध द्वितीय भाव में मित्र क्षेत्री होने पर भी नवमांश में नीचस्थ होने से जातक के स्वास्थ्य पर अशुभ प्रभाव पड़ा है। नवांश कुं. में सप्तमेश चन्द्र नीच राशि (बृश्चिक) में केतु युक्त होने से पत्नी रूग्ण एवं शीघ्र उत्तेजित होने वाली प्रकृति की होगी।

नवमांश कुण्डली द्वारा प्रतिपाद्य विषय

नवमांश कुण्डली से मुख्यतः स्त्री सुख एवं पति-पत्नी के पारस्परिक सम्बन्धों, पत्नी (पति) के गुण, स्वभाव एवं स्वरूप आदि का विचार किया जाता है। इसके अतिरिक्त ज्योतिष आचार्यों ने नवमांश कुण्डली द्वारा धन, सुख-सम्पत्ति, शारीरिक गठन, ऐश्वर्य, उच्च-प्रतिष्ठा, सन्तान एवं वाहन आदि सुखों का विवेचन भी जन्म कुण्डली के साथ-साथ नवमांश कुण्डली द्वारा किया है। जैसे कि लिखा गया है कि गुरु यदि अपने नवमांश में स्थित हो तो जातक अच्छे श्रेष्ठ मित्रों से युक्त, स्त्री, धन-सम्पदा से सम्पन्न, उच्च प्रतिष्ठा से सुशोभित एवं सुख सम्पदाओं से युक्त होता है-

सन्मित्र द्वारा धन मित्र सौख्यं श्रेष्ठ प्रतिष्ठाप्ति-विराजमानम्।।
नरं प्रकुर्यात्-सुरराज मन्त्री नवांशके स्वे सुख सम्पदाः स्युः।।

दक्षिणी भारत में तो अधिकांश ज्योतिषचार्यों द्वारा नवमांश कुण्डली से जन्म कुण्डली की भान्ति ही जातक की धन, सुख-समृद्धि, व्यवसाय एवं विवाहादि सभी प्रकार के सुखों का विचार किया जाता है।

नोट–नवमांश कुण्डली एवं जन्म कुण्डली का तुलनात्मक विचार, अंशानुसार नवमांश फलादेश, नवांशेश का फलादेश आगामी वर्ष के '**पंचांगदिवाकर**' (वि. संवत् २०७८) में दिया जाएगा।

शनि की साढ़ेसाती, ढैय्या एवं सुवर्णादि पाया फल विचार-सं. २०७७ (सन् 2020-21 ई.)

गतवर्ष से (24 जनवरी, 2020 ई०) मकर राशि में संचरणशील शनि देव आगामी वि. संवत् २०७७ (25 मार्च, 2020 ई. से 12 अप्रैल, 2021 ई. तक) में **मकर राशि** में ही संचार करेंगे।

ता. 11 मई, 2020 ई. को मकर राशि में ही **वक्री** होकर 29 सितम्बर, 2020 ई. से **मार्गी** होकर संचार करेंगे।

ध्यान रहे ! शनि, मंगल आदि क्रूर ग्रह जब किसी राशि में गोचरवश वक्री होकर संचार करते हैं, तो और भी अधिक क्रूर एवं अशुभ फलदायक बन जाते हैं, जबकि गुरु, शुक्र आदि सौम्य ग्रह अपनी राशि में वक्री होने पर और भी अधिक शुभ फल प्रदान करते हैं–

यदा क्रूर ग्रहो वक्री अतिचारी तु सौम्यकः।
पीडा व्याधि भयं तत्र दुर्भिक्षं राज्य विग्रहम्।।

फलस्वरूप शनिदेव जब गोचरवश वक्री अवस्था में संचार करेंगे, तो जातक/जातिका को मानसिक व शारीरिक कष्ट, आर्थिक परेशानियां, रोगादि प्रकट होने लगते हैं। समाज में भी कहीं राजनीतिक टकराव, अव्यवस्था, अत्यधिक महँगाई, राजनैतिक उलट-फेर, क्लिष्ट रोग-भय, उपद्रव, हिंसक घटनाएँ, अस्थिरता, असन्तोष, बाढ़, दुर्भिक्ष, भूकम्प आदि प्राकृतिक प्रकोपों का भय एवं असुरक्षा का वातावरण बनता है।

कब और क्यों होती है शनि की साढ़ेसाती एवं अढैय्या ?

बारह राशियों पर शनिदेव की साढ़ेसाती एवं ढैय्या का प्रभाव कब और कैसे होता है, यह समझ लेना आवश्यक है। सौरमण्डल में नवग्रहों के मध्य शनि पृथ्वी से सबसे अधिक दूरी पर संचरणशील ग्रह है। शनि एक राशि पर लगभग अढ़ाई वर्ष के काल तक संचरित रहता है। शनि की वक्री-मार्गी आदि गति की समयावधि में परिवर्तन के कारण अढ़ाई वर्षों के काल में न्यून-अधिकता भी होती रहती है। परन्तु शनि सम्पूर्ण राशिचक्र का परिभ्रमण (360°) 29 वर्ष, 5 मास, 17 दिन एवं 5 घण्टों में तय करता है। गोचरवश शनि जब किसी राशि में प्रवेश करता है, तभी शनि उस राशि से 12वीं राशि को आगामी अढ़ाई वर्ष कष्टकारी, पहिली (1) अर्थात् जिस राशि में प्रवेश किया गया हो, उसे पाँच वर्ष तक तथा अपनी से दूसरी राशि को लगभग साढ़ेसात वर्ष तक (आगामी 7½ वर्षों) अशुभ प्रभाव करेगा। इस प्रकार **पहिली** (1), **दूसरी** एवं **12वीं** राशि पर लगभग साढ़ेसात वर्षों तक प्रभावित करने के कारण शनि की यह चक्र-प्रक्रिया ही **शनि-साढ़ेसाती** कहलाती है।

द्वादशे जन्मगे राशौ द्वितीये च शनैश्चरः।
सार्धानि सप्तवर्षाणि तदा दुखैः युतो भवेत्।।

शनि साढ़ेसाती के प्रभावस्वरूप शरीर कष्ट, मानसिक तनाव, गृह कलह-क्लेश, धन सम्बन्धी आर्थिक उलझनें, आय सीमित तथा खर्च रहेंगे। बनते कार्यों में विघ्न-बाधाएँ, रोगग्रस्त शरीर एवं शत्रु भय, सन्तान एवं परिवार सम्बन्धी परेशानियों का सामना होता है।

शनि की ढैय्या (लघु कल्याणी) –गोचरवश शनि जब चन्द्रराशि (या नाम राशि) से **चौथे या आठवें** स्थान पर संचार करता है, तब शनि की ढैय्या कहलाती है। यह लगभग अढ़ाई (2½) वर्ष के लिए होती है। इसका प्रभाव भी अशुभ माना गया है–

''लघु कल्याणी (ढैय्या) प्रददाति वै रविसुतोः राशे चतुर्थाष्टमे,
व्याधिं बन्धु विरोधं विदेशगमनं, क्लेशं च चिन्ताधिकम्।।''

अर्थात् शनि की ढैय्या के प्रभावस्वरूप जातक को वृथा-दौड़धूप, अनावश्यक खर्च, गुप्त चिन्ताएं, रोग, शोक, कलह-क्लेश, धन-हानि, बन्धु-विरोध, कार्यों में विघ्न-बाधाओं एवं आर्थिक-उलझनों का सामना रहता है।

शनि पाया (पाद) विचार–शनि देव के राशि प्रवेश के समय यदि चन्द्र 1, 6, 11वें भाव (स्थान) में हो तो स्वर्ण-पाद ; यदि 2, 5, 9वें भाव में हो तो रजत-पादच यदि 3, 7, 10वें भाव में हो तो ताम्र-पाद तथा यदि चन्द्र 4, 8, 12वें स्थान में हो तो लौह-पाद होता है।

पाद (पाया) फल विचार–

'लौहे धनविनाशः स्यात् सर्वं दुःखं च काञ्चने।
ताम्रे च समता ज्ञेया सौभाग्यं च राजते भवेत्।।'

(क) सोने का पाया हो, तो जातक को उस अवधि में संघर्षपूर्ण परिस्थितियों का सामना रहे। पारिवारिक एवं व्यवसायिक उलझनें अधिक होंगी। शत्रु एवं रोग-भय, मानसिक तनाव अधिक रहे। वृथा खर्च एवं कलह-क्लेश अधिक रहे।

(ख) चान्दी (रजत) का पाया हो, तो जातक को गत किए गए प्रयासों में सफलता मिलती है। आकस्मिक धन-लाभ, उच्च-प्रतिष्ठा, पदोन्नति, स्त्री-सन्तान एवं भूमि, वाहनादि सुखों की प्राप्ति होती है।

(ग) **ताम्र का पाया**–इसका फल शुभ होता है। कार्य-व्यवसाय में लाभ व उन्नति के मार्ग प्रशस्त होते हैं। उच्च प्रतिष्ठित लोगों के साथ सम्पर्क बनते हैं। उच्च विद्या में सफलता, विवाह एवं पारिवारिक सुखों की प्राप्ति, सवारी (वाहनादि) आदि सुख-सुविधाओं की भी प्राप्ति सम्भव होती है। देश-विदेश की यात्राओं के भी अवसर प्राप्त होते हैं।

(घ) लौह का पाया हो, तो जातक के आर्थिक व पारिवारिक परेशानियाँ अधिक होती हैं। स्वास्थ्य में गड़बड़, तनाव एवं उलझनें बढ़ती हैं। दुर्घटना से चोटादि का भय, व्यवसाय में विघ्न-बाधाएं हों, प्रयत्न करने पर भी लाभ कम व खर्च अधिक रहे।

शनि संचार फल–शनि के राशि परिवर्तन होने पर मेषादि विभिन्न राशियों पर उसका प्रभाव भी अलग होता है–

भ्रंशं क्लेशं च शत्रु प्रवृद्धिं पुत्रसौख्यं सौख्यवृद्धिं च दोषम्।
पीडा सौख्यं निर्धनत्वं धनादिं नानानर्थं भानसन–स्तनोति।।

अर्थात् गोचर में शनि जन्म-राशि से पहले स्थान में हो तो मानसिक व्यथा एवं स्थान-हानि, दूसरे में क्लह-क्लेश, तीसरे में पराक्रम एवं सुख में वृद्धि, चौथे में शत्रु वृद्धि, पंचम में सन्तान सम्बन्धी दु:ख, षष्ठ में सुख-साधनों में वृद्धि, सप्तम में रोग व शत्रु-भय, अष्टम में दु:ख-पीड़ा, नवम में सुख, दशम में धन-हानि, एकादश में धन-लाभ तथा 12वें में शनि आए तो अनेक प्रकार के अनर्थ होते हैं।

✪ मकर राशिस्थ शनि-साढ़ेसाती एवं ढैय्या-फल विचार ✪

(25 मार्च, 2020 ई. से 12 अप्रै, 2021 ई. तक)

✤ **साढ़ेसाती–धनु, मकर** व **कुम्भ** राशि वाले जातक/जातिकाओं को शनि-साढ़ेसाती का प्रभाव रहेगा।

➡ *(i)* धनु राशि वाले जातक/जातिकाओं को साढ़ेसाती पाँव पर उतरती हुई अर्थात् अन्तिम चरण में होगी।

➡ *(ii)* मकर राशि वालों को शनि-साढ़ेसाती हृदय पर चढ़ती हुई अर्थात् मध्य अवस्था में होगी।

➡ *(iii)* कुम्भ राशि वालों को शनि-साढ़ेसाती सिर पर चढ़ती अर्थात् प्रारम्भिक अवस्था में होगी।

धनु एवं मकर राशि वालों को प्रारम्भ के अढ़ाई वर्ष तथा कुम्भ राशि वालों को अन्त के अढ़ाई वर्ष विशेषत: अशुभकारक रहते हैं।

ढैय्या विचार–मिथुन व **तुला राशि** वाले जातकों को शनि की ढैय्या का अशुभ प्रभाव रहेगा।

सुवर्णादि पाया निर्णय–गत वर्ष 24 जनवरी, सन् 2020 ई. को शनि मकर राशिस्थ चन्द्रमा, उत्तराषाढ़ा नक्षत्रकालीन मकर राशि में प्रवेश किया है। तद्नुसार मेषादि राशियों पर सुवर्णादि पाया वही रहेगा। यथा–

(1) **मेष, कर्क** तथा **वृश्चिक** राशियों पर ताम्र का पाया (पाद) शुभ होगा।
(2) **वृष, कन्या** तथा **धनु** राशियों पर रजत का पाद (पाया) शुभ होगा।
(3) **मिथुन, तुला** तथा **कुम्भ** राशियों पर लौह-पाद अशुभ फलदायक होगा।
(4) **कर्क, मकर** तथा **मीन** राशियों पर सुवर्ण-पाद (पाया) मिश्रित फलदायक होगा।
[फलादेश गत पृष्ठ में पाया-फल विचार से जानें।]

✤ शनि का सामान्य गोचरफल–

मकरे च यदा सौरि: दुर्भिक्षं तत्र दारुणम्।
कामार्ताश्च विनश्यन्ति हि अन्यदेशे शुभं भवेत्॥

अर्थात् मकर राशिस्थ शनि हो तो दारुण दुर्भिक्ष अर्थात् भयंकर अकालजन्य परिस्थितियां बनेंगी। वर्षा कम तथा प्रतिकूल (बेमौसमी) होगी। चावल आदि धान्य, सूत, कपास का कम उत्पादन होगा। कामी (कामासक्त) पुरुषों को कठोर दण्ड दिया जाएगा, जबकि दूसरे देशों में शुभ फल घटित होंगे।

✪ मकर राशिस्थ शनि का द्वादश राशियों पर गोचरफल-सं. २०७७ ✪

(25 मार्च, 2020 ई. से संवतान्त तक)

शनि का मकर राशि में गोचर फलादेश यद्यपि गतवर्षीय पंचांगदिवाकर में लिख चुके हैं, परन्तु वर्ष सन् 2020-21 ई. में मंगल, गुरु, राहु आदि ग्रहों का भी राशि-परिवर्तन होने से शनि के गोचरफल का भी न्यूनाधिक रूपेण अन्तर पड़ जाएगा।

✤ **मेष**–राशि से शनि दशमस्थ होने से संघर्ष एवं विघ्नों के बावजूद निर्वाह योग्य आय के साधन बनते रहेंगे। पाया ताम्र होने तथा 30 जून से 19 नवम्बर के मध्य गुरु की दृष्टि रहने से पदोन्नति, धन-लाभ एवं उच्च-विद्या में सफलता के योग बनेंगे। ता. 16 अग. से 3 अक्तू. तक मंगल स्वराशिगत इस राशि पर संचार करने से उद्यम, पुरुषार्थ में वृद्धि होगी।

✤ **वृष**–राशि को शनि नवमस्थ होने से भाग्योन्नति एवं लाभ प्राप्ति में अड़चनें एवं विलम्ब होंगे। निकट बन्धुओं से विरोध एवं तकरार रहे, परन्तु पाया रजत तथा 28 मार्च से 31 जुलाई तक राशिस्वामी शुक्र इसी राशि में संचार करने से निर्वाह योग्य आय के साधन बनते रहें एवं धार्मिक कार्यों की ओर रुचि रहे। ता. 23 सितं. से राहु उच्चस्थ होकर संचार करने से उथल-पुथल भरी परिस्थितियां रहेंगी।

✤ **मिथुन**–राशि से अष्टमस्थ ढैय्या, पाया भी लौह होने तथा 22 सितम्बर तक राहु का संचार रहने से वृथा दौड़-धूप एवं खर्च अधिक रहेंगे। घरेलू एवं व्यवसायिक उलझनें बढ़ेंगी। ता. 30 जून से 19 नवं. तक गुरु की दृष्टि होने से बिगड़े कामों में सुधार, धर्म-कर्म में रूचि, वाहन एवं पारिवारिक सुखों की प्राप्ति होगी।

✤ **कर्क**–राशि पर शनि तथा मंगल की शत्रु व नीच दृष्टियां (22 मार्च से 4 मई तक) होने से व्यवसाय में संघर्ष अधिक व खर्च भी बढ़ेंगे। परन्तु राशि पर ताम्र का पाया तथा 30 मार्च से 29 जून तक गुरु (पुन: 20 नवं. से संवतान्त तक) की शुभ दृष्टि रहने से स्वास्थ्य लाभ, धर्म-कर्म में प्रवृत्ति एवं लाभ/उन्नति के भी अवसर मिलेंगे।

✤ **सिंह**–शनि षष्ठस्थ तथा सुवर्ण पाद होने से अत्यन्त कठिन एवं विपरीत परिस्थितियों के पश्चात् निर्वाह योग्य धन प्राप्ति के साधन बनेंगे। अचानक खर्चों में वृद्धि, शरीर कष्ट व धन सम्बन्धी चिन्ताएँ रहेंगी। परन्तु ता. 30 जून से 19 नवम्बर तक गुरु की दृष्टि रहने से बिगड़े कार्यों में कुछ सुधार, शुभ कार्यों की ओर रुचि तथा पदोन्नति के भी योग बनेंगे। व्यवसाय/कारोबार में भी वृद्धि होगी।

✤ **कन्या**–पंचमस्थ शनि पूज्य होगा। पूर्वार्द्ध भाग में घरेलु एवं कारोबारी उलझनों के कारण संघर्ष एवं मानसिक तनाव अधिक रहेगा। अनावश्यक मतभेद उभरेंगे। परन्तु शनि का रजत-पाद होने से धन लाभ, गत किए कार्यों में सफलता, भूमि-वाहन एवं पारिवारिक सुखों की प्राप्ति होगी।

✤ **तुला**–राशि को शनि चतुर्थस्थ होने से शनि की ढैय्या का अशुभ प्रभाव रहेगा। जिससे धन-हानि, निकट भाई-बन्धुओं से वैमनस्य, कलह-क्लेश, खर्च आदि रहेंगे। शनि का पाया भी

लौह होने से घरेलु तथा व्यवसाय सम्बन्धी उलझनें व परेशानियां बढ़ेंगी, गुप्त चिन्ताएं भी होंगी।

✚ **वृश्चिक**–राशि को शनि तृतीयस्थ होने से भूमि, मकान, वाहनादि सुख-सुविधाओं में वृद्धिकारक होगा। पाया भी ताम्र होने से व्यवसाय में लाभ व उन्नति के अवसर प्राप्त होंगे। कुछ सोची हुई योजनाओं में कामयाबी, धर्म-कर्म में रुझान एवं गृह में कोई शुभ मंगल कार्य सम्पादित होने के योग हैं।

✚ **धनु**–राशि को शनि द्वितीयस्थ होने से साढ़ेसाती का अशुभ प्रभाव अभी रहेगा। आय कम व खर्च बढ़ेंगे। आर्थिक उलझनों के कारण अशान्ति रहे, परन्तु शनि का पाया रजत (चान्दी) होने से कुछ निर्वाह योग्य आय के स्रोत बनते रहेंगे। भूमि, वाहनादि सुखों की प्राप्ति होती रहेगी।

✚ **मकर**–राशि को लग्न भाव पर ही शनि-साढ़ेसाती होने से मानसिक तथा पारिवारिक उलझनें रहेंगी, परन्तु इस राशि पर शनि स्वराशिगत, 30 मार्च से 29 जून तक, पुनः 20 नवं. से 5 अप्रैल, 2021 ई. तक गुरु का संचार होने, पाया सुवर्ण होने से धन-लाभ, विदेश-गमन, भूमि-वाहनादि सुखों की भी प्राप्ति होगी।

✚ **कुम्भ**–राशि से शनि द्वादशस्थ (शनि-साढ़ेसाती) होने से आय कम व खर्च अधिक, घरेलु व कार्य सम्बन्धी उलझनें रहेंगी। स्त्री/पति से भी तनावपूर्ण सम्बन्ध रहेंगे। शनि का पाया भी लौह होने से शरीर कष्ट, तनाव व संघर्ष अधिक रहे।

✚ **मीन**–राशि से शनि 11वें (लाभ) स्थान में होने से इस राशि पर दृष्टि रहेगी। स्त्री, सन्तान व सवारी आदि की चिन्ता रहेगी। किसी नए काम की योजना बनेगी। गत किए गए कार्यों में सफलता प्राप्त होगी। यद्यपि शनि का पाया सुवर्ण होने से धन लाभ व उन्नति के लिए विशेष संघर्ष करना पड़ेगा। मानसिक तनाव भी अधिक रहे।

शनि–साढ़ेसाती एवं ढैय्या सम्बन्धी विशेष उपाय

शनि साढ़ेसाती अथवा शनि ढैय्या का फल सदा अनिष्टकारी ही होगा–ऐसा आवश्यक नहीं। **ध्यान रहे,** शनि सभी राशियों पर एक जैसा प्रभाव नहीं करता है, बल्कि स्वराशि, उच्च-मित्रादि स्थिति से एवं शुभाशुभ दृष्टियों के प्रभावस्वरूप इसके फल में न्यूनाधिक अन्तर पड़ना भी सम्भव है। जन्मकुण्डली एवं नवांश में शनि की स्थिति अच्छी हो एवं जातक की ग्रह-दशा भी शुभ हो, तो शनि की साढ़ेसति या ढैय्या का अशुभ प्रभाव भी अपेक्षाकृत कुछ कम होगा। इसके अतिरिक्त वृष, मिथुन, कन्या, तुला, मकर या कुम्भ राशि पर शनि की स्थिति या दृष्टि शुभ, लाभदायक एवं योगकारक भी हो सकती है। किसी विशेष राशि पर शनि साढ़ेसाती का विचार करते समय उस राशि पर अन्य ग्रहों की स्थिति, दृष्टि आदि का प्रभाव, सुवर्णादि पाया का अवश्य विचार करना चाहिए।

कुण्डली में शनि की स्थिति एवं दशाऽन्तर्दशा शुभ होने पर कार्य-व्यवहार व योजनाओं में सफलता, लाभ, व्यवसायिक विद्याओं में उन्नति, क्रय-विक्रय विशेषकर लोहे, तेल के कार्य-व्यवसाय में विशेष लाभ प्राप्त करने वाला होता है।

शनि की दशाऽन्तर्दशा अथवा साढ़ेसाती अशुभ स्थिति में होने से व्यक्ति को विपरीत परिस्थितियों का सामना करना पड़ता है। बच्चों का पढ़ाई में मन नहीं लगता अथवा परिश्रम करने पर भी सफलता प्राप्त नहीं होती। वह कुछ चिड़चिड़े स्वभाव का हो जाता है, उसके प्रत्येक कार्य में विघ्न पैदा होते हैं। निकट सहयोगी भी परायों जैसे व्यवहार करने लगते हैं। अतएव ऐसी स्थिति में जातक को शनि का पूजन, दान, मन्त्र-जाप तथा औषधि स्नान आदि करने से शनि के अरिष्ट की शान्ति होती है।

जन्म कुं. में शनि यदि अशुभ हो अथवा जन्म-नक्षत्र पर शनि का संचार हो, तो जातक/जातिका को वायु-विकार, त्वचा रोग, घुटनों में दर्द, उच्च या निम्न रक्तचाप आदि रोग होते हैं।

शनि प्रायः क्लिष्ट रोग एवं दुःख देकर दुष्ट-कर्मों का भुगतान करवाता है। शनि के अरिष्टकाल में कोई-न-कोई झंझट चलता रहता है। आर्थिक संकट एवं घरेलू कलह का भय होता है। वायु प्रकोप आदि शरीर कष्ट, मानसिक अशान्ति रहती है। अपने भी पराये होने लगते हैं। आय कम तथा खर्चों में अधिकता होने लगती है।

उपाय–शास्त्रों में प्रतिपादित उपायों को विधिपूर्वक करने से अवश्य लाभ पहुँचेगा।

(1) प्रत्येक शनिवार को शनि मन्त्र का संकल्पपूर्वक पाठ करें–

'ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः'

कम-से-कम 3 माला अवश्य करें। पाठ उपरान्त निम्न शनि स्तोत्र का पाठ करना शुभ होगा–

नमः कृष्णाय नीलाय शितिकण्ठनिभाय च।
नमः कालाग्निरूपाय कृतान्ताय च वै नमः॥

(2) शनिवासरी अमावस्या हो, तो उस दिन सायं, सूर्यास्त के बाद शनि पूजन, मन्त्र-जाप एवं स्तोत्र पाठ करना विशेष लाभकारी होगा।

विधि–सायं सूर्यास्त के बाद, स्नानादि उपरान्त पश्चिम दिशा की ओर मुख करके काले रेशमी आसन (कम्बलादि) पर बैठ जाएँ। सामने स्टील की थाली में लगभग 100 ग्राम जौं, 100 ग्राम काले तिल, काले वर्ण के कुछ फूल, 1 मुट्ठी चावल, 5 साबुत सुपारी, मौली, धूपबत्ती, रोली, लाल चंदन, काली मिठाई जैसे–गुलाब जामुन भी रख लें।

स्टील की कटोरी में तेल सरसों का दीपक जलाकर रखें। सामने एक नारियल तिलक लगाकर, स्टील का लोटा शुद्ध जल भरकर रखें।

मन्त्र जाप–ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः

मन्त्र की 1 या 3 माला करके उसे पूजन सामग्री के साथ बहते पानी में विसर्जित कर देवें।

(3) शनिवार को सुन्दरकाण्ड का पाठ या श्रवण करना शुभ होगा।

(4) श्रवण नक्षत्र में शनिवार के दिन काले रंग के धागे में शमी की अभिमंत्रित जड़ धारण करने से, शनि से सम्बन्धित वस्तुएं तथा तेल, लोहा, काले-तिल, कुलथी या काली मसूर की दाल, काला जूता, कस्तूरी आदि दान करने से भी शनि के अशुभ फल में कमी आती है।

(5) पक्षियों को दाना चुगाना, अपनी छाया (परछाई) देखकर शनिवार के दिन तेल का दान, महामृत्युञ्जय मंत्र का शुद्ध उच्चारण के साथ निष्ठापूर्वक जाप, निम्न शनि लघु स्तोत्र का [illegible]' का पाठ सर्वाधिक उपयुक्त माना गया है।

व्यवसाय में विशेष लाभ प्राप्त करने वाला होता है।

दान, महामृत्युंजय मंत्र की शुद्ध उच्चारण के साथ निष्ठापूर्वक जाप, निम्न शनि लघु स्तोत्र का ... का पाठ सर्वाधिक उपयुक्त माना गया है।

शनि साढ़ेसाती, ढैय्या एवं शनि पाया के अशुभ फल की शान्ति

शनि साढ़ेसाती, ढैय्या एवं शनि पाया के अशुभ फल की शान्ति के लिए शनि के बीज मन्त्र या वैदिक मन्त्र की 23 हज़ार की संख्या में विधिपूर्वक जप करना, तदुपरान्त दशमांश संख्या में हवन करना या करवाना कल्याणकारी रहता है। शनिवार का व्रत रखना, उड़द, सप्तधान्यादि दान, कृष्ण वस्त्र, शिव उपासना, शनि स्तोत्र तथा शनि से सम्बन्धित अन्य वस्तुओं का दान करने से लाभ होता है। इसके अतिरिक्त शुभ मुहूर्त्त में नीलम एवं विधिपूर्वक निर्मित **शनि यन्त्र** धारण करना भी लाभप्रद रहता है।

शनि का बीज मन्त्र—*''ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनये नमः।।''*

शनि का वैदिक मन्त्र—

''ॐ शन्नो देवी रभिष्टय आपो भवन्तु पीतये, शं योरभिस्रवन्तु नः॥ शं नमः॥''

शनि लघु स्तोत्र–

''ॐ नमस्ते कोणसंस्थाय पिङ्गलाय नमोऽस्तु ते। नमस्ते बभ्रुरूपाय कृष्णाय च नमोऽस्तुते॥
नमस्ते रौद्रदेहाय नमस्ते चान्तकाय च। नमस्ते यमसंज्ञाय नमस्ते शौरये विभो॥
नमस्ते मन्दसंज्ञाय शनैश्चर नमोऽस्तु ते। प्रसादं कुरु देवेश दीनस्य प्रणतस्य च॥''

(धर्मसिन्धु)

प्रतिदिन प्रातःकाल भगवान शिव की पूजनोपरान्त पीपल वृक्ष के समीप इस स्तोत्र का पाठ करके कच्ची लस्सी में काले तिल डालकर वृक्ष के मूल में लस्सी चढ़ाना तथा सायंकाल को तैल का दीपक जलाकर प्रार्थना करने से शनि-जनित अरिष्टों की शान्ति होती है।

शनि ग्रह सम्बन्धित अधिक उपायों एवं जानकारी के लिए पं. पन्ना लाल ज्योतिषी कृत **'अनिष्ट ग्रहों के चमत्कारी उपाय'** पुस्तक मंगवाकर पढ़ें। **मूल्य-200 रु.**

आगामी आने वाले 10 वर्षों में शनि का राशि परिवर्तन एवं साढ़ेसाती ज्ञान

(1) 29 अप्रैल, 2022 ई. से कुम्भ में	[साढ़ेसाती = मकर, कुम्भ, मीन]
(2) 12 जुलाई, 2022 ई. से वक्री मकर में	[साढ़ेसाती = धनु, मकर, कुम्भ]
(3) 17 जनवरी, 2023 ई. से कुम्भ में	[साढ़ेसाती = मकर, कुम्भ, मीन]
(4) 29 मार्च, 2025 ई. से मीन में	[साढ़ेसाती = कुम्भ, मीन, मेष]
(5) 3 जून, 2027 ई. मेष में	[साढ़ेसाती = मीन, मेष, वृष]
(6) 20 अक्तू. 2027 ई. से व. मीन में	[साढ़ेसाती = कुम्भ मीन, मेष]
(7) 23 फरवरी, 2028 ई. से मेष में	[साढ़ेसाती = मीन, मेष, वृष]
(8) 8 अगस्त, 2029 ई. से वृष में	[साढ़ेसाती = मेष, वृष, मिथुन]
(9) 5 अक्तूबर, 2029 ई. से वक्री मेष में	[साढ़ेसाती = मीन, मेष, वृष]
(10) 17 अप्रैल, 2030 ई. से वृष में	[साढ़ेसाती = मेष, वृष, मिथुन]

गुरु का धनु, मकर एवं कुम्भ राशिस्थ गोचरफल-संवत् २०७७

गतवर्ष 5 नवम्बर, 2019 ई. से गुरु देव (बृहस्पति) धनु राशि में संचार कर रहे हैं। आगामी वि. संवत् 2077 में 30 मार्च, 2020 ई. को प्रातः 5 बजकर 50 मिनट (29 मार्च, 29:50) पर मकर (अपनी नीच) राशि में प्रवेश करेंगे तथा 29 जून, 2020 ई. तक मकर राशि में रहेंगे।

14 मई, 2020 ई. को वक्री होकर 30 जून, 2020 ई. को पुनः धनु राशि में प्रवेश कर, 13 सितम्बर, 2020 ई. को मार्गी होकर 20 नवम्बर, 2020 ई. को दोपहर 1 बजकर 22 मिनट पर (13:22) पुनः मकर राशि में आकर 5 अप्रैल, 2021 ई. तक मकर राशि में ही संचार करेंगे। तदुपरान्त 5/6 अप्रैल, 2021 ई. की मध्य रात्रि 12 बजकर 23 मिनट पर (24:23) कुम्भ राशि में प्रवेश करेंगे।

वक्री-मार्गी—गुरु-देव 14 मई, 2020 ई. से 12 सितम्बर, 2020 ई. तक वक्री अवस्था में संचार करेंगे।

ध्यान रहे ! वक्री, अस्त एवं शीघ्रातिचार अवस्था में गुरु कुछ जातक/जातिकाओं को अशुभ फलप्रदायक होता है। ता. 14 मई से 12 सितम्बर, 2020 ई. तक गुरु वक्री रहने तथा लगभग 13 जनवरी, 2021 ई. से 13 फरवरी, 2021 ई. तक अतिचार गति से संचार करने से दुर्भिक्ष एवं अराजकता का माहौल बनेगा। प्रशासकों, केन्द्रीय एवं राज्य सरकारों को उपद्रव, हिंसा, आन्दोलनादि का सामना करना पड़े। प्रजा में अशान्ति व भय व्याप्त हो।

यदा सौम्यग्रहकोपि अतिचारोपजायते।
दुर्भिक्षं नृपपीडा च शुभं न दृश्यते क्वचित्।।

कहीं सत्ता-परिवर्तन तथा प्रजा में असन्तोष व्याप्त रहे। अतएव इस समयावधि में गुरु प्रभावित जातकों को मानसिक तनाव तथा सोची हुई योजनाएं पूर्ण होने से विलम्ब उत्पन्न हों।

धनु राशि—कालीन (25 मार्च से 29 मार्च, 2020 ई., पुनः 30 जून से 19 नवं. 2020 ई. तक) गुरु में स्त्रियों को दुःख व कष्ट रहे तथा सभी प्रकार की धातुओं (सोना, चान्दी, कॉपर, जिस्त) की कीमतों में विशेष वृद्धि होगी। तिल, गुड़ कुछ सस्ते होंगे। तेल, मदिरा इत्यादि महंगे होंगे।

धनूराशिस्थितो जीवो गोधूमादि महर्घता।
वर्षाकाले भवेत् सस्यं महर्घं–तैलमद्ययोः।।

मकर राशि—ता. 30 मार्च से 29 जून, 2020 ई. तक, पुनः 20 नवम्बर, 2020 ई. से 5 अप्रैल, 2021 ई. तक गुरु मकर राशि में रहने से कुछ क्षेत्रों में दारुण घोर दुर्भिक्ष अर्थात् अकालजन्य परिस्थितियां रहने की सम्भावना है। विभिन्न राज्याध्यक्षों के मध्य युद्धजन्य माहौल रहेगा। परन्तु तीन महीनों के बाद शुभफल घटित होंगे।

मकरे च गुरुश्चैव दुर्भिक्षं घोर दारुणम्।
राज्ञां परस्परं युद्धं त्रिमासान्ते शुभं भवेत्।।

कुम्भ राशि–ता. 6 अप्रैल, 2021 ई. से गुरु कुम्भ राशि में आने से वर्षा की कमी अनुभव होगी, प्रतिकूल तथा बेमौसमी वर्षा होने से खड़ी फसलों की हानि होगी तथा कुछ क्षेत्रों में अकाल की परिस्थितियां बनेंगी। पूर्वी-क्षेत्रों तथा देशों में अनाजादि के भावों में अत्यधिक वृद्धि होगी–

कुम्भराशिगते जीवे मेघः स्वल्पांबुवर्षति।
कृषिनाशं च दुर्भिक्षं पूर्वदेशे महर्घता।।

✤ धनु राशिस्थ गुरु की शुभाशुभ फल–सं. २०७७ ✤

[25 मार्च से 29 मार्च 2020 ई. तक, पुनः 30 जून से 19 नवंबर, 2020 ई. तक]

मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
गुरु भाग्यस्थ होने से बिगड़े कार्यों में कुछ सुधार, भूमि, वाहनादि का सुख मिले, किसी प्रियबन्धु से मिलाप, सन्तान सम्बन्धी सुख।	अष्टमस्थ गुरु होने से आय व खर्च अधिक रहेंगे, ऋण व रोग का भय, घरेलु उलझनें बढ़ेंगी।	सप्तम गुरु होने से विघ्नों के बाद कार्य-सिद्धि, धन-लाभ, भाग्य में उन्नति के योग हैं। यात्रा का प्रोग्राम बनेगा।	छटे गुरु होने से व्यय अधिक रहे। ऋण, रोग एवं शत्रुभय हो, निज-बन्धु से विरोध रहे।	भूमि-वाहनादि सुखों की प्राप्ति, उच्च विद्या में सफलता, विवाहादि सुखों की प्राप्ति, श्रेष्ठजनों के सम्पर्क से लाभ व उन्नति के अवसर प्राप्त हों।	चतुर्थस्थ गुरु होने से बनते कामों में बाधाएँ, खर्च अधिक, शरीर कष्ट, गृह-कलह-क्लेश, सुख में कमी हो।	तृतीयस्थ गुरु होने से आय कम व आकस्मिक खर्च, शरीर कष्ट व घरेलु उलझनों के कारण तनाव बढ़े। स्त्री सुख यथेष्ट।	अचानक धन लाभ के अवसर हो, उच्च प्रतिष्ठित लोगों से मेल हो, विदेश यात्रा के योग, धार्मिक कार्यों की ओर रूचि रहे।	लग्नस्थ गुरु पूज्य है, स्वराशिगत होने से संघर्ष व उलझनों के बाद धन लाभ एवं रुके हुए कार्य प्रशस्त होंगे। परिवार में मतभेद रहे।	द्वादशस्थ गुरु नीच राशिगत होने से धन लाभ अल्प खर्च अधिक रहे। धर्म-अध्यात्म में प्रवृत्ति, गुप्त चिन्ताएं, शुभ कार्यों पर खर्च होगा।	अचानक लाभ व उन्नति के अवसर प्राप्त हों, धन-भूमि, सवारी आदि सुखों में वृद्धि, कार्यों में सफलता प्राप्त हो।	दशमस्थ गुरु होने से कार्य-व्यवसाय में रुकावटों के बाद धन प्राप्ति, आय कम, खर्च अधिक, तनाव के कारण स्वास्थ्य खराब रहे।

विशेष ध्यातव्य–धनु राशि पर संचार के समय गुरु की धनु राशि पर स्वगृही स्थिति, मेष तथा सिंह राशि पर मित्र दृष्टियां रहेंगी। जबकि मकर राशि पर संचार के समय गुरु की मकर राशि पर नीच स्थिति, वृष तथा कन्या राशि पर शत्रु दृष्टियां रहेंगी। फलस्वरूप मेष, सिंह व धनु राशि वाले जातकों को उच्च-विद्या कम्पीटीशन आदि में सफलता, विवाह व सन्तान सम्बन्धी सुख, विदेश यात्रा योग, धन-सम्पदा की प्राप्ति, भाग्योन्नति, उच्च-प्रतिष्ठित लोगों से सम्पर्क, धार्मिक कार्यों में रूचि आदि शुभ फल भी घटित होने की सम्भावनाएँ होंगी। परन्तु मकर राशिस्थ गुरु के संचारकालीन वृष, कन्या तथा मकर राशि वाले जातकों को व्यर्थ की भागदौड़, विद्या/कम्पीटीशन में यथेष्ट सफलता न प्राप्त

✤ मकर राशिस्थ गुरु का शुभाशुभ फल–सं. २०७७ ✤

(30 मार्च से 29 जून, 2020 ई. तक, पुनः 20 नवं., 2020 ई. से 5 अप्रै., 2021 ई. तक)

मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
गुरु दशमस्थ होने से धोखा मिलने के संकेत व्यवसाय में रुकावटों के बाद धन प्राप्ति, परिवार में मन-मुटाव, तनाव परेशानी रहे।	गुरु भाग्यस्थ होने से योजना में कुछ सफलता, भूमि, वाहनादि सुख मिलें, प्रिय-बन्धु व सन्तान सुख मिले।	अष्टमस्थ गुरु होने से बनते कार्यों में विघ्न रहेंगे। आय कम व खर्च अधिक रहेंगे। घरेलु उलझनों के कारण भय व अशान्ति रहे।	सप्तम गुरु होने से अत्यन्त संघर्ष के बाद आय के साधन बनेंगे। खर्च अधिक तथा कार्यक्षेत्र में दौड़-धूप रहे।	आय कम व खर्च अधिक होंगे, रोग व शत्रु से पीड़ा, घरेलु उलझनों के कारण मन परेशान रहे।	पंचमस्थ गुरु होने से विद्या एवं कार्यों में सफलता, धर्म-कर्म में रुचि, स्वास्थ्य में सुधार, वाहनादि सुखों में वृद्धि	चतुर्थस्थ गुरु होने से वृथा दौड़-धूप व खर्च अधिक रहें। धन, वाहन सम्बन्धी परेशानी, चोटादि का भय है।	तृतीयस्थ गुरु होने से धन लाभ अच्छा परन्तु आकस्मिक खर्च, निकटस्थ भाई-बन्धु को शरीर कष्ट, घरेलु उलझनें।	धन लाभ व उन्नति के अवसर प्राप्त हों, धार्मिक कार्यों पर खर्च अधिक हो, गत किए कार्यों में सफलता हो।	गुरु लग्नस्थ पूज्य तथा नीच राशिगत होने से संघर्ष के बाद निर्वाह योग्य धन लाभ, खर्चों की अधिकता, परिवार में वैमनस्य	द्वादश गुरु होने से वृथा दौड़-धूप रहे, आय कम-खर्च अधिक रहे, कार्यों में बाधाएँ, रोग व कष्ट भय, धर्म कार्यों में प्रवृत्ति रहे।	नवीन कार्य की योजना, धन लाभ, भाग्य में उन्नति, प्रिय-मिलन, धन-सम्पदा, सवारी का लाभ हो।

नोट–ता. 6 अप्रैल, 2021 ई. से संवतान्त 12 अप्रैल, 2021 ई. तक गुरु देव कुम्भ राशि में संचार करेंगे। जिसका फलित हम आगामी वर्ष के '**पंचांगदिवाकर**' में देंगे।

गुरु का कारकत्व–गुरु पति-सुख, धर्म-आध्यात्म, सन्तान, पुत्र, विद्या, विवेक-बुद्धि, बड़ा भाई, सुवर्ण, ज्योतिष आदि विद्याओं का कारक माना जाता है। शरीर में लिवर, हृदयकोश, पाचन प्रक्रिया, कान आदि का भी कारक माना जाता है। कुण्डली में गुरु अशुभ हो अथवा अशुभ ग्रह द्वारा दृष्ट या युक्त हो, तो गुरु सम्बन्धित सुख में कमी करता है। अधिक जानकारी के लिए हमारे कार्यालय से छपी '**ज्योतिष तत्त्व (फलित खण्ड) भाग-1**' में गोचर विचार पढ़ना चाहिए।

गुरु के अशुभ फल की शान्ति के लिए दान–गुरु की शुभता बढ़ाने के लिए वृद्ध ब्राह्मण को भोजन कराना, गुरुवासरी अमावस्या तथा गुरुवार का व्रत रखना, पुखराज धारण करना, पीले वस्त्र, चने की दाल, कांस्य पात्र, सुवर्ण, शक्कर, केले, लड्डुओं,

का जाप 19,000 की संख्या में विधिपूर्वक करना शुभ एवं फलदायक रहेगा। गुरु धन और

✤ मिथुन राशिस्थ राहु का गोचरफल–सं. २०७७ ✤

विद्या/कम्पटीशन में यथेष्ट सफलता न प्राप्त | धारण करना, पीले वस्त्र, चने की दाल, कांस्य पात्र, सुवर्ण, शक्कर, केले, लड्डुओं,)

का जाप 19,000 की संख्या में विधिपूर्वक करना शुभ एवं फलदायक रहेगा। गुरु धनु और मीन राशि का स्वामी है। पति सौख्य की प्राप्ति के लिए स्त्रियों को गुरु के बीज मंत्र, बृहस्पति अष्टोत्तर शतनाम, बृहस्पतिवार का व्रत, पुखराज धारण तथा यथाशक्ति दान करना लाभदायक रहता है। प्रत्येक गुरुवार केसर का तिलक भी लगाना चाहिए।

बृहस्पति शान्ति हेतु स्नान योग्य वस्तुएँ–गुरु की अनिष्ट शान्ति (वैवाहिक विलम्ब, विद्या प्राप्ति, पदोन्नति में बाधाएं, पितृदोष आदि दूर करने हेतु) के लिए चमेली पुष्प, पीली सरसों, शहद, गुलर, दमयन्ती, मुलट्ठी, हरिद्रा, मालती पुष्प, सुगन्धबाला, श्वेत आक के नवीन पत्ते एवं गंगाजल आदि स्नान-औषधियों में से यदि कोई वस्तु प्राप्त न हो सके, तो जितनी प्राप्त हो, उन्हीं से स्नान करना चाहिए।

विशेष–औषध-स्नान के दिन साबुन, शैम्पू आदि को लगाने से पूरी तरह परहेज़ करना चाहिए। सभी गुरु-औषधि को गंगाजल में मिश्रित शुद्ध जल डालकर पूर्वाभिमुख होकर गुरु के बीजमंत्र से मंत्रपूर्वक स्नान करने से गुरु कृत अनिष्ट प्रभाव से निवृत्ति होती है। औषध स्नान के उपरान्त गुरु के बीज मंत्र का कम-से-कम 3 माला का जप (जप में हरिद्रा की माला या रुद्राक्ष की माला का प्रयोग करना) करके ब्राह्मण-दम्पत्ति को मीठा भोजन, पीले वस्त्र एवं अन्य गुरु से सम्बन्धित वस्तुओं का दान दक्षिणा सहित करना चाहिए।

गुरु गायत्री मन्त्र–

''ॐ अंगिरो जाताय विद्महे वाचस्पतये धीमहि तन्नो गुरुः प्रचोदयात्।।''

गुरु बीज मन्त्र–''ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरवे नमः।।''

गुरु का वैदिक मन्त्र–ॐ बृहस्पते अति यदर्यो अर्हाद् द्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु।
यद्दीदयच्छवस ऋतप्रजात तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम्।। (जप संख्या १९०००)

पुराणोक्त गुरु मन्त्र– ॐ देवानां च मुनीनां च गुरु कांचनसंनिभम्।
बुद्धिभूतं त्रिलोकेशं तं नमामि बृहस्पतिम्।।

✤ **मन्त्र प्रयोग विधि तथा गुरु सम्बन्धी अन्य उपयोगी उपाय व टोटके जानने के लिए हमारे कार्यालय से प्रकाशित पुस्तक ''अनिष्ट ग्रहों के चमत्कारी उपाय व टोटके'' मंगवाकर पढ़ें। मूल्य-200/- रु.**

राहु-केतु का शुभाशुभ गोचरफल—संवत् २०७७

7 मार्च, 2019 ई. (वि. संवत् २०७५ मध्ये) से राहु मिथुन राशि में तथा केतु धनु राशि में संचार कर रहे हैं। आगामी वि. संवत् २०७७ के प्रारम्भ से (25 मार्च, 2020 ई.) ता. 22 सितंबर, 2020 ई. तक राहु मिथुन राशि में ही तथा केतु धनु राशि में ही संचार करेंगे।

ता. 23 सितंबर, 2020 ई. को दोपहर 12 बजकर 52 मिनट पर (12:52) राहु वृष राशि में तथा केतु भी इसी समय अपनी-अपनी उच्च राशि वृश्चिक राशि में प्रवेश करेंगे। यद्यपि मिथुन राशिस्थ राहु, धनु राशिस्थ केतु का संचारफल गतवर्षीय पंचांग में (पृष्ठ 42) लिख चुके हैं, पुनः पाठकों की सुविधार्थ पुनः लिख रहे हैं।

✤ मिथुन राशिस्थ राहु का गोचरफल-सं. २०७७ ✤

(25 मार्च, 2020 ई. से 22 सितम्बर, 2020 ई. तक के लिए)

मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
कोई शुभ समाचार प्राप्त हो, धन लाभ व उन्नति के अवसर प्राप्त, हों, विदेश गमन की योजना बनेगी।	धन प्राप्ति में विघ्नों का सामना रहे। अचानक लाभ तथा अचानक हानि का भय, मानसिक तनाव रहे।	शरीर कष्ट, तनाव अधिक रहे, बनते कार्यों में अड़चनें, खर्चों की भी अधिकता रहे।	सामान्य आय के साथ-साथ खर्च भी बहुत अधिक रहेंगे। किसी अप्रिय घटना के कारण मन अशान्त रहे।	धन लाभ व उन्नति के चाँस बनेंगे पर खर्च भी बहुत बढ़ेंगे। विदेश या दीर्घ यात्रा का विचार बने।	वृथा दौड़-धूप अधिक, बनते कार्यों में विघ्न, घरेलु एवं व्यवसायिक उलझनों के कारण तनाव बढ़ें।	बिगड़े कार्यों में कुछ सुधार हो, वाहनादि सुखों की प्राप्ति, खर्चों में वृद्धि, निज-बन्धु से विरोध हो।	लाभ कम, खर्च अधिक रहें, शरीर कष्ट एवं रोग भय रहे, अपने भी परायों जैसा व्यवहार करें।	बनते कार्यों में अड़चनें, लाभ कम व खर्च अधिक होंगे। परिवार या पति/पत्नी में मन-मुटाव हो।	अचानक धन-लाभ, कार्य-व्यवसाय में भी अचानक सफलता मिले, शुभ यात्रा एवं परिवार से मेल मिलाप हो।	निकटस्थ बन्धु से तनाव, रोग व शत्रु भय, खर्च एवं मानसिक तनाव रहे, सन्तान एवं विद्या सम्बन्धी कार्यों में विघ्न-बाधाएं हों।	कार्य-व्यवसाय में विघ्नों के बाद सफलता मिले, आय के साथ-साथ खर्च अधिक रहे, घरेलु उलझनें बढ़ेंगी।

✤ धनु राशिस्थ केतु का गोचरफल-सं. २०७७ ✤

[25 मार्च, 2020 ई. से 22 सितम्बर, 2020 ई. तक के लिए]

मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
धन लाभ अल्प, आराम कम, संघर्ष अधिक, दुर्घटना से चोटादि का भय, वाहनादि पर खर्च हो।	धन हानि, रोग व शत्रु भय, विद्या में विघ्न, परिवार व सेहत संबंधी चिन्ता, खर्च अधिक रहे।	खर्च अधिक, लाभ अल्प हो। घरेलु उलझनों के कारण तनाव व अशांति बढ़ेगी।	निज पराक्रम से धन लाभ हो, बिगड़े कार्यों में सुधार, शुभ समाचार मिले।	लाभ कम व खर्च अधिक रहे। किसी मंगल कार्य पर खर्च हो। विदेश यात्रा का योग बने।	संघर्ष के बाद निर्वाह योग्य आय के साधन बनेंगे, सवारी सुख की प्राप्ति, परन्तु घरेलु झंझट व अशांति रहे।	गत किए कार्यों में सफलता प्राप्त हो, धन लाभ के अवसर प्राप्त हो, किसी मित्र की सहायता से बिगड़ा कार्य बने।	वृथा दौड़-धूप एवं खर्च अधिक रहे। नुक्सान होने का भय, शरीर कष्ट व घरेलु उलझनें बढ़ेंगी।	संघर्ष अधिक हो, आय कम व खर्च अधिक रहे। स्वास्थ्य में विकार, क्रोध अधिक रहे।	बनते कार्यों में अड़चनें, आय कम व खर्च अधिक, तनाव से स्वास्थ्य भी ठीक न रहे।	भूमि-वाहनादि भौतिक सुख-साधनों में वृद्धि यश-लाभ, धन लाभ साधारण, परन्तु संघर्ष भी रहे।	अपने भी परायों जैसा व्यवहार करेंगे। खर्चों में वृद्धि, रोग व शत्रु-भय, परे-शानियां बढ़ेंगी।

वृष राशिस्थ राहु का गोचरफल–सं. २०७७

(23 सितम्बर, 2020 ई. से 12 अप्रैल, 2021 ई. तक के लिए)

मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
घरेलु व व्यवसाय में तनावपूर्ण परिस्थितियां रहें, वृथा खर्च बढ़ें, शरीर कष्ट, रोग व मानसिक परेशानियां रहें, ऋण न लें तथा न ही दें।	निकट बन्धुओं से विरोध, बनते कार्यों में अड़चनें, रोग व शत्रु-भय, खर्चों में वृद्धि, परन्तु अचानक धन प्राप्ति भी हो।	बनते कार्यों में विघ्न, वृथा दौड़-धूप व खर्च अधिक एवं अकस्मात खर्चें होंगे। मन अशांत रहे।	कुछ बिगड़े कामों में सुधार, भूमि-वाहनादि सुख प्राप्ति, धन-लाभ, विदेश यात्रा के योग हैं।	वृथा दौड़-धूप अधिक रहे, बनते कार्यों में अड़चनें, घरेलु उलझनों से मन अशान्त रहे।	घरेलु उलझनों के बावजूद गुज़ारे योग्य आय के साधन बनेंगे, निज बन्धु से विरोध, वाहनादि सुखों की प्राप्ति	लाभ कम, खर्च अधिक हो, शरीर कष्ट व मित्रों से विरोध हो, अपने भी परयों जैसा व्यवहार करें।	बनते कार्यों में बाधाएं, धन-लाभ कम, खर्च अधिक रहे, तनाव भी रहे, विशेषकर पति/पत्नी में।	अचानक धन लाभ, प्रिय-बन्धु से मेल, कार्य-व्यवसाय में सफलता मिले, शुभ यात्रा एवं परिवार से मेल-मिलाप हो।	निकटस्थ संबंधी से कलह-क्लेश, रोग व शत्रु भय, खर्च व चिंता बढ़े, संतान/विद्या संबंधी कार्यों में विघ्न।	किसी बन्धु से क्लेश, लाभ-कम व खर्चों में वृद्धि हो, वृथा दौड़-धूप बढ़े। व्यवसाय में संघर्ष रहे।	पराक्रम व उत्साह में वृद्धि, शुभ यात्रा, धन लाभ व पदोन्नति के अवसर बनेंगे। विदेश यात्रा की योजना भी बने।

वृश्चिक राशिस्थ केतु का गोचरफल–वि. सं. २०७७

[23 सितम्बर, 2020 ई. से 12 अप्रैल, 2021 ई. तक]

मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
धन-हानि, रोग व शत्रु भय, विद्या में विघ्न, परिवार व सेहत संबंधी चिन्ता, खर्च अधिक रहे।	स्त्री व परिवारिक चिंता, किसी से वैमनस्य, निकटस्थ से धोखा मिलने का भय है।	निज पराक्रम से धन लाभ हो, बिगड़े कार्यों में सुधार, शुभ समाचार मिले।	घरेलु कलह-क्लेश से मन अशांत व परेशान, लाभ कम व खर्च अधिक, संतान संबंधी चिंता	आर्थिक परेशानियों के कारण घरेलु झंझट व अशांति रहे। गुज़ारे योग्य आय ही होगी।	आशा-अनुकूल सफलता, बिगड़े हुए कार्यों में नुकसान होने का भय रहे। शरीर कष्ट व तनाव बढ़ें।	वृथा दौड़-धूप अधिक हो, लाभ कम, खर्च अधिक व नुकसान होने का भय रहे। शरीर कष्ट व तनाव	आर्थिक परेशानी, बनते कार्यों में विघ्न व शरीर कष्ट, तनाव रहे। खर्च अधिक हों।	रोग-शोक व शत्रु भय, अपने भी परायों जैसा व्यवहार रखें, खर्च अधिक व गुप्त परेशानी	भूमि-वाहनादि भौतिक सुख-साधनों में वृद्धि, यश-लाभ, धन लाभ साधारण, परन्तु संघर्ष भी	पुरुषार्थ में वृद्धि, कोई मंगल कार्य हो, लाभ की अपेक्षा खर्च अधिक रहे, विदेश यात्रा का योग	धन लाभ अल्प, आराम कम, संघर्ष अधिक, दुर्घटना से चोटादि का भय, वाहनादि पर खर्च

अनिष्ट राहु की शान्ति हेतु तिल, तेल, भूरे रंग का वस्त्र, कम्बल, नारियल, सप्तधान्य, सतनाजा, कृष्ण पुष्प आदि का दक्षिणा सहित दान करना कल्याणकारी रहता है। जन्मपत्री अनुशीलन के बाद गोमेध भी धारण किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त राहु के बीज मन्त्र '**ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः**' का 18 हज़ार की संख्या में जाप करें। गजेन्द्र मोक्ष स्तोत्र का पाठ भी शुभ है। राहु का गायत्री मन्त्र–**ॐ शिरोरूपाय विद्महे अमृतेशाय धीमहि तन्नो राहुः प्रचोदयात्॥**

केतु के अरिष्ट की शान्ति हेतु लोहा, सप्तधान्य, लाल-काला वस्त्र, नारियल, कम्बल, कस्तूरी, बेल, कुष्ठाश्रम आदि में भोजन, क्षीर का दान तथा जन्मपत्री विश्लेषण के पश्चात् लहसनिया नग धारण करना कल्याणकारी रहता है। केतु के बीज मन्त्र '**ॐ स्त्रां स्त्रीं स्त्रौं सः केतवे नमः**' की 17 हज़ार की संख्या में जाप करना तथा संकटनाशक श्रीगणेश स्तोत्र एवं अपराजिता स्तोत्र का पाठ करना शुभ है। केतु की शान्ति के लिए गायत्री मन्त्र–

ॐ पद्म पुत्राय विद्महे अमृतेशाय धीमहि तन्नो केतुः प्रचोदयात्॥

अनिष्ट ग्रहों की शान्ति के सम्बन्ध में और अधिक विस्तृत जानकारी के लिए हमारी प्रकाशित पुस्तक **अनिष्ट ग्रहों के चमत्कारी उपाय/टोटके** मँगवाकर पढ़ें। मूल्य–200/-

नक्षत्रानुसार पाया फल जानना

- ✳ आर्द्रा, पुर्न., पुष्य, अश्ले., मघा, पू.फा., उ.फा., हस्त, चित्रा, स्वाती–इन दश नक्षत्रों के मध्य किसी जातक का जन्म हो, तो चान्दी का पाया।
- ✳ विशा., अनु., ज्ये., मूल, पू.षा., उ.षा., श्रवण, धनि., शतभिषा के मध्य जन्म हो, तो ताम्बे का पाया।
- ✳ रेवती, अश्वि, भर., कृति, रोह, मृग = सोना (सुवर्ण)
- ✳ पू.भा., उ.भा. = लौह पाया

आर्द्रा दश रूपाणां, विशाखा नवताम्रका। रेवती षट् हेमश्च, शेषा द्वौ लौह-प्रकीर्तिता।।

चान्दी एवं ताम्र के पाया शुभ एवं लाभदायक तथा सुवर्ण एवं लौह के पाया धन हानि एवं कष्टकारी फल देते हैं।

कुछ विद्वानों एवं मुहूर्त्त ग्रन्थों अनुसार जन्म-राशि से चन्द्रस्थिति तक गणना करने पर विभिन्न स्थानों के अनुसार चन्द्रमा के सुवर्णादि पाद का विचार किया जाता है। यथा–

स्थान	१,६,११	२,५,९	३,७,१०	४,८,१२
चन्द्रपाद	स्वर्ण	रजत	ताम्र	लौह
फल	सौभाग्य	शुभत्व	दारिद्रय	मृत्यु

जन्मराशि से इन्हीं स्थानों पर अन्य ग्रहों के भी चरणों का विचार किया जाता है परन्तु फल भिन्न-भिन्न रहता है–"**सौरी लोहे शुभः प्रोक्तो हेमपादे च वै गुरुः। रजते चंद्रशुक्रौ च, ग्रहाश्चान्ये च ताम्रके।।**"

अर्थात् शनि का लौह पाद, बृहस्पति का सुवर्णपाद, चंद्र-शुक्र का रजत पाद तथा अन्य ग्रहों

दिनमान व रात्रिमान से मध्याह्न, अपराह्न, प्रदोष काल आदि जानना

भारतीय भूखण्ड में दिनमान का विस्तार लगभग 9/30 घं. मिंट से लेकर 14-30 घं. मि. के मध्य में पड़ता है। इसीलिए 9/30 घं. मिं. दिनमान से लेकर 14/30 घं. मिं. के दिनमान के मध्यान्तर में आने वाले मध्याह्न, अपराह्न आदि के आरम्भ व समाप्ति काल जानने की प्रक्रिया लिख रहे हैं। मध्याह्न तथा अपराह्न काल के प्रारम्भ एवं समाप्ति काल के घण्टा मिनट को अपने नगर के सूर्योदय में अलग-अलग जमा कर देने से क्रमशः मध्याह्न एवं अपराह्न काल का प्रारम्भ तथा समाप्तिकाल पता चल जाएगा।

उदाहरण–मान लीजिए हमें जम्मू नगर में 31 अग. 2018 को मध्याह्न का आरम्भ, समाप्ति व मध्यम काल जानना है, तो 31 अग. के सूर्योदय (6/08) को उस दिन के सूर्यास्त (18-53 घं. मिं.) में से घटा देने पर हमें 12 घं. 45 मिनट का दिनमान प्राप्त हुआ। आगे दी गई तालिका में दिनमान घं. 12/45 मिं. के आगे दाईं ओर देखने से हमें मध्याह्न का आरम्भ 5 घं. 6 मिं. मिला। इसको उस दिन के सूर्योदय (6-08) में जमा कर देने से हमें मध्याह्न का प्रारम्भ 11 घं. 14 मिं. तथा उसी दिनमान के सामने समाप्ति काल (7-39) में सू.उ. जमा करने से हमें 31 अग. के मध्याह्न का समा. काल (13-47) प्राप्त हुआ। आरम्भ व समाप्ति के समयान्तर के अर्ध भाग (10/17) को मध्याह्नारम्भ (11-14) में जमा कर देने से हमें मध्याह्न का मध्य काल प्राप्त होगा।

इसी भान्ति अभीष्ट दिनमान की दाईं तरफ चौथे कालम में अपराह्न के आरम्भ तथा समाप्ति के घं.मिं. उस दिन के स्थानीय सूर्योदय में अलग-अलग जोड़ देने पर अपराह्न का आरम्भ व समाप्ति काल (भा. स्टैं. टा.) मालूम हो जाएगा।

सायाह्नकाल का प्रारम्भ और समाप्ति जानने के लिए भी दी गई तालिकानुसार दिनमान देखकर उसके सामने लिखे अनुसार प्रारम्भ और समाप्ति (घं. मिं.) काल में अभीष्ट दिन को सूर्योदय जोड़ देने से सायाह्न-काल का प्रा. व समाप्ति निकल आएगी।

दिनमान	मध्याह्न		अपराह्न		सायाह्न	
	प्रारम्भ	समाप्ति	प्रारम्भ	समाप्ति	प्रारम्भ	समाप्ति
घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
9 30	3 48	5 42	5 42	7 36	7 36	9 30
9 45	3 54	5 51	5 51	7 48	7 48	9 45
10 00	4 00	6 00	6 00	8 00	8 00	10 00
10 15	4 06	6 9	6 9	8 12	8 12	10 15
10 30	4 12	6 18	6 18	8 24	8 24	10 30
10 45	4 18	6 27	6 27	8 36	8 36	10 45
11 00	4 24	6 36	6 36	8 48	8 48	11 99
11 15	4 30	6 45	6 45	9 00	9 00	11 15
11 30	4 36	6 54	6 54	9 12	9 12	11 30
11 45	4 42	7 03	7 03	9 24	9 24	11 45
12 00	4 48	7 12	7 12	9 36	9 36	12 00
12 15	4 54	7 21	7 21	9 48	9 48	12 15
12 30	5 00	7 30	7 30	10 00	10 00	12 30
12 45	5 06	7 39	7 39	10 12	10 12	12 45
13 00	5 12	7 48	7 48	10 24	10 24	13 00
13 15	5 18	7 57	7 57	10 36	10 36	13 15
13 30	5 24	8 06	8 06	10 48	10 48	13 30
13 45	5 30	8 15	8 15	11 00	11 00	13 45
14 00	5 36	8 24	8 24	11 12	11 12	14 00
14 15	5 42	8 33	8 33	11 24	11 24	14 15
14 30	5 48	8 42	8 42	11 36	11 36	14 30
15 00	6 00	9 00	9 00	12 00	12 00	15 00

–प्रदोषकाल ज्ञात करना–

स्थानीय सूर्यास्त के बाद मध्यमान से तीन मुहूर्त्त (6 घड़ी), अर्थात् 2 घण्टे 24 मिनट तक प्रदोष काल होता है–''**त्रिमुहूर्त्त प्रदोषःस्यात् भानौऽस्तं गते सति।**''

प्रदोषकाल में सूर्यास्त के बाद शिवपूजनार्चनादि तथा ब्राह्मण भोजन का विधान है। कुछ विद्वान् सूर्यास्त के बाद **2 घड़ी** (1 घण्टा, 12 मिनट) तक के काल को प्रदोष मानते हैं। सम्भवत: यह काल प्रदोष काल में शिवपूजन में ही विशेष प्रशस्त होने से ग्राह्य माना गया है। **रात्रिमान** में 15 मुहूर्त्तों में से प्रथम मुहूर्त्त का स्वामी भी भगवान् शिव ही हैं।

सामान्य रूप में सूर्योदय से 4 से 5 घड़ी पूर्व **उषा:काल** होता है। इसे **ब्राह्म मुहूर्त्त** भी कहते हैं। इस मुहूर्त्त में श्री भगवान् का चिन्तन, पूजा, ध्यान पाठ आदि करने का विशेष फल होता है।

अरूणोदय–सूर्योदय से 4 घड़ी पूर्व **अरूणोदय** काल होता है, इसमें भी स्नान, जप, पुण्य श्लोकों व स्तोत्रों का पाठ आदि करने का विशेष फल होता है।

रात्रिमान	प्रदोषकाल		निशीथकाल		महानिषीथकाल		अरूणोदयकाल	
	प्रारम्भ	समाप्ति	प्रारम्भ	समाप्ति	प्रारम्भ	समाप्ति	प्रारम्भ	समाप्ति
घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
9 30	सूर्यास्त	1 54	1 54	3 48	3 48	5 42	8 14	9 30
9 45	सूर्यास्त	1 57	1 57	3 54	3 54	5 51	8 27	9 45
10 00	सूर्यास्त	2 00	2 00	4 00	4 48	6 00	8 40	10 00
10 15	सूर्यास्त	2 03	2 03	4 06	4 06	6 09	8 53.	10 15
10 30	सूर्यास्त	2 06	2 06	4 12	4 12	6 18	9 .06	10 30
10 45	सूर्यास्त	2 09	2 09	4 18	4 18	6 27	9 19	10 45
11 00	सूर्यास्त	2 12	2 12	4 24	4 24	6 36	9 32	11 00
11 15	सूर्यास्त	2 15	2 15	4 30	4 30	6 45	9 45	11 15
11 30	सूर्यास्त	2 18	2 18	4 36	4 36	6 54	9 58	11 30
11 45	सूर्यास्त	2 21	2 21	4 42	4 42	7 03	10 11	11 45
12 00	सूर्यास्त	2 24	2 24	4 48	4 48	7 12	10 24	12 00
12 15	सूर्यास्त	2 27	2 27	4 54	4 54	7 21	10 37	12 15
12 30	सूर्यास्त	2 30	2 30	5 00	5 00	7 30	10 50	12 30
12 45	सूर्यास्त	2 33	2 33	5 06	5 06	7 39	11 03	12 45
13 00	सूर्यास्त	2 36	2 36	5 12	5 12	7 48	11 16	13 00
13 15	सूर्यास्त	2 39	2 39	5 18	5 18	7 57	11 29	13 15
13 30	सूर्यास्त	2 42	2 42	5 24	5 24	8 06	11 42	13 30
13 45	सूर्यास्त	2 45	2 45	5 30	5 30	8 15	11 55	13 45
14 00	सूर्यास्त	2 48	2 48	5 36	5 36	8 24	11 58	14 00
14 15	सूर्यास्त	2 51	2 51	5 42	5 42	8 33	12 11	14 15
14 30	सूर्यास्त	2 54	2 54	5 48	5 48	8 42	12 24	14 30
15 00	सूर्यास्त	3 00	3 00	6 00	6 00	9 00	12 50	15 00

होमादि में अग्निवास एवं फल जानना

जिस दिन को हवन करना हो, उस दिन तात्कालिक तिथि और वार सँख्या में 1 जोड़कर 4 द्वारा भाग देवें। भाग देने पर यदि **शेष 3 या शून्य (0) बचे**, तो उस दिन अग्नि का वास **पृथिवी पर** जानें, शेष 1 बचे तो अग्नि का वास **आकाश** में तथा तिथि, यदि शेष 2 बचें तो अग्नि का वास **पाताल** में जानना चाहिए। **पृथिवी** पर **अग्नि** का वास शुभ एवं कल्याणकारक होता है। **आकाश** में वास हो तो आयु का क्षय तथा पाताल में वास हो तो धन की हानि होती है। वार की गणना रविवार से तथा तिथि की गणना शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा से करनी चाहिए। अग्निवास चक्र के पश्चात् गत पृष्ठों में दिए गए ग्रह मुख में आहुति चक्र का विचार करना चाहिए।–**पं. पन्ना लाल ज्यो.**

शुक्ल पक्ष तिथि	अग्निवास एवं फल जानने का चक्र (शुक्ल-पक्ष)						
	रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरू	शुक्र	शनि
१	3 पृथ्वी (लाभ)	0 पृथ्वी लाभ	1 आकाश क्षय	2 पाताल हानि	3 पृथ्वी लाभ	0 पृथ्वी लाभ	1 आकाश क्षय
२	0 पृथ्वी लाभ	1 आकाश क्षय	2 पाताल हानि	3 पृथ्वी लाभ	0 पृथ्वी लाभ	1 आकाश क्षय	2 पाताल हानि
३	1 आकाश क्षय	2 पाताल हानि	3 पृथ्वी लाभ	0 पृथ्वी क्षय	1 आकाश क्षय	2 पाताल हानि	3 पृथ्वी लाभ
४	2 पाताल हानि	3 पृथ्वी लाभ	0 पृथ्वी लाभ	1 आकाश क्षय	2 पाताल हानि	3 पृथ्वी लाभ	0 पृथ्वी लाभ
५	3 पृथ्वी लाभ	0 पृथ्वी लाभ	1 आकाश क्षय	2 पाताल हानि	3 पृथ्वी लाभ	0 पृथ्वी लाभ	1 आकाश क्षय
६	0 पृथ्वी लाभ	1 आकाश क्षय	2 पाताल हानि	3 पृथ्वी लाभ	0 पृथ्वी लाभ	1 आकाश क्षय	2 पाताल हानि
७	1 आकाश क्षय	2 पाताल हानि	3 पृथ्वी लाभ	0 पृथ्वी लाभ	1 आकाश क्षय	2 पाताल हानि	3 पृथ्वी लाभ
८	2 पाताल हानि	3 पृथ्वी लाभ	0 पृथ्वी लाभ	1 आकाश क्षय	2 पाताल हानि	3 पृथ्वी लाभ	0 पृथ्वी लाभ
९	3 पृथ्वी लाभ	0 पृथ्वी लाभ	1 आकाश क्षय	2 पाताल हानि	3 पृथ्वी लाभ	0 पृथ्वी लाभ	1 आकाश क्षय
१०	0 पृथ्वी लाभ	1 आकाश क्षय	2 पाताल हानि	3 पृथ्वी लाभ	0 पृथ्वी लाभ	1 आकाश क्षय	2 पाताल हानि
११	1 आकाश क्षय	2 पाताल हानि	3 पृथ्वी लाभ	0 पृथ्वी लाभ	1 आकाश क्षय	2 पाताल हानि	3 पृथ्वी लाभ
१२	2 पाताल हानि	3 पृथ्वी लाभ	0 पृथ्वी लाभ	1 आकाश क्षय	2 पाताल हानि	3 पृथ्वी लाभ	0 पृथ्वी लाभ
१३	3 पृथ्वी लाभ	0 पृथ्वी लाभ	1 आकाश क्षय	2 पाताल हानि	3 पृथ्वी लाभ	0 पृथ्वी लाभ	1 आकाश क्षय
१४	0 पृथ्वी लाभ	1 आकाश क्षय	2 पाताल हानि	3 पृथ्वी लाभ	0 पृथ्वी लाभ	1 आकाश क्षय	2 पाताल हानि
१५	1 आकाश	2 पाताल	3 पृथ्वी	0 पृथ्वी	1 आकाश	2 पाताल	3 पृथ्वी

कृष्ण पक्ष तिथि	अग्निवास एवं फल जानने का चक्र (कृष्ण-पक्ष)						
	रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरू	शुक्र	शनि
१	2 पाताल हानि	3 पृथ्वी लाभ	0 पृथ्वी लाभ	1 आकाश क्षय	2 पाताल हानि	3 पृथ्वी लाभ	0 पृथ्वी लाभ
२	3 पृथ्वी लाभ	0 पृथ्वी लाभ	1 आकाश क्षय	2 पाताल हानि	3 पृथ्वी लाभ	0 पृथ्वी लाभ	1 आकाश क्षय
३	0 पृथ्वी लाभ	1 आकाश क्षय	2 पाताल हानि	3 पृथ्वी लाभ	0 पृथ्वी लाभ	1 आकाश क्षय	2 पाताल हानि
४	1 आकाश क्षय	2 पाताल हानि	3 पृथ्वी लाभ	0 पृथ्वी लाभ	1 आकाश क्षय	2 पाताल हानि	3 पृथ्वी लाभ
५	2 पाताल हानि	3 पृथ्वी लाभ	0 पृथ्वी लाभ	1 आकाश क्षय	2 पाताल हानि	3 पृथ्वी लाभ	0 पृथ्वी लाभ
६	3 पृथ्वी लाभ	0 पृथ्वी लाभ	1 आकाश क्षय	2 पाताल हानि	3 पृथ्वी लाभ	0 पृथ्वी लाभ	1 आकाश क्षय
७	0 पृथ्वी लाभ	1 आकाश क्षय	2 पाताल हानि	3 पृथ्वी लाभ	0 पृथ्वी लाभ	1 आकाश क्षय	2 पाताल हानि
८	1 आकाश क्षय	2 पाताल हानि	3 पृथ्वी लाभ	0 पृथ्वी लाभ	1 आकाश क्षय	2 पाताल हानि	3 पृथ्वी लाभ
९	2 पाताल हानि	3 पृथ्वी लाभ	0 पृथ्वी लाभ	1 आकाश क्षय	2 पाताल हानि	3 पृथ्वी लाभ	0 पृथ्वी लाभ
१०	3 पृथ्वी लाभ	0 पृथ्वी लाभ	1 आकाश क्षय	2 पाताल हानि	3 पृथ्वी लाभ	0 पृथ्वी लाभ	1 आकाश क्षय
११	0 पृथ्वी लाभ	1 आकाश क्षय	2 पाताल हानि	3 पृथ्वी लाभ	0 पृथ्वी लाभ	1 आकाश क्षय	2 पाताल हानि
१२	1 आकाश क्षय	2 पाताल हानि	3 पृथ्वी लाभ	0 पृथ्वी लाभ	1 आकाश क्षय	2 पाताल हानि	3 पृथ्वी लाभ
१३	2 पाताल हानि	3 पृथ्वी लाभ	0 पृथ्वी लाभ	1 आकाश क्षय	2 पाताल हानि	3 पृथ्वी लाभ	0 पृथ्वी लाभ
१४	3 पृथ्वी लाभ	0 पृथ्वी लाभ	1 आकाश क्षय	2 पाताल हानि	3 पृथ्वी लाभ	0 पृथ्वी लाभ	1 आकाश क्षय
१५	0 पृथ्वी	1 आकाश	2 पाताल	3 पृथ्वी	0 पृथ्वी	1 आकाश	2 पाताल

सूर्यादि ग्रहों के अनिष्टफल की शान्ति हेतु दान एवं जपादि मन्त्र

													जप संख्या	जपकाल	जपनीय बीजमन्त्राः	हवन समिधा
सूर्य	कनक	माणिक्य	तांबा	सोना	लाल गाय	गुड़	घी	कमलादि	रक्तवस्त्र	लालचंदन	मूंगा	केशर	७०००	सूर्योदय	ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः	आक् काष्ठ
चन्द्र	चावल	मोती	चांदी	सोना	श्वेत बैल	मिश्री	दही	श्वेत पुष्प	श्वेतवस्त्र	श्वेतचंदन	शंख	कपूर	११०००	संध्याकाले	ॐ श्रां श्रीं श्रौं सः चन्द्रमसे नमः	पलाश
मंगल	मसूर	मूंगा	तांबा	सोना	लाल बैल	गुड़	घी	लाल कनेर	लालवस्त्र	लाल चंदन	केशर	कस्तूरी	१००००	सू.उ. २।१५	ॐ क्रां क्रीं क्रौं सः भौमाय नमः	खैर
बुध	मूंग	पन्ना	कांस्य	सोना	शस्त्र	शक्कर	घी	सर्व रंग पु.	हरावस्त्र	अनेक फल	हाथीदांत	कपूर	९०००	सू.उ. ५ घड़ी	ॐ ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः	अपामार्ग
गुरू	पीतधान्य	पुखराज	कांस्यपात्र	सोना	अश्व	लवण श	घी	पीले पुष्प	पीतवस्त्र	पीला फल	धर्मग्रंथ	लवणशहद	१९०००	संध्याकाले	ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरवे नमः	पीपल
शुक्र	चावल	हीरा	चांदी	सोना	श्वेत घोड़ा	मिसरी	दूध	श्वेत पुष्प	सफेदवस्त्र	सफेद चंदन	दही	सुगन्धित द्रव्य	१६०००	सू. उ. काल	ॐ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः	गूलर
शनि	उड़द	नीलम	लोहा	सोना	काली गाय	कुलथी	तैल	काले पुष्प	कालावस्त्र	काले जूते	भैंस	कस्तूरी	२३०००	संध्याकाल	ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनये नमः	शमी
राहु	सप्तधान्य	गोमेद	सीसा	सोना	काला घोड़ा	ताम्र पात्र	तैल	कृष्ण पुष्प	नीलवस्त्र	नारियल	कंबल	खड्ग	१८०००	रात्रि	ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः	दूर्वा
केतु	सप्तधान्य	लसनिया	लोहा	सोना	बकरा	नारियल	तेल	धूम्र पुष्प	कालावस्त्र	शस्त्र ध्वज	कंबल	कस्तूरी	१७०००	रात्रि	ॐ स्त्रां स्त्रीं स्त्रौं सः केतवे नमः	कुशा
मुंथा	चावल	मोती	कांस्यपात्र	सोना	श्वेतचंदन	ऋतुपुष्प	घृत	श्वेतपुष्प	श्वेतवस्त्र	हाथीदांत	मुंथेश ग्रह.	ग्रह अनुसार	मुंथेश ग्रहानुसार	प्रातः	मुन्था स्वामी मन्त्र	

विशेष—ध्यान रहे, प्रत्येक ग्रह के दान के साथ यथाशक्ति दक्षिणा भी अवश्य देनी चाहिए। **सप्तधान्य**—गेहूँ, उड़द, मूंगी, चने, जौं, कंगनी और धान्य, चावल।

सूर्यादि ग्रहों के अरिष्ट निवारण हेतु औषधि स्नान

सूर्य	चन्द्रमा	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
मन:शिला	पंचगव्य	बिल्व छाल	गोबर	चमेलीपुष्प	पिपरामूल	कालेतिल	लोबान	लोबान
इलायची	गोदूध	लाल पुष्प	अक्षत	पुष्प	जायफल	सूरमा	तारपीन	तारपीन
देवदारू	गोबर	हींग	मोती	श्वेत सरसों	केशर	लोबान	मोथा	तिलपत्र
केशर	गजमद	गोदनी	शहद	शहद	मूली बीज	सौंफ	गजदंत	गजदंत
खस	शंख सीप	जटामांसी	सुवर्ण	गुलर	मन:शिल	खस	कस्तूरी	छागमूत्र
रक्तपुष्प	गंगाजल	मौलसिरी	जायफल	दमयंती	इलायची	खिल्ला	बिल्वपत्र	लाल चंदन
रक्तचंदन	श्वेत चंदन	सिगरफ	पिपरामूल	मुलट्ठी	श्वेतचंदन	शतकुसुम	गंगाजल	गंगाजल
कनेर पुष्प	स्फटिक	मालकंगनी	नागकेशर	नवीनपत्ते	गंगाजल	गाँदमिश्रित	लालचंदन	कस्तूरी
मि. गंगाजल	गोमूत्र	गंगाजल	गंगाजल	गंगाजल	श्वेतकमल			

होमादि में अग्नि वास जानना

जिस दिन को होम/हवन करना हो, उस दिन की तिथि और वार की संख्या को जोड़कर १ जमा करें फिर कुल जोड़ को ४ द्वारा भाग देवें। यदि शेष शून्य (०) अथवा ३ बचें, तो **अग्नि का वास पृथ्वी** पर होगा। इस दिन होम करना कल्याणकारक होता है। यदि शेष २ बचें तो अग्नि का वास **पाताल में** होता है। इसी दिन होम करने से धन का नुक्सान होता है। यदि ४ का भाग देने से १ शेष बचे तो आकाश में अग्नि का वास होगा, इसमें होम करने से आयु का क्षय होता है। **वार** की गणना **रविवार** से तथा तिथि की गणना **शुक्ल प्रतिपदा** से करनी चाहिए। तदुपरान्त ग्रह के मुख आहुति चक्र का विचार करना चाहिए।

ग्रहों के मुख में आहुति चक्र

सूर्य के नक्षत्र से चन्द्रमा के नक्षत्र तक गिनने से यदि ३ या ३ से कम की संख्या आए तो होमाहुति सूर्य के मुख में जाने, तीन से आगे की संख्या से ६ तक की संख्या में मिले, तो बुध के मुख में आहुति जानें। इसी प्रकार, निम्न क्रमानुसार सब ग्रहों में होमाहुति जानें।

ग्रह	सूर्य	बुध	शुक्र	शनि	चंद्र	मंग.	गुरु	राहु	केतु
नक्षत्र	३	३	३	३	३	३	३	३	३
फल	अशुभ	शुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	अशुभ

नवग्रहों के जपनीय होमार्थ (हवन) मन्त्र

सूर्य मन्त्र—अर्क (आक) समिधा द्वारा "ॐ आकृष्णेन रजसा वर्त्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यं च हिरण्येन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन्॥ ॐ सूर्याय स्वाहा। इदं सूर्याय न मम॥१॥

चन्द्रमा मन्त्र—(पलाश या ढाक समिधा के साथ)—"ॐ इमं देवाऽसपत्न Ω सुवध्वम् महते क्षत्राय महते ज्येष्ठयाय महते जानराज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय इमममुष्य पुत्रममुष्यै पुत्रमस्यै विश एष वोऽमी राजा सोमोऽस्माकं ब्राह्मणानां Ω राजा। ॐ सोमाय स्वाहा॥ इदं चन्द्रमसे न मम॥२॥

भौम मन्त्र—(खैर की लकड़ी से) "ॐ अग्निर्मूर्द्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्या अयम्। अपा Ω रेता Ω सि जिन्वति स्वाहा। ॐ भौमाय स्वाहा॥ इदं भौमाय इदं न मम॥"

बुध मंत्र—(अपामार्ग की समिधा से) ॐ उद्बुध्यस्वाग्ने प्रति जागृहित्वमिष्टापूर्ते स Ω सृजेथामयं च। अस्मिन्त्सधस्थे अध्युत्तरस्मिन् विश्वेदेवा यजमानश्च सीदत॥ ॐ बुधाय स्वाहा। इदं बुधाय इदं न मम॥

गुरू मन्त्र—(पीपल) ॐ बृहस्पते अति यदर्यो अर्हाद् द्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु। यद्दीदयच्छवस ऋतप्रजात तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम्॥ ॐ बृहस्पतये स्वाहा॥ इदं बृहस्पतये, इदं न मम।

शुक्र मन्त्र—(गूलर) ॐ अन्नात् परिस्रुतो रसं ब्रह्मणा व्यपिबत् क्षत्रं पयः। सोमं प्रजापतिः ऋतेन सत्यमिन्द्रियं पिवानं Ω शुक्रमन्धसऽइन्द्रस्येन्द्रियमिदं पयोऽमृतं मधु॥ ॐ शुक्राय स्वाहा॥ इदं शुक्राय, न मम।

शनि मन्त्र—(शमी की समिधा) ॐ शन्नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये। शंय्योरभिस्त्रवन्तु नः। ॐ शनैश्चराय स्वाहा। इदं शनैश्चराय, इदं न मम्॥

राहु मन्त्र—(दूर्वा) ॐ कयानश्चित्र आ भुवदूती सदा वृधः सखा। कया शचिष्ठया वृता॥ ॐ राहवे स्वाहा॥ इदं राहवे इदं न मम॥

केतु मन्त्र—(कुशा से) ॐ केतुं कृण्वन्न केतवे पेशो मर्या अपेशसे। समुषद्भिरजा यथाः। ॐ केतवे स्वाहा॥ इदं केतवे, इदं न मम॥

ग्रहों के गुण, वर्ण, स्वभाव, उच्च–नीच, स्व–गृही राशि आदि चक्र

नाम ग्रह	स्व-ग्रही राशि	मूल त्रिकोण	गुण	चरादि	वर्ण जाति	रंग	उच्च राशि	नीच राशि	पुरुष स्त्री	तत्त्व	कारक	संबंध	स्व-भाव	प्रकृति	धातु	रस	शरीरांग	दिशा	दृष्टि विशेष	भाग्योदय काल
सूर्य Sun	सिंह	सिंह	सत्त्व	स्थिर	क्षत्रिय	रक्त वर्ण	मेष	तुला	पुरुष	अग्नि	आत्मा	पिता	क्रूर	पित्त	सोना	तिक्त	शिर, नेत्र	पूर्व	७	२२ से २४
चन्द्र Moon	कर्क	वृष	सत्त्व	चंचल	वैश्य	श्वेत	वृष	बृश्चि.	स्त्री	जल	मन	माता	सौम्य	वातश्ले	चांदी	क्षार	बुद्धि, रक्त	पशि. उत्तर	७	२४ से २५
मंगल Mars	मेष, वृश्चिक	मेष	तम	चर	क्षत्रिय	लाल	मकर	कर्क	पुरूष	अग्नि	बल	भाई	क्रूर	पित्त	ताम्र	कटु	मज्जा	दक्षिण	७,४,८	२८ से ३२
बुध Merc	मिथुन, कन्या	कन्या	रज	द्विस्वभा	वैश्य	हरा	कन्या	मीन	नपुंसक	पृथ्वी	वाणी	बंधु/मित्र	मिश्र	त्रिधातु	कांस्य	मिश्र	त्वचा, मुख	उत्तर	७	३२ से ३६
गुरू Jup.	धनु, मीन	धनु	सत्त्व	स्थिर	ब्राह्मण	पीला	कर्क	मकर	पुरूष	आकाश	विद्या	संतान	शुभ	कफ	सोना	मधुर	चर्बी	ईशान	५७९	१६ से २४
शुक्र Ven.	वृष, तुला	तुला	रज	चर	वैश्य	सफेद	मीन	कन्या	स्त्री	जल	काम	स्त्री	शुभ	वात, कफ	चांदी	अम्ल	वीर्य	दक्षि., पूर्व	७	२६ से २८
शनि Sat.	मकर, कुम्भ	कुम्भ	तम	स्थिर	शुद्र	नीला काला	तुला	मेष	नपुंसक	वायु	संघर्ष	भृत्य	क्रूर	वात, श्ले	लोहा	कषाय	स्नायु	पश्चि.	३,७,१०	३६ से ४२
राहु Rahu	कन्या	कर्क	तम	चर	अत्यज	धूम्र	वृष	बृश्चि.	पुरुष	छाया	दु:ख	शत्रु	क्रूर	वायु	लोहा	कषाय	हड्डी	दक्षिण	७	४४ से ५०
केतु Ketu	मीन	मकर	तम	चर	शूद्र	धूम्र	बृश्चि.	वृष	पुरुष	छाया	कष्ट	बाधा	क्रूर	वायु	लोहा	कषाय	चर्म	उत्तर	७	४८ से ५०

राशियों के गुण–स्वभाव तत्त्व, शुभ रत्नादि चक्र

राशि	स्वा. ग्रह	अंग्रेज़ी नाम	वर्ण	जाति	क्रूरादि	चरादि	तत्त्व	गुण	जीवादि	समादि	दिशा	शुभ रत्न	बल समय	शरीरांग	दीर्घादि	नरादि	प्रकृति	गुण	पृष्ठोदय आदि
मेष	मंगल	Aries	लाल	क्षत्रिय	क्रूर	चर	अग्नि	रज	धातु	विषम	पूर्व	मूंगा	रात्रि	शिर	ह्रस्व	पशु	पित्त	उष्ण	पृष्ठोदय
वृष	शुक्र	Taurus	श्वेत	वैश्य	सौम्य	स्थिर	पृथ्वी	तम	मूल	सम	दक्षिण	हीरा	रात्रि	नेत्र	ह्रस्व	पशु	वात	शांत	पृष्ठोदय
मिथुन	बुध	Gemini	हरा	शूद्र	क्रूर	द्वि. स्व.	वायु	सत	जीव	विषम	पश्चि.	पन्ना	रात्रि	भुजाएँ, गला	सम	नर	वात	चंचल	शीर्षोदय
कर्क	चंद्र	Cancer	श्वेत	विप्र	सौम्य	चर	जल	रज	धातु	सम	उत्तर	मोती	रात्रि	वक्ष, फेफड़े	सम	जल चर	कफ	शांत	पृष्ठोदय
सिंह	सूर्य	Leo	लाल	क्षत्रिय	क्रूर	स्थिर	अग्नि	तम	मूल	विषम	पूर्व	माणक	दिन	मेरू, रक्त, हृदय	दीर्घ	पशु	पित्त	उष्ण	शीर्षोदय
कन्या	बुध	Virgo	मिश्रित	वैश्य	सौम्य	द्वि. स्व.	पृथ्वी	सत	जीव	सम	दक्षिण	पन्ना	दिन	पेट, नाभि	दीर्घ	नर	त्रिदोष	शीत	शीर्षोदय
तुला	शुक्र	Libra	नीला	शूद्र	क्रूर	चर	वायु	रज	धातु	विषम	पश्चि.	हीरा	दिन	गुर्दे, कमर	दीर्घ	नर	वात	उष्ण	शीर्षोदय
बृश्चिक	मंगल	Scorpio	ताम्र	विप्र	सौम्य	स्थिर	जल	तम	मूल	सम	उत्तर	मूंगा	दिन	गुप्तांग	दीर्घ	कीट	कफ	शीत	शीर्षोदय
धनु	गुरु	Sagittarius	पीला	क्षत्रिय	क्रूर	द्वि. स्व.	अग्नि	सत	जीव	विषम	पूर्व	पुखराज	रात्रि	जंघा	सम	नर पशु	पित्त	उष्ण	पृष्ठोदय
मकर	शनि	Capricor	भूरा	वैश्य	सौम्य	चर	पृथ्वी	रज	धातु	सम	दक्षिण	नीलम	रात्रि	घुटने	सम	जल पशु	वात	शीत	पृष्ठोदय
कुम्भ	शनि	Aquarius	काला	शूद्र	क्रूर	स्थिर	वायु	तम	मूल	विषम	पश्चि.	नीलम	दिन	पिंडली	लघु	जल चर	त्रिदोष	उष्ण	शीर्षोदय
मीन	गुरु	Pisces	पीला	विप्र	सौम्य	द्वि. स्वा.	जल	सतो	जीव	सम	उत्तर	पुखराज	दिन	पाँव दोनों	लघु	जल चर	कफ	शीत	उभयोदय

चर, शीर्षोदयादि राशियों का महत्त्व–उपरोक्त राशियों के **गुण, स्वभाव, तत्वादि** का फलित ज्योतिष में विशेष महत्त्व होता है। संक्षेप में, **चर** का अर्थ है चलित अर्थात् जिसमें कार्य जल्दी हो। यात्रा करें, तो शीघ्र वापिस आ जावे। स्थिर लग्न राशि में कार्य करने से स्थायी प्रभाव होता है। मकान, दुकान, व्यवसायादि में प्रवेश करे, तो बहुत वर्षों तक रहे। द्वि-स्वभाव राशि में मिला-जुला प्रभाव होता है। अर्थात् पहिला आधा भाग स्थिर प्रभाव दिखाता है, अन्तिम आधा भाग 'चर' का प्रभाव दिखाता है। इसी भान्ति धातु का अर्थ है, सोना, चाँदी, लोहा, भूमि, सवारी धनादि पदार्थ। '**मूल**' का अर्थ है, फल, वृक्ष, अनाजादि भोग्य पदार्थ। '**जीव**' का अर्थ प्राणी–स्त्री, पुत्र, पौत्र, भाई आदि। **उदाहरणार्थ**–मान लीजिए, सौम्य राशि **मीन** में यदि कोई सौम्य ग्रह (शुक्र) बैठा है, तो प्रश्नकर्त्ता को स्त्री, संतानादि का सुख लाभ होगा (क्योंकि मीन राशि जीव सम्बन्धी राशि है) और यदि कोई अशुभ या क्रूर ग्रह स्थित हो, तो स्त्री, संतानादि सुख सम्बन्धी हानि होगी। ऐसा कहना चाहिए। इसी भान्ति, राशियों की दिशा बताने का तात्पर्य यह है कि जिस राशि में कारक ग्रह बैठे हो, उस राशि की दिशा में भाग्योदय होता है। **उदाहरण** के लिए किसी की जन्म कुण्डली में लग्नेश एवं नवमेश ग्रह वृष राशि में हो, तो जातक का भाग्योदय जन्म से दक्षिण दिशा में होगा–ऐसा कहना चाहिए। जैसे–यदि **कन्या लग्न** हो, तो बुध लग्नेश, दशमेश होगा। द्वितीयेश व नवमेश शुक्र, बुध (लग्नेश) सहित नवम् (भाग्य) स्थान पर इकट्ठे हों, तो वृष राशि (दक्षिण) में भाग्योदय होगा।

नवम् (भाग्य) स्थान पर इकट्ठे हों, तो वृष राशि (दक्षिण) में भाग्योदय होगा।

सर्वार्थ सिद्धि, अमृत सिद्धि, गुरुपुष्य आदि योग-वि. संवत् २०७७ (सन् 2020-2021 ई.)

दैनिक जीवन में आने वाले महत्त्वपूर्ण कार्यों के लिए शीघ्र ही सर्वांगशुद्ध मुहूर्त्त का अभाव हो, तथा इन शुभ मुहूर्त्तों की प्रतीक्षा में अधिक दिनों तक रुका न जा सकता हो, तो इन सुयोग वाले मुहूर्त्तों को सरलता से ग्रहण किया जा सकता है। इनसे प्राप्त होने वाले अभीष्ट शुभ फल के विषय में संशय नहीं करना चाहिए। ये सुयोग हैं—सर्वार्थसिद्धि, अमृतसिद्धि, रवियोग, सिद्धि, रत्नांकुर एवं प्रशस्तादि योग। '**यथा नाम तथा गुणा**' उक्ति के अनुसार सर्वाङ्गीण सिद्धिकारक हैं।

(1) सर्वार्थ सिद्धि योग—महत्त्वपूर्ण एवं आवश्यक कार्य जैसे—कोई व्यापारिक या राजकीय अनुबन्ध (कान्ट्रेक्ट) करना, परीक्षा, नौकरी अथवा चुनाव आदि के लिए आवेदन करना, क्रय-विक्रय करना, यात्रा या मुकद्मा करना, भूमि, सवारी, वस्त्र-आभूषणादि का क्रय करने के लिए शीघ्रतावश गुरु-शुक्रास्त, अधिमास एवं वेधादि का विचार सम्भव न हो, तो ये सर्वार्थसिद्धि योग ग्रहण किए जा सकते हैं।

(2) अमृतसिद्धि योग—में स. सि. योगों वाले कृत्यों के अतिरिक्त प्रेम-विवाह करना, विदेश-यात्रा, किसी कार्य सिद्धि हेतु सुकाम अनुष्ठान करना आदि कृत्य किए जा सकते हैं। **अमृसिद्धि योग संज्ञा वाले सर्वार्थसिद्धि योग विशेष शुभ फलदायक माने गए हैं।** परन्तु अमृतसिद्धि योग के दिन कुछ तिथियां त्याज्य मानी गयी हैं। रविवार से शनिवार क्रमशः 5, 6, 7, 8, 9, 10, 11 तिथियां वर्जित हैं। **उदाहरण**—जैसे रविवार को हस्त नक्षत्र हो, तो अमृतसिद्धि योग बना है, परन्तु यदि उस दिन पंचमी तिथि आ पड़े तो उस तिथि काल में स.सि. एवं अमृतसिद्धि योग दूषित होगा। अतः इस काल को त्याग देना चाहिए।

(3) रविपुष्य योग—में जड़ी-बूटी तोड़ना तथा तोड़कर औषधि तैयार करना, किसी विशेष रोग में रोगी को औषधि देना शुभ होता है। यन्त्र-मन्त्र-तन्त्रादि प्रयोगों में भी यह योग विशेष शुभ होता है।

(4) गुरुपुष्य योग— गुरु अथवा पिता, दादा या श्रेष्ठ व्यक्ति से मन्त्र, तन्त्र या किसी विशिष्ट विषय के सम्बन्ध में उच्च-विद्या ग्रहण करना, धन, भूमि-विद्या एवं आध्यात्मिक ज्ञान प्राप्त करना, कोई धार्मिक अनुष्ठान प्रारम्भ करना, गुरु धारण करना, विदेश-यात्रा आरम्भ करना शुभ होता है। परन्तु '**विवाह**' सर्वथा त्याज्य है।

उपरोक्त सभी योगों में से कोई योग विशेष ग्रहण करने से पूर्व तिथि एवं चन्द्रमा का बल भी ध्यान में रख लेवें, तो अत्यन्त लाभदायक होगा। (अर्थात् कृष्ण पक्ष की त्रयोदशी से शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा पर्यन्त चन्द्रमा निर्बल माना जाता है।) इनके अतिरिक्त गुरु-शुक्र ग्रहों के अस्त काल, अधिक मास, ग्रहण काल, श्राद्ध पक्ष आदि का भी ध्यान कर लेना शुभ होगा। **विवाह, मुण्डन, गृहनिर्माण, गृहप्रवेश आदि कार्य निर्धारित मुहूर्त्तों** में ही करने **शुभ होंगे।** ध्यान रहे, इस वर्ष 31 मई से 9 जून, 2020 ई. तक, पुनः 8 फरवरी, 2021 ई. से संवतान्त 12 अप्रैल, 2021 तक शुक्र अस्त रहेगा। गुरु 17 जनवरी से 14 फरवरी, 2021 ई. तक अस्त रहेगा। —**पण्डित विवेक शर्मा, गणितकर्ता**

सर्वार्थ सिद्धि योग

प्रारम्भ काल		समाप्ति काल	
2020 ई.	घं. मिं.	2020 ई.	घं. मिं.
26 मार्च	सू. उ.	27 मार्च	10 09
30 मार्च	सू. उ.	31 मार्च	सू. उ.
2 अप्रै.	सू. उ.	3 अप्रै.	सू. उ.
10 अप्रै.	21 55	11 अप्रै.	सू. उ.
12 अप्रै.	19 13	13 अप्रै.	सू. उ.
21 अप्रै.	सू. उ.	21 अप्रै.	10 23
23 अप्रै.	सू. उ.	23 अप्रै.	16 05
25 अप्रै.	20 58	26 अप्रै.	सू. उ.
27 अप्रै.	सू. उ.	27 अप्रै.	24 29
30 अप्रै.	सू. उ.	30 अप्रै.	25 53
3 मई	21 43	4 मई	सू. उ.
8 मई	8 38	9 मई	सू. उ.
10 मई	सू. उ.	11 मई	4 13
17 मई	13 59	18 मई	सू. उ.
19 मई	19 53	20 मई	सू. उ.

सर्वार्थ सिद्धि योग

प्रारम्भ काल		समाप्ति काल	
2020 ई.	घं. मिं.	2020 ई.	घं. मिं.
23 मई	सू. उ.	24 मई	4 52
25 मई	सू. उ.	25 मई	6 10
28 मई	सू. उ.	28 मई	7 27
31 मई	सू. उ.	1 जून	सू. उ.
4 जून	18 37	5 जून	16 44
7 जून	सू. उ.	7 जून	14 11
14 जून	सू. उ.	14 जून	24 22
16 जून	सू. उ.	17 जून	सू. उ.
20 जून	सू. उ.	20 जून	12 02
26 जून	11 26	27 जून	सू. उ.
28 जून	सू. उ.	29 जून	सू. उ.
2 जुला	2 34	3 जुला	01 14
5 जुला	23 02	6 जुला	सू. उ.
6 जुला	23 12	7 जुला	सू. उ.
12 जुला	सू. उ.	12 जुला	8 18

सर्वार्थ सिद्धि योग

प्रारम्भ काल		समाप्ति काल	
2020 ई.	घं. मिं.	2020 ई.	घं. मिं.
14 जुला	सू. उ.	14 जुला	14 07
15 जुला	16 43	16 जुला	सू. उ.
20 जुला	21 21	21 जुला	सू. उ.
24 जुला	सू. उ.	24 जुला	16 03
26 जुला	सू. उ.	26 जुला	12 37
29 जुला	8 33	30 जुला	7 41
2 अग.	6 52	3 अग.	सू. उ.
3 अग.	7 19	4 अग.	सू. उ.
7 अग.	सू. उ.	7 अग.	13 33
9 अग.	19 06	10 अग.	सू. उ.
11 अग.	24 57	13 अग.	3 26
17 अग.	6 44	18 अग.	5 43
18 अग.	सू. उ.	19 अग.	4 08
26 अग.	सू. उ.	26 अग.	13 04
30 अग.	सू. उ.	30 अग.	13 52

सर्वार्थ सिद्धि योग

प्रारम्भ काल		समाप्ति काल	
2020 ई.	घं. मिं.	2020 ई.	घं. मिं.
31 अग.	सू. उ.	31 अग.	15 04
4 सितं.	23 28	5 सितं.	सू. उ.
6 सितं.	सू. उ.	7 सितं.	5 24
8 सितं.	8 26	10 सितं.	सू. उ.
13 सितं.	16 34	14 सितं.	15 52
15 सितं.	सू. उ.	15 सितं.	14 25
21 सितं.	20 49	22 सितं.	सू. उ.
26 सितं.	19 26	27 सितं.	सू. उ.
2 अक्तू	5 57	3अक्तू.	सू. उ.
4 अक्तू	सू. उ.	4 अक्तू	11 52
6 अक्तू	सू. उ.	6 अक्तू	17 54
7 अक्तू	सू. उ.	8 अक्तू	सू. उ.
9 अक्तू	24 27	10 अक्तू	सू. उ.
11 अक्तू	सू. उ.	11 अक्तू	25 19
17 अक्तू	11 52	18 अक्तू	सू. उ.

सर्वार्थ सिद्धि योग

प्रारम्भ काल		समाप्ति काल	
2020 ई.	घं. मिं.	2020 ई.	घं. मिं.
19 अक्तू	सू. उ.	20 अक्तू	3 53
23 अक्तू	25 28	24 अक्तू	26 38
29 अक्तू	12 00	31 अक्तू	सू. उ.
2 नवं.	23 50	3 नवं.	सू. उ.
4 नवं.	सू. उ.	5 नवं.	4 51
6 नवं.	6 45	7 नवं.	सू. उ.
8 नवं.	सू. उ.	8 नवं.	8 45
12 नवं.	4 25	12 नवं.	सू. उ.
14 नवं.	सू. उ.	14 नवं.	20 09
16 नवं.	सू. उ.	16 नवं.	14 37
20 नवं.	9 22	21 नवं.	9 53
24 नवं.	15 32	25 नवं.	सू. उ.
26 नवं.	सू. उ.	27 नवं.	24 23
30 नवं.	सू. उ.	1 दिसं.	सू. उ.
2 दिसं.	सू. उ.	2 दिसं.	10 38

सर्वार्थ सिद्धि योग

प्रारम्भ काल			समाप्ति काल		
2020 ई.	घं.	मिं.	2020 ई.	घं.	मिं.
3 दिसं.	12	21	4 दिसं.	13	39
9 दिसं.	12	33	10 दिसं.	सू.	उ.
18 दिसं.	सू.	उ.	18 दिसं.	19	04
22 दिसं.	सू.	उ.	22 दिसं.	25	37
24 दिसं.	सू.	उ.	25 दिसं.	7	36
28 दिसं.	सू.	उ.	29 दिसं.	सू.	उ.
31 दिसं.	सू.	उ.	1 जन.	सू.	उ.
(सन् 2021 ईसवी में)					
6 जन.	सू.	उ.	6 जन.	17	09
19 जन.	सू.	उ.	19 जन.	9	55
21 जन.	सू.	उ.	21 जन.	15	36
23 जन.	21	33	24 जन.	सू.	उ.
25 जन.	सू.	उ.	25 जन.	25	56
28 जन.	सू.	उ.	29 जन.	3	51
1 फर.	1	18	1 फर.	सू.	उ.
5 फर.	18	28	6 फर.	सू.	उ.
7 फर.	16	15	8 फर.	सू.	उ.
14 फर.	16	33	15 फर.	सू.	उ.
16 फर.	20	57	17 फर.	सू.	उ.
20 फर.	सू.	उ.	21 फर.	सू.	उ.
22 फर.	सू.	उ.	22 फर.	10	58
25 फर.	सू.	उ.	25 फर.	13	17
28 फर.	9	36	1 मार्च	सू.	उ.
4 मार्च	23	57	5 मार्च	सू.	उ.
7 मार्च	सू.	उ.	7 मार्च	20	59
14 मार्च	सू.	उ.	14 मार्च	26	20
16 मार्च	सू.	उ.	17 मार्च	सू.	उ.
20 मार्च	सू.	उ.	20 मार्च	16	46
26 मार्च	21	39	27 मार्च	सू.	उ.
28 मार्च	सू.	उ.	29 मार्च	सू.	उ.
1 अप्रै.	7	22	2 अप्रै.	5	19
4 अप्रै.	26	06	5 अप्रै.	सू.	उ.
5 अप्रै.	26	05	6 अप्रै.	सू.	उ.
11 अप्रै.	सू.	उ.	11 अप्रै.	8	58

अमृत सिद्धि योग

विशेष—कुछ विद्वान स.सि.यो. में अमृत-सिद्ध योग का संयोग अशुभ मानते हैं, जबकि नवीन मतानुसार कुछ विशेष तिथियां एवं घटिकाएं ही त्याज्य मानी गई हैं। **यथा**-रविवार से शनिवार तक क्रमश: 5, 6, 7, 8, 9, 10, 11 तिथियां एवं प्रारम्भ की 6 घड़ियां ही विषाक्त एवं त्याज्य मानी गई हैं।

प्रारम्भ काल			समाप्ति काल		
2020 ई.	घं.	मिं.	2020 ई.	घं.	मिं.
30 मार्च, चं.	17	18	31 मार्च	सू.	उ.
2 अप्रै., गु.	19	28	3 अप्रै.	सू.	उ.
25 अप्रै., श.	20	58	26 अप्रै.	सू.	उ.
27 अप्रै., चं.	सू.	उ.	27 अप्रै.	24	29
30 अप्रै., गु.	सू.	उ.	30 अप्रै.	25	53
19 मई, मं.	19	53	20 मई	सू.	उ.
23 मई, श.	सू.	उ.	24 मई	4	52
25 मई, चं.	सू.	उ.	25 मई	6	10
28 मई, गु.	सू.	उ.	28 मई	7	27
31 मई, र.	27	01	1 जून	सू.	उ.
16 जून, मं.	सू.	उ.	17 जून	सू.	उ.
20 जून, श.	सू.	उ.	20 जून	12	02
28 जून, र.	8	46	29 जून	सू.	उ.
1 जुला, बु.	26	34	2 जुला	सू.	उ.
14 जुला, मं.	सू.	उ.	14 जुला	14	07
26 जुला, र.	सू.	उ.	26 जुला	12	37
29 जुला, बु.	8	33	30 जुला	सू.	उ.
26 अग., बु.	सू.	उ.	26 अग.	13	04
4 सितं., शु.	23	28	5 सितं.	सू.	उ.
2 अक्तू, शु.	सू.	उ.	3 अक्तू	सू.	उ.
30 अक्तू, शु.	सू.	उ.	30 अक्तू	14	57
28 दिसं., चं.	15	40	29 दिसं.	सू.	उ.
31 दिसं., गु.	19	49	1 जन.	सू.	उ.
(सन् 2021 ईसवी में)					
23 जन., श.	21	33	24 जन.	सू.	उ.
25 जन., चं.	सू.	उ.	25 जन.	25	56
28 जन., गु.	सू.	उ.	29 जन.	3	51
16 फर., मं.	20	57	17 फर.	सू.	उ.
20 फर., श.	सू.	उ.	21 फर.	सू.	उ.
22 फर., चं.	सू.	उ.	22 फर.	10	58
25 फर., गु.	सू.	उ.	25 फर.	13	17
16 मार्च, मं.	सू.	उ.	17 मार्च	सू.	उ.
20 मार्च, श.	सू.	उ.	20 मार्च	16	46
28 मार्च, र.	17	36	29 मार्च	सू.	उ.

रवि योग-संवत् २०७७ वि.

रवि योग तिथि, वार, नक्षत्रादि से सम्बन्धित कुयोगों के दोषों को दूर कर देता है। सामान्यत: अन्नदान, गोदान, भूदान एवं सरकारी क्षेत्रों में सेवाओं (जैसे- प्रतिष्ठित पद ग्रहण आदि) के लिए इनका उपयोग किया जाता है।

प्रारम्भ काल			समाप्ति काल		
2020 ई.	घं.	मिं.	2020 ई.	घं.	मिं.
27 मार्च	10	09	28 मार्च	12	52
29 मार्च	15	18	30 मार्च	17	18
31 मार्च	6	57	31 मार्च	18	44
2 अप्रै.	19	28	4 अप्रै.	17	08
6 अप्रै.	12	16	7 अप्रै.	9	15
12 अप्रै.	19	13	13 अप्रै.	19	02
13 अप्रै.	20	23	14 अप्रै.	19	41
25 अप्रै.	20	58	26 अप्रै.	22	56
29 अप्रै.	1	33	30 अप्रै.	2	02
2 मई	1	05	3 मई	21	43
5 मई	16	39	6 मई	13	51
13 मई	4	54	14 मई	6	23
26 मई	7	02	27 मई	7	28
28 मई	7	27	29 मई	6	58
31 मई	4	43	1 जून	25	03
3 जून	20	43	4 जून	18	37
11 जून	16	35	12 जून	18	49
24 जून	13	10	25 जून	12	27
26 जून	11	26	27 जून	10	11
29 जून	7	14	1 जुला.	4	04
2 जुला	25	14	3 जुला	24	08
11 जुला	5	33	12 जुला	8	18
23 जुला	17	44	24 जुला	16	03
25 जुला	14	19	26 जुला	12	37
28 जुला	9	42	30 जुला	7	41
1 अग.	6	48	2 अग.	6	52
2 अग.	21	27	3 अग.	7	19
9 अग.	19	06	10 अग.	22	06
21 अग.	21	29	22 अग.	19	11
23 अग.	17	06	24 अग.	15	20
26 अग.	13	04	28 अग.	12	37
30 अग.	13	52	30 अग.	15	05
31 अग.	15	04	1 सितं.	16	38
8 सितं.	8	26	9 सितं.	11	15
19 सितं.	25	21	20 सितं.	22	52
21 सितं.	20	49	22 सितं.	19	19
24 सितं.	18	10	26 सितं.	19	26
26 सितं.	24	28	27 सितं.	20	50
29 सितं.	24	48	1 अक्तू.	3	15
7 अक्तू	20	36	8 अक्तू	22	50
19 अक्तू	6	08	20 अक्तू	3	53
20 अक्तू	26	12	21 अक्तू	25	13
25 अक्तू	2	38	27 अक्तू	6	37
29 अक्तू	12	00	30 अक्तू	14	57
6 नवं.	6	45	6 नवं.	8	13
7 नवं.	8	05	8 नवं.	8	45
17 नवं.	12	22	18 नवं.	10	40
19 नवं.	9	38	19 नवं.	14	11
20 नवं.	9	22	21 नवं.	9	53
23 नवं.	13	05	25 नवं.	18	20
27 नवं.	24	23	29 नवं.	3	19
6 दिसं.	14	46	7 दिसं.	14	33
17 दिसं.	19	13	18 दिसं.	19	04
19 दिसं.	19	40	20 दिसं.	21	01
22 दिसं.	25	37	25 दिसं.	7	36
27 दिसं.	13	19	28 दिसं.	15	40
28 दिसं.	23	44	29 दिसं.	17	32
(सन् 2021 ईसवी में)					
4 जन.	19	17	5 जन.	18	21
16 जन.	5	17	17 जन.	6	09
18 जन.	7	43	19 जन.	9	55
21 जन.	15	36	23 जन.	21	33
24 जन.	3	58	24 जन.	24	01
27 जन.	3	12	28 जन.	3	49
2 फर.	22	32	3 फर.	21	07
14 फर.	16	33	15 फर.	18	29
16 फर.	20	57	17 फर.	23	49
21 फर.	8	43	23 फर.	12	31
25 फर.	13	17	26 फर.	12	35
3 मार्च	25	36	4 मार्च	17	58
4 मार्च	23	57	5 मार्च	22	38
16 मार्च	4	44	17 मार्च	7	31
17 मार्च	26	21	18 मार्च	10	35
19 मार्च	13	44	20 मार्च	16	46
22 मार्च	21	28	24 मार्च	23	12
26 मार्च	21	39	27 मार्च	19	52

यमघण्टक योग
(सन् 2020-21 ई.)

प्रारम्भ काल			समाप्ति काल		
तारीख	घं.	मिं.	तारीख	घं.	मिं.
31 मार्च	18	44	1 अप्रै.	सू.	उ.
5 अप्रै.	सू.	उ.	5 अप्रै.	14	57
28 अप्रै.	सू.	उ.	28 अप्रै.	25	33
22 मई	1	04	22 मई	सू.	उ.
23 मई	3	09	23 मई	सू.	उ.
26 मई	सू.	उ.	26 मई	7	02
18 जून	8	31	19 जून	सू.	उ.
19 जून	10	31	20 जून	सू.	उ.
16 जुला	सू.	उ.	16 जुला	18	53
17 जुला	सू.	उ.	17 जुला	20	28
25 जुला	14	19	26 जुला	सू.	उ.
22 अग.	सू.	उ.	22 अग.	19	11
24 अग.	15	20	25 अग.	सू.	उ.
21 सितं.	सू.	उ.	21 सितं.	20	49
23 सितं.	18	25	24 सितं.	सू.	उ.
21 अक्तू	सू.	उ.	21 अक्तू	25	13
18 नवं.	सू.	उ.	18 नवं.	10	40
6 दिसं.	14	46	7 दिसं.	सू.	उ.
29 दिसं.	17	32	30 दिसं.	सू.	उ.
(सन् 2021 ई०)					
3 जन.	सू.	उ.	3 जन.	19	57
26 जन.	सू.	उ.	27 जन.	3	12
19 फर.	2	54	19 फर.	सू.	उ.
20 फर.	5	57	20 फर.	सू.	उ.
23 फर.	सू.	उ.	23 फर.	12	31
18 मार्च	10	35	19 मार्च	सू.	उ.

द्विपुष्कर एवं त्रिपुष्कर योग (2020–21 ई.)

(गाड़ी, आभूषणादि बहुमूल्य वस्तुएँ खरीदने हेतु विशेष मुहूर्त्त)

'द्विपुष्कर योग' द्विगुणित और **'त्रिपुष्कर योग'** त्रिगुणित **लाभ-हानिकारक होता है**। यदि इन योगों में कोई अनिष्ट हो जाए या हानि हो जाए तो भी दुगुनी अथवा त्रिगुणित हानि होने की सम्भावना बन जाती है। इसी प्रकार इन योगों में यदि कोई शुभ कार्य आरम्भ या सम्पन्न किया जाए अथवा किसी प्रकार की वस्तु का क्रय किया जाए तो भविष्य में उसका द्विगुणित या त्रिगुणित होने की सम्भावना बन जाती है। इसलिए इन योगों में **बहुमूल्य एवं उपयोगी पदार्थ,** वस्तुएँ **जैसे**—ज़मीन-जायदाद, हीरे-जवाहरात, स्वर्ण-चाँदी के आभूषण, कार, ट्रक, स्कूटर, गाय-भैंस क्रय करना, नवीन उद्योग की स्थापना आदि करना लाभदायक रहता है।

परिहार—द्विपुष्कर/त्रिपुष्कर योगों में यदि किसी की मृत्यु हो जाए या किसी अन्य वस्तु के नष्ट होने पर शान्ति करवानी चाहिए। त्रिपुष्कर दोष की शान्ति के लिए तीन गौओं के मूल्य का धन तथा द्विपुष्कर के लिए दो गौओं के मूल्य का धन तथा तिलों द्वारा निर्मित पीठी का दान करना शुभ होगा। (वसिष्ठ)

द्विपुष्कर योग

प्रारम्भ काल			समाप्ति काल		
2020-21	घं.	मिं.	2020-21	घं.	मिं.
31 मार्च	सू.	उ.	31 मार्च	18	44
24 मई	4	52	24 मई	25	01
2 जून	12	5	2 जून	22	55
26 जुला	12	37	27 जुला	सू.	उ.
4 अग.	8	11	4 अग.	21	55
19 सितं.	सू.	उ.	19 सितं.	9	11
27 सितं.	20	50	28 सितं.	सू.	उ.
21 नवं.	9	53	21 नवं.	21	49
1 दिसं.	16	52	2 दिसं.	सू.	उ.
(सन् 2021 ईसवी में)					
24 जन.	24	01	25 जन.	सू.	उ.
20 मार्च	16	46	21 मार्च	7	11
30 मार्च	सू.	उ.	30 मार्च	12	22

गुरुपुष्य योग

2 अप्रै.	19	28	3 अप्रै.	सू.	उ.
30 अप्रै.	सू.	उ.	30 अप्रै.	25	53
28 मई	सू.	उ.	28 मई	7	27
31 दिसं.	19	49	1 जन.	सू.	उ.
28जन.,21	सू.	उ.	29 जन.	3	51
25 फर.	सू.	उ.	25 फर.	13	17

रविपुष्य योग

13 सितं.	16	34	14 सितं.	सू.	उ.
11 अक्तू	सू.	उ.	11 अक्तू	25	19
8 नवं.	सू.	उ.	8 नवं.	8	45

त्रिपुष्कर योग

प्रारम्भ काल			समाप्ति काल		
2020-21	घं.	मिं.	2020-21	घं.	मिं.
19 अप्रै.	4	25	19 अप्रै.	24	43
25 अप्रै.	सू.	उ.	25 अप्रै.	11	52
23 जून	सू.	उ.	23 जून	11	20
27 जून	10	11	28 जून	2	54
16 अग.	7	03	16 अग.	13	51
25 अग.	सू.	उ.	25 अग.	12	22
29 अग.	13	03	30 अग.	8	22
8 सितं.	24	03	9 सितं.	सू.	उ.
18 अक्तू	8	51	18 अक्तू	17	28
27 अक्तू	10	47	28 अक्तू	सू.	उ.
1 नवं.	22	50	2 नवं.	सू.	उ.
7 नवं.	7	24	7 नवं.	8	05
20 दिसं.	21	01	21 दिसं.	सू.	उ.
26 दिसं.	10	35	27 दिसं.	4	19
(सन् 2021 ईसवी में)					
5 जन.	सू.	उ.	5 जन.	18	21
13 फर.	15	11	13 फर.	24	57
23 फर.	18	06	24 फर.	सू.	उ.
28 फर.	11	19	1 मार्च	सू.	उ.
9 मार्च	15	03	9 मार्च	20	41

ज्वालामुखी-अशुभ योग

(वि. संवत् २०७७)

ज्वालामुखी योग का फल अशुभ माना गया है। इस योग में आरम्भ किया हुआ कार्य पूर्णतया सिद्ध नहीं हो पाता अथवा बार-बार विघ्न-बाधाएं होती हैं। इस योग में शुभ कार्य आरम्भ नहीं करने चाहिए। दुष्ट शत्रुओं पर प्रयोग करने के लिए यह मुहूर्त्त अच्छा समझा जाता है।

जब प्रतिपदा को मूल नक्षत्र, पंचमी को भरणी, अष्टमी को कृतिका, नवमी को रोहिणी अथवा दशमी को आश्लेषा नक्षत्र आता है, तो ज्वालामुखी योग बनता है।

प्रारम्भ काल			समाप्ति काल		
तारीख	घं.	मिं.	तारीख	घं.	मिं.
3 अप्रै.	18	41	3 अप्रै.	24	59
6 जून	15	12	6 जून	22	33
11 अग.	24	57	12 अग.	11	17
13 अग.	3	26	13 अग.	12	59
7 सितं.	5	24	7 सितं.	21	39
12 अक्तू	1	19	12 अक्तू	16	39
14 दिसं.	23	26	15 दिसं.	19	07
(सन् 2021 ई.)					
19 फर.	10	59	20 फर.	5	57
20 फर.	13	32	21 फर.	8	43
17 मार्च	23	29	18 मार्च	10	35

वि. संवत् 2077 में लाभ-हानि चक्र

(विंशोत्तरी मतानुसारेण)

आगामी वर्ष में आपको जिस राशि का लाभ-हानि का विवरण ज्ञात करना हो, तो आप निम्नलिखित चक्र में अपनी राशि के नीचे लिखे लाभ-हानि के अंकों को जमा कर दें, फिर कुल जमा जोड़ में से 1 कम करके जोड़ को 8 से भाग दे देवें। भाग करने के पश्चात् यदि 1 बचे तो आगामी वर्ष में धन लाभ अच्छा रहेगा। मनोवांछित योजनाएं सफल होंगी। मनोरंजक कार्यों की ओर रूचि बढ़ेगी। यदि शेष 2 बचे तो, धन लाभ मध्यम परन्तु विभिन्न कार्यों पर खर्च अधिक होगा। यदि शेष 3 बचें तो लाभ कम, खर्च (अपव्यय) अधिक रहेगा। व्यर्थ भाग-दौड़ अधिक रहेगी और घरेलू उलझनें बढ़ेंगी। यदि शेष 4 बचें तो, मानसिक तनाव, शरीर कष्ट और रोगादि पर खर्च हो, घरेलू एवं आर्थिक समस्याएं उत्पन्न होंगी। यदि शेष 5 बचें तो लाभ कम तथा फिजूलखर्ची अधिक रहेगी। बनते कार्यों में विघ्न पड़ेगा। यदि शेष 6 बचें तो, भाग्योन्नति और धन लाभ के मार्ग प्रशस्त होंगे। रुके हुए कार्यों में सफलता मिलेगी। यदि शेष 7 बचें तो, व्यापार, लॉटरी, सट्टे आदि द्वारा अकस्मात् धन लाभ होगा। ज़मीन-जायदाद आदि कार्यों पर खर्च भी रहेंगे। आय के साधनों में भी वृद्धि होगी। यदि 8 अर्थात् 0 बचे, तो उस वर्ष लाभ कम व खर्च अधिक रहेगा, मानसिक परेशानियाँ भी बढ़ने के संकेत हैं।

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
लाभ	२	११	२	११	१४	२	११	२	१४	८	८	१४
हानि	५	११	११	५	२	११	११	५	८	११	११	८

तिथि, वार, नक्षत्रादि जनित अशुभ योगों का परिहार

(1) दुष्ट योगों के समय कोई शुभ योग भी हो, तो दुष्ट योग का परिहार हो जाता है–**अयोगो सुयोगोऽपि चेत् स्यात्तदानीमयोगं निहत्यैष सिद्धिं तनोति। परे लग्नशुद्धया कुयोगादिनाशं दिनाद्धोत्तरं विष्टिपूर्व च शस्तम्।।** अन्यत्रऽपि–**अयोगः सिद्धियोगश्च द्वावेतौ भवतो यदि। अयोगो हन्यते तत्र, सिद्धियोगः प्रवर्त्तते।।** (राजमार्तण्ड)

अर्थात् कुयोग के समय कोईं अन्य सिद्धयादि सुयोग भी वर्तमान हो, तो सुयोग की विजय होकर कुयोग अकर्मण्य हो जाता है।

(2) वसिष्ठ जी अनुसार सामान्य दुष्टयोगों का अनिष्ट प्रभाव केवल दिन को ही होता है, रात्रि को नहीं। **'दिवामृत्युप्रदाः पापा दोषाः तु ऐते न रात्रिषु।।** (वसिष्ठ)

(3) मंगलवार और अश्विनी नक्षत्र के संयोग से 'सिद्धि योग' गृहप्रवेश में, शनिवार व रोहिणी नक्षत्र के संयोग से 'सिद्धियोग' यात्रा में तथा गुरुपुष्य जनित **'सिद्धियोग' पाणिग्रहण** (विवाह) में सर्वथा त्याज्य है– **भौमाश्विनीं प्रवेशे च, प्रयाणे शनिरोहिणीम्। गुरुपुष्यं विवाहे च, सर्वथा परिवर्जयेत्।।** (राजमार्तण्ड)

व्यापारिक वस्तुओं तथा शेयर-बाज़ार में मन्दा-तेजी विचार-सन् 2020 ई.

वायदा व्यापारियों के लिए आवश्यक सुझाव—व्यापारिक वस्तुओं अथवा जिन्सों के दैनिक उतार-चढ़ाव के अध्ययन के बाद ही वस्तुओं का क्रय-विक्रय करना सफल व्यापार की कुंजी है। संसार के सभी पदार्थों पर प्रभाव रखने वाले ग्रह होते हैं तथा अपने में सभी पदार्थों का समावेश करने वाली राशियां होती हैं। जब ग्रह भ्रमण करता हुआ राशि-भोग करता है, तो उसकी हर गति का प्रभाव प्रत्येक वस्तु पर पड़ता है, क्योंकि उस समय वे पदार्थ उस ग्रह के प्रभाव में रहते हैं और वस्तु के मूल्यों में जो परिवर्तन (घटाबढ़ी) होता है, उसे हम तेजी-मन्दी कहते हैं।

ज्योतिष शास्त्र का वायदा-व्यापार से गहरा सम्बन्ध है। ध्यान रहे, हाजिर एवं वायदा बाज़ार पर राजनीतिक, सामाजिक, प्राकृतिक एवं आजकल अन्तर्राष्ट्रीय घटनाओं का प्रभाव भी अवश्य रहता है। इसके अतिरिक्त कुशल व्यापारी को अपनी वर्तमान विशोंत्तरी ग्रहदशा तथा आर्थिक सामर्थ्य को ध्यान में रखते हुए ही व्यापार करना चाहिए। जन्म/वर्ष कुण्डली में हानिप्रद या अनिष्ट ग्रह से सम्बन्धित वस्तु का व्यापार न करें। अनुकूल ग्रह-दशा जातक को व्यवसाय में विपुल धन लाभ तथा प्रतिकूल ग्रहदशा अकस्मात् धन-हानि करवा सकती है। सदैव उतने ही लाभ की आशा करके व्यापार करें, जितनी की हानि साधारणतया उठा सकने का सामर्थ्य हो।

गतवर्षों सन् 2010 से 2019 ई. तक हमारे द्वारा निर्दिष्ट ग्रहस्थिति एवं तेजी-मन्दी के चान्सों से सोना, चाँदी, गुड़, सोयाबीन, कॉपर, तेल, लोहे, स्टील, चने तथा शेयरों से सम्बन्धित अनेक व्यापारी लाभान्वित हुए। (विशेषकर जून-जुलाई में सोने-चांदी में हुई तेजी-मन्दी से विशेष लाभ उठाया।)

आगे गोचर ग्रहों, नक्षत्रों के आधार पर व्यापारिक वस्तुओं (जिन्सों) के दैनिक मन्दा-तेजी की विशेष लाइनों एवं तूफानी तेजी आदि का विवरण लिख रहे हैं। **यदि आप प्रतिमास किसी विशेष एक जिन्स (वस्तु) की दैनिक तेजी-मन्दी रिपोर्ट या वायदा हाजिर का चांस चाहते हैं तो प्रति जिन्स की एक मास की फीस 751 रु., 2 मास की फीस 1500 रु. होगी। पूरी फीस अग्रिम ड्राफ्ट द्वारा भेजें।** रिपोर्ट लिखित रूप में रजिस्ट्री या कोरियर के माध्यम से भेज दी जाएगी। D.D. (ड्राफ्ट) या चैक या मनीआर्डर इस पते पर भेजें। **—पं. विवेक शर्मा ज्योतिषी S/o स्व. पं. पन्ना लाल ज्योतिषी, अड्डा होशियारपुर चौंक, जालन्धर—144008 (पंजाब), फोन 0181-2457959**

☞ **जनवरी**—वर्षारम्भ से ही धनु राशि में सूर्य, बुध-गुरु-शनि-केतु ग्रहों का **पंचग्रही योग** बना हुआ है। अत: इस समय वायदा एवं हाजिर बाज़ार में तेजी का वातावरण रहेगा।

2 जनवरी को बुध पू.षा. नक्षत्र में आकर सूर्य के साथ एकनक्षत्र सम्बन्ध बनाएगा। सोना, चाँदी, धान्य आदि अनाजों, रुई में मन्दी का झटका लगकर शीघ्र ही तेजी बन जाएगी।

3 जनवरी को शुक्र धनिष्ठा नक्षत्र में आने से भी सोना, चाँदी, रूई, कपास, चावल, मूँग, मोठ, उड़द, ज्वार, बाजरा में पुन: कुछ तेजी का झटका लगेगा। परन्तु 4 जनवरी को गुरु भी पू.षा. नक्षत्र में आकर सूर्य एवं बुध के साथ एकनक्षत्र बनाएगा। सोना, चाँदी, ताँबा आदि सभी धातुओं, धान्यादि अनाजों, रुई में कुछ देर (2-3 दिन) मन्दी का रुख बनकर पुन: तेजी की लाईन बन जाएगी। **क्योंकि ध्यान रहे, धनु राशि में पंचग्रही योग बना हुआ है।**

8 जनवरी को शुक्र कुम्भ राशि में आएगा। कुम्भ राशि का शुक्र यद्यपि मन्दीकारक होता है, परन्तु यहाँ कुम्भस्थ शुक्र पर मंगल तथा शनि की दृष्टि होने से शीघ्र ही रूई, चाँदी, गुड़, खाण्ड, गेहूँ, चना, जौं, मूँग, ज्वार, बाजरा, घी तथा सफेद वस्तुओं में मामूली मन्दी बन शीघ्र अच्छी तेजी की लाईन बन सकती है।

सॉफ्टवेयर तथा I.T. से सम्बन्धित शेयरों में भी अच्छी तेजी सम्भव है।

10 जनवरी को धनु राशिगत गुरु पूर्व में उदय होने से सोना, रूई, हल्दी, चाँदी, क्रूड-आयल में तेजी, जबकि घी, तिल, गुड़, चने में मन्दी बनेगी।

11 जनवरी को सूर्य तथा बुध-दोनों उ.षा. नक्षत्र में एकनक्षत्र सम्बन्ध बनाएंगे। **धनु राशि में अभी भी पंचग्रही योग बना हुआ है।** उड़द, मूँग, चावल, चना, गेहूँ, गुड़, खाण्ड, शक्कर, कपास, चमड़ा, सरसों, सोना, चाँदी में तेजी का रुख बनेगा।

13 जनवरी को बुध मकर राशि में आने से सोना, चाँदी में अचानक तेजी बनेगी, जबकि अनाज के भाव स्थिर रहेंगे।

15 जनवरी को सूर्य मकर राशि में आकर बुध के साथ मेल करेगा। इसी दिन शुक्र शतभिषा नक्षत्र में तथा राहु आर्द्रा 2, केतु मूल 4 में आएंगे। **यह ग्रहसंयोग विशेष तेजीकारक रहेगा। इसलिए ता. 13 से पहिले ही स्टॉक (खरीददारी) अवश्य रख लें। घी, तैल, अलसी, गुड़, खाण्ड, शक्कर, रूई, सोना, चाँदी, अरण्डी में ज़बरदस्त तेजी बन सकती है। लाभ उठाएं। शेयर बाज़ार भी तेज रहे।**

18 जनवरी को गुरु पू.षा. (2) में आने से सोना, चाँदी आदि धातुओं, रूई, घी, हल्दी, ग्वार में मन्दी का झटका लग सकता है। इसलिए ता. 17 तक अपना मुनाफा काट लें।

19 जनवरी को मंगल ज्येष्ठा तथा बुध श्रवण नक्षत्र में आने से आने वाले 3-4 दिनों में गुड़, खाण्ड, अलसी, चना, चावल, रूई, चाँदी में घटाबढ़ी के मध्य पहिले मन्दी, फिर तेजी का रुख बन जाएगा। यह घटाबढ़ी ता. 23 तक रहेगी।

24 जनवरी को शनि प्रात:काल ही मकर राशि में प्रवेश कर सूर्य-बुध के साथ मेल करेगा। **मकर राशि में 'सूर्य-बुध-शनि' का यह योग ज़बरदस्त घटाबढ़ी के बाद तेजी**

का रुख बनाएगा। शेयर-बाज़ार, वायदा एवं हाजिर आदि सभी बाज़ारों/एक्सचेंजों में ज़ोरदार उथल-पुथल के बाद तेजी का रुख बनेगा, जोकि आगे लगभग 10-15 दिन चल सकता है। बहुत सावधानीपूर्वक कार्य करें। सामर्थ्यानुसार कुछ स्टॉक अवश्य रखें। परन्तु कुछ जिन्सों में मार्किट के उल्ट रुख भी बन सकता है, इसलिए तुरन्त निकल जाएं। अन्यथा तेजी में साथ-साथ मुनाफा लेते रहें।

'शनिक्षेत्रे शनौदेशे घृतधान्यं महर्घता।।'

इसी दिन सूर्य भी श्रवण नक्षत्र में आएगा। रूई, सोना, चाँदी, ताँबा, कपास, सूत, गेहूँ, तिलहन, गुड़, खाण्ड, क्रूड-ऑयल, लौंग, सुपारी आदि तथा सभी प्रकार के अनाजों में ज़बरदस्त तेजी की लाईन बनेगी। शेयर-बाज़ार में भी विशेष उथल-पुथल रहेगी।

25 जनवरी को शुक्र पू.भा. नक्षत्र में आकर रूई, कपास, चाँदी में कुछ तेजी बनाएगा।

26 जनवरी को बुध धनिष्ठा नक्षत्र में आने से सोना, चाँदी में घटाबढ़ी के बाद मन्दी बनेगी।

29 जनवरी को बुध पश्चिम में उदय होने से गुड़, घी, खाण्ड, मूँग में तेजी बनेगी। शेयर-बाज़ार में कुछ मन्दी बनेगी।

30 जनवरी को शनि पूर्व में उदय होने से रूई, शेयर-बाज़ार, अलसी, सरसों, बिनौला, मूँगफली में मन्दी बने, जबकि लोहे, जिस्त, सीसा, रंग (Paints) आदि काले पदार्थ, लहसुन, चावल, गुड़, खाण्ड में तेजी बनेगी।

31 जनवरी को बुध कुम्भ राशि में आकर शुक्र के साथ मेल करेगा। **कुम्भस्थ बुध-शुक्र पर मंगल की दृष्टि तेजी के वातावरण की तरफ ही प्रेरित करेगी।** घी, तैल, खाण्ड, रूई, अलसी, गुड़ तथा चाँदी में तेजी बनते ही लाभ ले लेंवे। आगे मन्दी का झटका भी लग सकता है।

☞ **फरवरी**—मासारम्भ में ता. 2 फर. को शुक्र मीन राशि में आएगा। इस पर शनि की विशेष दृष्टि रहेगी। **शुक्र अकेला यहाँ पहिले चाँदी में मन्दी लेकर आता है, परन्तु हमारे विचारानुसार शनि की दृष्टि के कारण चाँदी, साफ्टवेयर शेयर्ज़ में ज़ोरदार तेजी बन सकती है। इसलिए ध्यानपूर्वक इंतज़ार कर लाभ उठाएँ।** सरसों, तेल, तिलहन, अलसी, एरण्डी, गुड़, खाण्ड, रूई, सोना, चाँदी, क्रूड-ऑयल में पहले घटाबढ़ी के मध्य मामूली मन्दी बनकर शीघ्र ही तेजी बन जाएगी।

3 फरवरी को गुरु पू.षा. (3) में आने से सोना-चाँदी में मन्दी का झटका लग सकता है, सावधान रहें। **शेयर-बाज़ार तेज रहेगा।**

4 फरवरी को बुध शतभिषा नक्षत्र में आने से सोना-चाँदी में मन्दी, धान्य, चने तथा सभी अनाजों में तेजी प्रधान रहेगी।

5 फरवरी को शुक्र उ.भा. नक्षत्र में आने से चावल, चाँदी, कपूर, नमक, रुई, खाण्ड, कपास आदि सफेद वस्तुओं में मन्दी, जबकि शेष में तेजी रहेगी।

6 फरवरी को सूर्य धनिष्ठा नक्षत्र में आने से पुनः सोना, चाँदी आदि धातुएं, मोती, मणि आदि जवाहरात, मूँग, मसूर, गेहूँ आदि अनाजों व अलसी, रूई में तेजी बनेगी।

7 फरवरी को मंगल धनु राशि में आकर गुरु एवं केतु के साथ मेल करेगा। मंगल की मीनस्थ शुक्र पर विशेष दृष्टि भी रहेगी। अतएव सोना, चाँदी आदि धातुओं, गुड़, बिनौला, सरसों, घी, रूई, लकड़ी तथा शेयर बाज़ार में पहिले कुछ मन्दी बनकर तेजी का रुख बनेगा।

ध्यान रखें, ता. 24 जनवरी से 12 फरवरी, 2020 ई. तक मकर राशि में 'सूर्य-शनि' योग विश्व राजनीतिक तथा व्यापार-पटल पर विशेष उथल-पुथल करेगा। जिससे भारत में वायदा-हाजिर व्यापार तथा शेयर-बाज़ारों में विशेष उठापटक रहेगी। सावधान रहे।

ता. 13 फरवरी को सूर्य कुम्भ राशि में आकर बुध के साथ मेल करेगा। घी, तैल, नमक, सरसों, मूँगफली, राई, सोना, चाँदी में तेजी बनेगी। धान्य, अलसी, अरण्डी, गेहूँ आदि अनाजों, गुड़, शक्कर, खाण्ड में मन्दी का चाँस होने के बावजूद तेजी ही प्रधान रहेगी।

ता. 13 से 16 तक हाजिर बाज़ारों में घटाबढ़ी के मध्य साधारण तेजी का रुख ही रहेगा।

17 फरवरी को **बुध वक्री** होने से **शेयर-बाज़ार, बैंकिंग-शेयर्ज़, सोना,** चाँदी, गुड़, घी, तेल, ग्वार में **पहिले अच्छी तेजी का झटका लगेगा,** परन्तु शीघ्र ही मन्दी का रुख बन सकता है, सावधान रहे, क्योंकि इसी दिन शुक्र रेवती नक्षत्र में आएगा जोकि मन्दीकारक होता है।

19 फरवरी को सूर्य शतभिषा नक्षत्र में आने से सोना, चाँदी, सूत, सन, तिल, तेल,एरण्ड, सरसों, हींग, छुहारा, सोंठ, हल्दी, गेहूँ, गुड़ में तेजी बनेगी। परन्तु ध्यान रखें, इसी दिन गुरु पू.षा. (4) नक्षत्र में आएगा तथा वक्री बुध पश्चिम में अस्त होने से कुछ जिन्सों/बाज़ारों में अचानक मन्दी का रुख भी बन सकता है। जैसे–चाँदी, रूई, घी। शेयर–बाज़ार तेज होगा।

22 फरवरी को शनि उ.षा. (3) में आने से सभी प्रकार के अनाजों, रूई, कपास, लोहा, चन्दन, मजीठ, दाख, छुहारे तथा **शेयर-बाज़ार में तेजी बनेगी।**

25 फरवरी को प्लूटो मकर राशि में आने तथा मंगलवारी चन्द्रदर्शन होने से सोना, चाँदी, सरसों, सोयाबीन, गुड़ में घटाबढ़ी के बाद तेजी बनेगी।

27 फरवरी को शुक्र मेष राशि में आकर गुरु द्वारा दृष्ट रहेगा। जौं, चना, गेहूँ आदि अन्न, घी, सोना, चाँदी, गुड़, शक्कर, बारदाना आदि में अच्छी तेजी बनेगी। परन्तु फिर भी तुरन्त मुनाफा निकाल लें। अचानक थोड़ा मन्दी का झटका भी लगेगा। तिल, तेल, सरसों, ऊन, अलसी, अरण्डी में कुछ मन्दी बनेगी। **शेयर बाज़ार तेज रहेंगे।**

☞ **मार्च**–मासारम्भ में वायदा एवं हाजिर बाज़ार में घटाबढ़ी रहने के बाद 3 मार्च को वक्री बुध धनिष्ठा नक्षत्र में आने तथा इसी दिन वक्री बुध पूर्व में उदय होने से घी, अनाज, शेयरों, चाँदी, चना, कपास, खल, बिनौले, रूई में अच्छी घटाबढ़ी के बाद ही तेजी बनेगी।

4 मार्च को सूर्य पू.भा. नक्षत्र में आने से सोना, चाँदी, गेहूँ, चना, उड़द, चावल, ज्वार, बाजरा, घी, सरसों, तिल, तैल, गुड़, खाण्ड, गुग्गुल, पीपलामूल, रूई में साधारण तेजी बने।

7 मार्च को गुरु उ.षा. नक्षत्र में आने से गुड़, खाण्ड, घी, तेल, हल्दी, ग्वार में ज़ोरदार तेजी से लाभ प्राप्त हो सकता है।

10 मार्च को कुम्भराशिगत बुध मार्गी होने से सोना, सुपारी, सोंठ, सरसों, लाख, चमड़ा, **बैंकिंग शेयर्ज़ तथा शेयर-बाज़ार में अच्छी तेजी का झटका लगेगा।**

12 मार्च को शुक्र भरणी नक्षत्र में आने से सोना, चाँदी, अफीम, लाल रंग की जिन्सें, सरसों, तिल, तेल, अलसी, घी, उड़द, नारियल में कुछ मन्दी बने। चने, मूँग, मोंठ, ज्वार, शेयरों में घटाबढ़ी तथा रूई में तेजी बनेगी।

14 मार्च को सूर्य मीन राशि में आएगा। मंगल तथा शनि की दृष्टि इस पर रहेगी। तिल, तेल, अलसी, सरसों, खाण्ड, गुड़, शक्कर, रूई, सोने में प्रारम्भ से ही अच्छी तेजी बनेगी, चाँदी, सभी प्रकार के अनाजों, क्रूड-आयल, घी, हल्दी, चने में प्रारम्भ में मन्दी होने पर भी शीघ्र ही तेजी की लाईन बनेगी।

17 मार्च को सूर्य उ.भा. तथा मंगल उ.षा. नक्षत्र में आएंगे। गुड़, खाण्ड, चावल, शक्कर, गेहूँ, तैल, उड़द, घी, सरसों में तेजी बने, रूई में विशेष तेजी बनेगी। **परन्तु ध्यान रहे,** इसी दिन बुध शतभिषा नक्षत्र में आने से सोने, चाँदी आदि धातुओं में कुछ मन्दी का रुख बनेगा।

18 मार्च को राहु आर्द्रा 1 केतु मूल 3 में आने से तेल, तिलहन में पहले अच्छी तेजी, परन्तु गुरु की दृष्टि रहने से शीघ्र ही सभी वायदा एवं हाजिर बाज़ारों में मन्दी का रुख बन जाएगा।

22 मार्च को मंगल मकर (उच्च) राशि में प्रवेश कर शनि के साथ मेल करेगा। **मकर राशि में 'मंगल-शनि' योग विश्व राजनीतिक पटल पर विशेष उथल-पुथल करेगा। कुछ देशों के मध्य युद्धमय वातावरण बनने से जबरदस्त तेजी-मन्दी बनेगी। तैयार फसलों की हानि होती है। पहिले से कुछ स्टॉक होना चाहिए–**

कर्कमीनमृगस्त्रीषु शनिभौमौ यदा स्थितौ।
तदा युद्धाकुला पृथ्वी धनधान्यविवर्जिता।।

इस समय रूई, सोना, चाँदी, ताँबा, गुड़, घी, तेल, अलसी, ऊन, अनाजों, क्रूड-आयल में भयंकर तेजी बन सकती है। शीघ्र ही अर्थात् 1-2 दिन में ही लाभ लेकर निकल जाएं।

24 मार्च को शुक्र कृतिका नक्षत्र में आने से जौं, चावल, हींग, तिल, तेल, सरसों, रूई, सूत, वस्त्र सोना, चाँदी, हीरा, मणि आदि जवाहरात में मन्दी का झटका लगेगा, परन्तु भौमवती अमावस शीघ्र ही कुछ जिन्सों में शीघ्र मज़बूती बनाएगी।

28 मार्च को शुक्र वृष राशि में आने से रूई, कपास में अच्छी मन्दी, सोना, चाँदी में पहले घटाबढ़ी होकर अन्त में तेजी रहेगी।

29 मार्च को गुरु मकर (नीच) राशि में आकर मंगल-शनि ग्रहों के साथ मेल करेगा। **मंगल-शनि' योग के कारण चल रही तेजी पर गुरु थोड़ा अंकुश लगा सकता है, रन्तु फिर भी हमारे विचारानुसार प्रारम्भ में तेजी का ही रुख रहेगा।** जौं, चना, गेहूँ, पूर, चन्दन, मूंगफली, सोना, चाँदी, ताँबा, सरसों में तेजी बनेगी। शीघ्र ही इस तेजी में भ लेकर निकल जाएं, क्योंकि शीघ्र ही मन्दी का रुख भी बन सकता है।

31 मार्च को सूर्य रेवती तथा बुध पू.भा. नक्षत्र में आने से अलसी, सरसों, एरण्ड, मूँगफली, लहसुन, मोती, लाख, रूई, गेहूँ, जौं, चना, चावल में तेजी बनेगी। सोना, चाँदी, ताँबा, लोहा में मन्दी का योग होने पर भी शीघ्र ही तेजी बन जाएगी।

[ता. 25 से 31 मार्च तक शेयर-बाज़ार भी लगभग तेज रहेगा।]

☞ **अप्रैल**–मासारम्भ में 1-2 दिन अवकाश के बावजूद वायदा-बाज़ार तेज रहेगा।

3 अप्रैल को शनि उ.षा. नक्षत्र के चतुर्थ चरण में प्रवेश करेगा। शेयर-बाज़ार का कारोबार करने वाले व्यापारियों को 20-27 मार्च के मध्य मन्दी में माल पकड़ लेना चाहिए। 5-6 मास के भीतर ही द्विगुणित लाभ प्राप्त हो सकता है। अनाज, रूई, धान्य, कपास, लोहा, चन्दन, मजीठ, दाख, छुहारे में तेजी बनेगी।

5 अप्रैल को मंगल श्रवण नक्षत्र में प्रवेश करेगा। पुराने एवं नए गेहूँ के भाव में भारी तेजी बनेगी। जौं, चने, तिल, सोना, चाँदी आदि धातुएं, अफीम में भी तेजी बनेगी। रूई में घटाबढ़ी रहेगी।

8 अप्रैल को शुक्र रोहिणी नक्षत्र में आने से सोना, चाँदी आदि धातुओं, अलसी, एरण्ड, सरसों, घी, तेल, गुड़, खाण्ड, दाख, छुहारा, सुपारी, नारियल, ऊन में मन्दी बनेगी।

9 अप्रैल को बुध उ.भा. नक्षत्र में आकर, ता. 12 अप्रैल तक चाँदी, रूई, गुड़, खाण्ड, चावल, गेहूँ, आदि अनाजों में घटाबढ़ी कर साधारण तेजी रखेगा। बीच में मन्दी के झटके भी लगेंगे।

13 अप्रैल को सूर्य अश्विनी नक्षत्र तथा मेष राशि में प्रवेश करेगा। **उस पर मंगल की विशेष दृष्टि भी रहेगी। ध्यान दें, इस समय मकर राशि में मंगल-गुरु-शनि ग्रहों का योग भी बना हुआ है।** रूई कपास, सूत, घी, तेल, सरसों, नारियल, सुपारी, बादाम, गुड़, फल, खाण्ड, शक्कर, सोना, चाँदी में अच्छी तेजी का झटका लगेगा। गेहूँ, चावल, उड़द, मूँग, अरहर, चना, जौं, मटर में पहिले कुछ मन्दी बनकर तेजी का रुख बन जाएगा।

वायदा एवं हाजिर बाज़ार में तेजी का यह रुख ता. 16 तक रहेगा।

17 अप्रैल को बुध रेवती नक्षत्र में आएगा। बुध पर इस समय शनि की विशेष दृष्टि है। केसर, मजीठ, कुसुंभा, लाल-चन्दन, लाल-मिर्च आदि लाल वस्तुओं, बैंकिंग शेयर्ज़, मूंग में विशेष तेजी बनेगी। जबकि गुड़, खाण्ड, तिल, तेल, सरसों, घी, चाँदी में पहिले मन्दी बनकर बाद में शीघ्र ही तेजी का झटका लगेगा। शीघ्र सौदे निपटा लें।

घटाबढ़ी के मध्य मन्दी-तेजी का यह रुख ता. 22 अप्रैल तक रहेगा।

23 अप्रैल को बुध पूर्व में अस्त होने से घी, अनाज में मन्दी, जबकि रूई, कपास, चाँदी में घटाबढ़ी के मध्य पहले मन्दी फिर तेजी बन जाएगी, सोने में भी घटाबढ़ी के बाद तेजी बनेगी। शेयर-बाज़ार भी तेज रहे।

24 अप्रैल को बुध मेष राशि में आकर सूर्य के साथ मेल करेगा। **इन पर मंगल की विशेष दृष्टि रहेगी। अकेला बुध यद्यपि यहाँ मन्दीकारक होता है, परन्तु यहाँ बुधादित्य योग बनने तथा मंगल की दृष्टि रहने से अच्छी तेजी का वातवरण बनेगा। शेयर-बाज़ार भी तेजी पकड़ेगा।** मूंगा, मोती आदि जवाहरात, सोना, चाँदी आदि धातुएं, गेहूँ, जौं, चना आदि अनाज, तिल, तेल, सरसों, रूई, कपास, घी, गुड़, खाण्ड में मन्दी की जगह

तेज़ी ही प्रधान रहेगी। इसी दिन धनिष्ठा नक्षत्र का मंगल धातुओं में विशेष तेजीकारक ही रहेगा।

27 अप्रैल को सूर्य भरणी तथा शुक्र मृगशिर नक्षत्र में प्रवेश करेंगे। सोना, चाँदी, ताँबा, मूँगा, पीतल, लोहा, चादर आदि, गेहूँ, जौं, चना, चावल, मोठ, अलसी, शक्कर, रूई, सरसों, गुड़, खाण्ड, घी में तेजी बनेगी। गेहूँ, चने में बाद में कुछ मन्दी का झटका भी लगेगा।

वायदा एवं हाजिर बाज़ार में तेजी का यह क्रम मासान्त तक रहेगा। शेयर बाज़ार भी घटाबढ़ी के मध्य मुख्यत: तेज रहे।

☞ **मई**—मासारम्भ ता. 1 को बुध भरणी नक्षत्र में आकर सूर्य के साथ एकनक्षत्र सम्बन्ध बनाएगा। मंगल की इन पर दृष्टि रहेगी। गेहूँ, चावल आदि अनाजों, बैंकिंग शेयर्ज़, मूंग, इलायची में शीघ्र ही तेजी बनेगी।

4 मई को मंगल कुम्भ राशि में आकर वृषस्थ शुक्र को विशेष दृष्टि से देखेगा। रूई, चाँदी, शेयर-बाज़ार में अच्छी घटाबढ़ी होगी। गेहूँ आदि सब अनाजों, गुड़, खाण्ड, सोना, ताँबा, मिर्च, अरहर, मसर दाल में तेजी बनेगी।

7 मई को बुध कृतिका नक्षत्र में आने से चाँदी, घी, शेयर्ज़ में घटाबढ़ी होकर मन्दी बने। रूई, अनाज, चने में तेजी बने।

9 मई को बुध वृष राशि में आकर शुक्र के साथ मेल करेगा। इन पर मंगल की विशेष दृष्टि रहेगी। रूई, शेयर-बाज़ार, सोयाबीन, गुड़ में विशेष घटाबढ़ी चलेगी। गेहूँ, जौं, चना, चावल, मटर, रूई, कपास, सूत, अफीम, तिल, तेल आदि के भावों में तेजी बनेगी।

11 मई को शनि वक्री होगा। मकर राशि में 'गुरु-शनि' योग पहिले ही चल रहा है। इसी दिन सूर्य कृतिका नक्षत्र में भी आएगा। घी, क्रूड-आयल, रूई, सोना, चाँदी, अलसी, एरण्ड, गेहूँ, जौं, मूँग, मोठ, चावल, सरसों, लोहा, सीमेण्ट, तैल, जीरा, मसाले आदि में ज़ोरदार तेजी का झटका लगेगा।

13 मई को वृषराशिगत शुक्र भी वक्री होकर संचार करेगा। शुक्र-सूर्य-बुध पर मंगल की दृष्टि भी है। इसी दिन बुध रोहिणी नक्षत्र में आएगा। शेयर-बाज़ार विशेषकर सॉफ्टवेयर शेयर्ज़ में विशेष तेजी बनेगी। इसलिए ता. 9 से पहिले जब भी अवसर हो माल (स्टॉक) पकड़ लें। रूई, कपास, सूत, सोना, चाँदी, तिल, तेल, सरसों, गुड़, खाण्ड में तेजी बनेगी।

14 मई को सूर्य वृष राशि में आकर बुध एवं शुक्र के साथ मेल करेगा। इन पर मंगल एवं गुरु की विशेष दृष्टि रहेगी। इसी दिन मंगल शतभिषा नक्षत्र में आएगा तथा गुरु वक्री भी होगा। *ध्यान रहे,* **शुक्र एवं शनि भी वक्री अवस्था में संचार कर रहे हैं। गुरु-शुक्र-शनि तीन ग्रहों का वक्री होना, हाजर बाज़ार के व्यापारी तेजी का काम करके उत्तम लाभ प्राप्त कर सकते हैं। शेयर-बाज़ार में भी ज़ोरदार तेजी एवं मन्दी के झटके लगेंगे।** सोना, चाँदी, गुड़, हल्दी, खाण्ड, शक्कर, कपास, रूई, सूत, बादाम, घी, सुपारी, नारियल, तिल, तेल, सरसों आदि में अच्छी तेजी बनेगी। जौं, चना, गेहूँ, अरहर, मूंग, ग्वार, सरसों, सोयाबीन के भाव कुछ मन्दी बनकर शीघ्र ही तेजी की तरफ बढ़ेंगे।

16 मई को बुध पश्चिम में उदय होने से रूई, चाँदी, घी, क्रूड-आयल में घटाबढ़ी होकर तेजी बनेगी।

20 मई को बुध एवं राहु मृगशिर नक्षत्र में आकर शुक्र के साथ एकनक्षत्र सम्बन्ध बनाएंगे। वायदा बाज़ार में विशेष उथल-पुथल होगी। रूई, चाँदी में अच्छी घटाबढ़ी के बाद तेजी बने, तिल, सरसों, उड़द, गेहूँ में कुछ मन्दी बन सकती है। शीघ्र ही लाख, ऊन, तिल, ज्वार, चना, नील में भी तेजी बनेगी। **स्टॉकिस्ट इस बात का ध्यान रखें। शेयर-बाज़ार में भी घटाबढ़ी रहेगी। जोकि 24 मई तक रहेगी।**

25 मई को सूर्य रोहिणी नक्षत्र में आएगा तथा बुध मिथुन राशि में आकर राहु के साथ योग करेगा। **बाज़ारों में ज़ोरदार तेज़ी-मन्दी के झटके आएंगे। कदाचित् पहिले मन्दी बने, तो शीघ्र ही अगले दिन तेजी बनेगी। वायदा व्यापारी तेजी से लाभ ले सकेंगे। शेयर-बाज़ार (Nifty), चाँदी** में पहिले मन्दी बनकर फिर तेजी बनेगी। तिल, तेल, एरण्ड, अलसी, सरसों, खाण्ड, घी, गेहूँ, जौं, चना, ज्वार, बाजरा, ऊन, सूत, वस्त्र, सन, सुपारी, मिर्च, राई में तेजी बनेगी। झटके की मन्दी के लिए भी तैयार रहें।

29 मई को वक्री शुक्र रोहिणी नक्षत्र में आकर सूर्य के साथ एकनक्षत्र बनाएगा। अकेला शुक्र यद्यपि यहाँ मन्दीकारक होता है। **परन्तु हमारे विचारानुसार यहाँ शुक्र वक्री एवं सूर्य-शुक्र मंगल द्वारा दृष्ट होने के कारण हाजिर बाज़ार में तेजी बनाएगा।** सोना, चाँदी आदि धातु तथा अलसी, एरण्ड, सरसों, घी, तेल, गुड़, खाण्ड, दाख, छुहारा, सुपारी, नारियल, ऊन में मन्दी का योग होने पर भी तेजी प्रधान रहेगी।

परन्तु ध्यान रखें, 29 मई को आर्द्रा नक्षत्र का बुध गेहूँ, तिल, उड़द, जौं, चना, मूँग, मोठ में मन्दी का झटका लेकर आएगा। **सावधान रहे।**

31 मई को वक्री शुक्र पश्चिम में अस्त होने से सोना, चाँदी, गुड़, सूत, कपड़ा, घी, तेल, अलसी, एरण्ड, बिनौला, मूँगफली में मन्दी बनेगी। रूई तथा शेयर-बाज़ार तेज रहें।

☞ **जून**—मासारम्भ ता. 3 जून को मंगल पू.भा. नक्षत्र में आएगा। तिल, तेल, मूंगफली, अलसी, बिनौला, सोया, एरण्ड, सरसों आदि तिलहन एवं रुई, सूत, सोना, चाँदी, ताँबा आदि धातुओं में अच्छी तेजी से लाभ मिलेगा।

7 जून को सूर्य मृगशिर नक्षत्र में आकर राहु के साथ एकनक्षत्र सम्बन्ध बनाएगा। रूई, सूत, रेशम, सन, कपूर, कस्तूरी, चन्दन, सोना, चाँदी, उड़द, मूंग, मोठ, चने, बाजरा, अलसी, नारियल तथा जल से उत्पन्न होने वाले पदार्थों में तेजी बनेगी। सोना, ताँबा में अधिक तेजी नहीं बन पाएगी। भारी उठा पटक रह सकती है।

9 जून को वक्री शुक्र पूर्व में उदय होने से सोना, चाँदी, घी, खाण्ड, गुड़, रुई में ज़ोरदार तेजी का झटका लगेगा। सभी करियाना वस्तुओं में तेजी दिखेगी।

तेजी की यह लाईन 14 जून तक रहेगी। करियाना व्यापारी अच्छा मुनाफा कमाएंगे।

14/15 जून को सूर्य मिथुन राशि में आकर बुध-राहु के साथ एक राशि सम्बन्ध बनाएगा। यह योग राजनीतिक दृष्टि से तथा प्राकृतिक प्रकोपों के कारण करियाना एवं शेयर बाज़ार में विशेष उथल-पुथल रहेगी। दुर्भिक्ष एवं कम वर्षा की सम्भावना

से वायदा एवं हाजिर बाजार तेजी प्रधान रहेगी। फल, पाट, बारदाना, रेशम, सूत, कपास, रूई, सरसों, लोहा, तिल, तिल, गुड़, खाण्ड, शक्कर, चीनी, घी, मूँग, उड़द, गेहूँ, चना, चावल आदि प्रत्येक जाति के अनाज में सोना, चाँदी आदि धातुओं में तेजी बनेगी। इसी दिन बुध पुनर्वसु नक्षत्र में आने से चाँदी, रूई, कपास में मन्दी का झटका भी लगेगा।

18 जून को मंगल मीन राशि में आकर शनि द्वारा दृष्ट रहेगा। मंगल मीन राशि में आकर मिथुनस्थ सूर्य-बुध-राहु पर विशेष दृष्टि रखेगा। इसीदिन बुध भी वक्री होगा। यह योग ज़ोरदार तेजी करने वाला है। हमारे विचार से इन दिनों सोना, चाँदी, सभी प्रकार के अनाज, गुड़, खाण्ड, शेयर बाज़ार विशेषकर बैंकिंग शेयर्ज़ में ज़ोरदार तेजी बनेगी। जौं, गेहूँ, मसूर, घी, ग्वार, हल्दी, एरण्ड, अलसी आदि तिलहन में घटाबढ़ी के बाद तेजी बनेगी। रूई और चाँदी में काफी घटाबढ़ी चलेगी। **सावधान रहें।**

19 जून को वक्री शनि उ.षा. 3 में आने से अनाज, रूई, कपास, लोहा, चन्दन, मजीठ, दाख, छुआरे में अच्छी तेजी बनेगी।

(15 जून से 21 जून के मध्य शेयर-बाज़ार तथा करियाना बाज़ार में ज़ोरदार उठा-पटक या कुछ जिन्सों में मन्दी अथवा तेजी आएगी, सावधान रहें। हमारे विचार से तेजी बनेगी।)

21 जून को सूर्य आर्द्रा नक्षत्र में आने तथा कंकण सूर्यग्रहण होने से रूई, सूत, कपास, खल, अलसी, एरण्ड, मोती, गेहूँ, चावल, चना, जौं, चाँदी, सोने में ज़ोरदार तेजी बनेगी। व्यापारी वर्ग को इन दिनों के लिए अपने पास स्टॉक रखना चाहिए।

22 जून को वक्री बुध आर्द्रा नक्षत्र में आकर सूर्य के साथ एकनक्षत्र सम्बन्ध बनाएगा। बुध-गुरु-शुक्र-शनि इस समय वक्री होकर संचार कर रहे हैं। गेहूँ, तिल, उड़द, जौं, चना, मूँग, मोंठ में मन्दी का चाँस होने के बावजूद तेजी की लाईन रहेगी।

23 जून को वक्री बुध पश्चिम में अस्त होने से रूई, चाँदी में तूफानी तेजी सम्भव है। सोना, गुड़, सरसों में तेजी बनने से पहिले बीच में मन्दी का झटका लगेगा।

24 जून को मंगल उ.भा. नक्षत्र में आने से शीघ्र ही देवदारु, चन्दन, कपूर आदि सोना, पदार्थ, सोना, चाँदी, रूई, गेहूँ, जौं, चना में तेजी बनेगी।

25 जून को वृष राशिगत शुक्र मार्गी होने से कुछ दिन पहिले रुई में मन्दी बनेगी-स्टॉक कर लेना चाहिए। 5-6 दिन बाद सोना-चाँदी, मोती में तेजी बनेगी। एक मास बाद धान्य, गुड़, घी, शक्कर में ज़ोरदार तेजी बनेगी। **व्यापारी-वर्ग नोट कर लें। मासान्त तक शेयर-बाज़ार में भी घटाबढ़ी के मध्य तेजी का रुख रहेगा।**

30 जून को वक्री गुरु धनु राशि में आकर केतु के साथ एकराशि-सम्बन्ध एवं सूर्य-बुध-राहु के साथ समसप्तक योग भी बन रहा है। यह योग ज़ोरदार तेजी का सूचक है।

सोना, चाँदी, ताँबा, हल्दी, घी, काँसा, सिक्का, तिल, तेल, गुड़, खाण्ड, शक्कर, कुष्ठा, धान्यादि अनाज, मूँग, मोंठ, कुलत्थ आदि में ज़ोरदार तेजी सम्भव है। फिर भी बाज़ार के प्रारम्भिक रुख को देखकर काम करें। यदि घी, रुई, हल्दी में मन्दी बन जाए तो स्टॉक **करने से शीघ्र ही उत्तम लाभ प्राप्त होगा।**

कुछ वस्तुओं/जिन्सों में ज़ोरदार मन्दी की लाईन भी बन सकती है, सावधान रहें।

☞ जुलाई—30 जून से वायदा एवं हाजिर बाज़ार में चली तेजी की लाईन 4 जुलाई तक घटाबढ़ी के मध्य चलती रहेगी।

5 जुलाई को सूर्य पुनर्वसु नक्षत्र में आने से रूई, सोना, चाँदी, गुड़, खाण्ड, कपास, बिनौला, एरण्ड, अलसी, सरसों, लाख, देवदारु, तिल, ग्वार, मोंठ, बाजरा, उड़द, चावल, नमक, सब्ज़ी, हरड़, सुपारी, नारियल, केसर, मजीठ, नील, सोंठ, गुग्गुल आदि सुगन्धित पदार्थ तेज होंगे।

9 जुलाई को वक्री बुध पूर्व में उदय होने से अनाज, सोने में मन्दी, गेहूँ, जौं, चना, लाल-मिर्च, अलसी, बिनौला, शेयर्ज़ में तेजी बनेगी।

12 जुलाई को बुध मार्गी होगा। बुध सूर्य एवं राहु युक्त मंगल द्वारा दृष्ट है। रुई, बैंकिंग शेयर्ज़ में ज़ोरदार घटाबढ़ी के बाद तेजी बनेगी। सोना, गुड़, एरण्डी, बिनौला, मूँगफली, सोयाबीन आदि तैलों में ज़बरदस्त तेजी की लाईन बन सकती है।

16 जुलाई को सूर्य कर्क राशि में आकर शनि के साथ समसप्तक योग बना रहा है। **वायदा एवं हाजिर बाज़ारों में तूफानी तेजी के झटके आएंगे।** सोना, चाँदी, रूई, सूत, बादाम, सुपारी, फल, गुड़, खाण्ड, शक्कर, तिल, नारियल, सरसों, सोयाबीन, क्रूड-आयल में अच्छी तेजी बनेगी। गेहूँ, चना, जौं, अरहर, उड़द, मूंग, चावल में पहले कुछ मन्दी बनकर बाद में तेजी बनेगी। **शेयर-बाज़ार में ज़ोरदार मन्दी एवं तेजी के रियेक्शन आएंगे। शेयर-बाज़ार के व्यापारी बहुत सावधानीपूर्वक माल पकड़ें।**

19 जुलाई को सूर्य पुष्य नक्षत्र में आने से तिल, तेल, सरसों, खाण्ड, सोयाबीन, अरण्डी आदि तिलहन, गेहूँ, जौं, ज्वार, बाजरा,, सुपारी, सोंठ, गुग्गुल, मोम, हींग, हल्दी, लाख, ऊनी वस्त्र, सिक्का, सोना, चाँदी में तेजी बने। रूई में पहले तेजी, फिर मन्दी बन सकती है।

22 जुलाई को राहु मृगशिर (3), केतु मूल (1) में आने से लाख, ऊन, तिल, ज्वार, मेथी, चना, नील, मूँग, इलायची मे तेजी का झटका लगेगा।

23 जुलाई को शुक्र का मृगशिर नक्षत्र में आकर राहु के साथ एकनक्षत्र सम्बन्ध बनाना बाज़ारों में घटाबढ़ी के बाद तेजी का रुख बनाएगा। गुड़, खाण्ड, शक्कर, साफ्टवेयर शेयर्ज़ में तेजी, जबकि चना, हल्दी में कुछ मन्दी बन सकती है।

26 जुलाई को बुध पुनर्वसु तथा वक्री गुरु पू.षा. (4) में आने से रूई, कपास, चाँदी, सन, सूत तथा सभी धातुओं व अनाजों में मन्दी का रुख बनेगा।

करियाना बाज़ार में मन्दी का यह रुख मासान्त तक चल सकता है। 25 से 31 जुलाई तक शेयर-बाज़ार घटाबढ़ी के मध्य तेज रहेगा।

☞ अगस्त—मासारम्भ ता. 1 से **शुक्र मिथुन राशि में आकर राहु के साथ एकराशि-सम्बन्ध तथा गुरु-केतु के साथ समसप्तक योग बनाएगा। शुक्र-राहु पर मंगल की विशेष दृष्टि रहेगी। शेयर-बाज़ार एवं हाजर-वायदा बाज़ारों में ज़ोरदार घटाबढ़ी हो सकती है, सावधानी से काम करें।**

वस्त्र, अरण्डी, तिल, तेल, सरसों, अरहर, ग्वार में अच्छी मन्दी बन सकती है, परन्तु वर्तमान ग्रहयोग इन वस्तुओं में अच्छी तेजी बनाएगा। अलसी, गुड़, घी, गेहूँ, जौं, चावलों, सोना, चाँदी में इस समय ज़ोरदार तेजी सम्भव है।

2 अगस्त को बुध कर्क राशि में आकर सूर्य के साथ मेल करेगा तथा सूर्य-बुध का **शनि के साथ समसप्तक सम्बन्ध रहेगा। इसी दिन सूर्य आश्लेषा नक्षत्र में भी आएगा। यह ग्रहयोग भी शेयर एवं वायदा-बाज़ार में चल रही तेजी को ओर अधिक गति प्रदान कर सकता है।**

(हमारे विचार अनुसार 2-3 अगस्त तक की तेजी में निकल जाने की सलाह है क्योंकि कुछ मन्दी या घटाबढ़ी का माहौल रहेगा। माल बेचकर दोबारा बाज़ार में प्रवेश करें।)

सोना, चाँदी, रूई, बिनौला, गेहूँ, चावल, उड़द, चना, गुड़, शक्कर, घी, तिल, सरसों, एरण्ड, अलसी, मिर्च, मजीठ, नील, क्रूड-आयल, सोयाबीन आदि में ज़ोरदार तेजी बनेगी। शीघ्र लाभ लें।

4 अगस्त को बुध पुष्य नक्षत्र में आएगा। सोना, चाँदी में मन्दी का रुख बने। रूई, मोती आदि जवाहरात, ऊनी वस्त्र एवं धागों, चने में घटाबढ़ी के बाद मन्दी का वातावरण बनेगा।

5 अगस्त को बुध पूर्व में अस्त होगा। अनाज, घी, रूई, सोने में घटाबढ़ी के बीच पहले मन्दी, बाद में तेजी बनेगी।

6 अगस्त को वक्री शनि उ.षा. नक्षत्र के द्वितीय चरण में आने से बाज़ार का रुख अचानक बदल जाएगा। सूर्य-शनि में पहले ही समसप्तक योग बना हुआ है। क्रूड-आयल, लौंग, अनाज, रूई, कपास, लोहा, चन्दन, मजीठ, दाख, छुहारे, पैट्रोल, सोयाबीन, रिफाइंड-ऑयल, लाख में तेजी बनेगी।

8 अगस्त को आर्द्रा नक्षत्र का शुक्र गेहूँ आदि अनाजों, निफ्टी (शेयर्ज़) में अकस्मात् मन्दी का वातावरण बनाएगा।

10 अगस्त को बुध आश्लेषा नक्षत्र में आकर सूर्य के साथ एकनक्षत्र सम्बन्ध बनाएगा। सूर्य-बुध का शनि के साथ एकनक्षत्र सम्बन्ध पहिले से ही चल रहा है। तिल, तेल, सरसों, गुड़, खाण्ड, उड़द, मूँग, मूंगफली एवं करियाना वस्तुओं में तेजी का रुख बनेगा।

(तेजी का यह रुख 15 अगस्त तक रहेगा।)

16 अगस्त को सूर्य सिंह राशि में आकर गुरु द्वारा दृष्ट रहेगा। **इसी दिन मंगल मेष राशि में आकर कर्कस्थ बुध को नीच दृष्टि से देखेगा। परन्तु शनि की दृष्टि से बाहर भी निकलेगा। ज़बरदस्त तेजी का अनुमान होने के बावजूद साधारण तेजी ही बनेगी अथवा ज़ोरदार तेजी का झटका लगकर शीघ्र भाव नीचे भी आ सकते हैं। सावधान रहें।**

सोना, चाँदी, रुई, गुड़, खाण्ड, शक्कर, तिल, तैल, एरण्ड, सरसों, सोयाबीन आदि, कपास, पाट, बारदाना तथा सभी प्रकार के अनाजों में तेजी का रुख बनेगा।

यह प्रभाव अगले दिन अर्थात् **17 अगस्त सोमवार को विशेष रूप से होगा, क्योंकि इस दिन प्रातःकाल ही बुध सिंह राशि में आकर सूर्य के साथ मेल करेगा। इन पर गुरु की दृष्टि रहेगी। अतः हाजर-वायदा बाज़ार में पिछले दिनों जिन वस्तुओं में तेजी बनी होगी, उनमें शीघ्र ही मन्दी बन जाएगी। बुधादित्य योग बनने से कुछ वस्तुओं/जिन्सों में तेजी ही प्रधान रहेगी।** सोना, चाँदी, सूत, रूई व ऊनी-वस्त्रों/धागों, शेयर-बाज़ार में ज़ोरदार तेजी का वातावरण बने। कपूर, गुड़, खाण्ड, शक्कर, अरहर, सरसों, सोयाबीन, ग्वार, मूंग आदि दालों में शीघ्र ही मन्दी बनेगी।

[17 से 21 अगस्त तक शेयर एवं धातु-बाज़ार में तेजी का रुख रहेगा।]

22 अगस्त को शुक्र पुनर्वसु नक्षत्र में आने से सोना, चाँदी, रूई, कपास, सूत, घी, ग्वार, खाण्ड में मन्दी बनेगी। धान्य, बिनौला, अरहर, इलायची, ड्राइ-फ्रूट तेज होंगे।

24 अगस्त को बुध पू.फा. में आकर गुड़, खाण्ड, गेहूँ आदि अनाजों में मन्दी का रुख करेगा।

[घटाबढ़ी के मध्य वायदा-हाजर करियाना बाज़ार में ता. 29 तक मन्दी का रुख रह सकता है, सावधान रहें।]

30 अगस्त को सूर्य पू.फा. नक्षत्र में आकर बुध के साथ एकनक्षत्र सम्बन्ध बनाएगा। शीघ्र ही सोना, गुड़, जीरा, खाण्ड, सरसों, तिल, घी, गेहूँ, ग्वार, ज्वार, चावल, ऊनी धागे/वस्त्रों, रूई, सूत में तेजी बनेगी। चाँदी में घटाबढ़ी बनेगी।

31 अगस्त को शुक्र कर्क राशि में आकर शनि के साथ समसप्तक योग बनाएगा। कर्कस्थ शुक्र पर मंगल की भी दृष्टि रहेगी। इसी दिन बुध उ.फा. नक्षत्र में आएगा। **यह योग भयंकर तेजी का है, नोट कर लें।** उड़द, मूंग, मोंठ, मसूर, अरहर, गुड़, खाण्ड, शक्कर, तेल, सोयाबीन, अलसी, एरण्ड में ज़ोरदार तेज़ी बनेगी। चाँदी, चना, घी में भी पहले मन्दी बनकर बाद में तेजी बनेगी।

[**नोट करें कि**–'इस तेजी में तुरन्त मुनाफा बुक कर, निकल जाएं, क्योंकि आगे श्राद्ध-पक्ष एवं आश्विन अधिक मास रहने से सभी बाज़ार मन्दी प्रधान रहेंगे।]

☞ **सितम्बर**—मासारम्भ 1 सितम्बर को बुध पश्चिम में उदय होने से रूई, चाँदी, घी, मूँग में घटाबढ़ी के मध्य पहले मन्दी, फिर मामूली तेजी बनेगी।

2 सितम्बर को बुध कन्या राशि में आ जाएगा। रूई, चाँदी में मन्दी और गेहूं, जौं, चना, गुड़, शक्कर, खाण्ड, हल्दी में तेजी बनेगी। शेयर्ज में घटाबढ़ी के मध्य मामूली तेजी रहेगी।

3 सितम्बर को शुक्र पुष्य नक्षत्र में आएगा। शुक्र पर मंगल एवं शनि ग्रहों की दृष्टि है। रूई, सूत, सन, रेशम, ऊन, साफ्टवेयर शेयर्ज़ व धान्य में ज़ोरदार तेजी रहे तथा लाख, चमड़ा, कपूर, हींग, गुड़, खाण्ड, शक्कर में थोड़ी मन्दी बनकर शीघ्र तेजी का झटका लगेगा।

6 सितम्बर को वक्री गुरु पू.षा. (3) में आने से रूई, सोना, चाँदी आदि सभी धातुओं तथा अनाजों में मन्दी रहे।

8 सितं. को हस्त नक्षत्र का बुध सभी अनाजों एवं वायदा बाज़ार में मन्दी लाएगा।

परन्तु शीघ्र ही **10 सितंबर को मंगल वक्री होगा। मंगल पर गुरु की दृष्टि भी रहेगी।** सभी अनाजों, सोना, चाँदी, रूई, अलसी, गेहूँ, ताँबा, लोहा, घी, गुड़, तेल-तिलहन में अच्छी तेजी बनकर पुनः मन्दी का रुख बन सकता है।

13 सितम्बर को गुरु मार्गी होगा। इसी दिन सूर्य उ.फा. नक्षत्र में आएगा। रूई, कपास, रेशम, सूत, सोना, चाँदी, लोहा, घी, तेल, अलसी, सरसों, एरण्ड, चावल, उड़द, ज्वार, सुपारी, नारियल, नील में तेजी बनेगी।

16 सितम्बर को सूर्य कन्या राशि में आकर बुध के साथ मेल करेगा। रूई, नारियल, सुपारी, तिल, तैल, मजीठ, सोने, तांबा, चना, कालेमांश, सरसों, गुड़ में अच्छी तेजी बनेगी। चाँदी तथा शेयरों में मन्दी बने।

17 सितम्बर को बुध चित्रा में आकर रूई, चाँदी, घी में घटाबढ़ी कर तेजी करेगा।

19 सितम्बर को गुरु पू.षा. (4) नक्षत्र में आने से सोना, चाँदी आदि सभी धातुओं तथा अनाजों में मन्दी बनेगी।

(मन्दी का यह रुख ता. 21 तक रहेगा।)

ध्यान रहे, यदि इन दिनों दालें और अन्य अनाज मन्दें हों, तो स्टॉक करें, आगे शीघ्र ही उत्तम लाभ प्राप्त हो सकता है।

22 सितम्बर को बुध तुला राशि में आएगा। तुलास्थ बुध पर मंगल एवं शनि की विशेष दृष्टियां रहेंगी। बाज़ार में एकदम तेजी की लाईन बन सकती है, फिर भी सावधान होकर आगे बढ़ें। रुई, गुड़, खाण्ड, सोना, मूंग, बैकिंग शेयर्ज़ में अच्छी तेजी बने। चाँदी, अलसी, सरसों, एरण्ड, बिनौला, मूंगफली, चने में पहले मन्दी बन शीघ्र ही तेजी बन जाएगी।

23 सितम्बर को राहु वृष तथा केतु वृश्चिक राशि में आएंगे। वायदा-हाजर बाज़ार में विशेष उथल-पुथल रहेगी। इस समय यदि करियाना वस्तुओं में थोड़ी भी मन्दी हो, तो अगले मास आने वाली तेजी के लिए स्टॉक करें, अवश्य उत्तम लाभ प्राप्त होगा। रूई, कपास, घी में स्टॉक करने से उत्तम लाभ प्राप्त होगा। तिल, तेल, सरसों, सोयाबीन आदि तिलहनों व करियाना की वस्तुओं, गुड़, खाण्ड, कस्तूरी, कुंकुंम, रूई, सोना, चाँदी में शीघ्र ही ज़ोरदार तेजी बनेगी।

26 सितम्बर को सूर्य हस्त नक्षत्र में आने से गेहूं, जौं, ज्वार, गुड़, खाण्ड, कपास, रूई, सूत, जूट, लकड़ी, नमक, हरड़, हींग, धनिया, हल्दी, सन् में तेजी का रुख रहेगा।

27 सितम्बर को शुक्र सिंह राशि में आएगा। इस पर गुरु की विशेष दृष्टि रहेगी। सोना, ताँबा, जौं, चना, गेहूँ, लाल-चन्दन, मजीठ, लाल मिर्च, लाल रंग की वस्तुएं, घी, रसादि पदार्थों में विशेष तेजी बनेगी। रूई, चाँदी मे पहले 2-3 दिन मन्दी, फिर तेजी बनेगी। परन्तु यहाँ गुरु की दृष्टि होने से शीघ्र ही बाज़ार में मन्दी का वातावरण बनेगा, तुरन्त मुनाफा लें।

28 सितम्बर को स्वाती नक्षत्र का बुध यद्यपि रुई, घी, साफ्टवेयर शेयर्ज़ में मन्दी करता है, परन्तु शनि की दृष्टि के कारण यहाँ तेजी बनेगी।

29 सितम्बर को मकर राशिगत शनि मार्गी होने से वायदा एवं हाजर बाज़ारों में भारी उथल-पुथल के बाद मार्किट की लाईन में परिवर्तन हो जाएगा। कुछ जिन्सों में भयंकर तेजी तथा कुछ में मन्दी का माहौल बन जाएगा। क्रूड-आयल, तिल, सरसों, सोयाबीन, हींग, मिर्च, सोना, चाँदी में तेजी बनेगी। शेयर-बाज़ार में पहले अच्छी मन्दी बन कर बाद में तेजी बनेगी।

☞ अक्तूबर—मासारम्भ में वायदा-हाजर बाज़ारों में उथल-पुथल के मध्य साधारण तेजी का वातावरण रहेगा।

4 अक्तूबर को वक्री मंगल मीन राशि में आकर सूर्य के साथ समसप्तक, बुध व शुक्र के साथ षडाष्टक योग तथा स्वयं शनि-देव द्वारा दृष्ट रहेगा। व्यापारी वर्ग कृपया यह तारीख अपनी डायरी में नोट कर लें। किसी विशेष सरकारी नियम/आदेश से बाज़ारों में भारी उथल-पुथल रहेगी।

15 दिन पहिले ही इस तारीख के आसपास आने वाली तेजी के लिए व्यापारी वर्ग के पास स्टॉक होना चाहिए।

सोना, रूई, तृण, काष्ठ व लकड़ी से निर्मित वस्तुओं, शेयर-बाज़ार, रियल-स्टेट, सम्बन्धित शेयर्ज़ में विशेष उथल-पुथल के बाद तेजी हो। चाँदी, घी में पहले मन्दी का झटका लगकर तेजी बनेगी। प्रायः सभी करियाना वस्तुएं एकदम तेज हो जाएंगी। फिर भी सावधानी से काम करें।

9 अक्तू. को शुक्र पू.फा. में आने से भी गेहूँ, जौं, ज्वार, बाजरा, उड़द, मूँग, चना में मन्दी बनेगी।

10 अक्तू. को सूर्य चित्रा नक्षत्र में आने से रूई, सूत, सोना, चाँदी, मोती आदि रत्नों, गुड़, खाण्ड, अरहर, गेहूँ, चना, तिल, नारियल, सन, केसर, कपूर, लाल कपड़े, आदि में पुनः तेजी का रुख बनेगा। शेयर-बाज़ार में मन्दी रहे।

14 अक्तूबर को तुलाराशिगत बुध वक्री होगा। इस समय बुध पर शनि एवं मंगल की दृष्टियां भी हैं। वायदा एवं हाजर बाज़ार में तेजी का बोलबाला रहेगा। बैंकिंग शेयर्ज़ में भी ज़बरदस्त उछाल आएगा। सोना, घी, गुड़, खाण्ड, शक्कर, चाँदी, बैंकिंग शेयर्ज़, मूंग, मेथी, तिल, रूई, कपास, रेशम, ताँबा, पीतल में तेजी बनेगी।

17 अक्तूबर को सूर्य तुला राशि में आकर बुध के साथ मेल करेगा। **इन पर मंगल व शनि की दृष्टियां रहेंगी। बाज़ार में भयंकर तेजी का अनुमान रहेगा। शेयर-बाज़ार पहले एकमद नीचे आएगा।** सोना, ताँबा, क्रूड-आयल, गेहूँ, जौं, चना, अलसी, श्रीफल, सुपारी, लौंग, लाल मिर्च, काली मिर्च, ग्वार, सोयाबीन, सरसों आदि तिलहन में ज़बरदस्त तेजी का झटका बने। चाँदी, रूई, घी में पहले मन्दी बनकर तेजी बनेगी। या घटाबढ़ी के मध्य बाद में मन्दी का झटका भी लग सकता है।

20 अक्तू. को वक्री बुध पश्चिम में अस्त होने से रूई, चाँदी में भयंकर तेजी का झटका लगेगा। सोना, गुड़, सरसों, सोयाबीन में भी तेजी रहेगी। शेयर-बाज़ार में पहले मन्दी, बाद में तेजी बनेगी।

23 अक्तूबर को शुक्र कन्या (नीच) राशि में आकर मंगल के साथ समसप्तक योग बनाएगा। चावलों, चाँदी, गेहूँ आदि सभी अनाजों, गुड़, खाण्ड, ऊनी-रेशमी वस्त्रों में **विशेष तेजी का झटका लगेगा।** इसी दिन सूर्य स्वाती नक्षत्र में बुध के साथ मेल करेगा। शक्कर, बिनौला, सुपारी, मिर्च, अलसी, हींग, गुग्गुल, क्रूड में भी तेजी बनेगी।

27 अक्तूबर को वक्री बुध चित्रा नक्षत्र में वापिस आकर रूई, चाँदी, चना आदि अनाजों में घटाबढ़ी के बाद तेजी करेगा।

30 अक्तूबर को गुरु उ.षा. नक्षत्र में आकर शनि के साथ एकनक्षत्र सम्बन्ध बनाएगा। गुरु का शनि के साथ आना कुछ वस्तुओं में मन्दी बनाएगा, सावधान रहें। गुड़, खाण्ड, हल्दी, घी, ग्वार, चना में विशेष तेजी बनेगी, जबकि तेल, सोयाबीन, क्रूड, तिलहन आदि में अचानक मन्दी भी बन सकती है।

31 अक्तू. को शुक्र हस्त नक्षत्र में आने से करियाना वस्तुओं एवं धातुओं में अच्छी घटाबढ़ी चलेगी। खाण्ड, गुड़, शक्कर, सोना, चाँदी, कॉपर में घटाबढ़ी के बाद मामूली तेजी बनेगी। **यदि यहाँ अनाजों, धातुओं में मन्दी रहे, तो आगे के लिए स्टॉक करें, अच्छा मुनाफा प्राप्त होगा।**

☞ **नवम्बर**—मासारम्भ में वायदा एवं हाजर बाज़ार में घटाबढ़ी के मध्य साधारण तेजी ही बन पाएगी।

3 नवम्बर को तुलाराशिगत बुध मार्गी होगा। **सूर्य-बुध पर मंगल एवं शनि की दृष्टियां भी हैं। बाज़ार की लाईन एकदम परिवर्तित हो जाएगी।** रूई, जौं, तेल, अलसी, एरण्ड, गुड़, बिनौला, शेयर्ज़, चना, अनाज में ज़बरदस्त तेजी बनेगी। सोना, चाँदी, रूई में घटाबढ़ी होकर तेजी बनेगी।

6 नवम्बर को सूर्य विशाखा नक्षत्र में आने से जौं, चावल, गेहूँ, मसूर, गुड़, खाण्ड, रूई, सूत, सरसों, तिल, एरण्ड, अफीम, सोना, ताँबा में तेजी बनेगी। अलसी, चाँदी, घी में घटाबढ़ी होकर तेजी बने।

[ता. 6 से 10 नवम्बर तक धातुओं एवं करियाना बाज़ार में तेजी का रुख रहेगा। पहले से स्टॉक करें।]

11 नवम्बर को बुध स्वाती तथा शुक्र चित्रा नक्षत्र में आने के बावजूद सोना, चाँदी आदि धातुओं तथा रूई, घी, कपास, सरसों में घटाबढ़ी के बाद साधारण तेजी बनेगी।

13 नवम्बर को मीन राशिगत मंगल मार्गी होगा। मंगल पर शनि की विशेष दृष्टि चल रही है। कुछ वस्तुओं में एकदम ज़बरदस्त तेजी का झटका लगेगा। जबकि कुछ के भाव सम रहेंगे। तेल, पीपल, चाँदी, घी, खाण्ड, बादाम, किशमिश, काली मिर्च, गुड़, क्रूयड-आयल में ज़बरदस्त तेजी बने।

[शनिवारी दीपावली भी तेजीकारक मानी गई है।]

16 नवम्बर को सूर्य वृश्चिक राशि में आकर केतु के साथ मेल करेगा तथा राहु के साथ समसप्तक योग बनाएगा। रूई, ताँबा, चाँदी, सोयाबीन आदि तिलहनों में तेजी बनेगी। लाल मिर्च, आदि लाल रंग की वस्तुओं में कुछ मन्दी का झटका लगे।

17 नवम्बर को शुक्र तुला राशि में आकर बुध के साथ मेल करेगा। **इन पर मंगल तथा शनि की विशेष दृष्टियां रहेंगी। बाज़ार में ज़बरदस्त तेजी का उछाल आएगा।** सोना, चाँदी, कॉपर, खाण्ड, रूई, रेशमी वस्त्रों, चावलों, तेल, सरसों, सोयाबीन, गुड़ में भयंकर तेजी का झटका लगेगा।

19 नवम्बर को सूर्य अनुराधा नक्षत्र में आएगा। शीघ्र ही जौं, चना, ऊन तथा सोना, चाँदी आदि धातुओं में तेजी बनेगी। अलसी, मिर्च, गेहूँ, धान्य में कुछ मन्दी बनेगी।

20 नवम्बर को गुरु मकर राशि में आकर शनि के साथ मेल करेगा। गुरु-शनि दोनों एक ही नक्षत्र में भ्रमण कर रहे हैं। हाजिर व वायदा करियाना बाज़ार में तूफानी तेजी के संकेत मिल रहे हैं। यद्यपि अकेला गुरु मन्दी का द्योतक है तथा कई जिन्सों में चल रही तेजी पर ब्रेक लगा देगा। परन्तु यहाँ पहले तो अच्छी तेजी का झटका लगेगा। राजनीतिक तथा प्राकृतिक घटनाओं के कारण करियाना तथा धातु-बाज़ार में अच्छी उथल-पुथल रहेगी। कपूर, चन्दन, मूँगफली, ताँबा, चाँदी, सरसों, सोना, जौं, चना, गेहूँ, घी में अच्छी तेजी बनेगी। शीघ्र ही मुनाफा ले लेवें।

एकनक्षत्रगा ह्येते तदा भयविवर्द्धनः।
यदा जीवयुतो मन्दो जीवाद्वा सप्तमे स्थितः।
तदा प्रजा विनश्यन्ति भूपाश्चान्नपरिक्षयाः।।

21 नवम्बर को बुध विशाखा नक्षत्र में आकर रुई, चाँदी के भावों में कुछ मन्दी बनाएगा।

22 नवम्बर को शुक्र स्वाती नक्षत्र में आकर गुड़, चाँदी, खाण्ड, चावलों, रुई, रंगीन व रेशमी वस्त्रों में विशेष तेजी बनेगी। (**ध्यान रहे,** शुक्र पर मंगल एवं शनि की दृष्टियां रहेंगी।)

25 नवम्बर को राहु मृगशिर 1 तथा केतु ज्येष्ठा 3 में आने से लाख, ऊन, तिल, ज्वार, मेथी, चना, नील, चाँदी में तेजी बनेगी।

26 नवम्बर को बुध पूर्व में अस्त होने से घी, रूई में मन्दी, सोना, चाँदी में घटाबढ़ी के बाद तेजी बने।

28 नवम्बर को बुध वृश्चिक राशि में आकर सूर्य-केतु के साथ मेल करेगा। **जिन वस्तुओं में तेजी चल रही होगी, उनमें अधिक तेजी बनेगी तथा जिन वस्तुओं में मन्दी चल रही होगी, उनमें मन्दी को और बढ़ावा देगा।** घी, तेल, सरसों, रूई, चांदी तेज होंगी। सोने में कम बढ़त बनेगी। शेयर-बाज़ार तेज रहेंगे।

30 नवम्बर को बुध अनुराधा नक्षत्र में आकर सूर्य के साथ एकनक्षत्र सम्बन्ध बनाएगा। सूत, सन, रूई, सोना-चाँदी, मूंग, इलायची में तेजी बनेगी।

☞ **दिसम्बर**—मासारम्भ 2 दिसम्बर को सूर्य ज्येष्ठा नक्षत्र में आने से सोना, चाँदी, चावल, गेहूँ, जौं, चना, अलसी, सरसों, एरण्ड, हींग, गुग्गुल, पारा, गुड़, खांड में तेजी बनेगी। रूई में पहले मन्दी होकर बाद में तेजी बनेगी।

3 दिसम्बर को विशाखा का शुक्र रूई, गेहूँ, चावल, चने आदि अनाजों में मन्दी करेगा। घटाबढ़ी के मध्य साधारण मन्दी का यह रुख 6 दिसम्बर तक रहेगा।

7 दिसम्बर को गुरु उ.षा. 3 नक्षत्र में आने के साथ शनि के साथ एकदम एकनक्षत्र चरण-सम्बन्ध (उ.षा. 3) बनाएगा। गुड़, खाण्ड, घी, ग्वार, हींग, हल्दी, चाँदी में भयंकर

तेजी बनाएगा। तेल, पेट्रोल, क्रूयड-आयल में पहले अच्छी मन्दी का झटका लाकर बाद में तेजी बनाएगा।

८ दिसम्बर को बुध ज्येष्ठा नक्षत्र में आकर पुनः सूर्य के साथ एकनक्षत्र सम्बन्ध बनाएगा। **जब सूर्य के साथ बुध का मेल होता है, तो वायदा-बाज़ारों में झटके के साथ तेजी बनती है। परन्तु यदि सूर्य-बुध मेल से पहले मन्दी चल रही हो, तो ज़ोरदार मन्दी, यदि पहले तेजी चल रही हो, तो ज़ोरदार तेजी बनती है, अतः बाज़ार के रुख को देखर आगे का काम करें।** घी, गुड़, खाण्ड, चावल, मूंग, बैकिंग-शेयर्ज़ में विशेष तेजी का झटका लगेगा।

11 दिसम्बर को शुक्र का वृश्चिक राशि में आकर सूर्य-बुध-केतु के साथ मेल गेहूँ, चना, जौं, उड़द, मूँग, बाजरा, सॉफ्टवेयर शेयर्ज़, चाँदी, रूई में **ज़बरदस्त तेजी बनाएगा।**

13 दिसम्बर को शुक्र अनुराधा में आने से गुड़, खाण्ड, चावल, नमक, शेयर्ज़ में मन्दी बने।

15 दिसम्बर को सूर्य तथा 17 दिसम्बर को बुध धनु राशि में आकर परस्पर एकराशि सम्बन्ध बनाएंगे। ता. 15 से पहले चल रही मन्दी के बाद अचानक झटके की तेजी बनेगी। **स्टॉकिस्ट 12 से 14 के मध्य माल पकड़ लें।** रूई, कपास, सूत, तिल, तैल, सोना, चाँदी, मूंग, खल-बिनौला, कॉपर में ज़बरदस्त तेजी का झटका लगेगा। ता. 16-17 को तेजी का काम करें।

[आगे ता. 17 से 22 दिसम्बर तक धातुओं में तेजी की लाईन रहेगी।]

23 दिसम्बर को गुरु उ.षा. 4 में आने से गुड़, खांड, घी, टमाटर, तेल, सरसों, सोयाबीन, चने में विशेष तेजी देखने को मिलेगी। चावल, गेहूँ आदि अनाजों में मन्दी रहे।

24 दिसम्बर को मंगल मेष राशि में आकर वृश्चिकस्थ शुक्र-केतु को विशेष दृष्टि से देखेगा। सोना, चाँदी, कॉपर आदि धातुओं, मूँगा, मोती आदि रत्न, ऊन, रूई, कपास, पाट, बारदाना तथा गुड़ आदि रसादि पदार्थों, अरहर आदि दालों में विशेष तेजी बने। शेयर-बाज़ार कुछ कमज़ोर होगा। परन्तु इसी दिन शुक्र ज्येष्ठा नक्षत्र में आएगा। **सोना, चाँदी, चावल, सरसों, तिल, तेल, हींग में मन्दी का योग होने पर भी मंगल की दृष्टि के कारण तेजी प्रधान रहेगी।**

25 दिसम्बर को बुध पू.षा. नक्षत्र में आकर अनाज, सोना, चाँदी में विशेष मन्दी का झटका लगेगा। बिनौला, खल तेज होगा।

28 दिसम्बर को सूर्य पूषा. नक्षत्र में आकर बुध के साथ मेल करेगा। तिल, तैल, सरसों, बिनौला, गुड़, खाण्ड, हल्दी, गुग्गुल, चमड़ा, कपूर, ऊनी वस्त्र, सन्, चाँदी में तेजी बेनगी।

[तेजी का यह रुख मासान्त तक चलेगा।]

नोट–गोचर ग्रहस्थिति अनुसार ऊपर दिए गए व्यापारिक रुख, लाईन तथा चांसों के विपरीत बाज़ार का रुख चले या वायदा व्यापार की लाईन न चले, तो तुरन्त सौदा काटकर

आज का दिन कैसा गुजरेगा ?

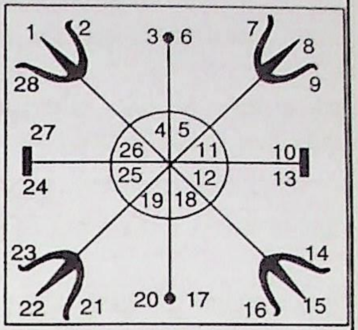

जिस दिन को मालूम करना हो कि **आज का दिन आपका कैसा गुजरेगा ?** तो उस दिन आप पंचांग में देखें कि चन्द्रमा किस नक्षत्र पर है। आप उस नक्षत्र को नं. १ पर से गिन कर ऊपर लिखे चक्र के क्रमानुसार 28 नक्षत्र लगा लें। फिर देखें कि आपके नाम का नक्षत्र किस स्थान पर आता है। वैसा फल जानें। यदि आपके नाम का नक्षत्र वृत्त (गोलाकार) के अन्दर पड़ेगा तो उस दिन शुभ समाचार, प्रिय बन्धु से मिलाप व धन लाभ होगा। यदि गोल वृत्त के बाहर पड़े तो दिन का आधा भाग खुशी में, आधा भाग फिकर और चिन्ता में व्यतीत होगा। यदि त्रिशूल के ऊपर पड़े तो पूरा दिन परेशानी, झगड़े, धन हानि व चिन्ता में व्यतीत होगा। **उदाहरणार्थ आज यदि मघा नक्षत्र हो तो, उसे नं. १ लें।** इसी क्रम में पू.फा. आदि 28 नक्षत्र क्रम से लिख लें। नक्षत्रों की तालिका इसी पंचाँग के अन्तिम पृष्ठों में देखें।

खोई हुई वस्तु मिलेगी या नहीं ?

विनष्टार्थस्य लाभोऽन्धे शीघ्रं मन्दे प्रयत्नतः। स्यात् दूरेश्रवणं मध्ये श्रुत्याप्ती न सुलोचने॥

१. अन्धाक्ष नक्षत्रों में गुम हुई अथवा चोरी हुई वस्तु पूर्व दिशा की ओर जाती है और उसकी पुनः प्राप्ति की शीघ्र सम्भावना रहती है।

२. सुलोचन नक्षत्रों में गुम हुई वस्तु उत्तर दिशा में जाती है परन्तु उसका न तो पता चलता है और न ही प्राप्त होती है।

३. मध्याक्ष नक्षत्र में खोई वस्तु पश्चिम दिशा की ओर अति दूर चली जाती है। पता चलने पर भी प्राप्त (हस्तंगत) नहीं होती।

४. मन्दाक्ष नक्षत्र में गुम अथवा चोरी हुई वस्तु दक्षिण की ओर चली जाती है तथा अत्यधिक प्रयत्न करने पर अन्ततोगत्वा वह प्राप्त हो जाती है। अन्धाक्षादि नक्षत्र निम्नलिखित हैं–

नक्षत्र संज्ञा	नाम नक्षत्र							मिलेगी या नहीं
(१) **अन्धाक्ष**	रोहणी	पुष्य.	उ.फा.	विशा.	पू.षा.	धनि.	रेव.	शीघ्र मिलेगी।
(२) **सुलोचन**	कृतिका	पुन.	पू.फा.	स्वा.	मूल.	श्रव.	उभा.	नहीं मिलेगी।
(३) **मध्याक्ष**	भर.	आर्द्रा.	मघा.	चित्रा.	ज्येष्ठा	अभि.	पू.भा.	पता लगाने पर भी नहीं मिलेगी।
(४) **मन्दाक्ष**	अश्विनी	मृग.	आश्ले.	हस्त.	अनु.	उ.षा.	शत.	बहुत प्रयत्न करने पर मिलेगी।

चमत्कारिक मन्त्र-तन्त्र एवं यन्त्र

आदि काल से ही प्रत्येक मनुष्य सुख प्राप्ति के लिए प्रयत्नशील होता आया है। वह ऐसा सुख चाहता है जिसका अस्तित्व स्थायी एवं शाश्वत हो। इसके लिए वह जीवन पर्यन्त प्रयासरत रहता है। अनेक बार जब वह बाह्य साधनों एवं कठिन परिस्थितियों के कारण अपने उद्देश्यों में सफल नहीं हो पाता तो मनुष्य दैवी शक्तियों का आश्रय लेने के प्रयास करता है। प्राचीन वैदिक काल में भी भौतिक एवं आध्यात्मिक मनोरथों में सफलता एवं सिद्धि प्राप्ति के लिए मन्त्र, तन्त्र, यन्त्रादि विद्याओं का आश्रय लेते थे। वेद, शास्त्र, पुराणादि धर्मग्रन्थों में मन्त्र-उपासना के द्वारा इस लोक के सुख और पारलौकिक पुण्य एवं आनन्द प्राप्ति के विवरण अनेक स्थलों पर मिलते हैं। मन्त्र द्रष्टा ऋषियों द्वारा रचित मन्त्रों के भीतर ऐसी रहस्यमयी गहन शक्ति छिपी होती है, जो साधारण शब्दों से नहीं कही जा सकती। मन्त्र आप्त ऋषियों द्वारा रचित वह दिव्य शब्द रचना है, जिसका विधि एवं श्रद्धापूर्वक जप करने से साधक को अभीष्ट सिद्धि की प्राप्ति होती है। वास्तव में मन्त्र एवं स्तोत्र वह दिव्य फूल है, जो मानव कल्याणार्थ ऋषियों के हृदय से उपजे है और हमें वैदिक ऋचाओं में मिलते हैं। विभिन्न प्रकार के मन्त्र/स्तोत्र ब्रह्माण्ड में व्याप्त शक्ति स्वरूप देवी-देवताओं को समर्पित होते हैं-**'देवाधीनं जगत्सर्वं मन्त्राधीनाश्च देवताः।'**

विशेष प्रकार के दिव्य वर्णों के समूह तथा छान्दोमय लय एवं ध्वन्यात्मक गुणों से युक्त शब्द रचना को मन्त्र कहते हैं। किसी में आर्ष मन्त्र में आकाश तत्त्व और वायु तत्त्व के दोनों गुण होते हैं अर्थात् उसमें शब्द और स्पर्श की तन्मात्राएं होती हैं। मन्त्र में चूंकि आकाश तत्त्व (शब्द) की प्रधानता होती है। शब्द में स्फोट होता है और स्फोट का आदि और अन्त दोनों ही शक्ति सापेक्ष है, अर्थात् स्फोट शक्ति से होता है और स्फोट से शक्ति होती है। अतएव मन्त्र की मूल चेतना शक्ति तो स्फोट एवं ध्वनि में निहित है।

वैदिक मन्त्रों के सार में निहित अक्षर ब्रह्म, सनातन, अजन्मा, व्यापक, चैतन्य और ज्योति रूप ईश्वर है। इस प्रकार ऋषियों द्वारा रचित मन्त्र ऐसे दिव्य शब्दों का समूह है जिसको निरन्तर जपने से एक वैद्युतिक, अलौकिक एवं दिव्य वातावरण का निर्माण होता है। उससे हमारे शरीर और मस्तिष्क से विकीर्ण होने वाली भावनात्मक तरङ्गें विद्युत् धारा की तरह अभीष्ट दिशा में गमन करने लगती हैं और उनसे हमारे मनोरथ सिद्ध होने लगते हैं। मन्त्र के सम्बन्ध में विभिन्न विद्वानों ने अनेक प्रकार की परिभाषाएं परिभाषित की हैं। जैसे-

(1) बार-बार मनन करने से जो रक्षा करता है, उसे मन्त्र कहते हैं तथा जिससे बार-बार जप करने से मनोरथ की सिद्धि प्राप्त होती है, वह मन्त्र कहलाता है-

मननात् त्रायते यस्मात् तस्मात् मन्त्रः प्रकीर्तितः।
जपात् सिद्धिर्जप्रात् सिद्धिर्जपात् सिद्धि न संशयः।।

(2) धर्म-कर्म और मोक्ष की प्राप्ति हेतु प्रेरणा देने वाली शक्ति को मन्त्र कहते हैं, इत्यादि।

मन्त्र-तन्त्र साधना में अभीष्ट सिद्धि एवं सफलता हेतु कुछ विशेष व्रत-नियमों आदि के पालन करने का निर्देश किया है। इसमें श्रद्धा, धैर्य, भक्ति, आसन, धन, शरीर एवं आचरण शुद्धि आदि के आवश्यक नियम बतलाए गए हैं।

मन्त्रों एवं यन्त्रों के अनुष्ठान के लिए सूर्यग्रहण, चन्द्रग्रहण, श्रीमहाशिवरात्रि काल, दीपावली, अक्षय-तृतीया, सायन-निरयण संक्रान्तिकाल, होलाष्टक, रविपुष्य, गुरुपुष्य, नवरात्रों में, अमृतसिद्धि, भौमवासरी अमावस, पूर्णिमा आदि पर्वों पर मन्त्र-यन्त्रों के अनुष्ठान का विशेष प्रभाव होता है। विविध मन्त्रों के अनुष्ठान एवं उनमें संसिद्धि सम्बन्धी विस्तृत व्याख्या हेतु आप हमारी पुस्तक **'शिव-मन्त्रावली'** पढ़ें।

संकल्प की आवश्यकता-प्राचीनकाल से ही धर्मशास्त्रानुसार प्रत्येक **'धर्मानुष्ठान'** के कार्य में जैसे-व्रत, मन्त्र-जप, पाठ, दान, ब्राह्मण-भोजन, श्रीगणेश-पूजन, नवग्रह-महालक्ष्मी-जन्मदिन पूजन, पुंसवन, जातकर्म, नामकरण, चूड़ाकर्म, विवाह-संस्कार, अन्त्येष्टि एवं श्राद्धादि कर्मों में भी संकल्पादि की आवश्यकता पड़ती है। बिना संकल्प किए जप, पाठ, व्रत, हवन-दान आदि अनुष्ठान करने का पूरा फल नहीं मिलता। मनुस्मृति अनुसार-

संकल्प मूलः कामो वै यज्ञाः संकल्पसम्भवाः।
व्रता नियम धर्माश्च सर्वे संकल्पजाः स्मृताः।।

संकल्प-**'ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य ब्रह्मणोऽह्नि द्वितीयपरार्धे श्रीश्वेतवाराह कल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे, अष्टविंशतितमे कलियुगे कलिप्रथम चरणे जम्बूद्वीपे भारतवर्षे आर्यावर्तैकदेशे……(अमुक) क्षेत्रे/नगरे/ग्रामे संवतारम्भे……(अमुक) नाम संवत्सरे……(अमुक) मासे……शुक्ल/कृष्णपक्षे……तिथौ……वासरे……गोत्र……शर्मा/गुप्तोऽहम् प्रातः/रात्रौ आदि श्रुति-स्मृति-पुराणोक्त फल प्राप्त्यर्थं ज्ञाताज्ञात सर्वपाप/दोष परिहारार्थं, आयुरारोग्यैश्वर्याद्यभिवृद्धयर्थम् सर्वारिष्ट शान्ति पूर्वकम्, श्रीपरमेश्वर-प्रीत्यर्थं अमुक देवस्य पूजनं करिष्ये।।'**

-ऐसे संकल्प पढ़कर अर्घ्य से पुष्पाक्षत एवं जलाञ्जली छोड़ दें।

यदि जन्मदिन का पूजन हो तो **'देवस्य'** की बजाये **'जन्मदिन कृत्यं'** पढ़ें। यदि दानादि का संकल्प हो, तो ऐसा पढ़ें-

दक्षिणा सहितं अमुक नाम ब्राह्मणाय दातुमहमुत्सृजे-ऐसा कहें।

यदि किसी मन्त्र का अनुष्ठान प्रारम्भ कर रहे हों, तो **'देवस्य'** की जगह **'(अमुक) मन्त्रस्य सिद्धिं हेतवे जपं/पूजनं'** पढ़ें।

संकल्प के पश्चात् पण्डित जो (आचार्य) द्वारा श्रीगणेश प्रतिमा के पास पहले से रखी गई कलेवा (मौली) उठाकर पण्डित (या आचार्य या किसी पूज्य व्यक्ति) से मन्त्रपूर्वक बन्धवानी चाहिए।

मन्त्र-तन्त्र साधना के लिए महत्त्वपूर्ण काल

(1) सायन संक्रान्ति प्रवेश एवं पुण्यकाल (सन् 2020-21 ई.)

भारतीय मुहूर्त्त शास्त्रों ने निरयण संक्रान्ति के पुण्यकाल की भान्ति सायन संक्रान्ति के पुण्यकाल को भी यन्त्र-मन्त्र साधना हेतु विशेष सिद्धिदायक बताया है।

2020-21 ई.	राशि	प्रवेशकाल	पुण्यकाल विवरण (भा. स्टैं. टा.)
20 जनवरी	कुम्भ	20:25	दोपहर 14:01 से रात्रि 26:49 तक
19 फरवरी	मीन	10:27	प्रातः 4:03 से 16:51 तक
20 मार्च	मेष	09:20	19 ता. की रात्रि 2:56 से 20 की दोपहर 15:44 तक
19 अप्रैल	वृष	20:16	दोपहर 13:52 से रात्रि 26:40 तक
20 मई	मिथुन	19:19	दोपहर 12:55 से रात्रि 25:43 तक
20 जून	कर्क	27:14	रात्रि 20:50 से 21 की प्रातः 9:38 तक
22 जुलाई	सिंह	14:07	प्रातः 7:43 से रात्रि 20:31 तक
22 अगस्त	कन्या	21:15	दोपहर 14:51 से 27:39 तक
22 सितम्बर	तुला	19:02	दोपहर 12:38 से रात्रि 25:26 तक
22 अक्तूबर	वृश्चिक	28:30	रात्रि 22:06 से अगले दिन प्रातः 10:54 तक
21 नवम्बर	धनु	26:10	रात्रि 19:46 से अगले दिन प्रातः 10:34 तक
21 दिसम्बर	मकर	15:32	प्रातः 9:08 से रात्रि 21:56 तक
19जन.(2021)	कुम्भ	26:10	रात्रि 19:46 से अगले दिन प्रातः 8:34 तक
18 फरवरी	मीन	16:14	प्रातः 9:50 से रात्रि 22:38 तक
20 मार्च	मेष	15:08	प्रात 8:44 से रात्रि 21:32 तक

○ क्रान्तिसाम्य काल (सन् 2020-21 ई.) ○

यहाँ सूर्य-चन्द्रमा का महापात-गणित द्वारा प्रणीत सूक्ष्म क्रान्तिसाम्य काल दिया जा रहा है। विवाहादि मुहूर्त्तों में इसी सूक्ष्म क्रान्तिसाम्य काल को वर्जित किया गया है। यह समयावधि विवाहादि शुभ मुहूर्त्तों के लिए अशुभ एवं निषिद्ध है, परन्तु मन्त्र-यन्त्रादि तांत्रिक अनुष्ठान के लिए श्रेष्ठ व शुभ होती है।

प्रारम्भ काल		समाप्ति काल	
तारीख	घं. मिं.	तारीख	घं. मिं.
6 अप्रैल	16 08	6 अप्रैल	20 06
18 अप्रैल	22 54	19 अप्रैल	4 15
2 मई	8 58	2 मई	14 10
14 मई	6 43	14 मई	13 49
27 मई	21 25	28 मई	6 29
8 जून	20 38	9 जून	10 44
3 जुलाई	18 35	4 जुलाई	7 31
17 जुलाई	9 10	17 जुलाई	18 08
29 जुलाई	15 05	29 जुलाई	21 19
11 अगस्त	21 53	12 अगस्त	3 44
24 अगस्त	4 49	24 अगस्त	9 12
6 सितंबर	5 14	6 सितंबर	10 06
18 सितंबर	21 54	18 सितंबर	25 38
14 अक्तू.	18 06	14 अक्तू.	21 57
26 अक्तू.	18 20	26 अक्तू.	23 33
9 नवंबर	10 54	9 नवंबर	16 20
21 नवंबर	5 04	21 नवंबर	12 02
4 दिसंबर	25 16	5 दिसंबर	10 45
17 दिसंबर	6 50	17 दिसंबर	18 38
28 दिसंबर	16 48	29 दिसंबर	5 12
(सन् 2021 ई.)			
10 जनवरी	11 50	10 जनवरी	19 40
23 जनवरी	15 33	23 जनवरी	22 32
5 फरवरी	5 40	5 फरवरी	10 36
17 फरवरी	24 54	18 फरवरी	6 01
2 मार्च	19 29	2 मार्च	23 23
15 मार्च	8 49	15 मार्च	13 17
9 अप्रैल	17 44	9 अप्रैल	22 17

वारुणी पर्व (2020-21 ई.)

प्रारम्भ काल		समाप्ति काल	
तारीख	घं. मिं.	तारीख	घं. मिं.
22 मार्च	सूर्योदय	22 मार्च	10 08
9 अप्रै., 21	3 16	9 अप्रैल	4 57

महोदय योग (2021 ई.)

प्रारम्भ काल		समाप्ति काल	
तारीख	घं. मिं.	तारीख	घं. मिं.
10 फरवरी	25 09	11 फर.	14 05

सूर्यग्रहण 21 जून, 2020 ई.

-एतदर्थ पृष्ठ 27 देखें।

(1) भौमदोष एवं मंगलीक दोष शान्ति के लिए 'अङ्गारक स्तोत्र'

[ऋणहर्ता, दरिद्रतानाशक, भूमि व पुत्र-लाभ हेतु विशेष रूप से ग्राह्य]

कुण्डली में **भौमदोष** एवं **मंगलीक** आदि दोषों **की शान्ति के लिए** अंगारक स्तोत्र का पाठ विशेष रूप से कल्याणकारी होता है। आप इसे ऋण दूर करने के लिए, भूमि-जायदाद सम्बन्धी वाद-विवाद अथवा प्राप्ति में विघ्नों को दूर करने के लिए एवं पुत्र-प्राप्ति हेतु भी श्रद्धापूर्वक पाठ करके अभीष्ट की प्राप्ति कर सकते हैं।

विनियोग—अस्य अङ्गारकस्तोत्रस्य विरूपाङ्गिरस ऋषिः। अग्निर्देवता। गायत्री छन्दः। भौम प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।

अङ्गारक स्तोत्रम्—

अङ्गारकः शक्तिधरो लोहिताङ्गो धरासुतः। कुमारो मङ्गलौ भौमो महाकायो धनप्रदः।।१।। ऋणहर्ता दृष्टिकर्ता रोगकृद्रोगनाशनः। विद्युत्प्रभो व्रणकरः कामदो धनहृत् कुजः।।२।। सामगानप्रियो रक्त वस्त्रो रक्तायतेक्षणः। लोहितो रक्तवर्णश्च सर्वकर्मावबोधकः।।३।। रक्तमाल्यधरो हेमकुण्डली ग्रहनायकः। नामान्येतानि भौमस्य यः पठेत्सततं नरः।।४।। ऋणं तस्य च दौर्भाग्यं दारिद्र्यं च विनश्यति। धनं प्राप्नोति विपुलं स्त्रियं चैव मनोरमाम्।।५।। वंशोद्योतकरं पुत्रं लभते नात्र संशयः। योऽर्चयेदह्नि भौमस्य मङ्गलं बहुपुष्पकैः।।६।। सर्वा नश्यति पीडा च तस्य ग्रहकृता ध्रुवम्।।७।।

।। इति श्रीस्कन्दपुराणे अङ्गारकस्तोत्रं ।।

भौम यन्त्रम्।

ब्राह्मण भोजन कराएं। मंगलवार के दिन ही प्रारम्भ करके, मंगलवार को ही समाप्त करें। मूल

भौम यन्त्रम्।

मन्त्र–ॐ अंगारकाय विद्महे शक्ति हस्ताय धीमहि। तन्नो भौमः प्रचोदयात्।।

भौम पूजन यन्त्रम्

ताम्र या सुवर्ण पत्र पर इस यंत्र की रचना करवा कर उस पर लाल चंदन व लाल पुष्पाक्षतों से मन्त्रों से पूजा करनी चाहिए तथा निम्न मन्त्रों से अभिषेक करना चाहिए।

मन्त्र–(१) ॐ मङ्गलाय नमः।। (२) ॐ भूमिपुत्राय नमः।। (३) ॐ ऋणहर्त्ते नमः।। (४) ॐ धनप्रदाय नमः।। (५) ॐ स्थिरात्मजाय नमः।। (६) ॐ महाकालाय नमः।। (७) ॐ सर्वकामार्थ साधकाय नमः।। (८) ॐ लोहिताङ्गाय नमः।। (९) ॐ लोहिताक्षाय नमः।। (१०) ॐ सामगानां कृपाकराय नमः।। (११) ॐ धरात्मजाय नमः।। (१२) ॐ कुजाय नमः।। (१३) ॐ भौमाय नमः।। (१४) ॐ भूमिदाय नमः।। (१५) ॐ भूमिनन्दनाय नमः।। (१६) ॐ अङ्गारकाय. नमः।। (१७) ॐ यमाय नमः।। (१८) ॐ सर्वरोगापहारकाय नमः।। (१९) ॐ वृष्टिकर्त्रे नमः।। (२०) ॐ वृष्टयपहर्त्रे नमः।। (२१) ॐ सर्वकाम फलप्रदाय नमः।।

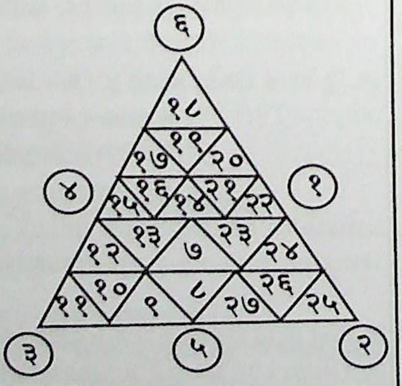

(2) मंगलीक दोष निवारक

'मंगल चण्डिका स्तोत्र/मन्त्र'

किसी कन्या की कुण्डली में मंगलीक दोष प्रबल हो, अथवा मंगल दशाऽन्तर्दशा के कारण विवाह में बाधाएं उत्पन्न हो रही हों, यदि जन्माङ्ग में पार्थक्य अथवा वैधव्य की संभावना हो तो निम्न मंगल चण्डिका स्तोत्र का पाठ करने से दाम्पत्य जीवन के समस्त उपद्रवों का शमन होता है। सुखमय वैवाहिक जीवन व्यतीत कर रही महिलाएं भी यदि मंगल चण्डिका स्तोत्र का नियमित पाठ करें, तो दाम्पत्य सुख में वृद्धि होती है। मंगल चण्डिका पार्वती देवी का ही रूप है। अतः पार्वती देवी या माता गौरी का षोडशोपचार या पंचोपचार पूजन करने के उपरान्त शुभ मुहूर्त्त में मंगल चण्डिका मन्त्र एवं स्तोत्र का पाठ करना शीघ्र मनोकामना पूर्ण करता है। कम से कम जप संख्या सवा लाख है।

विधि–शुद्ध एवं पवित्र होकर प्रातःकाल लाल ऊनी आसन पर लाल वस्त्र पहनकर सामने घी का दीपक तीन या पांच बत्ती वाला प्रज्वलित करें, देवी का ध्यान करते हुए मंत्र का जाप 21 या 108 बार करें। तत्पश्चात् स्तोत्र का सहस्र संख्या में पाठ करना चाहिए। अनुष्ठान के नियमों का पालन करें, लाल वस्तुओं का दान करें। जप संख्या पूर्ण होने पर हवन कर ब्राह्मण भोजन कराएं। मंगलवार के दिन ही प्रारम्भ करके, मंगलवार को ही समाप्त करें। मूल मंत्र के सवा लाख जाप से भी लाभ होता है।

मंगल चण्डिका स्तोत्रम्–

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं सर्वपूज्ये देवि मंगल चण्डिके।
ऐं क्रूं फट् स्वाहेत्येवं चाप्येकविंशाक्षरो मनुः॥ १॥

मूलमन्त्र–''ॐ ह्रीं. श्रीं क्लीं सर्वपूज्ये देवि मंगल चण्डिके ऐं क्रूं फट् स्वाहा॥''

पूज्यः कल्पतरुश्चैव भक्तानां सर्वकामदः।
दश लक्ष जपेनैव मन्त्र सिद्धिर्भवेन्नृणाम॥ २॥
मंत्र सिद्धिर्भवेद् यस्य स विष्णुः सर्वकामदः।
ध्यानं च श्रूयतां ब्रह्मन् वेदोक्तं सर्व सम्मतम्॥ ३॥

ध्यानम्–देवीं षोडशवर्षाढ्यां शश्वत्सुस्थिर यौवनाम्।
सर्वरूप गुणाढ्यां च कोमलाङ्गीं मनोहराम्॥ ४॥
श्वेत चम्पक वर्णाभां चन्द्रकोटि समप्रभाम्।
वन्हि शुद्धांशुकाधानां रत्नभूषण भूषिताम्॥ ५॥
विभ्रतीं कबरीभार मल्लिकामाल्य भूषितम्।
बिम्बोष्ठीं सुदतीं शुद्धां शरत्पद्म निभाननाम्॥ ६॥
ईषद्धास्य प्रसन्नास्यां सुनीलोत्पल लोचनाम्।
जगद्धात्रीं ध दात्रीं च सर्वेभ्यः सर्वसम्पदाम्॥ ७॥
संसार सागरे घोरे पोतरूपां वरांभजे॥ ८॥
देव्याश्च ध्यानमित्येवं स्तवनं श्रूयतां मुने।
प्रयतः संकटग्रस्तो येन तुष्टाव शंकरः॥ ९॥

स्तोत्रम्– शंकर उवाच

रक्ष रक्ष जगन्मातर्देवि मंगल चण्डिके।
हारिके विपदां राशेर्हर्षमंगल कारिके॥ १०॥
हर्ष मंगल दक्षे च हर्ष मंगल चण्डिके।
शुभे मंगल दक्षे च शुभ मंगल चण्डिके॥ ११॥
मंगले मंगलार्हे च सर्व मंगल मंगले।
सतां मंगलदे देवि सर्वेषां मंगलालये॥ १२॥
पूज्या मंगलवारे च मंगलाभीष्ट दैवते।
पूज्ये मंगल भूपस्य मनु वंशस्य संततम्॥ १३॥
मंगलाधिष्ठात् देवि मंगलानां च मंगले।
संसार मंगलाधारे मोक्ष मंगलदायिनि॥ १४॥

सारे च मंगलाधारे पारे च सर्व कर्मणाम्।
प्रतिमंगलवारे च पूज्ये च मंगलप्रदे॥ १५॥
स्तोत्रेणानेन शम्भुश्च स्तुत्वा मंगल चण्डिकाम्।
प्रति मंगलवारे च पूजां कृत्वा गतः शिवः॥ १६॥
देव्याश्च मंगल स्तोत्रं यः श्रृणोति समाहितः।
तन्मंगलं भवेच्छश्वन्न भवेत् तदमंगलम्॥ १७॥

विशेष–मंगलीक दोष शान्ति के लिए और अधिक उपायों के लिए हमारे कार्यालय से प्रकाशित पुस्तक **'अनिष्ट ग्रहों के चमत्कारी उपाय व टोटके'** (लेखक : पं. पन्ना लाल ज्यो.) पढ़ें।

(3) शत्रुविजयी, महाकल्याणकारी श्रीबगुलामुखी महामन्त्र (उपासना)

श्रीबगला महाविद्या की उपासना गुरु के सान्निध्य में रहकर सतर्कता, इन्द्रियनिग्रहपूर्वक सफलता की प्राप्ति होने तक प्रयत्नपूर्वक करते रहना चाहिए।

आपका विरोधी अथवा शत्रु आपको अन्यायपूर्वक तंग कर रहा हो अथवा राजकीय रुकावटों के कारण उपयुक्त प्रमोशन न मिल पा रहा हो अथवा व्यवसाय में गुप्त शत्रु हानि पहुँचाने का यत्न करते हों अथवा आपको अनावश्यक रुपेण, झगड़े आदि में फंसाया जा रहा हो तो निम्न श्री बगुलामुखी मन्त्र विशेष सहायक सिद्ध होता है।

साधक को गुरु से बगला मन्त्र का उपदेश ग्रहण कर ब्रह्मचर्यपूर्वक देवीमन्दिर में, पर्वतशिखर पर, शिवालय में, गुरु के समीप या जैसी सुविधा हो पीताचार से बगलामहामन्त्र का पुरश्चरण करना चाहिए। महाविद्या बगुलामुखी का ३६ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है–

''ॐ ह्लीं बगलामुखि सर्वदुष्टानां वाचं मुखं पदम्।
स्तम्भय जिह्वां कीलय कीलय बुद्धिं नाशय ह्लीं ॐ स्वाहा॥''

मन्त्र के जपादि के विषय में बगलापटल (सिद्धेश्वर तन्त्र) में विशेष विधान बताए हैं, जो इस प्रकार हैं–

पीताम्बरधरो भूत्वा पूर्वाशाभिमुखः स्थितः। लक्षमेकं जपेन्मन्त्रं हरिद्राग्रन्थिमालया॥
ब्रह्मचर्यरतो नित्यं प्रयतो ध्यानतत्परः। प्रियङ्गुकुसुमेनापि पीतपुष्पैश्च होमयेत्॥

बगला के जप में पीले रंग का विशेष महत्त्व है। जपकर्त्ता को पीला वस्त्र पहनकर हल्दी की गाँठ की माला से जप करना चाहिए। देवी की पूजा और होम में पीले पुष्पों, प्रियङ्गु, कनेर, गेंदा आदि के पुष्पों का प्रयोग करना चाहिए। शुचिर्भूत हो पीले कपड़े पहनकर साधक पूर्वाभिमुख बैठकर ही जप करें। उसे ब्रह्मचर्य का पालन अनिवार्यतः करना चाहिए। जप के पूर्व पूर्वाभिमुख आसन पर बैठकर आसनशुद्धि, भूशुद्धि, भूतशुद्धि, अङ्गन्यास, करन्यास आदि करना चाहिए। जप संख्या एक लाख बतलाई गई है। विशेष बात यह बताई है कि प्रतिदिन जप के अन्त में दशांश होम पीले पुष्पों से अवश्य करना चाहिए।

महाविद्या बगुलामुखी का ध्यान निम्नलिखित है, जो जप से पूर्व करणीय है–

सौवर्णासनसंस्थितां त्रिनयनां पीतांशुकोल्लासिनीं,
हेमाभाङ्गरुचिं शशाङ्कमुकुटां सच्चम्पकस्रग्युताम्।
हस्तैर्मुद्गरपाशवज्ररसनाः सम्बिभ्रतीं भूषणैः,
व्याप्ताङ्गीं वगलामुखीं त्रिजगतां संस्तम्भिनीं चिन्तयेत्॥

(4) ऋणमोचन के लिए मन्त्र

कुश की जड़, बिल्व का पञ्चाङ्ग (पत्र, फल, बीज, लकड़ी और जड़) तथा सिन्दूर–इन सबका चूर्ण बनाकर चन्दन की पीठिका पर नीचे लिखे मन्त्र को लिखे। तदनन्तर पञ्चोपचार से पूजन करके गो–घृत के द्वारा 44 दिनों तक प्रतिदिन सात बार हवन करें। मन्त्र की जप संख्या कम–से–कम 10,000 है, जो 44 दिनों में पूरी होनी चाहिए। 43 दिनों तक प्रतिदिन 228 मन्त्रों का जाप हो और 44वें दिन 196 मन्त्रों का। तद्नन्तर 1000 मन्त्र का जप दशांश के रूप में करना आवश्यक है। मन्त्र यह है–

ॐ आं ह्रीं क्रौं श्रीं श्रियै नमः ममालक्ष्मीं नाशय नाशय मामृणोत्तीर्णं कुरु कुरु सम्पदं वर्धय वर्धय स्वाहा॥

(5) भगवत्कृपा से पुत्र प्राप्ति के लिए
'सन्तान–गोपाल मन्त्र व यन्त्र'

०८	०१	३४	२९
३०	३३	०४	०५
०२	०७	२८	३५
३२	३१	०६	०३

रविवार के दिन 'पुत्रजीवाबूटी तथा शिवलिङ्गी बूटी' को जड़, डाली तथा पत्तों सहित उखाड़ लाये। फिर एक वर्णवाली गौ के दूध के साथ उसे कुमारी के द्वारा पिसवाकर एक ही वर्णवाली गौ के दूध के साथ मिलाकर रजोदर्शन से शुद्ध होकर चौथे दिन से छठे दिन तक–तीन दिन पिये। दवा की मात्रा एक तोला प्रतिदिन। मिश्री मिलाकर दूध–भात का भोजन करें। अधिक परिश्रम न करें। दवा पीने से पूर्व नीचे लिखे दोनों मन्त्रों की एक–एक माला (108 दाने की) श्रद्धा विश्वासपूर्वक अवश्य जप लें।

'ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।' 'देवकीसुत गोविन्द वासुदेव जगत्पते।
देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः॥'

तदनन्तर प्रतिदिन दवा पीने से पूर्व उपर्युक्त 'देवकीसुत गोविन्द·······' मन्त्र की एक माला का जप कर लें।

साथ ही (७२) यन्त्र का भी प्रयोग करें। इस यन्त्र को भोजपत्र पर अष्टगन्ध से लिखकर बांध

(7) तत्त्वज्ञान प्राप्ति हेतु हनुमद् मन्त्र

साथ ही (७२) यन्त्र का भी प्रयोग करें। इस यन्त्र को भोजपत्र पर अष्टगन्ध से लिखकर बाई भुजा, कमर या कण्ठ में ताँबे के तावीज़ में डालकर धूप देकर धारण कर लें। हरिवंशपुराण के पाठ करने अथवा श्रवण से भी पुत्र प्राप्ति होती है।

व्रतोपवास द्वारा सन्तानोत्पत्ति–(1) सन्तान प्राप्ति के लिए भाद्रपद कृष्ण सप्तमी को व्रत किया जाता है। इस दिन उपवास रहकर भगवान् विष्णु का पूजन औरदूसरे दिन "**ॐ क्ली कृष्णाय गोविन्दाय गोपीजन बल्लभाय स्वाहा**"–इस मन्त्र से अग्नि में यव-तिलादि की 108 बार आहुति देकर इच्छा और श्रद्धानुसार भोजन कराएं। पारणा में बिल्वपत्र खाकर षड्रस पदार्थों का भक्षण करें। तदनन्तर प्रत्येक मास की कृष्ण सप्तमी के दिन ऐसा ही व्रत करें। वर्ष पूरा होने पर ब्राह्मण को गोदान करें। वाराह पुराण का वचन है कि ऐसा करने से पुत्रार्थी की निश्चित रूप से मनोकामना पूर्ण होती है।

(2) **पौष शुक्ल एकादशी**–पुत्रदा एकादशी के नाम से विख्यात है। इस दिन नियमपूर्वक एकादशी व्रत करने वाले व्रती की मनोकामना निश्चित रूप से पूर्ण होती है।

(6) लक्ष्मी प्राप्ति एवं शत्रुनाशक 'श्रीबटुक–भैरव मन्त्र'

मन्त्र–ॐ ह्रीं वं बटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु-कुरु बटुकाय ह्रीं।।

विनियोग–ॐ अस्य श्री आपद्उद्धरण श्री बटुक भैरव-मन्त्रस्य वृहदारण्यको नाम ऋषिः त्रिष्टुप् छन्दः श्री बटुक भैरवो देवता, ह्रीं बीजं, स्वाहा शक्तिः भैरवः कीलकं मम कार्यसिद्धयर्थे पाठे/जपे विनियोगः।

ध्यान–

ॐ कर कलित कपालः, कुण्डलीदण्डपाणिः।
तरुण तिमिर नील व्याल यज्ञोपवीतिः।
क्रतुसमयसपर्या विघ्न विच्छेद हेतुः।
जयति विघ्न नाथः सिद्धि दः साधकानाम्।

विघ्ननाशक बटुक भैरव यन्त्र

विधि–इस यन्त्र को गोरोचन व कुंकम से भोजपत्र पर स्वच्छ होकर लिखें। अमुक की जगह जिस पर विपत्ति हो उसका नाम लिखें। धूप-दीप आदि से पूजन करें। बटुक भैरव मन्त्र का जाप करें। तावीज़ में रखकर हाथ में बाँध लें। इससे आपत्तियाँ से उद्धार हो। लक्ष्मी की कृपा होगी, शत्रु का नाश तथा किसी प्रकार का अनिष्ट न होगा।

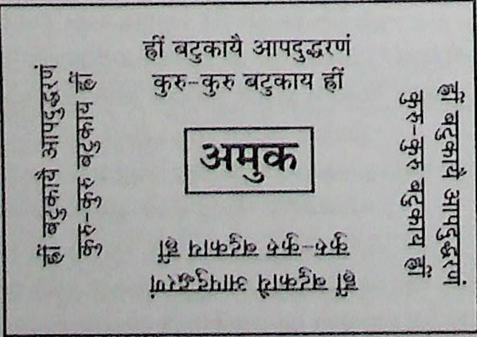

(7) तत्त्वज्ञान प्राप्ति हेतु हनुमद् मन्त्र

ॐ नमो हनुमते मम मदनक्षोभं संहर संहर आत्मतत्त्वं प्रकाशय प्रकाशय हुं फट् स्वाहा।।

–नारद पुराण

–यह साढ़े छत्तीस अक्षरों का मन्त्र है। इसके वसिष्ठ मुनि, अनुष्टुप छन्द और हनुमान देवता हैं। 'तार (ॐ) नमो हनुमते' इतना कहकर तीन बार जाठर (म)–का उच्चारण करें। फिर 'दनक्षोभम्' कह-कह कर दो बार संहर यह क्रियापद बोलें।

सात-सात, छः, चार, आठ तथा चार मन्त्राक्षरों द्वारा षडङ्ग–न्याय करके कपीश्वर हनुमान जी का इस प्रकार ध्यान करें–

जानुस्थवामबाहुं च ज्ञानमुद्रापरं हृदि।
अध्यात्मचित्तमासीनं कदलीवनमध्यगम्।।
बालर्ककोटिप्रतिमं ध्यायेज्ज्ञानप्रदं हरिम्।

'हनुमान जी का बायाँ हाथ घुटने पर रखा हुआ है। दाहिना हाथ ज्ञानमुद्रा में स्थित हो, हृदय से लगा है। वे अध्यात्मतत्त्व का चिन्तन करते हुए कदलीवन में बैठे हुए हैं। उनकी कान्ति उदयकाल के कोटि-कोटि सूर्यों के समान है। ऐसे ज्ञानदाता श्री हनुमान जी का ध्यान करना चाहिए।

इस प्रकार ध्यान करके एक लाख जाप करें और घृत सहित तिल की दशांश आहुति दें, फिर पूर्वोक्ति पीठ पर पूर्ववत प्रभु श्री हनुमान जी का पूजन करें। यह मन्त्र जप किये जाने पर निश्चय ही कामविकार का नाश करता है और साधक कपीश्वर हनुमान जी के प्रसाद से तत्त्वज्ञान प्राप्त कर लेता है।

(8) विदेश में सफलता हेतु मन्त्र

किसी विशेष उद्देश्य हेतु प्रदेश अथवा विदेश यात्रा में सफलता प्राप्ति हेतु निम्नलिखित श्री हनुमान मन्त्र की एक माला अथवा कम से कम 21 बार **श्री हनुमान मन्दिर** में दीप जलाकर श्रद्धापूर्वक जप करने से मनुष्य अपने मनोरथ में सफल हो जाता है। पाठारम्भ एवं समाप्ति पर श्री हनुमत्कवच का भी एक बार पाठ किया जाये तो सिद्धि अवश्यंभावी हो जाती है।

मन्त्र–

त्रैलोक्यं त्रातुकामं सकल भुविगतं राम दूतं नमामि।।
अपराजित नमस्तेऽस्तु नमस्ते रामपूजितं।
प्रस्थानं च करिष्यामि सिद्धिर्भवतु मे सदा।।

(9) भूमि–मकान–जायदाद–कृषिभूमि खरीदने/प्राप्ति के लिए

किसी से भूमि/जायदाद खरीदने या किराये पर लेने का प्रयास किया जा रहा हो अथवा किसी वाद-विवाद-शत्रुता-मुकद्दमा आदि के चक्कर में अपनी ही ज़मीन-जायदाद-मकान

आदि नष्ट होने की स्थिति पैदा हो रही हो तो द्विपुष्कर या त्रिपुष्कर योग जिस दिन पड़े, उस दिन अपनी आकांक्षा के अनुसार संकल्प करके श्रीगणेश-गौरी-कार्त्तवीर्य-दत्तात्रेय और वराह देवता की विधिवत् पूजा करके 10 दिन इस मंत्र का जाप 10-10 माला प्रतिदिन करें-

''ॐ एकदण्ष्ट्राय विद्महे महावराहाय धीमहि तन्नो विष्णुः प्रयोदयात्॥''

11वें दिन इसी मंत्र के 10 माला के जप द्वारा तिल, मधु, घी का हवन करें। फिर 12वें दिन से 27 दिन तक, कुल 16 दिन 5-5 माला प्रतिदिन इसी मंत्र का जप करें-

''ॐ नमो भगवते वराहरूपाय भूर्भुवः स्वः पतये भूपतित्वं मे देहि च दापय स्वाहा॥''

28वें दिन इसी मंत्र के 8 माला जप द्वारा खड़ी हल्दी और घी का हवन करें। फिर 29वें दिन से 40 दिन तक, कुल 12 दिन 12-12 माला प्रतिदिन इस मंत्र का जप करें-

''ॐ श्रीवराहायधरण्युद्धारणाय स्वाहा''

41वें दिन इसी मंत्र का 15 माला जप छोटी इलायची, मधु, घी का हवन करें। 42वें दिन 3 ब्राह्मणों को विधिवत भोजन कराकर सर्वांग वस्त्र दान देने से भूमि/मकान/जायदाद की इच्छित कामना पूर्ण होती है।

(10) पौराणिक मृत्युञ्जय मन्त्र

निम्न पौरागिक मृत्युञ्जय मन्त्र द्वारा महारूद्र रूप मृत्युञ्जय देव के रोगों, बुढ़ापा, जन्म-मृत्यु और कर्म-बन्धनों की पीड़ाओं एवं कष्टों से छुड़वाने के लिए पाठ किया जाता है।

''ॐ मृत्युञ्जय. महारूद्र ! त्राहि मां शरणागतम्।
जन्म-मृत्यु जरा रोगैः पीडितं कर्म बन्धनैः॥''

(11) अकाल मृत्यु एवं कालसर्पादि दोषों की शान्ति के लिए

''ॐ नमो नीलकण्ठाय नमः'' *अथवा ''ॐ नीलकण्ठाय नमः'*

दोनों मन्त्रों का एक ही भाव-अर्थ है कि नीलकण्ठ भगवान् शिव को नमस्कार करते हैं। इस मन्त्र के जप से विभिन्न प्रकार के पापों से निवृत्ति, अकाल मृत्यु भय, तीव्र ज्वर, रूधिर-विकार, कुष्ठादि रोग, भूत-प्रेतादि बाधाएं, सर्पविषादि से भय तथा जन्म-कुण्डली में कालसर्पादि दोषों की शान्ति होती है। यथेष्ट संख्या में संकल्पपूर्वक **श्री नीलकण्ठ स्तोत्र** का पाठ करना भी विशेष लाभकारी होता है।

उपरोक्त मन्त्रों का विनियोग ध्यान एवं अनुष्ठान विधि के लिए **'शिवमन्त्रावली'** पुस्तक में से अवलोकन करें।

इसके अतिरिक्त **श्रीनीलकण्ठ स्तोत्र** के लिए **'अनिष्ट ग्रहों के चमत्कारी उपाय एवं टोटके'** (लेखक : पं. पन्ना लाल जी) नामक पुस्तक में से देखें।

कुछ उपयोगी तांत्रिक प्रयोग एवं टोटके

(1) विद्या लाभ के लिए गुडुच्यादि प्रयोग–किसी शुभ मुहूर्त्त में गुरूचि, अपामार्ग, बायविडंग, शंखिनी, ब्राह्मी, वच, सोंठ और शतावरी–इन सबको बराबर-बराबर लेकर उसका चूर्ण करें, तदनन्तर गोघृत में मिलाकर उसकी आठ-आठ आने भर की 44 गोलियां बनाकर रख लें और **'ॐ ऐं ह्रीं ह्रों हयग्रीवाय नमो मां विद्यां देहि देहि बुद्धिं वर्द्धय वर्द्धय हुं, फट् स्वाहा।।'**

इस मन्त्र को प्रतिदिन सौ बार पढ़कर मन में विद्या-बुद्धि की प्राप्ति और वृद्धि का विश्वास करके एक गोली रख लें। यह अनुभूत प्रयोग है।

(2) रोगमुक्ति के लिए–यदि परिवार में कोई सदस्य भयंकर रोग से ग्रसित है और दवाईयों से लाभ न मिल रहा हो तो चाँदी के पात्र में केशर युक्त जलभर रात्रि में सिरहाने रखें। सुबह उस जल को पीपल या तुलसी के पौधे पर चढ़ा देने से लाभ होगा। साथ ही दवाई आदि लेते समय **'ॐ केशवाय नमः'**, **'ॐ माधवाय नमः'** एवं **'ॐ नारायणाय नमः'** मन्त्र उच्चारण करके ही दवाई लें। अवश्य लाभ होगा।

(3) अचूक लक्ष्मी वृद्धि के लिए तांत्रिक प्रयोग–भाद्रपद मास की कृष्ण पक्ष में जब भरणी नक्षत्र हो, उस दिन चार कलशों में जल भरकर किसी निर्जन स्थान पर रख आएं। दूसरे दिन उन चार कलशों में से जो कलश सबसे ज्यादा खाली हो उस कलश को घर ले आएं। बाकी कलशों का जल वहीं फैलाकर छोड़ दें। घर लाए कलश में अनाज भरकर पूजा घर में रखने से माँ अन्नपूर्णा एवं माँ लक्ष्मी दोनों प्रसन्न होती हैं। घर के भण्डार गृह में कमी नहीं आती और ऋद्धि-सिद्धि की वृद्धि होती है।

(4) नौकरी प्राप्ति के लिए–नौकरी की इच्छा रखने वाले संघर्षरत जातक/जातिका को दीपावली की शाम **श्री लक्ष्मी पूजा** के समय चने की दाल का कुछ जल श्री लक्ष्मी जी के चरणों पर छिड़क कर पूजा करें। पूजा समाप्ति के बाद दाल इकट्ठी करके पीपल के वृक्ष में समर्पित कर दें। नौकरी के लिए मार्ग-प्रशस्त होंगे।

(5) शीघ्र विवाह हेतु–कन्याओं को यह प्रयोग शुक्ल पक्ष के प्रथम गुरुवार से शुरू करें। गुरूवार की शाम को पाँच प्रकार की मिठाई के साथ हरी इलायची का जोड़ा, ताँबे के बर्तन में शुद्ध जल तथा शुद्ध घी का दीपक अर्पित करें। यह तीन गुरुवार करना चाहिए। इसके अतिरिक्त भूलकर भी वृद्धों का अपमान न करें। वृद्ध व्यक्तियों का यथा सामर्थ्य सम्मान एवं आर्थिक सहायता करनी चाहिए।

–कुछ अनुभूत उपयोगी उपाय–

(1) प्रातः स्नानादि कर के घर के प्रत्येक सदस्य को माथे पर चन्दन का तिलक लगाना चाहिये और उसे लगा ही रहने दें। इससे कई प्रकार के रोग आप से दूर रहेंगे।

(2) निवास के मुख्यद्वार पर बाहर की ओर श्वेतार्क का पौधा लगाने से शत्रु,रोग व चोटादि से घर सुरक्षित रहता है।

(3) घर में तुलसी का पौधा लगाकर, उसका विधिपूर्वक पूजन करके श्री तुलसी स्तोत्र का

टोटके (लेखक : पं. पन्ना लाल जी) नामक पुस्तक में से देखें।

(3) घर में तुलसी का पौधा लगाकर, उसका विधिपूर्वक पूजन करके श्री तुलसी स्तोत्र का

बारह राशियों का ग्रहगोचर अनुसार मासागत फलादेश-सन् 2020 ई.

आगे बारह राशियों का मासिक एवं वार्षिक फल ग्रहों की गोचर स्थित्यनुसार लिखा गया है। अपने जीवन सम्बन्धी और अधिक जानकारी एवं महत्त्वपूर्ण पक्ष जैसे-विद्या, व्यवसाय, नौकरी, विवाह, सन्तान, विदेश गमनादि प्रश्नों सम्बन्धी विशेष फलादेश तथा तत्सम्बन्धी समस्याओं के विशेष उपाय जानने के लिए शुद्ध एवं बड़ी जन्मपत्री का होना आवश्यक है। हमारे कार्यालय से शुद्ध एवं विस्तृत हस्तलिखित जन्मपत्री बनवाने के लिए जातक/जातिका का नाम, जन्म-समय, जन्म स्थान (Place & Time of Birth), माता-पिता का नाम एवं व्यवसाय आदि का विवरण तथा अग्रिम रूप में पूरी फीस भेजें। मध्यम विस्तृत जन्मपत्री हस्तलिखित फलादेश सहित की फीस 1500, अधिक वृहद् विस्तृत की 2500 रुपए। सामान्य मध्यम जन्मपत्री की 801 रु., वार्षिक वर्षफल, उपायों आदि सहित की फीस 751 रु.। विदेश में उत्पन्न जातक की फीस 31 पौंड अथवा 51 डालर होगी। डाक व्यय 50 रु. जोड़कर भेजें, फीस M.O. या ड्राफ्ट द्वारा अग्रिम इस पते पर भेजें- **–पं. विवेक शर्मा सुपुत्र पं. पन्ना लाल शर्मा, अड्डा होशियारपुर चौंक, जालन्धर-8 (पंजाब), फोन-0181-2457959**

मेष राशि (Aries)—(चू, चे, चो, ला, ली, लू, ले, लो, अ)

वर्ष प्रवेश कुंडली

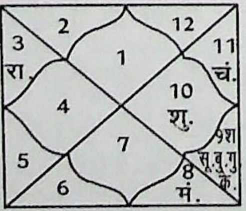

वर्षफल*—*वर्षारम्भ से 29 मार्च तक तथा पुनः 30 जून से 19 नवं. तक गुरु की शुभ दृष्टि इस राशि पर रहने से मांगलिक कार्यों पर खर्च, धर्म-कर्म में रूचि, विद्या तथा आध्यात्म के क्षेत्र में सफलता मिलेगी। वर्षारम्भ से 7 फर. तक राशिस्वामी मंगल अष्टमस्थ होने से स्वास्थ्य कष्ट, घरेलु उलझनें तथा धन का अपव्यय व लाभ में कमी रहे। ता. 10 सितं. से 13 नवं. तक मंगल वक्री रहने से स्वभाव में तेजी एवं उत्तेजना बढ़ेगी।* ***उपाय*–*वर्षभर मंगलवार का व्रत विधि विधानपूर्वक रखें। प्रातः एवं सायं श्रीहनुमान चालीसा का पाठ करना, हनुमान जी की मूर्ति पर सिंधूर व तेल चढ़ाकर प्रसाद बाँटना शुभ होगा।* (नोट*–*स्त्रियां हनुमान जी की मूर्ति स्पर्श न करें।*)

जनवरी–मंगल अष्टमस्थ रहने से स्वास्थ्य कष्ट, घरेलु उलझनें तथा बनते कामों में अड़चनें रहेंगी। धन का अपव्यय, लाभ में कमी एवं गुप्त चिन्ताएं रहेंगी। यद्यपि गुरु की दृष्टि रहने से मांगलिक कार्यों पर खर्च, धर्म एवं विद्या के क्षेत्र में सफलता मिलेगी। **उपाय**–**मकर संक्रान्ति** के पुण्यकाल वाले दिन (ता. 15 को) प्रातः तिल-गुड़ से निर्मित मिठाई, गर्म वस्त्र तथा नवीन **पंचांगदिवाकर** का दान ब्राह्मण को करना शुभ रहेगा।

फरवरी–ता. 7 तक व्यर्थ की भागदौड़ रहे। परन्तु ता. 8 से मंगल भाग्यस्थान तथा गुरु की दृष्टि के कारण गत बिगड़े कार्यों में सुधार तथा स्वास्थ्य भी बेहतर होगा। धर्म-कर्म में रूझान एवं शुभ कार्यों पर खर्च होगा। **उपाय**–श्रीसुन्दरकाण्ड का पाठ शुभ रहेगा।

मार्च–ता. 21 तक मिश्रित परिस्थितियों के मध्य खर्च अधिक, घरेलु तनाव भी रहेंगे। सर्विस/व्यवसाय में संघर्षपूर्ण परिस्थितियों का सामना रहे, परन्तु ता. 22 से मंगल उच्च राशिगत (मकर) संचार करने से आकस्मिक धन लाभ के चाँस के साथ-साथ अचानक खर्च भी बढ़ेंगे। **उपाय**–मंगलवार को गऊ माता को गुड़ मिश्रित रोटी खिलाना कल्याणकारी रहेगा।

अप्रैल–कुछ रुके हुए महत्त्वपूर्ण कार्यों में सफलता प्राप्त हो, उत्साह एवं उद्यम में वृद्धि होगी। धर्म-कर्म की ओर रूचि, परन्तु क्रोध अधिक तथा वृथा भागदौड़ बनी रहेगी। ता. 13 से सूर्य भी उच्चस्थ होकर संचार करने से पराक्रम व पुरुषार्थ से कुछ बिगड़े कार्य बनेंगे। **उपाय**–ता. 13 से वैशाख मास में **'पाप-प्रशमन स्तोत्र'** का पाठ करना कल्याणकारी रहेगा।

मई–ता. 4 से मंगल कुम्भ (शत्रु) राशिगत होने से स्वास्थ्य विकार, शरीर कष्ट तथा आर्थिक परेशानियों का सामना रहे। राहु तृतीयस्थ होने से परिवार में मतभेद व कलह के योग हैं। सन्तान सम्बन्धी कार्यों में विघ्न रहे। **उपाय**–सन्तान की उन्नति के लिए **'षष्ठी देवी स्तोत्र'** का पाठ करें। (देखें पं. देवीदयालु संस्थान द्वारा प्रकाशित **'जन्मदिन पूजा पद्धति'**)

जून–किसी प्रियजन से मुलाकात परन्तु सन्तान पक्ष से कुछ चिन्ता रहे। मानसिक तनाव व शत्रु वर्ग से परेशानी रहे। व्यर्थ की भागदौड़ भी अधिक रहे। ता. 18 से अनावश्यक खर्च व घरेलु उलझनें अधिक रहेंगी। **उपाय**–श्रीहनुमान कवच का पाठ करना कल्याणकारी रहेगा।

जुलाई–पारिवारिक एवं आर्थिक हालात अनिश्चित रहेंगे। यात्राएं भी रहेंगी। स्वास्थ्य में खराबी और पारिवारिक चिन्ता रहेगी। धोखा मिलने की सम्भावना रहेगी। सावधानी बरतें। खर्चों की अधिकता से घरेलु उलझनें बढ़ेंगी। ***उपाय*–ता. 16 से **श्रावण माहात्म्य** का पाठ करके शिवलिङ्ग पर कच्ची लस्सी तथा बेलपत्र चढ़ाना शुभ होगा।

अगस्त–ता. 15 तक मंगल द्वादशस्थ होने से पारिवारिक उलझनें तथा आकस्मिक खर्च बढ़ेंगे। अत्यधिक कठिन संघर्ष के बाद भी धन-लाभ कम रहेगा। ता. 10 से मंगल स्वराशिगत (मेष) होने से निर्वाह योग्य धन लाभ के अवसर प्राप्त होते रहेंगे। परन्तु मनोरंजन एवं विलासादि कार्यों पर खर्च अधिक रहेंगे। **उपाय**–उत्तम वर प्राप्ति के लिए **'श्रीविश्वनाथ मङ्गल स्तोत्र'** का पाठ करें। (देखें पुस्तक **'शिव-मन्त्रावली'**)

सितम्बर–मंगल के संचार तथा गुरु की दृष्टि होने से धन लाभ एवं उन्नति के अवसर प्राप्त होंगे। उच्च प्रतिष्ठित लोगों के साथ सम्पर्क बनेंगे। सांसारिक कार्यों में प्रगति होगी। **उपाय**–ता. 2 से 17 तक पितृपक्ष में दिवंगत पितरों के निमित्त श्राद्ध भोजन अवश्य करवाएं।

अक्तूबर–ता. 4 से वक्री मंगल पुनः द्वादश (मीन) भाव में आने से पारिवारिक एवं घरेलु उलझनों के कारण मन अशान्त एवं असन्तुष्ट रहेगा। गुरु की दृष्टि के कारण सन्तान सम्बन्धी किसी बिगड़े कार्य में सुधार एवं कार्यसिद्धि के योग बनेंगे। किन्तु धन का अपव्यय व वृथा भागदौड़ बनी रहेगी। **उपाय**–ता. 16 तक पं. देवीदयालु कृत **पुरुषोत्तम मास माहात्म्य** तथा ता. 17 से **कार्तिक मास माहात्म्य** का पाठ करें।

नवम्बर–सूर्य की उच्च दृष्टि होने से बिगड़े कामों में सुधार होगा। परन्तु राहु द्वितीयस्थ एवं केतु अष्टमस्थ होने से कुछ आर्थिक समस्याएं एवं शारीरिक कष्ट उभरते रहेंगे। उत्तरार्द्ध में क्रोध एवं आवेश से बचना चाहिए। **उपाय**–मंगलवार का विधिपूर्वक व्रत रखें।

दिसम्बर–ता. 23 तक मंगल पर शनि की दृष्टि रहने से घरेलु परिस्थितियों के कारण तनाव रहेगा। कार्य-व्यवसाय में उलझनें एवं रुकावटें पैदा होंगी। क्रोध अधिक एवं तनाव से परिवारिक जनों के साथ मनमुटाव हो। **उपाय**–श्रीहनुमान कवच का पाठ भी शुभ रहेगा।

वृष राशि (Taurus)—(ई, उ, ए, ओ, वा, वि, वू, वे, वो)

वर्ष प्रवेश कुंडली

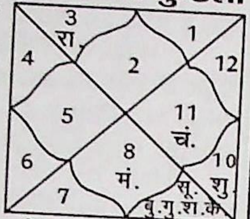

वर्षफल—*वर्षारम्भ से 23 जन. तक इस राशि पर शनि की ढैय्या तथा 7 फर. तक मंगल की विशेष दृष्टि रहने से संघर्ष अधिक, बनते कार्यों में विघ्न, मानसिक तनाव और कठिन हालात का सामना रहेगा। परन्तु ता. 3 फर. से 28 फर. तक राशिस्वामी शुक्र उच्च राशिस्थ होने से धन लाभ व उन्नति के अवसर प्राप्त होंगे। ता. 23 सितं. से वर्षान्त तक इस राशि पर राहु का संचार होने से बनते कार्यों में विलम्ब, नई-नई समस्याएं प्रकट होती रहें।* ***उपाय***—*हर शुक्रवार छोटी कन्याओं का पूजन करके उन्हें बर्फ़ी, फलादि भेंट देकर स्वयं सन्तोषी माता का व्रत रखें।*

जनवरी—मासारम्भ में राशिस्वामी शुक्र भाग्य स्थान में होने से धन लाभ व उन्नति के अवसर मिलेंगे। परन्तु शनि-ढैय्या के कारण खर्च भी अधिक रहेंगे। व्यवसाय में दौड़-धूप बढ़ेगी। इन दिनों वाहन चलाते समय विशेष सावधानी बरतें। **उपाय**—श्रीदुर्गा-सप्तशती पाठ करना शुभ रहेगा।

फरवरी—ता. 3 से शुक्र उच्च राशिस्थ (मीन) होने से धन लाभ एवं गत किए गए प्रयासों में सफलता मिलेगी। भूमि-वाहनादि सुखों की प्राप्ति होगी। किसी प्रियबन्धु से मुलाकात होगी। गृह में कोई शुभ कार्य भी सम्पन्न होगा। ***उपाय***—ता. 21 को **श्रीमहाशिवरात्रि** के दिन गुड़-शक्कर से रुद्राभिषेक करना कल्याणकारी रहेगा।

मार्च—मासारम्भ से शुक्र स्वराशिगत (वृष) होने से मान-सम्मान, धन लाभ एवं पदोन्नति होने के अवसर प्राप्त होंगे। रुके हुए कार्यों में कुछ सफलता मिलेगी। द्वितीय भाग में अपव्यय बढ़ेगा। दौड़-धूप अधिक रहेगी। तनाव एवं उलझनें, खर्च भी बढ़ेंगे। **उपाय**—हर शुक्रवार को '**श्रीसूक्तम्**' का पाठ करना शुभ रहेगा।

अप्रैल—परिस्थितियों में परिवर्तन होंगे। व्यवसाय में अचानक लाभ प्राप्ति के अवसर प्राप्त होंगे। स्त्री सुख एवं परिवार में खुशी के अवसर मिलेंगे। परन्तु अष्टमस्थ केतु के कारण स्वास्थ्य परेशानी, आँखों में कष्ट एवं सरकारी क्षेत्रों में विघ्नों का सामना रहे। **उपाय**—शुक्र गायत्री मन्त्र का पाठ करें।

मई—मासारम्भ में परिस्थितियां शुभ रहेंगी तथा धन लाभ होगा। परन्तु ता. 13 से शुक्र वक्री रहने से तथा ता. 14 से सूर्य इस राशि पर होने से क्रोध की अधिकता, बनते कार्यों में विघ्न और आँखों में कष्ट व मानसिक तनाव होगा। **उपाय**—'**पापप्रशमन स्तोत्र**' का पाठ करना शुभ रहेगा। (देखें '**पंचांगदिवाकर**'-वि. संवत् २०७४)

जून—वृष राशि पर सूर्य का संचार तथा शुक्र वक्री होने से दौड़-धूप अधिक रहे तथा व्यवसाय में परेशानियों का सामना रहे। आराम कम व संघर्ष अधिक रहे, स्वभाव में तेजी व क्रोध अधिक रहे। यात्रा भी हो। **उपाय**—सन्तान की उन्नति के लिए '**षष्ठी देवी स्तोत्र**' का पाठ करें। (देखें पं. देवीदयालु संस्थान द्वारा प्रकाशित '**जन्मदिन पूजा पद्धति**')

जुलाई—शुक्र स्वराशिगत (वृष) रहने से किसी नवीन कार्य की योजना बने, पारिवारिक वातावरण पहले से सुखद होगा। गत किए गए प्रयासों से भाग्योन्नति एवं श्रेष्ठ व्यक्तियों से सम्पर्क लाभकारी सिद्ध होंगे। परन्तु निकटस्थ भाई-बन्धुओं के साथ मनमुटाव एवं कलह-क्लेश रहेगा। **उपाय**—'**महाकाल-स्तुति**' का श्रावण मास में पाठ करें। (देखें पुस्तक '**शिव-मन्त्रावली**')

अगस्त—व्यवसायिक क्षेत्र में अनेक उतार-चढ़ाव एवं संघर्ष का सामना रहेगा। कुछ आर्थिक परेशानियां भी बनी रहेंगी। मानसिक तनाव एवं निकट-बन्धुओं से तकरार होगी। सिर-दर्द एवं आँखों में कष्ट की सम्भावना बनी रहेगी। **उपाय**—ता. 15 तक '**महाकाल-स्तुति**' का ही पाठ करें।

सितम्बर—शुक्र तृतीयस्थ में होने से वृथा दौड़-धूप एवं निकट बन्धुओं से तनाव अधिक रहेंगे। परिवार में मतभेद एवं मन में अशान्ति रहेगी। ता. 23 से राहु इस राशि पर संचार करने से आराम कम, संघर्ष अधिक तथा अकस्स्मात् दूरस्थ यात्रा की सम्भावना बनेगी। **उपाय**—ता. 3 से 17-श्राद्धकाल में दिवंगत पितरों के निमित्त श्राद्ध भोजन अवश्य कराएं।

अक्तूबर—मासारम्भ से शुक्र चतुर्थस्थ संचार करने से परिस्थितियों में विशेष परिवर्तन होंगे। आय कम और खर्च अधिक रहेगा। भाई-बन्धुओं से मतभेद, स्वभाव में तेजी एवं उत्तेजना से बनते कामों में विघ्न उत्पन्न होंगे। गत किए गए प्रयासों का प्रतिफल कुछ दिनों के बाद प्राप्त होगा। **उपाय**—पं. देवीदयालु प्रकाशित '**कार्तिक माहात्म्य**' का पाठ करें।

नवम्बर—मासारम्भ में शुक्र नीचस्थ संचार करने से मानसिक तनाव एवं विद्या में विघ्न-बाधाओं का सामना रहेगा। परन्तु ता. 16 से शुक्र षष्ठस्थ होने से परिस्थितियों में कुछ सुधार होने के योग हैं। धीरे-धीरे आर्थिक क्षेत्र में कुछ परिवर्तन एवं लाभ के योग बनेंगे।

दिसम्बर—अत्यन्त संघर्ष एवं कठिनाईयों के बावजूद निर्वाह योग्य आय के साधन बनते रहेंगे। परन्तु राहु संचार होने से सांझेदारी के कार्यों में हानि, अचानक लाभ तथा अचानक ही हानि की संभावनाएं रहेंगी। व्यर्थ की यात्राएं हों। **उपाय**—पं. देवीदयालु संस्थान की सन्तोषी माता व्रत (शुक्रवार) कथा स्थानीय पुस्तक विक्रेता से लेकर व्रत धारण करें।

मिथुन राशि (Gemini)—(क,की, कु, घ, ङ, छ, के, को, ह)

वर्ष प्रवेश कुंडली

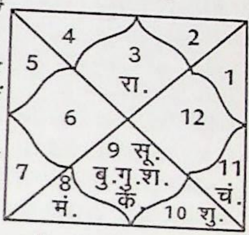

वर्षफल (2020 ई.)—*वर्षारम्भ से 22 सितं. तक इस राशि पर राहु का संचार तथा 24 जन. से वर्षान्त तक शनि की ढैय्या का अशुभ प्रभाव रहने से प्रत्येक कार्य में विलम्ब व विघ्न-बाधाएँ रहेंगी। ता. 24 मई से 1 अग. के मध्य बुध स्वराशिगत (मिथुन) संचार करने से अकस्मात् धन-लाभ, मान-सम्मान में वृद्धि तथा बिगड़े कार्यों में सुधार के संकेत मिलेगें।* ***उपाय***—*ता. 24 जन. के बाद लगातार 7 शनिवार सूखे नारियल को तेल का टीका लगाकर काली डोरी लपेटकर अपने सिर से 3 बार छुआकर शनि बीज मन्त्र पढ़ते हुए सायंकाल चलते पानी में बहा दें।*

जनवरी—मासारम्भ में ता. 13 तक सूर्य-बुध-गुरु-शनि आदि ग्रहों की संयुक्त दृष्टियां तथा राहु-संचार रहने से संघर्षमयी परिस्थितियां रहेंगी। क्रोध अधिक रहे, यद्यपि परिवार में शुभ मंगल कार्य पर खर्च, व्यवसाय में उन्नति की योजना बनेगी। **उपाय**—ता. 24 को (मौनी अमावस) को सफेद वस्तुओं का दान, पितृ-तर्पण एवं तीर्थस्नान से पुण्य प्राप्त होंगे।

फरवरी—मासारम्भ से बुध नवम् अर्थात् भाग्य स्थान पर संचार करने से परिस्थितियों में कुछ सुधार होगा। धन लाभ एवं उन्नति के अवसर मिलेंगे। सेहत में भी कुछ बेहतरी होगी। **उपाय**—ता. 21 को (श्रीमहाशिवरात्रि) **श्रीनीलकण्ठ स्तोत्र** का पाठ करना शुभ रहेगा। (देखें-पुस्तक '**शिव-मन्त्रावली**')

मार्च—ता. 21 तक मंगल की विशेष दृष्टि तथा ता. 10 तक बुध वक्री रहने से यद्यपि पुरुषार्थ एवं उद्यम में वृद्धि होगी, कोई आकस्मिक घटना भी घटेगी। धन का खर्च, अकस्मात् बढ़ेगा। किसी निकटबन्धु से धोखा मिलने के भी संकेत हैं।

अप्रैल—ता. 7 से 24 तक राशिस्वामी [illegible]

अनिश्चितता रहेगी। आय कम व खर्च अधिक रहेगा। स्वास्थ्य-हानि, माता-पिता से अनबन, व्यर्थ की यात्रा एवं क्रोध की अधिकता से पारिवारिक उलझनों में बढ़ौत्तरी एवं दिमागी तनाव रहेगा। **उपाय**–श्रीसुन्दरकाण्ड का पाठ करना शुभ रहेगा।

मई–मासारम्भ में आय ठीक रहेगी, परन्तु 9 से 24 बुध 12वें भाव में होने से कार्य-व्यवसाय सम्बन्धी दौड़-धूप अधिक होगी, धन के खर्च भी अधिक रहेंगे। वाहन एवं मनोरंजन आदि कार्यों पर खर्च विशेष होंगे। किसी प्रियबन्धु से मुलाकात हो।

जून–मासारम्भ से ही इस राशि पर बुध-राहु योग होने से विशेष संघर्ष के उपरान्त ही निर्वाह योग्य आय के साधन बनेंगे। अकस्मात् खर्च भी अधिक होंगे। ता. 14 से सूर्य भी बुध-राहु के साथ होने से क्रोध के कारण बनते कार्यों में अड़चनें रहेंगी।

जुलाई–इस मास कुछ सोची योजनाओं में प्रगति, रुके हुए कार्यों में सिद्धि मिले। अष्टम भाव में गुरु-शनि योग के कारण तथा केतु सप्तमस्थ होने से आर्थिक समस्याएँ, शरीरिक कष्ट तथा पति/पत्नी से मतभेद आदि चलते रहेंगे। **उपाय**–ता. 16 से '**श्रावण-माहात्म्य**' का नित्य पाठ करें।

अगस्त–शुक्र-राहु योग रहने से पारिवारिक एवं आर्थिक स्थिति अनिश्चित रहेगी। गुप्त परेशानी, शत्रु-भय एवं शरीर कष्ट के योग हैं। अनावश्यक कार्यों पर धन का खर्च अधिक होगा। स्वास्थ्य नर्म, पेट-विकार, व्यर्थ के झगड़े अथवा वाद-विवाद में परेशानी के योग बनेंगे। सावधानी बरतें।

सितम्बर–ता. 2 से 21 तक बुध उच्च राशिगत रहेगा, परन्तु गुरु की दृष्टि एवं राहु-संचार होने से परिस्थितियों में धीरे-धीरे ही सुधार होगा। ता. 23 से राहु का संचार हट जाने से मानसिक तनाव से कुछ मुक्ति मिलेगी। रुके हुए कार्य बनने प्रारम्भ होंगे। **उपाय**–श्राद्धकाल में **पितृ-स्तोत्र** का पाठ करना शुभ रहेगा। (देखें हमारी '**मुफीद आलम जन्त्री**)

अक्तूबर–बुध पंचमस्थ, गुरु की दृष्टि व शनि-ढैय्या होने के कारण मिश्रित प्रभाव रहेंगे। धर्म-कर्म में रुचि एवं आय के साधन बनते रहेंगे। सन्तान या उनके कैरियर सम्बन्धी चिन्ता रहे। ***उपाय***–प्रतिदिन **कार्तिक माहात्म्य** एवं **तुलसी स्तोत्र** का पाठ करना शुभ रहेगा।

नवम्बर–दौड़-धूप के पश्चात् ही गुज़ारे योग्य आय के साधन बनते रहेंगें। परिवार में मनमुटाव एवं स्वास्थ्य सम्बन्धी परेशानी रहेगी। यद्यपि शुभ एवं धार्मिक कार्यों पर खर्च अधिक होगा। परन्तु मन में गुप्त चिन्ता बनी रहेगी। **उपाय**–कार्तिक माहात्म्य का नित्य पाठ करें एवं तुलसी स्तोत्र का पाठ करें।

दिसम्बर–मासारम्भ में बुध षष्ठस्थ होने से व्यवसायिक क्षेत्रों में दौड़-धूप अधिक एवं स्वास्थ्य कुछ ढीला रहेगा। ज़मीन-जायदाद सम्बन्धी समस्याएँ उत्पन्न होंगी। ता. 17 से बुध की स्वगृही दृष्टि पड़ने से पराक्रम एवं उत्साह में वृद्धि होगी। **उपाय**–बुधवार का व्रत विधिपूर्वक रखें।

कर्क (Cancer)—(हि, हु, हे, हो, डा, डी, डू, डे, डो)

वर्षफल (2020 ई.)—*ता. 8 फर. से 21 मार्च तक मंगल की अष्टम तथा 22 मार्च से 3 मई तक सप्तम दृष्टि (पुनः 16 अग. से 3 अक्तू. तक चतुर्थ नीच) रहने से मानसिक तनाव, क्रोध, उत्तेजना अधिक परन्तु परिश्रम की कमी रहे। व्यर्थ के विवाद से बचें। ता. 30 मार्च से 29 जून तक गुरु की शुभ उच्च दृष्टि रहने से शुभ कार्यों की ओर प्रवृत्ति रहेगी तथा किसी मंगल कार्य की योजना भी बनेगी।* ***उपाय***–*ता. 24 जन. के बाद वर्षभर शनिवार का व्रत रखना शुभ रहेगा।*

वर्ष प्रवेश कुंडली

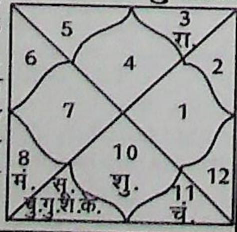

जनवरी–शुभ एवं धार्मिक कार्यों पर खर्च होगा। पारिवारिक माहौल पहले से सुखद होगा। कार्यक्षेत्र में व्यस्तताएं बनी रहेंगी। मान-प्रतिष्ठा में वृद्धि, परिवार में सुखद माहौल होते हुए भी सन्तान सम्बन्धी गुप्त चिन्ता रहेगी। ***उपाय***–ता. 14 से माघ-माहात्म्य का नित्य पाठ करें तथा किसी वृद्ध ब्राह्मण को '**पंचांग**' संकल्पपूर्वक दान दें।

फरवरी–सूर्य-शनि की दृष्टि रहने तथा ता. 8 से मंगल की भी नीच दृष्टि रहने से माता को परेशानी तथा शरीर कष्ट हो सकता है। मुकद्दमेबाजी या शत्रु पक्ष परेशान करें। उत्तरार्द्ध में अत्यधिक परिश्रम के बाद गुज़ारे योग्य आमदन के साधन बनते रहेंगे। ***उपाय***–शीघ्र विवाह के लिए महाशिवरात्रि पर **श्रीविश्वनाथमङ्गल-स्तोत्र** का पाठ करें। (**देखें–शिव-मन्त्रावली**)

मार्च–मंगल-शनि की दृष्टियां रहने से अत्यन्त कठिनाई से निर्वाह योग्य धन प्राप्ति होगी। कारोबार में व्यस्तताएं बढ़ेंगी। खर्चों की अधिकता से मन परेशान रहेगा। गृहस्थ जीवन में तनाव की स्थिति रहे। ***उपाय***–पं. पन्ना लाल ज्योतिषी द्वारा प्रणीत '**श्री दुर्गा-सप्तशती**' में से सिद्ध-कुंजिका स्तोत्र एवं चण्डी-स्तोत्र का पाठ करें।

अप्रैल–मासारम्भ से गुरु की भी शुभ उच्च दृष्टि रहने से मिश्रित प्रभाव रहेंगे। नौकरी/व्यापार में यद्यपि उन्नति व लाभ के अवसर प्राप्त होंगे। परन्तु पारिवारिक एवं निजी उलझनों के कारण लाभ में कमी रहेगी। धार्मिक व शुभ कार्यों की ओर प्रवृत्ति रहेगी।

उपाय–**श्रीदुर्गा-कवच** का पाठ करें। (देखें-**पं. देवीदयालु कृत 'श्रीदुर्गा-सप्तशती'**)

मई–मंगल-शनि के साथ गुरु की भी शुभ दृष्टि होने से बिगड़े हुए कार्यों में धीरे-धीरे सुधार होता जाएगा। परन्तु वृथा भागदौड़ एवं क्रोध की अधिकता से कोई बना हुआ कार्य बिगड़ेगा। ता. 14 से सूर्य लाभ स्थान में होने से अकस्मात् धन लाभ व उन्नति के चाँस भी बनेंगे। उच्च-प्रतिष्ठित लोगों के साथ सम्बन्ध बढ़ेंगे। ***उपाय***–सूर्य उपासना व गायत्री जप करना शुभ होगा।

जून–गुरु व शनि की दृष्टियां होने से गत परिस्थितियों में कुछ सुधार और किसी नवीन कार्य पर खर्च की योजना भी बनेगी। परन्तु निराशा की भावना को त्यागकर कार्य करना होगा। बनते कार्यों में कुछ विघ्नों के बावजूद कामयाबी की सम्भावनाएं बढ़ेंगी।

उपाय–भौम गायत्री मन्त्र का पाठ करें।

जुलाई–शनि की दृष्टि रहने से धन का अपव्यय, किसी उच्चाधिकारी से विरोध, अकारण ही परिवार में तनाव रहे। यात्रा की योजना, किसी बिगड़े हुए कार्य के बन जाने से खुशी का माहौल बनेगा। यात्रा भी होगी। ***उपाय***–श्रीदुर्गा-सप्तशती का पाठ करना *(कीलक-स्तोत्र सहित) शुभ रहेगा।* (देखें-पं. देवी दयालु कृत '**श्रीदुर्गा-सप्तशती**')

अगस्त–मासारम्भ में सूर्य-बुध का संचार होने से घरेलू एवं आर्थिक परेशानियां बनी रहेंगी। क्रोध एवं उत्तेजना से बचें। मानसिक तनाव व क्रोध की भावना अधिक होगी। भाई-बन्धु से मनमुटाव, स्वास्थ्य में गड़बड़ी उत्पन्न हो, मासान्त में कोई शुभ समाचार प्राप्त होगा।

सितम्बर–मासारम्भ से मंगल-शनि ग्रहों की दृष्टियां तथा शुक्र का संचार होने से मानसिक तनाव, उत्तेजना, क्रोध अधिक एवं स्वास्थ्य परेशानी रहे। व्यर्थ के वाद-विवाद से दूर रहें। सुख-साधनों पर खर्च अधिक होगा। वृथा यात्रा की परेशानी भी उठानी पड़ेगी। **उपाय**–श्राद्ध-पक्ष में पितरों की तिथ्यनुसार ब्राह्मण भोजन, तर्पण, पिण्डदान करना कल्याणकारी रहेगा।

अक्तूबर–मंगल की दृष्टि तथा शुक्र का संचार हट जाएगा। व्यवसाय/नौकरी में स्थिति मध्यम रहेगी। आर्थिक क्षेत्र में असमंजस की स्थिति होने से मन अशान्त रहे, व्यवसाय में भी परिवर्तन की योजना बनेगी। शुक्र द्वितीयस्थ होने से मनोरंजन आदि कार्यों पर वृथा खर्च अधिक रहेंगे। **उपाय**–पं. देवीदयालु '**कार्तिक-माहात्म्य**' का पाठ करें।

नवम्बर–पूर्वार्द्ध में निर्वाह योग्य आय के साधन बनते रहेंगे। स्वास्थ्य परेशानी, निकट बन्धुओं से विरोध, घरेलु कलह एवं शत्रु भय बना रहेगा। ता. 15 के बाद सूर्य-केतु पंचमस्थ

होने से सन्तान या उनके कैरियर सम्बन्धी चिन्ता रहे। **उपाय–'षष्ठी देवी स्तोत्र'** का लगातार 40 दिन पाठ करें। (देखें हमारी पुस्तक '**जन्मदिन पूजा पद्धति**')

दिसम्बर—शनि के साथ अब गुरु की भी दृष्टि होने से शुभ एवं धार्मिक कार्यों पर खर्च होगा। पारिवारिक माहौल पहले से सुखद होगा। कार्यक्षेत्र में व्यस्तताएं बनी रहेंगी। मान-प्रतिष्ठा में वृद्धि, परिवार में सुखद माहौल होते हुए भी सन्तान सम्बन्धी गुप्त चिन्ता रहेगी। **उपाय–'षष्ठी देवी स्तोत्र'** का पाठ करें (देखें हमारा '**सन्तान गोपाल स्तोत्र**')

सिंह राशि (Leo)—(म, मी, मू, मे, मो, टा, टी, टू, टे)

वर्ष प्रवेश कुंडली

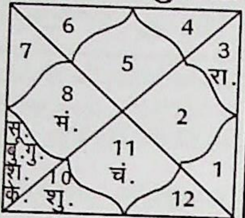

वर्षफल (2020 ई.)—*वर्षारम्भ से 29 मार्च तक पुन: 30 जून से 19 नवं. तक इस राशि पर गुरु की शुभ (नवम) दृष्टि पड़ने से शुभ कार्यों की ओर प्रवृत्ति बढ़ेगी। अकस्मात् धन लाभ हो तथा बिगड़े कार्यों में धीरे-धीरे सुधार होगा। ता. 28 सितं. से 22 अक्तू. तक शुक्र सिंह राशिगत रहने से भौतिक सुखों की प्राप्ति, कार्य-व्यवसाय में वृद्धि परन्तु खर्च बढ़-चढ़ कर रहेगा।* **उपाय**–वर्षभर प्रत्येक रविवार पं. देवीदयालु संस्थान द्वारा प्रकाशित '**आदित्य हृदय स्तोत्र**' का पाठ करें।

जनवरी—मासारम्भ में सूर्य पंचम में होने से कार्य-क्षेत्र में कुछ नवीन योजनाएं बनेंगी। परन्तु लाभ स्थान में राहु होने से आर्थिक परेशानियों का सामना होगा। शनि षष्ठस्थ होने से घरेलू उलझनों के कारण तनाव रहे। **उपाय**–मकर संक्रान्ति को गर्मवस्त्र तथा पंचांग दान करें।

फरवरी—पूर्वार्द्ध में राशिस्वामी सूर्य छटे स्थान में शनि युक्त संचरित है। कार्यों में धीरे-धीरे प्रगति होगी। उत्तरार्द्ध भाग में सप्तमस्थ सूर्य की स्वगृही दृष्टि होने से मान-सम्मान में वृद्धि तथा धन लाभ हो। परन्तु पति/पत्नी में मनमुटाव रहे। **उपाय**–ता. 21 को श्रीमहाशिवरात्रि का विधिपूर्वक व्रत रखें। (देखें-**पं. पन्ना लाल ज्यो.** द्वारा लिखित '**शिवरात्रि व्रत कथा**')

मार्च—पूर्वार्द्ध में राशिस्वामी सूर्य की स्वगृही दृष्टि रहने से उच्च प्रतिष्ठित मित्रों के साथ सम्पर्क बनेंगे। उत्तरार्द्ध में निर्वाह योग्य आय के साधन बनते रहेंगे। स्वास्थ्य कुछ ढीला रहेगा, पेट व नेत्र सम्बन्धी रोगों से विशेष सावधानी बरतें। **उपाय**–सूर्य-कवच का पाठ करें।

अप्रैल—सूर्य अष्टमस्थ होने से धन लाभ एवं बनते कामों में विघ्न-बाधाएँ होंगी। स्वास्थ्य में विकार एवं वृथा खर्च बढ़ेंगे। ता. 13 से सूर्य भाग्यस्थान में उच्चस्थ होने से आय के साधनों में वृद्धि होगी। **उपाय**–वैशाख सं. से '**पापप्रशमन स्तोत्र**' का नित्य पाठ करें।

मई—सूर्य भाग्यस्थान (नवम) में होने से बिगड़े हुए कार्यों में सुधार होगा। धन लाभ व उन्नति के अवसर प्राप्त होंगे। पारिवारिक सुख में वृद्धि होगी, किसी शुभ कार्य पर धन खर्च होगा। अष्टम भाव पर शनि की दृष्टि होने से स्वास्थ्य कष्ट, गुप्त चिन्ता व तनाव रहेगा। आकस्मिक खर्च अधिक होंगे। आर्थिक परेशानियों के कारण गुप्त चिन्ताएं होंगी।

जून—मंगल की सप्तमस्थ दृष्टि रहने से कुछ रुके हुए कार्यों में सफलता प्राप्त होंगी। मित्रों की सहायता से किसी कठिन कार्य में सिद्धि होगी। निर्वाह योग्य धन प्राप्ति के साधन बनेंगे। परन्तु संघर्षपूर्ण परिस्थितियां होंगी। अपने भी परायों जैसा व्यवहार करेंगे। **उपाय–'चाक्षुषोपनिषद् स्तोत्र'** का पाठ करें। (देखें देवीदयालु '**आदित्यहृदय स्तोत्र**')

जुलाई—व्यवसायिक क्षेत्र में अस्थिरता एवं उथल-पुथल के हालात का सामना होगा। खर्च अधिक होंगे, कार्य-व्यस्तताएँ भी रहेंगी। परन्तु संघर्ष के बावजूद गुज़ारे योग्य आय के साधन बनते रहेंगे। मानसिक तनाव व घरेलु उलझनें भी रहेंगी। **उपाय**–ता. 16 से श्रावण माहात्म्य का नित्य पाठ तथा '**शिव-मन्त्रावली**' पुस्तक में उद्धृत शिव-स्तोत्रों का पाठ करें।

अगस्त—मासारम्भ में यद्यपि गुरु की दृष्टि होने से धर्म-कर्म की ओर रूचि होगी एवं किसी शुभ कार्य पर खर्च होंगे। परन्तु सूर्य द्वादशस्थ होने से कठिनाई से धन प्राप्ति के साधन बनेंगे। ता. 16 के बाद दैनिक कार्यों एवं सरकारी क्षेत्रों में रुके हुए कार्यों में प्रगति होगी।

सितम्बर—सूर्य स्वराशिगत होने से कुछ बिगड़े कामों में सुधार एवं आय के साधनों में वृद्धि होगी। किसी नवीन कार्यक्षेत्र में धन का निवेश करने की योजना भी बनेगी। आय के साधनों में वृद्धि के साथ-साथ खर्च अधिक होगा। परन्तु वृथा भागदौड़, क्रोध की अधिकता रहे। ***उपाय***–श्राद्ध-पक्ष में '**पितृ-स्तोत्र**' का पाठ करना शुभ रहे।

अक्तूबर—कुछ सोची योजनाओं में आंशिक सफलता मिले, धन लाभ सामान्य रहे। घर-परिवार में शुभ मंगल कार्य भी होंगे। ता. 17 से वृथा भ्रमण और व्यर्थ का खर्च बढ़ेगा। वाहनादि का क्रय-विक्रय भी होगा। पं. देवीदयालु कृत '**कार्तिक-माहात्म्य**' का नित्य पाठ करें।

नवम्बर—सूर्य नीच राशिगत होने से धन लाभ साधारण हो, मानसिक तनाव एवं क्रोध अधिक रहे। परिवार में अकारण ही विरोधाभास और तनाव उत्पन्न हो। उत्तरार्द्ध में व्यर्थ यात्रा से परेशानी होगी। **उपाय–आदित्यहृदय स्तोत्र**' का नित्य पाठ करें।

दिसम्बर—विशेष परिश्रम एवं पारिवारिक सहयोग के बावजूद कार्य-सिद्धि में विलम्ब होगा। परन्तु ता. 16 से सूर्य धनु राशिगत संचार करने से विघ्नों के बावजूद कुछ बिगड़े कार्यों में सुधार होगा। मान-प्रतिष्ठा में वृद्धि परन्तु क्रोध अधिक रहे।

कन्या राशि (Virgo)—(टो, पा, पी, पू, ष, ण, ठ, पे, पो)

वर्षफल (2020 ई.)—*वर्षारम्भ से 23 जन. तक शनि की ढैय्या का अशुभ प्रभाव रहने से धन-हानि, वृथा कलह-क्लेश, घरेलु एवं व्यवसाय सम्बन्धी उलझनें व परेशानियां बढ़ेंगी। ता. 30 मार्च से 29 जून तक गुरु की शत्रु दृष्टि रहने से कठिन एवं विपरीत परिस्थितियों के बावजूद गुज़ारे योग्य आय के साधन बनते रहेंगे। ता. 4 मई से 15 अग. तक, पुन: 4 अक्तू. से 23 दिसं. तक मंगल की दृष्टि रहने से मानसिक तनाव, उलझनें तथा वृथा खर्च बढ़ेंगे।* **उपाय**–वर्षभर '**श्रीविष्णु पञ्जर स्तोत्र**' का पाठ तथा प्रत्येक बुधवार गऊओं को हरा चारा डालना शुभ रहेगा।

वर्ष प्रवेश कुंडली

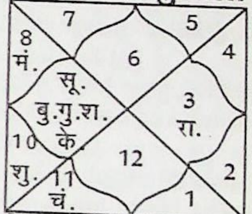

जनवरी—शनि की ढैय्या के कारण विशेष संघर्ष के बाद निर्वाह योग्य आय के साधन बनेंगे। अत्यधिक खर्च एवं घरेलु उलझनों के कारण तनाव रहेगा। बनते कामों में अड़चनें पैदा होंगी। मन में अशान्ति एवं असन्तुष्टता बनी रहेगी। **उपाय**–ता. 14 से '**माघ-माहात्म्य**' का पाठ नित्यप्रति तथा ब्राह्मण को पंचांग-दान करना शुभ रहेगा।

फरवरी—मासारम्भ से बुध षष्ठस्थ होने से बनते कामों में विघ्न-बाधाएं, स्वास्थ्य में विकार, पारिवारिक उलझनें एवं व्यवसायिक परेशानियों में वृद्धि होने के संकेत हैं। ता. 17 से बुध वक्री होने से भी कोई-न-कोई समस्या अवश्य ही बनी रहेगी। **उपाय**–रोगनिवारण के लिए '**मृत्युञ्जय-स्तोत्र**' का पाठ शुभ रहेगा। (देखें पुस्तक-'**शिव-मंत्रावली**')

मार्च—बुध षष्ठस्थ रहने से अत्यन्त संघर्ष के पश्चात् ही आय के साधन बनेंगे। किसी व्यक्ति विशेष से धोखे की सम्भावना भी रहेगी। शत्रु सरगर्म, सरकारी क्षेत्रों में परेशानी रहेगी। उत्तरार्द्ध में पेचीदा परिस्थितियों के कारण मानसिक तनाव व चिन्ताएँ रहेंगी। ***उपाय***–'**श्रीदुर्गा-सप्तशती**' का पाठ करें (लेखक-पं. पन्ना लाल ज्यो. की)

अप्रैल—ता. 7 से बुध नीच राशिस्थ होने से पारिवारिक उलझनें, व्यर्थ की चिन्ता रहे।

गुरु की भी शत्रु दृष्टि होने से निकटस्थ बन्धु से वैचारिक मतभेद रहे। धार्मिक कार्यों की ओर प्रवृत्ति बढ़ेगी। **उपाय–'पापप्रशमन-स्तोत्र'** का नित्य पाठ करें।

मई—मासारम्भ में बुध अष्टमस्थ होने से स्वास्थ्य में विकार, बनते कार्यों में विघ्न तथा धन हानि के संकेत हैं। अत्यधिक कठिनाई से निर्वाह योग्य धन के साधन प्राप्त होंगे। ता. 9 से बुध भाग्यस्थ होकर परिस्थितियों में परिवर्तन करेगा।

जून—राशिस्वामी बुध दशम भाव में राहु युक्त होने से दैनिक कार्यों में प्रगति धीरे-धीरे होगी। भूमि-वाहनादि के क्रय-विक्रय की योजना बनेगी। ता. 18 से बुध वक्री रहने से अनेक उतार-चढ़ाव एवं परिवर्तनों का सामना रहेगा। व्यर्थ यात्रा हो।

जुलाई—दशमस्थ सूर्य-बुध-राहु योग तथा मंगल की दृष्टि रहने से मानसिक तनाव, उलझनें, वृथा खर्च बढ़ेंगे। भाग्यवश उन्नति के विशेष अवसर मिलेंगे। आय से खर्च अधिक स्थान-परिवर्तन के भी योग हैं। **उपाय**—ता. 16 से **'श्रावण-माहात्म्य'** का नित्य पाठ करें।

अगस्त—ता. 2 से 16 तक बुध लाभ स्थान में तथा ता. 15 तक मंगल की दृष्टि रहने से नौकरी में पदोन्नति कुछ रुकावटों के बाद ही हो पाएगी, कार्य-व्यवसाय में आय में कमी रहेगी। ता. 7 से बुध द्वादशस्थ होने से स्वास्थ्य नर्म रहे। **उपाय–'मृत्युञ्जय स्तोत्र'** का पाठ करें।

सितम्बर—ता. 2 से 21 तक बुध स्वराशिगत होने से किसी नवीन कार्य की योजना बने। शुभ कार्यों में खर्च, धन-लाभ और उन्नति के अवसर मिलेंगे। कुछ बिगड़े कामों में सुधार एवं मान-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। पारिवारिक माहौल पहले से बेहतर होगा।

अक्तूबर—बुध द्वितीय भाव में होने से उच्चप्रतिष्ठित लोगों के साथ सम्पर्क रहेंगे। आकस्मिक धन-लाभ एवं मनोरंजन आदि के कार्यों पर धन का खर्च अधिक होगा। स्त्री सुख, सवारी, वाहनादि सुखों में वृद्धि होगी। ***उपाय*–'कार्तिक-माहात्म्य'** का पाठ करें।

नवम्बर—बुध अधिकांशत: द्वितीयस्थ होने से उथल-पुथल के बावजूद गुज़ारे योग्य आय होती रहेगी। ता. 16 तक शुक्र का संचार भी रहने से वृथा भ्रमण, व्यर्थ का खर्च एवं परिस्थितियां प्रतिकूल रहेंगी। **उपाय**—सूर्याराधाना करना शुभ होगा।

दिसम्बर—पूर्वार्द्ध में बुध तृतीयस्थ व उत्तरार्द्ध में चतुर्थस्थ होने से आराम कम व संघर्ष अधिक रहेगा। ज़मीन-जायदाद एवं वाहन सम्बन्धी समस्या उत्पन्न होगी। व्यवसायिक क्षेत्रों में दौड़-धूप अधिक परन्तु आय कम रहेगी। स्वास्थ्य कुछ ढीला रहे।

तुला राशि (Libra)—रा, री, रू, रे, रो, ता, ति, तु, ते

वर्ष प्रवेश कुंडली

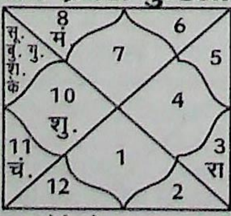

वर्षफल (2020 ई.)—*ता. 24 जनवरी से वर्षान्त तक इस राशि पर शनि की ढैय्या के प्रभाव से संघर्ष अधिक, धन-हानि, तनाव आदि अशुभ फल घटित होंगे। कार्यों में विघ्न-बाधाओं एवं आर्थिक उलझनों का सामना रहेगा। ता. 18 जून से वर्षान्त तक शनि के साथ मंगल की भी सप्तम व अष्टमस्थ दृष्टि रहने से स्वभाव में उत्तेजना, तनाव व क्रोध अधिक रहेगा।* ***उपाय***—*वर्षभर* दशरथकृत शनि स्तोत्र का पाठ करना शुभ रहेगा।

जनवरी—मासारम्भ में शुक्र चतुर्थ भाव में होने से नए वाहन, भूमि-जायदाद लेने का विचार बने। ता. 9 से शुक्र पंचमस्थ (उच्च) होने से धन-लाभ व उन्नति के चाँस बनेंगे। परन्तु ता. 24 से शनि की ढैय्या रहने से मानसिक तनाव एवं आकस्मिक खर्च बढ़ेंगे। **उपाय**—ता. 14 से नित्य **'शिवमहिम्न-स्तोत्र'** एवं **'माघ-माहात्म्य'** का पाठ करें।

फरवरी—मासारम्भ में ता. 2 से शुक्र षष्ठस्थ उच्चस्थ होकर मंगल द्वारा दृष्ट है। संघर्ष के बावजूद गुज़ारे योग्य आय के साधन बनेंगे। सवारी, सिनेमा, संगीत एवं विलासादि कार्यों पर धन का खर्च अधिक होगा। चोटादि का भय है, सावधानी बरतें।

मार्च—मासारम्भ से ही तुला राशि पर शुक्र की स्वगृही दृष्टि रहने से मान-प्रतिष्ठा में वृद्धि, अकस्मात् धन-लाभ व उन्नति के मार्ग प्रशस्त होंगे। विदेश सम्बन्धी कार्यों में कुछ प्रगति परन्तु विघ्नों के पश्चात् ही सफलता मिलेगी। **उपाय**—श्रीदुर्गा-सप्तशती का पाठ शुभ रहेगा।

अप्रैल—मासारम्भ से ही शुक्र अष्टमस्थ एवं शनि की ढैय्या रहने से मानसिक तनाव, शरीर कष्ट, स्वास्थ्य हानि एवं गुप्त चिन्ता रहेगी। खर्च अधिक तथा घरेलु उलझनें रहेंगी। **उपाय**—ता. 13 से **'पापप्रशमन स्तोत्र'** का पाठ करना शुभ रहेगा।

मई—शुक्र अष्टमस्थ रहने से व्यवसाय में आंशिक लाभ एवं विलासादि कार्यों पर धन का व्यय अधिक होगा। ता. 13 से शुक्र वक्री होने से शुभ फल में कमी रहेगी। विरोधियों द्वारा बनते कामों में अड़चनें पैदा करने से धन हानि होगी। **उपाय–'कनकधारा-स्तोत्र'** का पाठ करें।

जून—बनते कार्यों में विघ्न व विलम्ब, वृथा भागदौड़, मानसिक तनाव एवं खर्च अधिक रहेगा। ता. 18 से मंगल की भी दृष्टि रहने से गुप्त चिन्ता एवं परिवार में असमंजस के हालात बनेंगे। उत्तरार्द्ध में अधिकतर समय यात्रा अथवा आराम में ही व्यतीत होगा।

जुलाई—शुक्र अभी भी अष्टमस्थ है, मं.-श. की विशेष दृष्टियां हैं। विभिन्न व्यवसायिक उलझनों का सामना रहेगा। किसी निकट-बन्धु से धोखा मिलने के भी संकेत हैं। आलस्य में वृद्धि, स्वास्थ्य में खराबी और व्यर्थ के कामों में अधिक धन व समय नष्ट होगा। ***उपाय***—प्रत्येक मंगल व बुधवार **श्रीगणेश-चालीसा** का पाठ करना शुभ होगा।

अगस्त—शुक्र भाग्यस्थ होने से विशेष संघर्ष एवं परिश्रम से ही आय के साधनों में वृद्धि होगी। कोई रुका हुआ कार्य बनेगा, मान-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। परन्तु राहु युक्त होने से कुछ कार्यों में विलम्ब तथा स्वास्थ्य नर्म रहे।

सितम्बर—शुक्र दशमस्थ तथा शनि ढैय्या के कारण आजीविका के लिए दौड़-धूप अधिक रहे, भाई-बन्धुओं से व्यर्थ का टकराव रहे। मन अशान्त एवं असन्तुष्ट रहेगा। स्वास्थ्य में विकार, माता-पिता से मतभेद एवं नौकरी/व्यवसाय में परिवर्तन का विचार बनेगा।

अक्तूबर—शुक्र लाभ स्थान में होने से कुछ बिगड़े कामों में सुधार होगा। परिश्रम और पुरुषार्थ करने पर धन लाभ के अवसर मिलेंगे। विलासादि कार्यों पर धन का खर्च होगा। ता. 17 के बाद नौकरी में तरक्की एवं व्यवसाय को बढ़ाने के लिए नई योजनाएं भी बनेंगी। ***उपाय*–कार्तिक माहात्म्य** (लेखक–पं. पन्ना लाल ज्यो.) का नित्य पाठ करें।

नवम्बर—सूर्य का संचार तथा शुक्र द्वादशस्थ (नीच) होने से स्वास्थ्य सम्बन्धी परेशानी, बनते कामों में विघ्न, परिवार में मतभेद एवं खर्च की अधिकता से मन परेशान रहेगा। व्यवसाय में उथल-पुथल, क्रोध अधिक तथा चोटादि का भय है। **उपाय**—ता. 30 तक कार्तिक माहात्म्य का पाठ करें।

दिसम्बर—पूर्वार्द्ध में शुक्र का संचार है। दैनिक कार्यों में प्रगति होगी। निर्वाह योग्य आय के साधन बनेंगे। सवारी आदि सुखों की प्राप्ति होगी। परन्तु शनि की ढैय्या के कारण उत्तरार्द्ध भाग में आय कम तथा खर्च अधिक रहेंगे। **'श्रीसूक्तम्'** का पाठ करना शुभ रहेगा।

वृश्चिक राशि (Scorpio)-(तो, ना, नी, नू, ने, नो, या, यी, यू)

वर्षफल (2020 ई.)—*ता. 24 जनवरी से इस राशि से शनि-साढ़ेसाती का प्रभाव हट जाने से गत बिगड़े हुए कार्यों में सुधार होना प्रारम्भ होगा तथा आर्थिक परेशानियां कम*

होंगी। ता. 10 सितं. से 13 नवं. तक मंगल वक्री रहने तथा 23 सितं. से वर्षान्त तक इस राशि पर केतु का संचार होने से मानसिक चिन्ताएँ तथा कार्यों में रुकावटें व विलम्ब उत्पन्न होंगे। **उपाय**—*वर्षभर मंगलवार का व्रत रखना तथा सुनिश्चित समय पर श्रीसुन्दरकाण्ड का पाठ करना शुभ रहेगा।*

वर्ष प्रवेश कुंडली

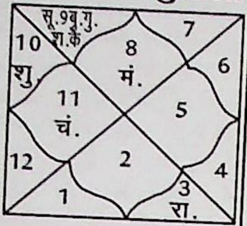

जनवरी—मंगल स्वगृही होने से नवीन कार्य की योजना बनेगी, मान-सम्मान में वृद्धि, पराक्रम एवं उत्साह में बढ़ौत्तरी, उच्च-प्रतिष्ठित लोगों से सम्पर्क लाभकारी रहेंगे। परन्तु शनि-साढ़ेसाती के कारण मानसिक तनाव, स्वभाव में उग्रता एवं निकट-बन्धुओं से मतभेद उभरेंगे।

फरवरी—ता. 7 से मंगल धनु राशिगत संचार करने से आय के साधनों में वृद्धि एवं शुभ मंगल कार्यों पर धन का खर्च होगा। परन्तु मंगल केतु युक्त होने से पारिवारिक समस्याएं एवं आर्थिक उलझनें उभरती सिमटती रहेंगी। **उपाय**–'**श्रीविश्वनाथमङ्गल स्तोत्र**' का पाठ करें। (देखें पुस्तक '**शिव-मन्त्रावली**') (लेखक : पं. पन्ना लाल ज्योतिषी)

मार्च—धन लाभ एवं पारिवारिक सुखों में वृद्धि होगी। परिवार में शुभ मंगल कार्य भी सम्पन्न होंगे। ता. 22 से मंगल उच्चस्थ होने से विघ्न-बाधाओं के बावजूद व्यवसायिक कार्यों में सफलता मिलेगी। ज़मीन-जायदाद आदि का क्रय-विक्रय करने की योजना बनेगी। **उपाय**–'**श्रीदुर्गा-सप्तशती**' का नित्य पाठ करें।

अप्रैल—धन लाभ कम तथा घरेलु उलझनों के कारण मानसिक तनाव रहेगा। परन्तु मंगल उच्चस्थ होने से उच्च-प्रतिष्ठित लोगों के सहयोग से व्यवसाय में उन्नति के अवसर मिलेंगे। पराक्रम में वृद्धि, कार्य में लाभ व उन्नति के चाँस बनेंगे। ***उपाय***–'**पापप्रशमन स्तोत्र**' का ता. 14 से नित्य पाठ करें।

मई—ता. 4 से मंगल चतुर्थ स्थान पर आने से अचानक खर्चों में वृद्धि एवं घरेलू परेशानियों का सामना होगा। घर-परिवार सम्बन्धी उलझनें रहेंगी। दुर्घटना में चोटादि का भय रहेगा। व्यर्थ की यात्रा भी हो।

जून—ता. 13 तक सूर्य की मित्र दृष्टि रहने से व्यवसाय में संघर्ष के बाद आय के स्रोत बढ़ेंगे। ता. 18 से मंगल पंचमस्थ होने से स्वास्थ्य सम्बन्धी कष्ट तथा खर्च अधिक रहेंगे। विशेष सावधानी बरतें। **उपाय**–**श्रीसूक्तम्** का पाठ शुभ रहेगा।

जुलाई—यद्यपि आय के साधन बनते रहेंगे, परन्तु व्यवसायिक क्षेत्रों में संघर्ष रहे। परिवार में अत्यधिक खर्च और सन्तान सम्बन्धी परेशानी रहेगी। ***उपाय***–ता. 16 से श्रावण माहात्म्य का पाठ तथा नित्य शिवलिङ्ग पर जलाभिषेक करना शुभ होगा।

अगस्त—पूर्वार्द्ध में स्वास्थ्य में गड़बड़ी, रक्त-पित्त विकार, नेत्र पीड़ा एवं परिश्रम व उत्साह में कमी रहेंगी। स्वभाव में क्रोध एवं चिड़चिड़ापन रहेगा। संयमपूर्ण व्यवहार करें। ता. 16 से मंगल की स्वगृही दृष्टि रहने से नए उच्चाधिकारियों के साथ सम्बन्ध बनेंगे। खर्च भी बढ़ेंगे।

सितम्बर—ता. 10 से मंगल वक्री होने से स्वास्थ्य सम्बन्धी परेशानी, मानसिक तनाव, स्वभाव में उग्रता, वाणी में कटुता तथा क्रोध के कारण निकट बन्धुओं से मतभेद उभरेंगे। धर्म-कर्म में रूचि बढ़े। आलस्य में वृद्धि एवं उद्योग में आंशिक सफलता प्राप्त होगी। ***उपाय***–श्राद्ध-पक्ष में प्रतिदिन '**पितृ-स्तोत्र**' का पाठ करें। (देखें-'**मुफीद आलम जन्त्री**-2020 ई.)

अक्तूबर—मासरम्भ ता. 4 से वक्री मंगल पंचमस्थ आने तथा केतु का संचार होने से वृथा वाद-विवाद से मानसिक तनाव व हानि होगी। दूसरों को दोष देना उचित न होगा। कठिन परिश्रम करने पर भी उचित लाभ न मिले। स्त्री एवं सन्तान की ओर से चिन्ता रहेगी। **उपाय**–प्रतिदिन कार्तिक माहात्म्य का पाठ करें।

नवम्बर—विघ्न-बाधाओं के बावजूद धन-लाभ व कार्यों में सफलता प्राप्त हो। कारोबार में व्यस्तताएँ बढ़ेंगी। व्यवसाय में कुछ परिवर्तन का विचार बने। यात्रा का प्रोग्राम बनेगा। प्रिय बन्धु से मुलाकात होगी। मासान्त में स्त्री सुख व शुभ समाचार मिले।

दिसम्बर—अत्यधिक परिश्रम के पश्चात् भी अल्प धन लाभ होगा। सन्तान व माता-पिता की तरफ से सहयोग प्राप्त होगा। सांझेदारी के कामों में हानि होगी। अकस्मात् यात्रा और व्यर्थ के कामों में धन का व्यय होगा। धन के सम्बन्ध में निकट बन्धु से तकरार होगी।

धनु राशि (Sagittarius)-(ये, यो, भा, भी, भू, धा, फ, ढ, भे)

वर्षफल (2020 ई.)—*वर्षारम्भ से 28 मार्च तक राशिस्वामी गुरु स्वराशिगत धनु (लग्न) में ही संचार करने से शुभ फल घटित होंगे। धर्म-कर्म की ओर प्रवृत्ति बढ़ेगी। परन्तु वर्षभर शनि-साढ़ेसाती का प्रभाव रहने से नई-नई समस्याएं तथा उलझनें सामने आती रहेंगी। ता. 29 मार्च से 29 जून तक, पुन: 20 नवं. से वर्षान्त तक गुरु नीच राशिगत (मकर) संचार करने से मानसिक एवं आर्थिक परेशानियां बढ़ेंगी।* **उपाय**—वर्षभर प्रत्येक शनिवार शनि-मन्दिर में सरसों का तेल, प्रसाद आदि यथाशक्ति चढ़ाएं तथा दशरथकृत शनि-स्तोत्र का पाठ करना शुभ रहेगा।

वर्ष प्रवेश कुंडली

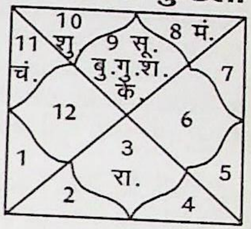

जनवरी—पूर्वार्द्ध ता. 13 तक इस राशि पर पंचग्रही योग रहने से विशेष उथल-पुथल रहेगी। पारिवारिक व आर्थिक उलझनों एवं तनाव का सामना रहेगा। अत्याधिक भागदौड़, अनावश्यक उलझनें और खर्च अधिक रहे। उत्तरार्द्ध में मान-सम्मान में वृद्धि और धन प्राप्ति के अवसर प्राप्त होंगे।

फरवरी—ता. 8 से मंगल-केतु के लग्न भाव में होने से व्यर्थ की यात्रा में परेशानी व खर्च अधिक होगा। भागदौड़ के उपरान्त भी गुज़ारे योग्य धन प्राप्त होने में विलम्ब होगा। शनि-साढ़ेसाती के कारण से स्वास्थ्य सम्बन्धी परेशानियां रहें। **उपाय**–'**शिव-मानस पूजा**' स्तोत्र का पाठ करना शुभ रहेगा। (देखें पुस्तक '**शिव-मन्त्रावली**')

मार्च—गुरु इसी राशि में होने से संघर्षमयी परिस्थितियों के बावजूद आय तथा मान-सम्मान में वृद्धि होगी। धर्मपरायण लोगों के साथ सम्पर्क बढ़ेंगे। पति या पत्नी को स्वास्थ्य कष्ट रहे। **उपाय**–पं. देवीदयालु संस्थान द्वारा प्रकाशित '**श्रीदुर्गा-सप्तशती**' में से चण्डी-स्तोत्र व कवच का पाठ करना शुभ रहेगा।

अप्रैल—मासारम्भ से ही राशिस्वामी गुरु नीच राशिगत (मकर) रहने से मानसिक एवं आर्थिक परेशानियां बढ़ेंगी। शनि-साढ़ेसाती एवं केतु संचार होने से मन में अशान्ति, पारिवारिक उलझनें तथा बन्धुओं से मतभेद भी रहेंगे।

मई—अपने साहस और परिश्रम से ही कार्यक्षेत्र की समस्याएं सुलझानी पढ़ेंगी। ता. 14 से गुरु वक्री रहने से भी बौद्धिक कार्यों में रूचि कम होगी व विद्यार्थियों को विद्या में आशाऽनुकूल सफलता नहीं प्राप्त हो सकेगी। **उपाय**–'**सरस्वती-स्तोत्र**' का पाठ करें।

जून—विघ्न-बाधाओं के बावजूद गुज़ारेलायक धन प्राप्ति के अवसर मिलेंगे। धर्म-कर्म में रूझान रहे। उत्तरार्द्ध में यद्यपि अकस्मात् बिगड़े हुए कार्य के बन जाने से खुशी का माहौल बनेगा। परन्तु परिवार में विलासादि कार्यों पर खर्च अधिक रहेगा।

जुलाई—मासारम्भ से ही वक्री गुरु पुन: इसी राशि में आने से परिस्थितियों में [illegible]

सोची हुई योजनाओं में सफलता मिलेगी। सुख-साधनों में वृद्धि होगी। कुछ उच्च प्रतिष्ठित लोगों के साथ सम्बन्ध बनेंगे। **उपाय**—ता. 16 से **'श्रावण-माहात्म्य'** का पाठ नित्य करें।

अगस्त—कठिन परिस्थितियों के बावजूद निर्वाह योग्य आय के साधन बनते रहेंगे। परिवार में व्यर्थ की आर्थिक उलझनें बढ़ेंगी। निकटतम भाई-बनधुओं से मनमुटाव पैदा होगा। उत्तरार्द्ध में किसी विशिष्ट व्यक्ति से मुलाकात हो। धार्मिक कार्य की ओर रूचि बढ़े।

सितम्बर—गुरु का संचार रहने से उलझनों एवं अड़चनों के बावजूद आय के साधनों में वृद्धि होगी। परन्तु शुक्र अष्टमस्थ होने से स्वास्थ्य विकार एवं कार्यों में विघ्न भी पैदा होंगे। मासान्त में अचानक धन लाभ एवं शुभ समाचार मिलेगा। **उपाय**—श्राद्ध पक्ष में प्रतिदिन पितृ-स्तोत्र का पाठ करें। (देखें-**'मुफीद आलम जन्त्री-2020 ई०'**)

अक्तूबर—केतु का संचार इस राशि से हट जाने से पुरानी चली आ रही समस्याएं मानसिक उचाटता व चिन्ताएं कुछ दूर होंगी। गुरु की स्थिति इसी राशि पर रहने से धार्मिक एवं सामाजिक कार्यों की ओर रूचि बढ़ेगी। अच्छे लोगों के साथ सम्बन्ध बनेंगे।

उपाय—ता. 17 से कार्तिक माहात्म्य (लेखक : पं. पन्ना लाल ज्यो.) का पाठ करें।

नवम्बर—मासारम्भ में बिगड़े कार्यों में धीरे-धीरे सुधार होगा। धन लाभ व उन्नति के अवसर प्राप्त होंगे। मान-सम्मान तथा नौकरी में पदोन्नति हो। ता. 20 से गुरु नीच राशि में शनि युक्त होने से धन का खर्च अधिक होने से उलझनें रहेंगी।

दिसम्बर—राशिस्वामी गुरु नीचस्थ होने से घर-परिवार की ओर से कोई चिन्ता रहेगी। मानसिक तनाव रहे। ता. 15 से सूर्य इसी राशि पर होने से कुछ बिगड़े कार्यों में सुधार और प्रगति होगी। क्रोध पर नियन्त्रण रखें। व्यर्थ की यात्रा भी होगी।

मकर राशि (Capricorn)—(भो, जा, जी, खी, खू, खे, खो, गा, गी)

वर्ष प्रवेश कुंडली

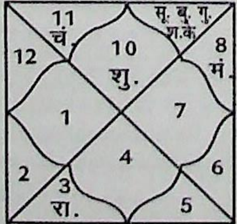

वर्षफल (2020 ई.)—*वर्षभर शनि-साढ़ेसाती का प्रभाव तथा 24 जनवरी से वर्षान्त तक शनि लग्न (इसी) भाव पर संचार करने से संघर्षमयी परिस्थितियों के बावजूद गुज़ारेलायक आय के साधन बनते रहेंगे तथा नई-नई योजनाएं भी बनेंगी। ता. 30 मार्च से 29 जून तक, पुन: 20 नवं. से वर्षान्त तक गुरु नीचस्थ इस राशि पर होने से निकटस्थ पारिवारिक सदस्यों या कारोबार में किसी के साथ मतभेद एवं तकरार के हालात बनेंगे।* **उपाय**—हमारी **'अनिष्ट ग्रहों के चमत्कारी उपाय व टोटके'** नामक पुस्तक में दिए गए शनि वज्रपञ्चर कवच का पाठ हर शनिवार को करने से विशेष लाभ होगा।

जनवरी—पूर्वार्द्ध में द्वादश भाव में पंचग्रही योग रहने से व्यवसाय में परेशानी, तनाव, धन सम्बन्धी समस्याएं एवं परिवार में मतभेद रहेंगे। अनावश्यक कार्यों पर खर्च अधिक होगा। ता. 14 से इस राशि पर सूर्य का संचार होने से वृथा खर्च, पारिवारिक उलझनें बढ़ेंगी। **उपाय**—सूर्य उपासना करना शुभ रहेगा।

फरवरी—मासारम्भ में लग्न में ही सूर्य-शनि योग होने से मिश्रित प्रभाव रहेंगे। पराक्रम व अपने उद्यम द्वारा आय के साधनों में वृद्धि होगी। मान-प्रतिष्ठा में वृद्धि एवं आय से खर्च अधिक होगा। परन्तु पिता-पुत्र जैसे निकट सम्बन्धी में मतभेद एवं सहयोग की कमी रहेगी।

मार्च—मासारम्भ में कुछ आर्थिक समस्याएं व्यथित करेंगी। शनि का संचार होने से विघ्न-बाधाओं के बावजूद गुज़ारे योग्य आय के साधन बनते रहेंगे। ता. 22 से मंगल इस राशि में उच्चस्थ होकर संचार करने से क्रोध व उत्तेजना बढ़ेगी।

अप्रैल—मंगल इस राशि पर उच्चस्थ होने से मान-प्रतिष्ठा में वृद्धि, धन लाभ व उन्नति के अवसर मिलेंगे। व्यवसायिक क्षेत्र में व्यस्तताएं बनी रहेंगी। कोई रुका हुआ कार्य बनेगा। मंगल की सप्तम भाव पर नीचदृष्टि होने से दाम्पत्य जीवन में परेशानी, गुरु नीचस्थ होने से स्वास्थ्य विकार, क्रोध अधिक, वृथा भागदौड़ रहेगी।

मई—गुरु इस राशि पर नीचस्थ होने से विघ्न-बाधाओं के बावजूद गुज़ारेलायक धन प्राप्ति के साधन बनते रहेंगे। मानसिक चिन्ताएं एवं फिजूलखर्ची बढ़ेगी। भागदौड़ अधिक रहेगी। व्यापार/नौकरी में बाधाएँ उत्पन्न होंगी। धार्मिक कार्यों में प्रवृत्ति रखने से कल्याण होगा।

जून—कारोबार मध्यम रहेगा। विघ्न-बाधाओं के बावजूद धन की प्राप्ति होगी। विलासादि कार्यों पर धन खर्च होगा। घर-परिवार की तरफ से चिन्ता उत्पन्न होगी। कुछ घरेलु परेशानियां, मानसिक तनाव उत्पन्न करेंगी। शरीर कष्ट का भय होगा।

जुलाई—मासारम्भ में संघर्ष व परिश्रम के उपरान्त गुज़ारेलायक धन प्राप्ति होगी और उलझा हुआ कार्य बनेगा। ता. 16 से इस राशि पर सूर्य की दृष्टि रहने से बनते कामों में अड़चनें पैदा होंगी। **उपाय**—ता. 16 से श्रावण-माहात्म्य का पाठ कल्याणप्रद रहेगा।

अगस्त—सरकारी क्षेत्रों में रुकावटें पैदा होने की सम्भावनाएं होंगी। आय के साथ-साथ खर्च भी बहुत होंगे। वृथा मानसिक तनाव एवं स्वभाव में तेजी रहे।

सितम्बर—पूर्वार्द्ध भाग में धन लाभ एवं सुख-साधनों की प्राप्ति होगी। वृथा खर्च भी बढ़ेंगे। आमोद-प्रमोद आदि साधनों में विस्तार एवं वृद्धि होगी। धर्म-कर्म में भी रूझान रहेगा। उत्तरार्द्ध में परिवारिक उलझनों के कारण मन संतप्त रहे। आकस्मिक खर्चों में वृद्धि के कारण तनाव रहे। ***उपाय***—**पितृस्तोत्र** का पाठ करें। (देखें **'मुफीद आलम जंत्री'**)

अक्तूबर—आर्थिक हालात पहिले से बेहतर होंगे। कार्यक्षेत्र में व्यस्तताएं बनी रहेंगी। सांझेदारी में मान-इज्जत बढ़ेगी। मासान्त में शुभ समाचार, अप्रत्याशित लाभ की प्राप्ति होंगी। घर-परिवार में सुखद माहौल होते हुए भी गुप्त चिन्ता रहे। धार्मिक कार्यों पर खर्च होगा।

नवम्बर—धन-लाभ एवं उन्नति के पर्याप्त अवसरों के बावजूद समुचित लाभ नहीं उठा पाएंगे। ता. 20 से गुरु पुनः इस राशि पर होने से यद्यपि पदोन्नति के अवसर प्राप्त होंगे, पारिवारिक वातावरण कुछ बेहतर होगा। परन्तु शत्रु सरगर्म होने से परेशानी होगी।

दिसम्बर—शनि-साढ़ेसाती एवं गुरु संचार के कारण मानसिक बेचैनी, निकटस्थ भाई-बन्धुओं से तनाव एवं मतान्तर पैदा हों। कारोबार में उतार-चढ़ाव और संघर्ष रहेगा। स्वास्थ्य नर्म और गुप्त चिन्ता बनी रहेगी। परन्तु धनागमन के निर्वाह योग्य साधन बनते रहेंगे।

कुम्भ राशि (Aquarius)—(गू, गे, गो, सा, सी, सू, से, सो, दा)

वर्ष प्रवेश कुंडली

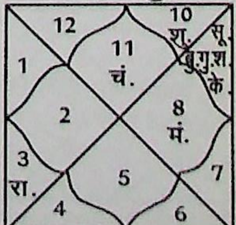

वर्षफल (2020 ई.)—*ता. 24 जन. से वर्षान्त तक कुम्भ राशि पर शनि-साढ़ेसाती का प्रभाव होने से परिवार एवं व्यवसाय सम्बन्धी दौड़-धूप, वृथा परिश्रम, आय कम एवं खर्च अधिक रहें। ता. 4 मई से 17 जून तक मंगल इस राशि पर संचार करने तथा 11 मई से 28 सितं. तक शनि वक्री रहने से व्यवसाय व गृह सम्बन्धी उलझनें बढ़ेंगी। दुर्घटना से चोटादि का भी भय है, सावधानी बरतें।* ***उपाय***—*सात शनिवार शनि मन्दिर में शनि कवच का पाठ करके सरसों के तेल का दीप जलाएँ और 7वें शनिवार शिवलिङ्ग पर भी* ***'ॐ नमः शिवाय'*** मन्त्र पढ़ते हुए कच्ची लस्सी और दूध, बिल्वपत्र चढ़ाना शुभ होगा।

जनवरी—ता. 23 तक राशिस्वामी शनि की स्वगृही दृष्टि रहने से नई-नई कार्य योजनाएं बनेंगी। गत किए गए कार्यों में सफलता व लाभ प्राप्त होगा। ता. 24 से आर्थिक उलझनें पैदा होंगी, परन्तु भाग्यवश पारिवारिक सहयोग प्राप्त होगा।

फरवरी—मासारम्भ में निर्वाह योग्य आय के साधन बनते रहेंगे, परन्तु शनि-साढ़ेसाती तथा ता. 12 से सूर्य भी इस राशि पर होने से परिस्थितियां संघर्षपूर्ण रहेंगी। बनते कार्यों में अड़चनें, घरेलू उलझनें, क्रोध अधिक रहे। आराम कम व दौड़-धूप अधिक रहे।

मार्च—मासारम्भ में सूर्य लग्न में तथा राहु पंचम में होने से सन्तान सम्बन्धी विशेष चिन्ता व तनाव रहेगा। ता. 22 से द्वादश भाव में मंगल-शनि योग होने से निकटस्थ भाई-बन्धु व पत्नी से तनाव तथा अत्यधिक खर्च होंगे। ***उपाय***—'**श्रीदुर्गा-सप्तशती**' में से चण्डी-कवच व चण्डी स्तोत्र का पाठ करें।

अप्रैल—द्वादश भाव में मंगल-गुरु-शनि योग होने से आर्थिक समस्याएं पेचीदा रूप ले सकती हैं, पहले से ही सावधानी बरतें। निकट बन्धुओं से तकरार, पारिवारिक, कलह एवं मन अशान्त रहेगा। **उपाय**—पापप्रशमन-स्तोत्र का पाठ करना शुभ रहेगा।

मई—मासारम्भ ता. 4 से मंगल इस राशि पर संचार करने से घरेलु उलझनों व परेशानियों के कारण तनाव रहेगा। खर्च बढ़-चढ़ कर रहेंगे तथा सन्तान सम्बन्धी चिन्ता भी रहे। निर्वाह योग्य आय के साधनों के बावजूद आकस्मिक खर्च परेशान करेंगे।

जून—मंगल का संचार होने से अत्यधिक भागदौड़ करने पर भी विशेष धन लाभ नहीं हो पाएगा। मानसिक तनाव एवं स्वास्थ्य भी ठीक न रहे। अकस्मात् यात्रा के योग हैं। **उपाय**—श्रीसुन्दरकाण्ड का नित्य पाठ करें।

जुलाई—शनि वक्री होने से स्वास्थ्य नर्म एवं कुछ घरेलु व व्यवसायिक कारणों से विभिन्न परेशानियों का सामना रहेगा। आय कम व व्यय अधिक रहेगा। किसी विशेष कार्य की योजना बनेगी। **उपाय**—ता. 16 से '**श्रावण माहात्म्य**' का नित्य पाठ करें।

अगस्त—द्वितीयस्थ मंगल पर शनि की विशेष तृतीय दृष्टि होने से कार्य-व्यवसाय सम्बन्धी विशेष परेशानियां होंगी। निकटस्थ बन्धुओं से भी मनमुटाव या तकरार की स्थिति बनेगी। वृथा खर्च अधिक होंगे।

सितम्बर—सोची हुई योजनाओं में आंशिक सफलता प्राप्ति होगी। सरकारी कार्यों में विघ्न-बाधाएं परन्तु पुरुषार्थ एवं परिश्रम से धनागमन के साधन बनते रहेंगे। दाम्पत्य जीवन में परेशानी एवं मतभेद बढ़ेंगे। स्वास्थ्य सम्बन्धी विशेष सावधानी बरतें।

अक्तूबर—शनि द्वादशस्थ तथा ता. 4 से मंगल पुनः मीन में आने से स्वास्थ्य नर्म एवं चोटादि का भय रहेगा। मन अशान्त एवं असन्तुष्ट रहेगा। उत्तरार्द्ध में मान-सम्मान में वृद्धि, धर्म-कर्म में अभिरूचि एवं शुभ मंगल कार्यों पर धन का खर्च होगा।

नवम्बर—स्वास्थ्य सम्बन्धी परेशानी, बनते कामों में विघ्न, वृथा भागदौड़ एवं मानसिक तनाव रहेगा। दूरस्थ यात्राएं, धन का खर्च भी अधिक होगा। भूमि-वाहनादि का क्रय-विक्रय करने में बाधाएं एवं सौन्दर्य वस्तुओं पर धन खर्च हो।

दिसम्बर—द्वादशस्थ गुरु-शनि तथा ता. 23 तक मंगल द्वितीयस्थ होने से व्यवसायिक क्षेत्र में अनके उतार-चढ़ाव के हालात् बनेंगे। परन्तु विघ्नों के बावजूद निर्वाह योग्य आय के साधन बनते रहेंगे। मासान्त में शुभ यात्रा हो।

मीन राशि (Pisces)—(दि, दु, थ, झ, ञ, दे, दो, चा, चि)

वर्षफल (2020 ई.)—*राशिस्वामी गुरु वर्षारम्भ से 29 मार्च तक, पुनः 30 जून से 19 नवं. तक स्वराशिगत (धनु) संचार करने से व्यवसाय में व्यस्तता तथा आय में धीरे-धीरे वृद्धि होती रहेगी। ता. 8 फर. से 21 मार्च तक इस राशि पर मंगल की दृष्टि होने से तनाव व घरेलु उलझनों के कारण गुप्त चिन्ताएं बनी रहेगी।*

वर्ष प्रवेश कुंडली

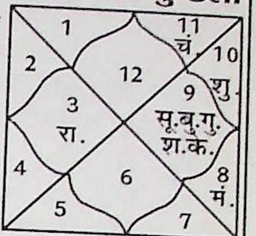

जनवरी—गुरु स्वराशि धनु में होने से अचानक धन प्राप्ति के साधन बढ़ेंगे और नौकरी में उन्नति के अवसर प्राप्त होंगे। धार्मिक कार्यों की ओर प्रवृत्ति रहेगी। किसी मित्र के सहयोग से नया कार्य आरम्भ होगा। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा।

फरवरी—शनि की तृतीय तथा ता. 8 से मंगल की दृष्टि रहने से स्वास्थ्य तथा घरेलु उलझनों के कारण तनाव एवं गुप्त चिन्ताएं रहेंगी। ता. 13 से सूर्य भी द्वादशस्थ होने से अचानक खर्च आशातीत रूप से बढ़ेंगे। **उपाय**—श्रीमहाशिवरात्रि का व्रत रखकर '**शिव-मन्त्रावली**' पुस्तक में दिए गए शिव-स्तोत्रों का पाठ करें।

मार्च—शनि की दृष्टि तथा सूर्य द्वादशस्थ होने से संघर्षपूर्ण परिस्थितियों का सामना रहेगा, परन्तु निर्वाह योग्य आय के साधन बनते रहेंगे। ता. 14 से सूर्य का संचार होने से क्रोध, उत्तेजना अधिक रहेगी। निकट बन्धुओं से विचार-वैमनस्य रहेगा।

अप्रैल—राशिस्वामी गुरु नीच राशिगत (मकर) संचार करने से निकटस्थ भाई-बन्धुओं एवं पत्नी से विचार-वैमनस्य, क्रोध एवं उत्तेजना से कोई बना हुआ कार्य बिगड़ सकता है। आर्थिक उलझनों के कारण मन अशान्त रहेगा।

मई—गुरु नीचराशिगत एवं शनि की दृष्टि होने से कुछ सोची योजनाओं में विघ्न-बाधाएं एवं धन का खर्च अधिक होगा। दूरस्थ यात्राएं, वृथा भागदौड़ एवं व्यवसायिक क्षेत्रों में भी आशानुकूल लाभ में कमी रहेगी। **उपाय**—वैशाख माहात्म्य का पाठ करना शुभ रहेगा।

जून—कार्यक्षेत्र में विघ्नों के बावजूद स्थिति कुछ अनुकूल होने के आसार बढ़ेंगे। कुछ सोची-योजनाओं में आंशिक सफलता मिलेगी। गुप्त चिन्ता, अज्ञात भय, पेट व लीवर में खराबी के कारण विभिन्न परेशानियों का सामना रहेगा।

जुलाई—राशिस्वामी गुरु पुनः दशमस्थ स्वराशिगत होने से धर्म-कर्म एवं आध्यात्मिक कार्यों की ओर प्रवृत्ति रहेगी। परिवार में भाई-बन्धुओं का सहयोग प्राप्त होगा। मंगल का संचार होने से क्रोध/आवेश के कारण कोई कार्य बिगड़ सकता है। ***उपाय***—ता. 16 से '**श्रावण माहात्म्य**' का पाठ करें।

अगस्त—भाग्येश मंगल लग्न तथा द्वितीयस्थ तथा गुरु स्वराशिस्थ रहने से संघर्षपूर्ण परिस्थितियों के बावजूद व्यवसायिक क्षेत्रों में धन लाभ व उन्नति के योग हैं। व्यवसायिक व्यस्तताएं बढ़ेंगी। धर्म एवं आध्यात्मिक क्षेत्रों में रूझान बढ़ेगा। अचानक धन प्राप्ति के साधन बढ़ेंगे।

सितम्बर—मासारम्भ में निर्वाह योग्य आय के साधन बनते रहेंगे। धन का अधिक खर्च विलासादि कार्यों पर होगा। ता. 16 से शनि के साथ सूर्य की भी दृष्टि होने से क्रोधाधिक्य, दाम्पत्य जीवन में कुछ मतभेद, धन का लेन-देन करते समय कुछ विवाद हो सकता है।

अक्तूबर—मासारम्भ में सूर्य की दृष्टि तथा ता. 17 से सूर्य अष्टमस्थ होने से स्वास्थ्य परेशानी, सिर-दर्द तथा क्रोध अधिक रहे। कार्यक्षेत्र में दौड़-धूप अधिक, धन-लाभ के साथ-साथ खर्च में वृद्धि, धर्म-कर्म में रूझान एवं शुभ कार्य भी सम्पन्न होगा।

नवम्बर—ता. 15 तक सूर्य अष्टमस्थ रहने से स्वास्थ्य विकार तथा कार्यों में विलम्ब उत्पन्न हो। ता. 16 के बाद भाग्यवश आय के साधन बनेंगे। परन्तु परिवार में तनाव एवं मतभेद भी रहेंगे।

दिसम्बर—गुरु नीचस्थ होने से निकटस्थ भाई-बन्धुओं से तनाव, सन्तान सम्बन्धी चिन्ता तथा पति/पत्नी का स्वास्थ्य ढीला रहेगा। ता. 16 के बाद धन लाभ व उन्नति के अवसर प्राप्त होंगे। पारिवारिक सुख में वृद्धि, कहीं यात्रा का भी प्रोग्राम बनेगा।

★★★ आश्विन अधिक मास-फल-वि. संवत् २०७७ (सन् 2020-21 ई.) ★★★

(18 सितम्बर से 16 अक्तूबर, 2020 ई. तक)

आगामी वि. संवत् २०७७ (सन् 2020-21 ई.) में चान्द्र आश्विन मास '**अधिक**' (पुरुषोत्तम) मास होगा। इस अधि-मास की समयावधि 18 सितम्बर, शुक्रवार से लेकर 16 अक्तूबर, शुक्रवार, सन् 2020 ई. तक रहेगी।

अधिक-मास निर्णय-भगवान् सूर्य सम्पूर्ण ज्योतिषशास्त्र के अधिष्ठातृ देव हैं। बृहदारण्यकोपनिषद् के सप्तान्न-ब्राह्मण में संवत्सरात्मक अन्न के उपभोक्ता भगवान् भास्कर माने गये हैं। सूर्य का मेषादि द्वादश राशियों पर जब संक्रमण (संचार) होता है, तब संवत्सर बनता है, जो सौर वर्ष कहलाता है। जिस मास में भगवान् भुवन-भास्कर का किसी राशि पर संक्रमण (संक्रान्ति) न हो, वह मास अधिक मास कहलाता है।

यस्मिन् मासे न संक्रान्तिः संक्रान्तिद्वयमेव वा।
मलमासः स विज्ञेयो मासे त्रिंशत्तमे भवेत्।। (ब्रह्मसिद्धान्त)

आचार्य चण्डेश्वर अनुसार भी यदि दो अमावस्याओं के भीतर सूर्य की संक्रान्ति न होने से उक्त मास को '**मल**' मास कहते हैं। इस मल मास में समस्त शुभ काम नहीं करने चाहिए-

दर्शद्वयमतिक्रम्य यदा सङ्क्रमते रविः। मलमासः स विज्ञेयः सर्वकर्मसु गर्हितः।।

लोक-व्यावहार में संक्रान्ति रहित मास को '**अधिक-मास**' के अतिरिक्त अधि-मास, मलमास व आध्यात्मिक विषयों में अत्यन्त पुण्यदायी होने के कारण '**पुरुषोत्तम-मास**' आदि नामों से भी जाना जाता है। ज्योतिष गणनानुसार एक सौर वर्ष 365 दिन, 6 घण्टे एवं 11 सैकिण्ड का होता है, जबकि एक चान्द्रवर्ष 354 दिन एवं लगभग 9 घण्टे का होता है। सौरवर्ष एवं चान्द्रवर्ष तथा सौरमास एवंच चान्द्रमास के मध्य सामञ्जस्य स्थापित करने के लिए ही भारतीय शास्त्रकारों द्वारा '**अधिक-मास**' की परिकल्पना (व्यवस्था) की गई है। '**पुरुषार्थ-चिन्तामणि**' के अनुसार एक अधिक मास से दूसरे अधिक (मल) मास तक की अवधि अर्थात् पुनरावृत्ति 28 मास से लेकर 36 मास के भीतर होना सम्भव है। इस प्रकार हर तीसरे वर्ष में अधिक मास अर्थात् पुरुषोत्तम मास की पुनरावृत्ति होना सम्भव है।

पुरुषोत्तम-मास का माहात्म्य एवं कर्त्तव्य

इस मास की मलमास की दृष्टि से जैसे निन्दा है, पुरुषोत्तम-मास की दृष्टि से इसकी बड़ी महिमा है। अधिमास ने तपस्या कर भगवान् विष्णु से उनका '**पुरुषोत्तमनाम**' प्राप्त किया था। भगवान् पुरुषोत्तम ने इसको अपना नाम देकर कहा है कि अब मैं इस मास का स्वामी हो गया हूँ और इसके नाम से सारा जगत् पवित्र होगा तथा मेरी सादृश्यता को प्राप्त करके यह मास अन्य सब मासों का अधिपति होगा। यह जगत्पूज्य और जगत् का वन्दनीय होगा और यह पूजा करने वाले सब लोगों के दारिद्रय का नाश करने वाला होगा।

अहमेवास्य संजातः स्वामी च मधुसूदनः।
एतन्नाम्ना जगत्सर्वं पवित्रं च भविष्यति।।
मत्सादृश्यमुपागम्य मासानामधिपो भवेत्।
जगत्पूज्यो जगद्वन्द्यो मासोऽयं तु भविष्यति।
पूजकानां च सर्वेषां दुःखदारिद्रयखण्डनः।।

इस मास नियमपूर्वक संयमित रहकर भगवान् विष्णु एवं शिव की पूजार्चन करने से आलौलिक आध्यात्मिक शक्ति प्राप्त होती है तथा मृत्यु के बाद किसी प्रकार की अधोगति का भय नहीं रहता। शिवपुराण में भी इसका उपबृंहण हुआ है, जहाँ मलमास, अधिमास या पुरुषोत्तम मास को साक्षात् भगवान् शिव का स्वरूप कहा गया है, वहाँ देवताओं के वचन हैं-'**मासानामधिमासस्त्वं व्रतानां त्वं चतुर्दशी**' अर्थात् प्रभो ! शिव ! आप महीनों में अधिमास एवं व्रतों में चतुर्दशी (शिवरात्रि) व्रत हैं। इस प्रकार इसमें शिव-विष्णु दोनों की ही आराधना विहित है और यह दोनों को ही परम प्रिय हैं। जो सौ वर्ष तप करने का फल है, वह इसमें एक ही दिन व्रत-तप करने से प्राप्त हो जाता है-

सम्यक् चीर्णेन तपसा शतवर्षमितेन च।
यत्फलं लभते विप्र मासेऽस्मिन्नेकवासरात्।। (पुरुषोत्तममास माहा.)

अधिक-मास के आने पर जो व्यक्ति श्रद्धा एवं भक्तिपूर्वक व्रत, उपवास, श्रीविष्णु-पूजन, पुरुषोत्तम-माहात्म्य का पाठ, दानादि शुभ कर्म करता है, वह मनोवांछित फल प्राप्त कर लेता है और अन्त में गोलोक पहुँचकर भगवान् श्रीकृष्ण का सान्निध्य प्राप्त करता है।

आश्विन (अधिक) मास का फल

वि. संवत् २०७७ में प्रथम आश्विन शुक्ल प्रतिपदा तदनुसार 18 सितम्बर, शुक्रवार से आश्विन अधिक मास प्रारम्भ होकर 16 अक्तूबर, शुक्रवार तक व्याप्त रहेगा। प्र. आश्विन शुक्ल पक्ष और द्वितीय आश्विन कृष्ण पक्ष-दोनों पक्षों के अन्तराल में संक्रान्ति का अभाव होने से '**आश्विन मास**' अधिक-मास अर्थात् **पुरुषोत्तम-मास** माना जाएगा। शास्त्रों में आश्विन अधिक मास का फल इस प्रकार से वर्णित है-

आश्विने परचक्रेण तस्करैः पीडिताः प्रजाः। सुभिक्षं क्षेममारोग्यं दुर्भिक्षं दक्षिणापथे।।

अर्थात् जिस वर्ष दो आश्विन मास आएं, तो उस वर्ष जनता सेना, चोरों तथा विभिन्न रोगों से दुःखी रहे, परन्तु उत्तरी भारत में सुभिक्ष, जनता के कल्याण हेतु शासनतन्त्र प्रयासरत रहे तथा लोगों में स्वास्थ्य के प्रति जागरुकता तथा आरोग्य भी रहेगा। दक्षिणी क्षेत्रों (राज्यों) में दुर्भिक्ष अर्थात् अकालजन्य परिस्थितियां रहेंगी।

पुरुषोत्तम मास में नित्यकर्म एवं उद्यापन अर्थात् पालनीय नियम

भविष्योत्तरपुराण अनुसार पुरुषोत्तम मास में ईश्वर के निमित्त जो व्रत, उपवास, स्नान, दान या पूजनादि किए जाते हैं, उन सबका अक्षय फल होता है और व्रती के सब अनिष्ट नष्ट हो जाते हैं। पुराणों में अधिकमास में पूजन, व्रत, दान सम्बन्धी विभिन्न प्रकार के विधान बतलाए गए हैं–

इस मास के प्रारम्भ होते ही प्रातःकाल सूर्योदय से पूर्व उठकर शौच, स्नान, संध्या आदि अपने-अपने अधिकार के अनुसार नित्यकर्म करके भगवान् का स्मरण करना चाहिए और पुरुषोत्तम-मास के नियम ग्रहण करने चाहिये। पुरुषोत्तम-मास में श्रीमद्भागवत् पुराण का पाठ करना महान् पुण्यप्रदायक है और एक लाख तुलसीपत्र से शालग्राम भगवान् का पूजन करने से अनन्त पुण्य होता है। विधिपूर्वक षोडशोपचार से नित्य भगवान् का पूजन करना उचित है। इस पुरुषोत्तम-मास में–

'गोवर्द्धनधरं वन्दे गोपालं गोपरूपिणम्।
गोकुलोत्सवमीशानं गोविन्दं गोपिकाप्रियम्।।'

–इस मन्त्र का एक महीने तक भक्तिपूर्वक बार-बार जप करने से पुरुषोत्तम भगवान् की प्राप्ति होती है। प्राचीनकाल में श्रीकौण्डिन्य ऋषि ने यह मन्त्र बताया था। मन्त्र जपते समय नवीन मेघश्याम द्विभुज मुरलीधर पीतवस्त्रधारी श्रीराधिका जी के सहित श्रीपुरुषोत्तम भगवान् का ध्यान करना चाहिए।

हेमाद्रि अनुसार पुरुषोत्तम-मास आरम्भ होने पर प्रातः स्नानादि नित्यकर्म से निवृत्त होकर एकभुक्त या नक्तव्रत रखकर भगवान् विष्णुस्वरुप सहस्रांशु (भास्कर) का मंत्रों द्वारा लालपुष्प सहित पूजन एवं कृष्णस्तोत्र पाठ करके कांस्य पात्र में भरे हुए अन्न, फल, वस्त्रादि का दान किया जाता है। पूजनोपरान्त अथवा अधिकमास के अन्तिम दिन विविध प्रकार के मिष्ठान्न, घी, गुड़ और अन्न का दान ब्राह्मण को करें तथा घी, गेहूँ और गुड़ के बनाए हुए तैंतीस (33) अपूप (पूओं) को पात्र में रखकर निम्न मन्त्र पढ़कर फलों, मिष्ठान्न, वस्त्र दक्षिणा सहित ब्राह्मण को दान करें–

''ॐ विष्णुरूपी सहस्रांशुः सर्वपापप्रणाशनः। अपूपान्न प्रदानेन मम पापं व्यपोहतु।।''

इसके बाद आगे लिखे मन्त्र से भगवान् विष्णु को प्रार्थना करें–

''यस्य हस्ते गदाचक्रे गरुडोयस्य वाहनम्। शङ्खः करतले यस्य स मे विष्णुः प्रसीदतु।।''

इसके अतिरिक्त ज्येष्ठ अधिक मास में प्रतिदिन श्रीपुरुषोत्तम माहात्म्य का पाठ एक निश्चित समय पर श्रद्धापूर्वक करना चाहिए। श्रीविष्णु स्तोत्र, श्रीविष्णु सहस्रनाम, श्रीसूक्त, पुरुषसूक्त आदि पाठ करना शुभ होगा। अधिकमास की समाप्ति पर स्नान, जप, पुरुषोत्तम मास पाठ एवं निम्न मन्त्रों सहित गुड़, गेहूँ, घृत, वस्त्र, मिष्ठान्न, दाख, केले, कूष्माण्ड (कुम्हड़ा), ककड़ी, मूली आदि वस्तुओं का दान, दक्षिणा सहित करके भगवान् को 3 बार अर्घ्य देवें। त्रयस्त्रिंशत् (३३) नाम मन्त्रों का जप करें–

१. विष्णुं, २. जिष्णुं, ३. महाविष्णुं, ४. हरिं, ५. कृष्णं, ६. अधोक्षजम्, ७. केशवं, ८. माधवं, ९. रामं, १०. अच्युत्यं, ११. पुरुषोत्तमम्, १२. गोविन्दं, १३. वामनं, १४. श्रीशं, १५. श्रीकृष्णं, १६. विश्वसाक्षिणं, १७. नारायणं, १८. मधुरिपुं, १९. अनिरुद्धं, २०. त्रिविक्रमम्, २१. वासुदेवं, २२. जगद्योनिं, २३. अनन्तं, २४. शेयशायिनम्, २५. सकर्षणं, २६. प्रद्युम्नं, २७. दैत्यरिं, २८. विश्वतोमुखम्, २९. जनार्दनं, ३०. धरावासं, ३१. दामोदरं, ३२. मघार्दनं, ३३. श्रीपतिं च।।

अधिक-मास में त्याज्य कर्म/कार्य

अधिमास में फल प्राप्ति की कामना से किए जाने वाले प्रायः सभी काम वर्जित हैं और फल की आशा से रहित होकर करने के आवश्यक सब काम किए जा सकते हैं। ज्योतिष-आचार्यों के मतानुसार अधिक (पुरुषोत्तम) मास में कुछ नित्य, नैमित्तिक एवं काम्य कर्मों को करने का निषेध माना गया है। जैसे–विवाह, यज्ञ, देव-प्रतिष्ठा, महादान, चूड़ाकर्म (मुण्डन), पहले कभी न देखे हुए देवतीर्थों में गमन, नवगृह-प्रवेश, वृषोत्सर्ग, भूमि आदि सम्पत्ति की खरीद (क्रय), नई गाड़ी का क्रय आदि शुभ कार्यों का आरम्भ अधिक-मास-काल में नहीं करना चाहिए–

अग्न्याधेयं प्रतिष्ठां च यज्ञो दानव्रतानि च।
वेदव्रतवृषोत्सर्ग चूडाकरणमेखलाः।।
गमनं देवतीर्थानां विवाहमभिषेचनम्।
यानं च गृहकर्माणि मलमासे विवर्जयेत्।। (गर्गाचार्य)

इसके अतिरिक्त अन्य अनित्य व अनैमित्तिक कार्य जैसे–नववधू प्रवेश, नव-यज्ञोपवीत धारण, व्रतोद्यापन, नव-अलंकार, नवीन वस्त्रादि धारण करना, कूआँ, तालाब, बावली, बाग आदि का खनन करना, भूमि, वाहनादि का क्रय करना, काम्य व्रत का आरम्भ, भूमि, सुवर्ण, तुला, गायादि का दान, अष्टका श्राद्ध, उपनयन, द्वितीय वार्षिक श्राद्ध, उपाकर्मादि कर्मों के सम्पादन का निषेध माना गया है।

अधिक (पुरुषोत्तम) मास में करणीय कर्म

अधिक (मल) मास में जिस काम्य कर्म के प्रयोग का आरम्भ अधिक मास से पहले ही हो चुका हो, उसकी सम्पूर्त्ति अधिक मास में विहित है। मलमास में मरने वाले का वार्षिक श्राद्ध, मासिक श्राद्ध, पितरों की क्रिया करना, तीर्थ व गजच्छाया श्राद्ध, यदि मध्य में किसी के मलमास हो तो एक मास का अधिक ही श्राद्ध होगा। अर्थात् जिस मास में यह प्राप्त होता है, उसकी द्विरावृत्ति होती है। यदि मलमास में ही किसी की मृत्यु हो, तो उससे जो 12वाँ मास हो, उसमें प्रेतक्रिया को समाप्त करना चाहिए। तीव्र ज्वर या प्राणघातक रोगादि की निवृत्ति के लिए रुद्रपूजादि अनुष्ठान, पुत्र/सन्तान जन्म के बाद अन्नप्राशन, **गण्डमूल, जन्मदिन पूजन सम्बन्धी आवश्यक** (दिन-निर्धारित) कर्म, कपिल-षष्ठी जैसे दुर्लभ योगों के प्रयोग, नित्य पूजा-जप-दानादि कर्म अथवा ग्रहण सम्बन्धी श्राद्ध, दान, जपादि किए जा सकते हैं–

आवश्यकर्म मासाख्यं मलमासमृताब्दिकम्।
तीर्थेभक्षययोः श्राद्धमाधानाक पितृक्रियाम।। (सर्वोदय) (ज्यो. नि.)

वि. संवत् २०७७ में संवत्सर एवं राजा-मन्त्रादि फल

ॐ स्वस्ति नः श्रीगणेशाय नमः। अचिन्तयाव्यक्तरूपाय निर्गुणाय गुणात्मने। समस्त जगदाधार मूर्तये ब्रह्मणे नमः। आदौ गणपतिं नमस्कृत्य प्रणम्य च पूर्वजानहम्। चन्द्रमिश्रं तत्पुत्रं रामजी दत्तस्य सूनं विश्वविख्यातं पण्डित देवीदयालु ज्यो. स्व वृद्धप्रपितामहम् स्मरन् भक्त्या लोकहितार्थाय सुखसम्पत्ति हेतवे '**प्रमादी**' नामक नवविक्रमी सम्वत्सरे ततो अग्रे '**आनन्द**' सम्वत्सरे शुभे पंच-चत्वारिंशत्योत्तर शत वर्षाणि (१४५) वर्ष प्रवेशे **पं. विवेक शर्मा ज्योतिषी** अहं प्रप्रपौत्र एवं अधिपतिः पं. देवी दयालु ज्योतिषी एण्ड सन्ज़, पुत्र दैवज्ञरत्नं **पं. श्रीपन्ना लाल ज्योतिषी**, कनिष्ठ भ्रातृ **पं. पंकज शर्मा** सहितोऽहं कुर्वे '**पंचाँग दिवाकरम्**'।।

सृष्टि सम्वत् १९५,५८,८५,१२१ के अन्तर्गत, **श्रीविक्रमी संवत् २०७७**, शक संवत् १९४२-४३, कलि (कल्कि) संवत् ५१२१, श्रीकृष्ण सम्वत् ५२५६, सप्तर्षि संवत् ५०९६, श्रीबुद्ध संवत् २६४३-४४, श्रीमहावीर निर्वाण (जैन) संवत् २५४५-४६, हिजरी सन् १४४१-४२, इंग्लिश सन् २०२०-२१ ईस्वी, फसली सन् १४२७-२८, खालसा संवत् ३२१-२२, नानकशाही सम्वत् ५५१-५२, सृष्टि संवत् के अन्तर्गत सतयुग प्रमाण १७२८०००, त्रेतायुग १२९६०००, द्वापर युग प्रमाण ८६४००० एवं कलियुग का प्रमाण ४३,२००० वर्षों का होता है।

'प्रमादी' नामक नव–सम्वत्सर का फल–(वि. सं. २०७७)

नव विक्रमी संवत् २०७७ के आरम्भ में बार्हस्पत्यमान (गुरुमान) से शिव (रुद्र) विंशति के अन्तर्गत '**दशम युग**' का द्वितीय '**प्रमादी**' नामक (सम्वत्सरों में 47वाँ) नया संवत्सर विद्यमान होगा। **ध्यान रहे,** नया विक्रमी संवत् २०७७, चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से अर्थात् 25 मार्च, 2020 ई., तदनुसार १२ चैत्र, बुधवार से प्रारम्भ होगा।

नववर्ष प्रवेश लग्न

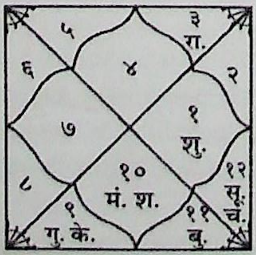

शास्त्र परम्परा-अनुसार नवसंवत् का प्रारम्भ तथा राजा का निर्णय चैत्र शुक्ल प्रतिपदा के वार अनुसार ही किया जाता है। '**बुधवार**' से नवसंवत् का प्रारम्भ होने के कारण आगामी वर्ष (संवत्) का राजा भी '**बुध**' होगा। यद्यपि '**प्रमादी**' नामक संवत्सर का आरम्भ गतवर्ष 10 अप्रैल, 2019 ई. से हो चुका है तथा आगामी '**आनन्द**' नामक संवत्सर भी **लगभग 6 अप्रैल, 2020 ई. से प्रवृत्त हो जाएगा।**

परन्तु प्रचलित शास्त्र-परम्परा अनुसार संवत् के आरम्भ में विद्यमान संवत्सर को ही विक्रमी संवतारम्भ से सम्वतान्त तक धार्मिक अनुष्ठान, जप-पाठ, दानादि, संकल्प कार्यों के आरम्भ में प्रयोग किया जाएगा अर्थात् '**प्रमादी**' नामक संवत्सर का प्रयोग वर्षपर्यन्त ही रहेगा। धार्मिक, कर्मकाण्डी विद्वान् **6 अप्रैल, 2020 ई. के बाद** प्रमादी नामक संवत्सर का उच्चारण करने के बाद '**परं वर्तमाने आनन्द नाम संवत्सरे**' का प्रयोग भी कर सकते हैं।

'**प्रमादी**' नामक नया वि. संवत् २०७७, गत चैत्र अमावस की समाप्ति (24 मार्च), प्रविष्टे ११ चैत्र, मंगलवार को दोपहर 2 बजकर 58 मिनट पर (14:58) कर्क लग्न में प्रवेश करेगा। परन्तु शास्त्र-नियमानुसार नव वि. सं. २०७७ तथा चैत्र (वासन्त) नवरात्रों का प्रारम्भ 25 मार्च, बुधवार (प्रविष्टे १२ चैत्र) रेवती नक्षत्र में होगा। **वर्ष का राजा बुध** तथा **मन्त्री** चन्द्र होगा। '**प्रमादी**' नामक सम्वत्सर का फल शास्त्रों **में इस प्रकार वर्णित है–**

निष्पत्तिः सर्वसस्यानां रसानां च महर्घता।
मरकस्य भयं विद्यात् प्रमादीति हि वत्सरे।।

अर्थात् '**प्रमादी**' नामक सम्वत्सर में सभी प्रकार के धान्य, फसलों, अनाज का यथेष्ठ उत्पादन होगा। सब रसादि पदार्थ, गुड़, चीनी आदि के मूल्यों में भी वृद्धि होगी। सुभिक्ष एवं सुख हो। आषाढ़ मास में वर्षा कम हो, भाद्रपद में वर्षा अधिक होगी। धान्य में तीन गुना तक लाभ अर्थात् विशेष मूल्य वृद्धि होगी। परन्तु कुछ क्षेत्रों में उपद्रव, राजनीतिक एवं जातीय हिंसा के कारण भय का वातावरण उपस्थित होगा।

'**नारद-संहिता**' में '**प्रमादी**' सम्वत्सर का फल इस प्रकार है–

नृपसंक्षोभमत्युग्रं प्रजापीडा त्वनर्घता।
तथापि दुःखमाप्नोति प्रमादीवत्सरे जनः।।

अर्थात् '**प्रमादी**' संवत्सर में राजा अमैत्री भाव वाले हो जाएंगे अर्थात् सरकार की ओर से कठोर एवं अप्रिय निर्णय लिए जाएंगे। यद्यपि देशहित में लिए गए कठोर एवं क्लिष्ट सरकारी नियमों एवं कानूनों से सामान्य प्रजा में दुविधा, भय, विक्षोभ एवं आक्रोश की भावनाएं रहेंगी। इसके अतिरिक्त आवश्यक वस्तुओं के मूल्यों में वृद्धि होने के कारण भी प्रजा आक्रान्त रहेगी। कुछ लोगों में सुख-साधनों एवं उपभोग्य वस्तुओं का आकर्षण बढ़ेगा।

रोहिणी का वास–वि. संवत् २०७७ में मेष संक्रान्ति का प्रवेश पूर्वाषाढ़ा नक्षत्रकालीन है। अतएव रोहिणी का वास '**सन्धि**' पर होगा। यथा–

'संधिसंस्थ यदा ब्राह्म भंजायते। खण्डवृष्टिस्तदा सर्वधान्याप्तयः।।'

अर्थात् रोहिणी का वास सन्धि पर होने से इस वर्ष देश में खण्डवृष्टि अर्थात् असमान वर्षा होगी। कुछ क्षेत्रों/प्रदेशों में अत्यधिक वर्षा होने के कारण बाढ़ का प्रकोप हो, भूस्खलन, जन-धन, कृषि आदि की हानि हो तथा कुछ प्रदेशों में बहुत कम वर्षा होने के कारण कहीं सूखा, कहीं अनाज एवं कहीं पेयजल की कमी के कारण जन-धन की हानि, कृषि-अनाज आदि में कमी एवं च गेहूँ, सब्जियों, धान्यादि के मूल्यों में विशेष वृद्धि हो।

♦ समय अर्थात् सम्वत्सर का वास वैश्य के घर ♦

सर्वधान्यं महर्घं स्यात् वणिक् वेश्मनि संस्थिते।।

अर्थात् समय (सम्वत्सर) का वास वैश्य (वणिक्) के घर पर होने से इस वर्ष धन का प्रसार अधिक होगा। सर्वत्र उपयोगी एवं अनुकूल वर्षा की कमी रहे अर्थात् खण्डवर्षा एवं विपरीत जलवायु रहने से सभी अनाज, धान्यादि तथा दुग्धादि पेय पदार्थों के मूल्यों में विशेष अधिक तेजी होगी। राजनीति और व्यापारादि सभी क्षेत्रों में लोभ व स्वार्थपरता बढ़ेगी। खाद्यान्न व्यवसाय में संलग्न व्यापारी विशेष रूप से लाभान्वित रहेंगे। सामान्य वर्ग के लोगों में असन्तोष बढ़ेगा। किसी विशिष्ट राजनेता के आकस्मिक निधन अथवा अपदस्थ होने के योग हैं।

✤ संवत् (सम्वत्सर) का वाहन–वि. संवत् २०७७ का राजा बुध होने से सम्वत् का वाहन गीदड़ होने से देश के विभिन्न भागों विशेषकर दक्षिणोत्तरी प्रान्तों में शासन-परिवर्तन, विग्रह एवं राजनैतिक उथल-पुथल होगी। राजनैतिक अस्थिरता बने। कहीं खाद्यान्न की कमी रहे एवं उनके मूल्यों में विशेष तेजी बने। खण्ड एवं विषम वर्षा हो। प्रजा में क्लिष्ट रोग एवं आर्थिक परेशानियाँ बढ़ें।

कुछ विद्वान् राजा बुध होने पर संवत् का वाहन **'झूला या सियार'** को भी मानते हैं। सियार वाहन होने पर पृथ्वी पर हाहाकार मच जाता है। व्यापक दुर्भिक्ष अर्थात् बहुत स्थानों पर भयानक सूखा व अकाल जन्य परिस्थितियां बनेंगी। विभिन्न देशों में टुकड़ों में अर्थात् थोड़े-थोड़े समय के पश्चात् टकराव, संघर्ष एवं युद्ध होता रहेगा।

यत्राब्दे वाहनं दोला हाहाभूता तु मेदिनी।
दुर्भिक्षं सर्वदेशेषु संग्रामः खण्डखण्डयोः।।

♦ वि. संवत् २०७७ के दश-पदाधिकारियों का फल ♦

(1) वर्ष (वि. संवत् २०७७) के राजा 'बुध' का फल–

बुधस्य राज्ये सजलं महीतलं गृहे गृहे तूर्य विवाहमङ्गलम्।
प्रकुर्वन्ते दानदयां जनोपि स्वस्थं सुभिक्षं धनधान्य सङंकुलम्।।

अर्थात् वर्ष का राजा बुध हो, तो उस वर्ष पृथ्वी पर वर्षा अच्छी होगी। घर-घर में विवाह आदि माङ्गलिक कार्य तथा उत्सव अधिक होंगे। लोगों में दान-दया एवं धार्मिक कार्यों में प्रवृत्ति बढ़ें, लोगों में स्वास्थ्य सम्बन्धी चेतना एवं जागरुकता बढ़े। विशेष वर्ग के लोगों में धन-धान्य, सुख-साधन एवं समृद्धि बढ़ें। व्यापारी, शिल्पी, लेखक तथा वैद्य (डॉक्टर) लोग विशेष लाभान्वित होंगे।

अन्य संहिता ग्रन्थानुसार भी–

सन्धानदानप्रयतः क्षितीशः स्वाध्याय–तीर्थाध्वरभीर्द्विजौघः।
निराधिरुङ्मध्यम सस्यवर्षो बौधः सुहृत्स्नेहविविर्धनोऽब्दः।।

अर्थात् संवत्सर का राजा बुध होने से उस वर्ष देश में ठगी, छलकपट करने वाले लोगों का बोलबाला व प्रभाव अधिक रहेगा। देश में कुछ सफेदपोश अपराधियों का भण्डाफोड़ भी होगा। गीतकार, संगीतकार, अभिनेता, विद्वानों की गैर-कानूनी एवं देश-विरोधी गतिविधियाँ उजागर होंगी। शासकवर्ग द्वारा किसी विशेष वर्ग को प्रसन्न करने के लिए लोकप्रिय एवं लोकलुभावन घोषणाएं भी की जाएंगी, व्यापारियों को भी विशेष सुविधाएं दी जाएंगी। सन्तों एवं महन्तों का वर्चस्व बढ़ेगा तथा बड़े-बड़े लोगों के विरुद्ध कानूनी कार्यवाही होगी। आयुर्वेद, योग आदि चिकित्सा प्रणाली का प्रचार-प्रसार अधिक होगा।

(2) सम्वत् के मन्त्री 'चन्द्र' का फल–

शशिनी मन्त्रिगते बहुसस्यवत्यपि धरा रमते सुखमण्डिता।
वियति वारिधरा बहुवर्षिणो जनपदाः सुखराशि–सुशोभिताः।।

अर्थात् वर्ष का मन्त्री चन्द्रमा हो तो उस वर्ष देश में धन-धान्य, सुख-ऐश्वर्य के साधनों का प्रसार अधिक हो। देश में वर्षा अधिक होगी। पृथ्वी पर गेहूँ, धान्य, सरसों, मक्की, चने आदि की पैदावार अच्छी होगी। रूई, कपास, वस्त्र, गन्ना, शक्कर, चीनी, दूध आदि सफेद वस्तुओं का उत्पादन श्रेष्ठ रहेगा। खाद्यान्न एवं दूध, वस्त्र, चीनी, चाँदी, रूई, चावल तथा अन्य श्वेत वस्तुओं के व्यापार में अधिक विस्तार एवं लाभ प्राप्ति होगी। देश में सुख-साधनों एवं ऐश्वर्य के प्रसाधनों में भी विशेष वृद्धि होगी।

(3) सस्येश 'गुरु का फल–

कणपतौ सुरराज पुरोहिते सकल सौख्यकरः श्रुतिपूर्वकः।
जलधरा जलदा बहुसस्यदा रसपयांसि बहुनिवसूनि वै।।

अर्थात् गुरु (बृहस्पति) सस्येश हो, तो वेदों द्वारा निर्धारित धर्म-मार्ग का अनुसरण करने से ही लोगों को सुख-शान्ति एवं कल्याण की प्राप्ति हो। वर्षा पर्याप्त होगी। गेहूँ, धान्य, ईख, गोरस, दूध, घी एवं फलों आदि की पैदावार अधिक होगी। सर्व प्रकार की कृषि आदि का उत्पादन भी अच्छा होगा। खेतीकर एवं कृषि सम्बन्धी वस्तुओं का व्यवसाय करने वाले व्यापारी अच्छा मुनाफा प्राप्त कर सकेंगे।

(4) धान्येश 'मंगल का फल–

भूमिजे ग्रीष्म धान्येश ग्रीष्मधान्य महर्घकम्।
शालीक्षु घृततैलादि महर्घाणि भवन्ति च।।

अर्थात् धान्यादि फसलों का स्वामी मंगल होने से ग्रीष्मकालीन फसलें, जैसे–गेहूँ, चने, सरसों, ज्वार, बाजरा, सूरजमुखी, तैल आदि तथा घी के मूल्य तेज होंगे। चावल, धान्य, ईख, रिफाईंड आयल, दूध, तैलादि, स्निग्ध पदार्थों एवं सोना, ताँबा, पीतल, चाँदी, जवाहरात आदि के मूल्यों में भी तेजी होगी। चोरी-डकैती, भ्रष्टाचार, बेईमानी, अग्निकाण्ड एवं हिंसक घटनाएं/उत्पाद अधिक होंगे।

(5) मेघेश 'सूर्य' का फल–

जलदपे यदिवासरपे तदा सरसि वै रमते जनतारसम्।
यव चणेक्षु–निवार सुशालिभिः सुखचयं सुलभं भुविवर्तते।।

अर्थात् मेघेश (वर्षा का स्वामी) सूर्य होने से गेहूँ, जौं, चने, ईख, बाजरा, नीवारू, चावल, मूंग की पैदावार अच्छी होगी। पृथ्वी पर सुख-ऐश्वर्य के विविध प्रकार के साधनों का विस्तार होगा। दूध, गुड़, शक्कर, चावल, ईखादि की पैदावार कम हो, कई स्थानों पर नदी, नालों में जलस्तर कम हो। उपयोगी वर्षा की कमी रहे।

(6) रसेश 'शनि' का फल–

रविसुते रसपे रससंक्षयो न जलदा गददाश्च पयोधराः।
अजगवां गजवाजि खरोष्ट्रहा जनपदेषु नरा न रसैर्युताः।।

अर्थात् रसों का स्वामी शनि होने से वर्ष में अनुकूल एवं उपयोगी वर्षा की कमी रहेगी। भूगर्भगत जलस्तर भी नीचे की ओर जाएगा। गाय, भैंस, बकरी, हाथी, घोड़े, ऊँट आदि चौपाओं की संख्या में कमी हो, इसके फलस्वरूप रसदार वस्तुओं जैसे–ईख, गुड़, चीनी, दूध, घी, मक्खन आदि वस्तुओं की पैदावार में कमी किंवा इन वस्तुओं के मूल्यों में विशेष तेजी होगी। बेमौसमी एवं प्रतिकूल वर्षा के कारण अनेक क्लिष्ट रोगों से लोग परेशान रहें। गाय, भैंस, घोड़े, हाथी, बकरी आदि चतुष्पदों में रोगादि के कारण हानि हो। अधिकांश लोगों में परस्पर प्रेमभाव की कमी रहे। सामान्यतः लोगों के व्यवहार में बनावटीपन अधिक रहे।

(7) नीरसेश 'गुरु' का फल–

हरिद्रा पीतवस्तूनि पीतवस्त्रादिकं च यत्।
नीरसेशो यदा जीवः सर्वेषां प्रीतिरुत्तमा।।

नीरसेश अर्थात् ठोस धातु पदार्थों का स्वामी गुरु (बृहस्पति) होने से हल्दी, पीले वस्त्र, पीतल, सोना (स्वर्ण) आदि पीले वर्ण की वस्तुओं एवं धातुओं के प्रति लोगों की विशेष रूचि एवं आकर्षण रहने से इन वस्तुओं की माँग विशेष अधिक बढ़ जाएगी। फलस्वरूप इनके मूल्यों में भी अत्यधिक वृद्धि होगी। लोगों की अभिरूचि धार्मिक विषयों की ओर एवं पारस्परिक प्रीति तथा सहयोग बढ़ेगा।

(8) फलेश 'सूर्य' का फल–

द्रुमवतीवर पुष्पवती धरा प्रमुदिता फलभोग विशेषता।
बहुजलं जलदोभुवि मुञ्चति क्वचिदपिप्रमितं फलपो रविः।।

अर्थात् सम्वत् में फलों का स्वामी सूर्य होने से पृथ्वी विभिन्न प्रकार के वृक्षों, फलों (पुष्पों) एवं फलों से शोभायमान होगी अर्थात् फल, फूल एवं वृक्षों की पैदावार कुछ स्थलों पर बहुत अच्छी होगी और कहीं कम होगी। वर्षा भी कहीं बहुत अधिक और कहीं पर कम होगी। कहीं पर पेयजल की कमी हो। विशेष सम्पन्न लोगों में सुख के साधन बढ़ेंगे।

(9) धनेश 'बुध' का फल–

द्रविणपो हिमरश्मिसुतो यदा विविधासंग्रह वस्तु फलार्थदा।
द्विजवरा जययज्ञसु संयुता कृषिविशेष विशेषित मानसाः।।

अर्थात् बुध यदि धनेश (कोश-स्वामी) हो तो अनाजसहित नानाविध वस्तुओं के संग्रह एवं उनके व्यापार द्वारा विशेष लाभ रहे। ब्राह्मण आदि धर्म परायण लोग जप, यज्ञादि शुभ कार्यों में निरत रहें। कृषक लोग खेती के कार्यों में विशेष नवीन प्रणालियों का विकास करें।

(10) दुर्गेश (सेनापति) 'सूर्य' का फल–

नयविशेषकरस्तरीण स्तदा गतभया–नरराज–पुरोगमाः।
समधिको न तदानृपजोन्यजः स्वपथजं ब्रजतांन भयं क्वाचित्।।

दुर्गेश अर्थात् सेनापति सूर्य हो, तो नेता आदि प्रशासक वर्ग न्याय का पालन करने में प्रवृत्त हों। राजदरबार (सरकारी तन्त्र) से सम्बद्ध लोग निर्भय होकर आचरण करेंगे। राजकीय कर्मचारियों एवं प्रजा के मध्य भागीदारी एवं सहयोग बढ़ेगा। अपने नियत मार्ग पर चलने वालों (अर्थात् संविधान/कानून के अनुसार पालन करने वालों) को कुछ भी भय न हों। अधिकांश देश-प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप में संहारक परमाणु हथियारों का निर्माण करने में प्रवृत्त होंगे।

नोट–वर्ष के उपरोक्त दशाधिकारियों का फल यद्यपि सर्वत्र होता है। परन्तु राजा का फल विशेष रूप से काश्मीर, बांग्लादेश, अफगानिस्तान, चीन, तिब्बत एवं हिमाचल के निकटवर्ती क्षेत्र ; मन्त्री का फल आन्ध्र-प्रदेश, मालवा, उज्जैन आदि मध्य-प्रदेशों में विशेष रूप से होता है। वैसे सामान्यतः राजा एवं मन्त्री का फल देश के प्रायः सभी क्षेत्रों में होता है।

चतुर्मेघ फल विचार–आवर्तकादि चतुर्मेघों में **'आवर्त'** नामक मेघ है।

फल–'आवर्ते वृष्टिहानिः स्यात्'–अर्थात् इस वर्ष देश के अनेक प्रान्तों में खण्ड एवं अनुपयोगी वर्षा होगी। कुछ क्षेत्रों में वर्षा की कमी रहेगी तथा कुछ क्षेत्रों में अकाल तथा दुर्भिक्ष की स्थिति रहे।

नवमेघों में 'संवर्त' नामक मेघ का फल—

'कामाधिक्यं स्वल्पता धर्मकार्ये पृथ्वीपालास्तत्परा नान्यकार्ये।
संवर्ताख्यो नीरदः स्याद्धि यत्र प्रांचो वायुर्वाति सर्वत्र तत्र।।'

अर्थात्–'संवर्त' नामक मेघ होने से लोगों में कामवासना (कामुकता) की ओर अधिक प्रवृत्ति रहे, प्रजा की धार्मिक एवं शुभ कृत्यों में रूचि कम हो तथा व्यर्थ के कार्यों में अधिक व्यस्त रहेंगे। राजा (शासक) वर्ग प्रजा-भलाई के कार्यों में ध्यान कम तथा निजकार्यों में अधिक तत्पर रहेंगे। वर्षा पर्याप्त होगी। मक्की, धान एवं दालवाना की फसल को हानि पहुँचे। पूर्व दिशा की तरफ वायुवेग अधिक रहे तथा पूर्वी प्रदेशों में प्रकृतिक प्रकोप से हानि हो।

नोट–'नवमेघ-विचार' तथा **'चतुर्मेघ विचार'** में से चार मेघों को अधिक महत्त्व देना चाहिए।

सुबुध्नादि द्वादश नागों में 'वृष' नामक नाग का फल—इस संवत् में बारह नागों में **'वृष'** नामक नाग है।

'सस्यादिकाल्पत्वं सुतराम ईतितो भयम्।।'

वृष नामक नाग राजा होने से वर्ष में अनाजादि की फसलों का उत्पादन कम होगा। कीट, पतंगों, कीटाणुओं, टिड्डी-दाल, विषाक्त वातावरण आदि प्राकृतिक प्रकोपों का भय अधिक रहेगा।

सूर्य का आर्द्रा नक्षत्र में प्रवेशफल-वि. संवत् २०७७

(वर्षा, कृषि एवं वायुमण्डल विचार)

सूर्य आर्द्रा प्रवेश कुंडली

21 जून, 2020 ई., $23^{\text{घं.}}$ $27^{\text{मिं.}}$

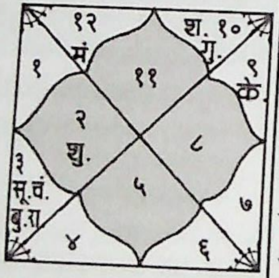

वि. संवत् २०७७ में सूर्यदेव आर्द्रा नक्षत्र में आषाढ़ी अमावस को तदनुसार 21 जून, 2020 ई., रविवार को आर्द्रा नक्षत्र, वृद्धि योग एवं मिथुन राशिस्थ चंद्रमा कालीन कुम्भ लग्न में प्रवेश करेंगे। कुम्भ एवं मिथुन-दोनों पश्चिम दिशा की सांकेतिक राशियां हैं। द्विस्वभाव राशि मिथुन में **'चतुर्ग्रही योग'** बनना भी भारत के पश्चिमी राज्यों में (पंजाब, राजस्थान, गुजरात, महाराष्ट्र) प्रारम्भ में (21 जून के बाद) अनुकूल वर्षा के बावजूद शीघ्र ही गर्म एवं ऊष्ण जलवायु व्याप्त हो जाएगा। जबकि लग्नेश शनि (स्थिरकारक) तथा गुरु (स्थिरकारक) की द्वादश भावस्थ मकर राशि (जोकि दक्षिण दिशा की सांकेतिक राशि है) में स्थिति के कारण भारत के दक्षिण प्रान्तों (केरल, कर्नाटक, तमिलनाडु, आंध्राप्रदेश) में अपेक्षा से कम वर्षा होगी। परन्तु चर एवं जलकारक ग्रह शुक्र स्वराशि वृष (जो दक्षिण दिशा की राशि है) में संचार करने से कुछ विलम्ब के पश्चात दक्षिण दिशा के राज्यों में भी मानसून की व्यापक एवं अनुकूल वर्षा होने से कृषि उत्पादन में वृद्धि होगी। जल-स्तम्भ भी सुदृढ़ होने से दक्षिणी राज्यों में व्यापक वर्षा एवं आंधी-तूफान के भी संकेत हैं।

चर परन्तु अग्निकारक ग्रह मंगल मीन राशि (उत्तर-दिशा की सांकेतिक राशि) में संचार करने से कुछ उत्तरी राज्यों में अग्निकाण्ड तथा विषम वर्षा के कारण अकालजन्य परिस्थितियां बन सकती हैं। उत्तरी-भारत के राज्यों में खण्ड वर्षा होगी। **संक्षेप में,** हम कह सकते हैं कि पूर्वी प्रदेशों में कहीं वर्षा की अधिकता के कारण बाढ़ादि प्रकोप से जन, धन एवं कृषि की हानि हो तथा कहीं पश्चिमोत्तर प्रदेशों में उपयोगी वर्षा की कमी रहने के योग हैं।

आर्द्रा लग्न प्रवेश के समय अमावस तिथि एवं आर्द्रा नक्षत्र ही होने से किसी प्रमुख राष्ट्राध्यक्ष का क्षय अर्थात् आकस्मिक निधन हो, प्रजा में चोरी, ठगी, बेईमानी व हिंसक घटनाएँ अधिक हों–

अमायां पद्मीनाथरौद्रः नक्षत्रगोयदि। भूमिपानां विनाशः स्यात्तस्कराणामुपद्रवः।।

वृद्धि योग में आर्द्रा प्रवेश होने से सभी जीवों की संख्या वृद्धि हो, मनुष्य प्राणियों के पुत्र-पौत्रों आदि की वृद्धि हो अर्थात् जनसंख्या में विशेष वृद्धि हो। तथा अधिकांश लोगों की प्रवृत्ति यज्ञादि कर्मों में लगे–

वृद्धियोगके पुत्रपौत्राभिवृद्धिः स्यात्तर्हियज्ञादिकर्मच।।

तथा अर्द्धरात्रि के समय आर्द्रा प्रवेश होने से लोग कामविलास, भोग, ऐश्वर्यादि में संलग्न रहे।–**भोगप्रदत्तेखलुमध्यरात्रेः।।**

वि. संवत् २०७७ में शनि की दृष्टि का फल

वि. संवत् २०७७ में शनि देव मकर राशि में ही संचरणशील रहेंगे। फलस्वरूप संवतारम्भ (25 मार्च, 2020 ई.) से संवतान्त (12 अप्रैल, 2021 ई.) तक शनि की दृष्टि उत्तर दिशा अर्थात् **उत्तर गोलार्द्ध** की तरफ रहेगी। मकर राशिस्थ संचारकालीन शनि की **मीन, कर्क** तथा **तुला राशियों पर दृष्टि** तथा **धनु, मकर व कुम्भ राशि** वाले राष्ट्रों पर **शनि-साढ़ेसति** का प्रभाव रहेगा। **फलस्वरूप** उत्तरी प्रान्तों तथा उत्तरी-यूरोपीय देशों (ब्रिटेन, जर्मनी, फ्रांस, बैल्जियम, इटली) तथा उत्तर-दक्षिणी मुस्लिम देशों (ईरान, ईराक, कुवैत, सीरिया, तुर्की) में राजनैतिक अस्थिरता, उथल-पुथल, सत्ता-परिवर्तन, आतंकवादी, विस्फोटक एवं हिंसक घटनाएँ घटित होने के संकेत हैं। भारत के उत्तर-पूर्वी प्रदेशों में कहीं बाढ़, समुद्री तूफान, भूस्खलन, महामारी, भूकम्प, यान-दुर्घटना, अग्निकाण्ड, सड़क दुर्घटनाएं आदि प्राकृतिक प्रकोपों से भारी कृषि, धन एवं जन-हानि होने की सम्भावनाएं होंगी। कर्क, तुला एवं मीन राशि वाले एवं उत्तरी राज्यों में अकालजन्य परिस्थितियां (दुर्भिक्ष) बनेंगी। यथा शास्त्रों में मकर राशिस्थ शनि का फल भी अशुभ लिखा है–

मकरेचयदा सौरिर्दुभिक्षं तत्र दारुणम्। कामार्ताश्च विनश्यति ह्यन्यदेशे शुभं भवेत।।

गुर्राफल विचार (सन् 2020-21 ई.)

इस्लामी नववर्ष कुण्डली (1)
हिजरी सन् 1441 (2020-21)

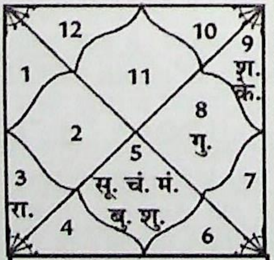

31 अगस्त, 2019 ई.
सूर्यास्त 18$^{घं.}$-49$^{मिं.}$ (भा.स्टैं.य.)

ईस्लामी मतानुसार एक (यकम्) मुहर्रम से ही नया हिजरी सन् की शुरुआत होती है। वि. संवत् 2076 में 1 सितम्बर, 2019 ई. को 1 मुहर्रम (यकम्) के दिन हिजरी सन् 1441 शुरु हो जाएगा। रविवार को हिजरी सन् का प्रारम्भ होने से ईस्लामी वर्ष 1441 (2019-20 ई.) का बादशाह साल सूरज (सूर्य) होगा।

इस्लामी नववर्ष का उदय '**कालसर्प योग**' के प्रभाव में कुम्भ लग्न में हुआ है। लग्नेश शनि लाभस्थान में केतु युक्त होकर लग्न-भाव (नेतृत्व आदि), योजना-भाव तथा पाकिस्तान, ईराक, टर्की आदि मुस्लिम देशों की प्रभावराशि कन्या को विशेष दृष्टि से देख रहा है। साल का बादशाह सूर्य सप्तम भाव (अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों, विदेशी व्यापार व सम्बन्ध, मृत्यु) में बुध, मंगल व शुक्र ग्रहों के साथ स्थित है। ग्रहस्थिति अनुसार लोगों में (विशेषकर मुस्लिम राष्ट्र के) क्रोध (गुस्सा) व उत्तेजना की भावनाएँ ज्यादा होंगी। हुक्मरानों में भी आपसी टकराव व विरोध अधिक होगा। मज़हबी झगड़े और तनाव अधिक होंगे। चोरी, बेईमानी और धोखा-फ़रेब की वारदातें होंगी। लग्न पर मंगल की शत्रु दृष्टि होने से कुछ मुस्लिम देशों (ईरान, लेबनान, टर्की) का अमेरिका एवं यूरोपीय देशों के साथ वैमनस्य बढ़ेगा तथा युद्धोन्मुख परिस्थितियां बनेंगी। धर्म-ईमान की तरफ़ लोगों का ध्यान कम रहे। समृद्ध राष्ट्र जैसे-अमेरिका, इंग्लैंड, जर्मनी, मुस्लिम राष्ट्रों जैसे-ईरान, पाकिस्तान, सीरिया, टर्की आदि देशों के खिलाफ कठोर नीति अपनाएंगे। ता. 16 जुलाई से 15 अगस्त, 2020 ई. के मध्य सूर्य-शनि मध्ये समसप्तक योग इज़रायल-लेबनान, ईरान-अमेरिका, सीरिया-I.S.I. मध्ये टकराव अधिक भयावह बन जाएगा। ता. 22 मार्च से 3 मई, 2020 ई. तक मंगल-शनि योग तथा 18 जून से 15 अगस्त के मध्य मंगल-शनि के मध्य दृष्टि सम्बन्ध रहने से मुस्लिम अथवा आतंकवादी संगठनों तथा समृद्ध राष्ट्रों (अमेरिका, इंग्लैण्ड) के मध्य टकराव की स्थिति बनेगी। विस्फोट तथा उपद्रवी घटनाओं का भय है। किसी मुस्लिम राष्ट्र के प्रधाननेता के लिए भी विशेष संकट भरी स्थिति बन सकती है।

वि. संवत् 2077 में 21 अगस्त, 2020 ई. को 1 मुहर्रम (यकम) के दिन हिजरी सन् 1442 शुरु होगा। शुक्रवार को हिजरी सन् का आगाज़ होने से इस्लामी साल 1442 (2020-21 ई.) का राजा (बादशाह) '**शुक्र**' (ज़ोहरा) होगा।

ईस्लामी मतानुसार निर्धारित नववर्ष कुण्डली नं. 2 में कुम्भ लग्न में उदित हुआ है। लग्नेश शनि द्वादश (व्यय, खर्च, गुप्त, शत्रुओं, अपराध, युद्ध सम्बन्धी कार्यों, षड्यन्त्रों का भाव) भाव में स्वराशिगत होकर भाग्यस्थान को उच्च दृष्टि तथा तृतीय भाव को भी मित्र दृष्टि से देख रहा है। गुरु-शुक्र के मध्य समसप्तक योग भी तनावपूर्ण परिस्थितियों की तरफ संकेत कर रहा है। शनि की विशेष सप्तम शत्रु दृष्टि छटें भाव (प्रत्यक्ष शत्रुभाव) पर होने से पाक, ईरान, सीरिया आदि देशों में गृहयद्ध एवं आतंकी घटनाओं, उग्रवाद जन्य बम-विस्फोट, हत्याकाण्ड, राजनीतिक दृष्टि से उल्टफेर आदि अवांछनीय घटनाक्रम जन्म लेंगे। बादशाह '**शुक्र**' होने से कुछ मुस्लिम देशों में स्त्रियों की स्वतन्त्रता तथा अधिकार क्षेत्र बढ़ेंगे। ता. 4 अक्तू. से 24 दिसम्बर, 2020 ई. तक शनि की द्वितीयस्थ (राष्ट्र की आर्थिक स्थिति मुद्रास्फीति, व्यापार, शेयर्ज़ के भाव) मंगल पर विशेष शत्रु दृष्टि रहने से भी कुछ मुस्लिम देशों विशेषकर पाक, सीरिया की आर्थिक स्थिति अस्थिर एवं संघर्षपूर्ण रहे। पाकिस्तान के शासकों को देश की आन्तरिक आर्थिक स्थिति को सुलझाना कठिन ही रहेगा। सरकार की पक्षपातपूर्ण नीतियों के विरुद्ध विरोधी गुट एवं पार्टियां उग्र-प्रदर्शन, हिंसक एवं विस्फोटक कार्यवाहियां करेंगे।

ईस्लामी नववर्ष कुण्डली (2)
हिजरी सन् 1442 (2020-21)

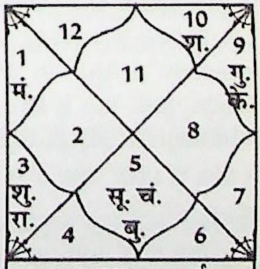

20 अगस्त, 2020 ई.
सूर्यास्त 19घं.-01मिं. (भा.स्टैं.टा.)

—वर्षादि के विश्वामान—

वर्षादि विश्वा का कुल मान 20 विश्वे होते हैं। जिस पदार्थ (विषय) के विश्वा 1 से 20 अंकों के मध्य जितने अधिक (20 अथवा उसके समीपस्थ) होंगे, उस वस्तु के उत्पादन की मात्रा उतनी अधिक होगी। **जैसे**—आगे वि. संवत् 2077 में धान्य के विश्वा 13 लिखे हैं, इसका तात्पर्य यह हुआ कि आगमी वर्ष धान्य का उत्पादन औसत से कुछ अधिक ही होगा।

वर्षा 9, धान्य 13, तृण 13, शीत 7, तेज 17, वायु 13, वृद्धि 15, क्षय 15, विग्रह 11, क्षुधा 13, तृषा 13, निद्रा 13, आलस्य 7, उद्यम 13, शान्ति 15, क्रोध 13, दम्भ 5, लोभ 3, मैथुन 15, रस 9, फल 13, फलनिष्पत्ति 11, उत्साह 3, उग्रता 5, पाप 5, पुण्य 11, व्याधि 11, व्याधिनाश 9, आचार 9, अनाचार 15, मृत्यु 13, जन्म 5, देशोपद्रव 11, देशस्वास्थ्य 17, चोरभय 7, चोरनाश 17, अग्नि 15, अग्निशान्त 1, उद्भिज 5, जरायुज 3, अंडज 7, स्वेदज 13, टिड्डी 11, तोता 11, मूषक 5, सोना 5, ताम्र 7, स्वचक्र 9, परचक्र 15, वृष्टि 3, वृष्टिनाश 11 तथा संवत् विश्वा 9 हैं।

जल आदि चार स्तम्भ-वि. संवत् २०७७

(1) जल स्तम्भ—चैत्र शुक्ल प्रतिदा को रेवती नक्षत्र का सम्पर्क 49.5 प्रतिशत है। फलस्वरूप आगामी वर्ष अधिकतर प्रदेशों/राज्यों में मध्यम स्तरीय वर्षा की ही सम्भावना है। मध्य तथा पूर्वी क्षेत्रों में जैसे-बिहार, उड़ीसा, असम, प. बंगाल, उ. प्र., अरु. प्रदेश, उ. खण्ड में समुचित वर्षा होने के संकेत हैं। उत्तर-पश्चिमी राज्यों में उपयोगी वर्षा की कमी

होगी। कहीं बाढ़ से क्षति तो कहीं वर्षा, पेयजल एवं अनाज की कमी के कारण संकट का सामना होगा। भूमिगत जलस्तर में कुछ बेहतरी होगी। कहीं पेयजल का संकट, इस संदर्भ में जल-बोर्ड आदि सरकारी विभागों में तालमेल की कमी रहे। विद्युत्-उत्पादन तथा सिंचाई हेतु नदियों में पर्याप्त जल-भण्डार की कुछ कमी का अनुभव होगा।

(2) तृण स्तम्भ–वैशाख शुक्ल प्रतिपदा को भरणी नक्षत्र का सम्पर्क 69 प्रतिशत है। फलस्वरूप तृण, घास, पशुचारा, जड़ी-बूटियों तथा अन्य वनस्पतियों की पैदावार पर्याप्त होगी। पशुओं को सुख रहेगा। फलस्वरूप गाय-भैंस आदि चौपाय पशुओं से दुग्धादि एवं इनसे सम्बन्धित पदार्थों का पर्याप्त मात्रा में उत्पादन होगा। परन्तु फिर भी मध्यमबली होने से दूध, पनीर, मक्खनादि पदार्थ कुछ महंगे होंगे।

(3) वायु स्तम्भ–ज्येष्ठ शुक्ल प्रतिपदा को मृगशिर नक्षत्र का अभाव है। फलस्वरूप वातावरण में प्रदूषण, ऊष्णता एवं आशातीत गर्मी का प्रकोप अधिक रहेगा। कुछ क्षेत्रों में अपूर्व वायु-वेग, तेज आँधियों से व्यापक हानि तथा कुछ क्षेत्रों में मेघों के संचालन की व्यवस्था ठीक न होने से गर्मी, आर्द्रता बढ़ेगी तथा खड़ी फसलों को हानि पहुँचेगी। एक ही राज्य में कुछ क्षेत्र सूखाग्रस्त रह जाएंगे।

(4) अन्न स्तम्भ–आषाढ़ शुक्ल प्रतिपदा को पुनर्वसु नक्षत्र का अभाव है। जल एवं तृण स्तम्भ बली होने के बावजूद विपरीत जलवायु के कारण कुछ प्रदेशों में गेहूँ, चने, चावल, मक्का, ईख, धान्यादि का उत्पादन पर्याप्त मात्रा में न होने के कारण इनके मूल्यों में अत्यधिक वृद्धि होगी। सर्वप्रकार के अनाज, दालें आदि तेज भाव होंगी। साधारण लोगों में आक्रोश एवं असन्तोष की भावना व्याप्त रहे। सरकार को अन्न-भण्डारण एवं अनाज वितरण सम्बन्धी सम्स्याओं का सामना करना पड़ेगा। इस सम्बन्ध में विशेष पग एवं कानून लाने पड़ेंगे।

ऊपर वर्णित चारों स्तम्भ वर्ष (संवत्) में किसी भी देश की आर्थिक सम्पन्नता को समझने एवं जानने (आकलन) के लिए विशेष महत्त्व रखते हैं, क्योंकि देश की अर्थव्यवस्था मुख्य रूप से वर्षा, मानसून तथा अन्न उत्पादन पर निर्भर करती है। आगामी वर्ष (वि. संवत् २०७७) में दो स्तम्भ मध्यम-बली तथा शेष दो स्तम्भ नगण्य होने के कारण भारतीय अर्थव्यवस्था में अनेक मूलभूत परिवर्तन किए जाएंगे, परन्तु अनेक सुधारात्मक पगों के बावजूद प्रतिकूल जलवायु एवं वैश्विक परिस्थितियों के कारण व्यवधान उत्पन्न होते रहेंगे।

आर्षमान द्वारा रक्षा फल-विचार (वि. सं. २०७७)

निम्नलिखित ये चार आर्षमान वर्ष में जनता व देश की सुरक्षा, कानून-व्यवस्था, सामाजिक शान्ति एवं सौहार्द, नैतिक मूल्यों, समृद्धि एवं सौभाग्य का निर्धारण करते हैं। आर्षमान भी स्तम्भों की भान्ति विशेष तिथियों एवं नक्षत्रों के संयोग से निर्धारित किए जाते हैं। इनकी निर्बलता देश में उपद्रव, दुर्घटनाओं, आपदाओं, विस्फोट, अशान्ति व लोगों के चारित्रिक पतन को निमन्त्रित करती हैं। आर्ष शब्द का अर्थ है ऋषियों से सम्बन्धित, ऋषियों का। आर्षमान का मूलतः अर्थ हुआ–नापतोल का ऋषि प्रोक्त पैमाना। तिथि व नक्षत्र का संयोग जितना अधिक होगा, आर्षमान उतना ही अधिक बलवान समझा जाएगा।

(1) प्रथम आर्ष–गतवर्ष की पौष अमावस्या को मूल नक्षत्र के स्पर्श से माना जाता है। मूल नक्षत्र का सम्पर्क 77% है।

(2) द्वितीय आर्ष–वैशाख शुक्ल तृतीया को रोहिणी नक्षत्र का सम्पर्क 64.3% है।

(3) तृतीय आर्ष–श्रावण पूर्णिमा को श्रवण नक्षत्र का सम्पर्क 59% है।

(4) चतुर्थ आर्ष–कार्तिक पूर्णिमा को कृतिका नक्षत्र का सम्पर्क 65.8% है।

फल–इस वर्ष देश की रक्षा के सांकेतिक चारों दुर्ग मध्यमबली से कुछ अधिक ही है। फलस्वरूप आगामी वर्ष सरकार द्वारा अन्तर्राष्ट्रीय रक्षा-सन्धियों, परमाणु ऊर्जा एवं सुरक्षा-तन्त्र के क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रयास किए जाएंगे। देश को आर्थिक, राजनैतिक एवं सैन्य दृष्टि से सशक्त बनाने के लिए विशेष नीतियां बनाई एवं क्रियान्वित की जाएगी। विज्ञान, अन्तरिक्ष एवं रक्षा-क्षेत्र में नवीन अनुसन्धान करके देश के सुरक्षा क्षेत्र को सुदृढ़ किया जाएगा। परन्तु ध्यान रहें, चारों दुर्ग पूर्ण बली नहीं हैं। फलस्वरूप पाक व बांग्लादेशी घुसपैठ से देश की आन्तरिक एवं बाह्य सुरक्षा को गम्भीर संकट उत्पन्न होने का भय है। प्राकृतिक आपदाओं से भी देश की आर्थिक, सामाजिक एवं सुरक्षा की स्थिति चिन्तनीय हो सकती है। देश के सुरक्षा प्रबन्धों को और अधिक सुदृढ़ करने की आवश्यकता होगी।

❊ धनु एवं मकर राशिस्थ गुरु का प्रवेशफल-सं. २०७७ ❊

संवतारम्भ में धनु राशि में संचरणशील गुरु 30 मार्च को मकर (नीच) राशि में आकर पुनः 14 मई, 2020 ई. को वक्री होकर 30 जून से 19 नवम्बर, 2020 ई. तक धनु राशि में संचार करेगा। तदुपरान्त 20 नवम्बर, 2020 ई. को पुनः मकरराशि में 5 अप्रैल, 2021 ई. तक मकर राशि में संचार करेगा। ता. 6 अप्रैल, 2021 ई. से संवतान्त तक कुम्भ राशि में संचार करेगा।

धनु राशि में गुरु संचार-फल (30 जून से 19 नवम्बर, 2020 ई. तक)

पूर्वकाले भवेत्-धान्यं-गोधूप-शालिर्शकराः। कार्पासश्च प्रवालानिकांस्य लोहं घृतं त्रपु।।

अर्थात् गुरु जब धनु राशि में आए तो मार्गशीर्ष संवत्सर होता है और उसमें '**हेममाली**' नामक मेघ वर्षता है। स्त्रियों पर हिंसा की घटनाओं में वृद्धि होती है। पहिले से बोई हुई फसलें जैसे-धान्य, गेहूँ, चावल, शक्कर की पैदावार अधिक होगी। परन्तु कपास, रूई, काँसा, लोहा, घी, सीसा, सोना-चाँदी-ये वस्तुएं महंगी होंगी। जबकि तिल, गुड़, सुपारी, सफेद वस्त्रों में मन्दी का रुख रहेगा। मार्गशीर्ष से ज्येष्ठ मास तक घी महंगा होगा तथा भैंस, घोड़े, गाँ आदि चौपायों के भावों में वृद्धि होगी।

मकर राशि में गुरु संचार-फल (20 नवं., 2020 ई. से 5 अप्रै. 2021 ई. तक)

उत्तरेपश्चिमेदेशेखण्ड वृष्टि कदापिच। पूर्वस्यां दक्षिणे चैव दुर्भिक्षं राज्यविग्रहम्।।

अर्थात् गुरु जब मकर राशि में आए तो पौष नामक संवत्सर होता है तथा उसमें '**जलेन्द्र**' नामक मेघ वर्षता है। जिससे चौपायों की मृत्यु अधिक तथा पृथ्वी पर दुर्भिक्ष व अकालजन्य स्थितियां बनेंगी। पेयजल का गम्भीर संकट उत्पन्न होगा। उत्तर तथा पश्चिमी क्षेत्रों में खण्ड वृष्टि अर्थात् कहीं अत्यधिक वर्षा एवं कहीं वर्षा की कमी अनुभव होगी। पूर्वी तथा दक्षिणी राज्यों में सत्ता-परिवर्तन, राजनीतिक उलट-फेर तथा दुर्भिक्ष (अकाल) जन्य हालात बनेंगे। पेयजल, तेल, घी, दूध, अन्न और लाल वस्त्रों आदि के मूल्यों में वृद्धि होगी। चाँदी भी विशेष महंगी होगी।

ग्रहों के आधार पर आगामी वर्ष की प्रमुख भविष्यावाणियां—वि. सं. २०७७

- नया *'प्रमादी'* नामक संवत्सर होने से सरकार की ओर से कठोर एवं अप्रिय निर्णय लिए जाएंगे। यद्यपि देशहित में लिए गए कठोर एवं क्लिष्ट सरकारी नियमों एवं कानूनों से सामान्य प्रजा में दुविधा, भय, विक्षोभ एवं आक्रोश की भावनाएं रहेंगी।
- *राजा बुध* तथा *मन्त्री* चन्द्र होने से अधिकांश राष्ट्राध्यक्ष पारस्परिक सम्बन्धों में दोगुली कूटनीति का प्रयोग करेंगे। व्यापारी, शिल्पकार, डॉक्टर, विशिष्ट लेखक विशेष लाभान्वित रहेंगे। विभिन्न अर्थात् सभी क्षेत्रों में स्त्रियों का महत्त्व, प्रभाव एवं भागीदारी बढ़ेगी।
- वर्ष का राजा बुध होने से लोगों में स्वास्थ्य सम्बन्धी चेतना एवं जागरुकता बढ़ेगी। गीतकार, संगीतकार, अभिनेता, विद्वानों की गैर-कानूनी एवं देश-विरोधी गतिविधियां उजागर होंगी। सन्तों एवं महन्तों का वर्चस्व बढ़ेगा तथा बड़े-बड़े लोगों के विरुद्ध कानूनी कार्यवाही होंगी।
- वर्षारम्भ से 13 जनवरी, 2020 ई. तक *'पंचग्रही योग'* तदुपरान्त *'चतुर्ग्रही योग'* रहने से अमरीका-ईरान, इज़रायल-फिलीस्तीन, भारत-पाक आदि विरोधी देशों के मध्य सैनिक टकराव एवं युद्धजन्य परिस्थितियां बनेंगी। किसी यूरोपीय देश में आतंकवादी घटना घटित होने से आतंकवाद की दावाग्नि पुनः भड़कने लगेगी।
- समूचे विश्व में अनेक जगह पाँव पसारती आतंकी गतिविधियों पर अंकुश लगाने हेतु विश्व के अनेक देश एक विशेष संगठन का निर्माण करने की ओर अग्रसर होंगे।
- आगामी समय में कुछ राज्यों में (हरियाणा, महाराष्ट्र, झारखण्ड, बंगाल, दिल्ली) होने वाले विधानसभा चुनावों में भाजपा स्पष्ट रूप से विजयी होगी। भाजपा के प्रभावक्षेत्र में वृद्धि होगी।
- खण्डित एवं अप्रभावी विपक्ष (कांग्रेस एवं अन्य क्षेत्रीय पार्टियां) यद्यपि राजनीतिक अस्तित्व तो बचा लेंगे, परन्तु भाजपा को पराजित करने में असमर्थ रहेंगे।
- सार्वजनिक संवाद और राजनीतिक आरोप-प्रत्यारोप का स्तर काफी नीचे गिर जाएगा।
- 30 मार्च से 29 जून तक भारत की प्रभावराशि मकर पर *'गुरु-शनि'* योग रहने से प्रधानमन्त्री श्रीनरेन्द्र मोदी की तथा भारत की मान-प्रतिष्ठा एवं प्रभुत्व में अन्तर्राष्ट्रीय एवं विश्वस्तरीय तौर पर वृद्धि होगी। अन्तर्राष्ट्रीय जगत् में एक धूमकेतु की तरह उभरेंगे। विश्व के अनेक राष्ट्र भारत से मैत्री और संवाद के लिए उत्सुक रहेंगे।

सिद्धान्तसंहिताहोरारूपं स्कन्धत्रयात्मकम्।
वेदस्य निर्मलं चक्षुर्ज्योतिः शास्त्रमकल्मषम्।।

'सिद्धान्त, संहिता और होरा (जातक)-तीन स्कन्धरूप ज्योतिषशास्त्र वेद का निर्मल और दोषरहित नेत्र कहा गया है। इस ज्योतिषशास्त्र के बिना कोई भी श्रौत और स्मार्त कर्म सिद्ध नहीं हो सकता। अतः ब्रह्मा जी ने संसार के कल्याणार्थ सर्वप्रथम ज्योतिषशास्त्र का निर्माण किया। अतः स्पष्ट है कि संसार में घटने वाली समस्त घटनाओं का ज्ञान ज्योतिषशास्त्र द्वारा ही होता है।

यह वह शास्त्र है, जिसके आधार पर मनुष्य को उसके जन्म-जन्मातरीय कर्मों के सुपरिणाम और दुष्परिणाम का ज्ञान होता है तथा दुष्परिणामों से बचाव हेतु उपायों का निर्देश किया जाता है। विद्वानों ने इसे प्रत्यक्ष शास्त्र के रूप में स्वीकार किया है-

अप्रत्यक्षाणि शास्त्राणि विवादस्तेषु केवलम्।
प्रत्यक्षं ज्योतिषं शास्त्रं चन्द्रार्कौ यत्र साक्षिणौ।।

वस्तुतः भूत, वर्तमान और भविष्यत्-तीनों कालों के प्रत्यक्षीकरण में यह विद्या चक्षुरूपात्मिका है। एतावता इसकी प्राधान्य स्वयंसिद्ध है। मानव जीवन के सर्वतोमुखी विकास के लिए भौतिक सम्पन्नता के साथ-साथ आध्यात्मिक चिन्तनशीलता परम अपेक्षित है-

विद्यां चाविद्यां च यस्तद्वेदोभयं सह।
अविद्यया मृत्युं तीर्त्वा विद्ययामृतमश्नुते।। (शु. यजु ४०/१४)

ज्योतिर्विज्ञान प्रमुख वेदांग होने के कारण सफल सार्थक जीवनविषयक उपर्युक्त सत्याधृत महती अवधारणा को व्यावहारिक रूप प्रदान करने का अप्रतिम माध्यम है।

न केवल जन्म से मृत्यु तक, अपितु जन्मपूर्व से मृत्यु के अनन्तर की समस्त

गतिविधियों का सम्यक् विवेचन एवं समुचित दिशा-निर्देशन जिस शास्त्र का आश्रय ग्रहणकर किया जाता है, उसकी संज्ञा है-**ज्योतिर्विज्ञान**। वस्तुतः मानव-जीवन से सम्बद्ध ऐसे अनेक अनुपेक्षणीय प्रश्न हैं, जो ज्योतिषशास्त्र के बिना उत्तरित नहीं हो सकते। **यथा**-मनुष्य के प्रादुर्भाव का प्रयोजन क्या है ? नक्षत्र, ग्रह तथा राशि के अनुसार उसके जीवन की अनुकूल-प्रतिकूल परिस्थितियाँ किस प्रकार की हैं ? प्रतिकूलता को अनुकूलता में परिवर्तित करने के लिए कौन से उपाय फलप्रद हो सकते हैं ? निर्धारित अवधि तक रहकर मनुष्य धराधाम को छोड़कर कहाँ चला जाता है ? शरीर-त्याग के उपरान्त उसकी क्या गति होती है ? कर्मानुसार उसका जन्म पुनः कहाँ और किस रूप में होता है ? जन्म-जन्मान्तर के रहस्य को कैसे जाना जा सकता है ? आदि।

काल के अध्ययन का शास्त्र होने के कारण यह कालविज्ञान भी कहा जाता है। निस्सन्देह, किसी भी क्षेत्र में सच्ची प्रगति के लिए काल एवं क्रिया-संचालन का सम्यक् ज्ञान अत्यावश्यक है। कालज्ञान रहने पर कार्य निर्विघ्न सम्पन्न होकर सुपरिणामदायक होता है। ऐसा नहीं होने से निरर्थक परेशानियों का सामना करना पड़ता है। अतएव ऋद्धि-सिद्धि के निमित्त ज्योतिष के दोनों रूपों को अपनाना अर्थात् गणित तथा फलित के अनुसार विकासपथ पर अग्रसर होना सर्वथा श्रेयस्कर है।

जातक के जन्म समय सौरमण्डल एवं जन्मकुण्डली में जिस प्रकार ग्रहों की स्थिति होती है, उसी के अनुसार मनुष्य (जीव) का बाह्य एवं अभ्यान्तरिक जीवन प्रभावित होता रहता है- **'ग्रहाधीनं जगत्सर्वम् ग्रहाधीना नरावराः।**
सृष्टि रक्षण-संहाराः-सर्वे चापि ग्रहानुगाः।।'

जन्मकुण्डली में स्थित ग्रह मनुष्य जीवन के शुभाशुभ कर्मों के नियामक (Determinant) नहीं, बल्कि सूचक होते हैं। मनुष्य जीवन में घटित होने वाली समस्त शुभाशुभ घटनाएं, सफलता-असफलता, जन्म व मृत्यु की स्थिति आदि बीज रूप में गर्भकाल से ही प्रस्फुटित होने लगते हैं। हमारे धर्मशास्त्रों के अनुसार भी मनुष्य को अपने पिछले जन्म में किए गए कर्मों के फल को अवश्य ही भोगना पड़ता है-

अवश्यमेव भोक्तव्यं कृतं कर्म शुभाशुभ।। अन्येत्रऽपि
सुखस्य दुःखस्य न कोऽपि दाता। स्वकर्म सूत्रे ग्रथितो हि लोकाः द्वारा।।

ईश्वर की अपार कृपा से उत्तरी भारत के सर्वाधिक प्रतिष्ठित एवं सर्वप्राचीन प्रकाशन **'पंचांगदिवाकर'**, **'मुफीद आलम जन्त्री'** (उर्दू, हिन्दी-पंजाबी) तथा **'तिथ-पत्रिका'** (पंजाबी) को प्रकाशित होते हुए प्रस्तुत संवत् २०७७ (2020-21 ई.) में गौरवशाली 145 वर्ष हो जाएंगे। इस पंचांग-समूह के प्रवर्त्तक एवं संस्थापक हमारे परम पूज्य वृद्धप्रपितामह (पितृ-पुरुष) विश्वविख्यात मशहूर आलम पण्डित देवीदयालु जी (लाहौर वाले) से लेकर आज तक की दीर्घावधि में हमारे प्रकाशनों को जो राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर की ख्याति एवं प्रशंसा प्राप्त हो चुकी है, वह सुविज्ञ पाठकगणों से छिपी हुई नहीं है। उत्तरी भारत में शताब्दि से अधिक वर्षों प्रयन्त ज्योतिष जगत के क्षेत्र में हमारी पंचांग, जन्त्री तथा अन्य ज्योतिष, धार्मिक प्रकाशनों का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। सुविज्ञ पाठकों से अनुरोध है कि वह असली व प्रामाणिक **'पंचांगदिवाकर'**, **'मुफीद आलम जन्त्री'** तथा अन्य प्रकाशनों पर हमारे पूज्य पिता स्वर्गीय पं. पन्ना लाल ज्योतिषी जी का नाम व फोटो, गणितकर्त्ता पं. विवेक शर्मा एवं पंकज शर्मा तथा एकमात्र वितरक **'जनरल बुक डिपो'** जालन्धर का नाम अवश्य पढ़ लिया करें, जिससे कि आप असली, शुद्ध एवं प्रामाणिक जन्त्री/पंचांग ही प्राप्त कर सकें।

गतवर्षीय दिवाकर पंचांगों की भविष्यवाणियाँ जो अक्षरशः सत्य सिद्ध हुईं

आगे हम संक्षिप्त रूप से हमारे पूर्वजों पं. देवीदयालु जी, पं. मोहन लाल जी, पं. चून्नी लाल जी, पिता जी पं. पन्ना लाल जी तथा वर्तमान गणितकर्त्ता पं. विवेक शर्मा की उन भविष्यवाणियों का उल्लेख कर रहे हैं, जो ईश्वर कृपावश अक्षरशः सत्य सिद्ध हुईं। इन सटीक एवं सफल भविष्यवाणियों के कारण ही **'पंचांगदिवाकर'** को विद्वत समाज में अग्रणी एवं शीर्षस्थ स्थान प्राप्त है।

[भारत-पाक का ब्रिटिश शासन से स्वतन्त्र होना सं. २००४ (1947-48 ई.), भारत-चीन युद्ध (सं. २०१९), भारत-पाक युद्ध (सं. २०२२), बांग्लादेश का उदय होना-सं. २०२७, कांग्रेस (ई.) की पराजय (संवत् २०३३) तथा पुनः सत्ता में आना-सं. २०३६, ईरान-ईराक युद्ध-वि. सं. २०३९, पूर्व प्रधानमन्त्री इन्दिरा गाँधी की आकस्मिक मृत्यु-सं. २०४१, पूर्व प्रधानमन्त्री राजीव गाँधी की आकस्मिक मृत्यु (संवत् २०४७), मोर्चा सरकार का पतन तथा भाजपा का सशक्त पार्टी के रूप में सत्तारूढ़ होना-वि. सं. २०५५, ***भाजपा सरकार का आकस्मिक गिरना तथा कारगिल (ज. काश्मीर) में घुसपैठ एवं युद्ध की स्पष्ट भविष्यवाणी-वि. संवत् २०५६, सं. २०५७ के पंचांग में एवं च, भाजपा का केन्द्र में गिरकर पुनः सत्ता ग्रहण की भविष्यवाणी स्पष्टतः की गई थी।]***

पुनः वि. संवत् २०५८ के पंचांग में अमरीका 9/11 सम्बन्धित त्रासदी के बारे में, वि. संवत् २०५९ में पंजाब में कांग्रेस पार्टी की विजय सम्बन्धी भविष्यवाणी, वि. सं. २०६० में ***'अमरीका-ईराक'*** *युद्ध तथा ईराक में सत्ता-परिवर्तन, वि. सं. २०६१ में लोकसभा चुनावों में कांग्रेस की विजय तथा भाजपा (वाजपेयी) सरकार का पतन, वि. संवत् २०६३ में पंजाब, बिहार मे नेतृत्व-परिवर्तन के योग (बादल तथा नितीश कुमार का सत्तासीन होना) तथा मुम्बई में 11 जुलाई, 2006 ई. को बम-विस्फोट सम्बन्धित भविष्यवाणी, वि. संवत् २०६४ (2007-08 ई.) में उ.प्र., उत्तराखण्ड में नेतृत्व परिवर्तन के योग, वि. संवत् २०६५ में गुजरात में भाजपा एवं मोदी सरकार के विजयी सम्बन्धी भविष्यवाणी, वि. संवत् २०६६ में अमरीकी राष्ट्रपति बराक ओबामा को सफलता प्राप्ति एवं जम्मू-काश्मीर में नैशनल-कांफ्रेंस गठबन्धन का विजयी होना वि. संवत् २०६७ में कांग्रेस का पुनः जीत प्राप्त करना, वि. संवत् २०६८ में विश्व में आर्थिक मन्दी, लीबिया, सूडान, मिस्र, सीरिया आदि देशों में आन्तरिक क्रान्ति तथा सत्ता परिवर्तन, वि. संवत् २०६९ में इस्लामी देशों में आन्तरिक गृह-युद्ध, पंजाब में अकाली-भाजपा गठबन्धन का पुनर्विजयी*

*होना, वि. संवत् २०७० (2013-14 ई.) में ही 'श्रीनरेन्द्र मोदी' के प्रधानमन्त्री बनने **सम्बन्धी भविष्यवाणी तथा पाँच राज्यों के विधानसभा चुनावों में भाजपा की सफलता प्राप्ति की भविष्यवाणी एवं उत्तराखण्ड में महावृष्टि सम्बन्धी हानि की भविष्यवाणी**, वि. संवत् २०७१ (2014-15 ई.) तथा वि. संवत् २०७२ (2015-16 ई.) में अप्रैल, 2015 ई. में **नेपाल में भूकम्प, जम्मू-काश्मीर में किसी पार्टी को स्पष्ट बहुमत प्राप्त न होना तथा चुनाव पश्चात् गठबन्धन सरकार अस्तित्व में आएगी' भविष्यवाणी**, सं. २०७३ (2016-17 ई.) में **'पाक-चीन'** आदि पड़ोसी देशों के साथ विदेश-नीति में निरन्तरता का अभाव, 'एक सक्षम और सामर्थ्यवान राष्ट्र के रूप में भारत का उदय होगा', 'धरती ही नहीं अंतरिक्ष में भी भारत की प्रतिष्ठा बढ़ेगी, अर्थात् नए-नए प्रक्षेपास्त्र एवं अन्तरिक्ष-अनुसन्धान किए जाएंगे' आदि अनेक भविष्यवाणियों का उल्लेख हम गतवर्षीय पंचांगों में कर आएं हैं। परन्तु **सन् 2016-17 ई. की सबसे बड़ी भविष्यवाणी थी 'नोटबन्दी'**। वि. संवत् २०७४ (2017-18 ई.) में पृष्ठ 83 मुख्य कॉलम में पढ़ें-विधानसभा चुनावों में पंजाब, गोवा में कांग्रेस का, परन्तु उ.प्र., उत्तराखण्ड, मणिपुर में भाजपा का प्रभावक्षेत्र बढ़ेगा। पुन: पृष्ठ 91, कॉलम-I में पढ़ें-'……व्यापारी सरकार के कठोर व पेचीदा नियमों से परेशान व पीड़ित रहेंगे।' जैसा कि लोग/व्यापारी जी.एस.टी. व नोटबन्दी के दौरान परेशान रहे। वि. संवत् २०७५ में गुजरात, हि.प्र., त्रिपुरा, कर्नाटका में भाजपा की विजयी/मज़बूती की भविष्यवाणी, पूर्व-प्रधानमन्त्री श्री अटल-बिहारी वाजपेयी जी के निधन सम्बन्धी तथा भाजपा को पराजित करने के लिए विपक्षी पार्टियां नया गठजोड़ बनाने हेतु प्रयासरत रहेंगी-सम्बन्धी भविष्यवाणियां अक्षरश: सत्य सिद्ध हुई हैं।*

गतवर्ष वि. संवत् २०७६ के पंचांगदिवाकर में भी अभी तक (जून, 2019 ई. तक) अनेक भविष्यवाणियां ईश्वर कृपावश सत्य सिद्ध हुई हैं, जिनका उल्लेख कर रहे हैं-

(1) पृष्ठ 79-मुख्य कॉलम में ही स्पष्ट पढ़ें-'नवम्बर, 2018 ई. में होने वाले विधानसभा चुनावों में कुछ राज्यों में कांग्रेस तथा कुछ में भाजपा का प्रभावक्षेत्र बढ़ेगा। **राजस्थान, ३६गढ़ में कांग्रेस का परन्तु म.प्र. में दोनों मुख्य पार्टियों के मध्य कांटे की टक्कर रहे।**'-परिणाम पाठकों के सामने हैं। हम ईश्वर, पितृपुरुषों तथा पाठकों का हृदय से आभार प्रकट करते हैं। आप सभी के आशीर्वाद से ही यह सब सम्भव एवं प्रमाणित हुआ है।

(2) पृष्ठ 79-मुख्य कॉलम में पढ़ें-'**विधानसभा चुनावों में कांग्रेस को आपेक्षित सफलता न मिलने से लोकसभा चुनावों में चुनावी पटल पर श्रीमती प्रियंका गाँधी भी प्रवेश कर सकती हैं।**'-यह भी स्पष्ट है कि चुनावों से पूर्व श्रीमती प्रियंका गाँधी का सक्रिय राजनीति में प्रवेश हुआ।

(3) पृष्ठ 79, मुख्य कॉलम में ही अनेक भविष्यवाणियाँ हैं, जो अक्षरश: सत्य प्रमाणित हुई हैं, जैसे-'नए-नए कर प्रावधानों, कानून व अर्थव्यवस्था की शोचनीय स्थिति के कारण एन.डी.ए. सरकार की प्रतिष्ठा को गहरा आघात पहुँचेगा, परन्तु श्रीनरेन्द्र मोदी की साख मज़बूत रहेगी, कम वर्षा होने से अनाज, धान्यादि के मूल्यों में विशेष वृद्धि होगी।-जैसे कि 1 जुलाई, 2019 ई. को ही केन्द्र सरकार द्वारा इन फसलों के समर्थन मूल्यों में वृद्धि की गई है।

(4) पृष्ठ 79 तथा पृष्ठ 83 (कॉलम-II) पर ही पढ़ें-'ईरान, पाकिस्तान आदि मुस्लिम बाहुल्य देश विश्व राजनीतिक का ध्रुवीकरण बने रहेंगे। रूस, चीन आदि द्वारा अमरीका के विरुद्ध **आर्थिक प्रतिबन्धों के कारण अमरीका को नए समीकरण बनाने के लिए बाध्य होना पड़ेगा।**'- वर्तमान में अमरीका की गतिविधियां स्पष्ट रूप से इस बात का संकेत कर रही हैं।

(5) पृष्ठ 79-(मुख्य कॉलम) तथा पृष्ठ 84 (कॉलम-I) में स्पष्ट पढ़ें-'ग्लोबल वार्मिंग और जलवायु परिवर्तन से ठण्डे यूरोपीय देश भी नहीं बच पाएंगे।'

(6) पृष्ठ 82 (कॉलम-II) में स्पष्टत: पढ़ें-'विपक्षी पार्टियों द्वारा सत्ता-लोलुपता की भावना से बनाए गए तथाकथित '**महागठबन्धन**' एक असफल प्रयास सिद्ध होगा।'-परिणाम पाठकों (जनता) के सामने हैं।

(7) पृष्ठ 83 (कॉलम-II) में स्पष्ट पढ़ें-'7 मई से 21 जून के मध्य '**मंगल-राहु**' योग तथा राहु की स्थिति के कारण राष्ट्रपति ट्रम्प की कूटनीतियों एवं ईरान, तुर्क आदि देशों पर प्रतिबन्धों के कारण विश्व राजनीति में शीत युद्ध जन्य परिस्थितियां रहेंगी।

(8) पृष्ठ 84 (कॉलम-II) में पढ़ें-'पश्चिमी एशियाई देशों में युद्ध के बादल मंडराएंगे। टर्की, ईरान, सीरिया, यमन में अमरीका, रूस आदि देश अलग-अलग आधिपत्य स्थापित करने के लिए इन देशों को भीषण संघर्ष की अग्नि में झोंक देंगे।'-जून-जुलाई की परिस्थितियां समक्ष हैं।

(9) पृष्ठ 85 ('अमरीका' शीर्षक-कॉलम-II) में पढ़ें-'अमरीका, ईरान, रूस, चीन आदि देशों के साथ आर्थिक प्रतिबन्ध आदि लगाकर एक प्रकार से 'मनोवैज्ञानिक युद्ध' लड़ेगा।'

(10) पृष्ठ 86 (कॉलम-II) में स्पष्ट पढ़ें-'**अन्तर्कलह एवं उत्साह में कमी के कारण आगामी विधानसभा** (राज., म.प्र., ३६गढ़) **चुनावों में भाजपा अपेक्षित सीटें प्राप्त करने में असफल रहेंगी।**'

(11) पृष्ठ 87 (कॉलम-I) में स्पष्ट पढ़ें-'7 मार्च, 2019 ई. तक केतु की मकर राशि पर उपस्थिति भारतीय लोकतन्त्र एवं केन्द्रीय सरकार के लिए अत्यन्त कठिन चुनौतियों से भरा समय होगा। भारत की पश्चिमी सीमाओं पर पाकिस्तानी एवं चीनी सेनाओं की आक्रामक गतिविधियाँ भारतीय प्रभुसत्ता एवं अस्मिता के लिए गम्भीर चुनौतियां बनकर उभरेंगी। **फरवरी, 19 ई. में हुई पुलवामा बमविस्फोट के बाद सीमाओं पर तनावपूर्ण परिस्थितियां इस वाक्य की सत्यता स्वयं प्रमाणित कर रही थीं।**'

(12) पृष्ठ 87 पर (कॉलम-I-II) पर पढ़ें-'23 दिसम्बर, 2018 ई. से 21 जनवरी, 2019 ई. के मध्य राम-मन्दिर निर्माण मुद्दा ज्वलन्त रूप से सत्ता-विपक्ष के मध्य टकराव का केन्द्र बिन्दु रहेगा।'

(13) पृष्ठ 88 पर (कॉलम-II) में शीर्षक में ही लिखी गई पंक्ति ***'केन्द्र में भाजपा गठबन्धन सरकार के योग' स्वयं सम्पूर्ण कथाक्रम को व्यक्त कर रही है।-पढ़ें-''इस ग्रहयोग के प्रभाव से श्री मोदी जी को पुनः उच्च पद (प्रधानमन्त्री) प्राप्त हो सकता है। उनकी वैश्विक छवि की प्रभा एवं आभा कायम रहेगी।''***

(14) पृष्ठ 89 पर 'लोकसभा चुनाव-2019 ई.'-शीर्षक के अन्तर्गत पढ़ें-'……

परन्तु ग्रहयोग अनुसार श्री नरेन्द्र मोदी जी के ही पुनः प्रधानमन्त्री बनने के प्रबल योग बन रहे हैं।'

(15) पृष्ठ 89 (कॉलम-II) में स्पष्ट पढ़ें-'**उपरोक्त ज्योतिषीय कारणों से श्रीराहुल गाँधी का अभी प्रधानमन्त्री पद पर प्रतिष्ठित होना संदिग्ध लगता है।**' एवं च, '**ग्रहयोग अनुसार महागठबन्धन............अधिक देर तक सफल नहीं हो पाएगा।**'

(16) पृष्ठ 90 (कॉलम-II-राजस्थान शीर्षक) में पढ़ें-.......विधानसभा चुनावों में कांग्रेस की स्थिति सुदृढ़ होगी। यद्यपि भाजपा-कांग्रेस में काँटे की टक्कर दृष्टिगोचर होगी। **अन्तर्कलह के कारण भाजपा अपेक्षित सीटें प्राप्त नहीं कर पाएंगी। यद्यपि लोकसभा चुनावों में भाजपा की स्थिति सुदृढ़ होंगी।**

(17) पृष्ठ 90 (कॉलम-II-उ.प्र. शीर्षक)-'महागठबन्धन के कारण लोकसभा चुनावों में भाजपा को कुछ हानि होगी तथा आपेक्षित सीटें प्राप्त नहीं होंगी। **फिर भी भाजपा की स्थिति सुदृढ़ रहेगी।**'-परिणाम आपके सामने हैं। एक-एक पंक्ति अक्षरशः सत्य सिद्ध हुई है। अन्य दिल्ली, जम्मू-कश्मीर, पंजाब, हरियाणा आदि शीर्षकों में भी स्पष्ट पढ़ें।-ये सभी घटनाएं '**पंचांगदिवाकर**' में दी गई भविष्यवाणियों की सार्थकता एवं सत्यता प्रमाणित कर रही हैं।-**धन्यवाद (पं. विवेक शर्मा)**

वि. संवत् 2077 में ग्रहों की आकाशी कौंसिल और भविष्यफल

वि. संवत् 2077 में ग्रहों की आकाशी कौंसिल (ग्रह-परिषद्) के दस पदाधिकारों में से पाँच अधिकार (पद) सौम्य (शुभ) ग्रहों को एवं पाँच पदाधिकार क्रूर ग्रहों को प्राप्त हुए हैं। राजा तथा धनेश (कोशस्वामी) जैसे महत्त्वपूर्ण पद द्विस्वभाव किन्तु सौम्य ग्रह '**बुध**' को प्राप्त हुए हैं। बुध को कूटनीतिज्ञ, चपल किन्तु नपुंसक ग्रह भी माना जाता है। मन्त्री का पद स्त्रीकारक ग्रह '**चन्द्रमा**' को प्राप्त हुआ है। वर्षा (मेघ), फलों तथा सेना (रक्षा) के तीन महत्त्वपूर्ण अधिकार क्रूर ग्रह '**सूर्य**' को प्राप्त हुए हैं। धान्येश का अधिकार भी क्रूर ग्रह मंगल को प्राप्त हुआ है। सूर्य व मंगल-दोनों पुरुष ग्रह माने जाते हैं। कृषि एवं धातुओं का अधिकार सौम्य, शुभ एवं पुरुष ग्रह बृहस्पति (गुरु) को प्राप्त हुए हैं।

ग्रहों के प्रस्तुत पद-विभाजन के प्रभावस्वरूप लेखक, अध्यापक, वकील-जज, बौद्धिक एवं तकनीकि कार्यों से सम्बन्धित लोग, वैद्यक, चिकित्सा, लेखा-जोखा (Accounts), विज्ञान-ज्योतिष, तकनीकि कार्य-उद्योग, व्यापारादि से सम्बन्धित लोग विशेष रूप से लाभान्वित होंगे। विश्व में अधिकांश राष्ट्राध्यक्ष पारस्परिक सम्बन्धों में दोगली कूटनीति का प्रयोग करेंगे। राजनीति, सामाजिक, आर्थिक आदि सभी क्षेत्रों में चालाकी, कपट एवं बौद्धिक, कूटनीतियों का प्रयोग होने लगेगा। यद्यपि भौतिक सुख-साधनों में उल्लेखनीय उन्नति होगी। **मन्त्री-चन्द्रमा के प्रभावस्वरूप समाज एवं प्रशासन में स्त्रियों का महत्त्व एवं प्रभुत्व बढ़ेगा।** सम्पन्न एवं विशिष्ट वर्ग के लोगों के मध्य सुख-साधनों एवं धन का प्रसार बढ़ेगा। प्रत्येक क्षेत्र में उपभोग एवं व्यापारिक प्रवृत्ति बढ़ेगी। विवाहादि एवं अन्य राजनीतिक, सामाजिक व धार्मिक क्षेत्रों में प्रदर्शन एवं दिखावे की प्रवृत्ति बढ़ेगी। मन्त्री चन्द्र एवं धनेश भी बुध होने के कारण विभिन्न सौन्दर्य प्रसाधनों तथा विभिन्न उपभोग्य वस्तुओं के उत्पादनों में विशेष वृद्धि होगी। बढ़िया किस्म के वस्त्रों, हस्तशिल्प, हीरा-मोती आदि रत्नों के जौहरी एवं सुवर्णकार, कलपुर्जों एवं कृषि, अनाज-करियाना आदि से सम्बन्धित व्यापारी तथा पैट्रोल, तेल, डीज़ल, कागज, सोना-चाँदी, ताँबा आदि धातुओं एवं भवन-निर्माण से सम्बन्धित व्यवसायी तथा सामान्य व्यापारी वर्ग भी लाभान्वित रहेंगे। चन्द्र-बुध के कारण मनोरोग, उदर, स्नायु, रक्तचाप, मधुमेह, वात, पित्त एवं कफ सम्बन्धी गुप्त एवं पेचीदा रोग अधिक होंगे। लघु व्यापारी लोग आर्थिक उलझनों के कारण परेशान रहेंगे।

मेघों (बादलों, वर्षा) फलों तथा सेना का स्वामी सूर्य होने से अनुकूल एवं उपयोगी वर्षा की कमी रहे। आँधियां अधिक हों। अधिकांश देश घातक परमाणु एवं न्यूक्लियर हथियारों के निर्माण में संलग्न होंगे। पहाड़ी क्षेत्रों में बेमौसमी भारी वर्षा से बाढ़ादि का प्रकोप होगा। लोगों में मानसिक एवं क्लिष्ट श्वास रोग अधिक होंगे। यद्यपि कृषि, फल, परमाणु सौर ऊर्जा एवं सैन्य संसाधनों में विशेष उल्लेखनीय उन्नति होगी, परन्तु **कुछ मुस्लिम बाहुल्य देशों के प्रमुख अपना वर्चस्व बढ़ाने के लिए विश्व के समृद्ध शक्तिशाली देशों से लोहा लेने से नहीं कतराएंगे।** रसेश शनि होने से भी अनुकूल वर्षा की कमी रहे, रसदार वस्तुएँ जैसे-ईख, दूध, घी, तैल, मक्खन, खाण्ड, गुड़ आदि तथा पेयजल में कमी हो। इन सामान्य जनोपयोगी वस्तुओं के मूल्यों में ज़बरदस्त तेजी होने से लोगों में गहरा आक्रोश एवं असन्तोष व्याप्त होगा। लोगों में परस्पर प्रेम-भाव एवं भाईचारे की विशेष कमी रहेगी।

'**प्रमादी**' नामक संवत्सर के प्रभावस्वरूप भी सरकार की ओर से कठोर एवं अप्रिय निर्णय लिए जाएंगे। यद्यपि देशहित में लिए गए कठोर एवं क्लिष्ट सरकारी नियमों से सामान्य प्रजा में दुविधा, भय, विक्षोभ एवं आक्रोश की भावनाएं रहेंगी।

नववर्ष प्रवेश एवं जगत्-लग्न कुण्डली अनुसार भविष्यफल

'**प्रमादी**' नामक संवत्सर में विक्रमी संवत् 2077 का प्रवेश चैत्र अमावस्या की समाप्ति 24 मार्च, 2020 ई. की दोपहर 14^{घं.}-58^{मिं.} पर उत्तराभाद्रपद नक्षत्रकालीन चर लग्न '**कर्क**' में हुआ है। वर्ष लग्नेश चंद्रमा भाग्य स्थान में सूर्य के साथ स्थित है। भारत की प्रभाव-राशि (मकर) पर मंगल की उच्च स्थिति तथा शनि युक्त होकर लग्न भाव को नीच एवं शत्रु दृष्टि से देख रहे हैं। सप्तम

नववर्ष प्रवेश कुण्डली
24 मार्च, सन् 2020 ई.
14 घं. 58 मिं. (भा.स्टैं.टा.)

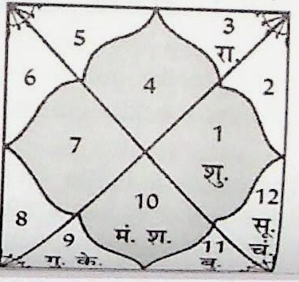

जगत् लग्न कुण्डली,
13 अप्रैल, सन् 2020 ई.
20 घं. 23 मिं. (भा.स्टैं.टा.)

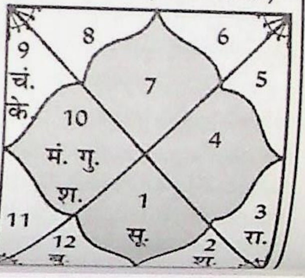

छत्रभंग तथा उपद्रव हिंसक घटनाएं अधिक होंगी।

उच्च स्थिति तथा शनि युक्त होकर लग्न भाव को नीच एवं शत्रु दृष्टि से देख रहे हैं। सप्तम भाव (वैदेशिक सम्बन्धों का भाव) में मंगल-शनि की स्थिति तथा भाग्यस्थ सूर्य-चन्द्र पर शनि की शत्रु तृतीय दृष्टि भी भारत एवं विश्व में तनाव एवं उलझनपूर्ण परिस्थितियों की ओर संकेत कर रही हैं। '**कालसर्प योग**' भी बना हुआ है। ग्रहस्थिति आगामी वर्ष विश्व राजनीतिक मंच पर विशेष घटनाप्रद परिस्थितियों लेकर आएगी। विश्व के अनेक विकसित एवं विकासशील देश अपनी सामरिक शक्ति बढ़ाने तथा प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप से अपना वर्चस्व बनाने के लिए परमाणु एवं संहारक हथियारों का संग्रह करने में संलिप्त रहेंगे। वर्ष लग्न पर शनि–मंगल की संयुक्त दृष्टियां तथा सूर्य पर शनि की शत्रु दृष्टि, शुक्र पर गुरु की विशेष पंचम दृष्टि के प्रभावस्वरूप दक्षिण एशिया के कुछ देशों में कहीं अग्निकाण्ड, भूकम्प एवं हिंसक आन्दोलन होने से अशान्ति फैलेगी। विश्वव्यापी आर्थिक क्षेत्रों में आर्थिक मन्दी के कारण पाकिस्तान, ग्रीस, अफगानिस्तान, श्रीलंका, भारत, चीन, सहित अनेक विकासशील देश आर्थिक मन्दी की लपेट में आ जाएंगे। राजनीतिक एवं आर्थिक क्षेत्रों में विश्व के प्रमुख देशों जैसे–अमरीका, भारत, चीन, फ्रांस, ब्रिटेन, जर्मनी, कैनेडा आदि देशों के मध्य नए समीकरण बनेंगे। भारत–अमरीका सहित विश्व के प्रमुख शक्तियों के सामने आतंकवाद से निपटना प्रमुख मुद्दा बना रहेगा।

वर्षप्रवेश कुण्डली में कर्क लग्न उदित होने से पूर्वी देशों एवं पूर्वी प्रान्तों में सुख-समृद्धिदायक वातावरण रहेगा। ऐश्वर्य तथा सुख-साधनों में वृद्धि होगी एवं पूर्वी प्रदेश प्रगतिपथ पर रहेंगे। परन्तु उत्तरी दिशा के देशों एवं प्रदेशों (उत्तरी यूरोप, काश्मीर) में अशान्ति, प्राकृतिक प्रकोपों से व्यापक जन–धन हानि के संकेत हैं।

जगत् लग्न एवं विश्व घटनाक्रम

13 अप्रैल, सोमवार, 2020 ई. को रात्रि 20$^{\text{घं.}}$–23$^{\text{मिं.}}$ पर तुला लग्न में जगत् लग्न का प्रवेश होगा। लग्न का स्वामी शुक्र (जोकि अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों का स्वामी भी है) अष्टम भाव में स्वराशिगत (आकस्मिक दुर्घटनाओं, प्राकृतिक आपदाओं का भाव) होकर स्थित है तथा गुरु के साथ नवपंचम योग बना हुआ है। सूर्य की लग्न भाव पर नीच दृष्टि भी है। ग्रहस्थिति के अनुसार विश्व के अधिकांश देशों के आन्तरिक, सामाजिक व राजनीतिक हालात विक्षुब्ध एवं परेशानीकारक होंगे। विशेषकर अमेरिका, अफगानिस्तान, पाकिस्तान, ग्रीस, मोरोक्को, ईरान, ईराक आदि देशों में आन्तरिक परिस्थितियां अस्थिर एवं अशान्तिपूर्ण होंगी। कुछ खाड़ी देशों में हिंसक एवं विस्फोटक घटनाएं घटित होंगी।

वर्षप्रवेश एवं जगत् लग्न कुण्डली–दोनों में **कालसर्प योग** का अशुभ प्रभाव खाड़ी एवं मुस्लिम देशों के लिए राजनीतिक, सामाजिक तथा आर्थिक दृष्टि से विशेष घटनापूर्ण एवं संकटपूर्ण परिस्थितियां लेकर आएगा। मुस्लिम देशों (लीबिया, सीरिया, पाकिस्तान) आदि खाड़ी देशों में कहीं शासन परिवर्तन होने के भी संकेत हैं।

जगत् लग्न लग्न कुण्डली में तुला लग्न उदित होने से मध्य-प्रदेशों (म.प्र., झारखण्ड) अथवा मध्य एशियाई (ईरान, ईराक, तथा खाड़ी देशों) देशों में छत्रभंग अर्थात् शासन-परिवर्तन की प्रबल सम्भावनाएं हैं। पूर्वी देशों तथा प्रदेशों (प. बंगाल आदि) में भी छत्रभंग तथा उपद्रव हिंसक घटनाएं अधिक होंगी।

तुलालग्ने–मध्यदेशो–छत्रभंगश्च–विग्रहः।
धान्यस्यविक्रयः प्राच्यां–छत्रभंगम्–उपद्रवः।। (वर्ष प्रबोध)

वर्षप्रवेश एवं जगत् लग्न कुण्डलियों में प्राप्त कुछ अशुभ ग्रह–योगों एवं अवरोधों के बावजूद दोनों कुण्डलियों में शनि स्वराशिगत तथा मंगल उच्चस्थ होकर संचार कर रहा है। जगत् लग्न कुण्डली में लग्न पर शनि की उच्च दशम दृष्टि होने से विश्व के अनेक विकसित एवं विकासशील देश औद्योगिक एवं व्यापारिक आदान–प्रदान हेतु परस्पर सम्बन्ध बढ़ाएँगे। समूचे विश्व में अनेक जगह पाँव पसारती आतंकी गतिविधियों पर अंकुश लगाने हेतु **विश्व के अनेक देश एक विशेष संगठन का निर्माण करने की ओर अग्रसर होंगे।** इसके अतिरिक्त अमेरिकन एवं यूरोपीय देशों के ऐशियाई देशों के साथ व्यापारिक एवं राजनैतिक सम्बन्धों में वृद्धि होगी। सौर–ऊर्जा, इलैक्ट्रिक वाहनों, परमाणु–अनुसन्धान, न्यूकलियर साईंस एवं नाभकीय क्षेत्रों में उल्लेखनीय विस्तार होगा। विश्व–शान्ति की स्थापना हेतु संयुक्त राष्ट्र संस्थान (U.N.O.) द्वारा भी कुछ नए प्रयास किए जाएंगे।

सन् 2020 ई. में गोचर ग्रहस्थिति और विश्व के हालात

वर्षारम्भ से 13 जनवरी, 2020 ई. तक धनु राशि में '**पंचग्रही योग**' रहने तथा वर्षारम्भ ता. 1 जन. को ही शनि के अस्त होने (जोकि संवत् 2076 का राजा भी है) के कारण पाकिस्तान, मिस्र, ईरान, ईराक आदि अरब देशों में कहीं विस्फोटक एवं हिंसक घटनाएँ होने के संकेत हैं। इज़रायल–फिलीस्तीन, अमरीका–ईरान, भारत–पाक आदि विरोधी देशों के मध्य सैनिक टकराव एवं युद्ध जन्य परिस्थितियां बनेंगी। **किसी यूरोपीय देश में आतंकवादी घटना घटित होने से आतंकवाद की दावाग्नि पुनः भड़कने लगेगी।**

[गतवर्ष पृष्ठ 84 पर यूरोपीय देशों की कुण्डली के अन्तर्गत कॉलम-1 में स्पष्ट पढ़ें–तुर्क, यमन, सीरिया आदि देशों के शरणार्थी बैल्जियम, जर्मनी, ऑस्ट्रिया आदि देशों की शिरोवेदना को ही बढ़ाएंगे।'–जोकि सत्य ही प्रमाणित हुआ।]

यूरोपीय देशों की कुण्डली
1 जन., 2020 ई.
मध्यरात्रि 00$^{\text{घं.}}$ 00$^{\text{मिं.}}$

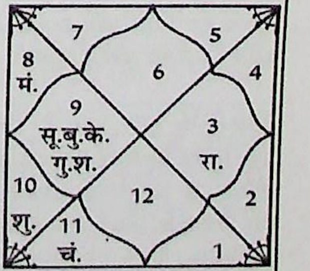

आगामी वर्ष (सन् 2020 ई.) भी चतुर्थ भाव में '**पंचग्रही योग**' यूरोपीय देशों का राजनीतिक, घरेलु एवं आंतरिक वातावरण विक्षुब्ध रखेगा। शरणार्थी तथा पलायन सम्बन्धी समस्या इन देशों की अर्थव्यवस्था को कमज़ोर कर देगी।

माघ मास (11 जनवरी से 9 फरवरी, 2020 ई. तक) के मध्य पाँच शनिवार एवं पाँच रविवार पड़ने से पाकिस्तान की सीमाओं पर, सीरिया, लीबिया, मिस्र आदि खाड़ी देशों में राजनैतिक उथल–पुथल, सैन्य टकराव, युद्धादि का वातावरण बनेगा। कहीं विस्फोटक घटनाओं के कारण लोगों की आकस्मिक मृत्यु के योग हैं। पाकिस्तान, अफगानिस्तान आदि मुस्लिम देशों

में उपभोग्य वस्तुओं के मूल्यों में तेजी, लोगों में क्लिष्ट रोग, कष्ट एवं दुःखों में वृद्धि होगी।

शनिवारा यदा पंचजायते रविपंचकम्।
महर्घं जायते रोग शोकाकुला पृथिवी।।

फरवरी-मार्च के महीनों में धनु राशि में मंगल-गुरु-केतु तीनग्रही योग एवं गुरु-शुक्र मध्य नवपंचम योग, 14 मार्च, से 12 अप्रैल के मध्य सूर्य-शनि दृष्टि सम्बन्ध (3-10) रहने से ईरान, पाक, अफगानिस्तान आदि इस्लामिक देशों में कहीं युद्ध का माहौल बनेगा, कहीं दुर्भिक्ष (अनाज, पेयजल की कमी) व अराजकता फैलने का भय रहेगा। पाकिस्तान, ईरान, अफगानिस्तान आदि देशों में अप्रत्याशित घटनाएं घटित होंगी।

चान्द्र चैत्र मास (10 मार्च से 8 अप्रैल) पाँच मंगलवार आने, सूर्य-शनि मध्ये दृष्टि सम्बन्ध, 22 मार्च से मंगल-शनि योग (मकर में) होने से पाकिस्तान, अफगानिस्तान, कतर, सीरिया, यमन, लीबिया आदि मुस्लिम देशों में कहीं सैन्य (अथवा सत्तारूढ़ ग्रुपों) व लोकतांत्रिक ग्रुपों के मध्य हिंसक टकराव स्वरूप व्यापक अग्निकाण्ड, विस्फोट एवं मृत्यु संहार के समाचार मिलेंगे। किसी प्रमुख नेता के अपदस्थ, सत्ता-परिवर्तन (छत्रभंग) या मृत्यु के भी योग हैं-

कर्कमीनमृगस्त्रीषु शनिभौमे यदा स्थितौ।
तदा युद्धाकुला पृथ्वी धनधान्यविवर्जिता।।

आगे 11 मई से 28 सितम्बर तक शनि वक्री रहने तथा 14 मई से 12 सितम्बर, 2020 ई. तक गुरु तथा 13 मई से 24 जून तक शुक्र भी वक्री रहने के कारण पाक, ईरान आदि इस्लामिक देशों में कहीं युद्ध का माहौल बने, कुछ देशों में वर्षा, बाढ़ आदि अनेक प्राकृतिक प्रकोपों से भय का वातावरण रहे।

'यदा प्रतीपगौ खेटौ नृपं क्षोभयतस्तदा।
प्रतीपगास्त्रयः खेटा युद्धवृष्टिभयप्रदाः।।'

अपरंच-**'शनि वक्रे दुर्भिक्षं च राज्ञां युद्धं परस्परम्।।'**

खप्पर योग-17 सितम्बर से 16 अक्तूबर के मध्य आश्विन अधिक मास तथा 17 अक्तू., 2020 ई. से 13 जनवरी, 2021 ई. के मध्य क्रमशः शनि, रवि एवं भौम संक्रान्तियां आने से खप्पर योग बना है, जिसका फल शास्त्रकारों ने अशुभ एवं विनाशकारी बताया है। फलतः पाक, अफगानिस्तान, ईराक, सूडान, सीरिया, तुर्क, यमन, सोमालिया आदि मुस्लिम देशों में राजनीतिक अस्थिरता, आतंकी विस्फोटक घटनाएं, उथल-पुथल एवं अशान्ति व्यापत होगी।

शनि स्यादाद्यसंक्रान्तौ द्वितीयायां प्रभाकरः।
तृतीयायां कुजोयोगः खर्पराख्योऽति कष्टकृत्।।

आगे 14 से 25 जनवरी, 2021 ई. तक **चतुर्ग्रही योग** (सू., बु., गु. श.) तथा 4 फर. से 12 फर. तक **पंचग्रही योग** (सू., बु., गु., शु., श.) रहने से विश्व में प्रमुख शक्तियों के मध्य युद्धजन्य परिस्थितियां बनेंगी तथा कहीं भयंकर प्राकृतिक प्रकोपों से व्यापक जन-

विश्व के कुछ प्रसिद्ध देश

अमेरिका (America)-इसकी प्रभाव राशि मिथुन है। जगत् लग्न कुण्डली में मिथुन राशि भाग्य स्थान (योजना-भाव) में है तथा 22 सितम्बर, 2020 ई. तक राहु का अशुभ संचार रहेगा। फलस्वरूप ईरान, लेबनान, पाकिस्तान, लीबिया, सीरिया, यमन आदि मुस्लिम बाहुल्य देशों के सम्बन्ध में अपनी विदेश नीति का पुनरावलोकन करने के लिए बाध्य होना पड़ेगा। रूस, चीन आदि देशों के विरोध के बावजूद एकतरफा तरीके से ईरान को दबाने की कोशिश करता रहेगा। रूस, ईरान आदि देशों के साथ तनावपूर्ण स्थिति के बाद शान्ति स्थापित करने का दावा करने हेतु शान्ति वार्ताएं, बैठके समायोजित करेगा। भारत के साथ व्यापार के मोर्चे पर कुछ मतभेद के बावजूद (चीन एवं रूस द्वारा प्रस्तुत चुनौतियों के कारण) भारत के साथ अपने सामरिक रिश्ते और मज़बूत बनाकर मुख्य रूप से अपनी सामरिक स्वायत्तता बढ़ाने का प्रयास करेगा। आतंकी हमलों एवं सुरक्षा सम्बन्धी खतरों की दृष्टि से कुछ मुस्लिम देशों में अस्थाई रूप से अपने दूतावासों को बन्द करने पर मज़बूर होगा।

पाठक कृप्या ध्यान दें-गतवर्ष पृष्ठ 85 पर इसी कॉलम के अन्तर्गत लिखी गई ईरान आदि देशों के विरुद्ध आर्थिक प्रतिबन्ध लगाकर 'मनोवैज्ञानिक युद्ध' लड़ेगा तथा भारत की ऊर्जा-आयात (तेलादि) नीति को प्रभावित करेगा। आदि भविष्यवाणियां अक्षरशः सत्य सिद्ध हुईं।

पाकिस्तान (Pakistan)-जगत् लग्न कुण्डली में इस देश की प्रभावराशि कन्या की द्वादश भाव (व्यय, गुप्त शत्रु, युद्ध सम्बन्धी कार्यों का भाव) में स्थिति है। राशिस्वामी बुध षष्ठ भाव (प्रत्यक्ष व परोक्ष शत्रुभाव) में नीच राशिगत होकर स्वगृही दृष्टि रख रहा है। फलस्वरूप ग्रहस्थिति अनुसार इस देश में आवश्यक वस्तुओं की किल्लत, रोज़गार की कमी, बेतहाशा गरीबी, बढ़ती विषमता, बिगड़ती कानून व्यवस्था और जिहादियों की हिंसा से आम जनता बुरी तरह त्रस्त रहेगी। अर्थव्यवस्था बदहाल रहेगी। पाकिस्तान का वर्तमान सत्ता-अधिष्ठान (इमरान-सरकार) अविश्वसनीय ही रहेगा। करतारपुर कॉरीडार तथा बातचीत के बहाने धोखा देने की अपनी पुरानी फितरत से अभी भी बुरी तरह ग्रस्त रहेगा। अपनी आतंकवादी चालों से निरन्तर भारत को परेशान करेगा। पाकिस्तानी (राजनीतिक सैन्य-मज़हबी नेतृत्व की) तिकड़ी से पैदा हुआ आतंकवाद का जिन्न अब भस्मासुर बनकर अपने ही आका (पाक) को बर्बाद करने पर तुल जाएगा। यह देश अपने आप में बारूद का एक ढेर बन जाएगा। परन्तु आतंकवाद को अपनी राष्ट्रीय नीति का अंग बनाने और दुनियाभर में भारत की कूटनीति के कारण पाकिस्तान अलग-थलग पड़ जाएगा। सऊदी-अरब, संयुक्त अरब अमीरात, कतर और चीन आदि देश पाकिस्तान को आर्थिक एवं राजनीतिक संरक्षण देने का काम करते रहेंगे। चीन पाकिस्तान को अजगर के माफिक शिकंजे में कसने का प्रयास करता रहेगा। [समय रहते भारत को पाकिस्तान के प्रति और अधिक सर्तक हो जाना

वि. सम्वत् 2077 में गोचर ग्रहस्थिति और भारत का भविष्यफल

जन्मकुंडली स्वतंत्र भारत
14/15 अगस्त, 1947 ई.
(23$^{\text{घं.}}$-59$^{\text{मिं.}}$) भा. स्टैं. टा.

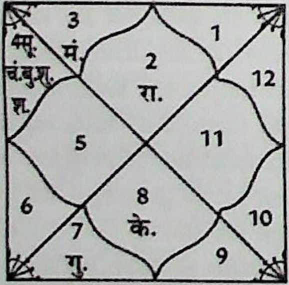

कुंडली गणतंत्र दिवस
26 जनवरी, 1950 ई.
10$^{\text{घं.}}$-19$^{\text{मिं.}}$ (भा. स्टैं. टा.)

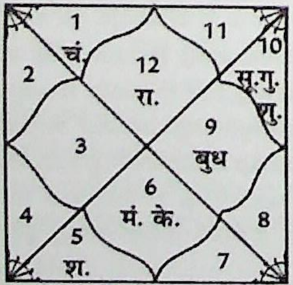

कुं. स्वतंत्र भारत (73वाँ वर्ष)
15 अगस्त, 2019 ई.
(10$^{\text{घं.}}$-59$^{\text{मिं.}}$) (दिल्ली)

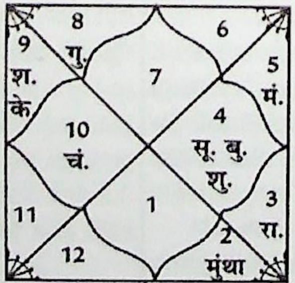

कुं. स्वतंत्र भारत, 74वाँ वर्ष
14 अगस्त, 2020 ई. शुक्रवार
(17$^{\text{घं.}}$-08$^{\text{मिं.}}$) (दिल्ली)

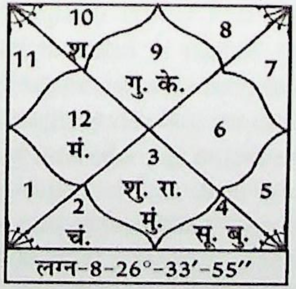

कुं. गणतन्त्र दिवस, 71वाँ वर्ष
27 जनवरी, 2020 ई., सोमवार
(9$^{\text{घं.}}$-00$^{\text{मिं.}}$),(दिल्ली)

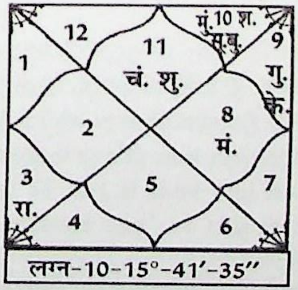

स्वतन्त्र भारत के 73वें वर्ष की कुण्डली (15 अगस्त, 2019 ई.) में तुला लग्न उदित है। वर्ष-लग्नेश एवं मुंथेश शुक्र दशम भाव (प्रशासन, प्रधानमन्त्री, आयात-निर्यात, संसद, सरकार का भाव) में शत्रुराशिगत होकर सूर्य एवं बुध के साथ स्थित है। सूर्य-बुध-शुक्र का शनि-केतु के साथ षडाष्टक योग भी बना हुआ है। अष्टमस्थ मुंथा भी संघर्षमयी एवं विपरीत परिस्थितियों की ओर संकेत कर रही है। यद्यपि नवीन मोदी-सरकार द्वारा नए एवं सशक्त भारत के निर्माण तथा देश के गौरव को पुनः स्थापित करने के लिए अर्थव्यवस्था में विशेष मौलिक एवं बुनियादी परिवर्तन किए जाएंगे। व्यापक राष्ट्रहित में कई नई योजनाएं एवं नीतियां बनाकर फैसले लिए जाएंगे, परन्तु राहु योजना भाव (नवम-भाव) में होने से कुछ क्षेत्रीय पार्टियों एवं विपक्ष का विरोध प्रखर रूप से सामने आएगा। अगस्त, 2019 ई. के बाद देश में आन्तरिक विरोध, साम्प्रदायिक ध्रुवीकरण एवं जातीय हिंसा, अनावृष्टि से चिन्ताजनक एवं असमंजसपूर्ण वातावरण रहेगा। लोगों में महँगाई, मूल्यवृद्धि, बेरोज़गारी, कुछ क्षेत्रों में अकालजन्य स्थिति के कारण अशान्ति व भय होगा।

10 सितम्बर, 2019 ई. से बुध-शुक्र पर, तदुपरान्त 17 सितम्बर से सूर्य पर शनि की विशेष दशम दृष्टि रहने, मंगलवारी संक्रान्ति तथा 28 सितं. को शनिवासरी अमावस आने से कुछ क्षेत्रों में अकाल, दुर्भिक्ष की स्थिति रहे।

मध्यमवर्षमथवादुष्कालः खण्डमण्डले।

स्वतन्त्र कुं. में गुरु की शुभ उच्च नवम दृष्टि ता. 4 नवम्बर, 2019 ई. तक दशम भाव (देश की सरकार एवं प्रशासन का भाव) पर रहने से नव-मोदी सरकार द्वारा विकास की निरन्तरता के साथ-साथ परिवर्तन की ब्यार लाने का प्रयास किया जाएगा। भारत सरकार द्वारा पाकिस्तान के छद्म युद्ध के खिलाफ नई नीतियां एवं कार्ययोजना तैयार कर एक नए युद्ध अध्याय की शुरुआत की जाएगी।

4 नवम्बर, 2019 ई. से गुरु धनु राशि में आकर शनि-केतु के साथ मेल करेगा तथा राहु के साथ समसप्तक योग बनाएगा। स्वतन्त्र कुं. (73वें) में चंद्रमा भारत की प्रभावराशि मकर पर है तथा उस पर सूर्य-बुध-शुक्र की शुभाशुभ दृष्टियां भी हैं। अर्थव्यवस्था में बीच-बीच में धीमी व सुस्त वृद्धि दर के कारण बेरोजगार लोगों में हताशा व निराशा की भावना बढ़ेगी। राजनीतिक प्रभुसत्ता प्राप्त करने के लिए कुछ पार्टियां अपने संगठन को मज़बूत करने के लिए नए-नए कुटिल हथकण्डे अपनाने से भी गुरेज़ नहीं करेंगी। देश में राजनीतिक टकराव, आरोप-प्रत्यारोप एवं कहीं हिंसक साम्प्रदायिक घटनाएं घटित होने के योग हैं। अष्टमेश (विपक्ष का भाव) शुक्र दशम भाव (संसदीय कार्यों का भाव, विद्रोह) में शत्रु राशिगत होने से भी कांग्रेस तथा अन्य विपक्षी दल विपक्ष की अपेक्षाओं के विपरीत एवं विरुद्ध आचरण करेंगे। राजनीतिक दल प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से संसदात्मक व्यवस्था और लोकतन्त्र को ही चुनौती देंगे। संसद का गतिरोध धीरे-धीरे संवैधानिक संकट की ओर बढ़ जाएगा। संसदीय नियमों में कुछ बदलाव लाए जाएंगे।

71वें गणतन्त्र दिवस (27 जनवरी, 2020 ई.) की कुण्ड़ली में कुम्भ लग्न उदित हुआ है। वर्ष लग्नेश शनि द्वादश भाव (गुप्त शत्रु, युद्ध सम्बन्धी कार्य, व्यय, षड्यन्त्रों का भाव) में स्वराशिगत है, परन्तु अस्तगत है। द्वादश भाव में मुंथा भी देश के लिए अनिष्टकारी होती है। लग्न पर मंगल की गुप्त-शत्रु दृष्टि भी है, फलस्वरूप केन्द्रीय भारत सरकार द्वारा प्रणीत विभिन्न विकास योजनाओं पर आशातीत खर्चों (व्यय) के बावजूद वांछित लाभ नहीं हो पाएंगे। पंचमस्थ (विकास योजनाओं का भाव) राहु के प्रभाव होने से घोषित लघु एवं वृहद् विकास योजनाओं में अनावश्यक खर्चों में वृद्धि, आकस्मिक प्राकृतिक अड़चनों तथा विपक्षी विरोध के कारण विकास की वृद्धि-दर व गति धीमी रहेगी तथा कई योजनाओं का क्रियान्वयन लम्बित रहेगा। गणतन्त्र दिवस कुं. में लग्न भाव पर गुरु की गुप्त मित्र दृष्टि रहने

से यद्यपि **मोदी सरकार अपनी नीतियों और कार्यक्रमों को निरन्तरता प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध दिखाई देगी** परन्तु कुछ सत्तारूढ़ नेताओं में संकल्प-शक्ति एवं पराक्रम की कमी रहेगी।

लग्न भाव में चंद्र-शुक्र की स्थिति के कारण सत्तापक्ष एवं विपक्ष की विचारधाराओं में ज़बरदस्त मतभेद देखने को मिलेगा। द्वितीयेश (राष्ट्र की आर्थिक स्थिति का भाव) गुरु लाभ (राष्ट्रीय-आय वाणिज्य भाव) स्थान में यद्यपि स्वराशिगत है, परन्तु केतु युक्त होने से सरकार को अपेक्षित टैक्स प्राप्त नहीं हो पाएगा। परन्तु मुंथेश शनि स्वराशिगत होने से प्रधानमन्त्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में तमाम अवरोधों के बावजूद देश उन्नति एवं प्रगति के पथ पर रहेगा। अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार-युद्ध से भारत को कई क्षेत्रों में लाभ भी प्राप्त होंगे। ग्रामीण आबादी तथा ग्रामीण अर्थव्यवस्था पर प्राथमिकता देकर सरकार द्वारा कई लोकलोभावन घोषणाएं की जाएंगी। अन्तरिक्ष विज्ञान के क्षेत्र में विशेष प्रगति कर एक प्रकार से अंतरिक्ष में सर्जिकल-स्ट्राईक कर देगा। एक सक्षम और सामर्थ्यवान राष्ट्र के रूप में भारत का उदय होगा। विश्व में भारत की छवि आत्मविश्वासी और आत्मनिर्भर राष्ट्र के रूप में विकसित होगी। भारत में बौद्धिक कौशल, रचनात्मक, सृजनात्मक क्षमता पर आधारित अर्थव्यवस्था पर प्रभाव बढ़ेगा।

30 मार्च से 29 जून तक गुरु मकर (नीच) राशि में शनि युक्त होने से (द्वादश भाव में) पाक, चीन आदि विरोधी देश सीमा पर तनाव व घुसपैठ यथावत जारी रखेंगे। मोदी सरकार के समक्ष पाक-चीन के साथ भौगोलिक विवाद, आतंकवाद सम्बन्धित जटिल और परस्पर विरोधाभासी स्थितियां रहेंगी, जो समय-समय सरकार की परीक्षा लेंगी। लोकसभा में अप्रत्याशित जीत की भान्ति कुछ राज्यों जैसे-हरियाणा, महाराष्ट्र, दिल्ली, झारखण्ड के विधानसभा चुनावों में भी भाजपा को विजय श्री प्राप्त होगी। नए-नए समीकरण बनेंगे। विपक्षी पार्टियां आपस में गठजोड़ कर लेंगी।

स्वतन्त्र भारत के 74वें वर्ष की कुण्डली में 14 अगस्त, 2020 ई. को धनु लग्न उदित होगा। इस वर्षकुण्डली में वर्ष-लग्नेश गुरु लग्न भाव में ही (केन्द्रीय सरकार का भाव, नेतृत्व, मन्त्रीमण्डल) स्वराशिगत होकर केतु युक्त है। फलस्वरूप मंत्रीमण्डल एवं योजनाओं पर केन्द्रीय नेतृत्व (प्रधानमन्त्री) का पूर्ण वर्चस्व, नियन्त्रण और आधिपत्य रहेगा। प्रधानमन्त्री एवं केन्द्रीय नेतृत्व द्वारा विभिन्न ग्रामीण विकास योजनाओं द्वारा विकास की गति में तेजी लाई जाएगी। परन्तु केतु के कारण इनके क्रियान्वयन में विघ्न-बाधाएं अधिक आएंगी। स्वार्थपरता एवं राजनेताओं का अपने दायित्व की प्रतिबद्धता में कमी के कारण अधिकांश विकास कार्यों का लाभ सामान्य लोगों तक नहीं पहुँच पाएगा। द्वितीयेश (राष्ट्र की आर्थिक स्थिति का भाव) शनि यद्यपि द्वितीय भाव में ही स्वराशिगत है जोकि मज़बूत अर्थव्यवस्था की ओर संकेत कर रहा है, परन्तु सूर्य-बुध के साथ समसप्तक योग तथा मुंथेश (बुध) अष्टमस्थ एवं च गुरु-शुक्र के मध्य समसप्तक योग आगामी वर्ष देश के प्रधाननेता के लिए

अभी भी आम आदमी को उद्वेलित और आन्दोलित करता रहेगा। राजनीति में नेताओं के साम्प्रदायिक, बचकाने और अमर्यादित बयानों पर वाद-विवाद बढ़ेंगे। अनेक अवरोधों एवं समस्याओं के बावजूद मोदी सरकार द्वारा विकास के नए प्रतिमान स्थापित होंगे।

सन् 2020 ई. में ग्रहगोचर और भारतवर्ष

वर्षारम्भ माघ मास (11 जनवरी से 9 फरवरी, 2020 ई. तक) में पाँच शनिवार तथा पाँच रविवार होने, 24 जनवरी को शनि मकर राशि में आकर सूर्य के साथ 12 फरवरी तक एकराशि सम्बन्ध बनाएगा, 7 फर. तक कुम्भस्थ शुक्र पर मंगल की विशेष दृष्टि भी रहेगी।

'पृथ्वीशाः क्रोधपूर्णाः भवति, पथिभयं सर्वरोगाद्विनाश,
-श्चिन्तास्थानं नृपाणां भवति सति बले सूर्यपुत्रे मृगस्थे।।'

सभी राजनीतिक पार्टियों के मुखिया परस्पर क्रोधित एवं वैमनस्य में अलोकप्रिय निर्णय लेंगे, रास्तों में लूटपाट, स्नैचिंग, पेचीदा रोगों से लोग आक्रांत रहें तथा शासकवर्ग को मुकद्दमेबाज़ी, आरोप-प्रत्यारोपों के कारण चिन्ता रहे। भारत के अनेक प्रदेशों में उपद्रव, साम्प्रदायिक दंगे, हिंसक घटनाएं तथा सीमा पर घुसपैठ, सीज़फॉयर तोड़ने की घटनाएं अधिक होंगी। केन्द्रीय मन्त्रीमण्डल में वृहद् स्तर पर परिवर्तन होगा, जिस कारण भाजपा या सहयोगी पार्टियों में मतभेद उभर सकते हैं।

फाल्गुन मास (10 फरवरी से 9 मार्च, 2020 ई. तक) में पांच सोमवार रहने, मंगल-गुरु-केतु योग तथा 24 फरवरी से गोचरस्थ कालसर्प योग रहने तथा 28 फर. से शुक्र मेष राशि में आकर गुरु के साथ दृष्टि सम्बन्ध (नवपंचम) बनाएगा। जिससे देश में कहीं छत्रभङ्ग (राज्य-परिवर्तन) या किसी मूर्धन्य नेता के अपदस्थ होने के योग हैं। देश में कहीं उपद्रव, हिंसा तथा प्राकृतिक प्रकोप होंगे। यद्यपि गेहूँ, मक्की आदि शीतकालीन फसलें अच्छी होने के संकेत हैं।

चैत्र मास (10 मार्च से 8 अप्रैल तक) में पाँच मंगलवार रहने, 14 मार्च से 12 अप्रैल के मध्य सूर्य-शनि मध्य दृष्टि सम्बन्ध रहने तथा 22 मार्च से मंगल-शनि व 30 मार्च से मकर राशि में मंगल-गुरु-शनि ग्रहों का योग रहने से कहीं युद्ध-जन्य परिस्थितियां बनें तथा प्राकृतिक प्रकोपों से धन-धान्य की हानि होती है। देश में कहीं छत्रभंग (सत्ता-परिवर्तन), उपद्रव, अग्निकाण्ड व साम्प्रदायिक दंगे-फ़िसाद होने के संकेत हैं। किसी प्रमुख नेता की आकस्मिक मृत्यु या अपदस्थ होने के योग हैं-

यत्रमासे महीसूनो जायन्ते पञ्चवासराः।
रक्तेन पूरिता पृथिवी छत्रभङ्गस्तदा भवेत्।।

वैशाख मास (9 अप्रैल से 7 मई, 2020 ई. तक) में पाँच बुध एवं पाँच बृहस्पतिवार आने, मकर राशि (भारत की प्रभावराशि) पर **मंगल-गुरु-शनि** ग्रहों का संचार, कालसर्प के प्रभाव तथा गुरु-शुक्र मध्ये नवपंचम योग के प्रभावस्वरूप भारत, पाकिस्तान,

के कारण लोगों में रोग-शोक आदि दुःखों की बहुलता होगी। पश्चिमी देशों अथवा भारत

हिंसक घटनाओं की सम्भावना, राज्य-परिवर्तन व साम्प्रदायिक घटनाओं का भय रहेगा।

के कारण लोगों में रोग-शोक आदि दु:खों की बहुलता होगी। पश्चिमी देशों अथवा भारत के पश्चिमी राज्यों में छत्रभंग, विग्रह एवं युद्धभय होगा।

यत्रमासे पञ्चवारा जायन्ते च बृहस्पते:।
विग्रह पश्चिम देशे खड्ग युद्धं जायते।।

ज्येष्ठ मास (8 मई से 5 जून, 2020 ई. तक) में पाँच शुक्रवार आने, 29 मई तक कालसर्प योग रहने तथा '**गुरु-शनि**' योग के प्रभाव से विश्व में युद्ध-भय से वातावरण अशान्त एवं असमंजसपूर्ण बन जाए। घी, दूध, तेल, जल आदि दैनिक उपभोग्य वस्तुओं में विशेष तेजी बन जाएगी।

'एकनक्षत्रगा ह्येते तद भयविवर्द्धन:।
तदा प्रजा विनश्यन्ति भूपाश्चान्नपरिक्षया:।।'

31 मई को ही ज्येष्ठ मास में शुक्र अस्त होने से शीघ्र ही महावृष्टि (बाढ़ादि प्राकृतिक प्रकोपों) से जन-धन हानि का भय रहेगा। चौपाओं को पीड़ा/रोग तथा धान्य का कम उत्पादन होगा–

शुक्रस्यास्तंगमाज्ज्येष्ठे महावृष्टे: प्रजाक्षय:।

आषाढ़ मास (6 जून से 5 जुला. तक) में पाँच शनिवार तथा पाँच ररिवार आने, **रविवारी संक्रान्ति** (14 जून), 28 जून तक **गुरु-शुक्र** मध्ये नवपंचम योग रहने, तथा **21 जून को रविवारी अमावस के दिन कंकण-सूर्यग्रहण घटित होने से** आवश्यक वस्तुओं जैसे दूध, ईंधन, सब्ज़ियां, तेल आदि के भावों में अत्यधिक तेजी, सामान्य लोगों में क्लिष्ट रोगों की उत्पत्ति, लोगों में पारस्परिक सौहार्द की कमी तथा पूर्वोत्तर दिशा में कहीं राज्यभंग, अग्निकाण्ड व युद्धादि का भय हो।

संक्रान्तिरादित्यदिने नशस्ता करोति युद्धं नृपतेरतीव।
धान्यं महर्घं प्रतिरौद्रवार्ता प्रजा भवेद दुखित हीन दीना।।

श्रावण मास (6 जुलाई से 3 अगस्त, 2020 ई. तक) में मंगल पर शनि की दृष्टि रहने, ता. 16 जुला. से '**सूर्य-शनि**' मध्ये **समसप्तक** योग रहने से देश में पूर्वोत्तर राज्यों में कहीं प्राकृतिक आपदाओं एवं कहीं दुर्भिक्ष आदि के कारण महँगाई में वृद्धि तथा राजनेताओं में परस्पर वाद-विवाद रहे। किसी नेता के अपदस्थ या मृत्यु का भी समाचार मिले। वैश्विक एवं देश के राजनैतिक पटल पर विशेष घटनाप्रद समय रहेगा। सीमाओं पर युद्धमय वातावरण बनेगा। ता. 1 अगस्त से **गुरु-शुक्र** मध्ये **समसप्तक योग** होने से भी उ.प्र., जम्मू-काश्मीर के पश्चिमोत्तर भागों में राजनीतिक टकराव, विस्फोटक व हिंसक घटनाएं घटित होने के योग हैं–

यदा सौरि भौमे सुरराजमन्त्री भार्गवश्च यदैकराशौ समसप्तके वा।
अयोध्या मध्यदेशे, लंकापुरे च क्षुधाभयं शस्त्रं करोति।।

चांद्र भाद्रपद मास (4 अगस्त से 2 सितम्बर, 2020 ई. तक) में पाँच मंगलवार होना देश के सामाजिक एवं राजनैतिक क्षेत्रों के लिए शुभ नहीं है। देश में कहीं आतंकी एवं हिंसक घटनाओं की सम्भावना, राज्य-परिवर्तन व साम्प्रदायिक घटनाओं का भय रहेगा। किसी प्रमुख नेता के अपदस्थ या आकस्मिक मृत्यु के भी योग हैं। ता. 16 अगस्त को रविवारी संक्रान्ति होने से भी राजनैतिक क्षेत्रों में अस्थिरता एवं अशान्ति होने के संकेत हैं। अनाज, घी, तैल, सब्ज़ी आदि उपभोग्य पदार्थों में अत्यधिक तेजी के कारण प्रजा पीड़ित रहे। असम, बिहार, पूर्वी-उ.प्र. में व्यापक वर्षा एवं बाढ़ के योग हैं, सावधानी बरतनी होगी।

प्रथम चांद्र आश्विन मास (3 सितम्बर से 1 अक्तूबर, 2020 ई. तक) में पाँच बृहस्पतिवार आने से कुछ प्रदेशों में उपयुक्त वर्षा की कमी रहे, तो कहीं अतिवृष्टि से बाढ़ादि प्राकृतिक प्रकोपों से जन व धन-सम्पदा को क्षति पहुँचे। भारत के पश्चिमी प्रदेशों एवं पश्चिमी सीमाओं पर आतंकवादी एवं विस्फोटक घटनाएं, घुसपैठ तथा सीज़फायर-उल्लंघन तुल्य घटनाएं घटित होने के संकेत हैं–

यत्रमासे पञ्चवारा जायन्ते च बृहस्पते:।
विग्रह पश्चिमदेशे खड्गयुद्धं जायते।।

18 सितम्बर से 16 अक्तूबर तक **आश्विन अधिक मास** तथा **द्वितीय चांद्र आश्विन मास** (2 से 31 अक्तू.) में पाँच शुक्रवार तथा पाँच शनिवार होने से धन-सम्पदा का प्रसार व अपव्यय बढ़ेगा। विभिन्न राजनीतिक पार्टियों के मध्य विग्रह, टकराव एवं गतिरोध की स्थिति रहेगी। केन्द्रीय नीतिगत निर्णयों का अकारण विरोध किया जाएगा, जिससे विकासोन्मुखी योजनाओं के क्रियान्वयन में विलम्ब होगा। ता. 17 को **शनिवारी संक्रान्ति** ता. 17 से ही सूर्य-पर शनि की विशेष दशम तथा मंगल की अष्टम दृष्टि, मंगल पर शनि की तृतीय दृष्टि तथा मंगल-शुक्र के मध्य **समसप्तक योग** रहने से किसी प्रदेश में छत्रभंग (सत्ता-परिवर्तन), उपद्रव एवं हिंसक घटनाएं घटित होंगी। कहीं अतिवृष्टि या अल्पवृष्टि एवं प्राकृतिक आपदाओं के कारण आवश्यक वस्तुओं में कमी के कारण मूल्यों में तेजी रहे। राजनीतिक पार्टियों में परस्पर वाद-विवाद तथा सीमाओं पर युद्धमय वातावरण बनेगा।

कार्तिक मास (1 से 30 नवम्बर, 2020 ई. तक) में पाँच रविवार तथा पाँच सोमवार होने के प्रभावस्वरूप अत्यधिक महँगाई एवं भ्रष्टाचार के कारण सामान्य लोगों में आर्थिक परेशानियां तथा सामाजिक असुरक्षा की भावना रहेगी। कहीं छत्रभंग, राजनैतिक अस्थिरता एवं राजनैतिक गतिरोध पैदा होने का भय है।

15 नवम्बर को उत्तर-पश्चिम भारत में **मार्गशीर्ष संक्रान्ति** तथा **रविवासरी अमावस** एक ही दिन होने से **खर्पर योग** बना है। यह खप्पर योग जीव और धान्यादि का नाशक होगा अर्थात् कृषि, धन, लोगों की हानि कराने वाला होता है। (रवि, मंगल या शनिवार को हो, तो उसका फल विशेष कष्टकारी होता है।)

यस्मिन् वारेऽस्ति संक्रान्तिस्तत्रैवऽमाभिधातिथि:।
लोके खर्पर योगोऽयं जीव धान्यादि नाशक:।।

मार्गशीर्ष मास (1 से 30 दिसम्बर, 2020 ई. तक) में पाँच मंगलवार तथा भौमवती संक्रान्ति (15 दिसम्बर) होने से इस अवधि में पृथ्वी पर या देश में कहीं छत्रभङ्ग (सत्ता-परिवर्तन), उपद्रव, हिंसक-घटनाएं अथवा युद्धभय रहे, साम्प्रदायिक दंगे व उपद्रव अधिक होंगे। किसी प्रमुख नेता की आकस्मिक मृत्यु या अपदस्थ होने के भी योग हैं।

ता. 10 दिसं. से वृश्चिक राशि पर **'चतुर्ग्रही योग'** तथा मंगल पर शनि की दृष्टि 23 दिसम्बर तक रहने से केन्द्रीय सरकार को किसी कठिन चुनौती का सामना करना पड़ेगा। परन्तु भारत की प्रभावराशि मकर पर **'गुरु-शनि'** का योग रहने से कठिन समस्याओं को सफलतापूर्वक सुलझाया जाएगा तथा विश्व में भारत की प्रभुता, प्रतिष्ठा एवं वर्चस्व में वृद्धि होगी।

प्रधानमन्त्री श्री नरेन्द्र–मोदी एवं भाजपा गठित एन.डी.ए. सरकार का दूसरा कार्यकाल–II

जन्मकुण्डली श्री नरेन्द्र मोदी
17 सितम्बर, 1950 ई., रविवार
11घं.-00मिं. A:M, महेसाना (गुज.)

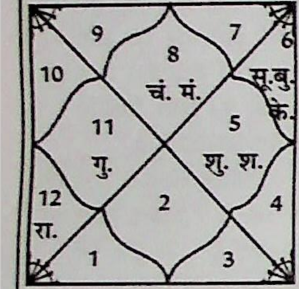

नवगठित एन.डी.ए. सरकार
(II) शपथकालीन कुंडली
30 मई, 2019 ई., 19:03

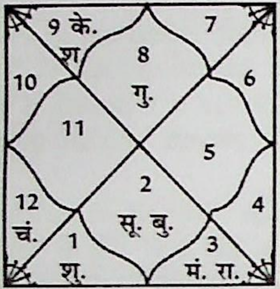

स्थापना कुण्डली
भाजपा पार्टी
6-04-1980, 11:40 A:M

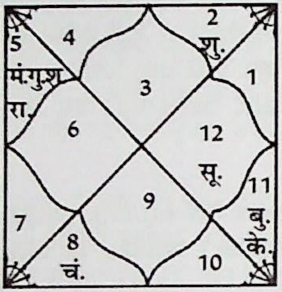

[प्रधानमन्त्री श्री नरेन्द्र मोदी जी की जन्मकुण्डली की विस्तृत विवेचना एवं विश्लेषण हम गतवर्षीय पंचांगों (वि. संवत् २०७१, २०७२, २०७३) में विशेष रूप से कर चुके हैं, वहाँ अवश्य देखना चाहिए।]

[कृपया पाठकगण ध्यान दें।—गतवर्ष इसी कॉलम के अन्तर्गत 'पंचांगदिवाकर' के पृष्ठ 88–89 पर इस वर्ष (2019 ई.) के लोकसभा चुनावों के परिणामों के सम्बन्ध में स्पष्ट भविष्यवाणियां लिखी गई थीं, पढ़ें—'केन्द्र में भाजपा गठबन्धन सरकार के योग', 'ग्रहयोग से श्रीमोदी जी को पुनः उच्च पद (प्रधानमन्त्री) प्राप्त हो सकता है।', 'ग्रहयोग अनुसार श्रीनरेन्द्र मोदी जी के ही पुनः प्रधानमन्त्री बनने के प्रबल योग बन रहे हैं।'—हस्तमुद्रा 18 अग., 2018 ई.] जो ईश्वर कृपावश अक्षरशः सत्य सिद्ध हुईं।

इस वर्ष हम ग्रहगोचर अनुसार ही प्रधानमन्त्री की जन्म कुं. तथा शपथकालीन कुं. की विवेचना करेंगे।

देश के वर्तमान प्रधानमन्त्री श्रीनरेन्द्र मोदी ने पुनः 30 मई, 2019 ई. को सायं 7 बजकर, 3 मिनट पर मन्त्रीमण्डल सहित स्थिर लग्न वृश्चिक में अपने-अपने पद की शपथ ग्रहण की है। प्रधानमन्त्री (एवं सरकार) की शपथकालीन कुं. में स्थिरसंज्ञक गुरु ग्रह मित्रराशिगत होकर शुभस्थ है। तथा पंचम, सप्तम एवं नवम-शुभ भावों पर दृष्टिपात कर रहा है। लग्न एवं गुरु पर सूर्य व बुध ग्रहों की शुभ दृष्टियां हैं। गुरु की पंचम भाव (विकास योजनाओं, प्रशासनिक बुद्धि का भाव) पर स्वगृही तथा नवम (योजना, विकास, दूरसंचार का) भाव को उच्च दृष्टि से देख रहा है। फलस्वरूप मोदी सरकार अनेक अवरोधों, आलोचनाओं तथा आरोपों के बावजूद भारत को विकास पथ यात्रा पर अग्रसर तथा विकास, सुशासन के नए प्रतिमान स्थापित करेगी। शपथकालीन कुं. में ही **'मंगल-शनि'** के मध्य समसप्तक योग देश में साम्प्रदायिक एवं जातीय हिंसा की ओर संकेत कर रहा है। मध्यप्रदेश, प. बंगाल, असम आदि पूर्वी प्रदेशों में व्यापक, हिंसा, अग्निकाण्ड तथा प्राकृतिक प्रकोप होने का भय रहे। शासन-परिवर्तन की प्रबल सम्भावना रहेगी।

……अयोध्या मध्यदेशे, लंकापुरे च क्षुधाभयं शस्त्र करोति।।
एवं च युद्धदौ शनिमाहेये तदा दुर्भिक्षकारकौ।।

प्रधानमन्त्री जी की जन्म कुं. में गुरु पंचमेश होकर 5 नवम्बर, 2019 ई. से 29 मार्च, 2020 ई. तक धन भाव में तथा 24 जनवरी, 2020 ई. तक शनि के साथ संचार करेगा। 30 मार्च से 29 जून 2020 ई. तक मकर राशि में शनि के साथ पराक्रम भाव में संचार करेगा। वर्तमान में 6 अक्तू., 2019 ई. तक चंद्रमा मध्य केतु की अन्तर्दशा, तदुपरान्त 6 जून, 2021 ई. तक चन्द्र मध्य शुक्र की अन्तर्दशा रहेगी। परन्तु फिर भी श्रीमोदी अपने राजनीतिक कौशल से देश की राजनीतिक एवं अर्थव्यवस्था में व्यापक बदलाव लाने में सक्षम होंगे। मोदी जी की जन्म कुं. में तथा शपथग्रहण कुं. में भी सप्तम भाव पर (वैदेशिक-अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों का भाव) गुरु की दृष्टि रहने से श्रीमोदी विदेश-नीति के समक्ष उत्पन्न चुनौतियों को सफलतापूर्वक निपटकर वैश्विक स्तर पर सबसे ज़्यादा छाप छोड़ने वाले भारतीय नेता बन जाएंगे। विश्व व्यापार-युद्ध के मध्य मोदी जी की विदेश-नीति सतर्क व्यवहारिकता के साथ संचालित होगी।

गत कार्यकाल की भान्ति ही नव-सरकार तथा मोदी जी के समक्ष देश की आन्तरिक एवं बाह्य समस्याओं के सम्बन्ध में गम्भीर चुनौतियां एवं व्यवधान आएंगे, परन्तु मोदी जी सभी समस्याओं का यथायोग्य निराकरण करते हुए भारतीय परम्पराओं के ऐतिहासिक विकासक्रम को आगे लेकर जाएंगे। पाकिस्तान को अलग-थलग करने के अपने अभियान को सफलता से पूर्ण करने की ओर बढ़ेंगे। अनेक राजनीतिक, सामरिक व आर्थिक निर्णयों के कारण यद्यपि मोदी जी को एवं गठबन्धन सरकार को आलोचना का सामना करना पड़ेगा, परन्तु देश के [illegible]

भाजपा की स्थापना कुण्डली में स्थित ग्रहों तथा वर्तमान गोचर ग्रहस्थिति अनुसार सन् 2019–20 ई. में होने वाले अनेक राज्यों के विधानसभा चुनावों में पार्टी की स्थितिविपक्षी

अभीष्ट सफलता प्राप्ति संदिग्ध ही रहेगी। [**ध्यान दें, गतवर्ष वि. संवत् 2076 के पंचांग में पृष्ठ 89 पर इनकी क. के विश्लेषण में लोकसभा चुनावों में सफलता प्राप्ति को**

भाजपा की स्थापना कुण्डली में स्थित ग्रहों तथा वर्तमान गोचर ग्रहस्थिति अनुसार सन् 2019-20 ई. में होने वाले अनेक राज्यों के विधानसभा चुनावों में पार्टी की स्थितिविपक्षी दलों की अपेक्षा सुदृढ़ एवं सफलता प्रदान करने वाली रहेगी। यद्यपि 22 सितम्बर, 2020 ई. तक लग्न में राहु का संचार तथा 23 जनवरी, 2020 ई. तक शनि-साढ़ेसाती के कारण कुछ प्रदेशों में आशाऽनुकूल सफलता नहीं मिल पाएगी। तथा सरकार बनाने हेतु कठिनाईयां सामने आएंगी। जोड़-तोड़ की राजनीति को अपना हथियार बनाना पड़ेगा। परन्तु फिर भी हरियाणा, महाराष्ट्र में यथेष्ठ सफलता प्राप्त हो ही जाएगी।

वि. संवत् 2077 में कांग्रेस पार्टी का भविष्य

कुण्डली कांग्रेस पार्टी
22-11-1969
9:57 A:M, बैंगलूरू

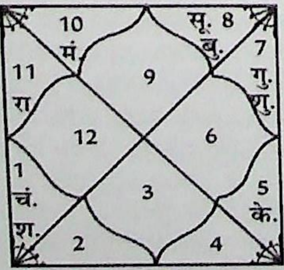

कुण्डली श्रीराहुल गाँधी
19-06-1970 ई., 5:05AM

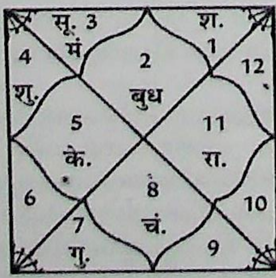

कांग्रेस पार्टी की जन्म कुण्डली में शनि लग्न भाव में अभी 23 जनवरी, 2020 ई. तक संचार करेगा तथा लग्नेश गुरु 4 नवम्बर, 2019 ई. तक द्वादशस्थ होने के कारण कांग्रेस निश्चित तौर पर कठिन समय से गुज़रेगी। कांग्रेस द्वारा संगठन में कायापलट के बावजूद अन्दरूनी वाद-विवाद रहेंगे। आगामी विधानसभा चुनावों में पार्टी की लोकप्रियता में गिरावट आ जाएगी, यद्यपि पार्टी की विश्वसनीयता को पहले ही श्री राहुल के त्यागपत्र-काण्ड के कारण गहन क्षति पहुँच चुकी है। पार्टी को घोर नकारात्मक राजनीति तथा अपनी वृद्ध हो चुकी रीति-नीति एवं सामंती मानसिकता से ऊपर उठने में समय लगेगा। कुछ समय के लिए पार्टी दिशाहीन तथा नेतृत्वहीन रहने के बाद नए अध्यक्ष के नेतृत्व में पुनर्गठित होकर सशक्त विपक्षी पार्टी के रूप में उभरेगी। परन्तु 22 सितम्बर, 2020 ई. तक राहु सप्तमस्थ होने से कई राज्यों में धड़ों के बीच लड़ाइयां फूट पड़ेंगी। राष्ट्रीय मुख्यालय में भी पुराने तथा नए नेताओं के बीच संघर्ष छिड़ जाएगा। पुरानी भव्य पार्टी के अस्तित्व के लिए नए अध्यक्ष को विशेष प्रयास करने होंगे।

श्री राहुल गाँधी जी की जन्म कुण्डली में वृष लग्न उदित है तथा जन्म राशि वृश्चिक है। वर्तमान में इन पर मंगल की महादशा में गुरु की अन्तर्दशा चल रही है (9-04-2019 से 15-03-2020 ई. तक)। जन्मकुण्डली में मंगल अस्तगत है तथा गुरु षष्ठस्थ शत्रुराशिगत है। इसके साथ 23 जनवरी, 2020 ई. तक शनि-साढ़ेसाती का भी प्रभाव इनकी जन्मराशि पर रहेगा। इस ग्रहगोचर के अनुसार श्री राहुल गाँधी को उनके पर्याप्त परिश्रम एवं पुरुषार्थ के अनुरूप अभीष्ट सफलता प्राप्ति संदिग्ध ही रहेगी। **[ध्यान दें, गतवर्ष वि. संवत् 2076 के पंचांग में पृष्ठ 89 पर इनकी कु. के विश्लेषण में लोकसभा चुनावों में सफलता प्राप्ति को संदिग्ध ही लिखा गया था–देखें-'श्री राहुल गाँधी का अभी प्रधानमन्त्री पद पर प्रतिष्ठित होना संदिग्ध लगता है।]** अत: वर्तमान ग्रहदशा अनुसार भी आगामी कुछ राज्यों के विधानसभा चुनावों में उनके प्रयास यथेष्ठ साबित नहीं होंगे। पुराने ढर्रे की राजनीति से यद्यपि राजनीतिक अस्तित्व तो बचा पाएंगे, परन्तु भाजपा को पराजित करने में असमर्थ रहेंगे। घोर नकारात्मक रवैये का परित्याग राजनीति एवं संसद में करना होगा। जनवरी, 2020 ई. के पश्चात् शनि भाग्यस्थ स्वराशिगत आने तथा शनि-साढ़ेसाती का प्रभाव हट जाने से इनके आचरण, प्रभा में विशेष शुभ बदलाव दृष्टिगोचर होंगे तथा अपने परिश्रम के बल पर कांग्रेस पार्टी को पुनर्गठित करके प्रतिष्ठित करेंगे।

★ भारत के कुछ मुख्य प्रान्त ★

(1) हिमाचल प्रदेश–इसकी प्रभावराशि मीन तथा नाम राशि कर्क है। 73वें स्वतन्त्र भारत की कुण्डली में इसकी नाम राशि कर्क पर (15 अगस्त, 2019 ई. के बाद) गुरु की शुभ उच्च दृष्टि रहने तथा प्रभावराशि मीन पर भी गुरु की स्वगृही दृष्टि पड़ रही है। फलस्वरूप वर्तमान में सत्तारूढ़ भाजपा पार्टी श्रीजयराम ठाकुर जी के कुशल नेतृत्व में हिमाचल सरकार प्रदेश में अनेक अधूरी एवं रुकी हुई विकासोन्मुखी योजनाओं को पूरा करने के लिए प्रयासशील रहेगी। 24 जनवरी, 2020 ई. से मीन राशि पर शनि की तृतीय दृष्टि रहने तथा 30 मार्च, 2020 ई. से गुरु नीचराशिगत संचार करने से आर्थिक एवं प्राकृतिक कारणों से बहुत सी महत्त्वपूर्ण योजनाओं (जैसे–रेल विकास, उच्च-तकनीकि शिक्षा, ग्रामीण उद्योग, विद्युत-उद्योग…… आदि) के वाँछित विकास में विघ्न-बाधाओं का सामना रहेगा। सेब आदि मुख्य फसलों की हानि, जलवायु में प्रदूषण के कारण संवत् के आरम्भिक छ: महीने (अप्रैल से सितम्बर) विशेष रूप से गर्म रहेंगे। यान-वाहनादि सड़क दुर्घटनाओं की भी सम्भावनाएँ हैं। 71वें गणतन्त्र कुं. में प्रभावराशि मीन पर शनि की दृष्टि होने से विभिन्न विकास योजनाओं के लाभ साधारण लोगों तक पहुँचाने के लिए विशेष प्रयास आपेक्षित होंगे। परन्तु 30 मार्च से 29 जून तक कई तरह के घटनाक्रमों से जयराम ठाकुर सरकार की यश-प्रतिष्ठा पर आक्षेप लगेंगे तथा परेशानी बन सकती है। परन्तु गुरु 30 जून से 19 नवम्बर, 2020 ई. तक गुरु पुन: स्वराशिगत रहने से प्रदेश भाजपा सरकार की प्रतिष्ठा व यश में वृद्धि होगी।

(2) पंजाब–इसकी नामराशि कन्या तथा प्रभावराशि मीन है। 73वें स्वतन्त्रता दिवस कुं. में कन्या द्वादश भाव में शनि द्वारा तथा मीन राशि षष्ठस्थ भाव में गुरु द्वारा दृष्ट है। गणतन्त्र तथा स्वतन्त्रता दिवस कुं. में ग्रहों की स्थित्यनुसार वर्तमान सत्तारूढ़ कांग्रेस सरकार को विषम आर्थिक एवं राजनीतिक समस्याओं का सामना रहेगा। भ्रष्टाचार एवं नशे की फैलती जड़ें लगातार गहरी होने से सरकार की प्रतिष्ठा व छवि पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा। प्रदेश के कुछ भागों में कानून एवं व्यवस्था की प्रणाली सुचारू न होकर असंतोषजनक रहेगी। बिजली तथा अन्य आवश्यक वस्तुओं के मूल्यों में अत्यधिक वृद्धि, महँगाई तथा

ग्रामीण क्षेत्र की तुष्टिकरण नीति के कारण शहरी लोगों, छोटे व्यापारियों एवं उद्योगपतियों में गहन असन्तोष एवं आक्रोश की भावना रहेगी। विभिन्न विकास योजनाओं के अन्तर्गत विशेष कार्यों से सम्बन्धित अल्पसंख्यक लोग ही लाभान्वित हो पाएँगे। केन्द्र सरकार के साथ सामञ्जस्य में कमी रहेगी, परन्तु फिर भी कैप्टन सरकार द्वारा विद्युत्, सड़क निर्माण के क्षेत्र में नवीन प्रयोजनाओं का शिलान्यास किया जाएगा तथा राज्य प्रगति की ओर उन्मुख रहेगा।

(3) जम्मू-काश्मीर–प्रभावराशि तुला तथा नामराशि मकर है। ***[गतवर्ष इसी कॉलम के अन्तर्गत पृष्ठ 90 पर लिखी गई हमारी भविष्योक्ति (प्रभु कृपावश) अक्षरशः सत्य प्रमाणित हुई है कि 'लोकसभा चुनावों में नैशनल फ्रंट को यथेष्ठ सफलता तथा पी.डी.पी. का प्रभाव कमज़ोर होगा।']***

73वें स्वतन्त्रता दिवस कुं. में भी तुला लग्न राशि ही उदित है। राशिस्वामी शुक्र दशम भाव (प्रशासन भाव) में शत्रु राशिगत है। 24 जनवरी, 2020 ई. से मकर राशि पर शनि का संचार भी रहेगा। 71वीं गणतन्त्र दिवस कुं. में मकर राशि द्वादश भाव (गुप्त शत्रु भाव, युद्ध सम्बन्धी कार्य) में स्थित है। ग्रहस्थिति अनुसार इस राज्य के अन्दरूनी हालात आसानी से सामान्य नहीं होंगे। केन्द्रीय सरकार द्वारा शासित राज्यपाल सरकार द्वारा राज्य के सर्वांगीण विकास के लिए कार्य किया जाएगा। केन्द्र की प्राथमिकता आतंकवादियों को विभिन्न माध्यमों से समाप्त करके तथा विदेशी स्रोतों से धन के बहाव को रोककर आतंकवाद की रीढ़ को तोड़ने का प्रयास किया जाएगा। जनवरी, 2020 ई. में शनि तथा फिर 30 मार्च से गुरु भी मकर राशि में आने के बाद प्रान्त में अनेक चुनौतियों के बावजूद सफल चुनावों को देखते हुए कश्मीर विश्व राजनीति में ध्यानाकर्षण का केन्द्र बनेगा। विश्व-राजनीति में भारत की प्रतिष्ठा बढ़ेगी। प्रदेश में सुनिश्चित चुनावों को आतंकवाद पर लोकतन्त्र की जीत माना जाएगा। नवगठित प्रादेशिक सरकार केन्द्रीय सहायता द्वारा जनोपयोगी कुछ नई परियोजनाओं का सूत्रपात करेगी। कश्मीरी पण्डितों सहित अल्पसंख्यकों की भलाई के लिए भी कुछ सुधारात्मक पग उठाए जाएंगे। पाकिस्तान एवं कुछ विदेशी आतंकवादी ग्रुप प्रदेश की लोकतांत्रिक प्रक्रिया एवं विकास-क्रम को खण्डित करने के लिए विध्वहंसक कार्रवाहियां कर सकते हैं। केन्द्रीय एवं राज्य सरकार को विशेष सावधान रहना होगा। परिसीमन, धारा-370 एवं 35-ए की धाराओं को निरस्त करने के कारण केन्द्र को राज्य की पार्टियों के विरोध का सामना करना पड़ेगा, जिस कारण विधानसभा चुनावों के लिए कुछ और महीनों तक इंतज़ार करना पड़ेगा।

(4) हरियाणा–प्रभावराशि मीन तथा नामराशि मिथुन है। 73वें वर्ष की स्वतन्त्रता दिवस कुं में मीन राशि षष्ठस्थ है (15 अगस्त, 2019 ई. के बाद), परन्तु उस पर गुरु की शुभ स्वगृही दृष्टि है। नाम राशि मिथुन पर राहु का प्रभाव अभी सितम्बर, 2020 ई. तक रहेगा। आगामी विधानसभा चुनावों में खण्डित एवं अप्रभावी विपक्ष होने के कारण भाजपा पार्टी को ही अधिक सीटें प्राप्त होंगी, परन्तु कांग्रेस, इनैलो आदि भी अपना अस्तित्व बनाए रखेंगे। विधानसभा चुनावों से पूर्व ग्रामीण बिजली उपभोक्ताओं तथा अनेक कृषि ऋण माफ कर तथा जनता को आकर्षित करने हेतु अनेक लोकलुभावन घोषणाएँ की जाएँगी। पुनः

(5) राजस्थान–प्रभावराशि कर्क तथा नामराशि तुला है। 73वें स्वतन्त्रता दिवस कुं. में कर्क राशि पर सूर्य-बुध-शुक्र ग्रहों का संचार तथा गुरु-शुक्र मध्य नवपंचम योग बना हुआ है। परन्तु इन पर गुरु की उच्च दृष्टि भी रहेगी। 30 मार्च से 29 जून, 2020 ई. तक पुनः गुरु की उच्च दृष्टि रहेगी। फलस्वरूप नवम्बर, 2019 ई. से मार्च, 2020 ई. तक राज्य सरकार को विषम एवं कठिन परिस्थितियों से गुज़रना पड़ेगा। मन्त्रिमण्डल में परिवर्तन एवं किसी प्रमुख नेता को त्यागपत्र भी देना पड़ सकता है। मन्त्रिमण्डल तथा कांग्रेसी नेताओं में परस्पर सौहार्द की कमी तथा जनाधार में समरसता भी न होने से पार्टी के राज्य में विखण्ड तथा बिखरने का भय रहेगा। सरकारी नीतियों के विरुद्ध प्रजा में असन्तोष तथा विक्षोभ की भावना रहेगी।

(6) उत्तर-प्रदेश–प्रभावराशि धनु तथा नामराशि वृष है। 73वें स्वतन्त्रता दिवस कुं. में प्रभावराशि धनु पर शनि-केतु का संचार (15 अगस्त, 2019 ई. के बाद) रहने से सत्तारूढ़ योगी सरकार को बिगड़ती कानून व्यवस्था, भ्रष्टाचार, महँगाई, बेरोज़गारी तथा राम-मन्दिर जैसे मुद्दे शिरोवेदना का कारण बनेंगे तथा सरकार की लोकप्रियता एवं विश्वस्नीयता पर विपक्षी पार्टियों द्वारा प्रश्न चिन्ह लगाए जाएंगे। गणतन्त्र दिवस कुं. (26 जनवरी, 2020 ई.) में धनु राशि पर गुरु-केतु की स्थिति होने से यद्यपि विशेष प्राकृतिक आपदाओं (अतिवृष्टि, कहीं अकाल) के कारण जन, धन, कृषि आदि की हानि होने के संकेत हैं, परन्तु राज्य एवं केन्द्र सरकार द्वारा अनेक सड़क तथा भवन-निर्माण व नवीन उद्योग स्थापना पर विशेष बल (ध्यान) दिया जाएगा तथा आकर्षक घोषणाएं की जाएंगी।

(7) दिल्ली–71वें गणतन्त्रता दिवस कुं. (27 जनवरी, 2020 ई.) में इसकी प्रभाव राशि मकर पर सूर्य-बुध-शनि ग्रहों का संचार तथा व्यय (द्वादश भाव-शत्रु, षड्यन्त्र, युद्ध सम्बन्धी भाव) भाव में ही मुंथा की स्थिति प्रदेश (राज्य) को राजनीतिक तथा अराजक गतिविधियों का केन्द्र बनाए रखेगा। आगामी विधानसभा चुनावों में यद्यपि भाजपा सशक्त पार्टी के रूप में उभरेंगी, परन्तु कांग्रेस तथा आप पार्टी भी अपना अस्तित्व स्थापित करने में सफल रहेंगी। सत्तारूढ़ आप पार्टी द्वारा चुनावों से पूर्व अनेक लोकलुभावन घोषणाएं कर जनता को आकर्षित करने का प्रयास किया जाएगा। परन्तु चुनावों में आप तथा कांग्रेस अपने राजनीतिक अस्तित्व को बचाने हेतु ही संघर्षशील रहेंगे एवं भाजपा को पराजित करने में असमर्थ रहेंगे। आगे हरि अच्छा प्रबल है।

उपरोक्त भविष्यवाणियां देश, स्थान आदि की जन्म-कुण्डलियों में ग्रह-स्थिति, दशा एवं गोचर ग्रहों के प्रभाव व संकेतों के आधार पर अपनी अल्प बुद्धि के अनुसार लिपिबद्ध की गई हैं। वास्तव में सर्वश्रेष्ठ भविष्यवेत्ता एवं सर्वज्ञ तो स्वयं ईश्वर ही हैं–

''फलानि ग्रह संचारेण सूचयन्ति मनीषिणः। को वक्तः तारतम्यस्य वेधसं विना।''

लेख लिपिबद्धम्–

श्रावण कृष्ण द्वितीया
18 जुलाई, गुरुवार, 2019 ई.

शुभ चिन्तकः
पं. विवेक शर्मा ज्योतिषी
सुपुत्र श्रद्धेय स्व. पं. पन्ना लाल ज्यो.,

सूर्यादि ग्रहों का राशि प्रवेश, वक्री-मार्गी एवं उदयास्त (ग्र. मिं.) (सन 2020-21 ई.)

सूर्यादि ग्रहों का राशि प्रवेश, वक्री-मार्गी एवं उदयास्त (घं. मिं.) (सन् 2020-21 ई.)

सूर्य राशि प्रवेश

ता. मास	राशि	घं. मिं.	ता. मास	राशि	घं. मिं.
14 जन.	मकर	26:07	16 सितं.	कन्या	19:07
13 फर.	कुम्भ	15:03	17 अक्तू.	तुला	7:05
14 मार्च	मीन	11:53	16 नवं.	वृश्चिक	6:53
13 अप्रै.	मेष	20:23	15 दिसं.	धनु	21:31
14 मई	वृष	17:16	14 जन.(21)	मकर	8:14
14 जून	मिथुन	23:53	12 फर.	कुम्भ	21:11
16 जुला.	कर्क	10:46	14 मार्च	मीन	18:03
16 अग.	सिंह	19:10	13 अप्रै.	मेष	26:33

मंगल राशि प्रवेश (संवतारम्भ में मकर में)

4 मई	कुम्भ	20:39	4 अक्तू.	व. मीन	10:06
18 जून	मीन	20:15	14 नवं.	मार्गी	6:06
16 अग.	मेष	18:31	24 दिसं.	मेष	10:18
10 सितं.	वक्री	3:50	22 फर.(21)	वृष	4:35
			13 अप्रै.	मिथुन	25:12

बुध राशि प्रवेश (संवतारम्भ में कुम्भ में)

7 अप्रै.	मीन	14:20	3 नवं.	मार्गी	23:17
25 अप्रै.	मेष	2:33	28 नवं.	वृश्चिक	7:04
9 मई	वृष	9:47	17 दिसं.	धनु	11:37
24 मई	मिथुन	23:57	5 जन. (21)	मकर	03:55
18 जून	वक्री	10:25	25 जन.	कुम्भ	16:55
12 जुला.	मार्गी	13:54	30 जन.	वक्री	21:18
2 अग.	कर्क	03:31	4 फर.	व. मकर	22:40
17 अग.	सिंह	8:29	21 फर.	मार्गी	6:20
2 सितं.	कन्या	12:03	11 मार्च	कुम्भ	12:30
22 सितं.	तुला	16:55	1 अप्रै.	मीन	00:42
14 अक्तू.	वक्री	6:32			

गुरु राशि प्रवेश (संवतारम्भ में धनु में)

30 मार्च	मकर	3:50	13 सितं.	मार्गी	6:12
14 मई	वक्री	19:58	20 नवं.	मकर	13:22
30 जून	व.धनु	5:25	6 अप्रै.	कुम्भ	00:23

शुक्र राशि प्रवेश (संवतारम्भ में मेष में)

28 मार्च	वृष	15:38	1 अग.	मिथुन	5:09
13 मई	वक्री	12:12	1 सितं.	कर्क	02:02
25 जून	मार्गी	12:18	28 सितं.	सिंह	1:01

शुक्र राशि प्रवेश

ता. मास	राशि	घं. मिं.
23 अक्तू.	कन्या	10:44
16 नवं.	तुला	25:01
11 दिसं.	वृश्चिक	5:16
(सन् 2021 ई.)		
4 जन.	धनु	5:03
28 जन.	मकर	3:29
21 फर.	कुम्भ	2:21
17 मार्च	मीन	3:00
10 अप्रै.	मेष	6:28

—शनि राशि प्रवेश—

(संवतारम्भ में मकर में)

सम्पूर्ण संवत् मकर राशि में ही संचार करेगा।

—मध्यम राहु राशि प्रवेश—

(संवतारम्भ में मिथुन में)

23 सितं.	वृष	12:52

—मध्यम केतु राशि प्रवेश—

(संवतारम्भ में धनु में)

23 सितं.	वृश्चिक	12:52

—यूरेनस—

सम्पूर्ण संवत् मेष राशि में संचार करेगा।

—नैपच्यून—

सम्पूर्ण संवत् कुम्भ राशि में संचार करेगा।

—प्लूटो—

(संवतारम्भ में मकरमें)

28 जून	व. धनु	3:05
30 दिसं.	मकर	23:56

ग्रहों का वक्री-मार्गी

मंगल

10 सितं.	वक्री	3:50
14 नवं.	मार्गी	6:06

बुध

18 जून	वक्री	10:25
12 जुला.	मार्गी	13:54
14 अक्तू.	वक्री	6:32
3 नवं.	मार्गी	23:17
30 जन.(21)	वक्री	21:18
21 फर.	मार्गी	6:20

गुरु

14 मई	वक्री	19:58
13 सितं.	मार्गी	6:12

शुक्र

13 मई	वक्री	12:12
25 जून	मार्गी	12:18

शनि

11 मई	वक्री	9:27
29 सितं.	मार्गी	10:30

यूरेनस

15 अग.	वक्री	19:56
14 जन.(21)	मार्गी	14:07

नैपच्यून

23 जून	वक्री	10:05
29 नवं.	मार्गी	6:08

प्लूटो

26 अप्रै.	वक्री	00:18
4 अक्तू.	मार्गी	18:59

ग्रहों का उदय-अस्त (वि. संवत् २०७७)

मंगल

सम्पूर्ण संवत् उदित अवस्था में ही संचार करेगा।

बुध

23 अप्रै.	पूर्व में अस्त	5:10
16 मई	पश्चिम-उदय	19:07
22 जून	व. पश्चिमाऽस्त	29:10
9 जुला.	व. पूर्व में उदय	19:34
5 अग.	पूर्व में अस्त	5:55
1 सितं.	पश्चिम में उदय	6:08
20 अक्तू.	व. पश्चिम-अस्त	6:39
31 अक्तू.	व. पूर्व में उदय	23:40
26 नवं.	पूर्व में अस्त	17:10

बुध (सन् 2021 ई.)

11 जन.	पश्चिम में उदय	5:18
2 फर.	व. पश्चिम-अस्त	7:26
14 फर.	व. पूर्व में उदय	18:20
6 अप्रै.	पूर्व में अस्त	6:04

गुरु

17 जन. (21)	पश्चिम में अस्त	17:52
14फर. (21)	पूर्व में उदय	23:46

शुक्र

31 मई	पश्चिम में अस्त	5:28
9 जून	पूर्व में उदित	19:20
8 फर. (21)	पूर्व में अस्त	18:11

संवत् अन्त तक अस्त रहेगा।

शनि

7 जन.(21)	पश्चिम में अस्त	17:40
9 फर.	पूर्व में उदय	24:50

ग्रहों की मध्यम, शीघ्र, अतिचारी गति

ग्रह	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
मध्यम	31′-26″	59′-08″	5′-00″	59′-08″	2′-00″
शीघ्र	39′-01″	104′-46″	12′-22″	73′-43″	5′-27″
परमशीघ्र	46′-11″	113′-32″	14′-04″	75′-42″	7′-45″

ध्यान दें—मध्यम गति से कम गति हो तो मन्द गति, शीघ्र गति से कम हो तो मध्यम गति, परमशीघ्र गति से कम हो तो शीघ्र गति एवं परमशीघ्र गति से अधिक गति हो तो ग्रह '**अतिचारी**' कहलाता है। यहाँ '**गति**' से अभिप्राय ग्रह की दैनिक गति से है। 24 घण्टे में ग्रह जितना आगे या पीछे चलता है, उसे ग्रह की '**दैनिक गति**' कहते हैं।

ग्रहों का नक्षत्र–चरण प्रवेश—संवत् २०७७ वि. (सन् 2020–21 ई.)

सूर्य नक्षत्र प्रवेश

2020 ई.	नक्षत्र चरण	घं. मिं.
31 मार्च	रेव.(1)	6:57
3 अप्रै.	रेव.(2)	16:05
6 अप्रै.	रेव.(3)	25:20
10 अप्रै.	रेव.(4)	10:47
13 अप्रै.	अश्वि.1 मेष	20:23
17 अप्रै.	अश्वि.(2)	6:06
20 अप्रै.	अश्वि.(3)	15:57
23 अप्रै.	अश्वि.(4)	25:59
27 अप्रै.	भर.(1)	12:08
30 अप्रै.	भर.(2)	22:27
4 मई	भर.(3)	8:56
7 मई	भर.(4)	19:34
11 मई	कृति.(1)	6:22
14 मई	कृति.2 वृष	17:16
18 मई	कृति.(3)	4:15
21 मई	कृति.(4)	7:02
24 मई	रोहि.(1)	26:33
28 मई	रोहि.(2)	13:51
31 मई	रोहि.(3)	25:17
4 जून	रोहि.(4)	12:50
8 जून	मृग.(1)	00:27
11 जून	मृग.(2)	12:09
14 जून	मृग. 3 मिथुन	23:53
18 जून	मृग.(4)	11:39
21 जून	आर्द्रा(1)	23:27
25 जून	आर्द्रा(2)	11:17
28 जून	आर्द्रा(3)	23:10
2 जुला.	आर्द्रा(4)	11:06
5 जुला.	पुन.(1)	23:03
9 जुला.	पुन.(2)	10:59
12 जुला.	पुन.(3)	22:54
16 जुला.	पुन. 4 कर्क	10:46
19 जुला.	पुष्य(1)	22:35
23 जुला.	पुष्य(2)	10:22
26 जुला.	पुष्य(3)	22:06
30 जुला.	पुष्य(4)	9:48
2 अग.	आश्ले.(1)	21:27

2020 ई.	नक्षत्र चरण	घं. मिं.
9 अग.	आश्ले.(3)	20:32
13 अग.	आश्ले.(4)	7:55
16 अग.	मघा 1 सिंह	19:10
20 अग.	मघा(2)	6:19
23 अग.	मघा(3)	17:21
27 अग.	मघा(4)	04:16
30 अग.	पू.फा.(1)	15:05
2 सितं.	पू.फा.(2)	25:48
6 सितं.	पू.फा.(3)	12:23
9 सितं.	पू.फा.(4)	22:47
13 सितं.	उ.फा.(1)	9:01
16 सितं.	उ.फा. 2 कन्या	19:07
20 सितं.	उ.फा.(3)	05:02
23 सितं.	उ.फा.(4)	14:49
26 सितं.	हस्त(1)	24:28
30 सितं.	हस्त(2)	9:58
3 अक्तू.	हस्त(3)	19:20
7 अक्तू.	हस्त(4)	04:32
10 अक्तू.	चित्रा(1)	13:34
13 अक्तू.	चित्रा(2)	22:24
17 अक्तू.	चित्रा 3 तुला	7:05
20 अक्तू.	चित्रा(4)	15:39
23 अक्तू.	स्वा.(1)	23:58
27 अक्तू.	स्वा.(2)	8:14
30 अक्तू.	स्वा.(3)	16:22
2 नवं.	स्वा.(4)	24:22
6 नवं.	विशा.(1)	8:13
9 नवं.	विशा.(2)	15:55
12 नवं.	विशा.(3)	23:27
16 नवं.	विशा. 4 वृश्चि.	6:53
19 नवं.	अनु.(1)	14:11
22 नवं.	अनु.(2)	13:36
26 नवं.	अनु.(3)	04:32
29 नवं.	अनु.(4)	11:34
2 दिसं.	ज्ये.(1)	18:32
5 दिसं.	ज्ये.(2)	25:25
9 दिसं.	ज्ये.(3)	8:12

2020 ई.	नक्षत्र चरण	घं. मिं.
15 दिसं.	मूल 1 धनु	21:31
18 दिसं.	मूल(2)	28:06
22 दिसं.	मूल(3)	10:39
25 दिसं.	मूल(4)	17:11
28 दिसं.	पू.षा.(1)	23:44
(सन् 2021 ई.)		
1 जन.	पू.षा.(2)	6:15
4 जन.	पू.षा.(3)	12:45
7 जन.	पू.षा.(4)	19:16
10 जन.	उ.षा.(1)	25:44
14 जन.	उ.षा. 2 मक.	8:14
17 जन.	उ.षा.(3)	14:45
20 जन.	उ.षा.(4)	21:19
24 जन.	श्रव.(1)	03:58
27 जन.	श्रव.(2)	10:40
30 जन.	श्रव.(3)	17:27
2 फर.	श्रव.(4)	24:17
6 फर.	धनि.(1)	7:11
9 फर.	धनि.(2)	14:09
12 फर.	धनि. 3 कुम्भ	21:11
16 फर.	धनि.(4)	04:20
19 फर.	शत.(1)	11:36
22 फर.	शत.(2)	18:59
25 फर.	शत.(3)	26:32
1 मार्च	शत.(4)	10:12
4 मार्च	पू.भा.(1)	17:58
7 मार्च	पू.भा.(2)	25:52
11 मार्च	पू.भा.(3)	9:54
14 मार्च	पू.भा.4 मीन	18:03
17 मार्च	उ.भा.(1)	26:21
21 मार्च	उ.भा.(2)	10:49
24 मार्च	उ.भा.(3)	19:27
28 मार्च	उ.भा.(4)	4:15
31 मार्च	रेव.(1)	13:14
3 अप्रै.	रेव.(2)	22:21
7 अप्रै.	रेव.(3)	7:36
10 अप्रै.	रेव.(4)	17:00

मंगल नक्षत्र प्रवेश

(संवतारम्भ में उ.षा. (2) में)

2020 ई.	नक्षत्र चरण	घं.मिं.
27 मार्च	उ.षा.(3)	9:46
31 मार्च	उ.षा.(4)	28:53
5 अप्रै.	श्रव.(1)	24:00
10 अप्रै.	श्रव.(2)	19:06
15 अप्रै.	श्रव.(3)	14:14
20 अप्रै.	श्रव.(4)	9:26
25 अप्रै.	धनि.(1)	04:52
29 अप्रै.	धनि.(2)	24:35
4 मई	धनि. 3 कुंभ	20:39
9 मई	धनि.(4)	17:06
14 मई	शत.(1)	13:59
19 मई	शत.(2)	11:31
24 मई	शत.(3)	9:51
29 मई	शत.(4)	9:10
3 जून	पू.भा.(1)	9:40
8 जून	पू.भा.(2)	11:27
13 जून	पू.भा.(3)	14:51
18 जून	पू.भा. 4 मीन	20:15
23 जून	उ.भा.(1)	28:09
29 जून	उ.भा.(2)	15:15
5 जुला.	उ.भा.(3)	6:04
10 जुला.	उ.भा.(4)	25:38
16 जुला.	रेव.(1)	27:32
23 जुला.	रेव.(2)	14:19
30 जुला.	रेव.(3)	13:55
7 अग.	रेव.(4)	9:15
16 अग.	अश्वि. 1 मेष	18:31
31 अग.	अश्वि.(2)	12:21
10 सितं.	वक्री	03:50
19 सितं.	व. अश्वि.(1)	15:50
4 अक्तू.	व. रेव. 4 मीन	10:06
14 अक्तू.	व. रेव.(3)	25:14
26 अक्तू.	व. रेव.(2)	19:05
14 नवं.	मार्गी	6:06

2020 ई.	नक्षत्र चरण	घं. मिं.
15 दिसं.	रेव.(4)	4:21
24 दिसं.	अश्वि.1 मेष	10:18
(सन् 2021 ई.)		
1 जन.	अश्वि.(2)	12:13
8 जन.	अश्वि.(3)	22:12
15 जन.	अश्वि.(4)	21:24
22 जन.	भर.(1)	13:00
28 जन.	भर.(2)	23:00
4 फर.	भर.(3)	04:52
10 फर.	भर.(4)	7:23
16 फर.	कृति.(1)	7:05
22 फर.	कृति. 2 वृष	04:35
27 फर.	कृति.(3)	24:20
5 मार्च	कृति.(4)	18:43
11 मार्च	रोहि.(1)	11:46
17 मार्च	रोहि.(2)	3:47
22 मार्च	रोहि.(3)	18:54
28 मार्च	रोहि.(4)	9:18
2 अप्रै.	मृग.(1)	23:08
8 अप्रै.	मृग.(2)	12:27
14 अप्रै.	मृग. 3 मिथुन	01:12

बुध नक्षत्र प्रवेश

(संवतारम्भ में शत. (2) में)

25 मार्च	शत.(3)	14:26
28 मार्च	शत.(4)	14:16
31 मार्च	पू.भा.(1)	7:55
2 अप्रै.	पू.भा.(2)	21:08
5 अप्रै.	पू.भा.(3)	7:07
7 अप्रै.	पू.भा. 4 मीन	14:20
9 अप्रै.	उ.भा.(1)	19:19
11 अप्रै.	उ.भा.(2)	22:22
13 अप्रै.	उ.भा.(3)	23:40
15 अप्रै.	उ.भा.(4)	23:23
17 अप्रै.	रेव.(1)	21:41
19 अप्रै.	रेव.(2)	18:38
21 अप्रै.	रेव.(3)	14:23

बुध नक्षत्र प्रवेश

2020 ई.	नक्षत्र चरण	घं.मिं.
25 अप्रै.	अश्वि. 1 मेष	02:33
26 अप्रै.	अश्वि.(2)	19:07
28 अप्रै.	अश्वि.(3)	10:50
29 अप्रै.	अश्वि.(4)	25:46
1 मई	भर.(1)	16:01
3 मई	भर.(2)	5:44
4 मई	भर.(3)	18:59
6 मई	भर.(4)	7:59
7 मई	कृति.(1)	20:51
9 मई	कृति.2 वृष	9:47
10 मई	कृति.(3)	22:58
12 मई	कृति.(4)	12:37
14 मई	रोहि.(1)	2:55
15 मई	रोहि.(2)	18:13
17 मई	रोहि.(3)	10:42
19 मई	रोहि.(4)	4:40
20 मई	मृग.(1)	24:37
22 मई	मृग.(2)	22:51
24 मई	मृग. 3 मिथुन	23:57
27 मई	मृग.(4)	4:36
29 मई	आर्द्रा(1)	14:06
1 जून	आर्द्रा(2)	5:51
4 जून	आर्द्रा(3)	7:33
7 जून	आर्द्रा(4)	27:07
14 जून	पुन.(1)	9:18
18 जून	वक्री	10:25
22 जून	व.आर्द्रा (4)	13:12
29 जून	व. आर्द्रा (3)	13:54
5 जुला.	व. आर्द्रा(2)	9:05
12 जुला.	मार्गी	13:54
19 जुला.	आर्द्रा(3)	5:24
23 जुला.	आर्द्रा(4)	10:20
26 जुला.	पुन.(1)	10:34
28 जुला.	पुन.(2)	22:28

बुध नक्षत्र प्रवेश

गुरु नक्षत्र प्रवेश

शुक्र नक्षत्र प्रवेश

बुध नक्षत्र प्रवेश

2 अग.	पुन. 4 कर्क	3:31
4 अग.	पुष्य(1)	00:26
5 अग.	पुष्य(2)	19:08
7 अग.	पुष्य(3)	12:18
9 अग.	पुष्य(4)	4:25
10 अग.	आश्ले.(1)	19:49
12 अग.	आश्ले.(2)	10:55
13 अग.	आश्ले.(3)	25:54
15 अग.	आश्ले.(4)	17:03
17 अग.	मघा 1 सिंह	8:29
19 अग.	मघा(2)	00:23
20 अग.	मघा(3)	16:52
22 अग.	मघा(4)	10:04
24 अग.	पू.फा.(1)	4:00
25 अग.	पू.फा.(2)	22:52
27 अग.	पू.फा.(3)	18:38
29 अग.	पू.फा.(4)	15:22
31 अग.	उ.फा.(1)	13:10
2 सितं.	उ.फा.2 कन्या	12:03
4 सितं.	उ.फा.(3)	12:06
6 सितं.	उ.फा.(4)	13:21
8 सितं.	हस्त(1)	15:52
10 सितं.	हस्त(2)	19:44
12 सितं.	हस्त(3)	25:04
15 सितं.	हस्त(4)	7:59
17 सितं.	चित्रा(1)	16:45
20 सितं.	चित्रा(2)	03:32
22 सितं.	चित्रा 3 तुला	16:55
25 सितं.	चित्रा(4)	9:27
28 सितं.	स्वा.(1)	6:25
1 अक्तू.	स्वा.(2)	10:13
4 अक्तू.	स्वा.(3)	26:25
10 अक्तू.	स्वा.(4)	9:30
14 अक्तू.	वक्री	6:32
17 अक्तू.	व. स्वा. (3)	20:06
22 अक्तू.	व.स्वा.(2)	2:26
24 अक्तू.	व. स्वा.(1)	22:20
27 अक्तू.	व.चित्रा(4)	14:33
30 अक्तू.	व.चित्रा(3)	22:19
3 नवं.	मार्गी	23:17
8 नवं.	चित्रा(4)	5:55
11 नवं.	स्वा.(1)	21:32
14 नवं.	स्वा.(2)	16:38
17 नवं.	स्वा.(3)	4:26
19 नवं.	स्वा.(4)	12:27
21 नवं.	विशा.(1)	18:27
23 नवं.	विशा.(2)	23:17
26 नवं.	विशा.(3)	3:23
28 नवं.	विशा.4 वृश्चिक	7:04
30 नवं.	अनु.(1)	10:30
2 दिसं.	अनु.(2)	13:49
4 दिसं.	अनु.(3)	17:04
6 दिसं.	अनु.(4)	20:18
8 दिसं.	ज्ये.(1)	23:29
10 दिसं.	ज्ये.(2)	26:38
13 दिसं.	ज्ये.(3)	5:44
15 दिसं.	ज्ये.(4)	8:44
17 दिसं.	मूल 1 धनु	11:37
19 दिसं.	मूल(2)	14:21
21 दिसं.	मूल(3)	16:54
23 दिसं.	मूल(4)	19:14
25 दिसं.	पू.षा.(1)	21:19
27 दिसं.	पू.षा.(2)	23:10
29 दिसं.	पू.षा.(3)	24:43
31 दिसं.	पू.षा.(4)	26:00
(सन् 2021 ई.)		
3 जन.	उ.षा.(1)	3:04
5 जन.	उ.षा. 2 मक.	3:55
7 जन.	उ.षा.(3)	4:38
9 जन.	उ.षा.(4)	5:23
11 जन.	श्रव.(1)	6:20
13 जन.	श्रव.(2)	7:47
15 जन.	श्रव.(3)	10:15
17 जन.	श्रव.(4)	14:28
19 जन.	धनि.(1)	21:52
22 जन.	धनि.(2)	11:30
25 जन.	धनि. 3 कुम्भ	16:55
30 जन.	वक्री	21:18
4 फर.	व.धनि. 2 मक.	22:40
8 फर.	व. धनि. 1	3:03
10 फर.	व. श्रव.(4)	22:46
14 फर.	व. श्रव.(3)	3:59
21 फर.	मार्गी	6:20
1 मार्च	श्रव.(4)	6:55
5 मार्च	धनि.(1)	7:13
8 मार्च	धनि.(2)	14:07
11 मार्च	धनि. 3 कुम्भ	12:30
14 मार्च	धनि.(4)	5:29
16 मार्च	शत.(1)	18:30
19 मार्च	शत.(2)	4:41
21 मार्च	शत.(3)	12:22
23 मार्च	शत.(4)	18:03
25 मार्च	पू.भा.(1)	21:57
27 मार्च	पू.भा.(2)	24:17
29 मार्च	पू.भा.(3)	25:10
1 अप्रै.	पू.भा. 4 मीन	00:42
2 अप्रै.	उ.भा.(1)	22:58
4 अप्रै.	उ.भा.(2)	20:05
6 अप्रै.	उ.भा.(3)	16:06
8 अप्रै.	उ.भा.(4)	11:05
10 अप्रै.	रेव.(1)	5:07
11 अप्रै.	रेव.(2)	22:13
13 अप्रै.	रेव.(3)	14:30
15 अप्रै.	रेव.(4)	6:05

गुरु नक्षत्र प्रवेश

(संवतारम्भ में उ.षा. (1) में)

2020 ई.	नक्षत्र चरण	घं. मिं.
30 मार्च	उ.षा. 2 मक.	3:50
14 मई	वक्री	19:58
30 जून	व. उ.षा. 1 धनु	5:25
26 जुला.	व.पू.षा. (4)	15:19
6 सितं.	व. पू.षा.(3)	18:21
13 सितं.	मार्गी	6:12
19 सितं.	पू.षा.(4)	18:10
30 अक्तू.	उ.षा.(1)	13:05
20 नवं.	उ.षा. 2 मकर	13:22
7 दिसं.	उ.षा.(3)	20:52
23 दिसं.	उ.षा.(4)	11:14

गुरु नक्षत्र प्रवेश

2021 ई.	नक्षत्र चरण	घं. मिं.
(सन् 2021 ई.)		
7 जन.	श्रव.(1)	3:44
21 जन.	श्रव.(2)	8:45
4 फर.	श्रव.(3)	9:50
18 फर.	श्रव.(4)	13:13
5 मार्च	धनि.(1)	1:56
20 मार्च	धनि.(2)	8:40
6 अप्रै.	धनि.3 कुम्भ	00:23

शुक्र नक्षत्र प्रवेश

(संवतारम्भ में कृति. (1) में)

2020 ई.	नक्षत्र चरण	घं. मिं.
28 मार्च	कृति. 2 वृष	15:38
1 अप्रै.	कृति.(3)	4:17
4 अप्रै.	कृति.(4)	20:08
8 अप्रै.	रोहि.(1)	16:03
12 अप्रै.	रोहि.(2)	17:21
16 अप्रै.	रोहि.(3)	26:14
21 अप्रै.	रोहि.(4)	22:53
27 अप्रै.	मृग.(1)	17:00
6 मई	मृग.(2)	1:52
13 मई	वक्री	12:12
20 मई	व. मृग.(1)	16:47
28 मई	व. रोहि. (4)	12:27
2 जून	व. रोहि. (3)	26:30
8 जून	व. रोहि.(2)	12:01
15 जून	व. रोहि.(1)	2:06
25 जून	मार्गी	12:18
6 जुला.	रोहि.(2)	11:15
13 जुला.	रोहि.(3)	14:46
18 जुला.	रोहि.(4)	26:00
23 जुला.	मृग.(1)	19:58
28 जुला.	मृग.(2)	3:57
1 अग.	मृग.3 मिथुन	5:09
4 अग.	मृग.(4)	25:26
8 अग.	आर्द्रा(1)	17:57
12 अग.	आर्द्रा(2)	7:31

शुक्र नक्षत्र प्रवेश

2020 ई.	नक्षत्र चरण	घं. मिं.
15 अग.	आर्द्रा(3)	18:39
19 अग.	आर्द्रा(4)	3:50
22 अग.	पुन.(1)	11:20
25 अग.	पुन.(2)	17:25
28 अग.	पुन.(3)	22:17
1 सितं.	पुन. 4 कर्क	2:02
4 सितं.	पुष्य(1)	4:48
7 सितं.	पुष्य(2)	6:40
10 सितं.	पुष्य(3)	7:43
13 सितं.	पुष्य(4)	8:02
16 सितं.	आश्ले.(1)	7:44
19 सितं.	आश्ले.(2)	6:49
22 सितं.	आश्ले.(3)	5:22
25 सितं.	आश्ले.(4)	3:25
28 सितं.	मघा 1 सिंह	1:01
30 सितं.	मघा(2)	22:10
3 अक्तू.	मघा(3)	18:55
6 अक्तू.	मघा(4)	15:17
9 अक्तू.	पू.फा.(1)	11:17
12 अक्तू.	पू.फा.(2)	6:57
15 अक्तू.	पू.फा.(3)	2:17
17 अक्तू.	पू.फा.(4)	21:22
20 अक्तू.	उ.फा.(1)	16:10
23 अक्तू.	उ.फा.2 कन्या	10:44
26 अक्तू.	उ.फा.(3)	5:02
28 अक्तू.	उ.फा.(4)	23:13
31 अक्तू.	हस्त(1)	17:08
3 नवं.	हस्त(2)	10:52
6 नवं.	हस्त(3)	4:25
8 नवं.	हस्त(4)	21:47
11 नवं.	चित्रा(1)	15:00
14 नवं.	चित्रा(2)	8:05
16 नवं.	चित्रा 3 तुला	25:01
19 नवं.	चित्रा(4)	17:51
22 नवं.	स्वा.(1)	10:32
25 नवं.	स्वा.(2)	3:12
27 नवं.	स्वा.(3)	19:45
30 नवं.	स्वा.(4)	12:12

2020 ई.	नक्षत्र चरण	घं. मिं.
3 दिसं.	विशा.(1)	4:35
5 दिसं.	विशा.(2)	20:53
8 दिसं.	विशा.(3)	13:07
11 दिसं.	विशा.4 वृश्चि.	5:16
13 दिसं.	अनु.(1)	21:22
16 दिसं.	अनु.(2)	13:26
19 दिसं.	अनु.(3)	5:28
21 दिसं.	अनु.(4)	21:27
24 दिसं.	ज्ये.(1)	13:25
27 दिसं.	ज्ये.(2)	5:22
29 दिसं.	ज्ये.(3)	21:17
(सन् 2021 ई.)		
1 जन.	ज्ये.(4)	13:10
4 जन.	मूल 1 धनु	5:03
6 जन.	मूल(2)	20:54
9 जन.	मूल(3)	12:44
12 जन.	मूल(4)	4:33
14 जन.	पू.षा.(1)	20:21
17 जन.	पू.षा.(2)	12:11
20 जन.	पू.षा.(3)	4:00
22 जन.	पू.षा.(4)	19:48
25 जन.	उ.षा.(1)	11:39
28 जन.	उ.षा. 2 मक.	3:29
30 जन.	उ.षा.(3)	19:19
2 फर.	उ.षा.(4)	11:10
5 फर.	श्रव.(1)	3:01
7 फर.	श्रव.(2)	18:52
10 फर.	श्रव.(3)	10:44
13 फर.	श्रव.(4)	2:36
15 फर.	धनि.(1)	18:30
18 फर.	धनि.(2)	10:26
21 फर.	धनि. 3 कुम्भ	2:21
23 फर.	धनि.(4)	18:19
26 फर.	शत.(1)	10:20
28 फर.	शत.(2)	26:21
3 मार्च	शत.(3)	18:24
6 मार्च	शत.(4)	10:28

शुक्र नक्षत्र प्रवेश

2020-21 ई.	नक्षत्र चरण	घं. मिं.
9 मार्च	पू.भा.(1)	2:33
11 मार्च	पू.भा.(2)	18:40
14 मार्च	पू.भा.(3)	10:49
17 मार्च	पू.भा.4 मीन	3:00
19 मार्च	उ.भा.(1)	19:13
22 मार्च	उ.भा.(2)	11:29
25 मार्च	उ.भा.(3)	3:47
27 मार्च	उ.भा.(4)	20:08
30 मार्च	रेव.(1)	12:32
2 अप्रै.	रेव.(2)	4:58
4 अप्रै.	रेव.(3)	21:26
7 अप्रै.	रेव.(4)	13:56
10 अप्रै.	अश्वि. 1 मेष	6:28
12 अप्रै.	अश्वि.(2)	23:03
15 अप्रै.	अश्वि.(3)	9:13

शनि नक्षत्र प्रवेश

(संवतारम्भ में उ.षा.(3) में)

3 अप्रै.	उ.षा.(4)	7:55
11 मई	वक्री	9:27
19 जून	व. उ.षा.(3)	5:20
6 अग.	व. उ.षा.(2)	7:05
29 सितं.	मार्गी	10:30
20 नवं.	उ.षा.(3)	7:04
24 दिसं.	उ.षा.(4)	23:26
(सन् 2021 ई.)		
22 जन.	श्रव.(1)	17:41
20 फर.	श्रव.(2)	5:51
25 मार्च	श्रव.(3)	9:45

मध्यम राहु नक्षत्र प्रवेश

(संवतारम्भ में आर्द्रा (1) में)

20 मई	मृग.(4)	17:44
22 जुला.	मृग.(3)	15:12
23 सितं.	मृग. 2 वृष	12:52
25 नवं.	मृग.(1)	10:27

मध्यम राहु नक्षत्र प्रवेश

(संवतारम्भ में आर्द्रा (1) में)

27 जन.(21)	रोहि.(4)	8:14
31 मार्च	रोहि.(3)	5:42

मध्यम केतु नक्षत्र प्रवेश

(संवतारम्भ में मूल (3) में)

2020-21 ई.	नक्षत्र चरण	घं. मिं.
20 मई	मूल(2)	17:44
22 जुला.	मूल(1)	15:12
23 सितं.	ज्ये.4 वृश्चि.	12:52
25 नवं.	ज्ये.(3)	10:27
27 जन.(21)	ज्ये.(2)	8:14
31 मार्च	ज्ये.(1)	5:42

यूरेनस नक्षत्र प्रवेश

(संवतारम्भ में अश्वि. (4) में)

11 मई	भर.(1)	23:16
15 अग.	वक्री	19:56
2 दिसं.	व. अश्वि.(4)	9:31
14 जन.(21)	मार्गी	14:07
25 फर.	भर.(1)	21:38

नैपच्यून नक्षत्र प्रवेश

(संवतारम्भ में पू.भा. (2) में)

30 मई	पू.भा.(3)	9:19
23 जून	वक्री	10:05
17 जुला.	व. पू.भा.(2)	12:10
29 नवं.	मार्गी	6:08
15 मार्च(21)	पू.भा.(3)	24:45

प्लूटो नक्षत्र प्रवेश

(संवतारम्भ से उ.षा. (2) में)

26 अप्रै.	वक्री	00:18
28 जून	व. उ.षा.1 धनु	3:05
4 अक्तू.	मार्गी	18:59

ग्रहों की अंशात्मक युतियां

(सन् 2020-21 ई.)

31 मार्च ➽ मंग.-शनि (मकर

5 मई ➽ सूर्य-बुध (मेष)

29 मई ➽ बुध-राहु (मिथुन)

3 जून ➽ सूर्य-शुक्र (वृष)

20 जून ➽ सूर्य-राहु (मिथुन)

1 जुला ➽ सूर्य-बुध (मिथुन)

4 अग. ➽ शुक्र-राहु (मिथुन)

17अग. ➽ सूर्य-बुध (सिंह)

25 अक्तू. ➽ सूर्य-बुध (तुला)

20 दिसं. ➽ सूर्य-बुध (धनु)

21 दिसं. ➽ गुरु-शनि (मकर)

(सन 2021 ई.)

10 जन. ➽ बुध-शनि (मकर)

11 जन. ➽ बुध-गुरु (मकर)

24 जन. ➽ सूर्य-शनि (मकर)

29 जन. ➽ सूर्य-बुध (मकर)

6 फर. ➽ शुक्र-शनि (मकर)

8 फर. ➽ सूर्य-बुध (मकर)

11 फर. ➽ गुरु-शुक्र (मकर)

5 मार्च ➽ बुध-गुरु (मकर)

24 मार्च ➽ सूर्य-शुक्र (मीन)

28 मार्च ➽ मंग.-राहु (वृष)

शास्त्र-वाक्य

➽ श्राद्ध और हवन के समय तो एक हाथ से पिण्ड एवं आहुति दे, पर तर्पण में दोनों हाथों से जल देना चाहिए।

➽ श्राद्ध में पितरों की तृप्ति ब्राह्मणों के द्वारा ही होती है।

द्विग्रही-योग-सन् 2020-21

मंग.-शनि ➽ 25 मार्च से 4 मई (मकर)

गुरु-शनि ➽ 30 मार्च से 29जून (मकर)

सूर्य-बुध ➽ 7 अप्रै. से 13 अप्रै. (मीन)

सूर्य-बुध ➽ 24 अप्रै. से 9 मई (मेष)

बुध-शुक्र ➽ 9 मई से 24 मई (वृष)

सूर्य-बुध ➽ 14 मई से 24 मई (वृष)

सूर्य-शुक्र ➽ 14 मई से 14 जून (वृष)

बुध-राहु ➽ 24 मई से 1 अग. (मिथुन)

सूर्य-राहु ➽ 14 जून से 16 जुला. (मिथुन)

सूर्य-बुध ➽ 14 जून से 16 जुला. (मिथुन)

बुध-शुक्र ➽ 31 जुला. से 1 अग. (मिथुन)

शुक्र-राहु ➽ 31 जुला. से 31 अग. (मिथुन)

सूर्य-बुध ➽ 2 अग. से 16 अग. (कर्क)

सूर्य-बुध ➽ 17 अग. से 2 सितं. (सिंह)

सूर्य-बुध ➽ 16 सितं. से 22 सितं. (कन्या)

सूर्य-बुध ➽ 17 अक्तू. से 16 नवं. (तुला)

बुध-शुक्र ➽ 16 नवं. से 28 नवं. (तुला)

गुरु-शनि ➽ 20 नवं. से 6 अप्रै. (21) मकर

सूर्य-बुध ➽ 28 नवं. से 15 दिसं. (वृश्चिक)

सूर्य-शुक्र ➽ 11 दिसं. से 15 दिसं. (वृश्चिक)

बुध-शुक्र ➽ 11 दिसं. से 17 दिसं. (वृश्चिक)

सूर्य-बुध ➽ 17 दिसं. से 4 जन. (धनु)

(सन 2021 ई.)

बुध-शुक्र ➽ 4 जन. (धनु)

सूर्य-शुक्र ➽ 4 जन. से 14 जन. (धनु)

बुध-गुरु ➽ 4 जन. से 25 जन. (मकर)

सूर्य-गुरु ➽ 14 जन. से 12 फर. (मकर)

सूर्य-शनि ➽ 14 जन. से 12 फर. (मकर)

गुरु-शुक्र ➽ 27 जन. से 20 फर. (मकर)

शुक्र-शनि ➽ 27 जन. से 20 फर. (मकर)

सूर्य-बुध ➽ 4 फर. से 12 फर (मकर)

बुध-शनि ➽ 4 फर. से 11 मार्च (मकर)

सूर्य-शुक्र ➽ 20 फर. से 14 मार्च (कुम्भ)

मंग.-राहु ➽ 21 फर. से 13 अप्रै. (वृष)

सूर्य-शुक्र ➽ 16 मार्च से 10 अप्रै. (मीन)

सूर्य-बुध ➽ 31 मार्च से 13 अप्रै. (मीन)

तीनग्रही-योग-सन् 2020-21

मं.+गु.+श. ➽ 30 मार्च से 4 मई (मकर)

सू.+बु.+शु. ➽ 14 मई से 24 मई (वृष)

सू.+बु.+रा. ➽ 14 जून से 16 जुला. (मिथुन)

सू.+बु.+के. ➽ 28 नवं. से 10 दिसं. (वृश्चिक)

(सन 2021 ई.)

बु.+गु.+श. ➽ 5 जन. से 13 जन. (मकर)

सू.+गु.+श. ➽ 25 जन. से 27 जन. (मकर)

गु.+शु.+श. ➽ 27 जन. से 20 फर. (मकर)

बु.+गु.+श. ➽ 20 फर. से 11 मार्च (मकर)

सू.+बु.+शु. ➽ 11 मार्च से 14 मार्च (कुम्भ)

(चतुर्ग्रही योग)

सू.+बुं.+शु.+के. ➽ 11 दिसं. से 15 दिसं. (वृश्चि.)

(सन 2021 ई.)

सू.+बु.+गु.+श. ➽ 14 जन. से 25 जन. (मकर)

सू.+गु.+शु.+श. ➽ 28 जन. से 4 फर. (मकर)

बु.+गु.+शु.+श. ➽ 12 फर. से 20 फर. (मकर)

पंचग्रही योग

सू.+बु.+गु.+शु.+श. ➽ 4 फर. से 12 फरवरी (21 ई.)

(नवपंचम योग)

गुरु+शुक्र ➽ 30 मार्च से 29 जून (वृष-मकर)

(समसप्तक योग)-2020-21 ई.

सूर्य-गुरु ➽ 30 जून से 16 जुला. (मिथुन-धनु)

बुध-गुरु ➽ 30 जून से 1 अग. (मिथु.-धनु)

सूर्य-शनि ➽ 16 जुला. से 16 अग. (कर्क-मकर)

गुरु-शुक्र ➽ 1 अग. से 31 अग. (मिथुन-धनु)

बुध-शनि ➽ 2 अग. से 16 अग. (कर्क-मकर)

शुक्र-शनि ➽ 1 सितं. से 27 सितं. (कर्क-मकर)

सूर्य-मंग. ➽ 4 अक्तू. से 16 अक्तू. (कन्या-मीन)

मंग.-शुक्र ➽ 23 अक्तू. से 15 नवं. (कन्या-मीन)

(षडाष्टक योग)

चान्द्र परम्परा अनुसार प्रत्येक मास के मुख्य व्रत-त्यौहार

(व्रत-पर्वों के तिथि-निर्णय एवं संक्षिप्त विधि-विधान सहित)

[इस श्रृंखला के अन्तर्गत भारतीय सनातन वैदिक संस्कृति के अनुसार 'पंचांगदिवाकर' में प्रत्येक कृष्ण/शुक्ल पक्ष में दिए जाने वाले मुख्य पर्व/व्रत/त्यौहारों का संक्षिप्त विवरण (शास्त्रोक्त तिथि निर्णय एवं करणीय कर्म) क्रमानुसार दिया जा रहा है। आशा है धर्मपरायण पाठकों के लिए अत्यन्त उपयोगी सिद्ध होगा। [सुझाव आमंत्रित हैं।] गत चार वर्षों में हमने 'चैत्र से आषाढ़' मास तक के मुख्य व्रत/पर्वों का विवरण लिख चुके हैं। इस वर्ष हम 'श्रावण मास' के मुख्य व्रत/पर्वों सम्बन्धी ही विधि-विधान का विवरण लिख रहे हैं। --पं. विवेक शर्मा, सुपुत्र स्व. पं. पन्ना लाल ज्योतिषी, अड्डा होशियारपुर, जालन्धर।]

।। श्रावण मास ।। श्रावण कृष्ण पक्ष

(1) श्रावण के सोमवार

श्रावण-मास के सभी कृष्ण-शुक्ल पक्ष के सोमवारों के दिन गौरी-शिवप्रीत्यर्थ दिन-रात्रि (अहोरात्र) उपवास या एकभुक्त करने का माहात्म्य है। पंजाब, जम्मू, हि.प्र. आदि कुछ राज्यों में सौर श्रावण के सोमवारों में भी उपवास रखते हैं।

माहात्म्य—श्रावण मास में आशुतोष भगवान् शंकर की पूजा का विशेष महत्त्व है। जो **प्रतिदिन पूजन न कर सकें** उन्हें **सोमवार को शिवपूजा अवश्य करनी चाहिये और व्रत रखना चाहिये। सोमवार भगवान् शंकर का प्रिय दिन है, अतः सोमवार को शिवाराधना करनी चाहिये।** इसी प्रकार मासों में श्रावण मास भगवान् शंकर को विशेष प्रिय है। अतः श्रावण मास में प्रतिदिन शिवोपासना का विधान है। श्रावण में **पार्थिव शिवपूजा का विशेष महत्त्व है।** अतः प्रतिदिन अथवा प्रति सोमवार तथा प्रदोष को शिवपूजा या पार्थिव शिवपूजा अवश्य करनी चाहिये।

इस मास में लघुरुद्र, महारुद्र अथवा अतिरुद्र पाठ कराने का भी विधान है। **श्रावण मास में जितने भी सोमवार पड़ते हैं, उन सबमें शिवजी का** व्रत किया जाता है। इस व्रत में प्रातः गङ्गास्नान अन्यथा किसी पवित्र नदी या सरोवर में अथवा विधिपूर्वक घर पर ही स्नान करके शिवमन्दिर में जाकर स्थापित **शिवलिङ्ग का या अपने घरमें पार्थिव मूर्ति** बनाकर यथाविधि **षोडशोपचार-पूजन किया** जाता है। यथासम्भव विद्वान् **ब्राह्मण से रुद्राभिषेक भी कराना चाहिये।** इस व्रतमें **श्रावणमाहात्म्य और श्री शिवमहापुराण की कथा सुनने का विशेष महत्त्व है। पूजन के पश्चात् ब्राह्मण-भोजन कराकर एक बार ही भोजन करने का विधान है।** भगवान् **शिव का यह व्रत सभी मनोकामनाओं को** पूर्ण करने वाला है।

(2) श्रावण मास के मंगलवार (मङ्गलागौरी-व्रत)

श्रावण मास में जितने भी मंगलवार आयें, उन दिनों यह व्रत करके मङ्गलागौरी की पूजा करनी चाहिये। इसमें **मंगलवार को गौरी का पूजन किया जाता है।** इसलिये यह मङ्गलागौरी-व्रत कहलाता है। **यह व्रत विवाह के बाद प्रत्येक स्त्री को पाँच वर्षों तक करना चाहिये।** इसे प्रत्येक श्रावण मास के प्रत्येक मंगलवार को करना चाहिये। विवाह के बाद प्रथम श्रावण में पीहर में तथा अन्य चार वर्षों में पति गृह में यह व्रत किया जाता है।

विधान—प्रात:काल स्नानादि नित्य कर्मों से निवृत्त हो नवीन शुद्ध वस्त्र पहनकर रोली का तिलक कर पूर्वाभिमुख या उत्तराभिमुख हो पवित्र आसन पर बैठकर निम्न संकल्प करना चाहिये-'**मम पुत्रपौत्रसौभाग्यवृद्धये श्रीमङ्गलागौरीप्रीत्यर्थं पञ्चवर्षपर्यन्तं मङ्गलागौरीव्रतमहं करिष्ये।**'

-ऐसा संकल्प कर एक शुद्ध एवं पवित्र आसन (पाटा आदि)-पर भगवती मङ्गलागौर की मूर्ति की प्रतिष्ठा करनी चाहिये, फिर उनके सम्मुख आटे से बना एक बड़ा-सा सोलह मुखवाला सोलह बत्तियोंसे युक्त दीपक घृतपूरित कर प्रज्वलित करना चाहिये। इसके बाद पवित्रीकरण, स्वस्तिवाचन और गणेशपूजन करें तथा यथाशक्ति यथासम्भव वरुण-कलशस्थापनपूजन, नवग्रहपूजन तथा षोडशमातृकापूजन भी करनेकी विधि है।

इसके बाद '**श्रीमङ्गलागौर्यै नमः**' इस नाम-मन्त्रसे मङ्गलागौरीका षोडशोपचारपूजन करना चाहिये। मङ्गलागौरीकी पूजामें सोलह प्रकार के पुष्प, सोलह मालाएँ, सोलह वृक्षके पत्ते, सोलह दूर्वादल, सोलह धतूर के पत्ते तथा सोलह पान, सुपारी, इलायची, जीरा और धनिया भी चढ़ाये।

मङ्गलागौरी के ध्यानका मन्त्र इस प्रकार है-

कुंकुमागुरुलिप्ताङ्गां सर्वाभरणभूषिताम्।
नीलकण्ठप्रियां गौरीं वन्देऽहं मङ्गलाह्वयाम्॥

क्षमा-प्रार्थना तथा प्रणामके अनन्तर मङ्गलागौरीको विशेषार्घ्य प्रदान करना चाहिये। व्रत करनेवाली स्त्री ताँबे के पात्र में जल, गन्ध, अक्षत, पुष्प, फल, दक्षिणा और नारियल रखकर ताँबेके पात्रको दाहिने हाथमें लेकर निम्न मन्त्रका उच्चारण कर विशेषार्घ्य दे-

पूजासम्पूर्णतार्थं तु गन्धपुष्पाक्षतैः सह। विशेषार्घ्यं मया दत्तो मम सौभाग्यहेतवे॥

'श्रीमङ्गलागौर्यै नमः' कहकर अर्घ्य दे और प्रणाम करे। पूजन के अनन्तर बाँस के पात्रमें सौभाग्यद्रव्यके साथ लड्डू, फल, वस्त्रके साथ ब्राह्मणको वायन दान करना चाहिये।

इसके बाद व्रतकर्त्रीको अपनी सासजीके चरणस्पर्श कर उन्हें सोलह लड्डुओंका वायन देना चाहिये। रात्रि-जागरण करे एवं प्रातःकाल किसी तालाब या नदीमें गौरीका विसर्जन कर दे।

कथासार—कुण्डिन नगरमें धर्मपाल नामक एक धनी सेठ रहता था। उसकी पत्नी सती, साध्वी एवं पतिव्रता थी। परंतु उनके कोई पुत्र नहीं था। सब प्रकारके सुखोंसे समृद्ध होते हुए भी वे दम्पत्ति बड़े दुःखी रहा करते थे। उनके यहाँ एक जटा-रुद्राक्षमालाधारी भिक्षुक प्रतिदिन आया करते थे। सेठानी ने सोचा कि भिक्षुकको कुछ धन आदि दे दें, सम्भव है इसी पुण्यसे मुझे पुत्र प्राप्त हो जाए। ऐसा विचारकर पतिकी सम्मतिसे सेठानीने भिक्षुककी झोलीमें छिपाकर सोना डाल दिया। परंतु इसका परिणाम उलटा ही हुआ। भिक्षुक अपरिग्रहव्रती थे, उन्होंने अपना व्रत भंग जानकर सेठ-सेठानीको संतानहीनता का शाप दे डाला।

फिर बहुत अनुनय-विनय करनेसे उन्हें गौरी की कृपा से एक अल्पायु पुत्र प्राप्त हुआ। उसे गणेश ने सोलहवें वर्ष में सर्पदंशका शाप दे दिया था।

परंतु उस बालकका विवाह ऐसी कन्यासे हुआ, जिसकी माताने मङ्गलागौरी-व्रत किया था। उस व्रतके प्रभावसे उत्पन्न कन्या विधवा नहीं हो सकती थी। अतः वह बालक शतायु हो गया। न तो उसे साँप ही डँस सका और न ही यमदूत सोलहवें वर्षमें उसके प्राण ले जा सके। इसलिये यह व्रत प्रत्येक नवविवाहिता को करना चाहिये।

उद्यापनविधि—चार वर्ष श्रावणमास के सोलह या बीस मंगलवारों का व्रत करनेके बाद इस व्रतका उद्यापन करना चाहिए; क्योंकि बिना उद्यापन के व्रत निष्फल होता है। व्रत करते हुए जब पाँचवाँ वर्ष प्राप्त हो तब श्रावणमासके मंगलवारों में से किसी भी मंगलवारको उद्यापन करे। आचार्य का वरण कर सर्वतोभद्रमण्डल बनाकर उसमें यथाविधि कलशकी स्थापना करे तथा कलश के ऊपर यथाशक्ति मङ्गलागौरी की स्वर्णमूर्तिकी स्थापना करे। तदनन्तर गणेशादिस्मरणपूर्वक **'श्रीमङ्गलागौर्यै नमः'** इस नाम-मन्त्रसे गौरीकी यथोपलब्धोपचार पूजा कर सोलह दीपकों से आरती करे।

दूसरे दिन यथासम्भव हवन करवाये और सोलह सपत्नीक ब्राह्मणोंको पायस आदिका भोजन कराकर संतुष्ट करे।

(3) अशून्यशयन व्रत

तिथि निर्णय—चन्द्रोदय-व्यापिनी श्रावण कृष्ण द्वितीया को यह व्रत किया जाता है। दोनों दिन द्वितीया की चन्द्रोदय के समय व्याप्ति या अपव्याप्ति की स्थिति हो, तो यह व्रत दूसरे दिन किया जाएगा। अर्थात् परविद्धा लेनी चाहिए।

करणीय कर्म एवं माहात्म्य—भविष्यपुराण में अशून्यशयन व्रत की मीमांसा की गई है। इस व्रत को करने से स्त्री वैधव्य तथा पुरुष विधुर होने के पाप से मुक्त हो जाता है। इसी प्रकार स्त्री एवं पुरुष-दोनों के लिए इस व्रत का विधान किया गया है। अशून्यशयन का अर्थ है-स्त्री का शयन पति से शून्य तथा पति का शयन पत्नी से शून्य नहीं होता। दोनों का ही यावत्-जीवन विशुद्ध साहचर्य बना रहता है।

भगवान् विष्णु के साथ लक्ष्मी का नित्य-निरन्तर साहचर्य रहता है। इसलिए पति-पत्नी के नित्य साहचर्य के लिए दोनों को अशून्यशयनव्रत में श्रावण कृष्ण द्वितीया तिथि को लक्ष्मी सहित भगवान् विष्णु की मूर्ति को विशिष्ट शय्या पर पधराकर अनेक उपचारों द्वारा उनका पूजन करना चाहिए। व्रती को चाहिए कि श्रावण कृष्ण द्वितीया को प्रातः स्नानादि करके श्रीवत्सचिह्न से युक्त चार भुजाओं से विभूषित शेष शय्या पर स्थित और लक्ष्मी सहित भगवान् का गन्ध पुष्पादि से पूजन करे। फिर चन्द्रोदय होने पर अर्घ्य पात्र में जल, फल, पुष्प और गन्धाक्षत रखकर निम्न मन्त्र से भगवान् को अर्घ्य दें-

गगनाङ्गणसंदीप क्षीराब्धिमथनोद्भव। भाभासितदिगाभोग रमानुज नमोऽस्तु ते॥

हे रमानुज! आपकी उत्पति क्षीरसागर के मन्थन से हुई है। आपकी आभा से ही दिशा-विदिशाएँ आभासित होती हैं। गगनरूपी आँगनके आप सत्स्वरूपी देदीप्यमान दीपक हैं। आपको नमस्कार है।

तदनन्तर भगवान्को प्रणाम करके भोजन करे। इस प्रकार प्रत्येक मासकी **कृष्ण द्वितीयाको व्रत करके मार्गशीर्ष कृष्ण तृतीयाको उस ऋतुमें होनेवाले मीठे फल सदाचारी ब्राह्मणको दक्षिणा सहित दे।** करौंदे, नीबू आदि खट्टे तथा इमली, नारंगी आदि स्त्रीनाम के फल न दे।

चन्द्रमा लक्ष्मीका अनुज होने के कारण उनका प्रिय है। वह प्रत्यक्ष देवता है। उसके पूजनसे लक्ष्मी प्रसन्न होती हैं। उक्त विधानके साथ जो व्यक्ति चार मासोंतक व्रत करता है, उसे कभी स्त्री-वियोग प्राप्त नहीं होता और लक्ष्मी उसका साथ नहीं छोड़तीं। जो स्त्री भक्तिपूर्वक इस व्रतका अनुष्ठान करती है, वह तीन जन्मों तक न तो विधवा होती है और न दुर्भाग्यका सामना करती है। यह अशून्यशयनव्रत सभी कामनाओं और उत्तम भोगों का प्रदान करने वाला है।

(4) कज्जली तृतीया

उत्तर-प्रदेश के पूर्वी क्षेत्रों में श्रावण कृष्ण तृतीया मनाने की परम्परा है। यह परविद्धा तिथि ली जाती है। यदि इस तिथि को श्रवण-नक्षत्र हो तो भगवान् विष्णु का पूजन करके व्रत करना चाहिए।

इस पर्व को प्रायः लोकोत्सव के रूप में मनाते हैं। विवाहित स्त्रियाँ प्रायः पीहर बुला ली जाती है। इस दिन हाथ-पैर में मेहंदी लगाने का प्रचलन है।

(5) श्रीगणेश चतुर्थी व्रत

श्रावण कृष्ण पक्ष में गणेश चतुर्थी, एकादशी व्रत तथा प्रदोष व्रतों के संकल्प, कथा पूर्ववत मासों के समान रहेंगे। एतदर्थ गतवर्षीय पंचांगों [वि. संवत् २०७३, २०७४] का अवलोकन करें।

---

(6) कामिका एकादशी व्रत

हो उस दिन मनाना चाहिए। यदि तीन मुहूर्त्तों से कम हो, तो इसे पहले दिन मनाना

(6) कामिका एकादशी व्रत

श्रावण कृष्ण एकादशी '**कामिका**' नाम की एकादशी कहलाती है। [संकल्प मन्त्र पूर्व एकादशियों की भान्ति रहेगा तथा कथासार के लिए हमारे कार्यालय से प्रकाशित '**एकादशी-माहात्म्य**' देखें।]

करणीय-विशेष–इस दिन उपवास करके श्री कृष्ण का पूजन करें। तुलसीदल और उसकी मञ्जरी चढ़ावें। घी का दीपक प्रज्वलित रखें और यथाशक्ति दान दे तो अनन्त फल होता है।

(7) हरियाली–अमावस

उदय-काल व्यापिनी श्रावण अमावस्या को हरियाली अमावस कहते हैं। इस दिन किसी एकान्त स्थान के जलाशय पर जाकर स्नान-दानादि करे और ब्राह्मणों को भोजन करावे तो पितृगण प्रसन्न होते हैं।

श्रावण शुक्ल पक्ष

(8) मधुश्रवा (मधुस्त्रवा) तृतीया

तिथि निर्णय–चतुर्थी विद्धा श्रावण शुक्ल तृतीया को यह पर्व मनाया जाता है।

करणीय कर्म–श्रावण शुक्ल तृतीया को मधुस्त्रवा, श्रावणी तीज तथा कजली तीज के नाम से भी जाना जाता है। समस्त उत्तर भारत में तीज-पर्व बड़े उत्साह और धूमधाम से मनाया जाता है। इस दिन महिलाएँ भवानी-पार्वती का पूजन करती हैं। राजस्थान की परम्परा में इस मास लड़कियों को ससुराल से पितृगृह बुला लिया जाता है। जिस लड़की के विवाह के पश्चात् पहला सावन आया हो, उसे ससुराल में नहीं रखा जाता। सावन में सुन्दर-से-सुन्दर पकवान पकाकर बेटियों को सिंघारा भेजा जाता है। माना गया है कि इस दिन गौरा विरहाग्नि में तपकर शिव से मिली थी।

(9) दूर्वा गणपति व्रत

तिथि निर्णय–यह व्रत श्रावण शुक्ल चतुर्थी को किया जाता है। इसमें मध्याह्नव्यापिनी चतुर्थी ली जाती है। यदि वह दो दिन हो या दोनों दिन न हो तो '**मातृविद्धा प्रशस्यते**' के अनुसार पूर्वविद्धा व्रत करना चाहिए।

कृत-कृत्य–भगवान् श्रीगणेश को बेलपत्र, अपामार्ग, शमीपत्र, दूब और तुलसी पत्र अर्पण करें। फिर नीराजन करके '**गणेश्वर गणाध्यक्ष गौरीपुत्र गजानन। व्रतं सम्पूर्णतां यातु त्वत्प्रसादादिभानन।।**' इस मन्त्र से प्रार्थना करने से तीन या पाँच वर्षों में सम्पूर्ण अभीष्ट सिद्ध होते हैं।

(10) नाग–पञ्चमी

तिथि निर्णय–श्रावण शुक्ल पंचमी के दिन '**नागपंचमी**' मनाई जाती है। इसमें परविद्धा पञ्चमी ली जाती है। पंचमी सूर्योदय बाद त्रिमुहूर्त्त व्यापिनी और षष्ठीसहित हो उस दिन मनाना चाहिए। यदि तीन मुहूर्त्तों से कम हो, तो इसे पहले दिन मनाना चाहिए। लोकाचार से राजस्थान आदि कुछ क्षेत्रों में इसे श्रावण कृष्ण पंचमी में मनाया जाता है।

कृत्य–अकृत्य–इस दिन सर्पों को दूध से स्नान और पूजन कर दूध पिलाने से, वासुकीकुण्ड में स्नान करने, निज गृह के द्वार में दोनों ओर गोबर के सर्प बनाकर उनका दधि, दूर्वा, कुशा, गन्ध, अक्षत, पुष्प, मोदक और मालपुआ आदि से पूजा करने और ब्राह्मणों को भोजन कराकर एकभुक्त व्रत करने से घर में सर्पों का भय नहीं होता है। यदि '**ॐ कुरुकुल्ये हुं फट् स्वाहा** के जप करने से सर्पविष तक दूर हो जाता है।

कथा एव माहात्म्य–नागपञ्चमी की कथा के श्रवण का बड़ा महत्त्व है। इस कथा के प्रवक्ता सुमन्त मुनि थे तथा श्रोता पाण्डववंश के राजा शतानीक थे। कथा इस प्रकार है–

एक बार देवताओं तथा असुरोंने समुद्रमन्थन द्वारा चौदह रत्नों में उच्चैः श्रवा नामक अश्वरत्न प्राप्त किया था। यह अश्व अत्यन्त श्वेतवर्ण का था। उसे देखकर नागमाता कद्रू तथा विमाता विनता दोनोंमें अश्व के रंग के सम्बन्धमें वाद-विवाद हुआ। कद्रू ने कहा कि अश्व के केश शयामवर्ण के हैं। यदि मैं अपने कथन में असत्य सिद्ध होऊँ तो मैं तुम्हारी दासी बनूँगी अन्यथा तुम मेरी दासी बनोगी। कद्रूने नागोंको बालके समान सूक्ष्म बनकर अश्वके शरीर में आवेष्टित होनेका निर्देश किया, किंतु नागोंने अपनी असमर्थता प्रकट की। इसपर क्रदूने क्रुद्ध होकर नागोंको शाप दिया कि पाण्डववंशके राजा जनमेजय नागयज्ञ करेंगे, उस यज्ञमें तुम सब जलकर भस्म हो जाओगे। नागमाताके शापसे भयभीत नागोंने वासुकिके नेतृत्वमें ब्रह्माजीसे शापनिवृत्तिका उपाय पूछा तो ब्रह्माजीने निर्देश दिया–यायावरवंशमें उत्पन्न तपस्वी जरत्कारू तुम्हारे बहनोई होंगे। उनका पुत्र आस्तीक तुम्हारी रक्षा करेगा। ब्रह्माजी ने पञ्चमी तिथि को नागोंको यह वरदान दिया तथा इसी तिथि पर आस्तीकमुनिने नागों का परिरक्षण किया था। अतः नागपञ्चमीका यह व्रत ऐतिहासिक तथा सांस्कृतिक दृष्टिसे महत्त्वपूर्ण है।

हमारे धर्मग्रन्थों में श्रावणमास के शुक्लपक्ष की पञ्चमी को नागपूजा का विधान है। व्रतके साथ एक बार भोजन करनेका नियम है। पूजा में पृथ्वीपर नागों का चित्राङ्कन किया जाता है। स्वर्ण, रजत, काष्ठ या मृत्तिका से नाग बनाकर पुष्प, गन्ध, धूप-दीप एवं विविध नैवेद्यों से नागोंका पूजन होता है। नागपूजन में निम्नलिखित मन्त्रों का उच्चारण कर नागों को प्रणाम किया जाता है–

सर्वे नागाः प्रीयन्तां मे ये केचित पृथिवीतले॥
ये च हेलिमरीचिस्था येऽन्तरे दिवि संस्थिताः।
ये नदीषु महानागा ये सरस्वतिगामिनः॥
ये च वापीतडागेषु तेषु सर्वेषु वै नमः॥ (भविष्य. पु.)

भाव यह है कि जो नाग पृथ्वी, आकाश, स्वर्ग, सूर्यकी किरणों, सरोवरों, वापी, कूप तथा तालाब आदिमें निवास करते हैं, वे सब हमपर प्रसन्न हों, हम उनको बार-बार नमस्कार करते हैं।

नागोंकी अनेक जातियाँ और प्रजातियाँ हैं। भविष्यपुराण में नागों के लक्षण, नाम, स्वरूप एवं जातियों का विस्तारसे वर्णन मिलता है। मणिधरी तथा इच्छाधारी नागों का भी उल्लेख मिलता है। भारत धर्मप्राण देश है। भारतीय चिन्तन प्राणिमात्रमें आत्मा और परमात्मके दर्शन करता है। एवं एकताका अनुभव करता है-**समं सर्वेषु भूतेषु तिष्ठन्तं परमेश्वरम्।**

यह दृष्टि ही जीवमात्र-मनुष्य, पशु, पक्षी, कीट-पतंग-सभीमें ईश्वरके दर्शन कराती है। जीवों के प्रति आत्मीयता और दयाभाव को विकसित करती है। अत: नाग हमारे लिये पूज्य और संरक्षणीय हैं। प्रणिशास्त्रके अनुसार नागोंकी असंख्य प्रजातियाँ हैं, जिनमें विषभरे नागोंकी संख्या बहुत कम है। ये नाग हमारी कृषि-सम्पदाकी कृषिनाशक जीवोंसे रक्षा करते हैं। नागपञ्चमी का पर्व नागों के साथ जीवोंके प्रति सम्मान, उनके संवर्धन एवं संरक्षणकी प्रेरणा देता है। यह पर्व प्राचीन समय के अनुरूप आज भी प्रासंगिक है। आवश्यकता है हमारी अन्तर्दृष्टि की।

(11) पवित्रा एकादशी व्रत

श्रावण शुक्ल पवित्रा, पुत्रदा और पापनाशिनी होती है। [संकल्प मन्त्र पूर्व एकादशियों की भान्ति रहेगा तथा कथासार के लिए हमारे कार्यालय से प्रकाशित '**एकादशी माहात्म्य**' देखें।]

संक्षिप्त माहात्म्य-श्रावण शुक्ल एका को प्रात: स्नानादि के बाद '**मम समस्तदुरितक्षयपूर्वकं श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं श्रावणशुक्लैकादशी व्रतमहं करिष्ये।**' यह संकल्प करके भक्तिभाव एवं विधान सहित भगवान् का पूजन करें तथा फल, फूल अर्पण कर दूसरे दिन पारणा करके यथाशक्ति ब्राह्मण-भोजन करवाकर स्वयं भोजन करें। इस व्रत से पापों का नाश और पुत्रादि की प्राप्ति होती है। पहले द्वापर युग के आदि में महीष्मती के राजा महीजित् के पुत्र नहीं था। उससे राजा-प्रजा दोनों चिन्तित थे। उन्होंने घोर वन में तप करते हुए लोमश ऋषि से प्रार्थना की, तब उन्होंने श्रावण शुक्ल एकादशी का व्रत करने की आज्ञा दी। तदनुसार ग्रामवासियों सहित राजा ने व्रत किया और उसके प्रभाव से उनको पुत्र प्राप्त हुआ।

इसी दिन भगवान् को पवित्रक अर्पण करने की परम्परा है। यद्यपि साधारण रूप में बाज़ार से लाये हुए रेशम या सूत्र के पवित्रक उपयोग में आते हैं, किन्तु शास्त्र में इनका पृथक् विधान है। उसके अनुसार सौभाग्यवती स्त्री से सूत कतवाकर उसके तीन तारों को त्रिगुणित करके उनसे बनावे।

(13) श्रीदुर्गाष्टमी

इस पर्व का तिथि-निर्णय एवं कृत्य-विधान सभी चैत्र शुक्ल अष्टमी के अनुसार ही होंगे। एतदर्थ वि. संवत २०७३ (सन 2016-17) का पंचांगदिवाकर देखें।

(13) रक्षाबन्धन

तिथि-निर्णय-रक्षा-बन्धन का पवित्र पर्व भद्रा रहित अपराह्ण-व्यापिनी श्रावण पूर्णिमा में करने का शास्त्र-विधान है-'**भद्रायां द्वे न कर्त्तव्ये श्रावणी-फाल्गुनी तथा**············।'

यदि सूर्योदय बाद उदयकाल में त्रिमुहूर्त्त-व्यापिनी पूर्णिमा हो तथा अपराह्ण-काल से पहिले ही समाप्त हो रही हो, तब भी दूसरे दिन अपराह्ण-काल या प्रदोषकाल में रक्षाबन्धन करना चाहिए।

यदि दूसरे दिन पूर्णिमा त्रिमुहूर्त्त-व्यापिनी न हो, तब पहिले दिन भद्रा समाप्त होने पर प्रदोष आदि काल में रक्षाबन्धन करना चाहिए। भद्रा में श्रावणी और फाल्गुनी-दोनों वर्जित हैं, क्योंकि श्रावणी से राजा का और फाल्गुनी से प्रजा का अनिष्ट होता है।

लोकपरम्परा तथा आजकल की व्यस्तताओं के दृष्टिगत पंजाब, दिल्ली, हरियाणा आदि में अपराह्ण-काल से पहिले ही प्रात:काल में रक्षाबन्धन मनाने की परम्परा चल रही है। अतएव आवश्यक परिस्थितिवश यदि भद्राकाल में ही रक्षाबन्धन आदि शुभ कार्य करना पड़े, तो शास्त्रकारों ने भद्रा-मुखकाल को छोड़कर भद्रा पुच्छकाल में रक्षाबन्धनादि शुभ कार्य करने की आज्ञा दी है। भविष्यपुराणानुसार भद्रा के पुच्छकाल में किए गए कृत्य में सिद्धि एवं विजय प्राप्त होती है, जबकि भद्रा-मुख में कार्य का नाश होता है।-'**पुच्छे जयावहा:, मुखे कार्य विनाशाय**·········।'

परिहार-फिर भी, यदि विचार हो तो कुशा निर्मित भद्रा की मूर्त्ति, चन्दन का तिलक लगाकर पुष्प सहित निम्न मन्त्र पढ़कर चलते पानी में बहा देवें तथा ब्राह्मण को यथाशक्ति वस्त्र, फल, मिष्ठान्न दक्षिणा सहित दान करके शुभ कार्य करें-

मन्त्र- **छाया सूर्य सुते देवि विष्टिरिष्टार्थदायिनी।**
पूजितासि यथाशक्त्या भद्रे भद्रप्रदा भाव।।

इसके अतिरिक्त भद्रा के निम्न द्वादश नामों का पाठ करने से भी ग्रह अनुकूल फल प्रदान करते हैं तथा कार्यों में विघ्न नहीं होते।

भद्रा के बारह नाम-1. धान्या, 2. दधिमुखी, 3. भद्रा. 4. महामारी, 5. खराननना, 6. कालरात्रि, 7. महारूद्रा, 8. विष्टि, 9. कुलपुत्रिका, 10. भैरवी, 11. महाकाली, 12. असुरक्षयकरी।

रक्षासूत्र (राखी) बाँधते समय निम्नलिखित मन्त्र पढ़ना चाहिए-

'**येन बद्धो बली राजा दानवेन्द्रो महाबल:। तेन त्वामनुबध्नामि रक्षे मा चल मा चल।**'

इसके बाँधने से वर्षभर तक पुत्र-पौत्रादि सहित सब सुखी रहते हैं।

कथा-इस पर्व के सन्दर्भ में यह **कथा** प्रचलित है-

प्राचीन काल में एक बार बारह वर्षों तक देवासुर-संग्राम होता रहा, जिसमें देवताओं का पराभव हुआ और असुरों ने स्वर्ग पर आधिपत्य कर लिया। दु:खी, पराजित और चिन्तित इन्द्र देवगुरु बृहस्पति के पास गए और कहने लगे कि इस समय

में मेरा युद्ध करना हीअनिवार्य है, जबकि अब तक के युद्ध में हमारा पराभव ही हुआ है। इस वार्तालाप को इन्द्राणी भी सुन रही थीं। उन्होंने कहा कि कल श्रावण पूर्णिमा है, मैं विधानपूर्वक रक्षासूत्र तैयार करूँगी, उसे आप स्वस्ति-वाचनपूर्वक ब्राह्मणों से बँधवा लीजिएगा। इससे आप अवश्य विजयी होंगे।

दूसरे दिन इन्द्र ने रक्षाविधान और स्वस्तिवाचनपूर्वक रक्षाबन्धन कराया। जिसके प्रभाव से उनकी विजय हुई। तब से यह पर्व मनाया जाने लगा। इस दिन बहनें भाईयों की कलाई में रक्षासूत्र (राखी) बाँधती है।

(14) श्रावणी उपाकर्म

तिथि-निर्णय—प्रत्येक वेद के अनुयायियों के उपाकर्मकाल का निर्णय भी भिन्न-भिन्न है जो इस प्रकार है-

(I) ऋग्वेदियों का उपाकर्म—इनके उपाकर्म के तीन मुख्य काल माने गए हैं-(1) श्रावण शुक्ल में श्रवण नक्षत्र, (2) श्रावण शुक्ल पंचमी, (3) श्रावण शुक्ल से हस्त नक्षत्र। इनमें श्रवण नक्षत्र इनके उपाकर्म का मुख्यकाल है।

कालतत्त्व अनुसार यदि पूर्णिमा तिथि ग्रहण या संक्रान्ति से दूषित हो जाए तो इसे श्रावण शुक्ल पंचमी अथवा श्रावण शुक्ल में हस्तनक्षत्र में अथवा ग्रहण/संक्रान्ति से अदूषित श्रावण शुक्ल पंचमीयुक्ता हस्तनक्षत्र में करना चाहिए।

यदि श्रवण दो दिन हो और यदि पहिले दिन सूर्योदय से प्रवृत्त हुआ श्रवण दूसरे दिन सूर्योदय के अनन्तर तीन मुहूर्त्त-व्यापिनी हो, तो उपाकर्म दूसरे दिन ही करना चाहिए। क्योंकि यहाँ धनिष्ठा नक्षत्र का योग (सम्पर्क) श्रेष्ठ माना गया है, परन्तु यदि तीन मुहूर्त्त से कम हो, तो उपाकर्म पहिले दिन सम्पूर्ण-व्याप्ति श्रवण-नक्षत्र में ही किया जाता है। यदि पहिले दिन सूर्योदय के समय श्रवण-नक्षत्र न हो तथा दूसरे दिन सूर्योदय के बाद दो-मुहूर्त्त भी श्रवण-नक्षत्र हो, तो दूसरे दिन ही उपाकर्म करना होगा, क्योंकि उत्तराषाढ़ा नक्षत्र का वेध निषिद्ध है। परन्तु यदि दूसरे दिन श्रवण दो-मुहूर्त्त से भी कम हो, और पहिले दिन उत्तराषाढ़ा से विद्ध हो, तब त्रिमुहूर्त्त व्यापिनी श्रावण शुक्ल पंचमी या हस्त नक्षत्र में उपाकर्म करना चाहिए। यदि ये दोनों भी सूर्योदय बाद त्रिमुहूर्त्त-व्यापिनी न हो, तब पूर्वविद्धा अर्थात् पहिले दिन उपाकर्म करें। यहाँ उपाकर्म का काल पूर्वाह्ण है।

(II) यजुर्वेदियों का उपाकर्म—सभी यजुर्वेदियों के उपाकर्म के तीन काल हैं-(1) श्रावण पूर्णिमा, (2) श्रावण शुक्ल पंचमी, (3) श्रावण शुक्ल में हस्त नक्षत्र। इनमें श्रावण पूर्णिमा ही मुख्य उपाकर्म का समय है।

यदि पूर्णिमा खण्डित हो तथा पहिले दिन पूर्णिमा कुछ मुहूर्त्त के अनन्तर प्रारम्भ हुई हो और दूसरे दिन छः मुहूर्त्तव्यापिनी हो तो सम्पूर्ण यजुर्वेदियों के उपाकर्म दूसरे दिन ही होगा। यदि पूर्णिमा शुद्ध एवं अधिक अर्थात् षष्टिघट्यात्मक (६० घड़ी) होकर दूसरे दिन छः मुहूर्त्त न्यून हो, तो भी सभी यजुर्वेदियों का उपाकर्म पहिले दिन (६० घड़ी) होगा। यदि पहिले दिन पूर्णिमा कुछ मुहूर्त्त के अनन्तर प्रारम्भ (प्रवृत्त) हो और दूसरे दिन दो या तीन मुहूर्त्त से अधिक परन्तु छः मुहूर्त्त से कम हो, तो तैत्तिरीय (कृष्ण यजुर्वेदि) दूसरे दिन ही उपाकर्म करें तथा शेष शुक्ल यजुर्वेदि पहिले दिन उपाकर्म करें। एवं च, यदि पहिले दिन पूर्णिमा कुछ मुहूर्त्त के अनन्तर प्रवृत्त (प्रारम्भ) होकर दूसरे दिन दो मुहूर्त्त से कम हो अथवा क्षय हो, तो सम्पूर्ण यजुर्वेदियों का उपाकर्म पहले दिन ही होगा।

पूर्णिमा के संक्रान्ति अथवा ग्रहण से दूषित होने की स्थिति में यजुर्वेदियों का उपाकर्म भी ऋग्वेदियों की भान्ति श्रावण शुक्ल पंचमी या हस्त नक्षत्र अथवा संक्रान्ति/ग्रहण से अदूषित श्रावण शुक्ल पंचमी युता हस्त नक्षत्र में किया जाता है।

(III) सामवेदियों का उपाकर्म—इनका उपाकर्म भाद्र. शुक्ल में हस्त नक्षत्र के समय किया जाता है।

उपाकर्म की परिभाषा एवं माहात्म्य—श्रावण शुक्ल पूर्णिमा को वेदपरायण के शुभ कृत्यारम्भ को **उपाकर्म** कहते हैं। इस दिन यज्ञोपवीत के पूजन का भी विधान है। ऋषि-पूजन तथा पुराने यज्ञोपवीत को उतारकर नए यज्ञोपवीत को धारण करना पर्व का विशेष कृत्य है। प्राचीन समय में यह कर्म गुरु अपने शिष्यों के साथ किया करते थे। श्रावणी विशेषकर ब्राह्मणों अथवा गुरु-शिष्य परम्परा का पर्व है। मनुस्मृति में मनु महाराज ने ब्राह्मण के लिए विधान किया है-

अध्यापनमध्ययनं यजनं याजनं तथा।
दानं प्रतिग्रहं चैव ब्राह्मणानामकल्पयत्।। (१/८८)

—पढ़ना-पढ़ाना, यज्ञ करना-कराना, दान देना-लेना—'यह ब्राह्मण का कर्त्तव्य है।' यह उत्सव ब्राह्मणों के वेदाध्ययन और आश्रमों के उस पवित्र जीवन का स्मारक है। अतः इसकी रक्षा ही नहीं, अपितु इसे यथार्थरूप में मनाना हमारा परम धर्म होना चाहिए। गृहसूत्रों के आधार पर परिपाटी है कि प्रत्येक उत्तम यज्ञ-याग आदि के समय ऋषि-पूजन तथा पुराने यज्ञोपवीत को उतारकर नया यज्ञोपवीत धारण करना चाहिए। यज्ञोपवीत के तीन सूत्र पितृ-ऋण, देव ऋण और ऋषि-ऋण आदि कर्त्तव्यों का बोध कराते हैं।

इस उपाकर्म में सर्वप्रथम देव-ऋषि, पितृ एवं तीर्थों की प्रार्थना के अनन्तर वर्षभर के जाने-अनजाने में हुए पापों के निराकरण हेतु प्रायश्चित रूप में **'हेमाद्रि स्नान'** संकल्प करके दशविध स्नान करने का विधान है। इसके अनन्तर ऋषिपूजन, सूर्योपस्थान, यज्ञोपवीत पूजन तथा फिर नवीन यज्ञोपवीत धारण करने का विधान है। श्रावणी-पर्व से ही गुरु निर्देशानुसार ऋक्, यजु, साम एवं अथर्ववेदों का स्वाध्याय प्रारम्भ करने का प्रचलन रहा है। अतः अपनी संस्कृति को स्मरण करते हुए स्वाध्याय को अपने जीवन का अभिन्न अङ्ग बनाने में तत्पर रहना चाहिए।

विशेष—इसी प्रकार **'भाद्रपद मास'** के व्रत, पर्वों का तिथि-निर्णय एवं माहात्म्य, कथादि आगामी वर्ष के **'पंचांगदिवाकर'** में दिया जाएगा।

••• तिथि, नक्षत्र, योग, करणादि के नामों की तालिका व उनके स्वामी •••

पंचांग में ग्रह गणित, व्रत-त्यौहार आदि विविध विषयों के अतिरिक्त उसके पाँच अंगों का मुख्यतः उल्लेख रहता है। ''तिथिर्वारश्च नक्षत्रं योगः करणमेव च। यत्रैतत् पंचकं स्पष्टं पंचांग तदुदीरितम्।।'' अर्थात् तिथि, वार, नक्षत्र, योग और करण–इन पाँचों के स्पष्ट मान की गणना जिसमें हो, उसे पंचांग कहते हैं।

तिथियाँ	तिथियों के स्वामी	तिथि नाम
प्रतिपदा	अग्नि	नन्दा
द्वितीया	ब्रह्मा	भद्रा
तृतीया	गौरी	जया
चतुर्थी	गणेश	रिक्ता
पंचमी	सर्प (शेषनाग)	पूर्णा
षष्ठी	स्कन्द (कार्तिकेय)	नन्दा
सप्तमी	सूर्यदेव	भद्रा
अष्टमी	शिवजी	जया
नवमी	दुर्गा	रिक्ता
दशमी	यम	पूर्णा
एकादशी	विश्वेदेवा	नन्दा
द्वादशी	श्रीविष्णु	भद्रा
त्रयोदशी	कामदेव	जया
चतुर्दशी	शिवजी	रिक्ता
पूर्णिमा	चन्द्रमा	पूर्णा
अमावस्या	पितर	पूर्णा

नक्षत्र	देवता	स्वामी ग्रह
1. अश्विनी	अश्विनी कुमार	केतु
2. भरणी	यम	शुक्र
3. कृतिका	अग्नि	सूर्य
4. रोहिणी	ब्रह्म	चन्द्र
5. मृगशिर	चन्द्रमा	मंगल
6. आर्द्रा	रुद्र (शिव)	राहु
7. पुनर्वसु	आदित्य	गुरु
8. पुष्य	बृहस्पति	शनि
9. आश्लेषा	सर्प	बुध
10. मघा	पितर	केतु
11. पूर्वाफाल्गुनी	भग	शुक्र
12. उत्तराफाल्गुनी	अर्यमा	सूर्य
13. हस्त	सूर्य	चन्द्र
14. चित्रा	विश्वकर्मा	मंगल
15. स्वाती	वायु	राहु
16. विशाखा	इन्द्राग्नि	गुरु
17. अनुराधा	मित्र (सूर्य)	शनि
18. ज्येष्ठा	इन्द्र	बुध
19. मूल	निर्ऋति (राक्षस)	केतु
20. पूर्वाषाढ़ा	जल	शुक्र
21. उत्तराषाढ़ा	विश्व देवा	सूर्य
22. अभिजित	ब्रह्मा	सूर्य/चं.
23. श्रवण	विष्णु	चन्द्र
24. धनिष्ठा	वसु	मंगल
25. शतभिषा	वरुण	राहु
26. पूर्वाभाद्रपद	अजैकपाद	गुरु
27. उत्तराभाद्रपद	अहिर्बुध्य	शनि
28. रेवती	पूषा	बुध

योग	स्वामी	शुभ-अशुभ
1. विष्कम्भ	यम	अशुभ
2. प्रीति	विष्णु	शुभ
3. आयुष्मान	चन्द्र	शुभ
4. सौभाग्य	ब्रह्मा	शुभ
5. शोभन	बृहस्पति	शुभ
6. अतिगण्ड	चन्द्र	अशुभ
7. सुकर्मा	इन्द्र	शुभ
8. धृति	जल	शुभ
9. शूल	सर्प	अशुभ
10. गण्ड	अग्नि	अशुभ
11. वृद्धि	सूर्य	शुभ
12. ध्रुव	भूमि	शुभ
13. व्याघात	वायु	अशुभ
14. हर्षण	भग	शुभ
15. वज्र	वरुण	अशुभ
16. सिद्धि	गणेश	शुभ
17. व्यतीपात	रूद्र	अशुभ
18. वरीयान	कुबेर	शुभ
19. परिघ	विश्वकर्मा	अशुभ
20. शिव	मित्र	शुभ
21. सिद्ध	कार्तिकेय	शुभ
22. साध्य	सावित्री	शुभ
23. शुभ	लक्ष्मी	शुभ
24. शुक्ल	पार्वती	शुभ
25. ब्रह्म	अश्विनी कु.	शुभ
26. ऐन्द्र	पितर	अशुभ
27. वैधृति	दिति	अशुभ

विष्कम्भ की प्रथम 3 घड़ियां, व्याघात–वज्र की प्रथम 9 घड़ियां, परिघ–योग का पूर्वार्द्ध (7½ घटियां), शूल की प्रथम 5, गण्ड–अतिगण्ड की प्रथम 9 घड़ियां ही विशेषतया त्याज्य तथा वैधृति–व्यतिपात का सम्पूर्ण काल त्याज्य माना गया है।

करण नाम

तिथि	शुक्लपक्ष पूर्वार्द्ध	शुक्लपक्ष उत्तरार्द्ध	तिथि	कृष्णपक्ष पूर्वार्द्ध	कृष्णपक्ष उत्तरार्द्ध
प्रतिपदा	किंस्तुघ्न	बव	प्रतिपदा	बालव	कौलव
द्वितीया	बालव	कौलव	द्वितीया	तैतिल	गर
तृतीया	तैतिल	गर	तृतीया	वणिज	विष्टि
चतुर्थी	वणिज	विष्टि	चतुर्थी	बव	बालव
पंचमी	बव	बालव	पंचमी	कौलव	तैतिल
षष्ठी	कौलव	तैतिल	षष्ठी	गर	वणिज
सप्तमी	गर	वणिज	सप्तमी	विष्टि	बव
अष्टमी	विष्टि	बव	अष्टमी	बालव	कौलव
नवमी	बालव	कौलव	नवमी	तैतिल	गर
दशमी	तैतिल	गर	दशमी	वणिज	विष्टि
एकादशी	वणिज	विष्टि	एकादशी	बव	बालव
द्वादशी	बव	बालव	द्वादशी	कौलव	तैतिल
त्रयोदशी	कौलव	तैतिल	त्रयोदशी	गर	वणिज
चतुर्दशी	गर	वणिज	चतुर्दशी	विष्टि	शकुनि
पूर्णिमा	विष्टि	बव	अमावस	चतुष्पद	नाग

	करणों के स्वामी		करणों में उपादेय कर्म
चर करण	बव	इन्द्र	पौष्टिक कर्म।
	बालव	ब्रह्मा	स्वाध्याय, यज्ञ, दानादि धार्मिक कृत्य।
	कौलव	मित्र	मैत्रीकरण एवं स्त्रीकर्म।
	तैतिल	विश्व	सौभाग्यवती स्त्री के प्रिय कर्म।
	गर	भूमि	हल, प्रवहरण व बीजारोपण।
	वणिज	लक्ष्मी	व्यापार करना।
	विष्टि	यम	भद्रा में अग्नि, युद्ध, विषादि, क्रूर कर्म।
स्थिर करण	शकुनि	कलियु.	मंत्र-साधना, पितृकर्म, औषध कर्मादि।
	चतुष्पद	रुद्र	राज्य प्रशासनिक कर्म, पितृकर्म।
	नाग	सर्प	विषादि रसायानिक कर्म, पित्रादि कर्म।
	किंस्तुघ्न	मरुत.	मांगलिक कर्म।

सन 2020 ई. (ता. 25 मार्च से 8 अप्रैल तक), हिजरी सन् 1441 | सूर्योदय | भा.स्टैं.टा.

वि. संवत् २०७७, चैत्र शुक्ल पक्ष शाक: १९४२

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	समाप्ति काल		नक्षत्र	समाप्ति काल		योग	समाप्ति काल		करण	समाप्ति काल		तारीखें				चंद्र राशि प्रवेश घड़ी–पल	सन् 2020 ई. (ता. 25 मार्च से 8 अप्रैल तक), हिजरी सन् 1441 सूर्य उत्तरायण, उत्तर गोल, वसन्त ऋतुः	सूर्योदय कालिक सूर्यस्पष्ट	भा.स्टैं.टा. जालन्धर	
			घड़ी	पल		घड़ी	पल		घड़ी	पल		घड़ी	पल	चैत्र शाके	रज्जब मु.	मार्च	चैत्र प्रवि.		प्रातः बुध पूर्वक्षितिज में, मंगल–शनि पूर्वकपाल में तथा गुरु भी इनसे कुछ ऊपर होगा। सायं शुक्र पश्चिम कपाल में दृश्य होगा।	रा. अं. क. वि.	सूर्योदय घं. मिं.	सूर्यास्त घं. मिं.
३०:२५	१	बुध	२७	२५	रेव.	६०	००	ब्रह्म	२२	४८	ब	२७	२५	5	29	25	१२	मीन	**‘प्रमादी’ नाम वि. संवत् २०७७ प्रारम्भ, चैत्र** (वासन्त) **नवरात्र (A)**	११:१०:४२:३८	6:29	18:39
३०:२८	२	गुरु	३३	३५	रेव.	२	००	ऐन्द्र	२५	००	बा	०	३०	6	श.	26	१३	मे. २:००	**पंचक समाप्त २:०० (7:16),** शब्बान (मु.) मास प्रारम्भ, स.सि.यो.	११:११:४२:०४	6:28	18:39
३०:३३	३	शुक्र	३९	२५	अश्वि	९	१५	वैधृ.	२७	००	तै	६	२०	7	2	27	१४	मेष	**गणगौरी तृतीया, श्रीमत्स्य जयन्ती,** गण्डमूल 10:09 तक	११:१२:४१:२६	6:27	18:40
३०:४०	४	शनि	४४	४३	भर.	१६	८	विष्क	२८	४०	व	१२	४	8	3	28	१५	वृ.३२:४३	भ. १२:०४ से ४४:४३ तक, **शुक्र वृष में २३:०३,** दमनक चतुर्थी	११:१३:४०:४४	6:25	18:41
३०:४३	५	रवि	४९	५	कृति.	२२	१५	प्रीति	२९	४०	बव	१६	५४	9	4	29	१६	वृष	**श्री (लक्ष्मी) पंचमी, गुरु** उ.षा. २ **मकर में ५३:३५** (27:50) **(B)**	११:१४:४०:०३	6:24	18:41
३०:४८	६	चन्द्र	५२	१०	रोहि.	२७	१८	आयु	२९	४८	कौ	२०	३८	10	5	30	१७	मि.५९:१८	**स्कन्द षष्ठी व्रत,** स. सि. यो.	११:१५:३९:१९	6:23	18:42
३०:५०	७	मंग	५३	४०	मृग.	३०	५५	सोभा	२८	४८	गर	२२	५५	11	6	31	१८	मिथुन	भ. ५३:४० से, सूर्य रेवती में १:२८, बुध पू.भा. में ३:५३, द्विपुष्कर योग	११:१६:३८:३३	6:22	18:42
३०:५८	८	बुध	५३	२३	आर्द्रा	३२	५३	शोभ	२६	३०	वि	२३	३२	12	7	अप्रै	१९	मिथुन	भ. २३:३२ तक, **श्रीदुर्गाष्टमी,** भवान्युत्पत्ति, अशोकाष्टमी **(C)**	११:१७:३७:४२	6:20	18:43
३१:०३	९	गुरु	५१	००	पुन.	३२	५३	अति	२२	३५	बा	२२	१२	13	8	2	२०	क.१८:०५	**श्रीदुर्गा-नवमी, नवरात्र-समाप्त, श्रीरामनवमी**	११:१८:३६:५१	6:19	18:44
३१:०५	१०	शुक्र	४६	४३	पुष्य	३०	५८	सुक	१७	८	तै	१८	५२	14	9	3	२१	कर्क	**नवरात्र-व्रत पारणा,** शनि उ.षा. ४ में ४:०३, गण्डमूल 18:41 बाद	११:१९:३५:५८	6:18	18:44
३१:१०	११	शनि	४०	३३	आश्ले	२७	८	धृति	१०	८	व	१३	३८	15	10	4	२२	सिं.२७:०८	भ. १३:३८ से ४०:३३ तक, **कामदा एकादशी व्रत,**लक्ष्मीकान्त-दोलोत्सव	११:२०:३५:०३	6:17	18:45
३१:१८	१२	रवि	३२	५५	मघा	२१	४५	शूल गंड	१ ५२	४५ १०	ब	६	४४	16	11	5	२३	सिंह	**प्रदोष व्रत** (देखें पृष्ठ 17), मंगल श्रवण में ४४:२३, श्रीविष्णु दमनोत्सव+	११:२१:३४:०३	6:15	18:46
३१:२०	१३	चन्द्र	२४	५	पू.फा.	१५	५	वृद्धि	४१	४८	तै	२४	५	17	12	6	२४	कं.२८:१५	**अनङ्ग-त्रयोदशी,** श्रीमहावीर-जयन्ती (जैन) **+आनंद नाम संवत्सर प्रा.**	११:२२:३३:०३	6:14	18:46
३१:२५	१४	मंग	१४	३३	उ.फा. हस्त	७ ५९	३५ ४५	ध्रुव	३०	५५	व	१४	३३	18	12	7	२५	कन्या	भ. १४:३३ से ३९:३८ तक, **बुध मीन में २०:१८,** श्रीसत्यनारायण **(D)**	११:२३:३२:०१	6:13	18:47
३१:३०	१५	बुध	४	४३	चित्रा	५२	८	व्या.	२०	००	ब	४	४३	19	14	8	२६	तु.२५:५५	**चैत्र पूर्णिमा** (स्नानदानादि), **वैशाखस्नान प्रारम्भ,** शुक्र रोहिणी में **(E)**	११:२४:३०:५६	6:12	18:48

(A) प्रारम्भ, चन्द्रदर्शन, मु. ३०, **घटस्थापन,** संवत्सरफल श्रवण, ध्वजारोहण, तैलाभ्यङ्ग, श्रीदुर्गा-पूजा, गुड़ी-पड़वा **(B)** नाग-पंचमी **(C) बुधाष्टमी-योग, मेला बाहूफोर्ट (जम्मू)-काँगड़ादेवी, नैनादेवी (हि.प्र.),** अप्रैल मास प्रारम्भ **(D)** व्रत, **श्रीहनुमान-जयन्ती (दक्षिण-भारत)** (देखें पृष्ठ 17), **श्रीशिव-दमनोत्सव (E)** २४:३८ (16:03)

बुधे अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रात: 5:30 बजे, 1 अप्रैल

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११	२	९	१०	९	१	९	२	८
१७	१२	६	२१	०	३	६	९	९
३५	२५	४१	८	१५	२२	३२	१७	१७
३९	१८	३	५८	४३	४९	२२	२४	२४
59 12	785 43	41 42	78 37	7 23	55 25	3 41	3 11	3 11
रेव १	आर्द्रा २	उ.षा ४	पूभा १	उषा २	कृत्ति ३	उषा ३	आर्द्रा १	मूल ३
०	०	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
०	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रातः 5:30

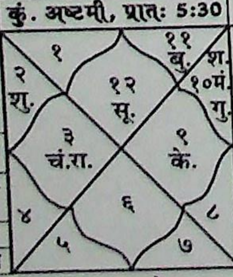

बुधे पूर्णिमायां ग्रह स्पष्ट प्रात: 5:30 बजे, 8 अप्रैल

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११	५	९	११	९	१	९	२	८
२४	२२	११	०	१	९	६	८	८
२९	५६	३२	५६	४	३७	५६	५५	५५
१३	३८	५८	१५	२१	४०	२३	९	९
58 56	916 54	41 42	90 38	6 21	50 51	3 5	3 11	3 11
रेव ३	हस्त ४	श्रव १	पूभा ४	उषा २	कृत्ति ४	उषा ४	आर्द्रा १	मूल ३
०	०	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
०	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. पूर्णिमा, प्रातः 5:30

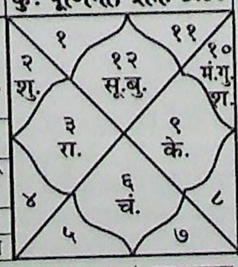

चैत्र शुक्ल पक्षफल–

चैत्र शुक्ल प्रतिपदा (**25 मार्च, बुधवार**) से **‘शिवविंशति’** का **‘प्रमादी’** नामक नया **विक्रमी संवत् २०७७** प्रारम्भ होगा। आगामी संवत् काल में व्रतानुष्ठान, संकल्प, दानादि शुभ कार्यों में **‘प्रमादी’** नाम संवत्सर का ही प्रयोग होगा। नए सम्वत् का राजा **‘बुध’** तथा मन्त्री **‘चन्द्र’** होने से आगामी वर्ष राष्ट्राध्यक्षों के मध्य संहारक हथियारों की दौड़ एवं परस्पर टकराव बढ़ेंगे। प्राकृतिक प्रकोपों एवं युद्ध भय के कारण लोगों की धन-सम्पदा की हानि होगी। आर्थिक, सामाजिक एवं राजनीतिक अस्थिरताओं के कारण लोग परेशान रहेंगे। वर्षा अधिक होगी। ***ग्रह-गोचर***–ता. 29 मार्च से गोचरस्थ **कालसर्प योग** का प्रभाव रहने से अत्याधिक महंगाई एवं राजनीतिक अस्थिरता का माहौल बनेगा। सामान्य लोगों मे रोग-शोक एवं असन्तोष व्याप्त होगा। **ता. 25 मार्च, बुधवार** को प्रात:काल ही (प्रात: 10:29 तक) शुद्ध स्नान करके सम्वत्सर पूजन, घटस्थापन, ॐकार सहित पंचदेव पूजन करना चाहिए। इसी दिन संवत्सर, राजा-मन्त्री आदि के फल का किसी प्रतिष्ठित ब्राह्मण, गुरुजन के श्रीमुख द्वारा श्रवण करना शुभ होता है। चैत्र प्रतिपदा से नवमी पर्यन्त (**25 मार्च से 2 अप्रै.**) श्रीदुर्गा/गणेश प्रतिमा के सम्मुख नारियल सहित घटस्थापन करके नित्यप्रति अखण्ड दीप-ज्योति प्रज्वलित करके श्रीदुर्गा-सप्तशती का संकल्पपूर्वक पाठ करने का विधान है। प्रतिपदा को ही समृद्धि के प्रतीक मिट्टी के पात्र में शुद्ध रेत/मिट्टी डालकर जौं आदि बीजकर अन्तिम नवरात्र (या दशमी) के दिन हरी दूर्भा को पूजार्चन के पश्चात् नदी/नहर में विसर्जन करने की परम्परा है। ***लोक-भविष्य***–चैत्र मास में पाँच मंगलवार होने से कहीं हिंसक-घटनाएँ अथवा युद्धभय, साम्प्रदायिक दंगे, उपद्रव व कुछ राज्यों में छत्रभंग (सत्ता-परिवर्तन) के योग बनते हैं। प्रधाननेता के लिए भी अशुभ है। ***आकाश लक्षण***–उत्तरी-भारत के विभिन्न राज्यों में धूल भरी तेज़ हवाओं, ओलावृष्टि व बेमौसमी वर्षा से खड़ी फसलों को हानि होगी। ***शकुन***–चैत्र शु. ५ (29 मार्च) को दक्षिण-पूर्व की वर्षा सहित वायु-वेग चले, तो उस वर्ष धान्य तीन-गुना महंगा हो जाता है।

वि. संवत् २०७७, वैशाख कृष्ण पक्ष शाक: १९४२

सन् 2020 ई. (ता. 9 अप्रैल से 23 अप्रैल तक), हिजरी सन् 1441
सूर्य उत्तरायण, उत्तर गोल, ग्रीष्म ऋतु:

प्रातः पूर्वक्षितिज में होगा, मंगल पूर्वकपाल में होगा, इससे ऊपर शनि तथा श. से कुछ ऊपर गुरु होगा। सायं शुक्र को पश्चिमक्षितिज में देख सकते हैं।

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	समाप्ति काल घड़ी	पल	नक्षत्र	समाप्ति काल घड़ी	पल	योग	समाप्ति काल घड़ी	पल	करण	समाप्ति काल घड़ी	पल	तारीखें चैत्र शक	शाबा. मु.	अप्रैल	सौर प्रवि.	चंद्र राशि प्रवेश घड़ी–पल		सूर्योदय कालिक सूर्यस्पष्ट रा. अं. क. वि.	भा.स्टैं.टा. जालन्धर सूर्योदय घं. मि.	सूर्यास्त घं. मि.
अवम्	१	बुध	५५	५	००	०	०	००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	००	**वैशाख कृष्ण प्रतिपदा का क्षय** ०० ००	००:००:००:००	००	००
३१:३५	२	गुरु	४६	१३	स्वा.	४५	१३	हर्ष वज्र	९ ५९	२५ २५	तै	२०	३९	20	15	9	२७	तुला	बुध उ.भा. में ३२:५३	११:२५:२९:४७	6:10	18:48
३१:४०	३	शुक्र	३८	२८	विशा	३९	२५	सिद्धि	५०	३३	व	१२	२१	21	16	10	२८	वृ.२५:४५	भ. १२:२१ से ३८:२८ तक, गुड फ्राइडे (क्रिश्चियन)	११:२६:२८:३८	6:09	18:49
३१:४५	४	शनि	३२	१५	अनु.	३५	१०	व्य.	४२	५८	ब	५	२२	22	17	11	२९	वृश्चिक	**श्रीगणेश चतुर्थी व्रत** (देखें पृष्ठ 13-16), सती अनुसूइया जयन्ती	११:२७:२७:२८	6:08	18:50
३१:४८	५	रवि	२७	५३	ज्ये.	३२	४५	वरी.	३६	५८	कौ	०	४	23	18	12	३०	ध.३२:४५	गण्डमूल विचार	११:२८:२६:१७	6:07	18:50
३१:५३	६	चन्द्र	२५	३३	मूल	३२	२०	परि.	३२	३५	व	२५	३३	24	19	13	वैश	धनु	भ. २५:३३ से ५५:२६ तक, **सूर्य** अश्वि. १ **मेष में** ३५:४३ (20:23), (A)	११:२९:२५:०३	6:06	18:51
३१:५८	७	मंग	२५	१८	पू.षा.	३४	००	शिव	२९	५०	ब	२५	१८	25	20	14	२	म.४९:४३		००:००:२३:४८	6:05	18:52
३२:०३	८	बुध	२७	३	उ.षा.	३७	३३	सिद्ध	२८	४०	कौ	२७	३	26	21	15	३	मकर		००:०१:२२:२८	6:03	18:52
३२:०८	९	गुरु	३०	२५	श्रव.	४२	४०	साध्य	२८	४८	ग	३०	२५	27	22	16	४	मकर		००:०२:२१:१२	6:02	18:53
३२:१३	१०	शुक्र	३५	८	धनि.	४८	५८	शुभ	२९	५३	व	२	४७	28	23	17	५	कुं.१५:४३	भ. २:४७ से ३५:०८ तक, **पंचक प्रारम्भ १५:४३**, बुध रेवती में ३९:१०	००:०३:१९:४८	6:01	18:54
३२:१५	११	शनि	४०	४५	शत.	५६	३	शुक्ल	३१	४३	ब	७	५७	29	24	18	६	कुम्भ	**वरूथिनी एकादशी व्रत**, श्रीवल्लभाचार्य जयन्ती	००:०४:१८:२६	6:00	18:54
३२:२०	१२	रवि	४६	५०	पू.भा.	६०	००	ब्रह्म	३३	५८	कौ	१३	४८	30	25	19	७	मी.४६:३८	सूर्य सायन वृष में ३५:४५, **ग्रीष्म ऋतु प्रारम्भ**	००:०५:१७:०२	5:59	18:55
३२:२५	१३	चन्द्र	५३	५	उ.भा.	३	३३	ऐन्द्र	३६	२०	ग	१९	५८	31	26	20	८	मीन	भ. ५३:०५ से, **सोम प्रदोष व्रत**	००:०६:१५:३६	5:58	18:56
३२:२८	१४	मंग	५९	१३	उ.भा.	११	५	वैधृ.	३८	४३	वि	२६	९	वै.	27	21	९	मीन	भ. २६:०९ तक, मासशिवरात्रि व्रत, शक वैशाख प्रारम्भ, गण्डमूल (B)	००:०७:१४:०९	5:57	18:56
३२:३३	३०	बुध	६०	००	रेव	१८	२५	विष्क	४०	५३	च	३२	८	2	28	22	१०	मे.१८:२५	**पंचक समाप्त** १८:२५, **वैशाख अमावस** (स्नानदान, पितृकार्येषु) (C)	००:०८:१२:३९	5:56	18:57
३२:३८	३०	गुरु	५	३	अश्वि	२५	२५	प्रीति	४२	४०	ना	५	३	3	29	23	११	मेष	**अमावस** (स्नान, दानादि 7:56 तक), गण्डमूल 16:05 तक	००:०९:११:०७	5:55	18:58

(A) वैशाख संक्रान्ति, मु. ३०, पुण्यकाल सं. मध्याह्न बाद, **वैशाखी पर्व (पंजाब)** **(B)** 10:23 बाद **(C)** बुध पूर्व में अस्त ५८:०५, मेला पिंजौर (हरियाणा)

बुधे अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः 5:30 बजे, 15 अप्रैल

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
०	९	९	११	९	१	९	२	८
१	१	१६	१२	१	१५	७	८	८
२१	५२	२४	४	४५	१६	१६	३२	३२
७	१८	५२	९	३२	५४	९	५४	५४
58 44	749 00	41 41	101 46	5 15	45 1	2 27	3 11	3 11
अश्वि १	उषा २	श्रव २	उभा ३	उषा २	रोहि २	उषा ४	आर्द्रा १	मूल ३
०	०	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
०	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रातः 5:30

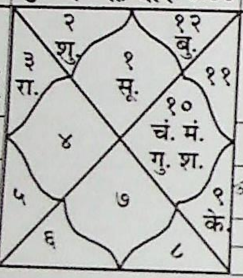

गुरौ अमावस्यायां ग्रह स्पष्ट प्रातः 5:30 बजे, 23 अप्रैल

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
०	०	९	११	९	१	९	२	८
९	८	२१	२६	२	२०	७	८	८
१०	३	५७	२३	२२	४८	३३	७	७
७	३१	५८	१५	४८	१०	१५	२८	२८
58 30	719 49	41 35	114 42	3 53	36 17	1 42	3 11	3 11
अश्वि ३	अश्वि ३	श्रव ४	रेव ३	उषा २	रोहि ४	उषा ४	आर्द्रा १	मूल ३
०	०	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
०	अ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अमावस, प्रातः 5:30

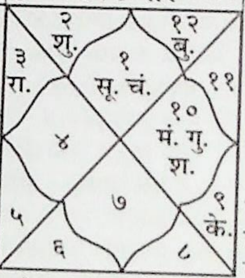

वैशाख कृष्ण पक्षफल–

वैशाख मास (चैत्र पूर्णिमा से वैशाख पूर्णिमा तक) में प्रतिदिन प्रातः सूर्योदय से पूर्व किसी तीर्थस्थान अथवा अपने निवास पर ही गंगाजलादि मिश्रित पवित्र जल से स्नान करके भगवान् लक्ष्मीनारायण की तुलसीदल सहित पूजार्चन करके नित्य श्रीविष्णु सहस्रनाम, वैशाख माहात्म्य तथा '**ॐ नमो भगवते वासुदेवाय**' आदि नाम मन्त्रों का पाठ करना चाहिए। वैशाख पूर्णिमा को उद्यापन में ब्राह्मणों को भोजन करवाकर यथाशक्ति वस्त्र, मिष्ठान्न, दक्षिणा सहित दान करने से सौभाग्य एवं आरोग्य की प्राप्ति होती है। ***वैशाख संक्रान्ति***– ता. 13 अप्रैल, **सोमवार** को रात्रि 8 बजकर 23 मिनट (20:23) पर पू.षा. नक्षत्रकालीन तुला लग्न में प्रवेश करेगी। ३० मुहूर्त्ति इस सं. के स्नानदान, जपादि का पुण्यकाल मध्याह्न बाद (13:59) प्रारम्भ होगा। वारानुसार ध्वांक्षी तथा नक्षत्रानुसार घोरा नामक यह सं. व्यापारियों के लिए लाभप्रद रहेगी। **वैशाख संक्रान्ति** कुण्डली में कालसर्प योग के प्रभाव तथा मकर राशि पर मंग.-गुरु-शनि त्रि-ग्रही योग के प्रभावस्वरूप भारत, पाकिस्तान, अफगानिस्तान आदि देशों में अराजकता, राजनीतिक अस्थिरता, पदच्युति, हिंसा, विस्फोट, दुर्भिक्ष एवं महंगाई आदि विकट समस्याओं का सामना रहे। लोगों में रोग-शोक आदि दुखों की बहुलता होगी। ***लोक-भविष्य***–वैशाख मास में पाँच बुधवार और बृहस्पतिवार आने से आगामी तीन महीनों में जबरदस्त महंगाई हो। विशेषकर गन्ना, तेल, दूध आदि रसदार वस्तुओं के भावों में आशातीत तेजी हो। पाँच बृहस्पतिवारों के कारण पश्चिम देशों अथवा भारत के पश्चिमी राज्यों में कहीं विग्रह, जनान्दोलन एवं युद्ध का भय होगा। **संक्रान्ति राशिफल**–मेष, कर्क, सिंह, तुला, वृश्चिक, मकर, कुम्भ राशि वाले जातकों को इस सं. का फल लाभदायक रहेगा। शेष राशि वालों के लिए अशुभफली है।

आकाश लक्षण–पक्ष के पूर्वार्द्ध में तेज़ वायु-वेग के साथ रुक-रुक कर खण्ड वर्षा के योग हैं। ***शकुन***–वैशाख कृ. ५ रविवार होने से आगामी मास की संक्रान्ति के दिन [illegible]

वि. संवत् २०७७, शाक: १९४२ तारीखें चंद्र राशि सन् 2020 ई. (ता. 24 अप्रैल से 7 मई तक), हिजरी सन् 1441 सूर्योदय भा.स्टैं.टा.

वि. संवत् २०७७, वैशाख शुक्ल पक्ष शाक : १९४२

सन् 2020 ई. (ता. 24 अप्रैल से 7 मई तक), हिजरी सन् 1441
सूर्य उत्तरायण, उत्तर गोल, ग्रीष्म ऋतु:

ग्रह दर्शन—24 अप्रैल को पूर्व में दृश्य बुध अस्त हो जाएगा। प्रातः मंगल पूर्व-कपाल में, गुरु–शनि याम्योत्तरवृत्त में होंगे। सायं शुक्र पश्चिम क्षितिज में होगा।

दिनमान	तिथि	वार	समाप्ति काल		नक्षत्र	समाप्ति काल		योग	समाप्ति काल		करण	समाप्ति काल		तारीखें				चंद्र राशि प्रवेश		सूर्योदय कालिक सूर्यस्पष्ट	भा.स्टैं.टा. जालन्धर	
घटी/पल			घटी	पल		घटी	पल		घटी	पल		घटी	पल	वैशाख शाके	शाबान मु.	अप्रैल	वैशाख प्र.	घड़ी–पल		रा.अं.क.वि.	सूर्योदय घं.मिं.	सूर्यास्त घं.मिं.
३२:४०	१	शुक्र	१०	२०	भर.	३१	५३	आयु	४४	५	ब	१०	२०	4	30	24	१२	वृ.४८:२३	चन्द्रदर्शन, मु. ३०, मंगल धनि. में ५७:२५, **बुध** अश्वि १ **मेष** में ५१:३८	०:१०:०९:३५	5:54	18:57
३२:४५	२	शनि	१४	५८	कृति.	३७	४३	सौभा	४४	५५	कौ	१४	५८	5	रम	25	१३	वृष	श्रीशिवाजी-जयन्ती, **भगवान् परशुराम** जयन्ती (देखें पृष्ठ 17) **(A)**	०:११:०८:००	5:53	18:59
३२:५०	३	रवि	१८	४८	रोहि.	४२	४०	शोभ	४५	५	ग	१८	४८	6	2	26	१४	वृष	भ. ५०:१३ से, **अक्षय-तृतीया, केदार-बदरी यात्रा प्रारम्भ**	०:१२:०६:२३	5:52	19:00
३२:५३	४	चन्द्र	२१	३८	मृग.	४६	३५	अति	४४	२३	वि	२१	३८	7	3	27	१५	मि.१४:४८	भ. २१:३८ तक, सूर्य भरणी में १५:५३, शुक्र मृगशिर में २७:५३, स.सि.यो.	०:१३:०४:४४	5:51	19:00
३२:५८	५	मंग	२३	१५	आर्द्रा	४९	१८	सुक	४२	४३	बा	२३	१५	8	4	28	१६	मिथुन	**आद्यगुरु श्रीशंकराचार्य जयन्ती**	०:१४:०३:०३	5:50	19:01
३३:०३	६	बुध	२३	३०	पुन.	५०	३३	धृति	३९	५५	तै	२३	३०	9	5	29	१७	क.३५:२३	श्रीरामानुजाचार्य जयन्ती	०:१५:०१:२०	5:49	19:02
३३:०८	७	गुरु	२२	१०	पुष्य	५०	१३	शूल	३५	५३	व	२२	१०	10	6	30	१८	कर्क	भ. २२:१० से ५०:४० तक, **श्रीगङ्गा-जयन्ती, गुरुपुष्य योग**	०:१५:५९:३४	5:48	19:03
३३:१०	८	शुक्र	१९	१०	आश्ले	४८	१५	गंड	३०	२८	ब	१९	१०	11	7	मई	१९	सिं.४८:१५	**जानकी (सीता) जयन्ती** (देखें पृष्ठ 17), **श्रीबगुलामुखी जयन्ती (B)**	०:१६:५७:४८	5:47	19:03
३३:१५	९	शनि	१४	३५	मघा	४४	४५	वृद्धि	२३	५०	कौ	१४	३५	12	8	2	२०	सिंह	गण्डमूल 23:40 तक	०:१७:५५:५९	5:46	19:05
३३:२०	१०	रवि	८	३३	पू.फा.	३९	५५	ध्रुव	१५	५८	ग	८	३३	13	9	3	२१	कं.५३:३०	भ. ३४:५३ से, **मोहिनी एकादशी व्रत (स्मार्त)**	०:१८:५४:०७	5:45	19:05
३३:२३	११	चन्द्र	१	१३	उ.फा.	३३	५८	व्या. हर्ष	७ ५७	८ ३०	वि	१	१३	14	10	4	२२	कन्या	भ. १:१३ तक, **मोहिनी एकादशी व्रत (वैष्णव), मंगल कुम्भ में (C)**	०:१९:५२:१५	5:44	19:05
अवम	१२	चन्द्र	५२	५५	००	००	००	००	००	०	०	०	०	०	०	०	०	००	**द्वादशी तिथि का क्षय ०० (C)** ३७:१८ (20:39), त्रिस्पर्शा महाद्वादशी	०:००:००:००	००	००
३३:२८	१३	मंग	४४	८	हस्त	२७	२०	वज्र	४७	२८	कौ	१८	३२	15	11	5	२३	तु.५३:५०	**भौम प्रदोष व्रत**	०:२०:५०:१९	5:43	19:06
३३:३३	१४	बुध	३५	८	चित्रा	२०	२३	सिद्धि	३७	२०	ग	९	३८	16	12	6	२४	तुला	भ. ३५:०८ से, **श्रीनृसिंह जयन्ती, श्रीसत्यनारायण व्रत**(देखें पृष्ठ 17)**(D)**	०:२१:४८:२२	5:42	19:07
३३:३३	१५	गुरु	२६	२३	स्वा.	१३	३३	व्य.	२७	२५	वि	०	४६	17	13	7	२५	वृ.५३:४८	भ. ०:४६ तक, **वैशाख पूर्णिमा, श्रीबुद्ध-जयन्ती**, बुध कृति. में **(E)**	०:२२:४६:२६	5:42	19:07

(A) रमजान (मुस्लि.) मास प्रारम्भ, त्रिपुष्कर योग **(B)** (अर्द्धरात्रि-व्यापिनी), बुध भरणी में २५:३५, श्रम (मजदूर) दिवस **(D)** श्रीकूर्म-जयन्ती (सायं-व्यापिनी) **(E)** ३७:५३, **श्रीबुद्ध-पूर्णिमा, वैशाखस्नान समाप्त**, श्रीटैगोर जयन्ती, श्रीछिन्नमस्तिका जयंती

शुक्रे अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः 5:30 बजे, 1 मई

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
०	३	९	०	९	१	९	२	८
१६	१८	२७	१२	२	२४	७	७	७
५७	४३	२९	२४	४८	५९	४४	४२	४२
७	३८	५२	३५	५२	०	१४	२	२
58	831	41	126	2	24	0	3	3
13	26	23	33	27	21	56	11	11
भर.	श्ले.	धनि	अश्वि	उषा	मृग	उषा	आर्द्रा	मूल
२	१	२	४	२	१	४	१	३
०	०	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
०	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रातः 5:30

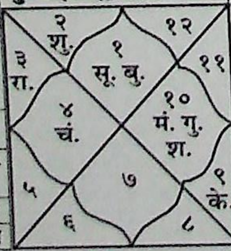

गुरौ पूर्णिमायां ग्रह स्पष्ट प्रातः 5:30 बजे, 7 मई

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
०	६	१०	०	९	१	९	२	८
२२	१६	१	२५	३	२६	७	७	७
४५	२९	३७	१६	०	५७	४८	२२	२२
५७	१९	४३	४२	४६	३१	२४	५७	५७
58	895	41	130	1	12	0	3	3
2	16	13	13	20	54	21	11	11
भर.	स्वा.	धनि	भर.	उषा	मृग	उषा	आर्द्रा	मूल
३	३	३	४	२	२	४	१	३
०	०	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
०	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. पूर्णिमा, प्रातः 5:30

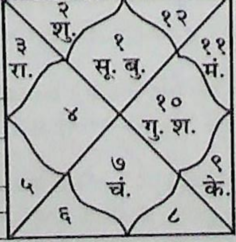

वैशाख शुक्ल पक्षफल–

भविष्य-पुराणानुसार भगवान् विष्णु के अंशावतार श्रीपरशुराम का जन्म वैशाख शुक्ल तृतीया तिथि की रात्रि के प्रथम प्रहर (प्रदोषकाले) में हुआ था, तद्नुसार **25 अप्रैल, शनिवार** को **भगवान् परशुराम** का जन्मोत्सव मनाना शुभ होगा। पूर्वाह्न-व्यापिनी **'अक्षय-तृतीया'** का पर्व 26 अप्रैल, रविवार को **रोहिणी** नक्षत्रकालीन मनाना विशेष प्रशस्त होगा। **यह स्वयं सिद्ध मुहूर्त्त तिथि है।** इस तिथि की गणना युगादि तिथियों में की जाती है, क्योंकि त्रेतायुग (कल्पभेद से सतयुग) का शुभारम्भ इस तिथि से हुआ था। इसी कारण इस दिन किए गए जप, तप, ध्यान, यज्ञ, दानादि शुभ कार्यों का अक्षुण्ण (अक्षय) फल होता है। इस दिन तीर्थस्नान, समुद्र स्नान, श्रीविष्णु सहस्रनाम का पाठ, ब्राह्मण-भोजन, कलश, वस्त्र, फल, चावलादि अनाज एवं मिष्ठान्न दक्षिणा सहित दान यथाशक्ति करने से अनन्त गुणा फल होता है।

श्रीगङ्गा-जयन्ती (30 अप्रैल) को श्रीगङ्गा जी का अवतरण पृथ्वी पर हुआ था। इस पक्ष व तिथि में हरिद्वार में गंगास्नान, पुष्पाक्षत व दीपादि द्वारा गङ्गापूजन, जप-पाठ एवं अन्न, वस्त्र, फलादि दान करने का विशेष माहात्म्य होता है। **ता. 1 मई** को रात्रिव्यापिनी नवमी को शक्तिरूपा **बगुलामुखी माता** का पूजार्चन करने से व्यक्ति को ऋण, रोग एवं शत्रुओं का भय नहीं रहता। **नृसिंह जयन्ती** (6 मई) पर नृसिंह भगवान् की लक्ष्मी सहित पंचोपचार सहित पूजन करना चाहिए। **वैशाख पूर्णिमा** (7 मई) को तीर्थ (अथवा गृह में ही) पर गंगाजल सहित स्नान करके भगवान् विष्णु का ध्यान, पूजन एवं विष्णु सहस्रनाम का पाठ करना चाहिए। ***ग्रहगोचर***--पक्ष में ता. 4 मई तक **मं.-गु.-श. योग**, तदुपरान्त **गुरु-शनि** योग के प्रभावस्वरूप देश में भयानक अग्निकाण्ड, उपद्रव की घटनाएं होंगी। कुछ स्थानों पर सूखा, दुर्भिक्ष एवं अकाल जैसी स्थिति बनेगी। भारत-पाक की सीमाओं पर पुनः युद्ध के बादल मंडराएंगे।

आकाश लक्षण–उत्तर-भारत के अनेक भागों में गर्म हवाओं एवं खण्ड वर्षा होने के योग हैं। ***शकुन***–वै. शु. तृतीया या १० को वर्षा होना भविष्य में अच्छी फसल व सुभिक्ष के संकेत हैं।

वि. संवत् २०७७, ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष शाक: १९४२

सन् 2020 ई. (ता. 8 मई से 22 मई तक), हिजरी सन् 1441
सूर्य उत्तरायण, उत्तर गोल, ग्रीष्म ऋतु:

ग्रह दर्शन–प्रात: मंगल याम्योत्तरवृत्तासन्न, गुरु–शनि इस समय याम्योत्तरवृत्त में होंगे। सायं शुक्र पश्चिमक्षितिज में होगा, 16 मई से बुध भी पश्चिम में दिखेगा।

भा.स्टैं.टा. जालन्धर

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	समाप्ति काल घड़ी	समाप्ति काल पल	नक्षत्र	समाप्ति काल घड़ी	समाप्ति काल पल	योग	समाप्ति काल घड़ी	समाप्ति काल पल	करण	समाप्ति काल घड़ी	समाप्ति काल पल	तारीखें वैशा. शक	तारीखें रमजान मु.	तारीखें मई	तारीखें वैशा. प्रवि	चंद्र राशि प्रवेश घड़ी–पल		सूर्योदय कालिक सूर्यस्पष्ट रा. अं. क. वि.	सूर्योदय घं. मिं.	सूर्यास्त घं. मिं.
३३:३८	१	शुक्र	१८	२३	विशा.	७	२३	वरी	१८	८	कौ	१८	२३	18	14	8	२६	वृश्चिक	**ज्येष्ठ कृष्णपक्ष प्रारम्भ**	०:२३:४४:२६	5:41	19:08
३३:४३	२	शनि	११	३०	अनु. ज्ये.	२ ५८	१३ २५	परि	९	४५	ग	११	३०	19	15	9	२७	ध.५८:२५	भ. ३८:४७ से, **बुध वृष में १०:१८, श्रीनारद-जयन्ती, वीणादान**	०:२४:४२:२३	5:40	19:09
३३:४५	३	रवि	६	३	मूल	५६	२५	शिव सिद्ध	२ ५६	३३ ४८	वि	६	३	20	16	10	२८	धनु	भ. ६:०३ तक, **श्रीगणेश चतुर्थी व्रत** (देखें पृष्ठ 13),गण्डमूल 28:13 तक	०:२५:४०:२०	5:39	19:09
३३:५०	४	चन्द्र	२	२५	पू.षा.	५६	२०	साध्य	५२	३८	बा	२	२५	21	17	11	२९	धनु	सूर्य कृतिका में १:५०, **शनि वक्री ९:३३** (9:27)	०:२६:३८:१४	5:38	19:10
३३:५३	५	मंग	०	४०	उ.षा.	५८	१०	शुभ	५०	००	तै	०	४०	22	18	12	३०	म.११:३८		०:२७:३६:१०	5:38	19:11
३३:५५	६	बुध	०	५८	श्रव.	६०	००	शुक्ल	४८	५५	व	०	५८	23	19	13	३१	मकर	भ. ०:५८ से ३२:०४ तक, बुध रोहिणी में ५३:१५, **शुक्र वक्री १६:२८**	०:२८:३४:०३	5:37	19:11
३४:००	७	गुरु	३	१०	श्रव.	१	५८	ब्रह्म	४९	१३	ब	३	१०	24	20	14	ज्ये	कुं.३४:२५	**पंचक प्रारम्भ ३४:२५, सूर्य वृष में २९:१०, ज्येष्ठ संक्रान्ति (A)**	०:२९:३१:५३	5:36	19:12
३४:०३	८	शुक्र	६	५८	धनि.	७	१५	ऐन्द्र	५०	३०	कौ	६	५८	25	21	15	२	कुम्भ		१:००:२९:४५	5:36	19:13
३४:०८	९	शनि	१२	००	शत.	१३	४५	वैधृ.	५२	३०	ग	१२	००	26	22	16	३	कुम्भ	भ. ४४:५७ से, **बुध पश्चिम में उदय 19:07 (घं.मिं.)**	१:०१:२७:३४	5:35	19:14
३४:१०	१०	रवि	१७	५३	पू.भा.	२१	३	विष्क	५४	५५	वि	१७	५३	27	23	17	४	मी.४:१०	भ. १७:५३ तक,	१:०२:२५:२२	5:34	19:14
३४:१३	११	चन्द्र	२३	५८	उ.भा.	२८	३०	प्रीति	५७	१८	बा	२३	५८	28	24	18	५	मीन	**अपरा एकादशी व्रत, मेला भद्रकाली एकादशी (कपूरथला) पं.**	१:०३:२३:०८	5:34	19:15
३४:१५	१२	मंग	२९	५८	रेव.	३५	५०	आयु	५९	२८	तै	२९	५८	29	25	19	६	मे.३५:५०	**पंचक समाप्त ३५:५० (19:52)**, गण्डमूल विचार	१:०४:२०:५५	5:33	19:15
३४:१७	१३	बुध	३५	२५	अश्वि	४२	४०	सौभा	६०	००	ग	२	४२	30	26	20	७	मेष	भ. ३५:२५ से, **प्रदोष व्रत** (देखें पृष्ठ 17), बुध मृग. में ४७:४०, **(B)**	१:०५:१८:३९	5:33	19:16
३४:२३	१४	गुरु	४०	१३	भर.	४८	५०	सौभा	१	१०	वि	७	४९	31	27	21	८	मेष	भ. ७:४९ तक, + (अमावस-पक्ष), शक ज्येष्ठ प्रारम्भ	१:०६:१६:२४	5:32	19:17
३४:२३	३०	शुक्र	४४	३	कृति.	५४	३	शोभ	२	१५	च	१२	८	ज्ये	28	22	९	वृ.५:१३	**ज्येष्ठ अमावस**, भावुका अमावस, **शनैश्चर जयन्ती**, वटसावित्री व्रत +	१:०७:१४:०८	5:32	19:17

(A) ३० मुहू., पुण्यकाल सं. प्रात: 10:52 बाद, मंगल शत. में २०:५८, **गुरु वक्री ३५:५५ (19:58)** **(B)** राहु मृग ४ केतु मूल २ में ३०:२८, मासशिवरात्रि व्रत, सूर्य सायन मिथुन में ३४:२५

शुक्रे अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रात: 5:30 बजे, 15 मई

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१	१०	१०	१	९	१	९	२	८
०	५	७	१२	३	२७	७	६	६
२९	९	६	१६	६	३८	४८	५७	५७
३१	१५	२७	५	१३	४२	३०	३१	३१
57 51	723 42	40 55	120 35	0 11	5 17	0 26	3 11	3 11
कृति २	धनि ४	शत १	रोहि १	उषा २	मृग २	उषा ४	आर्द्रा १	मूल ३
०	०	मा	मा	व	व	व	व	व
०	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रात: 5:30

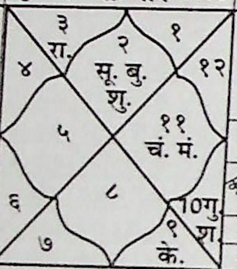

शुक्रे अमावस्यायां ग्रह स्पष्ट प्रात: 5:30 बजे, 22 मई

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१	०	१०	१	९	१	९	२	८
७	२८	११	२५	३	२६	७	६	६
१४	५५	५१	२६	१	११	४३	३५	३५
३	३२	४३	३०	०	१३	२९	१६	१६
57 43	737 11	40 31	101 36	1 30	21 51	1 6	3 11	3 11
कृति ४	कृति १	शत २	मृग १	उषा २	मृग १	उ.षा ४	मृग ४	मूल २
०	०	मा	मा	व	व	व	व	व
०	अ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अमावस, प्रात: 5:30

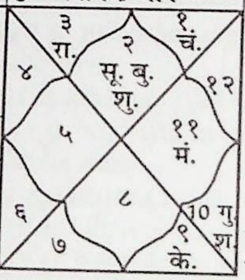

ज्येष्ठ कृष्ण पक्षफल–

ज्येष्ठ मास में **संक्रान्ति, गङ्गा-दशहरा, एकादशी** आदि पर्वों पर स्नान, जप, ध्यानादि के पश्चात् वस्त्र, अन्न, मौसमी फल, जलापूरित घट तथा अन्य ग्रीष्म-उपयोगी वस्तुओं का संकल्पपूर्वक सुपात्र ब्राह्मण को दक्षिणा सहित दान करना चाहिए। '**ॐ नमो भगवते वासुदेवाय**' मन्त्र का जाप एवं श्रीविष्णु-सहस्रनाम, नारायण कवचादि स्तोत्रों का पाठ करने से धन-सम्पत्ति, विवाह, सन्तान एवं सौभाग्यादि की प्राप्ति होती है। इस पक्ष की **अपरा एकादशी** (18 मई) का व्रत विधिपूर्वक रखने तथा किसी गरीब परिवार की सामर्थ्यानुसार अन्न-धनादि से सहायता करने से अनेक प्रकार के ज्ञात अथवा अज्ञानतावश किए गए पापों का क्षय होता है। '**वटसावित्री व्रत**' (22 मई) में स्त्रियाँ त्रयोदशी से अमावस तक वटवृक्ष का पूजन करके तीन दिवसीय व्रतानुष्ठान करती हैं। वट के मूल में ब्रह्मा, मध्य में विष्णु तथा ऊपरी भाग में देवाधि देव शिव प्रतिष्ठित रहते हैं। यह व्रत स्त्रियों के वैधव्यादि दोषों की निवृत्ति में एवं पति-पुत्रादि सुख-सौभाग्य प्राप्ति के लिए विशेष प्रशस्त माना जाता है। ***ज्येष्ठ संक्रान्ति***–ता. 14 मई, बृहस्पतिवार को सायं $5^{\text{घं.}}$-$16^{\text{मिं.}}$ (17:16) पर तुला लग्न में प्रवेश करेगी। ३० मुहू. इस सं. का पुण्यकाल प्रात: $10^{\text{घं.}}$-$52^{\text{मिं.}}$ बाद प्रारम्भ होगा। वारानुसार नन्दा तथा नक्षत्रानुसार महोदरी नामक यह सं. ब्राह्मणों के लिए लाभप्रद रहेगी। बृहस्पति की संक्रांति होने से देश में धर्म-कर्म का आचरण बढ़े। अनाज की पैदावार अच्छी हो तथा लोगों में सुख-साधनों का विस्तार हो। ***ग्रहगोचर***–पक्ष में कालसर्प योग बना हुआ है तथा मकर राशि में '**गुरु-शनि**' योग के कारण लोग पाप एवं कुटिल बुद्धि वाले हो जाएंगे तथा विश्व में युद्ध-भय से वातावरण अशान्त एवं असमंजसपूर्ण बन जाएगा। घी, दूध, तेल, जल आदि दैनिक उपभोग्य वस्तुओं में विशेष तेजी बन जाएगी। ***संक्रान्ति राशिफल***–यह संक्रान्ति मेष, कर्क, सिंह, तुला, वृश्चिक, मकर व कुम्भ राशि वालों के लिए विशेष लाभकारी रहेगी। शेष के लिए कुछ मानसिक कष्ट रहेगा। ***आकाश लक्षण***–ज्ये. कृ. १ को शुक्रवार होने से आगे अच्छी वर्षा की सम्भावना होगी।

शकुन–परन्तु ज्ये. कृ. १२ को रेवती नक्षत्र होने से [illegible]

वि. संवत् २०७७, ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष शाक: १९४२

सन् 2020 ई. (ता. 23 मई से 5 जून तक), हिजरी सन् 1441
सूर्य उत्तरायण, उत्तर गोल, ग्रीष्म ऋतु:

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	समाप्ति काल घटी	समाप्ति काल पल	नक्षत्र	समाप्ति काल घटी	समाप्ति काल पल	योग	समाप्ति काल घटी	समाप्ति काल पल	करण	समाप्ति काल घटी	समाप्ति काल पल	तारीखें रा. शक	तारीखें रमजान मु.	तारीखें अंग्रे. मई	तारीखें ज्ये. प्र.	चंद्र राशि प्रवेश घड़ी–पल	प्रात: मंगल याम्योत्तरवृत्तासन्न, शनि याम्योत्तरवृत्त में और गुरु इससे पश्चिम की ओर होगा। सायं बुध–शुक्र पश्चिम क्षितिज में होंगे। ता. 31 मई से शुक्र पश्चिम में ही लुप्त हो जाएगा।	सूर्योदय कालिक सूर्यस्पष्ट रा. अं. क. वि.	भा.स्टैं.टा. जालन्धर सूर्योदय घं.मिं.	भा.स्टैं.टा. जालन्धर सूर्यास्त घं.मिं.
३४:२७	१	शनि	४६	५८	रोहि.	५८	२३	अति	२	३८	किं	१५	३१	2	29	23	१०	वृष	भावुका करिदिन, **श्रीगङ्गा-स्नान प्रारम्भ**, करवीर-व्रत (सूर्य-पूजा)	१:०८:११:४८	5:31	19:18
३४:२९	२	रवि	४८	४५	मृग.	६०	००	सुक	२	१३	बा	१७	५२	3	30	24	११	मि.३०:०८	चन्द्रदर्शन, मु. ३०, सूर्य रोहि. में ५२:३५, **बुध मिथुन में ४६:०५**	१:०९:०९:२९	5:31	19:19
३४:३२	३	चन्द्र	४९	३३	मृग.	१	४०	धृति शूल	१ ५८	३ ५५	तै	१९	९	4	श.	25	१२	मिथुन	**रम्भा तृतीया व्रत**, महाराणा प्रताप जयन्ती, शव्वाल (मुस्लि.)मास प्रारम्भ	१:१०:०७:०६	5:30	19:19
३४:३५	४	मंग	४९	८	आर्द्रा	३	५०	गंड	५५	५८	व	१९	२१	5	2	26	१३	क.४९:४५	भ. १९:२१ से ४९:०८ तक,	१:११:०४:४५	5:30	19:20
३४:३८	५	बुध	४७	३५	पुन.	४	५५	वृद्धि	५२	३	ब	१८	२२	6	3	27	१४	कर्क	शुक्र अस्त 31 मई	१:१२:०२:२२	5:30	19:21
३४:३९	६	गुरु	४४	५८	पुष्य	४	५५	ध्रुव	४७	१८	कौ	१६	१७	7	4	28	१५	कर्क	वक्री शुक्र रोहि. ४ में १७:२५, **अरण्य षष्ठी**, विन्ध्यवासिनी पूजा **(A)**	१:१२:५९:५६	5:29	19:21
३४:४२	७	शुक्र	४१	८	आश्ले	३	४३	व्या.	४१	३३	ग	१३	३	8	5	29	१६	सिं.३:४३	भ. ४१:०८ से, बुध आर्द्रा में २१:३३ (14:06), गण्डमूल विचार	१:१३:५७:३०	5:29	19:22
३४:४३	८	शनि	३६	१३	मघा पू.फा.	१ ५८	२५ ५	हर्ष	३४	५५	वि	८	४१	9	6	30	१७	सिंह	भ. ८:४१ तक, **श्रीदुर्गाष्टमी**, धूमावती जयन्ती, मेला क्षीर-भवानी (काश्मीर)	१:१४:५५:०३	5:29	19:22
३४:४७	९	रवि	३०	२३	उ.फा.	५३	५३	वज्र	२७	३५	बा	३	१८	10	7	31	१८	कं.१२:०८	**वक्री शुक्र पश्चिम में अस्त ०:२ (5:28)**, स. सि. यो.	१:१५:५२:३१	5:28	19:23
३४:४८	१०	चन्द्र	२३	४५	हस्त	४८	५८	सिद्धि	१९	३०	ग	२३	४५	11	8	जून	१९	कन्या	भ. ५०:०९ से, **श्रीगङ्गा-दशहरा पर्व** (हरिद्वार आदि), जून मास प्रारम्भ	१:१६:५०:०१	5:28	19:23
३४:५०	११	मंग	१६	३३	चित्रा	४३	३८	व्य.	११	००	वि	१६	३३	12	9	2	२०	तु.१६:२०	भ. १६:३३ तक, **निर्जला एकादशी व्रत**,	१:१७:४७:३०	5:28	19:24
३४:५०	१२	बुध	९	५	स्वा.	३८	८	वरी परि	२ ५३	१३ २५	बा	९	५	13	10	3	२१	तुला	**प्रदोष व्रत**, मंगल पू.भा. में १०:३०, वटसावित्री व्रतारम्भ	१:१८:४४:५७	5:28	19:24
३४:५४	१३	गुरु	१	४०	विशा.	३२	५५	शिव	४४	५५	तै	१	४०	14	11	4	२२	वृ.१९:१०	भ. ५४:३३ से,	१:१९:४२:२१	5:27	19:25
अवम	१४	गुरु	५४	३३	००	०	०	००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	००	**चतुर्दशी तिथि का क्षय** ०० ००	०:००:००:००	००	००
३४:५५	१५	शुक्र	४८	८	अनु.	२८	१३	सिद्ध	३६	५५	वि	२१	२१	15	12	5	२३	वृश्चिक	भ. २१:२१ तक, **ज्येष्ठ पूर्णिमा, वटसावित्री व्रत (पूर्णिमा-पक्ष) (B)**	१:१९:३९:४७	5:27	19:25

(A) शुक्र वार्धक्य प्रारम्भ 5:28 (घं.मिं.) **(B) सन्त कबीर जयन्ती** (622वाँ), श्रीसत्यनारायण व्रत, गण्डमूल 16:44 बाद

शनौ अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रात: 5:30 बजे, 30 मई

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१	४	१०	२	९	१	९	२	८
१४	१३	१७	७	२	२२	७	६	६
५५	१	१३	३०	४३	२२	३२	९	९
५	७	५३	४७	४६	२	६	५०	५०
57	847	39	75	2	35	1	3	3
31	13	56	49	58	34	50	11	11
रोहि	मघा	शत	आर्द्रा	उषा	रोहि	उषा	मृग	मूल
२	४	४	१	२	४	४	४	२
०	०	मा	मा	व	व	व	व	व
०	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रात: 5:30

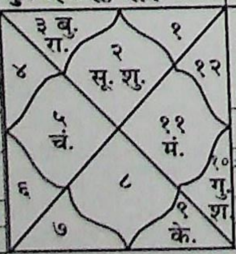

शुक्रे पूर्णिमायां ग्रह स्पष्ट प्रात: 5:30 बजे, 5 जून

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१	७	१०	२	९	१	९	२	८
२०	९	२१	१४	२	१८	७	५	५
३९	५५	१२	१३	२३	३९	११	५०	५०
५४	३२	१६	८	१८	४८	५०	४५	४५
57	861	39	54	4	37	2	3	3
24	14	26	21	0	23	21	11	11
रोहि	अनु	पूभा	आर्द्रा	उषा	रोहि	उषा	मृग	मूल
४	२	१	३	२	३	४	४	२
०	०	मा	मा	व	व	व	व	व
०	उ	उ	उ	उ	अ	उ	अ	अ

कुं. पूर्णिमा, प्रात: 5:30

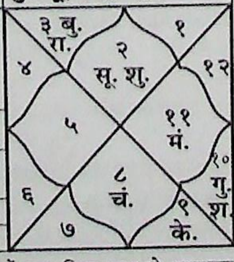

ज्येष्ठ शुक्ल पक्षफल–

इस पक्ष की तृतीया (25 जून) को **रम्भा देवी** का विधिपूर्वक व्रत-दान करने से स्त्रियों को विवाह, सन्तान एवं सौभाग्य की प्राप्ति होती है। इससे गौरी माता की पुष्प, नैवेद्य आदि से पूजन करके इस मन्त्र से प्रार्थना करनी चाहिए-'**देवि ! त्वं शक्तिस्त्वं स्वधा स्वाहा, त्वं सावित्री सरस्वती। पतिं देहि गृहं देहि सुतान देहि नमोऽस्तुते।।**' माता पार्वती का जन्म भी इसी तिथि को हुआ था। **अष्टमी तिथि (30 मई)** को माता खीर (क्षीर) भवानी का मेला जम्मू-कश्मीर एवं दिल्ली के मन्दिरों में खीर, मेवे आदि का भोग लगाकर श्रद्धा से मनाया जाता है। '**श्रीगङ्गा-दशहरा**' पर्व (1 जून) पर गङ्गा-स्नान एवं श्रीगङ्गा जी का अक्षत, द्रव्यों, नारियल आदि सहित पूजार्चन तथा यथाशक्ति दानादि करने से कायिक-वाचिक और मानसिक-दस प्रकार के पापों का नाश होता है। इस दिन गंगा-स्तोत्रादि का पाठ करें तथा निम्न मन्त्र से आवाहन व प्रार्थना करें-'**ॐ नमः शिवायै नारायण्यै दशहरायै गङ्गायै नमः।।**' **निर्जला एकादशी (2 जून)** का निराहार व्रत रखकर स्नानादि के पश्चात् भगवान् श्रीलक्ष्मीनारायण की पूजा, मंत्र-जप एवं स्तोत्र पाठ करने के बाद द्वादशी के दिन ब्राह्मण को यथाशक्ति अन्न-वस्त्र, मौसमी फल, पंखा, जल-कुम्भादि पात्र का दक्षिणा सहित दान करने का विशेष माहात्म्य होगा। ***लोक-भविष्य***–चान्द्र ज्येष्ठ मास में पाँच शुक्रवार आने से ग्रीष्म उपयोगी फसलों का अच्छा उत्पादन होगा। कुछ विशेष वर्ग के लोगों में सुख-सुविधाओं के साधनों में वृद्धि होगी। अधिकांश अमीर लोग भोग-विलासादि कार्यों में प्रवृत्त होंगे। जनसंख्या में असंयमित रूप से वृद्धि होगी। ता. 31 मई को वृष राशिगत एवं ज्येष्ठ मास में शुक्र अस्त होने से शीघ्र ही महावृष्टि (बाढ़ादि प्राकृतिक प्रकोपों से) से जन-धन हानि का भय रहेगा। चौपायों को पीड़ा/रोग तथा धान्य का कम उत्पादन होगा-'**शुक्रस्यास्तंगमाज्ज्येष्ठे महावृष्टेः प्रजाक्षयः।।**' ***आकाश लक्षण***–यद्यपि उत्तर-भारत में गर्मी व लू का प्रकोप बढ़े परन्तु दक्षिणी-पश्चिमी राज्यों में अतिवृष्टि एवं मानसून प्रारम्भ हो जाएगा। ***शकुन***–ज्ये. शु. ३ को आर्द्रा नक्षत्र में जहाँ-जहाँ वर्षा हो, वहाँ आगे दुर्भिक्ष (अकाल) हो।

वि. संवत् २०७७, आषाढ़ कृष्ण पक्ष शाक : १९४२

सन् 2020 ई. (ता. 6 जून से 21 जून तक), हिजरी सन् 1441
सूर्य उत्तर–दक्षिणायन, उत्तर गोल, ग्रीष्म–वर्षा ऋतु:

ता. 10 जून से शुक्र प्रातः पूर्वक्षितिज में दृश्य होगा, इस समय मंगल याम्योत्तरवृत्तासन्न और शनि–गुरु याम्योत्तरवृत्त में होंगे। सायं बुध पश्चिमक्षितिज में दृश्य होगा।

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	समाप्ति काल घड़ी	समाप्ति काल पल	नक्षत्र	समाप्ति काल घड़ी	समाप्ति काल पल	योग	समाप्ति काल घड़ी	समाप्ति काल पल	करण	समाप्ति काल घड़ी	समाप्ति काल पल	तारीखें ज्ये. शाके	तारीखें शव्वाल मु.	तारीखें जून	तारीखें ज्ये. प्रवि.	चंद्र राशि प्रवेश घड़ी–पल		सूर्योदय कालिक सूर्यस्पष्ट रा. अं. क. वि.	भा.स्टैं.टा. जालन्धर सूर्योदय घं. मिं.	भा.स्टैं.टा. जालन्धर सूर्यास्त घं. मिं.
३४:५७	१	शनि	४२	४५	ज्ये.	२४	२३	साध्य	२९	४०	बा	१५	२७	16	13	6	२४	ध.२४:२३	**आषाढ़ कृष्णपक्ष प्रारम्भ,** गण्डमूल विचार	१:२१:३७:११	5:27	19:26
३४:५८	२	रवि	३८	४३	मूल	२१	५०	शुभ	२३	३०	तै	१०	४४	17	14	7	२५	धनु	सूर्य मृगशिर में ४७:३० (24:27), गण्डमूल 14:11 तक	१:२२:३४:३४	5:27	19:26
३५:००	३	चन्द्र	३६	१५	पू.षा.	२०	४५	शुक्ल	१८	३३	व	७	२९	18	15	8	२६	म.३५:४५	भ. ७:२९ से ३६:१५, **श्रीगणेश चतुर्थी व्रत** (देखें पृष्ठ 13-16)	१:२३:३१:५६	5:27	19:27
३५:००	४	मंग	३५	३०	उ.षा.	२१	२३	ब्रह्म	१४	५८	ब	५	५३	19	16	9	२७	मकर	**वक्री शुक्र पूर्व में उदय. ३४:४३ (19:20)**	१:२४:२९:१८	5:27	19:27
३५:०२	५	बुध	३६	३५	श्रव.	२३	४८	ऐन्द्र	१२	५०	कौ	६	३	20	17	10	२८	कुं.५५:३८	**पंचक प्रारम्भ ५५:३८ (27:42)**	१:२५:२६:३९	5:27	19:28
३५:०३	६	गुरु	३९	२३	धनि	२७	५०	वैधृ.	१२	३	ग	७	५९	21	18	11	२९	कुम्भ	भ. ३९:२३ से,	१:२६:२४:००	5:27	19:28
३५:०४	७	शुक्र	४३	३५	शत.	३३	२५	विष्क	१२	३०	वि	११	२९	22	19	12	३०	कुम्भ	भ. ११:२९ तक, शुक्र बाल्यत्व समाप्त 19:20	१:२७:२१:२०	5:27	19:29
३५:०५	८	शनि	४८	५३	पू.भा.	४०	३	प्रीति	१३	५८	बा	१६	१४	23	20	13	३१	मीं.२३:१८		१:२८:१८:४०	5:27	19:29
३५:०६	९	रवि	५४	४३	उ.भा.	४७	१८	आयु	१६	३	तै	२१	४८	24	21	14	आ	मीन	**सूर्य मिथुन में ४६:०५, आषाढ़ संक्रान्ति,** मु. ४५, पुण्यकाल सं. **(A)**	१:२९:१५:५९	5:27	19:29
३५:०७	१०	चन्द्र	६०	००	रेव	५४	३८	सौभा	१८	२३	व	२७	३९	25	22	15	२	मे.५४:३८	भ. २७:३९ से, **पंचक समाप्त ५४:३८** (27:17), गण्डमूल विचार	२:००:१३:१८	5:27	19:30
३५:०८	१०	मंग	०	३५	अश्वि	६०	००	शोभ	२०	३५	वि	०	३५	26	23	16	३	मेष	भ. ०:३५ तक, गण्डमूल विचार, स.सि.यो.	२:०१:१०:३६	5:27	19:30
३५:०९	११	बुध	६	००	अश्वि	१	३३	अति	२२	२३	बा	६	००	27	24	17	४	मेष	**योगिनी एकादशी व्रत,** गण्डमूल 6:04 तक **(B)** उ.षा. ३ में ५९:४३	२:०२:०७:५४	5:27	19:30
३५:१०	१२	गुरु	१०	३३	भर.	७	४०	सुक	२३	२५	तै	१०	३३	28	25	18	५	वृ.२४:००	**प्रदोष व्रत, मंगल मीन में ३७:००, बुध वक्री** १२:२५, वक्री शनि **(B)**	२:०३:०५:१२	5:27	19:31
३५:१०	१३	शुक्र	१३	५८	कृति	१२	४०	धृति	२३	३३	व	१३	५८	29	26	19	६	वृष	भ. १३:५८ से ४४:५९ तक, मासशिवरात्रि व्रत	२:०४:०२:२९	5:27	19:31
३५:०९	१४	शनि	१६	००	रोहि.	१६	२५	शूल	२२	३८	श.	१६	००	30	27	20	७	मि.४७:४८	**पितृकार्येषु अमावस,** सूर्य सायन कर्क में ५४:२५, सायन दक्षिणायन **(C)**	२:०४:५९:४८	5:28	19:31
३५:०८	३०	रवि	१६	४८	मृग.	१८	५३	गंड	२०	४०	ना	१६	४८	31	28	21	८	मिथुन	**आषाढ़ी अमावस, कंकण (चूड़ामणि) सूर्यग्रहण (भारत में दृश्य)(D)**	२:०५:५७:०५	5:28	19:31

शुक्र उदय
9 जून

(A) अगले दिन प्रात: 6:17 तक, बुध पुन. में ९:३८ **(C)** प्रारम्भ, वर्षा ऋतु शुरु, **ग्रहणवेध (D)** (देखें पृष्ठ 27), **सूर्य आर्द्रा में ४४:५८ (23:27), मेला फाल्गु.** (कुरुक्षेत्र, कैथल, हरियाणा)

शनौ अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रात: 5:30 बजे, 13 जून

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१	१०	१०	२	९	१	९	२	८
२८	२५	२६	१९	१	१४	६	५	५
१८	२२	२४	३६	४६	८	५८	२५	२५
४७	२३	५८	१	४४	३६	५१	१८	१८
57 19	717 23	38 36	21 19	5 17	27 5	2 58	3 11	3 11
मृ २	पूभा २	पूभा २	आर्द्रा ४	उषा २	रोहि २	उषा ४	मृ ४	मूल २
०	०	मा	मा	व	व	व	व	व
०	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रात: 5:30

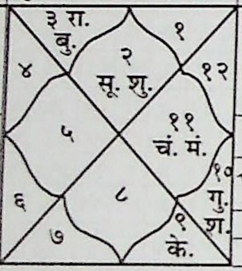

रवौ अमावस्यायां ग्रह स्पष्ट प्रात: 5:30 बजे, 21 जून

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२	२	११	२	९	१	९	२	८
५	२	१	२०	१	११	६	४	४
५७	३७	३०	२०	०	३३	३३	५९	५९
१०	३८	४	१३	४२	२४	१०	५२	५२
57 16	839 01	37 30	14 20	6 20	8 55	3 30	3 11	3 11
मृ ४	मृ ३	पूभा ४	पुन १	उषा २	रोहि १	उषा ३	मृ ४	मूल २
०	०	मा	व	व	व	व	व	व
०	अ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अमावस, प्रात: 5:30

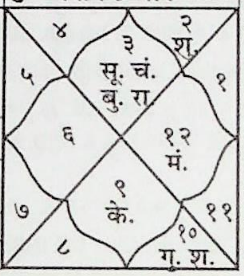

आषाढ़ कृष्ण पक्षफल–

आषाढ़ मास में भगवान् विष्णु की प्रसन्नता के लिए ब्रह्मचारी रहते हुए स्नानोपरान्त नित्यप्रति श्री सहित विष्णु पूजार्चन एवं स्तोत्र पाठ के बाद ब्राह्मण दम्पत्ति को क्षीर सहित भोजन करवाना तथा यथाशक्ति वस्त्र, धन, जूते, आँवले, आम्र, खरबूजे, आड़ू आदि का दान करना तथा स्वयं भी एकभुक्त भोजन करना इत्यादि कृत्यों से जातक को अक्षय पुण्यों की प्राप्ति होती है। *स्वास्थ्य विचार*–आषाढ़ मास में स्वयं को विशेषकर शिर को तेज धूप व ऊष्णता से बचाना चाहिए तथा इस मास सादा भोजन, छाछ व शीतल पेय का प्रयोग करना चाहिए। इस पक्ष में आषाढ़ संक्रान्ति, 14 जून, रविवार को रात्रि 11 बजकर 53 मिनट पर कुम्भ लग्न में प्रवेश करेगी। स्नान, दानादि का पुण्यकाल अगले दिन प्रात: 6घं.–17मिं. तक रहेगा। वारानुसार घोरा तथा नक्षत्रानुसार नन्दा नामक यह सं. विप्रों तथा कपटी लोगों के लिए लाभप्रद रहेगी। संक्रान्ति कुण्डली (लग्न) में मंगल का संचार, रविवारी संक्रान्ति तथा गुरु-शनि योग होने से देश के कुछ भागों में आन्तरिक कलह, उपद्रव एवं अशान्ति का वातावरण होगा। राजनेताओं एवं लोगों में परस्पर कलह–क्लेश, विग्रह हो। किसी विशिष्ट नेता के अपदस्थ या अपमृत्यु के योग हैं। देश में युद्ध का वातावरण बने। सब प्रकार के अनाज एक मास के लिए तेज भाव होंगे। खाद्यान्नों में कमी एवं महंगाई के कारण सामान्य लोग अत्यन्त दुखी, परेशान एवं असहाय अनुभव करेंगे। **'संक्रान्तिरादित्यदिने न शस्ता करोति युद्धं नृपतेरतीव। धान्यं महर्घं प्रतिरौद्रवार्ता प्रजा भवेद् दुखित हीन दीना।।'** *आकाश लक्षण*–आषाढ़ मास में सूर्यग्रहण होने से कहीं खण्ड वर्षा तथा कहीं रोग आदि का भय उत्पन्न हो। *शकुन*–आषा. कृ. ८ को बादल चाल हो तो आगे श्रावण में अच्छी वर्षा हो।

लक्षण–आषाढ़ मास में सूर्यग्रहण होने से कहीं खण्ड वर्षा तथा कहीं रोग आदि का भय उत्पन्न हो। शकुन–आषा. कृ. ८ को बादल छाए हों तो आगे श्रावण में अच्छी वर्षा हो।

वि. संवत् २०७७, आषाढ़ शुक्ल पक्ष शाक: १९४२

सन् 2020 ई. (ता. 22 जून से 5 जुलाई तक), हिजरी सन् 1441
सूर्य दक्षिणायन, उत्तर गोल, वर्षा ऋतुः

प्रात: शुक्र पूर्वक्षितिज में उदय होते दिखेगा, इस समय मंगल याम्योत्तरवृत्तासन्न, शनि तथा गुरु याम्योत्तरवृत्त से पश्चिम में होंगे। सायं बुध पश्चिम में दृश्य परन्तु 23 जून से पश्चिम में ही लुप्त।

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	समाप्ति काल		नक्षत्र	समाप्ति काल		योग	समाप्ति काल		करण	समाप्ति काल		तारीखें				चंद्र राशि प्रवेश घड़ी–पल		सूर्योदय कालिक सूर्यस्पष्ट	भा.स्टें.टा. जालन्धर	
			घटी	पल		घटी	पल		घटी	पल		घटी	पल	राष्ट्रीय	मुस्लिम	जून	आषाढ़ प्र.			रा. अं. क. वि.	सूर्योदय घं. मिं.	सूर्यास्त घं. मिं.
३५:०८	१	चन्द्र	१६	२०	आर्द्रा	२०	८	वृद्धि	१७	४५	ब	१६	२०	आ	29	22	९	मिथुन	चन्द्रदर्शन, मु. ४५, वक्री बुध आर्द्रा में १९:२०, **गुप्त नवरात्र प्रारम्भ (A)**	२:०६:५४:२१	5:28	19:31
३५:०८	२	मंग	१४	४०	पुन.	२०	१३	ध्रुव	१३	५३	कौ	१४	४०	2	जि.	23	१०	क.५:१८	**रथयात्रा-उत्सव** (श्रीजगन्नाथपुरी), मंगल उ.भा. में ५६:४३, ग्रहणवेध, **(B)**	२:०७:५१:३७	5:28	19:31
३५:०७	३	बुध	११	५५	पुष्य	१९	१३	व्या.	९	८	ग	११	५५	3	2	24	११	कर्क	भ. ४०:०७ से, ग्रहणवेध	२:०८:४८:५५	5:29	19:32
३५:०७	४	गुरु	८	१८	आश्ले	१७	२५	हर्ष वज्र	३ ५७	४० ३८	वि	८	१८	4	3	25	१२	सिं.१७:२५	भ. ८:१८ तक, **शुक्र मार्गी १७:०३ (12:18)**	२:०९:४६:१०	5:29	19:32
३५:०६	५	शुक्र	३	५५	मघा	१४	५३	सिद्धि	४८	३३	बा	३	५५	5	4	26	१३	सिंह	**स्कन्द षष्ठी, कुमार-षष्ठी**	२:१०:४३:२४	5:29	19:32
अवम्	६	शुक्र	५८	५८	००	०	०	००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	००	**षष्ठी तिथि का क्षय** ०० ००	०:००:००:००	००	००
३५:०६	७	शनि	५३	३०	पू.फा.	११	४३	व्य.	४४	३	ग	२६	१४	6	5	27	१४	कं.२५:५३	भ. ५३:३० से, **विवस्वत सप्तमी**	२:११:४०:३९	5:30	19:32
३५:०५	८	रवि	४७	४५	उ.फा.	८	१०	वरी.	३६	४८	वि	२०	३८	7	6	28	१५	कन्या	भ. २०:३८ तक, श्रीदुर्गाष्टमी, स. सि. यो.	२:१२:३७:५२	5:30	19:32
३५:०४	९	चन्द्र	४१	४८	हस्त	४	२०	परि.	२९	२०	बा	१४	४७	8	7	29	१६	तु.३२:२३	**वक्री गुरु** उ.षा. १ **धनु में ५९:४८ (29:25)**, भढली नवमी **(C)**	२:१३:३५:०५	5:30	19:32
३५:०३	१०	मंग	३५	४८	चित्रा स्वा.	० ५६	२० २३	शिव	२१	५०	तै	८	४८	9	8	30	१७	तुला		२:१४:३२:१९	5:31	19:32
३५:०२	११	बुध	२९	५८	विशा.	५२	३८	सिद्ध	१४	२५	व	२	५३	10	9	जुला	१८	वृ.३८:३३	भ. २:५३ से २९:५८ तक, **हरिशयनी एकादशी व्रत**, चातुर्मास्य व्रत-**(D)**	२:१५:२९:३१	5:31	19:32
३५:०२	१२	गुरु	२४	२५	अनु.	४९	१८	साध्य	७	१३	बा	२४	२५	11	10	2	१९	वृश्चिक	**प्रदोष व्रत**, गण्डमूल 25:14 बाद	२:१६:२६:४२	5:31	19:32
३५:००	१३	शुक्र	१९	२३	ज्ये.	४६	३०	शुभ शुक्ल	० ५४	२० ३	तै	१९	२३	12	11	3	२०	ध.४६:३०	गण्डमूल + ज्वालामुखी (काश्मीर), श्रीशिव-शयनोत्सव, वायु-परीक्षा	२:१७:२३:५६	5:32	19:32
३५:००	१४	शनि	१५	५	मूल	४४	३५	ब्रह्म	४८	२८	व	१५	५	13	12	4	२१	धनु	भ. १५:०५ से ४३:२४ तक, श्रीसत्यनारायण व्रत, **कोकिला व्रत**, मेला +	२:१८:२१:०७	5:32	19:32
३४:५८	१५	रवि	११	४३	पू.षा.	४३	४३	ऐन्द्र	४३	४३	ब	११	४३	14	13	5	२२	म.५८:४०	**आषाढ़ी पूर्णिमा, गुरु पूर्णिमा**, व्यास-पूजा, सूर्य पुन. में ४३:४५	२:१९:१८:१९	5:33	19:32

(A) वक्री बुध पश्चिम में अस्त ५९:१५, शक आषाढ़ प्रारम्भ, ग्रहणवेध दिन **(B)** जिल्काद (मुस्लि.) मास प्रारम्भ **(C)** गुप्त नवरात्र समाप्त **(D)** -नियमादि प्रारम्भ, श्रीविष्णु-शयनोत्सव, जुलाई मास प्रारम्भ

रवौ अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रात: 5:30 बजे, 28 जून

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२	५	११	२	९	१	९	२	८
१२	८	५	१७	०	११	६	४	४
३७	४	४९	२७	१४	२०	७	३७	३७
५२	७	३	१७	७	१५	२६	३७	३७
57 13	854 12	36 18	34 46	7 2	7 11	3 54	3 11	3 11
आर्द्रा २	उफा ४	उभा १	आर्द्रा ४	उषा २	रोहि १	उषा ३	मृग ४	मूल २
०	०	मा	व	व	मा	व	व	व
०	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रात: 5:30

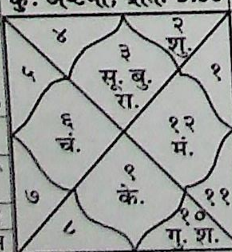

रवौ पूर्णिमायां ग्रह स्पष्ट प्रात: 5:30 बजे, 5 जुलाई

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२	८	११	२	८	१	९	२	८
१९	१६	९	१३	२९	१२	५	४	४
१८	४८	५९	२४	२३	५३	३९	१५	१५
१२	५५	११	२०	१८	३३	१९	२१	२१
57 11	807 4	34 57	28 57	7 30	21 00	4 10	3 10	3 10
आर्द्रा ४	पूषा २	उभा २	आर्द्रा ३	उषा १	रोहि १	उषा ३	मृग ४	मूल २
०	०	मा	व	व	मा	व	व	व
०	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. पूर्णिमा, प्रात: 5:30

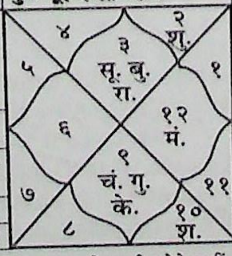

आषाढ़ शुक्ल पक्षफल–

इस पक्ष की **द्वितीया** (23 जून) को भगवान् श्रीजगन्नाथ की सपरिवार रथयात्रा का भव्य उत्सव विशेषकर जगन्नाथपुरी (उड़ीसा) तथा देश के अन्य भागों में भी बड़े उत्साह एवं श्रद्धा से मनाया जाता है। **हरिशयनी एकादशी (1 जुला.) से चातुर्मास्य व्रत, नियमादि प्रारम्भ** होंगे, जोकि कार्तिक शुक्ल एका. अर्थात् हरिप्रबोधिनी एकादशी (26 नवं.) तक की अवधि पर्यन्त रहेंगे। धर्मपरायण तपस्वी लोग यह अवधि चातुर्मास्य व्रतादि नियमों का पालन करते हुए नित्य भगवान् विष्णु की पूजार्चना, स्तोत्र-पाठ आदि में व्यतीत करते हैं। **इन चातुर्मासों के मध्य कुछ प्रदेशों** (उ.प्र., म.प्र., उ. खण्डादि) में विवाह आदि शुभ कार्यों के सम्पादन का निषेध माना जाता है, परन्तु दिल्ली, पंजाब, हरियाणा, जम्मू-कश्मीर आदि प्रदेशों में इस अवधि में विवाहादि शुभ कार्यों का सम्पादन शुभ माना गया है। यद्यपि भगवान् क्षण भर भी कभी सोते नहीं, परन्तु प्रबोधिनी एकादशी के दिन भगवान् योगनिद्रा को त्यागकर प्रत्येक प्रकार की क्रिया में प्रवृत्त हो जाते हैं और प्राणी मात्र का पालन-पोषण और संरक्षण करते हैं। **गुरु पूर्णिमा** (5 जुला.) के दिन भगवान् विष्णु, शिव और ऋषि वेदव्यास की पूजा-अर्चना एवं स्तोत्र-पाठ करके अपने इष्ट गुरु की यथाशक्ति वस्त्र, फल, मिष्ठान्न, धनादि द्वारा सेवा करनी चाहिए। ***लोक-भविष्य*–**चान्द्र आषाढ़ मास में पाँच शनिवार और पाँच रविवार, मीन राशिगत मंगल पर पक्षारम्भ से ही शनि की दृष्टि तथा 30 जून से गुरु-केतु योग होने से दैनिक उपभोग्य की वस्तुओं (जैसे-पैट्रोल, डीज़ल, तैल, वनस्पति, घी, अनाज, सर्वप्रकार की दालें, दूध आदि) के मूल्यों में आशातीत तेजी के कारण लोगों में आक्रोश, बेचैनी व गहन असन्तोष फैलेगा। लोगों में क्लिष्ट रोग व कष्टों में वृद्धि होगी। राजनीतिक वातावरण अनिश्चित होगा। कहीं सत्ता-परिवर्तन, टकराव, अग्निकाण्ड व राजनीतिक उलट-फेर होने के संकेत हैं। **'मंगल-शनि'** मध्ये दृष्टि सम्बन्ध सीमाओं एवं देश में भी युद्ध-जन्य वातावरण रहेगा। ***आकाश-लक्षण*–**दक्षिणी-पश्चिमी राज्यों में कहीं अधिक वर्षा से बाढ़ तथा कहीं अल्प वृष्टि से दुर्भिक्ष अर्थात् अकालजन्य स्थिति रहे।

वि. संवत् २०७७, **श्रावण कृष्ण पक्ष** शाक : १९४२														तारीखें				चंद्र राशि प्रवेश घड़ी–पल	सन् 2020 ई. (ता. 6 से 20 जुलाई तक), हिजरी सन् 1441 सूर्य दक्षिणायन, उत्तर गोल, वर्षा ऋतु: प्रातः बुध पूर्वक्षितिज में तथा इससे कुछ ऊपर शुक्र होगा। मंगल याम्योत्तरवृत्त में तथा शनि याम्योत्तर से पश्चिम की ओर होगा। इस समय गुरु पश्चिमक्षितिज में डूबने को होगा।	सूर्योदय कालिक सूर्यस्पष्ट	भा.स्टैं.टा. जालन्धर	
दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	समाप्ति काल		नक्षत्र	समाप्ति काल		योग	समाप्ति काल		करण	समाप्ति काल		आषा. शक	जिल्का. मु.	जुलाई	आषा. प्र.			रा. अं. क. वि.	सूर्योदय घं. मिं.	सूर्यास्त घं. मिं.
			घड़ी	पल		घड़ी	पल		घड़ी	पल		घड़ी	पल									
३४:५८	१	चन्द्र	९	३५	उ.षा.	४४	८	वैधृ.	४०	३	कौ	९	३५	15	14	6	२३	मकर	श्रावण कृष्णपक्ष प्रारम्भ, **श्रावण सोमवार व्रत शुरु**, अशून्यशयन व्रत	२:२०:१५:३०	5:33	19:32
३४:५३	२	मंग	८	४३	श्रव.	४५	५५	विष्क	३७	२८	ग	८	४३	16	15	7	२४	मकर	भ. ३९:०३ से, **मंगलागौरी व्रत प्रारम्भ** (देखें पृष्ठ 101)	२:२१:१२:४४	5:34	19:31
३४:५३	३	बुध	९	२३	धनि.	४९	१३	प्रीति	३६	८	वि	९	२३	17	16	8	२५	कुं.१७:२३	भ. ९:२३ तक, **पंचक प्रारम्भ १७:२३**, **श्रीगणेश चतुर्थी व्रत** (देखें पृष्ठ 13)	२:२२:०९:५४	5:34	19:31
३४:५०	४	गुरु	११	३३	शत.	५३	५५	आयु	३५	५३	बा	११	३३	18	17	9	२६	कुम्भ	**वक्री बुध पूर्व में उदय 19:34 (घं.मिं.)**	२:२३:०७:०८	5:35	19:31
३४:५०	५	शुक्र	१५	१०	पू.भा.	५९	५५	सौभा.	३६	४५	तै	१५	१०	19	18	10	२७	मीं.४३:२०	**नाग-पंचमी** (राजस्थान व बंगाल) (देखें पृष्ठ 103)	२:२४:०४:१९	5:35	19:31
३४:४८	६	शनि	१९	५५	उ.भा.	६०	००	शोभ	३८	२५	व	१९	५५	20	19	11	२८	मीन	भ. १९:५५ से ५२:४३ तक,	२:२५:०१:३३	5:36	19:31
३४:४५	७	रवि	२५	३०	उ.भा.	६	४५	अति	४०	३८	ब	२५	३०	21	20	12	२९	मीन	**बुध मार्गी २०:४५ (13:54)**, शीतला-सप्तमी, गण्डमूल 8:18 बाद	२:२५:५८:४५	5:36	19:30
३४:४३	८	चन्द्र	३१	२३	रेव.	१४	३	सुक	४२	५५	कौ	३१	२३	22	21	13	३०	मे.१४:०३	**पंचक समाप्त १४:०३ (11:14)**, गण्डमूल विचार	२:२६:५६:०१	5:37	19:30
३४:४३	९	मंग	३७	००	अश्वि	२१	१५	धृति	४४	५८	तै	४	१२	23	22	14	३१	मेष	गण्डमूल 14:07 तक, स. सि. यो. 14:07 तक	२:२७:५३:१४	5:37	19:30
३४:३८	१०	बुध	४१	४५	भर.	२७	४३	शूल	४६	१८	व	९	२३	24	23	15	३२	वृ.४४:१३	भ. ९:२३ से ४१:४५ तक,	२:२८:५०:३१	5:38	19:29
३४:३५	११	गुरु	४५	१५	कृति.	३३	५	गंड	४६	३८	ब	१३	३०	25	24	16	श्रा.	वृष	**कामिका एकादशी व्रत, सूर्य कर्क में १२:४८, श्रावण संक्रान्ति (A)**	२:२९:४७:४८	5:39	19:29
३४:३३	१२	शुक्र	४७	१८	रोहि.	३७	३	वृद्धि	४५	४८	कौ	१६	१७	26	25	17	२	वृष		३:००:४५:०३	5:39	19:28
३४:३०	१३	शनि	४७	३५	मृग.	३९	१८	ध्रुव	४६	८	ग	१७	२७	27	26	18	३	मि.८:२३	भ. ४७:३५ से, **शनि प्रदोष व्रत**	३:०१:४२:२२	5:40	19:28
३४:२८	१४	रवि	४६	१५	आर्द्रा	४०	००	व्या.	४०	१०	वि	१६	५५	28	27	19	४	मिथुन	भ. १६:५५ तक, सूर्य पुष्य में ४२:१८, **श्रावण-शिवरात्रि व्रत**(देखें पृष्ठ–150)	३:०२:३९:३८	5:40	19:27
३४:२५	३०	चन्द्र	४३	२५	पुन.	३९	१०	हर्ष	३५	२८	च	१४	५०	29	28	20	५	क.२४:३०	**श्रावण (हरियाली) अमावस, सोमवती अमावस**, मेला हरिद्वार- **(B)**	३:०३:३६:५७	5:41	19:27

(A) मु. ३०, पुण्यकाल सं. सूर्योदय से सायं 17:10 तक, मंगल रेवती में ५४:४३ (27:32), **निरयण दक्षिणायन प्रारम्भ** **(B)** **-प्रयागराजादि, तीर्थस्नान माहात्म्य**

चन्द्रे अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः 5:30 बजे, 13 जुलाई

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२	११	११	२	८	१	९	२	८
२६	२७	१४	११	२८	१६	५	३	३
५५	१०	३२	२२	२२	२७	५	४९	४९
४४	०	१५	१७	१४	८	८	५५	५५
57 13	713 22	33 1	6 3	7 44	33 22	4 23	3 11	3 11
पुन ३	रेव ४	उभा ४	आर्द्रा २	उषा १	रोहि २	उषा ३	मृग ४	मूल २
०	०	मा	मा	व	मा	व	व	व
०	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रातः 5:30

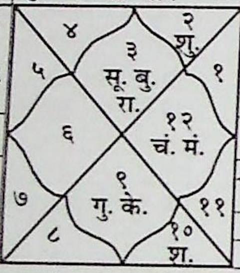

चन्द्रे अमावस्यायां ग्रह स्पष्ट प्रातः 5:30 बजे, 20 जुलाई

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	२	११	२	८	१	९	२	८
३	२४	१८	१३	२७	२०	४	३	३
३६	२२	१७	५८	२८	४६	३४	२७	२७
३०	४३	१६	५८	१२	७	१४	३९	३९
57 17	817 22	30 54	44 16	7 39	41 26	4 27	3 11	3 11
पुष्य १	पुन २	रेव १	आर्द्रा ३	उषा १	रोहि ४	उषा ३	मृग ४	मूल २
०	०	मा	मा	व	मा	व	व	व
०	अ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अमावस, प्रातः 5:30

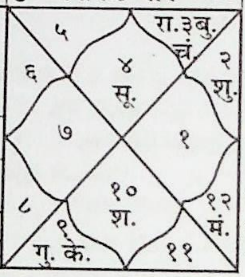

श्रावण कृष्ण पक्षफल–

श्रावण मास में भगवान् शिव की प्रसन्नता हेतु प्रत्येक सोमवार का फलाहार व्रत रखकर बिल्वपत्र, पंचामृत, गंगाजल, दूध अक्षत, पुष्पों, फलादि के साथ शिवपूजन एवं पंचाक्षरी मन्त्रों के साथ भगवान् शिव का अभिषेक, '**ॐ नमः शिवाय**' मन्त्र का जप, श्रावण मास माहात्म्य और श्रीशिव महापुराण का श्रवण एवं पठन करने से अभीष्ट फलों की प्राप्ति होती है। श्रावण के प्रत्येक मंगलवार को श्रीमङ्गलागौरी का व्रत, पूजनादि विधिपूर्वक करने से स्त्रियों को विवाह, सन्तान, सौभाग्यादि सुखों की प्राप्ति होती है। **कामिका एकादशी** (16 जुला.) का व्रत रखकर मंजरी सहित तुलसीदल से भगवान् श्रीकृष्ण (या विष्णु) का पूजन करना चाहिए। घी का दीपक प्रज्वलित रखें तथा ब्राह्मणों को यथाशक्ति दान करने से सुखैश्वर्य साधनों की प्राप्ति होती है। **हरियाली अमावस** (20 जुला.) **सोमवती** होने से इस दिन गंगादि तीर्थस्थान पर स्नान, जप, श्राद्ध, तर्पणादि एवं दक्षिणा सहित ब्राह्मण भोजन व दानादि करने का विशेष माहात्म्य कहा गया है। (देखें पृष्ठ 11)।। ***श्रावण संक्रान्ति***–16 जुलाई, **बृहस्पतिवार** को प्रातः 10^{घं.}–46^{मिं.} पर कन्या लग्न में प्रवेश करेगी। इस सं. का पुण्यकाल सूर्योदय बाद से सायं 17^{घं.}–10^{मिं.} तक रहेगा। वारानुसार नन्दा तथा नक्षत्रानुसार मिश्रा नामक यह सं. ब्राह्मणों तथा पशुओं के लिए सुखकर रहेगी। सं. कुण्डली में **सूर्य-शनि मध्य समसप्तक** दृष्टि सम्बन्ध तथा मंगल पर शनि की दृष्टि रहने से कहीं प्राकृतिक आपदाओं एवं कहीं दुर्भिक्ष आदि के कारण महंगाई में वृद्धि तथा राजनेताओं में परस्पर वाद-विवाद रहे। किसी नेता के अपदस्थ या मृत्यु का समाचार भी मिले। केन्द्रीय सरकार के मन्त्रीमण्डल में परिवर्तन एवं उलटफेर के संकेत हैं। यद्यपि गुरुवार की संक्रान्ति होने से देश में धर्म-कर्म का आचरण बढ़ेगा। देश में धान्य आदि अनाज की पैदावार अच्छी हो तथा लोगों में सुख-साधनों का विस्तार हो। ***सं. राशिफल***–वृष, कर्क, कन्या, तुला, वृश्चिक, मकर तथा मीन राशि वाले जातकों के लिए लाभकारी रहेगी।

आकाश लक्षण–पक्ष में भारत के उत्तर-पूर्वी तथा उत्तरी राज्यों में कहीं बहुत अधिक वर्षा से बाढ़ तथा कहीं अल्प वर्षा से दुर्भिक्ष की स्थिति रहे।

वि. संवत् २०७७, श्रावण शुक्ल पक्ष शाक : १९४२

सन् 2020 ई. (ता. 21 जुलाई से 3 अगस्त तक), हिजरी सन् 1441
सूर्य दक्षिणायन, उत्तर गोल, वर्षा ऋतुः

दिनमान	तिथि	वार	समाप्ति काल		नक्षत्र	समाप्ति काल		योग	समाप्ति काल		करण	समाप्ति काल		तारीखें				चंद्र राशि प्रवेश		सूर्योदय कालिक सूर्यस्पष्ट	भा.स्टैं.टा. जालन्धर	
घटी/पल			घटी	पल		घटी	पल		घटी	पल		घटी	पल	श्रा. प्र.	जिल्हिज	जुलाई	श्राव. प्र.	घड़ी–पल	प्रातः बुध पूर्वक्षितिजासन्न तथा शुक्र पूर्वक्षितिज से ऊपर, मंगल याम्योत्तरवृत्त में, शनि पश्चिमक्षितिज में होगा। गुरु सायंकाल पूर्व में उदित होकर सारी रात दृश्य होगा।	रा. अं. क. वि.	सूर्योदय घं.मिं.	सूर्यास्त घं.मिं.
३४:२३	१	मंग	३९	२०	पुष्य	३७	३	वज्र	२९	४३	किं	११	२३	30	29	21	६	कर्क	श्रावण शुक्लपक्ष प्रारम्भ, **मेला छिन्नमस्तिका (चिन्तपूर्णी)** प्रारम्भ	३:०४:३४:१४	5:41	19:26
३४:२०	२	बुध	३४	१३	आश्ले	३३	५५	सिद्धि	२३	३	बा	६	४७	31	30	22	७	सिं.३३:५५	**चन्द्रदर्शन**, मु. ३०, राहु मृग. ३ केतु मूल १ में २३:४५, सूर्य सायन **(A)**	३:०५:३१:३२	5:42	19:26
३४:१५	३	गुरु	२८	२३	मघा	३०	३	व्य.	१५	४८	तै	१	१८	श्रा	जि	23	८	सिंह	भ. ५५:१७ से, **मधुस्रवा-हरियाली-सिंधारा तीज**, शुक्र मृग. में **(B)**	३:०६:२८:५५	5:43	19:25
३४:१५	४	शुक्र	२२	१०	पू.फा.	२५	५०	वरी	८	८	वि	२२	१०	2	2	24	९	कं.३९:४५	भ. २२:१० तक, दूर्वा गणपति व्रत, वरद्–चतुर्थी	३:०७:२६:१४	5:43	19:25
३४:१०	५	शनि	१५	४८	उ.फा.	२१	२८	परि शिव	० ५२	२० ३३	बा	१५	४८	3	3	25	१०	कन्या	**नाग-पञ्चमी, श्रीकल्कि-जयन्ती** (देखें पृष्ठ 18)	३:०८:२३:३५	5:44	19:24
३४:०८	६	रवि	९	३०	हस्त	१७	१०	सिद्ध	४४	५५	तै	९	३०	4	4	26	११	तु.४५:१०	बुध पुन. में १२:०३, वक्री गुरु पू.षा. ४ में २३:५५, **(C)**	३:०९:२०:५७	5:45	19:24
३४:०५	७	चन्द्र	३	३३	चित्रा	१३	१८	साध्य	३७	४०	व	३	३३	5	5	27	१२	तुला	भ. ३:३३ से ३०:४८ तक, गोस्वामी तुलसीदास जयन्ती, **श्रीदुर्गाष्टमी(D)**	३:१०:१८:१७	5:45	19:23
अवम्	८	चन्द्र	५८	३	००	०	०	००	०	०	०	०	०	०	०	००	०	००	**अष्टमी तिथि का क्षय** ०० ००	०:००:००:००	०:००	०:००
३४:००	९	मंग	५३	५	स्वा.	९	५०	शुभ	३०	५०	बा	२५	३४	6	6	28	१३	वृ.५२:३८		३:११:१५:४०	5:46	19:22
३३:५८	१०	बुध	४८	४८	विशा.	६	५८	शुक्ल	२४	३०	तै	२०	५७	7	7	29	१४	वृश्चिक		३:१२:१३:००	5:46	19:21
३३:५५	११	गुरु	४५	८	अनु.	४	४५	ब्रह्म	१८	४३	व	१६	५८	8	8	30	१५	वृश्चिक	भ. १६:५८ से ४५:०८ तक, **पवित्रा एकादशी व्रत**, गण्डमूल 7:41 बाद	३:१३:१०:२३	5:47	19:21
३३:५०	१२	शुक्र	४२	१८	ज्ये.	३	१३	ऐन्द्र	१३	३०	ब	१३	४३	9	9	31	१६	धनु ३:१३	**शुक्र मिथुन में ५८:२३ (29:09)**, गण्डमूल विचार	३:१४:०७:४७	5:48	19:20
३३:४८	१३	शनि	४०	१८	मूल	२	३०	वैधृ	८	५८	कौ	११	१८	10	10	अग	१७	धनु	**शनि प्रदोष व्रत, बुध कर्क में ५४:१८**, लोकमान्य तिलक **(E)**	३:१५:०५:१०	5:48	19:19
३३:४३	१४	रवि	३९	१०	पू.षा.	२	३८	विष्क	५	८	ग	९	४४	11	11	2	१८	म.१७:५०	भ. ३९:१० से, सूर्य आश्लेषा में ३९:०५ (21:27)	३:१६:०२:३५	5:49	19:18
३३:४०	१५	चन्द्र	३९	८	उ.षा.	३	४३	प्रीति आयु	२ ५९	०० ५०	वि	९	९	12	12	3	१९	मकर	भद्रा ९:०९ तक, **श्रावण-पूर्णिमा, रक्षाबन्धन (राखी)** (भद्रा बाद)**(F)**	३:१७:००:००	5:50	19:18

(A) सिंह में २१:०३, **(B)** ३५:३८, शक श्रावण प्रारम्भ, जिल्हिजा (मुस्लि.) मास प्रारम्भ **(C)** शीतला सप्तमी (मध्याह्न-व्यापिनी) **(D)** (7:10 बाद), **मेला चिन्तपूर्णी-चामुण्डादेवी** (हि.प्र.) **समाप्त** **(E)** स्मरणोत्सव, अगस्त मास प्रारम्भ **(F)** (देखें पृष्ठ 104), बुध पुष्य में ४६:३०, यजुर्वेदि-अथर्ववेदि उपाकर्म, हयग्रीव-जयन्ती, **ऋषि-तर्पण**, गायत्री-जयन्ती, दर्शन श्रीअमरनाथ गुफा (काश्मीर), संस्कृत-दिवस, **श्रावणी उपाकर्म** (देखें पृष्ठ 105), **श्रीसत्यनारायण व्रत**

चन्द्रे सप्तम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः 5:30 बजे, 27 जुलाई

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	६	११	२	८	१	९	२	८
१०	३	२१	२०	२६	२५	४	३	३
१७	२२	४६	५९	३५	५५	३	५	५
४०	३०	२२	३२	३८	३०	१२	२४	२४
57	850	28	80	7	47	4	3	3
21	6	25	19	17	34	23	11	11
पुष्य ३	चित्रा ४	रेव २	पुन १	पूषा ४	मृग १	उषा ३	मृग ३	मूल १
०	०	मा	मा	व	मा	व	व	व
०	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रातः 5:30

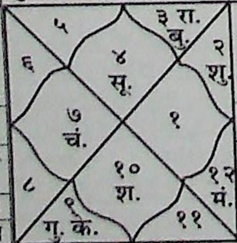

चन्द्रे पूर्णिमायां ग्रह स्पष्ट प्रातः 5:30 बजे, 3 अगस्त

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	९	११	३	८	२	९	२	८
१६	९	२४	१	२५	१	३	२	२
५९	१	५६	५४	४६	४३	३२	४३	४३
१३	१२	५५	३	२५	३७	५३	८	८
57	786	25	108	6	52	4	3	3
25	16	32	55	39	23	15	10	10
आश्ले १	उषा २	रेव ३	पुन ४	पूषा ४	मृग ३	उषा ३	मृग ३	मूल १
०	०	मा	मा	व	मा	व	व	व
०	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. पूर्णिमा, प्रातः 5:30

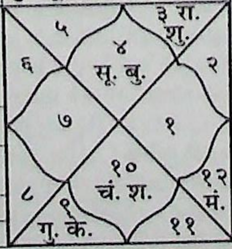

श्रावण शुक्ल पक्षफल–

इस पक्ष की प्रतिपदा (21 जुला.) से अष्टमी तिथि (27 जुला.) तक **माता छिन्नमस्तिका (चिन्तपूर्णी), माता ज्वालामुखी एवं चामुण्डा** (कांगड़ा) में जागरण, कीर्तन, लंगर आदि सम्बन्धी भव्य मेले आयोजित होते हैं। ता. 23 जुला. को **सिंघारा तीज** के दिन सुहागिन स्त्रियां झूले झूलती हुई श्रावण मलहार गीत गाती हैं। **नाग-पंचमी** (25 जुला.) को अपने गृह-द्वार की दहलीज़ के दोनों ओर गोबर से सर्पाकृति बनाकर उनका दूध, दूर्वा, गन्ध, पुष्प, अक्षत, लड्डुओं सहित पूजा करके '**ॐ कुरुकुल्ये हुँ फट् स्वाहा**' मन्त्र का 3 माला जप व नागस्तोत्र का पाठ करने से सर्प-विष का भय नहीं होता। ता. 3 अग. को **श्रावण पूर्णिमा** के दिन भाई-बहिन के पवित्र सम्बन्धों का पर्व रक्षा-बन्धन होगा। भद्रा प्रातः 9:29 (घं.मिं.) तक व्याप्त रहेगी। शास्त्रनियम अनुसार रक्षा-बन्धन का पर्व भद्रा बाद 9:29 के बाद ही परम्परानुसार मनाना शुभ होगा। ***रक्षा-सूत्र बन्धन मन्त्र*–येन बद्धो बली राजा दानवेन्द्रो महाबलः। तेन त्वां अनुबध्नामि रक्षे मा चल मा चल।।** ***ग्रहगोचर***–पक्ष में सूर्य-शनि मध्य समसप्तक दृष्टि सम्बन्ध एवं च मंगल पर शनि की विशेष दृष्टि रहने से वैश्विक एवं देश के राजनैतिक पटल पर विशेष घटनाप्रद समय रहेगा। राजनेताओं के मध्य परस्पर टकराव व विरोध होंगे। सीमाओं पर युद्धमय वातावरण बनेगा। ता. 1 अग. से गुरु-शुक्र मध्ये समसप्तक योग भी होने से उ.प्र., म.प्र., बिहार, असम तथा जम्मू-कश्मीर के पश्चिमोत्तर भाग में हिंसा, राजनीतिक टकराव, उपद्रव, आतंकी, विस्फोटक व हिंसक घटनाएं घटित होने के योग हैं–'**यदा सौरि भौमे सुरराजमन्त्री-भार्गवश्च यदैक राशौ समसप्तके वा। अयोध्या मध्यदेशे लंकापुरे पूर्वस्यां च क्षुधाभयं शस्त्रं करोति।।** ***आकाश लक्षण***–पंजाब, हरि., हि.प्र., जम्मू-का., दिल्ली, राजस्थान के उत्तरी भागों में खण्ड वर्षा के ही योग हैं। श्रावण शु. ७ को यदि वर्षा हो, तो आगामी मास सुभिक्ष के संकेत हैं। धान्य सस्ते होंगे।

वि. संवत् २०७७, भाद्रपद कृष्ण पक्ष शाक: १९४२

सन् 2020 ई. (ता. 4 अगस्त से 19 अगस्त तक), हिजरी सन् 1441
सूर्य दक्षिणायन, उत्तर गोल, वर्षा ऋतु:

प्रात: पूर्वक्षितिजासन्न बुध 5 अग. को अस्त हो जाएगा। शुक्र पूर्वक्षितिज से कुछ ऊपर, मंगल याम्योत्तरवृत्त में होगा। सायं शनि पूर्वकपाल में तथा गुरु याम्योत्तरवृत्त से पूर्व में होगा।

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	समाप्ति काल घड़ी	समाप्ति काल पल	नक्षत्र	समाप्ति काल घड़ी	समाप्ति काल पल	योग	समाप्ति काल घड़ी	समाप्ति काल पल	करण	समाप्ति काल घड़ी	समाप्ति काल पल	तारीखें श्राव. शक	तारीखें ज़िल्हि. मु.	तारीखें अगस्त	तारीखें श्रावण प्र.	चंद्र राशि प्रवेश घड़ी–पल		सूर्योदय कालिक सूर्यस्पष्ट रा. अं. क. वि.	भा.स्टैं.टा. जालन्धर सूर्योदय घं. मिं.	भा.स्टैं.टा. जालन्धर सूर्यास्त घं. मिं.
३३:३८	१	मंग.	४०	१३	श्रव.	५	५३	सौभा	५८	३३	बा	९	४१	13	13	4	२०	कुं.३७:२३	**ऋक्-उपाकर्म** (देखें पृष्ठ 18), **पंचक प्रारम्भ ३७:२३**, गायत्री-जपम्	३:१७:५७:२५	5:50	19:17
३३:३३	२	बुध	४२	३०	धनि.	९	८	शोभ	५८	१०	तै	११	२२	14	14	5	२१	कुम्भ	**बुध पूर्व में अस्त ०:१० (5:55)**	३:१८:५४:५४	5:51	19:16
३३:२८	३	गुरु	४५	५८	शत.	१३	३५	अति	५८	४३	व	१४	१४	15	15	6	२२	कुम्भ	भ. १४:१४ से ४५:५८ तक, वक्री शनि उ.षा. २ में ३:०३, कज्जली तृतीया	३:१९:५२:२२	5:52	19:15
३३:२५	४	शुक्र	५०	३८	पू.भा.	१९	१३	सुक	६०	००	बव	१८	१८	16	16	7	२३	मी. २:४३	**श्रीगणेश (बहुला) चतुर्थी व्रत** (देखें पृष्ठ 13–16), स.सि.यो.	३:२०:४९:५०	5:52	19:14
३३:२०	५	शनि	५६	५	उ.भा.	२५	४८	सुक	०	८	कौ	२३	२२	17	17	8	२४	मीन	शुक्र आर्द्रा में ३०:१० (17:57), गण्डमूल 16:12 बाद	३:२१:४७:२२	5:53	19:13
३३:१८	६	रवि	६०	००	रेव.	३३	३	धृति	२	१०	गर	२९	४	18	18	9	२५	मे. ३३:०३	**पंचक समाप्त ३३:०३, चन्दन षष्ठी व्रत,** चन्द्रोदय 22:42 (जालन्धर)**(A)**	३:२२:४४:५२	5:53	19:12
३३:१३	६	चन्द्र	२	३	अश्वि	४०	३०	शूल	४	३०	व	२	३	19	19	10	२६	मेष	भ. २:०३ से ३५:०२ तक, बुध आश्ले. में ३४:४८, शीतला सप्तमी व्रत**(B)**	३:२३:४२:२६	5:54	19:11
३३:०८	७	मंग	८	००	भर.	४७	३५	गंड	६	५०	ब	८	००	20	20	11	२७	मेष	**श्रीकृष्ण जन्माष्टमी व्रत (स्मार्त)** गृहस्थियों के लिए (देखें पृष्ठ 18)	३:२४:४०:०२	5:55	19:10
३३:०८	८	बुध	१३	२५	कृति	५३	४८	वृद्धि	८	४५	कौ	१३	२५	21	21	12	२८	वृ. ४:१५	**श्रीकृष्ण जन्माष्टमी व्रत (वैष्णव)**	३:२५:३७:३६	5:55	19:10
३३:०३	९	गुरु	१७	३८	रोहि.	५८	३५	ध्रुव	९	४५	गर	१७	३८	22	22	13	२९	वृष	भ. ४८:५६ से, **श्रीगुग्गा-नवमी, गोकुलाष्टमी, नन्दोत्सव**	३:२६:३५:१५	5:56	19:09
३२:५८	१०	शुक्र	२०	१३	मृग	६०	००	व्या.	९	३३	वि	२०	१३	23	23	14	३०	मि.३०:२०	भ. २०:१३ तक,	३:२७:३२:५४	5:57	19:08
३२:५३	११	शनि	२१	००	मृग.	१	३८	हर्ष	७	५८	बा	२१	००	24	24	15	३१	मिथुन	**अजा एकादशी व्रत, भारत स्वतन्त्रता दिवस (74वाँ)**	३:२८:३०:३३	5:57	19:06
३२:४८	१२	रवि	१९	४३	आर्द्रा	२	४३	वज्र	४	४५	तै	१९	४३	25	25	16	भा.	क.४७:१८	**प्रदोष व्रत, सूर्य** मघा १ **सिंह में ३३:००, भाद्रपद संक्रान्ति,** मु. ४५**(C)**	३:२९:२८:१६	5:58	19:05
३२:४३	१३	चन्द्र	१६	३३	पुन पुष्य	१ ५९	५३ २०	सिद्धि व्य.	० ५३	२ ५०	व	१६	३३	26	26	17	२	कर्क	भ. १६:३३ से ४४:०८ तक, **बुध** मघा १ **सिंह में ६:१५,** मासशिवरात्रि**(D)**	४:००:२५:५९	5:59	19:04
३२:४०	१४	मंग	११	४३	आश्ले	५५	२३	वरी.	४६	२८	श	११	४३	27	27	18	३	सिं.५५:२३	**कुशाग्रहणी अमावस**–'ॐ हुं फट् स्वाहा' इहमंत्रेण कुशोत्पाटनम् **(E)**	४:०१:२३:४३	5:59	19:03
३२:३५	३०	बुध	५	३०	मघा	५०	१८	परि	३८	८	ना	५	३०	28	28	19	४	सिंह	**भाद्रपद अमावस**, लोहार्गल यात्रा (स्नान), रानी सती मेला **(F)**	४:०२:२१:२९	6:00	19:02

(A) हल-षष्ठी **(B)** पुत्र-व्रत, गण्डमूल 22:06 तक **(C)** पुण्यकाल सं. दुपै. 12:46 बाद, **वत्स द्वादशी (पूजा), मंगल** अश्वि १ **मेष में ३१:२३** **(D)** व्रत, अघोरा चतुर्दशी, कैलाश यात्रा प्रारम्भ–2 दिन **(E)** (देखें पृष्ठ 19), पिठोरी अमावस, पितृकार्येषु अमावस **(F)** (झुंझुनूं-राजस्थान), गण्डमूल 26:07 तक

बुधे अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः 5:30 बजे, 12 अगस्त

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	०	११	३	८	२	९	२	८
२५	२८	२८	१९	२४	९	२	२	२
३६	५६	२९	३२	५०	५५	५६	१४	१४
३६	४३	२३	१५	३८	१३	३	३२	३२
57 36	726 20	21 00	123 7	5 34	57 9	3 53	3 11	3 11
श्ले. ३	कृति १	रेव ४	श्ले. १	पूषा ४	आर्द्रा १	उषा २	मृग ३	मूल १
०	०	मा	मा	व	मा	व	व	व
०	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रातः 5:30

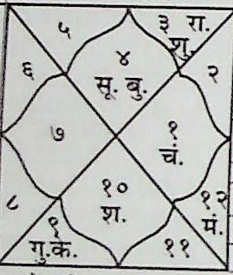

बुधे अमावस्यायां ग्रह स्पष्ट प्रातः 5:30 बजे, 19 अगस्त

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४	४	०	४	८	२	९	२	८
२	०	०	३	२४	१६	२	१	१
२०	४९	४३	४५	१४	४४	२९	५२	५२
१७	३०	५०	३०	४७	९	५८	१६	१६
57 46	874 52	16 42	118 42	4 30	59 59	3 30	3 10	3 10
मघा १	मघा १	अश्वि १	मघा २	पूषा ४	आर्द्रा ४	उषा २	मृग ३	मूल १
०	०	मा	मा	व	मा	व	व	व
०	अ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अमावस, प्रातः 5:30

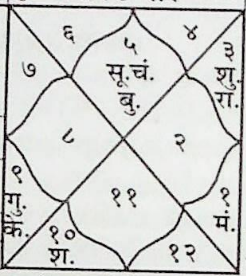

भाद्रपद कृष्ण पक्षफल–

इस पक्ष में **श्रीगणेश बहुला चतुर्थी** (7 अग.) को व्रत रखकर सायंकाल को श्रीगणेश का लड्डुओं सहित पूजन करने तथा चन्द्रोदय होने पर अर्घ्य देने से अभीष्ट सुखों की प्राप्ति होती है। ता. 9 अग. को **चन्दन षष्ठी** का व्रत रखकर सूर्य व चन्द्रमा की पूजा करने से धन, सन्तति एवं सौभाग्य की वृद्धि होती है। **श्रीकृष्ण-जन्माष्टमी का व्रत 11 अगस्त, मंगलवार को ग्राह्य एवं मान्य होगा।** इस दिन प्रात: 9 बजकर 07 मिनट बाद सप्तमी विद्धा अष्टमी स्मार्त्तानुसार अर्द्धरात्रि व्यापिनी होने से प्रशस्त होगी। जबकि 12 अगस्त, बुधवार को अष्टमी तिथि दोपहर 11घं. 17मिं. तक रही रहेगी (देखें पृष्ठ 18)। **गोकुलाष्टमी एवं नन्दोत्सव** पर्व ब्रज में रोहिणी नक्षत्र के योग से ता. 13 अग. को होंगे। वत्स-द्वादशी (16 अग.) को प्रात: बछड़े सहित गाय का पूजन करके मूंग-मोठ और बाजरा सहित भोजन का भोग लगाते हैं। इसदिन गाय का दूध, दही या गोघृत से परहेज़ करके भैंस का दूध प्रयोग में लाते हैं। **कुशाग्रहणी अमावस** (18 अग.) को देव-पितृ कार्यों के लिए पूर्व या उत्तर दिशा में बैठकर मन्त्रपूर्वक कुशा ग्रहण करनी चाहिए। ***भाद्रपद संक्रान्ति***–ता. 16 अग., रविवार की रात्रि 7 बजकर 10 मिनट (19:10) पर कुम्भ लग्न में प्रवेश करेगी। वारानुसार घोरा तथा नक्षत्रानुसार महोदरी नामक यह सं. कपटी एवं दुष्ट लोगों के लिए लाभप्रद रहेगी। ४५ मुहूर्त्ति इस सं. का पुण्यकाल दुपै. 12:46 बाद प्रारम्भ होगा। ***लोक-भविष्य***–रविवारी सं. होने से राजनैतिक क्षेत्रों में अस्थिरता एवं अशान्ति होने के संकेत हैं। कहीं अनाज की कमी के कारण दुर्भिक्ष एवं अराजकता व्याप्त हो। राजनेताओं में परस्पर विग्रह एवं टकराव पैदा होंगे। अनाज, घी, तैल आदि उपभोग्य पदार्थों में अत्यधिक तेजी के कारण प्रजा पीड़ित रहे। ***संक्रान्ति फल***–मेष, वृष, सिंह, [illegible]

वि. संवत् २०७७, **भाद्रपद शुक्ल पक्ष** शाक : १९४२

सन् 2020 ई. (20 अगस्त से 2 सितं. तक), हिजरी सन् 1441–42
सूर्य दक्षिणायन, उत्तर गोल, वर्षा–शरद् ऋतुः

प्रातः शुक्र पूर्वक्षितिज में ऊपर उठा हुआ दिखेगा, मंगल याम्योत्तरवृत्त में होगा। सायं शनि पूर्वकपाल में तथा गुरु याम्योत्तरवृत्त के पास देखा जा सकता है। ता. 1 सितं. से बु. भी पश्चिम में दिखेगा।

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	समाप्ति काल		नक्षत्र	समाप्ति काल		योग	समाप्ति काल		करण	समाप्ति काल		तारीखें				चंद्र राशि प्रवेश घड़ी–पल		सूर्योदय कालिक सूर्यस्पष्ट	भा.स्टें.टा. जालन्धर	
			घटी	पल		घटी	पल		घटी	पल		घटी	पल	श्राव. शक	जिलहि. मु.	अगस्त	भाद्र. प्रवि.			रा. अं. क. वि.	सूर्योदय घं.मिं.	सूर्यास्त घं.मिं.
अवम्	१	बुध	५८	२०	००	०	०	००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	००	**भाद्रपद शुक्ल प्रतिपदा का क्षय** ०० ००	०:००:००:००	००	००
३२:३३	२	गुरु	५०	३५	पू.फा.	४४	३८	शिव	२९	१३	बा	२४	२८	29	29	20	५	कुं.५८:०८	चन्द्रदर्शन, मु. ३०	४:०३:१९:१५	6:00	19:01
३२:२८	३	शुक्र	४२	३५	उ.फा.	३८	४०	सिद्ध	२०	००	तै	१६	३५	30	मु.	21	६	कन्या	**हरितालिका तृतीया, गौरी तृतीया**, श्रीवराह-जयन्ती, मुहर्रम (मु.) **(A)**	४:०४:१७:१५	6:01	19:00
३२:२३	४	शनि	३४	५०	हस्त	३२	५३	साध्य	१०	४८	व	८	४३	31	2	22	७	कन्या	भ. ८:४३ से ३४:५० तक, **सिद्धि विनायक व्रत**, शुक्र पुन. में **(B)**	४:०५:१४:५५	6:02	18:59
३२:२०	५	रवि	२७	३८	चित्रा	२७	४०	शुभ शुक्ल	१ ५३	५५ ४०	ब	१	१४	भा.	3	23	८	तु. ०:१३	**ऋषि-पंचमी व्रत**, सम्वत्सरी महापर्व (जैन), बुध पू.फा. में **(C)**	४:०६:१२:४५	6:02	18:58
३२:१५	६	चन्द्र	२१	१३	स्वा.	२३	१३	ब्रह्म	४६	५	तै	२१	१३	2	4	24	९	तुला	सूर्य षष्ठी व्रत, **मुक्ताभरण/सन्तान सप्तमी व्रत** (षष्ठी विद्धा) (देखें पृष्ठ 19)	४:०७:१०:३९	6:03	18:57
३२:१०	७	मंग	१५	४८	विशा.	११	५०	ऐन्द्र	३९	२५	व	१५	४८	3	5	25	१०	वृ. ५:३५	भ. १५:४८ से ४३:३९ तक, **दूर्वाष्टमी व्रत-श्रीराधाष्टमी** (देखें पृष्ठ 19)**(D)**	४:०८:०८:३१	6:03	18:55
३२:०५	८	बुध	११	३०	अनु.	१७	३०	वैधृ	३३	४०	ब	११	३०	4	6	26	११	वृश्चिक	दधीची जयन्ती, गण्डमूल 13:04 बाद **(D)** श्रीमहालक्ष्मी व्रत प्रारम्भ (देखें पृष्ठ20)	४:०९:०६:३६	6:04	18:54
३२:००	९	गुरु	८	२३	ज्ये.	१६	२०	विष्क	२८	५०	कौ	८	२३	5	7	27	१२	ध.१६:२०	**श्रीचन्द्र नवमी (उदासीन सम्प्रदाय)**, श्रीभागवत् सप्ताह पाठारम्भ	४:१०:०४:२२	6:05	18:53
३१:५८	१०	शुक्र	६	२५	मूल	१६	२०	प्रीति	२४	५८	ग	६	२५	6	8	28	१३	धनु	भ. ३५:५८ से, गण्डमूल 12:37 तक	४:११:०२:१८	6:05	18:52
३१:५३	११	शनि	५	३०	पू.षा.	१७	२३	आयु	२१	५३	वि	५	३०	7	9	29	१४	म.३२:४८	भ. ५:३० तक, **पद्मा एकादशी व्रत, श्रीवामन-जयन्ती**	४:१२:००:१७	6:06	18:51
३१:५०	१२	रवि	५	४०	उ.षा.	१९	२५	सौभा	१९	३८	बा	५	४०	8	10	30	१५	मकर	**प्रदोष व्रत**, सूर्य पू.फा. में २२:२८ (15:05), स.सि.यो. 13:52 तक	४:१२:५८:१६	6:06	18:50
३१:४३	१३	चन्द्र	६	४५	श्रव.	२२	२३	शोभ	१८	८	तै	६	४५	9	11	31	१६	कुं.५४:१३	**पंचक प्रारम्भ ५४:१३ (27:48)**, बुध उ.फा. में १७:३८, **शुक्र (E)**	४:१३:५६:१७	6:07	18:48
३१:३८	१४	मंग	८	४८	धनि.	२६	१५	अति	१७	२०	व	८	४८	10	12	सितं.	१७	कुम्भ	भ. ८:४८ से ४०:१९ तक, **अनन्त चतुर्दशी व्रत, मेला बाबा सोढल(F)**	४:१४:५४:२०	6:08	18:47
३१:३५	१५	बुध	११	५०	शत.	३१	५	सुक	१७	१८	ब	११	५०	11	13	2	१८	कुम्भ	**भाद्रपद पूर्णिमा** (स्नानदानादि 10:52 तक), **पितृपक्ष (श्राद्ध) प्रारम्भ(G)**	४:१५:५२:२३	6:08	18:46

(A) सं. 1442 हिजरी प्रारम्भ **(B)** १३:१५, **कलंक-चतुर्थी** (चन्द्रदर्शन-निषेध), चन्द्रास्त 21:30 (जालन्धर), **पत्थर चौथ, सामवेदि उपाकर्म**, सूर्य सायन कन्या में 21:16 (घं.मिं.), शरद् ऋतु प्रारम्भ **(C)** ५४:५५ (28:00), शक भाद्रपद प्रारम्भ **(E) कर्क में ४९:४८** (26:02) **(F)** (जालन्धर), प्रोष्ठपदी-महालय श्राद्ध प्रारम्भ, बुध पश्चिम में उदय 6घं.-08मिं., श्रीसत्यनारायण व्रत, **पूर्णिमा का श्राद्ध (G) बुध कन्या में १४:४८, प्रतिपदा तिथि का श्राद्ध**

बुधे अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः 5:30 बजे, 26 अगस्त

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४	७	०	४	८	२	९	२	८
९	१२	२	१७	२३	२३	२	१	१
५	१९	२६	१०	४६	५१	६	३०	३०
४	४१	१८	४४	५१	११	५०	१	१
57	820	11	109	3	62	3	3	3
54	16	48	52	18	16	1	11	11
मघा ३	अनु ३	अश्वि १	पूफा २	पूषा ४	पुन २	उषा २	मृग ३	मूल १
०	०	मा	मा	व	मा	व	व	व
०	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रातः 5:30

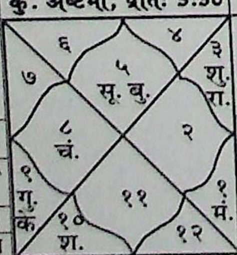

बुधे पूर्णिमायां ग्रह स्पष्ट प्रातः 5:30 बजे, 2 सितम्बर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४	१०	०	४	८	३	९	२	८
१५	१३	३	२९	२३	१	१	१	१
५०	१८	३२	३२	२७	१३	४७	७	७
५२	३९	५१	२७	३६	९	१६	४५	४५
58	735	6	100	2	64	2	3	3
4	44	21	52	1	14	30	10	10
पूफा १	शत २	अश्वि २	उफा १	पूषा ४	पुन ४	उषा २	मृग ३	मूल १
०	०	मा	मा	व	मा	व	व	व
०	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. पूर्णिमा, प्रातः 5:30

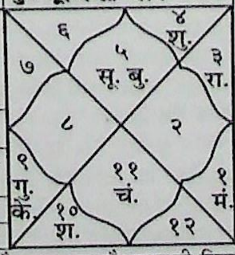

भाद्रपद शुक्ल पक्षफल–

इस पक्ष में **हरितालिका तृतीया** (21 अगस्त) का व्रत तथा शिव-गौरी की पूजा करना विशेषकर सौभाग्यवती विवाहित स्त्रियों के लिए पति, पुत्र-सन्तति एवं पौत्रादि सुखों को बढ़ाने वाला होता है। **सिद्धिविनायक** (22 अग.) का व्रत रखकर श्रीगणेश जी के बीजमन्त्र **(ॐ गं गणपतये नमः)** तथा **श्रीगणेश** स्तोत्र का पाठ करना चाहिए। इसी दिन सायंकाल चन्द्रदर्शन करना शुभ नहीं माना जाता। इसीदिन गणेश जी का अवतार हुआ था। ता. **24 अग.** को षष्ठीविद्धा **मुक्ताभरण सन्तान सप्तमी** का व्रत सन्तान सुख की कामना से पति-पत्नी दोनों के द्वारा रखकर भगवान् शिव-पार्वती एवं सूर्य देव की पूजा की जाती है। **ता. 25 अग.** को मध्याह्न-व्यापिनी अष्टमी में श्रीराधा तथा चन्द्रोदय-व्यापिनी अष्टमी से **श्रीमहालक्ष्मी का व्रत** प्रारम्भ करके आश्विन कृ. अष्टमी तक करने का विधान है। यह व्रत सौभाग्यवती स्त्रियां अपने सुहाग व परिवार के सौभाग्य एवं सुख समृद्धि के लिए करती है। ता. 29 अग. को मध्याह्न-व्यापिनी द्वादशी के दिन भगवान् विष्णु के वामन अवतार की पुण्य अवतार तिथि होगी। ता. 1 सितं. को **अनन्त चतुर्दशी** का व्रत रखकर भगवान् विष्णु के अनन्तस्वरूप का ध्यान करते हुए **'ॐ अनन्ताय नमः'** मन्त्रपूर्वक पूजन करना चाहिए। इसीदिन **जालन्धर** में भगवान् शिव के अंशावतार **बाबा सोढल** का भव्य मेला आयोजित होता है। इसी दिन अपराह्ण काल में अपने दिवंगत आत्यमीय पितरों के निमित्त महालय पूर्णिमा का श्राद्ध किया जाएगा। ता. 2 सितं. से पितृपक्ष आरम्भ होगा। प्रतिपदा तिथि का श्राद्ध भी इसी दिन मध्याह्न/अपराह्ण काल में होगा। ***लोक-भविष्य***–चांद्र भाद्रपद मास में पाँच मंगलवारों का समावेश होना सामाजिक एवं राजनीतिक क्षेत्रों के लिए शुभ नहीं। देश में कहीं राज्य परिवर्तन, राजनीतिक पार्टियों में टकराव, साम्प्रदायिक व हिंसक घटनाओं की सम्भावना रहे। किसी प्रमुख नेता के अपदस्थ या आकस्मिक मृत्यु के भी संकेत हैं। ता. 31 अग. तक **गुरु-शुक्र** मध्ये **समसप्तक योग** देश के आर्थिक एवं राजनीतिक पटल पर विरोधाभासी एवं कुछ तनावपूर्ण परिस्थितियां बनाएगा।

आकाश लक्षण–भारत के उत्तर-पश्चिमी भागों में रुक-रुक कर वर्षा के योग हैं, पूर्वी-उत्तरी भारत (बिहार, असम, पूर्वी उ.प्र.) में व्यापक वर्षा एवं बाढ़ के योग हैं।

वि. संवत् २०७७ प्रथम (शुद्ध) आश्विन कृष्ण पक्ष शाक: १९४२

सन् 2020 ई. (ता. 3 से 17 सितंबर तक), हिजरी सन् 1442
सूर्य दक्षिणायन, उत्तर गोल, शरद् ऋतु:

प्रात: शुक्र पूर्वक्षितिज से कुछ ऊपर तथा मंगल याम्योत्तरवृत्त से पश्चिम में होगा। सायंकाल गुरु याम्योत्तरवृत्त से पूर्व में, शनि पूर्वकपाल तथा बुध पश्चिमक्षितिज में दिखेगा।

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	समाप्ति काल घड़ी	समाप्ति काल पल	नक्षत्र	समाप्ति काल घड़ी	समाप्ति काल पल	योग	समाप्ति काल घड़ी	समाप्ति काल पल	करण	समाप्ति काल घड़ी	समाप्ति काल पल	तारीखें भा. राष्ट्र.	तारीखें मुहर्रम	तारीखें सितंबर	तारीखें भाद्र. प्रवि.	चंद्र राशि प्रवेश घड़ी–पल		सूर्योदय कालिक सूर्यस्पष्ट रा. अं. क. वि.	भा.स्टैं.टा. जालन्धर सूर्योदय घं. मिं.	भा.स्टैं.टा. जालन्धर सूर्यास्त घं. मिं.
३१:३०	१	गुरु	१५	४५	पू.भा.	३६	४५	धृति	१७	५८	कौ	१५	४५	12	14	3	१९	मी.२०:१५	**प्रथम (शुद्ध) आश्विन कृष्णपक्ष प्रारम्भ**, शुक्र पुष्य में ५६:३८ **(A)**	४:१६:५०:३०	6:09	18:45
३१:२५	२	शुक्र	२०	३८	उ.भा.	४३	१८	शूल	१९	१८	ग	२०	३८	13	15	4	२०	मीन	भ. ५३:२६ से, गण्डमूल 23:28 बाद	४:१७:४८:३७	6:09	18:43
३१:२०	३	शनि	२६	१३	रेव	५०	२८	गंड	२१	१३	वि	२६	१३	14	16	5	२१	मे.५०:२८	भ. २६:१३ तक, **पंचक समाप्त ५०:२८, श्रीगणेश चतुर्थी व्रत (B)**	४:१८:४६:४७	6:10	18:42
३१:१५	४	रवि	३२	२०	अश्वि	५८	३	वृद्धि	२३	३३	बा	३२	२०	15	17	6	२२	मेष	वक्री गुरु पू.षा. ३ में ३०:२५, **चतुर्थी का श्राद्ध**, गण्डमूल	४:१९:४४:५९	6:11	18:41
३१:१३	५	चंद्र	३८	४०	भर.	६०	००	ध्रुव	२६	५	कौ	५	३०	16	18	7	२३	मेष	भरणी श्राद्ध, चन्द्र षष्ठी व्रत (देखें पृष्ठ 20), पंचमी का श्राद्ध, गं.मू. 5:24 तक	४:२०:४३:११	6:11	18:40
३१:०५	६	मंग	४४	३८	भर.	५	३५	व्या.	२८	२३	ग	११	३९	17	19	8	२४	वृ.२२:२५	भ. ४४:३८ से, बुध हस्त में २४:१०, **षष्ठी का श्राद्ध**	४:२१:४१:२६	6:12	18:38
३१:०३	७	बुध	४९	४५	कृति.	१२	३८	हर्ष	३०	१०	वि	१७	१२	18	20	9	२५	वृष	भ. १७:१२ तक, **सप्तमी का श्राद्ध, मंगल वक्री 27:50**	४:२२:३९:४२	6:12	18:37
३०:५८	८	गुरु	५३	२५	रोहि.	१८	३५	वज्र	३०	५८	बा	२१	३५	19	21	10	२६	मि.५१:००	**श्रीमहालक्ष्मी व्रत सम्पन्न**, जीवित्पुत्रिका व्रत, **अष्टमी का श्राद्ध**	४:२३:३८:०२	6:13	18:36
३०:५०	९	शुक्र	५५	१५	मृग.	२२	५८	सिद्धि	३०	२५	तै	२४	२०	20	22	11	२७	मिथुन	सौभाग्यवतीनां श्राद्ध, **नवमी का श्राद्ध**, मातृ-नवमी	४:२४:३६:२४	6:14	18:34
३०:४८	१०	शनि	५५	३	आर्द्रा	२५	२८	व्य.	२८	२०	व	२५	९	21	23	12	२८	मिथुन	भ. २५:०९ से ५५:०३ तक, दशमी का श्राद्ध, **गुरु मार्गी 30:12 घं.मिं.**	४:२५:३४:४६	6:14	18:33
३०:४३	११	रवि	५२	३५	पुन.	२५	४८	वरी	२४	३०	ब	२३	४९	22	24	13	२९	क.१०:५३	**इन्दिरा एकादशी व्रत**, सूर्य उ.फा. में ६:५५, एकादशी का श्राद्ध	४:२६:३३:१३	6:15	18:32
३०:४०	१२	चंद्र	४८	८	पुष्य	२४	३	परि	१९	३	कौ	२०	२२	23	25	14	३०	कर्क	संन्यासीनां श्राद्ध, **द्वादशी का श्राद्ध**, गण्डमूल 15:52 बाद	४:२७:३१:३९	6:15	18:31
३०:३३	१३	मंग	४१	५०	अश्ले	२०	२३	शिव	११	५५	ग	१४	५९	24	26	15	३१	सिं.२०:२३	भ. ४१:५० से, **भौम प्रदोष व्रत, त्रयोदशी श्राद्ध**, मघा-श्राद्ध **(C)**	४:२८:३०:०९	6:16	18:29
३०:३०	१४	बुध	३४	१३	मघा	१५	१३	सिद्ध साध्य	३ ५४	३० ५	वि	८	२	25	27	16	आ	सिंह	भ. ८:०२ तक, **सूर्य कन्या में ३२:०८ (19:07), आश्विन संक्रान्ति(D)**	४:२९:२८:४०	6:16	18:28
३०:२५	३०	गुरु	२५	३३	पू.फा.	८	४८	शुभ	४३	५८	ना	२५	३३	26	28	17	२	कं.२२:०५	**आश्विन/महालय अमावस, सर्वपितृ श्राद्ध**, पितृ-विसर्जन, **(E)**	५:००:२७:१४	6:17	18:27

(A) द्वितीया का श्राद्ध (देखें पृष्ठ 20) **(B)** (देखें पृष्ठ 13), तृतीया का श्राद्ध **(C)** (देखें पृष्ठ 20), मासशिवरात्रि व्रत **(D)** मु. ३०, पुण्यकाल सं. दोपहर 12:43 बाद, शुक्र आश्ले. में ३:४०, शस्त्र-विष, दुर्घटनादि (अपमृत्यु) से मृतों का श्राद्ध, गण्डमूल 12:21 तक **(E)** चतुर्दशी/अमावस तिथि का श्राद्ध, बुध चित्रा में २६:१० (16:45), **श्राद्ध समाप्त**, अज्ञात मृत्यु तिथि वालों का श्राद्ध, विश्वकर्मा पूजन

गुरौ अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रात: 5:30 बजे, 10 सितम्बर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४	१	०	५	८	३	९	२	८
२३	१९	४	१२	२३	९	१	०	०
३६	११	०	२५	१६	५३	२९	४२	४२
१८	२२	१	४६	४७	५२	४४	१९	१९
58	738	0	91	0	66	1	3	3
20	15	31	23	29	8	48	11	11
पूफा ४	रोहि ३	अश्वि २	हस्त १	पूषा ३	पुष्य २	उषा २	मृग ३	मूल १
०	०	व	मा	व	मा	व	व	व
०	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रात: 5:30

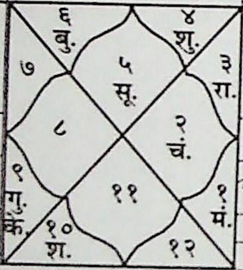

गुरौ अमावस्यायां ग्रह स्पष्ट प्रात: 5:30 बजे, 17 सितम्बर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
५	४	०	५	८	३	९	२	८
०	२३	३	२२	२३	१७	१	०	०
२५	५८	३७	४१	१७	४१	१९	२०	२०
२०	४३	४९	३	२५	४	४	४	४
58	904	6	83	0	67	1	3	3
34	52	41	7	52	31	9	11	11
उफा २	पूफा ४	अश्वि २	हस्त ४	पूषा ३	श्ले. १	उषा २	मृग ३	मूल १
०	०	व	मा	मा	मा	व	व	व
०	अ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अमावस, प्रात: 5:30

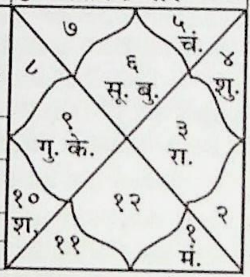

शुद्ध आश्विन कृष्ण पक्षफल–

आश्विन कृष्णपक्ष '**पितृपक्ष**' कहलाता है। पितरों के निमित्त किए जाने वाले प्राय: सभी श्राद्धकर्म पार्वण श्राद्ध कहलाते हैं। श्राद्धों में अपने दिवंगत पूर्वजों की मृत्यु की तिथ्यानुसार तिल, जौं, चावल, कुशा एवं गंगाजल सहित संकल्पपूर्वक पिण्डदान व तर्पणादि करने के बाद ब्राह्मणों को यथाशक्ति भोजन, फल-वस्त्रादि का दान दक्षिणा सहित करता है, उसके पितर संतृप्त होकर साधक को दीर्घायु, आरोग्य, स्वास्थ्य, धन-यश, सम्पदा, मोक्ष आदि सुख प्राप्ति का आशीर्वाद देते हैं–'**आयु पुत्रान् यश: स्वर्गकीर्ति पुष्टि बलं श्रियम्। पशून सौख्यं धन-धान्यं प्राप्नुयात् पितृ पूजनात्।।**' जो व्यक्ति जान बूझकर श्राद्धकर्म नहीं करता, वह शापग्रस्त होकर अनेक प्रकार के कष्टों एवं अभावों से पीड़ित रहता है।

ता. 10 सितं. को (अष्टमी तिथि) **श्रीमहालक्ष्मी एवं जीवित्पुत्रिका का व्रत**-पूजन,सौभाग्यवती स्त्रियाँ पति एवं सन्तान सुख व उनकी दीर्घायु की कामना हेतु करती हैं। ता. 17 सितं. को चतुर्दशी तिथि/अमावस में तथा ज्ञात-अज्ञात तिथियों में मृतजनों (पितरों) के निमित्त श्राद्ध (**सर्वपितृ श्राद्ध**) होगा। **चतुर्दशी तिथि में** सामान्य ढंग से मृतजनों का श्राद्ध भी इसी दिन करने का निर्देश दिया गया है। **शास्त्रों में मध्याह्न विशेषकर अपराहण-काल में श्राद्ध कर्म करने का विधान कहा गया है।** सायंकाल गृहद्वार के बाहर दीप-प्रज्वलित करके श्रद्धापूर्वक पितृ-विसर्जन करना चाहिए। ***आश्विन संक्रान्ति***–ता. 16 सितम्बर, बुधवार को रात्रि 7घं.-07मिं. (19:07) पर मीन लग्न में प्रविष्ट होगी। ३० मुहूर्त्ति इस सं. का पुण्यकाल दोप. 12घं.-43मिं. बाद प्रारम्भ होगा। वारानुसार मन्दाकिनी तथा नक्षत्रानुसार घोरा नामक यह सं. राजनेताओं के लिए लाभप्रद रहेगी। बुधवार की सं. होने से धान्यादि के भाव समान रहे अर्थात् विशेष उतार-चढ़ाव न रहे, परन्तु सामान्य लोगों में पीड़ा व भय की घटनाएं घटित होंगी। *सं. राशिफल*–मेष, वृष, कन्या, वृश्चिक, धनु, मकर व मीन राशि वाले जातकों के लिए यह सं. सुखकर एवं लाभदायक रहेगी। शेष राशि वालों को कुछ परेशानी रहे। *आकाश लक्षण*–[illegible]

सन 2020 ई. (18 सितं. से 1 अक्तूबर तक), हिजरी सन् 1442 सूर्योदय भा.स्टैं.टा.

वि. संवत् २०७७, प्रथम (अधि) आश्विन शुक्ल पक्ष शाक: १९४२

सन् 2020 ई. (18 सितं. से 1 अक्तूबर तक), हिजरी सन् 1442
सूर्य दक्षिणायन, उत्तर–दक्षिण गोल, शरद् ऋतुः

दिनमान	तिथि	वार	समाप्ति काल		नक्षत्र	समाप्ति काल		योग	समाप्ति काल		करण	समाप्ति काल		तारीखें				चंद्र राशि प्रवेश	प्रातः शुक्र पूर्वक्षितिज से ऊपर, मंगल याम्योत्तर–वृत्तासन्न होगा। सायंकाल गुरु याम्योत्तरवृत्त से पूर्व में, शनि याम्योत्तरवृत्त से कुछ पूर्व में तथा बुध पश्चिमक्षितिज के पास होगा।	सूर्योदय कालिक सूर्यस्पष्ट	भा.स्टैं.टा. जालन्धर	
घटी/पल			घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.	भार. शक	मुस्लिम	सितंबर	आश्विन प्र.	घड़ी–पल		रा. अं. क. वि.	सूर्योदय घं.मिं.	सूर्यास्त घं.मिं.
३०:१८	१	शुक्र	१६	२३	उ.फा. हस्त	१ ५४	४५ ३३	शुक्ल	३३	३०	ब	१६	२३	27	29	18	३	कन्या	**आश्विन अधिक मास प्रारम्भ** (देखें पृष्ठ 77), चन्द्रदर्शन, मु. ३० **(A)**	५:०१:२५:५१	6:18	18:25
३०:१५	२	शनि	७	१३	चित्रा	४७	३८	ब्रह्म	२३	१३	कौ	७	१३	28	सफ	19	४	तु.२१:००	गुरु पू.षा. ४ में २९:४० (18:10), सफर (मुस्लि.) मास प्रारम्भ	५:०२:२४:२७	6:18	18:24
अवम्	३	शनि	५८	२३	००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	००	**तृतीया तिथि का क्षय** ०० ००	०:००:००:००	००	००
३०:१०	४	रवि	५०	२३	स्वा.	४१	२३	ऐन्द्र	१३	१५	व	२४	२३	29	2	20	५	तुला	भ. २४:२३ से ५०:२३ तक,	५:०३:२३:०६	6:19	18:23
३०:०५	५	चन्द्र	४३	३०	विशा	३६	१५	वैधृ. विष्क	४ ५६	८ ००	ब	१६	५७	30	3	21	६	वृ.२२:२५		५:०४:२१:४६	6:19	18:21
३०:००	६	मंग	३८	००	अनु.	३२	२८	प्रीति	४९	००	कौ	१०	४५	31	4	22	७	वृश्चिक	**बुध तुला में २६:२८ (16:55)**, सूर्य सायन तुला में 19:02 घं.मिं. **(B)**	५:०५:२०:३१	6:20	18:20
२९:५५	७	बुध	३४	३	ज्ये.	३०	१०	आयु	४३	१८	ग	६	२	आ	5	23	८	ध.३०:१०	भ. ३४:०३ से, **राहु** मृग. २ **वृष, केतु** ज्ये. ४ **वृश्चिक में १६:१८ (C)**	५:०६:१९:१६	6:21	18:19
२९:५३	८	गुरु	३१	४३	मूल	२९	३३	सौभा	३८	५३	वि	२	५३	2	6	24	९	धनु	भ. २:५३ तक, गण्डमूल 18:10 तक	५:०७:१८:००	6:21	18:18
२९:४५	९	शुक्र	३०	५५	पू.षा.	३०	२३	शोभ	३५	३८	बा	१	११	3	7	25	१०	म.४५:५०		५:०८:१६:५०	6:22	18:16
२९:४३	१०	शनि	३१	३५	उ.षा.	३२	४०	अति	३३	३३	तै	१	१५	4	8	26	११	मकर	सूर्य हस्त में ४५:१५ (24:28)	५:०९:१५:३८	6:22	18:15
२९:३८	११	रवि	३३	३०	श्रव.	३६	८	सुक	३२	२५	व	२	३३	5	9	27	१२	मकर	भ. २:३३ से ३३:३० तक, **पुरुषोत्तमा एकादशी व्रत, शुक्र** मघा १ **(D)**	५:१०:१४:३०	6:23	18:14
२९:३०	१२	चन्द्र	३६	२८	धनि.	४०	३५	धृति	३२	५	ब	४	५९	6	10	28	१३	कुं.८:१३	**पंचक प्रारम्भ ८:१३ (9:41)**, बुध स्वाती में ०:०३ (6:25)	५:११:१३:२१	6:24	18:12
२९:२८	१३	मंग	४०	२५	शत.	४६	००	शूल	३२	३०	कौ	८	२७	7	11	29	१४	कुम्भ	**भौम प्रदोष व्रत, शनि मार्गी १०:१५ (10:30)**	५:१२:१२:१८	6:24	18:11
२९:२३	१४	बुध	४५	३	पू.भा.	५२	५	गंड	३३	३०	ग	१२	४४	8	12	30	१५	मी.३५:३०	भ. ४५:०३ से,	५:१३:११:१५	6:25	18:10
२९:२०	१५	गुरु	५०	२५	उ.भा.	५८	५०	वृद्धि	३५	००	वि	१७	४४	9	13	अक्तू	१६	मीन	भ. १७:४४ तक, **अधि. आश्विन पूर्णिमा**, श्रीसत्यनारायण व्रत,अक्तू.**(E)**	५:१४:१०:१२	6:25	18:09

(A) प्रथम (अधिक) आश्विन शुक्लपक्ष प्रारम्भ **(B)** दक्षिण गोल प्रारम्भ, गण्डमूल 19:19 बाद **(C)** (12:52), शक आश्विन प्रारम्भ **(D)** सिंह में ४६:३५ (25:01) **(E)** मास प्रारम्भ, गण्डमूल 29:57 बाद

गुरौ अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः 5:30 बजे, 24 सितंबर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
५	८	०	६	८	३	९	१	७
७	६	२	१	२३	२५	१	२९	२९
१५	१६	३३	५४	२७	३७	१३	५७	५७
५६	१६	४४	५५	३१	१५	३	४८	४८
58	798	12	73	2	68	0	3	3
46	50	15	17	13	41	28	10	10
उफा ४	मूल २	अश्वि १	चित्रा ३	पूषा ४	श्ले. ३	उषा २	मृग २	ज्ये. ४
०	०	व	मा	मा	मा	व	व	व
०	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रातः 5:30

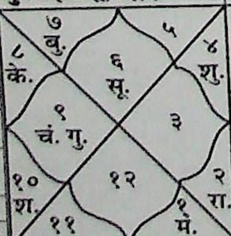

गुरौ पूर्णिमायां ग्रह स्पष्ट प्रातः 5:30 बजे, 1 अक्तूबर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
५	११	०	६	८	४	९	१	७
१४	४	०	९	२३	३	१	२९	२९
७	२७	५४	४८	४६	४१	११	३५	३५
५७	५६	१८	२७	५५	१५	५२	३३	३३
58	718	16	58	3	69	0	3	3
59	56	31	50	31	43	13	11	11
हस्त २	उभा १	अश्वि १	स्वा. १	पूषा ४	मघा २	उषा २	मृग २	ज्ये. ४
०	०	व	मा	मा	मा	मा	व	व
०	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. पूर्णिमा, प्रातः 5:30

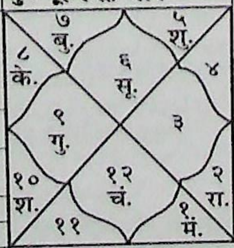

प्रथम (अधि.) आश्विन शुक्ल पक्षफल–

चान्द्र आश्विन मास अर्थात् आगामी दोनों पक्षों में संक्रान्ति का अभाव होने से आश्विन मास की वृद्धि अर्थात् आश्विन अधिक (पुरुषोत्तम्, मल) मास घटित हुआ है। इसकी व्याप्ति 18 सितंबर से 16 अक्तू. तक रहेगी। इस अवधि में **विवाह मुण्डन, गृहारम्भ, गृह प्रवेश**, देव प्रतिष्ठा, **काम्य व्रतानुष्ठान, नवीन आभूषण बनवाना, नई गाड़ी खरीदना** आदि अन्य काम्य शुभ कार्यों का आरम्भ करना **वर्जित** माना जाता है। परन्तु किसी **रोग–आदि कष्ट निवृत्ति के लिए** किए जाने वाले जपादि अनुष्ठान, **वर्षफल–जन्मदिन, सन्तान** के जन्म सम्बन्धी कृत्य, **गर्भाधान, पुंसवन** और सीमान्त जैसे संस्कार तथा पहले से आरम्भ किए गए निर्माण कार्य किए जा सकते हैं। आश्विन अधिक मास में व्रत, नियमों की पालना करते हुए (विशेषकर एकादशी, पूर्णिमा आदि पर्व-तिथियों पर) भगवान् विष्णु की विधिपूर्वक पूजार्चन, व्रत, स्नान-दानादि तथा पुरुषोत्तम माहात्म्य का पाठ करने से अक्षय पुण्यों की प्राप्ति होती है। अधि-मास शुरु होने पर प्रातः स्नानादि नित्यकर्म से निवृत्त होकर एकभुक्त या नक्त व्रत रखकर भगवान् भास्कर की मन्त्रों सहित रक्त पुष्पों द्वारा पूजा करके आदित्य हृदय, सूर्याष्टक स्तोत्रों तथा पुरुषोत्तम मास का पाठ करना एवं कांस्य पात्र में अक्षत, फल, गुड़, वस्त्रों सहित दान करने का विधान है। विशेष जानकारी के लिए पृष्ठ नं 77 पर लिखे गए '**आश्विन अधिक मासफल**' सम्बन्धी लेख पढ़ें।

लोक भविष्य–प्रथम चान्द्र आश्विन में पाँच बृहस्पतिवार होने से देश के पश्चिमी भागों जैसे–काश्मीर, पंजाब, राजस्थान, महाराष्ट्र, गुजरातादि प्रदेशों में कहीं उपद्रव, आतंकादि विस्फोटक एवं हिंसक घटनाएं घटित होने के संकेत हैं। कुछ प्रदेशों में उपयुक्त वर्षा की कमी रहे, तो कहीं बाढ़ादि प्राकृतिक प्रकोपों से जन व धन–सम्पदा को क्षति पहुँचे। ता. 27 सितं. से शुक्र सिंह राशि में आकर गुरु की दृष्टि में भी आ जाएगा। सोना, चाँदी, ताँबा, पशुचारा व चौपाय तेज भाव होंगे। ***शकुन***–आश्विन शु. ७/८ को वर्षा हो, तो आगे सुभिक्ष रहेगा।

वि. संवत् २०७७, द्वितीय(अधि) आश्विन कृष्ण पक्ष शाक: १९४२

सन् 2020 ई. (2 से 16 अक्तूबर), हिजरी सन् 1442

सूर्य दक्षिणायन, दक्षिण गोल, शरद् ऋतुः

प्रातः शुक्र पूर्वक्षितिज से ऊपर तथा मंगल पश्चिमक्षितिज में होगा। सायं गुरु खमध्यासन्न, शनि याम्योत्तरवृत्त के पास तथा बुध पश्चिमक्षितिजासन्न दीखेगा।

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	समाप्ति काल		नक्षत्र	समाप्ति काल		योग	समाप्ति काल		करण	समाप्ति काल		तारीखें				चंद्र राशि प्रवेश घड़ी–पल		सूर्योदय कालिक सूर्यस्पष्ट	भा.स्टें.टा. जालन्धर	
			घड़ी	पल		घड़ी	पल		घड़ी	पल		घड़ी	पल	आश्वि. राष्ट्र.	सफर मु.	अक्तू.	आश्वि. प्र.			रा. अं. क. वि.	सूर्योदय घं. मिं.	सूर्यास्त घं. मिं.
२९:१३	१	शुक्र	५६	१८	रेव.	६०	००	ध्रुव	३६	५५	बा	२३	२२	10	14	2	१७	मीन	द्वितीय (अधिक) आश्विन कृष्णपक्ष प्रारम्भ, **महात्मा गाँधी जयन्ती (A)**	५:१५:०९:१४	6:26	18:07
२९:०८	२	शनि	६०	००	रेव.	६	००	व्या.	३९	१०	तै	२९	२६	11	15	3	१८	मे. ६:००	**पंचक समाप्त** ६:०० (8:51), गण्डमूल **(A)** गण्डमूल	५:१६:०८:१७	6:27	18:06
२९:०५	२	रवि	२	३३	अश्वि	१३	३३	हर्ष	४१	३८	ग	२	३३	12	16	4	१९	मेष	भ. ३५:४६ से, **वक्री मंगल** रेव ४ **मीन में ९:०८** (10:06), गण्डमूल	५:१७:०७:२०	6:27	18:05
२९:००	३	चन्द्र	८	५८	भर.	२१	१०	वज्र	४४	००	वि	८	५८	13	17	5	२०	वृ.३८:०५	भ. ८:५८ तक, **श्रीगणेश चतुर्थी व्रत** (देखें पृष्ठ 13-16)	५:१८:०६:२८	6:28	18:04
२८:५३	४	मंग	१५	१०	कृति.	२८	३३	सिद्धि	४६	३	बा	१५	१०	14	18	6	२१	वृष	स.सि.यो. 17:54 तक	५:१९:०५:३८	6:29	18:02
२८:५०	५	बुध	२०	४८	रोहि.	३५	१८	व्य.	४७	३३	तै	२०	४८	15	19	7	२२	वृष	स.सि.यो.	५:२०:०४:४७	6:29	18:01
२८:४५	६	गुरु	२५	१८	मृग	४०	५०	वरी.	४८	००	व	२५	१८	16	20	8	२३	मि. ८:१३	भ. २५:१८ से ५६:४८ तक,	५:२१:०४:०१	6:30	18:00
२८:४०	७	शुक्र	२८	१८	आर्द्रा	४४	५०	परि.	४७	१३	ब	२८	१८	17	21	9	२४	मिथुन	शुक्र पू.फा. में ११:५५ (11:17)	५:२२:०३:१७	6:31	17:59
२८:३८	८	शनि	२९	२५	पुन.	४६	५८	शिव	४४	५३	कौ	२९	२५	18	22	10	२५	क.३१:३८	सूर्य चित्रा में १७:३८ (13:34)	५:२३:०२:३४	6:31	17:58
२८:३०	९	रवि	२८	२५	पुष्य	४६	५८	सिद्ध	४०	५३	ग	२८	२५	19	23	11	२६	कर्क	भ. ५६:५० से, **रविपुष्य योग**, गण्डमूल 25:19 बाद, स.सि.यो.	५:२४:०१:५६	6:32	17:56
२८:२५	१०	चन्द्र	२५	१५	आश्ले	४४	५३	साध्य	३५	८	वि	२५	१५	20	24	12	२७	सिं.४४:५३	भ. २५:१५ तक, गण्डमूल विचार	५:२५:०१:१९	6:33	17:55
२८:२३	११	मंग	२०	८	मघा	४०	५३	शुभ	२७	५३	बा	२०	८	21	25	13	२८	सिंह	**पुरुषोत्तमा एकादशी व्रत, बुध वक्री ५९:५८** (30:32), गण्डमूल	५:२६:००:४४	6:33	17:54
२८:१८	१२	बुध	१३	१३	पू.फा.	३५	१८	शुक्ल	१९	१०	तै	१३	१३	22	26	14	२९	कं.४८:४०	**प्रदोष व्रत**,	५:२७:००:११	6:34	17:53
२८:१३	१३	गुरु	४	५८	उ.फा.	२८	२८	ब्रह्म ऐन्द्र	९ ५८	२० ५०	व	४	५८	23	27	15	३०	कन्या	भ. ४:५८ से ३०:२२ तक, मासशिवरात्रि व्रत	५:२७:५९:४१	6:35	17:52
अवम्	१४	गुरु	५५	४५	००	०	०	००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	००	**चतुर्दशी तिथि का क्षय** ०० **(B)** (देखें पृष्ठ 77)	०:००:००:००	००	००
२८:१०	३०	शुक्र	४६	५	हस्त	२०	५८	वैधृ	४७	५५	च	२०	५५	24	28	16	३१	तु.४७:०५	**अधि. आश्विन अमावस, आश्विन अधिक (मल) मास समाप्त (B)**	५:२८:५९:१२	6:35	17:51

शनौ अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः 5:30 बजे, 10 अक्तू.

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
५	२	११	६	८	४	९	१	७
२३	२२	२८	१६	२४	१४	१	२९	२९
०	४०	१२	३६	२४	१३	१७	६	६
५	५२	२४	८	५३	४५	२८	५६	५६
59	777	19	23	5	70	1	3	3
19	24	9	17	6	55	8	11	11
४	पुन १	रेव ४	स्वा ३	पूषा ४	पूफा १	उषा २	मृग २	ज्ये ४
हस्त	०	व	मा	मा	मा	मा	व	व
०	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रातः 5:30

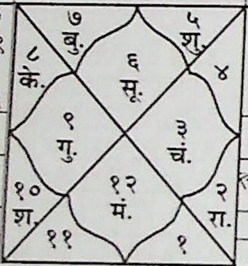

शुक्रे अमावस्यायां ग्रह स्पष्ट प्रातः 5:30 बजे, 16 अक्तू.

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
५	५	११	६	८	४	९	१	७
२८	१७	२६	१७	२४	२१	१	२८	२८
५६	१८	१७	१६	५७	२१	२५	४७	४७
३३	४१	४२	४८	५८	२	४०	५२	५२
59	918	18	19	6	71	1	3	3
32	8	41	39	6	35	43	11	11
चित्रा २	हस्त ३	रेव ३	स्वा ४	पूषा ४	पूफा ३	उषा २	मृग २	ज्ये ४
०	०	व	व	मा	मा	मा	व	व
०	अ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अमावस, प्रातः 5:30

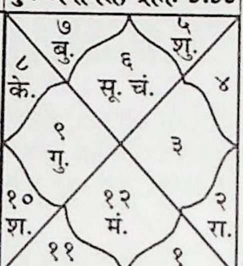

द्वितीय (अधि.) आश्विन कृष्ण पक्षफल–

गत अधिक मास पक्ष की भान्ति इस पक्ष में भी ता. 16 अक्तू. तक अधिमास की व्याप्ति रहेगी। जिस कारण इस अवधि में भी विवाह, मुण्डन, गृहारम्भ, गृहप्रवेश आदि मङ्गलकृत्यों के सम्पादन तथा आभूषण, वाहन, भूमि आदि बहुमूल्य वस्तु के क्रय करने का निषेध रहेगा। यद्यपि पुरुषोत्तमा एकादशी, श्रीगणेश-चतुर्थी आदि पर्वों पर एकभुक्त व्रत रखकर भगवान् सहस्रांशु (सूर्य) का पूजन, मन्त्र, सूर्य स्तोत्र व पुरुषोत्तम मास माहात्म्य का पाठ करना एवं यथाशक्ति फलों, वस्त्र, धार्मिक ग्रन्थ, अन्नापूरित कांस्य पात्र, ३३ अपूप (पूओं) का दक्षिणा सहित ब्राह्मण को दान करने का विशेष माहात्म्य होगा। आश्विन अधिमास की समाप्ति पर बाद दुपैहर या परवर्ती दिन व्रत का उद्यापन करना भी आवश्यक होता है। इस दिन ब्राह्मण भोजन एवं दानादि करना प्रशस्त होता है। '**देवीभागवत**' अनुसार जिस प्रकार अणु मात्र बीज के दान करने से वट जैसा दीर्घजीवी महान् वृक्ष होता है, वैसे ही मलमास में दिया हुआ दान अधिक फल देता है। शास्त्रमतानुसार आश्विन अधिमास का फल इस प्रकार लिखा गया है–'**आश्विनद्वितयेभूम्यां सैन्यचौररूजं भयम्।**'–अर्थात् जिस वर्ष दो आश्विन आएं, उस वर्ष विश्व में सेना, चौर तथा रोगभय होता है। अर्थात् विभिन्न देशों में युद्धभय तथा विचित्र रोगों के फैलने का भय हो। दक्षिणी क्षेत्रों में दुर्भिक्ष अर्थात् अकालजन्य परिस्थितियां बनेंगी। ***लोक-भविष्य***–चान्द्र द्वितीय आश्विन मास में पाँच शुक्र एवं पाँच शनिवार होने से जनसंख्या, धन-धान्य एवं अनाजादि के उत्पादन में वृद्धि होगी। कुछ विशेष वर्ग के लोगों में सुख-साधनों की वृद्धि होगी। अधिकांश लोग भोग-विलासादि कार्यों में प्रवृत्त होंगे। पाँच शनिवारों के कारण आशातीत महँगाई, देश में कहीं दुर्भिक्ष, अग्निकाण्ड, युद्धादि का भय, कहीं छत्रभंग (शासन-परिवर्तन) हो। ***ग्रहगोचर***–ता. 4 अक्तू. से मंगल मीन राशि में आकर सूर्य के साथ समसप्तक योग करेगा तथा मं. पर शनि की विशेष दृष्टि रहने से जनांदोलन, तोड़-फोड़ एवं अग्निकाण्ड की घटनाएं घटित होंगी। किसी राज्य में छत्रभंग होने के भी संकेत हैं। प्रजा में विक्षोभ, क्रोध व गहन असंतोष रहेगा।

आकाश लक्षण–आश्विन कृ. ५ या ७ (7 या 9 अक्तू.) को कुछ पर्वतीय क्षेत्रों में खण्ड वर्षा से जलवायु परिवर्तन होगा।

वि. संवत् २०७७, द्वितीय(शुद्ध) आश्विन शुक्ल पक्ष शाक: १९४२

सन् 2020 ई. (ता. 17 से 31 अक्तूबर तक), हिजरी सन् 1442
सूर्य दक्षिणायन, दक्षिण गोल, शरद्–हेमन्त ऋतुः

प्रातः शुक्र पूर्वक्षितिज से ऊपर होगा। सायंकाल मंगल पूर्वकपाल में, शनि खमध्यासन्न, गुरु याम्योत्तरवृत्त के पास तथा बुध पश्चिमक्षितिज पर होगा तथा 20 अक्तू. से अस्त हो जाएगा।

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	समाप्ति काल घड़ी	समाप्ति काल पल	नक्षत्र	समाप्ति काल घड़ी	समाप्ति काल पल	योग	समाप्ति काल घड़ी	समाप्ति काल पल	करण	समाप्ति काल घड़ी	समाप्ति काल पल	तारीखें आश्विन रा.	तारीखें सफर मु.	तारीखें अक्तूबर	तारीखें कार्तिक प्र.	चंद्र राशि प्रवेश घड़ी–पल		सूर्योदय कालिक सूर्यस्पष्ट रा. अं. क. वि.	भा.स्टैं.टा. जालन्धर सूर्योदय घं.मिं.	भा.स्टैं.टा. जालन्धर सूर्यास्त घं.मिं.
२८:०३	१	शनि	३६	२३	चित्रा	१३	१०	विष्क	३७	००	किं	११	१४	25	29	17	का.	तुला	**शरद् नवरात्र प्रारम्भ, घटस्थापन** (प्रातः 7:25 बाद)(देखें पृष्ठ 20)**(A)**	५:२९:५८:४७	6:36	17:49
२७:५८	२	रवि	२७	८	स्वा. विशा.	५ ५८	३५ ४८	प्रीति	२६	२८	बा	१	४६	26	30	18	२	वृ.४५:२५	चन्द्रदर्शन, मु. ४५	६:००:५८:२३	6:37	17:48
२७:५५	३	चन्द्र	१८	४८	अनु.	५३	१०	आयु	१६	४३	ग	१८	४८	27	रबि	19	३	वृश्चिक	भ. ४५:१६ से, रबि-उल्लावल (मु.) मास प्रारम्भ, स.सि.यो.	६:०१:५८:००	6:37	17:47
२७:५०	४	मंग	११	४३	ज्ये.	४८	५५	सोभा	७	५५	वि	११	४३	28	2	20	४	ध.४८:५५	भ. ११:४३ तक, उपाङ्ग ललिता व्रत(देखें पृष्ठ 20),वक्री बुध पश्चिम में अस्त**(B)**	६:०२:५७:४१	6:38	17:46
२७:४५	५	बुध	६	१३	मूल	४६	२५	शोभ अति	० ५४	२५ २३	बा	६	१३	29	3	21	५	धनु	**सरस्वती आवाहन मूलभे**	६:०३:५७:२३	6:39	17:45
२७:४०	६	गुरु	२	३०	पू.षा.	४५	४८	सुक	४९	४८	तै	२	३०	30	4	22	६	धनु	**सरस्वती पूजन** पू.षाभे, सूर्य सायन वृश्चिक में 28:31, हेमन्त ऋतु प्रारम्भ	६:०४:५७:०७	6:40	17:44
२७:३८	७	शुक्र	०	४३	उ.षा.	४७	००	धृति	४६	४५	व	०	४३	का	5	23	७	म. ०:५५	भ. ०:४३ से ३०:४४ तक, **श्रीदुर्गाष्टमी** (पश्चिमी भारत) (देखें पृष्ठ 21)**(C)**	६:०५:५६:५२	6:40	17:43
२७:३३	८	शनि	०	४५	श्रव.	४९	५३	शूल	४५	००	ब	०	४५	2	6	24	८	मकर	**श्रीदुर्गाष्टमी**-महाष्टमी (देखें पृष्ठ 21), **महानवमी** (व्रत, पूजा हेतु) **(+)**	६:०६:५६:४०	6:41	17:42
२७:२८	९	रवि	२	३०	धनि.	५४	१३	गंड	४४	२५	कौ	२	३०	3	7	25	९	कुं.२१:५०	**पंचक प्रारम्भ २१:५०,** महानवमी-बलिदान, होमहेतु (7:42 तक),**(D)**	६:०७:५६:३०	6:42	17:41
२७:२३	१०	चन्द्र	५	४५	शत.	५९	४५	वृद्धि	४४	४८	ग	५	४५	4	8	26	१०	कुम्भ	भ. ३७:५८ से, भरत-मिलाप **(+)** सरस्वती-विसर्जन (श्रवणे)	६:०८:५६:२१	6:43	17:40
२७:२०	११	मंग	१०	१०	पू.भा.	६०	००	ध्रुव	४६	००	वि	१०	१०	5	9	27	११	मी.४९:३०	भ.१०:१० तक, **पापांकुशा एकादशी व्रत**, वक्री बुध चित्रा ४ में १९:३५	६:०९:५६:११	6:43	17:39
२७:१५	१२	बुध	१५	२५	पू.भा.	६	८	व्या.	४७	४०	बा	१५	२५	6	10	28	१२	मीन	**प्रदोष व्रत**	६:१०:५६:०६	6:44	17:38
२७:१०	१३	गुरु	२१	१८	उ.भा.	१३	८	हर्ष	४९	४०	तै	२१	१८	7	11	29	१३	मीन		६:११:५६:०२	6:45	17:37
२७:०५	१४	शुक्र	२७	३०	रेव	२०	२८	वज्र	५१	५३	व	२७	३०	8	12	30	१४	मे.२०:२८	भ. २७:३० से, **पंचक समाप्त २०:२८ (14:57), शरद् पूर्णिमा (E)**	६:१२:५५:५९	6:46	17:36
२७:००	१५	शनि	३३	५०	अश्वि	२७	५८	सिद्धि	५४	८	वि	०	४०	9	13	31	१५	मेष	भ. ०:४० तक, **आश्विन-पूर्णिमा**, महर्षि श्रीवाल्मीकि जयन्ती, **(F)**	६:१३:५५:५९	6:47	17:35

(A) सूर्य तुला में १:१३ (7:05), **कार्तिक संक्रान्ति**, मु. ३०, पुण्यकाल सं. दोपहर 13:29 तक, आकाश दीपदान प्रारम्भ, महाराजा अग्रसेन जयन्ती, मातामह (नाना/नानी) का श्राद्ध **(B)** ०:०३ (6:39), शुक्र उ.फा. में २३:५०
(C) महाष्टमी, भद्रकाली अवतार, सरस्वती बलिदान उ.षाभे, सूर्य स्वा. में ४३:१५, **शुक्र कन्या में १०:१० (10:44)**, शक कार्तिक प्रारम्भ **(D)** नवरात्र समाप्त/पारणा, **विजयादशमी (दशहरा)**, अपराजिता-पूजन, आयुध/
शस्त्रादि पूजन, सीमोल्लंघन **(E) व्रत** (देखें पृष्ठ 22), गुरु उ.षा. १ में १५:४८, कोजागर व्रत, **(F)** श्रीसत्यनारायण व्रत, वक्री बुध पूर्व में उदय 23:40, शुक्र हस्त में २५:५३, कार्तिक स्नान-नियम प्रारम्भ, गण्डमूल 17:58 तक

शनौ अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः 5:30 बजे, 24 अक्तूबर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
६	९	११	६	८	५	९	१	७
६	१२	२३	१०	२५	०	१	२८	२८
५३	९	५८	५२	५९	५६	४२	२२	२२
४४	५२	५	४४	११	२९	५	२५	२५
59	760	15	75	7	72	2	3	3
46	17	20	10	20	21	28	11	11
स्वा १	श्रव १	रेव ३	स्वा २	पूषा ४	उफा २	उषा २	मृग २	ज्ये. ४
०	०	व	व	मा	मा	मा	व	व
०	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रातः 5:30

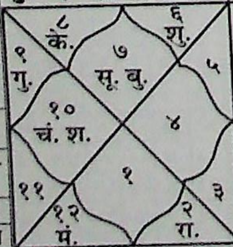

शनौ पूर्णिमायां ग्रह स्पष्ट प्रातः 5:30 बजे, 31 अक्तू.

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
६	०	११	६	८	५	९	१	७
१३	७	२२	३	२६	९	२	२८	२८
५२	११	२४	५	४५	२४	१	०	०
४७	८	३	४२	३८	३९	२२	१०	१०
59	710	10	37	8	72	3	3	3
59	50	40	11	20	55	7	11	11
स्वा ३	अश्वि ३	रेव २	चित्रा ३	उषा १	उफा ४	उषा २	मृग २	ज्ये. ४
०	०	व	व	मा	मा	मा	व	व
०	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. पूर्णिमा, प्रातः 5:30

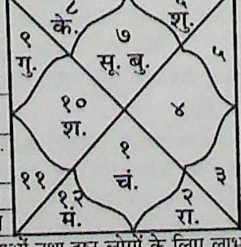

द्वितीय (शुद्ध) आश्विन शुक्ल पक्षफल–

प्रतिपदा (17 अक्तू.) से शारदीय नवरात्रारम्भ होंगे। इस दिन श्रीदुर्गा माता के सम्मुख अखण्डदीप प्रज्वलन, श्रीदुर्गा-पूजन, कलश-स्थापन, प्रमुख देवी-देवता आवाहन, पूजनादि के बाद श्रीदुर्गा सप्तशती का पाठारम्भ किया जाता है। प्रतिपदा को प्रातः 7:25 के बाद कलश (घट) स्थापन करना शुभ होगा (देखें पृष्ठ 20)। पूजन मन्त्र–'**ॐ जयन्ती मंगला काली भद्रकाली कपालिनी। दुर्गा क्षमा शिवा धात्री स्वाहा स्वधा नमोऽस्तुते। आगच्छ वर दे देवी पूजां गृहाण सुमुखि नमस्ते शंकरप्रिये।।**' ""**ॐ नमश्चण्डिकायै।।** नवरात्रों में (विशेषकर अष्टमी/नवमी को) श्रीदुर्गा पूजा एवं कुमारी कन्या पूजन, दानादि का विशेष महत्त्व है। ***कार्तिक संक्रान्ति***–ता. 17 अक्तूबर, शनिवार को प्रातः 7घं.-05मिं. पर तुला लग्न में प्रवेश करेगी। ३० मुहूर्त्ति इस सं. का पुण्यकाल सूर्योदय से दोपहर 13घं.-29मिं. तक रहेगा। वारानुसार राक्षसी तथा नक्षत्रानुसार मन्दाकिनी नामक यह सं. राजनेताओं तथा दुष्ट लोगों के लिए लाभप्रद रहेगी। संक्रान्ति कुण्डली में सूर्य पर शनि की विशेष दशम तथा मंगल की अष्टम दृष्टि है। मंगल पर शनि की तृतीय दृष्टि तथा मंगल-शुक्र के मध्य समसप्तक योग बना हुआ है। जिससे केन्द्रीय मन्त्रीमण्डल में महत्त्वपूर्ण परिवर्तन के संकेत हैं। राजनीतिक पार्टियों में परस्पर वाद-विवाद तथा सीमाओं पर युद्धमय वातावरण बनेगा। तुला लग्न का स्वामी शुक्र नीच राशि में होने से प्राकृतिक प्रकोपों के कारण खड़ी फसलों को हानि पहुँचे, विशेषकर ईख व धान्य की फसलों को नुक्सान पहुँचे–**कन्याराशिगते शुक्रे सर्वसस्यं विनश्यति। तत्र-धान्यमहर्घाणि शालिश्चैव विशेषतः।।** ***सं. राशिफल***–यह सं. मेष, मिथुन, कर्क, सिंह, तुला, धनु, मकर, कुम्भ राशि वालों के लिए लाभप्रद रहेगी। **शरद् पूर्णिमा (30 अक्तू.)** की रात्रि को मेवा, बादाम, किशमिश सहित खीर को छिटकली चांदनी में रातभर सुरक्षित रखकर दूसरे दिन भगवान् विष्णु को भोग लगाकर ब्राह्मण को खिलाकर परिवार सहित स्वयं ग्रहण करने से अनेक प्रकार के विलष्ट शारीरिक एवं मानसिक रोगों की शान्ति होती है। (देखें पृष्ठ 22)

वि. संवत् २०७७, **कार्तिक कृष्ण पक्ष** शाक: १९४२

सन् 2020 ई. (ता. 1 से 15 नवंबर तक), हिजरी सन् 1442
सूर्य दक्षिणायन, दक्षिण गोल, हेमन्त ऋतु:

प्रातः शुक्र पूर्वक्षितिजासन्न होगा। सायंकाल मंगल पूर्व में, शनि याम्योत्तरवृत्त से कुछ पश्चिम में तथा गुरु पश्चिमकपाल में होगा। ता. 1 नवं. से बुध प्रातः पूर्व में दृश्य होगा।

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	समाप्ति काल घटी.	समाप्ति काल पल	नक्षत्र	समाप्ति काल घटी.	समाप्ति काल पल	योग	समाप्ति काल घटी.	समाप्ति काल पल	करण	समाप्ति काल घटी.	समाप्ति काल पल	तारीखें कार्ति. शक	तारीखें रबिउल अ.	तारीखें नवंबर	तारीखें कार्ति. प्र.	चंद्र राशि प्रवेश घड़ी–पल		सूर्योदय कालिक सूर्यस्पष्ट रा. अं. क. वि.	भा.स्टैं.टा. जालन्धर सूर्योदय घं.मिं.	भा.स्टैं.टा. जालन्धर सूर्यास्त घं.मिं.
२७:००	१	रवि	४०	८	भर.	३५	२५	व्य.	५६	१५	बा	६	५९	10	14	1	१६	वृ.५२:१५	**कार्तिक कृष्णपक्ष प्रारम्भ**, हरियाणा दिवस, नवम्बर मास प्रारम्भ	६:१४:५५:५८	6:47	17:35
२६:५५	२	चन्द्र	४६	५	कृति.	४२	३५	वरी.	५८	८	तै	१३	७	11	15	2	१७	वृष		६:१५:५६:०३	6:48	17:34
२६:५०	३	मंग	५१	३०	रोहि.	४९	१३	परि.	५९	३०	व	१८	४८	12	16	3	१८	वृष	भ. १८:४८ से ५१:३० तक, **बुध मार्गी ४१:१०** (23:17)	६:१६:५६:०८	6:49	17:33
२६:४५	४	बुध	५६	३	मृग.	५५	३	शिव	६०	००	ब	२३	४७	13	17	4	१९	मि.२२:१३	**व्रत करवा-चौथ (करक-चतुर्थी)** चन्द्रोदय हेतु देखें पृष्ठ 13-16 **(A)**	६:१७:५६:१६	6:50	17:32
२६:४०	५	गुरु	५९	२५	आर्द्रा	५९	४५	शिव	०	१०	कौ	२७	४४	14	18	5	२०	मिथुन	**(A) श्रीगणेश चतुर्थी व्रत**, दशरथ-चतुर्थी	६:१८:५६:२५	6:51	17:31
२६:३८	६	शुक्र	६०	००	पुन.	६०	००	सिद्ध साध्य	० ५८	२ ४३	ग	३०	२३	15	19	6	२१	क.४७:२०	स्कन्द षष्ठी व्रत, सूर्य विशाखा में ३:२३ (8:13), स.सि.यो. 6:45 बाद	६:१९:५६:३७	6:52	17:31
२६:३५	६	शनि	१	२०	पुन.	३	३	शुभ	५६	८	व	१	२०	16	20	7	२२	कर्क	भ. १:२० से ३१:२७ तक,	६:२०:५६:४८	6:52	17:30
२६:३०	७	रवि	१	३३	पुष्य	४	४०	शुक्ल	५२	३	ब	१	३३	17	21	8	२३	कर्क	**अहोई अष्टमी व्रत, रविपुष्य योग 8:45 तक**, गण्डमूल 8:45 बाद	६:२१:५७:०३	6:53	17:29
अवम्	८	रवि	५९	५५	००	०	०	००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	००	**अष्टमी तिथि का क्षय** ०० ००	०:००:००:००	००	००
२६:२८	९	चन्द्र	५६	२५	आश्ले	४	३०	ब्रह्म	४६	३०	तै	२८	१०	18	22	9	२४	सिं. ४:३०	गण्डमूल विचार, दीपावली पर्व 14 नवंबर	६:२२:५७:२१	6:54	17:29
२६:२३	१०	मंग	५१	१०	मघा पू.फा.	२ ५८	३३ ५३	ऐन्द्र	३९	३३	व	२३	४८	19	23	10	२५	सिंह	भ. २३:४८ से ५१:१० तक, गण्डमूल 7:56 तक	६:२३:५७:४०	6:55	17:28
२६:१८	११	बुध	४४	२३	उ.फा.	५३	४३	वैधृ	३१	१८	ब	१७	४७	20	24	11	२६	कं.१२:४३	**रमा एकादशी व्रत**, बुध स्वाती में ३६:३०, शुक्र चित्रा में २०:१० **(B)**	६:२४:५८:०२	6:56	17:27
२६:१५	१२	गुरु	३६	२३	हस्त	४७	२५	विष्क	२१	५८	कौ	१०	२३	21	25	12	२७	कन्या	**गोवत्स द्वादशी** **(B)** कौमुदि महोत्सव प्रारम्भ	६:२५:५८:२५	6:57	17:27
२६:१३	१३	शुक्र	२७	३५	चित्रा	४०	२३	प्रीति	११	५५	ग	१	५९	22	26	13	२८	तु.१३:५८	भ. २७:३५ से ५२:५८ तक, **प्रदोष व्रत, धन-त्रयोदशी**, श्रीहनुमान-**(C)**	६:२६:५८:४९	6:57	17:26
२६:१०	१४	शनि	१८	२०	स्वा.	३२	५८	आयु सौभा.	१ ५०	२० ४३	श	१८	२०	23	27	14	२९	तुला	**पितृकार्येषु अमावस** (14:18 बाद), **नरक-चतुर्दशी**(पूर्व-अरुणोदय-**(D)**	६:२७:५९:१६	6:58	17:26
२६:०५	३०	रवि	९	५	विशा.	२५	४३	शोभ	४०	१८	ना	९	५	24	28	15	मा	वृ.१२:२८	**कार्तिक अमावस** (स्नानदान हेतु प्रातः 10:37 तक), **अन्नकूट (E)**	६:२८:५९:४५	6:59	17:25

(C) जयन्ती (उ. भारत) (अर्द्धरात्रि-व्यापिनी), **मंगल मार्गी** ५७:५३ (30:36), **यम प्रीत्यर्थं दीपदान एवं तर्पण** **(D)** -वाली), तैलाभ्यंग (देखें पृष्ठ 22), रूप-चौदश, दीपावली, **श्रीमहालक्ष्मी पूजन** (देखें पृष्ठ 181), कुबेर-पूजा सायं दीपदान देवालये, कौमुदि महोत्सव सम्पन्न, नेहरू-जयन्ती (बाल-दिवस), श्रीमहावीर निर्वाण (जैन), **(E)** गोवर्धन-पूजा, **सूर्य वृश्चिक में ५९:४५ (30:53), मार्गशीर्ष संक्रान्ति**, मु. ३०, पुण्यकाल सं. अगले दिन दोप. 13:17 तक, गोक्रीडा, बलिपूजा, **श्रीविश्वकर्मा दिवस** (पंजाब)

रवौ सप्तम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः 5:30 बजे, 8 नवम्बर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
६	३	११	६	८	५	९	१	७
२१	१४	२१	३	२७	१९	२	२७	२७
५३	५३	२०	१९	५६	१०	२८	३४	३४
३६	१९	३	१२	४	७	४४	४३	४३
60 15	798 18	4 28	45 40	9 24	73 30	3 49	3 11	3 11
विशा १	पुष्य ४	रेव २	चित्रा ३	उषा १	हस्त ३	उषा २	मृग २	ज्ये. ४
०	०	व	मा	मा	मा	मा	व	व
०	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रातः 5:30

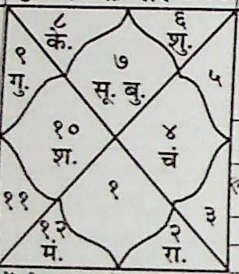

रवौ अमावस्यायां ग्रह स्पष्ट प्रातः 5:30 बजे, 15 नवम्बर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
६	६	११	६	८	५	९	१	७
२८	२५	२१	१०	२९	२७	२	२७	२७
५६	५५	५	४१	४	४५	५७	१२	१२
३	७	४६	१४	१८	५६	५	२८	२८
60 28	905 13	0 22	76 58	10 6	73 52	4 23	3 11	3 11
विशा ३	विशा २	रेव २	स्वा. २	उषा १	चित्रा २	उषा २	मृग २	ज्ये. ४
०	०	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
०	अ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अमावस, प्रातः 5:30

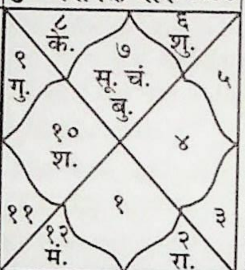

कार्तिक कृष्ण पक्षफल–

इस पक्ष में **करवाचौथ** (4 नवं.) का व्रत सुहागिन स्त्रियां पति की मंगल कामना एवं आयु वृद्धि के लिए करती हैं। अहोई अष्टमी (8 नवं.) का व्रत भी सन्तान व पति के कल्याण हेतु किया जाता है। **धन-त्रयोदशी** (13 नवं.) को नवीन बर्तन का क्रय करना, सायंकाले श्रीलक्ष्मीनारायण का पूजन करने के बाद अनाज, वस्त्र, औषधियां एवं यमार्थ दीपदान करने से अकालमृत्यु का भय नहीं रहता। इस दिन अर्द्धरात्रि चतुर्दशी के समय घृतपूर्ण दीपक जलाकर **श्रीहनुमान जयन्ती** मनायी जाती है। ता. 14 नवं. को कार्तिक कृष्ण चतुर्दशी के चतुर्थ प्रहर अर्थात् 14 नवं. की प्रातः तैलाभ्यङ्ग करके शुद्ध स्नान करना चाहिए। यद्यपि कार्तिक स्नान करने वालों के लिए तैलाभ्यङ्ग वर्जित है, परन्तु नरक-चतुर्दशी को तैलाभ्यङ्ग करने में कोई दोष नहीं। **ता. 14 नवं.**, शनिवार को प्रदोषकाल में दीपदान करके, अपने गृह के पूजा स्थान में मन्त्रपूर्वक दीप प्रज्वलित करके **श्रीमहालक्ष्मी** की यथाविधि पूजा करनी चाहिए (देखें पृष्ठ 181)। ***मार्गशीर्ष संक्रान्ति***–ता. 15 नवंबर, रविवार की रात्रि बाद (16 नवंबर की प्रातः सूर्योदय से पूर्व) प्रातः 6 बजकर 53 मिं. (30:53) पर तुला लग्न में प्रवेश करेगी। ३० मुहू. इस सं. का पुण्यकाल 16 नवं. की दोपहर 13:17 तक रहेगा (**देखें पृष्ठ 25**)। वारानुसार घोरा तथा नक्षत्रानुसार मन्दाकिनी नामक यह सं. दुष्ट, नीच तथा राजनेताओं के लिए लाभप्रद रहेगी। रविवारी सं. तथा संक्रां.-अमावस एक ही दिन होने से खर्पर योग बन गया है जोकि देश में लोगों तथा धान्यादि का नाशक है। कुछ देशों में टकराव एवं विस्फोटक घटनाएं घटित होंगी। खाद्यान्नों में कमी तथा पैट्रोल, डीजल व अन्य आवश्यक वस्तुओं में महंगाई के कारण सामान्य लोग दुःखी एवं असहाय अनुभव करेंगे। *आकाश लक्षण*–पक्ष के पूर्वार्द्ध में आकाश निर्मल रहे, उत्तरार्द्ध में उत्तर-पश्चिमी विशेषकर पहाड़ी क्षेत्रों में खण्ड वर्षा के योग हैं। कार्तिक अमावस रविवार को होने से विभिन्न देशों के मध्य युद्धमय माहौल रहेगा। भारी जन हानि की [illegible]

वि. संवत् २०७७, कार्तिक शुक्ल पक्ष शाक : १९४२

सन् 2020 ई. (ता. 16 से 30 नवम्बर तक), हिजरी सन् 1442
सूर्य दक्षिणायन, दक्षिण गोल, हेमन्त ऋतुः

प्रातः शुक्र पूर्वक्षितिजासन्न, बुध भी पूर्वक्षितिज पर होगा तथा 26 नवं. से लुप्त हो जाएगा। सायं मंगल पूर्वकपाल में, गुरु–शनि पश्चिमकपाल में पास–पास होंगे।

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	समाप्ति काल		नक्षत्र	समाप्ति काल		योग	समाप्ति काल		करण	समाप्ति काल		तारीखें				चंद्र राशि प्रवेश घड़ी–पल		सूर्योदय कालिक सूर्यस्पष्ट	भा.स्टैं.टा. जालन्धर	
			घटी	पल		घटी	पल		घटी	पल		घटी	पल	कार्तिक प्र.	रबिउल मु.	नवम्बर	मार्ग. प्र.			रा. अं. क. वि.	सूर्योदय घं. मिं.	सूर्यास्त घं. मिं.
२६:०३	१	चन्द्र	०	१८	अनु.	१९	३	अति	३०	२५	ब	०	१८	25	29	16	२	वृश्चिक	चन्द्रदर्शन, मु. १५, **भ्रातृ (भाई) दूज**, यम द्वितीया, **शुक्र तुला में (A)**	७:००:००:१६	7:00	17:25
अवम्	२	चन्द्र	५२	२३	००	०	०	००	०	०	०	०	०	०	०	0	०	००	**द्वितीया तिथि का क्षय** ०० ००	०:००:००:००	००	००
२५:५८	३	मंग	४५	४३	ज्ये.	१३	२३	सुक.	२१	२८	तै	१९	३	26	रबि	17	३	ध.१३:२३	रबि-उल्सानी (मु.) मास प्रारम्भ, गण्डमूल विचार	७:०१:०१:०८	7:01	17:24
२५:५५	४	बुध	४०	३८	मूल	९	५	धृति	१३	४०	व	१३	११	27	2	18	४	धनु	भ. १३:११ से ४०:३८ तक, दूर्वा गणपति व्रत, गण्डमूल 10:40 तक	७:०२:०१:२२	7:02	17:24
२५:५०	५	गुरु	३७	२३	पू.षा.	६	२८	शूल	७	१५	ब	९	१	28	3	19	५	म.२१:०८	सूर्य अनुराधा में १७:५० (14:11), सौभाग्य-पंचमी, जया-पंचमी **(B)**	७:०३:०१:५७	7:03	17:23
२५:४८	६	शुक्र	३६	५	उ.षा.	५	४५	गंड वृद्धि	२ ५९	२३ ८	कौ	६	४४	29	4	20	६	मकर	गुरु उ.षा. २ **मकर में १५:५५** (13:22), **सूर्य षष्ठी पर्व (छठ-पूजा)(C)**	७:०४:०२:३४	7:04	17:23
२५:४८	७	शनि	३६	५३	श्रव.	७	३	ध्रुव	५७	२३	ग	६	२९	30	5	21	७	कुं.३८:२५	भ. ३६:५३ से, **पंचक प्रारम्भ ३८:२५** (22:26), बुध विशा. में **(D)**	७:०५:०३:०९	7:04	17:23
२५:४३	८	रवि	३९	२८	धनि.	१०	१०	व्या.	५६	५५	वि	८	११	मा	6	22	८	कुम्भ	भ. ८:११ तक, **गोपाष्टमी**, शुक्र स्वाती में ८:३८, शक मार्गशीर्ष प्रारम्भ	७:०६:०३:४६	7:05	17:22
२५:४०	९	चन्द्र	४३	३८	शत.	१४	५८	हर्ष	५७	३५	बा	११	३३	2	7	23	९	कुम्भ	**अक्षय-कूष्माण्ड नवमी**, आरोग्य व्रत, आमला नवमी	७:०७:०४:२७	7:06	17:22
२५:३८	१०	मंग	४९	००	पू.भा.	२१	३	वज्र	५९	५	तै	१६	१९	3	8	24	१०	मी. ४:२५		७:०८:०५:०८	7:07	17:22
२५:३३	११	बुध	५५	८	उ.भा.	२८	००	सिद्धि	६०	००	व	२२	४	4	9	25	११	मीन	भ. २२:०४ से ५५:०८ तक, **हरिप्रबोधिनी एकादशी व्रत (स्मार्त) (E)**	७:०९:०५:५०	7:08	17:21
२५:३०	१२	गुरु	६०	००	रेव.	३५	२८	सिद्धि	१	५	ब	२८	२१	5	10	26	१२	मे.३५:२८	**पंचक समाप्त** ३५:२८ (21:20), **हरिप्रबोधिनी एकादशी व्रत (F)**	७:१०:०६:३२	7:09	17:21
२५:२८	१२	शुक्र	१	३३	अश्वि	४३	३	व्य.	३	१८	बा	१	३३	6	11	27	१३	मेष	**प्रदोष व्रत, बुध वृश्चिक में** ५९:४५ (31:04), गण्डमूल 24:23 तक	७:११:०७:१९	7:10	17:21
२५:२७	१३	शनि	८	००	भर.	५०	२३	वरी.	५	३०	तै	८	००	7	12	28	१४	मेष	**वैकुण्ठ चतुर्दशी**, भरणी-दीपम्	७:१२:०७:०३	7:10	17:21
२५:२५	१४	रवि	१४	३	कृति.	५७	१०	परि.	७	२५	व	१४	३	8	13	29	१५	वृ. ७:०५	भ. १४:०३ से ४६:४७ तक, **श्रीसत्यनारायण व्रत**, त्रिपुरोत्सव **(G)**	७:१३:०८:४९	7:11	17:21
२५:२३	१५	चन्द्र	१९	३०	रोहि.	६०	००	शिव	८	५३	ब	१९	३०	9	14	30	१६	वृष	**कार्तिक पूर्णिमा, श्रीगुरु नानकदेव जयन्ती, कार्तिक स्नान समाप्त,(H)**	७:१४:०९:३९	7:12	17:21

(A) ४५:०३ (25:01), यमुना-स्नान, कलम-दवात पूजन, विश्वकर्मा-पूजन, **पुण्य मार्ग. संक्रां. 13:17 तक** **(B)** ज्ञान-पंचमी (जैन) **(C)** शनि उ.षा. ३ में ०:१ (7:04) **(D)** २८:२८, सूर्य सायन धनु में 26:11 (घं.मिं.) **(E)** (देखें पृष्ठ 22), **तुलसी विवाह, भीष्म पंचक प्रारम्भ**, चातुर्मास्य व्रत-नियमादि समाप्त, राहु मृग १ केतु ज्ये. ३ में ८:१८ (10:27), गण्डमूल 18:20 से, **(F) (वैष्णव)**, **हरिप्रबोधोत्सव, बुध पूर्व में अस्त** २५:०३ (17:10) **(G) भीष्मपंचक समाप्त** (देखें पृष्ठ 23) **(H)** बुध अनुराधा में ८:१५, **मेला रामतीर्थ (अमृतसर)**, मेला पुष्करतीर्थ (राजस्थान)

रवौ अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः 5:30 बजे, 22 नवम्बर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७ ५ ५९ ५०	१० ३ ४३ ४	११ २१ ३० ३१	६ २० ४१ २५	९ ० १८ ६	६ ६ २४ १७	९ ३ २९ १५	१ २६ ५० १२	७ २६ ५० १२
60 38	745 6	6 34	90 50	10 58	74 14	4 54	3 10	3 10
अनु १	धनि ४	रेव. २	विशा १	उषा २	चित्रा ४	उषा ३	मृग २	ज्ये. ४
०	०	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
०	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रातः 5:30

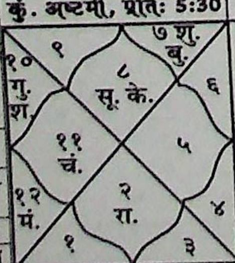

चन्द्रे पूर्णिमायां ग्रह स्पष्ट प्रातः 5:30 बजे, 30 नवम्बर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७ १४ ५ २३	१ ९ ४३ ३७	११ २२ ४२ ३५	७ ३ ० ३२	९ १ ४८ २८	६ १६ १९ १०	९ ४ १० १५	१ २६ २४ ४६	७ २६ २४ ४६
60 46	725 6	11 58	93 28	11 42	74 31	5 24	3 11	3 11
अनु ४	कृति ४	रेव. २	विशा ४	उषा २	स्वा ३	उषा ३	मृग १	ज्ये. ३
०	०	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
०	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. पूर्णिमा, प्रातः 5:30

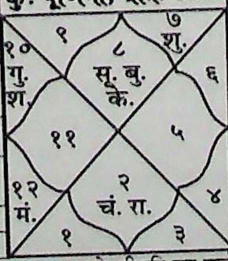

कार्तिक शुक्ल पक्षफल–

कार्तिक शुक्ल द्वितीया तिथि का क्षय होने से ता. 16 नवम्बर को ही चन्द्रदर्शन होगा। अतएव **गोवर्द्धन पूजा एवं अन्नकूट** का पर्व अमावस युक्ता प्रतिपदा में ही ता. 15 नवम्बर, रविवार को श्रीकृष्ण व गौओं की पूजा की जाएगी। ता. 16 नवं. को भाई-बहिन के परस्पर स्नेह का प्रतीक '**भातृ-दूज**' का पर्व मनाया जाएगा। इसमें बहिनें गणेश जी, शिव-पार्वती, यम, चित्रगुप्त, यमदूतों और यमुना-पूजन पश्चात् भाई की मंगल-कामना हेतु उसे रोली व केशर का तिलक लगाती हैं। ता. 25 व 26 नवं. को स्मार्त एवं वैष्णव तपस्वी लोग देवप्रबोधिनी एकादशी के अपने-अपने दिनानुसार चातुर्मास्य नियमों से निवृत्त होंगे। इस दिन से भीष्मपंचक प्रारम्भ होकर 29 नवं. तक रहेंगे। ता. 25 नवं. को ही विवाह नक्षत्र (उ.भा./रेवती) में '**तुलसी-विवाह**' शुभ रहेगा। ता. 26 को श्रीहरि का **प्रबोधोत्सव** भी मनाने की परम्परा है। ता. 28 नवं. को वैकुण्ठ चतुर्दशी अर्द्धरात्रि व्यापिनी होगी। इसदिन भगवान् श्रीविष्णु एवं श्रीशिव की पूजा एवं संकीर्तन संयुक्त रूप से किया जाता है। ता. 30 नवं. को कार्तिक पूर्णिमा के दिन कार्तिक स्नान, व्रत, तीर्थस्नान, दानादि का पुण्य होगा। परन्तु ता. 29 नवं. को कार्तिक पूर्णिमा के दिन श्रीसत्यनारायण का व्रत रखकर अनाज, गर्मवस्त्रों एवं फलादि का दान करने का विशेष माहात्म्य होता है। ***लोक-भविष्य***–कार्तिक मास में पाँच रविवार तथा पाँच सोमवार होने से देश में कहीं अनाज की कमी, अत्यधिक महँगाई, प्राकृतिक प्रकोपों से जन, धन व कृषि की हानि, उपद्रव, छत्रभंग (सत्ता-परिवर्तन) आदि आकस्मिक घटनाएं घटित हों। ***आकाश-लक्षण***–उत्तर पर्वतीय क्षेत्रों में खण्ड वर्षा के योग हैं। ***शकुन***–का. शु. १२ की रात्रि को आकाश निर्मल रहे, तो सुभिक्ष हो।

वि. संवत् २०७७, मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष शाक: १९४२

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	समाप्ति काल घड़ी	समाप्ति काल पल	नक्षत्र	समाप्ति काल घड़ी	समाप्ति काल पल	योग	समाप्ति काल घड़ी	समाप्ति काल पल	करण	समाप्ति काल घड़ी	समाप्ति काल पल	तारीखें मार्ग. शक	तारीखें रबिउ. सा.	तारीखें दिसम्बर	तारीखें मार्ग. प्रवि	चंद्र राशि प्रवेश घड़ी–पल	सन् 2020 ई. (ता. 1 से 14 दिसम्बर तक), हिजरी सन् 1442 सूर्य दक्षिणायन, दक्षिण गोल, हेमन्त ऋतुः प्रातः शुक्र पूर्वक्षितिजासन्न होगा। सायं मंगल याम्योत्तरवृत्त से पूर्व में, गुरु–शनि पश्चिमकपाल में बिल्कुल पास–पास होंगे। बुध अभी अस्त है।	सूर्योदय कालिक सूर्यस्पष्ट रा. अं. क. वि.	भा.स्टैं.टा. जालन्धर सूर्योदय घं.मिं.	भा.स्टैं.टा. जालन्धर सूर्यास्त घं.मिं.
२५:२०	१	मंग	२४	८	रोहि.	३	१५	सिद्ध	९	४८	कौ	२४	८	10	15	1	१७	मि.३६:००	मार्गशीर्ष कृष्णपक्ष प्रारम्भ, मृगछोड़ी स्नान प्रारम्भ, दिसम्बर मास प्रारम्भ	७:१५:१०:२६	7:13	17:21
२५:१८	२	बुध	२७	५३	मृग.	८	३०	साध्य	१०	००	ग	२७	५३	11	16	2	१८	मिथुन	भ. ५९:१२ से, सूर्य ज्येष्ठा में २८:१५, शुक्र विशाखा में ५३:२३, स.सि.यो.	७:१६:११:१६	7:14	17:21
२५:१३	३	गुरु	३०	३०	आर्द्रा	१२	४५	शुभ	९	२५	वि	३०	३०	12	17	3	१९	मिथुन	भ. ३०:३० तक, **श्रीगणेश चतुर्थी व्रत** (देखें पृष्ठ 13-16) **(A)**	७:१७:१२:०९	7:15	17:20
२५:१५	४	शुक्र	३२	३	पुन.	१६	००	शुक्ल	८	३	ब	१	१७	13	18	4	२०	क. ०:१८		७:१८:१२:५९	7:15	17:21
२५:१३	५	शनि	३२	१८	पुष्य	१८	००	ब्रह्म	५	४३	कौ	२	११	14	19	5	२१	कर्क	गण्डमूल 14:28 बाद	७:१९:१३:५४	7:16	17:21
२५:१०	६	रवि	३१	१०	आश्ले	१८	४३	ऐन्द्र वैधृ	२ ५७	२० ५८	ग	१	४४	15	20	6	२२	सिं.१८:४३	भ. ३१:१० से ५९:५८ तक, गण्डमूल विचार	७:२०:१४:४९	7:17	17:21
२५:०८	७	चन्द्र	२८	४५	मघा	१८	८	विष्क	५२	२८	ब	२८	४५	16	21	7	२३	सिंह	गुरु उ.षा. ३ में ३३:५५, **श्रीकालभैरवाष्टमी** (देखें पृष्ठ 23) **(B)**	७:२१:१५:४६	7:18	17:21
२५:०८	८	मंग	२५	००	पू.फा.	१६	१५	प्रीति	४६	००	कौ	२५	००	17	22	8	२४	कं.३०:३३	बुध ज्येष्ठा में ४०:२८,	७:२२:१६:४२	7:18	17:21
२५:०५	९	बुध	१९	५८	उ.फा.	१३	५	आयु	३८	३०	ग	१९	५८	18	23	9	२५	कन्या	भ. ४६:५४ से,	७:२३:१७:४१	7:19	17:21
२५:०३	१०	गुरु	१३	५०	हस्त	८	४८	सौभा	३०	१३	वि	१३	५०	19	24	10	२६	तु.३६:२०	भ. १३:५० तक, **शुक्र वृश्चिक में ५४:५०**, उत्पन्ना एकादशी व्रत **(C)**	७:२४:१८:४२	7:20	17:21
२५:००	११	शुक्र	६	५०	चित्रा स्वा.	३ ५७	३८ ५३	शोभ	२१	१३	बा	६	५०	20	25	11	२७	तुला	**उत्पन्ना एकादशी व्रत (वैष्णव)** (देखें पृष्ठ 23)	७:२५:१९:४४	7:21	17:21
अवम्	१२	शुक्र	५९	१५	००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	००	**द्वादशी तिथि का क्षय** ०० ००	०:००:००:००	००	००
२५:००	१३	शनि	५१	२०	विशा.	५१	५०	अति	११	५३	ग	२५	१८	21	26	12	२८	वृ.३८:२०	भ. ५१:२० से, **शनि प्रदोष व्रत**	७:२६:२०:४६	7:21	17:21
२४:५९	१४	रवि	४३	२८	अनु.	४५	४५	सुक धृति	२ ५२	१८ ५०	वि	१७	२४	22	27	13	२९	वृश्चिक	भ. १७:२४ तक, शुक्र अनुराधा में ३५:००, मासशिवरात्रि व्रत **(D)**	७:२७:२१:५१	7:22	17:22
२४:५८	३०	चन्द्र	३६	००	ज्ये.	४०	८	शूल	४३	४३	च	९	४४	23	28	14	३०	ध.४०:०८	**मार्गशीर्ष-सोमवती अमावस**, तीर्थस्नान माहात्म्य, **मेला हरिद्वार**- **(E)**	७:२८:२२:५८	7:23	17:22

(A) सौभाग्य सुन्दरी व्रत **(B)** भैरव-जयन्ती, गण्डमूल **(C)** (स्मार्त) (देखें पृष्ठ 23) **(D)** श्रीबालाजी-जयन्ती, मेला पुरमण्डल (जम्मू), देविका-स्नान (ऊधमपुर) **(E)** प्रयागराजादि

भौमे अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः 5:30 बजे, 8 दिसम्बर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७	४	११	७	९	६	९	१	७
२२	२१	२४	१५	३	२६	४	२५	२५
१२	५२	३४	२९	२४	१६	५५	५९	५९
१२	५१	४७	४३	२५	१७	१३	२०	२०
60 57	837 53	16 31	93 48	12 21	74 49	5 53	3 10	3 10
ज्ये. २	पू.फा. ३	रेव. ३	अनु. ४	उ.षा. ३	विशा. २	उ.षा. ३	मृग. १	ज्ये. ३
०	०	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
०	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रातः 5:30

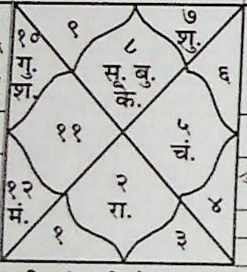

चंद्रे अमावस्यायां ग्रह स्पष्ट प्रातः 5:30 बजे, 14 दिसम्बर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७	७	११	७	९	७	९	१	७
२८	१९	२६	२४	४	३	५	२५	२५
१८	१	२१	५३	३९	४५	३१	४०	४०
११	४०	२७	१०	३७	२२	१६	१६	१६
61 4	879 48	19 28	94 8	12 47	74 54	6 11	3 11	3 11
ज्ये. ४	ज्ये. १	रेव. ३	ज्ये. ३	उ.षा. ३	अनु. १	उ.षा. ३	मृग. १	ज्ये. ३
०	०	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
०	अ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अमावस, प्रातः 5:30

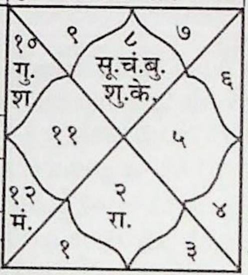

मार्गशीर्ष कृष्ण पक्षफल–

इस पक्ष की प्रदोषव्यापिनी अष्टमी तिथि (7 दिसं.) को भगवान् शिव के प्रतीकात्मक एवं चमत्कारी स्वरूप महाकाल भैरव की पूजा, जप व संकीर्तन करने का विशेष माहात्म्य कहा गया है। इस दिन '**जागरं चोपवासं च कृत्वा कालाष्टमीदिने। प्रयतः पापनिर्मुक्तः शैवो भवति शोभनः।**' के अनुसार उपवास करके रात्रि में जागरण करने से पाप क्षीण होते हैं और व्रती कल्याण प्राप्त करता है। **उत्पन्ना एकादशी** (11 नवं.) का स्मार्त/वैष्णव मतानुसार विधिपूर्वक व्रत रखने से सर्वप्रकार के अभीष्टों की सिद्धि होती है। इस दिन प्रातः स्नानादि के पश्चात् '**ममाखिलपापक्षयपूर्वक श्रीपरमेश्वर प्रीतिकामनाया मार्गशीर्ष कृष्णैकादशीव्रतं करिष्ये।**' यह संकल्प करके उपवास करें। त्रयोदशी से अमावस्या तक जम्मू के निकट मेला पुरमण्डल तथा देविका-स्नान का पर्व ऊधमपुर (ज.का.) में मनाया जाता है। ता. 14 दिसं. को **मार्गशीर्ष सोमवती अमावस** होने से इस दिन हरिद्वार आदि तीर्थस्थान पर स्नान, दान, जप एवं पितृतर्पणादि कृत्यों का विशेष माहात्म्य रहेगा (देखें पृष्ठ 11)।। ***लोक-भविष्य***–ता. 10 दिसं. से वृश्चिक राशि में सूर्य-बुध-शुक्र-केतु **चतुर्ग्रही योग** रहेगा तथा मंगल पर शनि की दृष्टि के कारण केन्द्रीय सरकार को किसी कठिन चुनौती का सामना करना होगा। परन्तु भारत की प्रभावराशि मकर पर **गुरु-शनि** का योग रहने से कठिन समस्याओं को सफलतापूर्वक सुलझाया जाएगा तथा विश्व में भारत की प्रभुता, प्रतिष्ठा व वर्चस्व में वृद्धि होगी। परन्तु साथ में ही मार्गशीर्ष मास में पाँच मंगलवारों का समावेश होने से राजनेताओं में विग्रह-छत्रभंग तथा महँगाई, उपद्रव व सरकारी कठोर नीतियों से प्रजा में असन्तोष पैदा हो। किसी प्रमुख राजनेता की मृत्यु या अपदस्थ होने के योग हैं। ***आकाश-लक्षण***–पर्वतीय क्षेत्रों में ता. 10 के बाद ओलावृष्टि व बर्फबारी के योग बनेंगे। उ. भारत में जलवायु शीत रहेगी। ***शकुन***–मार्ग. कृ. ३ को आर्द्रा नक्षत्र होने से धान्यादि के भाव सस्ते होंगे। प्रजा में सुख रहे।

सन 2020 ई. (ता. 15 से 30 दिसंबर तक), हिजरी सन् 1442 सूर्योदय भा.स्टैं.टा.

वि. संवत् २०७७, **मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष** शाक: १९४२

सन् 2020 ई. (ता. 15 से 30 दिसंबर तक), हिजरी सन् 1442
सूर्य दक्षिण–उत्तरायण, दक्षिण गोल, हेमन्त–शिशिर ऋतुः

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	समाप्ति काल घटी	समाप्ति काल पल	नक्षत्र	समाप्ति काल घटी	समाप्ति काल पल	योग	समाप्ति काल घटी	समाप्ति काल पल	करण	समाप्ति काल घटी	समाप्ति काल पल	तारीखें मार्ग. शक	तारीखें रबिउ स.	तारीखें दिसंबर	तारीखें पौष प्रवि.	चंद्र राशि प्रवेश घड़ी–पल	प्रातः सूर्योदय से पूर्व शुक्र पूर्वक्षितिजासन्न होगा। सायं मंगल याम्योत्तरवृत्त से पूर्व में, गुरु–शनि पश्चिमक्षितिज के निकट पास–पास होंगे। बुध अभी अस्त है।	सूर्योदय कालिक सूर्यस्पष्ट रा. अं. क. वि.	भा.स्टैं.टा. जालन्धर सूर्योदय घं. मिं.	भा.स्टैं.टा. जालन्धर सूर्यास्त घं. मिं.
२४:५८	१	मंग	२९	२०	मूल	३५	२०	गंड	३५	२०	किं	२	४०	24	29	15	पौ.	धनु	**सूर्य मूल १ धनु में ३५:२० (21:31), पौष संक्रान्ति**, मुहू. ३०, **(A)**	७:२९:२४:०२	7:23	17:22
२४:५८	२	बुध	२३	४८	पू.षा.	३१	४०	वृद्धि	२७	५३	कौ	२३	४८	25	30	16	२	म.४६:००	**चन्द्रदर्शन**, मु. ३०	८:००:२५:०८	7:24	17:23
२४:५७	३	गुरु	१९	४५	उ.षा.	२९	३३	ध्रुव	२१	३८	ग	१९	४५	26	जमा	17	३	मकर	भ. ४८:३५ से, **बुध मूल १ धनु में १०:३३ (11:37)**, जमादि–**(B)**	८:०१:२६:१२	7:24	17:23
२४:५६	४	शुक्र	१७	२५	श्रव.	२९	८	व्या.	१६	२०	वि	१७	२५	27	2	18	४	कुं.५९:३८	भ. १७:२५ तक, **पंचक प्रारम्भ ५९:३८ (31:16)**	८:०२:२७:२०	7:25	17:24
२४:५५	५	शनि	१७	३	धनि.	३०	३५	हर्ष	१३	२०	बा	१७	३	28	3	19	५	कुम्भ	**श्रीपञ्चमी**, श्रीराम–विवाहोत्सव, नाग–पंचमी, **स्कन्द षष्ठी (C)**	८:०३:२८:२८	7:26	17:24
२४:५४	६	रवि	१८	३८	शत.	३३	५८	वज्र	११	३०	तै	१८	३८	29	4	20	६	कुम्भ	**स्कन्द** (गुह) **षष्ठी (पूजन–हेतु मध्याह्न–व्यापिनी)**, चम्पा षष्ठी (देखें पृष्ठ 24),	८:०४:२९:३२	7:26	17:25
२४:५४	७	चन्द्र	२२	३	पू.भा.	३९	००	सिद्धि	११	००	व	२२	३	30	5	21	७	मी.२२:३५	भ. २२:०३ से ५४:३२ तक, सूर्य सायन मकर में 15:32 घं.मिं. **(D)**	८:०५:३०:४३	7:27	17:25
२४:५६	८	मंग	२७	००	उ.भा.	४५	२५	व्य.	११	४५	ब	२७	००	पौ	6	22	८	मीन	शक पौष प्रारम्भ, **श्रीदुर्गाष्टमी**, गण्डमूल 25:37 बाद	८:०६:३१:४९	7:27	17:26
२४:५६	९	बुध	३३	००	रेव.	५२	४३	वरी.	१३	२३	बा	०	१	2	7	23	९	मे.५२:४३	**पंचक समाप्त ५२:४३ (28:33)**,गुरु उ.षा. ४ में ९:२५ (11:14)**(E)**	८:०७:३२:५८	7:28	17:26
२४:५७	१०	गुरु	३९	३५	अश्वि	६०	००	परि.	१५	३३	तै	६	१८	3	8	24	१०	मेष	**मंगल** अश्वि १ **मेष में** ७:०५ (10:18), शुक्र ज्येष्ठा में १४:५३ **(F)**	८:०८:३४:०५	7:28	17:27
२४:५८	११	शुक्र	४६	८	अश्वि	०	२०	शिव	१७	५०	व	१२	४२	4	9	25	११	मेष	भ. १२:४२ से ४६:०८ तक, **मोक्षदा एकादशी व्रत, श्रीगीता–जयन्ती(G)**	८:०९:३५:१२	7:28	17:27
२४:५९	१२	शनि	५२	५	भर.	७	४५	सिद्ध	१९	४८	ब	१९	७	5	10	26	१२	वृ.२४:३३	अखण्ड द्वादशी	८:१०:३६:२२	7:29	17:28
२४:५९	१३	रवि	५७	१०	कृति.	१४	३५	साध्य	२१	१८	कौ	२४	३८	6	11	27	१३	वृष	**प्रदोष व्रत**	८:११:३७:२९	7:29	17:28
२४:५९	१४	चन्द्र	६०	००	रोहि.	२०	२५	शुभ	२१	५८	ग	२९	७	7	12	28	१४	मि.५२:५३	सूर्य पू.षा. में ४०:३५, पिशाचमोचन श्राद्ध	८:१२:३८:३९	7:30	17:29
२५:००	१४	मंग	१	३	मृग	२५	५	शुक्ल	२१	४५	व	१	३	8	13	29	१५	मिथुन	भ. १:०३ से ३२:२२ तक, **श्रीदत्तात्रेय जयन्ती** (देखें पृष्ठ 24) **(H)**	८:१३:३९:४६	7:30	17:30
२५:०२	१५	बुध	३	४०	आर्द्रा	२८	३३	ब्रह्म	२०	३३	ब	३	४०	9	14	30	१६	मिथुन	**मार्गशीर्ष पूर्णिमा** (स्नानदानादि प्रातः 8:58 तक)	८:१४:४०:५४	7:30	17:31

(A) पुण्यकाल सं. मध्याह्न बाद **(B)** उल्लावल (मुस्लि.) मास प्रारम्भ **(C) (व्रत हेतु सायाह्न–व्यापिनी)** (देखें पृष्ठ 24), **(D) मित्र (विष्णु) सप्तमी, सायन उत्तरायण शुरु**, शिशिर ऋतु प्रारम्भ **(E)** नन्दा–नवमी **(F)** शनि उ.षा. ४ में ३९:५५ (23:26) **(G)** बुध पू.षा. में ३४:३८, क्रिसमिस दिवस (क्रिश्चियन) **(H) श्रीसत्यनारायण व्रत, त्रिपुरभैरव–जयन्ती**

भौमे अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः 5:30 बजे, 22 दिसम्बर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
८	११	११	८	९	७	९	१	७
६	६	२९	७	६	१३	६	२५	२५
२६	३५	९	२९	२३	४५	२१	१४	१४
५२	४०	२०	५७	३४	९	५९	५०	५०
61 7	720 14	22 49	95 21	13 15	75 3	6 31	3 11	3 11
मूल २	उभा १	रेव ४	मूल ३	उषा ३	अनु ४	उषा ३	मृगा १	ज्ये ३
०	०	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
०	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रातः 5:30

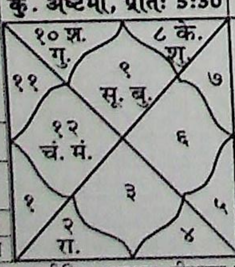

बुधे पूर्णिमायां ग्रह स्पष्ट प्रातः 5:30 बजे, 30 दिसम्बर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
८	२	०	८	९	७	९	१	७
१४	१२	२	२०	८	२३	७	२४	२४
३५	५५	२१	१९	१०	४५	१५	४९	४९
४९	२१	२९	२०	५६	४४	८	२३	२३
61 8	763 2	25 28	97 18	13 38	75 7	6 48	3 11	3 11
पूषा १	आर्द्रा २	अश्वि १	पूषा ३	उषा ४	ज्ये. ३	उषा ४	मृगा १	ज्ये. ३
०	०	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
०	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. पूर्णिमा, प्रातः 5:30

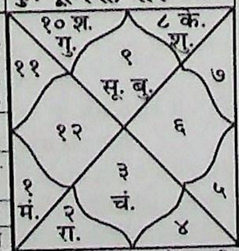

मार्गशीर्ष शुक्ल पक्षफल–

इस पक्ष की पंचमी को **श्रीराम–विवाहोत्सव** मनाया जाता है। इसी दिन श्रीपंचमी को कमलासन पर विराजित एवं कमलपुष्प लिए श्रीलक्ष्मी की सुवर्णमयी या ताम्र/चाँदी की मूर्त्ति को कलश पर स्थापित कर गणपति मातृका एवं पंचादि उपचारों से पूजन एवं श्रीसूक्त, लक्ष्मीसूक्त का पाठ, ब्राह्मण भोजन, दानादि करने से सौभाग्य व लक्ष्मी की प्राप्ति होती है। **ता. 25 दिसं.** को **मोक्षदा एकादशी** का व्रत विधिपूर्वक रखने तथा भगवान् विष्णु की पूजा, यथाशक्ति दानादि करने से अनेक मानसिक व कायिक पापों की निवृत्ति तथा पुण्यों की प्राप्ति होती है। इसीदिन **श्रीगीता जयन्ती** के उपलक्ष्य में भगवान् कृष्ण की पूजा–स्तुति करके श्रीमद्भगवद्गीता का सुगन्धित फूलों द्वारा पूजा, स्वाध्याय, मनन व चिन्तन करना चाहिए। इसीदिन भगवान् श्रीकृष्ण ने अर्जुन को गीता का उपदेश दिया था। ता. 29 दिसं. को प्रदोषव्यापिनी **मार्ग. पूर्णिमा** को ब्रह्मा, विष्णु, महेश के अंशावतार श्रीदत्तात्रेय की बालरूप में पूजा की जाती है। ***पौष संक्रान्ति*–ता. 15 दिसम्बर**, मंगलवार को रात्रि 9 बजकर 31 मिनट (21:31) पर कर्क लग्न में प्रवेश करेगी। ३० मुहूर्त्ति इस सं. का पुण्यकाल मध्याह्न बाद रहेगा। वारानुसार महोदरी तथा नक्षत्रानुसार राक्षसी नामक यह सं. चोर, बेईमान तथा दुष्ट लोगों के लिए लाभप्रद रहेगी। भौमवती संक्रान्ति तथा मार्गशीर्ष मास में पौष संक्रान्ति का प्रवेश होने से राजनैतिक क्षेत्रों में अस्थिरता एवं अशान्ति होने के संकेत हैं। कहीं अनाज की कमी के कारण दुर्भिक्ष एवं अराजकता व्याप्त हो। अत्यधिक महँगाई के कारण सामान्य लोगों में सुख की कमी रहेगी। संक्रान्ति कुं. में सप्तम (अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों का भाव) भाव में गुरु–शनि योग के कारण विश्व में भारत की प्रतिष्ठा एवं प्रभुत्व के नए आयाम स्थापित होंगे। ***आकाश लक्षण***–पक्ष के उत्तरार्द्ध में हि.प्र., पंजाब, जम्मू–कश्मीर, उत्तराखण्ड के उत्तरी भागों में खण्ड वर्षा व ओलावृष्टि के संकेत हैं। ***शकुन***–परन्तु मार्ग. शु. ९ रेवती नक्षत्रयुता होने से आगे दुर्भिक्षकारक रहेगी। **'मार्गेनवम्यां रेवत्यां बुधोदुर्भिक्षकारकः।।'**

वि. संवत् २०७७, पौष कृष्ण पक्ष शाक: १९४२

सन् 2020–21 ई. (31 दिसं. से 13 जनवरी), हिजरी सन् 1442
सूर्य उत्तरायण, दक्षिण गोल, शिशिर ऋतु:

प्रात: सूर्योदय से पूर्व शुक्र पूर्वक्षितिज में चमकता हुआ दिखाई देगा। सायं मंगल याम्योत्तरवृत्त के पास, शनि पश्चिमक्षितिज में होगा जो 7 जन. से लुप्त होगा। उससे ऊपर गुरु चमकता हुआ दिखाई देगा। ता. 10 जन. से बुध भी पश्चिम में दृश्य होगा।

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	समाप्ति काल घटी	समाप्ति काल पल	नक्षत्र	समाप्ति काल घटी	समाप्ति काल पल	योग	समाप्ति काल घटी	समाप्ति काल पल	करण	समाप्ति काल घटी	समाप्ति काल पल	तारीखें पौष शक	तारीखें जमादि उ.	तारीखें दिसंबर	तारीखें पौष प्रवि.	चंद्र राशि प्रवेश घड़ी–पल		सूर्योदय कालिक सूर्यस्पष्ट रा. अं. क. वि.	भा.स्टैं.टा. जालन्धर सूर्योदय घं. मिं.	भा.स्टैं.टा. जालन्धर सूर्यास्त घं. मिं.
२५:०२	१	गुरु	५	३	पुन.	३०	४८	ऐन्द्र	१८	२३	कौ	५	३	10	15	31	१७	क.१५:२०	**पौष कृष्णपक्ष प्रारम्भ**, स.सि.योग	८:१५:४२:०२	7:30	17:31
२५:०३	२	शुक्र	५	८	पुष्य	३१	५०	वैधृ	१५	१५	ग	५	८	11	16	जन.	१८	कर्क	भ. ३४:३८ से, जनवरी–सन् 2021 ई. प्रारम्भ, गण्डमूल 20:15 बाद	८:१६:४३:१०	7:31	17:32
२५:०४	३	शनि	४	८	आश्ले	३१	५५	विष्क	११	२०	वि	४	८	12	17	2	१९	सिं.३१:५५	भ. ४:०८ तक, **श्रीगणेश चतुर्थी व्रत** (देखें पृष्ठ 13), बुध उ.षा. **(A)**	८:१७:४४:२१	7:31	17:33
२५:०५	४	रवि	२	१०	मघा	३१	५	प्रीति	६	३८	बा	२	१०	13	18	3	२०	सिंह	**शुक्र** मूल १ **धनु में** ५३:५० (29:03), गण्डमूल 19:57 तक	८:१८:४५:२९	7:31	17:33
अवम्	५	रवि	५९	१८	००	०	०	००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	००	**पंचमी तिथि का क्षय** ०० ००	०:००:००:००	००	००
२५:०८	६	चन्द्र	५५	४०	पू.फा.	२९	२५	आयु सौभा	१ ५५	१३ १५	ग	२७	२९	14	19	4	२१	कं.४३:५३	भ. ५५:४० से, **बुध मकर में** ५१:०० (27:55)	८:१९:४६:३८	7:31	17:34
२५:१०	७	मंग	५१	२३	उ.फा.	२७	५	शोभ.	४८	४३	वि	२३	३२	15	20	5	२२	कन्या	भ. २३:३२ तक,	८:२०:४७:४७	7:31	17:35
२५:१२	८	बुध	४६	३०	हस्त	२४	५	अति.	४१	४३	बा	१८	५७	16	21	6	२३	तु.५२:२५	गुरु श्रवण १ में ५०:३३ (27:44), **रूक्मिणी अष्टमी, अष्टका श्राद्ध**	८:२१:४८:५५	7:31	17:36
२५:१३	९	गुरु	४१	५	चित्रा	२०	३५	सुक	३४	१८	तै	१३	४८	17	22	7	२४	तुला	**शनि पश्चिम में अस्त 17:40 (घं.मिं.)**	८:२२:५०:०७	7:32	17:37
२५:१४	१०	शुक्र	३५	२३	स्वा.	१६	४०	धृति	२६	३५	व	८	१४	18	23	8	२५	वृ.५८:३५	भ. ८:१४ से ३५:२३ तक, श्रीपार्श्वनाथ जयन्ती (जैन)	८:२३:५१:१६	7:32	17:37
२५:१५	११	शनि	२९	२५	विशा.	१२	३०	शूल	१८	४०	ब	२	२४	19	24	9	२६	वृश्चिक	**सफला एकादशी व्रत**	८:२४:५२:२६	7:32	17:38
२५:१८	१२	रवि	२३	२३	अनु.	८	१५	गंड	१०	४३	तै	२३	२३	20	25	10	२७	वृश्चिक	**प्रदोष व्रत**, सूर्य उ.षा. में ४५:३०, बुध श्रवण में ५७:०० **(B)**	८:२५:५३:३६	7:32	17:39
२५:२०	१३	चन्द्र	१७	३३	ज्ये.	४	३	वृद्धि ध्रुव	२ ५५	५० १५	व	१७	३३	21	26	11	२८	ध. ४:०३	भ. १७:३३ से ४४:५२ तक, मासिक शिवरात्रि व्रत, गण्डमूल	८:२६:५४:४५	7:32	17:40
२५:२५	१४	मंग	१२	१०	मूल पू.षा.	० ५७	१८ ८	व्या.	४८	१०	श	१२	१०	22	27	12	२९	धनु	पितृकार्येषु अमावस (तर्पणादि 12:23 बाद), **स्वामी विवेकानन्द (C)**	८:२७:५५:५३	7:31	17:41
२५:२८	३०	बुध	७	२८	उ.षा.	५४	५३	हर्ष	४१	४८	ना	७	२८	23	28	13	३०	म.११:२८	**पौष अमावस** (स्नानदानादि प्रात: 10:30 तक), **लोहड़ी पर्व**	८:२८:५७:०२	7:31	17:42

(A) में ४८:५३ (27:04) **(B)** बुध पश्चिम में उदय 29:18 (घं.मिं.) **(C)** **जयन्ती**, गण्डमूल 7:38 तक

बुधे अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रात: 5:30 बजे, 6 जनवरी

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
८	५	०	९	९	८	९	१	७
२१	१६	५	१	९	२	८	२४	२४
४३	३०	२५	४५	४७	३१	३	२७	२७
४७	२८	४०	०	८	४५	१२	८	८
61	845	27	98	13	75	6	3	3
10	43	22	32	54	12	57	11	11
पूषा ३	हस्त २	आर्द्रा २	उषा २	उषा ४	मूल १	उषा ४	मृग १	ज्ये ३
०	०	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
०	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रात: 5:30

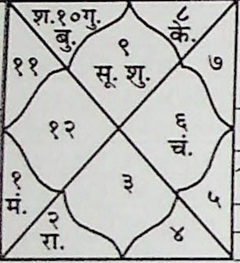

बुधे अमावस्यायां ग्रह स्पष्ट प्रात: 5:30 बजे, 13 जनवरी

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
८	८	०	९	९	८	९	१	७
२८	२६	८	१३	११	११	८	२४	२४
५१	१०	४२	१०	२४	१८	५२	४	४
५४	१४	१७	५०	५७	११	१९	५३	५३
61	831	29	95	14	75	7	3	3
9	8	00	55	4	14	5	11	11
उषा १	पूषा ४	आर्द्रा ३	श्रव १	श्रव १	मूल ४	उषा ४	मृग १	ज्ये. ३
०	०	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
०	अ	उ	उ	उ	उ	अ	अ	अ

कुं. अमावस, प्रात: 5:30

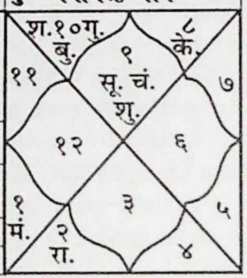

पौष कृष्ण पक्षफल–

पौष मास में धान्य, गेहूँ, चावल आदि अनाज, कम्बलादि गर्म वस्त्र, ईंधन-सामग्री, मौसमी फल, मिष्ठान्न दक्षिणा सहित दान करने का विशेष माहात्म्य होता है। **ता. 2 जनवरी**, शनिवार को **श्रीगणेश चतुर्थी** का व्रत रखने से मनोवांछित कामना पूर्ण होती है। ता. 6 जन.-**रूक्मिणी अष्टमी** को कृष्ण, रूक्मिणी और प्रद्युम्न की मूर्त्तियों का गन्धयुक्त पूजनकर उत्तम पदार्थ अर्पण करें और सामर्थ्यानुसार सौभाग्यवती आठ स्त्रियों को भोजन करवाकर दक्षिणा दें तो रूक्मिणी जी की प्रसन्नता प्राप्त होती है। ता. 9 जन. को **सफला एकादशी** का व्रत, एकादशी माहात्म्य का पाठ, जप, श्रीविष्णु स्तोत्र पाठ एवं यथाशक्ति अन्न, गुड़, गर्म वस्त्र का दान करने का विशेष माहात्म्य होता है। **ता. 13 जन.** को माघ संक्रान्ति से एक दिन पूर्व **लोहड़ी पर्व** पंजाब, हिमाचल, जम्मू, दिल्ली, हरियाणा आदि प्रदेशों में मनाया जाता है। इसमें लकड़ियाँ, गाय के उपले, समिधा, तिल सहित अग्नि प्रदीप्त करके अग्निदेव का पूजन एवं परिक्रमा करके मनाया जाता है। ***लोक-भविष्य***–चान्द्र पौष मास में पाँच गुरुवार होने से पश्चिम व मुस्लिम देशों जैसे–ईराक, सूडान, इज़रायल–फिलीस्तीन आदि देशों में राजनीतिक व आतंकवादी टकराव तथा युद्ध जन्य हालात बनेंगे। **'यत्रमासे पञ्चवारा: जायन्ते च वृहस्पते:। विग्रह: पश्चिम देशे खड्गयुद्धं च जायते।।'** दैनिक जनोपयोगी वस्तुओं, धान्यादि की कीमतों में वृद्धि के कारण सामान्य वर्ग में गहन असन्तोष रहेगा। इस पक्ष में नववर्ष आरम्भ (सन् 2021 ई.) से ही कालसर्प योग का प्रभाव तथा मकर राशि पर ता. 5 से बु.गु.श. ग्रहों का योग रहने से कहीं अनावृष्टि के योग बनेंगे। प्रतिकूल वर्षा तथा ओलावृष्टि से खड़ी फसलों को हानि होगी। ता. 4 जन. से शुक्र धनु राशि में सूर्य के साथ योग करेगा। इस कारण भी प्रतिकूल जलवायु से फसलों की हानि होगी– **'यदा च धनुराशिस्थोदैत्याचार्य: प्रवर्तते। महर्घं च विजानीयात्सर्वसस्यं विनश्यति।।'** ***आकाश लक्षण***–उत्तर पश्चिमी एवं पहाड़ी क्षेत्रों में शीत लहर एवं खण्ड वर्षा के योग हैं।

वि. संवत् २०७७, **पौष शुक्ल पक्ष** शाक: १९४२

सन् 2021 ई. (ता. 14 से 28 जनवरी), हिजरी सन् 1442
सूर्य उत्तरायण, दक्षिण गोल, शिशिर ऋतु:

प्रात: शुक्र पूर्व में दृश्य होगा। सायं मंगल याम्योत्तरवृत्त के पास, पश्चिमक्षितिज में दृश्य गुरु 17 जन. से अस्त हो जाएगा। बुध पश्चिम क्षितिजासन्न होगा। शनि अस्त है।

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	समाप्ति काल घड़ी	समाप्ति काल पल	नक्षत्र	समाप्ति काल घड़ी	समाप्ति काल पल	योग	समाप्ति काल घड़ी	समाप्ति काल पल	करण	समाप्ति काल घड़ी	समाप्ति काल पल	तारीखें पौष प्रवि.	तारीखें जमादि मु.	तारीखें जनवरी	तारीखें माघ प्रवि.	चंद्र राशि प्रवेश घड़ी–पल		सूर्योदय कालिक सूर्यस्पष्ट रा. अं. क. वि.	भा.स्टैं.टा. जालन्धर सूर्योदय घं.मिं.	भा.स्टैं.टा. जालन्धर सूर्यास्त घं.मिं.
२५:२९	१	गुरु	३	४८	श्रव.	५३	५३	वज्र	३६	२५	ब	३	४८	24	29	14	मा	मकर	चन्द्रदर्शन, मु. ३०, **सूर्य मकर में १:४८ (8:41), मकर (माघ) (A)**	८:२९:५८:११	7:31	17:42
२५:३०	२	शुक्र	१	२५	धनि.	५४	२५	सिद्धि	३२	८	कौ	१	२५	25	जमा	15	२	कुं.२३:५८	**पंचक प्रारम्भ २३:५८** (17:06), जमादि-उल्सानी (मु.) मास प्रारम्भ	९:००:५९:१९	7:31	17:43
२५:३३	३	शनि	०	३८	शत.	५६	३५	व्य.	२९	१०	ग	०	३८	26	2	16	३	कुम्भ	भ. ३१:०७ से,	९:०२:००:२७	7:31	17:44
२५:३५	४	रवि	१	३५	पू.भा.	६०	००	वरी.	२७	३५	वि	१	३५	27	3	17	४	मी.४४:२३	भ. १:३५ तक, **गुरु पश्चिम में अस्त 17:52 (घं.मिं.)**	९:०३:०१:३४	7:31	17:45
२५:४०	५	चन्द्र	४	२०	पू.भा.	०	३३	परि.	२७	२०	बा	४	२०	28	4	18	५	मीन	**गुरु अस्त–17 जनवरी**	९:०४:०२:३८	7:30	17:46
२५:४३	६	मंग	८	४३	उ.भा.	६	३	शिव	२८	१५	तै	८	४३	29	5	19	६	मीन	बुध धनिष्ठा में ३५:५५ (21:52), सूर्य सायन कुम्भ में 26:11	९:०५:०३:४४	7:30	17:47
२५:४५	७	बुध	१४	२५	रेव.	१२	४५	सिद्ध	३०	००	व	१४	२५	30	6	20	७	मे.१२:४५	भ. १४:२५ से ४७:३९ तक, **पंचक समाप्त १२:४५** (12:36), **(B)**	९:०६:०४:४९	7:30	17:48
२५:४८	८	गुरु	२०	५३	अश्वि	२०	१५	साध्य	३२	१३	ब	२०	५३	मा	7	21	८	मेष	गुरु श्रवण २ में ३:०८ (8:45), शक माघ प्रारम्भ, श्रीदुर्गाष्टमी, महारूद्र व्रत	९:०७:०५:५३	7:30	17:49
२५:५३	९	शुक्र	२७	३३	भर.	२७	५८	शुभ	३४	३३	कौ	२७	३३	2	8	22	९	वृ.४४:५०	मंगल भरणी में १३:४८, शनि श्रवण १ में २५:३० (17:41)	९:०८:०६:५३	7:29	17:50
२५:५५	१०	शनि	३३	४०	कृति.	३५	१०	शुक्ल	३६	२५	तै	०	३७	3	9	23	१०	वृष	सूर्य श्रवण में ५१:१३ (27:58), सुभाषचन्द्र बोस जयन्ती	९:०९:०७:५५	7:29	17:51
२५:५८	११	रवि	३८	४५	रोहि.	४१	२३	ब्रह्म	३७	३०	व	६	१३	4	10	24	११	वृष	भ. ६:१३ से ३८:४५ तक, **पुत्रदा एकादशी व्रत**	९:१०:०८:५३	7:28	17:51
२६:००	१२	चन्द्र	४२	२३	मृग.	४६	१०	ऐन्द्र	३७	३०	ब	१०	३४	5	11	25	१२	मि.१३:५८	**बुध कुम्भ में २३:३८ (16:55)**, शुक्र उ.षा. में १०:२८, सुजन्म द्वादशी	९:११:०९:५३	7:28	17:52
२६:०३	१३	मंग	४४	२०	आर्द्रा	४९	२०	वैधृ	३६	१३	कौ	१३	२२	6	12	26	१३	मिथुन	**भौम प्रदोष व्रत, भारत गणतन्त्र दिवस (72वाँ)**	९:१२:१०:५२	7:28	17:53
२६:०८	१४	बुध	४४	३८	पुन.	५०	५५	विष्क	३३	४३	ग	१४	२९	7	13	27	१४	क.३५:४०	भ. ४४:३८ से, **शुक्र मकर में ५०:०५** (27:29), ईशान व्रत	९:१३:११:४९	7:27	17:54
२६:१०	१५	गुरु	४३	१८	पुष्य	५१	००	प्रीति	२९	५३	वि	१३	५८	8	14	28	१५	कर्क	भ. १३:५८ तक, **पौष पूर्णिमा**, श्रीसत्यनारायण व्रत **(C)**	९:१४:१२:४६	7:27	17:55

(A) संक्रान्ति, मु. ३०, पुण्यकाल सं. प्रात: दोपहर 14:38 तक, **कुम्भ-महापर्व स्नान माहात्म्य शुरु (हरिद्वार)**, निरयण उत्तरायण प्रारम्भ, शुक्र पू.षा. में ३२:०५, **यूरेनस मार्गी १६:३० (14:07)**, आरोग्य व्रत **(B)** मार्तण्ड सप्तमी, **श्रीगुरु गोबिन्द सिंह जयन्ती**, गण्डमूल विचार **(C) माघ स्नान प्रारम्भ**, शाकम्भरी जयन्ती, **गुरुपुष्य योग**, स.सि.यो., गण्डमूल 27:51 बाद

गुरौ अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रात: 5:30 बजे, 21 जनवरी

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
९	०	०	९	९	८	९	१	७
७	८	१२	२५	१३	२१	९	२३	२३
०	२१	३९	६	१८	१९	४९	३९	३९
४८	२२	५३	३९	५	५६	१४	२७	२७
61	709	30	75	14	75	7	3	3
3	20	21	41	12	12	8	11	11
उषा ४	अश्वि ३	अश्वि ४	धनि १	श्रव १	पूषा ३	उषा २	मृग १	ज्ये. ३
०	०	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
०	उ	उ	उ	अ	उ	अ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रात: 5:30

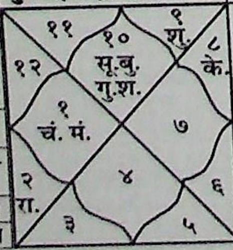

गुरौ पूर्णिमायां ग्रह स्पष्ट प्रात: 5:30 बजे, 28 जनवरी

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
९	३	०	१०	९	९	९	१	७
१४	४	१६	१	१४	०	१०	२३	२३
७	१५	१६	४२	५७	६	३९	१७	१७
४९	३७	५६	६	४३	२०	१३	११	११
60	800	31	23	14	75	7	3	3
56	31	36	20	13	11	8	11	11
श्रव २	पुष्य १	भर १	धनि ३	श्रव २	उषा २	श्रव १	रोहि ४	ज्ये. २
०	०	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
०	उ	उ	उ	अ	उ	अ	अ	अ

कुं. पूर्णिमा, प्रात: 5:30

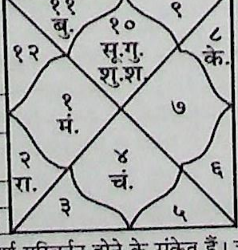

पौष शुक्ल पक्षफल–

इस पक्ष की द्वितीया (14 जन.) को गायों के सींगों को धोकर लिए जल सहित स्नान करके श्वेत वस्त्र धारण कर बालेन्दु (द्वितीया) चन्द्रमा का गन्धादि से पूजन करके ब्राह्मणों को क्षीर सहित विविध भोजन करवाकर सन्तुष्ट करना चाहिए। इससे रोगों की निवृत्ति और आरोग्य की प्राप्ति होती है। ***मकर-संक्रान्ति***–ता. **14 जनवरी**, **बृहस्पतिवार** को सं. प्रात: 8 बजकर 14 मिनट पर मकर लग्न में प्रवेश करेगी। ३० मुहू. इस सं. का पुण्यकाल यद्यपि सारा दिन रहेगा, परन्तु विशेष रूप से प्रात: सूर्योदय से दोपहर 14:38 बजे तक रहेगा। वारानुसार नन्दा तथा नक्षत्रानुसार महोदरी नामक यह सं. ब्राह्मणों, लेखकों तथा शिक्षक वर्ग के लिए लाभप्रद रहेगी। संक्रान्ति कुं. के लग्न में '**चतुर्ग्रही योग**' रहने से विश्व एवं भारत की राजनीति में विशेष उथल-पुथल रहेगी। केन्द्रीय अथवा किसी राज्य के मन्त्रीमण्डल में महत्त्वपूर्ण परिवर्तन होने के संकेत हैं। चूंकि भारत की प्रभाव लग्नराशि पर ही चतुर्ग्रही योग बना रहेगा, इसलिए कुछ राज्यों में छत्रभंग (शासन-परिवर्तन), पाकिस्तान आदि विरोधी देशों के साथ युद्धजन्य हालात तथा ओलावृष्टि/प्राकृतिक प्रकोपों से खड़ी अथवा तैयार फसलों विशेषकर ईख व धान्य की फसलों को नुकसान पहुँचे। **मकर संक्रान्ति** (14 जन.) को गंगाजलादि पवित्र तीर्थ जलों के स्नानोपरान्त तिलों से हवन, तिलयुक्त वस्तुओं का दान व भगवान् विष्णु सहित पंचदेव पूजन, पुरुष सूक्त, सूर्याष्टक स्तोत्र, सूर्य द्वादशनाम, सूर्यार्घ्य, पितृ-तर्पण करके ब्राह्मणों को क्षीर सहित भोजन, वस्त्र, फल, धार्मिक पुस्तकादि का दक्षिणा सहित दान करने का विशेष माहात्म्य होगा। **क्योंकि 14 अप्रैल, 2021 ई. को हरिद्वार में महाकुम्भ आयोजित होगा। इसलिए प्रचलित मान्यतानुसार कुम्भ-स्नान का माहात्म्य 14 जनवरी (मकर संक्रान्ति) से ही प्रारम्भ हो जाएगा।** सप्तमी (मार्तण्ड-सप्तमी-20 जन.) को भगवान् सूर्य का व्रत, पूजन करके गोदान करनी चाहिए। ता. 24 जन. को **पुत्रदा एकादशी** का विधिवत् व्रत रखकर जप, हवन, ब्राह्मण-भोजन एवं यथाशक्ति दान करने से दम्पत्ति को मनोवांछित पुत्र/सन्तान की प्राप्ति होती है। **पौष पूर्णिमा** (28 जन.) से हरिद्वार, प्रयाग, कुरुक्षेत्र आदि तीर्थों पर (अथवा गृह में ही गंगाजल सहित), स्नान, जप, ध्यान, दानादि का विशेष माहात्म्य होगा। इस दिन से ही माघ-स्नान/पाठादि का माहात्म्य भी प्रारम्भ होगा।

वि. संवत् २०७७, माघ कृष्ण पक्ष शाक: १९४२

सन् 2021 ई. (29 जनवरी से 11 फरवरी), हिजरी सन् 1442
सूर्य उत्तरायण, दक्षिण गोल, शिशिर ऋतु:

प्रात: सूर्योदय से पहिले पूर्व में शुक्र कुछ समय के लिए दृश्य होगा, जो 8 फर. से अस्त हो जाएगा। सायं मंगल याम्योत्तर-वृत्तासन्न होगा, 2 फर. से बुध भी अस्त होगा। शनि 9 फर. से प्रात: पूर्व में दृश्य होगा।

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	समाप्ति काल घटी	समाप्ति काल पल	नक्षत्र	समाप्ति काल घटी	समाप्ति काल पल	योग	समाप्ति काल घटी	समाप्ति काल पल	करण	समाप्ति काल घटी	समाप्ति काल पल	तारीखें माघ शक	तारीखें जमादि स.	तारीखें जनवरी	तारीखें माघ प्रवि	चंद्र राशि प्रवेश घड़ी-पल		सूर्योदय कालिक सूर्यस्पष्ट रा. अं. क. वि.	भा.स्टैं.टा. जालन्धर सूर्योदय घं.मिं.	भा.स्टैं.टा. जालन्धर सूर्यास्त घं.मिं.
२६:१५	१	शुक्र	४०	४०	आश्ले	४९	४८	आयु	२४	५३	बा	११	५९	9	15	29	१६	सिं.४९:४८	माघ कृष्ण पक्ष प्रारम्भ	९:१५:१३:३९	7:26	17:56
२६:२०	२	शनि	३७	००	मघा	४७	३८	सौभा	१९	१८	तै	८	५०	10	16	30	१७	सिंह	**बुध वक्री ३४:४३ (21:18)**	९:१६:१४:३२	7:25	17:57
२६:२३	३	रवि	३२	३०	पू.फा.	४४	४३	शोभ	१२	४८	व	४	४५	11	17	31	१८	कं.५८:५३	भ. ४:४५ से ३२:३० तक, **श्रीगणेश संकष्ट चतुर्थी व्रत**(देखें पृष्ठ 13 एवं 24)**(A)**	९:१७:१५:२७	7:25	17:58
२६:२८	४	चन्द्र	२७	३३	उ.फा.	४१	२३	अति सुक	५ ५८	५३ ३८	ब	०	३	12	18	फर	१९	कन्या	**फरवरी**–सन् 2021 ई. प्रारम्भ	९:१८:१६:१७	7:24	17:59
२६:३०	५	मंग	२२	२०	हस्त	३७	५०	धृति	५१	२०	तै	२२	२०	13	19	2	२०	कन्या	**वक्री बुध पश्चिम में अस्त ०:०५ (7:26)**	९:१९:१७:१०	7:24	18:00
२६:३३	६	बुध	१७	५	चित्रा	३४	२०	शूल	४४	३	व	१७	५	14	20	3	२१	तु. ६:०८	भ. १७:०५ से ४४:३० तक, शीतला षष्ठी	९:२०:१८:००	7:23	18:00
२६:३८	७	गुरु	११	५५	स्वा.	३०	५८	गंड	३६	५५	ब	११	५५	15	21	4	२२	तुला	**वक्री बुध मकर में ३८:१५ (22:40)**, गुरु श्रवण ३ से ६:१० **(B)**	९:२१:१८:५०	7:22	18:01
२६:४३	८	शुक्र	६	५८	विशा.	२७	४८	वृद्धि	२९	५८	कौ	६	५८	16	22	5	२३	वृ.१३:३५	सूर्य धनिष्ठा में ५९:३५ (31:11), शुक्र वार्धक्य प्रारम्भ 18घं.-11मिं.	९:२२:१९:३७	7:21	18:02
२६:४५	९	शनि	२	१३	अनु.	२४	५३	ध्रुव	२३	१०	ग	२	१३	17	23	6	२४	वृश्चिक	भ. २९:५९ से ५७:४५ तक,	९:२३:२०:२६	7:21	18:03
अवम्	१०	शनि	५७	४५	०	०	०	००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	००	**दशमी तिथि का क्षय** ००	०:००:००:००	००	००
२६:५०	११	रवि	५३	४०	ज्ये.	२२	१८	व्या.	१६	४०	ब	२५	४३	18	24	7	२५	ध.२२:१८	षट्तिला एकादशी व्रत (स्मार्त)	९:२४:२१:१२	7:20	18:04
२६:५५	१२	चन्द्र	५०	३	मूल	२०	५	हर्ष	१०	२८	कौ	२१	५२	19	25	8	२६	धनु	**षट्तिला एकादशी व्रत (वैष्णव), शुक्र पूर्व में अस्त २७:१० (C)**	९:२५:२१:५६	7:19	18:05
२७:००	१३	मंग	४७	००	पू.षा.	१८	२३	वज्र सिद्धि	४ ५९	४० १८	ग	१८	३२	20	26	9	२७	म.३३:००	भ. ४७:०० से, **भौम प्रदोष व्रत, शनि पूर्व में उदय ४३:५० (24:50)**	९:२६:२२:३९	7:18	18:06
२७:०३	१४	बुध	४४	३८	उ.षा.	१७	१५	व्य.	५४	३३	वि	१५	४९	21	27	10	२८	मकर	भ. १५:४९ तक, वक्री बुध श्रवण ४ में ३८:४०, मासिक शिवरात्रि व्रत	९:२७:२३:२६	7:18	18:07
२७:०५	३०	गुरु	४३	१८	श्रव.	१७	००	वरी	५०	३८	च	१३	५८	22	28	11	२९	कुं.४७:१५	**माघ (मौनी) अमावस** (स्नानदानादि), **महोदय योग (14:05 तक)(D)**	९:२८:२४:०८	7:17	18:07

शुक्र अस्त 8 फर.

(A) गौरी-वक्रतुण्ड चतुर्थी **(B)** (9:50), शुक्र श्रवण में ४९:०८ (27:01) **(C)** (18:11), तिल द्वादशी **(D)** पितृतर्पणादि विशेष माहात्म्य), **पंचक प्रारम्भ ४७:१५ (26:11)**, मेला हरिद्वार, प्रयागराज आदि

शुक्रे अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रात: 5:30 बजे, 5 फरवरी

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
९	६	०	९	९	९	९	१	७
२२	२५	२०	२९	१६	१०	११	२२	२२
१४	४३	३३	४५	५१	७	३६	५१	५१
५५	५०	१९	३१	४०	४७	४	४५	४५
60	843	32	58	14	75	7	3	3
49	28	36	41	13	11	3	11	11
श्रव ४	विशा २	भर ३	धनि २	श्रव ३	श्रव १	श्रव १	रोहि ४	ज्ये. २
०	०	मा	व	मा	मा	मा	व	व
०	उ	उ	अ	अ	उ	अ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रात: 5:30

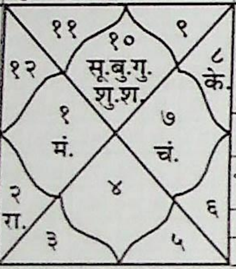

गुरौ अमावस्यायां ग्रह स्पष्ट प्रात: 5:30 बजे, 11 फरवरी

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
९	९	०	९	९	९	९	१	७
२८	१८	२३	२३	१८	१७	१२	२२	२२
१९	३४	५०	०	१६	३८	१८	३२	३२
३७	१२	३३	२५	५१	४६	११	४०	४०
60	795	33	66	14	75	6	3	3
43	18	15	30	10	9	57	10	10
धनि २	श्रव ३	भर ४	श्रव ४	श्रव ३	श्रव ३	श्रव १	रोहि ४	ज्ये. २
०	०	मा	व	मा	मा	मा	व	व
०	अ	उ	अ	अ	अ	उ	अ	अ

कुं. अमावस, प्रात: 5:30

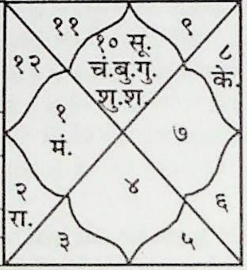

माघ कृष्ण पक्षफल–

इस पक्ष की **चतुर्थी** (31 जन.) को **श्रीगणेश संकट चौथ** के व्रत का संकल्प **'गणपति प्रीतये संकष्ट चतुर्थी व्रतं करिष्ये'** पढ़कर प्रात: स्नानादि के उपरान्त व्रत करके रात्रि को श्रीगणेश एवं चन्द्र की लड्डुओं सहित पूजा करके चन्द्रोदय होने पर **'ॐ सोम सोमाय नम:'** द्वारा अर्घ्य देने तथा **'ॐ गं गणपते नम:'** मन्त्र जाप करने से भगवान् श्रीगणेश जी की कृपा से अनेक मानसिक एवं कायिक कष्टों का निवारण हो जाता है। **षट्तिला एकादशी** (7 या 8 फर.) को स्मार्त एवं वैष्णव मतानुलम्बी तिल मिश्रित जल से स्नान करके तिलों द्वारा श्रीविष्णु पूजा एवं हवन करें। श्रीकृष्ण के **'ॐ नमो: भगवते वासुदेवाय नम:'** का 108 बार या यथाशक्ति पाठ करें। फिर तिलों से निर्मित मोदक, बर्फी आदि का दान करें तथा स्वयं उनका सेवन करें तो अनेक पापों का नाश होता है। ता. 11 फर. को **माघ (मौनी) अमावस** बृहस्पतिवार को होने से इस दिन **हरिद्वार, प्रयागराज** आदि तीर्थों पर स्नान, वस्त्र, चावलादि अन्न-दान, फल, आँवला, तिल निर्मित रेवड़ियाँ, गच्चकादि मिष्ठान्न का दान, पितृ-तर्पण, ब्राह्मण भोजन दक्षिणा सहित देने का विशेष एवं अक्षय फल होगा। स्नान, जप एवं ध्यानादि मौन होकर करने चाहिए। इसी दिन श्रवण नक्षत्र होने से **'महोदय'** नामक पुण्यतम योग भी बना हुआ है। ***लोक-भविष्य***–चान्द्र माघ मास में पाँच शुक्र एवं पाँच शनिवार होने से जनसंख्या, धन-धान्य एवं अनाजादि के उत्पादन में वृद्धि होगी। कुछ विशेष उच्च वर्ग के लोगों में सुख-साधनों की वृद्धि होगी। अधिकांश लोग भोग-विलासादि कार्यों में प्रवृत्त होंगे। पाँच शनिवारों के कारण आशातीत महँगाई, देश में कहीं दुर्भिक्ष, अग्निकाण्ड, युद्धादि का भय, कहीं छत्रभंग (सत्ता-परिवर्तन) हो। ता. 4 फर. से मकर राशि में **'पंचग्रही योग'** (सू. बु. गु. शु. श.) तथा कालसर्प योग का प्रभाव रहने से विश्व में युद्ध तथा भयंकर प्राकृतिक प्रकोपों से व्यापक जन-धन हानि का भय रहे। विश्व-राजनीति में भारत का प्रभुत्व बढ़ेगा। किसी मुस्लिम देश में क्रान्ति या छत्रभंग हो। [illegible]

आकाश-लक्षण– [illegible]

सन् 2021 ई. (ता. 12 से 27 फरवरी), हिजरी सन् 1442 सूर्योदय भा.स्टैं.टा.

वि. संवत् २०७७, माघ शुक्ल पक्ष शाक : १९४२

दिनमान	तिथि	वार	समाप्ति काल		नक्षत्र	समाप्ति काल		योग	समाप्ति काल		करण	समाप्ति काल		तारीखें				चंद्र राशि प्रवेश घड़ी–पल	सन् 2021 ई. (ता. 12 से 27 फरवरी), हिजरी सन् 1442 सूर्य उत्तरायण, दक्षिण गोल, शिशिर–वसन्त ऋतु:	सूर्योदय कालिक सूर्यस्पष्ट	भा.स्टैं.टा. जालन्धर	
घटी/पल			घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.	माघ शक	जमादि मु.	फरवरी	फाल्गु प्र.		शुक्र अस्त है। प्रातः शनि पूर्वक्षितिज में, 15 फर. से बुध एवं गुरु भी पूर्व में पास–पास होंगे। सायंकाल मंगल याम्योत्तरवृत्त से पश्चिम में होगा।	रा. अं. क. वि.	सूर्योदय घं.मिं.	सूर्यास्त घं.मिं.
२७:१०	१	शुक्र	४३	५	धनि.	१७	४८	परि.	४७	३८	किं	१३	१२	23	29	12	फा.	कुम्भ	**सूर्य कुम्भ में** ३४:४८ (21:11), **फाल्गुन संक्रान्ति**, मु. १५ **(A)**	९:२९:२४:४९	7:16	18:08
२७:१५	२	शनि	४४	१५	शत.	१९	५०	शिव	४५	४३	बा	१३	४०	24	30	13	२	कुम्भ	चन्द्रदर्शन, मु. ३०, **बाबा श्रीलाल दयाल जयन्ती** (ध्यानपुर) पं.	१०:००:२५:२७	7:15	18:09
२७:२०	३	रवि	४६	५५	पू.भा.	२३	१८	सिद्ध	४४	५३	तै	१५	३५	25	रज्ज	14	३	मी. ७:१८	**गुरु पूर्व में उदय** ४१:२० (23:46), **गौरी तृतीया (गोंतरी) व्रत (B)**	१०:०१:२६:०५	7:14	18:10
२७:२५	४	चन्द्र	५१	३	उ.भा.	२८	१०	साध्य	४५	१३	व	१८	५९	26	2	15	४	मीन	भ. १८:५९ से ५१:०३ तक, **श्रीगणेश तिल चतुर्थी**, वरद् (कुन्द) **(C)**	१०:०२:२६:४१	7:13	18:11
२७:३०	५	मंग	५६	२८	रेव.	३४	२३	शुभ	४६	३३	ब	२३	४६	27	3	16	५	मे.३४:२३	**पंचक समाप्त ३४:२३ (20:57), वसन्त-पञ्चमी**, श्रीपञ्चमी **(D)**	१०:०३:२७:१६	7:12	18:12
२७:३३	६	बुध	६०	००	अश्वि	४१	३५	शुक्ल	४८	३५	कौ	२९	३९	28	4	17	६	मेष	गुरु बाल्यत्व समाप्त 23:46, गण्डमूल 23:49 तक	१०:०४:२७:४८	7:11	18:12
२७:३८	६	गुरु	२	५०	भर.	४९	२०	ब्रह्म	५१	५३	तै	२	५०	29	5	18	७	मेष	गुरु श्रवण ४ में १५:०८ (13:13), सूर्य सायन मीन में 16:15, वसन्त**(E)**	१०:०५:२८:२०	7:10	18:13
२७:४३	७	शुक्र	९	३५	कृति.	५७	००	ऐन्द्र	५३	२५	व	९	३५	30	6	19	८	वृ. ६:२०	भ. ९:३५ से ४२:४८ तक, **रथ-आरोग्य सप्तमी** (पूर्वारुणोदय-वाली)**(F)**	१०:०६:२८:४९	7:09	18:14
२७:४८	८	शनि	१६	००	रोहि.	६०	००	वैधृ.	५५	१५	ब	१६	००	फा	7	20	९	वृष	**शुक्र कुम्भ में** ४८:०३ (26:21), **भीष्माष्टमी** (देखें पृष्ठ 24) **(G)**	१०:०७:२९:१७	7:08	18:15
२७:५३	९	रवि	२१	३०	रोहि.	४	००	विष्क	५६	८	कौ	२१	३०	2	8	21	१०	मि.३७:००	**मंगल वृष में** ५३:४० (28:35), **गुप्त नवरात्र समाप्त**, बुध मार्गी 6:20 घं.मिं.	१०:०८:२९:४२	7:07	18:16
२७:५५	१०	चन्द्र	२५	२८	मृग.	९	४०	प्रीति	५५	४०	ग	२५	२८	3	9	22	११	मिथुन	भ. ५६:३१ से, स.सि.यो. 10:58 तक	१०:०९:३०:०५	7:06	18:16
२८:००	११	मंग	२७	३३	आर्द्रा	१३	३५	आयु	५३	४३	वि	२७	३३	4	10	23	१२	मिथुन	भ. २७:३३ तक, **जया एकादशी व्रत**	१०:१०:३०:२५	7:05	18:17
२८:०५	१२	बुध	२७	३५	पुन.	१५	३३	सौभा	५०	१३	बा	२७	३५	5	11	24	१३	क. ०:१५	**प्रदोष व्रत, भीष्म द्वादशी, तिल द्वादशी**	१०:११:३०:४७	7:04	18:18
२८:१०	१३	गुरु	२५	४०	पुष्य	१५	३५	शोभ	४५	१०	तै	२५	४०	6	12	25	१४	कर्क	**मेला जैसलमेर (राजस्थान) प्रारम्भ-3 दिन, गुरुपुष्य योग 13:17 तक**, स.सि.यो.	१०:१२:३१:०६	7:03	18:19
२८:१५	१४	शुक्र	२२	००	आश्ले	१३	५३	अति	३८	५३	व	२२	००	7	13	26	१५	सिं.१३:५३	भ. २२:०० से ४९:२८ तक, शुक्र शतभिषा में ८:१५ (10:20) **(H)**	१०:१३:३१:२१	7:02	18:20
२८:१८	१५	शनि	१६	५५	मघा	१०	४३	सुक.	३१	३०	ब	१६	५५	8	14	27	१६	सिंह	**माघ पूर्णिमा, माघ स्नान समाप्त, श्रीगुरु रविदास जयन्ती**, श्रीललिता जयं.	१०:१४:३१:३६	7:01	18:20

(A) पुण्यकाल सं. दोपहर 2:47 से अगले दिन दोप. 13:11 तक, गुप्त नवरात्र प्रारम्भ, माघ शुक्ल पक्ष शुरु **(B)** वक्री बुध पूर्व में उदय 18:20, रजब (मु.) मास प्रारम्भ **(C)** चतुर्थी, मंगल कृतिका में ५९:४०, शुक्र धनिष्ठा में २८:१३ (18:30) **(D)** सरस्वती पूजन, वागेश्वरी जयन्ती **(E)** ऋतु प्रारम्भ **(F)** पुत्र सप्तमी व्रत, सूर्य शतभिषा में ११:१३ (11:36), शनि श्रवण २ में ५६:४५, अचला-भानु सप्तमी, **(G)** बुध मार्गी ५८:०० (30:20), शक फाल्गुन प्रारम्भ **(H)** **श्रीसत्यनारायण व्रत**

शनौ अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः 5:30 बजे, 20 फरवरी

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१० ७ २५ ८	१ ९ ४६ ३८	० २८ ५३ ८	९ १६ ५६ १४	९ २० २३ २८	९ २८ ५४ ४५	९ १३ १९ ५४	१ २२ ४ ४	७ २२ ४ ४
60 28	716 31	34 3	3 46	13 56	75 4	6 43	3 11	3 11
शत १	कृति ४	कृति १	श्रव ३	श्रव ४	धनि २	श्रव १	रोहि ४	ज्ये. २
०	०	मा	व	मा	मा	मा	व	व
०	उ	उ	उ	उ	अ	उ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रातः 5:30

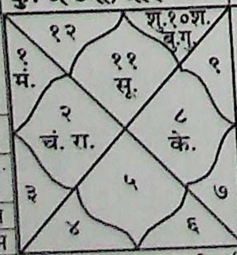

शनौ पूर्णिमायां ग्रह स्पष्ट प्रातः 5:30 बजे, 27 फरवरी

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१० १४ २७ ४५	४ ९ ५४ ११	१ २ ५२ ५४	९ १८ ४० ४५	९ २२ ० २२	१० ७ ३९ ५४	९ १४ ६ १३	१ २१ ४१ ४८	७ २१ ४१ ४८
60 16	858 14	34 31	36 12	13 43	74 58	6 29	3 11	3 11
शत ३	मघा ३	कृति २	श्रव ३	श्रव ४	शत १	श्रव २	रोहि ४	ज्ये. २
०	०	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
०	उ	उ	उ	उ	अ	उ	अ	अ

कुं. पूर्णिमा, प्रातः 5:30

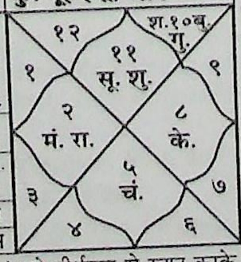

माघ शुक्ल पक्षफल–

इस पक्ष में **गौरी तृतीया** (14 फर.) को उमा (पार्वती) का पूजन करके गुड़, अदरख, लवण, पालक और खीर–इनसे बलि देकर ब्राह्मणों को भोजन कराएँ। **श्रीगणेश तिल चतुर्थी** (15 फर.) को श्रीगणेश जी का व्रत एवं पूजन तिल, फल, गुड़ व लड्डुओं सहित करने का विधान है। **वसन्त-पंचमी (16 फर.)** को पूर्वाह्ण-काल में भगवान् श्रीविष्णु, सरस्वती व श्रीकृष्ण-राधा, रति-कामदेव की पूजा लाल/पीले पुष्पों, गुलाल, अर्घ्य, नैवेद्य (भिगोकर छीली हुई हल्दी, गुड़, शक्कर और घी) आदि द्वारा करके फिर पीले एवं मीठे चावलों एवं पीले हलुवा का भोग लगाने की परम्परा है। **रथ सप्तमी** (19 फर.) को भगवान् सूर्यनारायण ने मन्वन्तर के आदि में इसी दिन जगत् को अपने प्रकाश से आलोकित किया था। विधि अनुसार व्रत रखने से पुत्र-सन्तति, आरोग्य, धनादि की प्राप्ति होती है। **माघ पूर्णिमा (27 फर.)** को तीर्थजल से स्नान करके देव-पितृ तर्पण करने के बाद तिल, गुड़, अनाज, घी, फल, वस्त्रों आदि का दान करने का विशेष माहात्म्य होता है। ***फाल्गुन संक्रान्ति***–ता. 12 फर., शुक्रवार को रात्रि 9 बजकर 11 मिनट (21:11) पर कन्या लग्न में प्रवेश करेगी। १५ मुहू. इस सं. का पुण्यकाल दोप. 14:47 से अगले दिन दोपहर 13:11 बजे तक रहेगा। वारानुसार मिश्रा तथा नक्षत्रानुसार महोदरी नामक यह सं. पशुओं, चोरी तथा ठगी करने वालों को लाभप्रद रहेगी। ***ग्रहगोचर***–मकर राशि पर ता. 20 फर. तक चतुर्ग्रही योग रहने तथा 22 फर. से मंगल-राहु योग के प्रभावस्वरूप किसी राज्य के प्रधाननेता की पदच्युति या आकस्मिक निधन होगा। उपयोगी वर्षा की कमी अर्थात् बेमौसमी वर्षा, बर्फबारी, तेज़ आँधी या तूफान से खड़ी फसलों को हानि होगी। **राहुरंगारकश्च राशि ऋक्षगतौ तदा। भयाभयं सस्यानां न च वृष्टि प्रजायते।।** ***सं. राशिफल***–मिथुन, कर्क, कन्या, तुला, धनु, मकर, मीन राशि वालों के लिए लाभदायक रहें, शेष राशि वालों को व्यर्थ की भागदौड़ रहे। ***आकाश-लक्षण***–उ. भारत में ओलावृष्टि से फसलों को हानि पहुँचे। ***शकुन***–माघ शुक्ल १ को यदि बादल बने तो आगे रूई महँगी हो।

वि. संवत् २०७७, फाल्गुन कृष्ण पक्ष शाक: १९४२

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	समाप्ति काल		नक्षत्र	समाप्ति काल		योग	समाप्ति काल		करण	समाप्ति काल		तारीखें				चंद्र राशि प्रवेश घड़ी–पल	सन् 2021 ई. (28 फरवरी से 13 मार्च), हिजरी सन् 1442 सूर्य उत्तरायण, दक्षिण गोल, वसन्त ऋतु:	सूर्योदय कालिक सूर्यस्पष्ट	भा.स्टैं.टा. जालन्धर	
			घड़ी	पल		घड़ी	पल		घड़ी	पल		घड़ी	पल	फाल्गु. शक	रजब मु.	फरवरी	फाल्गु. प्र.		शुक्र अस्त है। प्रातः पूर्वक्षितिज में बुध–गुरु–शनि उत्तरोत्तर ऊपर उठे दिखाई देंगे। सायं मंगल पश्चिम कपाल में होगा।	रा. अं. क. वि.	सूर्योदय घं. मिं.	सूर्यास्त घं. मिं.
२८:२३	१	रवि	१०	४८	पू.फा.	६	३०	धृति	२३	२३	कौ	१०	४८	9	15	28	१७	कं.२०:१८	फाल्गुन कृष्ण पक्ष प्रारम्भ **शुक्र अस्त है**	१०:१५:३१:४६	7:00	18:21
२८:२८	२	चन्द्र	४	३	उ.फा. हस्त	१ ५६	३५ २३	शूल	१४	५०	ग	४	३	10	16	मा.	१८	कन्या	भ. ३०:३२ से ५७:०० तक, मार्च–सन् 2021 ई. प्रारम्भ	१०:१६:३१:५६	6:59	18:22
अवम्	३	चन्द्र	५७	००	००	०	०	००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	००	**तृतीया तिथि का क्षय** ०० ००	००:००:००:००	००	००
२८:३३	४	मंग	५०	५	चित्रा	५१	१८	गंड वृद्धि	६ ५७	८ ३०	ब	२३	३३	11	17	2	१९	तु.२३:५०	**अंगारकी श्रीगणेश चतुर्थी व्रत** (देखें पृष्ठ 13-16)	१०:१७:३२:०६	6:58	18:23
२८:३८	५	बुध	४३	३५	स्वा.	४६	४०	ध्रुव	४९	२०	कौ	१६	५०	12	18	3	२०	तुला		१०:१८:३२:११	6:57	18:23
२८:४३	६	गुरु	३७	४०	विशा.	४२	३५	व्या.	४१	३८	ग	१०	३८	13	19	4	२१	वृ.२८:३३	भ. ३७:४० से, सूर्य पू.भा. में २७:३८ (17:58), गुरु धनिष्ठा १ में **(A)**	१०:१९:३२:१७	6:55	18:24
२८:४८	७	शुक्र	३२	३३	अनु.	३९	२०	हर्ष	३४	३३	वि	५	७	14	20	5	२२	वृश्चिक	भ. ५:०७ तक, बुध धनिष्ठा में ०:४८ (7:13), श्रीनाथ-उत्सव, गं.मू.	१०:२०:३२:२२	6:54	18:25
२८:५०	८	शनि	२८	१५	ज्ये.	३६	५३	वज्र	२८	१०	बा	०	२४	15	21	6	२३	ध.३६:५३	जानकी-व्रत, गण्डमूल विचार	१०:२१:३२:२६	6:53	18:25
२८:५५	९	रवि	२४	५०	मूल	३५	१८	सिद्धि	२२	२८	ग	२४	५०	16	22	7	२४	धनु	भ. ५३:३४ से, गण्डमूल 20:59 तक	१०:२२:३२:२७	6:52	18:26
२९:०३	१०	चन्द्र	२२	१८	पू.षा.	३४	३५	व्य.	१७	३०	वि	२२	१८	17	23	8	२५	म.४९:४३	भ. २२:१८ तक, शुक्र पू.भा. में ४९:१८ (26:33), स्वामी दयानन्द **(B)**	१०:२३:३२:२५	6:50	18:27
२९:०८	११	मंग	२०	३५	उ.षा.	३४	४०	वरी.	१३	१०	बा	२०	३५	18	24	9	२६	मकर	**विजया एकादशी व्रत**	१०:२४:३२:२२	6:49	18:28
२९:१०	१२	बुध	१९	४३	श्रव.	३५	३८	परि.	९	३०	तै	१९	४३	19	25	10	२७	मकर	**प्रदोष व्रत**	१०:२५:३२:१९	6:48	18:28
२९:१५	१३	गुरु	१९	४३	धनि.	३७	२५	शिव	६	३३	व	१९	४३	20	26	11	२८	कुं. ६:२५	भ. १९:४३ से ५०:१३ तक, **श्रीमहाशिवरात्रि व्रत, पंचक प्रारंभ (C)**	१०:२६:३२:१३	6:47	18:29
२९:२०	१४	शुक्र	२०	४३	शत.	४०	१३	सिद्ध	४	१८	श	२०	४३	21	27	12	२९	कुम्भ		१०:२७:३२:०६	6:46	18:30
२९:२५	३०	शनि	२२	४८	पू.भा.	४४	५	साध्य	२	५५	ना	२२	४८	22	28	13	३०	मीं.२८:०३	**फाल्गुन (शनिवासरी) अमावस** (स्नानदान, तर्पणादि)	१०:२८:३१:५६	6:44	18:30

(A) ४७:३३ (25:56) **(B)** सरस्वती जयन्ती **(C)** ६:२५ (9:21), मंगल रोहिणी में १२:२८ (11:46), **बुध कुम्भ में १४:१८**

शनौ अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः 5:30 बजे, 6 मार्च

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१०	७	१	९	९	१०	९	१	७
२१	२०	६	२४	२३	१६	१४	२१	२१
२८	४०	५५	१३	३५	२४	५०	१९	१९
५८	२८	४३	२५	२८	३१	४२	३३	३३
60	830	34	60	13	74	6	3	3
4	33	54	17	25	54	10	11	11
पूभा १	ज्ये. २	कृति ४	धनि १	धनि १	शत ३	श्रव २	रोहि ४	ज्ये. २
०	०	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
०	उ	उ	उ	उ	अ	उ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रातः 5:30

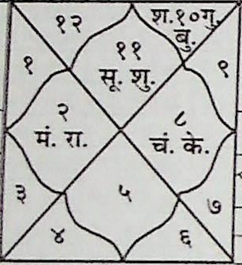

शनौ अमावस्यायां ग्रह स्पष्ट प्रातः 5:30 बजे, 13 मार्च

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१०	१०	१	१०	९	१०	९	१	७
२८	२३	११	२	२५	२५	१५	२०	२०
२८	३०	१	४	८	८	३२	५७	५७
५१	२	११	३१	१८	३६	५७	१७	१७
59	749	35	75	13	74	5	3	3
52	31	17	32	3	49	49	11	11
पूभा ३	पूभा २	रोहि १	धनि ३	धनि १	पूभा २	श्रव २	रोहि ४	ज्ये. २
०	०	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
०	अ	उ	उ	उ	अ	उ	अ	अ

कुं. अमावस, प्रातः 5:30

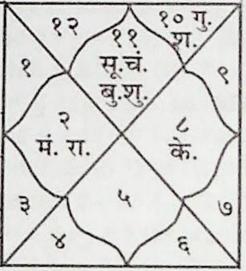

फाल्गुन कृष्ण पक्षफल–

इस पक्ष की **श्रीगणेश चतुर्थी** (2 मार्च) का व्रत रखकर सायंकाल पुनः स्नान करके लालवस्त्र धारण कर गन्ध-पुष्पादि से गणेश जी का लड्डुओं सहित पूजन कर चन्द्रोदय होने पर मन्त्रपूर्वक अर्घ्य देकर नमस्कार करें, फिर भोग लगाकर स्वयं परिवार सहित भोजन करने से सुख-सौभाग्य एवं सम्पत्ति की प्राप्ति होती है। **विजया एकादशी** (9 मार्च) को विधिवत् व्रत रखने से हर प्रकार के वाद-विवाद में सफलता प्राप्त होती है। **ता. 11 मार्च, गुरुवार को 'श्रीमहाशिवरात्रि'** का सर्वकल्याणकर व्रत रखने से अश्वमेघ यज्ञ के तुल्य फल प्राप्त होता है। इस दिन काले तिलों सहित स्नानकर व्रत पालन कर रात्रि में भगवान् शिव-शंकर की विधिवत् पूजा करनी चाहिए। पूजन के समय शिवकथा, शिवसहस्रनाम तथा शिवस्तोत्रादि का पाठ करना चाहिए। दूसरे दिन ब्राह्मण-भोजन एवं दानादि के पश्चात् स्वयं भोजन करना चाहिए। ता. 13 मार्च को **शनिवारी अमावस** होने से इस दिन रूद्र, अग्नि और ब्राह्मणों का पूजन करके उन्हें उड़द, दही और पूरी आदि का नैवेद्य अर्पण करें और स्वयं भी एक बार भोजन करें। **शनिवारी अमावस** सूर्यग्रहण तुल्य फलदायक होती है। **अमा. सोमे शनौ भौमे गुरुवारे यदा भवेत्। तत्पर्वं पुष्करं नाम सूर्यपर्वशताधिकम्।।** फाल्गुनी अमावस के दिन पित्रादिकों का अपिण्ड श्राद्ध करना चाहिए। ***लोक-भविष्य***–चान्द्र फाल्गुन मास में पाँच रविवार होने से भारत के कुछ राज्यों में राजनैतिक अस्थिरता एवं गतिरोध होने के संकेत हैं। लोगों में भय एवं विक्षोभ रहे। घी, खाद्य-तैल, दालें, चौपाय, पशुचारा तेज भाव होंगे। कहीं उपद्रव, अग्निकाण्ड व हिंसा से जन-धन हानि के संकेत भी हैं। पक्ष में **मंगल-राहु, गुरु-शनि** एवं **कालसर्प योग** के प्रभाव से राजनीतिक एवं सामाजिक वातावरण तनावपूर्ण एवं हिंसक रहेगा। ***आकाश लक्षण***–पक्ष के पूर्वार्द्ध में वायु-वेग के साथ पहाड़ी क्षेत्रों में हिमपात तथा मैदानी क्षेत्रों में खण्ड वर्षा के योग हैं। ***शकुन***–फा.कृ. ७ से ९ तक बादल गर्जे तो युद्धादि भय हो तथा धान्य सस्ते होंगे।

सन् 2021 ई. (ता. 14 से 28 मार्च), हिजरी सन् 1442 | सूर्योदय | भा.स्टैं.टा.

वि. संवत् २०७७, **फाल्गुन शुक्ल पक्ष** शाकः १९४२–४३

सन् 2021 ई. (ता. 14 से 28 मार्च), हिजरी सन् 1442

सूर्य उत्तरायण, दक्षिण–उत्तर गोल, वसन्त ऋतुः

शुक्र अस्त है। प्रातः बुध पूर्वक्षितिज में, गुरु व शनि पश्चिम–क्षितिज से कुछ ऊपर उठे होंगे। सायं मंगल पश्चिमकपाल में होगा।

दिनमान	तिथि	वार	समाप्ति काल		नक्षत्र	समाप्ति काल		योग	समाप्ति काल		करण	समाप्ति काल		तारीखें				चंद्र राशि प्रवेश		सूर्योदय कालिक सूर्यस्पष्ट	भा.स्टैं.टा. जालन्धर	
घटी/पल			घटी	पल		घटी	पल		घटी	पल		घटी	पल	फाल्गुन प्र.	रज्जब	मार्च	चैत्र प्र.	घड़ी–पल		रा. अं. क. वि.	सूर्योदय घं. मिं.	सूर्यास्त घं. मिं.
२९:३०	१	रवि	२६	००	उ.भा.	४९	३	शुभ	२	२०	ब	२६	००	23	29	14	चैत्र	मीन	चन्द्रदर्शन, मु. ४५, **सूर्य मीन में २८:२० (18:03), चैत्र संक्रान्ति (A)**	१०:२९:३१:४५	6:43	18:31
२९:३५	२	चन्द्र	३०	२०	रेव.	५५	५	शुक्ल	२	४०	कौ	३०	२०	24	शब	15	२	मे.५५:०५	**पंचक समाप्त** ५५:०५ (28:44), श्रीरामकृष्ण परमहंस जयन्ती **(B)**	११:००:३१:३३	6:42	18:32
२९:३८	३	मंग	३५	४५	अश्वि	६०	००	ब्रह्म	३	५०	तै	३	३	25	2	16	३	मेष	बुध शतभिषा में २९:३३ (18:30), **शुक्र मीन में ५०:४८ (27:00)**	११:०१:३१:१८	6:41	18:32
२९:४५	४	बुध	४२	५	अश्वि	२	१०	ऐन्द्र	५	४८	व	८	५५	26	3	17	४	मेष	भ. ८:५५ से ४२:०५ तक, सूर्य उ.भा. में ४९:१५ (26:21) **(C)**	११:०२:३०:५९	6:39	18:33
२९:५०	५	गुरु	४८	५०	भर.	९	५३	वैधृ	८	१५	ब	१५	२८	27	4	18	५	वृ.२६:५०	याज्ञवल्क्य जयन्ती	११:०३:३०:४१	6:38	18:34
२९:५३	६	शुक्र	५५	३०	कृति.	१७	४८	विष्क	१०	५५	कौ	२२	१०	28	5	19	६	वृष	शुक्र उ.भा. में ३१:३० (19:13)	११:०४:३०:१९	6:37	18:34
२९:५८	७	शनि	६०	००	रोहि.	२५	२५	प्रीति	१३	२३	ग	२८	३२	29	6	20	७	मि.५८:५३	गुरु धनिष्ठा २ में ५:१०, सूर्य सायन मेष में 15:09, उत्तर गोल **(D)**	११:०५:२९:५७	6:36	18:35
३०:०५	७	रवि	१	३३	मृग.	३२	८	आयु	१५	१३	व	१	३३	30	7	21	८	मिथुन	भ. १:३३ से ३३:५२ तक, **होलाष्टक प्रारम्भ**, अन्नपूर्णा–अष्टमी **(E)**	११:०६:२९:२७	6:34	18:36
३०:०८	८	चन्द्र	६	१०	आर्द्रा	३७	१८	सौभा	१५	५५	ब	६	१०	चैत्र	8	22	९	मिथुन	शक चैत्र एवं संवत् 1943 प्रारम्भ	११:०७:२९:००	6:33	18:36
३०:१३	९	मंग	९	००	पुन.	४०	३३	शोभ	१५	१३	कौ	९	००	2	9	23	१०	क.२४:५५		११:०८:२८:३१	6:32	18:37
३०:१८	१०	बुध	९	४३	पुष्य	४१	४३	अति	१२	५५	ग	९	४३	3	10	24	११	कर्क	भ. ३९:०१ से, गण्डमूल 23:12 बाद	११:०९:२७:५८	6:31	18:38
३०:२३	११	गुरु	८	१८	आश्ले	४०	५०	सुक	८	५५	वि	८	१८	4	11	25	१२	सिं.४०:५०	भ. ८:१८ तक, **आमलकी एकादशी व्रत**, गोविन्द द्वादशी, बुध पू.भा.**(F)**	११:१०:२७:२१	6:29	18:38
३०:२८	१२	शुक्र	४	४५	मघा	३७	५८	धृति शूल	५ ५६	१३ ३	बा	४	४५	5	12	26	१३	सिंह	**प्रदोष व्रत**, गण्डमूल 21:39 तक	११:११:२६:४४	6:28	18:39
अवम	१३	शुक्र	५९	२०	००	०	०	०	०	०	०		०	०	०	०	०	००	**त्रयोदशी तिथि का क्षय** ०० ००	००:००:००:००	००	००
३०:३३	१४	शनि	५२	३०	पू.फा.	३३	३३	गंड	४७	४०	ग	२५	५५	6	13	27	१४	कं.४७:१३	भ. ५२:३० से, महेश्वर व्रत, वृषदान व्रत	११:१२:२६:०४	6:27	18:40
३०:३५	१५	रवि	४४	४०	उ.फा.	२७	५५	वृद्धि	३८	२८	वि	१८	३५	7	14	28	१५	कन्या	भ. १८:३५ तक, **फाल्गुन पूर्णिमा, होलिका दहन** (प्रदोषकाले), **(G)**	११:१३:२५:२४	6:26	18:40

शुक्र अस्त है

होलाष्टकः
21 से 28 मार्च

(A) मु. ४५, पुण्यकाल सं. दोपहर 11:39 बाद, गण्डमूल 26:20 बाद **(B)** फूलेरा–दूज (मथुरा) उ.प्र., शब्बान (मु.) मास प्रारम्भ **(C)** अविघ्नकर व्रत, गण्डमूल 7:31 तक **(D)** प्रारम्भ, महाविषुव दिन **(E)** (मध्याह्न-व्यापिनी) **(F)** में ३८:४०, शनि श्रवण ३ में ८:१० (9:45) **(G)** **होलाष्टक समाप्त**, श्रीसत्यनारायण व्रत, श्रीचैतन्य महाप्रभु जयन्ती, लक्ष्मीनारायण व्रत, होली पर्व (पंजाब)

चन्द्रे अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः 5:30 बजे, 22 मार्च

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११	२	१	१०	९	११	९	१	७
७	११	१६	१४	२७	६	१६	२०	२०
२६	४७	२०	२२	३	२१	२३	२८	२८
२३	३५	८	५५	२९	२३	२२	४०	४०
59	744	35	89	12	74	5	3	3
33	7	37	33	28	39	18	11	11
उ.भा	आर्द्रा	रोहि	शत	धनि	उ.भा	श्रव	रोहि	ज्ये.
२	२	२	३	२	१	२	४	२
०	०	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
०	उ	उ	उ	उ	अ	उ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रातः 5:30

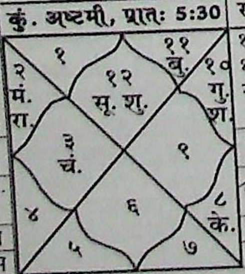

रवौ पूर्णिमायां ग्रह स्पष्ट प्रातः 5:30 बजे, 28 मार्च

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११	५	१	१०	९	११	९	१	७
१३	२	१९	२३	२८	१३	१६	२०	२०
२३	३३	५४	४०	१७	४९	५४	९	९
४	१७	२०	५६	१२	४	१३	३५	३५
59	890	35	97	12	74	4	3	3
19	21	49	49	1	33	55	11	11
उ.भा	उ.फा	रोहि	पू.भा	धनि	उ.भा	श्रव	रोहि	ज्ये.
४	२	३	२	२	४	३	४	२
०	०	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
०	उ	उ	उ	उ	अ	उ	अ	अ

कुं. पूर्णिमा, प्रातः 5:30

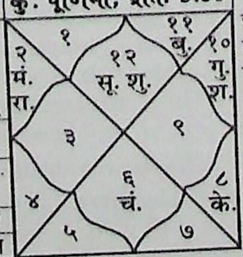

फाल्गुन शुक्ल पक्षफल–

इस पक्ष में **ता. 21 मार्च से 28 मार्च** तक **'होलाष्टक'** रहेंगे। इन दिनों परम्परानुसार पंजाब, हिमाचल, हरियाणादि कुछ प्रदेशों में शुभ मंगल कार्यों का आरम्भ वर्जित माना गया है, जबकि अन्य प्रदेशों में विशेष विचार नहीं किया जाता। **आमलकी एकादशी** (25 मार्च) के दिन आँवले के वृक्ष के नीचे बैठकर भगवान् विष्णु की भक्ति करनी चाहिए तथा आँवले की टहनी को कलश में स्थापन करके पूजन करना चाहिए। **ता. 28 मार्च** को पूर्णिमा के प्रदोषकाल में होलिका-दहन करने का शास्त्र-विधान है। प्रदोषकाल सूर्यास्त के बाद प्रारम्भ होता है (देखें पृष्ठ 47)। **ता. 28 मार्च, रविवार** उदय-व्यापिनी पूर्णिमा में ही पंजाब, जम्मू, हि.प्र. आदि कुछ राज्यों में होलिका-दहन से पूर्व ही **होली-पर्व** (रंगों वाला) मना लिया जाता है। जबकि शेष भारत विशेषकर उ.प्र., मथुरा, वृन्दावन, हरियाणादि प्रदेशों में अगले दिन ता. 29 मार्च, सोमवार को ही **'होली-पर्व'** बड़ी श्रद्धा व उत्साह से मनाया जाएगा। ***चैत्र-संक्रान्ति***–ता. **14 मार्च, रविवार** को सायं 6 बजकर 3 मिनट पर (18:03) सिंह लग्न में प्रवेश करेगी। ४५ मुहू. इस सं. का पुण्यकाल दोपहर 11:39 बाद प्रारम्भ होगा। वारानुसार घोरा तथा नक्षत्रानुसार नन्दा नामक यह सं. ब्राह्मणों, लेखकों व अध्यापकों के लिए लाभप्रद रहेगी। ***लोक-भविष्य***–रविवारी संक्रान्ति, सूर्य पर शनि की दृष्टि होने के कारण अनाज, चावल, चीनी, गुड़, तिल, तैल, चने, दालें आदि दैनिक उपभोग्य वस्तुओं के मूल्यों में जबरदस्त तेजी होने से सामान्य लोगों में परेशानियाँ एवं असन्तोष की भावना होगी। राजनेताओं एवं राजनीतिक पार्टियों में परस्पर विग्रह एवं खींचातानी बढ़ेगी। काश्मीर, असम आदि सीमावर्ती प्रदेशों में कहीं विस्फोटक एवं हिंसक घटनाएँ घटित होंगी। ***सं. राशिफल***–यह सं. मेष, मिथुन, सिंह, कन्या, तुला, धनु, मकर, कुम्भ राशि वालों के लिए लाभप्रद रहेगी। ***आकाश लक्षण***–पक्ष के पूर्वार्द्ध में उत्तर भारत में खण्ड वर्षा एवं तीव्र आँधियों के साथ खण्ड वर्षा होगी। खड़ी फसलों को हानि हो।

वि. संवत् २०७७, **चैत्र कृष्ण पक्ष** शाक : १९४३														तारीखें				चंद्र राशि प्रवेश घड़ी–पल	सन् 2021 ई. (29 मार्च से 12 अप्रैल), हिजरी सन् 1442 सूर्य उत्तरायण, उत्तर गोल, वसन्त ऋतु: शुक्र अभी अस्त है। प्रातः बुध पूर्वक्षितिजासन्न होगा, जो 6 अप्रै. से लुप्त हो जाएगा। गुरु पूर्वक्षितिज से ऊपर तथा शनि पूर्वकपाल में दृश्य होगा। 8 अप्रै. को चं.-गु. पास-पास दृश्य होंगे।	सूर्योदय कालिक सूर्यस्पष्ट	भा.स्टें.टा. जालन्धर	
दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	समाप्ति काल घटी	पल	नक्षत्र	समाप्ति काल घटी	पल	योग	समाप्ति काल घटी	पल	करण	समाप्ति काल घटी	पल	चैत्र शक	शाबान मु.	मार्च	चैत्र प्रवि			रा. अं. क. वि.	सूर्योदय घं. मिं.	सूर्यास्त घं. मिं.
३०:४३	१	चन्द्र	३६	१८	हस्त	२१	३५	ध्रुव	२८	४३	बा	१०	२९	8	15	29	१६	तु.४८:१५	**होली पर्व, होला-मेला** (श्रीआनन्दपुर व पांओटा साहिब) **(A)**	११:१४:२४:३८	6:24	18:41
३०:४८	२	मंग	२७	४३	चित्रा	१४	५८	व्या.	१८	४८	तै	२	१	9	16	30	१७	तुला	भ. ५३:३३ से, शुक्र रेवती में १५:२३ (12:32), राहु रोहि. ३ केतु **(B)**	११:१५:२३:५०	6:23	18:42
३०:५०	३	बुध	१९	२३	स्वा.	८	२८	हर्ष वज्र	९ ५९	०० ३८	वि	१९	२३	10	17	31	१८	वृ.४८:५५	भ. १९:२३ तक, **श्रीगणेश चतुर्थी व्रत**(देखें पृष्ठ 13), सूर्य रेवती में**(C)**	११:१६:२३:०५	6:22	18:42
३०:५५	४	गुरु	११	३८	विशा अनु.	२ ५७	३३ २५	सिद्धि	५१	३	बा	११	३८	11	18	अप्रै	१९	वृश्चिक	श्रीभगवान्नारायण जयन्ती, अप्रैल–सन् 2021 ई. प्रारम्भ, गण्डमूल 29:19 से,	११:१७:२२:१५	6:21	18:43
३१:०३	५	शुक्र	४	५३	ज्ये.	५३	३३	व्य.	४३	२०	तै	४	५३	12	19	2	२०	ध.५३:३३	भ. ५९:१० से, मंगल मृगशिर में ४२:०३ (23:08), बुध उ.भा. में **(D)**	११:१८:२१:१९	6:19	18:44
अवम्	६	शुक्र	५९	१०	००	०	०	०	०	०	०		०	०	०	०	०	००	**षष्ठी तिथि का क्षय** ०० ००	००:००:००:००	००	००
३१:०५	७	शनि	५४	४८	मूल	५०	५३	वरी	३६	४०	वि	२६	५९	13	20	3	२१	धनु	भ. २६:५९ से, शीतला सप्तमी, गण्डमूल 26:39 तक	११:१९:२०:२७	6:18	18:44
३१:१०	८	रवि	५१	४८	पू.षा.	४९	३३	परि.	३१	३	बा	२३	१८	14	21	4	२२	धनु	**शीतलाष्टमी व्रत**	११:२०:१९:३३	6:17	18:45
३१:१५	९	चन्द्र	५०	८	उ.षा.	४९	३३	शिव	२६	३३	तै	२०	५८	15	22	5	२३	म. ४:२५	गुरु धनि. ३ **कुम्भ में ४५:२३ (24:23)**, बुध पूर्व में अस्त 30:04	११:२१:१८:३८	6:16	18:46
३१:२०	१०	मंग	४९	५०	श्रव.	५०	५३	सिद्ध	२३	८	व	१९	५९	16	23	6	२४	मकर	भ. १९:५९ से ४९:५० तक,	११:२२:१७:३७	6:14	18:46
३१:२५	११	बुध	५०	४०	धनि.	५३	२०	साध्य	२०	४०	ब	२०	१५	17	24	7	२५	कुं.२१:५८	**पंचक प्रारम्भ २१:५८ (15:00), पापमोचनी एकादशी व्रत**	११:२३:१६:३५	6:13	18:47
३१:३०	१२	गुरु	५२	४०	शत.	५६	५३	शुभ	१९	५	कौ	२१	४०	18	25	8	२६	कुम्भ	**वारुणी योग** 27:16 से 28:57 तक, **वारुणी पर्व**	११:२४:१५:३४	6:12	18:48
३१:३३	१३	शुक्र	५५	४३	पू.भा.	६०	००	शुक्ल	१८	२५	ग	२४	१२	19	26	9	२७	मी.४५:१५	भ. ५५:४३ से, **प्रदोष व्रत**, बुध रेवती में ५७:२० (29:07)	११:२५:१४:३०	6:11	18:48
३१:३८	१४	शनि	५९	४५	पू.भा.	१	३०	ब्रह्म	१८	३०	वि	२७	४४	20	27	10	२८	मीन	भ. २७:४४ तक, **शुक्र** अश्विनी १ **मेष में ०:४५ (6:28)**, मासिक **(E)**	११:२६:१३:२२	6:10	18:49
३१:४५	३०	रवि	६०	००	उ.भा.	७	५	ऐन्द्र	१९	२०	च	३२	१५	21	28	11	२९	मीन	**पितृकार्येषु अमावस**, गण्डमूल 8:58 बाद	११:२७:१२:१५	6:08	18:50
३१:४८	३०	चन्द्र	४	४५	रेव.	१३	२५	वैधृ	२०	५०	ना	४	४५	22	29	12	३०	मे.१३:२५	**चैत्र (सोमवती), अमावस पंचक समाप्त १३:२५ (11:29) (F)**	११:२८:११:०७	6:07	18:50

शुक्र अस्त है

(A) वसन्तोत्सव, ध्वजारोहण, धूलिवन्दन, धुलण्डी, होलिका विभूति धारण, आम्रकुसुम प्राशन **(B)** ज्ये. १ में ५८:१८, सन्त तुकाराम जयन्ती **(C)** १७:१० (13:14), **बुध मीन में ४५:५० (24:42)** **(D)** ४१:३८ (22:58), एकनाथ-षष्ठी, श्रीरंग-पंचमी, मेला नवचण्डी (मेरठ) शुरु, **मेला गुरु रामराय (देहरादून)** **(E)** शिवरात्रि व्रत, **मेला पृथूदक-पिहोवातीर्थ (हरियाणा)** **(F)** कुम्भस्नान-माहात्म्य (हरिद्वार), **मेला प्रयागराजादि**, विक्रमी संवत् २०७७ पूर्ण

रवौ अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः 5:30 बजे, 4 अप्रैल

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११	८	१	११	९	११	९	१	७
२०	१४	२४	५	२९	२२	१७	१९	१९
१७	५८	५	३४	३९	३०	२७	४७	४७
३७	४२	३०	३८	३७	३५	८	२०	२०
59	816	35	107	11	74	4	3	3
6	11	59	35	27	26	25	11	11
रेव २	पूषा १	मृग १	उभा १	धनि २	रेव २	श्रव ३	रोहि ३	ज्ये. १
०	०	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
०	उ	उ	उ	उ	अ	उ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रातः 5:30

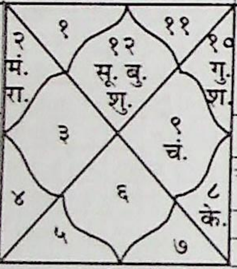

रवौ अमावस्यायां ग्रह स्पष्ट प्रातः 5:30 बजे, 12 अप्रैल

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११	११	१	११	१०	०	९	१	७
२८	२७	२८	२०	१	२	१८	१९	१९
९	०	५४	३५	८	२५	०	२१	२१
३६	२४	५	४४	३२	३९	१७	५४	५४
58	717	36	119	10	74	3	3	3
51	39	10	6	41	18	47	11	11
रेव ४	रेव ४	मृग २	रेव २	धनि ३	अश्वि १	श्रव ३	रोहि ३	ज्ये. १
०	०	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
०	अ	उ	अ	उ	अ	उ	अ	अ

कुं. अमावस, प्रातः 5:30

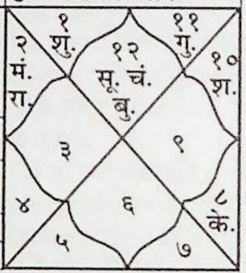

चैत्र कृष्ण पक्षफल–

प्रतिपदा (29 मार्च) को परम्परानुसार कुछ प्रदेशों में गतदिवस होलिका-दहन के पश्चात् होली पर्व मनाया जाएगा, विशेषकर मथुरा-वृन्दावन में। इसी दिन होला मेला, धुलण्डी व वसन्तोत्सव पंजाब, हरियाणा, हिमाचल-प्रदेश आदि अनेक प्रदेशों में मनाया जाता है। **ता. 31 मार्च** को चन्द्रोदय व्यापिनी चतुर्थी को **श्रीगणेश चतुर्थी** का व्रत रखकर श्रीगणेश-पूजन, मन्त्र-जप (**ॐ गं गणपत्ये नमः**) करने से विघ्न दूर होते हैं। मनोकामनाओं की पूर्ति तथा पुत्र-पौत्रादि की प्राप्ति होती है। **पापमोचनी एकादशी** (7 अप्रै.) का व्रत विधि अनुसार रखने से ज्ञाताज्ञात अनिष्ट पापों से निवृत्ति होती है। **ता. 8 अप्रैल** को **वारुणी पर्व** पर तीर्थादि स्थल पर स्नान, दानादि का विशेष महत्त्व होता है। इसका माहात्म्य ग्रहण तुल्य होता है। **चतुर्दशी** (10 अप्रैल) को **पिहोवा-तीर्थ (कुरुक्षेत्र)** पर **मेला पृथूदक** बड़ी श्रद्धापूर्वक मनाया जाता है। **ता. 12 अप्रैल-सोमवती अमावस** को हरिद्वार आदि तीर्थस्थान पर कुम्भ-स्नान, दान, जप, भगवान् शिव व विष्णु पूजन तथा पीपल (अश्वत्थ) वृक्ष की पुष्पाक्षत, चावल, फल, धूप, दीपादि सहित पूजन-परिक्रमा करने से अनेक पापों से मुक्ति मिलती है। ***कुम्भ महापर्व (हरिद्वार)–ता. 14 अप्रैल, 2021 ई. को हरिद्वार में महाकुम्भ पर्व का आयोजन होगा।*** यद्यपि ता. 5 अप्रैल, सोमवार से गुरु के कुम्भ राशि में प्रवेश के बाद से कुम्भ स्नान (हरिद्वार) का विशेष माहात्म्य प्रारम्भ हो जाएगा (देखें पृष्ठ 11)। ***ग्रहगोचर***–सूर्य पर शनि की दृष्टि तथा **मंगल-राहु** योग के कारण प्रतिकूल वर्षा से खड़ी फसलों को हानि पहुँचेगी–'**भयाभयं सस्यानां न च वृष्टि प्रजायते।।**' ***आकाश लक्षण***–चैत्र प्रतिपदा या सोमवती अमावस को वर्षा या बूंदाबांदी हो, तो आगामी अच्छी फसल के संकेत होंगे। इति शुभम् भवतु।।

वि. संवत् 2076–77, मार्च मास का तिथ्यादि पंचांग घण्टा–मिनटों में (भा. स्टैं. टा.), सन् 2020 ई.

मास पक्ष	मार्च	तिथि	वार	समाप्ति काल घं. मिं.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं. मिं.	योग	समाप्ति काल घं. मिं.	करण	समाप्ति काल घं. मिं.	चंद्र-राशि प्रवेश घं. मिं.	भद्रा, पंचक, सूर्यादि ग्रहों का राशि–नक्षत्र प्रवेश घण्टा–मिन्टों में [भा. स्टैं. टा.] सूर्योत्तरायण वसन्त ऋतुः	मार्च ता.	जम्मू		दिल्ली		चण्डीगढ़		मुम्बई	
														सूर्योदय घं. मिं.	सूर्यास्त घं. मिं.	सूर्योदय घं. मिं.	सूर्यास्त घं. मिं.	सूर्योदय घं. मिं.	सूर्यास्त घं. मिं.	सूर्योदय घं. मिं.	सूर्यास्त घं. मिं.
फाल्गुन शुक्ल पक्ष (वि. सं. 2076)	1	६	रवि	11:16	कृति	--	ऐन्द्र	12:35	तै	11:16	वृ. 13:18	मार्च (सन् 2020 ई०) मास प्रारम्भ	1	7:02	18:24	6:50	18:17	6:53	18:17	7:02	18:40
	2	७	चन्द्र	12:53	कृति	8:55	वैधृ	12:44	व	12:53	वृष	भ. 12:53 से 25:22 तक,	2	7:01	18:25	6:49	18:18	6:52	18:17	7:01	18:40
	3	८	मंग	13:51	रोहि.	10:32	विष्क	12:22	ब	13:51	मि. 23:03	**होलाष्टक प्रारम्भ,** अन्नपूर्णा-अष्टमी, वक्री बुध धनि. 4 में 13:21 **(A)**	3	7:00	18:25	6:48	18:18	6:51	18:18	7:01	18:41
	4	९	बुध	14:00	मृग	11:23	प्रीति	11:25	कौ	14:00	मिथुन	सूर्य पू.भा. में 11:42	4	6:58	18:26	6:47	18:19	6:50	18:19	7:00	18:41
	5	१०	गुरु	13:19	आर्द्रा	11:26	आयु	9:48	ग	13:19	क. 28:55	भ. 24:33 से,	5	6:57	18:27	6:46	18:19	6:49	18:20	7:00	18:42
	6	११	शुक्र	11:47	पुन.	10:38	सौभा शोभ	7:30 28:35	वि	11:47	कर्क	भ. 11:47 तक, **आमलकी एकादशी व्रत,** गोविन्द द्वादशी	6	6:56	18:28	6:45	18:20	6:48	18:20	6:59	18:42
	7	१२	शनि	9:29	पुष्य	9:05	अति	25:06	बा	9:29	कर्क	**शनि प्रदोष व्रत,** गुरु उ.षा. 1 में 30:08, गण्डमूल 9:05 बाद	7	6:55	18:28	6:44	18:21	6:46	18:21	6:58	18:42
	0	१३	शनि	30:32	० ०	० ०	० ०	० ०	०	० ०	० ०	**त्रयोदशी तिथि का क्षय** ०० ००	०	--	--	--	--	--	--	--	--
	8	१४	रवि	27:04	आश्ले मघा	6:52 28:10	सुक	21:11	ग	16:48	सिं. 6:52	भ. 27:04 से, महेश्वर व्रत, वृषदान व्रत, गण्डमूल 28:10 तक	8	6:54	18:29	6:43	18:21	6:45	18:22	6:57	18:43
	9	१५	चन्द्र	23:18	पू.फा.	25:09	धृति	16:57	वि	13:11	कं. 30:22	भ. 13:11 तक, **फाल्गुन पूर्णिमा, होलिका-दहन** (प्रदोषकाले), होलाष्टक**(B)**	9	6:52	18:30	6:42	18:22	6:44	18:22	6:56	18:43
चैत्र कृष्ण पक्ष (वि. सं. 2076)	10	१	मंग	19:24	उ.फा.	22:2	शूल	12:34	बा	9:21	कन्या	चैत्रकृष्ण पक्ष प्रारम्भ, **बुध मार्गी 9:16,** वसन्तोत्सव, **होला-मेला (C)**	10	6:51	18:31	6:41	18:23	6:43	18:23	6:55	18:44
	11	२	बुध	15:34	हस्त	19:00	गंड वृद्धि	8:12 27:58	ग	15:34	तु. 29:35	भ. 25:47 से, सन्त तुकाराम जयन्ती, शुक्र भर. में 30:17	11	6:50	18:32	6:40	18:23	6:42	18:24	6:54	18:44
	12	३	गुरु	12:00	चित्रा	16:16	ध्रुव	24:4	वि	12:00	तुला	भ. 12:00 तक, **श्रीगणेश चतुर्थी व्रत** (देखें पृष्ठ 13–16)	12	6:48	18:32	6:38	18:24	6:40	18:24	6:53	18:44
	13	४	शुक्र	8:51	स्वा.	14:00	व्या.	20:35	बा	8:51	वृ. 30:41	श्रीरंग-पंचमी, मेला नवचण्डी (मेरठ) प्रा., **मेला गुरु रामराय (देहरादून)**	13	6:47	18:33	6:37	18:24	6:39	18:25	6:53	18:44
	0	५	शुक्र	30:17	००	००	००	००	०	००	००	**पंचमी तिथि का क्षय** ०० ००	०	--	--	--	--	--	--	--	--
	14	६	शनि	28:26	विशा.	12:20	हर्ष	17:37	ग	17:22	वृश्चिक	भ. 28:26 से, **सूर्य मीन में** 11:53, **चैत्र संक्रान्ति,** मु. 45, पुण्यकाल **(D)**	14	6:46	18:34	6:36	18:25	6:38	18:26	6:52	18:44
	15	७	रवि	27:20	अनु.	11:23	वज्र	15:16	वि	15:53	वृश्चिक	भ. 15:53 तक, शीतला-सप्तमी	15	6:45	18:34	6:35	18:25	6:37	18:26	6:51	18:44
	16	८	चन्द्र	27:00	ज्ये.	11:12	सिद्धि	13:31	बा	15:10	ध. 11:12	**शीतलाष्टमी व्रत,** श्रीशीतला-पूजन	16	6:43	18:35	6:34	18:26	6:36	18:26	6:51	18:44
	17	९	मंग	27:24	मूल	11:46	व्य.	12:23	तै	15:12	धनु	सूर्य उ.भा. में 20:12, मंगल उ.षा. में 19:28, बुध शत. में 21:10	17	6:42	18:36	6:33	18:26	6:35	18:27	6:50	18:44
	18	१०	बुध	28:27	पू.षा.	13:01	वरी	11:47	व	15:56	म. 19:25	भ. 15:56 से 28:27 तक, राहु आर्द्रा 1 केतु मूल 3 में 19:51	18	6:41	18:37	6:32	18:27	6:34	18:27	6:49	18:45
	19	११	गुरु	30:00	उ.षा.	14:50	परि	11:38	ब	17:14	मकर	**पापमोचनी एकादशी व्रत (स्मार्त)**	19	6:39	18:37	6:31	18:28	6:32	18:28	6:48	18:45
	20	११	शुक्र	--	श्रव.	17:05	शिव	11:52	कौ	18:58	कुं. 30:20	**पंचक प्रारम्भ 30:20, पापमोचनी एकादशी व्रत (वैष्णव),** सूर्य सायन**(E)**	20	6:38	18:38	6:29	18:28	6:31	18:29	6:47	18:45
	21	१२	शनि	7:56	धनि.	19:40	सिद्ध	12:22	तै	7:56	कुम्भ	**शनिप्रदोष व्रत, महावारुणी योग** 19:40 बाद, शक चैत्र एवं संवत् 1942 प्रारम्भ	21	6:37	18:39	6:28	18:29	6:30	18:30	6:46	18:45
	22	१३	रवि	10:08	शत.	22:27	साध्य	13:02	व	10:08	कुम्भ	भ. 10:08 से 23:20 तक, **वारुणी योग** 10:08 तक, **मंगल मकर में 14:39,(F)**	22	6:35	18:40	6:27	18:29	6:29	18:30	6:45	18:46
	23	१४	चन्द्र	12:31	पू.भा.	25:21	शुभ	13:51	श	12:31	मी. 18:37		23	6:34	18:40	6:26	18:30	6:27	18:31	6:45	18:46
	24	३०	मंग	14:58	उ.भा.	28:19	शुक्ल	14:43	ना	14:58	मीन	**चैत्र अमावस, भौमवती अमावस,** शुक्र कृति. में 29:27, वि. संवत् 2076**(G)**	24	6:33	18:41	6:25	18:30	6:26	18:32	6:44	18:46
चैत्र शुक्ल पक्ष (वि. सं. 2077)	25	१	बुध	17:27	रेव.	--	ब्रह्म	15:36	ब	17:27	मीन	**'प्रमादी'** नाम वि. संवत् **2077** प्रारम्भ, **चैत्र** (वासन्त) **नवरात्र प्रारम्भ (H)**	25	6:33	18:41	6:22	18:31	6:24	18:33	6:43	18:47
	26	२	गुरु	19:54	रेव.	7:16	ऐन्द्र	16:28	बा	6:41	मे. 7:16	**पंचक समाप्त 7:16,** शब्बान (मुस्लि.) मास प्रारम्भ, गण्डमूल, स.सि.यो.	26	6:32	18:41	6:22	18:32	6:22	18:34	6:42	18:47
	27	३	शुक्र	22:13	अश्वि	10:9	वैधृ	17:15	तै	9:04	मेष	**गणगौरी तृतीया, श्रीमत्स्य जयन्ती,** गण्डमूल 10:09 तक	27	6:30	18:42	6:20	18:32	6:20	18:35	6:41	18:48
	28	४	शनि	24:18	भर.	12:52	विष्क	17:53	व	11:16	वृ. 19:30	भ. 11:16 से 24:18 तक, **शुक्र वृष में 15:38,** दमनक चतुर्थी	28	6:28	18:42	6:19	18:33	6:19	18:35	6:40	18:48
	29	५	रवि	26:02	कृति	15:18	प्रीति	18:16	ब	13:10	वृष	**श्री (लक्ष्मी) पंचमी, गुरु** उ.षा. 2 **मकर में 27:50,** नाग-पंचमी	29	6:26	18:43	6:18	18:33	6:18	18:36	6:39	18:48
	30	६	चन्द्र	27:15	रोहि.	17:18	आयु	18:18	कौ	14:39	मि. 30:06	**स्कन्द-षष्ठी व्रत,** स. सि. यो.	30	6:25	18:44	6:17	18:34	6:16	18:36	6:38	18:49
	31	७	मंग.	27:50	मृग.	18:44	सौभा	17:53	ग	15:33	मिथुन	भ. 27:50 से, सूर्य रेवती में 6:57, बुध पू.भा. में 7:55, **द्विपुष्कर योग** 18:44 तक	31	6:25	18:44	6:17	18:34	6:16	18:36	6:38	18:49

(A) वक्री बुध पूर्व में उदय 6/57, लक्ष्मी-सीताष्टमी **(B)** समाप्त, श्रीसत्यनारायण व्रत, लक्ष्मीनारायण व्रत, श्रीचैतन्य महाप्रभु जयन्ती **(C)** (**श्रीआनन्दपुर व पांओटा साहिब**), ध्वजारोहण, धुलण्डी, होलिका विभूति धारण, धूलिवन्दन, आम्रकुसुम प्राशन **(D)** सं. सारा दिन, एकनाथ षष्ठी **(E)** मेष में 9/20, उत्तर गोल प्रारम्भ, महाविषुव दिन, वसन्त-सम्पात् **(F)** मासशिवरात्रि व्रत, मेला पृथुदक-पिहोवातीर्थ (हरियाणा)-2 दिन **(G)** पूर्ण, गंडमूल 28/19 बाद **(H)** चैत्र शुक्ल पक्ष प्रारम्भ, चन्द्रदर्शन, मु. 30, घटस्थापन, संवत्सरफल श्रवण, ध्वजारोहण, तैलाभ्यङ्ग, श्रीदुर्गा-पूजा, गुड़ी पड़वा

वि. संवत् 2077, अप्रैल मास का तिथ्यादि पंचांग घण्टा–मिनटों में (भा. स्टैं. टा.), सन् 2020 ई.

मास पक्ष	अप्रैल	तिथि	वार	समाप्ति काल घं. मिं.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं. मिं.	योग	समाप्ति काल घं. मिं.	करण	समाप्ति काल घं. मिं.	चंद्र-राशि प्रवेश घं. मिं.	भद्रा, पंचक, सूर्यादि ग्रहों का राशि–नक्षत्र प्रवेश घण्टा–मिन्टों में [भा. स्टैं. टा.] सूर्योत्तरायण वसन्त-ग्रीष्म ऋतुः	अप्रैल	जम्मू		दिल्ली		चण्डीगढ़		मुम्बई	
														सूर्योदय घं. मिं.	सूर्यास्त घं. मिं.	सूर्योदय घं. मिं.	सूर्यास्त घं. मिं.	सूर्योदय घं. मिं.	सूर्यास्त घं. मिं.	सूर्योदय घं. मिं.	सूर्यास्त घं. मिं.
चैत्र शुक्ल पक्ष	1	८	बुध	27:41	आर्द्रा	19:29	शोभ	16:56	वि	15:46	मिथुन	भ. 15:46 तक, श्रीदुर्गाष्टमी, भवान्युत्पत्ति, अशोकाष्टमी, बुधाष्टमी-योग (A)	1	6:24	18:45	6:16	18:35	6:16	18:37	6:36	18:49
	2	९	गुरु	26:43	पुन.	19:28	अति	15:21	बा	15:12	क.13:33	**श्रीरामनवमी**, श्रीदुर्गा नवमी, **नवरात्र-समाप्त**, स. सि. यो.	2	6:23	18:45	6:15	18:35	6:15	18:38	6:35	18:49
	3	१०	शुक्र	24:59	पुष्य	18:41	सुक	13:9	तै	13:51	कर्क	**नवरात्र-व्रत पारणा**, शनि उ.षा. 4 में 7/55, गण्डमूल 18:41 बाद	3	6:21	18:46	6:13	18:36	6:14	18:38	6:34	18:49
	4	११	शनि	22:30	आश्ले	17:08	धृति	10:20	व	11:45	सिं.17:08	भ. 11:45 से 22:30 तक, **कामदा एकादशी व्रत**, लक्ष्मीकान्त दोलोत्सव	4	6:19	18:47	6:12	18:37	6:12	18:39	6:34	18:49
	5	१२	रवि	19:25	मघा	14:57	शूल गंड	6:57 27:07	ब	8:58	सिंह	**प्रदोष व्रत** (देखें पृष्ठ 17), मंगल श्रवण में 24:00, श्रीविष्णु-दमनोत्सव, (B)	5	6:18	18:48	6:10	18:38	6:11	18:40	6:33	18:49
	6	१३	चंद्र	15:52	पू.फा.	12:16	वृद्धि	22:57	तै	15:52	क.17:32	अनङ्ग-त्रयोदशी, श्रीमहावीर-जयन्ती (जैन)	6	6:17	18:50	6:09	18:38	6:10	18:40	6:32	18:49
	7	१४	मंग	12:02	उ.फा. हस्त	09:15 30:07	ध्रुव	18:35	व	12:02	कन्या	भ. 12:02 से 22:04 तक, **बुध मीन में 14:20**, श्रीसत्यनारायण व्रत (C)	7	6:16	18:50	6:08	18:38	6:09	18:41	6:31	18:49
	8	१५	बुध	8:05	चित्रा	27:03	व्या.	14:12	ब	8:05	तु.16:34	**चैत्री पूर्णिमा** (स्नानदानादि), वैशाखस्नान प्रारम्भ, शुक्र रोहि. में 16:03	8	6:14	18:51	6:07	18:39	6:08	18:42	6:30	18:50
वैशाख कृष्ण पक्ष	0	१	बुध	28:14	० ०	० ०	० ०	० ०	०	० ०	००	**वैशाख कृष्ण प्रतिपदा का क्षय** ०० ००	०	--	--	--	--	--	--	--	--
	9	२	गुरु	24:39	स्वा.	24:15	हर्ष वज्र	9:56 29:56	तै	14:27	तुला	बुध उ.भा. में 19:19	9	6:13	18:52	6:06	18:39	6:06	18:42	6:30	18:50
	10	३	शुक्र	21:32	विशा.	21:55	सिद्धि	26:22	व	11:06	वृ.16:27	भ. 11:06 से 21:32 तक, गुड फ्राईडे (क्रिश्चियन)	10	6:12	18:52	6:05	18:40	6:05	18:43	6:29	18:50
	11	४	शनि	19:02	अनु.	20:12	व्य.	23:19	ब	8:17	वृश्चिक	**श्रीगणेश चतुर्थी व्रत** (देखें पृष्ठ 13), सती अनुसूया जयन्ती, गण्डमूल 20:12 बाद	11	6:11	18:53	6:04	18:41	6:04	18:44	6:29	18:51
	12	५	रवि	17:16	ज्ये.	19:13	वरी	20:54	कौ	6:09	ध.19:13	गण्डमूल विचार	12	6:09	18:54	6:04	18:41	6:03	18:45	6:28	18:51
	13	६	चंद्र	16:19	मूल	19:02	परि	19:08	व	16:19	धनु	भ. 16:19 से 28:16 तक, सूर्य अश्वि. 1 **मेष में 20:23, वैशाख संक्रान्ति (D)**	13	6:08	18:55	6:02	18:42	6:02	18:45	6:27	18:51
	14	७	मंग	16:12	पू.षा.	19:41	शिव	18:01	ब	16:12	म.25:58		14	6:07	18:55	6:01	18:42	6:01	18:46	6:26	18:51
	15	८	बुध	16:52	उ.षा.	21:04	सिद्ध	17:31	कौ	16:52	मकर		15	6:06	18:56	6:00	18:43	5:59	18:46	6:25	18:52
	16	९	गुरु	18:12	श्रव.	23:06	साध्य	17:33	ग	18:12	मकर		16	6:04	18:57	5:59	18:43	5:58	18:47	6:24	18:52
	17	१०	शुक्र	20:04	धनि.	25:36	शुभ	17:58	व	7:08	कुं.12:18	भ. 7:08 से 20:04 तक, **पंचक प्रारम्भ 12:18**, बुध रेवती में 21:41	17	6:03	18:57	5:58	18:44	5:57	18:47	6:23	18:52
	18	११	शनि	22:18	शत.	28:25	शुक्ल	18:41	ब	9:11	कुम्भ	**वरूथिनी एकादशी व्रत**, श्रीवल्लभाचार्य जयन्ती	18	6:02	18:58	5:57	18:44	5:56	18:48	6:23	18:53
	19	१२	रवि	24:43	पू.भा.	--	ब्रह्म	19:34	कौ	11:31	मी.24:38	सूर्य सायन वृष में 20:16, **ग्रीष्म ऋतु प्रारम्भ**	19	6:01	18:59	5:56	18:45	5:55	18:49	6:22	18:53
	20	१३	चंद्र	27:12	पू.भा.	07:23	ऐन्द्र	20:30	ग	13:58	मीन	भ. 27:12 से, **सोम प्रदोष व्रत**	20	6:00	19:00	5:55	18:46	5:54	18:49	6:21	18:53
	21	१४	मंग	29:38	उ.भा.	10:23	वैधृ	21:26	वि	16:25	मीन	भ. 16:25 तक, मासशिवरात्रि व्रत, शक वैशाख प्रारम्भ, गण्डमूल 10:23 बाद	21	5:59	19:00	5:54	18:46	5:53	18:50	6:21	18:53
	22	३०	बुध	--	रेव.	13:18	विष्क	22:17	च	18:47	मे.13:18	**पंचक समाप्त 13:18, वैशाख अमावस** (स्नानदान, पितृकार्येषु), (E)	22	5:58	19:01	5:53	18:47	5:52	18:51	6:20	18:54
	23	३०	गुरु	7:56	अश्वि	16:05	प्रीति	22:59	ना	7:56	मेष	**अमावस** (स्नान, दानादि 7:56 तक), गण्डमूल 16:05 तक	23	5:56	19:02	5:52	18:47	5:51	18:52	6:19	18:54
वैशाख शुक्ल पक्ष	24	१	शुक्र	10:02	भर.	18:39	आयु	23:32	ब	10:02	वृ.25:15	**वैशाख शुक्ल पक्ष प्रारम्भ**, चन्द्रदर्शन, मु. 30, मंगल धनि. में 28:52, (F)	24	5:55	19:03	5:51	18:48	5:50	18:52	6:19	18:54
	25	२	शनि	11:52	कृति.	20:58	सौभा	23:51	कौ	11:52	वृष	**श्रीशिवाजी-जयन्ती, भगवान् परशुराम जयन्ती** (देखें पृष्ठ 17), (G)	25	5:54	19:03	5:50	18:49	5:49	18:53	6:18	18:54
	26	३	रवि	13:23	रोहि.	22:56	शोभ	23:54	ग	13:23	वृष	भ. 25:57 से, **अक्षय-तृतीया**, केदार-बदरी यात्रा प्रारम्भ	26	5:53	19:04	5:49	18:49	5:48	18:54	6:17	18:55
	27	४	चन्द्र	14:30	मृग.	24:29	अति	23:36	वि	14:30	मि.11:46	भ. 14:30 तक, सूर्य भर. में 12:08, शुक्र मृग. में 17:00, स. सि. यो.	27	5:52	19:05	5:48	18:50	5:47	18:54	6:17	18:55
	28	५	मंग	15:08	आर्द्रा	25:33	सुक	22:55	बा	15:08	मिथुन	**आद्यगुरु श्रीशंकराचार्य जयन्ती**	28	5:51	19:05	5:47	18:50	5:46	18:55	6:16	18:56
	29	६	बुध	15:13	पुन.	26:02	धृति	21:47	तै	15:13	क.19:58	**श्रीरामानुजाचार्य जयन्ती**,	29	5:50	19:06	5:47	18:51	5:45	18:55	6:16	18:56
	30	७	गुरु	14:40	पुष्य	25:53	शूल	20:09	व	14:40	कर्क	भ. 14:40 से 26:04 तक, **श्रीगङ्गा-जयन्ती, गुरुपुष्य योग**, स. सि. यो.	30	5/49	19:07	5/46	18:52	5/44	18:56	6/15	18"56

(A) मेला बाहूफोर्ट (जम्मू)-काँगड़ादेवी, नैनादेवी (हि.प्र.), अप्रैल मास प्रारम्भ **(B) आनन्द** नाम संवत्सर प्रारम्भ, गण्डमूल 14:57 तक **(C) श्रीहनुमान-जयन्ती (दक्षिण-भारत) (देखें पृष्ठ 17), श्रीशिव-दमनोत्सव (D)** मु. 30, पुण्यकाल सं. मध्याह्न बाद, **वैशाखी पर्व** (पंजाब), गं.मू. **(E)** बुध पूर्व में अस्त 29:10, मेला पिंजौर (हरियाणा) **(F) बुध** अश्वि. (1) **मेष में 26:33,**
(G) रमज़ान (मुस्लि.) मास प्रारम्भ, त्रिपुष्कर योग 11:52 तक

वि. संवत् 2077, मई मास का तिथ्यादि पंचांग घण्टा–मिनटों में (भा. स्टैं. टा.), सन् 2020 ई.

मास पक्ष	मई	तिथि	वार	समाप्ति काल घं. मिं.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं. मिं.	योग	समाप्ति काल घं. मिं.	करण	समाप्ति काल घं. मिं.	चंद्र-राशि प्रवेश घं. मिं.	भद्रा, पंचक, सूर्यादि ग्रहों का राशि–नक्षत्र प्रवेश घण्टा–मिन्टों में [भा. स्टैं. टा.] सूर्योत्तरायण ग्रीष्म ऋतुः	मई ता.	जम्मू		दिल्ली		चण्डीगढ़		मुम्बई	
														सूर्योदय घं. मिं.	सूर्यास्त घं. मिं.	सूर्योदय घं. मिं.	सूर्यास्त घं. मिं.	सूर्योदय घं. मिं.	सूर्यास्त घं. मिं.	सूर्योदय घं. मिं.	सूर्यास्त घं. मिं.
वैशाख शुक्ल पक्ष	1	८	शुक्र	13:27	आश्ले	25:05	गंड	17:58	ब	13:27	सिं.25:05	बुध भर. में 16:01, मई मास प्रारम्भ, श्रम दिवस, जानकी (सीता) जयन्ती**(A)**	1	5:48	19:08	5:45	18:52	5:43	18:57	6:15	18:56
	2	९	शनि	11:36	मघा	23:40	वृद्धि	15:18	कौ	11:36	सिंह	गण्डमूल 23:40 तक,	2	5:47	19:08	5:44	18:53	5:42	18:58	6:14	18:56
	3	१०	रवि	9:10	पू.फा.	21:43	ध्रुव	12:08	ग	9:10	क.27:09	भ. 19:42 से, मोहिनी एकादशी व्रत (स्मार्त)	3	5:46	19:09	5:43	18:53	5:41	18:58	6:14	18:57
	4	११	चन्द्र	6:13	उ.फा.	19:19	व्या. हर्ष	8:35 28:44	वि	6:13	कन्या	भ. 06:13 तक, **मोहिनी एकादशी व्रत (वैष्णव)**, **मंगल कुंभ में 20:39+**	4	5:45	19:10	5:42	18:54	5:40	18:59	6:13	18:57
	0	१२	चन्द्र	26:54	० ०	0 0	० ०	0 0	०	0 0	० ०	**द्वादशी तिथि का क्षय** ०० + त्रिस्पर्शा महाद्वादशी	०	--	--	--	--	--	--	--	--
	5	१३	मंग	23:22	हस्त	16:39	वज्र	24:42	कौ	13:08	तु.27:15	**भौम प्रदोष व्रत**	5	5:44	19:11	5:42	18:55	5:40	18:59	6:13	18:58
	6	१४	बुध	19:45	चित्रा	13:51	सिद्धि	20:38	ग	9:34	तुला	भ. 19:45 से, **श्रीनृसिंह जयन्ती**, **श्रीसत्यनारायण व्रत** (देखें पृष्ठ 17), **(B)**	6	5:43	19:11	5:41	18:55	5:39	19:00	6:12	18:58
	7	१५	गुरु	16:15	स्वा.	11:07	व्य.	16:40	वि	6:00	वृ.27:13	भ. 6:00 तक, **वैशाख पूर्णिमा**, **श्रीबुद्ध-जयन्ती**, बुध कृति. में 20:51 **(C)**	7	5:42	19:12	5:40	18:56	5:38	19:01	6:12	18:58
ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष	8	१	शुक्र	13:02	विशा	8:38	वरी	12:56	कौ	13:02	वृश्चिक	ज्येष्ठ कृष्णापक्ष प्रारम्भ	8	5:42	19:13	5:39	18:56	5:37	19:01	6:12	18:59
	9	२	शनि	10:16	अनु. ज्ये.	6:33 29:02	परि.	9:34	ग	10:16	ध.29:02	भ. 21:10 से, **बुध वृष में 9:47**, श्रीनारद-जयन्ती, वीणादान, गण्डमूल 6:33 बाद	9	5:41	19:14	5:39	18:57	5:36	19:02	6:11	18:59
	10	३	रवि	8:04	मूल	28:13	शिव सिद्ध	6:40 28:22	वि	8:04	धनु	भ. 8:04 तक, **श्रीगणेश चतुर्थी व्रत** (देखें पृष्ठ 13), गण्डमूल 28:13 तक,**(D)**	10	5:40	19:14	5:38	18:58	5:36	19:03	6:11	18:59
	11	४	चन्द्र	6:36	पू.षा.	28:10	साध्य	26:41	बा	6:36	धनु	सूर्य कृति. में 6:22, **शनि वक्री 9:27**	11	5:39	19:15	5:37	18:58	5:35	19:03	6:10	19:01
	12	५	मंग	5:54	उ.षा.	28:54	शुभ	25:38	तै	5:54	म.10:17		12	5:38	19:16	5:37	18:59	5:34	19:04	6:10	19:01
	13	६	बुध	6:00	श्रव.	----	शुक्ल	25:11	व	6:00	मकर	भ. 6:00 से 18:26 तक, बुध रोहि. में 26:55, **शुक्र वक्री 12:12**	13	5:38	19:16	5:36	19:00	5:34	19:05	6:09	19:01
	14	७	गुरु	6:52	श्रव.	6:23	ब्रह्म	25:17	ब	6:52	कुं.19:22	**पंचक प्रारम्भ 19:22**, सूर्य वृष में 17:16, **ज्येष्ठ संक्रान्ति**, 30 मुहू. **(E)**	14	5:37	19:17	5:35	19:00	5:33	19:05	6:09	19:02
	15	८	शुक्र	8:23	धनि.	8:30	ऐन्द्र	25:48	कौ	8:23	कुम्भ		15	5:36	19:18	5:35	19:01	5:32	19:06	6:09	19:02
	16	९	शनि	10:23	शत.	11:05	वैधृ.	26:35	ग	10:23	कुम्भ	भ. 23:33 से, बुध पश्चिम में उदय 19:07	16	5:35	19:19	5:34	19:01	5:32	19:07	6:09	19:02
	17	१०	रवि	12:43	पू.भा.	13:59	विष्क	27:32	वि	12:43	मी. 7:14	भ. 12:43 तक,	17	5:35	19:19	5:33	19:02	5:31	19:07	6:09	19:03
	18	११	चन्द्र	15:09	उ.भा.	16:58	प्रीति	28:29	बा	15:09	मीन	**अपरा एकादशी व्रत**, मेला भद्रकाली एकादशी (कपूरथला) पंजाब, **(F)**	18	5:34	19:20	5:33	19:03	5:30	19:08	6:08	19:03
	19	१२	मंग	17:32	रेव.	19:53	आयु	29:20	तै	17:32	मे.19:53	**पंचक समाप्त 19:53, गण्डमूल विचार**	19	5:33	19:21	5:32	19:03	5:30	19:08	6:08	19:03
	20	१३	बुध	19:43	अश्वि	22:37	सौभा	----	ग	6:38	मेष	भ. 19:43 से, प्रदोष व्रत (देखें पृष्ठ 17), बुध मृग. में 24:37, राहु मृग. 4 **(G)**	20	5:33	19:21	5:32	19:04	5:29	19:09	6:07	19:04
	21	१४	गुरु	21:37	भर.	25:04	सौभा	6:00	वि	8:40	मेष	भ. 8:40 तक,	21	5:32	19:22	5:31	19:04	5:29	19:10	6:07	19:04
	22	३०	शुक्र	23:09	कृति	27:09	शोभ	6:26	च	10:23	वृ. 7:37	**ज्येष्ठ अमावस**, भावुक अमावस, **शनैश्चर जयन्ती**, वटसावित्री व्रत **(H)**	22	5:32	19:23	5:31	19:05	5:28	19:11	6:07	19:04
ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष	23	१	शनि	24:18	रोहि.	28:52	अति	6:34	किं	11:44	वृष	भावुक करिदिन, श्रीगङ्गा-स्नान प्रारम्भ, करवीर-व्रत (सूर्य-पूजा), स. सि. यो.	23	5:31	19:23	5:31	19:05	5:28	19:11	6:06	19:05
	24	२	रवि	25:01	मृग	----	सुक	6:24	बा	12:40	मि.17:34	चन्द्रदर्शन, मु. 30, **सूर्य रोहि. में 26:33, बुध मिथुन में 23:57**	24	5:31	19:24	5:30	19:06	5:27	19:12	6:06	19:05
	25	३	चन्द्र	25:19	मृग.	6:10	धृति शूल	5:55 29:04	तै	13:10	मिथुन	**रम्भा तृतीया व्रत**, महाराणा प्रताप जयन्ती, शव्वाल (मुस्लि.) मास प्रारम्भ	25	5:30	19:25	5:30	19:07	5:27	19:12	6:06	19:05
	26	४	मंग	25:09	आर्द्रा	7:02	गंड	27:53	व	13:14	क.25:24	भ. 13:14 से 25:09 तक, शुक्र अस्त 31 मई	26	5:30	19:25	5:29	19:07	5:26	19:13	6:06	19:06
	27	५	बुध	24:32	पुन.	7:28	वृद्धि	26:19	ब	12:51	कर्क		27	5:29	19:26	5:29	19:08	5:26	19:13	6:06	19:06
	28	६	गुरु	23:28	पुष्य	7:27	ध्रुव	24:24	कौ	12:00	कर्क	वक्री शुक्र रोहि. 4 में 12:27, **अरण्य-षष्ठी, विन्ध्यवासिनी पूजा, (I)**	28	5:29	19:27	5:29	19:08	5:26	19:14	6:05	19:07
	29	७	शुक्र	21:56	आश्ले	6:58	व्या.	22:06	ग	10:42	सिं. 6:58	भ. 21:56 से, बुध आर्द्रा में 14:06, गण्डमूल विचार	29	5:29	19:27	5:28	19:08	5:25	19:15	6:05	19:07
	30	८	शनि	19:58	मघा पू.फा.	06:03 28:43	हर्ष	19:27	वि	8:57	सिंह	भ. 8:57 तक, **श्रीदुर्गाष्टमी**, धूमावती जयन्ती, मेला क्षीर-भवानी (कश्मीर),**(J)**	30	5:28	19:28	5:28	19:09	5:25	19:15	6:05	19:08
	31	९	रवि	17:37	उ.फा.	27:01	वज्र	16:30	बा	6:48	कं.10:19	**वक्री शुक्र पश्चिम में अस्त 5:28**, स. सि. यो.	31	5:28	19:28	5:28	19:10	5:25	19:16	6:05	19:08

(A) (देखें पृष्ठ 17), **श्रीबगुलामुखी जयन्ती** (अर्द्धरात्रि-व्यापिनी), श्रीदुर्गाष्टमी, **(B)** श्रीकूर्म-जयन्ती (सायं व्यापिनी) **(C)** **श्रीबुद्ध-पूर्णिमा**, वैशाखस्नान समाप्त, श्रीछिन्नमस्तिका जयंती, श्रीटैगोर जयंती
(D) स. सि. यो. **(E)** पुण्यकाल सं. प्रातः 10:52 बाद, मंगल शत. में 13:59, **गुरु वक्री 19:58** **(F)** गण्डमूल 16:58 बाद **(G)** केतु मूल 2 में 17:44, मासशिवरात्रि व्रत, सूर्य सायन मिथुन में 19:19,
गण्डमूल 22:37 तक **(H)** (अमा.-पक्ष), शक ज्येष्ठ प्रारम्भ **(I)** शुक्र-वार्धक्य प्रारम्भ 5:28 **(J)** गण्डमूल 6:03 तक

वि. संवत् 2077, जून मास का तिथ्यादि पंचांग घण्टा–मिनटों में (भा. स्टैं. टा.), सन् 2020 ई.

मास पक्ष	जून	तिथि	वार	समाप्ति काल घं. मिं.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं. मिं.	योग	समाप्ति काल घं. मिं.	करण	समाप्ति काल घं. मिं.	चंद्र-राशि प्रवेश घं. मिं.	सूर्य उत्तर-दक्षिणायन भद्रा, पंचक, सूर्यादि ग्रहों का राशि–नक्षत्र प्रवेश घण्टा–मिन्टों में [भा. स्टैं. टा.] ग्रीष्म-वर्षा ऋतु	जून ता.	जम्मू		दिल्ली		चण्डीगढ़		मुम्बई	
														सूर्योदय घं. मिं.	सूर्यास्त घं. मिं.	सूर्योदय घं. मिं.	सूर्यास्त घं. मिं.	सूर्योदय घं. मिं.	सूर्यास्त घं. मिं.	सूर्योदय घं. मिं.	सूर्यास्त घं. मिं.
ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष	1	१०	चन्द्र	14:58	हस्त	25:03	सिद्धि	13:16	ग	14:58	कन्या	भ. 25:32 से, श्रीगङ्गा-दशहरा पर्व (हरिद्वार), जून मास प्रारम्भ	1	5:28	19:29	5:28	19:10	5:25	19:16	6:05	19:08
	2	११	मंग	12:05	चित्रा	22:55	व्य.	9:52	वि	12:05	तु.12:00	भ. 12:05 तक, **निर्जला एकादशी व्रत**	2	5:27	19:30	5:28	19:10	5:24	19:16	6:05	19:09
	3	१२	बुध	9:06	स्वा.	20:43	वरी परि	06:21 26:50	बा	9:06	तुला	**प्रदोष व्रत**, मंगल पू.भा. में 9:40, वटसावित्री व्रतारम्भ, चम्पा द्वादशी	3	5:27	19:30	5:27	19:11	5:24	19:17	6:05	19:09
	4	१३	गुरु	6:07	विशा.	18:37	शिव	23:25	तै	6:07	वृ.13:07	भ. 27:16 से,	4	5:27	19:31	5:27	19:11	5:24	19:17	6:05	19:09
	0	१४	गुरु	27:16	० ०	0 0	० ०	0 0	०	0 0	० ०	**चतुर्दशी तिथि का क्षय** ०० ००	०	--	--	--	--	--	--	--	--
	5	१५	शुक्र	24:42	अनु.	16:44	सिद्ध	20:13	वि	13:59	वृश्चिक	भ. 14:00 तक, **ज्येष्ठ पूर्णिमा, वटसावित्री व्रत (पूर्णिमा-पक्ष) (A)**	5	5:27	19:31	5:27	19:12	5:24	19:18	6:05	19:10
आषाढ़ कृष्ण पक्ष	6	१	शनि	22:33	ज्ये.	15:12	साध्य	17:19	बा	11:38	ध.15:12	आषाढ़ कृष्ण पक्ष प्रारम्भ, गण्डमूल विचार	6	5:26	19:32	5:27	19:12	5:24	19:18	6:05	19:10
	7	२	रवि	20:56	मूल	14:11	शुभ	14:51	तै	9:45	धनु	सूर्य मृग. में 24:27, गण्डमूल 14:11 तक,	7	5:26	19:32	5:27	19:13	5:23	19:19	6:05	19:10
	8	३	चन्द्र	19:57	पू.षा.	13:45	शुक्ल	12:52	व	8:27	म.19:45	भ. 8:27 से 19:57 तक, **श्रीगणेश चतुर्थी व्रत** (देखें पृष्ठ 13-16)	8	5:26	19:33	5:27	19:13	5:23	19:19	6:05	19:11
	9	४	मंग	19:39	उ.षा.	14:00	ब्रह्म	11:26	ब	7:48	मकर	**शुक्र पूर्व में उदय 19:20**	9	5:26	19:33	5:27	19:14	5:23	19:20	6:05	19:11
	10	५	बुध	20:05	श्रव.	14:58	ऐन्द्र	10:35	कौ	7:52	कुं.27:42	**पंचक प्रारम्भ 27:42**	10	5:26	19:34	5:27	19:14	5:23	19:20	6:05	19:11
	11	६	गुरु	21:12	धनि.	16:35	वैधृ	10:16	ग	8:39	कुम्भ	भ. 21:12 से,	11	5:26	19:34	5:27	19:14	5:23	19:21	6:05	19:11
	12	७	शुक्र	22:53	शत.	18:49	विष्क	10:27	वि	10:03	कुम्भ	भ. 10:03 तक, शुक्र बाल्यत्व समाप्त 19:20	12	5:26	19:35	5:27	19:15	5:23	19:21	6:05	19:12
	13	८	शनि	25:00	पू.भा.	21:28	प्रीति	11:02	बा	11:57	मी.14:46		13	5:26	19:35	5:27	19:15	5:23	19:21	6:05	19:12
	14	९	रवि	27:20	उ.भा.	24:22	आयु	11:52	तै	14:10	मीन	**सूर्य मिथुन में 23:53, आषाढ़ संक्रान्ति**, मु. 45, पुण्यकाल सं. अगले दिन(B)	14	5:26	19:35	5:27	19:16	5:23	19:22	6:05	19:12
	15	१०	चन्द्र	----	रेव.	27:17	सौभा	12:48	व	16:31	मे.27:17	भ. 16:31 से, **पंचक समाप्त 27:17**, गण्डमूल विचार	15	5:26	19:36	5:27	19:16	5:23	19:22	6:05	19:12
	16	१०	मंग	5:41	अश्वि	----	शोभ	13:41	वि	5:41	मेष	भ. 5:41 तक, गण्डमूल विचार, स. सि. यो.	16	5:26	19:36	5:27	19:16	5:23	19:22	6:05	19:13
	17	११	बुध	7:51	अश्वि	6:04	अति	14:24	बा	7:51	मेष	**योगिनी एकादशी व्रत**, गण्डमूल 6:04 तक	17	5:26	19:36	5:27	19:17	5:24	19:23	6:06	19:13
	18	१२	गुरु	9:40	भर.	8:31	सुक	14:49	तै	9:40	वृ.15:03	**प्रदोष व्रत, मंगल मीन में** 20:15, **बुध वक्री 10:25**, वक्री शनि उ.षा. **(C)**	18	5:26	19:37	5:27	19:17	5:24	19:23	6:06	19:13
	19	१३	शुक्र	11:02	कृति	10:31	धृति	14:52	व	11:02	वृष	भ. 11:02 से 23:27 तक, मासशिवरात्रि व्रत	19	5:27	19:37	5:28	19:17	5:24	19:23	6:06	19:13
	20	१४	शनि	11:52	रोहि.	12:02	शूल	14:31	श.	11:52	मि.24:35	पितृकार्येषु अमावस, सूर्य सायन कर्क में 27:14, सायन दक्षिणायन प्रारम्भ,**(D)**	20	5:27	19:37	5:28	19:17	5:24	19:24	6:06	19:13
	21	३०	रवि	12:11	मृग.	13:01	गंड	13:44	ना	12:11	मिथुन	**आषाढ़ी अमावस, कंकण (चूड़ामणि) सूर्यग्रहण** (भारत में दृश्य) (देखें पृष्ठ 27)**(E)**	21	5:27	19:38	5:28	19:18	5:24	19:24	6:06	19:14
आषाढ़ शुक्ल पक्ष	22	१	चन्द्र	12:00	आर्द्रा	13:31	वृद्धि	12:34	ब	12:00	मिथुन	आषाढ़ शुक्ल पक्ष प्रारम्भ, चन्द्रदर्शन, मु. 45, वक्री बुध आर्द्रा में 13:12, **(F)**	22	5:27	19:38	5:28	19:18	5:24	19:24	6:07	19:14
	23	२	मंग	11:20	पुन.	13:33	ध्रुव	11:01	कौ	11:20	क. 7:35	**रथयात्रा उत्सव** (श्रीजगन्नाथपुरी), जिल्काद (मुस्लि.) मास प्रारम्भ, **(G)**	23	5:27	19:38	5:28	19:18	5:25	19:24	6:07	19:14
	24	३	बुध	10:15	पुष्य	13:10	व्या.	9:08	ग	10:15	कर्क	भ. 21:32 से, **ग्रहणवेध**	24	5:28	19:38	5:29	19:18	5:25	19:24	6:07	19:14
	25	४	गुरु	8:48	आश्ले	12:27	हर्ष वज्र	06:57 28:32	वि	8:48	सिं.12:27	भ. 8:48 तक, **शुक्र मार्गी 12:18**	25	5:28	19:38	5:29	19:18	5:25	19:25	6:07	19:15
	26	५	शुक्र	7:03	मघा	11:26	सिद्धि	25:54	बा	7:03	सिंह	स्कन्द षष्ठी, **कुमार-षष्ठी**	26	5:28	19:38	5:29	19:18	5:25	19:25	6:07	19:15
	0	६	शुक्र	29:04	० ०	0 0	० ०	0 0	०	0 0	० ०	**षष्ठी तिथि का क्षय** ०० ००	०	--	--	--	--	--	--	--	--
	27	७	शनि	26:54	पू.फा.	10:11	व्य.	23:07	ग	15:59	कं.15:51	भ. 26:54 से, **विवस्वत सप्तमी**	27	5:28	19:38	5:29	19:19	5:26	19:25	6:07	19:15
	28	८	रवि	24:36	उ.फा.	8:46	वरी	20:13	वि	13:45	कन्या	भ. 13:45 तक, **श्रीदुर्गाष्टमी**, स. सि. यो.	28	5:29	19:38	5:30	19:19	5:26	19:25	6:07	19:15
	29	९	चन्द्र	22:13	हस्त	7:14	परि	17:14	बा	11:25	तु.18:27	**वक्री गुरु** उ.षा. 1 **धनु में 29:25**, भढली नवमी, गुप्त नवरात्र समाप्त **(H)**	29	5:29	19:38	5:30	19:19	5:26	19:25	6:08	19:16
	30	१०	मंग	19:50	चित्रा स्वा.	5:39 28:04	शिव	14:15	तै	9:02	तुला		30	5:30	19:38	5:30	19:19	5:27	19:25	6:08	19:16

शुक्र उदय
9 जून

(A) सन्त कबीर-जयन्ती (622वाँ), श्रीसत्यनारायण व्रत, गण्डमूल 16:44 बाद **(B)** प्रात: 6:17 तक, बुध पुन. में 9:18, गण्डमूल 24:22 बाद **(C)** (3) में 29:20 **(D)** वर्षा ऋतु शुरु, ग्रहणवेध
(E) सूर्य आर्द्रा में 23:27, **(F)** वक्री बुध पश्चिम में अस्त 29:10, शक आषाढ़ प्रारम्भ, **गुप्त नवरात्र प्रारम्भ, ग्रहणवेध** **(G)** मंगल उ.भा. में 28:09, ग्रहणवेध **(H)** मेला शरीक भवानी (काश्मीर)

वि. संवत् 2077, जुलाई मास का तिथ्यादि पंचांग घण्टा–मिनटों में (भा. स्टैं. टा.), सन् 2020 ई.

मास पक्ष	जुलाई	तिथि	वार	समाप्ति काल घं. मिं.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं. मिं.	योग	समाप्ति काल घं. मिं.	करण	समाप्ति काल घं. मिं.	चंद्र-राशि प्रवेश घं. मिं.	भद्रा, पंचक, सूर्यादि ग्रहों का राशि–नक्षत्र प्रवेश घण्टा–मिन्टों में [भा. स्टैं. टा.] सूर्य-दक्षिणायन वर्षा-ऋतु	जुलाई ता.	जम्मू		दिल्ली		चण्डीगढ़		मुम्बई	
														सूर्योदय घं. मिं.	सूर्यास्त घं. मिं.	सूर्योदय घं. मिं.	सूर्यास्त घं. मिं.	सूर्योदय घं. मिं.	सूर्यास्त घं. मिं.	सूर्योदय घं. मिं.	सूर्यास्त घं. मिं.
आषाढ़ शुक्ल	1	११	बुध	17:30	विशा	26:34	सिद्ध	11:17	व	6:40	वृ.20:56	भ. 6:40 से 17:30 तक, हरिशयनी एकादशी व्रत, चातुर्मास्य व्रत, (A)	1	5:30	19:38	5:31	19:19	5:27	19:25	6:09	19:16
	2	१२	गुरु	15:17	अनु	25:14	साध्य	8:24	बा	15:17	वृश्चिक	**प्रदोष व्रत**, गण्डमूल 25:14 बाद	2	5:30	19:38	5:31	19:19	5:28	19:25	6:09	19:16
	3	१३	शुक्र	13:17	ज्ये.	24:08	शुभ शुक्ल	05:40 27:09	तै	13:17	ध.24:08	गण्डमूल विचार	3	5:31	19:38	5:31	19:19	5:28	19:25	6:10	19:16
	4	१४	शनि	11:34	मूल	23:22	ब्रह्म	24:55	व	11:34	धनु	भ. 11:34 से 22:54 तक, श्रीसत्यनारायण व्रत, मेला ज्वालामुखी (काश्मीर)(B)	4	5:31	19:38	5:32	19:19	5:28	19:25	6:10	19:16
	5	१५	रवि	10:14	पू.षा.	23:02	ऐन्द्र	23:02	ब	10:14	म.29:01	**आषाढ़ी पूर्णिमा, गुरु पूर्णिमा**, व्यास पूजा, सूर्य पुन. में 23:03	5	5:32	19:38	5:32	19:19	5:29	19:25	6:10	19:16
श्रावण कृष्ण पक्ष	6	१	चन्द्र	9:23	उ.षा.	23:12	वैधृ.	21:34	कौ	9:23	मकर	श्रावण कृष्णपक्ष, प्रारम्भ, **श्रावण सोमवार व्रत शुरु**, अशून्यशयन व्रत	6	5:32	19:38	5:33	19:18	5:29	19:25	6:11	19:16
	7	२	मंग	9:03	श्रव.	23:56	विष्क.	20:33	ग	9:03	मकर	भ. 21:11 से, **मङ्गलागौरी व्रत प्रारम्भ** (देखें पृष्ठ 101)	7	5:33	19:38	5:33	19:18	5:30	19:24	6:11	19:16
	8	३	बुध	9:19	धनि.	25:15	प्रीति	20:01	वि	9:19	कुं.12:31	भ. 9:19 तक, **पंचक प्रारम्भ 12:31, श्रीगणेश चतुर्थी व्रत** (देखें पृष्ठ 13)	8	5:33	19:38	5:34	19:18	5:30	19:24	6:12	19:16
	9	४	गुरु	10:12	शत.	27:09	आयु	19:56	बा	10:12	कुम्भ	**वक्री बुध पूर्व में उदय 19:34**	9	5:34	19:37	5:34	19:18	5:31	19:24	6:12	19:16
	10	५	शुक्र	11:39	पू.भा.	29:33	सौभा	20:17	तै	11:39	मी.22:55	**नाग-पंचमी (राज. व बंगाल)** (देखें पृष्ठ 103)	10	5:34	19:37	5:34	19:18	5:31	19:24	6:12	19:16
	11	६	शनि	13:34	उ.भा.	----	शोभ	20:58	व	13:34	मीन	भ. 13:34 से 26:41 तक,	11	5:35	19:37	5:35	19:18	5:32	19:23	6:13	19:16
	12	७	रवि	15:48	उ.भा.	8:18	अति.	21:51	ब	15:48	मीन	**बुध मार्गी 13:54**, शीतला सप्तमी (मध्याह्न-व्या.), गण्डमूल 8:18 बाद,(C)	12	5:35	19:37	5:35	19:18	5:32	19:23	6:13	19:16
	13	८	चन्द्र	18:10	रेव.	11:14	सुक	22:47	कौ	18:10	मे.11:14	**पंचक समाप्त 11:14**, गण्डमूल विचार	13	5:36	19:36	5:36	19:17	5:33	19:23	6:13	19:16
	14	९	मंग	20:25	अश्वि	14:07	धृति	23:36	तै	7:18	मेष	गण्डमूल 14:07 तक, स. सि. यो. 14:07 तक	14	5:36	19:36	5:36	19:17	5:33	19:23	6:14	19:16
	15	१०	बुध	22:20	भर.	16:43	शूल	24:09	व	9:23	वृ.23:19	भ. 9:23 से 22:20 तक	15	5:37	19:35	5:37	19:17	5:34	19:22	6:14	19:16
	16	११	गुरु	23:45	कृति.	18:53	गंड	24:18	ब	11:03	वृष	**कामिका एकादशी व्रत, सूर्य कर्क में 10:46, श्रावण संक्रान्ति, (D)**	16	5:38	19:35	5:37	19:16	5:34	19:22	6:14	19:16
	17	१२	शुक्र	24:34	रोहि.	20:28	वृद्धि	23:58	कौ	12:10	वृष		17	5:38	19:35	5:38	19:16	5:35	19:22	6:14	19:15
	18	१३	शनि	24:42	मृग.	21:23	ध्रुव	23:07	ग	12:38	मि.09:01	भ. 24:42 से, **शनि प्रदोष व्रत**	18	5:39	19:34	5:38	19:16	5:35	19:21	6:15	19:15
	19	१४	रवि	24:10	आर्द्रा	21:40	व्या.	21:44	वि	12:26	मिथुन	भ. 12:26 तक, सूर्य पुष्य में 22:35, **श्रावण-शिवरात्रि व्रत** (देखें पृष्ठ 150)	19	5:39	19:34	5:39	19:15	5:36	19:21	6:15	19:15
	20	३०	चन्द्र	23:03	पुन.	21:21	हर्ष	19:52	च	11:37	क.15:29	**श्रावण (हरियाली) अमावस, सोमवती अमावस**, मेला हरिद्वार- (E)	20	5:40	19:33	5:40	19:15	5:37	19:21	6:15	19:14
श्रावण शुक्ल पक्ष	21	१	मंग	21:25	पुष्य	20:30	वज्र	17:34	किं	10:14	कर्क	श्रावण शुक्लपक्ष प्रारम्भ, **मेला छिन्नमस्तिका (चिन्तपूर्णी) प्रारम्भ**, गण्डमूल	21	5:41	19:33	5:40	19:14	5:37	19:20	6:16	19:14
	22	२	बुध	19:23	आश्ले	19:16	सिद्धि	14:55	बा	8:24	सिं.19:16	चन्द्रदर्शन, मु. 30, राहु मृग. 3 केतु मूल 1 में 15:12, सूर्य सायन सिंह में 14:07	22	5:41	19:32	5:41	19:14	5:38	19:20	6:16	19:14
	23	३	गुरु	17:04	मघा	17:44	व्य.	12:02	तै	6:14	सिंह	भ. 27:50 से, **मधुस्रवा-हरियाली-सिंघारा तीज**, शक श्रावण प्रारम्भ, (F)	23	5:42	19:32	5:41	19:13	5:38	19:19	6:16	19:13
	24	४	शुक्र	14:35	पू.फा.	16:03	वरी	8:58	वि	14:35	कं.21:37	भ. 14:35 तक, दूर्वा गणपति व्रत, वरद्-चतुर्थी	24	5:43	19:31	5:42	19:13	5:39	19:19	6:17	19:13
	25	५	शनि	12:03	उ.फा.	14:19	परि शिव	05:51 26:45	बा	12:03	कन्या	**नाग-पञ्चमी**, श्रीकल्कि-जयन्ती (सायाह्नव्यापिनी) (देखें पृष्ठ 18)	25	5:43	19:30	5:42	19:12	5:40	19:18	6:17	19:13
	26	६	रवि	9:33	हस्त	12:37	सिद्ध	23:43	तै	9:33	तु.23:49	बुध पुन. में 10:34, शीतला सप्तमी (मध्याह्न-व्या.), वक्री गुरु पू.षा. 4 में(G)	26	5:44	19:30	5:43	19:12	5:40	19:17	6:17	19:12
	27	७	चन्द्र	7:10	चित्रा	11:04	साध्य	20:49	व	7:10	तुला	भ. 7:10 से 18:04 तक, गोस्वामी तुलसीदास जयन्ती, **श्रीदुर्गाष्टमी (H)**	27	5:45	19:29	5:43	19:11	5:41	19:17	6:18	19:12
	0	८	चन्द्र	28:58	० ०	0 0	० ०	0 0	०	0 0	० ०	**अष्टमी तिथि का क्षय** ०० ००	०	--	--	--	--	--	--	--	--
	28	९	मंग	27:00	स्वा	9:42	शुभ	18:06	बा	15:59	वृ.26:49		28	5:45	19:28	5:44	19:11	5:41	19:16	6:18	19:12
	29	१०	बुध	25:17	विशा	8:33	शुक्ल	15:34	तै	14:09	वृश्चिक		29	5:46	19:28	5:44	19:10	5:42	19:15	6:18	19:11
	30	११	गुरु	23:50	अनु.	7:41	ब्रह्म	13:16	व	12:34	वृश्चिक	भ. 12:34 से 23:50, **पवित्रा एकादशी व्रत**, गण्डमूल 7:41 बाद	30	5:47	19:27	5:45	19:10	5:43	19:15	6:19	19:11
	31	१२	शुक्र	22:43	ज्ये.	7:05	ऐन्द्र	11:12	ब	11:17	ध. 7:05	**शुक्र मिथुन में 29:09**, गण्डमूल विचार	31	5:47	19:26	5:46	19:09	5:43	19:14	6:19	19:10

(A) नियमादि प्रारम्भ, श्रीविष्णु शयनोत्सव, जुलाई मास प्रारम्भ **(B)** कोकिला व्रत, श्रीशिव-शयनोत्सव, वायु परीक्षा, गण्डमूल 23:22 तक **(C)** स. सि. यो. **(D)** मु. 30, पुण्यकाल सं. सूर्योदय से सायं
17:10 तक, निरयण दक्षिणायन प्रारम्भ, मंगल रेव. में 27:32 **(E)** प्रयागराजादि, तीर्थस्नान माहात्म्य (देखें पृष्ठ 11) **(F)** जिल्हिजा (मुस्लि.) मास प्रारम्भ, शुक्र मृग. में 19:58, गण्डमूल 17:44 तक
(G) 15:19, **(H)** (7:10 बाद), **मेला चिन्तपूर्णी-चामुण्डादेवी (हि.प्र.) समाप्त**

वि. संवत् 2077, अगस्त मास का तिथ्यादि पंचांग घण्टा–मिनटों में (भा. स्टैं. टा.), सन् 2020 ई.

मास पक्ष	अगस्त	तिथि	वार	समाप्ति काल घं. मिं.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं. मिं.	योग	समाप्ति काल घं. मिं.	करण	समाप्ति काल घं. मिं.	चंद्र-राशि प्रवेश घं. मिं.	भद्रा, पंचक, सूर्यादि ग्रहों का राशि–नक्षत्र प्रवेश घण्टा–मिन्टों में [भा. स्टैं. टा.] सूर्य-दक्षिणायन वर्षा-शरद्-ऋतु	ता. अग.	जम्मू सूर्योदय घं. मिं.	जम्मू सूर्यास्त घं. मिं.	दिल्ली सूर्योदय घं. मिं.	दिल्ली सूर्यास्त घं. मिं.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं. मिं.	चण्डीगढ़ सूर्यास्त घं. मिं.	मुम्बई सूर्योदय घं. मिं.	मुम्बई सूर्यास्त घं. मिं.
श्राव.शु.	1	१३	शनि	21:55	मूल	6:48	वैधृ.	9:23	कौ	10:19	धनु	**शनि प्रदोष व्रत, बुध कर्क में 27:31**, लोकमान्य तिलक स्मरणोत्सव, **(A)**	1	5:48	19:25	5:46	19:08	5:44	19:13	6:20	19:10
	2	१४	रवि	21:29	पू.षा.	6:52	विष्क	7:52	ग	9:42	म.12:57	भ. 21:29 से, सूर्य आश्लेषा में 21:27	2	5:49	19:24	5:47	19:08	5:44	19:12	6:20	19:09
	3	१५	चन्द्र	21:29	उ.षा.	7:19	प्रीति आयु	6:38 29:46	वि	9:29	मकर	भद्रा 9:29 तक, **श्रावण-पूर्णिमा, रक्षाबन्धन (राखी) (भद्रा बाद), (B)**	3	5:49	19:24	5:47	19:07	5:45	19:11	6:20	19:09
भाद्रपद कृष्ण पक्ष	4	१	मंग	21:55	श्रव.	8:11	सौभा	29:15	बा	9:42	कुं.20:47	भाद्रपद कृष्णपक्ष प्रारम्भ, **पंचक प्रारम्भ 20:47**, ऋग्वेदि उपाकर्म (देखें पृ.18), गायत्री-जपम्	4	5:50	19:23	5:48	19:06	5:46	19:11	6:21	19:08
	5	२	बुध	22:51	धनि.	9:30	शोभ	29:07	तै	10:23	कुम्भ	बुध पूर्व में अस्त 5:55,	5	5:51	19:22	5:48	19:05	5:46	19:10	6:21	19:08
	6	३	गुरु	24:15	शत.	11:18	अति	29:21	व	11:33	कुम्भ	भ. 11:33 से 24:15 तक, वक्री शनि उ.षा. 2 में 7:05, कज्जली तृतीया	6	5:51	19:21	5:49	19:05	5:47	19:09	6:21	19:07
	7	४	शुक्र	26:07	पू.भा.	13:33	सुक	----	ब	13:11	मी.06:57	**श्रीगणेश (बहुला) चतुर्थी व्रत** (देखें पृष्ठ 13-16), स. सि. यो.	7	5:52	19:20	5:49	19:04	5:47	19:08	6:22	19:07
	8	५	शनि	28:19	उ.भा.	16:12	सुक	5:55	कौ	15:13	मीन	शुक्र आर्द्रा में 17:57, गण्डमूल 16:12 बाद	8	5:53	19:19	5:50	19:03	5:48	19:07	6:22	19:06
	9	६	रवि	----	रेव.	19:06	धृति	6:45	ग	17:31	मे.19:06	**पंचक समाप्त 19:06, चन्दन षष्ठी व्रत**, चन्द्रोदय 22:42 (जालन्धर), हल-षष्ठी	9	5:53	19:18	5:51	19:02	5:49	19:06	6:22	19:05
	10	६	चन्द्र	6:43	अश्वि	22:06	शूल	7:42	व	6:43	मेष	भ. 6:43 से 19:55 तक, बुध आश्ले. में 19:49, शीतला सप्तमी व्रत, **(C)**	10	5:54	19:17	5:51	19:01	5:49	19:05	6:22	19:05
	11	७	मंग	9:07	भर.	24:57	गंड	8:39	ब	9:07	मेष	**श्रीकृष्ण जन्माष्टमी व्रत (स्मार्त) गृहस्थियों के लिए** (देखें पृष्ठ 18)	11	5:55	19:16	5:52	19:01	5:50	19:04	6:22	19:04
	12	८	बुध	11:17	कृति.	27:26	वृद्धि	9:25	कौ	11:17	वृ.07:37	**श्रीकृष्ण जन्माष्टमी व्रत (वैष्णव)**	12	5:55	19:15	5:52	19:00	5:51	19:03	6:23	19:03
	13	९	गुरु	12:59	रोहि.	29:22	ध्रुव	9:50	ग	12:59	वृष	भ. 25:31 से, **श्रीगुग्गा-नवमी**, गोकुलाष्टमी, नन्दोत्सव	13	5:56	19:14	5:53	18:59	5:51	19:02	6:23	19:03
	14	१०	शुक्र	14:02	मृग.	----	व्या.	9:46	वि	14:02	मि.18:05	भ. 14:02 तक,	14	5:57	19:13	5:53	18:58	5:52	19:02	6:23	19:02
	15	११	शनि	14:21	मृग.	6:36	हर्ष	9:08	बा	14:21	मिथुन	**अजा एकादशी व्रत, भारत स्वतन्त्रता दिवस** (74वाँ)	15	5:58	19:12	5:54	18:57	5:52	19:01	6:23	19:02
	16	१२	रवि	13:51	आर्द्रा	7:03	वज्र	7:52	तै	13:51	क.24:53	**प्रदोष व्रत, सूर्य** मघा 1 **सिंह में 19:10, भाद्रपद संक्रान्ति**, मु. 45, **(D)**	16	5:58	19:11	5:54	18:56	5:53	19:00	6:24	19:01
	17	१३	चन्द्र	12:36	पुन पुष्य	6:44 29:43	सिद्धि व्य.	5:59 27:31	व	12:36	कर्क	भ. 12:36 से 23:38 तक, **बुध** मघा 1 **सिंह में 8:29**, मासशिवरात्रि व्रत, **(E)**	17	5:59	19:10	5:55	18:55	5:54	18:59	6:24	19:01
	18	१४	मंग	10:40	आश्ले	28:08	वरी	24:34	श	10:40	सिं.28:08	**कुशाग्रहणी अमावस–'ॐ हुं फट् स्वाहा'** इहमंत्रेण कुशोत्पाटनम् **(F)**	18	6:00	19:09	5:55	18:54	5:54	18:58	6:24	19:00
	19	३०	बुध	8:12	मघा	26:07	परि	21:15	ना	8:12	सिंह	**भाद्रपद अमावस**, लोहार्गल यात्रा (स्नान), रानी सती मेला-झुंझुनूं **(G)**	19	6:00	19:08	5:56	18:53	5:55	18:56	6:24	19:00
भाद्रपद शुक्ल पक्ष	0	१	बुध	29:20	० ०	0 0	० ०	0 0	०	0 0	० ०	**भाद्रपद शुक्ल प्रतिपदा का क्षय** ०० ००	०	--	--	--	--	--	--	--	--
	20	२	गुरु	26:14	पू.फा.	23:51	शिव	17:41	बा	15:47	कं.29:15	चन्द्रदर्शन, मु. 30	20	6:01	19:07	5:56	18:52	5:55	18:55	6:24	19:00
	21	३	शुक्र	23:03	उ.फा.	21:29	सिद्ध	14:01	तै	12:39	कन्या	**हरितालिका तृतीया**, गौरी तृतीया, श्रीवराह-जयन्ती, मुहर्रम (मु.) **(H)**	21	6:02	19:05	5:57	18:51	5:56	18:54	6:25	18:59
	22	४	शनि	19:58	हस्त	19:11	साध्य	10:21	व	9:31	कन्या	भ. 9:31 से 19:58 तक, **सिद्धि विनायक व्रत**, शुक्र पुन. में 11:20 **(I)**	22	6:02	19:04	5:58	18:50	5:56	18:53	6:25	18:58
	23	५	रवि	17:05	चित्रा	17:06	शुभ शुक्ल	6:48 27:30	ब	6:32	तु. 6:07	**ऋषि-पंचमी व्रत**, सम्वत्सरी महापर्व (जैन), बुध पू.फा. में 28:00, शक भाद्रपद प्रारम्भ	23	6:03	19:03	5:58	18:49	5:57	18:52	6:25	18:57
	24	६	चन्द्र	14:32	स्वा.	15:20	ब्रह्म	24:29	तै	14:32	तुला	सूर्य षष्ठी व्रत, मुक्ताभरण/सन्तान सप्तमी व्रत (देखें पृष्ठ 19)	24	6:04	19:02	5:59	18:48	5:58	18:51	6:25	18:56
	25	७	मंग	12:22	विशा.	13:59	ऐन्द्र	21:49	व	12:22	वृ. 8:17	भ. 12:22 से 23:31 तक, **दूर्वाष्टमी व्रत-श्रीराधाष्टमी** (देखें पृष्ठ 19) **(J)**	25	6:04	19:01	5:59	18:47	5:58	18:50	6:26	18:55
	26	८	बुध	10:40	अनु.	13:04	वैधृ	19:32	ब	10:40	वृश्चिक	दधीची जयन्ती, गण्डमूल 13:04 बाद, स. सि. यो. 13:04 तक	26	6:05	18:59	6:00	18:46	5:59	18:49	6:26	18:54
	27	९	गुरु	9:26	ज्ये.	12:37	विष्क	17:37	कौ	9:26	ध.12:37	**श्रीचन्द्र नवमी (उदासीन सम्प्रदाय)**, गण्डमूल विचार	27	6:06	18:58	6:00	18:45	5:59	18:47	6:26	18:53
	28	१०	शुक्र	8:39	मूल	12:37	प्रीति	16:04	ग	8:39	धनु	भ. 20:29 से, गण्डमूल 12:37 तक	28	6:06	18:57	6:01	18:44	6:00	18:46	6:27	18:52
	29	११	शनि	8:18	पू.षा.	13:03	आयु	14:51	वि	8:18	म.19:13	भ. 8:18 तक, **पद्मा एकादशी व्रत, श्रीवामन-जयन्ती**	29	6:07	18:56	6:02	18:42	6:01	18:44	6:28	18:50
	30	१२	रवि	8:22	उ.षा.	13:52	सौभा	13:57	बा	8:22	मकर	**प्रदोष व्रत**, सूर्य पू.फा. में 15:05, स. सि. यो. 13:52 तक	30	6:07	18:54	6:02	18:42	6:01	18:44	6:28	18:50
	31	१३	चन्द्र	8:49	श्रव.	15:04	शोभ	13:22	तै	8:49	कुं.27:48	**पंचक प्रारम्भ 27:48**, बुध उ.फा. में 13:10, शुक्र कर्क में 26:02	31	6:08	18:53	6:02	18:41	6:02	18:43	6:28	18:49

(A) अगस्त मास प्रारम्भ **(B)** (देखें पृष्ठ 104), बुध पुष्य में 24:26, यजुर्वेदि-अथर्ववेदि उपाकर्म, हयग्रीव-जयन्ती, ऋषि-तर्पण,. गायत्री जयन्ती, दर्शन श्रीअमरनाथ गुफा, संस्कृत दिवस, श्रावणी उपाकर्म, श्रीसत्यनारायण व्रत **(C)** पुत्र व्रत, गण्डमूल 22:06 तक **(D)** पुण्यकाल सं. दुपै. 12:46 बाद, **वत्स द्वादशी (पूजा), मंगल अश्वि 1 मेष 18:31** **(E)** अघोरा चतुर्दशी, कैलाश यात्रा प्रारम्भ-2 दिन **(F)** (देखें पृष्ठ 19), पिठोरी अमावस, पितृकार्येषु अमावस **(G)** (राजस्थान), गण्डमूल 26:07 तक **(H)** मं. 1442 हिजरी प्रारम्भ **(I)** कलंक चतुर्थी (चन्द्रदर्शन निषेध), चन्द्रास्त 21:30 (जालन्धर) पत्थर-चौथ, सामवेदि उपाकर्म, सूर्य सायन कन्या में 21:15, शरद् ऋतु प्रारम्भ **(J)** श्रीमहालक्ष्मी व्रत प्रारम्भ (देखें पृष्ठ 20)

वि. संवत् 2077, सितम्बर मास का तिथ्यादि पंचांग घण्टा–मिनटों में (भा. स्टैं. टा.), सन् 2020 ई.

मास पक्ष	सितम्बर	तिथि	वार	समाप्ति काल घं. मिं.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं. मिं.	योग	समाप्ति काल घं. मिं.	करण	समाप्ति काल घं. मिं.	चंद्र-राशि प्रवेश घं. मिं.	भद्रा, पंचक, सूर्यादि ग्रहों का राशि–नक्षत्र प्रवेश घण्टा–मिन्टों में [भा. स्टैं. टा.] सूर्य-दक्षिणायन शरद्-ऋतुः
भा.शु.	1	१४	मंग	9:39	धनि.	16:38	अति.	13:04	व	9:39	कुम्भ	भ. 9:39 से 22:16 तक, **अनन्त चतुर्दशी व्रत, मेला बाबा सोढल** (जालंधर)**(A)**
	2	१५	बुध	10:52	शत.	18:34	सुक	13:03	ब	10:52	कुम्भ	**भाद्रपद पूर्णिमा** (स्नानदानादि), **पितृपक्ष (श्राद्ध) प्रारम्भ, बुध कन्या (B)**
प्रथम (शुद्ध) आश्विन कृष्ण पक्ष	3	१	गुरु	12:27	पू.भा.	20:51	धृति	13:20	कौ	12:27	मी.14:15	प्रथम (शुद्ध) आश्विन कृष्णपक्ष प्रारम्भ, शुक्र पुष्य में 28:48, **द्वितीया (C)**
	4	२	शुक्र	14:24	उ.भा.	23:28	शूल	13:52	ग	14:24	मीन	भ. 27:32 से, गण्डमूल 23:28 बाद
	5	३	शनि	16:39	रेव.	26:21	गंड	14:39	वि	16:39	मे.26:21	भ. 16:39 तक, **पंचक समाप्त** 26:21, **श्रीगणेश चतुर्थी व्रत** (देखें पृष्ठ13)**(D)**
	6	४	रवि	19:07	अश्वि	29:24	वृद्धि	15:36	बा	19:07	मेष	वक्री गुरु पू.षा. 3 में 18:21, **चतुर्थी का श्राद्ध**, गण्डमूल, स. सि. यो.
	7	५	चन्द्र	21:39	भर.	-----	ध्रुव	16:37	कौ	8:23	मेष	भरणी श्राद्ध, चन्द्र षष्ठी व्रत (देखें पृष्ठ 20), पंचमी का श्राद्ध, गण्डमूल 5:24 तक
	8	६	मंग	24:03	भर.	8:26	व्या.	17:33	ग	10:51	वृ.15:10	भ. 24:03 से, बुध हस्त में 15:52, **षष्ठी का श्राद्ध**
	9	७	बुध	26:06	कृति.	11:15	हर्ष	18:16	वि	13:05	वृष	भ. 13:05 तक, **सप्तमी का श्राद्ध, मंगल वक्री 27:50**
	10	८	गुरु	27:35	रोहि.	13:39	वज्र	18:36	बा	14:51	मि.26:37	**श्रीमहालक्ष्मी व्रत सम्पन्न**, जीवित्पुत्रिका व्रत, **अष्टमी का श्राद्ध**,
	11	९	शुक्र	28:20	मृग.	15:25	सिद्धि	18:24	तै	15:58	मिथुन	सौभाग्यवतीनां श्राद्ध, **नवमी का श्राद्ध**, मातृ-नवमी
	12	१०	शनि	28:15	आर्द्रा	16:25	व्य.	17:34	व	16:18	मिथुन	भ. 16:18 से 28:15 तक, **दशमी का श्राद्ध**
	13	११	रवि	27:17	पुन.	16:34	वरी	16:03	ब	15:46	क.10:36	**इन्दिरा एकादशी व्रत**, सूर्य उ.फा. में 9:01, **गुरु मार्गी 6:12**, एकादशी का श्राद्ध
	14	१२	चन्द्र	25:30	पुष्य	15:52	परि.	13:52	कौ	14:24	कर्क	संन्यासीनां श्राद्ध, **द्वादशी का श्राद्ध**, गण्डमूल 15:52 बाद
	15	१३	मंग	23:00	आश्ले	14:25	शिव	11:02	ग	12:15	सिं.14:25	भ. 23:00 से, **भौम प्रदोष व्रत, त्र्योदशी श्राद्ध**, मघा-त्रयोदशी (श्राद्ध), **(E)**
	16	१४	बुध	19:57	मघा	12:21	सिद्ध साध्य	07:40 27:54	वि	9:29	सिंह	भ. 9:29 तक, **सूर्य कन्या में 19:07, आश्विन संक्रान्ति**, मु. 30 **(F)**
	17	३०	गुरु	16:30	पू.फा.	9:48	शुभ	23:52	ना	16:30	कं.15:07	**आश्विन/महालय अमावस, सर्वपितृ श्राद्ध**, पितृ-विसर्जन, चतुर्दशी/ **(G)**
प्रथम (अधि.) आश्विन शुक्ल पक्ष	18	१	शुक्र	12:51	उ.फा. हस्त	7:00 28:07	शुक्ल	19:42	ब	12:51	कन्या	**आश्विन अधिक (मल) मास प्रारम्भ** (देखें पृष्ठ 77), चन्द्रदर्शन, मु. 30,**(H)**
	19	२	शनि	9:11	चित्रा	25:21	ब्रह्म	15:35	कौ	9:11	तु.14:42	गुरु पू.षा. 4 में 18:10, सफर (मु.) मास प्रारम्भ
	0	३	शनि	29:39	० ०	0 0	० ०	0 0	०	0 0	० ०	**तृतीया तिथि का क्षय** ०० ००
	20	४	रवि	26:28	स्वा.	22:52	ऐन्द्र	11:37	व	16:04	तुला	भ. 16:04 से 26:28 तक,
	21	५	चन्द्र	23:43	विशा.	20:49	वैधृ विष्क	7:58 28:43	ब	13:06	वृ.15:17	
	22	६	मंग	21:32	अनु.	19:19	प्रीति	25:56	कौ	10:38	वृश्चिक	**बुध तुला में 16:55**, सूर्य सायन तुला में 19:02, दक्षिण गोल प्रारम्भ, **(I)**
	23	७	बुध	19:58	ज्ये.	18:25	आयु	23:40	ग	8:45	ध.18:25	भ. 19:58 से, **राहु मृग. 2 वृष, केतु ज्ये. 4 वृश्चिक में 12:52**, शक आश्विन प्रारम्भ
	24	८	गुरु	19:02	मूल	18:10	सौभा	21:54	वि	7:30	धनु	भ. 7:30 तक, गण्डमूल 18:10 तक,
	25	९	शुक्र	18:44	पू.षा.	18:31	शोभ	20:37	बा	6:53	म.24:42	
	26	१०	शनि	19:00	उ.षा.	19:26	अति	19:47	तै	6:52	मकर	सूर्य हस्त में 24:28,.
	27	११	रवि	19:47	श्रव.	20:50	सुक	19:21	व	7:24	मकर	भ. 7:23 से 19:47 तक, **पुरुषोत्तमा एकादशी व्रत, शुक्र** मघा 1 **सिंह में 25:01**
	28	१२	चन्द्र	20:59	धनि.	22:38	धृति	19:14	ब	8:23	कुं. 9:41	**पंचक प्रारम्भ 9:41**, बुध स्वा. में 6:25
	29	१३	मंग	22:34	शत.	24:48	शूल	19:24	कौ	9:47	कुम्भ	**भौम प्रदोष व्रत, शनि मार्गी 10:30**
	30	१४	बुध	24:26	पू.भा.	27:15	गंड	19:49	ग	11:30	मी.20:37	भ. 24:26 से,

ता. सित.	जम्मू सूर्योदय घं. मिं.	जम्मू सूर्यास्त घं. मिं.	दिल्ली सूर्योदय घं. मिं.	दिल्ली सूर्यास्त घं. मिं.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं. मिं.	चण्डीगढ़ सूर्यास्त घं. मिं.	मुम्बई सूर्योदय घं. मिं.	मुम्बई सूर्यास्त घं. मिं.
1	6:09	18:52	6:03	18:39	6:02	18:42	6:29	18:48
2	6:09	18:51	6:03	18:38	6:03	18:41	6:29	18:47
3	6:10	18:49	6:04	18:36	6:03	18:40	6:29	18:46
4	6:11	18:48	6:04	18:35	6:04	18:38	6:29	18:45
5	6:11	18:47	6:05	18:34	6:05	18:37	6:29	18:44
6	6:12	18:45	6:05	18:33	6:05	18:35	6:29	18:44
7	6:13	18:44	6:06	18:32	6:06	18:34	6:30	18:43
8	6:13	18:43	6:06	18:31	6:06	18:33	6:30	18:43
9	6:14	18:42	6:07	18:29	6:07	18:32	6:30	18:42
10	6:15	18:40	6:07	18:28	6:07	18:30	6:30	18:41
11	6:15	18:39	6:07	18:27	6:08	18:29	6:30	18:40
12	6:16	18:38	6:08	18:26	6:08	18:28	6:30	18:40
13	6:16	18:36	6:08	18:25	6:09	18:27	6:30	18:39
14	6:17	18:35	6:09	18:23	6:10	18:25	6:30	18:38
15	6:18	18:33	6:09	18:22	6:10	18:24	6:30	18:37
16	6:18	18:32	6:10	18:21	6:11	18:23	6:31	18:36
17	6:19	18:31	6:10	18:20	6:11	18:22	6:31	18:35
18	6:20	18:29	6:11	18:19	6:12	18:20	6:31	18:34
19	6:20	18:28	6:11	18:17	6:12	18:19	6:31	18:34
०	--	--	--	--	--	--	--	--
20	6:21	18:27	6:12	18:16	6:13	18:18	6:31	18:33
21	6:21	18:25	6:12	18:15	6:14	18:16	6:32	18:32
22	6:22	18:24	6:13	18:14	6:14	18:15	6:32	18:31
23	6:23	18:23	6:13	18:13	6:15	18:14	6:32	18:30
24	6:23	18:21	6:14	18:12	6:15	18:13	6:32	18:29
25	6:24	18:20	6:14	18:10	6:16	18:11	6:33	18:28
26	6:25	18:19	6:15	18:09	6:16	18:10	6:33	18:27
27	6:25	18:17	6:15	18:08	6:17	18:09	6:33	18:26
28	6:26	18:16	6:16	18:07	6:18	18:08	6:33	18:25
29	6:27	18:15	6:16	18:06	6:18	18:06	6:33	18:24
30	6:27	18:13	6:17	18:04	6:19	18:05	6:33	18:23

(A) प्रोष्ठपदी-महालय श्राद्ध प्रारम्भ, सितम्बर मास प्रारम्भ, बुध पश्चिम में उदय 6:08, **पूर्णिमा का श्राद्ध (B)** में 12:03, **प्रतिपदा तिथि का श्राद्ध (C) का श्राद्ध** (देखें पृष्ठ 20)
(D) तृतीया का श्राद्ध **(E)** मासशिवरात्रि व्रत **(F)** पुण्यकाल सं. दोपहर 12:43 बाद, शुक्र आश्ले. में 7:44, शस्त्र-विष-दुर्घटनादि (अपमृत्यु) से मृतों का श्राद्ध, गण्डमूल 12:21 तक
(G) अमावस तिथि का श्राद्ध, बुध चित्रा में 16:45, **श्राद्ध-समाप्त**, अज्ञात मृत्यु तिथि वालों का श्राद्ध, विश्वकर्मा पूजन **(H)** प्र. (अधिक) आश्विन शुक्ल पक्ष प्रारम्भ **(I)** गण्डमूल 19:19 बाद

वि. संवत् 2077, अक्तूबर मास का तिथ्यादि पंचांग घण्टा–मिनटों में (भा. स्टैं. टा.), सन् 2020 ई.

मास पक्ष	अक्तू.	तिथि	वार	समाप्ति काल घं. मिं.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं. मिं.	योग	समाप्ति काल घं. मिं.	करण	समाप्ति काल घं. मिं.	चंद्र-राशि प्रवेश घं. मिं.	भद्रा, पंचक, सूर्यादि ग्रहों का राशि–नक्षत्र प्रवेश घण्टा–मिन्टों में [भा. स्टैं. टा.] सूर्य-दक्षिणायन शरद्-हेमन्त-ऋतुः	ता. अक्तू.	जम्मू सूर्योदय घं. मिं.	जम्मू सूर्यास्त घं. मिं.	दिल्ली सूर्योदय घं. मिं.	दिल्ली सूर्यास्त घं. मिं.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं. मिं.	चण्डीगढ़ सूर्यास्त घं. मिं.	मुम्बई सूर्योदय घं. मिं.	मुम्बई सूर्यास्त घं. मिं.
	1	१५	गुरु	26:35	उ.भा.	29:57	वृद्धि	20:25	वि	13:31	मीन	भ. 13:31 तक, **अधि. आश्विन पूर्णिमा**, अक्तूबर मास प्रारम्भ, श्रीसत्यनारायण व्रत	1	6:28	18:12	6:18	18:03	6:20	18:04	6:34	18:23
द्वितीय (अधि.) आश्विन कृष्ण पक्ष	2	१	शुक्र	28:57	रेव	----	ध्रुव	21:12	बा	15:46	मीन	**द्वितीय (अधिक) आश्विन कृष्ण पक्ष** प्रारम्भ, **महात्मा गाँधी जयन्ती**, गण्डमूल	2	6:29	18:11	6:18	18:02	6:20	18:03	6:34	18:22
	3	२	शनि	----	रेव.	8:51	व्या.	22:07	तै	18:13	मे. 8:51	**पंचक समाप्त 8:51**, गण्डमूल विचार	3	6:29	18:09	6:19	18:00	6:21	18:01	6:34	18:21
	4	२	रवि	7:28	अश्वि	11:52	हर्ष	23:06	ग	7:28	मेष	भ. 20:46 से, **वक्री मंगल** रेव. 4 **मीन में 10:06**, गण्डमूल 11:52 तक	4	6:30	18:08	6:19	17:59	6:22	18:00	6:34	18:21
	5	३	चन्द्र	10:03	भर.	14:56	वज्र	24:04	वि	10:03	वृ.21:42	भ. 10:03 तक, **श्रीगणेश चतुर्थी व्रत** (देखें पृष्ठ 13-16)	5	6:31	18:07	6:20	17:58	6:22	17:59	6:34	18:20
	6	४	मंग	12:33	कृति.	17:54	सिद्धि	24:54	बा	12:33	वृष	स. सि. यो. 17:54 तक	6	6:31	18:05	6:20	17:57	6:23	17:58	6:35	18:19
	7	५	बुध	14:48	रोहि.	20:36	व्य.	25:30	तै	14:48	वृष	स. सि. यो.	7	6:32	18:04	6:21	17:56	6:23	17:56	6:35	18:19
	8	६	गुरु	16:37	मृग.	22:50	वरी.	25:42	व	16:37	मि. 9:47	भ. 16:37 से 29:14 तक,	8	6:33	18:03	6:22	17:55	6:24	17:55	6:35	18:18
	9	७	शुक्र	17:50	आर्द्रा	24:27	परि.	25:24	ब	17:50	मिथुन	शुक्र पू.फा. में 11:17	9	6:34	18:01	6:22	17:54	6:25	17:54	6:35	18:17
	10	८	शनि	18:17	पुन.	25:18	शिव	24:28	कौ	18:17	क.19:10	सूर्य चित्रा में 13:34	10	6:34	18:00	6:23	17:52	6:25	17:53	6:35	18:16
	11	९	रवि	17:54	पुष्य	25:19	सिद्ध	22:53	ग	17:54	कर्क	भ. 29:17 से, **रविपुष्य योग**, गण्डमूल 25:19 बाद, स. सि. यो.	11	6:35	17:59	6:23	17:51	6:26	17:52	6:36	18:15
	12	१०	चन्द्र	16:39	आश्ले	24:30	साध्य	20:36	वि	16:39	सिं.24:30	भ. 16:39 तक, गण्डमूल विचार	12	6:36	17:58	6:24	17:50	6:27	17:51	6:36	18:14
	13	११	मंग.	14:36	मघा	22:54	शुभ	17:42	बा	14:36	सिंह	**पुरुषोत्तमा एकादशी व्रत**, गण्डमूल 22:54 तक	13	6:36	17:57	6:24	17:49	6:27	17:49	6:36	18:14
	14	१२	बुध	11:51	पू.फा.	20:41	शुक्ल	14:14	तै	11:51	कं.26:02	**प्रदोष व्रत, बुध वक्री 6:32**	14	6:37	17:55	6:25	17:48	6:28	17:58	6:37	18:13
	15	१३	गुरु	8:34	उ.फा.	17:58	ब्रह्म ऐंद्र	10:19 30:07	व	08:34	कन्या	भ. 8:34 से 18:44 तक, **मासशिवरात्रि व्रत,**	15	6:38	17:54	6:26	17:47	6:29	17:57	6:37	18:12
	0	१४	गुरु	28:53	० ०	0 0	० ०	0 0	०	0 0	० ०	**चतुर्दशी तिथि का क्षय** ०० ००	०	--	--	--	--	--	--	--	--
	16	३०	शुक्र	25:01	हस्त	14:58	वैधृ.	25:45	च	14:57	तु.25:25	**अधि. आश्विन अमावस, आश्विन अधिक (मल) मास समाप्त**(देखें पृष्ठ 77)	16	6:39	17:53	6:26	17:46	6:29	17:46	6:37	18:11
द्वितीया (शुद्ध) आश्विन शुक्ल पक्ष	17	१	शनि	21:09	चित्रा	11:52	विष्क	21:24	किं	11:05	तुला	द्वितीय (शुद्ध) आश्विन शुक्ल पक्ष प्रारम्भ, **शरद् नवरात्र प्रारम्भ, (A)**	17	6:39	17:52	6:27	17:45	6:30	17:45	6:38	18:10
	18	२	रवि	17:28	स्वा. विशा.	8:51 30:08	प्रीति	17:12	बा	7:19	वृ.24:47	चन्द्रदर्शन, मु. 45,	18	6:40	17:51	6:27	17:44	6:31	17:44	6:38	18:09
	19	३	चन्द्र	14:08	अनु.	27:53	आयु	13:18	ग	14:08	वृश्चिक	भ. 24:44 से, रबि-उल्लावल (मु.) मास प्रारम्भ, स. सि. यो.	19	6:41	17:50	6:28	17:43	6:31	17:43	6:38	18:08
	20	४	मंग	11:19	ज्ये.	26:12	सौभा	9:48	वि	11:19	ध.26:12	भ. 11:19 तक, **उपाङ्ग ललिता व्रत** (देखें पृष्ठ 20), शुक्र उ.फा. में 16:10,**(B)**	20	6:42	17:48	6:29	17:42	6:32	17:42	6:39	18:07
	21	५	बुध	9:08	मूल	25:13	शोभ अति.	6:49 28:24	बा	9:08	धनु	**सरस्वती आवाहन मूलभे**	21	6:43	17:47	6:29	17:41	6:33	17:41	6:39	18:06
	22	६	गुरु	7:40	पू.षा.	24:59	सुक	26:35	तै	7:40	धनु	सरस्वती पूजन पू.षाभे, सूर्य सायन वृश्चिक में 28:30, हेमन्त ऋतु प्रारम्भ	22	6:43	17:46	6:30	17:40	6:34	17:40	6:39	18:06
	23	७	शुक्र	6:57	उ.षा.	25:28	धृति	25:22	व	6:57	म. 7:02	भ. 6:57 से 18:58 तक, **श्रीदुर्गाष्टमी**-महाष्टमी (पश्चिम-भारत) (देखें पृष्ठ 21)**(C)**	23	6:44	17:45	6:31	17:39	6:34	17:39	6:40	18:05
	24	८	शनि	6:59	श्रव.	26:38	शूल	24:41	ब	6:59	मकर	**श्रीदुर्गाष्टमी-महाष्टमी** (देखें पृष्ठ 21) महानवमी (व्रत हेतु), **(G)**	24	6:45	17:44	6:31	17:38	6:35	17:38	6:40	18:05
	25	९	रवि	7:42	धनि.	28:23	गंड	24:28	कौ	7:42	कुं.15:26	**पंचक प्रारम्भ 15:26, नवरात्र समाप्त/पारणा, विजयादशमी** (दशहरा),**(D)**	25	6:46	17:43	6:32	17:37	6:36	17:37	6:40	18:04
	26	१०	चन्द्र	9:01	शत.	30:37	वृद्धि	24:38	ग	9:01	कुम्भ	भ. 21:54 से, भरत-मिलाप	26	6:47	17:42	6:33	17:37	6:37	17:36	6:41	18:04
	27	११	मंग	10:47	पू.भा.	----	ध्रुव	25:07	वि	10:47	मी.26:31	भ. 10:47 तक, **पापांकुशा एकादशी व्रत**, वक्री बुध चित्रा 4 में 14:33	27	6:47	17:41	6:33	17:36	6:37	17:35	6:41	18:04
	28	१२	बुध	12:54	पू.भा.	9:11	व्या.	25:48	बा	12:54	मीन	**प्रदोष व्रत** **(G) सरस्वती विसर्जन** (श्रवणे), बलिदान दिवस	28	6:48	17:40	6:34	17:35	6:38	17:34	6:41	18:03
	29	१३	गुरु	15:16	उ.भा.	12:00	हर्ष	26:37	तै	15:16	मीन	गण्डमूल 12:00 बाद, स. सि. यो. 12:00 बाद	29	6:49	17:39	6:35	17:34	6:39	17:33	6:42	18:03
	30	१४	शुक्र	17:46	रेव	14:57	वज्र	27:31	व	17:46	मे.14:57	भ. 17:46 से, **पंचक समाप्त 14:57, शरद् पूर्णिमा व्रत** (देखें पृष्ठ 22)**(E)**	30	6:50	17:38	6:36	17:34	6:40	17:32	6:42	18:03
	31	१५	शनि	20:19	अश्वि	17:58	सिद्धि	28:26	वि	7:03	मेष	भ. 7:03 तक, **आश्विन-पूर्णिमा, महर्षि श्रीवाल्मीकि जयन्ती, (F)**	31	6:51	17:37	6:36	17:33	6:40	17:31	6:43	18:02

(A) घटस्थापन (प्रातः 7:25 बाद) (देखें पृष्ठ 20), **सूर्य तुला में 7:05, कार्तिक संक्रान्ति,** मु. 30, पुण्यकाल सं. दोपहर 13:29 तक, आकाश दीपदान प्रारम्भ, महाराजा अग्रसेन जयन्ती, मातामह (नाना/नानी) का श्राद्ध
(B) वक्री बुध पश्चिम में अस्त 6:39 **(C)** भद्रकाली अवतार, सरस्वती बलिदान उ.षाभे, सूर्य स्वा. में 23:58, शुक्र कन्या में 10:44, शक कार्तिक प्रारम्भ **(D)** महानवमी-बलिदान हेतु, अपराजिता-पूजन, आयुध/शस्त्रादि
पूजन, सीमोल्लंघन **(E)** गुरु उ.षा. 1 में 13:05, कोजागर व्रत, स. सि. यो. **(F)** श्रीसत्यनारायण व्रत, शुक्र हस्त में 17:08, कार्तिक स्नान-नियम प्रारम्भ, वक्री बुध पूर्व में उदय 23:40, गण्डमूल 17:58 तक

वि. संवत् 2077, नवम्बर मास का तिथ्यादि पंचांग घण्टा–मिनटों में (भा. स्टैं. टा.), सन् 2020 ई.

मास पक्ष	नवम्बर	तिथि	वार	समाप्ति काल घं. मिं.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं. मिं.	योग	समाप्ति काल घं. मिं.	करण	समाप्ति काल घं. मिं.	चंद्र-राशि प्रवेश घं. मिं.	भद्रा, पंचक, सूर्यादि ग्रहों का राशि–नक्षत्र प्रवेश घण्टा–मिन्टों में [भा. स्टैं. टा.] सूर्य-दक्षिणायन हेमन्त-ऋतुः	ता. नव.	जम्मू		दिल्ली		चण्डीगढ़		मुम्बई	
														सूर्योदय घं. मिं.	सूर्यास्त घं. मिं.	सूर्योदय घं. मिं.	सूर्यास्त घं. मिं.	सूर्योदय घं. मिं.	सूर्यास्त घं. मिं.	सूर्योदय घं. मिं.	सूर्यास्त घं. मिं.
कार्तिक कृष्ण पक्ष	1	१	रवि	22:50	भर.	20:57	व्य.	29:17	बा	9:35	वृ.27:41	**कार्तिक कृष्ण पक्ष प्रारम्भ**, नवम्बर मास प्रारम्भ, हरियाणा दिवस	1	6:52	17:36	6:37	17:32	6:41	17:30	6:43	18:02
	2	२	चन्द्र	25:14	कृति	23:50	वरी	30:03	तै	12:02	वृष		2	6:52	17:35	6:37	17:34	6:41	17:30	6:44	18:01
	3	३	मंग	27:25	रोहि.	26:30	परि.	30:37	व	14:20	वृष	भ. 14:20 से 27:25 तक, **बुध मार्गी 23:17**	3	6:53	17:34	6:38	17:33	6:42	17:29	6:44	18:01
	4	४	बुध	29:15	मृग.	28:51	शिव	-----	ब	16:20	मि.15:43	**व्रत करवा-चौथ** (करक-चतुर्थी) चन्द्रोदय हेतु देखें पृष्ठ 13, श्रीगणेश **(A)**	4	6:54	17:33	6:39	17:332	6:43	17:28	6:45	18:00
	5	५	गुरु	30:37	आर्द्रा	30:45	शिव	6:55	कौ	17:56	मिथुन		5	6:55	17:33	6:39	17:31	6:44	17:27	6:45	18:00
	6	६	शुक्र	-----	पुन.	-----	सिद्ध साध्य	6:52 30:21	ग	19:01	क.25:48	**स्कन्द षष्ठी व्रत**, सूर्य विशाखा में 8:13, स. सि. यो. 6:45 बाद	6	6:56	17:32	6:40	17:30	6:45	17:26	6:45	17:59
	7	६	शनि	7:24	पुन.	8:05	शुभ	29:19	व	7:24	कर्क	भ. 7:24 से 19:27 तक,	7	6:57	17:31	6:41	17:30	6:46	17:26	6:46	17:59
	8	७	रवि	7:30	पुष्य	8:45	शुक्ल	27:42	ब	7:30	कर्क	**अहोई अष्टमी व्रत, रविपुष्य योग 8:45 तक**, गण्डमूल 8:45 बाद	8	6:58	17:30	6:42	17:29	6:46	17:25	6:46	17:58
	0	८	रवि	30:51	० ०	0 0	० ०	0 0	०	0 0	० ०	**अष्टमी तिथि का क्षय** ०० ०० दीपावली पर्व 14 नवंबर	०	--	--	--	--	--	--	--	--
	9	९	चन्द्र	29:28	आश्ले	8:42	ब्रह्म	25:30	तै	18:10	सिं. 8:42	गण्डमूल विचार	9	6:58	17:30	6:43	17:28	6:47	17:24	6:47	17:58
	10	१०	मंग	27:23	मघा पू.फा.	7:56 30:28	ऐन्द्र	22:44	व	16:26	सिंह	भ. 16:26 से 27:23 तक, गण्डमूल 7:56 तक	10	6:59	17:29	6:43	17:28	6:48	17:24	6:47	17:58
	11	११	बुध	24:41	उ.फा.	28:25	वैधृ.	19:27	ब	14:02	कं.12:01	**रमा एकादशी व्रत**, बुध स्वा. में 21:32, शुक्र चित्रा में 15:00, **(B)**	11	7:00	17:28	6:44	17:27	6:49	17:23	6:48	17:57
	12	१२	गुरु	21:30	हस्त	25:55	विष्क	15:44	कौ	11:06	कन्या	**गोवत्स द्वादशी**	12	7:01	17:27	6:45	17:26	6:50	17:22	6:49	17:57
	13	१३	शुक्र	17:59	चित्रा	23:06	प्रीति	11:43	ग	7:45	तु.12:32	भ. 17:59 से 28:09 तक, **प्रदोष व्रत, धन त्रयोदशी**, श्रीहनुमान-जयन्ती **(C)**	13	7:02	17:27	6:46	17:26	6:51	17:22	6:49	17:57
	14	१४	शनि	14:18	स्वा.	20:09	आयु सौभा	07:30 27:15	श	14:18	तुला	पितृकार्येषु अमावस (14:18 बाद), **नरक-चतुर्दशी** (पूर्व-अरुणोदय वाली), **(D)**	14	7:03	17:26	6:46	17:25	6:51	17:21	6:50	17:56
	15	३०	रवि	10:37	विशा.	17:16	शोभ	23:06	ना	10:37	वृ.11:58	**कार्तिक अमावस** (स्नानदान हेतु प्रात:10:37 तक), अन्नकूट, **(E)**	15	7:04	17:26	6:47	17:25	6:52	17:21	6:50	17:56
कार्तिक शुक्ल पक्ष	16	१	चन्द्र	7:07	अनु.	14:37	अति	19:10	ब	7:07	वृश्चिक	चन्द्रदर्शन मु. 15, **भ्रातृ (भाई) दूज**, यम द्वितीया, **शुक्र तुला में 25:01 (F)**	16	7:05	17:25	6:48	17:24	6:53	17:20	6:51	17:56
	0	२	चन्द्र	27:57	००	00	००	00	०	00	००	**द्वितीया तिथि का क्षय** ०० ००	०	--	--	--	--	--	--	--	--
	17	३	मंग	25:18	ज्ये.	12:22	सुक	15:36	तै	14:38	ध.12:22	रबि-उल्सानी (मु.) मास प्रारम्भ, गण्डमूल विचार	17	7:06	17:24	6:49	17:24	6:54	17:20	6:51	17:55
	18	४	बुध	23:17	मूल	10:40	धृति	12:30	व	12:18	धनु	भ. 12:18 से 23:17 तक, दूर्वा-गणपति व्रत, गण्डमूल 10:40 तक	18	7:07	17:24	6:50	17:23	6:55	17:19	6:52	17:55
	19	५	गुरु	22:00	पू.षा.	9:38	शूल	9:57	ब	10:39	म.15:30	सूर्य अनु. में 14:11, सौभाग्य-पंचमी, ज्ञान-पंचमी (जैन), जया-पंचमी	19	7:08	17:24	6:50	17:23	6:56	17:19	6:52	17:55
	20	६	शुक्र	21:30	उ.षा.	9:22	गंड वृद्धि	08:01 30:43	कौ	9:45	मकर	गुरु उ.षा. 2 **मकर में 13:22, सूर्य षष्ठी पर्व (छठ-पूजा)**,शनि उ.षा. 3 में 7:04	20	7:08	17:23	6:51	17:22	6:57	17:19	6:53	17:55
	21	७	शनि	21:49	श्रव.	9:53	ध्रुव	30:01	ग	9:40	कुं.22:26	भ. 21:49 से, **पंचक प्रारम्भ 22:26**, बुध विशा. में 18:27, सूर्य सायन धनु में 26:10	21	7:09	17:23	6:52	17:22	6:57	17:18	6:54	17:55
	22	८	रवि	22:52	धनि.	11:09	व्या.	29:51	वि	10:21	कुम्भ	भ. 10:21 तक, **गोपाष्टमी**, शुक्र स्वाती में 10:32, शक मार्गशीर्ष प्रारम्भ	22	7:10	17:23	6:53	17:22	6:58	17:18	6:54	17:55
	23	९	चन्द्र	24:33	शत.	13:05	हर्ष	30:08	बा	11:43	कुम्भ	**अक्षय-कूष्माण्ड नवमी**, आरोग्य व्रत, **आमला नवमी**	23	7:11	17:22	6:54	17:21	6:59	17:18	6:55	17:55
	24	१०	मंग	26:43	पू.भा.	15:32	वज्र	30:45	तै	13:38	मी. 8:53		24	7:12	17:22	6:54	17:21	7:00	17:18	6:55	17:55
	25	११	बुध	29:11	उ.भा.	18:20	सिद्धि	-----	व	15:57	मीन	भ. 15:57 से 29:11 तक, हरिप्रबोधिनी एकादशी व्रत (स्मार्त), **तुलसी (G)**	25	7:13	17:21	6:55	17:21	7:01	17:17	6:56	17:55
	26	१२	गुरु	-----	रेव.	21:20	सिद्धि	7:35	ब	18:29	मे.21:20	**पंचक समाप्त 21:20, हरिप्रबोधिनी एकादशी व्रत (वैष्णव)**, (देखें पृ. 22), **(H)**	26	7:14	17:21	6:56	17:20	7:02	17:17	6:56	17:55
	27	१२	शुक्र	7:47	अश्वि	24:23	व्य.	8:29	बा	7:47	मेष	**प्रदोष व्रत, बुध वृश्चिक में 31:04**, गण्डमूल 24:23 तक	27	7:15	17:21	6:57	17:20	7:03	17:17	6:57	17:55
	28	१३	शनि	10:22	भर.	27:19	वरी.	9:22	तै	10:22	मेष	**वैकुण्ठ चतुर्दशी**, भरणी-दीपम्	28	7:16	17:21	6:58	17:20	7:03	17:17	6:57	17:55
	29	१४	रवि	12:48	कृति	30:03	परि.	10:09	व	12:48	वृ.10:01	भ. 12:48 से 25:54 तक, **श्रीसत्यनारायण व्रत**, त्रिपुरोत्सव, भीष्मपंचक समाप्त,	29	7:16	17:20	6:58	17:20	7:04	17:17	6:58	17:55
	30	१५	चन्द्र	15:00	रोहि.	----	शिव	10:45	ब	15:00	वृष	**कार्तिक पूर्णिमा, श्रीगुरु नानकदेव जयन्ती**, कार्तिक स्नान समाप्त **(I)**	30	7:17	17:20	6:59	17:20	7:05	17:17	6:59	17:55

(A) चतुर्थी व्रत, दशरथ चतुर्थी, **(B)** कौमुदि महोत्सव प्रारम्भ **(C)** (उ. भारत) (अर्द्धरात्रि-व्यापिनी), यम प्रीत्यर्थं दीपदान एवं तर्पण, मासशिवरात्रि व्रत, **मंगल मार्गी 30:06** **(D)** (देखें पृष्ठ 22), तैलाभ्यंग, रूप चौदश, दीपावली, **श्रीमहालक्ष्मी पूजन (देखें पृष्ठ 181)**-कुबेर-पूजा, नेहरू-जयन्ती (बाल-दिवस), सायं दीपदान देवालये, कौमुदि महोत्सव सम्पन्न, श्रीमहावीर निर्वाण (जैन) **(E) गोवर्धन पूजा**, गोक्रीडा, बलिपूजा, **सूर्य वृश्चिक में 30:53**, **मार्गशीर्ष संक्रान्ति** (देखें पृ. 25), मु. 30, पुण्यकाल सं. अगले दिन दोप. 13:17 तक, श्रीविश्वकर्मा दिवस (पंजाब) **(F)** यमुना स्नान, कलम-दवात पूजन, **विश्वकर्मा पूजन** **(G) विवाह, भीष्मपंचक प्रारम्भ**, चातुर्मास्य व्रत, नियमादि समाप्त, राहु मृग. 1 केतु ज्ये. 3 में 10:27, गण्डमूल 18:20 बाद **(H)** हरिप्रबोधोत्सव, बुध पूर्व में अस्त 17:10 **(I)** बुध अनुराधा में 10:30, **मेला रामतीर्थ (अमृतसर)**, मेला पुष्करतीर्थ (राजस्थान)

वि. संवत् 2077, दिसम्बर मास का तिथ्यादि पंचांग घण्टा–मिनटों में (भा. स्टैं. टा.), सन् 2020 ई.

मास पक्ष	दिसंबर	तिथि	वार	समाप्ति काल घं. मिं.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं. मिं.	योग	समाप्ति काल घं. मिं.	करण	समाप्ति काल घं. मिं.	चंद्र-राशि प्रवेश घं. मिं.	भद्रा, पंचक, सूर्यादि ग्रहों का राशि–नक्षत्र प्रवेश घण्टा–मिन्टों में [भा. स्टैं. टा.] सूर्य दक्षिण--उत्तरायणे हेमन्त-शिशिर ऋतुः	ता. दिसं.	जम्मू		दिल्ली		चण्डीगढ़		मुम्बई	
														सूर्योदय घं. मिं.	सूर्यास्त घं. मिं.	सूर्योदय घं. मिं.	सूर्यास्त घं. मिं.	सूर्योदय घं. मिं.	सूर्यास्त घं. मिं.	सूर्योदय घं. मिं.	सूर्यास्त घं. मिं.
मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष	1	१	मंग	16:52	रोहि.	8:31	सिद्ध	11:08	कौ	16:52	मि.21:37	मार्गशीर्ष कृष्णपक्ष प्रारम्भ, दिसम्बर मास प्रारम्भ, मृगछोड़ी स्नान प्रारम्भ	1	7:18	17:20	7:00	17:20	7:06	17:16	6:59	17:56
	2	२	बुध	18:23	मृग	10:38	साध्य	11:14	ग	18:23	मिथुन	भ. 30:55 से, सूर्य ज्येष्ठा में 18:32, शुक्र विशाखा में 28:35, स. सि. यो.	2	7:19	17:20	7:01	17:20	7:07	17:16	7:00	17:56
	3	३	गुरु	19:27	आर्द्रा	12:21	शुभ	11:01	वि	19:27	मिथुन	भ. 19:27 तक, **श्रीगणेश चतुर्थी व्रत** (देखें पृष्ठ 13), सौभाग्य सुन्दरी व्रत	3	7:20	17:20	7:02	17:20	7:08	17:16	7:01	17:56
	4	४	शुक्र	20:04	पुन.	13:39	शुक्ल	10:28	ब	7:46	क. 7:22		4	7:21	17:20	7:02	17:20	7:08	17:16	7:01	17:56
	5	५	शनि	20:11	पुष्य	14:28	ब्रह्म	9:33	कौ	8:08	कर्क	**गण्डमूल 14:28 बाद**	5	7:21	17:20	7:03	17:20	7:09	17:16	7:02	17:57
	6	६	रवि	19:45	आश्ले	14:46	ऐन्द्र वैधृ.	8:13 30:28	ग	7:58	सिं.14:46	भ. 19:45 से, गण्डमूल विचार	6	7:22	17:20	7:04	17:20	7:10	17:16	7:03	17:57
	7	७	चन्द्र	18:48	मघा	14:33	विष्क	28:17	ब	18:48	सिंह	भ. 7:17 तक, गुरु उ.षा. 3 में 20:52, **श्रीकालभैरवाष्टमी**(देखें पृष्ठ 23)**(A)**	7	7:23	17:20	7:05	17:20	7:11	17:17	7:03	17:57
	8	८	मंग	17:18	पू.फा.	13:48	प्रीति	25:42	कौ	17:18	कं.19:31	बुध ज्येष्ठा में 23:29	8	7:24	17:20	7:05	17:20	7:11	17:17	7:04	17:57
	9	९	बुध	15:18	उ.फा.	12:33	आयु	22:43	ग	15:18	कन्या	भ. 26:05 से,	9	7:25	17:20	7:06	17:21	7:12	17:17	7:05	17:58
	10	१०	गुरु	12:52	हस्त	10:51	सौभा	19:25	वि	12:52	तु.21:52	भ. 12:52 तक, **शुक्र वृश्चिक में 29:16**, उत्पन्ना एकादशी व्रत (स्मार्त)**(B)**	10	7:25	17:21	7:07	17:21	7:13	17:17	7:05	17:58
	11	११	शुक्र	10:05	चित्रा स्वा.	8:48 30:30	शोभ	15:50	बा	10:05	तुला	**उत्पन्ना एकादशी व्रत (वैष्णव)** (देखें पृष्ठ 23)	11	7:26	17:21	7:07	17:21	7:14	17:17	7:06	17:58
	0	१२	शुक्र	31:03	० ०	0 0	० ०	0 0	०	0 0	० ०	**द्वादशी तिथि का क्षय** ०० ००	०	--	--	--	--	--	--	--	--
	12	१३	शनि	27:53	विशा.	28:05	अति	12:06	ग	17:28	वृ.22:41	भ. 27:53 से, **शनि प्रदोष व्रत**	12	7:27	17:21	7:08	17:21	7:14	17:17	7:07	17:59
	13	१४	रवि	24:45	अनु.	25:40	सुक धृति	08:17 28:30	वि	14:19	वृश्चिक	भ. 14:19 तक, शुक्र अनुराधा में 21:22, मासशिवरात्रि व्रत, श्रीबालाजी, **(C)**	13	7:28	17:21	7:09	17:21	7:15	17:18	7:07	17:59
	14	३०	चन्द्र	21:47	ज्ये.	23:26	शूल	24:52	च	11:16	ध.23:26	**मार्गशीर्ष-सोमवती-अमावस**, तीर्थस्नान माहात्म्य, **मेला हरिद्वार-प्रयागराज**	14	7:28	17:21	7:09	17:22	7:16	17:18	7:08	17:59
मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष	15	१	मंग	19:07	मूल	21:31	गंड	21:31	किं	8:27	धनु	मार्गशीर्ष शुक्लपक्ष प्रा., **सूर्य मूल 1 धनु में 21:31, पौष संक्रान्ति, (D)**	15	7:29	17:22	7:10	17:22	7:16	17:18	7:08	17:59
	16	२	बुध	16:55	पू.षा.	20:04	वृद्धि	18:33	कौ	16:55	म.25:48	चन्द्रदर्शन, मु. 30	16	7:29	17:22	7:11	17:22	7:17	17:19	7:09	18:00
	17	३	गुरु	15:18	उ.षा.	19:13	ध्रुव	16:03	ग	15:18	मकर	भ. 26:51 से, **बुध मूल 1 धनु में 11:37**, जमादि उल्लावल (मु.) मास प्रारम्भ	17	7:30	17:22	7:11	17:23	7:18	17:19	7:09	18:00
	18	४	शुक्र	14:23	श्रव.	19:04	व्या.	14:07	वि	14:23	कुं.31:16	भ. 14:23 तक, **पंचक प्रारम्भ 31:16**, स. सि. यो.	18	7:31	17:23	7:12	17:23	7:18	17:20	7:10	18:01
	19	५	शनि	14:15	धनि.	19:40	हर्ष	12:46	बा	14:15	कुम्भ	श्रीपञ्चमी, श्रीराम-विवाहोत्सव, नाग-पंचमी, **स्कन्द (गुह) षष्ठी (E)**	19	7:31	17:23	7:12	17:23	7:19	17:20	7:10	18:01
	20	६	रवि	14:53	शत.	21:01	वज्र	12:02	तै	14:53	कुम्भ	स्कन्द (गुह) षष्ठी (पूजन-हेतु मध्याह्न-व्यापिनी), चम्पा-षष्ठी (देखें पृष्ठ 24)	20	7:32	17:24	7:13	17:24	7:19	17:20	7:11	18:02
	21	७	चन्द्र	16:16	पू.भा.	23:03	सिद्धि	11:51	व	16:16	मी.16:29	भ. 16:16 से 29:16 तक, सूर्य सायन मकर में 15:32, **मित्र (विष्णु) (F)**	21	7:32	17:24	7:14	17:24	7:20	17:21	7:11	18:02
	22	८	मंग	18:15	उ.भा.	25:37	व्य.	12:09	ब	18:15	मीन	शक पौष प्रारम्भ, श्रीदुर्गाष्टमी, गण्डमूल 25:37 बाद, स. सि. यो. 25:37 तक	22	7:33	17:25	7:14	17:25	7:20	17:21	7:12	18:03
	23	९	बुध	20:40	रेव.	28:33	वरी.	12:49	बा	7:28	मे.28:33	**पंचक समाप्त 28:33**, गुरु उ.षा. 4 में 11:14, नन्दा नवमी, गण्डमूल विचार	23	7:33	17:25	7:15	17:26	7:21	17:22	7:12	18:03
	24	१०	गुरु	23:18	अश्वि	----	परि.	13:41	तै	9:59	मेष	**मंगल** अश्वि 1 **मेष में 10:18**, शुक्र ज्येष्ठा में 13:25, शनि उ.षा. 4 में 23:26	24	7:34	17:26	7:15	17:26	7:21	17:23	7:13	18:04
	25	११	शुक्र	25:55	अश्वि	7:36	शिव	14:36	व	12:37	मेष	भ. 12:37 से 25:55 तक, **मोक्षदा एकादशी व्रत**, **श्रीगीता-जयन्ती, (G)**	25	7:34	17:26	7:15	17:27	7:22	17:23	7:13	18:04
	26	१२	शनि	28:19	भर.	10:35	सिद्ध	15:24	ब	15:07	वृ.17:18	अखण्ड द्वादशी	26	7:35	17:27	7:16	17:27	7:22	17:24	7:14	18:05
	27	१३	रवि	30:21	कृति.	13:19	साध्य	16:00	कौ	17:20	वृष	**प्रदोष व्रत**,	27	7:35	17:27	7:16	17:28	7:23	17:24	7:14	18:05
	28	१४	चन्द्र	----	रोहि.	15:40	शुभ	16:17	ग	19:08	मि.28:39	सूर्य पू.षा. में 23:44, पिशाचमोचन श्राद्ध,	28	7:35	17:28	7:17	17:29	7:23	17:25	7:14	18:06
	29	१४	मंग	7:55	मृग.	17:32	शुक्ल	16:12	व	7:55	मिथुन	भ. 7:55 से 20:27 तक, **श्रीदत्तात्रेय जयन्ती** (देखें पृष्ठ 24), **(H)**	29	7:36	17:29	7:17	17:29	7:23	17:26	7:15	18:06
	30	१५	बुध	8:58	आर्द्रा	18:55	ब्रह्म	15:43	ब	8:58	मिथुन	**मार्गशीर्ष पूर्णिमा** (स्नानदानादि प्रात: 8:58 तक)	30	7:36	17:29	7:17	17:30	7:24	17:26	7:15	18:07
कृं	31	१	गुरु	9:31	पुन.	19:49	ऐन्द्र	14:51	कौ	9:31	क.13:38	पौष कृष्णपक्ष प्रारम्भ, स. सि. यो.	31	7:36	17:30	7:18	17:31	7:24	17:27	7:15	18:07

(A) भैरव-जयन्ती, गण्डमूल 14:33 तक **(B)** (देखें पृष्ठ 23) **(C)** जयन्ती, मेला पुरमण्डल (जम्मू) **(D)** 30, मुहू., पुण्यकाल सं. मध्याह्न बाद, गण्डमूल 21:31 तक **(E)** (व्रत हेतु सायाह्न-व्यापिनी) (देखें पृष्ठ 24) **(F)** सप्तमी, [illegible] **(G)** [illegible] **(H)** [illegible]

वि. संवत् 2077, जनवरी मास का तिथ्यादि पंचांग घण्टा–मिनटों में (भा. स्टैं. टा.), सन् 2021 ई.

मास पक्ष	जनवरी	तिथि	वार	समाप्ति काल घं. मिं.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं. मिं.	योग	समाप्ति काल घं. मिं.	करण	समाप्ति काल घं. मिं.	चंद्र-राशि प्रवेश घं. मिं.	भद्रा, पंचक, सूर्यादि ग्रहों का राशि–नक्षत्र प्रवेश घण्टा–मिन्टों में [भा. स्टैं. टा.] सूर्योत्तरायण शिशिर-ऋतुः	जन. ता.	जम्मू सूर्योदय घं. मिं.	जम्मू सूर्यास्त घं. मिं.	दिल्ली सूर्योदय घं. मिं.	दिल्ली सूर्यास्त घं. मिं.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं. मिं.	चण्डीगढ़ सूर्यास्त घं. मिं.	मुम्बई सूर्योदय घं. मिं.	मुम्बई सूर्यास्त घं. मिं.
पौष कृष्ण पक्ष	1	२	शुक्र	9:34	पुष्य	20:15	वैधृ.	13:37	ग	9:34	कर्क	भ. 21:22 से, जनवरी-सन् 2021 ई. प्रारम्भ, गण्डमूल 20:15 बाद	1	7:37	17:31	7:18	17:31	7:24	17:28	7:16	18:08
	2	३	शनि	9:10	आश्ले	20:17	विष्क	12:03	वि	9:10	सिं.20:17	भ. 9:10 तक, **श्रीगणेश चतुर्थी व्रत** (देखें पृष्ठ 13), बुध उ.षा. में 27:04	2	7:37	17:32	7:18	17:32	7:25	17:28	7:16	18:09
	3	४	रवि	8:23	मघा	19:57	प्रीति	10:10	बा	8:23	सिंह	**शुक्र मूल 1 धनु में 29:03**, गण्डमूल 19:57 तक	3	7:37	17:32	7:19	17:32	7:25	17:29	7:16	18:10
	0	५	रवि	31:14	० ०	0 0	० ०	0 0	०	0 0	० ०	**पंचमी तिथि का क्षय** ०० ००	०	--	--	--	--	--	--	--	--
	4	६	चन्द्र	29:47	पू.फा.	19:17	आयु सौभा	08:00 29:37	ग	18:31	कं.25:04	**भ. 29:47 से, बुध मकर में 27:55**	4	7:37	17:33	7:19	17:33	7:25	17:30	7:17	18:10
	5	७	मंग	28:04	उ.फा.	18:21	शोभ.	27:00	वि	16:56	कन्या	भ. 16:56 तक,	5	7:37	17:34	7:19	17:34	7:25	17:31	7:17	18:11
	6	८	बुध	26:07	हस्त	17:09	अति	24:12	बा	15:06	तु.28:29	गुरु श्रवण 1 में 27:44, रूक्मिणी अष्टमी, अष्टका श्राद्ध, स. सि. यो.	6	7:37	17:35	7:19	17:34	7:25	17:31	7:17	18:11
	7	९	गुरु	23:58	चित्रा	15:46	सुक	21:15	तै	13:03	तुला	**शनि पश्चिम में अस्त 17:40**	7	7:37	17:35	7:19	17:35	7:25	17:32	7:17	18:12
	8	१०	शुक्र	21:41	स्वा.	14:12	धृति	18:10	व	10:50	वृ.30:58	भ. 10:50 से 21:41 तक, श्रीपार्श्वनाथ जयन्ती (जैन)	8	7:38	17:36	7:19	17:36	7:25	17:33	7:17	18:12
	9	११	शनि	19:18	विशा.	12:32	शूल	15:00	ब	8:30	वृश्चिक	**सफला एकादशी व्रत,**	9	7:38	17:37	7:19	17:37	7:25	17:34	7:17	18:13
	10	१२	रवि	16:53	अनु.	10:50	गंड	11:49	तै	16:53	वृश्चिक	**प्रदोष व्रत**, सूर्य उ.षा. में 25:44, बुध श्रवण में 30:20, बुध पश्चिम में उदय 29:18	10	7:38	17:38	7:19	17:38	7:25	17:35	7:18	18:14
	11	१३	चन्द्र	14:33	ज्ये.	9:09	वृद्धि ध्रुव	8:40 29:38	व	14:33	ध. 9:09	भ. 14:33 से 25:28 तक, मासिक शिवरात्रि व्रत, गण्डमूल	11	7:37	17:39	7:20	17:38	7:25	17:36	7:18	18:14
	12	१४	मंग	12:23	मूल पू.षा.	7:38 30:22	व्या.	26:47	श	12:23	धनु	पितृकार्येषु अमावस (तर्पणादि 12:23 बाद), **स्वामी विवेकानन्द जयन्ती,(A)**	12	7:37	17:40	7:20	17:39	7:25	17:36	7:18	18:15
	13	३०	बुध	10:30	उ.षा.	29:28	हर्ष	24:14	ना	10:30	म.12:06	**पौष अमावस** (स्नानदानादि प्रात: 10:30 तक), **लोहड़ी पर्व**	13	7:37	17:41	7:19	17:40	7:25	17:37	7:19	18:16
पौष शुक्ल पक्ष	14	१	गुरु	9:02	श्रव.	29:04	वज्र	22:05	ब	9:02	मकर	चन्द्रदर्शन, मु. 30, **सूर्य मकर में 8:14, मकर (माघ) संक्रान्ति**, मु. 30**(B)**	14	7:37	17:42	7:19	17:41	7:25	17:38	7:19	18:17
	15	२	शुक्र	8:05	धनि.	29:17	सिद्धि	20:22	कौ	8:05	कुं.17:06	**पंचक प्रारम्भ 17:06**, जमादि-उल्सानी (मु.) मास प्रारम्भ	15	7:37	17:42	7:19	17:42	7:25	17:39	7:19	18:17
	16	३	शनि	7:46	शत.	30:09	व्य.	19:11	ग	7:46	कुम्भ	भ. 19:58 से, गुरु अस्त 17 जन.	16	7:37	17:43	7:19	17:42	7:25	17:40	7:19	18:18
	17	४	रवि	8:09	पू.भा.	----	वरी	18:33	वि	8:09	मी.25:16	भ. 8:09 तक, **गुरु पश्चिम में अस्त 17:52**	17	7:37	17:44	7:19	17:43	7:24	17:41	7:19	18:18
	18	५	चन्द्र	9:14	पू.भा.	7:43	परि.	18:26	बा	9:14	मीन		18	7:36	17:45	7:19	17:44	7:24	17:42	7:19	18:19
	19	६	मंग	10:59	उ.भा.	9:55	शिव	18:48	तै	10:59	मीन	बुध धनिष्ठा में 21:52, सूर्य सायन कुम्भ में 26:10, गण्डमूल 9:55 बाद	19	7:36	17:46	7:18	17:45	7:24	17:43	7:19	18:20
	20	७	बुध	13:16	रेव.	12:36	सिद्ध	19:30	व	13:16	मे.12:36	भ. 13:16 से 26:34 तक, **पंचक समाप्त 12:36**, मार्तण्ड सप्तमी **(C)**	20	7:36	17:47	7:18	17:46	7:24	17:43	7:19	18:20
	21	८	गुरु	15:51	अश्वि	15:36	साध्य	20:23	ब	15:51	मेष	गुरु श्रवण 2 में 8:45, शक माघ प्रारम्भ, श्रीदुर्गाष्टमी, महारूद्र व्रत, **(D)**	21	7:35	17:48	7:18	17:47	7:24	17:44	7:19	18:21
	22	९	शुक्र	18:30	भर.	18:40	शुभ	21:18	कौ	18:30	वृ.25:25	मंगल भरणी में 13:00, शनि श्रवण 1 में 17:41	22	7:35	17:49	7:18	17:47	7:23	17:45	7:19	18:22
	23	१०	शनि	20:57	कृति.	21:33	शुक्ल	22:03	तै	7:44	वृष	सूर्य श्रवण में 27:58, सुभाषचन्द्र बोस जयन्ती	23	7:35	17:50	7:17	17:48	7:23	17:46	7:19	18:22
	24	११	रवि	22:58	रोहि.	24:01	ब्रह्म	22:28	व	9:58	वृष	भ. 9:58 से 22:58 तक, **पुत्रदा एकादशी व्रत,**	24	7:34	17:51	7:17	17:49	7:23	17:47	7:19	18:23
	25	१२	चन्द्र	24:25	मृग.	25:56	ऐन्द्र	22:28	ब	11:42	मि.13:03	**बुध कुम्भ में 16:55**, शुक्र उ.षा. में 11:39, सुजन्म द्वादशी, स. सि. यो.	25	7:34	17:52	7:17	17:50	7:22	17:48	7:19	18:23
	26	१३	मंग	25:12	आर्द्रा	27:12	वैधृ.	21:57	कौ	12:49	मिथुन	**भौम प्रदोष व्रत, भारत गणतन्त्र दिवस (72वाँ),**	26	7:33	17:53	7:16	17:51	7:22	17:49	7:18	18:24
	27	१४	बुध	25:18	पुन.	27:49	विष्क	20:56	ग	13:15	क.21:43	भ. 25:18 से, **शुक्र मकर में 27:29**, ईशान व्रत	27	7:33	17:54	7:16	17:52	7:21	17:50	7:18	18:24
	28	१५	गुरु	24:46	पुष्य	27:51	प्रीति	19:24	वि	13:02	कर्क	भ. 13:02 तक, **पौष पूर्णिमा**, श्रीसत्यनारायण व्रत, **माघस्नान प्रारम्भ (E)**	28	7:32	17:55	7:16	17:52	7:21	17:51	7:18	18:25
माघ कृ.	29	१	शुक्र	23:42	आश्ले	27:21	आयु	17:27	बा	12:14	सिं.27:21	माघ कृष्ण पक्ष प्रारम्भ, गण्डमूल विचार	29	7:32	17:56	7:15	17:53	7:20	17:52	7:18	18:25
	30	२	शनि	22:13	मघा	26:28	सौभा	15:08	तै	10:58	सिंह	**बुध वक्री 21:18**, गण्डमूल 26:28 तक	30	7:31	17:57	7:15	17:54	7:20	17:53	7:18	18:26
	31	३	रवि	20:25	पू.फा.	25:18	शोभ	12:32	व	9:19	कं.30:58	भ. 9:19 से 20:25 तक, **श्रीगणेश संकष्ट चतुर्थी व्रत**(देखें पृष्ठ 13 व 24)**(F)**	31	7:30	17:57	7:14	17:55	7:19	17:54	7:18	18:27

(A) गण्डमूल 7:38 तक **(B)** पुण्यकाल सं. प्रात: सूर्योदय से दोपहर 14:38 तक, **कुम्भ महापर्व-स्नान माहात्म्य प्रारम्भ (हरिद्वार)**, निरयण उत्तरायण प्रारम्भ, शुक्र पू.षा. में 20:21, यूरेनस मार्गी 14:07, आरोग्य व्रत, गुरु वार्धक्य प्रारम्भ 17:52 **(C)** श्रीगुरु गोबिन्द सिंह जयन्ती (प्राचीन मतेन) **(D)** गण्डमूल 15:36 तक **(E)** शाकम्भरी जयन्ती, **गुरुपुष्य योग**, स.सि.यो. **(F)** गौरी-वक्रतुण्ड चतुर्थी

वि. संवत् 2077, फरवरी मास का तिथ्यादि पंचांग घण्टा–मिनटों में (भा. स्टैं. टा.), सन् 2021 ई.

मास पक्ष	फरवरी	तिथि	वार	समाप्ति काल घं. मिं.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं. मिं.	योग	समाप्ति काल घं. मिं.	करण	समाप्ति काल घं. मिं.	चंद्र-राशि प्रवेश घं. मिं.	भद्रा, पंचक, सूर्यादि ग्रहों का राशि–नक्षत्र प्रवेश घण्टा–मिन्टों में [भा. स्टैं. टा.] सूर्योत्तरायण शिशिर-वसन्त-ऋतुः	ता. फरवरी	जम्मू		दिल्ली		चण्डीगढ़		मुम्बई	
														सूर्योदय घं. मिं.	सूर्यास्त घं. मिं.	सूर्योदय घं. मिं.	सूर्यास्त घं. मिं.	सूर्योदय घं. मिं.	सूर्यास्त घं. मिं.	सूर्योदय घं. मिं.	सूर्यास्त घं. मिं.
माघ कृष्ण पक्ष	1	४	चन्द्र	18:25	उ.फा.	23:57	अति सुक	9:45 30:51	ब	7:25	कन्या	फरवरी–सन् 2021 ई. प्रारम्भ शुक्र अस्त 8 फर.	1	7:30	17:58	7:14	17:56	7:19	17:54	7:17	18:28
	2	५	मंग	16:20	हस्त	22:32	धृति.	27:56	तै	16:20	कन्या	वक्री बुध पश्चिम में अस्त 7:26	2	7:29	17:59	7:13	17:57	7:18	17:55	7:17	18:28
	3	६	बुध	14:13	चित्रा	21:07	शूल	25:00	व	14:13	तु. 9:50	भ. 14:13 से 25:11 तक, शीतला षष्ठी	3	7:28	18:00	7:12	17:57	7:17	17:56	7:17	18:29
	4	७	गुरु	12:08	स्वा.	19:45	गंड	22:08	ब	12:08	तुला	**वक्री बुध मकर में 22:40**, गुरु श्रवण 3 में 9:50, शुक्र श्रवण में 27:01	4	7:28	18:01	7:12	17:58	7:17	17:57	7:16	18:29
	5	८	शुक्र	10:08	विशा.	18:28	वृद्धि	19:20	कौ	10:08	वृ.12:47	सूर्य धनिष्ठा में 31:11, शुक्र-वार्धक्य प्रारम्भ 18:11 गुरु उदय 14 फर.	5	7:27	18:02	7:11	17:59	7:16	17:58	7:16	18:30
	6	९	शनि	8:14	अनु.	17:18	ध्रुव	16:37	ग	8:14	वृश्चिक	भ. 19:21 से 30:27 तक, गण्डमूल 17:18 बाद	6	7:26	18:03	7:11	18:00	7:15	17:59	7:16	18:30
	0	१०	शनि	30:27	० ०	0 0	० ०	0 0	०	0 0	० ०	**दशमी तिथि का क्षय** ०० ००	०	--	--	--	--	--	--	--	--
	7	११	रवि	28:48	ज्ये.	16:15	व्या.	14:00	ब	17:38	ध.16:15	षट्तिला एकादशी व्रत (स्मार्त), गण्डमूल विचार	7	7:25	18:04	7:10	18:01	7:15	17:59	7:15	18:31
	8	१२	चन्द्र	27:20	मूल	15:21	हर्ष	11:30	कौ	16:04	धनु	**षट्तिला एकादशी व्रत (वैष्णव)**, तिल द्वादशी, **शुक्र पूर्व में अस्त 18:11, (A)**	8	7:25	18:05	7:09	18:01	7:14	18:00	7:15	18:31
	9	१३	मंग	26:06	पू.षा.	14:39	वज्र सिद्धि	9:10 31:01	ग	14:43	म.20:30	भ. 26:06 से, **भौम प्रदोष व्रत, शनि पूर्व में उदय 24:50**	9	7:24	18:06	7:09	18:02	7:13	18:01	7:14	18:32
	10	१४	बुध	25:09	उ.षा.	14:12	व्य.	29:07	वि	13:38	मकर	भ. 13:38 तक, वक्री बुध श्रवण 4 में 22:46, मासशिवरात्रि व्रत	10	7:23	18:07	7:08	18:03	7:12	18:02	7:14	18:32
	11	३०	गुरु	24:36	श्रव.	14:05	वरी.	27:32	च	12:53	कुं.26:11	**माघ (मौनी) अमावस** (स्नानदानादि), **महोदय योग** (14:05 तक, पितृ तर्पणादि **(B)**	11	7:22	18:08	7:07	18:04	7:11	18:03	7:13	18:33
माघ शुक्ल पक्ष	12	१	शुक्र	24:30	धनि.	14:23	परि.	26:19	किं	12:33	कुम्भ	माघ शुक्ल पक्ष प्रारम्भ, **सूर्य कुम्भ में 21:11, फाल्गुन संक्रान्ति**, मु. 15,**(C)**	12	7:21	18:09	7:06	18:05	7:11	18:04	7:13	18:33
	13	२	शनि	24:57	शत.	15:11	शिव	25:32	बा	12:44	कुम्भ	चन्द्रदर्शन, मु. 30, **बाबा श्रीलाल दयाल जयन्ती (ध्यानपुर) पं.**	13	7:20	18:09	7:05	18:05	7:10	18:04	7:12	18:34
	14	३	रवि	26:00	पू.भा.	16:33	सिद्ध	25:11	तै	13:29	मी.10:09	**गुरु पूर्व में उदय 23:46**, रज्जब (मुस्लि.) मास प्रारम्भ, **गौरी तृतीया (D)**	14	7:19	18:10	7:05	18:06	7:09	18:05	7:12	18:34
	15	४	चन्द्र	27:38	उ.भा.	18:29	साध्य	25:18	व	14:49	मीन	भ. 14:49 से 27:38 तक, **श्रीगणेश तिल चतुर्थी**, वरद् (कुन्द) चतुर्थी **(E)**	15	7:18	18:11	7:04	18:07	7:08	18:06	7:11	18:35
	16	५	मंग	29:47	रेव.	20:57	शुभ	25:49	ब	16:43	मे.20:57	**पंचक समाप्त 20:57, वसन्त-पञ्चमी**, श्री पञ्चमी, **सरस्वती पूजन, (F)**	16	7:17	18:12	7:03	18:08	7:07	18:07	7:11	18:35
	17	६	बुध	----	अश्वि	23:49	शुक्ल	26:37	कौ	19:03	मेष	गुरु बाल्यत्व समाप्त 23:46, गण्डमूल 23:49 तक	17	7:16	18:13	7:02	18:09	7:06	18:08	7:10	18:36
	18	६	गुरु	8:18	भर.	26:54	ब्रह्म	27:35	तै	8:18	मेष	गुरु श्रवण 4 में 13:13, सूर्य सायन मीन में 16:14, वसन्त ऋतु प्रारम्भ	18	7:15	18:14	7:01	18:09	7:05	18:09	7:09	18:36
	19	७	शुक्र	10:59	कृति.	29:57	ऐन्द्र	28:31	व	10:59	वृ. 9:41	भ. 10:59 से 24:16 तक, **रथ-आरोग्य सप्तमी** (पूर्वारुणोदय वाली) **(G)**	19	7:14	18:15	7:00	18:10	7:04	18:09	7:09	18:37
	20	८	शनि	13:32	रोहि.	----	वैधृ	29:14	ब	13:32	वृष	**भीष्माष्टमी** (देखें पृष्ठ 24), **शुक्र कुम्भ में 26:21**, शक फाल्गुन प्रारम्भ, **(H)**	20	7:13	18:16	6:59	18:11	7:03	18:10	7:08	18:37
	21	९	रवि	15:43	रोहि.	8:43	विष्क	29:34	कौ	15:43	मि.21:55	**मंगल वृष में 28:35**, गुप्त नवरात्रे समाप्त	21	7:12	18:16	6:59	18:11	7:02	18:11	7:08	18:37
	22	१०	चन्द्र	17:17	मृग.	10:58	प्रीति	29:22	ग	17:17	मिथुन	भ. 29:42 से, स. सि. यो. 10:58 तक	22	7:11	18:17	6:58	18:12	7:01	18:11	7:07	18:38
	23	११	मंग	18:06	आर्द्रा	12:31	आयु	28:34	वि	18:06	मिथुन	भ. 18:06 तक, जया एकादशी व्रत	23	7:10	18:18	6:57	18:13	7:00	18:13	7:06	18:38
	24	१२	बुध	18:06	पुन.	13:17	सौभा	27:09	बा	18:06	क. 7:10	**प्रदोष व्रत**, भीष्म–द्वादशी	24	7:09	18:19	6:56	18:13	6:59	18:14	7:06	18:38
	25	१३	गुरु	17:19	पुष्य	13:17	शोभ	25:07	तै	17:19	कर्क	मेला जैसलमेर (राजस्थान) प्रारम्भ–3 दिन, गुरुपुष्य योग 13:17 तक, **(I)**	25	7:08	18:20	6:55	18:14	6:58	18:15	7:05	18:39
	26	१४	शुक्र	15:50	आश्ले	12:35	अति	22:35	व	15:50	सिं.12:35	भ. 15:50 से 26:49 तक, शुक्र शतभिषा में 10:20, **श्रीसत्यनारायण व्रत**	26	7:07	18:21	6:54	18:15	6:57	18:15	7:04	18:39
	27	१५	शनि	13:47	मघा	11:18	सुक	19:37	ब	13:47	सिंह	**माघ पूर्णिमा, माघ स्नान समाप्त, श्रीगुरु रविदास जयन्ती, (J)**	27	7:06	18:21	6:53	18:15	6:56	18:16	7:03	18:39
फा.	28	१	रवि	11:19	पू.फा.	9:36	धृति	16:21	कौ	11:19	कं.15:07	फाल्गुन कृष्ण पक्ष प्रारम्भ,	28	7:04	18:22	6:52	18:16	6:55	18:16	7:03	18:39

(A) गण्डमूल 15:21 तक **(B)** विशेष माहात्म्य), **पंचक प्रारम्भ 26:11, मेला हरिद्वार, प्रयागराज आदि** **(C)** पुण्यकाल सं. दोपहर 2:47 से अगले दिन दोप. 13:11 तक, **गुप्त नवरात्रे प्रारम्भ**
(D) **(गोंतरी) व्रत**, वक्री बुध पूर्व में उदय 18:20 **(E)** मंगल कृतिका में 31:05, शुक्र धनिष्ठा में 18:30 **(F)** वागेश्वरी जयन्ती, **(G)** पुत्र सप्तमी व्रत, अचला–भानु सप्तमी, सूर्य शतभिषा में 11:36,

वि. संवत् 2077, मार्च मास का तिथ्यादि पंचांग घण्टा–मिनटों में (भा. स्टैं. टा.), सन् 2021 ई.

मास पक्ष	मार्च	तिथि	वार	समाप्ति काल घं. मिं.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं. मिं.	योग	समाप्ति काल घं. मिं.	करण	समाप्ति काल घं. मिं.	चंद्र-राशि प्रवेश घं. मिं.	भद्रा, पंचक, सूर्यादि ग्रहों का राशि–नक्षत्र प्रवेश घण्टा–मिन्टों में [भा. स्टैं. टा.] सूर्योत्तरायण वसन्त-ऋतुः	मार्च तां.	जम्मू		दिल्ली		चण्डीगढ़		मुम्बई	
														सूर्योदय घं. मिं.	सूर्यास्त घं. मिं.	सूर्योदय घं. मिं.	सूर्यास्त घं. मिं.	सूर्योदय घं. मिं.	सूर्यास्त घं. मिं.	सूर्योदय घं. मिं.	सूर्यास्त घं. मिं.
फाल्गुन कृष्ण पक्ष	1	२	चन्द्र	8:36	उ.फा. हस्त	7:37 29:32	शूल	12:55	ग	8:36	कन्या	भ. 19:12 से 29:47 तक, मार्च–सन् 2021 ई. प्रारम्भ	1	7:02	18:24	6:50	18:17	6:53	18:17	7:02	18:40
	0	३	चन्द्र	29:47	००	0 0	००	0 0	०	0 0	००	**तृतीया तिथि का क्षय** ०० ००	०	--	--	--	--	--	--	--	--
	2	४	मंग	27:00	चित्रा	27:29	गंड वृद्धि	9:25 29:58	ब	16:24	तु.16:30	**अंगारकी श्रीगणेश चतुर्थी व्रत** (देखें पृष्ठ 13–16)	2	7:01	18:25	6:49	18:18	6:52	18:17	7:01	18:40
	3	५	बुध	24:22	स्वा.	25:36	ध्रुव	26:40	कौ	13:41	तुला	शुक्र अस्त है	3	7:00	18:25	6:48	18:18	6:51	18:18	7:01	18:41
	4	६	गुरु	21:59	विशा.	23:57	व्या.	23:34	ग	11:11	वृ.18:20	भ. 21:59 से, सूर्य पू.भा. में 17:58, गुरु धनिष्ठा 1 में 25:56	4	6:58	18:26	6:47	18:19	6:50	18:19	7:00	18:41
	5	७	शुक्र	19:55	अनु.	22:38	हर्ष	20:43	वि	08:57	वृश्चिक	भ. 8:57 तक, बुध धनिष्ठा में 7:13, श्रीनाथ–उत्सव, गण्डमूल 22:38 बाद	5	6:57	18:27	6:46	18:19	6:49	18:20	7:00	18:42
	6	८	शनि	18:11	ज्ये.	21:38	वज्र	18:09	बा	7:03	ध.21:38	जानकी–व्रत (मतान्तरे)	6	6:56	18:28	6:45	18:20	6:48	18:20	6:59	18:42
	7	९	रवि	16:48	मूल	20:59	सिद्धि	15:51	ग	16:48	धनु	भ. 28:17 से, स. सि. यो. 20:59 तक, गण्डमूल 20:59 तक	7	6:55	18:28	6:44	18:21	6:46	18:21	6:58	18:42
	8	१०	चन्द्र	15:45	पू.षा.	20:40	व्य.	13:50	वि	15:45	म.26:39	भ. 15:45 तक, शुक्र पू.भा. में 26:33, स्वामी दयानन्द सरस्वती जयन्ती	8	6:54	18:29	6:43	18:21	6:45	18:22	6:57	18:43
	9	११	मंग	15:03	उ.षा.	20:41	वरी	12:05	बा	15:03	मकर	**विजया एकादशी व्रत**	9	6:52	18:30	6:42	18:22	6:44	18:22	6:56	18:43
	10	१२	बुध	14:41	श्रव.	21:03	परि.	10:36	तै	14:41	मकर	**प्रदोष व्रत**	10	6:51	18:31	6:41	18:23	6:43	18:23	6:55	18:44
	11	१३	गुरु	14:40	धनि.	21:45	शिव	9:24	व	14:40	कुं. 9:21	भ. 14:40 से 26:52 तक, ***श्रीमहाशिवरात्रि व्रत,*** **पंचक प्रारम्भ 9:21 (A)**	11	6:50	18:32	6:40	18:23	6:42	18:24	6:54	18:44
	12	१४	शुक्र	15:03	शत.	22:51	सिद्ध	8:29	श	15:03	कुम्भ		12	6:48	18:32	6:38	18:24	6:40	18:24	6:53	18:44
	13	३०	शनि	15:51	पू.भा.	24:22	साध्य	7:54	ना	15:51	मी.17:57	**फाल्गुन (शनिवासरी) अमावस** (स्नानदान, तर्पणादि)	13	6:47	18:33	6:37	18:24	6:39	18:25	6:53	18:44
फाल्गुन शुक्ल पक्ष	14	१	रवि	17:07	उ.भा.	26:20	शुभ	7:39	ब	17:07	मीन	फाल्गुन शुक्लपक्ष प्रा., चन्द्रदर्शन, मु. 45, **सूर्य मीन में 18:03, चैत्र संक्रान्ति,(B)**	14	6:46	18:34	6:36	18:25	6:38	18:26	6:52	18:44
	15	२	चन्द्र	18:50	रेव.	28:44	शुक्ल	7:46	कौ	18:50	मे.28:44	**पंचक समाप्त 28:44,** श्रीरामकृष्ण परमहंस जयन्ती, फुलेरा–दूज **(C)**	15	6:45	18:34	6:35	18:25	6:37	18:26	6:51	18:44
	16	३	मंग	20:59	अश्वि	----	ब्रह्म	8:13	तै	7:55	मेष	बुध शतभिषा में 18:30, **शुक्र मीन में 27:00,** स. सि. यो.	16	6:43	18:35	6:34	18:26	6:36	18:26	6:51	18:44
	17	४	बुध	23:29	अश्वि	7:31	ऐन्द्र	8:58	व	10:14	मेष	भ. 10:14 से 23:29 तक, सूर्य उ.भा. में 26:21, अविघ्नकर व्रत, **(D)**	17	6:42	18:36	6:33	18:26	6:35	18:27	6:50	18:44
	18	५	गुरु	26:10	भर.	10:35	वैधृ.	9:56	ब	12:50	वृ.17:22	याज्ञवल्क्य जयन्ती	18	6:41	18:37	6:32	18:27	6:34	18:27	6:49	18:45
	19	६	शुक्र	28:49	कृति.	13:44	विष्क	10:59	कौ	15:30	वृष	शुक्र उ.भा. में 19:13	19	6:39	18:37	6:31	18:28	6:32	18:28	6:48	18:45
	20	७	शनि	--:--	रोहि.	16:46	प्रीति	11:57	ग	18:00	मि.30:09	गुरु धनिष्ठा 2 में 8:40, सूर्य सायन मेष में 15:08, उत्तर गोल प्रारम्भ **(E)**	20	6:38	18:38	6:29	18:28	6:31	18:29	6:47	18:45
	21	७	रवि	7:11	मृग.	19:25	आयु	12:39	व	7:11	मिथुन	भ. 7:11 से 20:06 तक, **होलाष्टक प्रारम्भ,** अन्नपूर्णा–अष्टमी (मध्याह्न–व्यापिनी)	21	6:37	18:39	6:28	18:29	6:30	18:30	6:46	18:45
	22	८	चन्द्र	9:01	आर्द्रा	21:28	सौभा	12:55	ब	9:01	मिथुन	शक चैत्र एवं संवत् 1943 प्रारम्भ	22	6:35	18:40	6:27	18:29	6:29	18:30	6:45	18:46
	23	९	मंग	10:08	पुन.	22:45	शोभ	12:37	कौ	10:08	क.16:30	**होलाष्टक 21 से 28 मार्च**	23	6:34	18:40	6:26	18:30	6:27	18:31	6:45	18:46
	24	१०	बुध	10:24	पुष्य	23:12	अति	11:41	ग	10:24	कर्क	भ. 22:06 से, गण्डमूल 23:12 बाद	24	6:33	18:41	6:25	18:30	6:26	18:32	6:44	18:46
	25	११	गुरु	9:48	आश्ले	22:49	सुक	10:03	वि	9:48	सिं.22:49	भ. 9:48 तक, **आमलकी एकादशी व्रत,** गोविन्द द्वादशी, बुध पू.भा. में **(F)**	25	6:33	18:41	6:22	18:31	6:24	18:33	6:43	18:47
	26	१२	शुक्र	08:22	मघा	21:39	धृति शूल	7:45 28:53	बा	8:22	सिंह	**प्रदोष व्रत, गण्डमूल 21:39 तक**	26	6:32	18:41	6:22	18:32	6:22	18:34	6:42	18:47
	0	१३	शुक्र	30:12	००	0 0	००	0 0	०	0 0	००	**त्र्योदशी तिथि का क्षय** ०० ००	०	0:00	00:00	0:00	00:00	0:00	00:00	0:00	00:00
	27	१४	शनि	27:27	पू.फा.	19:52	गंड	25:31	ग	16:50	कं.25:20	भ. 27:27 से, महेश्वर व्रत, वृषदान व्रत	27	6:30	18:42	6:20	18:32	6:20	18:35	6:41	18:48
	28	१५	रवि	24:18	उ.फा.	17:36	वृद्धि	21:49	वि	13:53	कन्या	भ. 13:53 तक, **फाल्गुन पूर्णिमा, होलिका दहन** (प्रदोषकाले), **(G)**	28	6:28	18:42	6:19	18:33	6:19	18:35	6:40	18:48
चैत्र कृ.	29	१	चन्द्र	20:55	हस्त	15:02	ध्रुव	17:53	बा	10:37	तु.25:42	चैत्र कृष्णपक्ष प्रारम्भ, **होली पर्व, होला मेला** (श्रीआनन्दपुर व पांओटा साहिब)**(H)**	29	6:26	18:43	6:18	18:33	6:18	18:36	6:39	18:48
	30	२	मंग	17:28	चित्रा	12:22	व्या.	13:54	तै	7:12	तुला	भ. 27:48 से, शुक्र रेवती से 12:32, राहु रोहि. 3 केतु ज्ये. 1 में 29:42, **(I)**	30	6:25	18:44	6:17	18:34	6:16	18:36	6:38	18:49
	31	३	बुध	14:07	स्वा.	9:45	हर्ष वज्र	9:58 30:13	वि	14:07	वृ.25:56	भ. 14:07 तक, **श्रीगणेश चतुर्थी व्रत** (देखें पृष्ठ 13), सूर्य रेवती में **(J)**	31	6:25	18:44	6:17	18:34	6:16	18:36	6:38	18:49

(A) मंगल रोहिणी में 11:46, **बुध कुम्भ में 12:30** **(B)** पुण्यकाल सं. दोपहर 11:39 बाद, गण्डमूल 26:20 बाद **(C)** (मथुरा) उ.प्र., शब्बान (मु.) मास प्रारम्भ **(D)** गण्डमूल 7:31 तक **(E)** **महाविषुव दिन**, स. सि. यो. **(F)** 21:57, शनि श्रवण 3 में 9:45, **(G)** **होलाष्टक समाप्त**, श्रीसत्यनारायण व्रत, श्रीचैतन्य महाप्रभु जयन्ती, लक्ष्मीनारायण व्रत **(H)** वसन्तोत्सव, ध्वजारोहण, धूलिवन्दन, धुलण्डी, होलिका विभूति धारण, आम्रकुसुम प्राशन **(I)** **सन्त तुकाराम जयन्ती** **(J)** 13:14, **बुध मीन में 24:42**

वि. संवत् 2077, अप्रैल मास का तिथ्यादि पंचांग घण्टा–मिनटों में (भा. स्टैं. टा.), सन् 2021 ई.

मास पक्ष	अप्रैल	तिथि	वार	समाप्ति काल घं. मिं.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं. मिं.	योग	समाप्ति काल घं. मिं.	करण	समाप्ति काल घं. मिं.	चंद्र-राशि प्रवेश घं. मिं.	भद्रा, पंचक, सूर्यादि ग्रहों का राशि–नक्षत्र प्रवेश घण्टा–मिन्टों में [भा. स्टैं. टा.] सूर्योत्तरायण वसन्त-ऋतुः	अप्रैल ता.	जम्मू		दिल्ली		चण्डीगढ़		मुम्बई	
														सूर्योदय घं. मिं.	सूर्यास्त घं. मिं.	सूर्योदय घं. मिं.	सूर्यास्त घं. मिं.	सूर्योदय घं. मिं.	सूर्यास्त घं. मिं.	सूर्योदय घं. मिं.	सूर्यास्त घं. मिं.
चैत्र कृष्ण पक्ष	1	४	गुरु	11:00	विशा अनु.	7:22 29:19	सिद्धि	26:46	बा	11:00	वृश्चिक	श्री भगवान्नारायण जयन्ती, अप्रैल-सन् 2021 ई. में प्रारम्भ, गण्डमूल 29:19 बाद	1	6:24	18:45	6:16	18:35	6:16	18:37	6:36	18:49
	2	५	शुक्र	8:16	ज्ये.	27:44	व्य.	23:39	तै	8:16	ध.27:44	भ. 29:59 से, मंगल मृगशिर में 23:08, बुध उ.भा. में 22:58, **(A)**	2	6:23	18:45	6:15	18:35	6:15	18:38	6:35	18:49
	0	६	शुक्र	29:59	००	0 0	००	0 0	०	0 0	००	**षष्ठी तिथि का क्षय** ०० ०० ००	०	--	--	--	--	--	--	--	--
	3	७	शनि	28:13	मूल	26:39	वरी.	20:58	वि	17:06	धनु	भ. 17:06 तक, शीतला सप्तमी, गण्डमूल 26:39 तक	3	6:21	18:46	6:13	18:36	6:14	18:38	6:34	18:49
	4	८	रवि	27:00	पू.षा.	26:06	परि.	18:42	बा	15:37	धनु	**शीतलाष्टमी व्रत,**	4	6:19	18:47	6:12	18:37	6:12	18:39	6:34	18:49
	5	९	चन्द्र	26:19	उ.षा.	26:05	शिव	16:53	तै	14:40	म.08:02	गुरु धनि. 3 **कुम्भ में 24:23**, बुध पूर्व में अस्त 30:04, कुम्भ स्नान माहात्म्य प्रारम्भ (हरिद्वार)	5	6:18	18:48	6:11	18:38	6:11	18:40	6:33	18:49
	6	१०	मंग	26:10	श्रव.	26:35	सिद्ध	15:29	व	14:15	मकर	भ. 14:15 से 26:10 तक,	6	6:17	18:50	6:10	18:38	6:10	18:40	6:32	18:49
	7	११	बुध	26:29	धनि.	27:33	साध्य	14:29	ब	14:20	कुं.15:00	**पंचक प्रारम्भ 15:00, पापमोचनी एकादशी व्रत**	7	6:16	18:50	6:09	18:38	6:09	18:41	6:31	18:49
	8	१२	गुरु	27:16	शत.	28:57	शुभ	13:50	कौ	14:53	कुम्भ	**वारुणी योग 27:16 से 28:57 तक, वारुणी पर्व**	8	6:14	18:51	6:08	18:39	6:08	18:42	6:30	18:50
	9	१३	शुक्र	28:28	पू.भा.	----	शुक्ल	13:33	ग	15:52	मी.24:17	भ. 28:28 से, **प्रदोष व्रत**, बुध रेवती में 29:07,	9	0:00	00:00	0:00	00:00	0:00	00:00	0:00	00:00
	10	१४	शनि	30:04	पू.भा.	6:46	ब्रह्म	13:34	वि	17:16	मीन	भ. 17:16 तक, **शुक्र** अश्विनी 1 **मेष में 6:28**, मासिक शिवरात्रि व्रत **(B)**	10	6:13	18:52	6:07	18:39	6:06	18:42	6:30	18:50
	11	३०	रवि	----	उ.भा.	8:58	ऐन्द्र	13:52	च	19:03	मीन	**पितृकार्येषु अमावस**	11	6:12	18:52	6:06	18:40	6:05	18:43	6:29	18:50
	12	३०	चन्द्र	8:01	रेव.	11:29	वैधृ.	14:27	ना	8:01	मे.11:29	**चैत्र (सोमवती) अमावस, पंचक समाप्त 11:29,** ***मेला हरिद्वार-*** **(C)**	12	6:11	18:53	6:05	18:41	6:04	18:44	6:29	18:51

(A) एकनाथ षष्ठी, **श्रीरंग-पंचमी**, मेला नवचण्डी (मेरठ) प्रारम्भ, **मेला गुरु रामराय (देहरादून) (B) मेला पृथूदक-पिहोवातीर्थ (हरियाणा)**

(C) (कुम्भ महापर्व-स्नान माहात्म्य) (देखें पृष्ठ 11), **प्रयागराजादि**, तीर्थस्नान माहात्म्य, **विक्रमी संवत् 2077 पूर्ण**

राहु कालम्

शुभ कार्यों में विशेषतया त्याज्य

दक्षिण भारत में राहु-कालम का विशेष प्रचलन है। विशेष वार प्रतिदिन डेढ़ घण्टे के लिए यह अनिष्ट समय होता है। जिसे शुभ कार्यारम्भ में यथासम्भव टाल देना चाहिए। दक्षिणी भारत में राहु **कालम** का विशेष विचार किया जाता है।

सोमवार–प्रातः 7/30 से प्रातः 9 बजे तक

मंगलवार–अपराह्न 3/00 से 4/30 बजे तक

बुधवार–दोपहर 12/00 से 1/30 बजे तक

बृहस्पतिवार–दोपहर 1/30 से 3/00 बजे तक

शुक्रवार–प्रातः 10/30 से दुपै. 12 बजे तक

शनिवार–प्रातः 9/00 से प्रातः 10/30 बजे तक

रविवार–सायं 4/30 से सायं 6/00 बजे तक

नोट–यह समयावधि प्रत्येक नगर के दिनमान के अनुसार परिवर्तित होती रहती है।

कालसर्पयोग-अरिष्ट निवारक कुछ उपाय

कालसर्प दोष की शान्ति के लिए मुख्य रूप से (१) ग्रह शान्ति (२) सर्प दोष (३) पितृ दोष शान्ति एवं नागबलि एवं शिव पूजन वैदिक पुराणोक्त विधि से किसी योग्य ब्राह्मण द्वारा करवानी चाहिए। (४) विधिपूर्वक महामृत्युञ्जय का जप भी करें।

यदि कुण्डली में **कालसर्प योग** पड़ा हो, तो निम्नलिखित किंचित् उपाय करने **शुभ एवं कल्याणकारी** होंगे–(1) **कालसर्प** की अरिष्ट शान्ति के लिए शिव मन्दिर में सवा लाख **ॐ नमः शिवाय** मन्त्र का पाठ करना तथा पाठोपरान्त रूद्राभिषेक करवाने का विशेष महत्त्व है। साथ ही शिवलिंग पर चांदी का **सर्प युगल-नाग स्तोत्र** एवं नाग पूजनादि करके चढ़ाना शुभ होगा।

नाग गायत्री मन्त्र–ॐ नव कुलाय विद्महे विषदंताय धीमहि तन्नो सर्पः प्रचोदयात् ॥

(2) प्रत्येक शनिवार एक नारियल को तैल एवं काले तिलों का तिलक लगाकर, मौली लपेटकर अपने शिर से तीन बार घुमा कर **ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः** मन्त्र कम-से-कम तीन बार पढ़कर चलते पानी में बहा देवें–ऐसे कम-से-कम **पाँच शनिवार करें।**

(3) प्रत्येक **शनिवार** कुत्तों को दूध और चपाती डालनी तथा गौओं, कौओं को तैल के छीटें देकर रसोई की प्रथम चपातियां डालना शुभ है।

(4) **कालसर्प** योग के कारण यदि वैवाहिक जीवन में बाधा आती हो, तो जातक पत्नी के साथ दोबारा विवाह करें एवं घर के चौखट द्वार पर चांदी का स्वस्तिक चिन्ह बनवा कर लगवाएं।

(5) घर में **मयूर पंख** का पंखा पवित्र स्थान पर रखें तथा भगवान् शिव का ध्यान करते हुए प्रातः उठते ही तथा सोने से पूर्व मयूर पंखे द्वारा हवा करें।

चन्द्रमा का नक्षत्र-चरणों में प्रवेश काल घण्टा-मिनटों में (भा. स्टैं. टा.) वि. संवत् २०७७ (सन् 2020-21 ई.)

(चन्द्रमा के नक्षत्र चरणों के अनुसार बच्चों (शिशुओं) का नामकरण करें।)

आगे लिखे चन्द्रमा का नक्षत्र-चरणों में प्रवेश का समय घण्टे मिनटों में भा. स्टैं. टा. अनुसार दिया जा रहा है। रात्रि बारह (12) बजे के बाद के समय को आगामी तारीख के रूप में दर्शाया गया है। आगामी पृष्ठों पर दिया गया चन्द्रमा का नक्षत्र-चरणों में प्रवेश का प्रारम्भ काल है, न कि समाप्तिकाल। इस सारिणी के प्रयोग से किसी जातक के जन्म समय (घण्टा-मिनटों में) के आधार पर शीघ्र ही जातक का जन्म नक्षत्र एवं उसका चरण आदि सुगमता से जान सकते हैं। प्राचीन परिपाटी के अनुसार घड़ी-पलों या भयात्-भभोग की गणित प्रक्रिया से नक्षत्र-चरण निकालने का झंझट नहीं होगा।

चन्द्र नक्षत्र चरण ↘		1		2		3		4	
मार्च 2020	नक्षत्र	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.
25/26 मार्च	रेवती	4	19	11	03	17	48	0	32
26/27 मार्च	अश्विनी	7	16	13	59	20	43	3	26
27/28 मार्च	भरणी	10	09	16	50	23	30	6	11
28/29 मार्च	कृतिका	12	52	19	30	2	05	8	42
29/30 मार्च	रोहिणी	15	18	21	48	4	18	10	48
30/31 मार्च	मृग	17	18	22	39	6	06	12	23
31/1 अप्रै.	आर्द्रा	18	44	0	55	7	07	13	18
1/2 अप्रै.	पुर्न	19	29	1	28	7	28	13	33
2/3 अप्रै.	पुष्य	19	28	1	16	7	05	12	53
3/4 अप्रै.	आश्ले.	18	41	0	18	5	54	11	31
4/5 अप्रै.	मघा	17	08	22	35	4	03	9	30
5/6 अप्रै.	पू.फा.	14	57	20	17	1	36	6	56
6/7 मार्च	उ.फा.	12	16	17	32	22	45	4	00
7/8 अप्रै.	हस्त	9	15	14	28	19	41	0	54
8 अप्रै.	चित्रा	6	07	11	21	16	34	21	49
9 अप्रै.	स्वा.	3	03	8	21	13	39	18	57
10 अप्रै.	विशा.	0	15	5	40	11	05	16	27
10/11 अप्रै.	अनु.	21	55	3	29	9	04	14	38
11/12 अप्रै.	ज्ये.	20	12	1	57	7	43	13	28
12/13 अप्रै.	मूल	19	13	1	10	7	08	13	05
13/14 अप्रै.	पू.षा.	19	02	1	12	7	21	13	31
14/15 अप्रै.	उ.षा.	19	41	1	58	8	22	14	43
15/16 अप्रै.	श्रवण	21	04	3	34	10	05	16	36
16/17 अप्रै.	धनि.	23	06	5	43	12	18	18	59
18 अप्रै.	शत.	1	36	8	18	15	01	21	43
19/20 अप्रै.	पू.भा.	4	25	11	09	17	54	0	38
20/21 अप्रै.	उ.भा.	7	23	14	08	20	53	3	38
21/22 अप्रै.	रेवती	10	23	17	07	23	50	6	34
22/23 अप्रै.	अश्वि.	13	18	20	00	2	41	9	23

चन्द्र नक्षत्र चरण ↘		1		2		3		4	
अप्रै. 2020	नक्षत्र	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.
23/24 अप्रै.	भरणी	16	05	22	43	5	22	12	00
24/25 अप्रै.	कृति.	18	39	1	15	7	48	14	23
25/26 अप्रै.	रोहि.	20	58	3	27	9	57	16	26
26/27 अप्रै.	मृग.	22	56	5	19	11	46	18	06
28 अप्रै.	आर्द्रा	0	29	6	45	13	01	19	17
29 अप्रै.	पुर्न	1	33	7	40	13	48	19	58
30 अप्रै.	पुष्य	2	02	8	00	13	57	19	55
1 मई	आश्ले.	1	53	7	41	13	29	19	17
2 मई	मघा	1	05	6	44	12	22	18	01
2/3 मई	पू.फा.	23	40	5	11	10	41	16	12
3/4 मई	उ.फा.	21	43	3	09	8	31	13	55
4/5 मई	हस्त	19	19	0	39	5	59	11	19
5/6 मई	चित्रा	16	39	21	57	3	15	8	33
6/7 मई	स्वा.	13	51	19	10	0	29	5	48
7/8 मई	विशा.	11	07	16	30	21	52	3	13
8/9 मई	अनु.	8	38	14	07	19	35	1	04
9 मई	ज्ये.	6	33	12	10	17	48	23	25
10 मई	मूल	5	02	10	50	16	37	22	25
11 मई	पू.षा.	4	13	10	12	16	12	22	11
12 मई	उ.षा.	4	10	10	17	16	32	22	43
13/14 मई	श्रवण	4	54	11	16	17	39	0	01
14/15 मई	धनि.	6	23	12	55	19	22	1	58
15/16 मई	शत.	8	30	15	09	21	47	4	26
16/17 मई	पू.भा.	11	05	17	48	0	32	7	14
17/18 मई	उ.भा.	13	59	20	44	3	28	10	13
18/19 मई	रेवती	16	58	23	42	6	25	13	09
19/20 मई	अश्वि.	19	53	2	34	9	15	15	56
20/21 मई	भरणी	22	37	5	14	11	50	18	27
22 मई	कृति.	1	04	7	37	14	07	20	38

चन्द्र नक्षत्र चरण ↘		1		2		3		4	
मई 2020	नक्षत्र	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.
23 मई	रोहि.	3	09	9	35	16	00	22	26
24 मई	मृग.	4	52	11	11	17	34	23	50
25/26 मई	आर्द्रा	6	10	12	23	18	36	0	49
26/27 मई	पुर्न	7	02	13	08	19	15	1	24
27/28 मई	पुष्य	7	28	13	27	19	27	1	27
28/29 मई	आश्ले.	7	27	13	20	19	12	1	05
29/30 मई	मघा	6	58	12	44	18	31	0	17
30 मई	पू.फा.	6	03	11	43	17	23	23	03
31 मई	उ.फा.	4	43	10	19	15	52	21	26
1 जून	हस्त	3	01	8	31	14	02	19	32
2 जून	चित्रा	1	03	6	31	12	00	17	27
2/3 जून	स्वाती	22	55	4	22	9	49	15	16
3/4 जून	विशा.	20	43	2	11	7	40	13	07
4/5 जून	अनु.	18	37	0	09	5	40	11	12
5/6 जून	ज्ये.	16	44	22	21	3	58	9	35
6/7 जून	मूल	15	12	20	57	2	41	8	26
7/8 जून	पू.षा.	14	11	20	04	1	58	7	51
8/9 जून	उ.षा.	13	45	19	45	1	53	7	56
9/10 जून	श्रवण	14	00	20	14	2	29	8	43
10/11 जून	धनि.	14	58	21	21	3	42	10	11
11/12 जून	शत.	16	35	23	08	5	42	12	15
12/13 जून	पू.भा.	18	49	1	29	8	08	14	46
13/14 जून	उ.भा.	21	28	4	11	10	55	17	38
15 जून	रेवती	0	22	7	06	13	50	20	34
16 जून	अश्वि.	3	17	9	59	16	41	23	22
17/18 जून	भरणी	6	04	12	41	19	17	1	54
18/19 जून	कृति.	8	31	15	03	21	31	4	01
19/20 जून	रोहि.	10	31	16	54	23	16	5	39
20/21 जून	मृग.	12	02	18	18	0	35	6	46

चन्द्रमा का नक्षत्र–चरणों में प्रवेश काल (भा. स्टैं. टा.)

चन्द्र नक्षत्र चरण ↘		1		2		3		4	
जून 2020	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
21/22 जून	आर्द्रा	13	01	19	08	1	16	7	23
22/23 जून	पुर्न	13	31	19	31	1	32	7	35
23/24 जून	पुष्य	13	33	19	27	1	22	7	16
24/25 जून	आश्ले.	13	10	18	59	0	49	6	38
25/26 जून	मघा	12	27	18	12	23	56	5	41
26/27 जून	पू.फा.	11	26	17	07	22	49	4	30
27/28 जून	उ.फा.	10	11	15	51	21	28	3	07
28/29 जून	हस्त	8	46	14	23	20	00	1	37
29/30 जून	चित्रा	7	14	12	50	18	27	0	03
30 जून	स्वाती	5	39	11	15	16	52	22	28
1 जुला.	विशा.	4	04	9	41	15	19	20	56
2 जुला.	अनु.	2	34	8	14	13	54	19	34
3 जुला.	ज्ये.	1	14	6	57	12	41	18	24
4 जुला.	मूल	0	08	5	56	11	45	17	33
4/5 जुला.	पू.षा.	23	22	5	17	11	12	17	07
5/6 जुला.	उ.षा.	23	02	5	01	11	05	17	09
6/7 जुला.	श्रवण	23	12	5	23	11	34	17	45
7/8 जुला.	धनि.	23	56	6	16	12	31	18	54
9 जुला.	शत.	1	15	7	44	14	12	20	41
10 जुला.	पू.भा.	3	09	9	45	16	20	22	55
11/12जुला.	उ.भा.	5	33	12	14	18	56	1	37
12/13जुला.	रेवती	8	18	15	02	21	46	4	30
13/14जुला.	अश्वि.	11	14	17	57	0	41	7	24
14/15जुला.	भरणी.	14	07	20	46	3	25	10	04
15/16जुला.	कृति.	16	43	23	19	5	48	12	20
16/17जुला.	रोहि.	18	53	1	17	7	40	14	04
17/18जुला.	मृग.	20	28	2	43	9	01	15	11
18/19जुला.	आर्द्रा	21	23	3	27	9	32	15	36
19/20जुला.	पुर्न	21	40	3	36	9	32	15	29
20/21जुला.	पुष्य	21	21	3	08	8	56	14	43
21/22जुला.	आश्ले.	20	30	2	11	7	52	13	34
22/23जुला.	मघा	19	16	0	53	6	30	12	07
23/24जुला.	पू.फा.	17	44	23	19	4	53	10	28
24/25जुला.	उ.फा.	16	03	21	37	3	11	8	45
25/26जुला.	हस्त	14	19	19	53	1	28	7	02
26/27जुला.	चित्रा	12	37	18	14	23	49	5	27

चन्द्र नक्षत्र चरण ↘		1		2		3		4	
जुला. 2020	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
27/28जुला.	स्वा.	11	04	16	43	22	23	4	02
28/29जुला.	विशा.	9	42	15	25	21	07	2	49
29/30जुला.	अनु.	8	33	14	20	20	07	1	54
30/31जुला.	ज्ये.	7	41	13	32	19	23	1	14
31/1 अग.	मूल	7	05	13	01	18	56	0	52
1/2 अग.	पू.षा.	6	48	12	49	18	50	0	51
2/3 अग.	उ.षा.	6	52	12	57	19	05	1	12
3/4 अग.	श्रवण	7	19	13	32	19	45	1	58
4/5 अग.	धनि.	8	11	14	30	20	47	3	10
5/6 अग.	शत.	9	30	15	57	22	24	4	51
6/7 अग.	पू.भा.	11	18	17	52	0	24	6	57
7/8 अग.	उ.भा.	13	33	20	13	2	52	9	32
8/9 अग.	रेवती	16	12	22	56	5	39	12	23
9/10 अग.	अश्वि.	19	06	1	51	8	36	15	21
10/11 अग.	भरणी	22	06	4	49	11	31	18	14
12 अग.	कृति.	0	57	7	37	14	13	20	49
13 अग.	रोहि.	3	26	9	55	16	24	22	53
14/15 अग.	मृग.	5	22	11	42	18	05	0	20
15/16 अग.	आर्द्रा	6	36	12	43	18	49	0	56
16/17 अग.	पुर्न	7	03	12	59	18	56	0	53
17 अग.	पुष्य	6	44	12	29	18	13	23	58
18 अग.	आश्ले.	5	43	11	19	16	56	22	32
19 अग.	मघा	4	08	9	38	15	07	20	37
20 अग.	पू.फा.	2	07	7	23	12	59	18	25
20/21 अग.	उ.फा.	23	51	5	15	10	40	16	04
21/22 अग.	हस्त	21	29	2	54	8	20	13	45
22/23 अग.	चित्रा	19	11	0	40	6	07	11	37
23/24 अग.	स्वाती	17	06	22	39	4	13	9	46
24/25 अग.	विशा	15	20	21	00	2	39	8	17
25/26 अग.	अनु.	13	59	19	45	1	32	7	18
26/27 अग.	ज्ये.	13	04	18	57	0	51	6	44
27/28 अग.	मूल	12	37	18	37	0	37	6	37
28/29 अग.	पू.षा.	12	37	18	43	0	50	6	56
29/30 अग.	उ.षा.	13	03	19	13	1	29	7	40
30/31 अग.	श्रवण	13	52	20	10	2	28	8	46
31/1 सितं.	धनि.	15	04	21	26	3	48	10	12

चन्द्र नक्षत्र चरण ↘		1		2		3		4	
सितं. 2020	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
1/2 सितं.	शत.	16	38	23	07	5	36	12	05
2/3 सितं.	पू.भा.	18	34	1	08	7	42	14	15
3/4 सितं.	उ.भा.	20	51	3	30	10	10	16	49
4/5 सितं.	रेवती	23	28	6	11	12	55	19	38
6 सितं.	अश्वि.	2	21	9	07	15	52	22	38
7/8 सितं.	भरणी	5	24	12	09	18	55	1	40
8/9 सितं.	कृति.	8	26	15	10	21	52	4	34
9/10 सितं.	रोहि.	11	15	17	51	0	27	7	03
10/11सितं.	मृग.	13	39	20	09	2	37	9	01
11/12सितं.	आर्द्रा	15	25	21	40	3	55	10	10
12/13सितं.	पुर्न.	16	25	22	27	4	32	10	36
13/14सितं.	पुष्य	16	34	22	23	4	13	10	02
14/15सितं.	आश्ले.	15	52	21	30	3	09	8	47
15/16सितं.	मघा	14	25	19	54	1	23	6	52
16/17सितं.	पू.फा.	12	21	17	43	23	04	4	26
17/18सितं.	उ.फा.	9	48	15	07	20	24	1	42
18 सितं.	हस्त	7	00	12	17	17	33	22	50
19 सितं.	चित्रा	4	07	9	25	14	42	20	02
20 सितं.	स्वाती	1	21	6	44	12	06	17	29
20/21सितं.	विशा.	22	52	4	21	9	50	15	17
21/22सितं.	अनु.	20	49	2	26	8	04	13	41
22/23सितं.	ज्ये.	19	19	1	05	6	52	12	38
23/24सितं.	मूल	18	25	0	21	6	18	12	14
24/25सितं.	पू.षा.	18	10	0	15	6	21	12	26
25/26सितं.	उ.षा.	18	31	0	42	6	56	13	12
26/27सितं.	श्रवण	19	26	1	47	8	08	14	29
27/28सितं.	धनि.	20	50	3	16	9	41	16	10
28/29सितं.	शत.	22	38	5	10	11	43	18	15
30 सितं.	पू.भा.	0	48	7	25	14	01	20	37
1 अक्तू.	उ.भा.	3	15	9	55	16	36	23	16
2/3 अक्तू.	रेवती	5	57	12	40	19	24	2	07
3/4 अक्तू.	अश्वि.	8	51	15	36	22	22	5	07
4/5 अक्तू.	भरणी	11	52	18	38	1	24	8	10
5/6 अक्तू.	कृति.	14	56	21	42	4	25	11	09
6/7 अक्तू.	रोहि.	17	54	0	34	7	15	13	55
7/8 अक्तू.	मृग.	20	36	3	10	9	47	16	17

चन्द्रमा का नक्षत्र-चरणों में प्रवेश काल (भा. स्टैं. टा.)

चन्द्र नक्षत्र चरण ↘		1		2		3		4	
अक्तू. 2020	नक्षत्र	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.
8/9 अक्तू.	आर्द्रा	22	50	5	14	11	39	18	03
10 अक्तू.	पुर्न.	0	27	6	41	12	54	19	10
11 अक्तू.	पुष्य	1	18	7	18	13	19	19	19
12 अक्तू.	आश्ले.	1	19	7	07	12	54	18	42
13 अक्तू.	मघा	0	30	6	06	11	42	17	18
13/14अक्तू.	पू.फा.	22	54	4	21	9	47	15	14
14/15अक्तू.	उ.फा.	20	41	2	02	7	20	12	39
15/16अक्तू.	हस्त	17	58	23	13	4	28	9	43
16/17अक्तू.	चित्रा	14	58	20	11	1	25	6	38
17/18अक्तू.	स्वाती	11	52	17	07	22	21	3	36
18/19अक्तू.	विशा.	8	51	14	10	19	30	0	47
19 अक्तू.	अनु.	6	08	11	34	17	01	22	27
20 अक्तू.	ज्ये.	3	53	9	28	15	02	20	37
21 अक्तू.	मूल	2	12	7	57	13	43	19	28
22 अक्तू.	पू.षा.	1	13	7	09	13	06	19	02
23 अक्तू.	उ.षा.	0	59	7	02	13	12	19	20
24 अक्तू.	श्रवण	1	28	7	45	14	03	20	20
25 अक्तू.	धनि.	2	38	9	02	15	26	21	55
26/27अक्तू.	शत.	4	23	10	56	17	30	0	03
27/28अक्तू.	पू.भा.	6	37	13	15	19	54	2	31
28/29अक्तू.	उ.भा.	9	11	15	53	22	36	5	18
29/30अक्तू.	रेवती	12	00	18	44	1	29	8	13
30/31अक्तू.	अश्वि.	14	57	21	42	4	28	11	13
31/1 नवं.	भरणी	17	58	0	43	7	27	14	12
1/2 नवं.	कृति	20	57	3	41	10	24	17	07
2/3 नवं.	रोहि.	23	50	6	30	13	10	19	50
4 नवं.	मृग.	2	30	9	05	15	43	22	16
5/6 नवं.	आर्द्रा	4	51	11	19	17	48	0	16
6/7 नवं.	पुर्न	6	45	13	05	19	25	1	48
7/8 नवं.	पुष्य	8	05	14	15	20	25	2	35
8/9 नवं.	आश्ले.	8	45	14	44	20	44	2	43
9/10 नवं.	मघा	8	42	14	30	20	19	2	07
10/11 नवं.	पू.फा.	7	56	13	34	19	12	0	50
11 नवं.	उ.फा.	6	28	12	07	17	28	22	57
12 नवं.	हस्त	4	25	9	47	15	10	20	32
13 नवं.	चित्रा	1	55	7	13	12	32	17	49

चन्द्र नक्षत्र चरण ↘		1		2		3		4	
नवं. 2020	नक्षत्र	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.
13/14 नवं.	स्वाती	23	06	4	22	9	37	14	53
14/15 नवं.	विशा.	20	09	1	26	6	42	11	58
15/16 नवं.	अनु.	17	16	22	36	3	57	9	17
16/17 नवं.	ज्ये.	14	37	20	03	1	30	6	56
17/18 नवं.	मूल	12	22	17	56	23	31	5	05
18/19 नवं.	पू.षा.	10	40	16	24	22	09	3	53
19/20 नवं.	उ.षा.	9	38	15	30	21	28	3	26
20/21 नवं.	श्रवण	9	22	15	30	21	37	3	45
21/22 नवं.	धनि.	9	53	16	10	22	26	4	49
22/23 नवं.	शत.	11	09	17	38	0	07	6	36
23/24 नवं.	पू.भा.	13	05	19	42	2	18	8	53
24/25 नवं.	उ.भा.	15	32	20	14	4	56	11	38
25/26 नवं.	रेवती	18	20	1	05	7	50	14	35
26/27 नवं.	अश्वि.	21	20	4	06	10	51	17	37
28 नवं.	भरणी	0	23	7	07	13	51	20	35
29 नवं.	कृति.	3	19	10	01	16	41	23	22
30/1 दिसं.	रोहि.	6	03	12	40	19	17	1	54
1/2 दिसं.	मृग.	8	31	15	03	21	37	4	06
2/3 दिसं.	आर्द्रा	10	38	17	04	23	29	5	55
3/4 दिसं.	पुर्न	12	21	18	40	1	00	7	22
4/5 दिसं.	पुष्य	13	39	19	51	2	04	8	16
5/6 दिसं.	आश्ले.	14	28	20	32	2	37	8	41
6/7 दिसं.	मघा	14	46	20	43	2	39	8	36
7/8 दिसं.	पू.फा.	14	33	20	22	2	10	7	59
8/9 दिसं.	उ.फा.	13	48	19	31	1	12	6	52
9/10 दिसं.	हस्त	12	33	18	07	23	42	5	17
10/11दिसं.	चित्रा	10	51	16	20	21	52	3	19
11/12दिसं.	स्वाती	8	48	14	13	19	39	1	04
12 दिसं.	विशा.	6	30	11	54	17	17	22	41
13 दिसं.	अनु.	4	05	9	29	14	52	20	16
14 दिसं.	ज्ये.	1	40	7	06	12	33	17	59
14/15दिसं.	मूल	23	26	4	57	10	29	16	00
15/16दिसं.	पू.षा.	21	31	3	09	8	48	14	26
16/17दिसं.	उ.षा.	20	02	1	48	7	38	13	26
17/18दिसं.	श्रवण	19	13	1	11	7	08	13	06
18/19दिसं.	धनि.	19	04	1	10	7	16	13	31

चन्द्र नक्षत्र चरण ↘		1		2		3		4	
दिसं. 2020	नक्षत्र	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.
19/20दिसं.	शत.	19	40	2	00	8	20	14	41
20/21दिसं.	पू.भा.	21	01	3	31	10	00	16	29
21/22दिसं.	उ.भा.	23	03	5	41	12	20	18	58
23 दिसं.	रेवती	1	37	8	21	15	05	21	49
24/25दिसं.	अश्वि.	4	33	11	19	18	04	0	50
25/26दिसं.	भरणी	7	36	14	21	21	05	3	50
26/27दिसं.	कृति.	10	35	17	18	23	57	6	38
27/28दिसं.	रोहि.	13	19	19	54	2	30	9	05
28/29दिसं.	मृग.	15	40	22	08	4	39	11	04
29/30दिसं.	आर्द्रा	17	32	23	53	6	13	12	34
30/31दिसं.	पुर्न	18	55	1	08	7	23	13	38
31/1जन.21	पुष्य	19	49	1	55	8	02	14	09
1/2 जन.	आश्ले.	20	15	2	15	8	16	14	16
2/3 जन.	मघा	20	17	2	12	8	07	14	02
3/4 जन.	पू.फा.	19	57	1	47	7	37	13	27
4/5 जन.	उ.फा.	19	17	1	04	6	49	12	35
5/6 जन.	हस्त	18	21	0	03	5	45	11	27
6/7 जन.	चित्रा	17	09	22	48	4	29	10	07
7/8 जन.	स्वाती	15	46	21	22	2	59	8	35
8/9 जन.	विशा.	14	12	19	47	1	22	6	58
9/10 जन.	अनु.	12	32	18	06	23	41	5	15
10/11 जन.	ज्ये.	10	50	16	25	21	59	3	34
11/12 जन.	मूल	9	09	14	46	20	24	2	01
12/13 जन.	पू.षा.	7	38	13	19	19	00	0	41
13 जन.	उ.षा.	6	22	12	06	17	55	23	41
14 जन.	श्रवण	5	28	11	22	17	16	23	10
15 जन.	धनि.	5	04	11	05	17	06	23	12
16 जन.	शत.	5	17	11	30	17	43	23	56
17/18 जन.	पू.भा.	6	09	12	32	18	55	1	16
18/19 जन.	उ.भा.	7	43	14	16	20	49	3	22
19/20 जन.	रेवती	9	55	16	35	23	16	5	56
20/21 जन.	अश्वि.	12	36	19	21	2	06	8	51
21/22 जन.	भरणी	15	36	22	22	5	08	11	54
22/23 जन.	कृति.	18	40	1	25	8	08	14	50
23/24 जन.	रोहि.	21	33	4	10	10	47	17	24
25 जन.	मृग.	0	01	6	32	13	03	19	28

चन्द्रमा का नक्षत्र-चरणों में प्रवेश काल (भा. स्टैं. टा.)

चन्द्र नक्षत्र चरण ↘		1		2		3		4	
जन. 2021	नक्षत्र	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.
26 जन.	आर्द्रा	1	56	8	15	14	34	20	53
27 जन.	पुर्न	3	12	9	21	15	31	21	43
28 जन.	पुष्य	3	49	9	49	15	50	21	50
29 जन.	आश्ले.	3	51	9	43	15	36	21	28
30 जन.	मघा	3	21	9	08	14	54	20	41
31 जन.	पू.फा.	2	28	8	10	13	53	19	35
1 फर.	उ.फा.	1	18	6	58	12	37	18	17
1/2 फर.	हस्त	23	57	5	36	11	14	16	53
2/3 फर.	चित्रा	22	32	4	11	9	50	15	28
3/4 फर.	स्वाती	21	07	2	46	8	26	14	05
4/5 फर.	विशा.	19	45	1	26	7	06	12	47
5/6 फर.	अनु.	18	28	0	10	5	53	11	35
6/7 फर.	ज्ये.	17	18	23	02	4	47	10	31
7/8 फर.	मूल	16	15	22	01	3	48	9	34
8/9 फर.	पू.षा.	15	21	21	10	3	00	8	49
9/10 फर.	उ.षा.	14	39	20	30	2	25	8	19
10/11 फर.	श्रवण	14	12	20	10	2	09	8	07
11/12 फर.	धनि.	14	05	20	08	2	11	8	18
12/13 फर.	शत.	14	23	20	35	2	47	8	59
13/14 फर.	पू.भा.	15	11	21	31	3	51	10	09
14/15 फर.	उ.भा.	16	33	23	02	5	31	12	00
15/16 फर.	रेवती	18	29	1	06	7	43	14	20
16/17 फर.	अश्वि.	20	57	3	40	10	23	17	06
17/18 फर.	भरणी	23	49	6	35	13	22	20	08
19 फर.	कृति.	2	54	9	41	16	25	23	11
20/21 फर.	रोहि.	5	57	12	38	19	20	2	01
21/22 फर.	मृग.	8	43	15	18	21	55	4	26
22/23 फर.	आर्द्रा	10	58	17	21	23	45	6	08
23/24 फर.	पुर्न	12	31	18	42	0	56	7	10
24/25 फर.	पुष्य	13	17	19	17	1	17	7	17
25/26 फर.	आश्ले.	13	17	19	06	0	56	6	45
26/27 फर.	मघा	12	35	18	16	23	56	5	37
27/28 फर.	पू.फा.	11	18	16	52	22	27	4	01
28/1 मार्च	उ.फा.	9	36	15	07	20	37	26	07
1/2 मार्च	हस्त	7	37	13	06	18	34	0	03
2 मार्च	चित्रा	5	32	11	01	16	30	22	00

चन्द्र नक्षत्र चरण ↘		1		2		3		4	
मार्च 2021	नक्षत्र	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.
3 मार्च	स्वाती	3	29	9	01	14	32	20	04
4 मार्च	विशा.	1	36	7	11	12	46	18	20
4/5 मार्च	अनु.	23	57	5	37	11	18	16	58
5/6 मार्च	ज्ये.	22	38	4	23	10	08	15	53
6/7 मार्च	मूल	21	38	3	28	9	19	15	09
7/8 मार्च	पू.षा.	20	59	2	54	8	50	14	45
8/9 मार्च	उ.षा.	20	40	2	39	8	41	14	41
9/10 मार्च	श्रवण	20	41	2	46	8	52	14	57
10/11 मार्च	धनि.	21	03	3	13	9	21	15	34
11/12 मार्च	शत.	21	45	4	01	10	18	16	34
12/13 मार्च	पू.भा.	22	51	5	14	11	36	17	57
14 मार्च	उ.भा.	0	22	6	51	13	21	19	50
15 मार्च	रेवती	2	20	8	56	15	32	22	08
16/17 मार्च	अश्वि.	4	44	11	26	18	07	0	49
17/18 मार्च	भरणी	7	31	14	17	21	03	3	49
18/19 मार्च	कृति.	10	35	17	22	0	10	6	57
19/20 मार्च	रोहि.	13	44	20	29	3	15	10	00
20/21 मार्च	मृग.	16	46	23	27	6	09	12	46
21/22 मार्च	आर्द्रा	19	25	1	56	8	26	14	57
22/23 मार्च	पुर्न	21	28	3	47	10	08	16	30

चन्द्र नक्षत्र चरण ↘		1		2		3		4	
मार्च 2021	नक्षत्र	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.
23/24 मार्च	पुष्य	22	45	4	52	10	58	17	05
24/25 मार्च	आश्ले.	23	12	5	06	11	01	16	55
25/26 मार्च	मघा	22	49	4	31	10	14	15	56
26/27 मार्च	पू.फा.	21	39	3	12	8	46	14	19
27/28 मार्च	उ.फा.	19	52	1	20	6	44	12	10
28/29 मार्च	हस्त	17	36	22	57	4	19	9	40
29/30 मार्च	चित्रा	15	02	20	22	1	42	7	02
30/31 मार्च	स्वाती	12	22	17	43	23	03	4	24
31/1 अप्रै.	विशा.	9	45	15	09	20	32	1	56
1 अप्रै.	अनु.	7	22	12	51	18	21	23	50
2 अप्रै.	ज्ये.	5	19	10	55	16	32	22	08
3 अप्रै.	मूल	3	44	9	28	15	11	20	55
4 अप्रै.	पू.षा.	2	39	8	31	14	22	20	14
5 अप्रै.	उ.षा.	2	06	8	02	14	03	20	04
6 अप्रै.	श्रवण	2	05	8	12	14	20	20	27
7 अप्रै.	धनि.	2	35	8	47	15	00	21	17
8 अप्रै.	शत.	3	33	9	54	16	15	22	36
9/10 अप्रै.	पू.भा.	4	57	11	24	17	51	0	17
10/11 अप्रै.	उ.भा.	6	46	13	19	19	52	2	25
11/12 अप्रै.	रेवती	8	58	15	36	22	13	4	51

काँवड़ जलाभिषेक मुहूर्त्त–2020 ई.

पक्ष तिथि,	वार	नक्षत्र	तारीख
श्राव. कृ. ५,	चंद्र	पू.भा.	10 जुला.
श्राव. कृ. ११,	गुरु	कृ./रो.	16 जुला.
श्राव. कृ. १४,	रवि	आर्द्रा	19 जुला.
श्राव अमा.,	सोम	पुन.	20 जुला.
श्राव. शु. १,	मंग.	पुष्य	21 जुला.
श्रा. शु. ५,	शनि	उ./ह.	25 जुला.
श्रा. शु. १३,	शनि	पू.षा.	1 अगस्त (प्रात: 10:35 बाद)
श्रा. पूर्णिमा,	सोम	उ./श्र.	3 अगस्त

विशेष—आषाढ़ पूर्णिमा से लेकर सम्पूर्ण श्रावण मास पर्यन्त भगवान् श्रीशिव के प्रतिष्ठित मन्दिरों, ज्योतिर्लिङ्गों तथा क्षेत्रीय मन्दिरों में शिवभक्त कांवड़ियों द्वारा श्रद्धापूर्वक श्रीगङ्गाजल अभिषेक किया जाता है। यद्यपि उपरोक्त मुहूर्तों में से कांवड़ जलाभिषेक हेतु जल ग्रहण करने एवं जलांजली अभिषेक हेतु कोई भी मुहूर्त्त ग्रहण कर सकते हैं। शिवलिङ्ग पर जलाभिषेक हेतु प्रात:काल सूर्योदय पश्चात् 2$^{घं.}$–45$^{मिं.}$ तक (19 जुलाई) का समय श्रेष्ठ रहेगा। फिर भी कुछ विद्वान मुख्य मुहूर्त्त वाले दिन (श्रावण–शिवरात्रि–19 जुलाई) प्रदोषकाल में तथा चार प्रहर पूजनोपरान्त सम्पूर्ण रात्रि जलाभिषेक भी करते हैं। आर्द्रा नक्षत्र एवं मिथुन लग्न विशेष रूप से शिवपूजन में शुभ माना गया है।

शुभ समय—(*i*) प्रात: 5:40 से 8:25 तक (प्रात:काल) (प्रात: 7:52 तक मिथुन लग्न विशेष शुभ)
(*ii*) सायं 19:28 से 21:30 तक (प्रदोषकाल) (*iii*) सायं 21:30 से 23:33 तक (निशीथकाल)
(*iv*) रात्रि 23:33 से 24:10 तक (महानिशीथकाल एवं चतुर्दशी में)

प्रातः साढ़े पाँच (5/30 घं. मिं.) से अन्य समय के लिए ग्रह स्पष्ट करना

यदि आपको प्रातः साढ़े पाँच बजे के ग्रहस्पष्ट के अतिरिक्त किसी अन्य समय के ग्रह स्पष्ट करने हों, तो नीचे लिखी तालिका (Table) का प्रयोग करके अभीष्ट समय के ग्रहस्पष्ट प्राप्त कर सकते हैं-मान लीजिए, आपको **5 अप्रैल, 2020 ई.** की दोपहर एक (1) बजे का सूर्य स्पष्ट करना है। आगामी पृष्ठों में **5 अप्रैल** के सामने सूर्य स्पष्ट (11-21°-32′-12″) राशि-अंशादि लिखे गए हैं, जो कि प्रातः साढ़े पाँच बजे के हैं। हमें दोपहर 1 अर्थात् 13/00 बजे के सूर्य स्पष्ट चाहिए। तेरह (13) से साढ़े पाँच का अन्तर 7 घंटे 30 मिंट हुआ। अब 7 घण्टे 30 मिंट की गति को 5 अप्रैल में जोड़ दें, तो हमें दोपहर 1 बजे का स्पष्ट मिल जाएगा। (6) अप्रै. में से 5 अप्रै. का सूर्य स्पष्ट घटा देने से हमें सूर्य की दैनिक गति (59′/03″) प्राप्त हुई। इस दै. गति द्वारा नीचे लिखी तालिका में 7 घंटे की गति (17-12) कला तथा 30 मिनट की गति (1.14) कला प्राप्त हुई। जमा करने पर साढ़े सात घण्टे की गति (18′.26) हुई, इसको **5 अप्रैल प्रातः 5/30 के सूर्यस्पष्ट** में जमा कर देने पर हमें 5 अप्रैल की दुपै. एक बजे का सूर्यस्पष्ट (11-21°-50′-38″) प्राप्त हो जाएगा॥ ग्रहस्पष्ट करने की अधिक विस्तृत जानकारी के लिए हमारी पुस्तक ज्योतिष तत्त्व (गणित खण्ड) का अध्ययन करें॥

ग्रहों की दैनिक गति के अनुसार प्रति घण्टा मिनटादि की तालिका

दै. गति (24 घं.)	गति (30 मिंट)	गति 1 घण्टे	गति 2 घण्टे	गति (3 घं.)	गति (4 घं.)	गति (5 घं.)	गति (6 घं.)	गति (7 घं.)	गति (8 घं.)	गति (9 घं.)
कला	क.वि.	क.वि.	क.वि.	क.वि.	क.वि.	क.वि.	क.वि.	क.वि.	क.वि.	क.वि.
3'	0.04	0.07	0.15	0.22	0.30	0.37	0.45	0.52	1.00	1.07
5'	0.06	0.12	0.25	0.37	0.50	1.02	1.11	1.27	1.40	1.52
7'	0.09	0.17	0.35	0.52	1.10	1.27	1.45	2.02	2.20	2.37
9'	0.11	0.22	0.45	1.07	1.30	1.52	2.15	2.37	3.00	3.22
11'	0.14	0.27	0.55	1.22	1.50	2.17	2.45	3.12	3.40	4.07
13'	0.16	0.32	1.05	1.37	2.10	2.42	3.15	3.47	4.20	4.52
15'	0.19	0.37	1.15	1.52	2.30	3.07	3.45	4.22	5.00	5.37
17'	0.21	0.42	1.25	2.07	2.50	3.32	4.15	4.57	5.40	6.22
19'	0.24	0.47	1.35	2.22	3.10	3.57	4.45	5.32	6.20	7.07
21'	0.26	0.52	1.45	2.37	3.30	4.22	5.15	6.07	7.00	7.52
23'	0.29	0.57	1.55	2.52	3.50	4.47	5.45	6.42	7.40	8.37
25'	0.31	1.02	2.05	3.07	4.10	5.12	6.15	7.17	8.20	9.22
27'	0.34	1.07	2.15	3.22	4.30	5.37	6.45	7.52	9.00	10.07
29'	0.36	1.12	2.25	3.37	4.50	6.02	7.15	8.27	9.40	10.52
31'	0.39	1.17	2.35	3.52	5.10	6.27	7.45	9.02	10.20	11.37
33'	0.41	1.22	2.45	4.07	5.30	6.52	8.15	9.37	11.00	12.22
35'	0.44	1.27	2.55	4.22	5.50	7.17	8.45	10.12	11.40	13.07
37'	0.46	1.32	3.05	4.37	6.10	7.42	9.15	10.47	12.20	13.52
39'	0.49	1.37	3.15	4.52	6.30	8.07	9.45	11.22	13.00	14.37
41'	0.51	1.42	3.25	5.07	6.50	8.32	10.15	11.57	13.40	15.22
43'	0.54	1.47	3.35	5.22	7.10	8.57	10.45	12.32	14.20	16.07
45'	0.56	1.52	3.45	5.37	7.30	9.22	11.15	13.07	15.00	16.52
47'	0.59	1.57	3.55	5.52	7.50	9.47	11.45	13.42	15.40	17.37
49'	1.01	2.02	4.05	6.07	8.10	10.12	12.15	14.17	16.20	18.22
51'	1.04	2.07	4.15	6.22	8.30	10.37	12.45	14.52	17.00	19.07
53'	1.06	2.12	4.25	6.37	8.50	11.02	13.15	15.27	17.40	19.52
55'	1.09	2.17	4.35	6.52	9.10	11.27	13.45	16.02	18.20	20.37
57'	1.11	2.22	4.45	7.07	9.30	11.52	14.15	16.37	19.00	21.22
58'	1.12	2.25	4.50	7.15	9.40	12.05	14.30	16.55	19.20	21.45
59'	1.14	2.27	4.55	7.27	9.50	12.17	14.45	17.12	19.40	22.07
60'	1.15	2.30	5.00	7.30	10.00	12.30	15.00	17.30	20.00	22.30

दै.गति (24 घं.)	गति (30 मिं.)	गति (1 घं.)	गति (2 घं.)	गति (3 घं.)	गति (4 घं.)	गति (5 घं.)	गति (6 घं.)	गति (7 घं.)	गति 8 घण्टे	गति 9 घण्टे
कला	क.वि.	क.वि.	क.वि.	क.वि.	क.वि.	क.वि.	क.वि.	क.वि.	क.वि.	क.वि.
61'	1.16	2.32	5.05	7.37	10.10	12.42	15.15	17.47	20.20	22.52
63'	1.19	2.37	5.15	7.52	10.30	13.07	15.45	18.22	21.00	23.37
65'	1.21	2.42	5.25	8.07	10.50	13.32	16.15	18.57	21.40	24.22
67'	1.24	2.47	5.35	8.22	11.10	13.57	16.45	19.25	22.20	25.07
69'	1.26	2.52	5.45	8.37	11.30	14.22	17.15	20.07	23.00	25.52
71'	1.29	2.57	5.55	8.52	11.50	14.57	17.45	20.42	23.40	26.37
73'	1.31	3.02	6.05	9.07	12.10	15.12	18.15	21.17	24.20	27.22
75'	1.34	3.07	6.15	9.22	12.30	15.37	18.45	21.52	25.00	28.07
77'	1.36	3.12	6.25	9.37	12.50	16.02	19.15	22.27	25.40	28.52
79'	1.39	3.17	6.35	9.52	13.10	16.27	19.45	23.02	26.20	29.37
81'	1.41	3.22	6.45	10.07	13.30	16.52	20.15	23.37	27.00	30.22
83'	1.44	3.27	6.55	10.22	13.50	17.17	20.45	24.12	27.40	31.07
85'	1.46	3.32	7.05	10.37	14.10	17.42	21.15	24.47	28.20	31.52
87'	1.49	3.37	7.15	10.52	14.30	18.07	21.45	25.22	29.00	32.37
89'	1.51	3.42	7.25	11.07	14.50	18.32	22.15	25.57	29.40	33.22
90'	1.52	3.45	7.30	11.15	15.00	18.45	22.30	26.15	30.00	33.45
92'	1.55	3.50	7.40	11.30	15.20	19.10	23.00	26.50	30.40	34.30
94'	1.57	3.55	7.50	11.45	15.40	19.35	23.30	27.25	31.20	35.15
96'	2.00	4.00	8.00	12.00	16.00	20.00	24.00	28.00	32.00	36.00
98'	2.02	4.05	8.10	12.15	16.20	20.25	24.30	28.35	32.40	36.45
99'	2.04	4.07	8.15	12.22	16.30	20.37	24.45	28.52	33.00	37.07
100'	2.05	4.10	8.20	12.30	16.40	20.50	25.00	29.10	33.20	37.30
102'	2.07	4.15	8.30	12.45	17.00	21.15	25.30	29.45	34.00	38.15
104'	2.10	4.20	8.40	13.00	17.20	21.30	26.00	30.20	34.40	39.00
106'	2.12	4.25	8.50	13.15	17.40	22.05	26.30	30.55	35.20	39.45
108'	2.15	4.30	9.00	13.30	18.00	22.30	27.00	31.30	36.00	40.30
110'	2.17	4.35	9.10	13.45	18.20	22.55	27.30	32.05	36.40	41.15
112'	2.20	4.40	9.20	14.00	18.40	23.20	28.00	32.40	37.20	42.00
114'	2.22	4.45	9.30	14.15	19.00	23.45	28.30	33.15	38.00	42.45
116'	2.25	4.50	9.40	14.30	19.20	24.10	29.00	33.50	38.40	43.30
118'	2.27	4.55	9.50	14.45	19.40	24.35	29.30	34.25	39.20	44.15

दैनिक निरयण ग्रह स्पष्ट (प्रातः 5 घंटे 30 मिंट बजे) (भा. स्टैं. टा.) वि. संवत् 2077 (सन् 2020–21 ई.)

नोट–अपने अभीष्टकाल के अनुसार ग्रह स्पष्ट करने के लिए गत पृष्ठ पर दी गई सारिणी देखें। (25 मार्च से 26 अप्रै. तक) (1 अप्रैल, 2020 ई० को अयनांश = 24°/08'/06''

ता.	सम्पातिक काल			सूर्य				चन्द्र				मंगल				बुध				गुरु				शुक्र				शनि				मध्यम राहु				स्पष्ट राहु				सूर्य क्रांति		चंद्र क्रांति		तारीख
मार्च	0-00 Hr. GMT			रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	अं.	क.	अं.	क.	
25	12	11	40	11	10	40	13	11	17	15	21	9	1	49	11	10	12	56	21	8	29	20	9	0	26	40	7	9	6	4	21	2	9	39	39	2	9	24	14	+1	55	−0	3	25
26	12	15	36	11	11	39	41	11	29	7	33	9	2	30	52	10	13	59	54	8	29	28	29	0	27	39	6	9	6	8	36	2	9	36	28	2	9	10	10	2	18	+4	40	26
27	12	19	33	11	12	39	6	0	11	1	26	9	3	12	34	10	15	5	53	8	29	36	42	0	28	37	37	9	6	12	45	2	9	33	17	2	8	57	59	2	42	9	14	27
28	12	23	30	11	13	38	29	0	22	58	54	9	3	54	16	10	16	14	15	8	29	44	47	0	29	35	40	9	6	16	51	2	9	30	7	2	8	48	27	3	5	13	29	28
29	12	27	26	11	14	37	50	1	5	2	33	9	4	35	58	10	17	24	49	8	29	52	43	1	0	33	14	9	6	20	51	2	9	26	56	2	8	41	58	3	28	17	15	29
30	12	31	23	11	15	37	9	1	17	15	24	9	5	17	40	10	18	37	31	9	0	0	32	1	1	30	17	9	6	24	46	2	9	23	45	2	8	38	24	3	52	20	19	30
31	12	35	19	11	16	36	25	1	29	41	33	9	5	59	22	10	19	52	15	9	0	8	11	1	2	26	49	9	6	28	36	2	9	20	34	2	8	37	6	4	15	22	31	31
अप्रै.	12	39	16	11	17	35	39	2	12	25	18	9	6	41	3	10	21	8	58	9	0	15	43	1	3	22	49	9	6	32	22	2	9	17	24	2	8	37	4	4	38	23	37	अप्रै.
2	12	43	12	11	18	34	51	2	25	31	1	9	7	22	45	10	22	27	35	9	0	23	6	1	4	18	14	9	6	36	3	2	9	14	13	2	8	37	2	5	1	23	27	2
3	12	47	9	11	19	34	0	3	9	2	35	9	8	4	27	10	23	48	1	9	0	30	21	1	5	13	4	9	6	39	39	2	9	11	2	2	8	35	45	5	24	21	56	3
4	12	51	5	11	20	33	7	3	23	2	32	9	8	46	9	10	25	10	15	9	0	37	26	1	6	7	18	9	6	43	10	2	9	7	52	2	8	32	20	5	47	19	3	4
5	12	55	2	11	21	32	12	4	7	30	54	9	9	27	51	10	26	34	13	9	0	44	23	1	7	0	54	9	6	46	36	2	9	4	41	2	8	26	20	6	10	14	55	5
6	12	58	59	11	22	31	15	4	22	24	20	9	10	9	33	10	27	59	54	9	0	51	11	1	7	53	50	9	6	49	57	2	9	1	30	2	8	17	55	6	33	9	46	6
7	13	2	55	11	23	30	15	5	7	36	27	9	10	51	17	10	29	27	15	9	0	57	51	1	8	46	6	9	6	53	12	2	8	58	19	2	8	7	50	6	55	+3	55	7
8	13	6	52	11	24	29	13	5	22	56	38	9	11	32	58	11	0	56	15	9	1	4	21	1	9	37	40	9	6	56	23	2	8	55	9	2	7	57	12	7	18	−2	13	8
9	13	10	48	11	25	28	9	6	8	13	32	9	12	14	40	11	2	26	53	9	1	10	42	1	10	28	31	9	6	59	28	2	8	51	58	2	7	47	17	7	40	−8	13	9
10	13	14	45	11	26	27	3	6	23	16	3	9	12	56	22	11	3	59	7	9	1	16	54	1	11	18	36	9	7	2	28	2	8	48	47	2	7	39	10	8	2	−13	38	10
11	13	18	41	11	27	25	55	7	7	55	33	9	13	38	4	11	5	32	57	9	1	22	57	1	12	7	56	9	7	5	23	2	8	45	37	2	7	33	30	8	24	−18	7	11
12	13	22	38	11	28	24	46	7	22	7	2	9	14	19	47	11	7	8	23	9	1	28	50	1	12	56	27	9	7	8	12	2	8	42	26	2	7	30	25	8	46	−21	23	12
13	13	26	34	11	29	23	35	8	5	49	5	9	15	1	29	11	8	45	23	9	1	34	34	1	13	44	8	9	7	10	57	2	8	39	15	2	7	29	27	9	8	−23	17	13
14	13	30	31	0	0	22	22	8	19	3	2	9	15	43	10	11	10	23	59	9	1	40	8	1	14	30	57	9	7	13	35	2	8	36	4	2	7	29	41	9	30	−23	48	14
15	13	34	28	0	1	21	7	9	1	52	18	9	16	24	52	11	12	4	9	9	1	45	32	1	15	16	54	9	7	16	9	2	8	32	54	2	7	30	1	9	51	−23	0	15
16	13	38	24	0	2	19	51	9	14	21	18	9	17	6	33	11	13	45	55	9	1	50	47	1	16	1	55	9	7	18	36	2	8	29	43	2	7	29	17	10	13	−21	5	16
17	13	42	21	0	3	18	32	9	26	34	44	9	17	48	13	11	15	29	16	9	1	55	52	1	16	45	59	9	7	20	59	2	8	26	32	2	7	26	38	10	34	−18	13	17
18	13	46	17	0	4	17	13	10	8	37	8	9	18	29	53	11	17	14	13	9	2	0	47	1	17	29	4	9	7	23	15	2	8	23	21	2	7	21	33	10	55	−14	38	18
19	13	50	13	0	5	15	51	10	20	32	36	9	19	11	32	11	19	0	47	9	2	5	32	1	18	11	7	9	7	25	27	2	8	20	11	2	7	13	59	11	16	−10	30	19
20	13	54	10	0	6	14	28	11	2	24	30	9	19	53	10	11	20	48	58	9	2	10	6	1	18	52	5	9	7	27	32	2	8	17	0	2	7	4	16	11	36	−6	0	20
21	13	58	7	0	7	13	3	11	14	15	38	9	20	34	47	11	22	38	46	9	2	14	30	1	19	31	57	9	7	29	32	2	8	13	49	2	6	53	9	11	57	−1	17	21
22	14	2	3	0	8	11	36	11	26	8	4	9	21	16	23	11	24	30	12	9	2	18	44	1	20	10	40	9	7	31	26	2	8	10	38	2	6	41	33	12	17	+3	30	22
23	14	6	0	0	9	10	7	0	8	3	31	9	21	57	58	11	26	23	15	9	2	22	48	1	20	48	10	9	7	33	15	2	8	7	28	2	6	30	30	12	37	8	10	23
24	14	9	57	0	10	8	37	0	20	3	20	9	22	39	33	11	28	17	57	9	2	26	41	1	21	24	27	9	7	34	57	2	8	4	17	2	6	20	54	12	57	12	35	24
25	14	13	53	0	11	7	4	1	2	8	58	9	23	21	5	0	0	14	16	9	2	30	23	1	21	59	25	9	7	36	34	2	8	1	6	2	6	13	29	13	16	16	32	25
26	14	17	50	0	12	5	30	1	14	21	59	9	24	2	37	0	2	12	11	9	2	33	55	1	22	33	3	9	7	38	6	2	7	57	55	2	6	8	37	13	36	19	51	26

(27 अप्रै. से 31 मई, 2020 ई. तक) (1 मई, 2020 ई० को अयनांश = 24°/08'/10''

दैनिक निरयण ग्रह स्पष्ट (प्रातः 5घं-30मि)

(27 अप्रै. से 31 मई, 2020 ई. तक)

1 मई, 2020 ई० को अयनांश = 24°/08'/10''

ता. अप्रै.	सम्पातिक काल 0-00 Hr. GMT	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	मध्यम राहु	स्पष्ट राहु	सूर्य क्रांति	चंद्र क्रांति	अप्रैल
		रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	
27	14 21 46	0 13 3 53	1 26 44 25	9 24 44 7	0 4 11 41	9 2 37 16	1 23 5 15	9 7 39 31	2 7 54 45	2 6 6 14	13 55	22 17	27
28	14 25 43	0 14 2 15	2 9 18 48	9 25 25 35	0 6 12 45	9 2 40 26	1 23 36 1	9 7 40 51	2 7 51 34	2 6 5 54	14 14	23 41	28
29	14 29 39	0 15 0 34	2 22 8 5	9 26 7 3	0 8 15 18	9 2 43 26	1 24 5 16	9 7 42 4	2 7 48 23	2 6 6 48	14 33	23 51	29
30	14 33 36	0 15 58 51	3 5 15 23	9 26 48 28	0 10 19 16	9 2 46 15	1 24 32 57	9 7 43 12	2 7 45 12	2 6 7 59	14 51	22 44	30
मई	14 37 32	0 16 57 7	3 18 43 38	9 27 29 52	0 12 24 35	9 2 48 52	1 24 59 0	9 7 44 14	2 7 42 2	2 6 8 26	+15 9	+20 17	मई
2	14 41 29	0 17 55 20	4 2 35 4	9 28 11 15	0 14 31 8	9 2 51 19	1 25 23 21	9 7 45 10	2 7 38 51	2 6 7 24	15 27	16 38	2
3	14 45 26	0 18 53 31	4 16 50 4	9 28 52 36	0 16 38 46	9 2 53 35	1 25 45 57	9 7 46 1	2 7 35 40	2 6 4 30	15 45	11 56	3
4	14 49 22	0 19 51 41	5 1 26 58	9 29 33 55	0 18 47 20	9 2 55 39	1 26 6 44	9 7 46 46	2 7 32 29	2 5 59 47	16 2	6 27	4
5	14 53 19	0 20 49 48	5 16 21 2	10 0 15 13	0 20 56 40	9 2 57 33	1 26 25 37	9 7 47 24	2 7 29 19	2 5 53 46	16 19	+0 30	5
6	14 57 15	0 21 47 53	6 1 24 55	10 0 56 29	0 23 6 32	9 2 59 15	1 26 42 34	9 7 47 57	2 7 26 8	2 5 47 14	16 36	–5 33	6
7	15 1 12	0 22 45 57	6 16 29 19	10 1 37 43	0 25 16 42	9 3 0 46	1 26 57 31	9 7 48 24	2 7 22 57	2 5 41 7	16 53	–11 18	7
8	15 5 8	0 23 43 59	7 1 24 35	10 2 18 56	0 27 26 55	9 3 2 6	1 27 10 25	9 7 48 45	2 7 19 46	2 5 36 11	17 9	–16 20	8
9	15 9 5	0 24 41 59	7 16 2 16	10 3 0 7	0 29 36 54	9 3 3 16	1 27 21 12	9 7 49 1	2 7 16 36	2 5 32 58	17 25	–20 16	9
10	15 13 1	0 25 39 58	8 0 16 21	10 3 41 16	1 1 46 22	9 3 4 13	1 27 29 47	9 7 49 10	2 7 13 25	2 5 31 35	17 41	–22 51	10
11	15 16 58	0 26 37 55	8 14 3 40	10 4 22 23	1 3 55 3	9 3 5 0	1 27 36 11	9 7 49 14	2 7 10 14	2 5 31 46	17 57	–23 57	11
12	15 20 55	0 27 35 51	8 27 24 1	10 5 3 28	1 6 2 37	9 3 5 35	1 27 40 18	9 7 49 12	2 7 7 3	2 5 32 56	18 12	–23 38	12
13	15 24 51	0 28 33 46	9 10 19 17	10 5 44 30	1 8 8 50	9 3 5 59	1 27 42 7	9 7 49 4	2 7 3 53	2 5 34 23	18 27	–22 1	13
14	15 28 48	0 29 31 39	9 22 52 55	10 6 25 30	1 10 13 24	9 3 6 12	1 27 41 36	9 7 48 50	2 7 0 42	2 5 35 23	18 41	–19 22	14
15	15 32 44	1 0 29 31	10 5 9 15	10 7 6 27	1 12 16 5	9 3 6 13	1 27 38 42	9 7 48 30	2 6 57 31	2 5 35 21	18 55	–15 55	15
16	15 36 41	1 1 27 22	10 17 12 57	10 7 47 22	1 14 16 40	9 3 6 2	1 27 33 25	9 7 48 4	2 6 54 20	2 5 33 57	19 9	–11 52	16
17	15 40 37	1 2 25 12	10 29 8 35	10 8 28 14	1 16 14 56	9 3 5 40	1 27 25 43	9 7 47 33	2 6 51 9	2 5 31 6	19 23	–7 24	17
18	15 44 34	1 3 23 1	11 11 0 24	10 9 9 2	1 18 10 44	9 3 5 7	1 27 15 35	9 7 46 56	2 6 47 59	2 5 27 0	19 36	–2 42	18
19	15 48 30	1 4 20 48	11 22 52 9	10 9 49 48	1 20 3 54	9 3 4 22	1 27 3 3	9 7 46 13	2 6 44 48	2 5 22 1	19 49	+2 6	19
20	15 52 27	1 5 18 34	0 4 47 0	10 10 30 30	1 21 54 19	9 3 3 26	1 26 48 7	9 7 45 24	2 6 41 37	2 5 16 42	20 2	6 51	20
21	15 56 24	1 6 16 19	0 16 47 27	10 11 11 8	1 23 41 53	9 3 2 19	1 26 30 50	9 7 44 30	2 6 38 26	2 5 11 36	20 14	11 24	21
22	16 0 20	1 7 14 3	0 28 55 32	10 11 51 43	1 25 26 30	9 3 1 0	1 26 11 13	9 7 43 29	2 6 35 16	2 5 7 15	20 26	15 33	22
23	16 4 17	1 8 11 46	1 11 12 43	10 12 32 14	1 27 8 6	9 2 59 30	1 25 49 22	9 7 42 23	2 6 32 5	2 5 4 4	20 38	19 7	23
24	16 8 13	1 9 9 27	1 23 40 15	10 13 12 41	1 28 46 37	9 2 57 48	1 25 25 18	9 7 41 12	2 6 28 54	2 5 2 13	20 49	21 51	24
25	16 12 10	1 10 7 6	2 6 19 8	10 13 53 4	2 0 22 2	9 2 55 56	1 24 59 11	9 7 39 55	2 6 25 43	2 5 1 44	21 0	23 33	25
26	16 16 6	1 11 4 45	2 19 10 26	10 14 33 23	2 1 54 16	9 2 53 52	1 24 31 6	9 7 38 32	2 6 22 33	2 5 2 21	21 10	24 3	26
27	16 20 3	1 12 2 22	3 2 15 14	10 15 13 37	2 3 23 19	9 2 51 37	1 24 1 11	9 7 37 4	2 6 19 22	2 5 3 41	21 20	23 14	27
28	16 23 59	1 12 59 58	3 15 34 42	10 15 53 47	2 4 49 6	9 2 49 11	1 23 29 35	9 7 35 30	2 6 16 11	2 5 5 11	21 30	21 6	28
29	16 27 56	1 13 57 32	3 29 9 48	10 16 33 53	2 6 11 36	9 2 46 34	1 22 56 28	9 7 33 51	2 6 13 0	2 5 6 23	21 39	17 46	29
30	16 31 53	1 14 55 5	4 13 1 7	10 17 13 53	2 7 30 47	9 2 43 46	1 22 22 2	9 7 32 6	2 6 9 50	2 5 6 54	21 48	13 24	30
31	16 35 49	1 15 52 36	4 27 8 20	10 17 53 49	2 8 46 36	9 2 40 48	1 21 46 28	9 7 30 16	2 6 6 39	2 5 6 34	21 57	8 14	31

दैनिक निरयण ग्रह स्पष्ट (प्रातः $5^{\text{घं}}-30^{\text{मि.}}$) (1 जून से 6 जुलाई, 2020 ई. तक)

1 जून 2020 ई. को अयनांश 24°/08′/14″

ता.	सम्पातिक काल	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	मध्यम राहु	स्पष्ट राहु	सूर्य क्रांति	चंद्र क्रांति	ता.
जून	0-00 Hr. GMT	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	
जून	16 39 46	1 16 50 6	5 11 29 55	10 18 33 41	2 9 58 59	9 2 37 39	1 21 10 0	9 7 28 21	2 6 3 28	2 5 5 23	22 5	+2 33	जून
2	16 43 42	1 17 47 35	5 26 2 42	10 19 13 27	2 11 7 53	9 2 34 19	1 20 32 51	9 7 26 21	2 6 0 17	2 5 3 37	22 13	–3 20	2
3	16 47 39	1 18 45 2	6 10 42 2	10 19 53 8	2 12 13 16	9 2 30 49	1 19 55 17	9 7 24 16	2 5 57 6	2 5 1 38	22 21	–9 6	3
4	16 51 35	1 19 42 28	6 25 21 50	10 20 32 45	2 13 15 2	9 2 27 9	1 19 17 31	9 7 22 5	2 5 53 56	2 5 59 47	22 28	–14 22	4
5	16 55 32	1 20 39 54	7 9 55 32	10 21 12 16	2 14 13 8	9 2 23 18	1 18 39 48	9 7 19 50	2 5 50 45	2 5 58 25	22 34	–18 46	5
6	16 59 28	1 21 37 18	7 24 16 46	10 21 51 42	2 15 7 29	9 2 19 18	1 18 2 25	9 7 17 29	2 5 47 34	2 5 57 41	22 41	–21 57	6
7	17 3 25	1 22 34 41	8 8 20 17	10 22 31 2	2 15 58 1	9 2 15 7	1 17 25 34	9 7 15 4	2 5 44 23	2 4 57 37	+22 46	–23 44	7
8	17 7 22	1 23 32 3	8 22 2 39	10 23 10 17	2 16 44 38	9 2 10 47	1 16 49 31	9 7 12 33	2 5 41 12	2 4 58 6	22 52	–24 0	8
9	17 11 18	1 24 29 25	9 5 22 19	10 23 49 26	2 17 27 15	9 2 6 17	1 16 14 30	9 7 9 58	2 5 38 2	2 4 58 54	22 57	–22 52	9
10	17 15 15	1 25 26 46	9 18 19 38	10 24 28 29	2 18 5 47	9 2 1 38	1 15 40 42	9 7 7 18	2 5 34 51	2 4 59 46	23 2	–20 32	10
11	17 19 11	1 26 24 7	10 0 56 29	10 25 7 25	2 18 40 9	9 1 56 49	1 15 8 20	9 7 4 34	2 5 31 40	2 5 0 31	23 6	–17 17	11
12	17 23 8	1 27 21 27	10 13 16 6	10 25 46 15	2 19 10 15	9 1 51 51	1 14 37 34	9 7 1 45	2 5 28 29	2 5 0 59	23 10	–13 20	12
13	17 27 4	1 28 18 47	10 25 22 23	10 26 24 58	2 19 36 1	9 1 46 44	1 14 8 36	9 6 58 51	2 5 25 18	2 5 1 7	23 13	–8 56	13
14	17 31 1	1 29 16 6	11 7 19 46	10 27 3 34	2 19 57 20	9 1 41 27	1 13 41 31	9 6 55 53	2 5 22 7	2 5 0 57	23 16	–4 15	14
15	17 34 57	2 0 13 25	11 19 12 48	10 27 42 3	2 20 14 11	9 1 36 3	1 13 16 28	9 6 52 51	2 5 18 57	2 5 0 35	23 19	+0 33	15
16	17 38 54	2 1 10 43	0 1 5 56	10 28 20 24	2 20 26 30	9 1 30 29	1 12 53 33	9 6 49 44	2 5 15 46	2 5 0 8	23 21	5 21	16
17	17 42 51	2 2 8 1	0 13 3 18	10 28 58 37	2 20 34 16	9 1 24 47	1 12 32 53	9 6 46 33	2 5 12 35	2 4 59 42	23 23	9 58	17
18	17 46 47	2 3 5 19	0 25 8 30	10 29 36 42	2 20 37 28	9 1 18 58	1 12 14 28	9 6 43 18	2 5 9 24	2 4 59 24	23 24	14 17	18
19	17 50 44	2 4 2 36	1 7 24 37	11 0 14 38	2 20 36 8	9 1 13 0	1 11 58 24	9 6 39 59	2 5 6 13	2 4 59 15	23 25	18 4	19
20	17 54 40	2 4 59 53	1 19 53 50	11 0 52 26	2 20 30 21	9 1 6 54	1 11 44 43	9 6 36 37	2 5 3 3	2 4 59 15	23 26	21 7	20
21	17 58 37	2 5 57 10	2 2 37 38	11 1 30 4	2 20 20 13	9 1 0 42	1 11 33 24	9 6 33 10	2 4 59 52	2 4 59 19	23 26	23 11	21
22	18 2 33	2 6 54 26	2 15 36 39	11 2 7 34	2 20 5 53	9 0 54 22	1 11 24 29	9 6 29 40	2 4 56 41	2 4 59 21	23 26	24 3	22
23	18 6 30	2 7 51 42	2 28 50 43	11 2 44 54	2 19 47 34	9 0 47 55	1 11 17 57	9 6 26 6	2 4 53 30	2 4 59 16	23 25	23 35	23
24	18 10 26	2 8 48 57	3 12 19 4	11 3 22 4	2 19 25 31	9 0 41 21	1 11 13 47	9 6 22 28	2 4 50 20	2 4 59 0	23 24	21 46	24
25	18 14 23	2 9 46 12	3 26 0 21	11 3 59 4	2 19 0 4	9 0 34 41	1 11 11 58	9 6 18 47	2 4 47 9	2 4 58 32	23 23	18 40	25
26	18 18 20	2 10 43 26	4 9 52 57	11 4 35 54	2 18 31 34	9 0 27 55	1 11 12 28	9 6 15 3	2 4 43 58	2 4 57 57	23 21	14 29	26
27	18 22 16	2 11 40 39	4 23 54 54	11 5 12 34	2 18 0 29	9 0 21 4	1 11 15 14	9 6 11 16	2 4 40 47	2 4 57 24	23 19	9 29	27
28	18 26 13	2 12 37 52	5 8 4 7	11 5 49 3	2 17 27 17	9 0 14 7	1 11 20 15	9 6 7 26	2 4 37 37	2 4 57 3	23 16	+3 57	28
29	18 30 9	2 13 35 5	5 22 18 19	11 6 25 21	2 16 52 31	9 0 7 5	1 11 27 26	9 6 3 32	2 4 34 26	2 4 57 2	23 13	–1 49	29
30	18 34 6	2 14 32 17	6 6 34 57	11 7 1 28	2 16 16 45	8 29 59 58	1 11 36 45	9 5 59 36	2 4 31 15	2 4 57 24	23 9	–7 30	30
जुला	18 38 2	2 15 29 29	6 20 51 15	11 7 37 24	2 15 40 35	8 29 52 45	1 11 48 11	9 5 55 38	2 4 28 4	2 4 58 5	23 5	–12 49	जुला
2	18 41 59	2 16 26 40	7 5 4 5	11 8 13 9	2 15 4 38	8 29 45 29	1 12 1 37	9 5 51 37	2 4 24 54	2 4 58 56	23 1	–17 24	2
3	18 45 55	2 17 23 51	7 19 10 9	11 8 48 42	2 14 29 34	8 29 38 9	1 12 17 2	9 5 47 33	2 4 21 43	2 4 59 41	22 56	–20 58	3
4	18 49 52	2 18 21 2	8 3 6 8	11 9 24 3	2 13 55 55	8 29 30 45	1 12 34 22	9 5 43 27	2 4 18 32	2 5 0 3	22 51	–23 14	4
5	18 53 49	2 19 18 12	8 16 48 55	11 9 59 11	2 13 24 20	8 29 23 18	1 12 53 33	9 5 39 19	2 4 15 21	2 4 59 47	22 45	–24 4	5
6	18 57 45	2 20 15 23	9 0 15 59	11 10 34 8	2 12 55 23	8 29 15 48	1 13 14 33	9 5 35 9	2 4 12 11	2 4 58 48	22 40	–23 27	6

दैनिक निरयण ग्रह स्पष्ट (प्रात: 5^घ-30^{मि}) (7 जुला. से 11 अग. 2020 ई. तक)

(1 जुला. 2020 ई. को अयनांश 24° /06'/42"   1 अग.. 2020 ई. को अयनांश 24° /06'/47')

ता.	सम्पातिक काल	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	मध्यम राहु	स्पष्ट राहु	सूर्य क्रांति	चंद्र क्रांति	जुलाई
जुला	0-00 Hr. GMT	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	
7	19 1 42	2 21 12 34	9 13 25 47	11 11 8 51	2 12 29 31	8 29 8 15	1 13 37 17	9 5 30 56	2 4 9 0	2 4 57 4	22 33	-21 32	7
8	19 5 38	2 22 9 44	9 26 17 44	11 11 43 21	2 12 7 15	8 29 0 39	1 14 1 44	9 5 26 42	2 4 5 49	2 4 54 47	22 27	-18 34	8
9	19 9 35	2 23 6 56	10 8 52 28	11 12 17 37	2 11 48 59	8 28 53 1	1 14 27 47	9 5 22 26	2 4 2 38	2 4 52 13	22 19	-14 48	9
10	19 13 31	2 24 4 7	10 21 11 51	11 12 51 39	2 11 35 5	8 28 45 22	1 14 55 25	9 5 18 9	2 3 59 27	2 4 49 43	22 12	-10 29	10
11	19 17 28	2 25 1 19	11 3 18 40	11 13 25 26	2 11 25 50	8 28 37 40	1 15 24 33	9 5 13 50	2 3 56 17	2 4 47 38	22 4	-5 50	11
12	19 21 24	2 25 58 31	11 15 16 39	11 13 58 58	2 11 21 31	8 28 29 58	1 15 55 9	9 5 9 29	2 3 53 6	2 4 46 14	21 56	-1 1	12
13	19 25 21	2 26 55 44	11 27 10 0	11 14 32 15	2 11 22 17	8 28 22 14	1 16 27 8	9 5 5 8	2 3 49 55	2 4 45 41	21 47	+3 48	13
14	19 29 18	2 27 52 57	0 9 3 22	11 15 5 16	2 11 28 20	8 28 14 30	1 17 0 30	9 5 0 45	2 3 46 44	2 4 46 1	+21 38	+8 30	14
15	19 33 14	2 28 50 11	0 21 1 28	11 15 38 0	2 11 39 44	8 28 6 46	1 17 35 9	9 4 56 22	2 3 43 33	2 4 47 5	21 29	12 54	15
16	19 37 11	2 29 47 26	1 3 8 56	11 16 10 27	2 11 56 36	8 27 59 1	1 18 11 2	9 4 51 57	2 3 40 22	2 4 48 35	21 19	16 52	16
17	19 41 2	3 0 44 41	1 15 29 55	11 16 42 37	2 12 18 56	8 27 51 18	1 18 48 7	9 4 47 32	2 3 37 12	2 4 50 6	21 9	20 10	17
18	19 45 4	3 1 41 57	1 28 7 49	11 17 14 28	2 12 46 47	8 27 43 34	1 19 26 22	9 4 43 6	2 3 34 1	2 4 51 8	20 59	22 36	18
19	19 49 0	3 2 39 13	2 11 5 6	11 17 46 2	2 13 20 9	8 27 35 52	1 20 5 43	9 4 38 40	2 3 30 50	2 4 51 15	20 48	23 54	19
20	19 52 57	3 3 36 30	2 24 22 43	11 18 17 16	2 13 58 58	8 27 28 12	1 20 46 7	9 4 34 14	2 3 27 39	2 4 50 8	20 37	23 53	20
21	19 56 53	3 4 33 47	3 8 0 5	11 18 48 10	2 14 43 14	8 27 20 33	1 21 27 33	9 4 29 47	2 3 24 28	2 4 47 40	20 25	22 28	21
22	20 0 50	3 5 31 5	3 21 55 0	11 19 18 45	2 15 32 53	8 27 12 57	1 22 9 58	9 4 25 20	2 3 21 18	2 4 44 1	20 13	19 40	22
23	20 4 47	3 6 28 23	4 6 3 45	11 19 48 59	2 16 27 52	8 27 5 22	1 22 53 19	9 4 20 54	2 3 18 7	2 4 39 37	20 1	15 40	23
24	20 8 43	3 7 25 42	4 20 21 41	11 20 18 52	2 17 28 8	8 26 57 51	1 23 37 35	9 4 16 28	2 3 14 56	2 4 35 3	19 49	10 44	24
25	20 12 40	3 8 23 1	5 4 43 45	11 20 48 24	2 18 33 33	8 26 50 23	1 24 22 43	9 4 12 2	2 3 11 45	2 4 31 1	19 36	+5 13	25
26	20 16 36	3 9 20 20	5 19 5 17	11 21 17 34	2 19 44 2	8 26 42 59	1 25 8 42	9 4 7 37	2 3 8 34	2 4 28 6	19 23	-0 35	26
27	20 20 33	3 10 17 40	6 3 22 30	11 21 46 22	2 20 59 32	8 26 35 38	1 25 55 30	9 4 3 12	2 3 5 24	2 4 26 37	19 9	-6 20	27
28	20 24 29	3 11 15 1	6 17 32 36	11 22 14 47	2 22 19 51	8 26 28 21	1 26 43 4	9 3 58 49	2 3 2 13	2 4 26 34	18 55	-11 43	28
29	20 28 26	3 12 12 21	7- 1 33 53	11 22 42 49	2 23 44 53	8 26 21 9	1 27 31 25	9 3 54 26	2 2 59 2	2 4 27 36	18 41	-16 26	29
30	20 32 22	3 13 9 43	7 15 25 19	11 23 10 27	2 25 14 28	8 26 14 2	1 28 20 29	9 3 50 5	2 2 55 51	2 4 29 1	18 27	-20 12	30
31	20 36 19	3 14 7 4	7 29 6 21	11 23 37 42	2 26 48 24	8 26 6 59	1 29 10 16	9 3 45 44	2 2 52 41	2 4 30 2	18 12	-22 47	31
अग.	20 40 16	3 15 4 27	8 12 36 25	11 24 4 31	2 28 26 29	8 26 0 2	2 0 0 43	9 3 41 26	2 2 49 30	2 4 29 52	17 57	-24 0	अग.
2	20 44 12	3 16 1 50	8 25 54 56	11 24 30 56	3 0 8 27	8 25 53 11	2 0 51 51	9 3 37 8	2 2 46 19	2 4 27 55	17 42	-23 49	2
3	20 48 9	3 16 59 13	9 9 1 12	11 24 56 55	3 1 54 3	8 25 46 25	2 1 43 37	9 3 32 53	2 2 43 8	2 4 23 57	17 26	-22 18	3
4	20 52 5	3 17 56 38	9 21 54 34	11 25 22 27	3 3 42 58	8 25 39 46	2 2 36 0	9 3 28 38	2 2 39 58	2 4 18 4	17 10	-19 39	4
5	20 56 2	3 18 54 4	10 4 34 36	11 25 47 32	3 5 34 54	8 25 33 12	2 3 28 59	9 3 24 26	2 2 36 47	2 4 10 42	16 54	-16 6	5
6	20 59 58	3 19 51 30	10 17 1 29	11 26 12 9	3 7 29 28	8 25 26 46	2 4 22 35	9 3 20 16	2 2 33 36	2 4 2 33	16 38	-11 54	6
7	21 3 55	3 20 48 58	10 29 16 5	11 26 36 18	3 9 26 19	8 25 20 26	2 5 16 43	9 3 16 8	2 2 30 25	2 3 54 26	16 21	-7 18	7
8	21 7 51	3 21 46 27	11 11 20 10	11 26 59 57	3 11 25 8	8 25 14 13	2 6 11 23	9 3 12 2	2 2 27 15	2 3 47 8	16 4	-2 29	8
9	21 11 48	3 22 43 57	11 23 16 24	11 27 23 6	3 13 25 28	8 25 8 8	2 7 6 36	9 3 7 58	2 2 24 4	2 3 41 18	15 47	+2 22	9
10	21 15 45	3 23 41 29	0 5 8 19	11 27 45 44	3 15 26 59	8 25 2 10	2 8 2 19	9 3 3 57	2 2 20 53	2 3 37 17	15 29	7 7	10
11	21 19 41	3 24 39 2	0 17 0 10	11 28 7 50	3 17 29 22	8 24 56 20	2 8 58 31	9 2 59 59	2 2 17 42	2 3 35 11	15 11	11 37	11

दैनिक निरयण ग्रह स्पष्ट (प्रातः 5घं–30मिं) (12 अगस्त से 16 सितंबर, 2020 ई. तक) (1 सितम्बर, 2020 ई. को अयनांश 24°/08′/29″

ता. अग.	सम्पातिक काल 0-00 Hr. GMT	सूर्य रा. अं. क. वि.	चन्द्र रा. अं. क. वि.	मंगल रा. अं. क. वि.	बुध रा. अं. क. वि.	गुरु रा. अं. क. वि.	शुक्र रा. अं. क. वि.	शनि रा. अं. क. वि.	मध्यम राहु रा. अं. क. वि.	स्पष्ट राहु रा. अं. क. वि.	सूर्य क्रांति अं. क.	चंद्र क्रांति अं. क.	अगस्त
12	21 23 38	3 25 36 36	0 28 56 43	11 28 29 23	3 19 32 15	8 24 50 38	2 9 55 13	9 2 56 3	2 2 14 32	2 3 34 44	14 53	15 43	12
13	21 27 34	3 26 34 12	1 11 3 3	11 28 50 23	3 21 35 22	8 24 45 4	2 10 52 22	9 2 52 10	2 2 11 21	2 3 35 22	14 35	19 13	13
14	21 31 31	3 27 31 49	1 23 24 15	11 29 10 49	3 23 38 25	8 24 39 39	2 11 49 57	9 2 48 20	2 2 8 10	2 3 36 17	14 17	21 57	14
15	21 35 27	3 28 29 28	2 6 4 56	11 29 30 39	3 25 41 11	8 24 34 22	2 12 47 59	9 2 44 33	2 2 4 59	2 3 36 35	13 58	23 39	15
16	21 39 24	3 29 27 8	2 19 8 46	11 29 49 52	3 27 43 26	8 24 29 15	2 13 46 26	9 2 40 49	2 2 1 49	2 3 35 26	13 39	24 8	16
17	21 43 20	4 0 24 50	3 2 37 55	0 0 8 30	3 29 45 1	8 24 24 16	2 14 45 17	9 2 37 8	2 1 58 38	2 3 32 15	13 20	23 14	17
18	21 47 17	4 1 22 33	3 16 32 21	0 0 26 29	4 1 45 45	8 24 19 27	2 15 44 32	9 2 33 31	2 1 55 27	2 3 26 47	13 1	20 54	18
19	21 51 14	4 2 20 17	4 0 49 30	0 0 43 50	4 3 45 30	8 24 14 47	2 16 44 9	9 2 29 58	2 1 52 16	2 3 19 18	12 41	17 14	19
20	21 55 10	4 3 18 3	4 15 24 22	0 1 0 32	4 5 44 12	8 24 10 17	2 17 44 8	9 2 26 28	2 1 49 6	2 3 10 29	+12 22	+12 27	20
21	21 59 7	4 4 15 50	5 0 9 11	0 1 16 34	4 7 41 46	8 24 5 57	2 18 44 29	9 2 23 2	2 1 45 55	2 3 1 20	12 2	6 54	21
22	22 3 3	4 5 13 38	5 14 56 21	0 1 31 55	4 9 38 7	8 24 1 47	2 19 45 10	9 2 19 39	2 1 42 44	2 2 52 59	11 42	+0 57	22
23	22 7 0	4 6 11 28	5 29 37 58	0 1 46 34	4 11 33 13	8 23 57 48	2 20 46 11	9 2 16 21	2 1 39 33	2 2 46 21	11 21	–5 1	23
24	22 10 56	4 7 9 19	6 14 7 55	0 2 0 32	4 13 27 2	8 23 53 58	2 21 47 32	9 2 13 6	2 1 36 23	2 2 42 0	11 1	–10 39	24
25	22 14 53	4 8 7 11	6 28 22 23	0 2 13 47	4 15 19 32	8 23 50 19	2 22 49 12	9 2 9 56	2 1 33 12	2 2 39 57	10 40	–15 38	25
26	22 18 49	4 9 5 4	7 12 19 41	0 2 26 18	4 17 10 44	8 23 46 51	2 23 51 11	9 2 6 50	2 1 30 1	2 2 39 40	10 19	–19 39	26
27	22 22 46	4 10 2 58	7 25 59 57	0 2 38 6	4 19 0 36	8 23 43 33	2 24 53 27	9 2 3 49	2 1 26 50	2 2 40 10	9 58	–22 29	27
28	22 26 43	4 11 0 54	8 9 24 19	0 2 49 9	4 20 49 9	8 23 40 26	2 25 56 2	9 2 0 53	2 1 23 39	2 2 40 15	9 37	–23 59	28
29	22 30 39	4 11 58 50	8 22 34 27	0 2 59 26	4 22 36 23	8 23 37 30	2 26 58 54	9 1 58 0	2 1 20 29	2 2 38 45	9 16	–24 6	29
30	22 34 36	4 12 56 49	9 5 31 53	0 3 8 58	4 24 22 19	8 23 34 44	2 28 2 3	9 1 55 12	2 1 17 18	2 2 34 48	8 54	–22 54	30
31	22 38 32	4 13 54 48	9 18 17 54	0 3 17 43	4 26 6 58	8 23 32 11	2 29 5 29	9 1 52 28	2 1 14 7	2 2 27 57	8 33	–20 32	31
सितं.	22 42 29	4 14 52 49	10 0 53 18	0 3 25 41	4 27 50 20	8 23 29 48	3 0 9 11	9 1 49 50	2 1 10 56	2 2 18 18	8 11	–17 13	सितं.
2	22 46 25	4 15 50 52	10 13 18 39	0 3 32 51	4 29 32 27	8 23 27 36	3 1 13 9	9 1 47 16	2 1 7 45	2 2 6 29	7 49	–13 11	2
3	22 50 22	4 16 48 56	10 25 34 23	0 3 39 12	5 1 13 19	8 23 25 35	3 2 17 23	9 1 44 46	2 1 4 35	2 1 53 24	7 27	–8 39	3
4	22 54 18	4 17 47 3	11 7 41 14	0 3 44 44	5 2 52 57	8 23 23 46	3 3 21 52	9 1 42 22	2 1 1 24	2 1 40 12	7 5	–3 51	4
5	22 58 15	4 18 45 10	11 19 40 19	0 3 49 25	5 4 31 23	8 23 22 8	3 4 26 36	9 1 40 3	2 0 58 13	2 1 28 0	6 43	+1 3	5
6	23 2 12	4 19 43 20	0 1 33 27	0 3 53 16	5 6 8 36	8 23 20 41	3 5 31 35	9 1 37 49	2 0 55 2	2 1 17 43	6 21	5 53	6
7	23 6 8	4 20 41 32	0 13 23 18	0 3 56 15	5 7 44 39	8 23 19 25	3 6 36 50	9 1 35 40	2 0 51 51	2 1 9 58	5 58	10 30	7
8	23 10 5	4 21 39 45	0 25 13 18	0 3 58 23	5 9 19 31	8 23 18 21	3 7 42 16	9 1 33 36	2 0 48 41	2 1 4 55	5 36	14 43	8
9	23 14 1	4 22 38 1	1 7 7 42	0 3 59 38	5 10 53 13	8 23 17 28	3 8 47 57	9 1 31 37	2 0 45 30	2 1 2 19	5 13	18 24	9
10	23 17 58	4 23 36 18	1 19 11 22	0 4 0 1	5 12 25 46	8 23 16 47	3 9 53 52	9 1 29 44	2 0 42 19	2 1 1 29	4 51	21 22	10
11	23 21 54	4 24 34 38	2 1 29 37	0 3 59 30	5 13 57 9	8 23 16 18	3 11 0 0	9 1 27 56	2 0 39 8	2 1 1 25	4 28	23 24	11
12	23 25 51	4 25 33 0	2 14 7 39	0 3 58 7	5 15 27 23	8 23 16 0	3 12 6 20	9 1 26 14	2 0 35 57	2 1 0 59	4 5	24 19	12
13	23 29 47	4 26 31 24	2 27 10 13	0 3 55 50	5 16 56 28	8 23 15 54	3 13 12 53	9 1 24 36	2 0 32 47	2 0 59 5	3 42	23 57	13
14	23 33 44	4 27 29 50	3 10 40 47	0 3 52 39	5 18 24 23	8 23 16 0	3 14 19 38	9 1 23 5	2 0 29 36	2 0 54 55	3 19	22 11	14
15	23 37 41	4 28 28 18	3 24 40 42	0 3 48 35	5 19 51 8	8 23 16 16	3 15 26 35	9 1 21 39	2 0 26 25	2 0 48 8	2 56	19 2	15
16	23 41 37	4 29 26 48	4 9 8 22	0 3 [illegible]	[illegible]	[illegible]	3 16 33 44	9 1 20 19	2 0 23 14	2 0 38 57	2 33	14 39	16

1 अक्तूबर, 2020 ई. को अयनांश 24°/08′/32″

दैनिक निरयण ग्रह स्पष्ट (प्रातः $5^{घ} - 30^{मि}$) (17 सितंबर से 22 अक्तूबर, 2020 ई. तक)

1 अक्तूबर, 2020 ई. को अयनांश 24° /08'/32''

ता. सितं	सम्पातिक काल 0-00 Hr. GMT	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	मध्यम राहु	स्पष्ट राहु	सूर्य क्रांति	चंद्र क्रांति	सितं.
		रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	
17	23 45 34	5 0 25 20	4 23 58 43	0 3 37 49	5 22 41 3	8 23 17 25	3 17 41 4	9 1 19 4	2 0 20 4	2 0 28 7	2 10	9 16	17
18	23 49 30	5 1 23 54	5 9 3 35	0 3 31 8	5 24 4 10	8 23 18 17	3 18 48 35	9 1 17 55	2 0 16 53	2 0 16 48	1 46	+3 16	18
19	23 53 27	5 2 22 30	5 24 12 45	0 3 23 36	5 25 26 2	8 23 19 20	3 19 56 16	9 1 16 52	2 0 13 42	2 0 6 16	1 23	–2 58	19
20	23 57 23	5 3 21 8	6 9 15 50	0 3 15 13	5 26 46 36	8 23 20 35	3 21 4 8	9 1 15 54	2 0 10 31	1 29 57 39	1 0	–9 0	20
21	0 1 20	5 4 19 48	6 24 4 6	0 3 6 2	5 28 5 50	8 23 22 2	3 22 12 10	9 1 15 3	2 0 7 21	1 29 51 37	0 36	–14 25	21
22	0 5 16	5 5 18 29	7 8 31 39	0 2 56 2	5 29 23 40	8 23 23 40	3 23 20 22	9 1 14 17	2 0 4 10	1 29 48 17	+0 13	–18 54	22
23	0 9 13	5 6 17 12	7 22 35 43	0 2 45 16	6 0 40 3	8 23 25 30	3 24 28 44	9 1 13 37	2 0 0 59	1 29 47 6	–0 10	–22 9	23
24	0 13 10	5 7 15 56	8 6 16 16	0 2 33 44	6 1 54 55	8 23 27 31	3 25 37 15	9 1 13 3	1 29 57 48	1 29 47 5	–0 34	–24 0	24
25	0 17 6	5 8 14 42	8 19 35 6	0 2 21 29	6 3 8 12	8 23 29 44	3 26 45 56	9 1 12 35	1 29 54 38	1 29 46 55	–0 57	–24 26	25
26	0 21 3	5 9 13 30	9 2 35 0	0 2 8 32	6 4 19 48	8 23 32 8	3 27 54 47	9 1 12 13	1 29 51 27	1 29 45 20	–1 20	–23 30	26
27	0 24 59	5 10 12 20	9 15 19 5	0 1 54 55	6 5 29 36	8 23 34 43	3 29 3 46	9 1 11 57	1 29 48 16	1 29 41 21	–1 44	–21 21	27
28	0 28 56	5 11 11 11	9 27 50 15	0 1 40 38	6 6 37 31	8 23 37 30	4 0 12 55	9 1 11 47	1 29 45 5	1 29 34 28	–2 7	–18 13	28
29	0 32 52	5 12 10 5	10 10 10 55	0 1 25 46	6 7 43 23	8 23 40 27	4 1 22 13	9 1 11 43	1 29 41 55	1 29 24 43	–2 30	–14 20	29
30	0 36 49	5 13 9 0	10 22 23 1	0 1 10 18	6 8 47 5	8 23 43 36	4 2 31 39	9 1 11 44	1 29 38 44	1 29 12 39	–2 54	–9 54	30
अक्तू	0 40 45	5 14 7 57	11 4 27 56	0 0 54 18	6 9 48 27	8 23 46 55	4 3 41 15	9 1 11 52	1 29 35 33	1 28 59 13	–3 17	–5 8	अक्तू
2	0 44 42	5 15 6 56	11 16 26 52	0 0 37 47	6 10 47 17	8 23 50 26	4 4 50 58	9 1 12 5	1 29 32 22	1 28 45 33	–3 40	–0 12	2
3	0 48 39	5 16 5 57	11 28 20 59	0 0 20 48	6 11 43 22	8 23 54 7	4 6 0 51	9 1 12 25	1 29 29 12	1 28 32 49	–4 3	+4 42	3
4	0 52 35	5 17 5 0	0 10 11 48	0 0 3 24	6 12 36 30	8 23 57 59	4 7 10 52	9 1 12 50	1 29 26 1	1 28 21 59	–4 26	9 26	4
5	0 56 32	5 18 4 5	0 22 1 8	11 29 45 36	6 13 26 24	8 24 2 2	4 8 21 1	9 1 13 22	1 29 22 50	1 28 13 44	–4 50	13 49	5
6	1 0 28	5 19 3 13	1 3 51 37	11 29 27 28	6 14 12 46	8 24 6 15	4 9 31 18	9 1 13 59	1 29 19 39	1 28 8 19	–5 13	17 41	6
7	1 4 25	5 20 2 22	1 15 46 33	11 29 9 2	6 14 55 18	8 24 10 39	4 10 41 43	9 1 14 43	1 29 16 28	1 28 5 34	–5 36	20 52	7
8	1 8 21	5 21 1 34	1 27 49 55	11 28 50 21	6 15 33 38	8 24 15 13	4 11 52 16	9 1 15 32	1 29 13 18	1 28 4 51	–5 58	23 10	8
9	1 12 18	5 22 0 48	2 10 6 21	11 28 31 27	6 16 7 23	8 24 19 58	4 13 2 57	9 1 16 27	1 29 10 7	1 28 5 16	–6 21	24 26	9
10	1 16 14	5 23 0 5	2 22 40 52	11 28 12 24	6 16 36 8	8 24 24 53	4 14 13 45	9 1 17 28	1 29 6 56	1 28 5 41	–6 44	24 29	10
11	1 20 11	5 23 59 24	3 5 38 16	11 27 53 15	6 16 59 25	8 24 29 59	4 15 24 40	9 1 18 36	1 29 3 45	1 28 5 2	–7 7	23 14	11
12	1 24 8	5 24 58 45	3 19 2 42	11 27 34 3	6 17 16 46	8 24 35 15	4 16 35 43	9 1 19 49	1 29 0 35	1 28 2 31	–7 29	20 39	12
13	1 28 4	5 25 58 9	4 2 56 40	11 27 14 50	6 17 27 41	8 24 40 41	4 17 46 53	9 1 21 8	1 28 57 24	1 27 57 43	–7 52	16 48	13
14	1 32 1	5 26 57 34	4 17 20 14	11 26 55 41	6 17 31 40	8 24 46 16	4 18 58 9	9 1 22 33	1 28 54 13	1 27 50 44	–8 14	11 52	14
15	1 35 57	5 27 57 2	5 2 9 50	11 26 36 37	6 17 28 9	8 24 52 2	4 20 9 32	9 1 24 4	1 28 51 2	1 27 42 12	–8 36	+6 7	15
16	1 39 54	5 28 56 33	5 17 18 41	11 26 17 42	6 17 16 48	8 24 57 58	4 21 21 2	9 1 25 40	1 28 47 52	1 27 33 5	–8 58	–0 8	16
17	1 43 50	5 29 56 5	6 2 36 49	11 25 59 1	6 16 57 9	8 25 4 4	4 22 32 37	9 1 27 23	1 28 44 41	1 27 24 30	–9 20	–6 26	17
18	1 47 47	6 0 55 39	6 17 52 56	11 25 40 34	6 16 28 58	8 25 10 19	4 23 44 19	9 1 29 12	1 28 41 30	1 27 17 29	–9 42	–12 21	18
19	1 51 43	6 1 55 16	7 2 56 27	11 25 22 27	6 15 52 8	8 25 16 44	4 24 56 7	9 1 31 6	1 28 38 19	1 27 12 39	–10 4	–17 27	19
20	1 55 40	6 2 54 54	7 17 39 11	11 25 4 41	6 15 6 44	8 25 23 19	4 26 8 0	9 1 33 6	1 28 35 8	1 27 10 11	–10 25	–21 22	20
21	1 59 37	6 3 54 34	8 1 56 18	11 24 47 19	6 14 13 10	8 25 30 3	4 27 19 59	9 1 35 12	1 28 31 58	1 27 9 42	–10 47	–23 48	21
22	2 3 33	6 4 54 15	8 15 46 8	11 24 30 25	6 13 12 12	8 25 36 56	4 28 32 4	9 1 37 24	1 28 28 47	1 27 10 27	–11 18	–24 42	22

दैनिक निरयण ग्रह स्पष्ट (प्रातः 5$^{\text{घं}}$ -30$^{\text{मि}}$) (23 अक्तूबर से 26 नवंबर, 2020 ई. तक) 1 नवंबर 2020 ई. को अयनांश 24°/08′/35″

ता.	सम्पातिक काल	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	मध्यम राहु	स्पष्ट राहु	सूर्य क्रांति	चंद्र क्रांति	अक्टू
अकू	0-00 Hr. GMT	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	
23	2 7 30	6 5 53 59	8 29 9 46	11 24 13 59	6 12 4 53	8 25 43 59	4 29 44 14	9 1 39 42	1 28 25 36	1 27 11 24	−11 29	−24 7	23
24	2 11 26	6 6 53 44	9 12 9 52	11 23 58 5	6 10 52 44	8 25 51 11	5 0 56 29	9 1 42 5	1 28 22 25	1 27 11 32	−11 50	−22 13	24
25	2 15 23	6 7 53 30	9 24 50 9	11 23 42 45	6 9 37 34	8 25 58 31	5 2 8 50	9 1 44 33	1 28 19 14	1 27 10 2	−12 11	−19 15	25
26	2 19 19	6 8 53 19	10 7 14 30	11 23 28 0	6 8 21 29	8 26 6 1	5 3 21 15	9 1 47 8	1 28 16 4	1 27 6 26	−12 31	−15 29	26
27	2 23 16	6 9 53 9	10 19 26 36	11 23 13 52	6 7 6 47	8 26 13 39	5 4 33 46	9 1 49 48	1 28 12 53	1 27 0 44	−12 52	−11 9	27
28	2 27 12	6 10 53 1	11 1 29 47	11 23 00 24	6 5 55 48	8 26 21 26	5 5 46 22	9 1 52 33	1 28 9 42	1 26 53 15	−13 12	−6 25	28
29	2 31 9	6 11 52 55	11 13 26 50	11 22 47 35	6 4 50 43	8 26 29 22	5 6 59 3	9 1 55 24	1 28 6 31	1 26 44 41	−13 32	−1 30	29
30	2 35 6	6 12 52 50	11 25 20 0	11 22 35 28	6 3 53 29	8 26 37 25	5 8 11 48	9 1 58 20	1 28 3 20	1 26 35 49	−13 51	+3 27	30
31	2 39 2	6 13 52 47	0 7 11 8	11 22 24 3	6 3 5 42	8 26 45 38	5 9 24 39	9 2 1 22	1 28 0 10	1 26 27 31	−14 11	8 16	31
नवं.	2 42 59	6 14 52 46	0 19 1 58	11 22 13 23	6 2 28 31	8 26 53 58	5 10 37 34	9 2 4 29	1 27 56 59	1 26 20 33	−14 30	12 48	नवं.
2	2 46 55	6 15 52 48	1 0 54 11	11 22 3 26	6 2 2 39	8 27 2 27	5 11 50 34	9 2 7 41	1 27 53 48	1 26 15 24	−14 49	+16 52	2
3	2 50 52	6 16 52 51	1 12 49 41	11 21 54 16	6 1 48 22	8 27 11 4	5 13 3 39	9 2 10 59	1 27 50 37	1 26 12 19	−15 8	20 17	3
4	2 54 48	6 17 52 56	1 24 50 46	11 21 45 51	6 1 45 36	8 27 19 48	5 14 16 48	9 2 14 22	1 27 47 26	1 26 11 14	−15 27	22 52	4
5	2 58 45	6 18 53 3	2 7 0 13	11 21 38 13	6 1 53 59	8 27 28 41	5 15 30 1	9 2 17 50	1 27 44 15	1 26 11 44	−15 45	24 25	5
6	3 2 41	6 19 53 12	2 19 21 18	11 21 31 22	6 2 12 54	8 27 37 41	5 16 43 19	9 2 21 23	1 27 41 5	1 26 13 12	−16 3	24 48	6
7	3 6 38	6 20 53 23	3 1 57 43	11 21 25 18	6 2 41 35	8 27 46 49	5 17 56 41	9 2 25 1	1 27 37 54	1 26 14 53	−16 21	23 55	7
8	3 10 35	6 21 53 36	3 14 53 19	11 21 20 3	6 3 19 12	8 27 56 4	5 19 10 7	9 2 28 44	1 27 34 43	1 26 16 3	−16 38	21 46	8
9	3 14 31	6 22 53 51	3 28 11 37	11 21 15 35	6 4 4 52	8 28 5 28	5 20 23 37	9 2 32 33	1 27 31 32	1 26 16 7	−16 55	18 25	9
10	3 18 28	6 23 54 8	4 11 55 16	11 21 11 56	6 4 57 41	8 28 14 58	5 21 37 11	9 2 36 26	1 27 28 22	1 26 14 46	−17 12	13 59	10
11	3 22 24	6 24 54 27	4 26 5 13	11 21 9 5	6 5 56 47	8 28 24 36	5 22 50 49	9 2 40 24	1 27 25 11	1 26 12 2	−17 29	8 40	11
12	3 26 21	6 25 54 48	5 10 40 1	11 21 7 3	6 7 1 24	8 28 34 21	5 24 4 31	9 2 44 27	1 27 22 0	1 26 8 17	−17 45	+2 43	12
13	3 30 17	6 26 55 12	5 25 35 11	11 21 5 49	6 8 10 46	8 28 44 13	5 25 18 16	9 2 48 35	1 27 18 49	1 26 4 3	−18 1	−3 30	13
14	3 34 14	6 27 55 36	6 10 43 22	11 21 5 24	6 9 24 16	8 28 54 12	5 26 32 4	9 2 52 48	1 27 15 39	1 26 0 2	−18 17	−9 38	14
15	3 38 10	6 28 56 3	6 25 55 7	11 21 5 46	6 10 41 14	8 29 4 18	5 27 45 56	9 2 57 5	1 27 12 28	1 25 56 50	−18 32	−15 14	15
16	3 42 7	6 29 56 31	7 11 0 20	11 21 6 57	6 12 1 11	8 29 14 31	5 28 59 51	9 3 1 28	1 27 9 17	1 25 54 50	−18 47	−19 50	16
17	3 46 4	7 0 57 1	7 25 49 56	11 21 8 56	6 13 23 39	8 29 24 51	6 0 13 48	9 3 5 54	1 27 6 6	1 25 54 8	−19 2	−23 3	17
18	3 50 0	7 1 57 32	8 10 17 5	11 21 11 42	6 14 48 14	8 29 35 17	6 1 27 49	9 3 10 26	1 27 2 55	1 25 54 37	−19 17	−24 40	18
19	3 53 57	7 2 58 5	8 24 17 56	11 21 15 16	6 16 14 35	8 29 45 50	6 2 41 52	9 3 15 2	1 26 59 45	1 25 55 51	−19 31	−24 39	19
20	3 57 53	7 3 58 39	9 7 51 24	11 21 19 36	6 17 42 23	8 29 56 29	6 3 55 58	9 3 19 42	1 26 56 34	1 25 57 20	−19 44	−23 8	20
21	4 1 50	7 4 59 14	9 20 58 49	11 21 24 41	6 19 11 24	9 0 7 15	6 5 10 6	9 3 24 27	1 26 53 23	1 25 58 35	−19 58	−20 25	21
22	4 5 46	7 5 59 50	10 3 43 4	11 21 30 31	6 20 41 25	9 0 18 6	6 6 24 17	9 3 29 15	1 26 50 12	1 25 59 11	−20 11	−16 47	22
23	4 9 43	7 7 0 28	10 16 8 10	11 21 37 5	6 22 12 15	9 0 29 4	6 7 38 31	9 3 34 9	1 26 47 2	1 25 58 56	−20 23	−12 30	23
24	4 13 39	7 8 1 7	10 28 18 23	11 21 44 23	6 23 43 44	9 0 40 7	6 8 52 47	9 3 39 6	1 26 43 51	1 25 57 48	−20 36	−7 49	24
25	4 17 36	7 9 1 46	11 10 18 1	11 21 52 24	6 25 15 44	9 0 51 17	6 10 7 5	9 3 44 8	1 26 40 40	1 25 55 55	−20 47	−2 55	25
26	4 21 33	7 10 2 27	11 22 11 11	11 22 [illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	1 26 37 29	1 25 53 34	−20 59	+2 4	26

दैनिक निरयण ग्रह स्पष्ट (प्रात: $5^{घ}-30^{मि}$) (27 नवंबर से 31 दिसंबर 2020 ई. तक) (1 दिसंबर, 2020 ई. को अयनांश 24° /08' /39")

ता.	सम्पातिक काल	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	मध्यम राहु	स्पष्ट राहु	सूर्य क्रांति	चंद्र क्रांति	ता.
नवं.	0-00 Hr. GMT	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	
27	4 25 29	7 11 3 9	0 4 1 26	11 22 10 29	6 28 20 56	9 1 13 53	6 12 35 48	9 3 54 23	1 26 34 19	1 25 51 6	–21 10	6 57	27
28	4 29 26	7 12 3 53	0 15 51 59	11 22 20 32	6 29 53 57	9 1 25 19	6 13 50 13	9 3 59 36	1 26 31 8	1 25 48 48	–21 21	11 36	28
29	4 33 22	7 13 4 37	0 27 45 18	11 22 31 14	7 1 27 10	9 1 36 50	6 15 4 40	9 4 4 53	1 26 27 57	1 25 46 58	–21 31	15 50	29
30	4 37 19	7 14 5 23	1 9 43 37	11 22 42 35	7 3 0 32	9 1 48 28	6 16 19 10	9 4 10 15	1 26 24 46	1 25 45 44	–21 41	19 29	30
दिसं.	4 41 15	7 15 6 9	1 21 48 43	11 22 54 33	7 4 34 0	9 2 0 10	6 17 33 41	9 4 15 39	1 26 21 36	1 25 45 11	–21 50	22 20	दिसं.
2	4 45 12	7 16 6 57	2 4 2 12	11 23 7 8	7 6 7 33	9 2 11 57	6 18 48 15	9 4 21 8	1 26 18 25	1 25 45 14	–21 59	24 11	2
3	4 49 8	7 17 7 47	2 16 25 45	11 23 20 19	7 7 41 10	9 2 23 50	6 20 2 50	9 4 26 40	1 26 15 14	1 25 45 43	–22 8	24 53	3
4	4 53 5	7 18 8 37	2 29 0 55	11 23 34 5	7 9 14 49	9 2 35 47	6 21 17 28	9 4 32 16	1 26 12 3	1 25 46 26	–22 16	24 19	4
5	4 57 2	7 19 9 29	3 11 49 29	11 23 48 26	7 10 48 31	9 2 47 49	6 22 32 7	9 4 37 55	1 26 8 53	1 25 47 9	–22 24	22 28	5
6	5 0 58	7 20 10 22	3 24 53 12	11 24 3 20	7 12 22 13	9 2 59 57	6 23 46 49	9 4 43 38	1 26 5 42	1 25 47 42	–22 31	19 26	6
7	5 4 55	7 21 11 16	4 8 13 52	11 24 18 47	7 13 55 58	9 3 12 8	6 25 1 32	9 4 49 24	1 26 2 31	1 25 48 0	–22 38	15 20	7
8	5 8 51	7 22 12 12	4 21 52 51	11 24 34 47	7 15 29 43	9 3 24 25	6 26 16 17	9 4 55 13	1 25 59 20	1 25 48 3	–22 44	10 23	8
9	5 12 48	7 23 13 9	5 5 50 44	11 24 51 18	7 17 3 31	9 3 36 46	6 27 31 6	9 5 1 6	1 25 56 10	1 25 47 56	–22 50	+4 47	9
10	5 16 44	7 24 14 7	5 20 6 56	11 25 8 20	7 18 37 20	9 3 49 12	6 28 45 52	9 5 7 2	1 25 52 59	1 25 47 45	–22 56	–1 10	10
11	5 20 41	7 25 15 7	6 4 39 7	11 25 25 52	7 20 11 12	9 4 1 42	7 0 0 42	9 5 13 1	1 25 49 48	1 25 47 38	–23 1	–7 11	11
12	5 24 37	7 26 16 7	6 19 23 8	11 25 43 55	7 21 45 7	9 4 14 16	7 1 15 34	9 5 19 3	1 25 46 37	1 25 47 39	–23 5	–12 54	12
13	5 28 34	7 27 17 9	7 4 13 3	11 26 2 27	7 23 19 6	9 4 26 55	7 2 30 27	9 5 25 8	1 25 43 27	1 25 47 45	–23 10	–17 53	13
14	5 32 31	7 28 18 11	7 19 1 40	11 26 21 27	7 24 53 10	9 4 39 37	7 3 45 22	9 5 31 16	1 25 40 16	1 25 47 53	–23 13	–21 45	14
15	5 36 27	7 29 19 15	8 3 41 28	11 26 40 55	7 26 27 18	9 4 52 24	7 5 0 16	9 5 37 27	1 25 37 5	1 25 47 55	–23 17	–24 9	15
16	5 40 24	8 0 20 19	8 18 5 37	11 27 0 50	7 28 1 33	9 5 5 14	7 6 15 12	9 5 43 41	1 25 33 54	1 25 47 43	–23 19	–24 53	16
17	5 44 20	8 1 21 23	9 2 8 53	11 27 21 13	7 29 35 55	9 5 18 9	7 7 30 10	9 5 49 58	1 25 30 43	1 25 47 15	–23 22	–23 58	17
18	5 48 17	8 2 22 28	9 15 48 7	11 27 42 1	8 1 10 24	9 5 31 7	7 8 45 8	9 5 56 17	1 25 27 33	1 25 46 31	–23 23	–21 40	18
19	5 52 13	8 3 23 34	9 29 2 29	11 28 3 14	8 2 45 2	9 5 44 8	7 10 0 7	9 6 2 39	1 25 24 22	1 25 45 39	–23 25	–18 15	19
20	5 56 10	8 4 24 40	10 11 53 13	11 28 24 53	8 4 19 50	9 5 57 14	7 11 15 8	9 6 9 3	1 25 21 11	1 25 44 49	–23 26	–14 4	20
21	6 0 6	8 5 25 46	10 24 22 57	11 28 46 55	8 5 54 48	9 6 10 22	7 12 30 8	9 6 15 30	1 25 18 0	1 25 44 12	–23 26	–9 24	21
22	6 4 3	8 6 26 52	11 6 35 40	11 29 9 20	8 7 29 57	9 6 23 34	7 13 45 9	9 6 21 59	1 25 14 50	1 25 44 1	–23 26	–4 28	22
23	6 8 0	8 7 27 59	11 18 35 54	11 29 32 9	8 9 5 18	9 6 36 49	7 15 0 12	9 6 28 30	1 25 11 39	1 25 44 20	–23 26	+0 33	23
24	6 11 56	8 8 29 6	0 0 28 24	11 29 55 19	8 10 40 52	9 6 50 7	7 16 15 14	9 6 35 4	1 25 8 28	1 25 45 10	–23 25	5 29	24
25	6 15 53	8 9 30 13	0 12 17 56	0 0 18 51	8 12 16 40	9 7 3 28	7 17 30 18	9 6 41 40	1 25 5 17	1 25 46 24	–23 23	10 14	25
26	6 19 49	8 10 31 20	0 24 8 52	0 0 42 43	8 13 52 42	9 7 16 52	7 18 45 22	9 6 48 18	1 25 2 6	1 25 47 50	–23 21	14 36	26
27	6 23 46	8 11 32 27	1 6 5 10	0 1 6 56	8 15 28 58	9 7 30 19	7 20 0 26	9 6 54 57	1 24 58 55	1 25 49 10	–23 19	18 27	27
28	6 27 42	8 12 33 34	1 18 10 6	0 1 31 28	8 17 5 30	9 7 43 49	7 21 15 31	9 7 1 39	1 24 55 45	1 25 50 3	–23 16	21 34	28
29	6 31 39	8 13 34 41	2 0 26 16	0 1 56 20	8 18 42 18	9 7 57 21	7 22 30 37	9 7 8 23	1 24 52 34	1 25 50 11	–23 13	23 45	29
30	6 35 35	8 14 35 49	2 12 55 21	0 2 21 29	8 20 19 20	9 8 10 56	7 23 45 44	9 7 15 8	1 24 49 23	1 25 49 20	–23 9	24 48	30
31	6 39 32	8 15 36 57	2 25 38 23	0 2 46 57	8 21 56 38	9 8 24 34	7 25 0 51	9 7 21 56	1 24 46 12	1 25 47 28	–23 5	24 34	31

दैनिक निरयण ग्रह स्पष्ट (प्रातः $5^{घं}$–$30^{मिं}$) (1 जन. से 5 फर. 2021 ई. तक)

1 जन., को अयनांश = 24°/08′/46″ 1 फर., को अयनांश 24°/08′/51″

ता.	सम्पातिक काल	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	मध्यम राहु	स्पष्ट राहु	सूर्य क्रांति	चंद्र क्रांति	ता.
जन.	0-00 Hr. GMT	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	
जन.	6 43 29	8 16 38 5	3 8 35 34	0 3 12 43	8 23 34 11	9 8 38 14	7 26 15 58	9 7 28 44	1 24 43 2	1 25 44 40	–23 0	23 1	जन.
2	6 47 25	8 17 39 13	3 21 46 32	0 3 38 46	8 25 11 58	9 8 51 56	7 27 31 7	9 7 35 35	1 24 39 51	1 25 41 14	–22 55	20 13	2
3	6 51 22	8 18 40 21	4 5 10 30	0 4 5 5	8 26 49 58	9 9 5 41	7 28 46 15	9 7 42 27	1 24 36 40	1 25 37 40	–22 49	16 18	3
4	6 55 18	8 19 41 30	4 18 46 31	0 4 31 40	8 28 28 10	9 9 19 28	8 0 1 25	9 7 49 21	1 24 33 29	1 25 34 29	–22 43	11 31	4
5	6 59 15	8 20 42 39	5 2 33 31	0 4 58 33	9 0 6 31	9 9 33 17	8 1 16 35	9 7 56 16	1 24 30 19	1 25 32 10	–22 37	6 5	5
6	7 3 11	8 21 43 47	5 16 30 28	0 5 25 40	9 1 45 0	9 9 47 8	8 2 31 45	9 8 3 12	1 24 27 8	1 25 31 2	–22 30	+0 17	6
7	7 7 8	8 22 44 57	6 0 36 11	0 5 53 2	9 3 23 32	9 10 1 2	8 3 46 57	9 8 10 9	1 24 23 57	1 25 31 7	–22 22	–5 35	7
8	7 11 4	8 23 46 6	6 14 49 15	0 6 20 39	9 5 2 3	9 10 14 56	8 5 2 8	9 8 17 8	1 24 20 46	1 25 32 10	–22 14	–11 14	8
9	7 15 1	8 24 47 16	6 29 7 46	0 6 48 30	9 6 40 29	9 10 28 53	8 6 17 20	9 8 24 8	1 24 17 36	1 25 33 40	–22 6	–16 20	9
10	7 18 58	8 25 48 26	7 13 29 2	0 7 16 36	9 8 18 43	9 10 42 51	8 7 32 33	9 8 31 10	1 24 14 25	1 25 34 56	–21 57	–20 30	10
11	7 22 54	8 26 49 35	7 27 49 29	0 7 44 56	9 9 56 38	9 10 56 51	8 8 47 45	9 8 38 12	1 24 11 14	1 25 35 16	–21 48	–23 24	11
12	7 26 51	8 27 50 45	8 12 4 47	0 8 13 30	9 11 34 4	9 11 10 53	8 10 2 58	9 8 45 15	1 24 8 3	1 25 34 8	–21 39	–24 46	12
13	7 30 47	8 28 51 54	8 26 10 14	0 8 42 17	9 13 10 50	9 11 24 57	8 11 18 11	9 8 52 19	1 24 4 53	1 25 31 16	–21 29	–24 32	13
14	7 34 44	8 29 53 3	9 10 1 22	0 9 11 17	9 14 46 45	9 11 39 1	8 12 33 25	9 8 59 24	1 24 1 42	1 25 26 44	–21 18	–22 45	14
15	7 38 40	9 0 54 11	9 23 34 30	0 9 40 30	9 16 21 33	9 11 53 7	8 13 48 38	9 9 6 29	1 23 58 31	1 25 20 57	–21 7	–19 43	15
16	7 42 37	9 1 55 19	10 6 47 22	0 10 9 55	9 17 54 55	9 12 7 14	8 15 3 51	9 9 13 36	1 23 55 20	1 25 14 34	–20 56	–15 44	16
17	7 46 33	9 2 56 26	10 19 39 25	0 10 39 32	9 19 26 33	9 12 21 23	8 16 19 4	9 9 20 42	1 23 52 10	1 25 8 21	–20 44	–11 7	17
18	7 50 30	9 3 57 33	11 2 11 39	0 11 9 21	9 20 56 1	9 12 35 32	8 17 34 17	9 9 27 50	1 23 48 59	1 25 3 0	–20 32	–6 10	18
19	7 54 26	9 4 58 39	11 14 26 43	0 11 39 21	9 22 22 52	9 12 49 42	8 18 49 30	9 9 34 57	1 23 45 48	1 24 59 4	–20 20	–1 5	19
20	7 58 23	9 5 59 44	11 26 28 27	0 12 9 32	9 23 46 38	9 13 3 53	8 20 4 43	9 9 42 5	1 23 42 37	1 24 56 51	–20 7	+3 57	20
21	8 2 20	9 7 0 48	0 8 21 22	0 12 39 53	9 25 6 39	9 13 18 5	8 21 19 56	9 9 49 14	1 23 39 27	1 24 56 17	–19 54	8 48	21
22	8 6 16	9 8 1 51	0 20 10 42	0 13 10 25	9 26 22 20	9 13 32 17	8 22 35 8	9 9 56 22	1 23 36 16	1 24 57 3	–19 40	13 18	22
23	8 10 13	9 9 2 53	1 2 1 35	0 13 41 7	9 27 32 57	9 13 46 30	8 23 50 21	9 10 3 31	1 23 33 5	1 24 58 31	–19 26	17 20	23
24	8 14 9	9 10 3 54	1 13 59 11	0 14 11 59	9 28 37 44	9 14 0 44	8 25 5 33	9 10 10 39	1 23 29 54	1 24 59 56	–19 12	20 41	24
25	8 18 6	9 11 4 54	1 26 8 4	0 14 43 0	9 29 35 54	9 14 14 58	8 26 20 45	9 10 17 47	1 23 26 43	1 25 0 28	–18 58	23 11	25
26	8 22 2	9 12 5 53	2 8 32 10	0 15 14 10	10 0 26 34	9 14 29 12	8 27 35 57	9 10 24 56	1 23 23 33	1 24 59 22	–18 43	24 37	26
27	8 25 59	9 13 6 52	2 21 14 12	0 15 45 29	10 1 8 54	9 14 43 27	8 28 51 8	9 10 32 4	1 23 20 22	1 24 56 9	–18 27	24 49	27
28	8 29 56	9 14 7 49	3 4 15 37	0 16 16 56	10 1 42 6	9 14 57 43	9 0 6 20	9 10 39 13	1 23 17 11	1 24 50 39	–18 12	23 40	28
29	8 33 52	9 15 8 45	3 17 36 8	0 16 48 32	10 2 5 26	9 15 11 56	9 1 21 31	9 10 46 21	1 23 14 0	1 24 43 8	–17 56	21 11	29
30	8 37 49	9 16 9 40	4 1 14 0	0 17 20 16	10 2 18 12	9 15 26 12	9 2 36 42	9 10 53 28	1 23 10 50	1 24 34 16	–17 39	17 28	30
31	8 41 45	9 17 10 35	4 15 6 2	0 17 52 8	10 2 19 58	9 15 40 27	9 3 51 53	9 11 0 35	1 23 7 39	1 24 25 1	–17 23	12 46	31
फर.	8 45 42	9 18 11 28	4 29 8 16	0 18 24 7	10 2 10 30	9 15 54 42	9 5 7 4	9 11 7 42	1 23 4 28	1 24 16 28	–17 6	7 20	फर.
2	8 49 38	9 19 12 21	5 13 16 27	0 18 56 14	10 1 49 49	9 16 8 57	9 6 22 15	9 11 14 49	1 23 1 17	1 24 9 33	–16 49	+1 29	2
3	8 53 35	9 20 13 13	5 27 26 52	0 19 28 29	10 1 18 15	9 16 23 11	9 7 37 26	9 11 21 54	1 22 58 7	1 24 4 54	–16 31	–4 28	3
4	8 57 31	9 21 14 6	6 11 36 39	0 20 [illegible] 50	10 0 36 27	9 16 37 26	9 8 52 37	9 11 28 59	1 22 54 56	1 24 2 38	–16 13	–10 11	4
5	9 1 28	9 22 14 55	6 25 43 50	0 20 [illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	1 22 51 45	1 24 2 18	–15 55	–15 22	5

दैनिक निरयण ग्रह स्पष्ट (6 फरवरी से 12 मार्च, 2021 ई. तक)

1 मार्च, 2021 ई. को अयनांश 24° /08'/54''

ता.	सम्पातिक काल	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	मध्यम राहु	स्पष्ट राहु	सूर्य क्रांति	चंद्र क्रांति	फर.
फर.	0-00 Hr. GMT	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	
6	9 5 25	9 23 15 44	7 9 47 18	0 21 5 55	9 28 46 50	9 17 5 53	9 11 22 58	9 11 43 7	1 22 48 34	1 24 2 58	–15 37	–19 42	6
7	9 9 21	9 24 16 33	7 23 46 16	0 21 38 37	9 27 42 1	9 17 20 6	9 12 38 8	9 11 50 10	1 22 45 24	1 24 3 29	–15 18	–22 52	7
8	9 13 18	9 25 17 20	8 7 39 58	0 22 11 26	9 26 32 59	9 17 34 19	9 13 53 18	9 11 57 12	1 22 42 13	1 24 2 37	–14 59	–24 38	8
9	9 17 14	9 26 18 7	8 21 27 7	0 22 44 22	9 25 21 45	9 17 48 30	9 15 8 28	9 12 4 13	1 22 39 2	1 23 59 26	–14 40	–24 51	9
10	9 21 11	9 27 18 52	9 5 5 57	0 23 17 25	9 24 10 16	9 18 2 41	9 16 23 38	9 12 11 12	1 22 35 51	1 23 53 25	–14 21	–23 34	10
11	9 25 7	9 28 19 37	9 18 34 12	0 23 50 33	9 23 0 25	9 18 16 51	9 17 38 46	9 12 18 11	1 22 32 40	1 23 44 39	–14 1	–20 57	11
12	9 29 4	9 29 20 20	10 1 49 30	0 24 23 48	9 21 53 55	9 18 31 1	9 18 53 55	9 12 25 8	1 22 29 30	1 23 33 41	–13 41	–17 16	12
13	9 33 0	10 0 21 1	10 14 49 49	0 24 57 9	9 20 52 12	9 18 45 8	9 20 9 3	9 12 32 4	1 22 26 19	1 23 21 31	–13 21	–12 49	13
14	9 36 57	10 1 21 41	10 27 33 59	0 25 30 36	9 19 56 27	9 18 59 15	9 21 24 11	9 12 38 59	1 22 23 8	1 23 9 18	–13 1	–7 54	14
15	9 40 54	10 2 22 20	11 10 2 0	0 26 4 8	9 19 7 27	9 19 13 21	9 22 39 18	9 12 45 52	1 22 19 57	1 22 58 11	–12 40	–2 46	15
16	9 44 50	10 3 22 57	11 22 15 12	0 26 37 46	9 18 25 49	9 19 27 25	9 23 54 25	9 12 52 44	1 22 16 47	1 22 49 2	–12 20	+2 23	16
17	9 48 47	10 4 23 32	0 4 16 6	0 27 11 29	9 17 51 52	9 19 41 28	9 25 9 31	9 12 59 34	1 22 13 36	1 22 42 25	–11 59	7 22	17
18	9 52 43	10 5 24 6	0 16 8 29	0 27 45 17	9 17 25 40	9 19 55 30	9 26 24 37	9 13 6 23	1 22 10 25	1 22 38 24	–11 38	12 2	18
19	9 56 40	10 6 24 38	0 27 56 51	0 28 19 10	9 17 7 12	9 20 9 30	9 27 39 41	9 13 13 10	1 22 7 14	1 22 36 37	–11 16	16 15	19
20	10 0 36	10 7 25 8	1 9 46 38	0 28 53 8	9 16 56 14	9 20 23 28	9 28 54 45	9 13 19 54	1 22 4 4	1 22 36 18	–10 55	19 50	20
21	10 4 33	10 8 25 36	1 21 43 9	0 29 27 11	9 16 52 28	9 20 37 24	10 0 9 49	9 13 26 37	1 22 0 53	1 22 36 27	–10 33	+22 37	21
22	10 8 29	10 9 26 2	2 3 52 0	1 0 1 18	9 16 55 37	9 20 51 19	10 1 24 51	9 13 33 18	1 21 57 42	1 22 35 55	–10 12	24 25	22
23	10 12 26	10 10 26 26	2 16 18 14	1 0 35 29	9 17 5 14	9 21 5 12	10 2 39 53	9 13 39 58	1 21 54 31	1 22 33 41	–9 50	25 3	23
24	10 16 23	10 11 26 49	2 29 5 59	1 1 9 44	9 17 20 58	9 21 19 3	10 3 54 55	9 13 46 35	1 21 51 21	1 22 29 0	–9 28	24 24	24
25	10 20 19	10 12 27 10	3 12 17 52	1 1 44 4	9 17 42 22	9 21 32 51	10 5 9 55	9 13 53 10	1 21 48 10	1 22 21 32	–9 5	22 23	25
26	10 24 16	10 13 27 28	3 25 54 33	1 2 18 27	9 18 9 5	9 21 46 38	10 6 24 55	9 13 59 43	1 21 44 59	1 22 11 32	–8 43	19 3	26
27	10 28 12	10 14 27 45	4 9 54 11	1 2 52 54	9 18 40 45	9 22 0 22	10 7 39 54	9 14 6 13	1 21 41 48	1 21 59 45	–8 20	14 35	27
28	10 32 9	10 15 28 1	4 24 12 25	1 3 27 25	9 19 16 57	9 22 14 5	10 8 54 52	9 14 12 42	1 21 38 37	1 21 47 20	–7 58	9 12	28
मार्च	10 36 5	10 16 28 14	5 8 43 9	1 4 2 0	9 19 57 24	9 22 27 45	10 10 9 50	9 14 19 8	1 21 35 27	1 21 35 38	–7 35	+3 15	मार्च
2	10 40 2	10 17 28 26	5 23 19 9	1 4 36 37	9 20 41 47	9 22 41 22	10 11 24 47	9 14 25 32	1 21 32 16	1 21 25 49	–7 12	–2 55	2
3	10 43 58	10 18 28 36	6 7 53 30	1 5 11 19	9 21 29 49	9 22 54 58	10 12 39 44	9 14 31 53	1 21 29 5	1 21 18 44	–6 49	–8 56	3
4	10 47 55	10 19 28 45	6 22 20 39	1 5 46 3	9 22 21 16	9 23 8 31	10 13 54 40	9 14 38 12	1 21 25 54	1 21 14 34	–6 26	–14 26	4
5	10 51 52	10 20 28 52	7 6 36 54	1 6 20 51	9 23 15 52	9 23 22 1	10 15 9 36	9 14 44 28	1 21 22 44	1 21 12 53	–6 3	–19 4	5
6	10 55 48	10 21 28 58	7 20 40 28	1 6 55 43	9 24 13 25	9 23 35 28	10 16 24 31	9 14 50 42	1 21 19 33	1 21 12 41	–5 40	–22 32	6
7	10 59 45	10 22 29 2	8 4 31 1	1 7 30 37	9 25 13 42	9 23 48 53	10 17 39 25	9 14 56 52	1 21 16 22	1 21 12 37	–5 17	–24 36	7
8	11 3 41	10 23 29 5	8 18 9 7	1 8 5 35	9 26 16 34	9 24 2 15	10 18 54 18	9 15 3 1	1 21 13 11	1 21 11 16	–4 53	–25 9	8
9	11 7 38	10 24 29 5	9 1 35 31	1 8 40 36	9 27 21 50	9 24 15 34	10 20 9 11	9 15 9 6	1 21 10 0	1 21 7 34	–4 30	–24 12	9
10	11 11 34	10 25 29 4	9 14 50 50	1 9 15 41	9 28 29 24	9 24 28 49	10 21 24 4	9 15 15 8	1 21 6 49	1 21 0 50	–4 6	–21 55	10
11	11 15 31	10 26 29 1	9 27 55 15	1 9 50 48	9 29 39 6	9 24 42 1	10 22 38 55	9 15 21 7	1 21 3 39	1 20 51 5	–3 43	–18 31	11
12	11 19 27	10 27 28 57	10 10 48 29	1 10 25 58	10 0 50 51	9 24 55 12	10 23 53 46	9 15 27 3	1 21 0 28	1 20 38 53	–3 19	–14 17	12

दैनिक निरयण ग्रह स्पष्ट

(13 मार्च से 15 अप्रैल 2021 ई. तक)

1 अप्रैल, 2021 ई. को अयनांश 24°/08′/57″

ता. मार्च	सम्पातिक काल 0-00 Hr. GMT	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	मध्यम राहु	स्पष्ट राहु	सूर्य क्रांति	चंद्र क्रांति	तारीख
		रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	
13	11 23 24	10 28 28 51	10 23 30 2	1 11 1 11	10 2 4 31	9 25 8 18	10 25 8 36	9 15 32 57	1 20 57 17	1 20 25 13	−2 56	−9 29	13
14	11 27 20	10 29 28 43	11 5 59 33	1 11 36 28	10 3 20 3	9 25 21 21	10 26 23 25	9 15 38 46	1 20 54 6	1 20 11 20	−2 32	−4 22	14
15	11 31 17	11 0 28 33	11 18 17 7	1 12 11 46	10 4 37 20	9 25 34 20	10 27 38 14	9 15 44 33	1 20 50 55	1 19 58 27	−2 8	+0 51	15
16	11 35 14	11 1 28 21	0 0 23 29	1 12 47 8	10 5 56 18	9 25 47 16	10 28 53 1	9 15 50 16	1 20 47 45	1 19 47 35	−1 44	5 57	16
17	11 39 10	11 2 28 7	0 12 20 24	1 13 22 32	10 7 16 55	9 26 0 8	11 0 7 47	9 15 55 56	1 20 44 34	1 19 39 24	−1 21	10 48	17
18	11 43 7	11 3 27 51	0 24 10 32	1 13 57 59	10 8 39 7	9 26 12 56	11 1 22 32	9 16 1 33	1 20 41 23	1 19 34 3	−0 57	15 12	18
19	11 47 3	11 4 27 32	1 5 57 37	1 14 33 27	10 10 2 51	9 26 25 40	11 2 37 17	9 16 7 6	1 20 38 12	1 19 31 19	−0 33	19 1	19
20	11 51 0	11 5 27 12	1 17 46 0	1 15 8 59	10 11 28 5	9 26 38 20	11 3 52 0	9 16 12 35	1 20 35 1	1 19 30 30	−0 10	22 4	20
21	11 54 56	11 6 26 48	1 29 40 52	1 15 44 32	10 12 54 47	9 26 50 57	11 5 6 42	9 16 18 0	1 20 31 51	1 19 30 39	+0 14	24 11	21
22	11 58 53	11 7 26 23	2 11 47 35	1 16 20 8	10 14 22 55	9 27 3 29	11 6 21 23	9 16 23 22	1 20 28 40	1 19 30 39	0 38	25 14	22
23	12 2 49	11 8 25 56	2 24 11 42	1 16 55 45	10 15 52 28	9 27 15 57	11 7 36 2	9 16 28 40	1 20 25 29	1 19 29 26	1 2	25 3	23
24	12 6 46	11 9 25 26	3 6 58 11	1 17 31 25	10 17 23 24	9 27 28 21	11 8 50 41	9 16 33 55	1 20 22 18	1 19 26 13	1 25	23 33	24
25	12 10 43	11 10 24 54	3 20 10 52	1 18 7 6	10 18 55 44	9 27 40 40	11 10 5 19	9 16 39 6	1 20 19 8	1 19 20 33	1 49	20 45	25
26	12 14 39	11 11 24 19	4 3 51 51	1 18 42 49	10 20 29 26	9 27 52 55	11 11 19 55	9 16 44 12	1 20 15 57	1 19 12 35	2 12	16 44	26
27	12 18 36	11 12 23 42	4 18 0 30	1 19 18 34	10 22 4 30	9 28 5 6	11 12 34 30	9 16 49 15	1 20 12 46	1 19 2 53	2 36	11 40	27
28	12 22 32	11 13 23 4	5 2 33 17	1 19 54 20	10 23 40 56	9 28 17 12	11 13 49 4	9 16 54 13	1 20 9 35	1 18 52 28	2 59	+5 49	28
29	12 26 29	11 14 22 23	5 17 23 38	1 20 30 9	10 25 18 45	9 28 29 13	11 15 3 37	9 16 59 8	1 20 6 24	1 18 42 32	3 23	−0 29	29
30	12 30 25	11 15 21 40	6 2 22 50	1 21 5 58	10 26 57 55	9 28 41 8	11 16 18 10	9 17 3 58	1 20 3 14	1 18 34 9	+3 46	−6 49	30
31	12 34 22	11 16 20 55	6 17 21 41	1 21 41 49	10 28 38 28	9 28 53 0	11 17 32 41	9 17 8 45	1 20 0 3	1 18 28 8	4 9	−12 47	31
अप्रै.	12 38 18	11 17 20 8	7 2 11 45	1 22 17 42	11 0 20 25	9 29 4 47	11 18 47 11	9 17 13 27	1 19 56 52	1 18 24 44	4 33	−17 57	अप्रै
2	12 42 15	11 18 19 19	7 16 46 42	1 22 53 36	11 2 3 45	9 29 16 29	11 20 1 40	9 17 18 5	1 19 53 41	1 18 23 37	4 56	−21 56	2
3	12 46 12	11 19 18 29	8 1 2 50	1 23 29 32	11 3 48 29	9 29 28 6	11 21 16 8	9 17 22 39	1 19 50 31	1 18 23 59	5 19	−24 28	3
4	12 50 8	11 20 17 37	8 14 58 42	1 24 5 30	11 5 34 38	9 29 39 37	11 22 30 35	9 17 27 8	1 19 47 20	1 18 24 44	5 42	−25 24	4
5	12 54 5	11 21 16 43	8 28 34 53	1 24 41 29	11 7 22 13	9 29 51 4	11 23 45 1	9 17 31 33	1 19 44 9	1 18 24 41	6 4	−24 47	5
6	12 58 1	11 22 15 47	9 11 52 51	1 25 17 29	11 9 11 14	10 0 2 25	11 24 59 27	9 17 35 53	1 19 40 58	1 18 22 54	6 27	−22 44	6
7	13 1 58	11 23 14 49	9 24 54 36	1 25 53 32	11 11 1 41	10 0 13 40	11 26 13 51	9 17 40 9	1 19 37 48	1 18 18 48	6 50	−19 33	7
8	13 5 54	11 24 13 51	10 7 42 10	1 26 29 35	11 12 53 36	10 0 24 50	11 27 28 15	9 17 44 20	1 19 34 37	1 18 12 20	7 12	−15 30	8
9	13 9 51	11 25 12 50	10 20 17 11	1 27 5 40	11 14 46 58	10 0 35 54	11 28 42 37	9 17 48 26	1 19 31 26	1 18 3 54	7 35	−10 49	9
10	13 13 47	11 26 11 47	11 2 41 9	1 27 41 47	11 16 41 47	10 0 46 53	11 29 56 59	9 17 52 28	1 19 28 15	1 17 54 16	7 57	−5 47	10
11	13 17 44	11 27 10 42	11 14 55 11	1 28 17 55	11 18 38 3	10 0 57 46	0 1 11 19	9 17 56 25	1 19 25 4	1 17 44 22	8 19	−0 35	11
12	13 21 41	11 28 9 36	11 27 0 24	1 28 54 5	11 20 35 44	10 1 8 32	0 2 25 39	9 18 0 17	1 19 21 54	1 17 35 10	8 41	+4 35	12
13	13 25 37	11 29 8 27	0 8 58 3	1 29 30 15	11 22 34 50	10 1 19 13	0 3 39 57	9 18 4 4	1 19 18 43	1 17 27 28	9 3	9 33	13
14	13 29 34	0 0 7 16	0 20 49 41	2 0 6 28	11 24 35 18	10 1 29 47	0 4 54 14	9 18 7 47	1 19 15 32	1 17 21 48	9 25	14 8	14
15	13 33 30	0 1 6 4	1 2 37 27	2 0 42 41	11 26 37 4	10 1 40 15	0 6 8 30	9 18 11 24	1 19 12 21	1 17 18 23	9 46	18 10	15

यूरेनस, नैपच्यून एवं प्लूटो के निरयण ग्रह स्पष्ट प्रातः 5/30 बजे (भा. स्टै. टा.) वि. २०७७ (2020–21 ई.)

ता.	यूरेनस				नैपच्यून			प्लूटो		
अप्रै.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	रा.	अं.	क.
1	0	11	1	41	10	25	8	9	0	43
4	0	11	11	27	10	25	14	9	0	45
7	0	11	21	21	10	25	21	9	0	47
10	0	11	31	22	10	25	27	9	0	48
13	0	11	41	29	10	25	33	9	0	49
16	0	11	51	42	10	25	39	9	0	50
19	0	12	1	58	10	25	44	9	0	51
22	0	12	12	17	10	25	50	9	0	51
25	0	12	22	38	10	25	55	9	0	51
28	0	12	32	59	10	26	00	9	0	51
मई	0	12	43	20	10	26	5	9	0	51
4	0	12	53	39	10	26	10	9	0	50
7	0	13	3	55	10	26	14	9	0	49
10	0	13	14	7	10	26	18	9	0	48
13	0	13	24	14	10	26	22	9	0	47
16	0	13	34	15	10	26	26	9	0	45
19	0	13	44	10	10	26	30	9	0	43
22	0	13	53	56	10	26	33	9	0	41
25	0	14	3	34	10	26	36	9	0	39
28	0	14	13	1	10	26	38	9	0	37
31	0	14	22	17	10	26	41	9	0	34
जून	0	14	25	20	10	26	41	9	0	33
4	0	14	34	19	10	26	43	9	0	30
7	0	14	43	6	10	26	45	9	0	27
10	0	14	51	38	10	26	47	9	0	24
13	0	14	59	55	10	26	48	9	0	20
16	0	15	7	55	10	26	49	9	0	17
19	0	15	15	39	10	26	49	9	0	13
22	0	15	23	6	10	26	49	9	0	9
25	0	15	30	13	10	26	49	9	0	5
28	0	15	37	1	10	26	49	9	0	1
30	0	15	41	21	10	26	49	8	29	58

ता.	यूरेनस				नैपच्यून			प्लूटो		
जुला	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	रा.	अं.	क.
जुला	0	15	43	28	10	26	48	8	29	57
4	0	15	49	34	10	26	47	8	29	53
7	0	15	55	19	10	26	46	8	29	48
10	0	16	0	42	10	26	45	8	29	44
13	0	16	5	41	10	26	43	8	29	40
16	0	16	10	18	10	26	41	8	29	36
19	0	16	14	29	10	26	39	8	29	31
22	0	16	18	17	10	26	36	8	29	27
20	0	16	21	39	10	26	33	8	29	23
25	0	16	24	35	10	26	30	8	29	18
28	0	16	27	6	10	26	27	8	29	14
अग.	0	16	27	50	10	26	26	8	29	13
4	0	16	29	46	10	26	23	8	29	9
7	0	16	31	15	10	26	19	8	29	5
10	0	16	32	18	10	26	15	8	29	01
13	0	16	32	54	10	26	11	8	28	57
16	0	16	33	3	10	26	7	8	28	53
19	0	16	32	45	10	26	2	8	28	50
22	0	16	32	1	10	25	58	8	28	46
25	0	16	30	50	10	25	53	8	28	43
28	0	16	29	12	10	25	49	8	28	40
31	0	16	27	9	10	25	44	8	28	37
सितं.	0	16	26	23	10	25	42	8	28	36
4	0	16	23	46	10	25	37	8	28	34
7	0	16	20	45	10	25	32	8	28	31
10	0	16	17	20	10	25	27	8	28	29
13	0	16	13	31	10	25	22	8	28	27
16	0	16	9	19	10	25	17	8	28	26
19	0	16	4	46	10	25	13	8	28	24
22	0	15	59	52	10	25	8	8	28	23
25	0	15	54	37	10	25	3	8	28	22
28	0	15	49	5	10	24	58	8	28	21
अक्तू.	0	15	43	15	10	24	53	8	28	21
4	0	15	37	9	10	24	49	8	28	21

ता.	यूरेनस				नैपच्यून			प्लूटो		
अक्तू	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	रा.	अं.	क.
7	0	15	30	48	10	24	44	8	28	21
10	0	15	24	13	10	24	40	8	28	21
13	0	15	17	27	10	24	36	8	28	22
16	0	15	10	30	10	24	32	8	28	22
19	0	15	3	24	10	24	28	8	28	24
22	0	14	56	10	10	24	25	8	28	25
25	0	14	48	51	10	24	21	8	28	27
28	0	14	41	29	10	24	18	8	28	29
31	0	14	34	4	10	24	15	8	28	31
नवं.	0	14	31	36	10	24	14	8	28	32
4	0	14	24	11	10	24	12	8	28	34
7	0	14	16	48	10	24	9	8	28	37
10	0	14	9	29	10	24	7	8	28	40
13	0	14	2	15	10	24	6	8	28	43
16	0	13	55	8	10	24	4	8	28	47
19	0	13	48	9	10	24	3	8	28	50
22	0	13	41	22	10	24	2	8	28	54
25	0	13	34	47	10	24	1	8	28	58
28	0	13	28	25	10	24	1	8	29	3
दिसं.	0	13	22	19	10	24	1	8	29	7
4	0	13	16	29	10	24	2	8	29	12
7	0	13	10	57	10	24	2	8	29	17
10	0	13	5	45	10	24	3	8	29	22
13	0	13	0	53	10	24	5	8	29	27
16	0	12	56	23	10	24	6	8	29	32
19	0	12	52	15	10	24	8	8	29	38
22	0	12	48	32	10	24	10	8	29	43
25	0	12	45	14	10	24	13	8	29	49
28	0	12	42	21	10	24	16	8	29	55
31	0	12	39	54	10	24	19	9	0	0
जन. 2021	0	12	39	11	10	24	20	9	0	2
4	0	12	37	20	10	24	23	9	0	8
7	0	12	35	56	10	24	27	9	0	14
10	0	12	35	0	10	24	31	9	0	20

ता.	यूरेनस				नैपच्यून			प्लूटो		
जन.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	रा.	अं.	क.
13	0	12	34	32	10	24	35	9	0	26
16	0	12	34	33	10	24	40	9	0	32
19	0	12	35	2	10	24	44	9	0	38
22	0	12	36	0	10	24	49	9	0	44
25	0	12	37	26	10	24	55	9	0	50
28	0	12	39	20	10	25	0	9	0	56
31	0	12	41	42	10	25	5	9	1	2
फर.	0	12	42	36	10	25	7	9	1	4
4	0	12	45	34	10	25	13	9	1	9
7	0	12	49	0	10	25	19	9	1	15
10	0	12	52	53	10	25	25	9	1	21
13	0	12	57	11	10	25	31	9	1	26
16	0	13	1	56	10	25	38	9	1	31
19	0	13	7	5	10	25	44	9	1	37
22	0	13	12	39	10	25	51	9	1	42
25	0	13	18	35	10	25	57	9	1	46
28	0	13	24	55	10	26	4	9	1	51
मार्च	0	13	27	6	10	26	6	9	1	53
4	0	13	33	54	10	26	13	9	1	57
7	0	13	41	2	10	26	20	9	2	1
10	0	13	48	30	10	26	27	9	2	6
13	0	13	56	17	10	26	34	9	2	10
16	0	14	4	22	10	26	40	9	2	13
19	0	14	12	44	10	26	47	9	2	17
22	0	14	21	21	10	26	54	9	2	20
25	0	14	30	13	10	27	1	9	2	23
28	0	14	39	18	10	27	7	9	2	26
31	0	14	48	35	10	27	14	9	2	28
अप्रै.	0	14	51	44	10	27	16	9	2	29
4	0	15	1	16	10	27	23	9	2	31
7	0	15	10	59	10	27	29	9	2	33
10	0	15	20	50	10	27	35	9	2	35
13	0	15	30	50	10	27	41	9	2	36

जालन्धर में दैनिक चन्द्रोदय–चन्द्रास्त काल (भा. स्टैं. टा.) (सन् 2020-21 ई.)

तारीख	जनवरी 2020				फरवरी 2020				मार्च 2020				अप्रैल 2020				मई 2020				जून 2020				जुलाई 2020				अगस्त 2020				तारीख
	उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		
	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	
1	11	36	23	17	11	33	-	-	10	37	-	-	11	29	1	7	12	22	1	39	14	35	2	17	15	44	2	6	17	48	3	7	1
2	12	6	-	-	12	5	0	41	11	14	0	24	12	26	2	4	13	28	2	23	15	42	2	52	16	51	2	47	18	41	4	4	2
3	12	35	0	10	12	40	1	37	11	56	1	21	13	29	2	56	14	35	3	4	16	50	3	29	17	57	3	32	19	28	5	4	3
4	13	4	1	3	13	20	2	35	12	45	2	20	14	36	3	44	15	43	3	42	17	59	4	8	19	00	4	22	20	8	6	4	4
5	13	35	1	57	14	6	3	34	13	40	3	18	15	45	4	29	16	52	4	19	19	8	4	52	19	58	5	18	20	44	7	4	5
6	14	8	2	53	14	59	4	35	14	43	4	14	16	55	5	10	18	1	4	56	20	14	5	40	20	49	6	17	21	16	8	1	6
7	14	46	3	51	16	0	5	34	15	50	5	6	18	06	5	48	19	11	5	35	21	16	6	34	21	33	7	17	21	45	8	56	7
8	15	30	4	51	17	6	6	30	17	0	5	55	19	16	6	26	20	21	6	17	22	10	7	32	22	12	8	18	22	13	9	50	8
9	16	20	5	52	18	16	7	21	18	11	6	38	20	26	7	4	21	29	7	3	22	58	8	32	22	45	9	15	22	42	10	43	9
10	17	18	6	53	19	26	8	7	19	21	7	19	21	36	7	45	22	33	7	54	23	39	9	32	23	16	10	11	23	11	11	37	10
11	18	21	7	51	20	36	8	49	20	31	7	58	22	44	8	29	23	30	8	50	-	-	10	31	23	45	11	6	23	43	12	31	11
12	19	28	8	44	21	44	9	27	21	40	8	36	23	48	9	17	-	-	9	48	0	15	11	27	-	-	12	00	-	-	13	26	12
13	20	37	9	32	22	51	10	4	22	48	9	14	-	-	10	8	0	21	10	47	0	47	12	22	0	13	12	52	0	18	14	23	13
14	21	45	10	15	23	56	10	41	23	55	9	55	0	47	11	5	1	4	11	45	1	16	13	16	0	42	13	46	0	58	15	21	14
15	22	51	10	53	-	-	11	19	-	-	10	39	1	39	12	2	1	42	12	42	1	44	14	9	1	12	14	41	1	44	16	19	15
16	23	56	11	30	1	1	12	0	0	59	11	27	2	25	12	59	2	15	13	37	2	13	15	2	1	46	15	38	2	37	17	14	16
17	-	-	12	5	2	4	12	43	1	59	12	19	3	6	13	55	2	46	14	31	2	42	15	56	2	23	16	36	3	37	18	7	17
18	1	00	12	41	3	5	13	31	2	53	13	13	3	41	14	50	3	14	15	24	3	13	16	52	3	6	17	35	4	42	18	54	18
19	2	4	13	19	4	3	14	23	3	42	14	9	4	13	15	44	3	42	16	16	3	49	17	50	3	56	18	33	5	49	19	37	19
20	3	7	14	00	4	55	15	17	4	26	15	5	4	43	16	37	4	11	17	10	4	28	18	49	4	52	19	27	6	58	20	17	20
21	4	10	14	45	5	43	16	14	5	4	16	1	5	11	17	29	4	41	18	5	5	14	19	47	5	54	20	17	8	6	20	54	21
22	5	10	15	34	6	25	17	10	5	38	16	56	5	39	18	23	5	14	19	2	6	6	20	43	7	00	21	2	9	14	21	30	22
23	6	7	16	28	7	2	18	6	6	10	17	49	6	9	19	17	5	51	20	1	7	5	21	35	8	7	21	43	10	21	22	6	23
24	6	59	17	24	7	36	19	1	6	39	18	42	6	40	20	13	6	32	20	58	8	7	22	22	9	14	22	21	11	28	22	45	24
25	7	45	18	21	8	7	19	55	7	8	19	35	7	13	21	9	7	20	21	55	9	12	23	5	10	20	22	55	12	35	23	26	25
26	8	26	19	18	8	37	20	47	7	36	20	29	7	51	22	6	8	13	22	49	10	17	23	43	11	25	23	30	13	41	-	-	26
27	9	3	20	14	9	5	21	40	8	6	21	23	8	35	23	3	9	12	23	38	11	22	-	-	12	30	-	-	14	44	0	13	27
28	9	36	21	8	9	34	22	33	8	38	22	18	9	24	23	58	10	14	-	-	12	27	0	20	13	36	0	6	15	43	1	3	28
29	10	6	22	1	10	4	23	28	9	13	23	14	10	18	-	-	11	19	0	24	13	31	0	54	14	41	0	45	16	37	1	58	29
30	10	35	22	54					9	52	-	-	11	18	0	51	12	24	1	4	14	37	1	29	15	47	1	27	17	25	2	56	30
31	11	4	23	47					10	[illegible]	[illegible]	[illegible]					13	29	1	41			-	-	16	50	2	15	18	6	3	55	31

जालन्धर में दैनिक चन्द्रोदय—चन्द्रास्त काल (भा. स्टैं. टा.) (सन् 2020-21 ई.)

तारीख	सितम्बर 2020		अक्तूबर 2020		नवम्बर 2020		दिसम्बर 2020		जनवरी 2021		फरवरी 2021		मार्च 2021		अप्रैल 2021		तारीख
	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	
	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	
1	18 43	4 54	18 17	5 36	18 16	7 6	18 10	7 48	19 43	9 13	21 50	9 48	20 43	8 20	23 2	8 47	1
2	19 16	5 52	18 45	6 30	18 50	8 1	18 58	8 44	20 47	9 57	22 55	10 22	21 50	8 55	- -	9 34	2
3	19 46	6 48	19 13	7 23	19 29	8 57	19 51	9 38	21 50	10 37	- -	10 57	22 58	9 32	0 11	10 26	3
4	20 15	7 42	19 43	8 17	20 12	9 53	20 49	10 29	22 53	11 13	0 1	11 31	- -	10 9	1 15	11 23	4
5	20 43	8 36	20 15	9 11	21 1	10 49	21 50	11 15	23 57	11 47	1 6	12 10	0 6	10 51	2 13	12 25	5
6	21 11	9 29	20 50	10 6	21 56	11 41	22 53	11 57	- -	12 20	2 13	12 53	1 14	11 38	3 3	13 27	6
7	21 42	10 23	21 30	11 2	22 55	12 31	23 56	12 35	1 1	12 54	3 20	13 41	2 19	12 31	3 45	14 28	7
8	22 15	11 17	22 16	11 58	23 58	13 16	- -	13 11	2 6	13 31	4 25	14 37	3 20	13 29	4 22	15 28	8
9	22 52	12 13	23 7	12 53	- -	13 57	1 00	13 45	3 14	14 12	5 25	15 37	4 15	14 31	4 55	16 25	9
10	23 35	13 9	- -	13 46	1 2	14 35	2 5	14 19	4 23	14 57	6 19	16 40	5 2	15 33	5 24	17 21	10
11	- -	14 6	0 5	14 35	2 8	15 11	3 12	14 55	5 31	15 50	7 5	17 44	5 44	16 35	5 52	18 16	11
12	0 24	15 2	1 7	15 20	3 15	15 47	4 21	15 34	6 37	16 49	7 45	18 46	6 20	17 34	6 20	19 10	12
13	1 20	15 55	2 13	16 1	4 23	16 23	5 31	16 18	7 36	17 52	8 21	19 45	6 52	18 32	6 48	20 4	13
14	2 21	16 45	3 20	16 40	5 33	17 2	6 43	17 9	8 28	18 57	8 52	20 42	7 22	19 28	7 18	21 00	14
15	3 27	17 28	4 29	17 17	6 45	17 45	7 52	18 6	9 12	20 00	9 21	21 38	7 50	20 23	7 51	21 55	15
16	4 35	18 9	5 39	17 54	7 58	18 34	8 56	19 8	9 50	21 1	9 49	22 32	8 18	21 17	8 27	22 51	16
17	5 45	18 48	6 49	18 32	9 8	19 27	9 51	20 13	10 23	21 59	10 18	23 26	8 47	22 11	9 8	23 46	17
18	6 54	19 25	8 00	19 13	10 14	20 26	10 39	21 16	10 54	22 55	10 47	- -	9 18	23 7	9 54	- -	18
19	8 3	20 2	9 12	19 58	11 13	21 28	11 20	22 17	11 22	23 49	11 19	0 20	9 51	- -	10 46	0 38	19
20	9 13	20 41	10 22	20 48	12 3	22 31	11 54	23 15	11 50	- -	11 55	1 16	10 29	0 3	11 43	1 28	20
21	10 23	21 22	11 29	21 43	12 46	23 31	12 25	- -	12 18	0 43	12 36	2 12	11 13	0 59	12 44	2 13	21
22	11 31	22 8	12 30	22 42	13 23	- -	12 54	0 12	12 49	1 37	13 22	3 8	12 2	1 54	13 47	2 55	22
23	12 38	22 58	13 22	23 42	13 55	0 30	13 22	1 5	13 22	2 32	14 15	4 4	12 57	2 45	14 52	3 33	23
24	13 40	23 53	14 8	- -	14 25	1 25	13 50	1 58	14 00	3 27	15 14	4 55	13 57	3 35	15 58	4 9	24
25	14 35	- -	14 47	0 42	14 52	2 20	14 19	2 52	14 44	4 25	16 17	5 44	15 1	4 20	17 6	4 43	25
26	15 25	0 50	15 21	1 40	15 20	3 13	14 50	3 46	15 34	5 22	17 22	6 28	16 7	5 1	18 16	5 19	26
27	16 7	1 49	15 52	2 37	15 48	4 6	15 26	4 42	16 30	6 16	18 29	7 8	17 14	5 40	19 27	5 56	27
28	16 45	2 48	16 21	3 31	16 18	4 59	16 6	5 39	17 31	7 7	19 36	7 45	18 22	6 14	20 40	6 36	28
29	17 18	3 46	16 49	4 25	16 51	5 54	16 52	6 36	18 35	7 53			19 30	6 50	21 53	7 21	29
30	17 49	4 42	17 17	5 18	17 28	6 51	17 45	7 32	19 40	8 35			20 40	7 27	23 3	8 13	30
31			17 45	6 12			18 42	8 25	20 45	9 13			21 51	8 5			31

नीचस्थ (मकरस्थ) गुरु का शुभाशुभ विचार-संवत् २०७७

वि. संवत् २०७७ में गुरु 20 नवम्बर, 2020 ई. को शीघ्र गति से दोपहर 13$^{\text{घं.}}$-22$^{\text{मिं.}}$ पर मकर राशि अर्थात् अपनी नीच राशि में प्रवेश करेगा। गुरु-अस्त अथवा सिंहस्थ गुरुकाल की भान्ति विवाह, मुण्डनादि शुभ कार्यों के सम्पादन के सम्बन्ध में जो कृत्य विद्वानों द्वारा निषेध कहे गए हैं, उसी प्रकार मकरस्थ गुरु संचारकाल में भी शुभ/मंगल कृत्यों के सम्पादन सम्बन्धी निषेधादि का विचार किया जाता है। कुछ विद्वान गुरु के वक्री/अतिचार काल में भी गुरु के शुभाशुभ का विचार करते हैं। सामान्य रूप से नीचस्थ गुरु के पूर्ण संचारकाल को वर्ज्य लिखा गया है-

'सिंहसंस्थे गुरौ यत्नात्सर्वारम्भान् विवर्जयेत्। प्रारब्धं न च सिध्येत महाभयकरं भवेत्।''''''विवाहयज्ञोपनयनचूडादि च न सिध्यति। यथा सिंहस्थितो जीवस्तथैव मकरस्थितः।।' (देवीपुराण)

परिहार-वाक्य–गुरु द्वारा नीच (मकरस्थ) राशि में संचारकालीन शुभ कृत्यों के निषेध सम्बन्धी अधिकतर मुहूर्त्तशास्त्रियों में मत-मतान्तर पाए जाते हैं, जैसे-**'दैवज्ञ मनोहर'** अनुसार मकरस्थ गुरु में विवाहादि शुभ कार्यों के निषेध का विचार मगध (बिहार का दक्षिणी भाग), गौड़देश (उत्तरी बंगाल), जेहलम,सिन्ध-प्रदेश (पाकिस्तान में), मुम्बई के आसपास केरल के कुछ क्षेत्रों में ही वर्ज्य है, अन्यत्र नहीं-

'माघधे गौडदेशे च सिन्धुदेशे च कौङ्कणे।
व्रतं चूड़ां विवाहं च वर्जयेन्मकरे गुरौ।।' (दैवज्ञ 'मनोहर')

'मुहूर्त्त-चिन्तामणि' अनुसार मकरस्थ (नीचस्थ) गुरु रेवा (नर्मदा) (जो जबलपुर आदि प्रदेशों से होकर गुज़रती है) के पूर्व में गण्डकी से पश्चिम में और शोण नदी (शोण विन्ध्यपर्वत से बहती हुई बिहार (पटना) से पश्चिम गंगा में मिलती है) के उत्तर-दक्षिणी प्रदेशों में त्याज्य नहीं होता तथा कोंकण, मागध, दक्षिण भारत के अन्तर्गत रत्नागिरी, कोलाबा, मुम्बई, थाणे आदि के भागों में, गौड़ और सिन्ध प्रदेश में शुभ कार्यों हेतु त्याज्य है-

रेवापूर्वे गण्डकीपश्चिमे च शोणस्योदक्दक्षिणे नीच इज्यः।
वर्ज्यो नायं कौङ्कणे मागधे च गौडे सिन्धौ वर्जनीयः शुभेषु।। (शौनक)

'वसिष्ठ' ऋषि के मतानुसार मकर राशिस्थ गुरु के परम नीचांशों (4° से 5° अंश) के मध्य ही त्याज्य होता है, मकर का शेष भाग शुभ कार्यों में ग्राह्य रहेगा-

नीचराशिगतो जीवः प्रशस्तः सर्वकर्मसु।
नीचांशकगतस्त्याज्यो यस्मादेशेषु नीचता।। (व्यवहार चण्डेश्वर)

यद्यपि कुछ आचार्य गुरु के नीच नवांश (9-00°-00′ से 9-03°-20′) तक के काल को शुभ कार्यों में वर्जित मानते हैं, परन्तु उनका यह मत मुहूर्त्तकारों ने प्रामाणिक एवं अनुमोदित नहीं माना।

'देवीपुराण' के मतानुसार भी मकर राशि के गुरु का पाँचवें भाग को छोड़कर शेष भागों में विवाह, मुण्डनादि शुभ कार्यों का सम्पादन शुभ माना गया है-

'मकरस्थो यदा जीवो वर्जयेत्पञ्चमांशकम्।
शेषष्वपि च भागेषु विवाहः शोभनो मतः।।' (देवीपुराण)

अतः स्पष्ट है कि गुरु के मकरस्थ (नीचस्थ) संचार-काल में परमनीचांश (पांचवें अंश) (9-4°-00′-से 9-05°-00″ तक) **में स्थित काल को ही शुभ कार्यों के अनुष्ठान में वर्जित मानना चाहिए। शेषकाल शुभकृत्यों के लिए शुभ रहेगा।**

उपरोक्त शास्त्र-विवेचन के अनुसार वि. संवत् 2077 में गुरु 20 नवम्बर, 2020 ई. को दोपहर 13घं.-22मिं. पर मकर राशि में प्रवेश करने के पश्चात् **10 दिसम्बर, 2020 ई.** की रात्रि 26घं.-14मिं. से **15 दिसम्बर, 2020 ई.** की सायं 19घं.-44मिं. तक परम-नीचांश में संचरित रहेगा। **अतएव इस अवधि में विवाह, मुण्डन, गृहप्रवेश, यज्ञोपवीत, नवीन वस्तु क्रय आदि शुभ कृत्य वर्जित रहेंगे।** **–पं. विवेक शर्मा, जालन्धर (पं.)**

★★★ विवाहादि में "त्रिबल शुद्धि-चक्र" ★★★

त्रिग्रह बल→	सूर्यबल	चन्द्रबल	गुरूबल
शुभ एवं ग्राह्य	३, ६, १०, ११	१, ३, ६, ७, १०, ११	२, ५, ७, ९, ११
अल्प-शुभ एवं पूज्य	१, २, ५, ७, ९	२, ५, ९, १२	१, ३, ६, १०
निन्द्य एवं त्याज्य	४, ८, १२	४, ८	४, ८, १२

वर तथा कन्या दोनों की राशि से विवाह मुहूर्त्त समय की राशि (गोचर चन्द्र) १, ३, ६, ७, १० या ११वें हो, तो वह चन्द्र शुभ होता है एवं २, ५, ९ या १२वें चन्द्र हो, तो कुछ अशुभ एवं पूज्य होता है तथा ४ या ८वें चन्द्र हो, तो अशुभ एवं निन्द्य माना जाता है। (मु. पारिजात) ऊपर दिए गए **त्रिबल-शुद्धि** चक्र से वर-कन्या के शुभ विवाह मुहूर्त्त का निर्णय करने में सुविधा होगी।

–विवाह में दोष निवृत्ति के लिए पुनर्विवाह का विचार–

आचार्य श्रीधर के अनुसार–स्त्री और पुरूष का विवाह हो जाने के बाद मिलान, विवाह मुहूर्त्त आदि के दोष बारे में ज्ञान के बाद मिलान, विवाह मुहूर्त्त आदि के दोष सम्बन्धी ज्ञान हो जाने पर, उन दोनों (वर और वधू) को फिर से विवाह कर लेना चाहिए। लग्न तथा चन्द्र लग्न के दोष में, ग्रह तारा आदि के मिलान की स्थिति में और अन्य कालों में, दुष्टयोगादि की सम्भावना में और विवाह में दम्पत्ति के अशौच आदि की स्थिति में उनके दोष की निवृत्ति अर्थात् दोष की शान्ति के लिए वर–वधू में परस्पर फिर से विवाह (पुनर्विवाह) कराने का परामर्श दिया गया है—**पुनर्विवाहं वक्ष्यामि दम्पत्योः शुभवृद्धिदम्॥ लग्नेन्दुलग्न योर्दोषे ग्रहतारादि सम्भवे। अन्येष्व–शुभकालेषु दुष्टयोगादि सम्भवे। विवाहेचापि–दम्पत्यो राशौचादि समुद्भवे॥ तस्य दोषस्य शान्त्यर्थं पुनर्वैवाह्यमिष्यते॥ (निर्णय सिन्धुः)**

शुद्ध एवं शुभ विवाह मुहूर्त–सं. २०७७ वि. (सन् 2020–21 ई.)

समय शुद्धि विचार (अशुभ समय–अवधि)–

➧ **शनि अभिजित् नक्षत्र में**–वि. संवत् २०७७ में शनि लगभग 3 अप्रैल से 19 जून तक अभिजित् नक्षत्र में रहेगा। तदनुसार विवाह मुहूर्तों में शनि–युति, वेध आदि का निर्णय लिया गया है। ता. 15 अप्रै., 26–27 अप्रै. आदि तारीखों में मुहूर्त्त लगाए गए हैं, पाठक इन्हें अशुद्ध न समझें। कुछ पंचांगकार इसका विचार न करके इन्हें अशुद्ध विवाह मुहूर्त्त लिख सकते हैं, जोकि बिल्कुल त्रुटिपूर्ण होगा। **ध्यान रहे** :–9°-06°-40′-00″ से 9-10°-53′-20″ तक कोई भी ग्रह अभिजित् नक्षत्र में संचार करता है।

➧ **शुक्र अस्त**–शुक्र इस वर्ष 31 मई, 2020 ई. को पश्चिम में अस्त होकर 9 जून, 2020 ई. को पूर्व में उदित होगा। ता. 28 मई से 30 मई तक शुक्र–वार्धक्य दोष तथा 12 जून, 2020 ई. तक शुक्र बाल्यत्व दोष रहेगा।

➧ **कंकण-सूर्यग्रहण (21 जून, 2020 ई.)**–यह कंकण चूड़ामणि सूर्यग्रहण **'मृगशिर'** नक्षत्रकालीन घटित होने से आगामी छः मास (21 दिसम्बर, 2020 ई.) तक यह नक्षत्र विवाहादि शुभ कार्यों के लिए त्याज्य रहेगा। (देखें पृष्ठ 27)

➧ **चातुर्मास्यादि में विवाह मुहूर्त्त**–पंजाब, हि.प्र., दिल्ली, हरियाणा, जम्मू–काश्मीर आदि प्रदेशों में चातुर्मास (आषाढ़ शुक्ल एकादशी से कार्तिक शुक्ल एकादशी तक) में गत सैंकड़ों वर्षों से परम्परया एवं लोकमान्यता–अनुसार विवाहादि शुभ मुहूर्त्त स्वीकार किए गए हैं। हमारे मुहूर्त्तकारों ने भी स्थानीय परम्पराओं को शास्त्रादेश के समान आदर देने की अनुमति दी है। कुछ मुहूर्त्तशास्त्रकारों ने तो ऐसी परम्पराओं को शास्त्र से भी अधिक महत्त्व देने का परामर्श दिया है। [देखें मुहूर्त–चिन्तामणिः (पीयूषधारा)] 'वृहत्संहिता' में वराह का यह वाक्य है–

> **''देशाचारस्तावदादौ विचिन्त्यः, देशे–देशे या स्थितिः सैव कार्या।**
> **लोकद्विष्टं पण्डिताः वर्जयन्ति, दैवज्ञोऽतो लोकमार्गेण यायात्।।''**

➧ **श्राद्ध दिन**–ता. 1 सितं. से 17 सितम्बर तक श्राद्ध दिन (पितृपक्ष) रहेंगे।

➧ **आश्विन अधिक-मास**–18 सितम्बर से 16 अक्तूबर, 2020 ई. तक आश्विन अधि–मास (पुरुषोत्तम–मास) दोष रहेगा।

➧ **कार्तिक मास**–ता. 17 अक्तूबर से 14 नवंबर, 2020 ई. तक सौर कार्तिक मास रहेगा। इस समयावधि में केवल पर्वतीय प्रदेशों में ही विवाहादि शुभ कार्य सम्पादित किए जाते हैं।

➧ **मकर (नीचस्थ) गुरु**–सामान्यतः नीच राशिस्थ गुरु शुभ कार्यों के लिए वर्जित माना गया है। परन्तु अधिकांश मुहूर्त्तशास्त्रियों के मतानुसार नीचस्थ गुरु का वही कालावधि को वर्जित किया जाए, जिसमें गुरु परम–नीचांश (9-04°-00′-00″ से 9-05°-00′-00″ तक) में स्थित हो। इस वर्ष गुरु 10 दिसम्बर की रात्रि $26^{\text{घं.}}$-$14^{\text{मिं.}}$ से 15 दिसम्बर, 2020 ई. की सायं $19^{\text{घं.}}$-$44^{\text{मिं.}}$ तक परम नीचांश में होने से इस अवधि में विवाहादि शुभ कृत्य वर्जित रहेंगे। (देखें पृष्ठ–166

➧ **गुरु अस्त दोष**–गुरु 17 जनवरी, 2021 ई. को पश्चिम में अस्त होकर 14 फरवरी, 2021 ई. को पूर्व में उदित होगा। ता. 14 से 16 जनवरी तक गुरु–वार्धक्य दोष तथा 17 फरवरी, 2021 ई. तक गुरु बाल्यत्व दोष व्याप्त रहेगा। अतः इस अवधि में शुभ कृत्य नहीं किए जाएंगे।

➧ **पुनः शुक्र अस्त दोष**–शुक्र पुनः 8 फरवरी, 2021 ई. को पूर्व में अस्त होकर संवत् के अन्त (12 अप्रैल, 2021 ई.) तक अस्त रहेगा। अतएव गुरु–शुक्र अस्त दोष के कारण **माघ–फाल्गुन मासों** (सं. २०७७) में विवाह–मुहूर्त आदि शुभ कार्यारम्भ **त्याज्य** रहेंगे।

***सांकेतिक शब्दों का स्पष्टीकरण*–विवाह मुहूर्त्तों में लग्न विवरण में १ को मेष, २ को वृष, ३ को मिथुन, ४ को कर्क, ५ को सिंह, ६ को कन्या, ७ को तुला, ८ को बृश्चिक, ९ को धनु, १० को मकर, ११ को कुम्भ** तथा **१२ की संख्या को मीन लग्न** जानें॥

दि. ल. = दिन का लग्न ; रा. ल. = रात्रि का लग्न

चं. दा. = अर्थात् इस विवाह लग्न में चन्द्रमा से सम्बन्धित वस्तुओं का दान व पूजा करके विवाह कर सकते हैं। इसी प्रकार मं.दा., बु. दा. आदि अन्य ग्रहों का भी जानें।

आवश्यके = लग्न निर्बल है, अतः अत्यावश्यकता में इस लग्न में विवाह किया जा सकता है।

पादवेध = विवाह लग्न के समय नक्षत्रचरण को शुभ ग्रह का वेध है।

ध्यान रहे–विवाह मुहूर्त्तों में दी गई अंग्रेजी तारीख सूर्योदयकालिक हैं। जहाँ मुहूर्त्तकाल (लग्न) रात्रि 12 बजे के बाद तथा सूर्योदय से पहिले का हो, वहाँ अंग्रेजी तारीख अगली (अग्रिम) समझनी चाहिए।

आवश्यक नोट–जिस मुहूर्त में गुरु, बुध–शुक्र की केन्द्र–त्रिकोण में स्थिति अथवा गुरु की शुभ दृष्टिवश परिहार हो जाता है, उस मुहूर्त, लग्न को शुभ मुहूर्त्तों में शामिल कर लिया गया है। **परन्तु मुहूर्त्त शास्त्रानुसार लग्नस्थ एवं सप्तमस्थ क्रूर ग्रह की स्थिति को त्याज्य ही माना गया है।**

✻ वैशाख मास (अप्रैल–मई) ✻ सन् 2020 ईसवी

पक्ष तिथि वार	ता.अंग्रे.	प्रविष्टे	वि. नक्षत्र	समय (भा.स्टैं.टा.)	सूर्य राशि	चंद्र राशि	लतादि दश रेखाएं	शुभ विवाह लग्न, परिहार में ग्रह की पूजा दानादि का विवरण (भा. स्टैं. टा. घंटा मिंट में)
वैशा. कृ. ८, बुध	15 अप्रै.	३ वैशा.	उ.षा.	21:04 तक	मेष	मकर	।।ऽगु.।।।।ऽ।।	प्रातः 9:08 तक मृत्युबाण दोष, दि. ल. २ (9:08 बाद), ५ (चं. दा.), ६ (बु. दा.) गुरु–युति परिहार
वैशा. कृ. ९, गुरु	16 अप्रै.	४ वैशा.	धनि.	23:06 बाद	मेष	मकर	।।।।।।।ऽ।।	रा. ल. ८ (23:06 बाद), ११ (चन्द्रदान), १२ (बुध–शुक्र–राहु दान)

शुभ विवाह मुहूर्त्त—वैशाख मास (अप्रैल-मई)—सन् 2020 ई.

पक्ष तिथि वार	ता.अंग्रे.	प्रविष्टे	वि. नक्षत्र	समय (भा.स्टैं.टा.)	सूर्य राशि	चंद राशि	लतादि दश रेखाएं	शुभ विवाह लग्न, परिहार में ग्रह की पूजा दानादि का विवरण (भा. स्टैं. टा. घंटा मिंट में)
वैशा. कृ.१०,शुक्र	17 अप्रै.	५ वैशा.	धनि.	25:36 तक	मेष	मक./कुं.	।।।।।।।ऽ।।	दि. ल. २ (शु. दा.) दोप. 12:18 से रात्रि 20:04 तक भद्रा भूलोके, **रा. ल.** ८ (शुक्र दान)
वैशा. शु. ३, रवि	26 अप्रै.	१४ वैशा.	मृग.	22:56 बाद	मेष	वृष	।।।ऽगु.।।ऽऽ।।	**रा. ल.** ११ (श. दा.), १२ (रा. दा.) (शनिवेध नहीं है, शनि अभिजित् नक्षत्र में है)
वैशा. शु. ४., चंद	27 अप्रै.	१५ वैशा.	मृग.	24:29 तक	मेष	वृ./मि.	।।।ऽगु.।।ऽऽ।।	**दि. ल.** २ (चं. शु. दा.), 11:43 से 18:06 तक गुरु पादवेध, **रा. ल.** ८ (चं. शु. दा.)
वैशा. शु. ८, शुक्र	1 मई	१९ वैशा.	मघा	25:05 बाद	मेष	सिंह	।।।।ऽमं.।।।ऽ।	**रा. ल.** ११ (चं. दा.), १२ (षष्ठस्थ चं. परिहार, चं. दा.)
वैशा. शु. ९, शनि	2 मई	२० वैशा.	मघा	23:40 तक	मेष	सिंह	।।।।ऽमं.।।।ऽ।	**दि. ल.** २ (8:58 से 14:10 तक क्रान्तिसाम्य दोष), ५ (14:10 बाद), ६ (बु. दा., लग्नेश-अष्टमस्थ परिहार), गोधूलि, **रा. ल.** ८ (शु. दा.)
वैशा. शु. १०,रवि	3 मई	२१ वैशा.	उ.फा.	21:43 बाद	मेष	कन्या	।।।।।।ऽ।।।	19:42 से 27:09 तक भद्रा भूलोके, **रा. ल.** ११ (27:09 बाद, चं. दा.), १२ (चं. दा.)
वैशा. शु. ११,चंद्र	4 मई	२२ वैशा.	उ.फा.	19:19 तक	मेष	कन्या	।।।।।ऽअ.ऽ।।।	**दि. ल.** २ (शु. दा.), ५, ६ (लग्नेश अष्टमस्थ परिहार, बु. दा.), गोधूलि
वैशा. शु. ११,चंद्र	4 मई	२२ वैशा.	हस्त	19:19 बाद	मेष	कन्या	ऽसू.ऽ।।।।।।।।	**रा. ल.** ८ (शु. दा.), ११ (अष्टमस्थ चं. परिहार, चं. श. दा.), १२ (चं. शु. दा.)-28:44 तक
वैशा. शु. १३,मंग	5 मई	२३ वैशा.	हस्त	16:39 तक	मेष	कन्या	ऽसू.ऽ।।।।।।।।	**दि. ल.** ६ (16:39 तक, लग्नेश बु. अष्टमस्थ परिहार, चं. के. दा.)
वैशा. शु. १३,मंग	5 मई	२३ वैशा.	चित्रा	16:39 बाद	मेष	कं./तु.	ऽरा.।।।।।।।।।	**दि. ल.** ६ (16:39 बाद, लग्नेश अष्टमस्थ परिहार, चं. के. दा.), गोधूलि, **रा. ल.** ८ (शु. दा.), १२ (अष्टमस्थ चं. परिहार, चं. दा.)
वैशा. शु. १४,बुध	6 मई	२४ वैशा.	चित्रा	13:51 तक	मेष	तुला	ऽरा.।।।।ऽनृ.।।।।	**दि. ल.** २ (मं. शु. दा.)
वैशा. शु. १४,बुध	6 मई	२४ वैशा.	स्वा.	13:51 बाद	मेष	तुला	।।।।।ऽनृ.।ऽ।।	**दि. ल.** ६ (लग्नेश अष्टमस्थ परिहार, सू. बु. दा.), गोधूलि, **रा. ल.** ८ (20:38 तक, शु. दा.),
ज्ये. कृ. ५, मंग	12 मई	३० वैशा	उ.षा.	28:54 तक	मेष	ध./म.	।।ऽगु.ऽशु.।।ऽऽ।।	**दि. ल.** २ (शु. दा.), ६ (बु. दा., 15:30 तक) (15:30 से 27:57 तक मृत्युबाण) (16:21 से 22:23 तक शुक्र पादवेध) (शनि युति-अभाव)

❋ ज्येष्ठ मास (मई–जून) ❋ सन् 2020 ई.

ज्ये. कृ. १०,रवि	17 मई	४ ज्ये.	उ.भा.	13:59 बाद	वृष	मीन	ऽमं.गु.।।।।।ऽऽ।।	**दि. ल.** ६ (चं. के. दा.), गोधूलि, **रा. ल.** १२, १ (चं. दा.)
ज्ये. कृ. ११, चंद्र	18 मई	५ ज्ये.	उ.भा.	16:58 तक	वृष	मीन	ऽमं.गु.।।।।।।ऽ।।	**दि. ल.** ६ (चं. के. दा.)
ज्ये. कृ. ११, चंद्र	18 मई	५ ज्ये.	रेव.	16:58 बाद	वृष	मीन	ऽके.।।।।ऽनृ.।ऽ।।	गोधूलि, **रा. ल.** १२ (चं. दा.), १ (चं. दा.)
ज्ये. कृ. १२, मंग	19 मई	६ ज्ये.	रेव.	19:53 तक	वृष	मीन	ऽके.।।।।ऽनृ.।ऽ।।	**दि. ल.** ६ (चं. के. दा.), 17:32 उपरान्त कृष्ण त्रयोदशी
ज्ये. शु. २, रवि	24 मई	११ ज्ये.	मृग.	दिन-रात	वृष	वृ./मि.	।।ऽबु.शु.रा.ऽगु.।।।।।।	**दि. ल.** ६, 17:30 से 23:50 तक गुरु पादवेध, **रा. ल.** १२ (26:32 तक) (26:32 बाद-मृत्युबाण दोष [शनि का वेध यहाँ नहीं है, शनि इस समय अभिजित् नक्षत्र में है।] राहु-युति परिहार

❋ आषाढ़ मास (जून–जुलाई) ❋ सन् 2020 ई.

आषा. कृ.१०,चंद्र	15 जून	२ आषा.	रेव.	27:17 तक	मिथुन	मीन	ऽ।।।।।।।ऽ।।	दोपहर 12:28 तक क्षीण सूर्यांश, **दि. ल.** ६, गोधूलि, **रा. ल.** १२ (25:00 तक, चं. दा.)
आषा. कृ.१०,मंग	16 जून	३ आषा.	अश्वि.	सारा दिन	मिथुन	मेष	ऽबु.श.।।।।।ऽऽ।।	दोपहर 13:36 तक मृत्युबाण, 13:41 से 16:05 तक अतिगण्ड दोष, **दि. ल.** ८ (शु.दा.), गोधूलि, **रा. ल.** १२ (शु. दा.), १ (चं. दा.), २ (चं. शु. दा.)
आषा.शु. ४, गुरु	25 जून	१२ आषा	मघा	12:27 बाद	मिथुन	सिंह	।।।।।।ऽऽ।।	रात्रि 23:51 तक मृत्युबाण दोष, **रा. ल.** १ (मं. दा.), २ (शु. दा.)
आषा.शु. ५, शुक्र	26 जून	१३ आषा	मघा	11:26 तक	मिथुन	सिंह	।।।।।।।ऽ।।	**दि. ल.** ५ (11:26 तक, अष्टमस्थ मं. परिहार, मं. दा.)
आषा.शु. ७, शनि	27 जून	१४ आषा	उ.फा.	10:11 बाद	मिथुन	कन्या	।ऽ।।।।ऽऽ।।	23:07 तक व्यतीपात दोष, **रा. ल.** ११ (23:07 बाद, श. दा.), १ (षष्ठस्थ चं. परिहार, चं. दा.), २ (शु. दा.)

शुभ विवाह मुहूर्त—आषाढ़ मास (जून-जुलाई)—सन् 2020 ई.

पक्ष तिथि वार	ता.अंग्रे.	प्रविष्टे	वि. नक्षत्र	समय (भा.स्टैं.टा.)	सूर्य राशि	चंद्र राशि	लतादि दश रेखाएं	शुभ विवाह लग्न, परिहार में ग्रह की पूजा दानादि का विवरण (भा. स्टैं. टा. घंटा मिंट में)
आषा. शु. ९, चंद्र	29 जून	१६ आषा	चित्रा	7:14 बाद	मिथुन	कं./तु.	।।।।।।।।।।	दि. ल. ५ (अष्टमस्थ मं. परिहार, मं. दा.), ८ (शु. दा.), गोधूलि, रा. ल. ११ (श. दा.), १ (मं. दा.), २ (षष्ठस्थ चं. परिहार, चं. दा.)
आषा.शु.१०, मंग	30 जून	१७ आषा	स्वा.	5:39 से 28:04 तक	मिथुन	तुला	।।।।।ऽचौ.।ऽ।।	दि. ल. ५ (अष्टमस्थ मं. परिहार, मं. दान व पूज्य), ८ (शु. चं. दा.), रा. ल. ११ (श. दा.), १ (चं. मं. दा.), २ (षष्ठस्थ चं. परिहार, चं. शु. दा.)
आषा.शु.११, बुध	1 जुला.	१८ आषा	अनु.	26:34 बाद	मिथुन	वृश्चिक	ऽसू.ऽ।।।।।।।।	रा. ल. २ (चं. शु. दा.) (26:34 बाद)
आषा.शु.१२. गुरु	2 जुला.	१९ आषा	अनु.	25:14 तक	मिथुन	वृश्चिक	ऽसू.ऽ।।।।।।।।	दि. ल. ५ (अष्टमस्थ मं. परिहार, चं. मं. दा.), ८ (चं. शु. दा.), रा. ल. ११ (श. दा.), १ (25:14 तक)
श्राव. कृ. १, चंद्र	6 जुला.	२३ आषा	श्रव.	23:12 बाद	मिथुन	मकर	।।।।।।ऽ।।।	विष्कम्भदोष 22:46 तक, **रा. ल.** १ (मं. दा.), २ (गु. शु. दा.)
श्राव. कृ. २, मंग	7 जुला.	२४ आषा	श्रव.	23:56 तक	मिथुन	मकर	।।।।।।ऽ।।।	दि. ल. ५ (षष्ठस्थ चं. एवं अष्टमस्थ मं. परिहार), ८ (शु. दा.), गोधूलि, **रा. ल. ११** (चं. श. दा.)
श्राव. कृ. २, मंग	7 जुला.	२४ आषा	धनि.	23:56 बाद	मिथुन	मकर	।।।।।ऽनृ.।।।।	रा. ल. १, २ (शु. दा.)
श्राव. कृ. ३, बुध	8 जुला.	२५ आषा	धनि.	25:15 तक	मिथुन	म./कुं.	।।।।।ऽनृ.।।।।	दि. ल. ५ (षष्ठस्थ चं. व अष्टमस्थ मं. परिहार), ८ (सू. शु. दा.), गोधूलि, रा. ल. ११ (श. दा.), १ (25:15 तक, मं. दा.)
श्राव. कृ. ७ रवि	12 जुला	२९ आषा	रेव.	8:18 बाद	मिथुन	मीन	ऽ।।।।ऽरो.।ऽ।ऽ	दि. ल. ५ (अष्टमस्थ चं. मं. परिहार, चं. मं. दा.), ८ (शु. दा.), गोधूलि, रा. ल. ११ (श. दा.), १ (चं. मं. दा.), २ (शु. दा.), दग्धा तिथि परिहार
श्राव. कृ. ८ चंद्र	13 जुला	३० आषा	रेव.	11:14 तक	मिथुन	मीन	ऽ।।।।।।ऽ।ऽ	दि. ल. ५ (अष्टमस्थ चं. मं. परिहार, चं. मं. पूज्य), दग्धा तिथि परिहार
श्राव. कृ. ८, चंद्र	13 जुला	३० आषा	अश्वि.	11:14 बाद	मिथुन	मेष	ऽ।।।।।।ऽ।ऽ	दि. ल. ८ (षष्ठस्थ चं. परिहार, चं. के. दा.), **रा. ल. ११** (मं. श. दा.), १ (चं. मं. दा.), २ (चं. शु. दा.)
श्राव. कृ. ९, मंग.	14 जुला	३१ आषा	अश्वि.	14:07 तक	मिथुन	मेष	ऽ।।।।ऽमृ.।ऽ।।	दि. ल. ५ (8:29 तक, अष्टमस्थ मं. परिहार) 8:29 से मृत्युबाण दोष

❊ श्रावण मास (जुलाई—अगस्त) ❊ सन् 2020 ई.

श्राव. कृ.१२, शुक्र	17 जुला	२ श्रावण	रोहि.	20:28 तक	कर्क	वृष	।ऽऽशु.।।।।ऽ।।	दि. ल. ५ (प्रात: 9:10 तक, अष्टमस्थ मं. परिहार), 9:10 से 18:08 तक क्रान्तिसाम्य दोष
श्राव.शु. ३, गुरु	23 जुला	८ श्रावण	मघा	17:44 तक	कर्क	सिंह	।ऽ।।।।ऽ।।।	दोपहर 12:02 तक व्यतीपात दोष, दि. ल. ८ (शु. दा.)
श्राव. शु. ५, शनि	25 जुला	१० श्राव.	हस्त	14:19 बाद	कर्क	कन्या	ऽरा.।।।।।।।।ऽ	दि. ल. ८ (शु. दा.), रा. ल. ११ (श. दा.) (अष्टमस्थ चं. परिहार), १ (षष्ठस्थ चं. परिहार, चं. मं. दा., पूज्य वा), २ (शु. दा.) दग्धा तिथि परिहार
श्राव. शु. ६, रवि	26 जुला	११ श्राव.	हस्त	12:37 तक	कर्क	कन्या	ऽरा.।।।।।।।।ऽ	दि. ल. ५ (अष्टमस्थ मं. परिहार, सू. मं. दा.)
श्राव. शु. ६, रवि	26 जुला	११ श्राव.	चित्रा	12:37 बाद	कर्क	कन्या	।।।।ऽमं.।।ऽ।।	दि. ल. ८ (शु. दा.), गोधूलि, **रा. ल. ११** (श. दा.), 22:05 से मृत्युबाण दोष
श्राव. शु. ७, चंद्र	27 जुला	१२ श्राव.	स्वा.	11:04 बाद	कर्क	तुला	।ऽ।।।।।ऽ।।	दि. ल. ८ (शु. दा.), गोधूलि, **रा. ल. ११** (श. दा.), १ (चं. मं. दा.), २ (षष्ठस्थ चंद्र परिहार, चं. शु. दा.)-भद्रा परिहार
श्राव. शु. ९, मंग	28 जुला	१३ श्राव.	स्वा.	9:42 तक	कर्क	तुला	।ऽ।।।ऽअ.।ऽ।।	दि. ल. ५ (अष्टमस्थ मं. परिहार)
श्राव.शु. १०, बुध	29 जुला	१४ श्राव.	अनु.	8:33 बाद	कर्क	वृश्चिक	।।।।।।।।ऽऽ।	दि. ल. ५ (8:33 बाद, अष्टमस्थ मं. परिहार, सू. मं. दा.), ८ (15:05 तक) (15:05 से 21:19 तक क्रान्तिसाम्य दोष), **रा. ल. ११** (21:19 बाद), चं. श. दा.), १ (चं. मं. दा.), २ (चं. शु. दा.)
श्राव. शु.११, गुरु	30 जुला	१५ श्राव.	अनु.	7:41 तक	कर्क	वृश्चिक	।।।।।ऽनृ.।ऽऽ।	दि. ल. ५ (7:41 तक, अष्टमस्थ मं. परिहार, चं. मं. दा.)

शुभ विवाह मुहूर्त्त—श्रावण मास (जुलाई-अगस्त)—सन् 2020 ई.

पक्ष तिथि वार	ता.अंग्रे.	प्रविष्टे	वि. नक्षत्र	समय (भा.स्टैं.टा.)	सूर्य राशि	चंद्र राशि	लतादि दश रेखाएं	शुभ विवाह लग्न, परिहार में ग्रह की पूजा दानादि का विवरण (भा. स्टैं. टा. घंटा मिंट में)
श्राव. पूर्णिमा, चंद्र	3 अग.	१९ श्राव.	श्रव.	7:19 बाद	कर्क	मकर	। । । । । ऽरो. । ऽ । ।	दि. ल. ५ (षष्ठस्थ चं. व अष्टमस्थ मं. परिहार, मं. दान), ७, ८ (अष्टमस्थ शु. परिहार) गोधूलि, रा. ल. ११ (चं. श. दान), १ (चं. मं. दा.), २
भाद्र. कृ. १, मंग.	4 अग.	२० श्राव.	श्रव.	8:11 तक	कर्क	मकर	। । । । ऽबु. । । ऽ । ।	दि. ल. ५ (8:11 तक)-अष्टमस्थ मं. परिहार
भाद्र कृ. ४, शुक्र	7 अग.	२३ श्राव	उ.भा.	13:33 बाद	कर्क	मीन	। । । । । । । । ऽ । ।	दि. ल. ८ (अष्टमस्थ शुक्र परिहार, शु. दा.), **गोधूलि, रा. ल.** ११ (श. दा.), १ (चं. मं. दा.), २
भाद्र. कृ. ५, शनि	8 अग.	२४ श्राव.	उ.भा.	16:12 तक	कर्क	मीन	। । । । । ऽनृ. । ऽ । ।	दि. ल. ५ (अष्टमस्थ चं. मं. परिहार, चं. मं. दा.), ७, ८ (अष्टमस्थ शु. परिहार)
भाद्र कृ. ९, गुरु	13 अग.	२९ श्राव.	रोहि.	29:22 तक	कर्क	वृष	। । । । । । । । ऽ । ।	दि. ल. ५ (अष्टमस्थ मं. परिहार), 9:50 से 13:26 तक व्याघात योग, ८ (13:26 बाद, अष्टमस्थ शु. परिहार), गोधूलि, रा. ल. ११ (श. दा.), १ (मं. दा.), २

⁂ भाद्रपद मास (अगस्त—सितम्बर) ⁂ सन् 2020 ई.

भाद्र. शु.२, गुरु	20 अग.	५ भाद्र.	उ.फा.	23:51 बाद	सिंह	सिं./कं.	। । । । । ऽनृ. । । । ।	रा. ल. २ (23:51 बाद)
भाद्र. शु. ३, शुक्र	21 अग.	६ भाद्र.	उ.फा.	21:29 तक	सिंह	कन्या	। । । । । ऽनृ. । । । ।	दि. ल. ६ (अष्टमस्थ मं. परिहार, चं. मं. दा.), गोधूलि, रा. ल. १२ (21:29 तक)
भाद्र. शु. ३, शुक्र	21 अग.	६ भाद्र.	हस्त	21:29 बाद	सिंह	कन्या	ऽरा. ऽ । । । । । । । ।	रा. ल. १२ (21:29 बाद), २
भाद्र. शु. ४, शनि	22 अग.	७ भाद्र.	हस्त	19:11 तक	सिंह	कन्या	ऽरा.ऽ । । । । । । । ।	दि. ल. ६ (अष्टमस्थ मं. परिहार, मं. दा.), ८ (अष्टमस्थ शु. परिहार, शु. दा.), गोधूलि
भाद्र. शु. ४, शनि	22 अग.	७ भाद्र.	चित्रा	19:11 बाद	सिंह	कन्या	। । । । । ऽचौ. । ऽ । ।	गोधूलि, रा. ल. १२ (चं. दा.), २ (गु. के. दा.)
भाद्र. शु. ५, रवि	23 अग.	८ भाद्र.	चित्रा	17:06 तक	सिंह	तुला	। । । । । ऽचौ. । ऽ । ।	दि. ल. ६ (अष्टमस्थ मं. परिहार, मं. दा.), ८ (अष्टमस्थ शु. परिहार)
भाद्र. शु. ५, रवि	23 अग.	८ भाद्र.	स्वा.	17:06 बाद	सिंह	तुला	। । । । ऽमं. । । । । ।	गोधूलि, रा. ल. १२, २ (षष्ठस्थ चं. परिहार, चं. गु. के. दा.), 28:49 से क्रान्तिसाम्य
भाद्र. शु.६, चंद्र	24 अग.	९ भाद्र.	स्वा.	15:20 तक	सिंह	तुला	। । । । ऽमं. । । । । ।	प्रात: 9:12 तक क्रान्तिसाम्य दोष, **दि. ल.** ६ (9:12 बाद) (अष्टमस्थ मं. परिहार), ८ (अष्टमस्थ शु. परिहार, चं. शु. दा.)
भाद्र. शु.७, मंग	25 अग.	१० भाद्र.	अनु.	13:59 बाद	सिंह	वृश्चिक	। । । । । ऽरो. । ऽ । ।	दि. ल. ८ (अष्टमस्थ शु. परिहार, चं. शु. दा.), गोधूलि, रा. ल. १२, 21:49 से वैधृति दोष
भाद्र. शु.१२, रवि	30 अग.	१५ भाद्र.	श्रव.	13:52 बाद	सिंह	मकर	ऽसू. । । । । ऽनृ. । । । ।	दि. ल. ८ (13:52 बाद, अष्टमस्थ शु. परिहार), गोधूलि, रा. ल. १२ (रा. दा.), २ (गु. के. दा.)
भाद्र. शु.१३, चंद्र	31 अग.	१६ भाद्र.	श्रव.	15:04 तक	सिंह	मकर	ऽसू. । । । । । । । । ।	दि. ल. ६ (मं. परिहार, मं. दा.), ८ (शु. परिहार, शु. दा.), 13:22 से 15:46 तक अतिगंड दोष
भाद्र. शु.१३, चंद्र	31 अग.	१६ भाद्र.	धनि.	15:04 बाद	सिंह	म./कुं.	। । । । । । । । । ।	15:46 तक अतिगंड दोष, गोधूलि, रा. ल. १२, २ (गु. के. दा.)

[ता. 18 सितम्बर से 16 अक्तूबर, 2020 ई. तक आश्विन अधिक मास रहेगा।]

⁂ कार्तिक मास (अक्तू.—नवम्बर) ⁂ सन् 2020 ई. [केवल पर्वतीय प्रदेशों के लिए]

शुद्ध आ. शु. ३, चंद्र	19 अक्तू	३ कार्ति.	अनु.	27:53 तक	तुला	वृश्चिक	। । । । । । । । । ।	दि. ल. ९ (चं. दा.), ११ (चं. शु. दा.), गोधूलि, रा. ल. ३ (शु. दा.), ५ (अष्टमस्थ मं. परिहार--मं. दान व पूज्य)-भद्रा परिहार
शुद्ध आ. शु. ४, मंग	20 अक्तू	४ कार्ति.	मूल	26:12 बाद	तुला	धनु	। । । । ऽरा.ऽ । । । ।	रा. ल. ३ (26:12 बाद, चं. शु. दा.), ५ (शु. दा.)
शुद्ध आ. शु. ५, बुध	21 अक्तू	५ कार्ति.	मूल	25:13 तक	तुला	धनु	। । । । ऽरा.ऽनृ. । । । ।	दि. ल. ९ (चं. गु. दा.), ११ (शु. दा.), गोधूलि, रा. ल. ३ (गु. शु. दा.)
शुद्ध आ. शु. ८, शनि	24 अक्तू	८ कार्ति.	धनि.	26:38 बाद	तुला	मकर	। ऽ । । । । । । । ।	27:05 तक गण्डदोष, **रा. ल.** ५ (अष्टमस्थ मं. परिहार, मं. दान व पूज्य)
शुद्ध आ. शु. ९, रवि	25 अक्तू	९ कार्ति.	धनि.	28:23 तक	तुला	म./कुं.	। ऽ । । । ऽरो. । । । ।	दि. ल. ९ (चं. गु. दा.), ११ (अष्टमस्थ शु. परिहार, शु. दा.), गोधूलि, रा. ल. ३ (गु. दा.), ५ (अष्टमस्थ मं. परिहार, चं. मं. दा.)
शुद्ध आ. शु.१२, बुध	28 अक्तू	१२ कार्ति.	उ.भा.	9:11 बाद	तुला	मीन	ऽ । । । ऽशु.ऽअ.ऽ । । ऽ	दि. ल. ९ (चं. गु. दा.), ११ (अष्टमस्थ शु. परिहार, शु. दा.), गोधूलि, (*दग्धा तिथि परिहार*) रा. ल. ३, ५ (अष्टमस्थ चं. परिहार, चंद्र पूज्य व दान)

शुभ विवाह मुहूर्त—कार्तिक मास (अक्तू.-नवम्बर)—सन् 2020 ई. [केवल पर्वतीय प्रदेशों के लिए]

पक्ष तिथि वार	ता.अंग्रे.	प्रविष्टे	वि. नक्षत्र	समय (भा.स्टैं.टा.)	सूर्य राशि	चंद्र राशि	लतादि दश रेखाएं	शुभ विवाह लग्न, परिहार में ग्रह की पूजा दानादि का विवरण (भा. स्टैं. टा. घंटा मिंट में)
शुद्ध आ. शु.१३,गुरु	29 अक्तू.	१३ कार्ति.	उ.भा.	12:00 तक	तुला	मीन	ऽ।।।ऽशु.।।।।।	दि. ल. ९ (12:00 तक, चं. गु. दा.)
शुद्ध आ. शु.१४,शुक्र	30 अक्तू.	१४ कार्ति.	अश्वि	14:57 बाद	तुला	मेष	ऽ।।।ऽबु.ऽनृ.ऽऽ।।	दि. ल. ११ (14:57 बाद), गोधूलि, रा. ल. ३ (गु. दा.), ५ (अष्टमस्थ मं. परिहार, मं. दा.)
शुद्ध आ. पूर्णि.,शनि	31 अक्तू.	१५ कार्ति.	अश्वि	17:58 तक	तुला	मेष	ऽ।।।ऽबु.।।ऽ।।	दि. ल. ९ (गु. दा.), ११ (श. रा. दा.)
कार्ति. कृ.२, चंद्र	2 नवं.	१७ कार्ति.	रोहि.	23:50 बाद	तुला	वृष	।।।।।।।।।।	रा. ल. ५ (अष्टमस्थ मं. परिहार, मं. दा.)
कार्ति. कृ.३, मंग	3 नवं.	१८ कार्ति.	रोहि.	26:30 तक	तुला	वृष	।।।।।ऽरो.।।।।	प्रात: 9:03 तक परिघ दोष, दि. ल. ९ (षष्ठस्थ चं. परिहार, चं. गु. दा.), ११ (शु. परिहार, शु. दा.), गोधूलि, रा. ल. ३ (चं. गु. दा.), ५ (26:30 तक)
कार्ति. कृ.९, चंद्र	9 नवं.	२४ कार्ति.	मघा	08:42 बाद	तुला	सिंह	।।।।।।।ऽ।।	दि. ल. ९ (10:54 तक, गु. दा.), 10:54 से 16:20 तक क्रान्तिसाम्य दोष, रा. ल. ३ (मं. गु. दा.), ५ (अष्टमस्थ मं. परिहार, मं. दा.)
कार्ति. कृ.१२,गुरु	12 नवं.	२७ कार्ति.	हस्त	25:55 तक	तुला	कन्या	ऽ।।।।ऽरो।ऽ।ऽ	दि. ल. ९ (गु. दा.) ,११ (अष्टमस्थ चं. शु. परिहार, दानं च), रा. ल. ३ (21:30 तक)

मार्गशीर्ष मास (नवं.—दिसं.) सन् 2020 ई.

पक्ष तिथि वार	ता.अंग्रे.	प्रविष्टे	वि. नक्षत्र	समय (भा.स्टैं.टा.)	सूर्य राशि	चंद्र राशि	लतादि दश रेखाएं	शुभ विवाह लग्न, परिहार में ग्रह की पूजा दानादि का विवरण (भा. स्टैं. टा. घंटा मिंट में)
कार्ति. शु. ३, मंग	17 नवं.	३ मार्ग.	मूल	12:22 बाद	वृश्चिक	धनु	।।।।ऽरा.।।।।।	सायं 18:34 तक मृत्युबाण, रा. ल. ३ (गु. श. दा.), ५ (शु. दा.), ७ (बु. शु. दा.)
कार्ति. शु. ४,बुध	18 नवं.	४ मार्ग.	मूल	10:40 तक	वृश्चिक	धनु	।।।।ऽरा.।।।।।	दि. ल. ९ (चं. गु. दा.)
कार्ति. शु. ६,शुक्र	20 नवं.	६ मार्ग.	श्रव.	9:22 बाद	वृश्चिक	मकर	।।।।।ऽनृ.।।।।	दि. ल. ९ (9:22 बाद, चं. गु. दा.), ११ (चं. श. दा.), १ (बु. शु. दा.), रा. ल. ३ (गु. दा.), ५ (षष्ठस्थ चं. परिहार, चं. शु. के. दा.), ७ (29:04 तक, बु. शु. दा.)
कार्ति. शु. ७,शनि	21 नवं.	७ मार्ग.	धनि.	9:53 बाद	वृश्चिक	मकर	।।।।।।।ऽ।।	12:02 तक क्रान्तिसाम्य दोष, दि. ल. ११ (चं. श. दा.), १ (सू. मं. दा.), रा. ल. ३ (गु. दा.) (22:26 से भद्रा भूलोके)
कार्ति. शु. ८,रवि	22 नवं.	८ मार्ग.	धनि.	11:09 तक	वृश्चिक	कुम्भ	।।।।।ऽचौ.।ऽ।।	प्रात: 9:37 तक व्याघात दोष व 10:21 तक भद्रा भूलोके, दि. ल. ९ (10:21 बाद)
कार्ति. शु.११,बुध	25 नवं.	११ मार्ग.	उ.भा.	18:20 तक	वृश्चिक	मीन	ऽ।।।।।।ऽ।।	दि. ल. ९, ११ (गु. श. दा.), १ (15:57 तक, चं. बु. शु. दा.) 15:57 से भद्रा भूलोके, **भीष्मपंचक विचार**
कार्ति. शु.१२,शुक्र	27 नवं.	१३ मार्ग.	अश्वि.	24:23 तक	वृश्चिक	मेष	ऽ।।।।ऽअ.ऽ।।।	प्रात: 8:29 तक व्यतीपात, दि. ल. ९, ११ (श. दा.), १, रा. ल. ३, ५ (24:23 तक), **भीष्मपंचक विचार**
कार्ति. पूर्णिमा,चंद्र	30 नवं.	१६ मार्ग.	रोहि.	दिन-रात	वृश्चिक	वृष	।।।।ऽबु.।।ऽ।।	दि. ल. ९ (षष्ठस्थ चं. परिहार, चं. पूज्य दान च), ११ (गु. श. दा.), १ (मं. शु. दा.) रा. ल. ३ (षष्ठस्थ बु. परिहार, बु. दा.), ५ (गु. श. दा.), ७ (चं. परिहार, चं. शु. दा.)
मार्ग. कृ. ७, चंद्र	7 दिसं.	२३ मार्ग.	मघा	14:33 तक	वृश्चिक	सिंह	।ऽ।।।।ऽवि.।।।	दि. ल. ९ (गु. दा.), ११ (चं. श. दा.), १ (14:33 तक, सू. शु. दा.)
मार्ग. कृ. ९, बुध	9 दिसं.	२५ मार्ग.	हस्त	12:33 बाद	वृश्चिक	कन्या	ऽ।।।।ऽचौ.।ऽ।।	दि. ल. ११ (12:33 बाद, अष्टमस्थ चं. परिहार, चं. पूज्य), १ (षष्ठस्थ चं. परिहार), ५ (गु. श. दा.), ७ (चं. शु. दा.)-दग्धा तिथि परिहार रा. ल. ३ (लग्नेश षष्ठस्थ परिहार)
मार्ग. कृ.१०, गुरु	10 दिसं.	२६ मार्ग.	हस्त	10:51 तक	वृश्चिक	कन्या	ऽ।।।।ऽचौ.।ऽ।ऽ	दि. ल. ९ (सू. गु. दा.)-दग्धा तिथि परिहार
मार्ग. कृ.१०, गुरु	10 दिसं.	२६ मार्ग.	चित्रा	10:51 बाद	वृश्चिक	कं./तु.	।।।।ऽमं.।।ऽ।।	दि. ल. ११ (अष्टमस्थ चं. परिहार, पूज्य च)-दग्धातिथि परिहार, १ (षष्ठस्थ चं. परिहार, चं. शु. दा.), रा. ल. ३ (लग्नेश बु. षष्ठस्थ परिहार, बु. गु. दा.), ५ (गु. शु. दा.) (26:14 से गुरु नीचांश में जाने से शुभ विवाह कार्य त्याज्य रहेंगे।)

नोट—10 दिसम्बर रात्रि 26^घं.^–14^मि.^ से 15 दिसम्बर, 2020 ई. सायं 19^घं.^–44^मि.^ तक गुरु परमनीचांश में होने से शुभ विवाह लग्न त्याज्य रहेंगे। तदनन्तर 13 जनवरी, 2021 ई. तक पौष मास रहेगा।
⇒गुरु 17 जनवरी, 2021 ई. से 13 फरवरी, 2021 ई. तक अस्त रहने तथा शुक्र भी 8 फरवरी, 2021 ई. से संवत् के अन्त (12 अप्रैल, 2021 ई.) तक अस्त रहने से माघ व फाल्गुन मास विवाह तथा अन्य शुभ मुहूर्तों के लिए त्याज्य रहेंगे।

विशेष—आगामी वर्ष (वि. संवत् २०७८) में गुरु-शुक्रास्त की सम्भावित तारीखें

(1) 8 फरवरी, 2021 ई. (वि. संवत् 2077 में) से पूर्व में अस्त हुआ शुक्र लगभग 18 अप्रैल, 2021 ई. को पश्चिम से दृश्य हो जाएगा।
(2) पुन: शुक्र लगभग 6 जनवरी, 2022 ई. को पश्चिम में अस्त होकर लगभग 12 जनवरी, 2022 ई. को पूर्व में उदय होगा।
(3) गुरु लगभग 24 फरवरी, 2022 ई. को पश्चिम में अस्त होकर 26 मार्च, 2022 ई. को पूर्व में उदय होगा।

दोषयुक्त एवं अशुद्ध विवाह मुहूर्त्त-संवत् २०७७ वि. (सन् 2020-21 ई.)

नीचे वि. संवत् २०७७ में उन विशेष दोषयुक्त एवं अशुद्ध विवाह मुहूर्त्तों का स्पष्टीकरण दिया जा रहा है, जिनके अन्तर्गत विवाह-नक्षत्र होते हुए भी उनको शुद्ध विवाह मुहूर्त्तों में सम्मिलित नहीं किया गया। यहाँ अशुद्ध एवं त्याज्य विवाह मुहूर्त्तों के आगे जिन युति, वेध, मृत्युबाण आदि दोषों का विवरण लिखा है, उनका कोई शास्त्रीय परिहार नहीं मिलता है। गत पृष्ठों में जिन मुहूर्त्तों, लग्नों में क्रूर ग्रह युति, लग्नेश षष्ठाष्टमस्थ, चंद्र षष्ठाष्टमस्थ, शुक्र षष्ठाष्टमस्थ आदि दोषों का परिहार मिल गया है, उन्हें शुद्ध मुहूर्त्तों में सम्मिलित कर लिया गया है।

निवेदक—पं. विवेक शर्मा ज्योतिषी, गणितकर्त्ता

ता. मास वार	नक्षत्र	समय	दोष विवरण
13 अप्रै., चन्द्र	मूल	19/02 तक	संक्रान्ति-दिन
14 अप्रै., मंग.	उ.षा.	19-41 बाद	20-56 से -मृत्युबाण दोष
15 अप्रै., बुध	श्रव.	21/04 बाद	भौमयुति अपरिहार्य
16 अप्रै., गुरु	श्रव.	23/06 तक	भौमयुति अपरिहार्य
20 अप्रै., चंद्र	उ.भा.	7/23 बाद	कृष्ण त्रयोदशी
25 अप्रै., शनि	रोहि.	20/58 बाद	शनि वेध
26 अप्रै, रवि	रोहि.	22/56 तक	शनि वेध
7 मई, गुरु	स्वा.	11/07 तक	व्यतीपात
8-9 मई, शु-श.	अनु.	8/38 से 6/33	सूर्य-वेध
9 मई, शनि	मूल	29/02 बाद	केतुयुति अपरिहार्य
10 मई, रवि	मूल	28/13 तक	केतुयुति अपरिहार्य
11 मई, चंद्र	उ.षा.	28/10 बाद	लग्नऽभाव
12 मई, मंग.	श्रव.	28/54 बाद	लग्नऽभाव
13 मई, बुध	श्रव.	सारा दिन	मासान्त
14 मई, गुरु	श्र./ध.	सारा दिन	संक्रान्ति दिन
19 मई, मंग.	अश्वि	19/53 बाद	कृष्ण त्रयोदशी
23 मई, शनि	रोहि.	28/52 तक	शनि-वेध
23 मई, शनि	मृग.	28/52 बाद	लग्नऽभाव

28 मई से 12 जून, 2020 ई. तक शुक्र-अस्त दोष

ता. मास वार	नक्षत्र	समय	दोष विवरण
13 जून, शनि	उ.भा.	21/28 बाद	मासान्त
14 जून, रवि	उ.भा.	24/22 तक	संक्रान्ति दिन
15 जून, चंद्र	अश्वि.	27/17 बाद	मृत्युबाण दोष
19 जून, शुक्र	रोहि.	10/31 बाद	कृष्ण त्रयोदशी
28 जून, रवि	उ.फा.	8/46 तक	लग्नऽभाव
28 जून, रवि	हस्त	8/46 बाद	भौम-वेध
29 जून, चंद्र	हस्त	7/14 तक	भौम-वेध
30 जून, मंग.	चित्रा	5/39 तक	लग्नऽभाव
3 जुला. शुक्र	मूल	24/08 बाद	केतुयुति, क्रान्तिसाम्य
4 जुला. शनि	मूल	23/22 तक	केतुयुति अपरिहार्य
5 जुला. रवि	उ.षा.	23/02 बाद	शनियुति, राहुवेध
6 जुला. चंद्र	उ.षा.	23/12 तक	शनियुति, राहुवेध
10 जुला. शुक्र	उ.भा.	29/33 बाद	भौमयुति अपरिहार्य
11 जुला. शनि	उ.भा.	दिन-रात	भौमयुति अपरिहार्य
12 जुला. रवि	उ.भा.	8/18 तक	भौमयुति अपरिहार्य
16 जुला. गुरु	रोहि.	18/53 बाद	संक्रान्ति दिन
17 जुला. शुक्र	मृग.	20/28 बाद	शनि-वेध, कृष्ण त्र्यो.
22 जुला. बुध	मघा	19/16 बाद	व्यतीपात
24 जुला. शुक्र	उ.फा.	16/03 बाद	भौम-वेध
25 जुला. शनि	उ.फा.	14/19 तक	भौम-वेध
27 जुला. चंद्र	चित्रा	11/04 तक	मृत्युबाण
31 जुला. शुक्र	मूल	7/05 बाद	केतुयुति अपरिहार्य
2 अग., रवि	उ.षा.	6/52 बाद	शनियुति, राहु-वेध
3 अग., चंद्र	उ.षा.	7/19 तक	शनियुति, राहुवेध
4 अग., मंग.	धनि.	8/11 बाद	सूर्य-वेध
5 अग., बुध	धनि.	9/30 तक	सूर्य-वेध
8 अग., शनि	रेव.	16/12 बाद	भूमियुति अपरिहार्य
9 अग., रवि	रेव.	19/06 तक	भौमयुति अपरिहार्य
9 अग., रवि	अश्वि	19/06 बाद	भुजंगपात
10 अग., चंद्र	अश्वि	22/06 तक	भुजंगपात
12 अग., बुध	रोहि.	27/26 बाद	लग्नऽभाव
13/14 अग., गु. शु.	मृग	दिन-रात	सूर्यग्रहण नक्षत्र, शनिवेध
26 अग., बुध	अनु.	13/04 तक	वैधृति दोष
27 अग., गुरु	मूल	12/37 बाद	केतुयुति, मृत्युबाण
28 अग., शुक्र	मूल	12/37 तक	केतुयुति
29 अग., शनि	उ.षा.	13/03 बाद	शनि-युति, राहुवेध
30 अग., रवि	उ.षा.	13/52 तक	शनियुति, राहुवेध

1 सितं. से 17 सितं., 2020 ई. तक श्राद्ध-दिन (पक्ष)
18 सितं. से 16 अक्तू, 2020 ई. तक आश्विन अधिक (मल) मास

ता. मास वार	नक्षत्र	समय	दोष विवरण
17 अक्तू. शनि	चित्रा	11/52 तक	संक्रान्ति-दिन
18 अक्तू. रवि	स्वा.	8/51 तक	7/15 से मृत्युबाण, लग्नऽभाव
18 अक्तू. रवि	अनु.	30/08 बाद	लग्नऽभाव
22 अक्तू. गुरु	उ.षा.	24/59 बाद	शनियुति, राहुवेध
23 अक्तू. शुक्र	उ.षा.	25/28 तक	शनियुति, राहुवेध
23 अक्तू. शुक्र	श्रव.	25/28 बाद	भुजंगपात
24 अक्तू. शनि	श्रव.	26/38 तक	भुजंगपात
29 अक्तू. गुरु	रेव.	12/00 बाद	भौमयुति अपरिहार्य
30 अक्तू. शुक्र	रेव.	14/57 तक	भौमयुति अपरिहार्य
3 नवं., मंग.	मृग.	26/30 बाद	सूर्यग्रहण नक्षत्र, शनिवेध
4 नवं., बुध	मृग.	28/51 तक	सूर्यग्रहण नक्षत्र, शनिवेध
10 नवं., मंग.	मघा	7/56 तक	लग्नऽभाव
10 नवं., मंग.	उ.फा.	30/28 बाद	भौमवेध
11 नवं., बुध	उ.फा.	28/25 तक	भौमवेध
11 नवं., बुध	हस्त	28/25 बाद	लग्नऽभाव, दग्धातिथि
12 नवं., गुरु	चित्रा	25/55 बाद	कृष्ण त्र्योदशी
16 नवं., चंद्र	अनु.	14/37 तक	क्षीण सूर्यांश
19 नवं., गुरु	उ.षा.	9/38 बाद	शनियुति, राहुवेध
20 नवं., शुक्र	उ.षा.	9/22 तक	शनियुति, राहुवेध
21 नवं., शनि	श्रव.	9/53 तक	क्रान्तिसाम्य दोष
25 नवं., बुध	रेव.	18/20 बाद	भौमयुति अपरिहार्य
26 नवं., गुरु	रेव.	21/20 तक	भौमयुति, मृत्युबाण
26 नवं., गुरु	अश्वि	21/20 बाद	व्यतिपात
29 नवं., रवि	रोहि.	30/03 बाद	लग्नऽभाव
1 दिसं., मंग.	रोहि.	8/31 तक	लग्नऽभाव
1 दिसं., मंग.	मृग.	8/31 बाद	सूर्यग्रहण नक्षत्र, शनिवेध
2 दिसं., बुध	मृग.	10/38 तक	सूर्यग्रहण नक्षत्र, शनिवेध
6 दिसं., रवि	मघा	14/46 बाद	वैधृति, विष्कम्भ
8 दिसं., मंग.	उ.फा.	13/48 बाद	भौम वेध
9 दिसं., बुध	उ.फा.	12/33 तक	भौम वेध
11 दिस., शुक्र	चित्रा	8/48 तक	गुरु परमनीचांश
11 दिसं., शुक्र	स्वा.	30/30 तक	गुरु परमनीचांश

14 जन., 2021 ई. से 17 फर., 2021 ई. तक गुरु अस्त दोष तथा
8 फर., 2021 ई. से संवतान्त (12 अप्रै., 2021 ई.) तक शुक्र अस्तदोष रहेगा।

6 जुला. चंद्र उ.षा. 23/12 तक शनियुति, … 8 फर. 2021 ई. से संवतान्त (12 अप्रै., 2021 ई.) तक शुक्र अस्तदोष रहेगा।

त्रिबल शुद्धि पर आधारित-वर-कन्या की राशि अनुसार शुभ विवाह-मुहूर्त्त निकालें-संवत् २०७७ वि. (सन् 2020-21 ई.)

नीचे वर-कन्या की जन्म अथवा नाम राशि के अनुसार (**त्रिबल शुद्धि-सूर्य, चन्द्र एवं गुरु पर आधारित**) विवाह मुहूर्त्त दिए जा रहे हैं। वर-कन्या की कुण्डली मिलान के पश्चात् उनकी राशियों में जो-जो तारीखें समान होंगी, उन तारीखों में वर-कन्या का विवाह शुभ एवं ग्राह्य होगा। **विवाह लग्न** का निर्णय करने के लिए गत पृष्ठों पर दिए गए शुद्ध मुहूर्त्तों में से किसी विद्वान पण्डित जी के परामर्श अनुसार चयन करना चाहिए। **उदाहरण**–मेष राशि का लड़का और सिंह राशि की लड़की का विवाह मुहूर्त्त **अप्रैल** (वैशाख), 2020 ई. में देखना हो तो, दोनों की राशियों में 15, 16, 17, 26, 27 अप्रैल की तारीखों एवं मुहूर्त्तों में समानता पाई गई है, इनमें से कोई भी तारीख अपनी सुविधानुसार ग्रहण कर सकते हैं। **कार्तिक मास के मुहूर्त्त यद्यपि पर्वतीय** (पहाड़ी) क्षेत्रों में ही ग्राह्य माने जाते हैं। परन्तु वर्तमान परिस्थितियों वश, अन्य प्रदेशों के वासी भी कार्तिक मास में विवाह ग्रहण करने लगे हैं। **ध्यान रहे**, विवाह के मास का निर्धारण मुख्यत: लड़के (वर) की राश्यनुसार किया जाता है। **कन्या** की राशि से गुरु बल तथा दोनों में चन्द्र बल विचारणीय होता है। वर्तमान सामाजिक परिस्थितियों में जबकि कन्याओं का विवाह बालिग होने पर ही करते हैं, अत: गुरु शुद्धि को गम्भीरतापूर्वक न लेते एवं ४, ८, १२वें गुरु को वर्ज्य न समझते हुए पूज्य के रूप में ग्रहण किया गया है।

ध्यान रहे, लड़के की जन्म (अथवा नाम) राशि से ३, ६, १०, ११वें सूर्य शुभ; १, २, ५, ७, ९ वें सूर्य पूज्य तथा ४, ८, १२वें सूर्य त्याज्य होता है। कन्या को १, ३, ६ व १०वें गुरु साधारण पूज्य एवं उन्हें ४, ८, १२वें गुरु विशेष रूपेण पूज्य होगा। विवाह समय में अशुभ ग्रहों का यथाशक्ति दान व पूजा करवा लेनी चाहिए। सूर्य एवं गुरु स्वराशि या मित्रक्षेत्री हों तो उन्हें पूज्य न मानकर शुभ एवं ग्राह्य मान लिया जाता है।

☐ वर (लड़का) ☐	वर कन्या को शुभ, पूज्य मासादि	☐ कन्या (लड़की) ☐
मेष राशि–अप्रै. 15, 16, 17, 26, 27, **मई** 1, 2, 3, 4, 5, 6, 12, 17-18-19 (चं.दा.), 24, **जून** 15-16 (चं.दा.), 25, 26, 27, 29, 30, **जुला.** 6, 7, 8, 12-13-14 (चं.दा.), **अग.** 20, 21, 22, 23, 24, 30, 31, **[कार्तिक मासे अक्तू.** 20, 21, 24, 25, 28-29-30-31 (चं.दा.), **नवं.** 2, 3, 9, 12] तारीखें शुभ होंगी।	मेष राशि के **वर** को आषाढ़, आश्विन, माघ, फाल्गुन-**शुभ**, वैशाख, ज्येष्ठ व कार्तिक मासों में **सूर्य पूज्य** तथा श्रावण, मार्गशीर्ष मास त्याज्य रहेंगे। **कन्या** को गुरु 30 मार्च से 29 जून तक, पुनः 20 नवं. से संवत् के अन्त तक साधारणतया पूज्य होगा। ता. 30 जून से 19 नवं. तक शुभ होगा।	**मेष राशि–अप्रै.** 15, 16, 17, 26, 27, **मई** 1, 2, 3, 4, 5, 6, 12, 17, 18, 19, 24, **जून** 15, 16, 25, 26, 27, 29, 30, **जुला.** 6, 7, 8, 12, 13, 14, 17, 23, 25, 26, 27, 28, **अग.** 3, 4, 7, 8, 13, 20, 21, 22, 23, 24, 30, 31, **[कार्तिक मासे अक्तू.** 20, 21, 24, 25, 28, 29, 30, 31, **नवं.** 2, 3, 9, 12] **मार्गशीर्षे नवं.** 17, 18, 20, 21, 22, 25, 27, 30, **दिसं.** 7, 9, 10 तारीखें शुभ होंगी।
वृष राशि–मई 17, 18, 19, 23, 24, **जून** 15, 16 (चं.दा.), 27, 29, 30, **जुला.** 1, 2, 6, 7, 8, 12, 13-14 (चं.दा.), 17, 25, 26, 27, 28, 29, 30, **अग.** 3, 4, 7, 8, 13 **[कार्तिक मासे अक्तू.** 19, 24, 25, 28, 29, 30, 31, **नवं.** 2, 3, 12] **मार्गशीर्ष में नवं.** 20, 21, 22, 25, 27, 30, **दिसं.** 9, 10 तारीखें शुभ होंगी।	वृष के **वर** को श्रावण, कार्तिक, फाल्गुन मास-**शुभ**, ज्येष्ठ, आश्विन, मार्गशीर्ष, माघ मासों में **सूर्य पूज्य** तथा वैशाख, भाद्रपद मास त्याज्य रहेंगे। कन्या को गुरु 30 जून से 19 नवं. तक विशेष रूपेण पूज्य, शेष अवधि में शुभ रहेगा।	**वृष राशि–अप्रै.** 15, 16, 17, 26, 27, **मई** 3, 4, 5, 6, 12 (10:17 बाद), 17, 18, 19, 24, **जून** 15, 16, 27, 29, 30, **जुला.** 1, 2, 6, 7, 8, 12, 13, 14, 17, 25, 26, 27, 28, 29, 30, **अग.** 3, 4, 7, 8, 13, 21, 22, 23, 24, 25, 30, 31, **[कार्तिक मासे अक्तू.** 19, 24, 25, 28, 29, 30, 31, **नवं.** 2, 3, 12] **मार्गशीर्ष में नवं.** 20, 21, 22, 25, 27, 30, **दिसं.** 9, 10 तारीखें शुभ होंगी।
मिथुन राशि–अप्रै. 17 (12:18 बाद), 26-27 (चं.दा.), **मई** 1, 2, 5 (27:15 बाद), 6, 12 (10:17 तक), **जून** 15, 16, 25, 26, 29 (18:27 बाद), 30, **जुला.** 1, 2, 8 (12:31 बाद), 12, 13, 14, 17, 23, 27, 28, 29, 30, **अग.** 7, 8, 13, 20 (29:15 तक), 23, 24, 25, 31 (27:48 बाद), **[कार्तिक मासे अक्तू.** 19, 20, 21, 25 (15:26 बाद), 28, 29, 30, 31, **नवं.** 2-3 (चं.दा.), 9] **मार्गशीर्ष में नवं.** 17, 18, 22, 25, 27, 30, **दिसं.** 7, 10, (21:52 बाद) तारीखें शुभ होंगी।	मिथुन के **वर** को वैशाख, मार्गशीर्ष मास-**शुभ**। आषाढ़, श्रावण, कार्तिक व फाल्गुन मासों में **सूर्य पूज्य** तथा ज्येष्ठ, आश्विन, माघ मास त्याज्य रहेंगे। इस राशि की **कन्या** को **गुरु** 30 मार्च से 29 जून, पुनः 20 नवं. से संवतान्त तक विशेष रूपेण पूज्य, ता. 30 जून से 19 नवं. तक शुभ रहेगा।	**मिथुन राशि–अप्रै.** 17 (12:18 बाद), 26, 27, **मई** 1, 2, 5 (27:15 बाद), 6, 12 (10:17 तक), 17, 18, 19, 24 (चं.दा.), **जून** 15, 16, 25, 26, 29 (18:27 बाद), 30, **जुला.** 1, 2, 8 (12:31 बाद), 12, 13, 14, 17, 23, 27, 28, 29, 30, **अग.** 7, 8, 13, 20 (29:15 तक), 23, 24, 25, 31 (27:48 बाद), **[कार्तिक मासे अक्तू.** 19, 20, 21, 25 (15:26 बाद), 28, 29, 30, 31, **नवं.** 2, 3, 9] **मार्गशीर्ष में नवं.** 17, 18, 22, 25, 27, 30, **दिसं.** 7, 10 (21:52 बाद) तारीखें शुभ होंगी।

☐ वर (लड़का) ☐	वर कन्या को शुभ, पूज्य मासादि	☐ कन्या (लड़की) ☐
कर्क राशि–अप्रै. 15, 16, 17 (12:18 तक), 26, 27 (चं.दा.), **मई** 1, 2, 3, 4, 5 (27:15 तक), 12, 17, 18, 19, 24 (चं.दा.), **जुला.** 17, 23, 25, 26, 29, 30, **अग.** 3, 4, 7, 8, 13, 20, 21, 22, 25, 30, 31 (27:48 तक), **मार्गशीर्ष में नवं.** 17, 18, 20, 21, 25, 27 30, **दिसं.** 7, 9, 10 (21:52 तक) तारीखें शुभ होंगी।	कर्क राशि के **वर** को वैशाख, ज्येष्ठ, आश्विन मास-**शुभ,** श्रावण, भाद्रुपद, मार्गशीर्ष व माघ मासों में **सूर्य पूज्य,** तथा आषाढ़, कार्तिक व फाल्गुन मास **त्याज्य** रहेंगे। कर्क राशि की **कन्या** को **गुरु** 30 जून से 19 नवं. तक साधारण रुपेण पूज्य, शेष अवधि में शुभ रहेगा।	**कर्क राशि–अप्रै.** 15, 16, 17 (12:18 तक), 26, 27, **मई** 1, 2, 3, 4, 5 (27:15 तक), 12, 17, 18, 19, 24, **जून** 15, 16, 25, 26, 27, 29 (18:27 तक), **जुला.** 1, 2, 6, 7, 8 (12:31 तक), 12, 13, 14, 17, 23, 25, 26, 29, 30, **अग.** 3, 4, 7, 8, 13, 20, 21, 22, 25, 30, 31 (27:48 तक), **[कार्तिक मासे अक्तू.** 19, 20, 21, 24, 25 (15:18 तक), 28, 29, 30, 31, **नवं.** 2, 3, 9, 12 **] मार्गशीर्ष में नवं.** 17, 18, 20, 21, 25, 27, 30, **दिसं.** 7, 9, 10 (21:52 तक) तारीखें शुभ होंगी।
सिंह राशि–अप्रै. 15, 16, 17, 26, 27, **मई** 1, 2, 3, 4, 5, 6, 12, 24, **जून** 16, 25, 26, 27, 29, 30, **जुला.** 6, 7, 8, 13 (11:14 बाद), 14, **अग.** 20, 21, 22, 23, 24, 30, 31, **[कार्तिक मासे अक्तू.** 20, 21, 24, 25, 30, 31, **नवं.** 2, 3, 9, 12] तारीखें शुभ होंगी।	सिंह राशि के **वर** को आश्विन, फाल्गुन मासों में **सूर्य पूज्य,** ज्येष्ठ, आषाढ़, कार्तिक एवं माघ मास **शुभ** तथा चैत्र, श्रावण तथा मार्गशीर्ष मास **त्याज्य** होंगे। सिंह राशि की **कन्या** को **गुरु** 30 मार्च से 29 जून, पुन: 20 नवं. से संवतान्त तक साधारण रुपेण पूज्य, 30 जून से 19 नवं. तक शुभ रहेगा।	**सिंह राशि–अप्रै.** 15, 16, 17, 26, 27, **मई** 1, 2, 3, 4, 5, 6, 12, 24, **जून** 16, 25, 26, 27, 29, 30, **जुला.** 6, 7, 8, 13 (11:14 बाद), 14, 17, 23, 25, 26, 27, 28, **अग.** 3, 4, 13, 20, 21, 22, 23, 24, 30, 31, **[कार्तिक मासे अक्तू.** 20, 21, 24, 25, 30, 31, **नवं.** 2, 3, 9, 12 **] मार्गशीर्ष में नवं.** 17, 18, 20, 21, 22, 27, 30, **दिसं.** 7, 9, 10 तारीखें शुभ होंगी।
कन्या राशि–मई 17, 18, 19, 24, **जून** 15, 25-26-27, (चं.दा.), 29, 30, **जुला.** 1, 2, 6, 7, 8, 12, 13 (11:14 तक), 17, 23, 25, 26, 27, 28, 29, 30, **अग.** 3, 4, 7, 8, 13, **[कार्तिक मासे अक्तू.** 19, 24, 25, 28, 29, **नवं.** 2, 3, 9, 12] **मार्गशीर्ष में नवं.** 20, 21, 22, 25, 30, **दिसं.** 7, 9, 10 तारीखें शुभ होंगी।	कन्या राशि के **वर** को आषाढ़, श्रावण, मार्गशीर्ष व फाल्गुन मास **शुभ।** ज्येष्ठ, आश्विन, कार्तिक व माघ मासों में **सूर्य की पूजा/दानादि** ; वैशाख, भाद्रपद मास **त्याज्य** होंगे। **कन्या** को **गुरु** 30 जून से 19 नवं. तक विशेष रुपेण पूज्य, शेष समयावधि में शुभ रहेगा।	**कन्या राशि–अप्रै.** 15, 16, 17, 26, 27, **मई** 1, 2, 3, 4, 5, 6, 12 (10:17 बाद), 17, 18, 19, 24, **जून** 15, 25, 26, 27, 29, 30, **जुला.** 1, 2, 6, 7, 8, 12, 13 (11:14 तक), 17, 23, 25, 26, 27, 28, 29, 30, **अग.** 3, 4, 7, 8, 13, 20, 21, 22, 23, 24, 25, 30, 31 **[कार्तिक मासे अक्तू.** 19, 24, 25, 28, 29, **नवं.** 2, 3, 9, 12 **] मार्गशीर्ष में नवं.** 20, 21, 22, 25, 30, **दिसं.** 7, 9, 10 तारीखें शुभ होंगी।
तुला राशि–अप्रै. 17 (12:18 बाद), 27 (11:46 बाद), **मई** 1, 2, 3-4-5 (चं.दा.), 6, 12 (10:17 तक), **जून** 15, 16, 25, 26, 27 (चं.दा.), 29, 30, **जुला.** 1, 2, 8 (12:31 बाद), 12, 13, 14, 23, 25, 26, 27, 28, 29, 30, **अग.** 7, 8, 20-21-22 (चं.दा.), 23, 24, 25, 31 (27:48 बाद), **[कार्तिक मासे अक्तू.** 19, 20, 21, 25 (15:26 बाद), 28, 29, 30, 31, **नवं.** 9, 12 (चं.दा.) **] मार्गशीर्ष में नवं.** 17, 18, 22, 25, 27, **दिसं.** 7, 9-10 (चं.दा.) तारीखें शुभ होंगी।	तुला के **वर** को श्रावण, भाद्रपद-शुभ। वैशाख, आषाढ़, कार्तिक, मार्गशीर्ष व फाल्गुन मासों में **सूर्य की पूजा/दान** होगा। ज्येष्ठ, आश्विन व माघ मास **त्याज्य** होंगे। इस राशि की **कन्या** को **गुरु** 30 मार्च से 29 जून, पुन: 20 नवं. से संवतान्त तक विशेष रुपेण पूज्य ; 30 जून से 19 नवं. तक साधारण रुपेण पूज्य रहेगा।	**तुला राशि–अप्रै.** 17 (12:18 बाद), 27 (11:46 बाद), **मई** 1, 2, 3, 4, 5, 6, 12 (10:17 तक), 17, 18, 19, 24 (17:34 बाद), **जून** 15, 16, 25, 26, 27, 29, 30, **जुला.** 1, 2, 8 (12:31 बाद), 12, 13, 14, 23, 25, 26, 27, 28, 29, 30, **अग.** 7, 8, 20, 21, 22, 23, 24, 25, 31 (27:48 बाद), **[कार्तिक मासे अक्तू.** 19, 20, 21, 25 (15:26 बाद), 28, 29, 30, 31, **नवं.** 9, 12] **मार्गशीर्ष में नवं.** 17, 18, 22, 25, 27, **दिसं.** 7, 9, 10 तारीखें शुभ होंगी।

(चं.दा.) तारीखें शुभ होंगी।

तक साधारण रुपेण पूज्य रहेगा।

होंगी।

☐ वर (लड़का) ☐	वर कन्या को शुभ, पूज्य मासादि	☐ कन्या (लड़की) ☐
वृश्चिक राशि–अप्रै. 15, 16, 17 (12:18 तक), 26, 27 (11:46 तक), **मई** 1, 2, 3, 4, 5-6 (चं.दा.), 12, 17, 18, 19, 24 (17:34 तक), **जुला.** 17, 23, 25, 26, 27-28 (चं.दा.), 29, 30, **अग.** 3, 4, 7, 8, 13, 20, 21, 22, 23-24 (चं.दा.), 25, 30, 31 (27:48 तक), **मार्गशीर्ष में नवं.** 17, 18, 20, 21, 25, 27, 30, **दिसं.** 7, 9, 10 तारीखें शुभ होंगी।	वृश्चिक राशि के **वर** को वैशाख, भाद्रपद, आश्विन एवं माघ मास **शुभ,** ज्येष्ठ, श्रावण और मार्ग. मासों में **सूर्य पूज्य** तथा आषाढ़, कार्तिक व फाल्गुन मास **त्याज्य** होंगे। इस राशि की **कन्या** को **गुरु** 30 मार्च से 29 जून, पुनः 20 नवं. से संवतान्त तक साधारण रुपेण, पूज्य, शेष समयावधि में शुभ रहेगा।	**वृश्चिक राशि–अप्रै.** 15, 16, 17 (12:18 तक), 26, 27 (11:46 तक), **मई** 1, 2, 3, 4, 5, 6, 12, 17, 18, 19, 24 (17:34 तक), **जून** 15, 16, 25, 26, 27, 29, 30, **जुला.** 1, 2, 6, 7, 8 (12:31 तक), 12, 13, 14, 17, 23, 25, 26, 27, 28, 29, 30, **अग.** 3, 4, 7, 8, 13, 20, 21, 22, 23, 24, 25, 30, 31 (27:48 तक) [**कार्तिक मासे अक्तू.** 19, 20, 21, 24, 25 (15:26 तक), 28, 29, 30, 31, **नवं.** 2, 3, 9, 12] **मार्गशीर्ष में नवं.** 17, 18, 20, 21, 25, 27, 30, **दिसं.** 7, 9, 10 तारीखें शुभ होंगी।
धनु राशि–अप्रै. 15, 16, 17, 26, 27, **मई** 1, 2, 3, 4, 5, 6, 12, 24, **जून** 16, 25, 26, 27, 29, 30, **जुला.** 1-2 (चं.दा.), 6, 7, 8, 13 (11:14 बाद), 14, **अग.** 20, 21, 22, 23, 24, 25 (चं.दा.), 30, 31, [**कार्तिक मासे अक्तू.** 19 (चं.दा.), 20, 21, 24, 25, 30, 31, **नवं.** 2, 3, 9, 12] तारीखें शुभ होंगी।	धनु राशि के वर को ज्येष्ठ, आश्विन, कार्तिक व फाल्गुन मास **शुभ,** वैशाख, आषाढ़, भाद्रपद मासों में **सूर्य पूज्य** तथा श्रावण, मार्गशीर्ष मास **त्याज्य** होंगे। इस राशि की **कन्या** को **गुरु** 30 जून से 19 नवं. तक साधारण रुपेण पूज्य, शेष समयावधि शुभ रहेगा।	**धनु राशि–अप्रै.** 15, 16, 17, 26, 27, **मई,** 1, 2, 3, 4, 5, 6, 12, 24, **जून** 16, 25, 26, 27, 29, 30, **जुला.** 1, 2, 6, 7, 8, 13 (11:14 बाद), 14, 17, 23, 25, 26, 27, 28, 29, 30, **अग.** 3, 4, 13, 20, 21, 22, 23, 24, 25, 30, 31, [**कार्तिक मासे अक्तू.** 19, 20, 21, 24, 25, 30, 31, **नवं.** 2, 3, 9, 12] **मार्गशीर्ष में नवं.** 17, 18, 20, 21, 22, 27, 30, **दिसं.** 7, 9, 10 तारीखें शुभ होंगी।
मकर राशि–मई 17, 18, 19, 24, **जून** 15, 27, 29, 30, **जुला.** 1, 2, 6, 7, 8, 12, 13 (11:14 तक), 17, 25, 26, 27, 28, 29, 30, **अग.** 3, 4, 7, 8, 13, [**कार्तिक मासे अक्तू.** 19, 20-21 (चं.दा.), 24, 25, 28, 29, **नवं.** 2, 3, 12] **मार्गशीर्ष में नवं.** 17, 18, 20, 21, 22, 25, 30, **दिसं.** 9, 10 तारीखें शुभ होंगी।	मकर के **वर** को आषाढ़, कार्तिक, मार्ग. मास **शुभ।** ज्येष्ठ, श्रावण व आश्विन मासों में **सूर्य पूज्य** तथा वैशाख, भाद्रपद व पौष मास **त्याज्य** होंगे। इस राशि की **कन्याको गुरु** 30 मार्च से 29 जून तक, पुनः 20 नवं. से संवतान्त तक साधारण रुपेण पूज्य, 30 जून से 19 नवं. तक विशेष रुपेण पूज्य होगा।	**मकर राशि–अप्रै.** 15, 16, 17, 26, 27, **मई** 3, 4, 5, 6, 12, 17, 18, 19, 24, **जून** 15, 27, 29, 30, **जुला.** 1, 2, 6, 7, 8, 12, 13 (11:14 तक), 17, 25, 26, 27, 28, 29, 30, **अग.** 3, 4, 7, 8, 13, 21, 22, 23, 24, 25, 30, 31, [**कार्तिक मासे अक्तू.** 19, 20, 21, 24, 25, 28, 29, **नवं.** 2, 3, 12] **मार्गशीर्ष में नवं.** 17, 18, 20, 21, 22, 25, 30, **दिसं.** 9, 10 तारीखें शुभ होंगी।
कुम्भ राशि–अप्रै. 15-16-17 (चं.दा.), 27 (11:46 बाद), **मई** 1, 2, 5 (27:15 बाद), 6, 12 (चं.दा.), **जून** 15, 16, 25, 26, 29 (18:27 बाद), 30, **जुला.** 1, 2, 6-7 (चं.दा.), 8, 12, 13, 14, 23, 27, 28, 29, 30, **अग.** 3, 4, 7, 8, 20 (29:15 तक), 23, 24, 25, 30, 31 [**कार्तिक मासे अक्तू.** 19, 20, 21, 24-25 (चं.दा.), 28, 29, 30, 31, **नवं.** 9] **मार्गशीर्ष में नवं.** 17, 18, 20-21 (चं.दा.), 22, 25, 27, **दिसं.** 7, 10, (21:52 बाद) शुभ होंगी।	कुम्भ राशि के वर को वैशाख, मार्गशीर्ष, श्रावण मास **शुभ,** आषाढ़, भाद्रपद व कार्तिक मासों में **सूर्य पूज्य** ; ज्येष्ठ, आश्विन व माघ मास **त्याज्य** रहेंगे। कुम्भ राशि की **कन्या** को **गुरु** 30 मार्च से 29 जून, पुनः 20 नवं. से संवतान्त तक विशेष रुपेण पूज्य, शेष समयावधि में शुभ रहेगा।	**कुम्भ राशि–अप्रै.** 15, 16, 17, 27 (11:46 बाद), **मई** 1, 2, 5 (27:15 बाद), 6, 12, 17, 18, 19, 24 (17:34 बाद), **जून** 15, 16, 25, 26, 29 (18:27 बाद), 30, **जुला.** 1, 2, 6, 7, 8, 12, 13, 14, 23, 27, 28, 29, 30, **अग.** 3, 4, 7, 8, 20 (29:15 तक), 23, 24, 25, 30, 31, [**कार्तिक मासे अक्तू.** 19, 20, 21, 24, 25, 28, 29, 30, 31, **नवं.** 9] **मार्गशीर्ष में नवं.** 17, 18, 20, 21, 22, 25, 27, **दिसं.** 7, 10 (21:52 बाद) शुभ होंगी।
मीन राशि–अप्रै. 15, 16, 17, 26, 27 (11:46 तक), **मई** 1, 2, 3, 4, 5 (27:15 तक), 12, 17, 18, 19, 24 (17:34 तक), **जुला.** 17, 23, 25, 26, 29, 30, **अग.** 3, 4, 7, 8, 13, 20, 21, 22, 25, 30, 31, **मार्गशीर्ष में नवं.** 17, 18, 20, 21, 22 (चं.दा.), 25, 27, 30, **दिसं.** 7, 9, 10 (21:52 तक) शुभ होंगी।	मीन राशि के **वर** को ज्येष्ठ, भाद्रपद व माघ मास **शुभ,** वैशाख, श्रावण, आश्विन व मार्गशीर्ष मासों में **सूर्य पूज्य** तथा आषाढ़, कार्तिक व फाल्गुन मास **त्याज्य** होंगे। मीन राशि की **कन्याको** 30 जून से 19 नवं. तक **गुरु** साधारण रुपेण पूज्य, शेष अवधि में शुभ रहेगा।	**मीन राशि–अप्रै.** 16, 17, 26, 27 (11:46 तक), **मई** 1, 2, 3, 4, 5 (27:15 तक), 12, 17, 18, 24 (17:34 तक), **जून** 15, 16, 25, 26, 27, 29 (18:27 तक), **जुला.** 1, 2, 6, 7, 8, 12, 13, 14, 17, 23, 25, 26, 29, 30, **अग.** 3, 4, 7, 8, 13, 20, 21, 22, 25, 30, 31, [**कार्तिक मासे अक्तू.** 19, 20, 21, 24, 25, 28, 29, 30, 31, **नवं.** 2, 3, 9, 12] **मार्गशीर्ष में नवं.** 17, 18, 20, 21, 22, 25, 27, 30, **दिसं.** 7, 9, 10, (21:52 तक) शुभ होंगी।

मुण्डन, गृहारम्भ, गृहप्रवेश, विपणि, उपनयन, सर्वदेव प्रतिष्ठादि मुहूर्त्त–वि. संवत् २०७७

प्राचीन भारतीय ज्योतिषाचार्यों द्वारा शुद्धता की दृष्टि से विवाह, मुण्डनादि मुहूर्त्तों के निर्धारण में मुख्यतः इक्कीस दोषों का उल्लेख किया गया है। इनमें पंचाँगशुद्धि, क्रूर ग्रह का नक्षत्र–वेध, पापग्रह की युति, क्रान्तिसाम्य दोष, मृत्युबाण, षष्ठाष्टम चन्द्र एवं शुक्र विचार, व्यतीपात– वैधृति आदि दुष्ट योगों की युति, गुरु शुक्रास्त का विचार, दग्धा तिथि विचार आदि दोषों का विशेष रूप से विचार किया जाता है। राजमार्त्तण्ड–वशिष्ठ आदि शास्त्रकारों एवं आचार्यों ने भी विवाह के अतिरिक्त चूड़ाकरण, गृहारम्भ, व्रत, प्रतिष्ठा, पुंसवन, कर्णवेध आदि मुहूर्त्तों में भी क्रूर ग्रहों के वेध, युति, व्यतीपात, वैधृति आदि अशुभ योगों एवं दोषों का विचार करने का निर्देश दिया है–विवाहेऽर्ध प्रतिष्ठायां व्रते पुंसवनं तथा कर्णवेधादि चूडायां विद्धऋक्षं विवर्जयेत्॥ ध्यान रहे, शास्त्र नियमानुसार बुधवार के दिन अभिजित मुहूर्त्त भी ग्राह्य नहीं होता। जिन मुहूर्त्तों के आगे केवल शुद्धकाल दिया गया है, वहाँ दैवज्ञों को शुद्धकाल की अवधि में सूर्य, बुध, गुरु, शुक्र एवं लग्नेश की शुभ स्थानों में स्थिति को ध्यान रखते हुए शुभ लग्न का निर्णय स्वयं कर सकते हैं। 'पंचांगदिवाकर' में दिए गए सभी मुहूर्त्तों में सर्वत्र शास्त्र विहित नियमों का यथासम्भव पालन किया जाता है। कुछ अन्य नए प्रचलित पंचांगों के मुहूर्त्तों में क्रूर ग्रहों का वेध, क्रूर ग्रह युति, क्षीण चन्द्र आदि अपरिहार्य दोष पाए जाते हैं, जो मुहूर्त्त–शास्त्र की दृष्टि से सर्वथा चिन्तनीय है।

–निवेदक: पं. विवेक शर्मा

मुण्डन मुहूर्त्त–२०७७ वि.

विशेष विवरण हेतु इसी पंचांग में आगे पृष्ठ नं. 187 पर 'आवश्यक-मुहूर्त्त निर्णय' शीर्षक के अन्तर्गत देखें।

पक्ष तिथि वार	तारीख	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण (घं. मिं.)
चैत्र नवरात्रों में (आवश्यके)			
चैत्र शु. १, बुध	25 मार्च	रेव.	ल. २, ४
चैत्र शु. २, गुरु	26 मार्च	रे./अ.	ल. १, २, अभिजित्
वैशा. कृ.१०,शुक्र	17 अप्रै.	धनि.	ल. अभि., ४, मु. 12:18 तक
वैशा. कृ.११,शनि	18 अप्रै.	शत.	ल. ४, अभिजित् (वैश्यानां)
वैशा. शु. ७, गुरु	30 अप्रै.	पुष्य	ल. ४, अभि., मु. 14:40 तक
वैशा. शु.१३, मंग	5 मई	हस्त	ल. १, ४, अभि. (क्षत्रियाणां)
ज्ये. कृ. २, शनि	9 मई	ज्ये.	ल. १, अभि., ५
ज्ये. कृ. ८, शुक्र	15 मई	धनि.	मु. प्रातः 8:23 तक
ज्ये. कृ. १२, मंग	19 मई	रेव.	ल. ५, अभि. (क्षत्रियाणां)
ज्ये. शु. २, रवि	24 मई	मृग.	ल. ५, अभिजित् (विप्राणां) (राहुयुति परिहार)
ज्ये. शु. ५, बुध	27 मई	पुष्य	मु. 7:28 बाद, ल. ५
आषा. कृ.१०,चंद्र	15 जून	रेव.	ल. ५, अभि. (सू. दा.)
आषा. कृ.१०,मंग	16 जून	अश्वि	ल. ५, अभि. (क्षत्रियाणां)
आषा. कृ.११,बुध	17 जून	अश्वि	मु. प्रातः 6:04 तक
●आषा. शु.१०, मंग	30 जून	चित्रा	ल. ४, ६, अभि. (क्षत्रियाणां)
●आ. शु.१३,शुक्र	3 जुला	ज्ये.	ल. ४, ६, अभिजित्
●श्राव. कृ. २,मंग	7 जुला	श्रव.	ल. ४, ६, अभि. (क्षत्रियाणां)
●श्राव. कृ. ३,बुध	8 जुला	धनि.	ल. ४, मु. 9:19 तक (भद्रा परिहार)
●श्राव. कृ. ४,गुरु	9 जुला	शत.	मु. 10:12 बाद, ल. ६, अभि.
●श्राव. कृ. ७,रवि	12 जुला	रेव.	मु. 8:18 बाद, ल. ६, अभि. (विप्राणां)
●श्राव. कृ. ८,चंद्र	13 जुला	रे./अ.	ल. ४, ६, अभिजित्
आश्विन-नवरात्रों में–आवश्यके			
शु.आश्वि.शु.२,रवि	18 अक्तू	स्वा.	मु. प्रातः 8:51 तक (विप्राणां)
आश्वि. शु.३, चंद्र	19 अक्तू	अनु.	ल. ९, १०, अभि., मु. 14:08 तक

विशेष नोट–उपरोक्त बिन्दु (●) चिन्हित मुहूर्त्त भारतीय प्राचीन परम्परानुसार दिए गए हैं। पंजाब/हिमाचल के अतिरिक्त काशी आदि के पंचांगकार निरयन कर्क संक्रान्ति (16 जुला.) से ही सूर्य दक्षिणायन मानते हैं, न कि सायन कर्क संक्रान्ति (21 जून) से

–निवेदन-पं. विवेक शर्मा ज्यो.

नींव/गृहारम्भ मुहूर्त्त–सं. २०७७

(खनन, भूमि–पूजन एवं शिलान्यास मुहूर्त्त)

विशेष विवरण हेतु देखें पृष्ठ 192

पक्ष तिथि वार	तारीख	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण (घं. मिं.)
*वैशा.कृ.११,शनि	18 अप्रै.	शत.	ल. २, अभि., ५
*आषा.कृ.१०,चंद्र	15 जून	रेव.	ल. ५, अभि., ६
*आषा.कृ.११,बुध	17 जून	अश्वि.	मु. प्रातः 6:04 तक
श्राव. कृ. ३, बुध	●8 जुला.	धनि.	ल. ५, मु. 9:19 तक
*श्राव कृ. ४,गुरु	●9 जुला	शत.	ल. ५, ६, अभिजित्
*श्राव.कृ.१२,शुक्र	●17 जुला	रोहि.	ल. ५, ६, अभि., ७ (शुक्रयुति परिहार)
श्राव. शु. ७, चंद्र	27 जुला.	स्वा.	मु. 11:04 बाद, ल. ६, अभि. ८
श्राव.शु.१०, बुध	29 जुला.	अनु.	मु. 8:33 बाद, ल. ५, ६, ८
भाद्र कृ. ३, गुरु	6 अग.	शत.	मु. 11:18 तक
*भाद्र.शु.३, शुक्र	21 अग.	उ.फा.	ल. ६, ८, अभि.
*शु.आश्वि.शु.३,चंद्र	19 अक्तू	अनु.	ल. ९, अभि., ११
*कार्ति.कृ.१२, गुरु	12 नवं.	हस्त	ल. ९, अभि., ११
*कार्ति.शु.६,शुक्र	20 नवं.	श्रव.	ल. ९, अभि., ११
कार्ति.शु.११, बुध	25 नवं.	उ.भा.	ल. ९, ११
कार्ति. पूर्णि., चंद्र	30 नवं.	रोहि.	ल. ९, अभि., ११
*मार्ग.कृ.१०,गुरु	10 दिसं.	ह./चि.	ल. ९, अभि., ११

नोट–(*) तारांकित मुहूर्त्तों में केवल वृषवास्तुचक्र शुद्धि नहीं है। शेष सभी मुहूर्त्त दोषों से मुक्त (शुद्ध) हैं। (ii) आगे माघ, फाल्गुन में गुरु एवं शुक्र अस्त रहने से संवतान्त तक कोई शुभ मुहूर्त्त नहीं है। (iii) (●) उपरोक्त बिन्दु चिन्हित मुहूर्त्त भारतीय प्राचीन परम्परानुसार दिए गए हैं। पंजाब, हिमाचल के अतिरिक्त काशी के अधिकतर पंचांगकार निरयण कर्क संक्रान्ति (16 जुला.) से ही सूर्य दक्षिणायन मानते हैं। न कि सायन कर्क संक्रान्ति (लगभग 21 जून) से।

मार्गशीर्ष मास के अतिरिक्त नींव (गृहारम्भ) मुहूर्त्त

(जहाँ मार्गशीर्ष संक्रान्ति 16 नवम्बर को होगी-अर्थात् जिन नगरों में प्रथम प्रविष्टा 16 नवं. को होगा)

[देखें पृष्ठ 25]-पूर्वी हि.प्र., हरियाणा, शेष भारत हेतु]

पक्ष तिथि वार	तारीख	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण (घं. मिं.)
कार्ति.शु. ५, गुरु	19 नवं.	उ.षा.	मु. 9:38 बाद (इन क्षेत्रों में 20 नवं. का मुहूर्त्त ग्राह्य नहीं होगा)
कार्ति.शु. ७, शनि	21 नवं.	श्र./ध.	मु. 12:02 बाद, अभि., ११
मार्ग. कृ. ५, शनि	5 दिसं	पुष्य	ल. ९, अभि., ११

नूतन (नवीन) गृह प्रवेश मुहूर्त्त (संवत् २०७७)

नूतन (नवीन) गृह प्रवेश में अपने पण्डित जी द्वारा निकाले गए मुहूर्त्त पर **नव-गृह में वास्तु-पूजा शान्ति**, नवग्रह पूजन-शान्ति, स्वस्तिवाचन एवं पंचदेव, गोपूजन आदि के पश्चात् ब्राह्मणों एवं आश्रितजनों को भोजन-दानादि एवं कन्या पूजन, जलपूर्ण कलश तथा ब्राह्मणों को आगे करके शंख ध्वनि एवं सुहागिनों द्वारा मंगल गान सहित नव गृह में प्रवेश करना चाहिए।

●बिन्दु चिन्हित मुहूर्त्त यहाँ मतान्तरवश दिए जा रहे हैं। इन्हें परम्परा एवं आवश्यक परिस्थितिवश ग्रहण करें। विशेष विवरण हेतु देखें पृष्ठ 193

पक्ष तिथि वार	तारीख	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण (घं. मिं.)
*वैशा.कृ.८, बुध	15 अप्रै.	उ.षा.	ल. २, ५
वैशा.कृ.१०,शुक्र	17 अप्रै.	धनि.	ल. २, मु. 12:18 तक
वैशा.कृ.११,शनि	18 अप्रै.	शत.	ल. २, अभि., ५
वैशा. शु. ७, गुरु	30 अप्रै.	पुष्य	ल. २, अभि., ५, मु. 14:40 तक
वैशा. शु. ११,चंद्र	4 मई	उ.फा.	ल. २, अभि., ५
*ज्ये.कृ. ८, शुक्र	15 मई	धनि.	ल. २, मु. 8:23 तक
ज्ये. कृ. ११, चंद्र	18 मई	उ.भा.	ल. २, ५, अभि.
*ज्ये. शु. ५, बुध	27 मई	पुष्य	ल. ५, ६ (मु. 7:28 बाद)
*ज्ये. शु. ६, गुरु	28 मई	पुष्य	ल. 7:27 तक
			(शुक्र वार्धक्य विचार)
आषा. कृ.१०,चंद्र	15 जून	रेव.	ल.५, अभि., ६, मु. 16:31 तक
आषा.कृ.११, बुध	17 जून	अश्वि.	मु. प्रातः 6:04 तक
आषा. शु.१२,गुरु	●2 जुला	अनु.	ल. ५, ६, अभिजित
*श्राव.कृ.३, बुध	●8 जुला	धनि.	मु. प्रातः 9:19 तक
*श्राव.कृ.४, गुरु	●9 जुला	शत.	मु. 10:12 बाद
*श्राव.कृ.८, चंद्र	●13जुला	रेव.	ल. ५,६ (11:14 तक)
*श्राव.कृ.८, चंद्र	●13जुला	अश्वि	ल. ६ (11:14 बाद), अभि.
*शु.आश्वि.शु. ३, चंद्र	19 अक्तू	अनु.	ल. ९, अभि. ११ (मु. 14:08 तक)
शु.आश्वि.शु.१२,बुध	28 अक्तू	उ.भा.	मु. 9:11 बाद
शु.आश्वि.शु.१३,गुरु	29 अक्तू	उ.भा.	ल. ९, मु. 12:00 तक
*आश्वि. पूर्णि.शनि	31 अक्तू	अश्वि.	ल. ९, अभि., १०
*कार्ति.कृ.६,शुक्र	6 नवं.	पुन.	ल. ९, अभि., १०
*कार्ति.कृ.६,शनि	7 नवं.	पुन.	मु. प्रातः 7:24 तक
कार्ति. कृ.१२,गुरु	12 नवं.	हस्त	ल. ९, १०, अभिजित्
कार्ति. शु. ७,शनि	21 नवं.	धनि.	मु. 12:02 बाद, ल. अभि., ११ (12:02 तक क्रान्तिसाम्य दोष)
कार्ति. शु.११,बुध	25 नवं.	उ.भा.	ल. ९, ११ (भीष्मपंचक)
कार्ति. शु.१२,शुक्र	27 नवं.	आश्वि	मु. 8:29 बाद, ल. ९, अभि.
*कार्ति.पूर्णि.,चंद्र	30 नवं.	रोहि.	ल. ९, ११, अभि.
*मार्ग.कृ. ३, गुरु	3 दिसं	पुन.	मु. 12:21 बाद
मार्ग. कृ. १०,गुरु	10 दिसं.	ह/चि	ल. ९, ११, अभि.

विशेष नोट–(*) तारांकित मुहूर्त्तों में केवल कलश-चक्र शुद्धि नहीं है। शेष सभी मुहूर्त्त दोषों से मुक्त (शुद्ध) हैं।

पुरातन गृह में प्रवेश मुहूर्त्त-सं. २०७७ वि.

पहिले दिए गए नूतन (नवीन) गृह प्रवेश मुहूर्त्तों के अतिरिक्त निम्नलिखित मुहूर्त्त भी ग्राह्य होंगे। विशेष विवरण पृष्ठ 194 पर देखें।

गुरु-शुक्र के अस्तकाल में (आवश्यक परिस्थितिवश)

पक्ष तिथि वार	तारीख	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण (घं. मिं.)
ज्ये. शु.१०, चंद्र	1 जून	हस्त	मु. 13:16 तक
ज्ये. शु.१२, बुध	3 जून	स्वा.	मु. 11:29 बाद
ज्ये. पूर्णिमा, शुक्र	5 जून	अनु.	ल. २, ५, अभिजित्
आषा. कृ. ५, बुध	10 जून	श्रव.	मु. 10:35 तक
आषा. कृ. ६, गुरु	11 जून	धनि.	मु. 11:28 बाद
आषा. कृ. ७,शुक्र	12 जून	शत.	मु. 10:03 बाद
(श्रावण मास में)			
श्राव. कृ.१२,शुक्र	17 जुला	रोहि.	ल. ५, ६, अभि. (शुक्रयुति परिहार)
श्राव. शु. ७, चंद्र	27 जुला	चि/स्वा	ल. ५, ६, अभि.
श्राव. शु.१०, बुध	29 जुला	अनु.	मु. 8:33 बाद
श्राव. शु. ११,गुरु	30 जुला	अनु.	मु. 7:41 तक
श्राव. पूर्णिमा,चंद्र	3 अग.	श्रव.	मु. 7:19 बाद, ल. ५, ६, अभि.
भाद्र. कृ. २, बुध	5 अग.	शत.	मु. 9:30 बाद, ल. ६, ८
भाद्र. कृ. ३, गुरु	6 अग.	शत.	मु. 11:18 तक
भाद्र. कृ. ५, शनि	8 अग.	उ.भा.	ल. ५, ६, अभि., ८
भाद्र. कृ. ६, चंद्र	10 अग.	अश्वि	ल. ५, ६, अभि., ८
(सन् 2021 ई.)			
गुरु-शुक्र के अस्तकाल में (आवश्यक परिस्थितिवश)			
पौष शु. २, शुक्र	15 जन.	धनि.	ल. ११, १२, अभि., १
पौष शु. ५, चंद्र	18 जन.	उ.भा.	ल. ११, १२, अभि., १
पौष शु. ७, बुध	20 जन.	रेव.	मु. 12:36 तक, ल. ११, १२
पौष शु. १२, चंद्र	25 जन.	मृग.	ल. ११ (राहुयुति परिहार)
माघ कृ. ६, बुध	3 फर.	चित्रा	ल. ११, १२
माघ कृ. ७, गुरु	4 फर.	स्वा.	ल. ११, १२, अभि.
माघ शु. २, शनि	13 फर.	शत.	ल. १२, अभि.
माघ शु. ६, बुध	17 फर.	अश्वि.	ल. १२, ३
माघ शु. १०, चंद्र	22 फर.	मृग.	ल. १२, अभि., ३
माघ शु. १२, बुध	24 फर.	पुन.	ल. १२, ३
माघ शु. १३, गुरु	25 फर.	पुष्य	ल. १२, मु. 13:17 तक
फाल्गु. कृ. २,चंद्र	1 मार्च	उफा/ह	ल. १२, अभिजित्
फाल्गु.कृ.७, शुक्र	5 मार्च	अनु.	ल. १२, अभि., ३

व्यवसाय (विपणि) शुरु करने के मुहूर्त्त-
वि. संवत् २०७७ (2020-21 ई.)

व्यवसाय में दुकान, कार्यालय, फैक्ट्री आदि शुरु करने के मुहूर्त्त के समय किसी कर्मकाण्डी ब्राह्मण द्वारा सर्वदेव, नवग्रह पूजन के पश्चात् दृढ़ कलश-स्थापन एवं कन्या-पूजन आदि के पश्चात् ब्राह्मणों, आश्रित एवं सहयोगीजनों को यथाशक्ति भोजन आदि करवाना चाहिए। विशाल-पैमाने पर व्यापार करने के लिए केवल बु.गु. एवं शुक्रवारों को ही ग्रहण करना चाहिए।

नोट–मुहूर्त्त वाले दिन अपनी राशि से चन्द्र 4, 8, 12वें हो, तो वह दिन त्याग दें। वार-स्वामी भी उदित होना चाहिए।

पक्ष तिथि वार	तारीख	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण (घं. मिं.)
वैशा. कृ. ८, बुध	15 अप्रै.	उ.षा.	ल. २, ५ (शनि अभिजित् में है)
वैशा. शु. ७, गुरु	30 अप्रै.	पुष्य	ल. २, अभि., ५
वैशा. शु. ११, चंद्र	4 मई	उ.फा.	ल. २, अभि., ५
ज्ये. शु. २, रवि	24 मई	मृग.	ल. २, ५, अभि.
ज्ये. शु. ५, बुध	27 मई	पुष्य	मु. 7:28 बाद, ल. २, ५, अभि.
आषा. कृ.१०, चंद्र	15 जून	रेव.	मु. 16:31 तक, ल. ४, ५, अभि.
आषा. कृ.११, बुध	17 जून	अश्वि	मु. 6:04 तक
आषा. शु.८, रवि	28 जून	उ.फा.	मु. 8:46 तक
आषा.शु.१२, गुरु	2 जुला	अनु.	ल. ५, अभि., ६
श्राव. कृ. ७, रवि	12 जुला	रेव.	मु. 8:18 बाद, ल. ५, अभिजित्, ६
श्राव. कृ. ८, चंद्र	13 जुला	रे/अ	ल. ५, अभि., ६
श्राव. कृ.१२, शुक्र	17 जुला	रोहि.	ल. ५, ६, अभि.
श्राव. शु. ५, शनि	25 जुला	हस्त	मु. 14:19 बाद
श्राव. शु. ६, रवि	26 जुला	ह/चि	ल. ५, ६, अभि.
श्राव. शु. ७, चंद्र	27 जुला	चित्रा	मु. 11:04 तक
श्राव.शु. १०, बुध	29 जुला	अनु.	मु. 8:33 बाद
श्राव. शु.११, गुरु	30 जुला	अनु.	मु. 7:41 तक
भाद्र. कृ. ९, गुरु	13 अग.	रोहि.	मु. 12:59 बाद
भाद्र. शु. ३, शुक्र	21 अग.	उ.फा.	ल. ५, ६, अभि.
भाद्र. शु. ५, रवि	23 अग.	चित्रा	ल. ५, ६, अभि., ८
भाद्र शु. ६, चंद्र	24 अग.	स्वा.	ल. ५, ६, अभि., ८
शु.अश्वि.शु.३, चंद्र	19 अक्तू	अनु.	ल. ९, अभि., मुहू. 14:08 तक
शु.आश्वि.शु.१२, बुध	28 अक्तू	उ.भा.	मु. 9:11 बाद
शु.आश्वि.शु.१३, गुरु	29 अक्तू	उ.भा.	मु. 12:00 तक, ल. ९
आश्वि.पूर्णिमा, शनि	31 अक्तू	अश्वि	ल. ९, अभि.
कार्ति. कृ.१२, गुरु	12 नवं.	हस्त	ल. ९, अभि.
कार्ति.कृ.१३, शुक्र	13 नवं.	चित्रा	ल. ९, अभि., १०
कार्ति. शु.११, बुध	25 नवं.	उ.भा.	ल. ९ (भीष्मपंचक विचार)
कार्ति.शु.१२, शुक्र	27 नवं.	अश्वि.	मु. 8:29 बाद (भीष्मपंचक विचार)
कार्ति. पूर्णिमा, चंद्र	30 नवं.	रोहि.	ल. ९, अभि.
मार्ग.कृ.१०, गुरु	10 दिसं.	ह/चि	ल. ९, १०, अभि.

उपनयन (यज्ञोपवीत) मुहूर्त्त-सं. २०७७

विशेष विवरण आगामी पृष्ठों पर **'आवश्यक मुहूर्त्तों'** में पृष्ठ नं. 188 पर देखें।

पक्ष तिथि वार	तारीख	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण (घं. मिं.)
चैत्र शु. २, गुरु	26 मार्च	रे/अ	ल. २, अभि.
चैत्र शु. १०, शुक्र	3 अप्रै.	पुष्य	ल. २, अभि.
वैशा. कृ.२, गुरु	9 अप्रै.	स्वा.	ल. २, ५, अभि.
वैशा. शु. ५, मंग.	28 अप्रै.	आर्द्रा	ल. २, ५, अभि. (सामवेदियों के लिए) (राहु युति परिहार)
वैशा. शु. १०, रवि	3 मई	पू.फा.	ल. २, अभिजित्
वैशा. शु. ११, चंद्र	4 मई	उ.फा.	ल. २, अभिजित्
ज्ये. कृ. ५, मंग.	12 मई	उ.षा.	ल. २, ५ (सामवेदियों हेतु)
ज्ये. शु. ३, चंद्र	25 मई	आर्द्रा	मु. 7:55 बाद
ज्ये. शु. ५, बुध	27 मई	पुष्य	ल. २, ५ (मु. 7:28 बाद)
आषा. शु. ३, बुध	24 जून	पुष्य	मु. 10:15 तक
आषा. शु. ४, गुरु	25 जून	आश्ले	मु. 10:33 से 12:27 तक
आषा. शु.१२, गुरु	2 जुला	अनु.	ल. ५, अभि., ६
श्राव. कृ. २, मंग	7 जुला	श्रव.	ल. ५, ६, अभिजित्
श्राव. कृ. ३, बुध	8 जुला	धनि.	मु. 9:19 तक
श्राव. कृ. ४, गुरु	9 जुला	शत.	मु. 10:12 बाद
श्राव. कृ. ५, शुक्र	10 जुला	पू.भा.	ल. ५, ६, अभिजित्

मुहूर्त्त मुकलावा (द्विरागमन)-सं. २०७७

विशेष विवरण आगामी पृष्ठों पर 'आवश्यक मुहूर्त्त निर्णय' में पृष्ठ नं. 190 पर देखें।

पक्ष तिथि वार	तारीख	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण (घं. मिं.)
वैशा. कृ. ८, बुध	15 अप्रै.	उ.षा.	ल. २, ५
वैशा. कृ.१०, शुक्र	17 अप्रै.	धनि.	ल. २, अभि., ५
वैशा. शु. ४, चंद्र	27 अप्रै.	मृग.	मु. 14:30 बाद
वैशा. शु. ७, गुरु	30 अप्रै.	पुष्य	ल. २, अभि., ५
वैशा. शु.११, चंद्र	4 मई	उ.फा.	ल. २, अभि., ५
कार्ति. शु. ५, गुरु	19 नवं.	उ.षा.	ल. ९, अभि., ११, १२
कार्ति. शु. ६, शुक्र	20 नवं.	श्रव.	मु. 9:22 बाद, ल. ९, १०, अभि., १२
कार्ति. शु.११, बुध	25 नवं.	उ.भा.	ल. ९, १०, ११, १२
कार्ति. पूर्णिमा, चंद्र	30 नवं.	रोहि.	ल. ९, ११, अभि., १२
मार्ग. कृ. ३, गुरु	3 दिसं.	पुन.	मु. 12:21 बाद
मार्ग. कृ. ९, बुध	9 दिसं.	हस्त	मु. 15:18 बाद
मार्ग. कृ. १०, गुरु	10 दिसं.	ह/चि	ल. ९, ११, अभि.

सर्वदेव प्रतिष्ठा मुहूर्त्त-सं. २०७७

आगे लिखे उत्तरायण में सर्वदेव प्रतिष्ठा मुहूर्त्त प्रायः सभी सात्त्विक देवी-देवताओं की मूर्त्ति-स्थापना, जलाशय, बावड़ी, कूँआं आदि के निर्माण हेतु भी ग्रहणीय होंगे। सात्त्विक देवी-देवताओं की मूर्त्ति स्थापना में उत्तरायण मास तथा उनके अवतरण (जयन्ती) का दिवस भी विशेष रूप से ग्राह्य होगा।

जैसे-श्रीविष्णु, राम की मूर्त्ति स्थापना में वैशाख आदि उत्तरायण मासों के अतिरिक्त अक्षय-तृतीया, रामनवमी विजयादशमी, दीपावली आदि विशेष शुभ हैं। श्री विष्णु-प्रतिमा में माघ मास वर्जित होता है। श्रीकृष्ण की प्रतिमा के लिए उत्तरायण मास, भाद्र. कृष्णाष्टमी तथा मार्गशीर्ष मास शुभ माने जाते हैं। श्रीशिव मूर्त्ति एवं शिवलिङ्ग की प्रतिष्ठा में श्रावण एवं फाल्गुन मास की चुतर्दशी (महाशिवरात्रि) विशेषतया प्रशस्त है।

सभी सात्त्विक देवी-देवताओं की प्रतिष्ठा पूर्वाह्ण-काल में (मध्याह्न से पहिले) ही की जाती है। कालभैरव आदि तामस देवों के लिए दक्षिणायन एवं मार्गशीर्ष मास विशेष ग्राह्य हैं। अतः दक्षिणायन में भी प्रतिष्ठा मुहूर्त्त अलग से दिए गए हैं।

पक्ष तिथि वार	तारीख	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण (घं. मिं.)
वैशा. कृ. ८, बुध	15 अप्रै.	उ.षा.	ल. २, ५
वैशा. कृ.१०, शुक्र	17 अप्रै.	धनि.	ल. २, अभि., ५
वैशा. कृ.११, शनि	18 अप्रै.	शत.	ल. २, अभि., ५
वैशा. शु. ७, गुरु	30 अप्रै.	पुष्य	ल. २, अभि., ५
वैशा. शु. ११, चंद्र	4 मई	उ.फा.	ल. २, अभि., ५
ज्ये. कृ. २, शनि	9 मई	ज्ये.	ल. २, अभि., ५ (दुर्गा)
ज्ये. कृ. ८, शुक्र	15 मई	धनि.	ल. ४, ५, अभि.
ज्ये. कृ. ११, चंद्र	18 मई	उ.भा.	ल. ४, ५, अभि.
ज्ये. शु. २, रवि	24 मई	मृग.	ल. ४, ५, अभि. (गुरु पादवेधऽभाव)

पक्ष तिथि वार	तारीख	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण (घं. मिं.)
ज्ये. शु. ५, बुध	27 मई	पुष्य	मु. प्रात: 7:28 बाद,
आषा. कृ.१०,चंद्र	15 जून	रेव.	ल. ४, ५, ६ (श्रीगणेश)
आषा. शु. ३, बुध	24 जून	पुष्य	मु. 10:15 तक
आषा. शु. ८, रवि	28 जून	उ.फा.	मु. 8:46 तक
आषा. शु.१२,गुरु	2 जुला	अनु.	ल. ४, ५, अभि., ६
आषा.शु.१३,शुक्र	3 जुला	ज्ये.	ल. ४, ५, अभि., ६ (मु. 13:17 तक)
श्राव. कृ. ३, बुध	8 जुला	धनि.	मु. 9:19 तक
श्राव. कृ. ४, गुरु	9 जुला	शत.	मु. 10:12 बाद
श्राव. कृ. ७, रवि	12 जुला	रेव.	ल.४,५,अभि.(मु.8:18 बाद)
श्राव. कृ. ८, चंद्र	13 जुला	रे/अ	ल. ४, ५, अभि.

तामसदेव प्रतिष्ठा मुहूर्त्त (दक्षिणायन में)

कार्ति.शु.१२,शुक्र	27 नवं.	अश्वि	मु. 8:29 बाद
कार्ति. पूर्णि., चंद्र	30 नवं.	रोहि.	ल. ९
मार्ग. कृ. ७, चंद्र	7 दिसं	मघा	मु. 7:40 बाद
मार्ग. कृ. ८, मंग	8 दिसं	पू.फा.	ल. ९
मार्ग. कृ.१०, गुरु	10 दिसं	ह/चि	ल. ९

श्रीदुर्गा/गौरी देवी प्रतिष्ठा मुहूर्त्त २०७७

आगे लिखे मुहूर्त्त समस्त देवियों की प्रतिष्ठा के लिए शुभ होंगे। परन्तु इनमें से शुक्ल पक्ष की तृतीया तिथियां श्रीगौरी की प्रतिष्ठा हेतु विशेष रूप से शुभ एवं प्रशस्त होंगी।

वैशा. कृ. ८, बुध	15 अप्रै.	उ.षा.	ल. २ (शनि युति नहीं है)
वैशा.कृ.१०,शुक्र	17 अप्रै.	धनि.	ल. २, अभि., ५
वैशा. शु. २, शनि	25 अप्रै.	कृति.	ल. २, अभि., ५
वैशा. शु. ७, गुरु	30 अप्रै.	पुष्य	ल. २, अभि., ५
वैशा. शु.११, चंद्र	4 मई	उ.फा.	ल. २, अभि., ५
ज्ये. कृ. २, शनि	9 मई	ज्ये.	ल. २, अभि., ५ (मु.6:33 बाद)
ज्ये. कृ. ८, शुक्र	15 मई	धनि.	मु. 8:30 तक
ज्ये. कृ.११, चंद्र	18 मई	उ.भा.	ल. २, अभि., ५
ज्ये. शु. २, रवि	24 मई	मृग.	ल. २, अभि. ५ (गुरु पादवेधऽभाव)
ज्ये. शु. ५, बुध	27 मई	पुष्य	मु. 7:28 बाद, ल. ५

पक्ष तिथि वार	तारीख	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण (घं. मिं.)
ज्ये. शु. ६, गुरु	28 मई	पुष्य	मु. 7:27 तक (शु. दा.)
आषा. कृ.१०,चंद्र	15 जून	रेव.	ल. ४, ५, ६
आषा. कृ.१२,गुरु	18 जून	कृति.	मु. 8:31 से 9:40 तक
आषा.शु.१२, गुरु	2 जुला	अनु.	ल. ५, अभिजित्
आषा.शु.१३,शुक्र	3 जुला	ज्ये.	ल. ५, अभिजित्
श्राव. कृ. ३, बुध	8 जुला	धनि.	मु. प्रात: 9:19 तक

भगवान् शिव प्रतिष्ठा मुहूर्त्त सं. २०७७

गत कालमों में दिए गए सर्वदेव प्रतिष्ठा मुहूर्त्तों के अतिरिक्त आगे भगवान् शिव प्रतिमा व शिवलिङ्ग स्थापना हेतु मुख्य मुहूर्त्त दिए जा रहे हैं, जो विशेषत: शुभ एवं ग्राह्य होंगे। शिव प्रतिमा/शिवलिङ्ग प्रतिष्ठा हेतु निम्न मुहूर्त्तों में आगे दिए गए '**शिववास चक्र**' का भी प्रयोग करें तो विशेष शुभ होगा। **शिव प्रतिष्ठा हेतु उत्तरायण मास, मिथुन लग्न** व आर्द्रा नक्षत्र विशेष प्रशस्त एवं ग्राह्य माने गए हैं। शिव प्रतिष्ठा में श्रावण व मार्गशीर्ष मास भी ग्राह्य माने गए हैं।

पक्ष तिथि वार	तारीख	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण (घं. मिं.)
वैशा. शु. ५, मंग.	28 अप्रै.	आर्द्रा	ल. २, ३, अभि.(राहुयुति परिहार)
वैशा. शु. ७, गुरु	30 अप्रै.	पुष्य	ल. २, ३
वैशा. शु.१०, रवि	3 मई	पू.फा.	ल. २, ३, मु. 12:08 तक
वैशा. शु.१३, मंग	5 मई	हस्त	ल. २, ३
वैशा.शु.१४, बुध	6 मई	चित्रा	ल. २, ३
ज्ये. कृ. ८, शुक्र	15 मई	धनि.	मु. 8:30 तक
ज्ये. कृ. १२, मंग.	19 मई	रेव.	ल. ३, ५
ज्ये. कृ. १३, बुध	20 मई	अश्वि	ल. ३, ५
ज्ये. शु. २, रवि	24 मई	मृग.	ल. ३, ५ (राहुयुति परिहार)
ज्ये. शु. ३, चंद्र	25 मई	मृ/आ	ल. ३, ५ (शूलयोग ग्राह्य)
ज्ये. शु. ५, बुध	27 मई	पुष्य	मु. 7:28 बाद, ल. ३, ५
आषा. शु. ५,शुक्र	26 जून	मघा	ल. ३, ५
आषा.शु.१०, मंग	30 जून	चि/स्वा	ल. ३, ५
आषा.शु. १२,गुरु	2 जुला	अनु.	ल. ३, ५
आषा.शु. १३,शुक्र	3 जुला	ज्ये.	ल. ३, ५
श्राव. कृ. ३, बुध	8 जुला	धनि	ल. ५
श्राव. कृ. ४, गुरु	9 जुला	शत.	ल. ५
श्राव. कृ. ८, चंद्र	13 जुला	रे/अ	ल. ५
श्राव. कृ.१२,शुक्र	17 जुला	रोहि.	ल. ५, ६ (शुक्रयुति परिहार)
श्राव. कृ. १४,रवि	19 जुला	आर्द्रा	ल. ५, ६
श्राव. शु. १, मंग	21 जुला	पुष्य	ल. ५, ६
श्राव. शु. ६, रवि	26 जुला	हस्त	ल. ५
श्राव. शु. ७, चंद्र	27 जुला	चि/स्वा	ल. ५
श्राव. शु. १०,बुध	29 जुला	अनु.	8:33 बाद
श्राव. पूर्णिमा,चंद्र	3 अग.	श्रव.	मु. 7:19 बाद
भाद्र. कृ. १, मंग	4 अग.	श्रव.	मु. 8:11 तक
भाद्र. कृ. २, बुध	5 अग.	शत.	मु. 9:30 बाद
कार्ति. शु. ६,शुक्र	20 नवं.	श्रव.	मु. 9:22 बाद
कार्ति. शु. ७,शनि	21 नवं.	श्र/ध	मु. 12:02 बाद, ११
कार्ति. शु.१२,शुक्र	27 नवं.	अश्वि	मु. 8:29 बाद
कार्ति. पूर्णिमा,चंद्र	30 नवं.	रोहि.	ल. ८, ९
मार्ग. कृ. १, मंग.	1 दिसं	रोहि.	मु. 8:31 तक
मार्ग. कृ. ३, गुरु	3 दिसं	आर्द्रा	ल. ९, ११
मार्ग. कृ. ४, शुक्र	4 दिसं	पुन.	ल. ९, ११
मार्ग. कृ. ८, मंग.	8 दिसं	पू.फा.	ल. ९, ११

श्रीगणेश प्रतिमा प्रतिष्ठा मुहूर्त्त

श्राव. कृ. ३, बुध	8 जुला	धनि.	मु. 9:19 बाद
भाद्र. कृ. ४, शुक्र	7 अग.	पू.भा.	ल. ५, ६, ८
मार्ग. कृ. ४, शुक्र	4 दिसं.	पुन.	ल. ९, ११

श्री स्कन्द प्रतिष्ठा मुहूर्त्त

आषा. शु. ६,शुक्र	26 जून	मघा	ल. ३, ५

शिववास चक्र

शिवलिङ्ग एवं शिव मूर्त्ति स्थापना एवं प्रतिष्ठार्थ

ऊपर लिखे शास्त्र-विहित मुहूर्त्तों में से विशेष मुहूर्त्त के चयन हेतु कुछ विद्वान् शिववास चक्र का भी प्रयोग करते हैं। पाठकों के लाभ हेतु शिववास चक्र दिया जा रहा हैं। इस चक्र की प्रयोग विधि इस प्रकार से है–

उपरोक्त लिखी गई तिथियों में से अभीष्ट (Required) तिथि की संख्या को दोगुणा करके उसमें, पाँच जोड़ देवें, फिर कुल मान को सात से भाग कर देवें, जो शेष संख्या बचे, उसके अनुसार शिव

का वास जानना। ***उदाहरण***—*मान लो हमने पंचमी तिथि के सम्बन्ध में शिववास जानना है, तो पाँच संख्या को दोगुणा करने पर दस संख्या मिली, इसमें 5 जमा करके 15 संख्या हुई, इसको 7 द्वारा भाग देने पर शेष 1 बचा, इसका फल लाभ/सुख अच्छा लिखा है। कुछ विद्वान् महामृत्युमुञ्जय आदि शैव मन्त्रानुष्ठान के पश्चात् करणीय होमादि में भी इस शिववास चक्र का विचार करते हैं।*

शेष	शिववास	फल
१	कैलाश पर	शुभ/लाभ, सुख
२	गौरी संग	शुभ-लाभ
३	बैल पर	कार्य सिद्धि
४	सभा में	कष्टकारी
५	भोजन	दुख प्रदायक
६	रमण	कष्टप्रद
(०)	श्मशान	नेष्ट फल

श्रीमद्भागवत, हरिवंशपुराण, रामायणादि कथा प्रारम्भ मुहूर्त्त-वि. संवत् २०७७

पक्ष तिथि वार	तारीख	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण (घं. मिं.)
वैशा. कृ. ८, बुध	15 अप्रै.	उ.षा.	ल. १, २ (शनि अभिजित् में)
वैशा. कृ.१०,शुक्र	17 अप्रै.	धनि.	ल. १, २, मु. 12:18 तक
वैशा. कृ.१२, रवि	19 अप्रै.	पू.भा.	ल. २
वैशा. शु. ७, गुरु	30 अप्रै.	पुष्य	ल. २, अभिजित्
वैशा. शु. १०,रवि	3 मई	पू.फा.	ल. २
वैशा. शु. ११,चंद्र	4 मई	उ.फा.	ल. २
ज्ये. कृ. ८, शुक्र	15 मई	धनि.	मु. 8:30 तक
ज्ये. कृ. ११, चंद्र	18 मई	उ.भा.	ल. २, ४
ज्ये. शु. २, रवि	24 मई	मृग.	ल. २, ४
ज्ये. शु. ५, बुध	27 मई	पुष्य	ल. ४ (मु. 7:28 बाद), ५
ज्ये. शु. ६, गुरु	28 मई	पुष्य	ल. ४ (शु. दा.) शुक्रवार्धक्य
आषा. कृ.१०,चंद्र	15 जून	रेव.	ल. ४
आषा. शु.१२,गुरु	2 जुला	अनु.	ल. ४, ५
श्राव. कृ. ३, बुध	8 जुला	धनि.	मु. 9:19 तक
श्राव. कृ. ५,शुक्र	10 जुला	पू.भा.	ल. ४, ५
श्राव. कृ. ७, रवि	12 जुला	रेव.	मु. 8:18 बाद, ल. ५
श्राव. कृ. ८, चंद्र	13 जुला	रे/अ	ल. ४, ५
श्राव. शु. १०,बुध	29 जुला	अनु.	मु. 8:33 बाद
श्राव. शु.११, गुरु	30 जुला	अनु.	मु. 7:41 तक
भाद्र. कृ. २, बुध	5 अग.	शत.	ल. ५, ६
भाद्र. कृ. ३, गुरु	6 अग.	श./पू	मु. 11:33 तक
भाद्र. कृ. ६, चंद्र	10 अग.	अश्वि	ल. ५, ६
भाद्र शु. ३, शुक्र	21 अग.	उ.फा.	ल. ६, ८
भाद्र. शु. ५, रवि	23 अग.	चित्रा	ल. ६, ८
भाद्र शु. १३, चंद्र	31 अग.	श्रव.	मु. 8:49 तक
शु.आश्वि.शु.२,रवि	18 अक्तू	स्वा.	मु. 8:51 तक
शु.आश्वि.शु.३,चंद्र	19 अक्तू	अनु.	ल. ९
शु.आश्वि.शु.६,गुरु	22 अक्तू	पू.षा.	मु. 7:40 बाद
शु.आश्वि.शु.९,रवि	25 अक्तू	धनि.	ल. ९, मु. 7:42 बाद
शु.आश्वि.शु.१२,बुध	28 अक्तू	उ.भा.	ल. ९ (मु. 9:11 बाद)
शु.आश्वि.शु.१३,गुरु	29 अक्तू	उ.भा.	ल. ९
कार्ति. कृ. ६,शुक्र	6 नवं.	पुन.	ल. ९
कार्ति. कृ. १२,गुरु	12 नवं.	हस्त	ल. ९
कार्ति. शु. ५, गुरु	19 नवं.	पू.षा.	मु. 9:38 तक
कार्ति. शु. ११,बुध	25 नवं.	उ.भा.	ल. ९
कार्ति. शु. १२,गुरु	26 नवं.	रेव.	मु. 7:35 तक
कार्ति. पूर्णिमा,चंद्र	30 नवं.	रोहि.	ल. ९
मार्ग. कृ. १०,गुरु	10 दिसं.	ह/चि	ल. ९

वाहनादि क्रय मुहूर्त्त-वि. संवत् २०७७

पक्ष तिथि वार	तारीख	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण (घं. मिं.)
चैत्र शु. १, बुध	25 मार्च	रेव.	ल. २, ४
चैत्र शु. २, गुरु	26 मार्च	रे/अ	ल. २, अभिजित्
चैत्र शु. १०, शुक्र	3 अप्रै	पुष्य	ल. २, अभिजित्
चैत्र शु. १२, रवि	5 अप्रै.	मघा	ल. २, अभिजित्
चैत्र शु. १३, चंद्र	6 अप्रै.	पू.फा.	मु. 12:16 तक
चैत्र पूर्णिमा, बुध	8 अप्रै.	चित्रा	मु. 11:21 बाद,
वैशा.कृ. १०,शुक्र	17 अप्रै.	धनि.	मु. 12:18 तक
वैशा.कृ. ११,शनि	18 अप्रै.	शत.	ल. २, ४, अभिजित्
वैशा.कृ. १२,रवि	19 अप्रै.	पू.भा.	ल. २, अभि., ४
वैशा. शु. ५, चंद्र	27 अप्रै.	मृग.	मु. 14:30 बाद
वैशा. शु. ७, गुरु	30 अप्रै.	पुष्य	मु. 14:40 बाद
वैशा.शु. १०,शनि	2 मई	मघा	मु. 11:36 बाद
वैशा. शु. १०, रवि	3 मई	पू.फा.	ल. २, मु. 12:08 तक
वैशा. शु.११, चंद्र	4 मई	उ.फा.	ल. २
ज्ये.कृ. ११, चंद्र	18 मई	उ.भा.	ल. ४, ५, अभिजित्
ज्ये. शु. २, रवि	24 मई	मृग.	ल. ४, ५, अभि., ६
ज्ये. शु. ५, बुध	27 मई	पुष्य	मु. 7:28 बाद,
आषा.कृ.१०, चंद्र	15 जून	रेव.	ल. ४, ५, अभि., ६
आषा.शु. ५, शुक्र	26 जून	म/पू	ल. ४, ५, अभि., ६
आषा.शु. १२,गुरु	2 जुला	अनु.	ल. ४, ५, अभि., ६
श्राव. कृ.३, बुध	8 जुला	धनि.	ल. ४, ५, ६
श्राव. कृ. ५,शुक्र	10 जुला	पू.भा.	ल. ४, ५, अभि., ६
श्राव. शु. ३, गुरु	23 जुला	मघा	मु. 12:02 बाद
श्राव. शु. ५, शनि	25 जुला	हस्त	ल. ५, ६, अभिजित्
श्राव. शु. ६, रवि	26 जुला	ह/चि	ल. ५, ६, अभि., ७
श्राव.शु. १०, बुध	29 जुला	अनु.	मु. 8:33 से 15:05 तक
श्राव. पूर्णिमा,चंद्र	3 अग.	श्रव.	मु. 7:19 बाद, ल. ५, ६, अभि., ८
भाद्र. कृ. २, बुध	5 अग.	शत.	मु. 9:30 बाद, ल. ६, ८
भाद्र. कृ. ३, गुरु	6 अग.	श/पू	मु. 11:33 तक
भाद्र. कृ. ५, शनि	8 अग.	उ.भा.	ल. ५, ६, अभि., ८
भाद्र. शु. ३, शुक्र	21 अग.	उ.फा.	ल. ६, अभि., ८
भाद्र. शु. ५, रवि	23 अग.	चित्रा	ल. ६, ७, अभि., ८
भाद्र. शु. ६, चंद्र	24 अग.	स्वा.	मु. 9:12 बाद, ल. ७
भाद्र. शु. ११,शनि	29 अग.	पू.षा.	मु. 13:03 तक, ल. ६, ७
भाद्र. शु. १३,चंद्र	31 अग.	श्रव.	मु. 8:49 तक
शु.अश्वि.शु.३,चंद्र	19 अक्तू	अनु.	ल. ९, अभि., ११
शु.आश्वि.शु.५,बुध	21 अक्तू	मूल	ल. ९, ११
शु.आश्वि.शु.६,गुरु	22 अक्तू	पू.षा.	ल. ९, ११
शु.आश्वि.शु.१०,रवि	25 अक्तू	धनि.	ल. ९, ११
शु.आश्वि.शु.१२,बुध	28 अक्तू	उ.भा.	ल. ९, ११ (मु. 9:11 बाद)
शु.आश्वि.शु.१३,गुरु	29 अक्तू	उ.भा.	मु. 12:00 तक
आश्विन पूर्णि., शनि	31 अक्तू	अश्वि	ल. ९, ११
कार्ति. कृ. ६,शुक्र	6 नवं.	पुन.	ल. ९, १०, अभि., ११
कार्ति. कृ.१२,गुरु	12 नवं.	हस्त	ल. ९, १०, अभि., ११
कार्ति.शु. ५, गुरु	19 नवं.	पू.षा.	ल. ९, मु. 9:38 तक
कार्ति. शु. ६,शुक्र	20 नवं.	श्रव.	मु. 9:22 बाद
कार्ति. शु. ११,बुध	25 नवं.	उ.भा.	मु. 15:57 तक
कार्ति. शु.१२,शुक्र	27 नवं.	आश्वि	मु. 8:29 बाद
मार्ग. कृ. ७, चन्द्र	7 दिसं.	मघा	मु. 7:40 बाद, ल. ९, अभि., ११
मार्ग. कृ. १०,गुरु	10 दिसं.	ह/चि	ल. ९, १०, अभि., ११, १२

ॐ श्रीमहालक्ष्मी पूजन (दीपावली) के शुभकाल (मुहूर्त्त) (14 नवम्बर, शनिवार, सन् 2020 ई.) ॐ

ब्रह्मपुराण अनुसार कार्तिक मास की अमावस्या को अर्धरात्रि के समय लक्ष्मी महारानी सद्‌गृहस्थों के घर में जहाँ-तहाँ विचरण करती हैं। इसलिए अपने घर को सब प्रकार से स्वच्छ, शुद्ध और सुभोभित करके दीपावली तथा दीपमालिका मनाने से लक्ष्मी जी प्रसन्न होते हैं तथा वहाँ स्थायी रूप से निवास करती हैं। यह अमावस्या प्रदोषकाल एवं अर्धरात्रि-व्यापिनी हो, तो विशेष रूप से शुभ होती है।

प्रस्तुत वर्ष कार्तिक अमावस 14 नवम्बर, शनिवार, 2020 ई. को दोपहर 14$^{\text{घं.}}$-18$^{\text{मिं.}}$ बाद अपराह्न, सायाह्न, प्रदोष निशीथ, महानिशीथ व्यापिनी होगी। अत: **'दीपावली पर्व'** 14 नवम्बर, शनिवार, 2020 ई. को ही होगा।

विशेष कृत्य–इस दिन प्रात: ब्राह्ममुहूर्त्त में उठकर दैनिक कृत्यों से निवृत्त हो पितृगण तथा देवताओं का पूजन करना चाहिए। सम्भव हो तो दूध, दही और घृत से पितरों का पार्वण-श्राद्ध करना चाहिए। यदि यह सम्भव हो तो दिन भर उपवास कर गोधूलि वेला में अथवा वृष, सिंह, वृश्चिक आदि स्थिर लग्न में श्रीगणेश, कलश, षोडशमातृका एवं ग्रहपूजनपूर्वक भगवती लक्ष्मी का षोडशोपचार-पूजन करना चाहिए। इसके अनन्तर महाकाली का दावात के रूप में, महासरस्वती का कलम, बही आदि के रूप में तथा कुबेर का तुला के रूप में सविधि पूजन करना चाहिए। इसी समय दीपपूजन कर यमराज तथा पितृगणों के निमित्त ससंकल्प दीपदान करना चाहिए। तदोपरान्त यथोलब्ध निशीथादि शुभ मुहूर्त्तों में मन्त्र-जप, यन्त्र-सिद्धि आदि अनुष्ठान सम्पादित करने चाहिए।

दीपावली वास्तव में पाँच पर्वों का महोत्सव माना जाता है, जिसकी व्याप्ति कार्तिक कृष्ण त्रयोदशी (धनतेरस) से कार्तिक शुक्ल द्वितीया (भाई-दूज) तक रहती है। दीपावली के पर्व पर धन की प्रभूत प्राप्ति के लिए धन की अधिष्ठात्री धनदा भगवती लक्ष्मी का समारोहपूर्वक आवाहन, षोडशोपचार सहित पूजा की जाती है। आगे दिए गए निर्दिष्ट शुभ कालों में किसी स्वच्छ एवं पवित्र स्थान पर आटा, हल्दी, अक्षत एवं पुष्पादि से अष्टदल कमल बनाकर श्रीलक्ष्मी का आवाहन एवं स्थापना करके देवों की विधिवत पूजार्चना करनी चाहिए।

आवाहन मन्त्र–**'कां सोस्मितां हिरण्यप्राकारामार्द्रां ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीम्।**
पद्मेस्थितां पद्मवर्णां तामिहोप ह्वये श्रियम्।। (श्रीसूक्तम्)।

पूजा मन्त्र–**'ॐ गं गणपतये नम:।। लक्ष्म्यै नम:।। नमस्ते सर्वदेवानां वरदासि हरे: प्रिया। या गतिस्त्वत्प्रपन्नानां सा मे भूयात्त्वदर्चनात्।।'** से लक्ष्मी **'एरावतसमारूढो वज्रहस्तो महाबल:। शतयज्ञाधिपो देवस्तस्मा इन्द्राय ते नम:।'** मन्त्र से इन्द्र की और कुबेर की निम्न मन्त्र से पूजा करें– **'कुबेराय नम:, धनदाय नमस्तुभ्यं निधपद्माधिपाय च।**
भवन्तु त्वत्प्रसादान्मे धनधान्यादि सम्पद:।।'

पूजन सामग्री में विभिन्न प्रकार की मिठाई, फल-पुष्पाक्षत, धूप, दीपादि सुगन्धित वस्तुएं सम्मिलित करनी चाहिए। दीपावली पूजन में प्रदोष, निशीथ एवं महानिशीथ काल के अतिरिक्त चौघड़ियां मुहूर्त्त भी पूजन, बही-खाता पूजन, कुबेर-पूजा, जपादि अनुष्ठान की दृष्टि से विशेष प्रशस्त एवं शुभ माने जाते हैं–

14 नवम्बर, 2020 ई. के चौघड़िया मुहूर्त्त

दिन की चौघड़ियां (घं. मिं.)		रात्रि की चौघड़ियां (घं.-मिं.)	
काल	6:58 से 8:16 तक	लाभ	17:26 से 19:07 तक
शुभ	8:16 से 9:34 तक	उद्वेग	19:07 से 20:48 तक
रोग	9:34 से 10:52 तक	शुभ	20:48 से 22:30 तक
उद्वेग	10:52 से 12:11 तक	अमृत	22:30 से 24:12 तक
चर	12:11 से 13:30 तक	चर	24:12 से 25:54 तक
लाभ	13:30 से 14:48 तक	रोग	25:54 से 27:35 तक
अमृत	14:48 से 16:07 तक	काल	27:35 से 29:17 तक
काल	16:07 से 17:26 तक	लाभ	29:17 से 30:59 तक

नोट–(1) चर, लाभ, अमृत और शुभ की चौघड़ियां ग्राह्य होती हैं।

(2) 25 बजे का अर्थ अर्द्धरात्रि 1 बजे से है तथा 30 बजे का अर्थ आगामी दिन प्रात: 6 बजे से है।

(3) यहाँ चौघड़ियां मुहूर्त्त 14 नवम्बर, 2020 ई. को जालन्धर के दिनमान व रात्रिमान के अनुसार है। अपने स्थानीय नगर के चौघड़ियां मुहूर्त्त के लिए इसी पंचांग में दी गई मध्यम सूर्योदयास्त सारिणी में से स्थानीय सूर्योदयास्त निकालकर इसी पंचांग के पृष्ठ नं. 279 का अवलोकन कर चौघड़ियां मुहूर्त्त निकालें।

प्रदोष काल–14 नवम्बर, 2020 ई. को जालन्धर एवं निकटवर्त्ती नगरों में सूर्यास्त (17$^{\text{घं.}}$-26$^{\text{मिं.}}$) से लेकर 2$^{\text{घं.}}$-42$^{\text{मिं.}}$ पर्यन्त 20$^{\text{घं.}}$-08$^{\text{मिं.}}$ तक प्रदोषकाल व्याप्त रहेगा। (प्रत्येक नगर के रात्रिमान अनुसार प्रदोषकाल निर्धारित करें। (देखें पृष्ठ नं. 47 इसी पंचांग में)

सायं 19$^{\text{घं.}}$-26$^{\text{मिं.}}$ तक वृष (स्थिर) लग्न विशेष प्रशस्त होगा। प्रदोषकाल में वृष लग्न, स्वाती (रात्रि 20$^{\text{घं.}}$-09$^{\text{मिं.}}$ तक) नक्षत्र, तुलास्थ चन्द्र तथा रात्रि 19$^{\text{घं.}}$-07$^{\text{मिं.}}$ तक **'लाभ'** की चौघड़ियां रहने से 19$^{\text{घं.}}$-07$^{\text{मिं.}}$ से पहिले श्रीगणेश-लक्ष्मी पूजन प्रारम्भ कर लेना चाहिए। इसी काल में ब्राह्मणों तथा आश्रितों को भेंट, मिष्ठान्नादि बाँटना शुभ होगा।

निशीथ काल–14 नवम्बर, 2020 ई. को जालन्धर व समीपस्थ नगरों में निशीथकाल रात्रि 20$^{\text{घं.}}$-08$^{\text{मिं.}}$ से 22$^{\text{घं.}}$-51$^{\text{मिं.}}$ तक रहेगा। निशीथ-काल में **'शुभ'** की चौघड़ियां 20$^{\text{घं.}}$-48$^{\text{मिं.}}$ से 22$^{\text{घं.}}$-30$^{\text{मिं.}}$ तक तथा पुन: **'अमृत'** की चौघड़ियां 22$^{\text{घं.}}$-30$^{\text{मिं.}}$ से रात्रि 24$^{\text{घं.}}$-12$^{\text{मिं.}}$ तक रहेंगी।

अत: निशीथकाल में भी 20$^{\text{घं.}}$-48$^{\text{मिं.}}$ के बाद शेष सारा समय पूजन आदि कार्यों के लिए शुभ एवं ग्राह्य रहेगा। इस अवधि में महालक्ष्मी पूजन समाप्त कर श्रीसूक्त, कनकधारा-स्तोत्र तथा लक्ष्मी-स्तोत्रादि मन्त्रों का पाठ करना चाहिए।

महानिशीथ काल–रात्रि 22$^{\text{घं.}}$-51$^{\text{मिं.}}$ से अर्द्धरात्रि 25$^{\text{घं.}}$-33$^{\text{मिं.}}$ तक महानिशीथ काल रहेगा। इस समयावधि में **'अमृत'** तथा **'चर'** की चौघड़ियां भी अत्यन्त शुभ हैं। इस अवधि में काली-उपासना, तन्त्रादि क्रियाएं, विशेष काम्य प्रयोग, तन्त्र-अनुष्ठान, साधनाएं एवं यज्ञादि किए जाते हैं। 24$^{\text{घं.}}$-03$^{\text{मिं.}}$ से सिंह लग्न भी विशेष प्रशस्त रहेगा।

नोट–अपने स्थानीय नगर में महालक्ष्मी पूजन एवं साधना के लिए प्रशस्त वृष, कर्क व सिंह लग्नों के लिए पृष्ठ 283 का अवलोकन कर निकालें। साधारण जमा/ऋण कर आप निकाल सकते हैं। ***अथवा*** सम्पर्क करें–

पं. विवेक शर्मा।

विवाहादि शुभ कार्यों में लग्न शुद्धि विचार

विवाह, मुण्डन, गृहारम्भादि शुभ कार्यो में मास, तिथि, नक्षत्र, योगादि की शुद्धि के साथ विवाह लग्न की शुद्धि को विशेष महत्त्व एवं प्रधानता दी गई है। **तिथि** को शरीर, **चन्द्रमा** को मन, **योग–नक्षत्रों** आदि को शरीर के अंग तथा **लग्न** को **आत्मा** माना गया है। यथा–

तिथिः शरीरं मन इन्दुवीर्यं विलग्नमात्माऽवयवास्तु-भाद्याः —ज्योतिर्निबंध

लग्न बल के बिना जो कुछ भी शुभ कार्य किया जाता है, उसका फल वैसे ही व्यर्थ हो जाता है, जैसे ग्रीष्मकाल में बिना जल के नदी।

लग्नवीर्यं विना यत्र यत्कर्म क्रियते बुधैः।
तत्फलं विलयं याति ग्रीष्मे कुसरिता यथा॥ —ज्योति. विदरणे

सभी शुभ कार्यों में लग्न शुद्धि का विशेष महत्त्व है।

विवाह लग्न का निश्चय करना हो, तो त्रिविक्रम–संहितानुसार, **लग्न** स्थान में चन्द्र तथा सूर्य, शनि, मंगल, राहु, केतु आदि क्रूर ग्रह न हों, लग्न से छठे स्थान में शुक्र, चन्द्र, व लग्नेश न हो तथा आठवें स्थान में चन्द्र, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र व लग्नेश नहीं होने चाहिएं तथा सप्तम स्थान में कोई भी ग्रह नहीं होना चाहिए। **सातवें चन्द्र** और गुरु समफल करते हैं। अर्थात् चन्द्र, गुरु का दानादि करने से शान्ति हो जाती है।

विवाह लग्न में अशुभ एवं पूज्य ग्रह

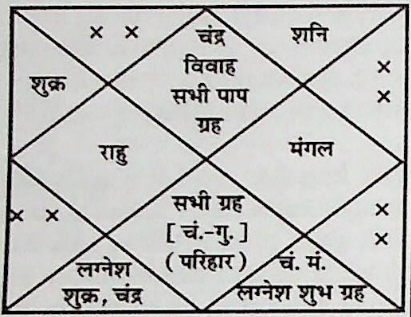

"त्याज्या लग्नेऽब्दयो मंदः षष्ठे शुक्रेन्दुलग्नपाः।
रन्ध्रे-चन्द्रादयः पंच, सर्वेऽब्जगुरु समौ॥"

परिहारस्वरूप १२वें शनि, तीसरे शुक्र, चतुर्थ में राहु, दशम भाव में मंगल का दोष यथोचित दानादि करने से शान्ति हो जाती है। **'पंचांगदिवाकर'** में लगाए गए लग्न मुहूर्त्तों में इन तीनों भावों में शनि, शुक्र व मंगल ग्रहों की स्थिति हो वहां उचित दानादि करवा लें।

आगे षष्ठाष्टम एवं द्वादश चन्द्र, शुक्र, अष्टम भौम, लग्नस्थ एवं सप्तमस्थ चन्द्र गुरु आदि के अपवाद (परिहार) लिखे गए हैं।

विवाह में ग्राह्य शुभ लग्न—मुहूर्त्त ग्रन्थों के अनुसार विवाह लग्न काल में ३, ६, ८, ११वें सूर्य तथा इन्हीं स्थानों (३, ६, ११) में राहु, केतु और शनि भी शुभ होते हैं। ३, ६ और ११वें मंगल, २, ३, ११वें **चंद्रमा**, ३, ६, ७ शुभ और ८वें स्थानों को छोड़कर अन्य भावों में स्थित **शुक्र** शुभ होता है। ग्यारहवें भाव में सूर्य तथा केन्द्र त्रिकोण में गुरु लग्नगत अनेक दोषों का परिहार करते हैं—

लग्ने वर्गोत्तमे चेन्दौ द्यूनाथे लाभगेऽथवा।
केन्द्र कोणे गुरौ दोषा नश्यन्ति सकला अपि॥ मु. गणपति॥

विवाह लग्न सम्बन्धी परिहार वाक्य

जन्म राशि से अष्टमस्थ लग्न—वर कन्या की जन्म राशि या लग्न से चतुर्थ, अष्टम तथा बारहवी राशिस्थ लग्न अशुभ कहे गए हैं। यथोक्तम्—

सुखघ्नं तुर्यमुद्वाहे द्वादश वित्तनाश कृत्। जन्म भात् जन्म लग्नाच्च मृत्युदंलग्नमष्टमम्॥

परन्तु परिहार स्वरूप जन्म राशि या लग्न राशि का स्वामी तथा विवाह लग्न का **स्वामी ग्रह समान** हो, अथवा **मित्र क्षेत्री** हो, अथवा अष्टमस्थ लग्न राशि का **स्वामी, केन्द्र** स्थित हो अथवा गुर्वादि शुभ ग्रह से वीक्षित हो तो अष्टम लग्न का दोष दूर होता है।

कर्तृरि दोष—लग्न में क्रूर ग्रह मार्गी होकर १२ भाव में तथा क्रूर (पापी) ग्रह वक्री गत होकर दूसरे भाव में हो, तो कर्तृरि **दोष** होता है। यह योग दारिद्रय, शोक व मृत्युतुल्य कष्टकारी होता है।

परिहार—कर्तृरि दोष कारक ग्रह **नीच**, शत्रु क्षेत्री, अथवा अस्तगत हो, तो इस दोष का परिहार हो जाता है। इसके अतिरिक्त गुरु, शुक्र, बुध इनमें से कोई शुभ ग्रह केन्द्र त्रिकोण में अथवा २रे या १२वें भावस्थ गुरु हो तो भी कृर्तरि दोष निवार्य हो जाता है।

अष्टमस्थ भौम का परिहार—मंगल अस्तंगत, नीच राशि का (कर्क) या शत्रु राशि (मिथुन एवं कन्या) का होकर अष्टम स्थान में हो, तो दोषकारक नहीं, परन्तु लग्नेश होकर अष्टमगत नहीं होना चाहिए। **अस्तगे नीचगे भौमे शत्रुक्षेत्रगतेऽपि वा।**
कुजाष्टमोद्भवो दोषो न किंचिदपि विद्यते॥ कश्यप॥

छठे, अष्टम चन्द्र का परिहार—नीच राशि, शत्रु राशि या नीच–राशिगत चन्द्रमा ६ या ८वें स्थानस्थ होना दोषपूर्ण नहीं माना गया। जैसे—वृश्चिक, मिथुन, कन्या राशि (३, ६)

नीचराशिगते चन्द्रे नीचांशगतेऽपि वा, चन्द्रे षष्ठारि–रिः फस्थे दोषो नास्ति न संशयः।

परन्तु लग्नेश होकर चन्द्र षष्ठाष्टम नहीं होना चाहिए।

लग्नस्थ चन्द्रमा यद्यपि त्याज्य माना गया है, परन्तु यदि लग्नगत चन्द्र पर गुरु की दृष्टि हो अथवा वह गुरु से युक्त हो, तो अशुभ चन्द्रमा भी शुभ हो जाता है—

"अशुभोऽपि शुभचन्द्रो, गुरुणा लोकितो युतः।।" (पीयूषधारा)

लग्नस्थ चन्द्र का परिहार—"कर्किगोस्थः पूर्णो विधुस्तनौ"

व्रतबन्धोक्त अनुसार वृष, कर्क एवं पूर्ण चन्द्रमा या शुभग्रह से दृष्ट हो लग्न में दोषकारक नहीं होता। मु. मार्त्तण्ड

षष्ठाष्टमस्थ शुक्रापवाद—नीच एवं शत्रु राशिगत (कर्क, सिंह या कन्या) शुक्र छठे, आठवें हो तो दोषकारक नहीं परन्तु लग्नेश होकर इन भावों में न हो। जैसे—

नीच राशिगते शुक्रे शत्रु क्षेत्रगतेऽपि वा।
भृगु षट्कोत्थितो दोषो नास्ति तत्र न संशयः॥ मुहूर्त्त चिं. पीयूषधारा

सप्तम भावस्थ चन्द्र–गुरु—सप्तम भाव में यद्यपि सभी ग्रह वर्जित कहे हैं, परन्तु चन्द्र गुरु का परिहार है। **"चन्द्र चान्द्री शुक्रजीवा यामित्रे शुभकारकाः।"**

'मुहूर्त्तगणपति' अनुसार विवाहादि शुभ कार्य के लग्न में, केन्द्र–त्रिकोण में **गुरु, शुक्र** एवं बुध एवं ग्यारहवें भाव में चन्द्र या सूर्य अथवा सप्तमेश हो, तो अनेक दोषों का नाश हो जाता है।

वेध दोष परिहार—पंचशलाका चक्रानुसार विवाह नक्षत्र का क्रूर ग्रह द्वारा वेध हो जाने

पर विवाहित नक्षत्र सर्वथा त्याज्य माना जाता है। परन्तु गुरु, बुध आदि सौम्य ग्रहों का चरण वेध (१ एवं ४थे चरण के मध्य तथा २ रे व ३ रे चरण ही अशुभ माना है। **—ज्योतिर्निबन्ध**

युतिदोष परिहार—पाप एवं क्रूर ग्रह की युति त्याज्य मानी जाती है। परन्तु यदि चन्द्रमा उच्चस्थ, स्वक्षेत्री या मित्रक्षेत्री (वृष, कर्क, मिथुन, सिंह एवं कन्या) राशि का हो तो युतिदोष अविचारणीय होता है। **यथा—**

स्वक्षेत्रगः स्वोच्चगो व मित्रक्षेत्रगतो विधुः।
युति दोषाय न भवेत् दम्पत्योः श्रेयसेतदा॥ (नारदः)

(१०) दग्धा तिथि परिहार—विवाह लग्न समय केन्द्र–त्रिकोण गत गुरु हो एवं एकादश (११वां) भाव शुभ ग्रह से युक्त या दृष्ट हो, तो दग्धातिथि का दोष नहीं रहता।**—मु० गणपति**

पंचांगदिवाकर में शुभ विवाह मुहूर्त्तों में जहाँ कहीं अशुभ योग का स्पर्श हुआ है, वहां विशेष दोषपूर्ण घड़ियों को विचार करके ही वि. मुहूर्त लगाए गए हैं।

कश्यप ऋषि अनुसार लग्न से केन्द्र, त्रिकोण में गुरु, शुक्र या बुधादि सौम्य ग्रह हो, तो समस्त दोषों का ऐसे परिहार हो जाता है, जैसे भगवान् विष्णु को मात्र स्मरण करने से पापों का नाश हो जाता है

काव्यो गुरू र्वा सौम्यो वा यदा केन्द्र त्रिकोणगाः।
नाशयन्ति अखिलान् दोषान् पापानि व हरिस्मृतिः॥ (कश्यप)

भद्रा का शुभाशुभ विचार

भद्राकाल में विवाह, मुण्डन, गृहारम्भ, गृहप्रवेश, रक्षा बन्धन आदि मांगलिक कृत्यों का निषेध माना जाता है, परन्तु भद्रा काल में शत्रु का उच्चाटन करना, स्त्री प्रसंग में, यज्ञ करना, स्नान करना, अस्त्र–शस्त्र का प्रयोग, आप्रेशन करना, मुकद्दमा करना, अग्नि लगाना, किसी वस्तु को काटना, भैंस, घोड़ा, ऊँट सम्बन्धी कर्म प्रशस्त माने जाते हैं।

भद्रा परिहार विचार—सामान्य परिस्थितियों में विवाह आदि शुभ मुहूर्त्तों में भद्रा का त्याग ही करना चाहिए, परन्तु आवश्यक परिस्थितिवश **भूलोक की भद्रा**, तथा भद्रा मुख छोड़कर भद्रा पुच्छ में शुभ कृत्य किए जा सकते हैं।

कार्येत्वाश्यके विष्टेर्मुख, कण्ठहृदि मात्रं परित्येत्।

एक अन्य मतानुसार अत्यावश्यक स्थिति में रात्रि में तिथि के पूर्वार्द्ध की भद्रा, दिन में परार्ध की भद्रा ग्रहण कर सकते हैं।

तिथेः पूर्वार्धजा रात्रौ दिने भद्रा परार्धजा। भद्रा दोषो न तत्र स्यात् कार्येऽत्यावश्यके सति॥

भद्रा परिहार

कुछ आवश्यक स्थितियों में भद्रा दोष का परिहार हो जाता है। यथा—

तिथि पूर्वार्धजा भद्रा दिवा भद्रा प्रकीर्तिता। तिथिरुत्तरजा भद्रा रात्रिभद्रेति कथ्यते॥
दिवा भद्रा रात्रौ रात्रिभद्रा यदा दिवा। तदाविष्टिकृतो–दोषो न, भवेत्सर्व सौख्यदः॥

अर्थात् तिथि के पूर्वार्द्ध भाग में प्रारम्भ भद्रा अर्थात् तिथि दिवस के पूर्वार्ध भाग में प्रारम्भ भद्रायादि तिथ्यन्त में रात्रिव्यापिनी हो जाए, तो दोषकारक न होकर सुखदायिनी हो जाती है।

(ii) **पीयूषधारानुसार—दिन की भद्रा रात्रि को और रात्रि की भद्रा दिन को आ जाए, तो भद्रा दोषरहित हो जाती है।**

रात्रिभद्रा यदहि स्याद् दिवा भद्रा यदा निशि। न तत्र भद्रादोषः, सा भद्रा—भद्र दायिनी॥

(iii) **"दिवा परार्द्धजा विष्टिः, पूर्वार्द्धोत्था निशि। तदा विष्टिः शुभायेति कमलासनभाषितम्॥"**

उत्तरार्ध की भद्रा दिन में, तथा पूर्वार्द्ध की रात्रि में शुभ होती है।

भद्रा लोक वास

मेष, वृष, मिथुन, वृश्चिक का चन्द्रमा होने से भद्रा **स्वर्ग लोक** में, कन्या, तुला, धनु, मकर का चन्द्रमा होने से **पाताल** में, कर्क, सिंह, कुम्भ व मीन राशि के चन्द्रमा में **भद्रा मर्त्यलोक (भू लोक)** में—अर्थात् **सम्मुख रहती है।** जब भद्रा भू–लोक में **(सम्मुख)** रहती है, **अशुभफल दायिनी** एवं वर्जित मानी जाती है, अन्य लोकों में हो, तो शुभ है—

स्थिताभूर्लोस्था भद्रा सदा त्याज्या स्वर्गपातालगा शुभा —(मु. मार्त्तण्ड)

लोकवास	स्वर्ग	पाताल	भू–लोक
चन्द्रराशि	१, २, ३, ८	६, ७, ९, १०	४, ५, ११, १२
भद्रा–मुख	ऊर्ध्वमुखी	अधोमुख	सम्मुख

स्वर्गे भद्रा धनं धान्यं पाताले च धनागमः। मृत्युलोके यदा भद्रा कार्य सिद्धिस्तदानहि॥

(iv) शुक्ल पक्ष की भद्रा का नाम **वृश्चिकी** है। कृष्ण पक्ष की भद्रा का नाम **सर्पिणी** है। **मतान्तर से**, दिन की **भद्रा सर्पिणी**, रात्रि की भद्रा **वृश्चिकी** है। बिच्छू का विष डंक में तथा सर्प का विष मुख में होने के कारण **वृश्चिकी** भद्रा की पुच्छ और **सर्पिणी** भद्रा का मुख विशेषतः त्याज्य है।

(v) भद्रा दोष, मंगल–शनिवार जनित दोष, व्यतीपात, अष्टम भावस्थ एवं जन्म नक्षत्र दोष, मध्याह्न के पश्चात् शुभकारक मानी जाती है।

गोधूलि काल

विवाह मुहूर्त्तों में क्रूर ग्रह युति, वेध, मृत्युबाण आदि दोषों की शुद्धि उपरान्त यदि अभिवांछित मुहूर्त्त में शुद्ध विवाह–लग्न न निकलता हो, तो मुहूर्त्त ग्रन्थाचार्यों ने गोधूलि का लग्न ग्रहण करने की सम्मति प्रदान की है।

गोधूलि काल—जब सूर्यास्त न हुआ हो (अर्थात् सूर्यास्त होने वाला हो) और गाय आदि चौपाय अपने–अपने गृहों को लौटते हुए अपने खुरों से पथ की धूलि को आकाश में उड़ाकर जाने लगें, तो उस काल को मुहूर्त्तकारों ने **गोधूलि काल** का नाम प्रदान करते हुए, इसे विवाहादि सब मांगलिक कार्यों में प्रशस्त कहा है। यह लग्न, मुहूर्त, पात, अष्टम भाव, जामित्रादि दोषों को नष्ट प्राय कर देता है।

नो वा योगो न मृतिभवनं नैव जामित्र दोषो,
गोधूलिः सा मुनिभिरुदिता सर्वकार्येषु शस्ता॥ —मुहूर्त चिन्तामणि

जब कोई अन्य शुभ लग्न न बनता हो, और कन्या विवाह योग्य हो गई हो तो गोधूलि में विवाह शुभ होता है। **ज्योतिनिर्बन्धानुसार–**

लग्न शुद्धिर्यदा न स्याद् यौवने समुपास्थिते, तदा वै सर्ववर्णानां लग्नं गोधूलिकं शुभम् ॥

गोधूलि लग्न काल के सम्बन्ध में विद्वानों ने मतान्तर पाए जाते हैं–

(i) पीयूषधारा के मतानुसार सूर्य के अर्ध–अस्त होने के अनन्तर **२ घड़ी (४८ मिनट) का समय गोधूलि काल है।**

(ii) मुहूर्त्त गणपति के अनुसार सूर्याध बिम्ब के अस्त हो जाने के पूर्व एवं पश्चात् १५–१५ पल अर्थात् १२ मिनट का मध्यान्तर गोधूलि संज्ञक है।

(iii) आचार्य नारदानुसार सूर्योदय से सप्तम लग्न गोधूलि लग्न काल होता है।

चतुर्थमभिजित लग्नमुदयार्क्षातु सप्तमम् ॥ –नारद

(iv) कुछ विद्वानों के अनुसार लग्न, सप्तम तथा अष्टम भाव में मंगल को भी वर्ज्य माना गया है। शेष भावों में अन्य किसी ग्रह का विचार गोधूलि लग्न में नहीं किया जाता।

(v) गुरुवार को सूर्यास्त के बाद तथा शनिवार को सूर्यास्त होने से पूर्व (पहले) की ही आधी घड़ी (12 मिनट) को गोधूलिकाल माना गया है, अन्यथा नहीं. (मुहूर्त्त चिन्तामणि)

––क्षौरकर्म (हजामत) के लिए शुभाशुभ दिन––

गर्गादि आचार्यों के अनुसार रविवार, मंगलवार एवं शनिवार को क्षौर (हजामत) कर्म करवाने से आयु का क्षय होता है। **सोमवार, बुधवार, गुरुवार** और **शुक्रवार** को क्षौर कर्म (हजामत) करवाना शुभ होता है। मतान्तर से एक पुत्र सन्तान वाले गृहस्थी को सोमवार के दिन, तथा विद्या एवं धनाकांक्षी गृहस्थी को गुरुवार के दिन क्षौर नहीं करवाना चाहिए।

इसके अतिरिक्त पर्व वाले दिन, जन्मदिन, चतुर्थी, नवमी, चतुर्दशी (१४) आदि रिक्ता तिथियों में, व्रत के दिन, अमावस्या, पूर्णिमा, संक्रान्ति, श्राद्ध के दिन, भद्रा और व्यातिपात योग में तथा भोजन करने के बाद, देश-प्रदेश जाने के समय में शुभाकांक्षी क्षौर कर्म न करावें।

––तैलाभ्यंग–अर्थात् तैल मालिश करना––

रविवार, मंगलवार, गुरुवार तथा शुक्रवार को तैल लगाना शुभ नहीं माना जाता है। **निर्णय सिन्धु** के अनुसार रविवार तैल लगाने से ताप, मंगलवार को आयु क्षीणता, गुरुवार से धन-हानि, शुक्रवार को तैल लगाने से दु:ख होता है। सोमवार, बुधवार तथा शनिवारों को तैल लगाना शुभ होता है। प्रतिदिन तेल लगाने वालों को भी दोष नहीं लगता-(**–अभ्यङ्गके चैव वासिते नैव दूषणम् ॥**)

चतुर्कोणों दिशाशूल विचार

आग्नेय (पूर्व-दक्षिण) में सोम व गुरुवार, **नैऋत्य** (दक्षिण-पश्चिम) दिशा में रविवार व शुक्रवार, **वायव्य** (उत्तर-पश्चिम) में मंगलवार तथा **ईशान** (पूर्व-उत्तर) में बुध एवं शनिवार के दिन **दिशाशूल** होता है (मुहूर्त्त गणपति)

दिशापति के वार अनुसार उसी दिशा की यात्रा शुभदायिनी तथा उससे पीछे (सामनेवाली) दिशा की यात्रा अनिष्टप्रदा होती है–

दिगीशाहे शुभा यात्रा पृष्ठा हे मरणं ध्रुवम् (ज्योतिस्तत्व)

परन्तु बधवार उत्तर दिशा का स्वामी होते हुए, बुध की उत्तर में निषिद्ध माना गया है (गर्ग)

विशेष–यदि एक जगह से रवाना होकर, उसी दिन गन्तव्य स्थान पर पहुँच जाना निश्चित हो, तो ऐसी यात्रा में तिथि-वार-नक्षत्र, दिशा-शूल, प्रतिशुक, योगिनी आदि जनित दोषों का विचार नहीं करना चाहिए–यथा

"एकस्मिन्नपि दिवसे यदि चेद गमनं प्रवेशश्च।
प्रतिशुक्रवार शूलं न चिन्तयेत योगिन् [illegible]

यात्रादि मुहूर्त्त विचार

किसी कार्य के उद्देश्य से देशान्तर गमन को यात्रा कहते हैं। कृष्ण पक्ष की प्रतिपदा और २, ३, ५, ७, १०, ११, १३–इन तिथियों में, अश्वि., मृग. पुर्न, पुष्य, अनु, हस्त, श्रव., धनि, रेव.-इन नक्षत्रों में तथा चौर, बाण, भद्रा, वैधृति, व्यतियात और मासांत दिनादि दोष रहित समय में यात्रा करें। यात्रा करने से पूर्व क्रोध और मैथुन कर्म का त्याग करना चाहिए।

दिशाशूल

सोमवार, शनिवार को पूर्व, रविवार और शुक्रवार को पश्चिम, मंगलवार, बुधवार को उत्तर तथा गुरुवार को दक्षिण दिशा का दिशाशूल होता है, अत: उक्त वारों को उस दिशा की यात्रा नहीं करनी चाहिए। अत्यावश्यक होने पर रविवार को दलिया एवं घी खाकर, सोमवार को दर्पण देखकर या दूध पीकर, मंगलवार को गुड़ खाकर, बुधवार को धनिया या तिल खाकर, गुरुवार को दही खाकर, शुक्रवार को जौं खाकर दूध पीकर और शनिवार को अदरक या उड़द खाकर प्रस्थान किया जा सकता है।

यात्रा में सदैव चल रही नासिका के श्वास की ओर का पाँव आगे उठाकर चले, इसी तरह सवारी पर चढ़े, यात्रा सफल होगी।

चन्द्रवास ज्ञान चक्र

पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर
मेष	वृष	मिथुन	कर्क
सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक
धनु	मकर	कुम्भ	मीन

चन्द्रवास विचार

जाने वाली दिशा में चन्द्रमा का वास सम्मुख और दाहिनी ओर को हो तो धन का लाभ और सुख होता है। यदि पीठ की ओर अथवा बाईं तरफ चन्द्रवास हो तो कष्ट और धन की हानि होती है।

सम्मुख चन्द्रमा का विशेष फल

करणदोष, नक्षत्रदोष, वारदोष, संक्रान्ति दोष, अशुभतिथिदोष, कुलिक दोष, प्रहार्द्ध वारवेला दोष, मंगल, शनि, रवि, राहु-केतु के दोष को सम्मुख चन्द्रमा दूर करता है।

'यात्रा के समय शुभ शकुन'

यात्रा के समय श्वेत पुष्पों का दर्शन श्रेष्ठ माना गया है। भरे हुए घड़े का दिखाई देना तो बहुत ही उत्तम है। दूर का कोलाहल, अकेला वृद्ध पुरुष, पशुओं में बकरे, गौ, घोड़े तथा हाथी, देवप्रतिमा, प्रज्वलित अग्नि, दूर्वा, ताज़ा गोबर, सोना, चांदी, रत्न, बच, सरसों आदि औषधियां, मूँग, छाता, पीढ़ा, राजचिह्न, जिसके पास कोई रोता न हो ऐसा शव, फल, घी, दही, दूध, अक्षत, दर्पण, मधु, शंख, ईख, शुभ सूचक वचन, भक्त पुरुषों का गाना–बजाना, मेघ की गम्भीर गर्जना, बिजली की चमक तथा मन का सन्तोष–ये सब शुभ शकुन हैं। 'चले आओ'–यह शब्द यदि सामने की ओर से सुनाई पड़े तो उत्तम है। 'जाओ'–यह शब्द यदि पीछे की ओर से हो तो उत्तम है।

चाहिए-यथा “एकस्मिन्नपि दिवसे यदि चेद् गमनं प्रवेशश्च।
प्रतिशुक्रवार शूलं न चिन्तयेत्

विवाहादि शुभ कार्यों में शास्त्रीय विचार

विवाह में जन्म मास, नक्षत्रादि का विचार–

आद्य गर्भ, अर्थात् बड़े लड़के या बड़ी लड़की का विवाह जन्म मास, जन्म नक्षत्र, जन्म तिथि, जन्म लग्न में न करें। **“आद्य गर्भ सुत कन्ययो र्द्वयो जन्म मास भतिथौ कर ग्रहः। नोचितोऽथ विबुधैः प्रशस्यते चेद् द्वितीय जनुषोः सुतप्रदः॥ मु. चिंतामणि॥”**

परन्तु ज्येष्ठ पुत्र के बाद उत्पन्न पुत्र या कन्या का विवाह जन्म मास, नक्षत्रादि में करना प्रशस्त है। ज्येष्ठ पुत्र-कन्या के अतिरिक्त अन्य स्थितियों में जन्म-मास, जन्म राशि, नक्षत्र एवं जन्म लग्न विशेष शुभ माना है।

जन्ममासे च पुत्राढया धनाढया च धनोदये। जन्म मे जन्मराशौ च कन्या हि ध्रुव सन्तति॥

आचार्य भृगु जी के अनुसार जन्म मास, जन्म नक्षत्र एवं जन्म लग्न में विवाह होने पर दम्पत्ति के सुख एवं प्रतिष्ठा में वृद्धि होती है तथा वह धन सम्पत्ति तथा सन्तान सुख से सौभाग्यशालिनी होती है।

जन्ममासेऽथ जन्मर्क्षे जन्मलग्नेऽथ जन्मनि। उद्वाहेषु च नारीणां प्रतिष्ठा महती भवेत्। भृगुः
जन्ममासेऽथ पुत्राढ्या धनादया जन्मभोदये। जन्मभे वा भवेदूढा वृद्धा संतति वर्धिनी॥ (यवनाचार्य)

ज्येष्ठ मास में विवाह का विचार

ज्येष्ठ मास, ज्येष्ठ पुत्र और ज्येष्ठ कन्या यह तीन ज्येष्ठ विवाह संस्कार में विशेषतया वर्जित माने जाते हैं। परन्तु यदि दो ज्येष्ठ वर्तमान हों अर्थात् लड़का-लड़की दोनों ज्येष्ठ (बड़े) हों, परन्तु महीना ज्येष्ठ के अतिरिक्त हो अथवा लड़का-लड़की में से एक ज्येष्ठ हो और दूसरा अनुज हो, तो ज्येष्ठ मास में भी विवाह करना सामान्य एवं मध्यम फल होता है–

द्वौ ज्येष्ठौ मध्यमौ प्रोत्तत्रवेक ज्येष्ठः शुभावहः।
ज्येष्ठ त्रयं न कर्वीत् विवाहे सर्वसम्मतम् —**वाराहमिहिर॥**

तथापि आवश्यक परिस्थितिवश ज्येष्ठ मास में कृतिका से सूर्य निकल जाने पर सूर्य दानादि करके विवाह करने में कोई हानि नहीं। **मुनि भारद्वाज** के मतानुसार ज्येष्ठ के महीने की भान्ति मार्गशीर्ष मास में भी अग्रज लड़का-लड़की एवं मार्ग मास-तीनों का यथासम्भव त्याग करें।

(३) **सगे भाई-बहन** के विवाह छः मास के भीतर नहीं करने चाहिएं। यदि इस बीच संवत् परिवर्तन हो जाए, तो कोई दोष नहीं (**मु. मार्तण्ड**)। पुत्र के विवाह के उपरान्त अपनी कन्या का विवाह ६ महीने तक न करें। इसी तरह विवाह के बाद ६ महीने तक मुण्डन, यज्ञोपवीत आदि शुभ कार्य न करें। (**नारद**), परन्तु कन्या-विवाह के पश्चात् पुत्र विवाह ६ मास के भीतर शुभ है। दो सगे भाईयों का विवाह दो सगी बहनों से न करें अथवा एक वर के साथ दो सगी बहनों का विवाह न करें (**वसिष्ठ**) तथा जिस वर को अपनी कन्या देवें, उसकी बहन के साथ अपने लड़के का विवाह न करे (**नारदः**)।

दो सगे भाईयों या दो सगी बहनों का एक संस्कार ६ महीने के भीतर करना सम्भव है (**वृन्द्धमनुः**)। दो सहोदर (भाई-बहन) के संस्कार आवश्यक स्थिति उत्पन्न होने पर नदी, पर्वत, स्थान एवं पुरोहित भेद (भिन्न) से एक ही दिन अथवा ६ महीने के भीतर शुभ होंगे (**शार्गधर**) जुड़वें भाई-बहन के मांगलिक कार्य एक ही मण्डप में भी शुभ हैं। विवाहादि मंगल कार्य से ६ मास तक लघु मंगल कार्य न करें। यह ६ महीने का निषेध केवल तीन पीढ़ि तक के मनुष्यों के लिए कहा है।

मङ्गल संस्कार से ६ महीने तक पितृकर्म, श्राद्धादि न करे। वाग्दान अर्थात् विवाह सम्बन्ध का निश्चय हो जाने के बाद वर-कन्या के कुल में माता-पिता, भाई आदि निकटस्थ बन्धु की दुःखद मृत्यु हो जाने पर एक वर्ष के पश्चात् विवाह आदि शुभ कार्य करना चाहिए (निर्णयसिंधु) परन्तु **अपवाद स्वरूप** संकट काल में अथवा अत्यावश्यक परिस्थितिवश एक मास के बाद अथवा सूतक निवृत्ति के बाद जप, पाठ, होम शान्ति एवं यथाशक्ति द्रव्य, वस्त्र, गोदानादि के बाद शुभ कार्य ग्राह्य होंगे–

प्रतिकू–लेऽपि कर्त्तव्यो विवाहो मासमन्तरात्।
शान्तिं विधाय गां दत्त्वा वाग्दानादि चरेत् पुनः॥ (ज्योति. प्रकाश)

■ ■ ■ ■ ■ ■ ■ जन्म नक्षत्र विचार ■ ■ ■ ■ ■ ■ ■

जातक का जन्म नक्षत्र अन्न प्राशन, उपनयन, मुंडन (चूड़ाकरण), राज्याभिषेक, जन्मदिनादि कृत्यों में प्रशस्त माना गया है, परन्तु यात्रा, सीमान्तोन्नयन तथा विवाहादि कार्यों में जन्म नक्षत्र अनिष्टकर होता है–

बालान्नभुक्तौ व्रतबन्धनेऽपि राज्याभिषेके खलुजन्मधिण्यम्।
शुभं तु अनिष्टं सततं विवाह सीमन्त यात्रादिषु मंगलेषु॥ —वसिष्ठ

मतान्तर से ज्योतिर्निबन्ध एवं मुहूर्त्त दीपिकानुसार केवल चूड़ाकरण (मुण्डन), औषध सेवन, विवाद, यात्रा और कर्णवेध में ही **जन्म-नक्षत्र** का निषेध कहते है, अन्य सभी कार्यों में जन्म नक्षत्र शुभ कहा है–

जन्म नक्षत्रगश्चन्द्रः प्रशस्तः सर्वकर्मसु।
क्षौर भैषजविवादध्वकर्त्तनेषु विवर्जयेत्॥ (मुहूर्त्त दीपिका)

परन्तु जन्म नक्षत्र से २५वां तथा २७वां नक्षत्र शुभ कार्यों में त्याज्य माना जाता है।

जन्म मास अग्रज (बड़े) लड़के या लड़की का विवाह **जन्म नक्षत्र** एवं **जन्म मास** में करने का निर्विवादेन निषेध माना गया है–

न जन्ममासे जन्मर्क्षे न जन्मदिवसेऽपि वा। आद्य गर्भ सुतस्याथ दुहितुर्वा करग्रहः॥ —नारद

परन्तु अनुज लड़के या लड़की का विवाह **जन्म मास** में ग्रहणीय माना गया है–

विबुधैः प्रशस्यते चेत् द्वितीयजनुषोः सुतप्रदः —मुहूर्त्त चिंतामणि

विवाह में सम–विषम वर्षों का विचार

सम वर्षों (१८, २०, २२, २४ आदि) में कन्या का विवाह और **विषम वर्षों** (१९, २१, २३, २५ आदि) में लड़के (पुत्र) का विवाह शुभ माना गया है। –अर्थात् इन वर्षों में कन्या या पुत्र का विवाह करना, उनके वैवाहिक जीवन में सुख, सौहार्द आदि की दृष्टि से कल्याणकारी होता है। इसके विपरीत वर्षों (अर्थात् कन्या का विषम वर्षों में तथा लड़के का सम वर्षों) में करना दुःख, रोग एवं कष्टप्रद होता है–

(ज्योतिष तत्त्व प्रकाश)

○○○ विवाह पद्धति (भाषा–टीका) ○○○

व्याख्याकार पण्डित पन्ना लाल ज्योतिषी द्वारा संशोधित एवं परिवर्धित संस्करण जिसमें पारस्कर गृह सूत्रों के आधार पर वैदिक मन्त्रों की हिन्दी टीका एवं भारतीय शिष्टाचार की सरल व्याख्या की गई है। विवाह कार्य में प्रयुक्त विशिष्ट शब्दावली तथा वाग्दान, सगाई, सैंत कर्म, कात्यायनी शान्ति, पति पत्नी के कर्त्तव्य, शान्तिपाठ, कुम्भ विवाहादि विवाह सम्बन्धी महत्त्वपूर्ण कृत्यों का भी समावेश किया गया है। जिससे विवाहादि कार्य के नवीन कर्मकाण्डी विद्यार्थी के लिए अत्यन्त उपयोगी पुस्तक है। **मूल्य-90 रु.**

पता–जनरल बुक डिपो, अड्डा होशियारपुर, जालन्धर शहर (पंजाब)।

आपको किस दिन क्या कार्य करना शुभ है ?

नाम वार	रविवार	सोमवार	मंगलवार	बुधवार	वीरवार	शुक्रवार	शनिवार
यात्रा में शुभ ग्राह्य-दिशाएँ	पूर्व, उत्तर आग्नेय (दक्षिण पूर्व)	पश्चिम, दक्षिण वायव्य (उत्तर-पश्चिम)	दक्षिण-पूर्व आग्नेय (दक्षिण-पूर्व)	दक्षिण, पूर्व नैऋत्य (दक्षिण-पश्चिम)	पूर्व, उत्तर ईशान (पूर्व-उत्तर)	पूर्व, उत्तर ईशान (उत्तर-पूर्व)	पश्चिम, दक्षिण नैऋत्य (दक्षिण-पश्चिम)
यात्रा में त्याज्य (दिशाशूले)	पश्चिम, नैऋत्य (दक्षि.-पश्चि. कोण)	पूर्व, उत्तर आग्नेय (दक्षि.-पूर्व)	उत्तर, पश्चिम वायव्य (उत्तर पश्चि.)	उत्तर, पश्चिम ईशान (पूर्व-उत्तर)	दक्षिण, पूर्व नैऋत्य (दक्षि. पश्चि.)	पश्चिम, दक्षिण नैऋत्य कोण (द. पश्चि.)	पूर्व, उत्तर ईशान (पूर्व-उत्तर)
विद्या एवं शिक्षा सम्बन्धी	विज्ञान, इंजीनियरिंग, सेना, उद्योग, बिजली, मैडिकल, एवं प्रशासनिक शिक्षा सम्बन्धी।	लेखनादि कार्य, मैडीकल शिक्षा, सौंदर्य प्रसाधन, औषधि निर्माण व योजना सम्बन्धी।	बिजली (इलैक्ट्रानिक), सर्जरी की शिक्षा, शस्त्र विद्या सीखना, अग्नि, स्पोर्टस, भूगर्भ विज्ञान, दंत चिकित्सा आदि।	गणित, लेखनादि, बौद्धिक कार्य, बैंक वकालत, तकनीकि हुनर, ज्योतिष, विज्ञान, वाहनादि चलाना सीखना।	दर्शन-शास्त्र, धर्म मंत्र ज्योतिष, वकालत, उच्च पद प्रशासनिक शिक्षा वैद्यक आदि।	नृत्य, वाद्य, गायन, कला, संगीत, ऐक्टिंग, गीत-काव्य, रचना, स्त्रियों एवं सौंदर्य सम्बन्धी शिक्षा।	तकनीकी शिल्प, कला, मशीनरी सम्बन्धी ज्ञान (Engineering) अंग्रेज़ी, उर्दू, फारसी का ज्ञान शुरु करना।
व्यापार सम्बन्धी कार्य	राज्य प्रशासनिक कार्य सेनाधिकारी, ज्यूलर्ज़, औषधि, शस्त्र, अग्नि, अनाज, सोना, तांबा, चाँदी, गाय, बैलादि का क्रय-विक्रय, मैडीकल, इलैक्ट्रीकल, मंत्रानुष्ठान यज्ञादि।	कृषि, गाय, भैंस, दूध, घी डेयरी, फार्म, औषधि, सोडादि तरल पदार्थ, शंख, मोती, स्त्री, धन सम्पदा, सौंदर्य प्रसाधन, सुगन्धि (Perfumes) सम्बन्धी वस्तुओं का क्रय-विक्रय, विदेशी पत्राचार आदि।	शक्ति, अग्नि एवं बिजली से सम्बिन्धत कार्य, बेकरी electronics, स्पोटर्स Goods, सोना, तांबा, मूंगा, पीतलादि का क्रय भूमि, सर्जरी एवं रक्षा सामग्री, सन्धि विच्छेद आदि कार्य।	कृषि एवं व्यापारिक वस्तुओं का क्रय-विक्रय, शेयरों का क्रय, पुस्तक, लेखन प्रशासन, लेखाकार्य (Accounts) शिक्षण, वकालत, शिल्प, एवं सम्पादन कार्य, वाहन क्रय-विक्रय।	धार्मिक अनुष्ठान, उच्च प्रशासनिक कार्य, उच्च शिक्षा के कार्य, आभूषण, औषधि, लकड़ी, भूमि, वाहनादि का लेन-देन, विदेश गमनादि कार्य।	संगीत, सिनेमा, विदेश बारे, टैलीविजन, स्त्रियों, एवं श्रृंगारिक वस्तुओं से संबन्धित कार्य, रूई, कपड़ा बैंकिंग, चाँदी, जवाहरात, रसायन, शराब, सोडा, सुगन्धित द्रव्य, वाहनादि क्रय-विक्रय, खुशबूदार वस्तु।	मशीनरी, लोहा, लकड़ी चमड़ा, सीमेंट, तेल, पैट्रोल, पत्थर, भूमि, ठेकेदारी, शस्त्रों का क्रय-विक्रय, अन्वेषण एवं आप्रेशण कार्य, अधीनस्थ कर्मचारी, वाहनादि प्रयोग विदेश-यात्रादि कार्य।

नाम वार	रवि	चन्द्र	मंगल	बुध	बृह	शुक्र	शनि
नवीन वस्त्र धारण करना	शुभ है	मध्यम	अशुभ	शुभ	शुभ	अति शुभ	अशुभ
नवीन आभूषण धारण	शुभ	शुभ	मध्यम	शुभ	शुभ	शुभ	अशुभ
तेल लगाना	अशुभ	शुभ	अशुभ	विशेष शुभ	अशुभ	शुभ	विशेष शुभ
हजामत करना	मध्यम	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	मध्यम
नया जूता पहनना	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	मध्यम	शुभ	मध्यम
मुकद्दमा करना	अशुभ	अशुभ	शुभ	शुभ	[illegible]	[illegible]	[illegible]

◆ ◆ ◆

अभिजित मुहूर्त

◆ ◆ ◆

पुराणानुसार अभिजित मुहूर्त्त काल में क्रियमाण सभी कर्म प्राय: सफल होते हैं। भगवान् विष्णु के सुदर्शन चक्र की भान्ति अभिजित् मुहूर्त्त सब दोषों को नाश कर देता है-**दिनमध्यगते सूर्ये मुहूर्त्ते हि अभिजित् प्रभुः। चक्रमादाय गोविन्दः सर्वान्दोषान्निकृन्तति॥**

दिनमान के अर्ध भाग में स्थानीय सूर्योदय जमा कर देने से अभिजित् मुहूर्त्त का मध्य भाग निकल आता है। '**नारद पुराण**' के अनुसार **अभिजित्** के मध्याह्न काल से 1 घटी अर्थात् 24 मिनट पूर्व और मध्याह्न से 24 मिनट पश्चात् तक के समय को **अभिजित् काल** कहा जाता है।

उदाहरण-मान लो, आपने 28 नवम्बर को अभिजित मुहूर्त्त का समय जानना है, तो उस दिन के दिनमान (25/30 घटी पल) का अर्धभाग 12 घड़ी, 45 पल होंगे। इस अर्ध भाग के 5 घंटे, 6 मिनट बनते हैं। इनके उस दिन में जालन्धर के सूर्योदय 7/10 घं. मिं. में जमा कर देने से दुपै. 12 बजकर 16 मिनट पर अभिजित मुहूर्त्त का मध्यकाल होगा। इससे 24 मिनट पूर्व अर्थात् 11/52 घं. मिं. से अभिजित का प्रारम्भ काल तथा (12/16 + 00/24 मिनट = 12 घं. 40 मिनट [illegible] मिं) होगा।

मुकदमा करना	अशुभ	अशुभ	शुभ

11/52 घं. मिं. से अभिजित का प्रारम्भ काल तथा (12/16 + 00/24 मिनट = 12 घ. 40 मिनट

होगा।

आवश्यक मुहूर्त्त निर्णय

आगे हम भारतीय संस्कृति एवं शास्त्रानुसार मुख्य मुहूर्त्तों का निर्णय प्रकार दे रहे हैं, जिसमें विभिन्न मुहूर्त्तों में ग्राह्य मास, तिथि, वार, नक्षत्र आदि का विवरण दे रहे हैं। **ध्यान रहे,** सभी मुहूर्त्तों में वर्ज्य तत्त्वों जैसे–अधिक मास, क्षय मास, पितृ पक्ष, रिक्ता-तिथि (४, ९, १४), वैधृति-व्यतीपात आदि दुष्ट योग, भद्रा (भूलोके) एवं गुरु-शुक्रास्तादि का भी विचार कर लेना उचित होगा। ज्ञातव्य रहे, पंचांगदिवाकर में षोडश संस्कार अन्तर्गत गर्भाधान से अन्नप्राशन तक के मुहूर्त्त स्थायी स्तम्भ '**भारतीय संस्कृति में संस्कारों का महत्त्व**' में दिए रहते हैं। हम इसके आगे के मुख्य मुहूर्त्तों का ग्राह्य-अग्राह्य तत्त्वों का निर्णय प्रकार लिख रहे हैं–

(1) मुण्डन (चौल, चूड़ाकरण) मुहूर्त्त

जन्म या गर्भाधान से ३, ५, ७ आदि विषम वर्षों में मुण्डन संस्कार किया जाता है। कुलाचार अनुसार इसे प्रथम वर्ष भी सम्पन्न कर लेते हैं अथवा यज्ञोपवीत संस्कार के साथ करते हैं। कन्या का चौल (मुण्डन) संस्कार सम वर्षों में होता है।

ग्राह्य मास–उत्तरायण मासों में (14 जन. से 15 जुला.-आषाढ़ तक)-यथा-वैशाख, ज्येष्ठ, आषाढ़, माघ व फाल्गुन मास।

ग्राह्य तिथि–२, ३, ५, ६, ७, १०, ११, १२ (कृ. व शु. पक्ष), १३ (शुक्लपक्ष) एवं पूर्णिमा।

ग्राह्य वार–सोम, बुध, गुरु एवं शुक्रवार सभी वर्णों के लिए शुभ हैं। (परन्तु ब्राह्मणों को रविवार, क्षत्रियों को मंगलवार तथा वैश्यों को शनिवार मुण्डनादि कार्यों के लिए विशेष शुभ माने गए हैं।) शुक्ल पक्ष का सोमवार विशेष शुभ होता है, जबकि कृष्ण पक्ष का सोमवार अशुभ (साधारण) होता है।

ग्राह्य नक्षत्र–लघु संज्ञक नक्षत्र (अश्वि., पुष्य, हस्त, अभि.), अनुराधा नक्षत्र को त्यागकर मृदुसंज्ञक (मृग., चित्रा, रेवती) तथा चरसंज्ञक (पुन, स्वा., श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा) तथा ज्येष्ठा नक्षत्रों में मुण्डन कार्य शुभ रहते हैं।

कुछ विद्वान जन्म-मास व जन्म-नक्षत्र, विरुद्ध व विपरीत चन्द्र (४, ८, १२ व शत्रुगत) में वर्ज्य मानते हैं–

न जन्ममासे न च जन्मभे तथा विधौ विरुद्धेऽशुभतारकासु।
युग्माब्दमासे न च कृष्ण पक्षे चूडा न कार्या खलु चैत्रमासे।।

परन्तु कुछ विद्वान जन्म नक्षत्र या जन्म राशि को शुभ मानते हैं।

नोट–ज्येष्ठा नक्षत्र में ज्येष्ठ (बड़े) लड़के का मुण्डन न करें।

शुभ लग्न–२, ३, ४, ६, ७, ९ या १२ राशियों के लग्न अथवा इनके नवांश में मुण्डन शुभ होते हैं। ग्राह्य लग्न राशि जन्म-लग्न या जन्म-राशि से अष्टमस्थ न हो। अष्टम भाव (शुक्र के अतिरिक्त) शुद्ध होना चाहिए। सामान्य लग्न शुद्धि तो आवश्यक ही है।

तारा–शुद्धि–मुहूर्त्त ग्रन्थों में चूड़ाकरण (मुण्डन) में तारा का प्रबल होना चन्द्रमा से भी अधिक आवश्यक माना गया है। (ज्योतिर्निबन्ध)

परन्तु तारा-विचार कृष्ण-पक्ष में ही विचारणीय है, शुक्ल पक्ष में नहीं। शुक्ल पक्ष में चन्द्र-बल ही विचारणीय है।–'**कृष्णो बलवती तारा शुक्लपक्षे बली शशी।**' (नारद), अपि च, कृष्ण पक्ष में भी अशुभ तारा होने पर भी यदि चन्द्रमा उच्चस्थ, मित्रवर्ग या किसी शुभ ग्रह के साथ हो, तो मुण्डन कार्य किया जा सकता है। ('तारा-चक्र' वि. संवत् २०७४ के पंचांगदिवाकर में देखें।)

विशेष ध्यातव्य–यदि बालक की माता रजस्वला या गर्भवती हो, और गर्भ पाँच मास से अधिक का हो, तो मुण्डन कार्य न करावें। इस संस्कार से गर्भ नष्ट हो सकता है, परन्तु यदि संस्कार्य बालक 5 वर्ष से अधिक हो, तो माता के गर्भ के दोषापत्ति नहीं रहती।

(2) नूतन अक्षर–लेखनारम्भ मुहूर्त्त

बालक की पाँच वर्ष की अवस्था में सम्प्राप्त हो जाने पर आगे वर्णित विशुद्ध दिन को श्रीगणेश, सरस्वती, लक्ष्मीनारायण, गुरु एवं कुलदेवता की पूजा के साथ उसे लिखने-पढ़ने के उद्देश्य से नूतन अक्षराम्भ संस्कार करवाना चाहिए। उपर्युक्त देवताओं के नाम से घी का हवन करे तथा ब्राह्मणों को दक्षिणादि से सन्तुष्ट करना चाहिए। तदनन्तर पूर्वाभिमुख गुरु के सम्मुख पश्चिमाभिमुख बालक को अक्षरारम्भ करवाना चाहिए। संस्कार्य बालक का चन्द्र-बुध बल अपेक्षित है।

ग्राह्य मास–कुम्भस्थ सूर्य को छोड़कर उत्तरायण मासों में (14 जन. से 15 जुला. तक), कुछ विद्वान कुम्भस्थ सूर्य की अवधि को भी ग्राह्य मानते हैं।

ग्राह्य तिथि–२, ३, ५, ७, १०, ११, १२।

ग्राह्य वार–सोम, बुध, गुरु एवं शुक्रवार।

ग्राह्य नक्षत्र–अश्वि., आर्द्रा, पुन., पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वा., अनु., ज्ये., अभि., श्रव. और रेवती नक्षत्र।

शुभ लग्न–२, ३, ६, ९, १२ लग्नराशि। अष्टम भाव ग्रहरहित होना चाहिए।

नोट–यज्ञोपवीत (उपनयन) संस्कार से पहिले अक्षराम्भ और व्रतबन्ध के पश्चात् वेदारम्भ शुभ होता है।

(3) विद्यारम्भ–मुहूर्त्त

वर्णमाला-गणितादि में बालक परिपक्व हो जाने पर भविष्यत् आजीविका-प्रदात्री कोई विशेष या सर्वसामान्य विद्या का शुभारम्भ करना चाहिए।

ग्राह्य मास—फाल्गुन मास को छोड़कर उत्तरायण के मास।

ग्राह्य तिथि—२, ३, ५, ६, १०, ११, १२

ग्राह्य वार—रवि, बुध, गुरु और शुक्रवार।

ग्राह्य नक्षत्र—अश्वि., रोहि., मृग. आर्द्रा, पुन, पुष्य, आश्ले, पू.फा., उ.फा., हस्त, चित्रा, स्वा., अनु., मूल, पू.षा. उ.षा., श्रव., धनि., शत., पू.भा., उ.भा. और रेवती।

शुभ लग्न—२, ५, ८ राशि लग्न। तथा केन्द्र-त्रिकोण में शुभ ग्रह तथा ३, ६, ११वें क्रूर ग्रह हों।

(4) उपनयन (यज्ञोपवीत) मुहूर्त्त

यह नवम संस्कार यज्ञोपवीत, व्रतबन्ध, उपनयन, मौञ्जिबन्धन और जनेऊ आदि नामों से प्रचलित है। ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य का प्रथम जन्म माता के गर्भ से और द्वितीय जन्म व्रतबन्ध से संस्कृत होने पर माना गया है। अत: वे '**द्विज**' वा '**द्विजन्मा**' कहलाने के अधिकारी हैं। अत: ऐसे महत्त्वपूर्ण संस्कार को शास्त्र-सम्मत् काल में विधिवत् सम्पादित करना चाहिए।

उपनयन (यज्ञोपवीत) संस्कार कब करना चाहिए ? इस संस्कार में काम्य, नित्य और गौण काल के भेद से तीन प्रकार के काल कहे गए हैं। ब्राह्मण बालक के गर्भधारण या जन्मदिन से पंचम वर्ष में काम्यकाल या अष्टम वर्ष में नित्यकाल ; क्षत्रिय का षष्ठ या 11वें वर्ष में क्रमश: काम्य व नित्यकाल एवं 8वें या 12वें वर्ष में वैश्य का काम्य व नित्यकाल में उपनयन संस्कार हो जाना चाहिए।

यदि उपरोक्त वर्षों तक उपनयन संस्कार न हो सके, तो उपरोक्त वर्षों को द्विगुणित कर देने से मध्यमान्तर काल '**गौण-काल**' माना गया है। अर्थात् 8 से 16वें वर्ष तक ब्राह्मण का, 11 से 22 वर्ष तक क्षत्रिय का तथा 12 से 24 वर्ष तक वैश्य का यज्ञोपवीत संस्कार मध्यम फलप्रदी होने से अत्यावश्यकता में करणीय हैं।

शुभ ग्राह्य मास—चैत्र, वैशाख, ज्येष्ठ, आषाढ़ (देवशयनी एकादशी से पूर्वकाल तक), माघ व फाल्गुन मास।

ज्ञातव्य बिन्दु—*(i)* ज्येष्ठ पुत्र के लिए ज्येष्ठ मास त्याज्य रखना चाहिए। मीनस्थ सूर्य यज्ञोपवीत में शुभ कहा गया है। (निर्णय सिन्धु)

(ii) यज्ञोपवीत संस्कार के लिए वसन्त ऋतु तथा अष्टम वर्ष की उत्कृष्टता इतनी है कि दोनों के संयोग में जन्ममास-तिथि-नक्षत्र भी दूषित नहीं होते।

(iii) यद्यपि जन्ममास यज्ञोपवीत में त्याज्य है, तथापि आवश्यक होने पर जन्मदिन से दस दिन छोड़कर अन्य दिनों में संस्कार दोषपूर्ण नहीं होता। (राजमार्तण्ड)

(iv) अन्य मतानुसार जन्मकालिक पक्ष को छोड़कर दूसरे पक्ष में शुभ कार्य करने पर जन्म मास का दोष नहीं रहता। (निर्णय सिन्धु:)

ग्राह्य तिथि—शुक्ल पक्ष की २, ३, ५, १०, ११, १२ एवं कृष्ण पक्ष की–१, २, ३, ५ तिथियां शुभ हैं।

ज्ञातव्य बिन्दु—*(i)* चैत्र-वैशाख शुक्ल तृतीया, माघ शुक्ल सप्तमी तथा फाल्गुन शुक्ल तृतीया उपनयन में विशेष रूप से ग्राह्य हैं। (पुरुषार्थ-चिन्तामणि)

***(ii)* मन्वादि-युगादि**- *सोपपद तिथियां, चतुर्दशी, अमावस्या, प्रतिपदा, अष्टमी तथा निरयण सूर्य संक्रान्ति दिन उपनयन संस्कार के लिए त्याज्य हैं। इसी प्रकार पौष, माघ और फाल्गुन की तीनों कृष्णाष्टमी तथा ७, ८, ९ तिथियां '**अष्टका**' संज्ञक त्याज्य हैं।

ग्राह्य वार—रवि, सोम, बुध, गुरु एवं शुक्रवार।

वर्णेश, शाखेश बल—विशेष रूप से **ब्राह्मणों** को गुरु व शुक्रवार में, **क्षत्रियों** का रवि, मंगलवार में तथा **वैश्यों** का सोम और बुधवार में उपनयन शुभ हैं, क्योंकि ये ही इनके वर्णेश हैं। (पुरुषार्थ-चिन्तामणि)

(ii) बुध यदि अस्त हो या पापाक्रान्त हो, तो बुधवार त्यागें।

(iii) मुहूर्त्त के दिन बालक का चन्द्र ४, ८, या १२वें नहीं होना चाहिए।

***शुभ समय*—पूर्वाह्न उत्तम,** मध्याह्न मध्यम और अपराह्न वर्जित कहा गया है।

शुभ नक्षत्र—अश्वि., रोहि., मृग., आर्द्रा, पुन., पुष्य, आश्ले., पू.फा., उ.फा., हस्त, चित्रा, स्वा., अनु., मूल, पू.षा., उ.षा., अभि., श्रव., धनि., शत., पू.भा., उ.भा. और रेवती नक्षत्र।

ब्राह्मणों के लिए पुनर्वसु नक्षत्र त्याज्य है।

शुभ लग्न—विशेषतया २, ३, ५, ६, ९ राशि लग्न उत्कृष्ट कहे गए हैं, तथापि कोई भी राशि लग्न ग्राह्य हैं, जब ८, १२वां भाव शुद्ध ; ३, ६, ११वें पापग्रह, अन्यत्र (लग्न बिना) सौम्य ग्रह तथा वृष या कर्कस्थ पूर्णचन्द्र लग्न में हो। पुन: गुरु, शुक्र और स्वशाखा, स्ववर्ण का अधिपति ग्रह उच्चस्थ, स्वक्षेत्री, वर्गोत्तम, मूलत्रिकोण या केन्द्र-त्रिकोणस्थ हो, तो वह काल उपनयन में शुभ जानना चाहिए।

सूर्य-चन्द्र व गुरु बल (त्रिबल)—उपनयन मुहूर्त्त के प्रवरण हेतु संस्कार्य बालक की जन्मराशि से सूर्य, गुरु और चन्द्र बल का विचार अवश्य करना चाहिए।

रवि-चन्द्र-गुरु शुद्धि चक्र

ग्रह बल	सूर्य बल	चन्द्र बल	गुरु बल
शुभ स्थान	३,६,१०,११	१,२,३,५,६,७,९,१०,११	२,५,७,९,११
पूज्य स्थान	१,२,५,७,९	१२	१,३,६,१०
अनिष्ट स्थान	४,८,१२	४,८	४,८,१२

उच्चस्थ, स्वनवांश, मित्रराशि या वर्गोत्तम या स्वराशि में गुरु हो, तो अनिष्ट गुरु भी ग्राह्य होता है।

रोग–बाण—उपनयन मुहूर्त्त में रोगबाण का भी विचार किया जाता है। (रोगबाण प्रत्येक

---

*सोपपद तिथियाँ [illegible] शुक्ल २, आषाढ़ शुक्ल १०, पौष शुक्ल ११, माघ शुक्ल १२

राशि के 9, 18, और 27वें अंश में स्थित सूर्य का संचारकाल होता है) परन्तु ध्यान रहे, रोगबाण और चौरबाण का विचार रात्रि में किया जाता है। तथा उपनयन का समय तो पूर्वार्द्ध या मध्याह्न तक ही होता है। अपि च, लग्न बल की उपलब्धि में बाण विचार निरर्थक है–

लग्ने पूर्णबलोयेते न दोषः पंचकस्य च।। –मुहूर्त्त गणपति

नोट–यदि संस्कार्य बालक की माता रजस्वला हो जाए तो उसकी शुद्धि के बाद ही यज्ञोपवीत संस्कार करना चाहिए।

(5) केशान्त कर्म मुहूर्त्त

ब्राह्मण को 16वें, क्षत्रियों को 22वें तथा वैश्य को 24वें वर्ष में केशान्त संस्कार करना चाहिए। इस संस्कार के लिए काल-शुद्धि, ग्राह्य-वर्ज्य दोष चूड़ाकर्म (मुण्डन) संस्कार के सदृश ही जानने चाहिएं।

(6) समावर्तन मुहूर्त्त

यह संस्कार आचार्य-गृह (गुरुकुल) में विद्या समाप्त कर गृहस्थाश्रम में प्रवेश के समय एक विशेष अनुष्ठान के रूप में किया जाता है। केशान्त तथा विवाह संस्कार के मध्यवर्ती काल में, जब बालक गुरु से अध्ययन करके स्वगृह लौटता है, तब उपाकर्म की तरह ही समावर्तन करना चाहिए। इसे कुछ विद्वान लोग **'मौंजी-मोक्षण'** संस्कार भी कहते हैं। इस संस्कार में वर्ज्य-ग्राह्य एवं काल-शुद्धि आदि उपनयन संस्कार की भान्ति रहेगी। समावर्तन संस्कार के उपरान्त ही ब्रह्मचारी विद्याव्रत स्नातक कहलाता है।

विवाह संस्कार

विवाह गृहस्थाश्रम का सर्वप्रमुख संस्कार है। इस संस्कार के प्रमुख तीन उद्देश्य होते हैं– (1) अनर्गल प्रवृत्ति का निरोध, (2) पुत्रोत्पादन द्वारा वंश की रक्षा एवं (3) भगवत्प्रेम का अभ्यास। ऋषि-ऋण, देव-ऋण और पितृ-ऋण–इन तीन ऋणों का शोधन कर अपना चित्त मोक्ष में लगाना चाहिए। तीन ऋणों से बिना छुटकारा पाये मुक्ति मार्ग का आश्रय लेने से मानव का पतन हो जाता है। अतएव स्वाध्याय द्वारा ऋषि-ऋण, यज्ञ-साधन द्वारा देव-ऋण और पुत्रोत्पत्ति द्वारा पितृ-ऋण से सद्गृहस्थ मुक्त होते हैं। नैष्ठिक ब्रह्मचारी के समस्त ऋण ज्ञानयज्ञ में लय हो जाते हैं।

गृहस्थ बनने के लिए मन के अनुरुपा, भिन्नगोत्रीया, अपने से अल्पवयस्का एवं अनन्यपूर्विका (पहिले किसी के साथ अविवाहिता) कन्या का पाणिग्रहण करें।

(7) वर–वरण (सगाई) मुहूर्त्त

वर-कन्या की जन्मपत्रियों में परस्पर सम्यक् मिलान हो जाने के पश्चात् दोनों के माता-पिता विवाह के संकल्प (वाग्दान) को सम्पुष्ट करने के लिए वर-कन्या का वरण (सगाई) करते हैं। इसके निम्नलिखित शुभ मुहूर्त्त में कन्या का भाई कुल पुरोहित (ब्राह्मण) एवं परिवार के सन्निकट सगे-सम्बन्धियों के साथ यज्ञोपवीत, नारियल, साबुत सुपारी, हल्दी, अक्षत, छुहारे, गुड़, वस्त्र, अँगूठी, मिष्ठान्न, फल, फूलादि अर्पण करके वर का शास्त्र प्रशस्त मांगलिक मन्त्रों के साथ वरण करें। (पूर्ण विधि जानने के लिए हमारी नवीन प्रकाशित **'विवाह-पद्धति'** का अवलोकन करें।)

ग्राह्य मास–पौष एवं चैत्र मास (धनु एवं मीनस्थ सूर्यकालीन) को छोड़कर शेष मास।

शुभ–ग्राह्य तिथि–१ (कृष्ण पक्ष की), २, ३, ५, ६, ७, ८, १०, ११, १२ (दोनों पक्षों की), १३ (शुक्ल) एवं पूर्णिमा तिथि।

ग्राह्य वार–रवि, चन्द्र, बुध, गुरु तथा शुक्रवार।

ग्राह्य नक्षत्र–कृति., रोहि., मृग, तीनों पूर्वा, हस्त, श्रवण, चित्रा।

शुभ लग्न–सभी राशि लग्न, परन्तु केन्द्र/त्रिकोण में शुभ ग्रह तथा 3, 6, 11वें भावों में क्रूर ग्रह हों।

(8) कन्या–वरण मुहूर्त्त

वर-वरण की भान्ति ही वर के माता-पिता अथवा रक्त-सम्बन्धी कन्या के वरण के लिए कन्या के घर में जाकर शास्त्र-प्रशस्त मांगलिक मन्त्रों के साथ वरण करें।

शुभ मास–धनुस्थ एवं मीनस्थ (पौष एवं चैत्र मास) सूर्य को छोड़कर शेष मास।

ग्राह्य तिथि–१ (कृष्ण पक्ष की), २ ३, ५, ६, ७, ८, १०, ११, १२ (दोनों पक्षों की), १३ (शुक्ल) एवं पूर्णिमा।

ग्राह्य नक्षत्र–मघा, तीनों पूर्वा, तीनों उत्तरा तथा विवाह-मुहूर्त्त वाले सभी नक्षत्र।

शुभ लग्न–सभी राशि लग्न, तथा केन्द्र/त्रिकोण में शुभ ग्रह (बुध, गुरु, शुक्र) हों।

(9) विवाहांग कृत्यारम्भ मुहूर्त्त

विवाह से पूर्व महत्त्वपूर्ण कृत्य जैसे–दलन, कण्डन, अनाज-शोधन, पिष्टीकरण, घर को लीपना (पेंट), सजाना, चित्रकारी करना, स्तम्भारोपण, अंकुरार्पण, गणेशादि पूजन, वस्त्रालंकार संग्रह, भूषण-कंकणादि धारण, कलश-स्थापन, मंगल-स्नान तथा नान्दीश्राद्धादि विवाहांग कृत्यों को विवाह दिन से पूववर्ती ३, ६, ९वें दिनों को छोड़कर करना चाहिए। इन्हें विवाह-मुहूर्त्तोक्त नक्षत्रों तथा सामान्य पंचांग शुद्धि में २, ४, ५, ७, ८, १०, ११, १२ दिन पूर्व करें।

वेदिका निर्माण और स्तम्भारोपण

विवाह में वेदी-रचना (मण्डप) भी अपना महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है। ब्राह्मणों के लिए विवाह के लिए (कन्या) के 4 हाथ परिमित लम्बी-चौड़ी, एक हाथ ऊँची और पूर्व की ओर क्रमशः ढालु होती हुई वेदी बनानी चाहिए। समस्त वर्णों के लिए कन्या-घर के बायीं ओर वेदी का निर्माण करना चाहिए। अर्थात् घर के बाहर घर की ओर मुँह करके खड़े व्यक्ति के दायीं ओर बनाई जाए। इस मण्डपवेदी को चारों ओर चार मण्डप-स्तम्भों से आवृत्त किया जाता है। मण्डप निर्माणान्तर्गत प्रथण स्तम्भ के आरोपणार्थ दिशा ज्ञान के हेतु सूर्य राशि संचार के अनुसार निम्न चक्र द्रष्टव्य है–

दिशा	ईशान	आग्नेय	नैर्ऋत्य	वायव्य
सूर्य राशि	५,६,७	२,३,४	११,१२,१	८,९,१०

अर्थात् सूर्य के सिंह, कन्या, तुला राशि संचार कालीन (भाद्रपद, आश्विन, कार्तिक मास) स्तम्भ ईशान कोण में सर्वप्रथम गाड़ा जाना चाहिए।

विशेष—मण्डप निर्माणारम्भ में '**विवाहांग कृत्यारम्भ**' में कहे हुए तत्त्वों का विचार तथा मंगलवार व पंचक-नक्षत्रों का परित्याग करना चाहिए।

विवाह कार्य पूर्ण हो जाने के अनन्तर पूर्वनिर्मित मण्डपादि तथा पूर्वामन्त्रित गणेशषोडश-मातृकादि का विसर्जन २, ४, ५, ७वें दिन करना शुभावह माना गया है।

ध्यान रहे—नान्दीमुख श्राद्ध से मण्डपोद्वासन पर्यन्त पिता, भाई तथा सभी सगोत्र/सपिण्ड बान्धवों को दर्श श्राद्ध, क्षयश्राद्ध, ठण्डे पानी से स्नान, अपसव्य, स्वधाकार, नित्यश्राद्ध, ब्रह्मयज्ञ, अध्ययन, नदी व सीमा का लांघना, उपवास, व्रत और श्राद्ध में भोजन नहीं करना चाहिए।

(10) तैलादि-लापन (चढ़ाने) का मुहूर्त्त

वर-कन्या जिसको विवाह से पूर्व तैल चढ़ाना (उबटन) हो, उसका चन्द्र-बल देख लेना चाहिए। तैलादि मंगल कार्य हेतु मेषादि राशि वालों के लिए चक्र में निर्दिष्ट संख्या दिन के पूर्व (पहिले) करना चाहिए। **उदाहरणार्थ**—मिथुन राशि वाले वर-कन्या को विवाह से 5 दिन पूर्व तैलाभ्यंग करना चाहिए। इसमें विवाह का दिन गिनती में न करें।

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
तैलसंख्या	7	10	5	10	5	7	7	5	5	5	5	7

(11) विवाह-मुहूर्त्त

विवाह-मुहूर्त्त निर्णय में सामान्य वर्ज्य दोषों के अतिरिक्त लतादि दस दोषों का विवरण तथा लग्न शुद्धि एवं अन्य घटक तत्त्व इसी पंचांग में वार्षिक विवाह-मुहूर्त्तों के अनन्तर पृष्ठों पर प्रतिवर्ष दिया रहता है। मुख्य ग्राह्य मासादि का विवरण पुन: लिख रहे हैं–

ग्राह्य मास—विवाह संस्कार में पूर्वाचार्यों ने यद्यपि वैशाख, ज्येष्ठ, आषाढ़, मार्गशीर्ष, माघ व फाल्गुन मास ग्रहण किए हैं। परन्तु अनेक विद्वानों एवं मुहूर्त्त चिन्तामणि पीयूषधारा अनुसार लोकाचार से श्रावण, भाद्रपद, आश्विन मास भी ग्रहणीय हैं। इसीदिन (भद्रदेश) पंजाब (हि.प्र., हरियाणा, जम्मू सहित) में अति प्राचीन काल से श्रा., भाद्र., आश्वि महीनों में विवाह करने की प्रथा चली आ रही है। पर्वतीयों प्रदेशों (हि.प्र., उत्तराखण्ड आदि) में कार्तिक मास में भी विवाह होते हैं।

ग्राह्य तिथि—कृष्णपक्ष की त्रयोदशी से शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा तक की तिथियों को छोड़कर शेष तिथियों में।

ग्राह्य वार—सभी वार ग्रहणीय है। परन्तु रवि, सोम, बुध, गुरु, शुक्र विशेष शुभ तथा मंगल-शनिवार मध्यम कहे गए हैं।

ग्राह्य नक्षत्र—अश्वि., रोहि., मृग., मघा, उ.फा., हस्त, चित्रा, स्वा., अनु., मूल, उ.षा., श्रव., धनि., उ.भा. और रेवती नक्षत्र।

अश्वि., चित्रा, श्रव. व धनिष्ठा—ये चार विवाह नक्षत्र कात्यायन गृहसूत्रोक्त त्रिषुत्रिषूत्तरादिषु प्रमाणानुसार ग्रहण किए गए हैं। गृहसूत्र के अतिरिक्त 'धर्मसिन्धु', 'ज्योतिर्विदाभरणम्' तथा 'सत्यकृत्य मुक्तावली' ग्रन्थ में भी ये चारों नक्षत्र विवाह हेतु ग्राह्य माने गए हैं।

विवाह में लग्न शुद्धि एवं विशेष विषयों पर विचार—विवाह में त्रिविक्रमसंहिता अनुसार शुद्ध काल, लग्न-शुद्धि, लग्न-बल, वर-कन्या के सम-विषम वर्षों का विचार, भद्रादि दोष, गोधूली लग्न सम्बन्धी सभी विषयों का निर्णयप्रकार सप्रपञ्च इसी पंचांग में वार्षिक विवाह-मुहूर्त्त वाले पृष्ठों के बाद स्थायी स्तम्भों में देखें।

(12) नववधू प्रवेश-(वध्वागमन) मुहूर्त्त

विवाह दिन से 16 दिनों के मध्यान्तर में सम दिनों में एवं 5, 7, 9वें विषम दिनों एवं स्थिर लग्न में वधू प्रवेश शुभ है। उपरोक्त दिनों में तिथि और नक्षत्रादियों का नियम नहीं होता। यदि ऊपर कहे हुए दिनों में वधू प्रवेश न हो सके तो विषम दिनों (तिथियों) में, विषम मासों में और विषम वर्षों में होना चाहिए। परन्तु यदि किसी कारण अथवा दैवगत व्यवधान के कारण पाँच वर्ष तक भी नववधू प्रवेश न हो सके तो फिर किसी भी अन्य शुभ मुहूर्त्त में प्रवेश करना चाहिए। 16 दिन के पश्चात् ही निम्न तिथ्यादि तत्त्व विचारणीय होंगे–

ग्राह्य मास—कृष्ण पक्ष की त्रयोदशी से शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा तिथियाँ तथा ४, ९, १४ तिथियाँ त्यागकर सभी तिथियां।

ग्राह्य वार—सोम, बुध, गुरु, शुक्र एवं शनिवार।

ग्राह्य नक्षत्र—अश्वि., रोहि., मृग, पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वा., अनु., मूल, उत्तरा-तीनों, श्रव., धनि. तथा रेवती।

शुभ लग्न—५, ८, ११ लग्न विशेष शुभ हैं। परन्तु अन्य लग्नों में भी (४, ८ भाव शुद्ध होने पर) वधू प्रवेश रात्रि के समय किया जा सकता है।

नववधू प्रवेश के समय भद्रा, व्यतिपातादि अशुभ दोषों का विचार तो करना ही चाहिए।

विवाह के बाद प्रथम वर्ष में कन्या वास-चिन्तन

विवाह के पश्चात् नव-परिणीता स्त्री प्रथम ज्येष्ठ मास में पति के घर निवास करे, तो पति के ज्येष्ठ (जेठ) को, प्रथम अधिक मास में पति को, क्षय मास में स्वयं का, प्रथम आषाढ़ (मासान्तर श्रावण) में सास को एवं पौष में श्वसुर को अशुभ फल प्राप्त होता है। इसी प्रकार प्रथम चैत्र मास में मायके (पितृ-गृह) में रहने से पिता को अशुभ फल प्राप्त होता है।

(13) द्विरागमन (मुकलावा) मुहूर्त्त

नववविाहिता वधू का वधू-प्रवेश के अनन्तर पिता के गृह में लौटकर पुन: भर्तृगृह गमन (ससुराल) '**द्विरागमन**' कहलाता है। अत: इसे '**पुनर्वधूप्रवेश**' भी कहा जा सकता है।

द्विरागमन काल—यदि द्विरागमन विवाह दिन से 16 दिन के मध्यान्तर में किया जाए तो [illegible] बल, गुरु-शुक्रास्त, गुरु-शुक्र बाल्य-वृद्धत्व, एकराशिगत सूर्य

चन्द्र, सम्मुख एवं दक्षिणस्थ शुक्र, भद्रा का विचार नहीं किया जाता। परन्तु यदि 16 दिनों के बाद हो, तो द्विरागमन में ये घटक त्याज्य रहेंगे। विवाह के बाद प्रथम, तृतीय या पंचम-सप्तमादि विषम वर्षों में वर (पुरुष) के सूर्य एवं गुरु तथा दोनों (वर-वधू) के चन्द्रमा बलवान् होने पर पत्नी का द्विरागमन शुभ होता है।

ग्राह्य मास—मेष, वृश्चिक तथा कुम्भस्थ कालीन सूर्य अर्थात् वैशाख, मार्गशीर्ष तथा फाल्गुन सौर मासों में।

ग्राह्य शुभ तिथि—शुक्ल पक्ष की २, ३, ५, ७, १०, ११, १३ एवं पूर्णिमा।

ग्राह्य नक्षत्र—अश्वि., रोहि., मृग., पुन., पुष्य, उत्तरा-तीनों, हस्त, चित्रा, स्वा., अनु., मूल, श्रव., धनि., शत. तथा रेवती नक्षत्र।

शुभ लग्न—२, ३, ६, ७, १२ लग्न विशेष शुभ हैं तथा इन पर शुभ ग्रहों की दृष्टियां हों। लग्न से ३, ६, १०, ११वें गुरु तथा केन्द्र भावों में शुक्र विशेष शुभप्रद होगा।

शुक्र-विचार—शुक्र की शुद्धि द्विरागमन में अत्यावश्यक है। शुक्र जिस दिशा में उदित हुआ हो, उसी दिशा से शुक्रवास का विचार करना चाहिए। **उदाहरणार्थ**—जैसे यदि शुक्र पूर्व दिशा से उदय हुआ हो [जब शुक्र, सूर्य से पीछे (कम) रहता है, तो प्रातःकाल पूर्व में उदित रहता है।]-उस समय पूर्व-उत्तर (आग्नेय-ईशान) की यात्रा में शुक्र सम्मुख-दक्षिण होने से अशुभ होगा। परन्तु पश्चिम-दक्षिण (नैर्ऋत्य-वायव्य) की यात्रा में शुक्र पृष्ठ-वाम (बाएं) होने से शुभ है। इसी प्रकार शुक्र जब सूर्य से आगे (अधिक) रहता है, तो सन्ध्या में पश्चिम में उदित रहता है, उस समय पश्चिम (वायव्य) की यात्रा में शुक्र सम्मुख (सामने) तथा दक्षिण की यात्रा में दक्षिण (दाहिना) होता है। अतः पूर्व (आग्नेय) तथा उत्तर (ईशान) की यात्रा में पृष्ठ एवं वाम (बाएं) शुक्र होते हैं। **सम्मुख एवं दक्षिण** शुक्र में बालक, गर्भिणी तथा नवोढ़ा के लिए यात्रा अशुभ कही गई है।

यह शुक्र का विचार तृतीयादि विषम वर्ष के द्विरागमन, नवविवाहिता तथा गर्भिणी की यात्रा में करना आवश्यक है।

सम्मुख-शुक्र का परिहार—एक ही नगर/ग्राम में, किसी विषय (बिमारी या उत्पात) आदि के उपद्रव में, विवाह सम्बन्धी यात्रा में, देव-तीर्थ यात्रादि में, राज-पीड़ित होकर और विवाह के बाद एक वर्ष के भीतर स्त्री पिता के घर से पतिगृह की यात्रा करें तो सम्मुख-दक्षिण शुक्र का दोष नहीं होगा। अपि च, जब चन्द्रमा रेवती से मृगशिर तक हो, तो भी सम्मुख-दक्षिण शुक्र का दोष नहीं होता। क्योंकि इस अवधि में शुक्र अन्धा हो जाता है। इसीप्रकार पति द्वारा पत्नी के ले जाने पर (अर्थात् यदि पति साथ हो) तो तथा भृगु, अंगिरा, वत्स, वशिष्ठ, कश्यप, अत्रि और भारद्वाज-इन 7 मुनियों के वंश (गोत्र) में भी सम्मुख शुक्र का दोष नहीं लगता है।

(14) प्रथम स्त्री-समागम मुहूर्त

रजोदर्शन उपरान्त 16 रात्रि पर्यन्त, प्रथम चार रात्रियों को छोड़कर शेष 12 रात्रियों में स्त्री संगम (समागम) करें। पुरुष अपने चन्द्र बल में प्रसन्नचित्त होकर नवांगना से प्रथम-समागम करे। विषम रात्रि में संभोग से गर्भ होने पर कन्या, समरात्रियों में पुत्र का जन्म होता है।

ग्राह्य तिथि—१ (कृ.), २, ३, ५, ७, १०, ११, १२ तथा शुक्ल पक्ष की १३

ग्राह्य वार—सोम, बुध, गुरु एवं शुक्रवार

ग्राह्य नक्षत्र—रोहि., मृग., उत्तरा-तीनों, हस्त, स्वाती, अनु., श्रव., धनि और शतभिषा

शुभ लग्न—१, ३, ५, ७, ९, ११ राशि लग्न

(15) नववधू द्वारा प्रथम पाककर्म मुहूर्त

नवविवाहिता वधू को ससुराल में सर्वप्रथम रसोई बनवाना शुरु करने हेतु विचारणीय शुभ काल-

ग्राह्य तिथि—१ (कृ.), २, ३, ५, ६, ७, १० तथा शुक्ल पक्ष की १३ व पूर्णिमा

ग्राह्य वार—सोम, बुध, गुरु, शुक्र एवं शनिवार

ग्राह्य नक्षत्र—कृति., रोहि., मृग, पुन., उत्तरा-तीनों, विशा., ज्ये., श्रव., धनि., शत. एवं रेवती।

शुभ लग्न—२, ५, ८, ११ राशि लग्न। जब चतुर्थ स्थान में शुभ ग्रह या ग्रहाभाव, सप्तम में बलयुत सौम्य ग्रह तथा अष्टम भाव भी शुद्ध हो।

(16) वास्तु भूमि का शुभाशुभ विचार

(क) गृहादि निर्माण हेतु जिस भूमि की शुभाशुभ परीक्षा करनी हो, तो शाम के समय वहाँ पर भूमि पूजन करवाने के पश्चात् वहाँ अपने एक हाथ लम्बा, एक हाथ चौड़ा और डेढ़ हाथ गहरा गड्ढा खोद कर उसे जल से भर दें। प्रातःकाल आकर उसे देखने पर, यदि वह गड्ढा पानी से भरा हुआ दिखे तो, भूमि शुभ जानें। यदि पानी न हो, तो मध्यम जानें, और यदि गड्ढा में पानी न हो और उसके आस-पास की मिट्टी फटी हुई हो, तो भूमि को अशुभ समझें।

(ख) वास्तुभूमि में परीक्षा के लिए भूमि में लगभग डेढ़ फुट गहरा उतना ही चौड़ा गड्ढा खोदें। खुदाई के समय यदि पत्थर, ईंट, ताम्बा, पात्र, धनादि द्रव्य मिलें, तो यह परिवार की आयु, धन, संतति आदि में वृद्धि होने के संकेत हैं। इसे शुभ शकुन मानना चाहिए। यदि भूमि खोदने पर कपाल, हड्डी, कोयला, केश, राख, गुठली, रुई, सीप खोपड़ी, लोहादि मिलें तो इसे अशुभ शकुन समझना चाहिए।

(ग) विश्वकर्मा के अनुसार एक अन्य परीक्षा भूमि में उत्तर दिशा की ओर एक लगभग डेढ़ फुट गहरा और डेढ़ फुट चौड़ा गड्ढा खोदें। गड्ढे में से सारी मिट्टी निकाल लें। तथा निकाली हुई मिट्टी को दुबारा उसी गड्ढे में भर देवें। यदि गड्ढा भर देने के बाद भी मिट्टी शेष बच जाती है, तो समझ लें कि भूमि उत्तम है। यदि फिर भरने के बाद मिट्टी शेष नहीं बचती और गड्ढा पूरा भर जाता है, तो इससे यह समझना चाहिए कि भूमि मध्यम स्तरीय होगी। यदि निकाली गई सारी मिट्टी गड्ढे में भरने पर भी, गड्ढा पूरी तरह नहीं भरता है, तो समझें कि ज़मीन निकृष्ट प्रकार की है।

(घ) फटी हुई, शूल (कांटों), दीमक आदि से युक्त ऊँची-नीची भूमि अशुभ होती है।

(ङ) **शुभ-भूमि**—चिकनी, गीली, उपजाऊ मिट्टी अथवा घास, पुष्प, लताओं, फूलों आदि से सुगन्धित एवं समतल भूमि गृह स्वामी एवं उसके परिवार के लिए सुख-सम्पत्ति में वृद्धिकारक होती है।

(च) मकान की नींव को गहरा खोदते समय यदि काली ईंटें देखने को मिलें, तो भूमि शुभ

जानें। हड्डी, केश, (बाल), कोयला राखादि निकलें तो वहां मकान बनवाने वाले को रोगादि से कष्ट रहे॥

(17) गृहारम्भ (नींव) मुहूर्त्त

विभिन्न सूर्य संक्रान्तियों में राहु-मुख से पृष्ठवर्तिनी दिशा में घर की नींव खोदना शुभता का द्योतक होता है। भूखण्ड में सूर्य की राशि के अनुसार सर्पाकार राहु का मुख, उदर एवं पुच्छ परिवर्तित होती रहती है। इसीलिए उस दिशा में खुदाई प्रारम्भ करनी चाहिए। जहाँ राहु का कोई अंश (अवयव) न हो–

(1) सूर्य, वृष, मिथुन या कर्क (ज्येष्ठ, आषाढ़ या श्रावण) में हो, तो नींव की खुदाई का प्रारम्भ **नैर्ऋत्य** (दक्षिण-पश्चिम) कोण से करें।

(2) सूर्य सिंह, कन्या या तुला (भाद्र., आश्वि. या कार्तिक) में हो, तो नींव की खुदाई का प्रारम्भ **आग्नेय कोण** (पूर्व-दक्षिण) में करें।

(3) सूर्य वृश्चिक, धनु या मकर (मार्ग., पौष या माघ) में हो, तो नींव की खुदाई का प्रारम्भ **ईशान कोण** (उत्तर-पूर्व) में करें।

(4) सूर्य मेष, कुम्भ या मीन (वैशाख, फाल्गुन या चैत्र) में हो, तो नींव की खुदाई का आरम्भ **वायव्य कोण** (उत्तर-पश्चिम) से करें।

ध्यान दें, नींव की खुदाई में सुप्त-भूमि (भू-शयन) का विचार करना भी आवश्यक है।

सुप्तभूमि (भू–शयन)—*(i)* **प्रत्येक सूर्य संक्रान्ति से ५, ७, ९, १५, २१ एवं २४वें प्रविष्टे को पृथ्वी सोई रहती है,** अतएव सुप्त भूमि के दिवसों में यथासम्भव कृषि, गृह-निर्माण, वापी, कुआं, तालाब के लिए भूमि का खनन न करें।

(ii) एक अन्य मतानुसार, सूर्य नक्षत्र से ५, ७, ९, १२, १९ तथा २६वें चन्द्र नक्षत्रों में भी भूमि का शयन होता है। **(पंचांगदिवाकर में दिए गए गृहारम्भ मुहूर्त्तों में इन दोनों मतों का अनुसरण होता है।)** (**भू-रजस्वला**–सूर्य-संक्रान्ति के दिन से १, ५, १०, ११, १६, १८, १९वें दिन भूमि रजस्वला रहती है। अतः इन दिनों भी यज्ञ, हवन, कृषि, तालाब, गृह निर्माणारम्भ आदि कार्यों का आरम्भ न करें–परन्तु अधिकतर पंचांगकार एवं विद्वान इस मत को मान्यता नहीं देते।)

ग्राह्य मास—वैशाख, ज्येष्ठ, श्रावण, मार्ग., माघ तथा फाल्गुन श्रेष्ठ कहे हैं। भाद्रपद और कार्तिक मास मध्यम हैं।

द्वार-मुख के अनुसार मास ग्रहण–जब सूर्य मेष-वृष-वृश्चिक-तुला राशि में हो, तो दक्षिण या उत्तर मुख का और जब सूर्य कर्क-सिंह-मकर-कुम्भ राशि में हो, तो पूर्व या पश्चिम मुख का गृह बनाना चाहिए।

पूर्व-पश्चिमाभिमुख गृह	उत्तरदक्षिणाभिमुख गृह
सौर श्रावण, भाद्रपद, माघ तथा फाल्गुन मास	सौर वैशाख, ज्येष्ठ, कार्तिक और मार्गशीर्ष मास

ग्राह्य तिथि—१ (कृ.), २, ३, ५, ६, ७, १०, ११, १२, १३ (शु.), १५

ग्राह्य वार—सोम, बुध, गुरु, शुक्र और शनिवार

ग्राह्य नक्षत्र—अश्विनी, रोहि., मृग., पुन, पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वा., उत्तरा-तीनों, अनु., श्रव., धनि., शत. और रेवती।

शुभ लग्न—स्थिर या द्विस्वभाव लग्न शुभ होंगे (२, ३, ५, ६, ८, ९, ११, १२)। लग्न पर शुभ ग्रहों की दृष्टि, पापग्रह ३, ६, ११ में हों तथा शुभ ग्रह ८, १२वें भाव के अतिरिक्त अन्य भावों में हों, दशम भाव में सबल सौम्य ग्रह तथा चन्द्रमा १, ६, ८, १२वें न हों।

अग्निबाण—'गृहगोपेऽग्निपंचकम्' अनुसार गृहारम्भ के समय अग्निबाण वर्जित है। परन्तु अधिकतर विद्वानों के अनुसार लकड़ी आदि की छत डालते समय, इलैक्ट्रिक वायरिंग प्रारम्भ करते हुए तथा स्तम्भ आरोहणादि काल में ही अग्निबाण का विचार करना चाहिए। अपि च, लग्न बल की उपलब्धि में बाण विचार निरर्थक है।

वृषवास्तु चक्र

बैल के अंग	शिर	अगले पाद (पांव)	पृष्ठपाद (पिछले पांव)	पृष्ठ (पीठ)	दक्ष कुक्षि (दाईं कोख)	पुच्छ (पूँछ)	वाम कुक्षि (बाईं कोख)	मुख
नक्षत्र	३	४	४	३	४	३	४	३
फल	अग्नि-भय	शून्य (०)	स्थिरता शान्तिप्रद	श्रीलक्ष्मी प्राप्ति	लाभ-प्रद	स्वामी कष्टकारी	दारिद्रय	सदा पीड़ा व कष्ट

गृहारम्भ के मुहूर्त्तों में से मास शुद्धि, ग्रह-बलादि देखने के बाद, कल्पित वृष (बैल) के अंगों पर अभिजित् सहित अट्ठाईस नक्षत्रों को प्रत्यारोप (स्थापित) करें। सूर्याधिष्ठित नक्षत्र से मुहूर्त्त के दिन तक गणना करने पर मुहूर्त्त वाला दिन दोषपूर्ण आता हो, तो उस स्थिति में मुहूर्त्त का दिन बदल लेना चाहिए।

उदाहरण–जैसे सूर्य के नक्षत्र से लेकर प्रथम तीन नक्षत्रों तक गिनने पर **मुहूर्त्त दिन** पड़ता हो, तो गृह में **अग्निदाह** का भय रहेगा। आगे 4, 5, 6 एवं 7वें नक्षत्र पर मु. नक्षत्र आवे तो शून्य यानि–कुछ भी शुभाशुभ फल न हो। अर्थात् अपने कर्मों के अनुसार ही फल मिले। आगामी चार (8, 9, 10, 11)वें नक्षत्रों के मध्यपात हो तो भाग्य में स्थिरता एवं शान्ति रहेगी। चतुर्थ भाग उससे आगे के तीन नक्षत्रों के मध्य मुहूर्त्त आ जावे तो लक्ष्मी प्राप्ति अर्थात् धन प्राप्ति के योग होंगे। इसी क्रमानुसार फल जानें।

निष्कर्षतः–गृह निर्माण का आरम्भ करने के लिए सूर्य के नक्षत्र से प्रथम सात नक्षत्र अशुभ। आठवें नक्षत्र से अठारहवें तक शुभ तथा शेष अंतिम दश नक्षत्र पुनः अशुभ होंगे।

ध्यान रहे, भूखनन के बाद भूमि-पूजन एवं वास्तु-पूजा करनी आवश्यक है।

शिलान्यास मुहूर्त–गृहारम्भ की शुभ बेला में खनित नींव को गृहारम्भ के लिए निर्दिष्ट

समय-शुद्धि का विचार करके विधिवत् पत्थरों, शिलाओं, ईंटों से पूरित कर देना चाहिए। वृहत्संहिता अनुसार पहिले से खोदी हुई नींव में पूर्व व दक्षिण दिशा के मध्य में अर्थात् अग्निकोण में पूजा करके प्रथम शिला स्थापित करके प्रदक्षिणा के क्रम से अर्थात् अग्नि के बाद दक्षिण-पश्चिम (नैऋत्य) तथा वायव्यादि(उत्तर) दिशाओं में स्थापित करना चाहिए एवं खम्भ को भी इसी रीति से बनवाना चाहिए।

■ ■ ■ ■ ■नींव में रखने योग्य सामग्री■ ■ ■ ■ ■

शिलान्यास हेतु आवश्यक सामग्री–

- तांबे की गड़वी में चावल भरकर तथा सरसों, हल्दी भरें तथा गड़वी को मौली तथा आम्र पत्तों से बांध लें। ➡ ५ नई ईंटें
- ५ पंचरत्नी तथा गीता आदि धार्मिक ग्रन्थ
- १ जोड़ी सर्प, सर्वोषधि, श्रीफल एक, लाल वस्त्र, जनेऊ-जोड़ा
- **(विशेष)** –भाद्रपद, आश्विनी और कार्तिक मास में भवन निर्माण हो तो सर्प का मुख पूर्व में होना चाहिए।
- फाल्गुन, चैत्र, वैशाख मासों में निर्माण हो तो सर्प का मुख पश्चिम दिशा की ओर हो।
- ज्येष्ठ, आषाढ़ श्रावण मासों में सर्प का मुख उत्तर दिशा की ओर हो।
- मार्गशीर्ष, पौष, माघ मासों में सर्प का मुख दक्षिण दिशा में होना चाहिए।
- ५ कौड़ीयां, सिंधूर, ५ सुपारी साबुत, 1 नारियल।
- दरिया या तालाब के किनारे की घास तथा १ पाव कच्चा दूध। (यदि सम्भव हो तो गंगाजल एवं गंगादि तीर्थ से लाई हुई रेत या मिट्टी भी रख दी जाए तो अधिक अच्छा है।

(18) द्वार–शाखा स्थापन मुहूर्त

उचित दिशा में प्रमुख द्वार का निर्माण व उसमें चौखट लगवाने में उपयुक्त काल शुद्धि–

तिथि—५, ७, ८, ९ [पंचमी धनदा चैव, मुनिनन्दवसौ शुभम्।।–ज्येतिर्निबन्ध]

ग्राह्य वार—सोम, बुध, गुरु, शुक्र

ग्राह्य नक्षत्र—अश्वि., रोहि., मृग., पुष्य, उत्तरा–तीनों, हस्त, स्वा., श्रव. और रेवती।

सूर्यभात् द्वार–देहली चक्र

सूर्यभात् नक्षत्र	४	८	८	३	४
फल	लक्ष्मी प्राप्ति	उद्वेग	देहसौख्य	मृत्युतुल्य कष्ट	सौख्य
वास	शिर	चतुष्कोण	चतुः शाखा	देहली	मध्य

(19) जलाशय (कुआँ), देवालय खनन मुहूर्त

सामान्य रूप से कुआँ, तालाब, बावड़ी आदि समस्त जलस्थानों का शुभारम्भ निम्न मुहूर्त में शास्त्र-सम्मत होगा–

ग्राह्य मास—वैशाख, ज्येष्ठ, आषाढ़ (मिथुनार्क), माघ तथा फाल्गुन।

ग्राह्य तिथि—शुक्ल पक्ष की २, ३, ५, ७, १०, ११, १२, १३

ग्राह्य वार—सोम, बुध, गुरु, शुक्र।

ग्राह्य नक्षत्र—अश्वि., रोहि., मृग., पुन, पुष्य, उत्तरा–तीनों, हस्त, चित्रा, स्वा., अनु., मूल, श्रव., धनि., शत., रेवती।

लग्न–शुद्धि—२, ४, ७, ९, १०, ११, १२ आदि राशि लग्न तथा शुभ ग्रहों के नवांश। केन्द्र में शुभ ग्रह हों।

विशेष–गुरु-शुक्रास्त, गुर्वादित्य, दक्षिणायन, भद्रा, कुयोगादि त्याज्य।

(20) राहु मुख ज्ञान चक्रम्

सूर्य के भिन्न-भिन्न राशियों में संचार-कालीन देवालय-प्रारम्भ, गृहारम्भ तथा जलाशय (कुआँ, नल, तालाबादि) के लिए भू-खननोपयोगी दिशा ज्ञान चक्र है। तीन-तीन राशि की स्थिति में ऊपर के क्रम से राहु के मुख की दिशा लिखी है, उसकी विपरीत (पृष्ठ) दिशा में खात करना शुभ होगा।

सूर्यराशिवशात् खात चक्रम

राहुमुखम्	ईशान्ये	वायव्ये	नैऋत्ये	आग्नये
देवालयारम्भे सूर्य	मीन, मेष, वृष	मिथुन, कर्क, सिंह	कन्या, तुला, वृश्चिक	धनु, मकर, कुम्भ
गृहारम्भे सूर्य	सिंह, कन्या, तुला,	वृश्चि., धनु, मकर	कुम्भ, मीन, मेष	वृष, मिथुन कर्क
जलाशयारम्भे सूर्य	मकर, कुम्भ, मीन	मेष, वृष, मिथुन	कर्क, सिंह, कन्या	तुला, वृश्चि., धनु
खातदिशा (खुदाई) | शुभ→	आग्नेये (पूर्व-दक्षिण)	ईशाने (उत्तर-पूर्व)	वायव्ये (उत्तर-पश्चिम)	नैऋत्ये (दक्षिण-पश्चिम)

सूर्यभात् कूप-नल (जल चक्र)

नक्षत्र	३	३	३	३	३	३	३	३	३
दिशा	मध्य	पूर्व	आग्नेय	दक्षिण	नैऋत्य	पश्चिम	वायव्य	उत्तर	ईशान
प्राप्यजल	स्वादु	खण्डित	स्वादु	अभाव	स्वादु	क्षार	मिश्रित	मधुर	क्षार

(21) नूतन गृह प्रवेश मुहूर्त

ग्राह्य मास—निरयण उत्तरायणकाल अर्थात् वैशाख, ज्येष्ठ, आषाढ़ (लगभग 15 जुलाई तक की कालावधि), माघ तथा फाल्गुन मास। कार्तिक एवं मार्गशीर्ष मास मध्यम माने गए हैं।

ग्राह्य वार—चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र एवं शनिवार।

ग्राह्य शुभ तिथियां—रिक्ता तिथियां (४, ९, १४) तथा अमावस को छोड़कर शेष प्राय: सभी तिथियां।

प्रकारान्तरेण, दिग्द्वार के अनुसार अनुरूप गृह-प्रवेशोपयोगी तिथियां–

द्वार दिशा	पूर्व	पश्चिम	उत्तर	दक्षिण
शुभ तिथियां	५,१०,१५	२,७,१२	३,८,१३	१,६,११

ग्राह्य नक्षत्र–अश्वि., रोहि., मृग., पुन., पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वा., अनु., उ.फा., उ.षा., उ.भा., श्रव., धनि., शत., रेवती।

'गृह प्रवेश में कलश वास्तु चक्र'

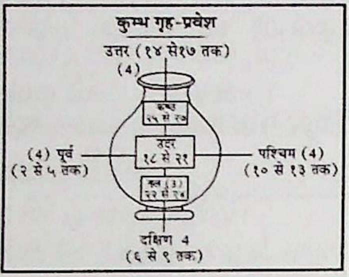

नवगृह प्रवेश सम्बन्धी मुहूर्त्तों में और अधिक सूक्ष्मता प्राप्ति के लिए कलश-वास्तु चक्र का प्रयोग किया जाता है। किसी काल्पनिक कलश को आठ विभागों में बाँट लें। मुहूर्त्त काल में सूर्याधीष्ठित नक्षत्र से चन्द्र नक्षत्र (मुहूर्त वाला नक्षत्र) तक यथाक्रम नक्षत्र रखें। घट चित्र रेखांकित है। सूर्य नक्षत्र से चंद्र नक्षत्र 1 (समान) होने पर मुख पर स्थापित करें। सूर्य के नक्षत्र से आगे गिनने पर दो से पाँच अर्थात् आगे के चार नक्षत्र पूर्व दिशा में रखें, इसी प्रकार 6 से 9 तक चार नक्षत्र कलश के दक्षिण में रखें, फिर दस से तेरह तक चार नक्षत्र पश्चिम में रखें, फिर 14 से 17 तक चार नक्षत्र उत्तर में रखें तथा 18 से 21 तक चार नक्षत्र कलश के उदर में रखें, फिर 22 से 24 तक तीन नक्षत्र कलश के तल में रखें तथा शेष 25 से 27 तीन नक्षत्र कलश के कण्ठ में रखें। इसके बाद गृह प्रवेश का फल इस प्रकार जानें–

गृह-प्रवेश में नक्षत्र फल	फल
1. यदि मुख का नक्षत्र ही प्रवेशनक्षत्र	*अग्नि से भय होता है।*
2. पूर्व के चार नक्षत्रों में भवन	*उजाड़ होने का भय होता है।*
3. दक्षिण के चार नक्षत्रों में	*धन लाभ होता है।*
4. पश्चिम के चार नक्षत्रों में	*धन-वैभव प्राप्त होता है।*
5. उत्तर के चार नक्षत्रों में	*कलह-क्लेश रहता है।*
6. उदर के चार नक्षत्रों में	*विनाश का भय रहता है।*
7. तल के तीन नक्षत्रों में	*स्थिरता (स्थायी वास)।*
8. कण्ठ के तीन नक्षत्रों में	*गृहस्वामी की चिरायु हो।*

***शुभ लग्न**–विशेष रूप से गृहस्वामी के जन्म-लग्न या जन्मराशि से अष्टम लग्न न हो, जन्मराशि/जन्मलग्न से उपचय 3, 6, 10 या 11वें तथा स्थिर लग्न में गृह-प्रवेश करना चाहिए। ग्राह्य लग्न में लग्न से 1, 2, 5, 7, 9, 10 भावों में शुभ ग्रह और 3, 6, 11वें भावों में पाप-ग्रह हों तथा चतुर्थ व अष्टम भाव शुद्ध होने पर गृह-प्रवेश करना शुभ होता है।*

वामस्थ रवि विचार–गृह प्रवेश के समय ग्राह्य लग्न में वामस्थ सूर्य शुभ माना गया है। गृह प्रवेश के लग्न से 8वें स्थान में जो राशि हो, तो उससे 5 स्थान आगे–8, 9, 10, 11, 12वें भाव में यदि सूर्य हो, तो पूर्वदिशा की ओर गृहप्रवेश में रवि वाम होता है और दक्षिणाभिमुखः वाले द्वारगृह में प्रवेश लग्न के समय यदि सूर्य 5, 6, 7, 8, 9वें भाव में सूर्य हो, तो दक्षिण दिशा वाले घर में प्रवेश के लिए सूर्य वाम होगा। इसी प्रकार गृह प्रवेश लग्न से दूसरे स्थान से आगे 5 स्थान 2, 3, 4, 5, 6वें भाव में सूर्य होने से पश्चिम दिशा वाले घर में प्रवेश के लिए सूर्य वाम होगा तथा प्रवेश लग्न से 11वें स्थान से आगे 5 स्थानों 11, 12, 1, 2, 3 भाव में सूर्य हो, तो उत्तर दिशा वाले घर में प्रवेश के लिए सूर्य वाम होगा।

वामस्थ रवि ज्ञानार्थ चक्र

द्वार दिशा	गृह-प्रवेश लग्न से	आगे 5 स्थान तक वामस्थ सूर्य
पूर्वाभिमुख गृह	अष्टम स्थान से	सूर्य 8, 9, 10, 11, 12वें भाव
दक्षिणाभिमुख गृह	पंचम स्थान से	सूर्य 5, 6, 7, 8, 9वें भाव
पश्चिमाभिमुख गृह	दूसरे स्थान (भाव) से	सूर्य 2, 3, 4, 5, 6ठे भाव
उत्तराभिमुख गृह	11वें स्थान (भाव) से	सूर्य 11, 12, 1, 2, 3 रे भाव

स्पष्टीकरण–जैसे आपके नवीन गृह का द्वार मुख पूर्व की ओर है तथा गृह-प्रवेश ग्राह्य लग्न सिंह है, तो सूर्य की मीन, मेष, वृष, मिथुन व कर्क राशि संचारकालीन (चैत्र, वैशाख, ज्येष्ठ, आषाढ़ तथा श्रावण) सूर्य वामस्थ होगा। अतः चैत्र, श्रावण को छोड़कर वै., ज्ये., आषा. में गृहप्रवेश करेंगे, तो अधिक शुभकारक होगा। इसी प्रकार अन्य निर्धारित मुहूर्त्त-लग्नों एवं द्वारमुख की दिशा के अनुसार वामस्थ रवि का विचार करें।

(22) पुरातन (पुराने) गृह–प्रवेश मुहूर्त्त

अस्थायी रूप से किराये (ट्रांस्फर आदि के कारण) आदि के मकान में प्रवेश अथवा पुराने गृह में प्रवेश के मुहूर्त्त के लिए ऊपर दिए गए शुभ मासों के अतिरिक्त **श्रावण मास** भी ग्राह्य होगा। पुरातन गृह प्रवेश मुहूर्त्तों में **रिक्ता तिथि, गुरु-शुक्रास्त काल, अधिक-क्षय मास भी ग्राह्य होते हैं।** परन्तु मासान्त, भद्रा, व्यतीपात, वैधृति, त्रयोदश-दिनात्मक पक्ष, तिथि-क्षय, निर्बल चन्द्र, युति, वेधादि का विचार अवश्य करना चाहिए। यद्यपि नवग्रह शान्ति, स्वास्तीवाचन, कलश-पूजनादि आपेक्षित हैं, परन्तु वास्तु-शान्ति, कलशचक्र शुद्धि, स्थापनादि आवश्यक नहीं। ग्राह्य वार, तिथि, नक्षत्र नूतन गृह प्रवेश की भान्ति ही रहेंगे।

(23) विपणि मुहूर्त्त

(अर्थात् दुकान, व्यवसाय, फैक्टरी शुरु करने के मुहूर्त्त)

शुभ एवं ग्राह्य मास–वैशाख, ज्येष्ठ, आषाढ़, श्रावण, भाद्रपद, आश्विन, कार्तिक, मार्गशीर्ष, माघ व फाल्गुन। ***ग्राह्य तिथियाँ***–रिक्ता तिथियाँ (४, ९, १४), कृष्ण १३ तथा अमावस तिथियाँ छोड़कर शेष तिथियाँ। ***ग्राह्य नक्षत्र***–अश्वि., रोहि., मृग., पुन, मूल, पुष्य, उत्तरा-तीनों, हस्त, चित्रा, अनु., श्रव., अभिजित् और रेवती। ***शुभ वार***–रवि, चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र एवं शनिवार। ***शुभ लग्न***–कुम्भ लग्न त्याज्य है। शेष राशि लग्नों में भी चन्द्र, बुध-शुक्र केन्द्र स्थानों में, अष्टम तथा द्वादश भाव शुद्ध हों तथा 2, 10, 11वें भावों में शुभ ग्रह हों। **नोट**–क्रूर ग्रह की युति, वेध, गुरु-शुक्रस्तादि का विचार तो करना ही चाहिए।

(24) बीज बोने (हल चलाने) का मुहूर्त्त

ग्राह्य तिथियाँ–१ (कृ.) २, ३, ५, ७, १०, ११, १२, १३ (शुक्ल) तथा पूर्णिमा। ***ग्राह्य वार***–रवि, चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र एवं शनिवार ***ग्राह्य नक्षत्र***–अश्वि., रोहि., मृग., पुन, पुष्य, मघा, उत्तरा-तीनों, हस्त, चित्रा, स्वा., विशा., अनु., मूल, धनि. तथा रेवती।

(25) अनाज संग्रह (भरने) का मुहूर्त्त

ग्राह्य तिथियाँ–२, ३, ५, ७, ८, ११, १२, १३ (शुक्ल), १५। ***ग्राह्य वार***–चन्द्र,

बुध, गुरु व शुक्रवार। ***ग्राह्य नक्षत्र***—अश्वि., रोहि., मृग, पुन., पुष्य, उत्तरा-तीनों, हस्त, चित्रा, स्वा., अनु., मूल, श्रव., धनि., शत. तथा रेवती।

(26) औषधि निर्माण एवं सेवन मुहूर्त्त

ग्राह्य तिथि—१ (कृ.) २, ३, ५, ७, १०, ११, १२, १३ (शु.)। ***ग्राह्य वार***—रवि, चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र। ***ग्राह्य नक्षत्र***—यहाँ जन्म नक्षत्र त्याज्य रहेगा। लघु संज्ञक (अश्वि., पुष्य, हस्त, अभि.), मृदुसंज्ञक (मृग., चित्रा, रेवती), चरसंज्ञक (पुन., स्वा., श्रव., धनि., शत.) तथा मूल नक्षत्र (ज्येष्ठा, मूल) ***लग्न शुद्धि***—द्विस्वभाव राशिलग्न (३, ६, ९, १२) तथा लग्न, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव शुद्ध हों अर्थात् इन भावों पर क्रूर की स्थिति व दृष्टि वर्ज्य है।

(27) सर्ववस्तु क्रय–विक्रय मुहूर्त्त

खरीदने के नक्षत्र में बेचना शुभ नहीं है। विक्रय (बेचने) के नक्षत्र में खरीदना अच्छा नहीं होता।

वस्तु खरीदने के नक्षत्र—रेव., शत., अश्वि, स्वा., श्रव. और चित्रा नक्षत्रों में शुभ है।

वस्तु बेचने के नक्षत्र—तीनों पूर्वा, विशाखा, कृतिका, आश्लेषा और भरणी नक्षत्र।

लग्न शुद्धि, तिथ्यादि के लिए विपणि मुहूर्त्त देखें।

(28) आप्रेशन कराने का मूहूर्त्त

ग्राह्य तिथि—२, ३, ५, ६, ७, १०, १२ (१३-शुक्ल पक्ष की)।

ग्राह्य वार—रवि, मंगल, गुरु और शनिवार।

ग्राह्य नक्षत्र—अश्वि., रोहि., मृग., हस्त, चित्रा, स्वा., अनु., अभि., श्रव.।

(29) मन्त्र सिद्ध करने का मुहूर्त्त

ग्राह्य तिथि—२, ३, ५, ७, १०, ११, १३ (शु.) तथा १५ ***ग्राह्य वार***—रवि, चन्द्र, बुध, गुरु एवं शुक्रवार ***ग्राह्य नक्षत्र***—अश्वि., मृग., उ.फा., हस्त, श्रव. तथा विशाखा। इसके अतिरिक्त रविपुष्य योगों, निरयण एवं सायन संक्रान्ति संक्रमण-काल, दीपावली आदि योगों में मन्त्र सिद्धि सम्बन्धी कार्य किए जाते हैं।

(30) भूमि–खरीदने का मुहूर्त्त

ग्राह्य मास—वैशाख, ज्येष्ठ, आषाढ़ (मिथुनार्क तक-15 जुला.), मार्गशीर्ष, माघ और फाल्गुन मास भूमि क्रय के लिए उत्तम कहे गए हैं। ***ग्राह्य तिथियाँ***—१ (कृष्ण पक्षे), कृष्ण तथा शुक्लपक्ष की २,५,६,१०,११ एवं पूर्णिमा।। ***ग्राह्य नक्षत्र***—मृग., पुन., आश्ले., मघा, विशा, अनु., तीनों पूर्वा, मूल, स्वा., शत और रेवती।। ***शुभ वार***—मंगल, गुरु एवं शुक्रवार।

(31) मुकद्दमा दायर करने का मुहूर्त्त

ग्राह्य तिथि—३, ५, ८, १०, १३ (शुक्लपक्ष) तथा पूर्णिमा ***ग्राह्य वार***—रवि, मंगल, बुध एवं गुरुवार। ***ग्राह्य नक्षत्र***—भरणी, आर्द्रा, आश्ले., मघा, पूर्वा-तीनों, ज्येष्ठा तथा मूल। ***ग्राह्य लग्न***—३, ६, ७, ८, ११ राशि लग्न। जब शुभ ग्रह लग्न में हो, पापग्रह ३, ६, ११वें हों तथा अष्टम भाव शुद्ध हो।

विशेष—गोचरानुसार याचिकाकर्त्ता का चंद्रमा एवं मंगल भी बलान्वित होने चाहिएं।

(32) पशु खरीदने का मुहूर्त्त

ग्राह्य तिथि—१ (कृष्णपक्ष की), २, ३, ५, ६, ७, ८, १०, ११, १२ (कृष्ण व शुक्ल पक्ष की), १३ (शुक्ल पक्ष की), १५ ***ग्राह्य वार***—रवि, चन्द्र, बुध, गुरु एवं शनिवार।

ग्राह्य नक्षत्र—अश्वि., पुन, पुष्य, हस्त, विशा., ज्ये., धनि., शत और रेवती।

(33) ऋण–दान (कर्ज़ देने) का मुहूर्त्त

ब्याज अर्जित करने के उद्देश्य से धन का उधार देना निम्न मुहूर्त्त में हितकर है-

ग्राह्य तिथि—१ (कृष्ण पक्ष की), २, ३, ६, ७, ८, १०, ११, १२ (कृष्ण एवं शुक्ल पक्ष की), १३ (शुक्ल) तथा १५ ***ग्राह्य वार***—रवि, चन्द्र, मंग., गुरु, शुक्र एवं शनिवार। ***ग्राह्य नक्षत्र***—अश्वि., मृग., पुन, पुष्य, चित्रा, स्वा., विशा, श्रव., धनि., शत और रेवती। ***लग्न शुद्धि***—१, ४, ७, १० राशि लग्न।। पंचम-नवम भाव में शुभग्रह तथा अष्टम भाव शुद्ध होना चाहिए। **विशेष**—बुधवार को अपना धन किसी को नहीं देना चाहिए। अर्थात् बुधवार को दिया हुआ धन वापिस नहीं मिलता। भद्रा, व्यतीपात, महापात तथा अमावस में दिया गया धन वापिस प्राप्त नहीं होता।

(34) ऋण–ग्रहण (कर्ज़ लेने) मुहूर्त्त

ग्राह्य तिथि—१ (कृष्ण पक्ष की), २, ३, ५, ६, ७, ८, १०, ११, १२ (कृष्ण व शुक्लपक्ष की), १३ (शुक्ल), १५ ***ग्राह्य वार***—सोम, बुध, गुरु, शुक्र एवं शनिवार। ***ग्राह्य नक्षत्र***—अश्वि., रोहि., मृग. पुन, पुष्य, उत्तरा-तीनों, हस्त, चित्रा, अनु., श्रव., धनि, शत तथा रेवती।। तथापि मृग., चित्रा, अनु. तथा रेवती विशेष रूप से शुभ हैं। ***शुभ लग्न***—१, ४, ७, १० राशि लग्न श्रेष्ठ है। शुभ ग्रह त्रिकोण (5, 9वें) तथा अष्टम भाव शुद्ध हो। **विशेष**—मंगलवार को कर्ज़ के रूप में किसी से धन नहीं लेना चाहिए। संक्रान्ति वाले दिन, वृद्धि योग, हस्त नक्षत्र और रविवार में ऋण (कर्ज़) नहीं लेना चाहिए।

अपि च, "**ऋणच्छेदं कुजे कुर्यात् संचयं सोमनन्दे**"-मंगलवार को ऋणों को चुका देना तथा बुधवार को धन संचय करना चाहिए।

(35) चुनाव में खड़े होने का मुहूर्त्त

शुभ तिथियाँ—(१ कृ.), २, ३, ५, ९, १०, १२ एवं १५ शुक्ल। ***शुभ वार***—सोम, बुध, गुरु एवं शुक्रवार। ***शुभ नक्षत्र***—अश्वि., रोहि., पुर्न, पुष्य, तीनों उत्तरा, हस्त, अनु., श्रव., धनि., रेवती। ***शुभ लग्न***—१, ४, ७, १०। **विशेष**—केन्द्र-त्रिकोण में शुभ ग्रह हों, ३, ६, ११वें पाप ग्रह हों। लग्न एवं लग्नेश पर शुभ ग्रह की दृष्टि हो। बुध, शुक्र, गुरु उदित हों। चन्द्र बली हो तथा प्रत्याशी की राशि मुहूर्त्त वाले दिन-छटे, आठवें एवं १२वें न हो। **संसद्** में शपथ ग्रहण के समय **स्थिर लग्न** प्रशस्त होता है।

(36) नवीन वस्त्र धारण करने का मुहूर्त्त

विवाह, यज्ञ, सम्वत् या वर्षारम्भ में, विशेषोत्सव, त्यौहार, प्रेम के उपहार-स्वरूप, जन्म-नक्षत्र के दिन, ईश्वर भक्ति में अथवा ब्राह्मण की आज्ञा मिलने पर बिना पंचांग-शुद्धि के भी नवीन वस्त्र धारण किए जा सकते हैं। यद्यपि व्यक्ति अपना चन्द्रबल देखकर और शुभ लग्न में नूतन वस्त्रों को धारण करें- ***शुभ तिथियाँ***—१ (कृष्ण), २, ३, ५, ७, १०, ११, १३ (शु.) व पूर्णिमा। ***शुभ वार***—रवि, बुध, गुरु व शुक्र ***शुभ नक्षत्र***—अश्वि., रोहि., पुन, पुष्य, उत्तरा (तीनों), हस्त, चित्रा, स्वा. विशा., अनु. धनि. व रेवती।

प्रकारन्तरेण, दिग्द्वार के अनुसार अनुरूप गृह-प्रवेशोपयोगी तिथियां–

द्वार दिशा	पूर्व	पश्चिम	उत्तर	दक्षिण
शुभ तिथियां	५,१०,१५	२,७,१२	३,८,१३	१,६,११

ग्राह्य नक्षत्र—अश्वि., रोहि., मृग., पुन., पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वा., अनु., उ.फा., उ.षा., उ.भा., श्रव., धनि., शत., रेवती।

'गृह प्रवेश में कलश वास्तु चक्र'

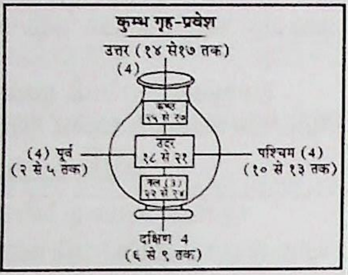

नवगृह प्रवेश सम्बन्धी मुहूर्त्तों में और अधिक सूक्ष्मता प्राप्ति के लिए कलश-वास्तु चक्र का प्रयोग किया जाता है। किसी काल्पनिक कलश को आठ विभागों में बाँट लें। मुहूर्त्त काल में सूर्याधीष्ठित नक्षत्र से चन्द्र नक्षत्र (मुहूर्त्त वाला नक्षत्र) तक यथाक्रम नक्षत्र रखें। घट चित्र रेखांकित है। सूर्य नक्षत्र से चंद्र नक्षत्र 1 (समान) होने पर मुख पर स्थापित करें। सूर्य के नक्षत्र से आगे गिनने पर दो से पाँच अर्थात् आगे के चार

नक्षत्र पूर्व दिशा में रखें, इसी प्रकार 6 से 9 तक चार नक्षत्र कलश के दक्षिण में रखें, फिर दस से तेरह तक चार नक्षत्र पश्चिम में रखें, फिर 14 से 17 तक चार नक्षत्र उत्तर में रखें तथा 18 से 21 तक चार नक्षत्र कलश के उदर में रखें, फिर 22 से 24 तक तीन नक्षत्र कलश के तल में रखें तथा शेष 25 से 27 तीन नक्षत्र कलश के कण्ठ में रखें। इसके बाद गृह प्रवेश का फल इस प्रकार जानें–

गृह-प्रवेश में नक्षत्र फल	*फल*
1. यदि मुख का नक्षत्र ही प्रवेशनक्षत्र	*अग्नि से भय होता है।*
2. पूर्व के चार नक्षत्रों में भवन	*उजाड़ होने का भय होता है।*
3. दक्षिण के चार नक्षत्रों में	*धन लाभ होता है।*
4. पश्चिम के चार नक्षत्रों में	*धन-वैभव प्राप्त होता है।*
5. उत्तर के चार नक्षत्रों में	*कलह-क्लेश रहता है।*
6. उदर के चार नक्षत्रों में	*विनाश का भय रहता है।*
7. तल के तीन नक्षत्रों में	*स्थिरता (स्थायी वास)।*
8. कण्ठ के तीन नक्षत्रों में	*गृहस्वामी की चिरायु हो।*

शुभ लग्न—विशेष रूप से गृहस्वामी के जन्म-लग्न या जन्मराशि से अष्टम लग्न न हो, जन्मराशि/जन्मलग्न से उपचय 3, 6, 10 या 11वें तथा स्थिर लग्न में गृह-प्रवेश करना चाहिए। ग्राह्य लग्न में लग्न से 1, 2, 5, 7, 9, 10 भावों में शुभ ग्रह और 3, 6, 11वें भावों में पाप-ग्रह हों तथा चतुर्थ व अष्टम भाव शुद्ध होने पर गृह-प्रवेश करना शुभ होता है।

वामस्थ रवि विचार—गृह प्रवेश के समय ग्राह्य लग्न में वामस्थ सूर्य शुभ माना गया है। गृह प्रवेश के लग्न से 8वें स्थान में जो राशि हो, तो उससे 5 स्थान आगे–8, 9, 10, 11, 12वें भाव में यदि सूर्य हो, तो पूर्वदिशा की ओर गृहप्रवेश में रवि वाम होता है और दक्षिणाभिमुखः वाले द्वारगृह में प्रवेश लग्न के समय यदि सूर्य 5, 6, 7, 8, 9वें भाव में सूर्य हो, तो दक्षिण दिशा वाले घर में प्रवेश के लिए सूर्य वाम होगा। इसी प्रकार गृह प्रवेश लग्न से दूसरे स्थान से आगे 5 स्थान 2, 3, 4, 5, 6वें भाव में सूर्य होने से पश्चिम दिशा वाले घर में प्रवेश के लिए सूर्य वाम होगा तथा प्रवेश लग्न से 11वें स्थान से आगे 5 स्थानों 11, 12, 1, 2, 3 भाव में सूर्य हो, तो उत्तर दिशा वाले घर में प्रवेश के लिए सूर्य वाम होगा है।

वामस्थ रवि ज्ञानार्थ चक्र

द्वार दिशा	गृह-प्रवेश लग्न से	आगे 5 स्थान तक वामस्थ सूर्य
पूर्वाभिमुख गृह	अष्टम स्थान से	सूर्य 8, 9, 10, 11, 12वें भाव
दक्षिणाभिमुख गृह	पंचम स्थान से	सूर्य 5, 6, 7, 8, 9वें भाव
पश्चिमाभिमुख गृह	दूसरे स्थान (भाव) से	सूर्य 2, 3, 4, 5, 6ठे भाव
उत्तराभिमुख गृह	11वें स्थान (भाव) से	सूर्य 11, 12, 1, 2, 3 रे भाव

स्पष्टीकरण—जैसे आपके नवीन गृह का द्वार मुख पूर्व की ओर है तथा गृह-प्रवेश ग्राह्य लग्न सिंह है, तो सूर्य की मीन, मेष, वृष, मिथुन व कर्क राशि संचारकालीन (चैत्र, वैशाख, ज्येष्ठ, आषाढ़ तथा श्रावण) सूर्य वामस्थ होगा। अतः चैत्र, श्रावण को छोड़कर वै., ज्ये., आषा. में गृहप्रवेश करेंगे, तो अधिक शुभकारक होगा। इसी प्रकार अन्य निर्धारित मुहूर्त्त-लग्नों एवं द्वारमुख की दिशा के अनुसार वामस्थ रवि का विचार करें।

(22) पुरातन (पुराने) गृह–प्रवेश मुहूर्त्त

अस्थायी रूप से किराये (ट्रांस्फर आदि के कारण) आदि के मकान में प्रवेश अथवा पुराने गृह में प्रवेश के मुहूर्त्त के लिए ऊपर दिए गए शुभ मासों के अतिरिक्त **श्रावण मास** भी ग्राह्य होगा। पुरातन गृह प्रवेश मुहूर्त्तों में **रिक्ता तिथि, गुरु-शुक्रास्त काल, अधिक-क्षय मास भी ग्राह्य होते हैं।** परन्तु मासान्त, भद्रा, व्यतीपात, वैधृति, त्रयोदश-दिनात्मक पक्ष, तिथि-क्षय, निर्बल चन्द्र, युति, वेधादि का विचार अवश्य करना चाहिए। यद्यपि नवग्रह शान्ति, स्वास्तीवाचन, कलश-पूजनादि आपेक्षित हैं, परन्तु वास्तु-शान्ति, कलशचक्र शुद्धि, स्थापनादि आवश्यक नहीं। ग्राह्य वार, तिथि, नक्षत्र नूतन गृह प्रवेश की भान्ति ही रहेंगे।

(23) विपणि मुहूर्त्त

(अर्थात् दुकान, व्यवसाय, फैक्टरी शुरु करने के मुहूर्त्त)

शुभ एवं ग्राह्य मास—वैशाख, ज्येष्ठ, आषाढ़, श्रावण, भाद्रपद, आश्विन, कार्तिक, मार्गशीर्ष, माघ व फाल्गुन। ***ग्राह्य तिथियाँ***—रिक्ता तिथियाँ (४, ९, १४), कृष्ण १३ तथा अमावस तिथियाँ छोड़कर शेष तिथियाँ। ***ग्राह्य नक्षत्र***—अश्वि., रोहि., मृग., पुन, मूल, पुष्य, उत्तरा–तीनों, हस्त, चित्रा, अनु., श्रव., अभिजित् और रेवती। ***शुभ वार***—रवि, चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र एवं शनिवार। ***शुभ लग्न***—कुम्भ लग्न त्याज्य है। शेष राशि लग्नों में भी चन्द्र, बुध-शुक्र केन्द्र स्थानों में, अष्टम तथा द्वादश भाव शुद्ध हों तथा 2, 10, 11वें भावों में शुभ ग्रह हों। **नोट**–क्रूर ग्रह की युति, वेध, गुरु-शुक्रस्तादि का विचार तो करना ही चाहिए।

(24) बीज बोने (हल चलाने) का मुहूर्त्त

ग्राह्य तिथियाँ—१ (कृ.) २, ३, ५, ७, १०, ११, १२, १३ (शुक्ल) तथा पूर्णिमा। ***ग्राह्य वार***—रवि, चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र एवं शनिवार ***ग्राह्य नक्षत्र***—अश्वि., रोहि., मृग., पुन, पुष्य, मघा, उत्तरा–तीनों, हस्त, चित्रा, स्वा., विशा., अनु., मूल, धनि. तथा रेवती।

(25) अनाज संग्रह (भरने) का मुहूर्त्त

ग्राह्य तिथियाँ—२, ३, ५, ७, ८, ११, १२, १३ (शुक्ल), १५। ***ग्राह्य वार***—चन्द्र,

बुध, गुरु व शुक्रवार। *ग्राह्य नक्षत्र*—अश्वि., रोहि., मृग, पुन., पुष्य, उत्तरा-तीनों, हस्त, चित्रा, स्वा., अनु., मूल, श्रव., धनि., शत. तथा रेवती।

(26) औषधि निर्माण एवं सेवन मुहूर्त्त

ग्राह्य तिथि—१ (कृ.) २, ३, ५, ७, १०, ११, १२, १३ (शु.)। ***ग्राह्य वार***—रवि, चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र। ***ग्राह्य नक्षत्र***—यहाँ जन्म नक्षत्र त्याज्य रहेगा। लघु संज्ञक (अश्वि., पुष्य, हस्त, अभि.), मृदुसंज्ञक (मृग., चित्रा, रेवती), चरसंज्ञक (पुन., स्वा., श्रव., धनि., शत.) तथा मूल नक्षत्र (ज्येष्ठा, मूल) ***लग्न शुद्धि***—द्विस्वभाव राशिलग्न (३, ६, ९, १२) तथा लग्न, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव शुद्ध हों अर्थात् इन भावों पर क्रूर की स्थिति व दृष्टि वर्ज्य है।

(27) सर्ववस्तु क्रय–विक्रय मुहूर्त्त

खरीदने के नक्षत्र में बेचना शुभ नहीं है। विक्रय (बेचने) के नक्षत्र में खरीदना अच्छा नहीं होता। ***वस्तु खरीदने के नक्षत्र***—रेव., शत., अश्वि, स्वा., श्रव. और चित्रा नक्षत्रों में शुभ है। ***वस्तु बेचने के नक्षत्र***—तीनों पूर्वा, विशाखा, कृतिका, आश्लेषा और भरणी नक्षत्र। लग्न शुद्धि, तिथ्यादि के लिए विपणि मुहूर्त्त देखें।

(28) आप्रेशन कराने का मूहूर्त्त

ग्राह्य तिथि—२, ३, ५, ६, ७, १०, १२ (१३-शुक्ल पक्ष की)।

ग्राह्य वार—रवि, मंगल, गुरु और शनिवार।

ग्राह्य नक्षत्र—अश्वि., रोहि., मृग., हस्त, चित्रा, स्वा., अनु., अभि., श्रव.।

(29) मन्त्र सिद्ध करने का मुहूर्त्त

ग्राह्य तिथि—२, ३, ५, ७, १०, ११, १३ (शु.) तथा १५ ***ग्राह्य वार***—रवि, चन्द्र, बुध, गुरु एवं शुक्रवार ***ग्राह्य नक्षत्र***—अश्वि., मृग., उ.फा., हस्त, श्रव. तथा विशाखा। इसके अतिरिक्त रविपुष्य योगों, निरयण एवं सायन संक्रान्ति संक्रमण-काल, दीपावली आदि योगों में मन्त्र सिद्धि सम्बन्धी कार्य किए जाते हैं।

(30) भूमि–खरीदने का मुहूर्त्त

ग्राह्य मास—वैशाख, ज्येष्ठ, आषाढ़ (मिथुनार्क तक-15 जुला.), मार्गशीर्ष, माघ और फाल्गुन मास भूमि क्रय के लिए उत्तम कहे गए हैं। ***ग्राह्य तिथियाँ***—१ (कृष्ण पक्षे), कृष्ण तथा शुक्लपक्ष की २,५,६,१०,११ एवं पूर्णिमा।। ***ग्राह्य नक्षत्र***—मृग., पुन., आश्ले., मघा, विशा, अनु., तीनों पूर्वा, मूल, स्वा., शत और रेवती।। ***शुभ वार***—मंगल, गुरु एवं शुक्रवार।

(31) मुकद्दमा दायर करने का मुहूर्त्त

ग्राह्य तिथि—३, ५, ८, १०, १३ (शुक्लपक्ष) तथा पूर्णिमा ***ग्राह्य वार***—रवि, मंगल, बुध एवं गुरुवार। ***ग्राह्य नक्षत्र***—भरणी, आर्द्रा, आश्ले., मघा, पूर्वा-तीनों, ज्येष्ठा तथा मूल। ***ग्राह्य लग्न***—३, ६, ७, ८, ११ राशि लग्न। जब शुभ ग्रह लग्न में हो, पापग्रह ३, ६, ११वें हों तथा अष्टम भाव शुद्ध हो।

विशेष—गोचरानुसार याचिकाकर्त्ता का चंद्रमा एवं मंगल भी बलान्वित होने चाहिएं।

(32) पशु खरीदने का मुहूर्त्त

ग्राह्य तिथि—१ (कृष्णपक्ष की), २, ३, ५, ६, ७, ८, १०, ११, १२ (कृष्ण व शुक्ल पक्ष की), १३ (शुक्ल पक्ष की), १५ ***ग्राह्य वार***—रवि, चन्द्र, बुध, गुरु एवं शनिवार।

ग्राह्य नक्षत्र—अश्वि., पुन, पुष्य, हस्त, विशा., ज्ये., धनि., शत और रेवती।

(33) ऋण–दान (कर्ज़ देने) का मुहूर्त्त

ब्याज अर्जित करने के उद्देश्य से धन का उधार देना निम्न मुहूर्त्त में हितकर है–

ग्राह्य तिथि—१ (कृष्ण पक्ष की), २, ३, ६, ७, ८, १०, ११, १२ (कृष्ण एवं शुक्ल पक्ष की), १३ (शुक्ल) तथा १५ ***ग्राह्य वार***—रवि, चन्द्र, मंग., गुरु, शुक्र एवं शनिवार। ***ग्राह्य नक्षत्र***—अश्वि., मृग., पुन, पुष्य, चित्रा, स्वा., विशा, श्रव., धनि., शत और रेवती। ***लग्न शुद्धि***—१, ४, ७, १० राशि लग्न।। पंचम-नवम भाव में शुभग्रह तथा अष्टम भाव शुद्ध होना चाहिए। **विशेष**—बुधवार को अपना धन किसी को नहीं देना चाहिए। अर्थात् बुधवार को दिया हुआ धन वापिस नहीं मिलता। भद्रा, व्यतीपात, महापात तथा अमावस में दिया गया धन वापिस प्राप्त नहीं होता।

(34) ऋण–ग्रहण (कर्ज़ लेने) मुहूर्त्त

ग्राह्य तिथि—१ (कृष्ण पक्ष की), २, ३, ५, ६, ७, ८, १०, ११, १२ (कृष्ण व शुक्लपक्ष की), १३ (शुक्ल), १५ ***ग्राह्य वार***—सोम, बुध, गुरु, शुक्र एवं शनिवार। ***ग्राह्य नक्षत्र***—अश्वि., रोहि., मृग. पुन, पुष्य, उत्तरा-तीनों, हस्त, चित्रा, अनु., श्रव., धनि, शत तथा रेवती।। तथापि मृग., चित्रा, अनु. तथा रेवती विशेष रूप से शुभ हैं। ***शुभ लग्न***—१, ४, ७, १० राशि लग्न श्रेष्ठ है। शुभ ग्रह त्रिकोण (5, 9वें) तथा अष्टम भाव शुद्ध हो। **विशेष**—मंगलवार को कर्ज़ के रूप में किसी से धन नहीं लेना चाहिए। संक्रान्ति वाले दिन, वृद्धि योग, हस्त नक्षत्र और रविवार में ऋण (कर्ज़) नहीं लेना चाहिए।

अपि च, **''ऋणच्छेदं कुजे कुर्यात् संचयं सोमनन्दे''**–मंगलवार को ऋणों को चुका देना तथा बुधवार को धन संचय करना चाहिए।

(35) चुनाव में खड़े होने का मुहूर्त्त

शुभ तिथियाँ—(१ कृ.), २, ३, ५, ९, १०, १२ एवं १५ शुक्ल। ***शुभ वार***—सोम, बुध, गुरु एवं शुक्रवार। ***शुभ नक्षत्र***—अश्वि., रोहि., पुर्न, पुष्य, तीनों उत्तरा, हस्त, अनु., श्रव., धनि., रेवती। ***शुभ लग्न***—१, ४, ७, १०। **विशेष**—केन्द्र-त्रिकोण में शुभ ग्रह हों, ३, ६, ११वें पाप ग्रह हों। लग्न एवं लग्नेश पर शुभ ग्रह की दृष्टि हो। बुध, शुक्र, गुरु उदित हों। चन्द्र बली हो तथा प्रत्याशी की राशि मुहूर्त्त वाले दिन-छटे, आठवें एवं १२वें न हो। **संसद्** में शपथ ग्रहण के समय **स्थिर लग्न** प्रशस्त होता है।

(36) नवीन वस्त्र धारण करने का मुहूर्त्त

विवाह, यज्ञ, सम्वत् या वर्षारम्भ में, विशेषोत्सव, त्यौहार, प्रेम के उपहार-स्वरूप, जन्म-नक्षत्र के दिन, ईश्वर भक्ति में अथवा ब्राह्मण की आज्ञा मिलने पर बिना पंचांग-शुद्धि के भी नवीन वस्त्र धारण किए जा सकते हैं। यद्यपि व्यक्ति अपना चन्द्रबल देखकर और शुभ लग्न में नूतन वस्त्रों को धारण करें– ***शुभ तिथियाँ***—१ (कृष्ण), २, ३, ५, ७, १०, ११, १३ (शु.) व पूर्णिमा। ***शुभ वार***—रवि, बुध, गुरु व शुक्र ***शुभ नक्षत्र***—अश्वि., रोहि., पुन, पुष्य, उत्तरा (तीनों), हस्त, चित्रा, स्वा. विशा., अनु. धनि. व रेवती।

विवाह-मुहूर्त्त में लत्तादि दस दोष विचार

विवाह मुहूर्त्तों के साधन में लत्ता, पात, युति, वेध, जामित्र, पंचबाण, एकार्गल, उपग्रह, क्रान्तिसाम्य और दग्धातिथि-इन दश दोषों का विचार करके निर्णय लेना आवश्यक है। पंचांगदिवाकर या किसी अन्य पंचांग में भी इन दस दोषों का विचार करके ही विवाह मुहूर्त्त दिए जाते हैं। इन दस महादोषों में से वेध, मृत्युबाण तथा क्रान्तिसाम्य-ये तीन महादोष अपरिहार्य होने से विवाह में सर्वत्र सर्वथा वर्जित हैं-शेष सात दोषों में से चार से अल्प दोष रहने पर वे विवाह-मुहूर्त्त की लग्न-शुद्धि से नष्ट हो जाते हैं। विवाह मुहूर्त्त में उपरोक्त दस दोषों में से क्रमशः जो दोष वर्तमान रहता है, उसे वक्ररेखा (ऽ) से तथा जो दोष नहीं रहता, उसे खड़ी रेखा (।) से सूचित किया जाता है। जैसा कि पंचांगदिवाकर के विवाह मुहूर्त्तों में दस महादोषान्तर्गत शुद्धि-रेखा के स्तम्भ में आपको मिलेगा। ये रेखायें इस पंचांग या अन्य किसी भी पंचांग में यथाक्रम शुद्धतापूर्वक लगायी गयी हैं या नहीं, इसकी जाँच आप चाहें तो सरलता से कर सके तथा स्वयं विवाह-मुहूर्त्त शोधन में सुयोग्य बन जाएं। इसलिए प्रत्येक महादोष का विचार व चक्र दिया जा रहा है-

(1) लत्तादोष-चक्र

विवाह नक्षत्र → ग्रह	अश्वि.	रोहि	मृग.	मघा	उ.फा	हस्त	चित्रा	स्वाती	अनु	मूल	उ.षा.	श्रवण	धनि.	उ.भा.	रेव.
सूर्य	अनु	पू.षा.	उ.षा.	उ.भा.	अश्वि.	भर.	कृति.	रोहि	आर्द्रा	पुष्य	मघा	पू.फा.	उ.फा.	स्वा.	विशा.
मंग.	उ.भा.	भरणी	कृति.	पुष्य	मघा	पू.फा	उ.फा.	हस्त	स्वाती	अनु.	मूला	पू.षा.	उ.षा.	शत.	पू.भा.
बुध	पुर्न	मघा	पू.फा.	विशा.	ज्ये.	मूल	पू.षा.	उ.षा.	धनि.	पू.भा.	रेवती	अश्वि.	भर.	मृग.	आर्द्रा
गुरू	धनि.	उ.भा.	रेवती	मृग.	पुर्न.	पुष्य	आश्ले	मघा	उ.फा.	चित्रा	विशा.	अनु.	ज्ये.	उ.षा.	श्रव.
शुक्र	मृग.	पुष्य	अश्ले	चित्रा	विशा.	अनु.	ज्ये.	मूल	उ.षा.	धनि.	पू.भा.	उ.भा.	रेव.	कृति.	रोहि.
शनि	उ.षा.	शत	पू.भा.	कृति.	मृग.	आर्द्रा	पुर्न.	पुष्य	मघा	उ.फा.	चित्रा	स्वा.	विशा.	मूल	पू.षा.
राहु	पू.षा.	धनि.	शत.	भर.	रोह.	मृग.	आर्द्रा	पुर्न	अश्ले.	पू.फा.	हस्त	चित्रा	स्वा.	ज्ये.	मूल

***(i)* लत्तादोष**–ऊपर की प्रथम पंक्ति में लिखे गए विवाह-नक्षत्रों के नीचे जिस ग्रह का नक्षत्र आ जाए, तो उस ग्रह से सम्बन्धित लत्तादोष होगा। मान लीजिए आपने रोहिणी नक्षत्र के विवाह हेतु लत्तादोष देखना हो तो साथ दिए गए चक्र (तालिका) में सूर्य यदि पू.षा. में हो अथवा गुरु उ.भा. नक्षत्र में हो या राहु (या केतु) धनिष्ठा नक्षत्र में हों, तो उन्हीं ग्रहों का लत्तादोष माना जाएगा।

(2) पातदोष चक्र

विवाह नक्षत्र	अश्वि.	रोह.	मृग.	मघा	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वा.	अनु.	मूल	उ.षा.	श्रव.	धनि.	उ.भा.	रेव.
—सूर्य नक्षत्र—	रेव.	आर्द्रा	मृग	अश्वि	कृति	भर.	रोहि	कृति.	[illegible]	रोह.	भर.	अश्वि	रेव.	भर.	अश्वि.
	श्ले.	पुर्न	आर्द्रा	मृग	आर्द्रा	मृग.	श्ले.	पुष्य	आर्द्रा	श्ले.	पुर्न.	आर्द्रा	मृग	पू.फा.	मघा
	मघा	पू.फा.	मघा	पुष्य	पू.फा.	मघा	चित्रा	हस्त	पू.फा.	ज्ये.	विशा.	स्वा.	चित्र	उ.फा.	पू.फा.
	चित्रा	चित्रा	हस्त	हस्त	विशा	स्वा.	धनि	श्रव.	पू.पा.	मूल	अनु.	विशा.	स्वा.	विशा.	स्वा.
	अनु.	मूल	ज्ये.	ज्ये.	पू.भा.	शत.	शत.	धनि.	उ.षा.	धनि	उ.षा.	पू.षा.	मूल	मूल	ज्ये.
	श्रव.	शत.	धनि.	रेव.	उ.भा.	पू.भा.	अश्वि.	रेव	पू.भा.	उ.भा.	शत.	धनि.	श्रव.	शत.	धनि.

***(ii)* पातदोष**–विवाह नक्षत्रों के नीचे विवाह-काल में सूर्य निम्न नक्षत्रों पर हो, तो पातदोष होता है। **उदाहरण**–विवाह-नक्षत्र यदि श्रवण हो, तो सूर्य-अश्वि, आर्द्रा, स्वा., विशाखा, पू.षा. एवं धनि. आदि नक्षत्र में हो, तो पातदोष होगा। **विशेष**–हर्षण, वैधृति, साध्य, व्यतीपात, गण्ड और शूल योगों का अन्त जिस विवाह नक्षत्र में हो, वह भी पात-दूषित हो जाता है। विवाह नक्षत्र में शूल योग हो या उसका अन्त हो, तो '**भुजंग**' नामक पातदोष होता है, जोकि सर्वत्र त्याज्य माना जाता है। **नोट**–वैधृति-व्यतिपात की सम्पूर्ण घड़ियां, शूल-योग की प्रथम 5 घड़ियां, गण्ड की प्रथम 6 घड़ियां विशेषतः त्याज्य हैं। हर्षण, साध्य को पूज्य माना गया है।

(3) युति दोष–जिस नक्षत्र का विवाह निकाल रहे हों, यदि उसी नक्षत्र में कोई ग्रह हो तो उस ग्रह की युति का दोष माना जाता है। 'श्रीपति' अनुसार पापग्रहों की युति विशेषतया त्याज्य मानी जाती है। जबकि शुभ ग्रह की युति शुभ मानी जाती है। परन्तु चन्द्रमा यदि अपनी (स्व) राशि, उच्च या मित्रग्रह की राशि में हों, तो युति दोष नही होता, अपितु वर-वधू का कल्याण करने वाला होता है। यथा-चन्द्रमा वृष, मिथुन, सिंह, कन्या राशि में हो, तो क्रूर ग्रह की युति का परिहार माना जाता है।

(4) वेध दोष–पंचशलाका चक्र अनुसार विवाह नक्षत्र यदि किसी अन्य क्रूर आदि ग्रह से विद्ध हो जाएं, तो उस नक्षत्र का विवाह सर्वथा त्याज्य माना जाता है। वेध नक्षत्र ज्ञान के लिए पंचशलाका एवं सप्तशलाका चक्रों का आश्रय लिया जाता है। वधू-प्रवेश, दान, वर-कन्या का वरण एवं विवाहादि शुभ कार्यों में

(4) वेध दोष चक्र

अश्वि	रोहि.	मृग.	मघा	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वा.	अनु.	मूल	उ.षा.	श्रव.	धनि.	उ.भा.	रेव.
पू.फा.	अभि.	उ.षा.	श्रव.	रेव.	उ.भा.	पू.भा.	शत.	भर.	पुर्न	मृग.	मघा	आश्ले	हस्त	उ.फा.

माना जाएगा।

'पंचशलाका' चक्र का तथा अन्य मंगल कार्यों में सप्तशलाका चक्र के द्वारा विचार करना चाहिए। विवाह पटल अनुसार सूर्यवेध से वैधव्य, भौमवेध से पुत्रशोक बुधवेध से वन्ध्या योग, गुरुवेध से प्रव्रज्या, शुक्रवेध से केवल कन्या सन्तति तथा शनि, राहु-केतु वेध से दारिद्रय योग होता है।

ज्योतिर्निबन्धानुसार सौम्य ग्रह से विद्ध नक्षत्र का चरण ही त्याज्य होता है, परन्तु क्रूर ग्रह से कोई भी चरण विद्ध होने पर पूर्ण नक्षत्र त्याज्य माना जाता है। यथा-बुध, गुरु, शुक्रादि शुभ ग्रह का केवल चरण वेध (प्रथम-चतुर्थ, द्वितीय-तृतीय) का विचार करें। जबकि सूर्य, मंगल, शनि, राहु आदि क्रूर ग्रहों के सभी चरण त्याज्य होंगे। अर्थात् वेधदोष होगा।

(5) यामित्रदोष–

(5) यामित्र दोष चक्र

अश्वि	रोहि.	मृग.	मघा	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वा.	अनु.	मूल	उ.षा.	श्रव.	धनि.	उ.भा.	रेव.
चित्रा	अनु.	ज्ये.	धनि.	पू.भा.	उ.भा.	रेव.	अश्वि	कृति.	मृग.	पुन.	पुष्य	आश्ले	उ.फा.	हस्त

विवाह नक्षत्र के नीचे वाले नक्षत्रों पर स्थित कोई भी ग्रह उस नक्षत्र में होने पर यामित्रदोष होता है। चक्र में ऊपर प्रत्येक विवाह नक्षत्र और नीचे के कोष्ठक में उससे 14वाँ नक्षत्र है, जिस पर कोई भी ग्रह होने पर वह ऊपरी खाने के विवाह-नक्षत्र को यामित्र-दोष से दूषित करेगा। पापी या क्रूर ग्रह का यामित्र दोष पूज्य होता है। **नोट**–(*i*) यामित्रदोष वाले ग्रह को शुभ ग्रह देखते हों, तो यह दोष नहीं रहता। (*ii*) सप्तम भाव में चंद्र-गुरु स्वगृही, उच्चस्थ या मित्रक्षेत्री हो तो यामित्रदोष नहीं रहता।

(6) बाणदोष–

(6) बाणदोष चक्र

नाम बाण	सूर्य के गतांश	वर्ज्य कर्म	वर्ज्य वार	वर्ज्य काल
रोग	8°-17°-27°	उपनयन	रविवार	रात्रि
अग्नि	2°-11°-20°-29°	गृहारम्भ	मंगलवार	सदैव
नृप	4°-13°-22°	राजसेवा	शनिवार	दिवाकाल
चोर	6°-15°-24°	यात्रा	मंगलवार	रात्रि
मृत्यु	1°-10°-19°-28°	विवाह	बुधवार	संध्या

रोगादि पाँच बाणों का सम्बन्ध सूर्य के विशेष अंशों से है, चाहे वह किसी राशि का हो। प्रत्येक राशि के जिन अंशों का सम्बन्ध जिस बाण से है, उससे पहले के अंश (गतांश) उस बाण के सामने चक्र में दिए गए हैं, क्योंकि पंचांग में दैनिक सूर्यस्पष्ट के गत राश्यंश के साथ अग्रिमांश की भुक्त कला-विकला दी जाती है। अतः आप सरलतापूर्वक दैनिक सूर्य-गति निकालकर सूर्यस्पष्ट के समय में (1° अंश की) जमा-घटा देने से बाणारम्भ-काल तथा समाप्तिकाल जान सकते हैं। यों तो पाँच-बाणों के विशेष समय व वारानुसार त्याज्य माने गए हैं। परन्तु मुहूर्त्त-शोधन में इन सभी बाणों को प्रत्येक वार में सभी कालों में वर्ज्य करने की परम्परा है। अपि च, पंचांगदिवाकर में केवल 1° से 1°-30′ अर्थात् 30′ कला तक ही अशुभ प्रभाव को समाप्तिकाल मानकर मुहूर्त्त-लग्न लगाए जाते हैं।

(7) एकार्गल दोष–विवाह नक्षत्र के समय यदि सूर्य अधिष्ठित नक्षत्र साभिजित गिनने पर विषम हो, तो एकार्गल दोष होता है, परन्तु उस समय व्याघात, गण्ड, व्यतीपात, विष्कम्भ, शूल, वैधृति, वज्र, परिघ, अतिगण्ड-इन अशुभ योगों की विद्यमानता अनिवार्य है। अतः चक्र में प्रत्येक वैवाहिक नक्षत्र से विषम संख्यक नक्षत्रों को उस नक्षत्र के नीचे वाले कोष्ठकों में दिया गया है। जिनमें से किसी नक्षत्र पर सूर्य के होने से उस कोष्ठक का विवाह-नक्षत्र एकार्गल दोष से दूषित होता है। यह कश्मीर में विशेषतः वर्जित है। **परिहार**–ज्योतिर्निबन्ध एवं मुहूर्त्त-गणपति अनुसार अशुभ योगों में कुछ विशेष घड़ियां ही विशेष रूप से त्याज्य मानी गई हैं–विष्कम्भ की प्रथम 3 घड़ियां, व्याघात और वज्र की प्रथम 9 घड़ियां, परिघ योग का पूर्वार्द्ध (7½ घटि) भाग, शूल योग की प्रथम 5 घड़ियां, गण्ड और अतिगण्ड की प्रथम 6 घड़ियां, वैधृति-व्यतीपात योग सम्पूर्णतया त्याज्य होंगे।

विवाह नक्षत्र →	अश्वि.	रोह.	मृग.	मघा	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वा.	अनु.	मूल	उ.षा.	श्रव.	धनि.	उ.भा.	रेव.
—सूर्य अधिष्ठित नक्षत्र—	अश्वि	पू.भा.	शत	पू.षा.	ज्ये.	अनु	विशा	स्वा	हस्त	पू.फा.	अश्ले	मृग.	धनि.	कृति	भर.
	कृति	रेव	उ.भा.	अभि	पू.षा.	मूल	ज्ये.	अनु	स्वा	हस्त	पू.फा.	पुर्न	पू.भा.	मृग	रोहि
	मृग	भर	अश्वि	धनि.	अभि	उ.षा.	पू.षा.	मूल	अनु	स्वा.	हस्त	श्ले.	रेव	पुर्न	आर्द्रा
	पुर्न	रोह.	कृति	पू.भा.	धनि	श्रवण	अभि.	उ.षा.	मूल	अनु	स्वा	पू.फा.	भर	अश्ले	पुष्य
	अश्ले	आर्द्रा	मृग.	रेव.	पू.भा.	शत.	धनि	श्रव	उ.षा.	मूल	अनु	हस्त	रोहि	पू.फा.	मघा
	पू.फा.	पुष्य	पुर्न	भर.	रेव	उ.भा.	पू.भा.	शत.	श्रव	उ.षा.	मूल	स्वा	आर्द्रा	हस्त	उ.फा.
	हस्त	मघा	अश्ले	रोहि.	भर.	अश्वि	रेव	उ.भा.	शत	श्रव.	उ.षा.	अनु.	पुष्य	स्वा.	चित्रा
	स्वा.	उ.फा.	पू.फा.	आर्द्रा	रोहि.	कृति	भर.	अश्वि	उ.भा.	शत	श्रव.	मूल	मघा	अनु.	विशा.
	अनु.	चित्रा	हस्त	पुष्य	आर्द्रा	मृग.	रोहि.	कृति.	अश्वि	उ.भा.	शत	उ.षा.	उ.फा.	मूल	ज्ये.
	मूल	विशा	स्वा.	मघा	पुष्य	पुर्न	आर्द्रा	मृग.	कृति	अश्वि	उ.भा.	श्रव	चित्रा	उ.षा.	पू.षा.
	उ.षा.	ज्ये.	अनु.	उ.फा.	मघा	अश्ले	पुष्य	पुर्न	मृग.	कृति	अश्वि	शत	विशा	श्रव	अभि.
	श्रव.	पू.षा.	मूला	चित्रा	उ.फा.	पू.फा.	मघा	अश्ले	पुर्न	मृग	कृति	उ.भा.	ज्ये.	शत.	धनि
	शत	अभि.	उ.षा.	विशा.	चित्रा	हस्त	उ.फा.	पू.फा.	अश्ले	पुर्न	मृग	अश्वि	पू.षा.	उ.भा.	पू.भा.
	उ.भा.	धनि.	श्रव.	ज्ये.	विशा.	स्वा.	चित्रा	हस्त	पू.फा.	अश्ले	पुर्न	कृति	अभि	अश्वि	रेव.

(8) उपग्रह दोष–विवाह-नक्षत्र के समय सूर्य जिस नक्षत्र में हो, तो उसे 5वें, 7वें, 8वें, 10वें, 14वें, 15वें, 18वें, 19वें, 21वें, 22वें, 23वें, 24वें, 25वें नक्षत्र पर यदि वहीं विवाह-नक्षत्र हो, तो उपग्रह दोष होता है। **उदाहरणार्थ**–यदि अश्विनी नक्षत्र हो, तो सूर्य यदि शत., श्रव., उ.षा. आदि नक्षत्रों में होगा तो उपग्रह दोष होगा। यह दोष कुरु देश (दिल्ली के समीप) और वाह्लिक (कश्मीर के पश्चिम) क्षेत्रों में विशेषतः अशुभ होता है। अत्यत्र नहीं।

विवाह नक्षत्र	अश्वि.	रोह.	मृग.	मघा	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वा.	अनु.	मूल	उ.षा.	श्रव.	धनि.	उ.भा.	रेव.
–सूर्य नक्षत्र–	शत.	रेव.	अश्वि	आर्द्रा	पुष्य	आश्ले	मघा	पू.फा.	हस्त	स्वा.	अनु.	ज्ये.	मूल	श्रव.	धनि.
	श्रव.	पू.भा.	उ.भा.	रोहि	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले	पू.फा.	हस्त	स्वा.	विशा.	अनु.	पू.षा.	उ.षा.
	उ.षा.	शत.	पू.भा.	कृति	मृग	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	मघा	उ.फा.	चित्रा	स्वा.	विशा.	मूल	पू.षा.
	मूल	श्रव.	धनि.	अश्वि.	कृति	रोहि.	मृग	आर्द्रा	पुष्य	मघा	उ.फा.	हस्त	चित्रा	अनु.	ज्ये.
	स्वा.	ज्ये.	मूल	शत.	उ.भा.	रेव.	अश्वि.	भर.	रोहि.	आर्द्रा	पुष्य	आश्ले	मघा	हस्त	चित्रा
	चित्रा	अनु.	ज्ये.	धनि.	पू.भा.	उ.भा.	रेव	अश्वि.	कृति.	मृग.	पुन.	पुष्य	आश्ले.	उ.फा.	हस्त
	पू.फा.	चित्रा	स्वा.	पू.षा.	श्रव.	धनि.	शत.	पू.भा.	रेव.	भर.	रोहि.	मृग.	आर्द्रा	आश्ले	मघा
	मघा	हस्त	चित्रा	मूल	उ.षा.	श्रव.	धनि.	शत.	उ.भा.	अश्वि.	कृति	रोहि.	मृग.	पुष्य	आश्ले
	पुष्य	पू.फा.	उ.फा.	अनु.	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रव.	शत.	उ.भा.	अश्वि	भर.	कृति	आर्द्रा	पुन.
	पुन.	मघा	पू.फा.	विशा.	ज्ये.	मूल	पू.षा.	उ.षा.	धनि.	पूभा.	रेव	अश्वि.	भर.	मृग.	आर्द्रा
	आर्द्रा	आश्ले	मघा	स्वा.	अनु.	ज्ये.	मूल	पू.षा.	श्रव.	शत.	उ.भा.	रेव.	अश्वि.	रोहि.	मृग.
	मृग.	पुष्य	आश्ले	चित्रा	विशा.	अनु.	ज्ये.	मूल	उ.षा.	धनि.	पूभा	उ.भा.	रेव.	कृति	रोहि.
	रोहि.	पुन.	पुष्य	हस्त	स्वा.	विशा	अनु.	ज्ये.	पू.षा.	श्रव.	शत.	पू.भा.	उ.भा.	भर.	कृति.

(9) स्थूल क्रान्तिसाम्य दोषः–

सूर्य	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
चन्द्र	सिंह	मकर	धनु	वृश्चि.	मेष	मीन	कुम्भ	कर्क	मिथुन	वृष	तुला	कन्या

चक्र के ऊपरी बॉक्स में क्रमशः द्वादश राशियां सूर्य की दी गई हैं। उनमें से जिस राशि पर सूर्य हो उस बॉक्स की नीचे वाली राशि पर चन्द्रमा के होने से क्रान्तिसाम्य दोष होता है। क्रान्तिसाम्य सर्वत्र त्याज्य है। परन्तु उपर्युक्त प्रकार का क्रान्तिसाम्य नितान्त स्थूल होता है। महापात गणित द्वारा प्रणीत क्रान्तिसाम्य दोष ही विवाह–मुहूर्त्त शोधन में वर्जित होता है।

(10) दग्धातिथि दोष चक्र–

सूर्य राशि	मेष (वेशा.)	वृष (ज्ये.)	मिथुन (आषा.)	कर्क (श्राव.)	सिंह (भाद्र.)	कन्या (आश्वि.)	तुला (कार्ति.)	वृश्चि. (मार्ग.)	धनु (पौष)	मकर (माघ)	कुम्भ (फाल्गु.)	मीन चैत्र)
दग्धा तिथि	६	४	८	६	१०	८	१२	१०	२	१२	४	२

जब सूर्य मेष (वैशाख), वृष (ज्येष्ठ), मिथुन (आषाढ़) आदि में हो तब क्रमशः ६, ४, ८ आदि तिथियां दग्धा तिथियां कहलाती हैं। **अपवाद**–मास में दग्धा तिथियां केवल मध्य देश में ही वर्जित होती हैं। सर्वत्र नहीं।

१२ राशियों का घाती चक्र

द्वादश राशि के प्रत्येक मनुष्य को घाती चक्र में दिए अनुसार प्रत्येक तिथि, वार नक्षत्र, लग्न, चंद्रमास घातक होते हैं। अतः मनुष्य को चाहिये कि वे अपना कोई भी इष्ट और शुभ कार्य घातक समय वा मुहूर्त्त पर आरम्भ न करें। नीचे दिया हुआ घात चक्र युद्ध, विवाद (शास्त्रार्थ) राज सेवा, वाहन, यात्रा, रोगादि कार्यों में देखना चाहिए। अर्थात् इन राशि वालों के लिए इन कार्यों में घात चन्द्र, वारादि शुभ नहीं और तीर्थ यात्रा, विवाहादि में घात चन्द्रादि का विचार न करें। विशेष फलादेश जानने के लिये पत्र व्यवहार करें।

राशयः	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
घातमास	कार्तिक	मार्ग	आषाढ़	पौष	ज्येष्ठ	भाद्रपद	माघ	आश्विन	श्रावण	वैशाख	चैत्र	फाल्गुन
घात तिथि	१-६-११	५-१०-१५	२-७-१२	२-७-१२	३-८-१३	५-१०-१५	४-९-१४	१-६-११	३-८-१३	४-९-१४	३-८-१३	५-१०-१५
घात वार	रवि	शनि	चन्द्र	बुध	शनि	शनि	गुरु	शुक्र	शुक्र	मंगल	गुरु	शुक्र
घात नक्षत्र	मघा	हस्त	स्वाति	अनुराधा	मूल	श्रवण	शत.	रेवती	भरणी	रोहिणी	आर्द्रा	आश्लेषा
घात योग	विष्कुम्भ	सुकर्मा	परिघ	धृति	प्रीति	सुकर्मा	अतिगंड	ब्रह्म	वैधृति	गंड	व्याघात	वज्र
घात करण	बव	शकुनि	कौलव	नाग	बालव	कौलव	तैतिल	गर	तैतिल	शकुनि	किंस्तुभ	चतुष्पाद
घात लग्न	१	२	४	७	१०	१२	६	८	९	११	३	५
घात प्रहर	प्रथम	चतुर्थ	तृतीय	प्रथम	प्रथम	प्रथम	चतुर्थ	प्रथम	प्रथम	चतुर्थ	तृतीय	चतुर्थ
पु. घा. चंद्र	मेष	कन्या	कुम्भ	सिंह	मकर	मिथुन	धनु	वृष	मीन	सिंह	धनु	कुम्भ
स्त्री घा. चंद्र	मेष	धनु	धनु	मिथुन	वृश्चिक	वृश्चिक	मीन	धनु	कन्या	वृश्चिक	मिथुन	मेष

ग्रहों का नैसर्गिक मैत्री चक्र

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
मित्र	चंद्र मंगल गुरु	सूर्य बुध	सूर्य चंद्र गुरु	सूर्य शुक्र	सूर्य चंद्र मंगल	बुध शनि	बुध शुक्र	शुक्र बुध शनि	बुध गुरु
सम	बुध	मंगल गुरु शुक्र शनि	शुक्र शनि	मंगल गुरु शनि	शनि	मंगल गुरु	गुरु	गुरु केतु	मंग. राहु शुक्र
शत्रु	शुक्र शनि	०० ००	बुध राहु	चंद्र	बुध शुक्र	सूर्य चंद्र	सूर्य मंगल चंद्र	सूर्य चंद्र मंगल	सूर्य चंद्र शनि
उच्चांश	मेष १०	वृषे ३	म. २८	कं. १५	कर्क ५	मी. २७	तु. २०	वृ. १५°	
नीचांश	तु. १०	वृश्चि ३	क. २८	मी १५	म. ५	कं. २७	मे.२०°	वृ. १५°	

नक्षत्र, राशि, वर्ण, योनि आदि ज्ञान चक्र

नक्षत्र	चरणाक्षर	राशि	वश्य	योनि	महावैर योनि	राशि स्वामी	गण	नाड़ी	तत्त्व हंसका	नाम (संज्ञा)	नक्षत्र देवता	कितने तारे	पंचशला का वेध
अश्विनी	चू. चे. चो. ला.	मेष	चतुष्पद	अश्व	महिष	मंगल	देव	आदि	अग्नि	क्षिप्र	अश्वि कु.	३	पू. फा.
भरणी	ली. लू. ले. लो.	मेष	चतुष्पद	गज	सिंह	मंगल	मनुष्य	मध्य	अग्नि	उग्र	यम	३	अनु
कृत्तिका	अ. इ. उ. ए.	मे.१ वृष ३	चतुष्द	मेढ़ा	वानर	मं.१ शु.३	राक्षस	अन्त्य	अ.१ पृ.३	मिश्र	अग्नि	६	विशा
रोहिणी	ओ. वा. वी. वू.	वृष	चतुष्पद	सर्प	न्योला	शुक्र	मनुष्य	अन्त्य	पृथ्वी	ध्रुव	ब्रह्मा	५	अभि
मृगशिर	वे. वो. का. की.	वृ.२ मि.२	च.२ नर२	सर्प	न्योला	शु.२ बु.२	देव	मध्य	पृ.२ वा.२	मृदु	चन्द्रमा	५	उ.षा.
आर्द्रा	कु. घ. ङ. छ.	मिथुन	नर (मनुष्य)	श्वान	मृग	बुध	मनुष्य	आदि	वायु	तीक्ष्ण	शिव	१	पू.षा.
पुनर्वसु	के. को. हा. ही.	मि.३ क.१	न.३ ज.१	मार्जार	मूषक	बु.३ चं.१	देव	आदि	वा.३ ज.१	चर	अदिति	४	मूल
पुष्य	हू. हे. हो. डा.	कर्क	जलचर	मेढ़ा	वानर	चंद्र	देव	मध्य	जल	क्षिप्र	गुरु	३	ज्ये.
आश्लेषा	डी. डू. डे. डो.	कर्क	जलचर	मार्जा.	मूषक	चंद्र	राक्षस	अन्त्य	जल	तीक्ष्ण	सर्प	५	धनि
मघा	मा. मी. मू. मे.	सिंह	वनचर	मूषक	बिडाल	सूर्य	राक्षस	अन्त्य	अग्नि	उग्र	पितर	५	श्रव
पू.फा.	मो. टा.टी. टू.	सिंह	वनचर	मूषक	बिडाल	सूर्य	मनुष्य	मध्य	अग्नि	उग्र	भग, सूर्य	२	अश्वि
उ.फा.	टे. टो. पा. पी.	सिं.१ कं.३	व.१ न.३	गौ	व्याघ्र	सू.१ बु.३	मनुष्य	आदि	अ.१ पृ.३	ध्रुव	अर्यमा	२	रेव
हस्त	पू. ष. ण. ठ.	कन्या	नर	महिष	अश्व	बुध	देव	आदि	पृथ्वी	क्षिप्र	सूर्य	५	उ.भा.
चित्रा	पे. पो. रा. री.	के.२ तु.२	नर	व्याघ्र	गौ	बु.२ शु.२	राक्षस	मध्य	पृ.२ वा.२	मृदु	विश्वकर्मा	१	पू.भा.
स्वाती	रू. रे. रो. ता.	तुला	नर	महिष	अश्व	शुक्र	देव	अन्त्य	वायु	चर	वायु	१	शत
विशाखा	ती. तू. ते. तो.	तु.३ वृ.१	न.३ की.१	व्याघ्र	गौ	शु.३ मं.१	राक्षस	अन्त्य	वा.३ ज.१	मिश्र	इंद्राग्नि	४	कृति
अनुराधा	ना. नी. नू. ने.	वृश्चिक	कीट	मृग	श्वान	मंगल	देव	मध्य	जल	मृदु	मित्र	४	भर
ज्येष्ठा	नो. या. यी. यू.	वृश्चिक	कीट	मृग	श्वान	मंगल	राक्षस	आदि	जल	तीक्ष्ण	इन्द्र	३	पुष्य
मूल	ये. यो. भा. भी.	धनु	नर	श्वान	मृग	गुरु	राक्षस	आदि	अग्नि	तीक्ष्ण	राक्षस	११	पुन
पूर्वाषाढ़ा	भू. ध. फ. ढ.	धनु	न॥ चतु २	वानर	मेंढ़ा	गुरु	मनुष्य	मध्य	अग्नि	उग्र	जल	२	आर्द्रा
उत्तराषाढ़ा	भे. भो. जा. जी.	ध.१ मं.३	चतुष्पद	नकुल	सर्प	गु.१ श.३	मनुष्य	अन्त्य	अ.१ पृ.३	ध्रुव	विश्वदेव	२	मृग
अभिजित	जु. जे. जो. ख.	मकर	—	नकुल	सर्प	शनि	—	—	पृथ्वी	क्षिप्र	विष्णु	३	रोह
श्रवण	खी. खू. खे. खो.	मकर	चतु.१ ॥ज२	वानर	मेढ़ा	शनि	देव	अन्त्य	पृथ्वी	चर	विष्णु	३	कृति
धनिष्ठा	गा. गी. गृ. गे.	म.२ कुं.२	ज.२ न.२	सिंह	गज	शनि	राक्षस	मध्य	पृ.२ वा.२	चर	वसु	४	विशा
शतभिषा	गो. सा. सी. सू.	कुम्भ	नर	अश्व	महिष	शनि	राक्षस	आदि	वायु	चर	वरुण	१००	स्वा
पूर्वाभाद्रपद	से. सो. दा. दी.	कुं.३ मी.१	न.३ ज.१	सिंह	गज	श.३ गु.१	मनुष्य	आदि	वा.३ ज.१	उग्र	अजैकपाद	२	चित्रा
उ. भाद्रपद	दू. थ. झ. ञ.	मीन	जलचर	गौ	व्याघ्र	गुरु	मनुष्य	मध्य	जल	ध्रुव	अहिबर्बुध्न्य	२	हस्त
रेवती	दे. दो. चा. ची.	मीन	जलचर	गज	सिंह	गुरु	देव	अन्त्य	जल	मृदु	पूषा	३२	उ.फा.

नामाक्षरों से वर्ग देखने का चक्र (अपने से चतुर्थ वर्ग को मित्र क्षेत्री समझना चाहिए)

अ ई उ ए	क ख ग घ ङ	च छ ज झ ञ	ट ठ ड ढ ण	त थ द ध न	प फ ब भ म	य र ल व	श ष स ह
गरुड़	बिडाल	सिंह	श्वान	सर्प	मूषक	हरिण	मेढ़ा

वर्ण ज्ञान चक्र

वर्ण	ब्राह्मण	क्षत्रिय	वैश्य	शूद्र
राशि	१२/४/८	१/५/९	२/६/१०	३/७/११

ग्रह मैत्री चक्र

ग्रहा:	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
मित्राणि	चं मं गु	सू बु	सू चं गुरु	सू शु	सू चं मं.	बु श	शु बु
समा:	बुध:	मं गु शु श	शु श	मं गु श	श	मं गु	गु.
शत्रव	शु श	० ०	बुध	चं	बु शु	सू चं	सू चं मं
उच्चांश	मे १०	वृष ३	म २८	क १५	कर्क ५	मी २७	तु २०
नीचांश	तु १०	बृ ३	क २८	मी १५	म ५	क २७	मे २०

मित्र नवपंचम चक्र								शत्रु नवपंचम चक्र			
१	२	३	५	७	८	९	१०	१२	११	६	४
५	६	७	९	११	१२	१	२	४	३	१०	८

मित्रषडाष्टक चक्र						शत्रुषडाष्टक चक्र					
१	२	३	४	५	६	१	३	५	७	९	११
८	७	१०	९	१२	११	६	८	१०	१२	२	४

मित्रद्विर्द्वादश चक्र						शत्रुद्विर्द्वादश चक्र					
१२	२	४	६	८	१०	१	३	५	७	९	११
१	३	५	७	९	११	२	४	६	८	१०	१२

नवपंचम दोष–कन्या से वर अथवा वर से कन्या की राशि पांचवीं, नौवीं हो, तो दम्पत्ति को संतान हानि की संभावना होती है। परन्तु मीन–कर्क, कर्क–बृश्चिक, कुम्भ–मिथुन, कन्या–मकर विशेषत: त्याज्य माने जाते हैं। राशि मैत्री होने की स्थिति में नव–पंचम दोष अचिन्तनीय है।

षडाष्टक दोष–लड़के और लड़की की राशियां परस्पर छठे–आठवें हों तो षडाष्टक यथा–सम्भव त्याज्य है। शत्रु षडाष्टक दोष विशेषत: त्याज्य माना जाता है।

विस्तृत विवेचन के लिए देखें आगामी पृष्ठ 201

मेलापक में मंगलीक योग एवं परिहार

विवाह योग्य लड़के-लड़की की जन्म कुण्डली में वर्ण, वश्य, तारा, ग्रहमैत्री, नाड़ी आदि अष्टकूट सम्बन्धी गुण मिलान के पश्चात् कुण्डली में मंगल एवं **मंगलीक दोष** पर विशेष रूप से विचार किया जाता है। मंगलीक दोष का आधार सामान्यत: निम्न श्लोक माना जाता है।

लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे। कन्या भर्तृविनाशाय भर्त्ता कन्या विनाशदः।
–मु. संग्रहदर्पण

अर्थात् जिस कन्या की कुण्डली में १, ४, ७, ८ या १२वें स्थान में मंगल हो, तो वह कन्या वर (पति) के लिए हानिकारक तथा इसी भान्ति जिस लड़के की कुण्डली में इन्हीं स्थानों में मंगल हो वह कन्या को हानिकारक होता है। इसी भांति लग्न, चन्द्र और कभी-कभी शुक्र की राशि से भी मंगल की उपर्युक्त स्थितियों का विचार किया जाता है।

अपवाद–(१) मंगल दोष वाली कन्या का विवाह मंगलीक दोष वाले वर के साथ करने से मंगल का अनिष्ट दोष नहीं होता तथा वर-वधू के मध्य दाम्पत्य सुख बढ़ता है–

कुज दोष वती देया कुजदोषवते किल। नास्ति दोषो न चानिष्टं दम्पत्योः सुखवर्धनम्॥

मंगलीक सम्बन्धी उपरोक्त श्लोक के परिहारस्वरूप मुहूर्त्त ग्रन्थों में अनेकत्र परिहार वाक्य मिलते हैं। यथा–

(२) यदि लड़की की कुण्डली में जिस स्थान पर मंगल स्थित (मंगलीक कारक) हो, और लड़के की कुण्डली में उसी स्थान पर शनि, मंगल, सूर्य, राहु आदि कोई पाप ग्रह स्थित हों, तो भौमदोष भंग हो जाता है। इसी प्रकार लड़के की कुण्डली में भौम दोष होने पर कन्या की कुण्डली में उसी भाव में कोई पाप ग्रह होने से भी भौमदोष नहीं रहता–

शनिः भौमोऽथवा कश्चित् पापो वा तादृशो भवेत्।
तेष्वेव भवनेष्वेव भौमदोष विनाश कृत्॥–फलित संग्रह अन्येऽपि–
भौमेन सदृशो भौमः पापो व तादृशो भवेत्। विवाहः शुभदः प्रोक्तश्चिरायुः पुत्रपौत्रदः॥

अर्थात् एक की कुण्डली में मंगल दोष हो, तो दूसरे की कुण्डली में भी उन्हीं स्थानों में शनि आदि पाप ग्रह होने से मंगलीक दोष का प्रभाव क्षीण होकर विवाह में शुभ होता है।

यामित्रे च यदा सौरि लग्ने वा हिबुके तथा। अष्टमे द्वादशे चैव भौमदोषो न विद्यते॥

यह श्लोक भी लगभग इसी आशय का है।

(३) मेष राशि का मंगल लग्न में, वृश्चिक राशि का चौथे भाव में, मकर का सातवें, कर्क राशि का आठवें, एवं धनु राशि का मंगल १२वें हो, तो मंगल दोष नहीं होता। यथोक्तम्–

अजे लग्ने व्यये चापे पाताले वृश्चिके कुजे।
द्यूने मृगे कर्किचाष्टौ भौमदोषो न विद्यते॥ –मुहूर्त्त पारिजात

प्रकारान्तर से, मीन का मंगल ७वें भाव तथा कुम्भ राशि का मंगल अष्टम में हो, तो भौम दोष नहीं होता। **''द्यूने मीने घटे चाष्टौ भौम दोषो न विद्यते'' –मुहूर्त्त चिंतामणि**

(४) यदि द्वितीय भाव में चन्द्र-शुक्र का योग हो, या मंगल गुरु द्वारा दृष्ट हो, केन्द्र भावस्थ राहु हो, अथवा केन्द्र में राहु-मंगल का योग हो, तो मंगल दोष नहीं रहता–

न मंगली चन्द्र भृगु द्वितीये, न मंगली पश्यति यस्य जीवा।
न मंगली केन्द्रगते च राहुः, न मंगली [illegible]॥ –मुहूर्त्त दीपक

(५) बलान्वित गुरु वा शुक्र लग्न में हो, तो वक्री, नीचस्थ, अस्तंगत अथवा शत्रुक्षेत्री मंगल उपरोक्त दुष्ट स्थानों में होने पर भी भौम दोष नहीं होता–

सबले गुरौ भृगौ वा लग्ने द्यूनेऽथवाभौमे।
वक्रे नीचारि गृहस्थे वाऽस्तेऽपि न कुजदोषः॥ –मुहूर्त्त दीपक

(६) इसी भांति केन्द्र व त्रिकोण में यदि शुभ ग्रह हों, तथा ३, ६, ११वें भावों में पाप-ग्रह हों तथा सप्तमेश ग्रह सप्तम में ही हो, तो मंगल दोष नहीं होता–

''केन्द्र कोणे शुभादये च त्रिषडायेऽप्यसद्ग्रहाः।
तदा भौमस्य दोषो न मदने मदपस्तथा॥'' –मुहूर्त्त चिंतामणि

(७) यद्यपि १, २, ४, ७, ८, ११ और १२वें भावों में स्थित मंगल वर-वधू के वैवाहिक जीवन में विघटन उत्पन्न करता है, परन्तु यदि मंगल अपने घर (१, ८) का हो, **उच्चस्थ** (मकर) का **किंवा मित्र क्षेत्री** मंगल दोष कारक नहीं होता–

तनु धन सुख मदनायुर्लाभ व्ययगः कुजस्तु दाम्पत्यम्।
विघट्यति तद् गृहेशो न विघटयति तुंगमित्रगेहेवा॥ –मु. चिंतामणि

(८) यदि वर-कन्या की कुण्डलियों में परस्पर राशिमैत्री हो, गणैक्य हो, २७ गुण या अधिक मिलान होता हो, तो भी भौम दोष अविचारणीय है। **'मुहूर्त्त दीपक'** नामक ग्रन्थानुसार–

राशिमैत्रं यदा याति गणैक्यं वा यदा भवेत्। अथवा गुण बाहुल्ये भौम दोषो न विद्यते॥

विवेचन–उपरोक्त विवेचन से स्पष्ट है कि मुहूर्त्त संग्रह दर्पण में दिए गए मंगलीक सम्बन्धी उपरोक्त श्लोक (''लग्ने व्यये पाताले–'') के परिहारस्वरूप कुछ अर्वाचीन ग्रन्थों में उपलब्ध होते हैं, जिनमें परस्पर विरोध वाक्यता भी मिलती है।

उल्लेखनीय है कि प्राचीन सैद्धान्तिक एवं प्रतिष्ठित मुहूर्त्त ग्रंथों जैसे–विवाह वृन्दावन, मुहूर्त्त मार्तण्ड, सारावली, मु. चिन्तामणि (प्राचीन संस्करण), ज्योतिर्निबन्ध आदि) में मंगलीक सम्बन्धी उपर्युक्त श्लोक एवं तत्सम्बन्ध विभिन्न परिहार वाक्यों का स्पष्ट उल्लेख नहीं मिलता।

वर-कन्या की कुण्डली में मंगलीक दोष एवं उसके परिहार का निर्णय अत्यन्त सावधानीपूर्वक करना चाहिए। केवल १, ४, ७, ८ आदि भावों में मंगल को देखकर दाम्पत्य जीवन के सुख-दु:ख का निर्णय कर देना उपयुक्त नहीं। मंगलीक वाले स्थानों (भावों) में मंगल के अतिरिक्त कोई अन्य क्रूर ग्रह भी १, २, ७ एवं १२वें स्थानों में हो, तो वह भी परिवारिक एवं वैवाहिक जीवन के लिए अनिष्टकारी होता है। यथा–

लग्ने क्रूरा व्यये क्रूरा धने क्रूराः कुजस्तथा।
सप्तमे भवने क्रूराः परिवार क्षयंकराः॥ –मु. संग्रह दर्पण

मंगल अथवा मंगलीक दोष का निर्णय कुण्डली विशेष में सभी ग्रहों के पारस्परिक अनुशीलन के पश्चात् ही करना चाहिए। मिलान करते समय केवल मंगल या मंगलीक पर ही अत्यधिक बल न देते हुए मेलापक सम्बन्धी अन्य तत्त्वों का भी सर्वाङ्ग रूप से विवेचन करना चाहिए। जैसे–चलित भाव कुण्डली, सप्तमेश की उच्च-नीच स्थिति, सप्तम भाव पर गुरु, शुक्र की दृष्टि आदि तत्त्वों का सम्यक विचार किसी विद्वान ज्योतिषी जी से करवाना चाहिए।

वर-कन्या मिलान में वर्णादि अष्टकूटों का महत्त्व

विवाह गृहस्थाश्रम की आधारशिला है और उसी के माध्यम से मनुष्य, देव, ऋषि एवं पितृ आदि ऋण त्रय से उद्धृण होकर परम कल्याण को प्राप्त कर सकता है। तद् हेतु उत्तम लक्षणों जैसे-सुन्दर, सुशीला, मधुरभाषिणी एवं पतिव्रता कन्या तथा कर्त्तव्यनिष्ठ, स्वस्थ, शिक्षित, सदाचारी एवं सुसंस्कृत लड़के के साथ विवाह सम्बन्ध शुभ होता है। विवाह सम्बन्ध करने से पूर्व लड़के-लड़की का कुल-गोत्र, सनाथता, विद्या, धन, स्वास्थ्य (शरीर) और आयु-इन सात गुणों की परीक्षा करने के पश्चात् ही कुण्डलियों में परस्पर **मंगलीक आदि अरिष्ट** योगों तथा वर्ग, **स्त्रीदूर, कर्तरि एवं वर्णादि अष्टकूटों** का विचार करना चाहिए।

मेलापक प्रक्रिया में **मंगलीक और अष्टकूट** तत्त्वों का विशेष महत्त्व है, क्योंकि वर-कन्या के दाम्पत्य जीवन को अधिकाधिक सुखी एवं मंगलमय बनाने के लिए उनके जन्म नक्षत्रों एवं जन्म कुण्डलियों के अनुसार मिलान करना अत्यन्त आवश्यक है। उपयुक्त मिलान न होने की स्थिति में पति-पत्नी के वैवाहिक जीवन में-विचार वैमनस्य, सन्तान कष्ट, वैधव्य, वैधुर्यादि दोष अथवा पारिवारिक कष्ट होने की सम्भावनाएं हो जाती है। **मंगलीक दोष** का विशेष विवरण इसी पंचाँग के गत पृष्ठ पर दिया गया है। यहाँ पर नक्षत्र मिलान के मुख्य तत्त्व अष्टकूट का विवेचन किया जा रहा है। ध्यान रहे, अष्ट (आठ) कुंटों का निर्णय वर-कन्या के जन्म नक्षत्रों से ही किया जाता है। अष्टकूटों के आठ कूट (अंग) निम्नलिखित हैं :-

(१) वर्ण (२) वश्य (३) तारा (४) योनि (५) ग्रहमैत्री (६) गणमैत्री (७) भकूट तथा **(८) नाड़ी** -ये आठ कूट हैं।

प्रत्येक कूट की क्रम संख्या अपने श्रेष्ठ गुणों की सूचक है। वर्णादि अष्टकूटों में **गुणों का योग ३६** होता है। इसमें क्रमानुसार वर्ण का १ गुण, वश्य के २, तारा के ३, योनि के ४, ग्रहमैत्री के ५, गण-मैत्री के ६, भकूट के ७ एवं नाड़ी के ८ (आठ) गुण जानने चाहिएं।

वर्णादि कुल ३६ गुणों के योग में से १ से १७ तक गुण मिलान तुच्छ एवं निन्दनीय (त्याज्य) माने जाते हैं, १८ से २१ तक मध्यम एवं ग्राह्य और २२ से २८ तक उत्तम तथा २९ से ३६ तक गुण सर्वोत्कृष्ट मिलान माना जाता है।

> **एकैकवृद्धितो ज्ञेया वर्णादीनां गुणाः क्रमात्।**
> **विवाहः शुभदस्तेषां गुणे त्वष्टादशाधिके॥** —मु० गणपति

वर्णादि अष्टकूट

(1) वर्णकूट विचार—समाज में प्रचलित वर्णों की भान्ति राशियों में भी ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र चार वर्ण होते हैं। ४, ८, १२ राशियों का ब्राह्मण ; १, ५, ९ का क्षत्रिय ; २, ६, १० वैश्य तथा ३, ७, ११ राशियों का शूद्रवर्ण होता है। वर का वर्ष कन्या के वर्ण से उच्चस्तरीय अथवा समान होने पर एक गुण प्राप्त होता है, अन्यथा शून्य प्राप्त होता है।

परिहार—(*i*) राशीश मैत्री—यदि वर की राशि का वर्ण कन्या के राशि-वर्ण से हीन हो, परन्तु राशिपति उत्तम वर्ण हो, तो वर्ण मिलान शुभ हो जाता है। अथवा वर-कन्या के राशिस्वामी परस्पर मित्र-मित्र या मित्र-सम हो।

सूर्य-मंगल का वर्ण क्षत्रिय, चन्द्रमा का वैश्य, बुध-शनि का शूद्र तथा गुरु-शुक्र का ब्राह्मण है।

वर्ण गुण चक्र

कन्या↓ वर→	ब्राह्मण	क्षत्रिय	वैश्य	शूद्र
ब्राह्मण	1	0	0	0
क्षत्रिय	1	1	0	0
वैश्य	1	1	1	0
शूद्र	1	1	1	1

(*ii*) **राशीश एकता**—वर-कन्या का एक ही राशीश।

(*iii*) **नवमांशेश मैत्री**—वर-कन्या के नवमांशेश परस्पर मित्र-मित्र अथवा मित्र-सम हों।

(*iv*) **नवमांशेश एकता**—वर-कन्या का एक ही नवमांशेश हो।

(2) वश्यकूट विचार—'वैश्य' का अर्थ है-वश में करने योग्य। सिंह राशि के अतिरिक्त सभी राशियाँ पुरुष (नर) राशियों के वश में हैं। जल राशियाँ (४, १० उ./१२)-नर राशियों (३, ६, ७, ९ पूर्वार्ध, ११) का भक्ष्य है। वृश्चिक राशि को छोड़कर शेष राशियाँ सिंह राशि के वश्य हैं। चतुष्पद, मानव, जलचर, वनचर तथा कीट आदि वश्य-पंचक-राशियों के अनुसार निम्न चक्र से ज्ञातव्य हैं-

वश्य	वर-कन्या राशि
चतुष्पद	मेष, वृष, धनु का उत्तरार्द्ध, मकर-पूर्वार्ध
मानव	मिथुन, कन्या, तुला, धनु का पूर्वार्ध, कुम्भ
जलचर	कर्क, मकर-उत्तरार्ध, मीन
वनचर	सिंह
कीट	वृश्चिक

गुण-विभाग—वश्य-विचार के अन्तर्गत वश्यों के परस्पर मैत्री, वैर, भक्ष्य और वश्य आदि 4 मूल तत्त्व हैं। एक समान वश्य अथवा मैत्री होने पर 2 गुण ; एक वश्य और दूसरा शत्रु होने पर एक गुण ; एक वश्य और एक भक्ष्य होने पर आधा गुण तथा एक शत्रु और एक भक्ष्य होने पर शून्य अर्थात् गुणाभाव होगा-जैसा-द्विपद (मानव) राशियों का जलचर राशियों से वश्य-भक्ष्य, सिंह (वन) से वैर-भक्ष्य, चतुष्पदों से वश्य-शत्रु सम्बन्ध है।

वश्य गुण चक्र

कन्या↓ वर→	चतुष्पद	मानव	जल	वन	कीट
चतुष्पद	2	1	1	0	1
मानव	1	2	1/2	0	1
जल	1	1/2	2	1	1
वन	0	0	1	2	0
कीट	1	0	1	0	2

वश्यकूट परिहार

(*i*) **राशीश मैत्री**—वर-कन्या के राशिस्वामी परस्पर मित्र-मित्र अथवा मित्र-सम हों।

(*ii*) **राशीश एकता**—दोनों का एक ही राशीश हो।

(*iii*) **नवामांशेश-मैत्री**–दोनों (वर-कन्या) के नवमांशेश परस्पर मित्र-मित्र या मित्र-सम।

(*iv*) **नवमांशेश-एकता**–दोनों का ही नवमांशेश हो।

(*v*) **योनि-मैत्री**–वर-कन्या में परस्पर योनि-मैत्री होने पर भी वश्य दोष का परिहार हो जाता है।

(3) ताराकूट विचार–ताराकूट का सम्बन्ध नक्षत्रों से है। जन्मनक्षत्र से गिरने पर तारा का ज्ञान होता है। जन्म, सम्पद्, विपद्, क्षेम, प्रत्यरि, साधक, वध, मैत्र, अतिमैत्र–ये नक्षत्र ही ताराएं होती है। ये शुभ और अशुभ दोनों प्रकार के हैं। कन्या के जन्म नक्षत्र से वर के जन्म नक्षत्र तक तथा वर के जन्म नक्षत्र से कन्या के जन्म नक्षत्र तक गिनकर दोनों तारा संख्याओं को अलग-अलग 9 द्वारा भाग देने पर यदि शेष 3, 5, 7 बचे तों '**अशुभ-तारा**' होती है, अन्यथा '**शुभतारा**' होगी।

यदि दोनों प्रकार से (वर-कन्या) शुभ तारा प्राप्त हो, तो समझना चाहिए कि ताराकूट दोष का अभाव है अर्थात् 3 गुण होंगे। यदि एक प्रकार से शुभतारा और दूसरे प्रकार से अशुभतारा मिले तो डेढ़ (1.5') गुण होंगे। यदि दोनों ताराओं में अशुभ तारा हो तो शून्य गुण होगा। **ध्यान रहे,** दोनों प्रकार से अशुभतारा कभी भी प्राप्त नहीं होती। **जैसे**–वर के नक्षत्र अश्विनी से कन्या के नक्षत्र मृगशिर तक गिनने पर 5वीं तारा (प्रत्यरि) होती है तथा कन्या के नक्षत्र मृगशिर से वर के नक्षत्र अश्विनी तक की नक्षत्र संख्या 24 हुई।

तारा गुण चक्र

शेषांक		वर								
		१	२	३	४	५	६	७	८	०
कन्या	१	3	3	1.5	3	1.5	3	1.5	3	3
	२	3	3	1.5	3	1.5	3	1.5	3	3
	३	1.5	1.5	0	1.5	0	1.5	0	1.5	1.5
	४	3	3	1.5	3	1.5	3	1.5	3	3
	५	1.5	1.5	0	1.5	0	1.5	0	1.5	1.5
	६	3	3	1.5	3	1.5	3	1.5	3	3
	७	1.5	1.5	0	1.5	0	1.5	0	1.5	1.5
	८	3	3	1.5	3	1.5	3	1.5	3	3
	०	3	3	1.5	3	1.5	3	1.5	3	3

तारादोष परिहार–(*i*) **राशीश मैत्री**–दोनों (वर-कन्या) के राशिस्वामी परस्पर मित्र-मित्र या मित्र-सम हों।

(*ii*) **राशीश एकता**–दोनों (वर-कन्या) का राशीस्वामी एक हो।

(*iii*) **नवमांशेश मैत्री**–दोनों के नवमांशेश मित्र-मित्र या मित्र-सम हों।

(*iv*) **नवमांशेश एकता**–दोनों के नवमांशेश एक हों।

(4) योनिकूट विचार–अश्विनी आदि नक्षत्रों के अनुसार जातक की योनि ज्ञात की जाती है। वर और कन्या की योनियों का आपसी वैर त्याज्य है। जैसे-गौ और व्याघ्र में, सिंह और गज, न्यौला और सर्प में, अश्व और महिष में, श्वान और हरिण में, वानर और मेष में, मूषक और मार्जार में, परस्पर महावैर (शत्रुता) है।

इसी प्रकार वर-वधू की योनियों में शत्रु-मित्रादि के सम्बन्धों के आधार पर गुणों की व्यवस्था की गई है।

योनि–बोधक चक्र

योनि	अश्व	गज	मेष	सर्प	श्वान	मार्जार	मूषक	गौ	महिष	व्याघ्र	मृग	वानर	नकुल	सिंह
नक्षत्र	अश्वि, शत	भर, रेव.	कृति, पुष्य	रोहि, मृग	आर्द्रा मूल	पुन, आश्ले.	मघा, पू.फा.	उ.फा., उ.भा.	हस्त स्वाती	चित्रा, विशा.	अनु ज्ये.	पू.षा., श्रव.	उ.षा. अभि.	धनि., पू.भा.

गुणविभाग –वर-कन्या की एक ही योनि होना शुभ है। योनियों में परस्पर अतिमित्रता हो तो ४ गुण, मित्र हो तो ३, सहज प्रकृति (उदासीनता) समान हो तो २, सामान्य वैर हो तो १ गुण तथा योनियों में अतिशत्रुता (महावैर) हो तो शून्य-अर्थात् गुणाभाव होगा।

योनि-गुण चक्र

योनि	अश्व	गज	मेष	सर्प	श्वान	मार्जार	मूषक	गौ	महिष	व्याघ्र	मृग	वानर	नकुल	सिंह
अश्व	4	2	3	2	2	3	3	3	0	1	3	2	2	1
गज	2	4	3	2	2	3	3	3	3	1	2	2	2	0
मेष	3	3	4	2	2	3	2	3	3	1	3	0	3	1
सर्प	2	2	2	4	2	2	1	2	2	2	2	2	0	2
श्वान	2	2	2	2	4	1	1	2	2	1	0	2	2	1
मार्जार	3	3	3	1	1	4	0	3	3	2	3	2	2	1
मूषक	3	3	2	1	2	0	4	2	2	2	2	2	1	2
गौ	3	2	3	2	2	2	2	4	3	0	3	2	3	1
महिष	0	3	3	2	2	2	2	3	4	1	2	2	2	1
व्याघ्र	1	1	1	2	1	1	2	0	1	4	2	1	2	2
मृग	3	3	3	2	0	2	2	3	2	1	4	2	2	1
वानर	2	2	0	2	2	2	2	2	2	1	2	4	2	1
नकुल	2	2	2	0	2	2	1	3	2	2	2	2	4	2
सिंह	1	0	1	2	1	2	2	1	1	2	1	1	2	4

(5) ग्रह मैत्री–ग्रह मैत्री कूट के सन्दर्भ में वर-कन्या के राशि स्वामियों का एक्य अथवा मैत्री भावादि अभिप्रेत्य है। (राशि स्वामी तथा नैसर्गिक 'मैत्री चक्र' का

ग्रह	मित्र	सम	शत्रु
मित्र	अति मित्रता	सामान्य मित्रता	सामान्य समता
सम	सामान्य मित्रता	समता	सामान्य शत्रुता
शत्रु	सामान्य समता	सामान्य शत्रुता	अतिशत्रुता

इसी प्रकार वर-वधू की योनियों में शत्रु-मित्रादि के सम्बन्धों के आधार पर गुणों की व्यवस्था की गई है।

भावादि अभिप्रेत्य है। (राशि स्वामी

सामान्य समता | सामान्य शत्रुता | अतिशत्रुता

विवरण गत पृष्ठों में नक्षत्र, राशि, वर्णादि तालिका चक्र में दिया गया है।)

ग्रह-सम्बन्धों से अन्ततः 5 प्रकार बन जाते हैं। यथा-दोनों मित्र हो तो 'अधिमित्र', दोनों शत्रु हों तो 'अधिशत्रु' और दोनों में समभाव हो तो 'सम' कहलाते हैं। स्पष्टता चक्र से प्राप्य है-

ग्रह मैत्री गुण बोधक चक्र

वर / कन्या	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
सूर्य	5	5	5	4	5	0	0
चन्द्र	5	5	4	1	4	½	½
मंगल	5	4	5	½	5	3	½
बुध	4	1	½	5	½	5	4
गुरु	5	4	5	½	5	½	3
शुक्र	0	½	3	5	½	5	5
शनि	0	½	½	4	3	5	5

गुण विचार–वर-कन्या की राशियों में परस्पर अधि-मित्रता या राश्यैक होने पर 5 गुण, एक सम और दूसरा मित्र हो, तो 4 गुण, एक-दूसरे के सम हो, तो 3 गुण, एक मित्र दूसरा शत्रु हो, तो 1 गुण, एक सम दूसरा शत्रु हो, तो आधा गुण, दोनों की राशियां परस्पर शत्रु हों, तो शून्य अर्थात् गुणाभाव होता है।

अष्टकूटों में राशि स्वामी की मैत्री को विशेष महत्त्व दिया गया है। मिलान में वर्ण, योनि, गण और षडाष्टक दोष होने पर भी यदि परस्पर राशि मैत्री पाई जाती हो तो अन्य किंचिद् दोषों का निवारण हो जाता है। यथा-

गणदोषो योनि दोषो वर्णदोषः षडाष्टकम्।
चत्वारि नैव दुष्यन्ति राशिमैत्री यदा भवेत्॥ —**बृहज्जयोतिः सार**

अपवाद–वर-कन्या के राशिपतियों में परस्पर वैर होने पर भी राशि नवांशपति परस्पर मित्र हो, तो विवाह शुभ माना जाता है। यथा-

राशिनाथे विरूद्धेऽपि सबल नवांशकाधिपौ।
तन्मैत्रेऽपि च कर्त्तव्य, दम्पज्योः शुभमिच्छता॥

(6) गण विचार–अश्वि., मृग., पुन., पुष्य, हस्त, स्वा., अनु., श्रव., रेवती नक्षत्रों का **देवता गण**, तीनों पूर्वा, तीनों उत्तरा, रोहिणी, भर० और आर्द्रा इन नक्षत्रों का **मनुष्यगण**, कृति., अश्ले, मघा, चित्रा, विशा., ज्ये., मूल, धनि. और शत. का **राक्षसगण**।

वर-कन्या का **एक ही गण** होने पर विवाह **उत्तम**, देव-मनुष्य हो तो शुभ, किसी एक का राक्षसगण और दूसरा मनुष्यगण हो अथवा किसी एक का देवगण और दूसरा राक्षस गण हो तो अशुभ एवं त्याज्य होता है।

गुण विभाजन–वर-कन्या का एक ही गण हो, तो ६ गुण, वर का देवगण एवं कन्या का मनुष्यगण हो तो भी ६ गुण, पर कन्या देवगण एवं वर का मनुष्यगण हो तो ५ गुण, एक का देवगण तथा दूसरा राक्षसगण अथवा एक का मनुष्यगण दूसरे का राक्षसगण हो, तो शून्य गुण होता है इत्यादि।

मनुष्यादि गणों का गुण बोधक चक्र

		वर		
	गुण	देव	मनुष्य	राक्षस
कन्या	देव	6	5	1
	मनुष्य	6	6	0
	राक्षस	0	0	6

गण दोष परिहार–

(क) राशिपतियों में परस्पर मित्रता या राशिनवांशपति में मित्रता हो, तो गणदोष नहीं रहता।
ग्रहमैत्री च राशिश्च विद्यते नियतं यदि। न गणभाव जनितं दूषणंस्याद विरोधदम्॥
गर्ग–मु. चिन्तामणि च

(ख) ग्रहमैत्री तथा वर-कन्या के नक्षत्रों की नाड़ियों में भिन्नता हो, तो गणदोष होने पर भी दोष नहीं होता। **–पीयूषधारा**

(ग) इसी भान्ति तारा, वश्य, योनि ग्रहमैत्री तथा भकूट की शुद्धि होने पर कोई दोषपत्ति नहीं होती। **–मुहूर्त्त मार्त्तण्ड**

(7) भकूट विचार–इसे 'राशिकूट' भी कहते हैं। भकूट का तात्पर्य वर एवं कन्या की राशियों के परस्पर अन्तर से है। यह छह प्रकार का होता है–प्रथम-सप्तक (समसप्तक), तृतीय एकादश, द्वितीय-द्वादश, चतुर्थ-दशम, पंचम-नवम (नवपंचम) तथा षडाष्टक (6-8).

इनमें द्विर्द्वादश, नवपंचम तथा षडाष्टक अशुभ भकूट हैं। तथा शेष (1-7), (3-11) तथा (4-10) शुभ भकूट होते हैं। भकूट को जानने की सरल विधि यह है कि वर की राशि से कन्या की राशि तक तथा कन्या की राशि से वर की राशि तक गणना करनी चाहिए। यदि दोनों की राशि आपस में दूसरी-बारहवीं हो तो द्विर्द्वादश भकूट होता है। तदनुसार गुण-विभाजन किया जाता है। स्पष्टता के लिए आगामी पृष्ठ पर चक्र देखें-

वर-कन्या की जन्म राशि परस्पर छठे एवं आठवें हो, तो **षडाष्टक दोष** होता है। यदि वर-कन्या की जन्म राशि परस्पर पांचवीं-नौवीं हो, तो **नव पंचम दोष**, यदि दोनों की राशियाँ परस्पर दूसरी और बारहवीं हो, तो **द्विद्वादश दोष** कहलाता है। **षडाष्टक दोष** (विशेषकर शत्रु-षडाष्टक) होने की स्थिति में वर-कन्या, इनके माता-पिता अथवा उनके किसी निकटस्थ बन्धु को मृत्यु-तुल्य कष्ट होने की सम्भावना होती है। **नवपंचम दोष** की स्थिति में विवाहित दम्पत्ति को संतान सम्बन्धी दुःख होने का भय होता है तथा **द्विद्वादश दोष** (शत्रुकूट) होने पर वर कन्या को धन हानि एवं आर्थिक परेशानियों का सामना रहता है।

षडाष्टक परिहार–(i) मेष-वृश्चिक, वृष-तुला, मिथुन-मकर, कर्क-धनु, सिंह-मीन तथा कन्या-कुम्भ आदि मित्र राशियों का षडाष्टक शुभ होता है, जबकि वैर-षडाष्टक ही विशेषतया त्याज्य होता है। यथा-१-६, २-९, ३-८, ४-११, ५-१०, ७-१२ राशियों का शत्रुगत षडाष्टक होने से त्याज्य माना जाता है।

भकूट गुण चक्र

	वर→	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
कन्या की राशि	मेष	7	0	7	7	0	0	7	0	0	7	7	0
	वृष	0	7	0	7	7	0	0	7	0	0	7	7
	मिथुन	7	0	7	0	7	7	0	0	7	0	0	7
	कर्क	7	7	0	7	0	7	7	0	0	7	0	0
	सिंह	0	7	7	0	7	0	7	7	0	0	7	0
	कन्या	0	0	7	7	0	7	0	7	7	0	0	7
	तुला	7	0	0	7	7	0	7	0	7	7	0	0
	वृश्चि.	0	7	0	0	7	7	0	7	0	7	7	0
	धनु	0	0	7	0	0	7	7	0	7	0	7	7
	मकर	7	0	0	7	0	0	7	7	0	7	0	7
	कुम्भ	7	7	0	0	7	0	0	7	7	0	7	0
	मीन	0	7	7	0	0	7	0	0	7	7	0	7

(ii) परन्तु परिहारस्वरूप **तारा-शुद्धि, राशीश-मैत्री, राशिवश्यैक्य,** अथवा **राशि स्वामी ग्रह समान** होने पर षडाष्टक दोष भी ग्राह्य होता है। यथा-

न वर्गवर्णौ न गणो: न योनिर्द्विद्वादशे चैव षडाष्टके वा।
तारा विरुद्धे नव पंचमे वा मैत्री यदा स्यात्शुभदो विवाहः॥ –बृ. ज्योतिस्सार

नव पंचम परिहार–

(i) वर की राशि से कन्या की राशि पांचवीं हो और कन्या की राशि से वर की राशि ९वीं हो, तो यह नव-पंचम शुभ होता है–

वरस्य पंचमे कन्या, कन्यायां नवमेवरः। एतत् त्रिकोणकं ग्राह्यां पुत्रपौत्र सुखावहम्॥
–बृहज्योतिषः सारः

(ii) मीन-कर्क, वृश्चिक-कर्क, मिथुन-कुम्भ और कन्या-मकर-ये चार नवपंचक विशेषतया त्याज्य माने जाते हैं।

मीनालिम्यां युते कीटे कुम्भे मिथुन संगते। मकरे कन्यकायुक्ते न कुर्यान्नवजचमे॥–शार्गंधर

(iii) वर-कन्या दोनों के चन्द्र राशि अधिपति अथवा राशि नवांशपति परस्पर मित्रक्षेत्री हों, तो नवपंचम अविचारणीय है।

द्वि-द्वादश दोष का परिहार–

(i) लड़के की राशि से कन्या की राशि दूसरी हो तो कन्या धन हानिकारक और १२वीं हो तो वह धनवती और पतिप्रिया होती है।

(ii) १-२, ३-४, ५-६, ७-८, ९-१० एवं ११-१२ राशियों का द्वि-द्वादश शत्रु-द्विद्वादश एवं च अनिष्टकर मानते हैं।

(iii) मतान्तर में **सिंह और कन्या** द्वि-द्वादश ग्राह्य है। **–मुहूर्त्तमार्त्तण्ड**

इसके अतिरिक्त कुछ परिस्थितियों में वर-कन्या की परस्पर राशि-स्थिति विशेष शुभकारी होती है। जैसे-वर-कन्या, दोनों की एक ही राशि १०वें का होना, दोनों की राशियों का परस्पर ३-११वें (त्रिरेकादश) होना, दोनों की राशियों का आपस में ४-१०वें होना एवं च दोनों की राशियों का परस्पर सप्तम (**समसप्तक**) होना वर-कन्या के वैवाहिक जीवन के लिए शुभफल प्रद होता है। परन्तु **अपवाद** रूप में, कर्क-मकर का तथा सिंह-कुम्भ राशियों का समसप्तक योग वर-कन्या के विवाह में शुभ नहीं माना गया–

मकरे कर्कटे चैव कुम्भे सिंहे तथैव च।
परस्परं सप्तमे च वैधव्यं तु विनिर्दिशेत्॥ **–ज्योतिनिवन्ध**

(८) नाड़ी दोष विचार–अष्टकूट निर्धारक तत्त्वों में नाड़ी का विशेष महत्त्व है। वर-कन्या की एक ही नाड़ी होना विवाह में अशुभ माना गया है। 36 गुणों में से इसके 8 गुण होते हैं। भिन्न नाड़ी के आठ गुण तथा नाड़ी समान होने पर गुणाभाव अर्थात् शून्य गुण होता है।

अश्वन्यादि २७ जन्म नक्षत्रों को तीन नाड़ियों (पंक्तियों) में विभाजित किया गया है–आदि, मध्य और अन्त्य। इनका विवरण निम्न चक्र में दिया गया है।

नाड़ी चक्र

आदि नाड़ी	अश्वि	आर्द्रा	पुन	उ.फा.	हस्त	ज्ये.	मूल	शत	पू.भा.
मध्य नाड़ी	भर	मृग	पुष्य	पू.फा.	चित्रा	अनु.	पूषा	धनि	उ.भा.
अन्त्य नाड़ी	कृति	रोह	श्ले.	मघा	स्वा	विशा	उ.षा.	श्रव	रेव

वर-कन्या का जन्म नक्षत्र एक ही नाड़ी में पड़ना विवाह में अशुभ माना जाता है। दोनों की **आदि (प्रथम)** नाड़ी हो, तो विवाह के पश्चात् उनका परस्पर वियोग आदि, **मध्य नाड़ी** हो, तो दोनों की हानि तथा **अन्त्य** नाड़ी हो तो वैधव्य या अतिशय दुःख होता है।**–बृहज्योतिषसार**

वर-कन्या के नक्षत्र एक ही नाड़ी वाले हों, तो नाड़ी दोष माना जाता है। एक समान नाड़ी वाले वर-कन्या को ज्योतिषाचार्यों ने बहुत अशुभ माना है।

विवाह में नाड़ी दोष का आचार्यों द्वारा विशेष महत्त्व दिया गया है। नारद ऋषि अनुसार–

एक नाडी विवाहश्च गुणैः सर्वे समन्वितः।
वर्जनीयः प्रयत्नेन दम्पत्योः निधनं यतः॥ (नारद)

गुण मिल रहे हों, परन्तु वर-कन्या की एक ही नाड़ी का

प्रयत्नपूर्वक त्याग करना चाहिए। यह दोष दम्पत्ति के लिए अनिष्टकर/घातक माना जाता है। नाड़ी दोष में एक ही नक्षत्र और समान नक्षत्र चरण होने पर भी सभी आचार्यों ने एकमत से अनिष्टकारी कहा है।

नाड़ी दोषापवाद एवं परिहार–

(*i*) वर-कन्या की एक ही राशि हो, परन्तु नक्षत्र अलग-अलग हों।

(*ii*) वर-कन्या दोनों का जन्म नक्षत्र एक हो, परन्तु राशियाँ भिन्न-भिन्न हों, तो नाड़ी दोष अविचारणीय है। (विवाह वृन्दावन)

(iii) वर-कन्या, दोनों का नक्षत्र एक हो, परन्तु चरण भिन्न-भिन्न हों।

(iv) नाड़ी दोष ब्राह्मणों के लिए, वर्णदोष क्षत्रियों के लिए, गण दोष वैश्यों के लिए तथा योनि दोष शूद्रों के लिए विशेष रूप से विचारणीय होता है–

नाड़ी दोषस्तु विप्राणां वर्णदोषश्च क्षत्रिये। गणदोषश्च वैश्येषु योनि दोषस्तु पाद्जान्॥

ध्यान रहे, ब्राह्मणेतर वर्ण जातियों के लिए नाड़ी दोष नितान्तः उपेक्षनीय नहीं होता॥

हमारे मतानुसार नाड़ी दोष का विचार सभी जाति के वर-कन्याओं के मिलान के सम्बन्ध में समान रूप से करना चाहिए। विशेष रूप से कर्क, वृश्चिक तथा मीन (४, ८, १२) राशियों के सन्दर्भ में।

(v) यदि वर-कन्या दोनों की एक राशि हो, परन्तु नक्षत्र भिन्न-भिन्न हों अथवा यदि दोनों का नक्षत्र एक हो और राशि अलग-अलग हो, एवं च नक्षत्र चरण भिन्न (पाद भेद) हो, तो ऐसी स्थिति में नाड़ी एवं गण दोष नहीं होता–अर्थात् शुभ होता है।

राश्यैक्ये चेद् भिन्नमृक्षं द्वयोः स्यान्नक्षत्रैक्ये राशियुग्मं तथैव।
नाड़ी दोषों नो गणानां च दोषो नक्षत्रैक्ये पादभेदे शुभंस्यात्॥–मुहूर्त संग्रह दर्पण

यद्यपि वर-कन्या का एक ही नक्षत्र अथवा एक ही राशि का होने से नाड़ी दोष का परिहार माना गया है, परन्तु यदि दोनों के नक्षत्र चरणों में समानता हो अथवा नक्षत्रों में पाद वेध* हो, तो विवाह सर्वदा त्याज्य एवं वर्जित होगा। यथा–

एक नक्षत्र जातानां नाड़ी दोषो न विद्यते। अन्यर्क्षनाड़ीवेधेषु विवाहो वर्जितः सदा॥
–ज्योतिष तत्त्व प्रकाश

अन्यत्र भी कहा गया है– **दम्पत्योरेक नक्षत्र भिन्नपादे शुभावहम्।**
दम्पत्योरेकपादे तु वर्षान्ते मरणं ध्रुवम्॥ (का. नि.)

पराशरानुसार भी यही अभिमत है–

पराशरः प्राह नवांशभेदाद एकनक्षत्र राशचोरपि सौमनस्यम्॥

***नोट**–ध्यान रहे, किसी नक्षत्र के प्रथम पाद और चतुर्थ पाद तथा दूसरे एवं तीसरे पाद में परस्पर वेध होना भी पाद-वेध कहलाता है।

(vi) '**नरपतिजचर्या**' अनुसार वर कन्या के नक्षत्र चरणों के I & IV, II & III तथा IV & I, III & II चरणों के मध्य ही पादवेध चरणों का विचार करना अनिवार्य होता है। इसके अतिरिक्त अन्य नक्षत्र चरणों के वेध जैसे I & III, II & IV नक्षत्र चरणों में वेधाभाव होने के कारण स्वल्पदोष रह जाता है। (मुहूर्त्त-चिन्तामणि)-पीयूषधारा-

आद्यांशेन चतुर्थांशं चतुर्थांशेन चादिमम्। द्वितीयेन तृतीयं तु तृतीयेन द्वितीयकम्॥
ययो भांशव्यधश्चैवं जायते वर कन्ययोः। तयो मृत्युर्न सन्देहः शेषांशाः स्वल्पदोषदाः॥

(vii) 'ज्योतिष चिन्तामणि' अनुसार रोहिणी, मृगशिर, आर्द्रा, ज्येष्ठा, कृतिका, पुष्य, श्रवण, रेवती एवं उत्तराभाद्रपद–इन नक्षत्रों में उत्पन्न वर-कन्या को नाड़ी दोष नहीं लगता।

रोहिण्यार्द्रा मृगेन्द्राग्नी पुष्यश्रवणपौष्णभम्।
अहिर्बुध्न्यर्क्षमेतेषां नाड़ी दोषो न विद्यते॥ –ज्यो० चिन्तामणि

नाड़ी आदि दोषों का परिहार होने की स्थिति में उनसे सम्बन्धित आधे गुणों को जोड़ (जमा कर) देने का भी विधान है।

उपयुक्त उपायों से परिहार–

हमारे मतानुसार गण, योनि, षडाष्टक, द्विद्वादश, नाड़ी आदि अष्टकूटों में परिहार वाक्य उपलब्ध हो जाने पर भी अपनी शक्ति एवं सामर्थ्यानुसार यथोचित संख्या में जप, पाठ, दानादि करवा लेना चाहिए।

'बृहस्पति संहिता' के अनुसार नाड़ी दोष की शान्ति के लिए **श्रीमृत्युञ्जय मन्त्र** का जाप (यथोचित संख्या में) करके ब्राह्मणों को गौ, वस्त्र, अनाज, घृतादि सहित भोजन एवं सुवर्ण, चांदी, रत्नों की दक्षिण आदि से सन्तुष्ट करने से नाड़ी दोष का परिहार हो जाता है–

अन्यत्र भी लिखा है–श्री महामृत्युञ्जय के जप-पाठ के उपरान्त–

षडाष्टके गोमिथुनं प्रदेयं, कास्यं सरूप्यं नवपंचमेच।
नाड्यां सुवर्णान्नमथो सुधेनुं द्विद्वादशे ब्राह्मणतर्पणं च॥

अर्थात् शत्रु षडाष्टक दोष होने पर गोमिथुन (एक गाय, एक बैल), **नवपंचम** में चांदी-कांसे का बर्तन, **नाड़ी दोष** में गाय, अन्न, सुवर्ण-वस्त्र का दान तथा **द्विद्वादश** में ब्राह्मणों एवं सुपात्र जनों को यथाशक्ति भोजन, दान-दक्षिणादि द्वारा सन्तुष्ट करने से मिलान सम्बन्धी **अष्टकूट दोषों** की शान्ति हो जाती है।

वर-कन्या की कुण्डली में नाड़ी-दोष हो, परन्तु अत्यन्त आवश्यक परिस्थितिवश विवाह करना आवश्यक हो, तो उस स्थिति में वर/कन्या का अर्क/कुम्भ विवाह, महामृत्युंजय जप, सुवर्ण, रत्न, चांदी, अनाजादि के दान, ब्राह्मण भोजन आदि के पश्चात् ही विवाह कार्य करना प्रशस्त होगा– **हेमाग्ध्यरत्नगोदानं मृत्युञ्जयजपस्तथा।**
कुर्यादवश्यमुद्वाहे नाडीदोषाऽपनुत्तये॥ (मुहूर्त्त गणपति)

शुद्ध वर-कन्या मेलापक सारिणी (भाग-१)

वर/नक्षत्र →		मेष			वृष			मिथुन			कर्क			सिंह			कन्या		
कन्या नक्षत्र ↓		अश्वि 1 से 4	भर. 1 से 4	कृति 1	कृति 2,3,4	रोह 1 से 4	मृग 1,2	मृग 3,4	आर्द्रा 1 से 4	पुर्न 1,2,3	पुर्न 4	पुष्य 1 से 4	श्ले 1 से 4	मघा 1 से 4	पू.फा. 1 से 4	उ.फा. 1	उ.फा. 2,3,4	हस्त 1 से 4	चित्रा 1,2
मेष	अश्वि 1 से 4	२८ 8	३३ 4	२८ 3,6	१८॥ 1236	२१॥ 1,2,3	२२॥ 1,2,3	२६ 1,3,5	१७ 1,5,8	१९ 1358	२३॥ 3,8	३१॥ 3	२८ 6	२१ 6,9,व	२५ 9,व	१५ 389व	११ 3578	९ 14578	१३॥ [illegible]
	भर 1 से 4	३४ 4	२८ 8	२९ 6	१९ 1,2,6	२३ 1,2,3	१४॥ 1238	१८ 1358	२६॥ 1,3,5	२७ 1,3,5	३१॥ 3	२३॥ 3,8	२५ 3,6	२० 6,9,व	१८॥ 8,9व	२६ 9,व	२१॥ 1,5,7	२० 1357	५ [illegible]
	कृति 1 चरण	२७॥ 3,6	२९ 6	२८ 8	१८ 1,2,8	१० 1268	१६॥ 1236	२० 1356	२०॥ 1356	२१ 1356	२५॥ 3,6	२६॥ 3,6	२३॥ 3,8	१७ 389व	२० 6,9व	२० 6,9व	१५॥ 1567	१६ 1567	१८ [illegible]
वृष	कृति 2,3,4	१९ 2,3,6	२० 2,6	१९ 2,8	२८ 8	२० 6,8	२६॥ 3,6	१७॥ 2,3,6	१७॥ 2,3,6	१८॥ 2,3,6	२२ 3,5,6	२३ 3,5,6	२० 3,5,8	१९ 358व	२२ 5,6व	२२ 5,6व	२१ 6,9	२१ 6,9	२३॥ [illegible]
	रोह 1 से 4	२४ 2,3	२३॥ 2,3	११ 2,6,8	२० 6,8	२८ 8	३६	२७ 1,2	२४ 1,2,3	२३ 1234	२६ 3,4,5	२७ 3,5	१२॥ 3468	१०॥ 3568	२४॥ 3,5व	२७ 5,व	२६ 4,9	२६ 4,9	[illegible]
	मृग 1-2	२३॥ 2,3	१५ 2,3,8	१९ 2,3,6	२७॥ 3,6	३५ -	२८ 8	१९॥ 1,2,8	२४॥ 1,2,4	२३ 1234	२६ 3,4,5	१९ 3,5,8	२१ 3,5,6	१९॥ 456व	१५ 3458	२४॥ 3,5व	२४ 3,9	२६ 4,9	[illegible]
मिथुन	मृग 3-4	२७ 3,5	१८ 3,5,8	२२ 3,5,6	२० 2,3,6	२७॥ 2,व	२० 2,8,व	२८ 8	३३ 4	३१॥ 3,4	१९॥ 2,4,5	१२ 2358	१४॥ 2356	२४ 3,4,6	२० 348व	२८॥ 3,व	३१॥ 3	३४ 4	[illegible]
	आर्द्रा 1 से 4	१९॥ 3,5,8	२७॥ 3,5	२१॥ 3,5,6	१९ 2,3,6	२५ 2,3,4	२६ 2,4	३४ -	२८ 8	२५ 4,8	१३ 24568	२०॥ 235व	१३ 2356	२४ 3,6,व	२९॥ 3,4व	२१॥ 3,4,8	२४॥ 3,4,8	२५ 3,4,8	[illegible]
	पुन. 1,2,3	२० 3,5,8	२७ 3,5	२३॥ 3,5,6	२०॥ 2,3,6	२३ 2,3,4	२४ 2,3,4	३१॥ 3,4	२४ 4,8	२८ 8	१६ 258व	२३ 2,5,व	१७ 235व	२३ 346व	२७ 3,4व	२२ 3,8व	२५ 3,8	२६ 3,8	[illegible]
कर्क	पुन. 4	२३ 1,3,8	२९॥ 1,3	२५॥ 1,3,6	२२ 1356	२४ 1345	२५ 1345	१८ 1245	१० 12568	१५ 1258	२८ 8	३५ -	२९॥ 3,6	१६॥ 1246	२०॥ 1234	१५॥ 1238	१८ 1358	१९॥ 1358	[illegible]
	पुष्य 1 से 4	३०॥ 1,3	२१॥ 1,3,8	२७ 1,3,6	२३ 1356	२५ 1,3,5	१८ 1358	११॥ 12358	१८॥ 1235	२२ 125व	३५ -	२८ 8	३० 6	२० 1236	१५॥ 1238	२३॥ 1,2,3	२६ 1,3,5	२७ 1,3,5	[illegible]
	श्ले. 1 से 4	२६ 1,6	२५ 1,3,6	२३ 1,3,8	१९ 1358	११॥ 14568	१९ 1456	१३ 12456	१२ 12456	१५॥ 1256	२८ 3,6	२९ 6	२८ 8	१५ 1248	१५॥ 1246	१८॥ 1236	२१॥ 1356	२१ 1356	[illegible]
सिंह	मघा 1 से 4	२० 6,9,व	२० 6,9,व	१६॥ 8,9,व	१७॥ 158व	९॥ 1568व	१७॥ 156व	२१॥ 146व	२२॥ 136व	२१ 1346व	१६॥ 2,4,6	२० 2,3,6	१६॥ 2,4,8	२८ 8	३० 6	२७ 3,6	१६ 1236	१६॥ 1236	२१॥ [illegible]
	पू.फा. 1 से 4	२६ 9,व	१८॥ 8,9,व	२० 6,9,व	२१ 156व	२३॥ 145व	१५॥ 1458	२० 148व	२८॥ 1,3,व	२६ 1,4,व	२२॥ 2,3,4	१७॥ 2,3,8	१६॥ 2346	३० 6	२८ 8	३५	२४ 1,2व	२३ 123व	७॥ [illegible]
	उ.फा. 1	१७ 8,9,व	२६ 9,व	२१ 6,9,व	२१ 156व	२६ 1,5,व	२५ 135व	२८॥ 1,3व	२१ 1,3,8	२१॥ 1,3,8	१७॥ 2,3,8	२५॥ 2,3	२० 2,3,6	२७॥ 3,6	३५ -	२८ 8	१७ 128व	१६॥ 128व	१३॥ [illegible]
कन्या	उ.फा. 2,3,4	१३ 3578	२२॥ 5,7	१६ 5,6,7	२१ 6,9	२६ 4,9	२४॥ 3,9	३१॥ 1,3	२३॥ 1,3,8	२४॥ 1,3,8	२० 3,5,8	२८ 3,5	२२॥ 3,5,6	१८ 2,6,व	२५ 2,व	१८ 2,8व	२८ 8	२७॥ 8	२५ 3,4,6
	हस्त 1 से 4	१० 34578	२० 3,5,7	१७॥ 5,6,7	२२ 6,9	२५ 9	२६ 9	३३ 1,4	२२॥ 1,3,8	२४ 1,3,8	२० 358व	२८ 3,5व	२३ 3,5,6	१८॥ 236व	२२॥ 2,3व	१६ 2,8व	२६ 8	२८ 8	२८ 4,6
	चित्रा 1,2	१३ 3567	४॥ 45678	१९ 3,5,7	२४ 3,4,9	२० 6,9	१२॥ 6,8,9	१९ 1,6,8	२६ 1,4,6	२५॥ 1,3,6	२१॥ 356व	१२॥ 3568व	२७ 35,व	२२॥ 2,3,व	८॥ 2368व	१४॥ 2346व	२४॥ 3,4,6	२७॥ 4,6	२८ 8

नोट—गुणों वाली संख्या (२, ३, ५) के नीचे उसी कोष्टक में दोष (1 ,2 ,3) की Figures में लिखे गए हैं। वर्ण दोष की जगह 1, द्विद्वादश दोष की जगह (2), तारादोष की जगह 3, योनिवैर की जगह 4, राशि मैत्री दोष की जगह 5, गणदोष की जगह 6, षडाष्टक की जगह 7, नाड़ी दोष की जगह 8, नवपंचम की जगह 9 और वश्य दोष को 'व' से अंकित किया गया है।

वर-कन्या मेलापक सारिणी – (भाग-२)

	वर/नक्षत्र → कन्या नक्षत्र ↓	मेष			वृष			मिथुन			कर्क			सिंह			कन्या		
		अश्वि 1 से 4	भर. 1 से 4	कृति 1	कृति 2,3,4	रोह 1 से 4	मृग 1,2	मृग 3,4	आर्द्रा 1 से 4	पुर्न 1,2,3	पुर्न 4	पुष्य 1 से 4	श्ले 1 से 4	मघा 1 से 4	पू.फा. 1 से 4	उ.फा. 1	उ.फा. 2,3,4	हस्त 1 से 4	चित्रा 1,2
तुला	चित्रा 3,4	२२॥ 3,4,6	१४ 3468	२८॥ 3,4	२४ 3,7	२०॥ 4,6,7	१२ 6,7,8	१३ 6,8,9	२१ 4,6,9	१९॥ 3,6,9	२०॥ 3,5,6	११ 3568	२६॥ 3,5,व	२५॥ 3,5,व	११॥ 3568	१७॥ 456व	१७॥ 2346	२० 2,4,6	२१ 2,8
	स्वा. 1 से 4	२७॥ 3,4	२१॥ 3	१७॥ 3,6,8	१३ 3678	१५॥ 3,7,8	२६ 4,7	२७ 9	२६॥ 4,9	२८ 9	२१ 5,व	२७ 3,5	१४ 3568	१३ 3568	२५॥ 3,5व	२५॥ 3,5व	२६ 2,3	२७॥ 2,3	२१ 2,4,6
	विशा 1,2,3	२२॥ 3,4,6	२३ 3,4,6	२०॥ 3,4,8	१५॥ 3478	१०॥ 3678	१८॥ 3,6,7	२० 3,6,9	२० 4,6,9	२१ 4,6,9	२२ 56,व	२१॥ 4,5,6	१८॥ 3,5,8	१७॥ 358,व	१९॥ 356व	१७॥ व3456	१७॥ 2346	१९ 2346	२७॥ 2,3
वृश्चिक	विशा 4	१७ 1467	१७ 1467	१४॥ 1478	१९॥ 1,4,8	१४॥ 1368	२२॥ 1,3,6	१२॥ 1567	१३ 1567	१३॥ 1567	१९॥ 4,6,9	१८॥ 4,6,9	१५॥ 3,8,9	२२ 1,3,8	२३॥ 136व	२१॥ 146व	१७॥ 1456	१८ 1456	२७ 135व
	अनु. 1 से 4	२५ 1,3,7	१५॥ 1378	२० 1367	२४॥ 1,3,6	२७॥ 1,3,4	२०॥ 1,3,8	१० 13578	१५ 13457	२०॥ 1,5,7	२६॥ 9	१८॥ 8,9	२१ 6,9	२५ 1,3,6	२१ 138व	२१॥ 1,3व	२५ 135व	२६ 135व	११॥ 1358
	ज्ये. 1 से 4	१२ 1678	१८॥ 1367	२५ 1,3,7	२१॥ 1,3	२२॥ 1,3,6	२२॥ 1,3,6	१३ 13567	३ 134578	५॥ 135678	१०॥ 3689	२० 6,9	२६ 9	३१ 1,4,व	२४ 136व	१७ 1368	१३ 13568	१३ 1568व	२४॥ 1345
धनु	मूल 1 से 4	१२ 4689	२१ 6,9	२५ 3,9	१९॥ 1,5,7	१३ 1567	१३॥ 1567	२१ 1356	१५ 1568	१२ 14568	७॥ 4678	१७॥ 3,6,7	२४ 4,7	२५ 9,व	२० 6,9व	९॥ 689व	१३ 1568	१३ 1568	२६ 1,4,5
	पू.षा. 1 से 4	२६ 9	१८॥ 8,9	१८॥ 4,6,9	१२॥ 14567	१८॥ 1457	११ 14578	१८॥ 1458	२७ 1,3,5	२७ 1,3,5	२३॥ 37,व	१३ 3478	१७॥ 3,6,7	१९ 6,9,व	१७॥ 8,9व	२५ 9,व	२८॥ 1,5	२७ 1,3,5	१३॥ 13568
	उ.षा. 1	२५ 3,9	२६ 4,9	१२ 4689	६ 15678	१० 14578	१७ 1457	२५ 1,4,5	२७ 1,3,5	२७॥ 1,3,5	२३॥ 37,व	२३॥ 3,7,व	८॥ 678व	८॥ 4689	२४ 4,9व	२५ 9,व	२८॥ 1,5	२८॥ 1,5	२१ 1,5,6
मकर	उ.षा. 2,3,4	२७ 3,5	२८॥ 4,5	१४॥ 4568	१२ 4689	१६ 4,8,9	२३ 3,4,9	२१ 1347	२२ 1,3,7	२२॥ 1,3,7	२८ 3,5	२८ 3,5	१४ 3568	४॥ 45678	२० 4,5,7	२१ 4,5,7	२४॥ 9,व	२५ 9,व	१७॥ 4,6,9
	श्रव 1234	२७ 3,5	२६॥ 3,4,5	१४ 4568	१२ 4689	१६ 4,8,9	२६ 4,9	२३ 147व	२१ 1,3,7	२२ 1,4,7	२८ 4,5	२६ 4,5	१५ 4568	६॥ 5678	१८॥ 4,5,7	२० 4,57	२४ 4,9व	२४॥ 4,9व	१९॥ 4,6,9
	धनि 1,2	२० 3456	११॥ 34568	२६ 3,4,5	२४ 3,4,9	२०॥ 4,6,9	१२ 4689	९ 1678	१६ 1467	१६ 1467	२२ 4,5,6	१३ 4568	२८ 4,5	१९॥ 4,5,7	५॥ 5678	१२॥ 4567	१६ 469व	१८ 469व	१५ 489व
कुम्भ	धनि 3,4	२० 4,5,6	१०॥ 4568	२६ 3,4,5	३०॥ 3,4	२७ 4,6	१९॥ 4,6,8	१२ 4,8,9	१९ 4,6,9	१८॥ 3469	१३ 4567	४॥ 45678	१९॥ 357व	२५॥ 3,5,व	११ 568व	१८॥ 456व	१८ 4,6,7	१९ 4,6,7	१७ 4,7,8
	शत 1 से 4	१५ 3568	२१ 3,5,6	२८ 3,5	३२॥ 3	२५॥ 3,4,6	२७ 4,6	२० 4,6,9	१२ 4698	१३ 6,9,8	८ 5678व	१४ 567व	२१ 5,7,व	२६॥ 3,5,व	२०॥ 356व	१२॥ 568व	११॥ 3678	९ 4678	२५ 4,7
	पू.भा. 1,2,3	१८ 4,5,8	२५ 3,4,5	२० 4,5,6	२५ 3,4,6	३१॥ 3,4	३१॥ 3,4	२५ 3,4,9	१७॥ 4,8,9	१८॥ 4,8,9	१३॥ 4578व	२० 457व	१३ 3567व	१९॥ 5,6,व	२५॥ 4,5व	१६॥ 458व	१५॥ 4,7,8	१५॥ 3478	१७॥ 3467
मीन	पू.भा. 4	१४॥ 1248	२२ 1234	१६॥ 1246	१९ 1456	२६ 1345	२६ 1345	२६ 145व	१८॥ 1व458	१९ 1458	१८ 4,8,9	२५ 4,9	१९ 4,6,9	१८ 1467	२३॥ 1347	१४॥ 1478	१६ 1458व	१७ 1458	१८॥ 1456
	उ.भा. 1 से 4	२५ 1,2,3	१७ 1238	१९ 1236	२१ 1356	२६ 135	१८ 1358	१७॥ 1358	२५ 135व	२८ 1,5,व	२७॥ 9	१९॥ 8,9	२१॥ 6,9	१९ 1367	१७ 1378	२६ 1,3,7	२७॥ 135व	२७ 135व	१० 14568
	रेव 1 से 4	२५ 1,2,4	२४॥ 1,2,3	११ 1268	१४ 1568	१७॥ 1358	२६ 1,3,5	२५ 135व	२४॥ 135व	२६ 1,3,5	२६ 3,9	२७॥ 9	१४ 6,8,9	१३ 1687	२३॥ 1,3,7	२४ 1,3,7	२६ 135व	२७ 135व	११॥ 1456

नोट–गुणों वाली संख्या (२, ३, ५) के नीचे उसी कोष्टक में दोष (1, 2, 3) की Figures में लिखे गए हैं। वर्ण दोष की जगह 1, द्विद्वादश दोष की जगह (2), तारादोष की जगह 3, योनिवैर की जगह 4, राशि मैत्री दोष की जगह 5, गणदोष की जगह 6, षडाष्टक की जगह 7, नाड़ी दोष की जगह 8, नवपंचम की जगह 9 और वश्य दोष को 'व' से अंकित किया गया है।

वर-कन्या मेलापक सारिणी – (भाग-३)

कन्या	नक्षत्र ↓ / वर/नक्षत्र →	तुला			बृश्चिक			धनु			मकर			कुम्भ			मीन	
		चित्रा 3,4	स्वा. 1 से 4	विशा 1,2,3	विशा 4	अनु 1 से 4	ज्ये 1 से 4	मूल 1 से 4	पू.षा. 1 से 4	उ.षा. 1 चरण	उ.षा. 2,3,4	श्रव 1 से 4	धनि 1,2	धनि 3,4	शत 1 से 4	पू.भा. 1,2,3	पू.भा. 4	उ.भा. 1 से 4
मेष	अश्वि 1 से 4	२२ ॥ 1346	२६ ॥ 1,3,4	२२ ॥ 1346	१८ ॥ 3467	२५ ॥ 3,7	१४ ॥ 6,7,8	१३ 6,8,9	२५ 4,9	२३ ॥ 1,3,9	२५ 1,3,5	२६ 1,3,5	२० 1456	२० ॥ 1456	१५ 1358	१६ 1358	१५ 2348	२५ 2,3
	भर 1 से 4	१३ ॥ 1368	२९ 1,3	२१ ॥ 1,3,6	१७ ॥ 3467	१७ ॥ 378	२० 3,6,7	२० 6,9	१८ ॥ 8,9	२६ 9	२७ ॥ 1,5	२६ 1,3,5	१० 14568	९ ॥ 14568	२० 1356	२४ 1345	२३ 2,3,4	१७ ॥ 2,3,8
	कृति 1 चरण	२७ ॥ 1,3,4	१५ 1368	१९ ॥ 1348	१५ ॥ 3478	१९ ॥ 3,6,7	२५ ॥ 3,7	२५ 3,9	१८ ॥ 4,6,9	१२ ॥ 6,8,9	१३ ॥ 1568	१२ 14568	२५ 1,3,5	२५ ॥ 1,3,5	२७ 1,3,5	१९ ॥ 1356	१७ ॥ 2346	१९ ॥ 2,3,6
वृष	कृति 2,3,4	२३ 1347	११ 13678	१४ ॥ 1378	२० ॥ 3,4,8	२४ ॥ 3,6	३० ॥ 3	२० 3,5,7	१४ 4567	७ 5678	१२ 6,9,8	१० ॥ 4689	२४ 3,4,9	२९ ॥ 1,3,4	३१ ॥ 1,3	२३ ॥ 1346	२० 3456	२२ 3,5,6
	रोह 1 से 4	१९ ॥ 1,6,7	१५ ॥ 1378	९ ॥ 1678	१५ 1368	२९ ॥ 3,4	२४ 3,6	१४ ॥ 3567	१९ ॥ 3,5,7	११ ॥ 4578	१६ 4,8,9	१७ ॥ 4,8,9	२० ॥ 4,6,9	२६ 1,4,6	२५ 1,3,6	३१ 1,3	२७ 3,4,5	२७ 3,4,5
	मृग 1-2	१२ 1678	२५ ॥ 1,7	१९ 1367	२५ 3,6	२१ ॥ 3,5,8	२४ ॥ 3,6	१५ 3567	१० ॥ 3578	१७ ॥ 3457	२२ 3,4,9	२५ ॥ 4,9	१३ 4689	१९ ॥ 1468	२७ 1,4,6	२९ ॥ 1,3,4	२६ 3,5	१८ 3,5,8
मिथुन	मृग 3-4	१४ 6,8,9	२७ 4,9	२१ 3,6,9	१४ 3567	११ 3578	१४ 3567	२३ 3,5,6	१८ ॥ 3458	२५ 3,4,5	२० ॥ 347व	२४ 4,7,व	११ 678व	१३ 6,8,9	२१ ॥ 6,9	२४ 3,9	२५ ॥ 3,5,व	१७ ॥ 3,5,8
	आर्द्रा 1 से 4	२१ 4,6,9	२७ 9	२० ॥ 4,6,9	१३ 4567	१७ ॥ 3457	३ 345678	१६ 3568	२८ 3,5	२८ 3,5	२३ ॥ 3,7व	२३ ॥ 3,7,व	१८ 467व	१९ ॥ 4,6,7	१२ ॥ 689	१७ ॥ 4,8,9	१९ 5,8,व	२६ ॥ 3,5व
	पुन. 1,2,3	२१ 3,6,9	२८ 9	२२ 6,9	१५ 5,7व	२२ 5,7व	७ 35678	१४ 34568	२७ 3,5	२७ 3,5	२२ ॥ 3,7व	२३ ॥ 3,7,व	१७ ॥ 3467	१९ 3469	१४ 6,8,9	१६ 4,8,9	१८ ॥ 4,8,9	२८ 5,व
कर्क	पुन. 4	२१ 1356	२८ 1,5व	२२ 156व	२० 6,9	२६ 9	१२ 3689	८ ॥ 14678	२१ 147व	२१ ॥ 147व	२६ 1,3,5	२७ 1,3,5	२१ 1456	१२ 14567	८ ॥ 1567	१० ॥ 14578	१६ ॥ 4,8,9	२६ ॥ 9
	पुष्य 1 से 4	११ 14568	२६ ॥ 1व35	२१ ॥ 1456	१९ ॥ 4,6,9	१८ ॥ 8,9	२१ 6,9	१७ ॥ 1367	११ ॥ 1478	२१ ॥ 1347	२६ 1,3,5	२५ 1345	१३ 13568	४ ॥ 145678	१४ 13567	१८ ॥ 1457	२४ 4,9	१८ ॥ 8,9
	श्ले. 1 से 4	२५ ॥ 1,3,5	१२ 1568	१७ ॥ 1,5,8	१५ 3,8,9	२० ॥ 6,9	२६ 9	२३ व 1,4,7	१६ 1367	७ ॥ 3678	१३ 4568	१३ 4568	२६ 1,4,5	१७ ॥ 1457	२० 1357	११ 14567	१८ 4,6,9	२१ 6,9
सिंह	मघा 1 से 4	२४ ॥ 1,3,5	११ ॥ 13568	१६ ॥ 1358व	२२ ॥ 3,8व	२६ 3,6व	३३ व	२५ 9,व	१९ ॥ 6,9व	८ ॥ 689व	३ ॥ 15678	४ ॥ 15678	१८ ॥ 1,5,7	२४ ॥ 1,5,व	२५ ॥ 1,5,व	१८ ॥ 156व	१९ 3,6,7	२० 3,6,7
	पू.फा. 1 से 4	१० ॥ 1568	२५ ॥ 135व	१८ ॥ 156व	२४ 3,6व	२३ ॥ 3,8व	२५ ॥ 3,6व	२० 6,9व	१७ ॥ 8,9,व	२४ 4,9व	१९ 1,5,7	१८ ॥ 1,5,7	४ ॥ 15678	११ 1568	१९ ॥ 156व	२४ ॥ 135व	२५ 3,7	१७ ॥ 3,7,8
	उ.फा. 1	१७ 13456	२५ ॥ 1,3,5	१६ ॥ 13456	२२ ॥ 3,4,6	३१ ॥ 3,व	१७ ॥ 3,6,8	९ ॥ 3689	२५ 9,व	२५ ॥ 9,व	२० 1,5,7	२० 1,5,7	११ ॥ 1567	१७ ॥ 1356	११ 3568	१५ ॥ 358व	१६ 3478	२६ ॥ 3,7
कन्या	उ.फा. 2,3,4	१६ ॥ 1246	२५ ॥ 1,2,3	१७ 1246	१८ 456व	२७ ॥ 3,5व	१३ ॥ 568व	१४ 3568	२९ ॥ 5	२९ ॥ 5	२४ ॥ 9,व	२५ 9,व	१७ 3,6,9	१६ ॥ 1367	१० ॥ 3678	१४ ॥ 1378	१७ ॥ 3,5,8	२८ 3,5व
	हस्त 1 से 4	२० 1246	२६ ॥ 1,2,3	१८ ॥ 1236	२० 3456	२६ 3,5व	१३ ॥ 3568	१५ 3568	२७ 3,5	२८ ॥ 5	२४ 9,व	२४ 9,व	१९ 4,6,9	१९ 1467	८ ॥ 34678	१३ ॥ 1378	१६ ॥ 3458	२६ ॥ 3,5व
	चित्रा 1,2	२० 1,2,8	१९ 1246	२६ ॥ 1,2,3	२८ ॥ 3,5व	११ 3568	२५ 345व	२७ 3,4,5	१४ 3568	२२ 3,5,6	१७ ॥ 3,6,9	१९ 6,9,व	१५ ॥ 4,8,9	१६ 1478	२४ 1,4,7	१६ ॥ 1467	१९ ॥ 3456	१० 34568

नोट—गुणों वाली संख्या (२, ३, ५) के नीचे उसी कोष्टक में दोष (1 ,2 ,3) की Figures में लिखे गए हैं। वर्ण दोष की जगह 1, द्विद्वादश दोष की जगह (2), तारादोष की जगह 3, योनिवैर की जगह 4, राशि मैत्री दोष की जगह 5, गणदोष की जगह 6, षडाष्टक की जगह 7, नाड़ी दोष की जगह 8, नवपंचम की जगह 9 और वश्य दोष को 'व' से अंकित किया गया है।

वर-कन्या मेलापक सारिणी – (भाग-४)

वर/नक्षत्र कन्या नक्षत्र		तुला			बृश्चिक			धनु			मकर			कुम्भ			मीन		
		चित्रा 3,4	स्वा. 1 से 4	विशा 1,2,3	विशा 4	अनु 1 से 4	ज्ये 1 से 4	मूल 1 से 4	पू.षा. 1 से 4	उ.षा. 1 चरण	उ.षा. 2,3,4	श्रव 1 से 4	धनि 1,2	धनि 3,4	शत 1 से 4	पू.भा. 1,2,3	पू.भा. 4	उ.भा. 1 से 4	रेव 1 से 4
तुला	चित्रा 3,4	२८ 8	२७ 4,6	३४ 3	२३॥ 2,3व	६ 2348व	२१ 234व	२७॥ 3,4,5	१४ 3568	२२ 3,5,6	२५ 3,6,व	२७ 6,व	२३॥ 4,8,व	१८॥ 4,8,9	२६ 4,9	१९ 3469	१२ 4567	३ 345678	१२ 34567
	स्वा. 1 से 4	२८ 4,6	२८ 8	२० 4,6,8	१० 248व	२१॥ 2,3व	१६॥ 236व	२३ 3,5,6	२७ 3,5	१९ 3,5,8	२२ 3,8,व	२३ 3,8,व	२७ 4,6	२१ 4,6,9	२० 4,6,9	२५ 4,9	१९ 457,व	१९॥ 357,व	१२ 3578
	विशा 1,2,3	३४॥ 3	१९ 4,6,8	२८ 8	१७॥ 2,8व	१६ 246व	२१॥ 234व	२७॥ 3,4,5	२२ 3,5,6	१४ 3568	१७ 368व	१७॥ 368व	३०॥ 3,4,व	२५ 3,4,9	२६ 4,9	२० 4,6,9	१४ 4567	१३॥ 4567	४ 45678
बृश्चिक	विशा 4	२३ 123व	७ 12468व	१६॥ 128व	२८ 8	२७॥ 4,6	३१॥ 3,4	२२ 1234	१७॥ 1362व	९ 12368	१२॥ 13568	१२॥ 13568	२५ 1345	२४ 1345	२६ 145,व	२० 1456	१९॥ 4,6,9	१८॥ 4,6,9	९॥ 4689
	अनु. 1 से 4	६॥ 12व68	२२ 123व	१६ 1246	२८ 4,6	२८ 8	३१ 6	१५ 12346	१३॥ 1238व	२२ 123व	२५ 1,3,5	२६ 1,3,5	१२ 13568	११ 1358	२१ 1356	२४॥ 145व	२४ 4,9	१८॥ 8,9	२७॥ 9
	ज्ये. 1 से 4	१९॥ 1234	१५ 126व	१९॥ 1234	३१॥ 3,4	३० 6	२८ 8	१४॥ 1248	१७॥ 1236	१७॥ 1व236	२० 1356	२० 1356	२५ 1,3,5	२४ 1345व	१८ 1358	१० 13568	९॥ 3689	२१॥ 6,9	२१ 6,9
धनु	मूल 1 से 4	२६ 1,4,5	२१ 1356	२६ 1,4,5	२३ 1234	१५॥ व2346	१५ व248	२८ 8	२८ 4,6	२६॥ 3,6	१५॥ 1236	१५॥ 1236	२०॥ 1234	२८॥ 1,3,4	२१॥ 1,3,8	१४॥ 1468	१६॥ 3468	२५ 6,व	२७ 6,व
	पू.षा. 1 से 4	१३ 1568	२७ 1,3,5	२१ 1356	१८ 246व	१५॥ 238व	१८ 246व	२८ 4,6	२८ 8	३४ -	२३ 124व	२३॥ 1,2,व	५॥ 1268	१४॥ 1468	२३॥ 1,4,6	२८॥ 1,4	३०॥ 4,व	२३॥ 8,व	३१ 3,व
	उ.षा. 1	२१ 1,5,6	१९ 1,5,8	१३ 1568	९॥ 268व	२४ 2,3व	१८॥ 2,3,6	२६॥ 3,4,6	३४ -	२८ 8	१६॥ 128व	१५ 1248व	१५॥ 1236व	२३॥ 1,3,6	२३॥ 1,3,6	२९॥ 1,3,4	३१ 3,व	३१ 3,व	२३ 3,8,व
मकर	उ.षा. 2,3,4	२४ 1,3,6	२२॥ 1,3,8	१५॥ 1368	१३ 4568	२७ 4,5	२१ 4,5,6	१६ 246व	२४ 2,4व	१७॥ 2,8व	२८ 8	२६ 4,8	२६॥ 4,6	१७॥ 126व	१७॥ 1236व	२३॥ 1234	३०॥ 3	३१ 3	२२॥ 3,4,8
	श्रव 1234	२७ 146व	२२॥ 148व	१७॥ 1468	१४ 3568	२७ 3,4,5	२२ 3456	१७॥ 246व	२३॥ 2,3व	१५ 248व	२५ 4,8	२८ 8	२८ 4,6	१९ 1246	१८ 1246	२१॥ 124व	२८॥ 3,4	२९॥ 3	२२॥ 3,8
	धनि 1,2	२३ 148व	२४॥ 146व	२९ 1,4व	२६ 3,4,5	१२ 4568	२६ 3,4,5	२१ 234व	७॥ 2468व	१६ 2346	२७ 3,4,6	२७॥ 4,6	२८ 8	१८॥ 128व	२४ 124व	२० 126व	२६॥ 3,6	१५॥ 4,6,8	२२॥ 3,4,6
कुम्भ	धनि 3,4	१८॥ 4,8,9	२० 4,6,9	२५ 3,4,9	२५ 4,5व	११ 4568	२५ 4,5व	२९॥ 3,4	१५॥ 3468	२४॥ 3,6	१८ 236व	१९ 246व	२० 2,8,व	२८ 8	३३ 4	२८॥ 3,6	१८ 236व	७ 2468व	१४॥ 246व
	शत 1 से 4	२६ 4,9	१९॥ 4,6,9	२६ 4,9	२६॥ 4,5व	२१ 356व	१९ 358व	२२॥ 3,4,8	२४॥ 3,4,6	२४॥ 3,4,6	१८॥ 236व	१८॥ 236व	२५ 2,4,व	३३ 4	२८ 8	१९॥ 4,6,8	८॥ 2468व	१७॥ 236व	१६ 236व
	पू.भा. 1,2,3	१९ 3469	२६ 4,9	२० 4,6,9	२०॥ 456व	२६॥ 4,5व	११ 4568व	१५ 3468	२९॥ 3,4	३०॥ 3,4	२४॥ 234व	२३॥ 234व	२०॥ 236व	२९ 3,6	१९ 4,6,8	२८ 8	१७॥ 2,8,व	२२॥ 2,4,व	२०॥ 234व
मीन	पू.भा. 4	१२ 14567	१९॥ 1457	१३॥ 14567	१९॥ 4,6,9	२५ 4,9	९ 4689	१५॥ 1468	२९ 134व	३० 1,3व	२९॥ 1,3,4	२८॥ 1,3,4	२५॥ 1,3,6	१७ 1236व	८ 12468	१७ 128व	२८ 8	३३ 4	३०॥ 3,4
	उ.भा. 1 से 4	३ 145678	१९॥ 1357	१२॥ 14567	१८॥ 4,6,9	१९॥ 8,9	२१॥ 6,9	२४॥ 136व	२२॥ 1,8व	३० 134व	२९॥ 1,3,4	२९॥ 1,3,4	१४॥ 1468	५॥ 12468	१६॥ 1236व	२२ 124व	३३ 4	२८ 8	३५ -
	रेव 1 से 4	१३ 14567	११ 1578व	४॥ 145678	१०॥ 4689	२७॥ 9	२२॥ 6,9	२७ 146व	२९॥ 1,3व	२१॥ 138व	२१ 1348	२१॥ 1348	२३ 1346	१४॥ 1246व	१६॥ 1236व	१८॥ 124व	३० 3,4	३४ -	२८ 8

नोट—गुणों वाली संख्या (२, ३, ५) के नीचे उसी कोष्टक में दोष (1,2,3) की Figures में लिखे गए हैं। वर्ण दोष की जगह 1, द्विद्वादश दोष की जगह (2), तारादोष की जगह 3, योनिवैर की जगह 4, राशि मैत्री दोष की जगह 5, गणदोष की जगह 6, षडाष्टक की जगह 7, नाड़ी दोष की जगह 8, नवपंचम की जगह 9 और वश्य दोष को 'व' से अंकित किया गया है।

तिथि, नक्षत्रादि गण्डान्त नक्षत्रों का विचार

(1) अश्विनी नक्षत्र–मेष राशि एवं केतु के इस नक्षत्र में उत्पन्न हुए बच्चे का जीवन प्रायः संघर्षशील होता है। इस नक्षत्र में **प्रथम चरण** में जन्म होने से पिता के लिए कष्टकारी, **दूसरे चरण** में फिजूलखर्ची, **तीसरे चरण** में भ्रमणशील तथा **चतुर्थ नक्षत्र** में कृश शरीर (अपने शरीर के लिए) कष्ट रहता है।

(2) आश्लेषा नक्षत्र–कर्क राशि एवं बुध के नक्षत्र के जातक प्रायः चंचल एवं चतुर बुद्धि वाले तथा परिवर्तनशील प्रकृति के होते हैं। **प्रथम चरण** में जन्म हो तो विशेष दोष नहीं, **दूसरे चरण** में पैतृक धन की हानि, **तीसरे चरण** में माता-पिता के लिए गण्डान्त शूल तथा **चतुर्थ चरण** में पिता के लिए अनिष्टकारी है–

आश्लेषाद्ये न गण्डं स्यातंधनगण्डं द्वितीयके। तृतीये मातृगण्डं तु पितृगण्डं चतुर्थके॥

(3) मघा नक्षत्र–सूर्य राशि और केतु के नक्षत्र में उत्पन्न जातक स्पष्टवादी, शीघ्र क्रुद्ध होने वाले, उद्यमी और धनवान होते हैं। **प्रथम चरण** में उत्पन्न हो तो माता-पिता को कष्ट या मातृ पक्ष की हानि, **दूसरे चरण** में पिता को परेशानी, **तीसरे चरण** में जन्म हो तो शुभ फलदायक, **चतुर्थ चरण** में जन्म हो तो विद्या, धनादि के लिए शुभ होता है।

(4) ज्येष्ठा नक्षत्र–मंगल की राशि (वृश्चिक) एवं बुध के नक्षत्र में उत्पन्न जातक सरल हृदय, तीक्ष्ण बुद्धि, धर्म परायण तथा उन्नति के कार्यों में अनेक बाधाओं से युक्त होते हैं। ज्येष्ठा नक्षत्र के **प्रथम पाद** (चरण) में उत्पन्न बच्चा ज्येष्ठ (बड़े) को अरिष्टकर, **दूसरे चरण** में पैदा हो तो छोटे भाई को नेष्ट, **तीसरे चरण** में पिता के लिए अरिष्टकर तथा यदि **चतुर्थ चरण** में उत्पन्न हो जातक स्वयं अपने एवं पिता के लिए अनिष्टकारी होता है।

ज्येष्ठाद्यपादेऽग्रजमाशुं हन्याद् द्वितीयपादे यदि तत्कनिष्ठम्।
तृतीयपादे पितरं निहन्ति स्वयं चतुर्थे मृतिमेति जातः॥ (जातक-पारिजात)

ज्येष्ठा नक्षत्र और मंगलवार के योग में उत्पन्न कन्या बड़े भाई के लिए अरिष्टकारक होती है।

(5) अभुक्त मूल नक्षत्र–ज्येष्ठा नक्षत्र की अन्तिम २ घटियाँ तथा मूल नक्षत्र के आरम्भ की २ घटियाँ–कुल चार घड़ियाँ **अभुक्त मूल** गण्ड नक्षत्र कहलाते हैं। इनमें उत्पन्न कन्या, पुत्र, पशु और नौकर कुल के लिए अनिष्टकारी होते हैं। इनमें उत्पन्न बच्चे को बिना शान्ति कराये न देखें।

अभुक्त मूलं गठिका चतुष्टयं ज्येष्ठान्त्यमूलादि भवं हि नारदः।
जातं शिशुं तत्र परित्यजेत् वा मुखं पिताऽस्याष्ट समा न पश्येत्॥

अभुक्त मूल–नक्षत्रों की आद्यान्त घटियों के बारे में विद्वानाचार्यों में मतान्तर पाया जाता है। यथा–नारद के अनुसार ज्येष्ठा, मूल नक्षत्र की चार घटियाँ, वशिष्ठ के अनुसार २ घड़ियाँ तथा बृहस्पति के मतानुसार केवल १-१ अभुक्त-मूल संज्ञक है। अभुक्तमूलोत्पन्न बालक यदि जीवित रहे, तो अपने वंश की वृद्धि करने वाला, धनवान् एवं सम्पत्तिवान होता है।

मूल नक्षत्र–केतु के नक्षत्र और गुरु की राशि (धनु) में उत्पन्न जातक धार्मिक रुचि वाला, उदार हृदय, मिलनसार, परोपकारी, धन-वाहनादि सुखों से युक्त होता है। चरण भेदानुसार मूल के **प्रथम चरण** में उत्पन्न जातक पिता की हानि करता है। **दूसरे चरण** में माता की हानि, **तीसरे चरण** में धन का नाश तथा **चौथा चरण** शुभ होता है। नक्षत्र की विधिपूर्वक शान्ति करवा लेने से अनिष्ट का भय नहीं रहता।

मूलाद्यपादे पितरं निहन्याद् द्वितीयके मातरमांशु हन्ति।
तृतीयजो वित्तविनाशकः स्यात् चतुर्थपादे समुपैति सौख्यम्॥ (जातक-पारिजात)

मूल नक्षत्र और रविवार दोनों के योग में उत्पन्न कन्या श्वसुर के लिए अनिष्टकारी होती है–

भौमवासरे योगेन ज्येष्ठाजा ज्येष्ठ सोदरम्॥ भानुवासरयोगेन मूलजा श्वसुरं हरेत्॥

मूल नक्षत्र फल का अन्य प्रकार

मूल नक्षत्र की सम्पूर्ण घटियों को 15 द्वारा भाग देकर 15 खण्ड बना लें। प्रत्येक खण्ड का फल इस प्रकार से होगा। **प्रथम भाग** हो तो पिता के लिए अनिष्टकर, **दूसरे में** चाचा की हानि, **तीसरे में** बहनोई की हानि, **चौथे में** पितामह (दादा) की हानि, **आठवें में** चाची के लिए अनिष्टकर, **नवमे में** सबके लिए अनिष्टकर, **दसवें अंश में** पशु का नाश, **ग्यारहवें में** नौकर का नाश होता है। **बारहवें अंश में** स्वयं जातक का नाश होता है। **तेरहवें अंश में** हो तो उसके ज्येष्ठ भाई का नाश, **चौदहवें अंश में** जातक की बहिन का अनिष्ट होता है। अगर **पन्द्रहवें में** हो तो नाना को कष्ट (अनिष्ट) होता है।

उदाहरणार्थ यदि मूल का सर्वर्क्ष योग ६४ घड़ी १८ पल है, तो इसमें १५ द्वारा भाग देने से लब्ध प्रथम भाग में ४ घड़ी, १७ पल हुए। मान लो कि जन्मकालीन भयात् २८।४५ है। ४।१७ घट्यादि को ९ से गुणा करने पर पता चला कि ३८।३३ पर नौवां खण्ड (भाग) समाप्त होकर ३८।४५ पर दसवां भाग पड़ता है। तदनुसार फल चौपाय आदि पशु के लिए अनिष्ट रहेगा।

(6) रेवती नक्षत्र–बुध के नक्षत्र और गुरु की राशि (मीन) में उत्पन्न जातक सर्वप्रिय, विद्यावान, सुन्दर आकृति, तर्कशील एवं धनवान् होता है। रेवती के **प्रथम चरण** में जन्म हो तो राजा के समान वैभवशाली, **दूसरे में** मन्त्री के समान सुख साधनों से युक्त, **तीसरे में** जन्म होने से धनवान तथा **चतुर्थ में** जन्म होने से माता-पिता के लिए अरिष्टकारी होता है।

दिवाजातस्तु पितरं रात्रौ तु जननीं तथा। आत्मानं संध्ययोर्हन्ति ततो गण्डं विवर्जयेत्॥

गण्डमूल नक्षत्र शान्ति के लिए हमारे कार्यालय से प्रकाशित **'सम्पूर्ण गण्डमूल नक्षत्र-शान्ति प्रयोग' पुस्तक मंगवा लेवें। मूल्य-75 रुपए।**

भारतीय संस्कृति में संस्कारों का महत्त्व

(मुख्य-मुख्य मुहूर्त्तों का निर्णय स्वयं करें)

भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति में संस्कारों का विशेष महत्त्व है। प्राचीन ऋषियों ने गर्भाधान से लेकर अन्त्येष्टि कर्म तक **षोडश-संस्कारों** के महत्त्व को एकमत से स्वीकार किया है। मनुष्य जन्म से अबोध होता है, परन्तु संस्कारों से मनुष्य के आन्तरिक एवं बाह्य व्यक्तित्व का निखार व परिष्कार होता है। जैसे, शास्त्र में कहा गया है–

जन्मना जायते शूद्रः संस्काराद् द्विज उच्यते।
वेद पाठात् भवेद् विप्रः, ब्रह्म जानाति ब्राह्मणः॥

अतएव सुख, समृद्धि एवं कल्याण चाहने वाले प्रत्येक वर्ण के गृहस्थी मनुष्य को भारतीय परम्परा एवं संस्कृति का अनुगमन करते हुए गर्भाधान, पुंसवन, नामकरणादि संस्कारों को धारण करना चाहिए। शास्त्र विधि अनुसार बच्चे के संस्कार करने से बालक/कन्या मेधावी, धनी, यशस्वी एवं दीर्घायु होता है॥

षोडश संस्कार इस प्रकार से हैं–

(१) गर्भाधान (२) पुंसवन (३) सीमन्तोन्नयन (४) जातकर्म (५) नामकरण (६) निष्क्रमण (७) अन्न प्राशन (८) चूडाकरण (मुण्डन), **(९) यज्ञोपवीत (१०) से (१३) तक चतुर्वेदीय व्रत, (१४) समानवर्त्तन (१५) विवाह (१६) अन्त्येष्टि।**

☞(१) गर्भाधान संस्कार–यह प्रथम संस्कार है, जो स्त्री के ऋतु (रजस्वला) स्नान के पश्चात् किया जाता है। भार्या के स्त्री धर्म (रजोदर्शन) में होने के १६ दिन तक वह गर्भ-धारण के योग्य रहती है। **रजोदर्शन** के दिन ६, ८, १०, १२, १४, १६वें दिनों में क्रियमाण गर्भाधान पुत्रदायक तथा विषम दिनों (५, ७, ९, ११, १३, १५) में कन्या-प्रद होता है। उपरोक्त दिनों में भी शुद्ध मुहूर्त्त दिनों का विचार किया जाता है।

(१) गर्भाधान संस्कार का मुहूर्त्त

शुभतिथियां–१ (कृष्ण) २, ३, ५, ७, १०, ११, १२, १३ (शुक्ल)

शुभ वार–सोम, बुध गुरु एवं शुक्रवार

शुभ नक्षत्र–रोह, मृग, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, पुन, पुष्य, स्वा, अनु, श्रव, धनिष्ठा व शतभिषा।

शुभ लग्न–लग्न, केन्द्र-त्रिकोण में शुभ ग्रह हों एवं लग्न को सूर्य, मंगल, और गुरु देखते हों, तो गर्भाधान से पुत्रोत्पत्ति की संभावना होती है। इसके अतिरिक्त **पुत्रार्थी** विषम लग्न राशि एवं विषम नवांशगत लग्न में तथा कन्याकांक्षी सम लग्न राशि में स्त्री संग करें।

गर्भ-धारण के दिन स्त्री-पुरुष दोनों का चन्द्र-बल प्राप्त होना शुभ होता है।

गर्भाधान के लिए त्याज्य काल–रजोदर्शन से प्रथम चार रात्रि को छोड़कर, रिक्ता तिथि, जन्म नक्षत्र, मघा-अश्ले आदि तीनों गण्डांत, मूला, भरणी, अश्विनी, रेवती नक्षत्र, ग्रहण का दिन, माता-पिता के श्राद्ध का दिन, वैधृति, परिघ का पूर्वार्ध, संक्रान्ति, व्यतीपात, ग्रहण, सन्ध्या, दिन का समय, जन्म राशि से अष्टम लग्न, दीवाली, दशहरा, नवरात्र आदि पर्व दिनों को स्त्री संसर्ग में त्याग करना चाहिए।

गर्भ मासों के अधिपति

गर्भाधान से लेकर नव एवं दस मास तक भिन्न-भिन्न ग्रह अधिपति होते हैं। अरिष्टभय की स्थिति में उसी मास से सम्बन्धित ग्रह की पूजा-दानादि करना चाहिए।

मास	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०
स्वामी	शुक्र	मंगल	गुरु	सूर्य	चंद्र	शनि	बुध	आधानकालिक लग्नेश	चंद्र	सूर्य

☞(२) पुंसवन संस्कार मुहूर्त्त–यह संस्कार गर्भधारण से तीसरे मास में किया जाता है। इस मास का स्वामी गुरु है। इस दिन श्री विष्णु पूजा करना शुभ होता है। इस संस्कार के शुभ मुहूर्त्त इस प्रकार से हैं।

शुभवार–रवि, चंद्र, मंग, बुध, गुरु व शुक्र। **मंगल** व बुध वारों में मं. बु. उदित होने चाहिएं।

शुभ तिथियां–१ (कृ) २, ३, ५, ७, १०, १२, १३ (शुक्ल)।

शुभ नक्षत्र–रोहणी, मृग, पुन. पुष्य, हस्त, तीनों उत्तरा, श्रवण, अनु एवं रेवती नक्षत्र। विद्ध नक्षत्र त्याज्य हैं।

☞(३) सीमन्त संस्कार–यह तृतीय संस्कार है, जो गर्भ धारण से ६, ८ वें मास, जब मास-स्वामी बली हो। **शुभवार**–रवि, मंगल, एवं गुरु।

शुभ तिथियां–२, ३, ५, ७, १०, ११, १३ (शुक्ला)।

नक्षत्र–मृग, पुन, पुष्य, हस्त, मूल, श्रवणः

लग्न–१, ३, ५, ७, ९ आदि विषम लग्न, केन्द्र त्रिकोण में शुभग्रह हों॥

(३) (क) श्री विष्णु पूजा मुहूर्त्त–यह पूजा गर्भाधान से आठवें मास गर्भरक्षा के उद्देश्य से की जाती है। इसमें शंख चक्र-गदा-पद्मधारी भगवान विष्णु की यथाशक्ति, सुवर्णमयी प्रतिमा बनवाकर षोडशोपचार से पूजा करके परिधान सहित, प्रतिमा को ब्राह्मण को दान करें।

शुभ तिथियां–२, ७, १२

शुभ वार–चंद्र, बुध, गुरू, शुक्र।

शुभ नक्षत्र–रोहिणी, पुष्य और श्रवण।

☞(४) जातकर्म संस्कार–कुछ शास्त्रकार प्रसव के समय नालछेदन के पूर्व ही इस संस्कार को कार्यान्वित करने की आज्ञा दी है। परन्तु आजकल नरघटी अथवा १६ घटी तक कर लेना चाहिए।

कुछ लोग परम्परानुसार **११वें** अथवा **१२वें** दिन कर लेते हैं।

शुभ तिथियां–१ (कृ.) २, ३, ५, ७, १०, १२, १३ (शु.)
शुभ वार = चं., बु,, गु., शु.

नक्षत्र–अश्वि. रोह, मृग, पुन, पुष्य, उत्तरा-तीनों, हस्त, चित्रा, स्वा., अनु., श्रव., धनि, शत, रेव।

☞मेघा-जनन संस्कार–जात कर्म के साथ ही इस कृत्य का निष्पादन करना चाहिए। बालक/बालिका मेधावी, कीर्तिमान एवं सौभाग्यशाली हो, इसके लिए दाएं हाथ की अनामिका अंगुली से शहद एवं गोधृत चार बार बच्चे को चटाएँ। चारों बार क्रमशः **''ॐ भूस्त्वपि धधामि।'' ॐ भुस्त्वपि दधामि।''** तथा **ॐ भूर्भुवस्वः सर्वत्वपि दधामि। मंत्रों का उच्चारण करें।** इसके साथ ही कुछ घृत-मिश्रित गुड़ भी बालक के तालु में लगा देना शुभ होता है। जिससे बच्चे को स्तनपान के पूर्व ही कुछ चूसने की आदत हो जाए। (अंगुली के अतिरिक्त सुवर्ण या चांदी के चम्मच का भी प्रयोग कर सकते हैं।

☞(५) स्तनपान का मुहूर्त्त–जन्मान्तर ५वें या ७वें किसी दिन नीचे लिखे भद्रा, व्यति, वैधृति, व्याघात आदि योगों को छोड़कर निम्न शुभ मुहूर्त्त माता संतान को प्रथम बार स्तनपान कराए।

शुभ तिथि–१ (कृ.), २, ३, ५, ७, १०, ११, १३ (शु.), १५,

शुभ नक्षत्र–रोह., मृग. ,पुन, पुष्य, उत्तरा ३ हस्त, चित्रा, अनु, श्रव. धनि, व रेवती॥

शुभ वार–चंद्र, बुध, गुरु व शुक्र।

शुभ लग्न–२, ३, ४, ६, ७, ९, १२ राशि लग्न।

सूतिका पथ्य में भी उपरोक्त मुहूर्त्त ग्राह्य है।

☞(६) षष्ठी पूजन–जन्म से पांचवें दिन, जीवन्ती देवी का पूजन करना चाहिए। **इसी प्रकार छेठे दिन रात्रि में षष्ठी**

पूजन, कात्यायनी देवी' का आनन्द मंगल व गीत वाद्य के साथ पूजन करना चाहिए। जीवन्ती एवं षष्ठी पूजा में सूतक की दोष आपत्ति नहीं होती। देशाचारानुसार कोई २१वें या ३१वें दिन की षष्ठी पूजन करते हैं।

☞ **(७) प्रसूता स्नान मुहूर्त्त**–सूतिका स्नान बच्चे के जन्मदिन से एक सप्ताह के बाद करना चाहिए।

शुभ तिथियां–१ (कृ.) २, ३, ५, ७, १०, ११, १३ (शु.) १५।

शुभ वार–रवि, मंगल, गुरू, शुभ हैं। सोम एवं शुक्रवार मध्यम हैं।

शुभ नक्षत्र–अश्वि., रोह, मृग, तीनों उत्तरा, हस्त, स्वा., अनु., रेव.।

शुभ लग्न–२, ३, ४, ६, ७, ९, १२ सौम्य ग्रह से युत या दृष्ट।

☞ **(८) नामकरण संस्कार**–यद्यपि प्रत्येक मनुष्य के बाह्य एवं आन्तरिक व्यक्तित्व पर उसके परिवेश एवं परिस्थितियों का विशेष प्रभाव होता है। परन्तु ज्योतिष आचार्यों के अनुसार मनुष्य के व्यक्तित्व के विकास में उसके प्रसिद्ध नाम का भी विशेष महत्त्व होता है–

> **''नामाखिलस्य व्यवहार हेतुः, शुभावहं कर्मसु भाग्य हेतुः।**
> **नाम्नैव कीर्ति लभते मनुष्यस्ततः प्रशस्तं खलु नाम कर्म॥''**

गृहारम्भ–प्रवेश, युद्ध व्यापार, व्यावहारिक कार्य, दान, मन्त्र-सिद्धि, भाग्य, पुनर्विवाह, रोगोत्पत्ति तथा स्वामी-सेवक के पारस्परिक कृत्यों में नाम राशि वांछनीय है।

☞ **नामकरण**–सूतक-समाप्ति पर देशानुसार १०, ११, १२, १३, १६, १९, २२वें दिन संस्कार करना चाहिए। एक अन्य मतानुसार ब्राह्मण को १० या १२वें दिन, क्षत्रिय को ११ या १२ वें दिन वैश्य को १६ या २०वें दिन नामकरण संस्कार करना चाहिए। नामकरण पिता-पितामह या कुल के वृद्ध व्यक्ति के द्वारा स्वास्ती वाचन मन्त्रों सहित (विद्वान ज्योतिषी से कुण्डली परामर्श के बाद) उच्चारित करवाना चाहिए।

शुभ तिथियाँ–१ (कृष्ण), २,३,७,१०,११,१२,१३ (शुक्ल)।

शुभ वार–चंद्र, बुध, गुरु, शुक्र।

शुभ नक्षत्र–अश्वि, रोह, मृग, पुन, पुष्य, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, स्वा, अनु, श्रव, धनि, शत, रेवती।

शुभ लग्न–१,४,६,७,९,१२ लग्न शुभ ग्रह युत या दृष्ट हों। भद्रा, ग्रहण, श्राद्ध दिन, दुष्ट योग, संक्रान्ति आदि रहित काल में, सुयोग्य ज्योतिषी से प्रथम नामाक्षर पूछ कर कानों को मधुर लगने वाले अक्षर, महापुरुषों के नाम सदृश अथवा शुभ सार्थक शब्दों वाला नाम रखना कल्याणकारी रहता है।

बालक के दाँत निकलने का फल

यदि पहले मास में बालक के दाँत निकल आएं तो स्वयं अपनी आयु के लिए अरिष्टकारक, दूसरे मास में भाई को, तीसरे मास में बहिन को, चौथे मास में माता को, पाँचवें मास में बड़े भाई के लिए विशेष कष्टकारी होता है, **छटे मास में दाँत निकलें** तो अत्यन्त सुख, सातवें मास में पिता से सुख, आठवें मास में देह की पुष्टता, नवें मास में लक्ष्मी की प्राप्ति, दसवें मास में सौख्य प्राप्ति, ११वें निकलें तो **अति सौख्य**, १२वें मांस में निकलें तो विपुल धन-प्राप्ति होती है। यदि गर्भ से ही दाँतों सहित उत्पन्न हुआ हो वह माता-पिता के सुख से विहीन अथवा ऊपर की पंक्ति के दाँत पहलें निकले तो भी माता-पिता तथा नानके पक्ष के लिए हानिकारक माना जाता है। यदि उपरोक्त अशुभ मासों में बालक को दन्तोत्पत्ति की संभावना हो तो मृत्युज्जय का जाप, ग्रह शान्ति एवं उचित दान आदि करने से अशुभत्व का निवारण तथा अरिष्ट की शान्ति हो जाती है।

मास	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
फल	स्वयं को अरिष्ट	भ्रातृ कष्ट	बहिन को कष्ट	मातृ कष्ट	ज्येष्ठ भ्रातृ कष्ट	सुख	पिता से सुख	देह सुख	धन प्राप्ति	सौख्य प्राप्ति	अति सौख्य	विपुल धन

☞ **(९) झूला आरोहन मुहूर्त्त**–बालक के जन्मदिन से १०, १२, १६, २२ एवं ३२वें दिन बालक को आराम देह झूले में सुलाना चाहिए। झूले में डालने से पूर्व शुभ तिथि, वार, नक्षत्र, योगादि का विचार कर लेना चाहिए। झूले में माता या दादा, दादी के द्वारा, भगवान् विष्णु का ध्यान करते हुए बच्चे का सिर पूर्व की ओर रखकर शिशु को सुलाना चाहिए।

शुभ तिथियां–१ (कृ), २,३,५,७,१०,११,१३ (शुक्ल) व पूर्णिमा।

शुभ वार–सोम, बुध, गुरु, एवं शुक्रवार।

ग्राह्य नक्षत्र–अश्वि, रोहिणी, मृग, पुनर्वसु, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा तथा अनुराधा।

☞ **(१०) निष्क्रमण मुहूर्त्त**–जन्म से ३,४ मासों में निम्नलिखित शुभ योगों में बालक को प्रथम बार घर से बाहर निकालना हितकर होता है। शीघ्रता में आवश्यक हो तो जन्म से १२वें दिन भी निष्क्रमण लिखा गया है।

शुभ तिथियां–१ (कृ) २,३,४,७,१०,११,१२ (शु.) एवं १५।

शुभ वार–सोम, बुध, गुरु तथा शुक्र।

शुभ नक्षत्र–अश्वि, मृग, पुन, पुष्य, हस्त, अनु, श्रव, धनि।

शुभ लग्न–२,३,४,५,६,७,९,१०,११ राशि लग्न।

माता, दादी आदि आत्मीयजन बालक को स्नानादि करवा कर वस्त्रादि से अलंकृत करें तथा पुण्याहवाचन, शंख और मंगल मंत्रों एवं गीत-वाद्य सहित ध्वनि के साथ उसे प्रथम देवालय (मन्दिर) में ले जावें। वहाँ देव पूजा व अर्चना करके आत्मीयजन शुभाशीष दें तथा मन्दिर की परिक्रमा करके स्वगृह लौट कर बच्चे को ननिहाल या मौसी के घर ले जावे। पुनः गृहागमन के समय दीर्घायु संज्ञक आशीर्वचनों से बालक का अभिनन्दन करें। पुनश्च, निष्क्रमण तृतीय मास में हो, तो बालक को सूर्य-दर्शन तथा चतुर्थ मास में हो तो चन्द्र-दर्शन करवाना चाहिए।

☞ **(११) भुम्युपवेशन-मुहूर्त्त**–जन्म से पंचम मास में मंगल के बलान्वित होने पर बालक को प्रथम बार भूमि पर विराजमान (बिठाने) के लिए विचारणीय मुहूर्त्त–

शुभ तिथियां–१ (कृ) २,३,४,७,१०,११,१३ (शु.) तथा पूर्णिमा।

शुभ वार–चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्रवार।

शुभ नक्षत्र–अश्वि, रोह, मृग, पुन, तीनों उतरा, हस्त, अनु, ज्ये, अभिजित।

शुभ लग्न–२,५,८,११ राशि लग्न।

☞ **(१२) जीविका परीक्षा**–'भूम्युपवशन' के अवसर पर बालक के सामने हानि रहित अस्त्र-शस्त्र, पुस्तकें, लेखनी (Pen-Pencil), वस्त्र, सोना, चाँदी, ताँबा, लोहादि धातुएँ, मशीनें मोटर, पंखा-रेडियों, टी. वी. आदि खिलौने, विज्ञान, हिन्दी, अंग्रेजी, संस्कृतादि साहित्य आदि वस्तुएँ रखें। इन वस्तुओं में से जिस वस्तु को बालक सहज रूप में सर्वप्रथम स्पर्श करें, वही उसकी भावी आजीविका होगी। ऐसा अनुमान लगाना चाहिए। कुल परम्परा अनुसार, कहीं-कहीं यह क्रिया अन्नप्राशन के साथ भी कर लेते हैं।

☞ **(१३)अन्न-प्राशन का मुहूर्त्त**–जन्म से सौर मास ६, ८, १० या १२वें मास में पुत्र को तथा ५,७,९ या ११वें मास पुत्री को उसकी पाचन शक्ति उपयुक्त होने पर प्रथम बार बच्चे को अन्न प्राशन कराना **अन्न प्राशन** में शुक्ल पक्ष विशेष प्रशस्त माना गया है। यद्यपि कृष्ण पक्ष की १,३,५,७,१० तिथियाँ भी ग्राह्य हैं। सोमवार, बुध, गुरु, एवं शुक्रवार शुभ हैं।

नक्षत्र–अश्वि, रोह, मृग, पुन, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, स्वा, अनु, अभिजित श्रव, धनि, रेवती तथा जन्म-नक्षत्र 'सप्तश्लाका चक्र' द्वारा क्रूर ग्रह विद्ध नक्षत्र त्याज्य होगा। जन्म राशि से ६, ८वें लग्न को छोड़कर २,३,४,५,६,७,९,१०,११ की राशि का लग्न जबकि लग्न से १,४,७वें शुभ ग्रह हों तथा लग्न शुभ ग्रहों द्वार दृष्ट हो।

विशेष–अन्न प्राशन दिन के पूर्वार्द्ध भाग में बालक की राशि का चन्द्रबल देखकर भद्रा रहित काल एवं उपरोक्त शुभ दिन को

सूर्य, ब्रह्म, विष्णु, महेश तथा दिक्पतियों की पूजा करके माता स्वलंकृत बालक को अपनी गोद में बिठाकर ईश्वर-स्मरण करते हुए उसे मधु, घृत, दही, खीर का भोजन सर्व प्रथम कराएँ।

☞ **(१४) कर्ण वेध का मुहूर्त्त**–बालक के जन्म से १२, १६वें दिन, या ६,७,८वें मास में अथवा ३,५वें वर्ष बालक का कर्ण छेदन प्रशस्त माना जाता है।

ग्राह्य मास–चैत्र, (का. शु. ११ के बाद), पौष तथा फाल्गुन।

तिथियां–४,९,१४ (रिक्ता तिथियां) छोड़कर सभी तिथियां।

वार–चं, बु., गु., शु, वारों में अश्वि, मृग, आ. पुन, पुष्य हस्त, चित्रा, अनु, अभि, श्रव, धनि, रेव। विद्ध तथा जन्म नक्षत्र भी त्याज्य।

शुभ लग्न–२,३,४,६,७,९,१२।

विशेष–बोलक को पूर्वाभिमुख बिठाकर हाथ में कुछ मिष्टान्न दें तथा पुत्र के बाएं कान को तथा पुत्री के दाएं कान को सुवर्ण या चाँदी की शलाका से सौभाग्यवती स्त्री या कुशल स्वर्णकार से कर्ण विधवाना चाहिए।

☞ **कन्या की नासिका छेदन**–हेतु उपरोक्त कर्ण वेध मुहूर्त्त के मासों में ही कन्या का नामक विंधवाया जाता है। शुक्ल पक्ष की तिथियाँ शुभ होती हैं–२, ३ ५, ७, १०, ११, १२, १३, १५।

जन्म दिन कृत्य

सामान्यत: लोग अंग्रेजी तारीख अनुसार ही जन्मदिन कृत्य कर लेते हैं। परन्तु इसमें कई बार भूल होने की सम्भावना रहती है। सिद्धान्त: एक सौर वर्ष उपरान्त जिस दिन जन्मेष्ट एवं जन्मदिन के समान ही स्पष्ट सूर्य के राशि, अंश, कलादि की जब पुनरावृत्ति आ जाए, उसी दिन को जन्मदिन का नववर्ष प्रवेश माना जाएगा। यदि इतनी सूक्ष्मता का पता न चल पाए तो देशी प्रविष्टों के अनुसार जन्म दिन के वर्ष का निर्धारण किया जाए तो शुद्धता के अधिक पास रहेंगे। यदि किसी सुयोग्य ज्योतिषी द्वारा वार्षिक जन्मदिन का निर्णय (गणितानुसार) करवा लें तो और अधिक उचित होगा।

जन्मदिन के अवसर पर प्रात: उठकर गंगाजल सहित शुद्ध पवित्र जल से बालकको स्नानादि के पश्चात् सुन्दर वस्त्र धारण करवाकर पूर्वाभिमुख होकर माता पिता उसे गोदी में बिठाकर किसी सुयोग्य पण्डित जी द्वारा पंचदेव पूजन, नवग्रह पूजन एवं संकल्पपूर्वक छाया दान सहित जन्मदिन पूजन करवाना चाहिए। पूजनोपरांत भगवान् सूर्यदेव को अर्घ्य, ब्राह्मण भोजन एवं यथाशक्ति दानादि करें।

विशेषकर वर्षफल में स्थित अशुभ ग्रहों के दान, जपादि करवाने से बच्चों को आरोग्यता एवं माता-पिता को सुख-शान्ति बनी रहती है। जन्मदिन पर तिल स्नान, तिलों चावल, दूध, चीनी आदि से बनी क्षीर तथा वस्त्र अनाजादि का दान एवं स्वयं भी क्षीर सेवन शुभ होता है।

अथ अशौच व्यवस्था

अशौच दो प्रकार का होता है–(१) जनना शौच जिसे सूतक और (२) मरणाशौच जिसे पातक कहते हैं।

गर्भास्त्रावादि अशौच-व्यवस्था

चार मास तक गर्भ के गिरने को 'गर्भस्राव' कहते हैं। पांचवें, छटे मास में 'गर्भपात' और इसके उपरान्त 'प्रसव' कहलाता है। तीन मास के भीतर, किसी भी मास में गर्भ के गिराने से गर्भिणी को तीन दिन का और चौथे महीने में चार दिन का अशौच रहता है, पिता आदि सपिण्ड केवल स्नानमात्र से शुद्ध हो जाते हैं। पितादि सपिण्डों को ३ दिन का 'सूतक' होता है।

जननाशौच व्यवस्था

सात महीने से लेकर किसी भी महीने में जन्म हो तो माता–पितादि सपिण्डों को अपने २ वर्ण के अनुसार पूरा अशौच (सूतक) होता है, जैसे ब्राह्मण को १० दिन, क्षत्रिय को १२ दिन, वैश्य को १५ दिन और शूद्र को एक मास का सूतक रहता है, किन्तु माता को सूतक निकालने के बाद भी पुत्र जन्मा हों, तो, २० दिन और कन्या उत्पन्न होने से एक मास तक धर्मकार्य करने का अधिकार नहीं होता। नाल छेदन से पीछे सूतक हो जाने के कारण जात कर्म का अधिकार नहीं होता।

मृतोत्पत्ति में विचार

यदि मरा हुआ बालक उत्पन्न हो तो पितादि सपिण्डों को अपने-अपने वर्ण के अनुसार अशौच (सूतक) होता है। बालक जन्म लेकर नाल-छेदन से पूर्व ही मर जाये तो माता को १० दिन तक सूतक और पितादि सपिण्डों को ३ दिन का जननाशौच (सूतक) होता है। नाल-छेदन के बाद १० दिन के भीतर अर्थात् नाम संस्कार से पूर्व बालक की मृत्यु हो जाये तो पितादि सपिण्डों का पूर्ण जननाशौच (सूतक) रहता है। पातक में देवकर्म और पितृकर्म का अधिकार नहीं होता।

मृताशौच-व्यवस्था

नामकरण अर्थात् १० दिन के बाद ६ महीने के भीतर अर्थात् दाँत आने से पहिले बालक के मरने पर माता और पिता को ३ दिन का मृताशौच (पातक) होता है किन्तु सपिण्ड स्नानमात्र से शुद्ध हो जाते हैं। कन्या मरने पर पिता को एक दिन का पातक लगता है। स्मरण रखना चाहिए ७वें महीने से अर्थात् दांत निकलने के पीछे ३ वर्ष तक, अर्थात् मुंडन संस्कार न हुए बालक के मरने पर माता–पिता को ३ दिन सपिण्डों को १ दिन तक पातक हो जाता है और ३ वर्ष में मुण्डन संस्कार हो गया हो तो बालक को जलाना चाहिए।

कन्या शौच-व्यवस्था

सगाई होने से पहले कन्या मरने पर तीन पुरुषों तक १ दिन का पातक होता है, सगाई हो जाने के बाद और विवाह से पहले कन्या मरने पर पिताकुल के और पतिकुल को ३ दिन का पातक रहता है। यदि विवाह हुई कन्या पिता के घर में मर जाए व प्रसूता हो तो माता-पिता सहोदर, भाईयों को तीन दिन का पातक, चाचा आदि को १ दिन का अशौच होता है। परन्तु पतिकुल में पूर्ण अशौच होता है।

मातामह-मातामही दौहित्र मरण पर विचार

नाना मरे तो दौहित्र को ३ दिन, नानी मरने पर १ दिन का पातक होता है। यज्ञोपवीत संस्कार हुए दौहित्र के मरने पर नाना की ३ दिन, बिना यज्ञोपवीत के १ ॥ दिन का पातक होता है।

सास-ससुर तथा जामातृ पर अशौच विचार

सास और ससुर यदि मर जाये तो जामित्र पास होने से ३ दिन, बिना समीप होने से १ ॥ दिन का पातक लगता है। जामाई के मरने पर १ दिन का पातक होता है।

बन्धुत्रय-विचार

भूआ, मासी और मामी के पुत्रों को आत्मबांधव कहते हैं। पिता की भूआ, मासी की मामी के पुत्रों को पितृबांधव कहते हैं। माता की भूआ, मासी और मामी के पुत्रों को मातृबांधव कहते हैं। इन तीन प्रकार के बांधवों में से किसी की मृत्यु हो जाये तो तीन दिन का पातक होता है। इनकी बहिन मरे तो १ दिन का पातक होता है। और विवाहित कन्या मरने पर १ दिन का।

अशौच-संपात पर निर्णय

10 दिन के अशौच में यदि 5 दिन के भीतर दूसरा 10 दिन का या इससे कम दिन का मृत-अशौच प्राप्त हो जाए तो पहले के साथ ही दूसरे अशौच की शुद्धि हो जाती है। 5 दिन के बाद 9 दिन के भीतर हो तो पिछले के साथ ही दूसरे आशौच की भी शुद्धि हो जाती है, यदि दसवें दिन की रात्री में दूसरा अशौच हो जाये तो 2 दिन अशौच और बढ़ जाता है। 10 दिनों के मृताशौच में 10 दिन अथवा 3 दिन वाला जननाशौच आ पड़े तो मृताशौच की समाप्ति पर ही जननाशौच की भी समाप्ति या शुद्धि हो जाती है। जननाशौच में मृताशौच अथवा मृतशौच में जननाशौच हो जावे तो मृताशौच के साथ शुद्धि होती है।

अधिक जानकारी के लिए धर्मसिन्धु, निर्णयसिन्धु आदि ग्रन्थों का अवलोकन करना चाहिए।

अथ प्रसूति लग्नादि का विचार

मेष—बालक के जन्म समय **मेष लग्न** हो तो घर के पूर्व की ओर प्रसूतिका की शय्या, दो उपसूतिकाएँ अथवा लग्न व चन्द्रमा के मध्य में जितने ग्रह हों उतनी उपसूतिका की संख्या जानें, मुख की कांति लाल वर्ण की, माता का मुख पूर्व की ओर, बालक की प्रकृति पित्तकारक, चंचल एवं साहसी होगी। माता के वस्त्र लाल वर्ण के तथा उसने पहले मीठा भोजन किया हो। जन्म के बाद बालक दीर्घ शब्द से रोया हो। मकान पुराना होगा। आयु के २, ४, ११, १६, २९वें साल विशेष कष्ट रहे।

वृष—बालक के जन्म समय वृष लग्न हो, तो बालक गौरपूर्ण सुन्दर रूप, द्वार एवं माता का शिर दक्षिण की ओर, रक्त-पित्त प्रकृति, माता ने श्वेत वस्त्र और चाँदी के आभूषण पहने हों, पहले शाकादि का भोजन किया हो। पाँव से प्रसवोत्पन्न, ३ या ४ उपसूतिकाएँ हों। आयु के १, १३, १८, ३३, ४३, ५८वें वर्ष में विशेष कष्ट हो।

मिथुन—बालक का चंचल स्वभाव, वात-श्लेष्म (वायु बलगम) प्रकृति, उपसूतिकाएँ (स्त्रियाँ) ३ या ५, माता का मुख पश्चिम की ओर, स्तनों में दूध कम उतरा हो, माता ने पहले नमकीन विचित्र (मिश्रित) भोजन किया हो, वस्त्र हरा पुराना, गृह का द्वार पश्चिम की ओर हो, शिराभिमुख प्रसव हुआ हो, बालक ने दीर्घ स्वर में रूदन किया हो। आयु के २, ४, १०, १३, ३८, ४८वें साल कष्ट रहे।

कर्क—गौर वर्ण, कोमल पर पुष्ट शरीर, चंचल नेत्र, वात-श्लेष्म प्रकृति, कद लम्बा व गोल, सुन्दर मुख, माता का मुख उत्तर की ओर, प्रसव से पूर्व माता ने मीठा-शीतल थोड़ा भोजन किया हो, तथा पुराने वस्त्र पहिने हो, माता के दाहिने अंग पर लहसन का निशान हो, प्रसव से पूर्व माता ने श्वेत व गुलाबी वस्त्र व चाँदी के आभूषण पहिने हों। प्रसवोपरान्त बालक कुछ देर से रोया हो। वह जलीय (liquids) का शौकीन हो। आयु के १, ५, २५, ३९, ४८, ६२वें वर्ष कष्ट।

सिंह—जन्म समय सिंह लग्न हो, तो माता का मुख पूर्व किन्तु गृहद्वार दक्षिण की ओर, उसने रक्त वस्त्र एवं सुवर्ण आभूषण पहने हों, प्रसव पूर्व उसने खट्टा व कसैला भोजन किया हो। जन्म समय ३ या ५ स्त्रियाँ, नया मकान, बालक की पीठ पर चिन्ह हो और वह दीर्घ स्वर में रोया हो। आयु के ३, ५, १२, २८, ३६, ४९वें वर्ष कष्ट रहे।

कन्या—इस लग्न का स्वामी बुध है। जन्म समय बालक के सुन्दर नेत्र, गौर वर्ण, अल्प बाल, गोल चेहरा, सौम्य पांव, चंचल वृत्ति, कण्ठ व जंघा में चिह्न हो। माता का मुख दक्षिण की ओर, स्त्रियां ४ या ५, माता लाल एवं प्राचीन वस्त्र, कसैला सहित भोजन, पिता घर से बाहर, बालक अल्प शब्द से रोया हो। आयु के २, ४, १५, २३, २५, ३५, ४५, ५६वें वर्ष विशेष कष्ट रहे।

तुला—गौरवर्ण, कुछ लम्बा चेहरा, काले नेत्र, बड़ी नाक, थोड़े बाल, चंचल, तीक्ष्ण बुद्धि, दुबला कृश शरीर, माता का मुख पश्चिम की ओर, कषाय भोजन किया हो तथा पुराने वस्त्र धारण किए हों, बालक-बालिका दीर्घ शब्द में रोए। आयु के ३, ६, ८, १५, २७, ३१वें वर्ष विशेष कष्ट हो।

वृश्चिक—ऊँचा मस्तक, सौम्य प्रकृति, पुष्ट शरीर, ताम्रवर्ण भूरे नेत्र, शीर्षोदय, तेज़ स्वभाव, केश लम्बे, स्त्रियाँ २ या ३, गृह का द्वार उत्तर की ओर, बालक की पीठ पर चिन्ह, माता ने लाल वस्त्र पहनें हों, बालक देर से रोया हो। आयु के २,६,११,२७,५८वें वर्ष विशेष कष्ट हो।

धनु—रंग गोरा, ऊँचा मस्तक, बड़े नेत्र, माता का मुख पूर्व की ओर, पीले वस्त्र सहित चित्रित वस्त्र एवं पकवान भोजन किया हो, बालक की छाती पर चिन्ह, माता का मुख उत्तर-पूर्व की ओर होगा तथा जन्म समय १ या ५ स्त्रियां, बालक दीर्घ शब्द से रोया हो। वर्ष के १, ३, १०, १८, २१, ३७, ४२वें वर्ष विशेष कष्टकारी होंगे।

मकर—जन्म समय कृश शरीर, पिंगल वर्ण, बहुत केश, ऊँचा मस्तक एवं ऊँची नाक, वात-विकार, माता का सिर दक्षिण की ओर, पुराना काला, नीला वस्त्र धारण किया हो, कसैला भोजन व शीतल जल पिया हो, स्त्रियां ३ या ४ हों, सूतिका गृह प्राचीन एवं गृह द्वार उत्तर की ओर, जन्म के बाद बालक ने थोड़ा रोया हो। आयु के ३, ५, १३, २७, ३३, ५७वें वर्ष में विशेष कष्ट रहें। जातक पर शनि का विशेष प्रभाव रहे।

कुम्भ—जन्म समय कुम्भ लग्न हो, तो बालक-बालिका का चौड़ा मस्तक, कुछ मोटे होंठ, वात-पित्त प्रकृति, श्वेत-श्याम वर्ण, धूम्रवर्ण वस्त्र, मध्यम केश, माता का मुख पश्चिम की ओर, ३ या ५ स्त्रियाँ, शाकादि का भोजन किया हो, माता को शरीर कष्ट, पिता घर में न हो तथा बालक-बालिका ने थोड़ा रूदन किया हो। आयु के २, ४, १३, २८, ३३, ४२, ४८, ५४वें वर्ष विशेष कष्ट हो। बालक पर शनि ग्रह का विशेष प्रभाव रहेगा।

मीन—बालक जन्म समय सुन्दर सौम्य एवं पीत (पिंगल) वर्ण, वात-श्लेष्म कफ प्रकृति, माता पीले वर्ण सहित मिश्रित वर्ण के वस्त्र धारण किए हुए मिष्ठान्न सहित अल्प भोजन किए, उस का मुख उत्तर की ओर, जन्म समय २ या ३ स्त्रियां हों, बालक जन्म से कुछ देरी के बाद रोया हो। आयु के १, ७, १०, १३, १६, २६, २९, ३८, ४१वें वर्ष विशेष कष्ट रहे।

एक ही नक्षत्र में जन्म का फल

यदि एक ही परिवार में, एक ही माता-पिता और उनकी सन्तानों में से किन्हीं दो का जन्म एक ही नक्षत्र में हुआ हो, तो वह अत्यन्त अनिष्टकारी होता है। यह अनिष्ट दोनों में से किसी एक को होता है। यदि भाई-भाई, भाई-बहन, पिता-पुत्र या माता-पुत्र या माता-पुत्री अथवा पिता-पुत्री का जन्म एक ही नक्षत्र में हो, तो वह मृत्यु-तुल्य कष्टदायक होता है। इसकी शान्ति अवश्य करनी चाहिए।

पिगोश्च जन्मनक्षत्रे जातस्तु पितृमातृहा।
जन्मक्षाँशे च तल्लग्ने जातः सद्योमृतिप्रदः।(वसिष्ठ)

एक नक्षत्र जनन की शान्ति संक्षिप्त रूप से इस प्रकार से वर्णित की गई है-अग्नि (हवनकुण्ड) के ईशानकोण में कलश के ऊपर जिस नक्षत्र का जन्म हो, उस नक्षत्र के देवता के स्वरूप की नक्षत्र प्रतिमा बनवाकर स्थापित करें। उस नक्षत्र के मन्त्र से कलश के ऊपर उस नक्षत्र की पूजा करनी चाहिए। कलश को दो लाल रंग के वस्त्रों से लपेट देना चाहिए। फिर वैदिक पद्धति के अनुसार समिधा द्वारा होम आदि विधान करना चाहिए। प्रत्येक समिधा को घी में डुबोकर हवन करना चाहिए।

इस प्रकार प्रायश्चित होम करने के बाद जातक और उसके माता-पिता का अभिषेक भी आचार्य को करना चाहिए। कर्म समाप्ति के बाद यजमान (पूजा कराने वाला जातक) आचार्य पण्डित जी को भोजन, गोदान, वस्त्र दक्षिणा आदि से सम्मानित करें।

–त्रिखल जन्म फल एवं शान्ति–

तीन कन्याओं के पश्चात् लड़का उत्पन्न होना तथा तीन लड़कों के पश्चात् कन्या की उत्पत्ति त्रिखल दोषकारक मानी जाती है। इसके कारण लड़का पिता, नानके पक्ष को हानि तथा कन्या माता के लिए कष्टप्रद होते हैं। त्रिखल शान्ति करवा लेने से गृह में सुख शान्ति रहती है। शान्ति हेतु सूतकादि के उपरान्त किसी शुभ मुहूर्त्त में पत्नी सहित शुद्ध आसन पर पूर्वाभिमुख होकर संकल्पपूर्वक श्रीगणपति-पूजन व नवग्रहादि पूजनोपरान्त कलश स्थापन करते हुए उसके ऊपर ताम्र पात्र रखकर उसमें श्री विष्णु भगवान् की स्वर्णमयी मूर्त्ति (उसके अभाव में ताम्र की) पूजा करके रखें। फिर विधिपूर्वक त्रिखलशान्ति कर्म किसी सुयोग्य ब्राह्मण द्वारा करवा लेनी चाहिए। यदि किसी कारणवश आप पूजा न कर पाए हों तो फिर बच्चे के जन्मदिन के आसपास किसी मुहूर्त्त में त्रिखल पूजा करवा लेनी कल्याणकारी होगी। दान में तीन अन्न, तीन वस्त्र, तीन धातु (सोना, चाँदी, ताँबा) तथा साथ में गुड़, एक लाल परना व नारियल दक्षिणा सहित संकल्पपूर्वक बच्चे व उसकी माता का हाथ लगवाकर मन्दिर में या ब्राह्मण को दान करें।

पंचाँग-परिवर्तन करना

'पंचांगदिवाकर' में जहाँ तिथि, नक्षत्र, योगादि का समाप्ति काल तथा ग्रहों की वक्री-मार्गी तथा राशि चार्ट भा. स्टै. टा. में दिए गए हैं, उन (समयों) में भारत के किसी अन्य स्थल के लिए कोई संस्कार करने की आवश्यकता नहीं है तथा विश्व के किसी अन्य नगर के लिए तिथि, नक्षत्रादि का समाप्ति काल जानने हेतु भा. स्टै. टा. से उस देश का स्टै. अन्तर जमा या घटा कर प्राप्त कर सकते हैं। परन्तु **पंचांगदिवाकर** में तिथ्यादि के समाप्ति काल घड़ी पलों में दिए हुए हैं, क्योंकि यह घड़ी पल जालन्धर के स्पष्ट सूर्योदय काल से हैं, इसलिए अन्य नगर के लिए तिथि, नक्षत्र, योग, चन्द्र राशि प्रवेश आदि हेतु पंचांग परिवर्तन आवश्यक है। यह ध्यान रहे कि भारतीय ज्योतिष में वार (रविवार, सोमवार) का प्रारम्भ तथा तिथि, नक्षत्र आदि का घड़ी पलों में समाप्तिकाल सूर्योदय के समय से ही माना जाता है।

भारत के किसी भी अन्य नगर का पंचांग अर्थात् तिथि, नक्षत्र, योग, चन्द्र-सूर्यादि संचार घटी पलों में प्राप्त करना हो तो आप इसी पंचांग में आगामी पृष्ठों से अपने अभीष्ट नगर का अक्षांश, रेखांशादि ज्ञात करके मध्यम सूर्योदयास्त सारिणी से सू. उ. ज्ञात कर लें। आपके अभीष्ट नगर के सू. उ. का जालन्धर के सूर्योदय से जितना अन्तर होगा, उसके घड़ी पल बनाकर 2 $\frac{1}{2}$ गुणा करके) ऋण (घटावे) या जमा (धन) करे। यदि अभीष्ट नगर जालन्धर से पूर्व अर्थात् जहाँ का सूर्योदय जालन्धर से पूर्व (पहले) होगा, वहाँ सूर्योदय अन्तर (कालान्तर) के घड़ी पल बनाकर पंचांगदिवाकर में तिथ्यादि के घड़ी-पलों में जमा करें तथा यदि अभीष्ट नगर जालन्धर से पश्चिम में स्थित होगा अर्थात् जहाँ का सूर्योदय जालन्धर के सू. उ. से बाद होगा, वहाँ कालान्तर के घड़ी पल बनाकर तिथ्यादि के घड़ी-पल में से घटावें।

उदाहरण–मान लीजिए 11 अप्रै., 2020 ई. को दिल्ली का पंचांग बनाना है, तो दिल्ली का अक्षांश, स्टै. अन्तर प्राप्त कर मध्यम सूर्योदय सारिणी से 6/04 सू.उ. प्राप्त ('तिथ्यादि पंचांग के घण्टे मिनटों वाले' पृष्ठों से दिल्ली का तैयार दैनिक सू. उ. देख सकते हैं) हुआ जोकि जालन्धर के सू. उ. (6/08) से 4 मिनट पूर्व (पहले) है। अत: घड़ी पलों में तिथि, नक्षत्रादि दिल्ली के प्राप्त करने के लिए हमें जालन्धर के तिथि, नक्षत्र आदि में 4 मिनट के घटी पल 10 पल जमा करने होंगे। (ढाई गुणा करके)। **ध्यान रहे**, सूर्योदय अन्तर नगरों में सदैव एक समान नहीं रहता। इस बात का भी ध्यान रखना चाहिए कि भारतीय ज्योतिष अनुसार जन्मपत्री निर्माण के समय जन्मपत्री में उसी तिथि, नक्षत्रादि के घड़ी पल लिखे जाते हैं जो जातक के जन्म वार के दिन स्थानीय सू. उ. के समय वर्तमान हो। चाहे वह तिथि, नक्षत्र जातक के जन्म से पूर्व ही समाप्त क्यों न हो जाए। कई बार पंचांग परिवर्तन करते हुए तिथियों/नक्षत्रों के क्षय या वृद्धि में भी अन्तर पड़ सकता है।

11 अप्रैल, 2020 ई. को जालन्धर का पंचांग–11 अप्रैल, 2020 ई. को दिल्ली का पंचांग

घटी पल	घटी पल
तिथि – ३२/१५ (समाप्ति काल)	**तिथि** – ३२/२५ (समाप्ति काल)
नक्षत्र – ३५/१०	**नक्षत्र** – ३५/२०
योग – ४२/५८	**योग** – ४३/०८

जालन्धर से अतिरिक्त नगर की जन्मपत्री निर्माण हेतु पंचांग परिवर्तन आवश्यक है। इस प्रक्रिया द्वारा आप भारत के किसी भी नगर का सू. उ. ज्ञात करके जालन्धर के सू.उ. से अन्तर जानकर पंचांग परिवर्तन कर सकते हैं। जबकि जहाँ तिथ्यादि, ग्रहों के वक्री-मार्गी का समय भा. स्टै. टा. में दिया गया है, वहाँ पंचांग परिवर्तन करने की कोई आवश्यकता नहीं है। घण्टा मिनट वाले पृष्ठों पर सर्वत्र समय (तिथि, नक्षत्र, योग, चन्द्र संचार आदि का) भा. स्टै. टा. में दिया गया है, वहाँ पंचांग परिवर्तन करने की कोई आवश्यकता नहीं।

लग्न सारिणी द्वारा लग्न स्पष्ट करने की विधि

आगामी पृष्ठों पर विभिन्न अक्षांशों पर आधारित, निर्मित लग्न सारिणियां दी गई हैं। जिस नगर का लग्न स्पष्ट करना हो, सर्वप्रथम अपने अभीष्ट काल का सूर्योदयात् इष्टकाल घट्यादि में बना ले। इसके लिए उस स्थान का सही सूर्योदय का ज्ञान होना आवश्यक है। अपने नगर की शुद्ध एवं सूक्ष्म **सूर्योदय काल** जानने के लिए पंचांगदिवाकर के आगामी पृष्ठों में दी गई। **अक्षांश सारिणियों** का प्रयोग करना चाहिए। स्थानीय इष्टकाल बना लेने के पश्चात् अपने अभीष्ट काल का सूर्य स्पष्ट ग्रहण करें। सूर्यस्पष्ट जिस राशि के जितने अंश पर हो, लग्न सारिणी में उसी राशि के सामने तथा सूर्य स्पष्ट के अंशों के कोष्ठक के नीचे जितने घड़ी पल हो, उनमें अपने इष्ट के घड़ी पल जोड़ (जमा) देने से लग्न स्पष्ट जानने के लिए घड़ी पल होंगे। यह घड़ी पल लग्नसारिणी में जिस राशि के सामने और जितने अंश के नीचे होगा, वही राश्यादि पर लग्नस्पष्ट होगा।

उदाहरण–मान लीजिए, विक्रमी संवत् २०७७ मध्ये कांगड़ा (हि. प्र.) में चैत्र शुक्ल षष्ठी प्रविष्टे २९ चैत्र, तदनुसार 11 अप्रै., 2020 ई. को दोपहर 2 बजकर 24 मिनट पर उत्पन्न बालक का लग्न स्पष्ट करना है। इसका सूर्योदयात् ईष्ट २० घड़ी ४० पल बनेगा तथा ईष्टकालिक सूर्यस्पष्ट ११/२७°/४७'/५०" होगा। कांगड़ा का अक्षांश ३२/०५ होने के कारण आगामी पृष्ठों पर दी गई ३२° अक्षांश की लग्न सारिणी प्रयोग में लाई जाएगी। लग्न सारिणी में सूर्य स्पष्ट की राशि अर्थात् मीन राशि के सामने और २७° अंश के नीचे कोष्ठक में अनुपातिक विधि द्वारा हमें २/२५ घट्यादि प्राप्त हुए। इनको जन्म इष्ट के घटयादि २०/४० में जमा कर देने से कुल जोड़ २३/०५ घट्यादि बनेगा। इस जोड़ को पुन: लग्न सारिणी में निकटवर्ती संख्या २३/०० सिंह (४) राशि के सामने और १ अंश के नीचे प्राप्त हुई। यह संख्या हमारे कुल जोड़ २३/०५ से केवल ५ पल कम है। अब अनुपातिक विधि द्वारा ५ पल के कलादि निकाल लेने से हमें इष्टकालिक लग्न स्पष्ट पता चल जाएगा। **जैसे** यदि १२ पल के पीछे १ अंश अर्थात् ६० कला का अन्तर पड़ता है तो १ पल के पीछे ०५ कला का अन्तर पड़ेगा। इस प्रकार उपरोक्त इष्टकाल पर (२०/४० घट्यादि) ४ गत राशि अर्थात् सिंह लग्न, १ अंश, २५ कला पर लग्न स्पष्ट होगा। (लग्न स्पष्ट ४/०१°/२५'/०६")। अधिक सूक्ष्मता के लिए हमारे कार्यालय से प्रकाशित पुस्तक **'ज्योतिष तत्त्व'** का अध्ययन करें।

उत्तर पलभा १५।०।५०

लग्न सारणी लंदन (अक्षांश ५१।३०)

चरखण्ड १५१।१२०।५१

उपरोक्त लंदन सारिणी विदेशी नगरों जैसे–लंदन, बर्मिंघम, साऊथ हैम्पटन, आक्सफोर्ड, स्लोह तथा लंदन के आसपास नगरों के लग्न निकालने के लिए विशेष उपयोगी सिद्ध होगी। ध्यान रहें, लग्न स्पष्ट करने के लिए लंदनादि नगरों का ही सूर्योदय एवं सूर्य स्पष्ट करना चाहिए।

अंश		०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
० मेष	घ.	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४
	प.	४६	५०	५५	५९	४	९	१४	१९	२४	२९	३५	४०	४६	५२	५८	३	९	१५	२१	२७	३२	३८	४४	५०	५७	२	८	१२	१८	२४
१ वृष	घ.	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८
	प.	३०	३५	४१	४७	५३	५९	५	११	२०	३०	३९	४८	५७	६	१५	२४	३३	४२	५१	००	०७	१५	२३	३२	४१	५०	५९	८	१७	२६
२ मिथुन	घ.	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४
	प.	३५	४४	५३	०२	११	२०	३१	४२	५३	०२	१५	२८	४१	५४	०७	२०	३३	४६	५९	१२	२४	३७	५०	०३	१६	२९	४२	५५	०७	११
३ कर्क	घ.	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१
	प.	२९	४२	५५	०८	२०	३३	४६	५९	१३	२७	४१	५५	०९	२३	३७	५२	०७	२१	३५	५०	०४	१८	३२	४६	००	१३	२७	४१	५५	०९
४ सिंह	घ.	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८
	प.	२३	३७	५२	०६	२०	३४	४८	०३	१७	३१	४५	५९	१३	२७	४१	५५	०९	२३	३७	५१	१८	१८	३२	४६	००	१४	२८	४२	५६	१०
५ कन्या	घ.	२८	२८	२८	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४	३४	३४	३५
	प.	२४	३८	५२	०७	२१	३५	५०	०२	१६	३०	४५	५९	१३	२७	४२	५६	१०	२३	३७	५१	५	१९	३३	४७	०१	१५	२९	४३	५७	११
६ तुला	घ.	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४२
	प.	२५	३९	५३	०७	२२	३७	५१	०५	२०	३४	४८	०२	१६	३१	४५	००	१३	२७	४१	५५	९	२३	३७	४१	५५	०९	२३	३७	५१	०५
७ वृश्चिक	घ.	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८
	प.	३०	४४	५८	१२	२६	४१	५६	१०	२३	३५	४७	५८	१२	२६	३८	५०	०२	१६	२८	४२	५४	०६	१९	३१	४४	५६	०८	२०	३२	४४
८ धनु	घ.	४८	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३
	प.	५९	११	२४	३७	४९	०२	१५	२७	३८	४७	५५	०४	१३	२२	३१	४०	४९	५८	०६	१५	२४	३३	४२	५१	००	०८	१७	२६	३५	४४
९ मकर	घ.	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७
	प.	५२	०१	१०	१९	२८	३७	४६	५५	००	०६	१२	१७	२३	२९	३४	४०	४६	५२	५८	०४	१०	१६	२२	२८	३४	३९	४५	५१	५७	०३
१० कुम्भ	घ.	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९
	प.	०८	१३	१९	२५	३०	३५	४१	४७	५२	५७	०१	०५	०९	१४	१९	२३	२८	३३	३७	४१	४५	५०	५५	००	०४	०८	१३	१७	२२	२७
११ मीन	घ.	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१
	प.	३१	३५	३९	४४	४८	५२	५७	०२	७	११	१५	२०	२४	२८	३३	३७	४१	४५	४९	५३	५८	०३	०८	१३	१८	२२	२७	३२	३७	४२

अक्षांश १९°

पलभा ४।७।५५

मुम्बई, कल्याण, पूना, औरंगाबाद, अहमदनगर, बस्तर, खण्डाला, भुवनेश्वर, पुरी, दादरा आदि नगरों के लिए

अंश	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
० मेष	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	६	७	७	७
	६	१४	२१	२९	३७	४५	५३	१	१०	१९	२८	३६	४५	५४	३	१२	२१	३०	३८	४७	५६	५	१४	२३	३२	४१	४९	५८	७	१६	२५
१ वृष	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११	११	१२	१२	१२
	२५	३४	४३	५१	०	९	१८	२७	३७	४८	५८	८	१९	२९	३९	५०	००	१०	२०	३०	४१	५२	२	१२	२३	३३	४३	५४	४	१४	२५
२ मिथुन	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	२४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७	१७	१७	१७
	२५	३५	४५	५६	६	१६	२७	३७	४८	५९	१०	२२	३३	४४	५५	७	१८	२९	४०	५१	३	१४	२५	३६	४८	५८	१०	२१	३२	४३	५५
३ कर्क	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२३	२३	२३
	५५	६	१७	२८	३९	५१	२	१३	२४	३५	४६	५७	८	१९	३०	४१	५२	४	१५	२६	३७	४८	५९	१०	२१	३२	४३	५४	५	१६	२७
४ सिंह	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८	२८
	२७	३९	५०	१	१२	२३	३४	४५	५६	६	१७	२७	३८	४९	५९	१०	२१	३१	४२	५३	३	१४	२४	३५	४६	५६	६	१७	२८	३९	५०
५ कन्या	२८	२९	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३३	३४
	५०	०	११	२१	३२	४३	५३	४	१५	२५	३६	४६	५७	८	१८	२९	४०	५०	१	१२	२२	३३	४३	५४	५	१५	२६	३७	४७	५८	०९
६ तुला	३४	३४	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९
	९	१९	३०	४०	५१	०२	१२	२३	३४	४५	४६	७	१८	२९	४०	५१	३	१४	२५	३६	४७	५८	९	२०	३१	४२	५३	४	१५	२६	३७
७ वृश्चिक	३९	३९	४०	४०	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५
	३७	४९	००	११	२२	३३	४४	५५	६	१७	२९	४०	५१	२	१३	२५	३६	४७	५८	९	२२	३२	४२	५४	५	१६	२७	३९	५०	१	१३
८ धनु	४५	४५	४५	४५	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०
	१३	२४	३५	४६	४७	९	२०	३१	४१	५२	२	१२	२३	३३	४२	५४	४	१४	२५	३५	४५	५६	६	१६	२६	३७	४७	५७	८	१८	२९
९ मकर	५०	५०	५०	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५
	२९	३९	४९	००	१०	२०	३१	४१	५०	५९	८	१६	२५	३४	४३	५२	१	१०	१८	२७	३६	४५	५४	३	१२	२१	२९	३८	४७	५६	५
१० कुम्भ	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९
	५	१४	२३	३१	४०	४९	५८	७	१५	२३	३१	३९	४६	५४	२	१०	१८	२९	३४	४२	५०	५८	५	१३	२१	२९	३७	४५	५३	१	९
११ मीन	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	२	३
	९	१७	२४	३२	४०	४८	५६	४	१२	२०	२८	३६	४३	५१	५९	७	१५	२३	३१	३९	४७	५५	२	१०	१८	२६	३४	४२	५०	५८	६

अक्षांश २३°

पलभा ५।५।३८

कलकत्ता, अहमदाबाद, इटारसी, इन्दौर, उज्जैन, कटनी, कच्छ, जबलपुर, भोपाल, राँची, हौशंगाबाद आदि नगरों के लिए

अंश	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
० मेष	२ ५१	३ ६	३ १४	३ २१	३ २९	३ ३७	३ ४४	३ ५२	४ ०	४ ९	४ १८	४ २६	४ ३५	४ ४४	४ ५२	५ १	५ १०	५ १८	५ २७	५ ३५	५ ४४	५ ५३	६ १	६ १०	६ १९	६ २७	६ ३६	६ ४४	६ ५३	७ २	७ १०
१ वृष	७ १०	७ १९	७ २८	७ ३६	७ ४५	७ ५४	८ २	८ ११	८ २१	८ ३१	८ ४२	८ ५२	९ २	९ १२	९ २८	९ ३३	९ ४३	९ ५३	१० ४	१० १४	१० २४	१० ३५	१० ४५	१० ५५	११ ५	११ १६	११ २६	११ ३६	११ ४६	११ ५७	१२ ७
२ मिथुन	१२ ७	१२ १७	१२ २७	१२ ३७	१२ ४८	१२ ५८	१३ ९	१३ १९	१३ ३०	१३ ४१	१३ ५३	१४ ४	१४ १५	१४ २६	१४ ३८	१४ ४९	१५ ०	१५ ११	१५ २३	१५ ३४	१५ ४५	१५ ५६	१६ ८	१६ १९	१६ ३०	१६ ४२	१६ ५३	१७ ४	१७ १५	१७ २७	१७ ३८
३ कर्क	१७ ३८	१७ ४९	१८ ०	१८ १२	१८ २३	१८ ३४	१८ ४६	१८ ५७	१९ ८	१९ १९	१९ ३१	१९ ४२	१९ ५३	२० ५	२० १६	२० २७	२० ३९	२० ५०	२१ १	२१ १२	२१ २४	२१ ३५	२१ ४६	२१ ५८	२२ ९	२२ २०	२२ ३२	२२ ४३	२२ ५४	२३ ५	२३ १७
४ सिंह	२३ १७	२३ २८	२३ ३९	२३ ५१	२४ २	२४ १३	२४ २५	२४ ३६	२४ ४७	२४ ५८	२५ ९	२५ २०	२५ ३०	२५ ४१	२५ ५२	२६ ३	२६ १४	२६ २५	२६ ३६	२६ ४७	२६ ५८	२७ ९	२७ २०	२७ ३१	२७ ४२	२७ ५३	२८ ४	२८ १४	२८ २५	२८ ३६	२८ ४७
५ कन्या	२८ ४७	२८ ५८	२९ ९	२९ २०	२९ ३१	२९ ४२	२९ ५३	३० ४	३० १५	३० २६	३० ३७	३० ४८	३० ५८	३१ ९	३१ २०	३१ ३१	३१ ४२	३१ ५३	३२ ४	३२ १५	३२ २६	३२ ३७	३२ ४८	३२ ५९	३३ १०	३३ २१	३३ ३२	३३ ४२	३३ ५३	३४ ४	३४ १५
६ तुला	३४ १५	३४ २६	३४ ३७	३४ ४८	३४ ५९	३५ १०	३५ २०	३५ ३२	३५ ४३	३५ ५४	३६ ६	३६ १७	३६ २८	३६ ४०	३६ ५१	३७ २	३७ १४	३७ २५	३७ ३६	३७ ४७	३७ ५९	३८ १०	३८ २१	३८ ३३	३८ ४४	३८ ५५	३९ ७	३९ १८	३९ २९	३९ ४०	३९ ५२
७ वृश्चिक	३९ ५२	४० ३	४० १४	४० २६	४० ३७	४० ४८	४० ५९	४१ ११	४१ २२	४१ ३३	४१ ४५	४१ ५६	४२ ७	४२ १८	४२ ३०	४२ ४१	४२ ५२	४३ ३	४३ १५	४३ २६	४३ ३७	४३ ४९	४४ ००	४४ ११	४४ २२	४४ ३४	४४ ४५	४४ ५६	४५ ७	४५ १९	४५ ३०
८ धनु	४५ ३०	४५ ४१	४५ ५२	४६ ४	४६ १५	४६ २६	४६ ३८	४६ ४९	४६ ५९	४७ ९	४७ २०	४७ ३०	४७ ४०	४७ ५०	४८ १	४८ ११	४८ २१	४८ ३१	४८ ४२	४८ ५२	४९ २	४९ १३	४९ २३	४९ ३३	४९ ४३	४९ ५४	५० ४	५० १४	५० २४	५० ३५	५० ४५
९ मकर	५० ४५	५० ५५	५१ ५	५१ १६	५१ २६	५१ ३६	५१ ४६	५१ ५७	५२ ५	५२ १४	५२ २३	५२ ३१	५२ ४०	४२ ४९	५२ ५७	५३ ६	५३ १४	५३ २३	५३ ३२	५३ ४०	५३ ४९	५३ ५८	५४ ६	५४ १५	५४ २४	५४ ३२	५४ ४१	५४ ४९	५४ ५८	५५ ७	५५ १५
१० कुम्भ	५५ १५	५५ २४	५५ ३३	५५ ४१	५५ ५०	५५ ५९	५६ ७	५६ १६	५६ २३	५६ ३१	५६ ३९	५६ ४६	५६ ५४	५७ १	५७ ९	५७ १७	५७ २४	५७ ३२	५७ ३९	५७ ४७	५७ ५५	५८ २	५८ १०	५८ १७	५८ २५	५८ ३३	४८ ४१	५८ ४७	५८ ५५	५९ ३	५९ ११
११ मीन	५९ ११	५९ १८	५९ २६	५९ ३३	५९ ४१	५९ ४९	५९ ५६	० ४	० ११	० १९	० २७	० ३४	० ४२	० ४९	० ५७	१ ५	१ १२	१ २०	१ २७	१ ३५	१ ४३	१ ५०	१ ५८	२ ५	२ १३	२ २१	२ २८	२ ३६	२ ४३	२ ५१	२ ५९

अक्षांश २७°

पलभा ६।६।५०

जयपुर, आगरा, अयोध्या, लखनऊ, कानपुर, कन्नौज, गोंडा, गोरखपुर, मथुरा, अजमेर, अलवर, जोधपुर, अलीगढ़,
हरदोई, कन्नौज, इटावा, उन्नाव, देवरिया, फैजाबाद, फर्रूखाबाद, भरतपुर, ग्वालियर आदि नगरों के लिए

अंश	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
० मेष	२ ५०	२ ५७	३ ४	३ १२	३ १९	३ २६	३ ३३	३ ४१	३ ४९	३ ५७	४ ६	४ १४	४ २२	४ ३१	४ ३९	४ ४७	४ ५६	५ ४	५ १२	५ २१	५ २९	५ ३७	५ ४६	५ ५४	६ २	६ ११	६ १९	६ २७	६ ३६	६ ४४	६ ५२
१ वृष	६ ५२	७ १	७ ९	७ १७	७ २६	७ ३४	७ ४२	७ ५१	८ १	८ ११	८ २१	८ ३१	८ ४१	८ ५१	९ १	९ ११	९ २२	९ ३२	९ ४२	९ ५२	१० २	१० १२	१० २२	१० ३२	१० ४२	१० ५२	११ ३	११ १३	११ २३	११ ३३	११ ४३
२ मिथुन	११ ४३	११ ५३	१२ ३	१२ १३	१२ २३	१२ ३३	१२ ४४	१२ ५४	१३ ५	१३ १६	१३ २८	१३ ३९	१३ ५१	१४ २	१४ १४	१४ २५	१४ ३६	१४ ४८	१४ ५९	१५ ११	१५ २२	१५ ३४	१५ ४५	१५ ५७	१६ ८	१६ १९	१६ ३१	१६ ४२	१६ ५४	१७ ५	१७ १७
३ कर्क	१७ १७	१७ २८	१७ ३९	१७ ५१	१८ २	१८ १४	१८ २५	१८ ३७	१८ ४८	१९ ००	१९ ११	१९ २३	१९ ३५	१९ ४६	१९ ५८	२० ९	२० २१	२० ३३	२० ४४	२० ५६	२१ ७	२१ १९	२१ ३१	२१ ४२	२१ ५४	२२ ५	२२ १७	२२ २९	२२ ४०	२२ ५२	२३ ३
४ सिंह	२३ ३	२३ १५	२३ २७	२३ ३८	२३ ५०	२४ १	२४ १३	२४ २५	२४ ३६	२४ ४७	२४ ५९	२५ १०	२५ २१	२५ ३२	२५ ४४	२५ ५५	२६ ६	२६ १८	२६ २९	२६ ४०	२६ ५२	२७ ३	२७ १४	२७ २५	२७ ३७	२७ ४८	२७ ५९	२८ ११	२८ २२	२८ ३३	२८ ४५
५ कन्या	२८ ४५	२८ ५६	२९ ७	२९ १८	२९ ३०	२९ ४१	२९ ५२	३० ०४	३० १५	३० २६	३० ३८	३० ४९	३१ ००	३१ ११	३१ २३	३१ ३४	३१ ४५	३१ ५७	३२ ८	३२ १९	३२ ३१	३२ ४२	३२ ५३	३३ ४	३३ १६	३३ २७	३३ ३८	३३ ५०	३४ १	३४ १२	३४ २४
६ तुला	३४ २४	३४ ३५	३४ ४६	३४ ५७	३५ ९	३५ २०	३५ ३१	३५ ४३	३५ ५४	३६ ६	३६ १७	३६ २९	३६ ४१	३६ ५२	३७ ०४	३७ १५	३७ २७	३७ ३९	३७ ५०	३८ २	३८ १३	३८ २५	३८ ३७	३८ ४८	३९ ००	३९ ११	३९ २३	३९ ३५	३९ ४६	३९ ५८	४० ०९
७ वृश्चिक	४० ९	४० २१	४० ३३	४० ४४	४० ५६	४१ ७	४१ १९	४१ ३१	४१ ४२	४१ ५३	४२ ५	४२ १६	४२ २८	४२ ३९	४२ ५१	४३ २	४३ १४	४३ २५	४३ ३६	४३ ४८	४३ ५९	४४ ११	४४ २२	४४ ३४	४४ ४५	४४ ५६	४५ ०८	४५ १९	४५ ३१	४५ ४२	४५ ५४
८ धनु	४५ ५४	४६ ५	४६ १६	४६ २८	४६ ३९	४६ ५१	४७ २	४७ १४	४७ २४	४७ ३४	४७ ४४	४७ ५४	४८ ४	४८ १४	४८ २४	४८ ३४	४८ ४५	४८ ५५	४९ ५	४९ १५	४९ २५	४९ ३६	४९ ४५	४९ ५५	५० ५	५० १५	५० २६	५० ३६	५० ४६	५० ५६	५१ ०६
९ मकर	५१ ६	५१ १६	५१ २६	५१ ३६	५१ ४६	५१ ५६	५२ ०७	५२ १७	५२ २५	५२ ३३	५२ ४२	५२ ५०	५२ ५८	५३ ७	५३ १५	५३ २३	४३ ३२	५३ ४०	५३ ४८	५३ ५७	५४ ५	५४ १३	५४ २२	५४ ३०	५४ ३८	५४ ४७	५४ ५५	५५ ३	५५ १२	५५ २०	५५ २८
१० कुम्भ	५५ २८	५५ ३७	५५ ४५	५५ ५३	५६ २	५६ १०	५६ १८	५६ २७	५६ ३४	५६ ४१	५६ ४८	५६ ५६	५७ ०३	५७ १०	५७ १७	५७ २४	५७ ३२	५७ ३९	५७ ४६	५७ ५३	५८ १	५८ ८	५८ १५	५८ २२	५८ ३०	५८ ३७	५८ ४४	५८ ५१	५८ ५९	५९ ६	५९ १३
११ मीन	५९ १३	५९ २०	५९ २७	५९ ३५	५९ ४२	५९ ४९	५९ ५६	० ४	० ११	० १८	० २५	० ३३	० ४०	० ४७	० ५४	१ १	१ ९	१ १६	१ २३	१ ३०	१ ३८	१ ४५	१ ५२	१ ५९	२ ७	२ १४	२ २१	२ २८	२ ३६	२ ४३	२ ५०

लग्न सारिणी (अक्षांश – २८°)

(अलीगढ़, बरेली, बुलन्दशहर, वृन्दावन, चुरू, नारनौल, झुंझुनू, बीकानेर, रामगढ़, फरीदाबाद नगरों के लिए)

अंश		०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
० मेष	घ.	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६
	प.	४८	५६	०३	१०	१७	२४	३१	३९	४७	५५	०३	१२	२०	२८	३६	४४	५३	०१	१०	१८	२६	३४	४३	५१	५९	०७	१६	२४	३३	४०
१ वृष	घ.	६	६	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११
	प.	४९	५७	०५	१४	२२	३०	३८	४७	५५	०७	१७	२७	३७	४७	५७	०७	१७	२७	३७	४७	५७	०८	१८	२८	३८	४८	५८	०८	१८	२८
२ मिथुन	घ.	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१७
	प.	३८	४८	५८	०८	१८	२८	३९	४९	०	१२	२३	३४	४६	५७	०९	२०	३२	४३	५५	०६	१८	२९	४१	५२	०३	१५	२६	३८	४९	०१
३ कर्क	घ.	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२
	प.	१२	२४	३५	४७	५८	१०	२१	३३	४४	५६	०८	१९	३९	४३	५४	०६	१८	२९	४१	५३	०४	१६	२८	३९	५१	०३	१४	२६	३८	४९
४ सिंह	घ.	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८
	प.	०१	१३	२४	३६	४८	५९	११	२३	३४	४५	५७	०८	१९	३१	४२	५४	०५	१६	२८	३९	५०	०२	१३	२४	३६	४७	५९	१०	२१	३३
५ कन्या	घ.	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४
	प.	४४	५५	०७	१८	२९	४१	५२	०४	१५	२६	३८	४९	०	१२	२३	३५	४६	५७	०९	२०	३१	४३	५४	०५	२०	२८	४०	५१	०२	१४
६ तुला	घ.	३४	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०
	प.	२५	३६	४८	५९	१०	२२	३३	४५	५६	०८	२०	३१	४३	५५	०६	१८	३०	४१	५३	०५	१६	२८	४०	५१	०३	१५	२६	३८	५०	०१
७ वृश्चिक	घ.	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५
	प.	१३	२५	३६	४८	०	११	२३	३५	४६	५८	०९	२०	३२	४३	५५	०६	१८	२९	४१	५२	०४	१५	२७	३८	५०	०१	१२	२४	३५	४७
८ धनु	घ.	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१
	प.	५८	१०	२१	३३	४४	५६	०७	१८	२९	३९	४९	५९	०९	१९	२९	३९	४९	५९	०	१९	२९	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०
९ मकर	घ.	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५
	प.	१०	२०	३०	४०	५०	०	११	२१	२९	३७	४५	५४	०२	१०	१८	२७	३५	४३	५२	०	०८	१६	२५	३३	४१	४९	५८	०६	१४	२२
१० कुम्भ	घ.	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९
	प.	३१	३९	४७	५६	०४	१२	२०	२९	३६	४३	५०	५८	०४	१२	१९	२६	३३	४०	४७	५५	०२	०९	१६	२३	३०	३८	४५	५२	०	०६
११ मीन	घ.	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२
	प.	१३	२१	२८	३५	४२	४९	५६	०४	११	१८	२५	३२	३९	४७	५४	०१	०८	१५	२२	३०	३७	४४	५१	५८	०५	१३	२०	२७	३४	४१

लग्न सारणी अक्षांश २९° उत्तर पलभा (६ ।३९ ।०५)

दिल्ली, अमरोहा, रोहतक, जीन्द, मेरठ, हिसार, गुड़गांव, मुरादाबाद, नैनीताल, गाज़ियाबाद आदि के लिए उपयोगी

अंश		०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
० मेष	घ.	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६
	प.	४८	५५	२	९	१६	२३	३०	३८	४६	५४	२	११	१९	२७	३५	४४	५२	०	९	१७	२५	३३	४२	५०	५८	६	१५	२३	३१	३९	४८
१ वृष	घ.	६	६	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११
	प.	४८	५६	४	१३	२१	२९	३७	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७
२ मिथुन	घ.	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७
	प.	३७	४७	५७	७	१७	२७	३८	४८	५९	११	२२	३३	४५	५६	८	१९	३१	४२	५४	५	१७	२८	४०	५१	३	१४	२५	३७	४८	०	११
३ कर्क	घ.	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२३
	प.	११	२३	३४	४६	५७	९	२०	३२	४३	५५	७	१८	३०	४२	५३	५	१७	२८	४०	५२	३	१५	२७	३८	५०	२	१३	२५	३७	४८	०
४ सिंह	घ.	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२५	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८
	प.	०	१२	२३	३५	४७	५८	१०	२२	३३	४४	५६	७	१९	३०	४१	५३	४	१६	२७	३८	५०	१	१३	२४	३५	४७	५८	१०	२१	३२	४४
५ कन्या	घ.	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४
	प.	४४	५५	७	१८	२९	४१	५२	४	१५	२६	३८	४९	१	१२	२३	३५	४६	५८	९	२०	३२	४३	५५	६	१७	२९	४०	५२	३	१४	२६
६ तुला	घ.	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०
	प.	२६	३७	४९	०	११	२३	३४	४६	५७	९	२१	३२	४४	५६	७	१९	३१	४२	५४	६	१७	२९	४१	५२	४	१६	२७	३९	५१	२	१४
७ वृश्चिक	घ.	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४५
	प.	१४	२६	३७	४९	१	१२	२४	३६	४७	५९	१०	२१	३३	४४	५६	७	१९	३०	४२	५३	५	१६	२८	३९	५०	२	१३	२५	३६	४८	५९
८ धनु	घ.	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१
	प.	५९	११	२२	३४	४५	५७	८	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	१	११
९ मकर	घ.	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५
	प.	११	२१	३१	४१	५१	१	११	२२	३०	३८	४६	५५	३	११	१९	२८	३६	४४	५२	१	९	१७	२६	३४	४२	५०	५९	७	१५	२३	३२
१० कुम्भ	घ.	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९
	प.	३२	४०	४८	५६	५	१३	२१	३०	३७	४४	५१	५८	५	१२	१९	२७	३४	४१	४८	५५	२	९	१७	२४	३१	३८	४५	५२	५९	६	१४
११ मीन	घ.	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२
	प.	१४	२१	२८	३५	४२	४९	५६	४	११	१८	२५	३२	३९	४६	५३	१	८	१५	२२	२९	३६	४३	५१	५८	५	१२	१९	२६	३३	४१	४८

लग्न सारणी अक्षांश (३०°)

पलभा ६/५५/४३

अम्बाला, चण्डीगढ़, कालका, कुराली, खन्ना, देहरादून, नाभा, नाहन, पटियाला, भटिण्डा, रोपड़, फाज़िल्का, सहारनपुर, फरीदकोट इत्यादि

अंश		०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
० मेष	घ.	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६
	प.	४४	५१	५८	५	१२	१९	२६	३२	४१	४९	५७	५	१३	२१	२९	३८	४६	५४	२	१०	१८	२६	३४	४३	५१	५९	७	१५	२३	३१	४०
१ वृष	घ.	६	६	६	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११
	प.	४०	४८	५६	४	१२	२०	२८	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६
२ मिथुन	घ.	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१७
	प.	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४८	००	११	२३	३४	४६	५७	९	२०	३२	४३	५५	६	१८	२९	४१	५३	४	१६	२७	३९	५०	२
३ कर्क	घ.	१७	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२
	प.	२	१३	२५	३६	४८	५९	११	२२	३४	४६	५८	१०	२१	३३	४५	५७	९	२०	३२	४४	५६	८	१९	३१	४३	५५	७	१८	३०	४२	५४
४ सिंह	घ.	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८
	प.	५४	६	१७	२९	४१	५३	५	१६	२८	४०	५१	३	१४	२६	३७	४९	१	१२	२४	३५	४७	५८	१०	२२	३३	४५	५६	८	१९	३१	४३
५ कन्या	घ.	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४
	प.	४३	५४	६	१७	२९	४०	५२	३	१५	२७	३८	५०	१	१३	२४	३६	४८	५९	११	२२	३४	४५	५७	९	२०	३२	४३	५५	६	१८	३०
६ तुला	घ.	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०
	प.	३०	४१	५३	४	१६	२७	३९	५०	२	१४	२६	३८	४९	१	१३	२५	३७	४८	०	१२	२४	३६	४७	५९	११	२३	३५	४६	५८	१०	२२
७ वृश्चिक	घ.	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४५	४६
	प.	२२	३४	४५	५७	९	२१	३३	४४	५६	८	१९	३१	४२	५४	५	१७	२८	४०	५१	३	१४	२६	३७	४९	१	१२	२४	३५	४७	५८	१०
८ धनु	घ.	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१	५१
	प.	१०	२१	३३	४४	५६	७	१९	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०
९ मकर	घ.	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५
	प.	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	३९	४७	५५	३	११	१९	२७	३६	४४	५२	००	८	१६	२४	३२	४१	४९	५७	५	१३	२१	२९	३८
१० कुम्भ	घ.	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९	५९
	प.	३८	४६	५४	२	१०	१८	२६	३४	४१	४८	५५	२	९	१६	२३	३०	३७	४४	५१	५८	५	१२	१९	२६	३३	४०	४७	५४	१	८	१५
११ मीन	घ.	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२
	प.	१५	२२	२९	३६	४३	५०	५७	३	१०	१७	२४	३१	३८	४५	५२	५९	६	१३	२०	२७	३४	४१	४८	५५	२	९	१६	२३	३०	३७	४४

लग्न सारणी अक्षांश ३१।२०

उत्तर पलभा (७।१७।२१)

जालन्धर, लुधियाना, चण्डीगढ़, रोपड़, फगवाड़ा, कपूरथला, होशियारपुर, फिरोज़पुर, शिमला, मण्डी, हमीरपुर, ऊना आदि के लिए

अंश		०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
० मेष	घ.	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६
	प.	४१	४८	५५	२	९	१६	२३	३०	३८	४६	५४	२	१०	१८	२६	३४	४२	५०	५८	६	१४	२२	३०	३८	४६	५४	२	१०	१८	२६	३४
१ वृष	घ.	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११
	प.	३४	४२	५०	५८	६	१४	२३	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	००	१०	२०
२ मिथुन	घ.	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६
	प.	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४१	५३	५	१६	२७	३८	५०	३	१४	२५	३७	४८	०	११	२३	३४	४६	५८	०९	२१	३२	४४	५५
३ कर्क	घ.	१६	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२
	प.	५५	०७	१९	३१	४३	५४	०६	१७	२९	४१	५३	५	१७	२९	४०	५२	४	१६	२८	४०	५२	०३	१५	२७	३९	५१	०३	१५	२७	३८	५०
४ सिंह	घ.	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८
	प.	५०	२	१४	२६	३८	५०	२	१३	२५	३७	४८	००	१२	२३	३५	४७	५८	१०	२२	३३	४५	५६	०८	२०	३२	४३	५५	७	१८	३०	४२
५ कन्या	घ.	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४
	प.	४२	५३	०५	१७	२८	४०	५२	०३	१५	२७	३८	५०	०२	१३	२५	३७	४८	०	१२	२३	३५	४७	५८	१०	२२	३४	४६	५८	०९	२१	३३
६ तुला	घ.	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०	४०
	प.	३३	४४	५६	०८	१९	३१	४३	५४	६	१८	२९	४२	५४	०६	१७	२९	४१	५३	०५	१७	२९	४१	५३	५	१७	२९	४१	५३	०५	१६	२८
७ वृश्चिक	घ.	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४६	४६
	प.	२८	४०	५२	०४	१६	२८	४०	५१	०३	१५	२६	३८	४९	०१	१२	२४	३६	४७	५९	१०	२२	३३	४५	५६	०८	२०	३२	४४	५५	०७	१८
८ धनु	घ.	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१	५१
	प.	१८	३०	४२	५३	०५	१६	२८	३९	४९	५९	९	१९	२९	३९	४९	५९	९	१९	२९	३९	४९	५९	९	१९	२९	३९	४९	५९	९	१९	२९
९ मकर	घ.	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५	५५
	प.	२९	३९	४९	५९	९	१८	२८	३८	४७	५५	०३	११	१९	२७	३४	४३	५१	५९	७	१५	२३	३१	३९	४७	५५	३	११	१९	२७	३५	४३
१० कुम्भ	घ.	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९	५९
	प.	४३	५१	५९	७	१५	२३	३१	३९	४६	५३	००	७	१४	२०	२७	३४	४१	४७	५४	०१	८	१५	२१	२८	३५	४१	४८	५५	०२	९	१६
११ मीन	घ.	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२
	प.	१६	२३	२९	३६	४३	५०	५७	३	१०	१७	२४	३१	३८	४४	५१	५८	५	१२	१९	२६	३३	४०	४६	५३	०	६	१३	२०	२७	३४	४१

लग्न सारिणी (अक्षांश– ३२°)

(अमृतसर, कठुआ, कुल्लू, गुरदासपुर, जोगिन्द्रनगर (हि.प्र.), दीनानगर, धर्मशाला, सुन्दरनगर, कांगड़ा, सरकाघाट आदि नगरों के लिए)

अंश		०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
०	घ.	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६
मेष	प.	४०	४७	५३	०	०७	१४	२१	२७	३५	४३	५१	५९	०७	१५	२३	३१	३९	४७	५५	०३	११	१९	२७	३५	४३	५१	५९	०७	१५	२३
१	घ.	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११
वृष	प.	३१	३९	४७	५५	०३	११	१९	२७	३७	४७	५७	०७	१७	२७	३७	४७	५७	०७	१७	२७	३७	४७	५७	०७	१७	२७	३७	४७	५७	०७
२	घ.	११	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६
मिथुन	प.	१७	२७	३७	४७	५७	०६	१६	२६	३८	५०	०१	१३	२४	३६	४७	५९	११	२२	३४	४५	५७	०८	२०	३१	४३	५५	०६	१८	२९	४१
३	घ.	१६	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२
कर्क	प.	५२	०४	१६	२७	३९	५०	०३	१३	२५	३७	४९	०१	१३	२५	३७	४९	०१	१३	२५	३७	४९	०	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६
४	घ.	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८
सिंह	प.	४८	०	१२	२४	३६	४८	०	११	२३	३५	४७	५८	१०	२२	३४	४६	५७	०९	२०	३२	४४	५६	०७	१९	३१	४३	५५	०६	१८	३०
५	घ.	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४
कन्या	प.	४१	५३	०५	१६	२८	४०	५२	०३	१५	२७	३९	५०	०२	१४	२६	३७	४९	०१	१२	२४	३६	४८	५९	११	२३	३५	४६	५८	१०	२२
६	घ.	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०
तुला	प.	३३	४५	५७	०८	२०	३२	४४	५५	०७	१९	३१	४३	५५	०७	१९	३१	४३	५५	०७	१९	३१	४२	५४	०६	१८	३०	४२	५४	०६	१८
७	घ.	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४६
वृश्चिक	प.	३०	४२	५४	०६	१८	३०	४१	५३	०५	१७	२८	४०	५१	०३	१४	२६	३८	४९	०१	१२	२४	३५	४७	५८	१०	२२	३३	४५	५६	०८
८	घ.	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१	५१
धनु	प.	१९	३१	४३	५४	०६	१७	२९	४१	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०
९	घ.	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५
मकर	प.	३०	४०	५०	०	१०	१९	२९	३९	४७	५५	०३	११	१९	२७	३५	४३	५१	०	०७	१५	२३	३१	३९	४७	५५	०३	११	१९	२७	३५
१०	घ.	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९
कुम्भ	प.	४३	५१	५९	०७	१५	२३	३१	३९	४६	५३	००	०७	१३	२०	२७	३४	४१	४७	५४	०१	०८	१५	२१	२८	३५	४२	४९	५५	०२	०९
११	घ.	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२
मीन	प.	१६	२३	२९	३७	४३	५०	५७	०३	१०	१७	२४	३१	३७	४४	५१	५८	०५	११	१८	२५	३२	३९	४५	५२	०	६	१२	१९	२६	३३

लग्न सारणी (अक्षांश ३३°)

पलभा ७।४८।३०

अखनूर, जम्मू, श्रीनगर, ऊधमपुर, रावलपिंडी, कठुआ, अनन्तनाग, किश्तवाड़, डोडा, रामबन, डल्हौज़ी आदि

अंश		०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
०	घ.	२	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६
मेष	प.	३७	४४	५१	५८	४	११	१८	२४	३२	४०	४८	५६	४	१२	२०	२८	३५	४३	५१	५९	७	१५	२३	३१	३९	४७	५४	२	१०	१८	२६
१	घ.	६	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११
वृष	प.	२६	३४	४२	५०	५८	६	१३	२१	३१	४१	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	१	११	२१	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	००	१०
२	घ.	११	११	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६
मिथुन	प.	१०	२०	३०	४०	५०	५९	९	१९	३१	४३	५४	६	१७	२९	४१	५२	४	१५	२७	३९	५०	२	१३	२५	३७	४८	००	११	२३	३५	४६
३	घ.	१६	१६	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२
कर्क	प.	४६	५८	९	२१	३३	४४	५६	७	१९	३१	४३	५५	८	२०	३२	४४	५६	८	२०	३२	४४	५६	८	२०	३२	४४	५६	८	२०	३२	४४
४	घ.	२२	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८
सिंह	प.	४४	५६	८	२०	३२	४४	५६	८	२०	३२	४४	५६	८	१९	३०	४३	५५	७	१९	३०	४२	५४	६	१८	३०	४१	५३	५	१७	२९	४१
५	घ.	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४	३४
कन्या	प.	४१	५२	४	१६	२८	४०	५२	३	१५	२७	३९	५१	३	१४	२६	३८	५०	२	१४	२५	३७	४९	१	१३	२५	३६	४८	०	१२	२४	३६
६	घ.	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०	४०
तुला	प.	३६	४७	५९	११	२३	३५	४७	५८	१०	२२	३४	४६	५९	११	२३	३५	४७	५९	११	२३	३५	४७	५९	११	२३	३५	४७	५९	११	२३	३५
७	घ.	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४६	४६	४६
वृश्चिक	प.	३५	४७	५९	११	२३	३५	४७	५९	११	२३	३४	४६	५७	९	२१	३२	४४	५५	७	१९	३०	४२	५३	५	१७	२८	४०	५१	३	१५	२६
८	घ.	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१	५१	५१
धनु	प.	२६	३८	४९	१	१३	२४	३६	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६
९	घ.	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५
मकर	प.	३६	४६	५६	६	१६	२५	३५	४५	५३	१	९	१७	२५	३३	४१	४९	५६	४	१२	२०	२८	३६	४४	५२	००	८	१५	२३	३१	३९	४७
१०	घ.	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९	५९
कुम्भ	प.	४७	५५	३	११	१९	२७	३४	४२	४९	५६	२	९	१६	२३	२९	३६	४३	४९	५६	३	९	१६	२३	३०	३६	४३	५०	५६	३	१०	१६
११	घ.	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२
मीन	प.	१६	२३	३०	३७	४३	५०	५७	३	१०	१७	२३	३०	३७	४४	५०	५७	४	१०	१७	२४	३०	३७	४४	५१	५७	४	११	१७	२४	३१	३७

दशमलग्न सारणी

(सर्वत्र उपयोगी)

लंकोदय २७८ । २९९ । ३२३

अंश	००	०१	०२	०३	०४	०५	०६	०७	०८	०९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
० मेष	१८ ३३	१८ ४२	१८ ५२	१९ १	१९ १०	१९ १९	१९ २८	१९ ३८	१९ ४८	१९ ५८	२० ८	२० १८	२० २८	२० ३८	२० ४८	२० ५८	२१ ८	२१ १८	२१ २८	२१ ३८	२१ ४८	२१ ५८	२२ ८	२२ १७	२२ २७	२२ ३७	२२ ४७	२२ ५७	२३ ७	२३ १७	२३ २७
१ वृष	२३ २७	२३ ३७	२३ ४७	२३ ५७	२४ ७	२४ १७	२४ २७	२४ ३७	२४ ४८	२४ ५८	२५ ९	२५ २०	२५ ३१	२५ ४२	२५ ५२	२६ ३	२६ १४	२६ २५	२६ ३५	२६ ४६	२६ ५७	२७ ८	२७ १८	२७ २९	२७ ४०	२७ ५१	२८ २	२८ १२	२८ २३	२८ ३४	२८ ४५
२ मिथुन	२८ ४५	२८ ५५	२९ ०६	२९ १७	२९ २८	२९ ३८	२९ ४९	३० ०	३० ११	३० २२	३० ३२	३० ४३	३० ५४	३१ ५	३१ १५	३१ २६	३१ ३७	३१ ४८	३१ ५८	३२ ९	३२ १९	३२ ३०	३२ ४१	३२ ५२	३३ ३	३३ १४	३३ २५	३३ ३५	३३ ४३	३३ ५७	३४ ८
३ कर्क	३४ ८	३४ १८	३४ २९	३४ ४०	३४ ५१	३५ १	३५ १२	३५ २३	३५ ३३	३५ ४३	३५ ५३	३६ ३	३६ १३	३६ २३	३६ ३३	३६ ४३	३६ ५३	३७ ३	३७ १३	३७ २३	३७ ३३	३७ ४३	३७ ५३	३८ २	३८ १२	३८ २२	३८ ३२	३८ ४२	३८ ५२	३९ २	३९ १२
४ सिंह	३९ १२	३९ २२	३९ ३२	३९ ४२	३९ ५२	४० २	४० १२	४० २२	४० ३१	४० ४१	४० ५०	४० ५९	४१ ८	४१ १८	४१ २७	४१ ३६	४१ ४५	४१ ५५	४२ ४	४२ १३	४२ २२	४२ ३२	४२ ४१	४२ ५०	४२ ५९	४३ ९	४३ १८	४३ २७	४३ ३७	४३ ४६	४३ ५५
५ कन्या	४३ ५५	४४ ४	४४ १४	४४ २३	४४ ३२	४४ ४१	४४ ५१	४५ ००	४५ १०	४५ १९	४५ २८	४५ ३७	४५ ४६	४५ ५६	४६ ५	४६ १४	४६ २३	४६ ३३	४६ ४२	४६ ५१	४७ ०	४७ १०	४७ १९	४७ २८	४७ ३८	४७ ४७	४७ ५६	४८ ५	४८ १५	४८ २४	४८ ३३
६ तुला	४८ ३३	४८ ४२	४८ ५२	४९ १	४९ १०	४९ १९	४९ २९	४९ ३८	४९ ४८	४९ ५८	५० ८	५० १८	५० २८	५० ३८	५० ४८	५० ५८	५१ ८	५१ १८	५१ २८	५१ ३८	५१ ४८	५१ ५८	५२ ७	५२ १७	५२ २७	५२ ३७	५२ ४७	५२ ५७	५३ ७	५३ १७	५३ २७
७ वृश्चिक	५३ २७	५३ ३७	५३ ४७	५३ ५७	५४ ७	५४ १७	५४ २७	५४ ३७	५४ ४७	५४ ५८	५५ ९	५५ २०	५५ ३१	५५ ४२	५५ ५२	५६ ३	५६ १४	५६ २५	५६ ३४	५६ ४६	५६ ५७	५७ ८	५७ १८	५७ २९	५७ ४०	५७ ५१	५८ २	५८ १२	५८ २३	५८ ३४	५८ ४५
८ धनु	५८ ४५	५८ ५५	५९ ६	५९ १७	५९ २८	५९ ३८	५९ ४९	० ०	० ११	० २२	० ३२	० ४३	० ५४	१ ५	१ १५	१ २६	१ ३७	१ ४८	१ ५८	२ ९	२ २०	२ ३१	२ ४१	२ ५२	३ ३	३ १४	३ २५	३ ३५	३ ४६	३ ५७	४ ८
९ मकर	४ ८	४ १८	४ २९	४ ४०	४ ५१	५ १	५ १२	५ २३	५ ३३	५ ४३	५ ५३	६ ३	६ १३	६ २३	६ ३३	६ ४३	६ ५३	७ ३	७ १३	७ २३	७ ३३	७ ४३	७ ५३	८ २	८ १२	८ २२	८ ३२	८ ४२	८ ५२	९ २	९ १२
१० कुम्भ	९ १२	९ २२	९ ३२	९ ४२	९ ५२	१० २	१० १२	१० २२	१० ३१	१० ४१	१० ५०	१० ५९	११ ८	११ १८	११ २७	११ ३६	११ ४५	११ ५५	१२ ४	१२ १३	१२ २२	१२ ३२	१२ ४१	१२ ५०	१३ ०	१३ ९	१३ १८	१३ २७	१३ ३७	१३ ४६	१३ ५५
११ मीन	१३ ५५	१४ ४	१४ १३	१४ २३	१४ ३२	१४ ४१	१४ ५१	१५ ०	१५ ९	१५ १९	१५ २८	१५ ३७	१५ ४६	१५ ५६	१६ ५	१६ १४	१६ २३	१६ ३३	१६ ४२	१६ ५१	१७ ०	१७ १०	१७ १९	१७ २८	१७ ३८	१७ ४७	१७ ५६	१८ ५	१८ १५	१८ २४	१८ ३३

ग्रहों के छः प्रकार के बल

स्थान बल, दिग्बल, काल बल, नैसर्गिक बल, चेष्टा बल और दृक् बल, यह छः प्रकार के बल हैं। फलित ज्ञान के लिए इन बलों को जान लेना आवश्यक है। **स्थान बल**–जो ग्रह उच्च, मित्रगृही, मूल त्रिकोणस्थ, स्वनवांशस्थ अथवा द्रेष्काणस्थ होता है, वह स्थान बली कहलाता है। **दिग्बल**–बुध और गुरु लग्न में रहने से, शुक्र और चन्द्रमा चतुर्थ में रहने से, शनि सप्तम में रहने से, सूर्य और मंगल दशम स्थान में रहने से दिग्बली होते हैं। **कालबल**–रात में जन्म होने पर चन्द्र, शनि और मंगल तथा दिन में जन्म होने पर सूर्य, बुध और शुक्र कालबली होते हैं। मतान्तर से बध को सर्वदा काल बली माना जाता है। **नैसर्गिक बल**–शनि, मंगल, बुध, शुक्र, चन्द्र और सूर्य उत्तरोत्तर बली होते हैं। **चेष्टाबल**–मकर से मिथुन पर्यन्त किसी राशि में रहने से सूर्य और चन्द्रमा तथा मंगल, बुध, गुरु, शुक्र और शनि चन्द्रमा के साथ रहने से चेष्टाबली होते हैं। **दृक् बल**–शुभ ग्रहों से दृष्ट ग्रह दृक् बली होते हैं। बलवान् ग्रह अपने स्वभाव के अनुसार जिस भाव में रहता है, उस भाव का फल देता है। पाठकों को राशि स्वभाव और ग्रहस्वभाव दोनों का समन्वय कर फल अवगत करना चाहिये।

दशम स्पष्ट तथा भावस्पष्ट

इष्ट कालिक द्वादश भावों की वास्तविक स्थिति जानने के लिए भाव-स्पष्ट किया जाता है। भाव स्पष्ट के लिए दशम् लग्न सारिणी का प्रयोग किया जाता है॥ **विधि इस प्रकार है।**– **लग्न स्पष्ट** करने के लिए लग्न सारिणी में सूर्य स्पष्ट के राश्यंशों से प्राप्त घटी-पलों को इष्टकाल के घटी पलों में जमा करने पर जो **योगफल** मिले उसको **दशम लग्न सारिणी** के निकटस्थ कोष्ठकों में देखने पर जो राशि अंशादि प्राप्त होंगे वही **दशम लग्न स्पष्ट** होगा।

भाव स्पष्ट का उदाहरण–मान लो किसी जातक का जन्मोष्टकाल २०।४५ घट्यादि है तथा **जालंधर लग्न सा० से** सूर्य स्पष्ट (०।१२।७) द्वारा प्राप्तांक ४।९ है, और लग्न स्पष्ट ४।१०।३५ है। इष्ट और सू. स्प. से प्राप्तांकों को जमा करने से हमें २४।५४ घट्यादि प्राप्त हुए। इन प्राप्त योगाकों को **दशम् लग्न सारिणी** में देखने पर हमें **दशम् भाव स्पष्ट** १।८।३६ प्राप्त हुआ। **दशभाव** स्प. में ६ राशि जोड़ने से **चतुर्थ भाव** तथा ४ थे भाव में से लग्न भाव स्पष्ट घटा कर शेष को ६ द्वारा भाग देने पर जो अंश-कलादि प्राप्त हों, वह **षष्ठांश** कहलाता है। **षष्ठांश** को लग्न भाव में जोड़ने से लग्न की सन्धि तथा इस सन्धि में षष्ठांश को पुनः जोड़ने से द्वितीय भाव स्प. होगा। **द्वितीय भाव** में **षष्ठांश** जोड़ने से दूसरे भाव की सन्धि, इस सन्धि में षष्ठांश जमा करने से **तृतीय भाव** होगा। तृतीय भाव में षष्ठांश जमा करते से **३रे भाव की सन्धि**, और इस सन्धि में **षष्ठांश** जोड़ने से **चतुर्थ भाव** प्राप्त हो जाता है। अब उसी षष्ठांश को एक राशि में से घटाकर शेष को ४थें भाव में जोड़ने से चतुर्थ भाव की सन्धि, फिर इस सन्धि में उसी शेष को जोड़ने से **पंचम भाव** होगा। लग्न भाव स्पष्ट में ६ राशि जोड़ने से सप्तम भाव तथा प्रथम लग्नभाव की सन्धि में ६ राशि युक्त करने से सप्तम भाव की सन्धि होगी। इसी प्रकार २रें, ३रें भावों में प्रत्येक में क्रम से ६-६ राशि जोड़ने से **अष्टम, नवम, दशम, एकादश आदि भाव एवं सन्धियाँ प्राप्त हो जाती** हैं।

–पं० विवेक शर्मा ज्यो.

षट्वर्ग सारणी चक्रम्

भाग		०१	०२	०३	०४	०५	०६	०७	०८	०९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६
अंशादि		२	३	४	५	६	७	८	१०	१२	१२	१२	१३	१५	१६	१७	१७	१८	२०	२१	२२	२३	२५	२५	२६	२७	३०
रा. षट्		३०	२०	१७	०	४०	३०	३४	०	०	३०	५१	२०	०	४०	८	३०	०	०	२५	३०	२०	०	४२	४०	३०	०
		०	०	८॥	०	०	०	१७	०	०	०	२६	०	०	०	३४	०	०	०	४२	०	०	०	५१	०	०	०
०	हो	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
	द्रे.	१	१	१	१	१	१	१	१	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	९	९	९	९	९	९	९	९
	सं	१	१	१	२	२	२	२	३	३	३	३	४	४	४	४	५	५	५	५	६	६	६	६	७	७	७
	न.	१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	४	४	५	५	६	६	६	६	७	७	७	८	८	८	९	९
मे.	द्वा	१	२	२	२	३	३	४	४	५	५	६	६	६	७	७	७	८	८	९	९	१०	१०	११	११	११	१२
	त्रि	१	१	१	१	११	११	११	११	९	९	९	९	९	९	९	९	९	३	३	३	३	३	७	७	७	७
१	हो	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
	द्रे.	२	२	२	२	२	२	२	२	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०
	सं	८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	२
	नं	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	३	३	३	३	४	४	४	५	५	५	६	६
वृ.	द्वा	२	३	३	३	४	४	५	५	६	६	७	७	७	८	८	८	९	९	१०	१०	११	११	१२	१२	१२	१
	त्रि	२	२	२	२	६	६	६	६	६	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१०	१०	१०	१०	८	८	८	८
२	हो	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
	द्रे.	३	३	३	३	३	३	३	३	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७	११	११	११	११	११	११	११	११
	सं	३	३	३	४	४	४	४	५	५	५	५	६	६	६	६	७	७	७	७	८	८	८	८	९	९	९
	न.	७	७	८	८	८	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	२	२	२	३	३
मि.	द्वा	३	४	४	४	५	५	६	६	७	७	८	८	८	९	९	९	१०	१०	११	११	१२	१२	१	१	१	२
	त्रि	१	१	१	१	११	११	११	११	९	९	९	९	९	९	९	९	९	३	३	३	३	३	७	७	७	७
३	हो	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
	द्रे.	४	४	४	४	४	४	४	४	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२
	सं	१०	१०	१०	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	२	२	३	३	३	३	४	४	४
	न.	४	४	५	५	५	६	६	६	७	७	७	७	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	११	११	११	१२	१२
क.	द्वा	४	५	५	५	६	६	७	७	८	८	९	९	९	१०	१०	१०	११	११	१२	१२	१	१	२	२	२	३
	त्रि	२	२	२	२	६	६	६	६	६	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१०	१०	१०	१०	८	८	८	८
४	हो	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
	द्रे.	५	५	५	५	५	५	५	५	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	१	१	१	१	१	१	१	१
	सं	५	५	५	६	६	६	६	७	७	७	७	८	८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	११
	न.	१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	४	४	५	५	६	६	६	६	७	७	७	८	८	८	९	९
सिं.	द्वा	५	६	६	६	७	७	८	८	९	९	१०	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१	१	२	२	३	३	३	४
	त्रि	१	१	१	१	११	११	११	११	९	९	९	९	९	९	९	९	९	३	३	३	३	३	७	७	७	७
५	हो	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
	द्रे.	६	६	६	६	६	६	६	६	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	२	२	२	२	२	२	२	२
	सं	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	२	२	३	३	३	३	४	४	४	४	५	५	५	५	६	६	६
	न	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	३	३	३	३	४	४	४	५	५	५	६	६
कं.	द्वा	६	७	७	७	८	८	९	९	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१२	१	१	२	२	३	३	४	४	४	५
	त्रि	२	२	२	२	६	६	६	६	६	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१०	१०	१०	१०	८	८	८	८

	०१	०२	०३	०४	०५	०६	०७	०८	०९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६
	२	३	४	५	६	७	८	१०	१२	१२	१२	१३	१५	१६	१७	१७	१८	२०	२१	२२	२३	२५	२५	२६	२७	३०
	३०	२०	१७	०	४०	३०	३४	०	०	३०	५१	२०	०	४०	८	३०	०	०	२५	३०	२०	०	४२	४०	३०	०
	०	०	८॥	०	०	०	१७	०	०	०	२६	०	०	०	३४	०	०	०	४२	०	०	०	५१	०	०	०
	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
६	७	७	७	७	७	७	७	७	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	३	३	३	३	३	३	३	३
	७	७	७	८	८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१
	७	७	८	८	८	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	२	२	२	३	३
तु.	७	८	८	८	९	९	१०	१०	११	११	१२	१२	१२	१	१	१	२	२	३	३	४	४	५	५	५	६
	१	१	१	१	११	११	११	११	९	९	९	९	९	९	९	९	९	३	३	३	३	३	७	७	७	७
	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
७	८	८	८	८	८	८	८	८	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	४	४	४	४	४	४	४	४
	२	२	२	३	३	३	३	४	४	४	४	५	५	५	५	६	६	६	६	७	७	७	७	८	८	८
	४	४	५	५	५	६	६	६	७	७	७	७	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	११	११	११	१२	१२
वृ.	८	९	९	९	१०	१०	११	११	१२	१२	१	१	१	२	२	२	३	३	४	४	५	५	६	६	६	७
	२	२	२	२	६	६	६	६	६	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१०	१०	१०	१०	८	८	८	८
	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
८	९	९	९	९	९	९	९	९	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	५	५	५	५	५	५	५	५
	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	२	२	३	३	३
	१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	४	४	५	५	६	६	६	६	७	७	७	८	८	८	९	९
ध.	९	१०	१०	१०	११	११	१२	१२	१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	५	५	६	६	७	७	७	८
	१	१	१	१	११	११	११	११	९	९	९	९	९	९	९	९	९	३	३	३	३	३	७	७	७	७
	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	६	६	६	६	६	६	६	६
	४	४	४	५	५	५	५	६	६	६	६	७	७	७	७	८	८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०
	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	३	३	३	३	४	४	४	५	५	५	६	६
म.	१०	११	११	११	१२	१२	१	१	२	२	३	३	३	४	४	४	५	५	६	६	७	७	८	८	८	९
	२	२	२	२	६	६	६	६	६	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१०	१०	१०	१०	८	८	८	८
	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
१०	११	११	११	११	११	११	११	११	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	७	७	७	७	७	७	७	७
	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	२	२	३	३	३	३	४	४	४	४	५	५	५
	७	७	८	८	८	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	२	२	२	३	३
कुं	११	१२	१२	१२	१	१	२	२	३	३	४	४	४	५	५	५	६	६	७	७	८	८	९	९	९	१०
	१	१	१	१	११	११	११	११	९	९	९	९	९	९	९	९	९	३	३	३	३	३	७	७	७	७
	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	८	८	८	८	८	८	८	८
११	६	६	६	७	७	७	७	८	८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	१२	१२	१२
	४	४	५	५	५	६	६	६	७	७	७	७	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	११	११	११	१२	१२
मी.	१२	१	१	१	२	२	३	३	४	४	५	५	५	६	६	६	७	७	८	८	९	९	१०	१०	१०	११
	२	२	२	२	६	६	६	६	६	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१०	१०	१०	१०	८	८	८	८

भारत के प्रसिद्ध नगरों के अक्षांश, रेखांश और स्टैं. अन्तर

नोट—जिस शहर के आगे (–) का चिन्ह लगाया गया है, वह नगर 82½ रेखांश से उतने मिनट पश्चिम में है और जिस स्थान पर (+) का चिन्ह लगा है, वह स्थान उतने मिनट पूर्व में है। सूर्योदयास्त जानने के लिए *जिन नगरों का स्टै. अन्तर (–) है, उन्हें मध्यम सूर्योदयास्त जाने के लिए* जिन नगरों का स्टैं. अन्तर (–) है, उन्हें मध्यम सूर्योदयास्त सारिणी में (–) की बजाए (+) करना होगा तथा '+' चिन्ह वाले नगरों को मध्यम *सूर्योदयास्त सारिणी से प्राप्त सू. उ. – सू. अ. में (–) ऋण करें।* स्पष्टीकरण = (पं.) = पंजाब ; (आं. प्र.) = आधांप्रदेश ; (अरु) = अरुणांचल प्रदेश ; (आसा) = आसाम ; (उत्तरा.) = उत्तराखण्ड ; (उ.प्र.) = उत्तप्रदेश *; (छ. ग.) = छत्तीसगढ़ ; (गुज.) = गुजरात ; (राज.) = राजस्थान ; (हरि.) = हरियाणा ; (बिहा.) = बिहार ; (हि. प्र.) = हिमाचल प्रदेश ; (महा.) = महाराष्ट्र ; (म. प्र.) = मध्यप्रदेश ; (ज. का.) = जम्मू–काश्मीर।*

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
अण्डेमान एवं निकोबार			
पोर्टब्लेअर	11 40	92 45	+41 00
अरुणांचल प्रदेश			
ईटानगर	27 08	93 37	+44 28
तवांग	27 33	91 48	+37 12
आंधा प्रदेश			
अनन्तपुर	14 41	77 36	–19 36
Cuddapah	14 28	78 49	–14 44
Guntur	16 18	80 27	–08 12
Kumool	15 50	78 03	–17 48
Vizianagaram	18 07	83 25	+03 40
विजयवाड़ा	16 31	80 39	–07 24
विशाखापट्टनम्	17 42	83 18	+03 12
गोलकुण्डा(आं. प्र.)	17 24	78 23	–16 28
तिरुपति(आंध्र.)	13 40	79 24	–12 24
आसाम			
उ.लखीमपुर	27 14	94 07	+46 28
गुवाहाटी	26 11	91 44	+36 56
जोरहाट	26 45	94 13	+46 52
तेजपुर	26 38	92 49	+41 16
डिब्रूगढ़	27 29	94 54	+49 36
डिगबोई	27 23	95 38	+52 32
लखीमपुर	27 14	94 15	+47 00

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
उड़ीसा			
कटक	20 30	85 50	+13 20
पुरी	19 48	85 52	+13 28
बालासोर	21 30	86 56	+17 44
बहरामपुर	19 21	84 51	+09 24
भुवनेश्वर	20 14	85 50	+13 20
उत्तरप्रदेश			
अलीगढ़	27 53	78 05	–17 40
अमरोहा	28 55	78 28	–16 08
अमेठी	26 08	81 50	–02 40
अयोध्या	26 48	82 14	–01 04
अकबरपुर	26 25	82 33	+00 12
अगोरी	24 34	82 56	+01 44
अच्छनेरा	27 11	77 46	–18 56
अम्बाह	26 44	78 15	–17 00
अतरौली	28 00	78 16	–16 48
अलीगंज	27 30	79 11	–13 16
आजमगढ़	26 04	83 11	+ 02 44
आगरा	27 11	78 01	–17 56
इलाहाबाद	25 28	81 54	–02 24
इटावा	26 46	79 02	–13 52
इटवा	27 20	82 42	+00 48
उन्नाव	26 33	80 31	–07 56
उरई	25 58	79 27	–12 12
उस्का	27 08	83 12	+02 48
एटा	27 38	78 40	–15 20

उत्तर प्रदेश के नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
ऐत	25 56	79 12	–13 12
औरैया	26 26	79 32	–11 52
औरंगाबाद	24 44	84 22	+07 28
कदौरा	26 00	79 50	–10 40
कन्नौज	27 03	79 58	–10 08
कानपुर	**26 28**	**80 22**	**–08 32**
कादीपुर	26 11	82 24	–00 24
कान्धला	29 20	77 15	–21 00
काल्पी	26 06	79 44	–11 04
कासगंज	27 50	78 40	–15 20
कैसरगंज	27 20	81 34	–03 44
कैमगंज	27 35	79 20	–12 40
कोरा	26 06	80 27	–08 12
कोरियालाघाट	28 20	81 04	–05 44
कोसी	27 50	77 26	–20 16
खतौली	29 18	77 43	–19 08
खागा	25 48	81 07	–05 32
खिलचीपुर	24 00	76 34	–23 44
खुर्जा	28 15	77 50	–18 40
खेड़ी	27 55	80 49	–06 44
खैर	27 57	77 50	–18 40
खैरागढ़	26 58	77 53	–18 28
खैराबाद	27 31	80 45	–07 00
गंगोह (सहार.)	29 45	77 16	–20 56
गढ़मुक्तेश्वर	28 49	77 05	–17 40
गरौठा	25 35	79 19	–12 44
गाज़ियाबाद	28 40	77 26	–20 16
गाजीपुर	25 34	83 35	+04 20

उत्तर प्रदेश के नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
गुन्नौर	28 15	78 27	–16 12
गोण्डा	27 08	82 01	–01 56
गोरखपुर	26 45	83 24	+03 36
गोलागोकर्णनाथ	28 06	80 30	–08 00
गोवर्धन	27 32	77 28	–20 08
चकला	25 02	83 12	+ 02 48
चन्दौसी	28 28	78 48	–14 48
चरखाड़ी	25 25	79 46	–10 56
चित्रकूटधाम	25 12	80 52	–06 32
चिरगांव	25 36	78 50	–14 40
छतरपुर	24 56	79 38	–11 28
छपरा	24 39	76 48	–22 48
जगदीशपुर	25 30	84 26	+07 44
जलालाबाद	27 44	79 40	–11 20
जलेसर	27 29	78 20	–16 36
जसरा	25 17	81 48	–02 48
जसराना	27 15	78 42	–15 12
जसवन्तनगर	26 52	78 56	–14 16
जहानाबाद	25 12	84 58	+09 52
जानसठ (मु.)	29 20	77 52	–18 32
जालौन	26 10	79 20	–12 40
जिगनी	25 46	79 26	–12 16
जौनपुर	25 45	82 40	+00 40
झाँसी	25 27	78 37	–15 32
टाण्डा	28 56	78 59	–14 04
ठाकुरद्वारा	29 10	78 50	–14 40
डेरापुर	26 28	79 48	–10 48
ताजपुर	29 08	78 30	–16 00

भारत के प्रसिद्ध नगरों के अक्षांश, रेखांश और स्टैंडर्ड अन्तर

उत्तर प्रदेश के नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
दानापुर	25 40	85 02	+10 08
दालमऊ	26 02	81 02	−05 52
दूधी	24 13	83 15	+03 00
देवगांव	25 24	83 01	+02 04
देवबन्द	29 42	77 41	−19 16
देवरिया	26 32	83 45	+05 00
देहरी	24 52	84 11	+06 44
धामपुर	29 19	78 31	−15 56
नगीना	29 27	78 27	−16 12
नजीबाबाद	29 38	78 20	−16 40
नरैनी	25 11	80 29	−08 04
नवाबगंज	28 33	79 38	−11 28
नवाबगंज	26 52	82 08	−01 28
नानपाड़ा	27 52	81 30	−04 00
नोएडा	28 35	77 20	−20 40
पट्टी	25 55	82 12	−01 12
पयागपुर	27 25	81 48	02 48
पवायां	28 04	80 06	−09 36
पिलखुआं	28 43	77 39	−19 24
पिहानी	27 38	80 12	−09 12
पीलीभीत	28 38	79 48	−10 48
पुरवा	26 28	80 50	−06 40
प्रतापगढ़	25 50	81 59	− 2 04
फतेहपुर	25 56	80 48	−06 48
फतेहपुरसीकरी	27 06	77 40	−19 20
फतेहाबाद	27 01	78 19	−16 44
फरीदनगर	28 46	77 37	−19 32
फरीदपुर	28 13	79 33	−11 48
फर्रुखाबाद	27 24	79 34	−11 44
फिरोज़ाबाद	27 09	78 25	−16 20
फैज़ाबाद	26 47	82 08	−01 28
बक्सर	25 35	83 59	+05 56
बदायूं	28 02	79 07	−13 32

उत्तर प्रदेश के नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
बनारस (वाराणसी)	25 20	83 00	+02 00
बहराइच	27 35	81 36	−03 36
बड़ौत	29 06	77 16	−20 56
बलिया	25 45	84 10	+06 40
बरेली	28 21	79 25	−12 20
बलरामपुर	27 26	82 11	−01 16
बस्ती	26 48	82 43	+00 52
बागपत	28 57	77 13	−21 08
बाड़ी	26 39	77 36	−19 36
बान्दा	25 29	80 20	−08 40
बाराबंकी	26 55	81 12	−05 12
बांसी	27 11	82 56	+01 44
बिजनौर	29 22	78 08	−17 28
बिलसी	28 08	78 55	−14 20
बिलारी	28 38	78 48	−14 48
बिलासपुर	28 53	79 16	−12 56
बीसलपुर	28 18	79 48	−10 48
बुलन्दशहर	28 24	77 51	−18 36
बुढ़ाना	29 17	77 28	−20 08
भदोही	25 25	82 34	+00 16
भोनगांव	27 15	79 11	−13 16
भोवाली	29 23	79 31	−11 56
मन्दावर	29 30	78 08	−17 28
मऊ	25 17	81 23	−04 28
मऊ-ऐम्मा	25 42	81 55	−02 20
मऊनाथभंजन	25 57	83 33	+04 12
मऊरानीपुर	25 15	79 08	−13 28
मथुरा	27 30	77 41	−19 16
मवाना	29 06	77 55	−18 20
मलीहाबाद	26 55	80 43	−07 08
महमूदाबाद	27 18	81 07	−05 32
महरौनी	24 35	78 43	−15 08
महाराजगंज	27 09	83 34	+04 16

उत्तर प्रदेश के नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
महोवा	25 17	79 52	−10 32
मिर्ज़ापुर	25 09	82 35	+00 20
मुंगराबादशाहपुर	25 40	82 11	−00 16
मुज़फ्फरनगर	29 28	77 41	−19 16
मुगलसराय	25 18	83 07	+02 28
मुबारकपुर	26 05	83 18	+03 12
मुरादाबाद	28 51	78 49	−14 44
मुरादनगर (गा.)	28 47	77 30	−20 00
मेरठ	28 59	77 42	−19 12
मैनपुरी	27 14	79 01	−13 56
राजाखेड़ा	26 55	78 11	−17 16
राबर्ट्सगंज	24 42	83 04	+02 16
रामनगर	25 17	83 02	+02 08
रायबरेली	26 13	81 14	−05 04
रूदौली	26 45	81 45	−03 00
लखनऊ	26 51	80 55	−06 20
लखीमपुर	27 57	80 46	−06 56
ललितपुर	24 41	78 25	−16 20
शामली	29 27	77 19	−20 44
शाहजहाँपुर	27 53	79 55	−10 20
शिकोहाबाद	27 06	78 36	−15 36
सम्भल	28 35	78 33	−15 48
सरधना	29 09	77 37	−19 32
सहसवां	28 05	78 45	−15 00
सहारनपुर	29 58	77 33	−19 48
सिधौली	27 17	80 50	−06 40
सिरसागंज	27 03	78 42	−15 12
सीतापुर	27 34	80 41	−07 16
सुल्तानपुर	26 16	82 04	−01 44
सैदपुर	25 33	83 11	+02 44
हमीरपुर	25 57	80 09	−09 24
हरदोई	27 25	80 07	−09 32
गाजीपुर	25 41	85 13	+10 52

उत्तर प्रदेश के नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
हाथरस	27 36	78 03	−17 48
हापुड़	28 43	77 47	−18 52
उत्तराखण्ड			
अल्मोड़ा	29 37	79 40	−11 20
आमपाटा	30 17	78 37	−15 32
आदिबद्री	30 10	79 12	−13 12
उत्तरकाशी	30 44	78 27	−16 12
उरवीमठ	30 31	79 07	−13 32
ऋषिकेश	30 07	78 18	−15 12
कर्णप्रयाग	30 15	79 16	−12 56
कपकोट	29 58	79 54	−10 54
काठगोदाम	29 16	79 32	−11 52
काशीपुर	29 13	78 57	−14 12
काण्डी	29 56	78 25	−16 20
केदारनाथ	30 44	79 04	−13 44
केनूर	30 03	79 01	−13 56
कोटद्वार	29 45	78 32	−15 52
खानपुर	29 36	78 07	−17 32
खाती	30 08	79 54	−10 54
गरजिया	29 29	79 06	−13 36
गंगनाणी	30 55	78 42	−15 12
गंगोत्तरी	30 39	79 02	−13 52
गंगापुर	26 30	76 44	−23 04
घरमघर	29 52	80 01	−09 56
घनस्याली	30 27	78 13	−17 08
चकराता (देह.)	30 42	77 51	−18 36
चम्बा	30 18	78 25	−16 20
चमौली	30 24	79 21	−12 36
चन्दौसी	28 27	78 46	−14 56
चम्पावत	29 20	80 06	−09 36
चुरानी	29 47	78 55	−14 20
जमनोत्री	31 01	78 27	−16 12

भारत के प्रसि[illegible] स्टैण्डर्ड अन्तर

उत्तराखण्ड के नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
जोशीमठ	30 34	79 34	−11 44
टनकपुर	29 02	80 08	−09 28
टिहरी	30 32	78 31	−15 56
डाण्डा	29 10	79 55	−10 20
डीडीहाट	29 48	80 12	−09 12
तेजम	29 56	80 10	−09 20
देहरादून	30 19	78 02	−17 52
देवप्रयाग	30 09	78 37	−15 32
धनोलटी	30 25	78 19	−16 44
नरेन्द्रनगर	30 10	78 18	−16 48
नन्द्रप्रयाग	30 19	79 24	−12 24
नैनीताल	29 23	79 27	−12 12
पिथौरागढ़	29 35	80 13	−09 08
पीपलकोटी	30 26	79 27	−12 12
पौड़ीगढ़वाल	30 09	78 47	−14 52
बद्रीनाथ	30 44	79 29	−12 04
भगवानपुर	29 59	77 56	−18 16
भटवाड़ी	30 49	78 36	−15 36
मनेरी	30 41	78 30	−16 00
मंसूरी	30 27	78 05	−17 40
रालम	30 16	80 12	−09 12
रानीखेत	29 39	79 25	−12 20
राजगढ़ी	30 52	78 49	−14 44
रामनगर	29 24	79 07	−13 32
राजपुर	30 25	78 06	−17 36
रामपुर	28 49	79 02	−13 52
रायपुर	30 19	78 06	−17 36
रूद्रपुर	30 26	77 59	−18 04
रूद्रप्रयाग	30 16	78 59	−14 04
रूड़की	29 52	77 53	−18 28
लक्सर	29 49	78 02	−17 52
लम्बगाँव	30 29	78 31	−15 56
लालकुआं	29 06	79 32	−11 52
लिसकोट	29 46	79 01	−13 56
लैंसडाऊन	29 50	78 41	−15 16
विकासनगर	30 29	77 50	−18 40
श्रीनगर (गढ़वा)	30 13	78 47	−14 52
सहसपुर (देह.)	30 24	77 58	−18 08
हरिद्वार	29 58	78 10	−17 20
हरकीदून	30 58	78 24	−16 24
हल्द्वानी	29 13	79 31	−11 56

कर्नाटक

बैंगलुरु	12 59	77 35	−19 40
गुलबर्ग	17 20	76 50	−22 40
मैसूर	12 18	76 39	−23 24
हुबली	15 20	75 14	−29 04

केरला

कोचीन	09 58	76 14	−25 04
त्रिवन्तपुरम्	12 40	76 55	−22 20
कन्नूर	11 52	75 25	−28 20
त्रिवेन्द्रम	08 29	76 57	−22 12

गुजरात

गुजरात के नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
अंकलेश्वर	21 36	73 00	−38 00
अंजार	23 08	70 01	−49 56
अमरापुर	21 45	70 02	−49 52
अमरेली	21 37	71 14	−45 04
अमोद	21 59	72 54	−38 24
अहमदाबाद	23 02	72 40	−39 20
आनन्द	22 34	72 56	−38 16
आनन्दपुर	22 10	71 08	−45 28
उपलेटा	21 44	70 17	−48 52
ओलपाड़	21 20	72 49	−38 44
कच्छ (भुज)	22 50	70 25	−48 20
कटाना	22 18	72 49	−38 44
कलोल(महेसाणा)	23 15	72 29	−40 04
कांडला	23 03	70 11	−49 16
कुटियाना	21 39	71 04	−45 44
कोरल	21 53	73 10	−37 20
खम्भात	22 20	72 38	−39 28
खम्भालिया	22 12	69 39	−51 24
खावड़ा	23 51	69 43	−51 08
गांधीधाम	23 06	70 08	−49 28
गोधरा	22 45	73 38	−35 28
जखाऊ	23 13	68 43	−55 08
जसदान	22 02	71 12	−45 12
जाफराबाद	20 52	71 22	−44 32
जामनगर	22 28	70 04	−49 44
जारोद	22 26	73 20	−36 40
जूनागढ़	21 31	70 28	−48 08
तालाला(जूना.)	21 02	70 32	−47 48
तालाजा	21 21	72 03	−41 48
दभोई	22 11	73 26	−36 16
दासदा	23 19	71 50	−42 40
देहज	21 42	72 35	−39 40
देवदार	24 07	71 50	−42 40
दोहाद	22 47	74 18	−32 48
द्वारिका	22 14	68 58	−54 08
धर्मपुर	20 32	73 11	−37 16
धारी	21 20	71 01	−45 56
धुले	20 54	74 47	−30 52
धोराजी	21 44	70 27	−48 12
नडियाद	22 41	72 55	−38 20
नवसारी	20 51	72 55	−38 20
नालिया	23 18	68 50	−54 40
पड़ाना	22 21	69 52	−50 16
पाटन	23 50	72 07	−41 16
पाटरी	23 08	71 10	−45 20
पालनपुर	24 10	72 26	−40 16
पोरबन्दर	21 38	69 36	−51 36
बगासरा	20 58	70 56	−46 16
बजाना	23 04	71 45	−43 00
बरूच	21 38	72 56	−38 16
बुलसार	20 38	72 56	−38 16
बोताड़	22 10	71 40	−43 20
भंगोर	22 02	69 55	−50 20
भरूच	21 40	72 58	−38 08
भावनगर	21 46	72 09	−41 24
भुज	23 16	69 40	−51 20
महेसाणा	23 37	72 28	−40 08
महुआ	21 05	71 48	−42 48
माधवपुर	21 18	70 01	−49 56
रतनपुर	21 44	73 16	−36 56
राजकोट	22 18	70 47	−46 52
लखपत	23 49	68 47	−54 52
लूनावाड़ा	23 08	73 37	−35 32
वड़ोदरा	22 18	73 12	−37 12
वलसाड़	20 40	72 55	−38 20
वादनगर	23 47	72 38	−39 28
वीजापुर	23 34	72 45	−39 00
सुरेन्द्रनगर	22 42	71 41	−43 16
सूरत	21 10	72 50	−38 40
सिहोर	21 42	71 58	−42 08
सोनगढ़	20 59	70 29	−48 04
सोमनाथ	21 00	70 30	−48 00
हडोल	23 55	73 13	−37 08
हिम्मतनगर	23 36	72 57	−38 12

गोवा

पंजिम	15 29	73 50	−34 40
मडगांव	15 18	73 57	−34 12

भारत के प्रसिद्ध नगरों के अक्षांश, रेखांश और स्टैंडर्ड अन्तर

जम्मू-कश्मीर के नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
जम्मू–कश्मीर			
अनन्तनाग	33 43	75 12	−29 12
अखनूर	32 54	74 45	−31 00
अवन्तीपूरा	33 56	75 03	−29 48
अमरनाथगुफा	34 13	75 33	−27 48
उड़ी	34 04	74 02	−33 52
ऊधमपुर	32 55	75 08	−29 28
कठुआ	32 22	75 31	−27 56
कटरा	33 01	74 58	−30 08
कारगिल	34 30	76 13	−25 08
किश्तवाड़	33 19	75 48	−26 48
कुलगाम	33 42	75 02	−29 52
केरन	34 40	73 59	−34 04
कोटली	33 30	73 53	−34 12
खयालू	35 10	76 20	−24 40
गिलगित	35 55	74 22	−32 32
गुलमर्ग	34 05	74 25	−32 20
गुरयास	34 38	74 56	−30 16
चिनेनी	33 01	75 20	−28 40
चिलास	35 27	74 06	−33 36
चुशूल	33 35	78 39	−15 24
छम्ब	32 51	74 23	−32 28
जम्मू	**32 43**	**74 54**	**−30 24**
जंगला	33 40	77 00	−22 00
जास्कार	33 20	77 00	−22 00
डोडा	33 10	75 35	−27 40
द्रास	34 22	75 50	−26 40
नवांशहर	32 30	74 46	−30 56
नागिर	36 17	74 45	−31 00
नौशेहरा	33 11	74 17	−32 52
पहलगांव	34 01	75 24	−28 24

जम्मू-कश्मीर के नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
परिपंजाल	33 36	74 22	−22 32
पुंछ	33 51	74 08	−33 28
बनिहाल	33 32	75 19	−28 44
बटोटी	33 06	75 19	−28 44
बटोत	33 06	75 19	−28 44
बड़गाम	34 00	74 44	−31 04
बसौली	32 30	75 49	−26 24
बारामूला	34 10	74 20	−32 40
भद्रवाह	32 59	75 43	−27 08
मनावर	32 50	74 25	−32 20
मार्तण्ड	33 48	75 18	−28 48
मुज़फ्फराबाद	34 22	73 31	−35 56
रामनगर	32 50	75 22	−28 32
राजौरी	33 23	74 18	−32 48
रामबन	33 14	75 15	−29 00
रियासी	33 04	74 53	−30 28
लद्दाख (रेंज)	32 00	80 00	−10 00
वैष्णोदेवी	33 03	74 56	−30 16
शेरकिला	36 05	74 04	−33 44
श्रीनगर	34 06	74 50	−30 40
सोपूर	34 19	74 30	−32 00
सोनामर्ग	34 19	75 20	−28 40
सोन्दर	33 29	75 57	−26 12
सुन्दरबनी	33 02	74 29	−32 04
लद्दाख (रेंज)	32 00	80 00	−10 00
झारखण्ड			
हज़ारीबाग	23 59	85 25	+11 40
जमशेदपुर	22 50	86 10	+14 40
राँची	23 23	85 23	+11 32
तामिलनाडू			
चेन्नई	13 05	80 17	−08 52

तामिलनाडू के नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
कांचीपुरम्	12 50	79 44	−11 04
मदुरै	9 58	78 10	−17 20
रामेश्वरम्	09 17	79 22	−12 32
तेलंगाना			
करनूल	15 50	78 03	−17 48
हैदराबाद	17 24	78 30	−16 00
त्रिपुरा			
अगरतला	23 49	91 18	+35 12
दादर–नगर–हवेली			
सिल्वासा	20 17	73 00	−38 00
डमन एण्ड डियू			
डामन	20 25	72 51	−38 36
डियू (Diu)	20 42	70 59	−46 04
दिल्ली			
पु. दिल्ली	28 39	77 12	−21 12
शाहदरा	28 40	77 19	−20 44
न्यू दिल्ली	28 40	77 13	−21 08
शकरपुर	28 41	77 09	−21 24
नागालैण्ड			
कोहिमा	25 41	94 07	+46 28
प. बंगाल			
आसनसोल	23 42	87 01	+18 04
कोलकाता	22 34	88 24	+23 36
दार्जिलिंग	27 03	88 18	+23 12
पुरुलिया	23 20	86 24	+15 36
दुर्गापुर	23 30	87 20	+19 20
सिलीगुड़ी	26 42	88 26	+23 44
हावड़ा	22 25	88 20	+23 20

पंजाब के नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
पंजाब			
अमृतसर	31 37	74 55	−30 20
अजनाला	31 51	74 48	−30 48
अटारी	31 37	74 36	−31 36
अमलोह	30 37	76 15	−25 00
अहमदगढ़	30 41	75 51	−26 36
अबोहर	30 09	74 11	−33 16
अकालगढ़	29 50	75 54	−26 24
अमरगढ़	30 28	76 01	−25 56
अलावलपुर	31 26	75 39	−27 24
आनन्दपुर सा.	31 15	76 32	−23 52
आदमपुर	31 25	75 43	−27 08
उरमर-टाण्डा	31 40	75 41	−27 16
कपूरथला	31 23	75 23	−28 28
करतारपुर	31 27	75 30	−28 00
कादियां	31 49	75 23	−28 28
कीतरपुर साहिब	31 11	76 34	−23 44
कुराली	30 50	76 35	−23 40
कोटकपूरा	30 34	74 52	−30 32
खन्ना	30 42	76 13	−25 08
खरड़	30 45	76 38	−23 28
खेमकरण	31 08	74 35	−31 40
गड़दीवाल	31 44	75 45	−27 00
गढ़शंकर	31 13	76 08	−25 28
गिद्दड़बाहा	30–12	74–40	−31 20
गुरदासपुर	32 02	75 27	−28 12
गुरुहरसहाय	30 43	74 25	−32 20
गोईन्दवाल सा.	31 22	75 08	−29 28
गोराया	31 06	75 47	−26 52
गोबिन्दगढ़ मण्डी	30 41	76 18	−24 28
घनौर	30 21	76 37	−23 32
चमकौर साहि.	30 55	76 24	−24 24

भारत के प्रसिद्ध नगरों के अक्षांश, रेखांश और स्टैंडर्ड अन्तर

पंजाब के नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
छहरटा	31 16	74 53	−30 28
जगरांव	30 48	75 30	−28 00
जलालाबाद	30 37	74 15	−33 00
जण्डियालागुरु	31 34	75 01	−29 56
जाखल	29 48	75 41	−26 36
जालन्धर	31 19	75 34	−27 44
जालन्धर कैंट	31 20	75 26	−28 16
जीरा	30 57	74 59	−30 04
जैतों	30 28	74 53	−30 28
जैजों	31 21	76 09	−25 24
डबवाली मण्डी	29 59	74 42	−31 12
ढिलवां	31 25	75 19	−28 44
तपा मण्डी	30 19	75 21	−28 36
तरनतारन	31 28	74 58	−30 08
तलवाड़ा	31 56	75 54	−26 24
तलवंडी साबो	29 59	74 59	−30 04
दतारपुर	31 53	75 45	−27 00
दसूहा	31 49	75 38	−27 28
दमदमा साहिब	30 50	76 04	−25 44
दीनानगर	32 08	75 28	−28 08
दोराहा मण्डी	30 49	76 01	−25 56
दौलतपुर	31 58	75 38	−27 28
धर्मकोट	30 53	75 14	−29 04
धारीवाल	31 57	75 19	−28 44
धूरी	30 22	75 52	−26 32
नकोदर	31 07	75 29	−28 04
नवांशहर	31 07	76 08	−25 28
नंगल	31 23	76 23	−24 28
नाभा	30 25	76 09	−25 24
नूरमहल	31 01	75 22	−28 32
नूरपुर बेदी	31 09	76 29	−24 04
पटियाला	30 20	76 25	−24 20

पंजाब के नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
पट्टी	31 17	74 51	−30 36
पठानकोट	32 17	75 42	−27 12
फरीदकोट	30 40	74 45	−31 00
फगवाड़ा	31 14	75 46	−26 56
फतेहगढ़ सा.	30 39	76 22	−24 32
फतेहगढ़	31 03	75 03	−29 48
फाज़िल्का	30 24	74 04	−33 44
फिल्लौर	31 01	75 48	−26 48
फिरोजपुर	30 55	74 40	−31 20
बरनाला	30 23	75 33	−27 48
बनूड़(मोहाली)	30 34	76 43	−23 08
बस्सी	30 35	76 50	−22 40
बसी-पठाना	30 40	76 23	−24 28
बटाला	31 48	75 12	−29 12
बंगा	31 11	75 59	−26 04
बलाचौर	31 03	76 19	−24 44
बाबा बकाला	31 33	75 15	−29 00
बाघा पुराना	30 41	75 06	−29 36
बिलगा	31 02	75 26	−28 16
बुढलाडा	29 56	75 34	−27 44
बेला	30 56	76 24	−24 24
ब्यास	31 32	75 18	−28 48
भटिण्डा	30 11	75 00	−30 00
भवानीगढ़	30 16	76 01	−25 56
भुलत्थ	31 32	75 32	−27 32
भुच्चो (मण्डी)	30 13	75 06	−29 36
भोगपुर	31 33	75 38	−27 28
मजीठा	31 46	74 57	−30 12
मलोट	30 13	74 29	−32 04
मलेरकोटला	30 31	75 53	−26 28
मलकाणा	29 56	75 03	−29 48
मुकेरिया	31 57	75 37	−27 32
मुबारिकपुर	30 37	76 51	−22 36

पंजाब के नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
मुक्तसर	30 29	74 31	−31 56
मोगा	30 48	75 10	−29 20
मोरांवली	31 18	76 01	−25 56
मोरिण्डा	30 48	76 30	−24 00
मोहाली	30 42	76 42	−23 12
राजपुरा	30 29	76 36	−23 36
रामपुरा फूल	30 17	75 14	−29 04
रायकोट	30 41	75 36	−27 36
राहों	31 03	76 07	−25 32
रोपड़ (रूपनगर)	30 57	76 32	−23 52
लुधियाना	30 55	75 54	−26 24
लोहियांखास	31 08	75 28	−28 04
शाहकोट	31 03	75 19	−28 44
शाहपुर	32 17	75 46	−26 56
संगरूर	30 12	75 53	−26 28
सरहिन्द	30 38	76 23	−24 28
समराला	30 51	76 11	−25 16
सनौर	30 18	76 30	−24 00
समाना	30 09	76 12	−25 12
सुजानपुर	32 19	75 26	−28 16
सुल्तानपुर लोधी	31 13	75 11	−29 16
सुनाम	30 08	75 48	−26 48
सोहाणां	30 42	76 42	−23 12
हमीरा	31 27	75 19	−28 44
हरयाणा	31 36	75 48	−26 48
हरीके पत्तन	31 30	74 57	−30 12
हाजीपुर टा.	31 59	75 45	−27 00
होशियारपुर	31 32	75 57	−26 12
पाण्डिचेरी			
पांडिचेरी	11 56	79 53	−10 28
महे (Mahe)	11 42	75 32	−27 52

बिहार के नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
बिहार			
गया	24 49	85 01	+10 04
छपरा	25 47	84 45	+09 00
दरभंगा	26 10	85 57	+13 48
सीतामढ़ी	26 35	85 32	+12 08
सीवां	26 12	84 23	+07 32
पटना	25 37	85 10	+10 40
झरिया	23 50	86 24	+15 36
समस्तीपुर	25 55	85 50	+13 20
धनबाद	23 47	86 30	+16 00
बांकीपुर	25 40	85 12	+10 48
बेगुसराय	25 25	86 08	+14 32
भागलपुर	25 15	87 00	+18 00
मधुबनी	26 22	86 05	+14 20
मणिपुर			
इम्फाल	24 46	93 58	+45 52
मध्यप्रदेश			
अगर	23 42	76 01	−25 56
अजयगढ़	24 53	80 13	−09 08
अमरकंटक	22 40	81 45	−03 00
अमला	21 56	78 07	−17 32
अम्बाह	26 43	78 14	−17 04
अन्नूपुर	22 40	81 48	−05 18
अलिराजपुर	22 19	74 21	−32 36
अशोकनगर	24 34	77 43	−19 08
इच्छापुर	21 05	76 09	−25 24
इच्छावर	23 01	77 01	−21 56
इटारसी	22 37	77 45	−19 00
इटावा	24 05	78 12	−17 12
इन्दौर	22 43	75 50	−26 40
उज्जैन	23 11	75 46	−26 56
उमरिया	23 32	80 50	−06 40

भारत के प्रसिद्ध नगरों के अक्षांश, रेखांश और स्टैंडर्ड अन्तर

मध्यप्रदेश के नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
उमरिया (बा.गढ़)	23 48	80 56	−06 16
ओरछा	25 21	78 39	−15 24
कटनी	23 51	80 24	−08 24
कुकशी	22 12	74 45	−31 00
कोठी	24 45	80 45	−07 00
कोरवई	24 08	78 03	−17 48
क्षिप्रा	22 54	78 00	−26 00
खजुराहो	24 50	79 58	−10 08
खण्डवा	21 50	76 20	−24 40
खेतिया	21 40	74 35	−31 40
खुरई	24 03	78 19	−16 44
गुना	24 39	77 19	−20 44
गोहद	26 26	78 27	−16 12
ग्वालियर	26 13	78 10	−17 20
चन्दला	25 05	80 12	−09 12
चन्देरी	24 43	78 08	−17 28
चाचोरा	24 10	76 59	−22 04
चापरा	22 44	76 20	−24 40
छतरपुर	24 55	79 36	−11 36
छिन्दवाड़ा	22 04	78 56	−14 16
छोटा छिन्दवाड़ा	23 03	79 29	−12 04
जबलपुर	23 10	79 57	−10 12
जऔरा	28 38	75 08	−29 28
झाबुआ	22 46	74 36	−31 36
टीकमगढ़	24 46	78 53	−14 28
तिरोदी	21 41	79 42	−11 12
दतिया	25 40	78 28	−16 08
दमोह	23 50	79 27	−12 12
धार	22 36	75 18	−28 48
नयागाँव	25 54	77 10	−21 20
नरसिंहपुर	22 57	79 12	−13 12
नीमच	24 28	74 52	−30 32

मध्यप्रदेश के नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
पंचमढ़ी	22 30	78 26	−16 16
पठारिया	23 54	79 12	−13 12
पन्ना	24 43	80 12	−09 12
पाटन	23 18	79 42	−11 12
पांधुरना	21 36	78 31	−15 56
पिछोर (ग्वा.)	25 58	78 24	−16 24
पिपारिया	22 45	78 21	−16 36
प्रतापगढ़	24 02	74 47	−30 52
बन्दा	24 03	78 57	−14 12
बरनगर	23 03	75 22	−28 32
बालाघाट	21 48	80 11	−09 16
बासोदा	23 51	77 56	−18 16
बीना (इटावा)	24 11	78 11	−17 16
बुरहानपुर	21 18	76 14	−25 04
बैतूल	21 55	77 54	−18 24
भिण्ड	26 34	78 48	−14 48
भोपाल	23 16	77 24	−20 24
मऊगंज	24 41	81 53	−02 28
मण्डला	22 36	80 23	−08 28
मनावर	22 14	75 05	−29 40
मन्दसौर	24 04	75 04	−29 44
महाराजपुर	25 01	79 44	−11 04
महेश्वर	22 11	75 35	−27 40
मानपुर	23 46	81 08	−05 28
मुरैना	26 30	78 09	−17 24
मुलतई	21 46	78 15	−17 00
मैहर	24 16	80 45	−07 00
रतलाम	23 19	75 04	−29 44
राजगढ़	23 56	76 58	−22 08
राजपुर	25 23	81 09	−05 24
रामनगर	22 13	80 47	−06 52
रामपुरा	24 28	75 26	−28 16

मध्यप्रदेश के नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
रायसेन	23 20	77 48	−18 48
राहतगढ़	23 47	78 22	−16 32
रीवा	24 32	81 18	−04 48
रेहली	23 38	79 05	−13 40
लखनादोन	22 36	79 36	−11 36
लखेड़ी	25 40	76 10	−25 20
लामटा	22 08	80 07	−09 32
विदिशा	23 32	77 49	−18 44
वैधन	24 04	82 20	−00 40
शहडोल	23 20	81 21	−04 36
शाजापुर	23 26	76 16	−24 56
शाहपुरा	23 11	80 42	−07 12
शिवपुरी	25 26	77 39	−19 24
श्योपुर	25 40	76 42	−23 12
सतना	24 35	80 50	−06 40
सनावद	22 11	76 04	−25 44
सबलगढ़	26 15	77 24	−20 24
सरदारपुर	22 39	74 59	−30 04
सागर	23 50	78 43	−15 08
सांची	23 29	77 44	−19 04
सारंगपुर	23 34	76 28	−24 08
सिरोंज	24 06	77 42	−19 12
सिहोरा	23 29	80 07	−09 32
सिहोर	23 12	77 05	−21 40
सीधी	24 25	81 53	−02 28
सेओनी	22 05	79 32	−11 52
सेओनीमालवा	22 27	77 28	−20 08
सेंधवा	21 41	75 06	−29 36
सोहागपुर	22 42	78 12	−17 12
हट्टा	24 07	79 36	−11 36
हरदा	22 20	77 06	−21 36
होशंगाबाद	22 45	77 44	−19 04

छत्तीसगढ़ के नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
छत्तीसगढ़			
अम्बिकापुर	23 07	83 12	+02 48
आरंग	21 12	81 58	−02 08
कवर्धा	22 00	81 15	−05 00
कांकेर	20 17	81 29	−04 04
काठघोरा	22 30	82 33	+00 12
कुतरू	19 05	80 48	−06 48
कुरसेकोडी	20 12	80 48	−06 48
कोंगूर	19 53	81 27	−04 12
कोण्डागांव	19 36	81 40	−03 20
कोरबा	22 21	82 41	+00 44
जगदलपुर	19 04	82 02	−01 52
जशपुरनगर	22 54	84 09	+06 36
दन्तेवाड़ा	18 54	81 21	−04 36
दुर्ग	21 11	81 17	−04 52
धमतरी	20 41	81 34	−03 44
धर्मजयगढ़	22 28	83 13	+02 52
धर्माविरम	18 16	80 55	−06 20
नवापाड़ा	20 58	81 53	−02 28
पण्डारिया	22 14	81 25	−04 20
बलोदाबाज़ार	21 40	82 10	−01 20
बस्तर	19 12	81 57	−02 12
बिलासपुर	22 05	82 09	−01 24
बैकुण्ठपुर	23 15	82 33	+00 12
भरतपुर	23 44	81 45	−03 00
भाटपाड़ा	21 44	81 56	−02 16
भिलाई	21 13	81 26	−04 16
महासमुन्द	21 06	82 06	−01 36
राजनान्दगांव	21 06	81 02	−05 52
रामानुजगंज	23 48	83 42	+04 48
रायगढ़	21 55	83 26	+03 44
रायपुर	21 14	81 38	−03 28

भारत के प्रसिद्ध नगरों के अक्षांश, रेखांश और स्टैंडर्ड अन्तर

छत्तीसगढ़ के नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
सक्ति	22 02	82 58	+01 52
सारनगढ़	21 36	83 05	+02 20
सेओरी नारायण	21 44	82 35	+00 20

महाराष्ट्र

महाराष्ट्र के नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
अकलकोट	17 32	76 13	−25 08
अकोला (मुम्ब.)	20 44	77 00	−22 00
अकोट	21 11	77 04	−21 44
अचलपुर	21 16	77 31	−19 56
अमरावती	20 56	77 45	−19 00
अम्बजोगई	18 44	76 23	−24 28
अरमोरी	20 28	79 59	−10 04
अरवी	20 59	78 14	−17 04
अल्लीपुर	20 34	78 41	−15 16
अहमदनगर	19 05	74 44	−31 04
उल्हासनगर	19 13	73 07	−37 32
एलोरा	20 01	75 10	−29 20
ओस्मानाबाद	18 10	76 02	−25 52
औरंगाबाद	19 53	75 20	−28 40
कतोल	21 16	78 35	−15 40
कराड़	17 17	74 12	−33 12
कल्याण	19 15	73 09	−37 24
कामथी	21 14	79 12	−13 12
किरकी	18 34	73 52	−34 32
कोल्हापुर	16 42	74 13	−33 08
खमगांव	20 41	76 34	−23 44
खेड़ (रत्नागिरी)	17 43	73 23	−36 28
गंगापुर	19 41	75 01	−29 56
गोंडिया (मुम्बई)	21 27	80 12	−09 12
घाटकोपर (मुम्बई)	19 05	72 54	−38 24
चन्द्रापुर	19 57	79 18	−12 48
चालिसगांव	20 28	75 01	−29 56
चिखली	20 21	76 15	−25 00
चिपलून	17 32	73 31	−35 56
चोपड़ा	21 15	75 18	−28 48
जलगांव	21 01	75 34	−27 44
जलगांव (अकोला)	21 03	76 32	−23 52
जालना	19 50	75 53	−26 28
जुन्नार	19 12	73 53	−34 28
तासगांव	17 02	74 36	−31 36
थाने	19 12	72 58	−38 08
दरवाहा	20 19	77 46	−18 56
दिगरस	20 06	77 43	−19 08
दिगलूर	18 33	77 36	−19 36
देवलाली	19 57	73 50	−34 40
धुलिया	20 54	74 47	−30 52
नन्दगांव	20 19	74 39	−31 24
नागपुर	21 09	79 06	−13 36
नान्देड़	19 09	77 20	−20 40
नासिक	19 59	73 48	−34 48
पंढरपुर	17 40	75 20	−28 40
पनवेल	18 59	73 06	−37 36
पाचोरा	20 40	75 21	−28 36
पाटन (महेसाणा)	23 50	72 07	−41 32
पातुर	20 27	76 56	−22 16
पुणे	18 32	73 52	−34 44
पुलगांव	20 44	78 20	−16 40
बारसी	18 14	75 42	−27 12
बारामती	18 09	74 35	−21 40
बालापुर	20 40	76 46	−22 56
बासमत	19 19	77 10	−21 20
बीड़	18 59	75 46	−26 56
भण्डारा	21 10	79 39	−11 24
भिवंडी	19 18	73 04	−37 44
भुसावल	21 03	75 46	−26 56
भोकरदान	20 16	75 46	−26 56
मनवात	19 18	76 30	−24 00
मल्कापुर (बुल्डाना)	20 53	76 12	−25 12
महाद	18 05	73 25	−36 20
महाबलेश्वर	17 55	73 40	−35 20
मालवान	16 04	73 28	−36 08
मालेगांव (ना.)	20 33	74 32	−31 52
मुम्बई	**18 58**	**72 50**	**−38 40**
मुम्ब्रा (थाना)	19 10	73 03	−37 48
मुरुद	18 19	72 58	−38 08
यवतमाल	20 24	78 08	−17 28
रत्नागिरि	16 59	73 18	−36 48
रामटेक	21 24	79 20	−12 40
लाटूर	18 24	76 34	−23 44
वर्धा	20 45	78 37	−15 32
वसाई	19 21	72 48	−38 48
वाशिम	20 06	77 09	−21 24
वाशी	19 13	73 10	−37 20
वाई	17 56	73 54	−34 24
वैजापुर	19 55	74 44	−31 12
शिरपुर	21 21	74 53	−30 28
शोलापुर	17 41	75 55	−26 20
श्रीवर्धन	18 02	73 01	−37 56
सकोली	21 05	79 59	−10 04
संगोला	17 26	75 12	−29 12
सतना	20 35	74 12	−33 12
सतारा	17 41	73 59	−34 04
सांगली	16 52	74 34	−31 44
सिन्नार	19 51	74 00	−34 00
हरनाई	17 48	73 06	−37 36
हिंगोली	19 43	77 09	−21 24

मिज़ोरम

ऐज़वाल	23 43	92 44	+40 56

मेघालय

शिलांग	25 34	91 56	+37 44

राजस्थान

राजस्थान के नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
अजमेर	26 27	74 42	−31 12
अनूपगढ़	29 07	73 06	−37 36
अलवर	27 34	76 38	−23 28
असोप	26 48	73 44	−35 04
अलीगढ़	25 58	76 07	−25 30
अमेट	25 20	73 59	−34 04
आबू	24 40	72 45	−39 00
आमेर	26 59	75 52	−26 32
उदयपुर	24 35	73 41	−35 16
एकलिंगजी	24 44	73 46	−34 56
करौली	26 30	77 01	−21 56
कांकरोली	25 02	73 54	−34 24
किशनगढ़	26 33	74 52	−30 32
केकड़ी	25 55	75 10	−29 20
कोटा	25 10	75 52	−26 32
खण्डेला	27 37	75 32	−27 52
गोगुण्डा	24 46	73 34	−35 44
घोटारू	27 18	70 04	−49 44
चात्सू	26 36	75 59	−26 04
चितौड़गढ़	24 54	74 42	−31 12
चूरू	28 19	75 01	−29 56
चोमू	27 08	75 47	−26 52
चोटां	25 28	71 06	−45 36
छाबरा	24 40	76 54	−22 24
छोटीसदड़ी	24 24	74 36	−31 36
जयपुर	26 55	75 52	−26 32
जसवंतपुरा	24 48	72 30	−40 00
जालौर	25 22	72 38	−39 28

भारत के प्रसिद्ध नगरों के अक्षांश, रेखांश और स्टैंडर्ड अन्तर

राजस्थान के नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
जैसलमेर	26 55	70 54	−46 24
जोधपुर	26 18	73 04	−37 44
जोधासर	28 07	73 50	−34 40
झालावाड़	24 36	76 09	−25 24
झुंझुनू	28 06	75 25	−28 20
टोडारायसिंह	26 00	75 29	−28 04
टोंक	26 11	75 50	−26 40
डीडवाना	27 17	74 25	−32 20
डूँगरपुर	23 50	73 43	−35 08
तिजारा	27 55	76 50	−22 40
थानागाजी	27 25	76 19	−24 44
देओरा	26 30	70 42	−47 12
देचू	26 47	72 20	−40 40
देओरा	26 30	70 42	−47 12
दौसा	26 51	76 21	−24 36
धौलपुर	26 42	77 53	−18 28
नवलगढ़	27 51	75 18	−28 48
नसीराबाद	26 18	74 46	−30 56
नागौर	27 11	73 40	−35 20
नाचना	27 29	71 45	−43 00
नाथद्वारा	24 56	73 50	−34 40
नीम का थाना	27 44	75 48	−26 48
नोखा	27 35	73 29	−36 04
नौहर	29 11	74 46	−30 56
पचपदरा	25 55	72 21	−40 36
परबतसर	26 53	74 47	−30 52
पाली	25 46	73 25	−36 20
पिलानी	28 23	75 35	−27 40
पुष्कर	26 30	74 34	−31 44
पोखरन	26 56	71 55	−42 20
फतेहपुर	28 00	75 00	−30 00
फलौदी	27 09	72 22	−40 32

राजस्थान के नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
फुलेरा	26 52	75 16	−28 56
बड़ी सादड़ी	24 25	74 28	−32 08
बयाना	26 55	77 17	−20 52
बाड़मेर	25 46	71 25	−44 20
बांदीकुई	27 02	76 34	−23 44
बाप	27 24	72 22	−40 32
बाराँ	25 07	76 30	−24 00
बांसवाड़ा	23 30	74 24	−32 24
बालोतरा	25 50	72 14	−41 04
बिलाड़ा	26 11	73 42	−35 12
बीकानेर	28 01	73 22	−36 32
बून्दी	25 27	75 40	−27 20
भरतपुर	27 05	77 30	−20 00
भादरा	29 15	75 20	−28 40
भीलवाड़ा	25 21	74 40	−31 20
भीनमाल	25 01	72 19	−40 44
मकराना	27 04	74 43	−31 08
महाजन	28 49	73 56	−34 16
मांगरोल	25 21	76 30	−24 00
मावली	24 48	73 58	−34 08
मुकन्दबाड़ा	24 49	76 01	−25 56
मेड़ता सिटी	26 40	74 06	−33 36
मेड़ता रोड़	26 44	73 55	−34 20
मोहनगढ़	27 17	71 18	−44 48
रतनगढ़	28 05	74 39	−31 24
रानीवाड़ा	24 46	72 13	−41 08
रायसिंहनगर	29 32	73 27	−36 12
लछमनगढ़	27 45	75 04	−29 44
लाठी	27 03	71 30	−44 00
शाहगढ़	27 08	69 58	−50 08
श्रीगंगानगर	29 49	73 50	−34 40
श्रीमाधोपुर	27 25	75 32	−27 52

राजस्थान के नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
श्रीमोहनगढ़	27 17	71 12	−45 12
समदड़ी	25 49	72 35	−39 40
सरदारशहर	28 27	74 30	−32 00
सरूपसर	29 22	73 37	−35 32
सवाईमाधोपुर	25 59	76 30	−24 00
सांगानेर	26 49	75 52	−26 32
सांचोर	24 41	71 50	−42 40
साम्भर	26 55	75 10	−29 20
सादूलपुर	28 39	75 24	−28 24
सिरोही	24 54	72 55	−38 20
सिवाना	25 37	72 27	−40 12
सिरोही	24 53	72 54	−38 24
सीकर	27 36	75 09	−29 24
सुजानगढ़	27 42	74 30	−32 00
सूरतगढ़	29 19	73 57	−34 12
हनुमानगढ़	29 35	74 21	−32 36
रामगढ़ (जयपुर)	27 14	75 10	−29 20
शाहपुरा (जयपुर)	27 22	75 58	−26 08
शाहपुरा (भीलवाड़ा)	25 40	74 50	−30 40
शेरगढ़ (जोधपुर)	26 24	72 21	−40 36
शेरगढ़ (झालाबाड़)	24 41	76 32	−23 52
हनुमानगढ़	29 35	74 21	−32 36

सिक्किम

गंगटोक	27 22	88 36	+24 24

हरियाणा

अम्बाला कैंट	30 21	76 52	−22 32
अम्बाला शहर	30 22	76 46	−22 56
अगरोहा	29 20	75 38	−27 88
करनाल	29 42	77 02	−21 52
कलानौर	28 52	76 23	−24 28
कालका	30 50	76 56	−22 16

हरियाणा के नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
कुरुक्षेत्र	29 59	76 51	−22 36
केसरी	30 15	76 53	−26 28
कैथल	29 48	76 26	−24 16
खतौली	30 37	76 58	−22 08
गुरुग्राम	28 28	77 04	−21 44
गोहाना	29 09	76 41	−23 16
घरौण्डा	29 34	76 58	−22 08
चरखी-दादरी	28 36	76 16	−24 56
जगाधरी	30 10	77 16	−20 56
जाखल	29 48	75 50	−26 40
जीन्द	29 19	76 19	−24 44
झज्जर	28 37	76 39	−23 24
टोहाना	29 42	75 54	−26 24
थानेसर	29 58	76 56	−22 16
दादरी	28 33	77 32	−19 52
नरवाणा	29 36	76 08	−25 28
नारनौल	28 02	76 14	−25 04
नारायणगढ़	30 30	77 09	−21 24
नाहर	28 23	76 23	−24 28
नीलोखेड़ी	29 52	76 54	−22 24
पंचकूला	30 42	76 52	−22 32
पटौदी	28 19	76 48	−22 48
पलवर	28 10	77 19	−20 44
पानीपत	29 23	76 59	−22 04
पिंजौर	30 49	76 55	−22 20
पिपली	29 59	76 52	−22 32
पिहोवा	29 58	76 35	−23 40
फतेहाबाद	29 31	75 27	−28 12
फरीदाबाद	28 26	77 19	−20 44
बल्लभगढ़	28 21	77 19	−20 44
बहादुरगढ़	28 42	76 55	−22 20
बरवाला	29 23	75 55	−26 20
बालसमन्द	29 05	75 29	−28 04

भारत के प्रसिद्ध नगरों के अक्षांश, रेखांश और स्टैंडर्ड अन्तर

हरियाणा के नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
भादसों	29 56	76 56	−22 16
भिवानी	28 47	76 08	−25 48
मनसादेवी	30 44	76 52	−22 32
मनीमाजरा	30 42	76 52	−22 32
महेन्द्रगढ़	28 17	76 09	−25 24
मोहाना	29 04	76 50	−22 40
यमुनानगर	30 07	77 18	−20 48
रादौर	30 02	77 06	−21 36
रिवाड़ी	28 12	76 38	−23 28
रैना	29 28	74 54	−30 24
रोडी	29 44	75 15	−29 00
रोहतक	28 54	76 38	−23 28
लाडवा	29 59	77 05	−21 40
शाहाबाद	30 10	76 55	−22 20
सिरसा	29 32	75 01	−29 56
सिवानी	28 55	75 37	−27 32
सोनीपत	28 59	77 01	−21 56
हसनपुर	27 59	77 29	−20 04
हांसी	29 06	76 00	−26 00
हिसार	29 10	75 46	−26 56

हिमाचल–प्रदेश

अम्ब	31 43	76 06	−25 36
अर्की	31 09	76 59	−22 04
आनी	31 28	77 20	−20 40
आलमपुर	31 54	76 30	−24 00
इन्दौरा	32 06	75 41	−27 16
ऊना	31 29	76 17	−24 52
करसोग	31 23	77 13	−21 08
कसौली	30 55	76 57	−22 12
कथला	31 59	76 47	−22 52
कल्पा	31 34	78 16	−16 56
कण्डाघाट	30 57	77 08	−21 28

हि.प्र. के नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
काला अम्ब	30 29	77 13	−21 08
काँगड़ा	**32 05**	**76 18**	**−24 48**
किन्नौर	31 32	78 20	−16 40
कुफरी	31 07	77 12	−21 12
कुम्हारहट्टी	30 52	77 03	−21 48
कुल्लू	31 58	77 06	−21 36
कुमारसेन	31 18	77 37	−19 32
कुनिहार	30 58	77 10	−21 20
केलांग	32 37	77 05	−21 40
कोटखाई	31 08	77 36	−19 36
कोटगढ़	31 19	77 29	−20 04
कोटला	32 17	76 02	−25 52
खजियार	32 31	76 03	−25 40
गर्ली (परागपुर)	31 48	76 18	−24 48
गगरेट	31 41	76 04	−25 44
गोहर	31 32	77 02	−21 52
घुमारवीं	31 28	76 42	−23 12
चम्बा	**32 34**	**76 08**	**−25 28**
चच्योट	31 36	77 04	−21 44
चामुण्डा देवी	32 08	76 22	−24 32
चायल	31 03	77 14	−21 04
चिन्तपूरणी	31 47	76 04	−25 44
जस्सूर	32 17	75 55	−26 20
जतोग	31 06	77 07	−21 32
जोगिन्द्रनगर	31 59	76 46	−22 56
ज्वाली	32 07	76 01	−25 56
ज्वालामुखी	31 53	76 20	−24 40
ठयोग	31 08	77 33	−19 48
डमटाल	32 13	75 41	−27 16
डगशाई	30 53	77 06	−21 36
डल्हौज़ी	32 31	76 00	−26 00
ढलियारा	31 52	76 11	−25 16
तारादेवी	31 04	77 10	−21 20

हि.प्र. के नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
तत्तापानी	31 14	77 10	−21 20
त्रिलोकनाथ	32 43	76 39	−23 24
त्रिलोकपुर	30 34	77 09	−21 24
देहरा गोपीपुर	31 55	76 14	−25 04
दौलतपुर	31 46	75 58	−26 08
धनेटा	31 38	76 29	−24 04
धर्मशाला	32 16	76 23	−24 48
धर्मपुर	30 54	77 04	−21 44
धौलाकुआं	30 30	77 29	−20 04
नगर	32 07	77 10	−21 20
नगरोंटा बगवां	32 06	76 22	−24 32
नगरोटा	32 07	76 23	−24 28
नादौन	31 47	76 21	−24 36
नाहन	30 33	77 18	−20 48
नालागढ़	31 03	76 42	−23 12
नारकण्डा	31 15	77 28	−20 08
निरमण्ड	31 28	77 34	−19 44
नूरपुर	32 18	75 54	−26 24
नैनादेवी	31 19	76 31	−23 56
पच्छाद	31 47	77 08	−21 28
पण्डोह	31 41	77 07	−21 32
पपरोला	32 04	76 34	−23 44
परवाणू	30 50	76 57	−22 12
पाओंटा साहिब	30 27	77 37	−19 32
पालमपुर	32 07	76 33	−23 48
बरसर (भोटा)	31 34	76 28	−24 08
बसौली	31 34	76 23	−24 28
बंगाना तै.	31 33	76 27	−24 16
बड़ागांव	31 20	77 15	−21 00
बंजार	31 40	77 20	−20 40
बनीखेत	32 32	75 58	−26 08
बकलोह	32 27	75 59	−26 04
बिलासपुर	31 20	76 45	−23 00

हि.प्र. के नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
बैजनाथ	32 03	76 38	−23 28
भरवाईं	31 47	76 07	−25 36
भरमौर	32 27	76 32	−23 52
भाखड़ा	31 20	76 30	−24 00
भुन्तर	31 54	77 09	−21 24
मण्डी	**31 43**	**76 58**	**−22 08**
मनाली	32 16	77 10	−21 20
मनीकरण	32 01	77 20	−20 40
मशोबरा	31 07	77 14	−21 04
मंगवाल	32 03	76 05	−25 40
महासू	31 05	77 13	−21 08
राजगढ़	30 52	77 22	−20 32
रामपुरबुशहर	31 27	77 38	−19 28
रोहड़	31 12	77 45	−19 00
लाहौल स्पीति	31 28	77 39	−19 24
शाहपुर	32 13	76 11	−25 16
शिमला	**31 06**	**77 10**	**−21 20**
शेरपुर	32 34	75 59	−26 04
सपाटू	30 59	76 59	−22 04
सरकाघाट	31 42	76 45	−23 00
सन्धोल	31 59	76 45	−22 56
संतोखगढ़	31 21	76 20	−24 40
सिरमौर	30 45	77 30	−20 00
सुन्दरनगर	**31 32**	**76 53**	**−22 28**
सुजानपुरटिहरा	31 50	76 30	−24 00
सोलन	30 55	77 09	−21 24
हमीरपुर	31 41	76 31	−23 56
हड़सर	32 21	76 33	−23 48
हरिपुर	32 39	76 11	−25 16
हरिपुरधार	30 53	77 28	−20 08
हाटकोटी	31 09	77 45	−19 00

अन्य केन्द्रीय प्रदेश

चण्डीगढ़	30 44	76 52	−22 32

विदेशी नगरों के अक्षांश-रेखांश एवं स्टैं. अन्तर

आगे लिखे गए विदेशी नगरों के सामने स्थानीय समय का भा. स्टै. टा. से अन्तर जानने के लिए अन्तिम कालम में (–) चिन्ह वाले नगरों का समय भा. स्टै. टा. से पहले घटित होगा जबकि (+) चिन्ह वाले नगरों के आगे निर्दिष्ट समय, उतने घण्टे मिनट बाद में घटित होगा। जैसे इंग्लैंड (लंदन) के आगे +5/30 घं. मिं. लिखे हैं, इसका भाव यह हुआ कि यदि इंग्लैंड में प्रातः के 6/30 बजे हैं तो भारत में दोपहर के 12 बजे होंगे। इसी भान्ति न्यूयार्क (अमेरिका) के आगे +10/30 घं. मिं. होने से इसका यह तात्पर्य होगा कि वहां साढ़े दस घण्टे पीछे अर्थात् गत दिवस के डेढ़ (1/30) बजे होंगे। **ज्ञातव्य** रहे, अमेरिका, कैनेडा, मैक्सीको आदि देशों में एक ही समय अलग–अलग स्टैण्डर्ड टाईम का निर्धारण किया जाता है। **जैसे– एटलांटिक टाईम (A.T.), ईस्टर्न टाईम (Eastern Time), सैंटर्ल टाईम (Central Time), माऊंटेन टाईम, पैसेफिक टाईम इत्यादि।** यह सब स्टै. टाईम अलग–अलग रेखांशों पर आधारित होते हैं। जिसे स्टैण्डर्ड मेरिडियन कहते हैं। उदाहरणतया ईस्टर्न टाईम 75° रेखांश, सैंट्रल टाईम 90° रेखांश पर, माऊंटेन टाईम 105° पश्चिम रेखांश अनुसार निर्धारित होता है। अमरीका या कैनेडा में किसी नगर का भा. स्टै. टा. से अन्तर जानने के लिए वहां स्टैण्डर्ड मेरिडियन निर्धारक रेखांश का ज्ञान आवश्यक है। दूसरे, विदेशी समयांतर में विशेष ध्यान देने योग्य बात यह है क्टि अमरीका, कैनेडा, ब्रिटेन आदि कुछ देशों में ग्रीष्मकालीन समय (Day Saving Time) या Summer Time का भी विचार किया जाता है। जोकि प्रायः अप्रैल के अन्तिम रविवार से अक्तूबर के अन्तिम रविवार तक होता है। (अमरीका, कैनेडा में)। इन दिनों देश की घड़ियां एक घण्टा आगे कर दी जाती है।

इसी प्रकार Australia (आस्ट्रेलिया) (दक्षिणी धुवीय देशों) में अक्तूबर के अन्तिम रविवार से मार्च के अन्तिम रविवार तक ग्रीष्मकालीन समय (D.S.T.) प्रयोग में लाया जाता है। ध्यान रहे, Western Australia तथा Queensland आदि कुछ क्षेत्रों में D.S.T. प्रयोग में नहीं लाया जाता। इसी प्रकार न्यूज़ीलैण्ड (New-Zealand) में अक्तू. के प्रथम सप्ताह के रविवार से मार्च के तृतीय सप्ताह के रविवार तक ग्रीष्मकालीन (D.S.T.) समय प्रयोग में लाया जाता है।

नगर	अक्षांश उ.=North द.=South अं. क.	रेखांश पू.=East प..=West अं. क.	स्टैं. अन्तर (स्थानीय स्टै. टा. से स्टै. मेरि. का अन्तर) मिं. सै.	स्टैण्डर्ड मेरिडियन (मानक रेखांश) अं. क.	भा. स्टै. टा. से अन्तर घं. मिं.
(1) AMERICA [UNITED-STATES] [यह देश पाँच कालक्षेत्रों में बंटा हुआ है।]					
Abilen, Texas	30 27 उ.	99 44 प.	–38 56	90 00 प.	+11 30
Albany, N.Y.	42 39 उ.	73 45 प.	+05 00	75 00 प.	+10 30
Abotsford	49 00 उ.	122 30 प.	–10 00	120 00 प.	+13 30
Anderson, Indiana	40 06 उ.	85 41 प.	–42 44	75 00 प.	+10 30
Athens, Georgia	33 57 उ.	83 23 प.	–33 32	75 00 प.	+10 30
Atlanta, Georgia	33 45 उ.	84 23 प.	–37 32	75 00 प.	+10 30
Atlantic City, N.J.	39 22 उ.	74 25 प.	+02 20	75 00 प.	+10 30
Auburn, N.Y.	42 56 उ.	76 34 प.	–06 16	75 00 प.	+10 30
Austin, Taxas	30 16 उ.	97 45 प.	–31 00	90 00 प.	+11 30
Asbury Park (N.J.)	40 13 उ.	74 01 प.	+03 56	75 00 प.	+10 30
Bakersfield, Califo.	35 22 उ.	119 01 प.	+03 56	120 00 प.	+13 30
Bay City, Michigan	43 36 उ.	83 53 प.	–35 32	75 00 प.	+10 30
Bay Town, Texas	29 44 उ.	94 59 प.	–19 56	90 00 प.	+11 30
Boston, Massa.	42 21 उ.	71 04 प.	+15 44	75 00 प.	+10 30
Buffalo, N. York	42 53 उ.	78 53 प.	–15 32	75 00 प.	+10 30
Cambridge, Massa.	42 22 उ.	71 06 प.	+15 36	75 00 प.	+10 30
Chicago, Illinois	41 51 उ.	87 39 प.	+09 24	90 00 प.	+11 30
Cincinnati, Ohio	39 10 उ.	84 27 प.	–37 48	75 00 प.	+10 30

नगर	अक्षांश उ.=North द.=South अं. क.	रेखांश पू.=East प..=West अं. क.	स्टैं. अन्तर (स्थानीय स्टै. टा. से स्टै. मेरि. का अन्तर) मिं. सै.	स्टैण्डर्ड मेरिडियन (मानक रेखांश) अं. क.	भा. स्टै. टा. से अन्तर घं. मिं.
Californiacity (Cal.)	35 08 उ.	117 59 प.	+08 04	120 00 प.	+13 30
Columbia, Missouri	38 57 उ.	92 20 प.	–09 20	90 00 प.	+11 30
Columbus, Georgia	32 28 उ.	84 59 प.	–39 56	75 00 प.	+10 30
Dales, Texas	29 56 उ.	97 34 प.	–30 16	90 00 प.	+11 30
Detriot, Michi.	42 20 उ.	83 03 प.	–32 12	75 00 प.	+10 30
Edison, N. Jersey	41 04 उ.	74 34 प.	+01 44	75 00 प.	+10 30
Essex, Maryland	39 19 उ.	76 29 प.	– 05 56	75 00 प.	+10 30
Florida City, FL	25 27 उ.	80 29 प.	–21 56	75 00 प.	+10 30
Frederick (D.M.)	39 38 उ.	78 31 प.	–14 04	75 00 प.	+10 30
Frankfort, Kentucky	38 12 उ.	84 52 प.	–39 28	75 00 प.	+10 30
Greenville, Missi	33 25 उ.	91 04 प.	–04 16	90 00 प.	+11 30
Hamilton, Ohio	39 24 उ.	84 34 प.	–38 16	75 00 प.	+10 30
Houston, Texas	29 46 उ.	95 22 प.	–21 28	90 00 प.	+11 30
Irving, Texas	32 49 उ.	96 57 प.	–27 48	90 00 प.	+11 30
Jersey City, N.J.	40 44 उ.	74 05 प.	+03 20	75 00 प.	+10 30
Johnson City, Tenne.	36 19 उ.	82 21 प.	+30 36	90 00 प.	+11 30
Kingston, N.Y.	41 56 उ.	74 00 प.	+04 00	75 00 प.	+10 30
Lockport, N.Y.	43 10 उ.	78 41 प.	–14 44	75 00 प.	+10 30
Los Angeles, Calif.	34 03 उ.	118 15 प.	+07 00	120 00 प.	+13 30

नगर	अक्षांश उ.=North द.=South अं. क.	रेखांश पू.=East प..=West अं. क.	स्टैं. अन्तर (स्थानीय स्टै. टा. से स्टै. मेरि. का अन्तर) मिं. सै.	स्टैण्डर्ड मेरिडियन (मानक रेखांश) अं. क.	भा. स्टै. टा. से अन्तर घं. मिं.
Manchester, N. Hamp.	43 00 उ.	71 27 प.	+14 54	75 00 प.	+10 30
Meridian, Missi	32 22 उ.	88 42 प.	+05 12	90 00 प.	+11 30
Michigan City, Indiana	41 42 उ.	86 54 प.	–47 36	75 00 प.	+10 30
Midland, Texas	32 00 उ.	102 05 प.	–48 20	90 00 प.	+11 30
Milwankee, Wiscon.	43 02 उ.	87 54 प.	+08 24	90 00 प.	+11 30
Montgomery, Alabama	32 22 उ.	86 18 प.	+14 48	90 00 प.	+11 30
New Bedford, Massa	41 38 उ.	70 56 प.	+ 16 16	75 00 प.	+10 30
New Castle, P.A.	40 44 उ.	76 13 प.	–04 52	75 00 प.	+10 30
Newton, Massa	42 20 उ.	71 13 प.	+15 10	75 00 प.	+10 30
New York, N.Y.	40 43 उ.	74 00 प.	+04 00	75 00 प.	+10 30
Ontario, Calif	34 04 उ.	117 39 प.	+11 24	120 00 प.	+13 30
Oxford, Alabama	33 37 उ.	85 50 प.	+16 40	90 00 प.	+11 30
Redlands, California	34 04 उ.	117 11 प.	+11 16	120 00 प.	+13 30
Reston, Virginia	38 58 उ.	77 20 प.	–09 20	75 00 प.	+10 30
Richfield, Minnesota	44 53 उ.	93 17 प.	–13 08	90 00 प.	+11 30
Richmond, Calif	37 56 उ.	122 21 प.	–09 24	120 00 प.	+13 30
Sacramento, Calif	38 35 उ.	121 30 प.	–06 00	120 00 प.	+13 30
St. Louis Park, Minne	44 57 उ.	93 21 प.	–13 24	90 00 प.	+11 30
San Francisco, Calif	37 47 उ.	122 25 प.	–09 40	120 00 प.	+13 30
Santa Rosa, Calif	38 27 उ.	122 43 प.	–10 52	120 00 प.	+13 30
Seattle, Washington	47 36 उ.	122 20 प.	–09 20	120 00 प.	+13 30
Texas City, Texa	29 23 उ.	94 54 प.	–19 36	90 00 प.	+11 30
Washington, D.C.	38 55 उ.	77 02 प.	–08 08	75 00 प.	+10 30
Yuba City, Calif	39 08 उ.	121 37 प.	–06 28	120 00 प.	+13 30
(2) AFGANISTAN (Standard Meridian—67-30 पू.)					
Daulatabad	36 25 उ.	64 55 पू.	–10 20	67 30 पू.	+01 00
Kabul	34 31 उ.	69 12 पू.	+06 48	67 30 पू.	+01 00
Kandhar	31 32 उ.	65 30 पू.	–08 00	67 30 पू.	+01 00
(3) ARGENTINA [यह देश दो कालक्षेत्रों में बंटा हुआ है।] (St. Meridian-45-00 प.)					
Rofaela	31 16 द.	61 29 प.	–05 56	60 00 प.	+08 30
San Francisco	31 26 द.	62 05 प.	–08 20	60 00 प.	+08 30
(4) AUSTRALIA [यह देश तीन कालक्षेत्रों में बंटा हुआ है।]					
Adelaide	34 55 द.	138 35 पू.	–15 40	142 30 पू.	–04 00
Brisbane	27 28 द.	153 02 पू.	+12 08	150 00 पू.	–04 30
Canberra	35 17 द.	149 08 पू.	–03 28	150 00 पू.	–04 30
Hobart	42 53 द.	147 19 पू.	–10 44	150 00 पू.	–04 30

नगर	अक्षांश उ.=North द.=South अं. क.	रेखांश पू.=East प..=West अं. क.	स्टैं. अन्तर (स्थानीय स्टै. टा. से स्टै. मेरि. का अन्तर) मिं. सै.	स्टैण्डर्ड मेरिडियन (मानक रेखांश) अं. क.	भा. स्टै. टा. से अन्तर घं. मिं.
Liverpool	33 54 द.	150 56 पू.	+03 44	150 00 पू.	–04 30
Melbourne	37 50 द.	144 58 पू.	–20 08	150 00 पू.	–04 30
Perth	31 56 द.	115 50 पू.	–16 40	120 00 पू.	–02 30
Sydney	33 52 द.	151 12 पू.	+04 48	150 00 पू.	–04 30
(5) Austria (Standard Meridian – 15-00 पू.)					
Graz	47 05 उ.	15 27 पू.	–01 48	15 00 पू.	–04 30
(6) Bangladesh					
Chittagong	22 20 उ.	91 50 पू.	+07 20	90 00 पू.	–00 30
Dhaka	22 43 उ.	90 25 पू.	+01 40	90 00 पू.	–00 30
(7) Bhutan					
Thimbu	27 28 उ.	89 39 पू.	–01 24	90 00 पू.	–00 30
(8) BRAZIL [कुछ क्षेत्रों में ही ग्रीष्मकालीन समय प्रयोग में लाया जाता है।][चार कालक्षेत्र में आवंटित है।]					
Brasilia	15 47 द.	47 55 प.	–11 40	45 00 प.	+08 30
Maringa	23 25 द.	51 55 प.	–27 40	45 00 प.	+08 30
Rio Branco	9 58 द.	67 48 प.	+28 48	75 00 प.	+10 30
Rio Claro	22 24 द.	47 33 प.	–10 12	45 00 प.	+08 30
Rio de Janeiro	22 54 द.	43 14 प.	+07 04	45 00 प.	+08 30
(9) BURMA (MYANMAR)					
Rangoon	16 47 उ.	96 10 पू.	–05 20	97 30 पू.	–01 00
(10) CANADA [इस देश में भी छः कालक्षेत्र प्रचलित हैं।]					
Brampton, Ontario	43 41 उ.	79 46 प.	–19 04	75 00 प.	+10 30
Calgary, Alberta	51 03 उ.	114 05 प.	–36 20	105 00 प.	+12 30
Edmonton, Alberta	53 33 उ.	113 30 प.	–34 00	105 00 प.	+12 30
Kingston, Ontario	44 14 उ.	76 30 प.	–06 00	75 00 प.	+10 30
Mississauga, Ontario	43 35 उ.	79 37 प.	–18 28	75 00 प.	+10 30
Montreal, Quebec	45 31 उ.	73 34 प.	+05 44	75 00 प.	+10 30
Niagara Falls, Ontario	43 06 उ.	79 04 प.	–16 16	75 00 प.	+10 30
North York, Ontario	43 46 उ.	79 25 प.	–17 40	75 00 प.	+10 30
Ottawa, Ontario	45 25 उ.	75 42 प.	–02 48	75 00 प.	+10 30
Prince George, B.C.	53 55 उ.	122 46 प.	–11 04	120 00 प.	+13 30
Prince Rupert, B.C.	54 19 उ.	130 19 प.	–41 16	120 00 प.	+13 30
Quebec, Quebec	46 49 उ.	71 14 प.	+15 04	75 00 प.	+10 30
Richmond, British Col.	49 10 उ.	123 10 प.	–12 40	120 00 प.	+13 30
Saint John's- -New Foundland	47 33 उ.	52 40 प.	–00 40	52 30 प.	+09 00
Toronto, Ontario	43 39 उ.	79 23 प.	–17 32	75 00 प.	+10 30

नगर	अक्षांश उ.=North द.=South अं. क.	रेखांश पू.=East प..=West अं. क.	स्टैं. अन्तर (स्थानीय स्टै. टा. से स्टै. मेरि. का अन्तर) मिं. सै.	स्टैण्डर्ड मेरिडियन (मानक रेखांश) अं. क.	भा. स्टै. टा. से अन्तर घं. मिं.
Vancouver- (B.C.)	49 16 उ.	123 07 प.	–12 28	120 00 प.	+13 30
Victoria-B.C.	48 25 उ.	123 21 प.	–13 24	120 00 प.	+13 30
Winnipeg, Manitoba	49 53 उ.	97 09 प.	–28 36	90 00 प.	+11 30
Windsor, Ontario	42 18 उ.	83 01 प.	–32 04	75 00 प.	+10 30
(11) CHINA	**(ZHONGGUO)**				
Beijing (Peking)	39 55 उ.	116 25 पू.	–14 20	120 00 पू.	–02 30
Fushun	29 11 उ.	105 00 पू.	–60 00	120 00 पू.	–02 30
Huainan	32 40 उ.	117 00 पू.	–12 00	120 00 पू.	–02 30
Ji'an	41 06 उ.	126 08 पू.	+24 32	120 00 पू.	–02 30
Shanghai	31 14 उ.	121 28 पू.	+05 52	120 00 पू.	–02 30
(12) ENGLAND	**(UNITED-KINGDOM) U.K.**				
Adenberg	55 52 उ.	03 12 प.	–12 48	00 00	+05 30
Bedford	52 08 उ.	00 29 प.	–01 56	00 00	+05 30
Birmingham	52 28 उ.	01 54 प.	–07 36	00 00	+05 30
Bradford	53 48 उ.	01 45 प.	–07 00	00 00	+05 30
Bristol	51 27 उ.	02 35 प.	–10 20	00 00	+05 30
Cambridge	52 13 उ.	00 08 पू.	+00 32	00 00	+05 30
Coventry	52 25 उ.	01 30 प.	–06 00	00 00	+05 30
Derby	52 55 उ.	01 29 प.	–05 56	00 00	+05 30
Glasgow, Scotla	55 53 उ.	04 15 प.	–17 00	00 00	+05 30
Hamilton, Scotla	55 47 उ.	04 03 प.	–16 12	00 00	+05 30
Kingswood	51 27 उ.	02 31 प.	–10 04	00 00	+05 30
Leeds	53 50 उ.	01 35 प.	–06 20	00 00	+05 30
Leicester	52 38 उ.	01 05 प.	–04 20	00 00	+05 30
Liverpool	53 25 उ.	02 58 प.	–11 52	00 00	+05 30
London	51 32 उ.	00 05 प.	–00 20	00 00	+05 30
Manchester	53 30 उ.	02 13 प.	–08 52	00 00	+05 30
New-Castle	52 26 उ.	03 06 प.	–12 24	00 00	+05 30
Northampton	52 14 उ.	00 54 प.	–03 36	00 00	+05 30
Nottingham	52 58 उ.	01 10 प.	–04 40	00 00	+05 30
Slough	51 31 उ.	00 36 प.	–02 24	00 00	+05 30
Southampton	50 55 उ.	01 25 प.	–05 40	00 00	+05 30
Walsall	52 35 उ.	01 58 प.	–07 52	00 00	+05 30
Wolverhampton	52 36 उ.	02 08 प.	–08 32	00 00	+05 30

नगर	अक्षांश उ.=North द.=South अं. क.	रेखांश पू.=East प..=West अं. क.	स्टैं. अन्तर (स्थानीय स्टै. टा. से स्टै. मेरि. का अन्तर) मिं. सै.	स्टैण्डर्ड मेरिडियन (मानक रेखांश) अं. क.	भा. स्टै. टा. से अन्तर घं. मिं.
(13) FIJI	[ग्रीष्मकालीन समय ग्रहण किया जाता है।] (नवम्बर के प्रथम सप्ताह के रविवार से फरवरी के अन्तिम रविवार तक)				
Kandavu Island	19 03 द.	178 13 पू.	–05 58	180 00 पू.	–06 30
Lau Group	18 20 द.	178 30 पू.	–06 00	180 00 पू.	–06 30
ONO-I-LAU	20 39 द.	178 42 पू.	–05 12	180 00 पू.	–06 30
Rotuma Island	12 30 द.	177 05 पू.	–11 40	180 00 पू.	–06 30
Taveuni	16 51 द.	179 58 प.	–00 08	180 00 पू.	–06 30
Vanua Levu	16 33 द.	179 15 पू.	–03 00	180 00 पू.	–06 30
Vitina	16 19 द.	179 43 पू.	–01 08	180 00 पू.	–06 30
(14) FRANCE					
Lyon	45 45 उ.	04 51 पू.	–40 36	15 00 पू.	+04 30
Paris	48 52 उ.	02 20 पू.	–50 40	15 00 पू.	+04 30
(15) Germany					
Berlin	52 32 उ.	13 25 पू.	–06 20	15 00पू.	+04 30
Bonn	50 44 उ.	07 05 पू.	–31 40	15 00पू.	+04 30
(16) GREECE					
Piraievs (Piraeus)	37 57 उ.	23 38 पू.	–25 28	30 00पू.	+03 30
(17) HONGKONG	**(CHINA का भाग)**				
Kwun Tong	22 19 उ.	114 12 पू.	–23 12	120 00 पू.	–02 30
Tai Tong	22 25 उ.	114 01 पू.	–23 56	120 00 पू.	–02 30
(18) Indonesia	[यह देश तीन कालक्षेत्रों में विभाजित है] [105°-00 पू., 120°-00 पू., 135°-00 पू.,]				
Jambi	01 42 द.	103 34 पू.	–05 44	105 00 पू.	–01 30
Jakarta	06 10 द.	106 48 पू.	+07 12	105 00 पू.	–01 30
(19) IRAN					
Tehran	35 40 उ.	51 26 पू.	–04 16	52 30 पू.	+02 00
(20) IRAQ					
Baghdad	33 21 उ.	44 25 पू.	–02 20	45 00 पू.	+02 30
(21) IRELAND					
Dublin	53 20 उ.	06 15 प.	–25 00	00 00	+05 30
(22) ITALY					
Brescia	45 33 उ.	10 15 पू.	–19 00	15 00 पू.	+04 30
Monza	45 35 उ.	09 16 पू.	–22 56	15 00 पू.	+04 30
Lucca	43 50 उ.	10 29 पू.	–18 04	15 00 पू.	+04 30
Milano (Milan)	45 28 उ.	09 12 पू.	–23 12	15 00 पू.	+04 30
Rho	45 32 उ.	09 02 पू.	–23 52	15 00 पू.	+04 30
Rome	41 54 उ.	12 29 पू.	–10 04	15 00 पू.	+04 30

नगर	अक्षांश उ.=North द.=South अं. क.	रेखांश पू.=East प..=West अं. क.	स्टैं. अन्तर (स्थानीय स्टै. टा. से स्टै. मेरि. का अन्तर) मिं. सै.	स्टैण्डर्ड मेरिडियन (मानक रेखांश) अं. क.	भा. स्टै. टा. से अन्तर घं. मिं.
(23) JAPAN					
Tokyo	35 42 उ.	139 46 पू.	+19 04	135 00 पू.	–03 30
(24) KENYA					
Mombasa	04 03 द.	39 40 पू.	–21 20	45 00 पू.	+02 30
Nairobi	01 17 द.	36 49 पू.	–32 44	45 00 पू.	+02 30
(25) KOREA (South)					
Seoul	37 33 उ.	126 58 पू.	–32 08	135 00 पू.	–03 30
(26) KUWAIT					
AL-Kuwayt	29 20 उ.	47 59 पू.	+11 56	45 00 पू.	+02 30
AL-Jahrah	29 20 उ.	47 40 पू.	+10 40	45 00 पू.	+02 30
(27) MALAYSIA					
Kualalumpur	03 10 उ.	101 42 पू.	–73 12	120 00 पू.	–02 30
(28) MAURITIUS					
Port Louis	20 10 द.	57 30 पू.	–10 00	60 00 पू.	+01 30
(29) NEPAL					
Kathmandu	27 43 उ.	85 19 पू.	–03 44	86 15 पू.	–00 15
(30) NETHERLANDS (HOLLAND)					
Amsterdam	52 22 उ.	04 54 पू.	–40 24	15 00 पू.	+04 30
(31) NEW-ZEALAND					
Auckland	36 52 द.	174 46 पू.	–20 56	180 00 पू.	–06 30
Christchurch	43 32 द.	172 38 पू.	–29 28	180 00 पू.	–06 30
Hamilton	37 47 द.	175 17 पू.	–18 52	180 00 पू.	–06 30
Napier	39 29 द.	176 55 पू.	–12 20	180 00 पू.	–06 30
Wellington	41 18 द.	174 47 पू.	–20 52	180 00 पू.	–06 30
(32) NORWAY					
Drammen	59 44 उ.	10 15 पू.	–19 00	15 00 पू.	+04 30
Oslo	59 55 उ.	10 45 पू.	–18 00	15 00 पू.	+04 30
(33) OMAN					
Muscat	23 37 उ.	58 35 पू.	–05 40	60 00 पू.	+01 30
(34) PAKISTAN					
Islamabad	33 42 उ.	73 10 पू.	–07 20	75 00 पू.	+00 30
Karachi	24 52 उ.	67 03 पू.	–31 48	75 00 पू.	+00 30
Lahore	31 35 उ.	74 18 पू.	–02 48	75 00 पू.	+00 30
Multan	30 11 उ.	71 29 पू.	–14 04	75 00 पू.	+00 30
Sialkot	32 30 उ.	74 31 पू.	–01 56	75 00 पू.	+00 30
(35) PHILIPPINES					
Manila	14 35 उ.	121 00 पू.	+04 00	120 00 पू.	–02 30
Olongapo	14 50 उ.	120 16 पू.	+01 04	120 00 पू.	–02 30
(36) PORTUGAL [Standard Meridian—G.M.T.—0°-00′]					
Lisbon	38 43 उ.	09 08 प.	–36 32	00 00 पू.	+05 30
(37) QATAR					
Doha	25 17 उ.	51 32 पू.	+26 08	45 00 पू.	+02 30
(38) RUSSIA [यह देश भी अलग-अलग कालक्षेत्रों में बंटा हुआ है।]					
Moscow	55 45 उ.	37 35 पू.	–29 40	45 00 पू.	+02 30
(39) SAUDI-ARABIA					
Al-Mubarraz	22 17 उ.	46 44 पू.	+06 56	45 00 पू.	+02 30
Riyadh	24 38 उ.	46 43 पू.	+06 52	45 00 पू.	+02 30
Jiddah	21 30 उ.	39 12 पू.	–23 12	45 00 पू.	+02 30
(40) SINGAPORE					
Singapore	01 17 उ.	103 51 पू.	–64 36	120 00 पू.	–02 30
(41) SOUTH-AFRICA					
Cape Town	33 55 द.	18 22 पू.	–46 32	30 00 पू.	+03 30
Durban	29 55 द.	30 56 पू.	+03 44	30 00 पू.	+03 30
East London	33 00 द.	27 55 पू.	–08 20	30 00 पू.	+03 30
Johannesburg	26 15 द.	28 00 पू.	–08 00	30 00 पू.	+03 30
Port-Elizabeth	33 58 द.	25 40 पू.	–17 20	30 00 पू.	+03 30
(42) SPAIN					
Barcelona	41 23 उ.	02 11 पू.	–51 16	15 00 पू.	+04 30
Madrid	40 24 उ.	03 41 प.	–74 44	15 00 पू.	+04 30
Manresa	41 44 उ.	01 50 प.	–67 20	15 00 पू.	+04 30
Salamanca	40 58 उ.	05 39 प.	–82 26	15 00 पू.	+04 30
San Fernando	36 28 उ.	06 12 प.	–84 48	15 00 पू.	+04 30
(43) SRI-LANKA					
Colombo	06 56 उ.	79 51 पू.	–40 36	90 00 पू.	–00 30
Jaffna	09 40 उ.	80 00 पू.	–40 00	90 00 पू.	–00 00
Kandy	07 18 उ.	80 38 पू.	–37 28	90 00 पू.	–00 00
(44) Switzerland					
Berne	46 57 उ.	07 26 पू.	–30 16	15 00 पू.	+04 30
Geneva	46 12 उ.	06 09 पू.	–35 24	15 00 पू.	+04 30
(45) UNITED-ARAB-EMIRATES					
Abudhabi	24 28 उ.	54 22 पू.	–22 32	60 00 पू.	+01 30
Sharjah	25 22 उ.	55 23 पू.	–18 28	60 00 पू.	+01 30
Dubai	25 18 उ.	55 18 पू.	–18 48	60 00 पू.	+01 30
(46) ZIMBABWE					
Harare	17 50 द.	31 03 पू.	+04 08	30 00 पू.	+03 30
(47) Zambia					
Lusaka	15 25 द.	28 17 पू.	–06 52	30 00 पू.	+03 30

मध्यम सूर्योदयास्त सारिणी से विश्व के किसी भी नगर का सूर्योदयास्त निकालें

ज्योतिष शास्त्र में सूर्योदयास्त की उपयोगिता सर्वविदित है। पृथ्वी पर सभी स्थानों पर सूर्योदयास्त एवं दिनमान एक समान नहीं होता। पृथ्वी की दैनिक गति एवं परिक्रमण गति के कारण प्रत्येक स्थान पर प्रतिदिन सूर्योदय एवं अस्त काल में अन्तर पड़ता है। सूर्योदयास्तादि तथा विभिन्न स्थानों की पारस्परिक अंशात्मक दूरी जानने के लिए अभीष्ट स्थान का अक्षांश, रेखांश एवं स्टैण्डर्ड अन्तर की आवश्यकता पड़ती है। किसी नगर के स्टैण्डर्ड अन्तर की जानकारी के लिए तत्सम्बन्धी देश के मानक समय (Standard Time) के माध्यमिक मध्यान्ह (Stand. Meridian) रेखा ज्ञान होना चाहिए। भारतीय मानक समय का निर्धारण रेखांश ८२/३० पूर्व (ग्रीनविच से) एवं अक्षांश २३/११ उत्तर रेखाओं के मध्य बिन्दु पर आधारित है। इसी मध्यवर्ती रेखांश बिन्दु ८२/३० के आधार पर भारत में स्थित अन्य नगरों की अंशात्मक दूरी (Standard difference) ४ मिंट प्रति एक अंश के अनुपात से ऋण (–) अथवा जमा (+) किया जाता है। जो भारतीय नगर ८२°/३० रेखांश से पश्चिम में पड़ेंगे, वहां का देशान्तर (स्टै० अन्तर) ऋण (–) लिखा जाता है तथा जो भा० नगर ८२°/३०′ के पूर्व में पड़ेंगे, वहां का स्टै० अन्तर जमा (+) में अंकित किया जाता है।

गत पृष्ठों पर लिखे गए प्रायः सभी नगर ८२°/३०′ पू० **रेखांश से पश्चिम** में स्थित होने के कारण, **उनका रेखांतर** (स्टैण्डर्ड अन्तर) ऋण (–) लिखा गया है, जबकि अपने नगर का सूर्योदय-अस्त जानने के लिए नगर के आगे लिखे हुए स्टै० अन्तर को स्थानीय मध्यम सूर्योदयास्त अक्षांश सारणी में प्राप्त सूर्योदयास्त में जमा (+) करके अभीष्ट नगर का सूर्योदयास्त पता चलेगा।

यदि आपके नगर के अक्षांश (अंश कला में) मध्यम अक्षांश सारिणी में दिए सूर्योदयादि से कम या अधिक हो तो आप अभीष्ट तिथि से सूर्योदय-अस्त में अनुपातिक विधि से मिंट/सैकिंडज़ का संस्कार करके अभीष्ट तिथि का सूर्योदयास्त निकाल सकते हैं। **इस दृश्यमान सूर्योदयास्त में अपने अक्षांश भेद के अनुसार लगभग ३ मिंट जमा करने (किरणवक्री भवन संस्कार) से शुद्ध शास्त्रीय मान (इष्टकालिक) का सूर्योदयास्त प्राप्त हो जायेगा।**

उदाहरण–मान लो, आपको 2 फर. को सोनीपत का सूर्योदय ज्ञात करना है। सर्वप्रथम सोनीपत के अक्षांश, रेखांश ज्ञात करेंगे। गत पृष्ठों में देखने से हमें सोनीपत का अक्षांश 28/58, रेखांश 77°/01′ तथा स्टैं. अन्तर –21/56 मिं. सै. प्राप्त हुआ है। सारिणी में अक्षांश २५ से ३० के मध्य अनुपातिक विधि से देखने पर हमें सू. उ. 6/49 प्राप्त हुआ। इसमें स्टैं. अन्तर (–21$^{\text{मिं.}}$–56$^{\text{सैं.}}$) अर्थात् २२ मिनट जमा करने (क्योंकि स्टैं. अन्तर ऋण है अथवा यूं कहिए सोनीपत ८२°/३० रेखांश के पश्चिम में है) से सूर्योदय 7/11 प्राप्त हुए। इसमें ३ मिनट शास्त्रीय समय भी जमा करने से शुद्ध इष्टकालिक सूर्योदय प्राप्त होगा। अर्थात् 7/14

आगे लिखे अक्षांशों में भारत के अतिरिक्त विदेशों के भी जैसे–इंग्लैण्ड, कैनेडा, अमरीका आदि नगरों के सूर्योदयास्त सुगमता से ज्ञात किए जा सकते हैं।

ध्यान रहे, **भारत के अधिकांश नगरों के अक्षांश १०° से ३५° अक्षांश तक ही पड़ते हैं, शेष अक्षांश विदेशी नगरों के हैं।**

–शुभचिन्तक पं. विवेक शर्मा गणितकर्त्ता

नीचे उत्तरी अक्षांशों के अनुसार स्वदेशीय (लोकल) मध्यम सूर्योदयास्त लिख रहे हैं इनमें अपने अभीष्ट अक्षांश का स्टै. अन्तर + या – करने से स्टै. टा. में सू. उ. व सू. अ. निकल आएगा।

अक्षांश	अक्षांश १०° उ.		अक्षांश २०° उ.		अक्षांश २५° उ.		अक्षांश ३०° उ.		अक्षांश ३५° उ.		अक्षांश ४०° उ.		अक्षांश ४५° उ.		अक्षांश ५०° उ.		अक्षांश ५२° उ.		अक्षांश ५४° उ.	
तारीख	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.
जनवरी	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
1 जन	6 17	17 49	6 35	17 31	6 45	17 21	6 56	17 10	7 08	16 58	7 22	16 44	7 39	16 28	7 59	16 08	8 08	15 58	8 19	15 47
3 ,,	6 18	17 51	6 36	17 33	6 46	17 24	6 56	17 13	7 08	17 00	7 22	16 46	7 39	16 31	7 59	16 11	8 08	16 01	8 19	15 50
5 ,,	6 18	17 52	6 36	17 34	6 46	17 25	6 57	17 14	7 09	17 02	7 22	16 49	7 38	16 33	7 59	16 13	8 08	16 04	8 19	15 53
7 ,,	6 19	17 53	6 37	17 35	6 47	17 27	6 57	17 16	7 09	17 04	7 22	16 51	7 38	16 35	7 58	16 16	8 07	16 07	8 18	15 56
9 ,,	6 20	17 54	6 37	17 36	6 47	17 28	6 57	17 17	7 09	17 05	7 22	16 53	7 38	16 37	7 58	16 18	8 06	16 09	8 17	15 59
11 ,,	6 20	17 55	6 38	17 38	6 47	17 29	6 57	17 18	7 09	17 07	7 22	16 55	7 37	16 40	7 57	16 21	8 05	16 11	8 15	16 02
13 ,,	6 21	17 56	6 38	17 39	6 47	17 30	6 57	17 20	7 08	17 09	7 21	16 57	7 37	16 42	7 56	16 23	8 04	16 14	8 14	16 04
15 ,,	6 22	17 58	6 38	17 40	6 47	17 31	6 57	17 22	7 08	17 11	7 21	16 59	7 36	16 44	7 55	16 26	8 03	16 17	8 12	16 08
17 ,,	6 22	17 59	6 38	17 41	6 47	17 33	6 57	17 24	7 08	17 13	7 20	17 01	7 35	16 47	7 54	16 29	8 01	16 21	8 10	16 12
19 ,,	6 23	18 00	6 38	17 42	6 47	17 34	6 56	17 25	7 07	17 15	7 19	17 03	7 33	16 50	7 52	16 32	7 59	16 24	8 08	16 15
21 ,,	6 23	18 01	6 38	17 43	6 47	17 35	6 56	17 27	7 06	17 17	7 18	17 06	7 32	16 52	7 50	16 35	7 57	16 27	8 06	16 19
23 ,,	6 23	18 02	6 38	17 44	6 46	17 38	6 55	17 29	7 05	17 19	7 17	17 08	7 30	16 55	7 48	16 39	7 54	16 30	8 04	16 23
25 ,,	6 23	18 03	6 37	17 46	6 46	17 40	6 55	17 31	7 04	17 21	7 16	17 10	7 29	16 58	7 45	16 42	7 52	16 34	8 00	16 27
27 ,,	6 23	18 04	6 37	17 48	6 45	17 42	6 54	17 33	7 03	17 23	7 14	17 13	7 27	16 01	7 42	16 45	7 49	16 38	7 57	16 31
29 ,,	6 23	18 05	6 37	17 49	6 45	17 43	6 53	17 34	7 02	17 25	7 13	17 15	7 25	16 04	7 40	16 48	7 47	16 42	7 54	16 35
31 ,,	6 23	18 05	6 37	17 51	6 44	17 44	6 52	17 36	7 01	17 27	7 11	17 18	7 23	16 07	7 37	16 52	7 44	16 46	7 51	16 39

अक्षांश	अक्षांश १०° उ.		अक्षांश २०° उ.		अक्षांश २५° उ.		अक्षांश ३०° उ.		अक्षांश ३५° उ.		अक्षांश ४०° उ.		अक्षांश ४५° उ.		अक्षांश ५०° उ.		अक्षांश ५२° उ.		अक्षांश ५४° उ.	
तारीख	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.
फरवरी	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
2 फर	6 23	18 06	6 36	17 52	6 43	17 45	6 50	17 37	6 59	17 29	7 09	17 20	7 21	17 09	7 34	16 56	7 41	16 50	7 48	16 43
4 ,,	6 22	18 06	6 35	17 53	6 41	17 47	6 49	17 39	6 58	17 31	7 07	17 23	7 18	17 12	7 32	17 00	7 38	16 54	7 44	16 47
6 ,,	6 22	18 07	6 34	17 54	6 40	17 49	6 48	17 41	6 56	17 33	7 05	17 25	7 16	17 15	7 28	17 03	7 34	16 57	7 41	16 51
8 ,,	6 22	18 07	6 34	17 55	6 39	17 50	6 47	17 42	6 54	17 35	7 03	17 27	7 13	17 17	7 25	17 07	7 31	17 01	7 37	16 55
10 ,,	6 21	18 08	6 33	17 56	6 38	17 50	6 45	17 44	6 52	17 37	7 01	17 30	7 10	17 20	7 22	17 10	7 27	17 05	7 33	16 59
12 ,,	6 21	18 08	6 32	17 57	6 36	17 52	6 44	17 46	6 50	17 39	6 58	17 32	7 08	17 23	7 18	17 13	7 24	17 08	7 29	17 03
14 ,,	6 20	18 08	6 31	17 58	6 36	17 53	6 42	17 47	6 48	17 41	6 56	17 34	7 05	17 26	7 15	17 16	7 20	17 12	7 25	17 07
16 ,,	6 20	18 09	6 30	17 59	6 34	17 55	6 40	17 49	6 46	17 43	6 53	17 36	7 02	17 29	7 11	17 20	7 16	17 15	7 21	17 11
18 ,,	6 19	18 09	6 28	18 00	6 33	17 56	6 38	17 50	6 43	17 45	6 51	17 39	6 58	17 32	7 08	17 23	7 12	17 19	7 17	17 15
20 ,,	6 19	18 09	6 27	18 01	6 31	17 57	6 36	17 52	6 41	17 47	6 48	17 42	6 55	17 35	7 04	17 26	7 08	17 23	7 12	17 19
22 ,,	6 18	18 10	6 26	18 02	6 30	17 58	6 35	17 53	6 39	17 49	6 45	17 44	6 52	17 38	7 00	17 29	7 04	17 27	7 08	17 23
24 ,,	6 17	18 10	6 24	18 03	6 27	17 59	6 33	17 55	6 36	17 51	6 43	17 46	6 49	17 41	6 56	17 33	7 00	17 30	7 03	17 27
26 ,,	6 16	18 10	6 23	18 03	6 26	18 00	6 30	17 56	6 34	17 53	6 40	17 48	6 46	17 43	6 52	17 36	6 55	17 33	6 59	17 31
28 ,,	6 15	18 10	6 22	18 04	6 24	18 01	6 28	17 58	6 32	17 54	6 38	17 50	6 42	17 45	6 48	17 39	6 51	17 36	6 54	17 34
1 मार्च	6 15	18 10	6 20	18 05	6 23	18 02	6 26	17 59	6 30	17 55	6 34	17 52	6 39	17 47	6 44	17 42	6 47	17 39	6 50	17 38
3 ,,	6 14	18 11	6 19	18 05	6 22	18 03	6 24	18 00	6 28	17 57	6 31	17 54	6 35	17 49	6 40	17 45	6 42	17 43	6 45	17 41
5 ,,	6 13	18 11	6 17	18 06	6 20	18 04	6 22	18 02	6 24	17 59	6 28	17 56	6 32	17 52	6 36	17 48	6 38	17 47	6 40	17 44
7 ,,	6 12	18 11	6 15	18 07	6 18	18 05	6 20	18 03	6 22	18 01	6 25	17 58	6 28	17 55	6 32	17 51	6 33	17 50	6 35	17 48
9 ,,	6 11	18 11	6 14	18 08	6 16	18 06	6 18	18 04	6 20	18 02	6 22	18 00	6 26	17 58	6 28	17 55	6 29	17 54	6 30	17 52
11 ,,	6 10	18 11	6 12	18 08	6 14	18 07	6 15	18 05	6 17	18 04	6 19	18 03	6 21	18 00	6 23	17 58	6 24	17 57	6 26	17 56
13 ,,	6 08	18 11	6 11	18 09	6 12	18 08	6 13	18 07	6 14	18 06	6 16	18 05	6 17	18 03	6 19	18 01	6 20	18 01	6 21	18 00
15 ,,	6 07	18 11	6 09	18 10	6 10	18 09	6 10	18 08	6 11	18 07	6 12	18 08	6 13	18 07	6 15	18 05	6 15	18 04	6 16	18 03
17 ,,	6 06	18 11	6 08	18 10	6 08	18 10	6 08	18 09	6 09	18 09	6 09	18 09	6 10	18 08	6 10	18 08	6 11	18 08	6 12	18 07
19 ,,	6 05	18 11	6 05	18 11	6 06	18 10	6 06	18 10	6 06	18 10	6 06	18 11	6 06	18 10	6 06	18 11	6 06	18 11	6 06	18 11
21 ,,	6 04	18 11	6 04	18 11	6 04	18 11	6 03	18 12	6 02	18 12	6 02	18 13	6 02	18 13	6 02	18 14	6 01	18 15	6 01	18 15
23 ,,	6 03	18 11	6 03	18 12	6 02	18 12	6 01	18 13	5 59	18 14	5 59	18 15	5 58	18 16	5 57	18 17	5 57	18 18	5 56	18 19
25 ,,	6 02	18 11	6 02	18 12	6 00	18 13	5 58	18 14	5 56	18 15	5 56	18 17	5 55	18 19	5 53	18 21	5 52	18 21	5 51	18 22
27 ,,	6 00	18 11	6 00	18 12	5 57	18 14	5 56	18 15	5 53	18 16	5 53	18 19	5 51	18 21	5 48	18 24	5 47	18 24	5 46	18 26
29 ,,	5 59	18 11	5 57	18 13	5 55	18 15	5 53	18 17	5 50	18 18	5 50	18 21	5 47	18 24	5 44	18 27	5 43	18 28	5 41	18 30
31 ,,	5 58	18 10	5 55	18 13	5 53	18 16	5 51	18 18	5 46	18 20	5 46	18 23	5 43	18 26	5 42	18 30	5 39	18 31	5 34	18 33
2 अप्रै	5 57	18 10	5 53	18 14	5 51	18 17	5 49	18 19	5 45	18 22	5 43	18 25	5 40	18 29	5 40	18 33	5 34	18 31	5 31	18 37
4 ,,	5 56	19 10	5 51	18 14	5 49	18 17	5 46	18 20	5 43	18 23	5 40	18 27	5 36	18 31	5 36	18 36	5 29	18 38	5 26	18 41
6 ,,	5 55	18 10	5 50	18 15	5 47	18 18	5 44	18 21	5 41	18 25	5 37	18 29	5 32	18 34	5 32	18 39	5 26	18 42	5 22	18 45
8 ,,	5 54	18 10	5 48	18 16	5 45	18 19	5 42	18 22	5 38	18 26	5 34	18 31	5 29	18 36	5 29	18 42	5 19	18 45	5 17	18 48
10 ,,	5 52	18 10	5 46	18 17	5 43	18 20	5 40	18 24	5 35	18 28	5 31	18 33	5 25	18 39	5 25	18 46	5 14	18 49	5 12	18 52
12 ,,	5 51	18 10	5 45	18 17	5 41	18 21	5 38	18 25	5 33	18 29	5 28	18 35	5 21	18 41	5 21	18 49	5 11	18 52	5 07	18 56
14 ,,	5 50	18 10	5 43	18 18	5 39	18 22	5 35	18 26	5 30	18 31	5 24	18 37	5 18	18 44	5 18	18 52	5 06	18 56	5 02	19 00
16 ,,	5 49	18 10	5 41	18 18	5 37	18 23	5 33	18 27	5 27	18 32	5 21	18 39	5 14	18 46	5 14	18 55	5 02	18 59	4 58	19 04
18 ,,	5 48	18 10	5 40	18 19	5 36	18 24	5 30	18 29	5 25	18 34	5 18	18 41	5 12	18 49	5 12	18 58	4 58	19 02	4 53	19 07
20 ,,	5 47	18 11	5 39	18 19	5 34	18 24	5 28	18 30	5 22	18 36	5 16	18 43	5 08	18 51	5 08	19 01	4 53	19 04	4 48	19 11
22 ,,	5 46	18 11	5 37	18 20	5 32	18 25	5 26	18 31	5 20	18 38	5 13	18 45	5 04	18 54	5 04	19 04	4 49	19 09	4 44	19 15
24 ,,	5 45	18 11	5 36	18 20	5 31	18 26	5 24	18 32	5 17	18 39	5 10	18 47	5 01	18 56	5 01	19 07	4 45	19 13	4 39	19 18

अक्षांश	अक्षांश १०° उ.		अक्षांश २०° उ.		अक्षांश २५° उ.		अक्षांश ३०° उ.		अक्षांश ३५° उ.		अक्षांश ४०° उ.		अक्षांश ४५° उ.		अक्षांश ५०° उ.		अक्षांश ५२° उ.		अक्षांश ५४° उ.	
तारीख	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.
अप्रैल	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
26 अप्रै	5 45	18 11	5 34	18 21	5 29	18 27	5 22	18 34	5 15	18 41	5 08	18 49	4 58	18 59	4 58	19 11	4 41	19 16	4 35	19 22
28 ,,	5 44	18 11	5 33	18 22	5 27	18 28	5 20	18 35	5 13	18 43	5 04	18 51	4 54	19 01	4 54	19 14	4 37	19 19	4 31	19 25
30 ,,	5 43	18 11	5 32	18 23	5 26	18 29	5 18	18 36	5 11	18 44	5 02	18 53	4 51	19 04	4 51	19 17	4 33	19 23	4 26	19 29
2 मई	5 42	18 12	5 30	18 23	5 24	18 30	5 16	18 38	5 09	18 46	4 59	18 55	4 48	19 06	4 35	19 20	4 29	19 26	4 22	19 33
4 ,,	5 42	18 12	5 29	18 24	5 23	18 31	5 15	18 39	5 07	18 47	4 57	18 57	4 45	19 09	4 32	19 23	4 25	19 29	4 18	19 37
6 ,,	5 41	18 12	5 28	18 25	5 21	18 32	5 13	18 40	5 05	18 49	4 54	18 59	4 43	19 11	4 28	19 26	4 22	19 32	4 14	19 40
8 ,,	5 40	18 12	5 27	18 26	5 20	18 33	5 12	18 41	5 03	18 51	4 52	19 01	4 40	19 14	4 25	19 29	4 18	19 36	4 10	19 44
10 ,,	5 40	18 13	5 26	18 26	5 19	18 34	5 11	18 42	5 01	18 53	4 50	19 03	4 37	19 16	4 20	19 32	4 15	19 39	4 06	19 47
12 ,,	5 40	18 13	5 25	18 27	5 18	18 35	5 09	18 44	4 59	18 54	4 48	19 05	4 35	19 19	4 17	19 35	4 11	19 42	4 03	19 51
14 ,,	5 39	18 14	5 24	18 28	5 17	18 36	5 07	18 46	4 57	18 56	4 46	19 07	4 32	19 21	4 14	19 37	4 08	19 45	3 59	19 54
16 ,,	5 39	18 14	5 24	18 29	5 16	18 37	5 06	18 47	4 56	18 57	4 44	19 09	4 30	19 24	4 12	19 40	4 05	19 49	3 56	19 58
18 ,,	5 38	18 14	5 23	18 30	5 15	18 38	5 05	18 48	4 54	18 59	4 42	19 11	4 28	19 26	4 09	19 43	4 02	19 52	3 53	20 01
20 ,,	5 38	18 15	5 22	18 31	5 14	18 39	5 04	18 49	4 53	19 00	4 41	19 13	4 26	19 28	4 07	19 46	3 59	19 55	3 50	20 04
22 ,,	5 38	18 15	5 22	18 31	5 13	18 40	5 03	18 50	4 52	19 02	4 39	19 15	4 24	19 30	4 04	19 48	3 57	19 58	3 47	20 07
24 ,,	5 38	18 16	5 21	18 32	5 12	18 41	5 02	18 51	4 51	19 03	4 38	19 16	4 22	19 32	4 02	19 51	3 54	20 00	3 44	20 10
26 ,,	5 38	18 16	5 21	18 33	5 11	18 42	5 01	18 52	4 50	19 05	4 36	19 18	4 21	19 34	4 01	19 53	3 52	20 03	3 42	20 13
28 ,,	5 38	18 17	5 20	18 34	5 11	18 43	5 00	18 54	4 49	19 06	4 35	19 19	4 19	19 36	3 59	19 56	3 50	20 05	3 39	20 16
30 ,,	5 38	18 17	5 20	18 34	5 11	18 44	5 00	18 55	4 48	19 07	4 34	19 20	4 18	19 38	3 58	19 58	3 48	20 08	3 37	20 18
1 जून	5 38	18 18	5 20	18 35	5 10	18 45	4 59	18 56	4 47	19 08	4 33	19 22	4 17	19 39	3 56	20 00	3 46	20 10	3 35	20 21
3 ,,	5 38	18 18	5 20	18 36	5 10	18 46	4 59	18 57	4 47	19 09	4 32	19 24	4 16	19 41	3 55	20 02	3 45	20 12	3 33	20 23
5 ,,	5 38	18 19	5 20	18 37	5 10	18 47	4 58	18 58	4 46	19 10	4 32	19 25	4 15	19 42	3 53	20 04	3 43	20 14	3 32	20 26
7 ,,	5 38	18 19	5 20	18 37	5 10	18 48	4 58	18 59	4 46	19 11	4 31	19 27	4 14	19 44	3 52	20 06	3 42	20 16	3 30	20 28
9 ,,	5 39	18 20	5 20	18 38	5 10	18 49	4 58	19 00	4 46	19 12	4 31	19 28	4 14	19 45	3 52	20 07	3 41	20 18	3 29	20 30
11 ,,	5 39	18 20	5 20	18 39	5 10	18 50	4 58	19 01	4 45	19 13	4 30	19 29	4 13	19 46	3 51	20 08	3 41	20 20	3 28	20 31
13 ,,	5 39	18 21	5 20	18 40	5 10	18 51	4 58	19 01	4 45	19 14	4 30	19 30	4 12	19 48	3 50	20 10	3 40	20 22	3 27	20 34
15 ,,	5 39	18 21	5 20	18 40	5 10	18 51	4 59	19 02	4 46	19 15	4 30	19 31	4 12	19 49	3 50	20 11	3 39	20 22	3 27	20 35
17 ,,	5 39	18 22	5 21	18 41	5 10	18 51	4 59	19 03	4 46	19 16	4 31	19 31	4 13	19 49	3 50	20 12	3 39	20 23	3 27	20 36
19 ,,	5 40	18 22	5 21	18 41	5 11	18 52	4 59	19 03	4 46	19 16	4 31	19 32	4 13	19 50	3 50	20 12	3 39	20 23	3 27	20 36
21 ,,	5 40	18 23	5 22	18 42	5 11	18 52	5 00	19 04	4 47	19 17	4 31	19 32	4 13	19 50	3 51	20 13	3 40	20 23	3 27	20 36
23 ,,	5 41	18 23	5 22	18 42	5 12	18 53	5 00	19 04	4 47	19 17	4 33	19 33	4 14	19 51	3 52	20 13	3 41	20 24	3 28	20 36
25 ,,	5 41	18 24	5 23	18 43	5 12	18 53	5 01	19 05	4 48	19 17	4 33	19 33	4 15	19 51	3 53	20 13	3 41	20 24	3 29	20 36
27 ,,	5 42	18 24	5 23	18 43	5 13	18 53	5 01	19 05	4 48	19 18	4 34	19 33	4 16	19 51	3 54	20 13	3 43	20 24	3 29	20 36
29 ,,	5 42	18 24	5 24	18 43	5 13	18 53	5 02	19 05	4 49	19 18	4 34	19 33	4 17	19 51	3 54	20 13	3 43	20 24	3 32	20 36
1 जुला	5 42	18 24	5 24	18 43	5 14	18 53	5 02	19 05	4 49	19 18	4 34	19 32	4 17	19 50	3 54	20 12	3 44	20 23	3 32	20 35
3 ,,	5 43	18 25	5 24	18 43	5 15	18 54	5 03	19 05	4 50	19 17	4 35	19 32	4 18	19 50	3 56	20 12	3 45	20 22	3 33	20 34
5 ,,	5 44	18 25	5 25	18 43	5 15	18 53	5 04	19 05	4 51	19 17	4 37	19 31	4 19	19 49	3 58	20 11	3 47	20 21	3 35	20 33
7 ,,	5 44	18 25	5 26	18 43	5 16	18 53	5 05	19 04	4 52	19 17	4 38	19 31	4 20	19 49	4 00	20 10	3 49	20 20	3 37	20 32
9 ,,	5 45	10 25	5 27	18 43	5 17	18 53	5 06	19 04	4 53	19 16	4 39	19 31	4 22	19 48	4 02	20 09	3 51	20 14	3 40	20 30
11 ,,	5 45	18 25	5 27	18 43	5 18	18 53	5 07	19 04	4 54	19 16	4 40	19 30	4 24	19 47	4 04	20 07	3 53	20 17	3 42	20 28
13 ,,	5 46	18 25	5 28	18 43	5 19	18 53	5 08	19 03	4 56	19 15	4 42	19 29	4 25	19 45	4 06	20 05	3 55	20 16	3 44	20 26
15 ,,	5 46	18 25	5 29	18 43	5 20	18 52	5 09	19 02	4 57	19 14	4 43	19 28	4 27	19 44	4 08	20 04	3 57	20 14	3 47	20 24
17 ,,	5 47	18 25	5 29	18 42	5 21	18 52	5 10	19 01	4 58	19 13	4 45	19 27	4 29	19 42	4 10	20 02	4 00	20 12	3 50	20 22

अक्षांश	अक्षांश १०° उ.		अक्षांश २०° उ.		अक्षांश २५° उ.		अक्षांश ३०° उ.		अक्षांश ३५° उ.		अक्षांश ४०° उ.		अक्षांश ४५° उ.		अक्षांश ५०° उ.		अक्षांश ५२° उ.		अक्षांश ५४° उ.	
तारीख	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.
जुलाई	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
19जुला	5 47	18 25	5 30	18 42	5 22	18 51	5 11	19 01	4 59	19 12	4 46	19 25	4 31	19 41	4 12	20 00	4 03	20 09	3 52	20 19
21 ,,	5 47	18 25	5 31	18 41	5 22	18 50	5 12	19 00	5 01	19 11	4 48	19 24	4 33	19 39	4 14	19 57	4 06	20 07	3 55	20 17
23 ,,	5 47	18 25	5 32	18 41	5 23	18 49	5 13	18 59	5 02	19 10	4 50	19 22	4 35	19 37	4 16	19 55	4 08	20 04	3 58	20 14
25 ,,	5 48	18 24	5 32	18 40	5 24	18 48	5 14	18 58	5 04	19 08	4 51	19 21	4 37	19 35	4 19	19 53	4 11	20 01	4 01	20 11
27 ,,	5 48	18 24	5 33	18 39	5 25	18 47	5 15	18 57	5 05	19 07	4 53	19 19	4 39	19 33	4 22	19 50	4 14	19 58	4 04	20 07
29 ,,	5 49	18 23	5 34	18 38	5 26	18 46	5 17	18 55	5 07	19 05	4 55	19 17	4 41	19 31	4 24	19 47	4 17	19 55	4 07	20 04
31 ,,	5 49	18 23	5 35	18 37	5 27	18 45	5 17	18 54	5 08	19 04	4 57	19 15	4 44	19 28	4 27	19 44	4 20	19 52	4 11	20 01
2 अग	5 50	18 22	5 35	18 36	5 28	18 44	5 19	18 52	5 09	19 02	4 59	19 13	4 46	19 25	4 30	19 41	4 23	19 48	4 14	19 57
4 ,,	5 50	18 22	5 36	18 35	5 29	18 43	5 20	18 51	5 11	19 00	5 00	19 11	4 48	19 23	4 33	19 38	4 26	19 45	4 18	19 53
6 ,,	5 50	18 21	5 36	18 34	5 30	18 42	5 22	18 50	5 12	18 58	5 02	19 08	4 50	19 20	4 36	19 34	4 28	19 42	4 21	19 49
8 ,,	5 50	18 21	5 37	18 33	5 31	18 40	5 23	18 48	5 14	18 56	5 04	19 06	4 53	19 18	4 39	19 31	4 32	19 38	4 25	19 45
10 ,,	5 50	18 20	5 38	18 32	5 32	18 39	5 25	18 46	5 16	18 54	5 06	19 03	4 55	19 15	4 42	19 28	4 35	19 34	4 28	19 45
12 ,,	5 51	18 19	5 39	18 31	5 33	18 37	5 26	18 44	5 17	18 52	5 08	19 01	4 57	19 12	4 45	19 24	4 38	19 30	4 32	19 37
14 ,,	5 51	18 18	5 39	18 30	5 33	18 35	5 27	18 42	5 19	18 49	5 10	18 58	5 00	19 08	4 47	19 21	4 42	19 26	4 35	19 32
16 ,,	5 51	18 17	5 40	18 28	5 34	18 34	5 28	18 40	5 20	18 47	5 12	18 56	5 02	19 05	4 51	19 17	4 45	19 22	4 39	19 28
18 ,,	5 51	18 16	5 41	18 26	5 35	18 32	5 29	18 38	5 22	18 45	5 14	18 23	5 04	19 02	4 53	19 13	4 48	19 18	4 42	19 23
20 ,,	5 51	18 15	5 41	18 25	5 36	18 30	5 30	18 36	5 23	18 43	5 16	18 50	5 07	18 59	4 57	19 09	4 51	19 14	4 46	19 19
22 ,,	5 51	18 14	5 42	18 23	5 37	18 28	5 32	18 34	5 25	18 40	5 18	18 47	5 09	18 56	4 59	19 05	4 55	10 10	4 49	19 15
24 ,,	5 51	18 13	4 42	18 22	5 38	18 27	5 33	18 32	5 26	18 37	5 19	18 44	5 12	18 52	5 02	19 01	4 58	19 06	4 53	19 10
26 ,,	5 51	18 12	5 43	18 20	5 39	18 25	5 34	18 29	5 28	18 34	5 21	18 41	5 14	18 49	5 05	18 57	5 01	19 02	4 57	19 05
28 ,,	5 51	18 11	5 43	18 19	5 39	18 23	5 35	18 27	5 29	18 32	5 23	18 38	5 16	18 45	5 08	18 53	5 04	18 57	5 00	19 01
30 ,,	5 51	18 10	5 44	18 17	5 40	18 21	5 36	18 25	5 31	18 29	5 25	18 35	5 19	18 41	5 11	18 49	5 08	18 53	5 04	18 56
1 सितं	5 51	19 09	5 44	18 15	5 41	18 19	5 37	18 23	5 32	18 27	5 27	18 32	5 22	18 38	5 14	18 45	5 11	18 48	5 08	18 51
3 ,,	5 51	18 08	5 45	18 13	5 42	18 17	5 38	18 20	5 34	18 24	5 29	18 29	5 24	18 34	5 16	18 41	5 14	18 43	5 11	18 47
5 ,,	5 51	18 07	5 46	18 12	5 42	18 15	5 39	18 18	5 35	18 21	5 31	18 26	5 26	18 30	5 20	18 36	5 17	18 39	5 15	18 42
7 ,,	5 50	18 06	5 46	18 10	5 43	18 12	5 40	18 15	5 37	18 18	5 33	18 23	5 28	18 27	5 23	18 31	5 21	18 34	5 18	18 37
9 ,,	5 50	18 04	5 46	18 08	5 44	18 10	5 41	18 13	5 38	18 16	5 35	18 11	5 31	18 23	5 26	18 27	5 24	18 29	5 22	18 32
11 ,,	5 50	18 03	5 46	18 07	5 44	18 08	5 42	18 10	5 39	18 13	5 37	18 16	5 33	18 19	5 29	18 23	5 27	18 24	5 25	18 27
13 ,,	5 50	18 02	5 47	18 05	5 45	18 06	5 43	18 08	5 41	18 10	5 39	18 13	5 36	18 15	5 32	18 19	5 30	18 20	5 29	18 22
15 ,,	5 50	18 00	5 47	18 03	5 46	18 04	5 44	18 05	5 42	18 07	5 40	18 10	5 38	18 11	5 34	18 14	5 34	18 16	5 32	18 17
17 ,,	5 50	17 59	5 48	18 01	5 47	18 02	5 45	18 03	5 44	18 04	5 42	18 06	5 41	18 08	5 38	18 10	5 37	18 11	5 36	18 12
19 ,,	5 49	17 58	5 48	17 59	5 47	18 00	5 46	18 01	5 45	18 02	5 44	18 03	5 43	18 04	5 41	18 06	5 41	18 06	5 40	18 07
21 ,,	5 49	17 57	5 48	17 57	5 48	17 58	5 47	17 58	5 47	17 59	5 46	17 59	5 45	18 00	5 44	18 01	5 44	18 01	5 43	18 02
23 ,,	5 49	17 55	5 49	17 55	5 49	17 55	5 49	17 56	5 48	17 56	5 48	17 56	5 48	17 56	5 47	17 56	5 47	17 56	5 47	17 57
25 ,,	5 49	17 54	5 49	17 54	5 50	17 53	5 50	17 53	5 50	17 53	5 50	17 53	5 50	17 52	5 50	17 52	5 50	17 52	5 50	17 52
27 ,,	5 49	17 53	5 50	17 52	5 51	17 51	5 51	17 50	5 51	17 50	5 52	17 50	5 52	17 48	5 53	17 48	5 53	17 48	5 54	17 47
29 ,,	5 49	17 52	5 51	17 50	5 51	17 49	5 52	17 48	5 53	17 47	5 54	17 46	5 55	17 45	5 56	17 43	5 57	17 43	5 58	17 42
1 अक्तू	5 49	17 51	5 51	17 48	5 52	17 47	5 53	17 46	5 54	17 44	5 56	17 43	5 57	17 41	5 59	17 38	6 00	17 39	6 01	17 37
3 ,,	5 49	17 49	5 51	17 46	5 53	17 45	5 54	17 43	5 56	17 41	5 58	17 40	6 00	17 37	6 03	17 35	6 03	17 34	6 05	17 32
5 ,,	5 48	17 48	5 52	17 44	5 54	17 43	5 55	17 40	5 57	17 38	6 00	17 37	6 02	17 33	6 06	17 30	6 07	17 29	6 08	17 27
7 ,,	5 48	17 47	5 52	17 43	5 55	17 41	5 57	17 38	5 59	17 36	6 02	17 33	6 05	17 30	6 09	17 26	6 10	17 24	6 12	17 22
9 ,,	5 48	17 46	5 53	17 42	5 55	17 39	5 58	17 36	6 01	17 33	6 04	17 30	6 07	17 27	6 12	17 22	6 14	17 19	6 16	17 17

अक्षांश	अक्षांश १०° उ.		अक्षांश २०° उ.		अक्षांश २५° उ.		अक्षांश ३०° उ.		अक्षांश ३५° उ.		अक्षांश ४०° उ.		अक्षांश ४५° उ.		अक्षांश ५०° उ.		अक्षांश ५२° उ.		अक्षांश ५४° उ.	
तारीख	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.
अक्तूबर	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
11 अक्तू	5 48	17 45	5 53	17 40	5 56	17 37	5 59	17 34	6 02	17 31	6 06	17 27	6 10	17 23	6 15	17 18	6 17	17 15	6 20	17 13
13 ,,	5 48	17 44	5 54	17 38	5 57	17 35	6 00	17 31	6 04	17 28	6 08	17 24	6 12	17 20	6 18	17 14	6 21	17 11	6 23	17 08
15 ,,	5 49	17 43	5 55	17 37	5 58	17 33	6 02	17 29	6 06	17 25	6 10	17 21	6 15	17 16	6 21	17 10	6 24	17 07	6 27	17 03
17 ,,	5 49	17 42	5 55	17 35	5 59	17 31	6 03	17 27	6 07	17 23	6 12	17 18	6 18	17 12	6 24	17 06	6 28	17 02	6 31	16 59
19 ,,	5 49	17 41	5 56	17 34	6 00	17 30	6 05	17 25	6 09	17 20	6 14	17 15	6 20	17 09	6 28	17 02	6 31	16 58	6 35	16 54
21 ,,	5 49	17 40	5 57	17 32	6 01	17 28	6 06	17 23	6 11	17 18	6 16	17 13	6 23	17 05	6 31	16 58	6 35	16 54	6 39	16 49
23 ,,	5 49	17 39	5 58	17 31	6 02	17 26	6 07	17 21	6 12	17 15	6 18	17 10	6 26	17 02	6 34	16 54	6 38	16 50	6 43	16 45
25 ,,	5 49	17 39	5 58	17 29	6 03	17 24	6 08	17 19	6 14	17 13	6 20	17 03	6 28	16 59	6 38	16 50	6 42	16 46	6 46	16 41
27 ,,	5 50	17 38	5 59	17 28	6 05	17 23	6 10	17 17	6 16	17 11	6 22	17 04	6 31	16 56	6 41	16 46	6 46	16 42	6 50	16 37
29 ,,	5 50	17 38	6 00	17 27	6 06	17 21	6 12	17 15	6 18	17 09	6 24	17 02	6 34	16 53	6 45	16 42	6 49	16 38	6 54	16 32
31 ,,	5 50	17 37	6 00	17 26	6 07	17 20	6 13	17 14	6 20	17 07	6 27	16 59	6 37	16 50	6 48	16 39	6 52	16 34	6 58	18 28
2 नवं.	5 51	17 37	6 02	17 24	6 08	17 11	6 14	17 12	6 22	17 05	6 30	16 56	6 39	16 47	6 51	16 35	6 56	16 30	7 02	16 24
4 ,,	5 51	17 36	6 03	17 23	6 09	17 18	6 16	17 11	6 23	17 03	6 32	16 54	6 42	16 45	6 54	16 32	7 00	16 27	7 06	16 21
6 ,,	5 52	17 36	6 04	17 23	6 10	17 17	6 18	17 09	6 25	17 01	6 34	16 52	6 45	16 42	6 57	16 29	7 03	16 23	7 10	16 17
8 ,,	5 52	17 35	6 05	17 22	6 12	17 16	6 19	17 08	6 27	16 59	6 37	16 50	6 48	16 39	7 01	16 26	7 07	16 20	7 14	16 13
10 ,,	5 53	17 35	6 06	17 22	6 13	17 15	6 21	17 06	6 29	16 57	6 39	16 48	6 50	16 37	7 04	16 23	7 10	16 17	7 17	16 09
12 ,,	5 54	17 35	6 07	17 21	6 15	17 14	6 22	17 05	6 31	16 56	6 41	16 47	6 53	16 35	7 07	16 20	7 14	16 14	7 21	16 06
14 ,,	5 54	17 35	6 08	17 21	6 16	17 13	6 24	17 04	6 33	16 55	6 44	16 45	6 56	16 33	7 11	16 17	7 18	16 11	7 25	16 03
16 ,,	5 55	17 34	6 09	17 20	6 17	17 12	6 26	17 03	6 35	16 54	6 46	16 43	6 59	16 31	7 14	16 15	7 21	16 08	7 29	16 00
18 ,,	5 56	17 34	6 11	17 20	6 18	17 12	6 27	17 03	6 37	16 53	6 48	16 41	7 01	16 29	7 17	16 12	7 25	16 05	7 33	15 57
20 ,,	5 57	17 35	6 12	17 19	6 20	17 11	6 29	17 02	6 39	16 52	6 51	16 40	7 04	16 27	7 20	16 10	7 28	16 03	7 36	15 54
22 ,,	5 58	17 35	6 13	17 19	6 21	17 11	6 31	17 01	6 41	16 51	6 53	16 39	7 07	16 25	7 23	16 08	7 31	16 00	7 40	15 51
24 ,,	5 58	17 35	6 14	17 19	6 23	17 10	6 32	17 01	6 43	16 50	6 55	16 38	7 09	16 24	7 26	16 06	7 35	15 58	7 44	15 49
26 ,,	5 59	17 35	6 15	17 19	6 24	17 10	6 34	17 00	6 45	16 50	6 57	16 37	7 12	16 22	7 29	16 04	7 38	15 56	7 47	15 47
28 ,,	6 00	17 36	6 17	17 19	6 26	17 10	6 36	17 00	6 47	16 49	6 59	16 36	7 14	16 21	7 32	16 03	7 41	15 55	7 50	15 45
30 ,,	6 01	17 36	6 18	17 19	6 28	17 10	6 37	17 00	6 49	16 49	7 01	16 36	7 17	16 21	7 35	16 02	7 44	15 53	7 54	15 43
2 दिसं.	6 02	17 37	6 19	17 19	6 29	17 10	6 39	17 00	6 51	16 58	7 03	16 35	7 19	16 20	7 38	16 01	7 47	15 52	7 57	15 42
4 ,,	6 03	17 37	6 21	17 20	6 30	17 10	6 41	17 00	6 52	16 48	7 05	16 35	7 21	16 20	7 40	16 00	7 49	15 51	8 01	15 41
6 ,,	6 04	17 38	6 22	17 20	6 32	17 10	6 42	17 00	6 54	16 48	7 07	16 35	7 23	16 19	7 43	15 59	7 52	15 50	8 04	15 39
8 ,,	6 05	17 38	6 23	17 20	6 33	17 10	6 44	17 00	6 55	16 48	7 09	16 35	7 25	16 19	7 45	15 59	7 54	15 50	8 06	15 39
10 ,,	6 06	17 39	6 24	17 21	6 34	17 11	6 45	17 00	6 57	16 48	7 11	16 35	7 27	16 18	7 47	15 58	7 57	15 49	8 09	15 38
12 ,,	6 07	17 40	6 25	17 22	6 35	17 11	6 46	17 01	6 58	16 48	7 13	16 35	7 29	16 17	7 49	15 58	7 59	15 48	8 11	15 37
14 ,,	6 08	17 41	6 27	17 23	6 37	17 12	6 48	17 01	7 0	16 49	7 14	16 35	7 31	16 19	7 51	15 58	8 1	15 48	8 13	15 37
16 ,,	6 09	17 42	6 28	17 23	6 38	17 13	6 49	17 02	7 1	16 49	7 15	16 36	7 32	16 19	7 53	15 59	8 3	15 48	8 14	15 38
18 ,,	6 10	17 43	6 29	17 24	6 39	17 14	6 50	17 03	7 2	16 50	7 17	16 36	7 33	16 20	7 54	15 59	8 4	15 49	8 16	15 38
20 ,,	6 11	17 44	6 30	17 25	6 40	17 15	6 51	17 04	7 4	16 51	7 18	16 37	7 35	16 21	7 55	16 00	8 5	15 50	8 17	15 39
22 ,,	6 12	17 45	6 31	17 26	6 41	17 16	6 52	17 05	7 5	16 52	7 19	16 38	7 36	16 21	7 56	16 00	8 6	15 51	8 18	15 39
24 ,,	6 13	17 46	6 32	17 27	6 42	17 17	6 53	17 06	7 6	16 54	7 20	16 39	7 37	16 23	7 57	16 02	8 7	15 52	8 19	15 41
26 ,,	6 14	17 47	6 33	17 28	6 43	17 18	6 54	17 07	7 6	16 55	7 21	16 41	7 37	16 24	7 58	16 03	8 8	15 53	8 19	15 42
28 ,,	6 15	17 48	6 34	17 29	6 44	17 20	6 55	17 09	7 7	16 56	7 21	16 42	7 38	16 25	7 58	16 05	8 8	15 55	8 19	15 44
30 ,,	6 16	17 49	6 34	17 30	6 45	17 21	6 56	17 10	7 8	16 57	7 22	16 44	7 38	16 26	7 59	16 07	8 8	15 57	8 19	15 46
31 ,,	6 17	17 50	6 34	17 31	6 45	17 23	6 56	17 10	7 8	16 58	7 22	16 44	7 38	16 27	7 59	16 08	8 8	15 58	8 19	15 47

★ हिमाचल प्रदेश के प्रमुख शहरों के सूर्योदयास्त–सन् 2020 ई. (भा. स्टै. टा.) ★

नीचे हिमाचल प्रदेश के कुछ प्रमुख नगरों के सूर्योदयास्त दिए गए हैं जो किरण–वक्री भवन संस्कार रहित है। जो सूर्योदयादि इष्ट, ज्योतिष शास्त्रीय एवं धार्मिक अनुष्ठानादि कृत्यों के लिए समान रूप से उपयोगी होते हैं। किसी नगर के सूर्योदय में लगभग 4 मिनट घटाने तथा अस्त में 4 मिनट जोड़ने से किरण वक्री संस्कार सहित (Upper Limb) अर्थात् दृश्यमान सूर्योदय–सूर्यास्त होंगे।

पाठकों की सुविधा हेतु आगे प्रमुख नगरों के सूर्योदयास्त से पूर्व हिमाचल प्रदेश के विभिन्न नगरों के सूर्योदयास्त में परिवर्तन संस्कार लिख रहे हैं जिससे आप किसी भी अभीष्ट नगर का सू. उदय गमता पूर्वक ज्ञात कर सकते हैं।

उदाहरण–मान लीजिए करसोग में 11 अप्रैल को सूर्योदय व सूर्यास्त जानना है तो हमें जिला मण्डी के स्तम्भ (Column) में देखने से सूर्योदय 6 घण्टे 1 मिनट तथा सूर्यास्त 18 घण्टे 44 मिनट प्राप्त ए। इन दोनों सू. उ. व सू. अ. में नीचे दी गई संस्कार तालिका में करसोग का संस्कार–1 घण्टे 04 मिनट घटाने से हमें 5 घण्टे 59 मिनट 56 सैकेण्ड और 18 घण्टे 42 मिनट 26 सैकेण्ड में प्राप्त हुए। करसोग के शुद्ध शास्त्रीय (जन्मपत्री निर्माण हेतु) सूर्योदय एवं सूर्यास्त होंगे।

गर	काँगड़ा		हमीरपुर		ऊना		बिलासपुर		मण्डी		सरकाघाट		शिमला		सोलन		चम्बा		नाहन		रामपुर बुशैहर	
रीख	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त
नवरी	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
1	7 30	17 27	7 28	17 27	7 28	17 28	7 26	17 27	7 26	17 25	7 27	17 26	7 24	17 26	7 23	17 26	7 31	17 26	7 22	17 26	7 23	17 23
4	7 30	17 29	7 28	17 29	7 29	17 30	7 26	17 29	7 27	17 27	7 27	17 28	7 24	17 28	7 24	17 28	7 32	17 29	7 22	17 28	7 23	17 25
7	7 30	17 31	7 29	17 31	7 29	17 33	7 27	17 31	7 27	17 30	7 28	17 30	7 25	17 30	7 24	17 31	7 32	17 31	7 23	17 31	7 24	17 27
10	7 31	17 34	7 29	17 34	7 29	17 35	7 27	17 34	7 27	17 32	7 28	17 33	7 25	17 32	7 25	17 33	7 32	17 33	7 23	17 33	7 24	17 30
13	7 30	17 36	7 28	17 36	7 29	17 38	7 27	17 36	7 27	17 35	7 28	17 36	7 25	17 35	7 24	17 36	7 32	17 36	7 23	17 36	7 23	17 32
16	7 30	17 39	7 28	17 39	7 29	17 40	7 26	17 39	7 26	17 37	7 27	17 38	7 24	17 38	7 24	17 38	7 32	17 39	7 23	17 38	7 23	17 35
19	7 29	17 42	7 27	17 42	7 28	17 43	7 26	17 41	7 26	17 40	7 27	17 41	7 24	17 40	7 23	17 41	7 31	17 42	7 22	17 41	7 22	17 38
22	7 28	17 45	7 26	17 44	7 27	17 46	7 25	17 44	7 25	17 43	7 26	17 44	7 23	17 43	7 23	17 44	7 30	17 44	7 21	17 44	7 21	17 40
25	7 27	17 47	7 25	17 47	7 26	17 49	7 24	17 47	7 24	17 45	7 24	17 46	7 21	17 46	7 21	17 46	7 29	17 47	7 20	17 47	7 20	17 43
28	7 26	17 50	7 24	17 50	7 24	17 51	7 22	17 50	7 22	17 48	7 23	17 50	7 20	17 48	7 20	17 49	7 27	17 50	7 19	17 49	7 19	17 46
31	7 24	17 53	7 22	17 53	7 23	17 54	7 21	17 52	7 20	17 51	7 21	17 52	7 18	17 51	7 18	17 52	7 25	17 53	7 17	17 51	7 17	17 49
3 फर.	7 22	17 56	7 20	17 55	7 21	17 57	7 19	17 55	7 19	17 54	7 19	17 55	7 17	17 54	7 17	17 54	7 23	17 56	7 15	17 54	7 15	17 51
6	7 20	17 58	7 18	17 58	7 19	18 00	7 17	17 58	7 16	17 56	7 17	17 57	7 15	17 56	7 15	17 57	7 21	17 58	7 13	17 57	7 13	17 54
9	7 17	18 01	7 16	18 01	7 16	18 02	7 14	18 00	7 14	17 59	7 15	18 00	7 12	17 59	7 12	18 00	7 19	18 01	7 11	17 59	7 11	17 57
12	7 15	18 04	7 13	18 03	7 14	18 05	7 12	18 03	7 12	18 02	7 12	18 03	7 10	18 02	7 10	18 02	7 16	18 04	7 09	18 02	7 08	17 59
15	7 12	18 06	7 11	18 06	7 11	18 07	7 09	18 05	7 09	18 04	7 10	18 05	7 07	18 04	7 07	18 05	7 13	18 07	7 06	18 04	7 06	18 02
18	7 09	18 09	7 08	18 08	7 08	18 10	7 06	18 08	7 06	18 07	7 07	18 08	7 04	18 06	7 05	18 07	7 10	18 09	7 03	18 07	7 03	18 04
21	7 06	18 12	7 05	18 11	7 05	18 12	7 03	18 10	7 03	18 09	7 04	18 10	7 01	18 09	7 02	18 09	7 07	18 12	7 00	18 09	7 00	18 07
24	7 03	18 14	7 02	18 13	7 02	18 15	7 00	18 13	7 00	18 12	7 01	18 12	6 58	18 11	6 58	18 12	7 04	18 14	6 57	18 11	6 57	18 09
27	7 00	18 16	6 58	18 16	6 59	18 17	6 57	18 15	6 57	18 14	6 57	18 15	6 55	18 13	6 55	18 14	7 01	18 17	6 54	18 13	6 54	18 11
2 मार्च	6 55	18 19	6 54	18 19	6 55	18 20	6 53	18 18	6 52	18 17	6 53	18 18	6 51	18 16	6 51	18 17	6 56	18 20	6 50	18 16	6 49	18 14
5	6 51	18 22	6 50	18 21	6 51	18 22	6 49	18 20	6 48	18 19	6 49	18 20	6 47	18 19	6 47	18 19	6 52	18 22	6 46	18 18	6 46	18 17
8	6 48	18 24	6 47	18 23	6 47	18 24	6 45	18 22	6 45	18 21	6 46	18 22	6 44	18 21	6 44	18 21	6 49	18 24	6 43	18 20	6 42	18 19
11	6 44	18 26	6 43	18 25	6 44	18 26	6 42	18 24	6 41	18 24	6 42	18 24	6 40	18 23	6 40	18 23	6 45	18 27	6 39	18 22	6 38	18 21
14	6 40	18 28	6 39	18 27	6 40	18 28	6 38	18 26	6 37	18 26	6 38	18 27	6 36	18 25	6 37	18 25	6 41	18 29	6 36	18 24	6 35	18 23
17	6 36	18 30	6 35	18 29	6 36	18 30	6 34	18 28	6 34	18 28	6 35	18 29	6 33	18 27	6 33	18 27	6 37	18 31	6 32	18 26	6 31	18 25
20	6 33	18 33	6 32	18 31	6 33	18 32	6 31	18 31	6 30	18 30	6 31	18 31	6 29	18 29	6 29	18 29	6 33	18 33	6 28	18 28	6 27	18 27

अक्षांश	अक्षांश १०° उ.		अक्षांश २०° उ.		अक्षांश २५° उ.		अक्षांश ३०° उ.		अक्षांश ३५° उ.		अक्षांश ४०° उ.		अक्षांश ४५° उ.		अक्षांश ५०° उ.		अक्षांश ५२° उ.		अक्षांश ५४° उ.	
तारीख अक्तूबर	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.
	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
11 अक्तू	5 48	17 45	5 53	17 40	5 56	17 37	5 59	17 34	6 02	17 31	6 06	17 27	6 10	17 23	6 15	17 18	6 17	17 15	6 20	17 13
13 ,,	5 48	17 44	5 54	17 38	5 57	17 35	6 00	17 31	6 04	17 28	6 08	17 24	6 12	17 20	6 18	17 14	6 21	17 11	6 23	17 08
15 ,,	5 49	17 43	5 55	17 37	5 58	17 33	6 02	17 29	6 06	17 25	6 10	17 21	6 15	17 16	6 21	17 10	6 24	17 07	6 27	17 03
17 ,,	5 49	17 42	5 55	17 35	5 59	17 31	6 03	17 27	6 07	17 23	6 12	17 18	6 18	17 12	6 24	17 06	6 28	17 02	6 31	16 59
19 ,,	5 49	17 41	5 56	17 34	6 00	17 30	6 05	17 25	6 09	17 20	6 14	17 15	6 20	17 09	6 28	17 02	6 31	16 58	6 35	16 54
21 ,,	5 49	17 40	5 57	17 32	6 01	17 28	6 06	17 23	6 11	17 18	6 16	17 13	6 23	17 05	6 31	16 58	6 35	16 54	6 39	16 49
23 ,,	5 49	17 39	5 58	17 31	6 02	17 26	6 07	17 21	6 12	17 15	6 18	17 10	6 26	17 02	6 34	16 54	6 38	16 50	6 43	16 45
25 ,,	5 49	17 39	5 58	17 29	6 03	17 24	6 08	17 19	6 14	17 13	6 20	17 03	6 28	16 59	6 38	16 50	6 42	16 46	6 46	16 41
27 ,,	5 50	17 38	5 59	17 28	6 05	17 23	6 10	17 17	6 16	17 11	6 22	17 04	6 31	16 56	6 41	16 46	6 46	16 42	6 50	16 37
29 ,,	5 50	17 38	6 00	17 27	6 06	17 21	6 12	17 15	6 18	17 09	6 24	17 02	6 34	16 53	6 45	16 42	6 49	16 38	6 54	16 32
31 ,,	5 50	17 37	6 00	17 26	6 07	17 20	6 13	17 14	6 20	17 07	6 27	16 59	6 37	16 50	6 48	16 39	6 52	16 34	6 58	18 28
2 नवं.	5 51	17 37	6 02	17 24	6 08	17 11	6 14	17 12	6 22	17 05	6 30	16 56	6 39	16 47	6 51	16 35	6 56	16 30	7 02	16 24
4 ,,	5 51	17 36	6 03	17 23	6 09	17 18	6 16	17 11	6 23	17 03	6 32	16 54	6 42	16 45	6 54	16 32	7 00	16 27	7 06	16 21
6 ,,	5 52	17 36	6 04	17 23	6 10	17 17	6 18	17 09	6 25	17 01	6 34	16 52	6 45	16 42	6 57	16 29	7 03	16 23	7 10	16 17
8 ,,	5 52	17 35	6 05	17 22	6 12	17 16	6 19	17 08	6 27	16 59	6 37	16 50	6 48	16 39	7 01	16 26	7 07	16 20	7 14	16 13
10 ,,	5 53	17 35	6 06	17 22	6 13	17 15	6 21	17 06	6 29	16 57	6 39	16 48	6 50	16 37	7 04	16 23	7 10	16 17	7 17	16 09
12 ,,	5 54	17 35	6 07	17 21	6 15	17 14	6 22	17 05	6 31	16 56	6 41	16 47	6 53	16 35	7 07	16 20	7 14	16 14	7 21	16 06
14 ,,	5 54	17 35	6 08	17 21	6 16	17 13	6 24	17 04	6 33	16 55	6 44	16 45	6 56	16 33	7 11	16 17	7 18	16 11	7 25	16 03
16 ,,	5 55	17 34	6 09	17 20	6 17	17 12	6 26	17 03	6 35	16 54	6 46	16 43	6 59	16 31	7 14	16 15	7 21	16 08	7 29	16 00
18 ,,	5 56	17 34	6 11	17 20	6 18	17 12	6 27	17 03	6 37	16 53	6 48	16 41	7 01	16 29	7 17	16 12	7 25	16 05	7 33	15 57
20 ,,	5 57	17 35	6 12	17 19	6 20	17 11	6 29	17 02	6 39	16 52	6 51	16 40	7 04	16 27	7 20	16 10	7 28	16 03	7 36	15 54
22 ,,	5 58	17 35	6 13	17 19	6 21	17 11	6 31	17 01	6 41	16 51	6 53	16 39	7 07	16 25	7 23	16 08	7 31	16 00	7 40	15 51
24 ,,	5 58	17 35	6 14	17 19	6 23	17 10	6 32	17 01	6 43	16 50	6 55	16 38	7 09	16 24	7 26	16 06	7 35	15 58	7 44	15 49
26 ,,	5 59	17 35	6 15	17 19	6 24	17 10	6 34	17 00	6 45	16 50	6 57	16 37	7 12	16 22	7 29	16 04	7 38	15 56	7 47	15 47
28 ,,	6 00	17 36	6 17	17 19	6 26	17 10	6 36	17 00	6 47	16 49	6 59	16 36	7 14	16 21	7 32	16 03	7 41	15 55	7 50	15 45
30 ,,	6 01	17 36	6 18	17 19	6 28	17 10	6 37	17 00	6 49	16 49	7 01	16 36	7 17	16 21	7 35	16 02	7 44	15 53	7 54	15 43
2 दिसं.	6 02	17 37	6 19	17 19	6 29	17 10	6 39	17 00	6 51	16 58	7 03	16 35	7 19	16 20	7 38	16 01	7 47	15 52	7 57	15 42
4 ,,	6 03	17 37	6 21	17 20	6 30	17 10	6 41	17 00	6 52	16 48	7 05	16 35	7 21	16 20	7 40	16 00	7 49	15 51	8 01	15 41
6 ,,	6 04	17 38	6 22	17 20	6 32	17 10	6 42	17 00	6 54	16 48	7 07	16 35	7 23	16 19	7 43	15 59	7 52	15 50	8 04	15 39
8 ,,	6 05	17 38	6 23	17 20	6 33	17 10	6 44	17 00	6 55	16 48	7 09	16 35	7 25	16 19	7 45	15 59	7 54	15 50	8 06	15 39
10 ,,	6 06	17 39	6 24	17 21	6 34	17 11	6 45	17 00	6 57	16 48	7 11	16 35	7 27	16 18	7 47	15 58	7 57	15 49	8 09	15 38
12 ,,	6 07	17 40	6 25	17 22	6 35	17 11	6 46	17 01	6 58	16 48	7 13	16 35	7 29	16 17	7 49	15 58	7 59	15 48	8 11	15 37
14 ,,	6 08	17 41	6 27	17 23	6 37	17 12	6 48	17 01	7 0	16 49	7 14	16 35	7 31	16 19	7 51	15 58	8 1	15 48	8 13	15 37
16 ,,	6 09	17 42	6 28	17 23	6 38	17 13	6 49	17 02	7 1	16 49	7 15	16 36	7 32	16 19	7 53	15 59	8 3	15 48	8 14	15 38
18 ,,	6 10	17 43	6 29	17 24	6 39	17 14	6 50	17 03	7 2	16 50	7 17	16 36	7 33	16 20	7 54	15 59	8 4	15 49	8 16	15 38
20 ,,	6 11	17 44	6 30	17 25	6 40	17 15	6 51	17 04	7 4	16 51	7 18	16 37	7 35	16 21	7 55	16 00	8 5	15 50	8 17	15 39
22 ,,	6 12	17 45	6 31	17 26	6 41	17 16	6 52	17 05	7 5	16 52	7 19	16 38	7 36	16 21	7 56	16 00	8 6	15 51	8 18	15 39
24 ,,	6 13	17 46	6 32	17 27	6 42	17 17	6 53	17 06	7 6	16 54	7 20	16 39	7 37	16 23	7 57	16 02	8 7	15 52	8 19	15 41
26 ,,	6 14	17 47	6 33	17 28	6 43	17 18	6 54	17 07	7 6	16 55	7 21	16 41	7 37	16 24	7 58	16 03	8 8	15 53	8 19	15 42
28 ,,	6 15	17 48	6 34	17 29	6 44	17 20	6 55	17 09	7 7	16 56	7 21	16 42	7 38	16 25	7 58	16 05	8 8	15 55	8 19	15 44
30 ,,	6 16	17 49	6 34	17 30	6 45	17 21	6 56	17 10	7 8	16 57	7 22	16 44	7 38	16 26	7 59	16 07	8 8	15 57	8 19	15 46
31 ,,	6 17	17 50	6 34	17 31	6 45	17 23	6 56	17 10	7 8	16 58	7 22	16 44	7 38	16 27	7 59	16 08	8 8	15 58	8 19	15 47

★ हिमाचल प्रदेश के प्रमुख शहरों के सूर्योदयास्त–सन् 2020 ई. (भा. स्टै. टा.) ★

नीचे हिमाचल प्रदेश के कुछ प्रमुख नगरों के सूर्योदयास्त दिए गए हैं जो किरण–वक्री भवन संस्कार रहित है। जो सूर्योदयादि इष्ट, ज्योतिष शास्त्रीय एवं धार्मिक अनुष्ठानादि कृत्यों के लिए समान रूप से उपयोगी होते हैं। किसी नगर के सूर्योदय में लगभग 4 मिनट घटाने तथा अस्त में 4 मिनट जोड़ने से किरण वक्री संस्कार सहित (Upper Limb) अर्थात् दृश्यमान सूर्योदय–सूर्यास्त होंगे।

पाठकों की सुविधा हेतु आगे प्रमुख नगरों के सूर्योदयास्त से पूर्व हिमाचल प्रदेश के विभिन्न नगरों के सूर्योदयास्त में परिवर्तन संस्कार लिख रहे हैं जिससे आप किसी भी अभीष्ट नगर का सू. उदय सुगमता पूर्वक ज्ञात कर सकते हैं।

उदाहरण–मान लीजिए करसोग में 11 अप्रैल को सूर्योदय व सूर्यास्त जानना है तो हमें जिला मण्डी के स्तम्भ (Column) में देखने से सूर्योदय 6 घण्टे 1 मिनट तथा सूर्यास्त 18 घण्टे 44 मिनट प्राप्त हुए। इन दोनों सू. उ. व सू. अ. में नीचे दी गई संस्कार तालिका में करसोग का संस्कार–1 घण्टे 04 मिनट घटाने से हमें 5 घण्टे 59 मिनट 56 सैकेण्ड और 18 घण्टे 42 मिनट 26 सैकेण्ड में प्राप्त हुए। ये करसोग के शुद्ध शास्त्रीय (जन्मपत्री निर्माण हेतु) सूर्योदय एवं सूर्यास्त होंगे।

नगर	काँगड़ा		हमीरपुर		ऊना		बिलासपुर		मण्डी		सरकाघाट		शिमला		सोलन		चम्बा		नाहन		रामपुर बुशैहर	
तारीख	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त
जनवरी	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
1	7 30	17 27	7 28	17 27	7 28	17 28	7 26	17 27	7 26	17 25	7 27	17 26	7 24	17 26	7 23	17 26	7 31	17 26	7 22	17 26	7 23	17 23
4	7 30	17 29	7 28	17 29	7 29	17 30	7 26	17 29	7 27	17 27	7 27	17 28	7 24	17 28	7 24	17 28	7 32	17 29	7 22	17 28	7 23	17 25
7	7 30	17 31	7 29	17 31	7 29	17 33	7 27	17 31	7 27	17 30	7 28	17 30	7 25	17 30	7 24	17 31	7 32	17 31	7 23	17 31	7 24	17 27
10	7 31	17 34	7 29	17 34	7 29	17 35	7 27	17 34	7 27	17 32	7 28	17 33	7 25	17 32	7 25	17 33	7 32	17 33	7 23	17 33	7 24	17 30
13	7 30	17 36	7 28	17 36	7 29	17 38	7 27	17 36	7 27	17 35	7 28	17 36	7 25	17 35	7 24	17 36	7 32	17 36	7 23	17 36	7 23	17 32
16	7 30	17 39	7 28	17 39	7 29	17 40	7 26	17 39	7 26	17 37	7 27	17 38	7 24	17 38	7 24	17 38	7 32	17 39	7 23	17 38	7 23	17 35
19	7 29	17 42	7 27	17 42	7 28	17 43	7 26	17 41	7 26	17 40	7 27	17 41	7 24	17 40	7 23	17 41	7 31	17 42	7 22	17 41	7 22	17 38
22	7 28	17 45	7 26	17 44	7 27	17 46	7 25	17 44	7 25	17 43	7 26	17 44	7 23	17 43	7 23	17 44	7 30	17 44	7 21	17 44	7 21	17 40
25	7 27	17 47	7 25	17 47	7 26	17 49	7 24	17 47	7 24	17 45	7 24	17 46	7 21	17 46	7 21	17 46	7 29	17 47	7 20	17 47	7 20	17 43
28	7 26	17 50	7 24	17 50	7 24	17 51	7 22	17 50	7 22	17 48	7 23	17 50	7 20	17 48	7 20	17 49	7 27	17 50	7 19	17 49	7 19	17 46
31	7 24	17 53	7 22	17 53	7 23	17 54	7 21	17 52	7 20	17 51	7 21	17 52	7 18	17 51	7 18	17 52	7 25	17 53	7 17	17 51	7 17	17 49
3 फर.	7 22	17 56	7 20	17 55	7 21	17 57	7 19	17 55	7 19	17 54	7 19	17 55	7 17	17 54	7 17	17 54	7 23	17 56	7 15	17 54	7 15	17 51
6	7 20	17 58	7 18	17 58	7 19	18 00	7 17	17 58	7 16	17 56	7 17	17 57	7 15	17 56	7 15	17 57	7 21	17 58	7 13	17 57	7 13	17 54
9	7 17	18 01	7 16	18 01	7 16	18 02	7 14	18 00	7 14	17 59	7 15	18 00	7 12	17 59	7 12	18 00	7 19	18 01	7 11	17 59	7 11	17 57
12	7 15	18 04	7 13	18 03	7 14	18 05	7 12	18 03	7 12	18 02	7 12	18 03	7 10	18 02	7 10	18 02	7 16	18 04	7 09	18 02	7 08	17 59
15	7 12	18 06	7 11	18 06	7 11	18 07	7 09	18 05	7 09	18 04	7 10	18 05	7 07	18 04	7 07	18 05	7 13	18 07	7 06	18 04	7 06	18 02
18	7 09	18 09	7 08	18 08	7 08	18 10	7 06	18 08	7 06	18 07	7 07	18 08	7 04	18 06	7 05	18 07	7 10	18 09	7 03	18 07	7 03	18 04
21	7 06	18 12	7 05	18 11	7 05	18 12	7 03	18 10	7 03	18 09	7 04	18 10	7 01	18 09	7 02	18 09	7 07	18 12	7 00	18 09	7 00	18 07
24	7 03	18 14	7 02	18 13	7 02	18 15	7 00	18 13	7 00	18 12	7 01	18 12	6 58	18 11	6 58	18 12	7 04	18 14	6 57	18 11	6 57	18 09
27	7 00	18 16	6 58	18 16	6 59	18 17	6 57	18 15	6 57	18 14	6 57	18 15	6 55	18 13	6 55	18 14	7 01	18 17	6 54	18 13	6 54	18 11
2 मार्च	6 55	18 19	6 54	18 19	6 55	18 20	6 53	18 18	6 52	18 17	6 53	18 18	6 51	18 16	6 51	18 17	6 56	18 20	6 50	18 16	6 49	18 14
5	6 51	18 22	6 50	18 21	6 51	18 22	6 49	18 20	6 48	18 19	6 49	18 20	6 47	18 19	6 47	18 19	6 52	18 22	6 46	18 18	6 46	18 17
8	6 48	18 24	6 47	18 23	6 47	18 24	6 45	18 22	6 45	18 21	6 46	18 22	6 44	18 21	6 44	18 21	6 49	18 24	6 43	18 20	6 42	18 19
11	6 44	18 26	6 43	18 25	6 44	18 26	6 42	18 24	6 41	18 24	6 42	18 24	6 40	18 23	6 40	18 23	6 45	18 27	6 39	18 22	6 38	18 21
14	6 40	18 28	6 39	18 27	6 40	18 28	6 38	18 26	6 37	18 26	6 38	18 27	6 36	18 25	6 37	18 25	6 41	18 29	6 36	18 24	6 35	18 23
17	6 36	18 30	6 35	18 29	6 36	18 30	6 34	18 28	6 34	18 28	6 35	18 29	6 33	18 27	6 33	18 27	6 37	18 31	6 32	18 26	6 31	18 25
20	6 33	18 33	6 32	18 31	6 33	18 32	6 31	18 31	6 30	18 30	6 31	18 31	6 29	18 29	6 29	18 29	6 33	18 33	6 28	18 28	6 27	18 27

नगर	काँगड़ा		हमीरपुर		ऊना		बिलासपुर		मण्डी		सरकाघाट		शिमला		सोलन		चम्बा		नाहन		रामपुर बुशैहर	
तारीख	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त
मार्च	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
23	6 29	18 35	6 28	18 34	6 29	18 34	6 27	18 32	6 26	18 32	6 27	18 33	6 25	18 31	6 26	18 31	6 29	18 35	6 25	18 30	6 23	18 29
26	6 25	18 37	6 24	18 36	6 25	18 36	6 23	18 34	6 22	18 34	6 23	18 35	6 21	18 33	6 22	18 33	6 25	18 37	6 21	18 32	6 20	18 31
29	6 21	18 39	6 20	18 38	6 21	18 38	6 19	18 36	6 18	18 36	6 19	18 37	6 18	18 35	6 18	18 35	6 21	18 39	6 17	18 34	6 16	18 33
2 अप्रै.	6 16	18 41	6 15	18 40	6 16	18 41	6 14	18 39	6 13	18 39	6 14	18 39	6 13	18 37	6 14	18 37	6 16	18 42	6 13	18 36	6 11	18 36
5	6 12	18 43	6 11	18 42	6 12	18 43	6 11	18 41	6 10	18 41	6 10	18 41	6 09	18 39	6 09	18 39	6 12	18 44	6 09	18 38	6 07	18 38
8	6 08	18 46	6 08	18 44	6 09	18 45	6 07	18 43	6 06	18 43	6 07	18 43	6 05	18 41	6 06	18 41	6 09	18 47	6 05	18 40	6 03	18 40
11	6 05	18 48	6 04	18 46	6 05	18 47	6 03	18 45	6 02	18 45	6 03	18 45	6 02	18 43	6 02	18 43	6 05	18 49	6 02	18 42	6 00	18 42
14	6 01	18 50	6 00	18 48	6 02	18 49	6 00	18 47	5 59	18 47	6 00	18 47	5 58	18 45	5 59	18 45	6 01	18 51	5 58	18 44	5 56	18 44
17	5 58	18 52	5 57	18 50	5 58	18 51	5 56	18 49	5 55	18 49	5 56	18 49	5 55	18 47	5 56	18 47	5 58	18 53	5 55	18 46	5 53	18 46
20	5 54	18 54	5 54	18 52	5 55	18 53	5 53	18 51	5 52	18 51	5 53	18 52	5 52	18 49	5 52	18 49	5 54	18 55	5 52	18 48	5 49	18 48
23	5 51	18 56	5 50	18 54	5 52	18 55	5 50	18 53	5 49	18 53	5 50	18 54	5 49	18 51	5 49	18 51	5 51	18 57	5 49	18 50	5 46	18 50
26	5 48	18 58	5 47	18 57	5 49	18 57	5 47	18 55	5 46	18 55	5 46	18 56	5 45	18 53	5 46	18 53	5 48	18 59	5 46	18 52	5 43	18 52
29	5 45	19 00	5 44	18 59	5 46	18 59	5 44	18 57	5 43	18 57	5 43	18 58	5 43	18 55	5 43	18 55	5 45	19 02	5 43	18 54	5 40	18 54
2 मई	5 42	19 02	5 41	19 01	5 43	19 01	5 41	18 59	5 40	18 59	5 41	19 00	5 40	18 57	5 40	18 57	5 42	19 04	5 40	18 56	5 37	18 56
4	5 40	19 04	5 40	19 02	5 41	19 03	5 38	19 01	5 38	19 00	5 39	19 01	5 38	18 59	5 39	18 58	5 40	19 05	5 38	18 57	5 36	18 57
7	5 37	19 06	5 37	19 04	5 38	19 05	5 36	19 03	5 35	19 03	5 36	19 03	5 35	19 01	5 36	19 01	5 37	19 07	5 36	18 59	5 33	18 59
10	5 35	19 08	5 35	19 06	5 36	19 07	5 34	19 05	5 33	19 05	5 34	19 05	5 33	19 03	5 34	19 03	5 35	19 10	5 34	19 01	5 31	19 01
13	5 33	19 10	5 33	19 08	5 34	19 09	5 32	19 07	5 31	19 07	5 32	19 08	5 31	19 05	5 32	19 05	5 32	19 12	5 32	19 03	5 29	19 03
16	5 31	19 12	5 31	19 10	5 32	19 11	5 30	19 09	5 29	19 09	5 30	19 10	5 29	19 07	5 30	19 07	5 30	19 14	5 30	19 05	5 27	19 06
19	5 29	19 14	5 29	19 12	5 30	19 13	5 28	19 11	5 27	19 11	5 28	19 12	5 27	19 09	5 28	19 09	5 28	19 16	5 28	19 07	5 25	19 08
22	5 27	19 16	5 27	19 14	5 29	19 15	5 27	19 13	5 25	19 13	5 26	19 14	5 26	19 11	5 26	19 10	5 27	19 18	5 26	19 09	5 23	19 09
25	5 26	19 18	5 26	19 16	5 27	19 17	5 26	19 15	5 24	19 15	5 25	19 16	5 24	19 12	5 25	19 12	5 25	19 20	5 25	19 11	5 22	19 11
28	5 25	19 20	5 25	19 18	5 26	19 19	5 24	19 16	5 23	19 17	5 24	19 17	5 23	19 14	5 24	19 14	5 24	19 22	5 24	19 12	5 21	19 13
31	5 24	19 22	5 24	19 20	5 25	19 20	5 23	19 18	5 22	19 18	5 23	19 19	5 22	19 16	5 23	19 16	5 23	19 24	5 23	19 14	5 20	19 15
3 जून	5 23	19 24	5 23	19 22	5 24	19 22	5 23	19 20	5 21	19 20	5 22	19 21	5 22	19 18	5 22	19 17	5 22	19 25	5 22	19 16	5 19	19 17
6	5 22	19 25	5 22	19 23	5 24	19 24	5 22	19 23	5 21	19 21	5 22	19 22	5 21	19 19	5 22	19 19	5 22	19 27	5 22	19 17	5 19	19 18
9	5 22	19 26	5 22	19 24	5 24	19 25	5 22	19 22	5 20	19 23	5 21	19 24	5 21	19 20	5 22	19 20	5 22	19 28	5 22	19 19	5 18	19 19
12	5 22	19 28	5 22	19 26	5 24	19 26	5 22	19 24	5 20	19 24	5 21	19 25	5 21	19 22	5 22	19 21	5 21	19 30	5 22	19 20	5 18	19 21
15	5 22	19 29	5 22	19 27	5 24	19 27	5 22	19 25	5 21	19 25	5 21	19 26	5 21	19 23	5 22	19 22	5 22	19 31	5 22	19 21	5 18	19 22
18	5 23	19 30	5 23	19 28	5 24	19 28	5 23	19 26	5 21	19 26	5 22	19 27	5 21	19 24	5 22	19 23	5 22	19 32	5 22	19 22	5 19	19 23
21	5 23	19 30	5 23	19 28	5 25	19 29	5 23	19 27	5 21	19 27	5 22	19 28	5 22	19 24	5 23	19 24	5 24	19 32	5 23	19 22	5 19	19 23
24	5 24	19 31	5 24	19 29	5 25	19 29	5 24	19 27	5 22	19 27	5 23	19 28	5 23	19 25	5 24	19 25	5 25	19 33	5 24	19 23	5 20	19 24
27	5 25	19 31	5 25	19 29	5 26	19 30	5 25	19 27	5 23	19 28	5 24	19 28	5 24	19 25	5 24	19 25	5 25	19 33	5 25	19 23	5 21	19 24
30	5 26	19 31	5 26	19 29	5 27	19 30	5 26	19 27	5 24	19 28	5 25	19 28	5 25	19 25	5 26	19 25	5 25	19 33	5 26	19 23	5 22	19 24
3 जुला	5 27	19 31	5 27	19 29	5 29	19 30	5 27	19 27	5 25	19 27	5 26	19 28	5 26	19 25	5 27	19 25	5 25	19 33	5 27	19 23	5 23	19 24
6	5 29	19 31	5 29	19 29	5 30	19 29	5 28	19 27	5 27	19 27	5 28	19 28	5 27	19 25	5 28	19 25	5 25	19 32	5 28	19 23	5 25	19 24
9	5 30	19 30	5 30	19 28	5 32	19 29	5 30	19 26	5 28	19 27	5 29	19 27	5 29	19 24	5 30	19 24	5 24	19 32	5 30	19 22	5 26	19 23
12	5 32	19 29	5 32	19 27	5 33	19 28	5 31	19 26	5 30	19 26	5 31	19 26	5 30	19 23	5 31	19 23	5 23	19 31	5 31	19 22	5 28	19 22

नगर	कांगड़ा		हमीरपुर		ऊना		बिलासपुर		मण्डी		सरकाघाट		शिमला		सोलन		चम्बा		नाहन		रामपुर बुशैहर	
तारीख	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त
जुलाई	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
15	5 33	19 28	5 33	19 26	5 35	19 27	5 33	19 25	5 32	19 25	5 32	19 25	5 32	19 22	5 33	19 22	5 33	19 30	5 33	19 21	5 29	19 21
18	5 35	19 27	5 35	19 25	5 36	19 25	5 35	19 23	5 33	19 23	5 34	19 24	5 34	19 21	5 34	19 21	5 35	19 29	5 34	19 19	5 31	19 20
21	5 37	19 25	5 37	19 23	5 38	19 24	5 37	19 22	5 35	19 22	5 36	19 23	5 36	19 20	5 36	19 19	5 37	19 27	5 36	19 18	5 33	19 19
24	5 39	19 24	5 39	19 22	5 40	19 22	5 39	19 20	5 37	19 20	5 38	19 21	5 37	19 18	5 38	19 18	5 39	19 25	5 38	19 16	5 35	19 17
27	5 41	19 22	5 41	19 20	5 42	19 20	5 40	19 18	5 38	19 18	5 40	19 19	5 39	19 16	5 40	19 16	5 41	19 23	5 40	19 14	5 37	19 15
30	5 43	19 19	5 43	19 18	5 44	19 18	5 42	19 16	5 41	19 16	5 42	19 17	5 41	19 14	5 42	19 14	5 43	19 21	5 42	19 12	5 39	19 13
2 अग.	5 45	19 17	5 45	19 15	5 46	19 16	5 44	19 14	5 43	19 14	5 44	19 15	5 43	19 12	5 44	19 12	5 45	19 19	5 43	19 10	5 41	19 10
5	5 47	19 15	5 47	19 13	5 48	19 13	5 46	19 11	5 44	19 11	5 46	19 12	5 45	19 09	5 46	19 09	5 47	19 16	5 45	19 08	5 42	19 08
8	5 49	19 12	5 48	19 10	5 50	19 11	5 48	19 09	5 47	19 18	5 48	19 09	5 47	19 07	5 47	19 07	5 49	19 13	5 47	19 05	5 44	19 05
11	5 51	19 09	5 50	19 07	5 52	19 08	5 50	19 06	5 49	19 06	5 50	19 06	5 49	19 04	5 49	19 04	5 51	19 10	5 49	19 02	5 46	19 02
14	5 53	19 06	5 52	19 04	5 54	19 05	5 52	19 03	5 51	19 03	5 51	19 03	5 51	19 01	5 51	19 01	5 53	19 07	5 51	19 00	5 48	18 59
17	5 55	19 03	5 54	19 01	5 55	19 02	5 54	19 00	5 53	18 59	5 53	19 00	5 52	18 58	5 53	18 58	5 55	19 04	5 53	18 56	5 50	18 56
20	5 57	18 59	5 56	18 58	5 57	19 00	5 56	18 56	5 54	18 56	5 55	18 57	5 54	18 54	5 55	18 55	5 57	19 01	5 54	18 53	5 52	18 53
23	5 59	18 56	5 58	18 54	5 59	18 55	5 57	18 53	5 56	18 53	5 57	18 54	5 56	18 51	5 57	18 51	5 59	18 57	5 56	18 50	5 54	18 50
26	6 00	18 52	6 00	18 51	6 01	18 52	5 59	18 50	5 58	18 49	5 59	18 50	5 58	18 48	5 58	18 48	6 01	18 53	5 58	18 47	5 56	18 46
29	6 02	18 49	6 02	18 47	6 03	18 48	6 01	18 46	6 00	18 46	6 01	18 46	6 00	18 44	6 00	18 44	6 03	18 50	6 00	18 43	5 58	18 43
1 सितं.	6 04	18 45	6 04	18 44	6 05	18 44	6 03	18 42	6 02	18 42	6 03	18 43	6 01	18 40	6 02	18 41	6 04	18 46	6 01	18 40	5 59	18 39
4	6 06	18 41	6 05	18 40	6 06	18 41	6 05	18 39	6 04	18 38	6 05	18 39	6 03	18 37	6 04	18 37	6 06	18 42	6 03	18 36	6 01	18 35
7	6 08	18 37	6 07	18 36	6 08	18 37	6 06	18 35	6 06	18 34	6 06	18 35	6 05	18 33	6 05	18 33	6 08	18 38	6 05	18 32	6 03	18 31
10	6 10	18 33	6 09	18 32	6 10	18 33	6 08	18 31	6 07	18 30	6 08	18 31	6 07	18 29	6 07	18 29	6 10	18 34	6 06	18 28	6 05	18 28
13	6 12	18 29	6 11	18 28	6 12	18 29	6 10	18 27	6 09	18 27	6 10	18 27	6 08	18 25	6 09	18 26	6 12	18 30	6 08	18 25	6 06	18 24
16	6 13	18 25	6 13	18 26	6 14	18 25	6 12	18 23	6 11	18 23	6 12	18 23	6 10	18 22	6 10	18 22	6 14	18 26	6 10	18 21	6 08	18 20
19	6 15	18 21	6 14	18 20	6 15	18 21	6 14	18 19	6 13	18 19	6 14	18 20	6 12	18 18	6 12	18 18	6 16	18 22	6 11	18 17	6 10	18 16
22	6 17	18 17	6 16	18 16	6 17	18 17	6 15	18 15	6 15	18 15	6 15	18 16	6 14	18 14	6 14	18 14	6 18	18 18	6 13	18 13	6 12	18 12
25	6 19	18 13	6 18	18 12	6 19	18 13	6 17	18 12	6 16	18 11	6 17	18 12	6 15	18 10	6 16	18 10	6 20	18 14	6 15	18 09	6 14	18 08
28	6 21	18 10	6 20	18 09	6 21	18 10	6 19	18 08	6 18	18 07	6 19	18 08	6 17	18 06	6 17	18 06	6 22	18 10	6 17	18 06	6 15	18 04
1 अक्तू.	6 23	18 06	6 22	18 05	6 23	18 06	6 21	18 04	6 20	18 03	6 21	18 04	6 19	18 02	6 19	18 03	6 24	18 06	6 18	18 02	6 17	18 00
4	6 25	18 02	6 24	18 01	6 25	18 02	6 23	18 00	6 22	17 59	6 23	18 00	6 21	17 59	6 21	18 00	6 26	18 02	6 20	17 58	6 19	17 57
7	6 27	17 58	6 26	17 57	6 27	17 58	6 25	17 56	6 24	17 55	6 25	17 56	6 23	17 55	6 23	17 55	6 28	17 58	6 22	17 55	6 21	17 53
10	6 29	17 54	6 28	17 54	6 29	17 55	6 27	17 53	6 26	17 52	6 27	17 53	6 25	17 51	6 25	17 52	6 30	17 55	6 24	17 51	6 23	17 49
13	6 31	17 51	6 30	17 50	6 31	17 51	6 29	17 50	6 28	17 48	6 29	17 49	6 27	17 48	6 27	17 48	6 32	17 51	6 26	17 48	6 25	17 46
16	6 33	17 47	6 32	17 46	6 33	17 48	6 31	17 45	6 30	17 45	6 31	17 46	6 29	17 44	6 29	17 45	6 34	17 47	6 28	17 44	6 27	17 42
19	6 35	17 44	6 34	17 43	6 35	17 44	6 33	17 42	6 32	17 41	6 33	17 42	6 31	17 41	6 31	17 42	6 36	17 46	6 30	17 41	6 29	17 39
22	6 38	17 40	6 36	17 40	6 37	17 41	6 35	17 39	6 35	17 38	6 35	17 39	6 33	17 38	6 33	17 38	6 39	17 41	6 32	17 38	6 32	17 36
25	6 40	17 37	6 39	17 37	6 39	17 38	6 37	17 36	6 37	17 35	6 38	17 36	6 35	17 35	6 35	17 35	6 41	17 37	6 34	17 35	6 34	17 33
28	6 42	17 34	6 41	17 34	6 42	17 35	6 40	17 33	6 39	17 32	6 40	17 33	6 38	17 32	6 38	17 33	6 44	17 34	6 36	17 32	6 36	17 30
31	6 45	17 32	6 43	17 31	6 44	17 32	6 42	17 31	6 42	17 30	6 42	17 30	6 40	17 29	6 40	17 30	6 46	17 32	6 39	17 30	6 39	17 27
3 नवं.	6 47	17 29	6 46	17 29	6 46	17 30	6 44	17 28	6 44	17 27	6 45	17 28	6 42	17 27	6 42	17 27	6 49	17 29	6 41	17 27	6 41	17 25

नगर	काँगड़ा		हमीरपुर		ऊना		बिलासपुर		मण्डी		सरकाघाट		शिमला		सोलन		चम्बा		नाहन		रामपुर बुशैहर	
तारीख	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त
नवंबर	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
6	6 50	17 27	6 48	17 26	6 49	17 28	6 47	17 26	6 47	17 25	6 47	17 25	6 45	17 25	6 45	17 25	6 51	17 27	6 43	17 25	6 43	17 22
9	6 53	17 24	6 51	17 24	6 51	17 25	6 49	17 24	6 49	17 23	6 50	17 23	6 47	17 23	6 47	17 23	6 54	17 24	6 46	17 23	6 46	17 20
12	6 55	17 23	6 53	17 22	6 54	17 24	6 52	17 22	6 52	17 21	6 53	17 21	6 50	17 21	6 50	17 21	6 57	17 22	6 48	17 21	6 49	17 18
15	6 58	17 21	6 56	17 21	6 57	17 22	6 54	17 20	6 54	17 19	6 55	17 20	6 52	17 19	6 52	17 20	6 59	17 21	6 51	17 20	6 51	17 17
18	7 01	17 19	6 59	17 19	6 59	17 21	6 57	17 19	6 57	17 17	6 58	17 18	6 55	17 18	6 55	17 18	7 02	17 19	6 53	17 18	6 54	17 15
21	7 03	17 18	7 01	17 18	7 02	17 19	7 00	17 18	7 00	17 16	7 01	17 17	6 58	17 17	6 57	17 17	7 05	17 18	6 56	17 17	6 56	17 14
24	7 06	17 17	7 04	17 17	7 05	17 18	7 02	17 17	7 02	17 15	7 03	17 16	7 00	17 16	7 00	17 16	7 07	17 17	6 59	17 16	6 59	17 13
27	7 08	17 17	7 07	17 16	7 09	17 18	7 05	17 16	7 05	17 15	7 06	17 16	7 03	17 15	7 03	17 16	7 10	17 16	7 01	17 16	7 02	17 12
30	7 11	17 16	7 09	17 16	7 10	17 17	7 07	17 16	7 07	17 14	7 08	17 15	7 05	17 15	7 05	17 15	7 13	17 16	7 04	17 15	7 04	17 12
3 दिसं	7 14	17 16	7 12	17 16	7 12	17 17	7 10	17 16	7 10	17 14	7 11	17 15	7 08	17 15	7 07	17 15	7 15	17 16	7 06	17 15	7 07	17 12
6	7 16	17 16	7 14	17 16	7 14	17 17	7 12	17 16	7 12	17 14	7 13	17 15	7 10	17 15	7 10	17 15	7 18	17 16	7 08	17 15	7 09	17 12
9	7 18	17 16	7 16	17 16	7 17	17 18	7 14	17 16	7 15	17 15	7 15	17 16	7 12	17 15	7 12	17 16	7 20	17 16	7 10	17 16	7 11	17 13
12	7 20	17 17	7 18	17 17	7 19	17 19	7 17	17 17	7 17	17 15	7 17	17 16	7 14	17 16	7 14	17 17	7 22	17 17	7 13	17 17	7 13	17 13
15	7 22	17 18	7 20	17 18	7 21	17 19	7 18	17 18	7 19	17 16	7 19	17 17	7 16	17 17	7 16	17 18	7 24	17 17	7 14	17 18	7 15	17 14
18	7 24	17 19	7 22	17 19	7 23	17 21	7 20	17 19	7 20	17 17	7 21	17 18	7 18	17 18	7 18	17 19	7 26	17 19	7 16	17 19	7 17	17 15
21	7 26	17 21	7 24	17 21	7 24	17 22	7 22	17 20	7 22	17 19	7 23	17 20	7 20	17 19	7 19	17 20	7 27	17 20	7 18	17 20	7 19	17 17
24	7 27	17 22	7 25	17 22	7 26	17 24	7 23	17 22	7 23	17 20	7 24	17 21	7 21	17 21	7 21	17 22	7 29	17 22	7 19	17 22	7 20	17 18
27	7 28	17 24	7 26	17 24	7 27	17 25	7 24	17 24	7 25	17 22	7 25	17 23	7 22	17 23	7 22	17 23	7 30	17 23	7 20	17 23	7 21	17 20
30	7 29	17 26	7 27	17 26	7 28	17 27	7 25	17 25	7 26	17 24	7 26	17 25	7 23	17 25	7 23	17 26	7 31	17 26	7 21	17 25	7 22	17 22

हिमाचल प्रदेश के अन्य नगरों के लिए संस्कार सारिणी

काँगड़ा

नगर	संस्कार
	मिं. सैं.
धर्मशाला	+ ० २०
नूरपुर	+ १ २८
नगरोटा	+ ० ०४
खजियार	+ १ १२
ज्वालामुखी	+ ० १२
सरकाघाट	+ ० ०४
पालमपुर	– ० ४०
भुन्तर	– ३ ०४
बैजनाथ	– ० ५२

हमीरपुर

नगर	संस्कार
	मिं. सैं.
नादौन	+ ० ३२
सुजानपुरटिहरी	+ ० ०४

ऊना

गगरेट	+ १ ००
अम्ब	+ ० ४८
दौलतपुर	+ १ २०
चिन्तपूर्णी	+ ० ५६

बिलासपुर

नगर	संस्कार
	मिं. सैं.
घुमारवीं	+ ० ३६
भाखड़ा	+ १ २०
नैना देवी	+ १ १६

मण्डी

जोगिन्द्रनगर	+ ० ५२
सुन्दरनगर	+ ० २०
करसोग	– १ ०४
किन्नौर	– ५ २८
कुल्लू	– ० ३२

मण्डी

नगर	संस्कार
	मिं. सैं.
मनाली	– १ २४
बंजार	– १ २८
अनी	– ० ५६
निरमण्ड	– २ २४

शिमला

तारादेवी	+ ० १२
नारकण्डा	– १ ००
कुमारसेन	– १ ३६

शिमला

नगर	संस्कार
	मिं. सैं.
कोटखाई	– १ ३२
रोहड़ू	– २ ०४

सोलन

सपाटू	+ ० ३२
परवाणू	+ ० १६
कसौली	+ ० २८
अर्की	+ ० ४०
नालागढ़	+ ३ ०८

चम्बा

नगर	संस्कार
	मिं. सैं.
बनीखेत	+ ० ४८
डलहौज़ी	– ० ४०
लाहौल स्पीति	– ३ २४
त्रिलोकनाथ	–३ ३४

नाहन

पौंटा साहिब	+ १ ०८
राजगढ़	– ० १२

दैनिक लग्नसारणी-शिमला (हि.प्र.) में लग्न समाप्तिकाल (भा. स्टैं. टा.)

दैनिक लग्नसारणी-शिमला (हि.प्र.) में लग्न समाप्तिकाल (भा. स्टै. टा.)

वैशाख (अप्रैल-मई)

अप्रैल	वैशाख प्रवि.	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
		घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
13	१	७ ३५	९ २९	११ ४३	१४ ०६	१६ २५	१८ ४३	२१ ०५	२३ २५	१ ३०	३ ११	४ ३६	५ ५८
14	२	७ ३१	९ २५	११ ३९	१४ ०२	१६ २१	१८ ३९	२१ ०१	२३ २१	१ २६	३ ०७	४ ३२	५ ५४
15	३	७ २७	९ २१	११ ३६	१३ ५८	१६ १७	१८ ३५	२० ५७	२३ १७	१ २२	३ ०३	४ २८	५ ५०
16	४	७ २३	९ १७	११ ३२	१३ ५४	१६ १३	१८ ३१	२० ५३	२३ १३	१ १८	२ ५९	४ २४	५ ४६
17	५	७ १९	९ १३	११ २८	१३ ५१	१६ १०	१८ २७	२० ४९	२३ ०९	१ १४	२ ५५	४ २०	५ ४२
18	६	७ १५	९ १०	११ २४	१३ ४७	१६ ०६	१८ २४	२० ४५	२३ ०५	१ १०	२ ५१	४ १६	५ ३८
19	७	७ ११	९ ०६	११ २०	१३ ४३	१६ ०२	१८ २०	२० ४१	२३ ०१	१ ०६	२ ४७	४ १२	५ ३४
20	८	७ ०७	९ ०२	११ १६	१३ ३९	१५ ५८	१८ १६	२० ३७	२२ ५७	१ ०२	२ ४३	४ ०८	५ ३०
21	९	७ ०३	८ ५८	११ १२	१३ ३५	१५ ५४	१८ १२	२० ३३	२२ ५४	० ५८	२ ३९	४ ०४	५ २६
22	१०	६ ५९	८ ५४	११ ०९	१३ ३१	१५ ५०	१८ ०८	२० २९	२२ ५०	० ५४	२ ३५	४ ००	५ २२
23	११	६ ५५	८ ५०	११ ०५	१३ २७	१५ ४६	१८ ०४	२० २६	२२ ४६	० ५०	२ ३१	३ ५६	५ १८
24	१२	६ ५१	८ ४६	११ ०१	१३ २३	१५ ४३	१८ ००	२० २२	२२ ४२	० ४६	२ २७	३ ५२	५ १५
25	१३	६ ४७	८ ४२	१० ५७	१३ १९	१५ ३९	१७ ५६	२० १८	२२ ३८	० ४२	२ २३	३ ४८	५ ११
26	१४	६ ४३	८ ३८	१० ५३	१३ १५	१५ ३५	१७ ५२	२० १४	२२ ३४	० ३८	२ २०	३ ४४	५ ०७
27	१५	६ ४०	८ ३४	१० ४९	१३ ११	१५ ३१	१७ ४८	२० १०	२२ ३०	० ३४	२ १६	३ ४०	५ ०३
28	१६	६ ३६	८ ३०	१० ४५	१३ ०८	१५ २८	१७ ४४	२० ०६	२२ २६	० ३०	२ १२	३ ३६	४ ५९
29	१७	६ ३२	८ २६	१० ४१	१३ ०४	१५ २४	१७ ४०	२० ०२	२२ २२	० २६	२ ०८	३ ३२	४ ५५
30	१८	६ २८	८ २२	१० ३७	१३ ००	१५ २०	१७ ३७	१९ ५८	२२ १८	० २२	२ ०४	३ २८	४ ५१
मई	१९	६ २४	८ १८	१० ३३	१२ ५६	१५ १६	१७ ३३	१९ ५४	२२ १४	० १८	२ ००	३ २५	४ ४७
2	२०	६ २०	८ १४	१० २९	१२ ५२	१५ १२	१७ २९	१९ ५०	२२ १०	० १४	१ ५६	३ २१	४ ४४
3	२१	६ १६	८ १०	१० २५	१२ ४८	१५ ०८	१७ २५	१९ ४६	२२ ०६	० ११	१ ५२	३ १७	४ ४०
4	२२	६ १२	८ ०६	१० २२	१२ ४४	१५ ०४	१७ २१	१९ ४२	२२ ०२	० ०७	१ ४८	३ १३	४ ३६
5	२३	६ ०८	८ ०२	१० १७	१२ ४०	१५ ००	१७ १७	१९ ३८	२१ ५८	० ०३	१ ४४	३ ०९	४ ३२
6	२४	६ ०४	७ ५८	१० १३	१२ ३६	१४ ५६	१७ १३	१९ ३४	२१ ५४	२३ ५९	१ ४०	३ ०५	४ २८
7	२५	६ ००	७ ५४	१० ०९	१२ ३२	१४ ५२	१७ ०९	१९ ३०	२१ ५०	२३ ५५	१ ३६	३ ०१	४ २४
8	२६	५ ५६	७ ५०	१० ०५	१२ २८	१४ ४८	१७ ०५	१९ २६	२१ ४६	२३ ५१	१ ३२	२ ५७	४ २०
9	२७	५ ५२	७ ४६	१० ०१	१२ २४	१४ ४४	१७ ०१	१९ २२	२१ ४२	२३ ४७	१ २८	२ ५३	४ १६
10	२८	५ ४८	७ ४२	९ ५७	१२ २०	१४ ४०	१६ ५७	१९ १८	२१ ३८	२३ ४३	१ २४	२ ४९	४ १२
11	२९	५ ४४	७ ३९	९ ५३	१२ १६	१४ ३६	१६ ५३	१९ १४	२१ ३४	२३ ३९	१ २०	२ ४५	४ ०८
12	३०	५ ४०	७ ३५	९ ४९	१२ १२	१४ ३२	१६ ४९	१९ १०	२१ ३०	२३ ३५	१ १६	२ ४१	४ ०४
13	३१	५ ३६	७ ३१	९ ४५	१२ ०९	१४ २८	१६ ४५	१९ ०६	२१ २६	२३ ३१	१ १२	२ ३७	४ ००
14	ज्ये.	५ ३३	- -	- -	- -	- -	- -	- -	- -	- -	- -	- -	- -

ज्येष्ठ (मई-जून)

मई	ज्येष्ठ प्रवि.	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष
		घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
14	१	७ २७	९ ४२	१२ ०५	१४ २४	१६ ४२	१९ ०३	२१ २३	२३ २७	१ ०५	२ ३३	३ ५६	५ २९
15	२	७ २३	९ ३८	१२ ०१	१४ २०	१६ ३८	१८ ५९	२१ १९	२३ २३	१ ०४	२ २९	३ ५२	५ २५
16	३	७ १९	९ ३४	११ ५७	१४ १६	१६ ३४	१८ ५५	२१ १५	२३ १९	१ ००	२ २५	३ ४८	५ २१
17	४	७ १६	९ ३०	११ ५३	१४ १२	१६ ३०	१८ ५१	२१ ११	२३ १५	० ५६	२ २१	३ ४४	५ १७
18	५	७ १२	९ २६	११ ४९	१४ ०८	१६ २६	१८ ४७	२१ ०७	२३ ११	० ५२	२ १७	३ ४०	५ १३
19	६	७ ०८	९ २२	११ ४५	१४ ०४	१६ २२	१८ ४३	२१ ०३	२३ ०८	० ४९	२ १३	३ ३६	५ ०९
20	७	७ ०४	९ १८	११ ४१	१४ ००	१६ १८	१८ ३९	२० ५९	२३ ०४	० ४५	२ १०	३ ३२	५ ०५
21	८	७ ००	९ १४	११ ३७	१३ ५६	१६ १४	१८ ३५	२० ५५	२३ ००	० ४१	२ ०६	३ २८	५ ०१
22	९	६ ५६	९ १०	११ ३३	१३ ५२	१६ १०	१८ ३१	२० ५१	२२ ५६	० ३७	२ ०२	३ २४	४ ५७
23	१०	६ ५३	९ ०७	११ ३०	१३ ४९	१६ ०७	१८ २८	२० ४८	२२ ५३	० ३४	१ ५८	३ २१	४ ५४
24	११	६ ४९	९ ०३	११ २६	१३ ४५	१६ ०३	१८ २४	२० ४४	२२ ४९	० ३०	१ ५५	३ १७	४ ५०
25	१२	६ ४५	८ ५९	११ २२	१३ ४१	१५ ५९	१८ २०	२० ४०	२२ ४५	० २६	१ ५१	३ १३	४ ४६
26	१३	६ ४१	८ ५५	११ १८	१३ ३७	१५ ५५	१८ १६	२० ३६	२२ ४१	० २२	१ ४७	३ ०९	४ ४२
27	१४	६ ३७	८ ५१	११ १४	१३ ३३	१५ ५१	१८ १२	२० ३२	२२ ३७	० १८	१ ४३	३ ०५	४ ३८
28	१५	६ ३३	८ ४७	११ १०	१३ २९	१५ ४७	१८ ०८	२० २८	२२ ३३	० १४	१ ३९	३ ०१	४ ३४
29	१६	६ २९	८ ४३	११ ०६	१३ २५	१५ ४३	१८ ०४	२० २४	२२ २९	० १०	१ ३५	२ ५७	४ ३०
30	१७	६ २५	८ ३९	११ ०२	१३ २१	१५ ३९	१८ ००	२० २०	२२ २५	० ०६	१ ३१	२ ५३	४ २६
31	१८	६ २१	८ ३५	१० ५८	१३ १७	१५ ३५	१७ ५६	२० १६	२२ २१	० ०२	१ २७	२ ४९	४ २२
जून	१९	६ १७	८ ३१	१० ५४	१३ १३	१५ ३१	१७ ५२	२० १२	२२ १७	२३ ५८	१ २३	२ ४५	४ १८
2	२०	६ १३	८ २७	१० ५०	१३ ०९	१५ २७	१७ ४८	२० ०८	२२ १३	२३ ५४	१ १९	२ ४१	४ १४
3	२१	६ ०९	८ २३	१० ४६	१३ ०५	१५ २३	१७ ४४	२० ०४	२२ ०९	२३ ५०	१ १५	२ ३६	४ १०
4	२२	६ ०५	८ १९	१० ४२	१३ ०१	१५ १९	१७ ४०	२० ००	२२ ०५	२३ ४६	१ ११	२ ३३	४ ०६
5	२३	६ ०१	८ १५	१० ३८	१२ ५७	१५ १५	१७ ३६	१९ ५६	२२ ०१	२३ ४२	१ ०७	२ २९	४ ०२
6	२४	५ ५७	८ १२	१० ३४	१२ ५४	१५ १२	१७ ३३	१९ ५३	२१ ५८	२३ ३९	१ ०३	२ २६	३ ५८
7	२५	५ ५३	८ ०८	१० ३१	१२ ५०	१५ ०८	१७ २९	१९ ४९	२१ ५४	२३ ३५	० ५९	२ २२	३ ५५
8	२६	५ ४९	८ ०४	१० २७	१२ ४६	१५ ०४	१७ २५	१९ ४५	२१ ५०	२३ ३१	० ५५	२ १८	३ ५१
9	२७	५ ४५	८ ००	१० २३	१२ ४२	१५ ००	१७ २१	१९ ४१	२१ ४६	२३ २७	० ५१	२ १४	३ ४७
10	२८	५ ४१	७ ५६	१० १९	१२ ३८	१४ ५६	१७ १७	१९ ३७	२१ ४२	२३ २३	० ४७	२ १०	३ ४३
11	२९	५ ३७	७ ५२	१० १५	१२ ३४	१४ ५२	१७ १३	१९ ३३	२१ ३८	२३ १९	० ४३	२ ०६	३ ३९
12	३०	५ ३३	७ ४८	१० ११	१२ ३०	१४ ४८	१७ ०९	१९ २९	२१ ३४	२३ १५	० ३९	२ ०२	३ ३५
13	३१	५ २९	७ ४४	१० ०७	१२ २६	१४ ४४	१७ ०५	१९ २५	२१ ३०	२३ ११	० ३५	१ ५८	३ ३१
14	आ	५ २५	- -	- -	- -	- -	- -	- -	- -	- -	- -	- -	- -

दैनिक लग्नसारणी-शिमला (हि.प्र.) में लग्न समाप्तिकाल (भा. स्टैं. टा.)

आषाढ़ (जून-जुलाई)

जून	आषाढ़	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष
		घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
14	१	७ ३०	१० ०३	१२ २२	१४ ४०	१७ ०१	१९ २१	२१ २६	२३ ०७	० ३२	१ ५४	३ २७	५ २२
15	२	७ ३६	९ ५९	१२ १८	१४ ३६	१६ ५७	१९ १७	२१ २२	२३ ०३	० २८	१ ५०	३ २३	५ १८
16	३	७ ३२	९ ५५	१२ १४	१४ ३२	१६ ५३	१९ १३	२१ १८	२२ ५९	० २४	१ ४६	३ १९	५ १४
17	४	७ २८	९ ५१	१२ १०	१४ २८	१६ ४९	१९ ०९	२१ १४	२२ ५५	० २०	१ ४२	३ १५	५ १०
18	५	७ २४	९ ४७	१२ ०६	१४ २४	१६ ४५	१९ ०५	२१ १०	२२ ५१	० १६	१ ३८	३ ११	५ ०६
19	६	७ २०	९ ४३	१२ ०२	१४ २०	१६ ४१	१९ ०१	२१ ०६	२२ ४७	० १२	१ ३४	३ ०७	५ ०२
20	७	७ १६	९ ३९	११ ५८	१४ १६	१६ ३७	१८ ५७	२१ ०२	२२ ४३	० ०८	१ ३०	३ ०३	४ ५८
21	८	७ १२	९ ३५	११ ५४	१४ १२	१६ ३३	१८ ५३	२० ५८	२२ ३९	० ०४	१ २६	२ ५९	४ ५४
22	९	७ ०९	९ ३१	११ ५०	१४ ०८	१६ २९	१८ ४९	२० ५४	२२ ३५	० ००	१ २२	२ ५५	४ ५०
23	१०	७ ०५	९ २७	११ ४६	१४ ०४	१६ २५	१८ ४५	२० ५०	२२ ३१	२३ ५६	१ १८	२ ५१	४ ४६
24	११	७ ०१	९ २३	११ ४२	१४ ००	१६ २१	१८ ४१	२० ४६	२२ २७	२३ ५२	१ १४	२ ४७	४ ४२
25	१२	६ ५७	९ १९	११ ३८	१३ ५६	१६ १७	१८ ३७	२० ४२	२२ २३	२३ ४८	१ १०	२ ४३	४ ३८
26	१३	६ ५३	९ १५	११ ३४	१३ ५२	१६ १३	१८ ३३	२० ३८	२२ १९	२३ ४४	१ ०६	२ ३९	४ ३४
27	१४	६ ४९	९ १२	११ ३१	१३ ४९	१६ १०	१८ ३०	२० ३५	२२ १६	२३ ४१	१ ०३	२ ३६	४ ३१
28	१५	६ ४५	९ ०८	११ २८	१३ ४५	१६ ०६	१८ २६	२० ३१	२२ १२	२३ ३७	० ५९	२ ३२	४ २७
29	१६	६ ४१	९ ०४	११ २३	१३ ४१	१६ ०२	१८ २२	२० २७	२२ ०८	२३ ३३	० ५५	२ २८	४ २३
30	१७	६ ३७	९ ००	११ १९	१३ ३७	१५ ५८	१८ १८	२० २३	२२ ०४	२३ २९	० ५१	२ २४	४ १९
जुला	१८	६ ३३	८ ५६	११ १५	१३ ३३	१५ ५४	१८ १४	२० १९	२२ ००	२३ २५	० ४७	२ २०	४ १५
2	१९	६ २९	८ ५२	११ ११	१३ २९	१५ ५०	१८ १०	२० १५	२१ ५६	२३ २१	० ४३	२ १६	४ ११
3	२०	६ २५	८ ४८	११ ०७	१३ २५	१५ ४६	१८ ०६	२० ११	२१ ५२	२३ १७	० ३९	२ १२	४ ०७
4	२१	६ २१	८ ४४	११ ०३	१३ २१	१५ ४२	१८ ०२	२० ०७	२१ ४८	२३ १३	० ३५	२ ०८	४ ०३
5	२२	६ १७	८ ४०	१० ५९	१३ १७	१५ ३८	१७ ५८	२० ०३	२१ ४४	२३ ०९	० ३२	२ ०५	३ ५९
6	२३	६ १३	८ ३६	१० ५५	१३ १३	१५ ३४	१७ ५४	१९ ५९	२१ ४०	२३ ०५	० २८	२ ०१	३ ५५
7	२४	६ १०	८ ३३	१० ५२	१३ १०	१५ ३१	१७ ५१	१९ ५६	२१ ३७	२३ ०२	० २५	१ ५८	३ ५२
8	२५	६ ०६	८ २९	१० ४८	१३ ०६	१५ २७	१७ ४७	१९ ५२	२१ ३३	२२ ५८	० २१	१ ५४	३ ४८
9	२६	६ ०२	८ २५	१० ४४	१३ ०२	१५ २३	१७ ४३	१९ ४८	२१ २९	२२ ५४	० १७	१ ५०	३ ४४
10	२७	५ ५८	८ २१	१० ४०	१२ ५८	१५ १९	१७ ३९	१९ ४४	२१ २५	२२ ५०	० १३	१ ४६	३ ४०
11	२८	५ ५४	८ १७	१० ३६	१२ ५४	१५ १५	१७ ३५	१९ ४०	२१ २१	२२ ४६	० ०९	१ ४२	३ ३६
12	२९	५ ५०	८ १३	१० ३२	१२ ५०	१५ ११	१७ ३१	१९ ३६	२१ १७	२२ ४२	० ०५	१ ३८	३ ३२
13	३०	५ ४६	८ ०९	१० २८	१२ ४६	१५ ०७	१७ २७	१९ ३२	२१ १३	२२ ३८	० ०१	१ ३४	३ २८
14	३१	५ ४२	८ ०५	१० २४	१२ ४२	१५ ०३	१७ २३	१९ २८	२१ ०९	२२ ३४	२३ ५७	१ ३०	३ २४
15	३२	५ ३८	८ ०२	१० २०	१२ ३८	१४ ५९	१७ १९	१९ २४	२१ ०५	२२ ३०	२३ ५३	१ २६	३ २०
16	श्रा.	५ ३४	– –	– –	– –	– –	– –	– –	– –	– –	– –	– –	– –

श्रावण (जुलाई-अगस्त)

जुलाई	श्रावण	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन
		घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
16	१	७ ५७	१० १६	१२ ३४	१४ ५५	१७ १५	१९ २०	२१ ०१	२२ २६	२३ ४९	१ २२	३ १६	५ ३०
17	२	७ ५३	१० १२	१२ ३०	१४ ५१	१७ ११	१९ १६	२० ५७	२२ २२	२३ ४५	१ १८	३ १२	५ २६
18	३	७ ४९	१० ०८	१२ २६	१४ ४७	१७ ०७	१९ १२	२० ५३	२२ १८	२३ ४१	१ १४	३ ०८	५ २२
19	४	७ ४६	१० ०५	१२ २३	१४ ४४	१७ ०४	१९ ०९	२० ४९	२२ १५	२३ ३८	१ ११	३ ०४	५ १८
20	५	७ ४२	१० ०१	१२ १९	१४ ४०	१७ ००	१९ ०५	२० ४५	२२ ११	२३ ३४	१ ०७	३ ००	५ १४
21	६	७ ३८	९ ५७	१२ १५	१४ ३६	१६ ५६	१९ ०१	२० ४१	२२ ०७	२३ ३०	१ ०३	२ ५६	५ १०
22	७	७ ३४	९ ५३	१२ ११	१४ ३२	१६ ५२	१८ ५७	२० ३७	२२ ०३	२३ २६	० ५९	२ ५२	५ ०६
23	८	७ ३०	९ ४९	१२ ०७	१४ २८	१६ ४८	१८ ५३	२० ३३	२१ ५९	२३ २२	० ५५	२ ४८	५ ०२
24	९	७ २६	९ ४५	१२ ०३	१४ २४	१६ ४४	१८ ४९	२० २९	२१ ५५	२३ १८	० ५१	२ ४४	४ ५८
25	१०	७ २२	९ ४१	११ ५९	१४ २०	१६ ४०	१८ ४५	२० २५	२१ ५१	२३ १४	० ४७	२ ४०	४ ५४
26	११	७ १८	९ ३७	११ ५५	१४ १७	१६ ३७	१८ ४१	२० २२	२१ ४७	२३ १०	० ४३	२ ३६	४ ५०
27	१२	७ १४	९ ३३	११ ५१	१४ १३	१६ ३३	१८ ३७	२० १८	२१ ४३	२३ ०६	० ३९	२ ३२	४ ४६
28	१३	७ १०	९ २९	११ ४८	१४ ०९	१६ २९	१८ ३३	२० १४	२१ ३९	२३ ०२	० ३५	२ २८	४ ४३
29	१४	७ ०६	९ २५	११ ४४	१४ ०५	१६ २५	१८ २९	२० १०	२१ ३५	२२ ५८	० ३१	२ २४	४ ३९
30	१५	७ ०२	९ २१	११ ४०	१४ ०१	१६ २१	१८ २५	२० ०६	२१ ३१	२२ ५४	० २७	२ २१	४ ३५
31	१६	६ ५८	९ १७	११ ३६	१३ ५७	१६ १८	१८ २१	२० ०२	२१ २७	२२ ५०	० २३	२ १७	४ ३१
अग	१७	६ ५४	९ १३	११ ३२	१३ ५३	१६ १४	१८ १७	१९ ५८	२१ २३	२२ ४६	० १९	२ १३	४ २७
2	१८	६ ५०	९ ०९	११ २८	१३ ४९	१६ १०	१८ १३	१९ ५४	२१ १९	२२ ४२	० १५	२ ०९	४ २३
3	१९	६ ४६	९ ०५	११ २४	१३ ४५	१६ ०६	१८ ०९	१९ ५०	२१ १५	२२ ३८	० ११	२ ०५	४ १९
4	२०	६ ४२	९ ०२	११ २०	१३ ४१	१६ ०२	१८ ०५	१९ ४६	२१ ११	२२ ३५	० ०७	२ ०१	४ १५
5	२१	६ ३८	८ ५८	११ १७	१३ ३८	१५ ५८	१८ ०२	१९ ४३	२१ ०७	२२ ३२	० ०४	१ ५८	४ ११
6	२२	६ ३४	८ ५४	११ १३	१३ ३४	१५ ५४	१७ ५८	१९ ३९	२१ ०४	२२ २८	० ००	१ ५४	४ ०८
7	२३	६ ३१	८ ५०	११ ०९	१३ ३०	१५ ५०	१७ ५४	१९ ३५	२१ ००	२२ २४	२३ ५६	१ ५०	४ ०४
8	२४	६ २७	८ ४६	११ ०५	१३ २६	१५ ४७	१७ ५०	१९ ३२	२० ५६	२२ २०	२३ ५२	१ ४६	४ ००
9	२५	६ २३	८ ४२	११ ०१	१३ २२	१५ ४३	१७ ४६	१९ २८	२० ५२	२२ १६	२३ ४८	१ ४२	३ ५६
10	२६	६ १९	८ ३८	१० ५७	१३ १८	१५ ३९	१७ ४२	१९ २४	२० ४८	२२ १२	२३ ४४	१ ३८	३ ५२
11	२७	६ १५	८ ३४	१० ५३	१३ १४	१५ ३५	१७ ३८	१९ २०	२० ४४	२२ ०८	२३ ४०	१ ३४	३ ४८
12	२८	६ ११	८ ३०	१० ४९	१३ १०	१५ ३१	१७ ३४	१९ १६	२० ४१	२२ ०४	२३ ३६	१ ३१	३ ४४
13	२९	६ ०७	८ २६	१० ४५	१३ ०६	१५ २७	१७ ३०	१९ १२	२० ३७	२२ ००	२३ ३२	१ २७	३ ४१
14	३०	६ ०३	८ २२	१० ४१	१३ ०२	१५ २३	१७ २६	१९ ०८	२० ३३	२१ ५६	२३ २८	१ २३	३ ३७
15	३१	५ ५९	८ १८	१० ३७	१२ ५८	१५ १९	१७ २२	१९ ०४	२० २९	२१ ५२	२३ २४	१ १९	३ ३३
16	भा.	५ ५५	– –	– –	– –	– –	– –	– –	– –	– –	– –	– –	– –

दैनिक लग्नसारणी-शिमला (हि.प्र.) में लग्न समाप्तिकाल (भा. स्टैं. टा.)

भाद्रपद (अगस्त-सितम्बर)

अगस्त	भाद्रपद	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क
		घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
16	१	८ १४	१० ३३	१२ ५४	१५ १५	१७ १८	१९ ००	२० २५	२१ ४८	२३ २०	१ १५	३ २९	५ ५१
17	२	८ १०	१० २९	१२ ५०	१५ ११	१७ १४	१८ ५६	२० २१	२१ ४४	२३ १६	१ ११	३ २५	५ ४७
18	३	८ ०६	१० २६	१२ ४६	१५ ०७	१७ १०	१८ ५२	२० १७	२१ ४०	२३ १२	१ ०७	३ २१	५ ४३
19	४	८ ०२	१० २२	१२ ४२	१५ ०३	१७ ०६	१८ ४८	२० १३	२१ ३६	२३ ०८	१ ०३	३ १७	५ ३९
20	५	७ ५९	१० १८	१२ ३९	१४ ५९	१७ ०२	१८ ४४	२० ०९	२१ ३२	२३ ०४	० ५९	३ १३	५ ३५
21	६	७ ५५	१० १४	१२ ३५	१४ ५५	१६ ५९	१८ ४०	२० ०५	२१ २८	२३ ०१	० ५५	३ ०९	५ ३१
22	७	७ ५१	१० १०	१२ ३१	१४ ५१	१६ ५५	१८ ३७	२० ०१	२१ २४	२२ ५७	० ५१	३ ०५	५ २७
23	८	७ ४७	१० ०६	१२ २७	१४ ४७	१६ ५१	१८ ३३	१९ ५७	२१ २०	२२ ५३	० ४७	३ ०१	५ २३
24	९	७ ४३	१० ०२	१२ २३	१४ ४३	१६ ४७	१८ २९	१९ ५४	२१ १६	२२ ४९	० ४४	२ ५७	५ १९
25	१०	७ ३९	९ ५८	१२ १९	१४ ३९	१६ ४३	१८ २५	१९ ५०	२१ १३	२२ ४५	० ४०	२ ५४	५ १६
26	११	७ ३५	९ ५४	१२ १६	१४ ३६	१६ ३९	१८ २१	१९ ४६	२१ ०९	२२ ४१	० ३६	२ ५०	५ १२
27	१२	७ ३१	९ ५०	१२ १२	१४ ३२	१६ ३६	१८ १७	१९ ४२	२१ ०५	२२ ३७	० ३२	२ ४६	५ ०८
28	१३	७ २७	९ ४६	१२ ०८	१४ २८	१६ ३२	१८ १३	१९ ३८	२१ ०१	२२ ३३	० २८	२ ४२	५ ०४
29	१४	७ २३	९ ४२	१२ ०४	१४ २४	१६ २८	१८ ०९	१९ ३४	२० ५७	२२ २९	० २४	२ ३८	५ ००
30	१५	७ १९	९ ३८	१२ ००	१४ २०	१६ २४	१८ ०५	१९ ३०	२० ५३	२२ २५	० २०	२ ३४	४ ५६
31	१६	७ १५	९ ३४	११ ५६	१४ १६	१६ २०	१८ ०१	१९ २६	२० ४९	२२ २१	० १६	२ ३०	४ ५२
सितं	१७	७ ११	९ ३०	११ ५२	१४ १२	१६ १६	१७ ५७	१९ २२	२० ४५	२२ १७	० १२	२ २६	४ ४८
2	१८	७ ०७	९ २७	११ ४८	१४ ०८	१६ १२	१७ ५३	१९ १८	२० ४१	२२ १३	० ०८	२ २२	४ ४४
3	१९	७ ०३	९ २३	११ ४४	१४ ०४	१६ ०८	१७ ४९	१९ १४	२० ३७	२२ १०	० ०४	२ १८	४ ४०
4	२०	६ ५९	९ १९	११ ४०	१४ ००	१६ ०४	१७ ४५	१९ १०	२० ३३	२२ ०६	० ००	२ १४	४ ३६
5	२१	६ ५५	९ १५	११ ३६	१३ ५६	१६ ००	१७ ४१	१९ ०६	२० २९	२२ ०२	२३ ५६	२ १०	४ ३२
6	२२	६ ५२	९ ११	११ ३२	१३ ५२	१५ ५६	१७ ३७	१९ ०२	२० २५	२१ ५८	२३ ५२	२ ०६	४ २८
7	२३	६ ४८	९ ०७	११ २८	१३ ४८	१५ ५२	१७ ३३	१८ ५८	२० २१	२१ ५४	२३ ४८	२ ०२	४ २४
8	२४	६ ४४	९ ०३	११ २४	१३ ४४	१५ ४८	१७ २९	१८ ५४	२० १७	२१ ५०	२३ ४४	१ ५८	४ २०
9	२५	६ ४०	८ ५९	११ २०	१३ ४०	१५ ४४	१७ २५	१८ ५०	२० १३	२१ ४६	२३ ४०	१ ५४	४ १६
10	२६	६ ३६	८ ५५	११ १६	१३ ३६	१५ ४०	१७ २१	१८ ४६	२० ०९	२१ ४२	२३ ३६	१ ५०	४ १२
11	२७	६ ३२	८ ५१	११ १२	१३ ३२	१५ ३६	१७ १७	१८ ४२	२० ०५	२१ ३८	२३ ३२	१ ४६	४ ०८
12	२८	६ २८	८ ४७	११ ०८	१३ २८	१५ ३२	१७ १३	१८ ३८	२० ०१	२१ ३४	२३ २८	१ ४२	४ ०४
13	२९	६ २४	८ ४३	११ ०४	१३ २४	१५ २८	१७ ०९	१८ ३४	१९ ५७	२१ ३०	२३ २४	१ ३८	४ ००
14	३०	६ २०	८ ३९	११ ००	१३ २०	१५ २४	१७ ०५	१८ ३०	१९ ५३	२१ २६	२३ २०	१ ३४	३ ५६
15	३१	६ १६	८ ३५	१० ५६	१३ १६	१५ २०	१७ ०१	१८ २६	१९ ४९	२१ २२	२३ १६	१ ३०	३ ५२
16	आ	६ १२	- -	- -	- -	- -	- -	- -	- -	- -	- -	- -	- -

आश्विन (सितम्बर-अक्तूबर)

सितंबर	आश्विन प्र.	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह
		घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
16	१	८ ३१	१० ५२	१३ १२	१५ १६	१६ ५७	१८ २२	१९ ४५	२१ १८	२३ १२	१ २६	३ ४९	६ ०९
17	२	८ २७	१० ४८	१३ ०८	१५ १२	१६ ५३	१८ १८	१९ ४१	२१ १४	२३ ०८	१ २२	३ ४५	६ ०५
18	३	८ २३	१० ४४	१३ ०४	१५ ०८	१६ ४९	१८ १४	१९ ३७	२१ १०	२३ ०४	१ १८	३ ४१	६ ०१
19	४	८ १९	१० ४०	१३ ००	१५ ०४	१६ ४५	१८ १०	१९ ३३	२१ ०६	२३ ००	१ १४	३ ३७	५ ५७
20	५	८ १५	१० ३६	१२ ५६	१५ ००	१६ ४१	१८ ०६	१९ २९	२१ ०२	२२ ५६	१ १०	३ ३३	५ ५३
21	६	८ ११	१० ३२	१२ ५२	१४ ५६	१६ ३७	१८ ०२	१९ २५	२० ५८	२२ ५२	१ ०६	३ २९	५ ४९
22	७	८ ०७	१० २८	१२ ४८	१४ ५२	१६ ३३	१७ ५८	१९ २१	२० ५४	२२ ४८	१ ०२	३ २५	५ ४५
23	८	८ ०३	१० २४	१२ ४४	१४ ४८	१६ २९	१७ ५४	१९ १७	२० ५०	२२ ४४	० ५८	३ २१	५ ४१
24	९	७ ५९	१० २०	१२ ४०	१४ ४४	१६ २५	१७ ५०	१९ १३	२० ४६	२२ ४०	० ५४	३ १७	५ ३७
25	१०	७ ५५	१० १६	१२ ३६	१४ ४०	१६ २१	१७ ४६	१९ ०९	२० ४२	२२ ३६	० ५१	३ १३	५ ३३
26	११	७ ५१	१० १३	१२ ३३	१४ ३७	१६ १८	१७ ४३	१९ ०६	२० ३८	२२ ३२	० ४७	३ ०९	५ २९
27	१२	७ ४७	१० ०९	१२ २९	१४ ३३	१६ १४	१७ ३९	१९ ०२	२० ३४	२२ २९	० ४३	३ ०५	५ २५
28	१३	७ ४३	१० ०५	१२ २५	१४ २९	१६ १०	१७ ३५	१८ ५८	२० ३०	२२ २५	० ३९	३ ०१	५ २१
29	१४	७ ३९	१० ०१	१२ २१	१४ २५	१६ ०६	१७ ३१	१८ ५४	२० २६	२२ २१	० ३५	२ ५७	५ १७
30	१५	७ ३५	९ ५७	१२ १७	१४ २१	१६ ०२	१७ २७	१८ ५०	२० २२	२२ १७	० ३१	२ ५३	५ १३
अक्तू	१६	७ ३१	९ ५३	१२ १३	१४ १७	१५ ५८	१७ २३	१८ ४६	२० १८	२२ १३	० २७	२ ४९	५ ०९
2	१७	७ २७	९ ४९	१२ ०९	१४ १३	१५ ५४	१७ १९	१८ ४२	२० १५	२२ ०९	० २३	२ ४५	५ ०५
3	१८	७ २३	९ ४५	१२ ०५	१४ ०९	१५ ५०	१७ १५	१८ ३८	२० ११	२२ ०५	० १९	२ ४२	५ ०१
4	१९	७ १९	९ ४१	१२ ०१	१४ ०५	१५ ४६	१७ ११	१८ ३४	२० ०७	२२ ०१	० १५	२ ३८	४ ५७
5	२०	७ १५	९ ३७	११ ५७	१४ ०१	१५ ४२	१७ ०७	१८ ३०	२० ०३	२१ ५७	० ११	२ ३४	४ ५४
6	२१	७ ११	९ ३३	११ ५३	१३ ५७	१५ ३८	१७ ०३	१८ २६	१९ ५९	२१ ५३	० ०७	२ ३०	४ ५०
7	२२	७ ०७	९ २९	११ ४९	१३ ५३	१५ ३४	१६ ५९	१८ २२	१९ ५५	२१ ४९	० ०३	२ २७	४ ४६
8	२३	७ ०३	९ २५	११ ४५	१३ ४९	१५ ३०	१६ ५५	१८ १८	१९ ५१	२१ ४५	२३ ५९	२ २३	४ ४२
9	२४	६ ५९	९ २१	११ ४१	१३ ४५	१५ २६	१६ ५१	१८ १४	१९ ४७	२१ ४१	२३ ५५	२ १९	४ ३८
10	२५	६ ५६	९ १८	११ ३८	१३ ४२	१५ २३	१६ ४८	१८ ११	१९ ४३	२१ ३७	२३ ५२	२ १५	४ ३५
11	२६	६ ५२	९ १४	११ ३४	१३ ३८	१५ १९	१६ ४४	१८ ०७	१९ ३९	२१ ३४	२३ ४८	२ ११	४ ३१
12	२७	६ ४८	९ १०	११ ३०	१३ ३४	१५ १५	१६ ४०	१८ ०३	१९ ३५	२१ ३०	२३ ४४	२ ०७	४ २७
13	२८	६ ४४	९ ०६	११ २६	१३ ३०	१५ ११	१६ ३६	१७ ५९	१९ ३१	२१ २६	२३ ४०	२ ०३	४ २३
14	२९	६ ४०	९ ०२	११ २२	१३ २६	१५ ०७	१६ ३२	१७ ५५	१९ २७	२१ २२	२३ ३६	१ ५९	४ १९
15	३०	६ ३६	८ ५८	११ १८	१३ २२	१५ ०३	१६ २८	१७ ५१	१९ २३	२१ १८	२३ ३२	१ ५५	४ १५
16	३१	६ ३२	८ ५४	११ १४	१३ १८	१४ ५९	१६ २४	१७ ४७	१९ १९	२१ १४	२३ २८	१ ५१	४ ११
17	का.	६ २८	- -	- -	- -	- -	- -	- -	- -	- -	- -	- -	- -

दैनिक लग्नसारणी-शिमला (हि.प्र.) में लग्न समाप्तिकाल (भा. स्टैं. टा.)

अक्तू.	कार्तिक	कार्तिक (अक्तूबर-नवम्बर)											
		तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या
		घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
17	१	८ ५०	११ १०	१३ १४	१४ ५५	१६ २०	१७ ४३	१९ १५	२१ १०	२३ २४	१ ४७	४ ०६	६ २४
18	२	८ ४६	११ ०६	१३ १०	१४ ५१	१६ १६	१७ ३९	१९ ११	२१ ०६	२३ २०	१ ४३	४ ०३	६ २०
19	३	८ ४२	११ ०२	१३ ०६	१४ ४७	१६ १२	१७ ३५	१९ ०७	२१ ०२	२३ १६	१ ३९	३ ५८	६ १६
20	४	८ ३८	१० ५८	१३ ०२	१४ ४३	१६ ०८	१७ ३१	१९ ०३	२० ५८	२३ १२	१ ३५	३ ५४	६ १२
21	५	८ ३४	१० ५४	१२ ५८	१४ ३९	१६ ०४	१७ २७	१८ ५९	२० ५४	२३ ०८	१ ३१	३ ५०	६ ०८
22	६	८ ३०	१० ५०	१२ ५४	१४ ३५	१६ ००	१७ २३	१८ ५५	२० ५०	२३ ०४	१ २७	३ ४६	६ ०४
23	७	८ २६	१० ४६	१२ ५०	१४ ३१	१५ ५६	१७ १९	१८ ५१	२० ४६	२३ ०१	१ २३	३ ४३	६ ००
24	८	८ २२	१० ४२	१२ ४६	१४ २७	१५ ५२	१७ १५	१८ ४७	२० ४२	२२ ५७	१ १९	३ ३९	५ ५७
25	९	८ १९	१० ३९	१२ ४३	१४ २३	१५ ४८	१७ १२	१८ ४४	२० ३८	२२ ५३	१ १६	३ ३५	५ ५३
26	१०	८ १५	१० ३५	१२ ३९	१४ २०	१५ ४५	१७ ०८	१८ ४०	२० ३५	२२ ४९	१ १२	३ ३२	५ ४९
27	११	८ ११	१० ३१	१२ ३५	१४ १६	१५ ४१	१७ ०४	१८ ३६	२० ३१	२२ ४५	१ ०८	३ २८	५ ४५
28	१२	८ ०७	१० २७	१२ ३१	१४ १२	१५ ३७	१७ ००	१८ ३२	२० २७	२२ ४१	१ ०४	३ २४	५ ४१
29	१३	८ ०३	१० २३	१२ २७	१४ ०८	१५ ३३	१६ ५६	१८ २८	२० २३	२२ ३७	१ ००	३ २०	५ ३७
30	१४	७ ५९	१० १९	१२ २३	१४ ०४	१५ २९	१६ ५२	१८ २४	२० १९	२२ ३३	० ५६	३ १६	५ ३४
31	१५	७ ५५	१० १५	१२ १९	१४ ००	१५ २५	१६ ४८	१८ २०	२० १५	२२ २९	० ५२	३ १२	५ ३०
नवं.	१६	७ ५१	१० ११	१२ १५	१३ ५६	१५ २१	१६ ४४	१८ १६	२० ११	२२ २५	० ४८	३ ०८	५ २६
2	१७	७ ४७	१० ०७	१२ ११	१३ ५२	१५ १७	१६ ४०	१८ १२	२० ०७	२२ २१	० ४४	३ ०४	५ २२
3	१८	७ ४३	१० ०३	१२ ०७	१३ ४८	१५ १३	१६ ३६	१८ ०९	२० ०३	२२ १७	० ४०	३ ००	५ १८
4	१९	७ ३९	९ ५९	१२ ०३	१३ ४४	१५ ०९	१६ ३२	१८ ०५	१९ ५९	२२ १३	० ३६	२ ५६	५ १४
5	२०	७ ३५	९ ५५	११ ५९	१३ ४०	१५ ०५	१६ २८	१८ ०१	१९ ५५	२२ ०९	० ३२	२ ५२	५ १०
6	२१	७ ३१	९ ५१	११ ५५	१३ ३६	१५ ०१	१६ २४	१७ ५७	१९ ५१	२२ ०५	० २८	२ ४८	५ ०६
7	२२	७ २८	९ ४७	११ ५१	१३ ३२	१४ ५७	१६ २०	१७ ५३	१९ ४७	२२ ०१	० २४	२ ४४	५ ०२
8	२३	७ २४	९ ४३	११ ४७	१३ २८	१४ ५३	१६ १६	१७ ४९	१९ ४३	२१ ५७	० २०	२ ४०	४ ५८
9	२४	७ २०	९ ३१	११ ४३	१३ २४	१४ ४९	१६ १२	१७ ४५	१९ ३९	२१ ५३	० १६	२ ३६	४ ५४
10	२५	७ १६	९ ३५	११ ३९	१३ २०	१४ ४५	१६ ०८	१७ ४१	१९ ३५	२१ ५०	० १२	२ ३२	४ ५०
11	२६	७ १२	९ ३१	११ ३५	१३ १७	१४ ४२	१६ ०५	१७ ३७	१९ ३२	२१ ४६	० ०८	२ २८	४ ४६
12	२७	७ ०८	९ २७	११ ३२	१३ १३	१४ ३८	१६ ०१	१७ ३३	१९ २८	२१ ४२	० ०५	२ २४	४ ४२
13	२८	७ ०४	९ २४	११ २८	१३ ०९	१४ ३४	१५ ५७	१७ २९	१९ २४	२१ ३८	० ०१	२ २०	४ ३८
14	२९	७ ००	९ २०	११ २४	१३ ०५	१४ ३०	१५ ५३	१७ २५	१९ २०	२१ ३४	२३ ५७	२ १६	४ ३४
15	मा	६ ५६	– –	– –	– –	– –	– –	– –	– –	– –	– –	– –	– –

नवम्बर	मार्गशीर्ष	मार्गशीर्ष (नवम्बर-दिसम्बर)											
		वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला
		घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
15	१	९ १६	११ २०	१३ ०१	१४ २६	१५ ४९	१७ २१	१९ १६	२१ ३०	२३ ५३	२ १२	४ ३०	६ ५२
16	२	९ १२	११ १६	१२ ५७	१४ २२	१५ ४५	१७ १७	१९ १२	२१ २६	२३ ४९	२ ०८	४ २६	६ ४८
17	३	९ ०८	११ १२	१२ ५३	१४ १८	१५ ४१	१७ १३	१९ ०८	२१ २२	२३ ४५	२ ०४	४ २२	६ ४४
18	४	९ ०४	११ ०८	१२ ४९	१४ १४	१५ ३७	१७ ०९	१९ ०४	२१ १८	२३ ४१	२ ००	४ १८	६ ४०
19	५	९ ००	११ ०४	१२ ४५	१४ १०	१५ ३३	१७ ०५	१९ ००	२१ १४	२३ ३७	१ ५६	४ १४	६ ३६
20	६	८ ५६	११ ००	१२ ४१	१४ ०६	१५ २९	१७ ०१	१८ ५६	२१ १०	२३ ३३	१ ५२	४ १०	६ ३२
21	७	८ ५२	१० ५६	१२ ३७	१४ ०२	१५ २५	१६ ५७	१८ ५२	२१ ०६	२३ २९	१ ४८	४ ०६	६ २८
22	८	८ ४८	१० ५२	१२ ३३	१३ ५८	१५ २१	१६ ५४	१८ ४९	२१ ०३	२३ २५	१ ४५	४ ०३	६ २५
23	९	८ ४४	१० ४८	१२ २९	१३ ५४	१५ १७	१६ ५०	१८ ४५	२० ५९	२३ २१	१ ४१	३ ५९	६ २१
24	१०	८ ४०	१० ४४	१२ २५	१३ ५०	१५ १३	१६ ४६	१८ ४१	२० ५५	२३ १७	१ ३७	३ ५५	६ १७
25	११	८ ३७	१० ४१	१२ २२	१३ ४७	१५ १०	१६ ४२	१८ ३७	२० ५१	२३ १३	१ ३३	३ ५१	६ १३
26	१२	८ ३३	१० ३७	१२ १८	१३ ४३	१५ ०६	१६ ३८	१८ ३३	२० ४७	२३ १०	१ २९	३ ४७	६ ०९
27	१३	८ २९	१० ३३	१२ १४	१३ ३९	१५ ०२	१६ ३४	१८ २९	२० ४३	२३ ०६	१ २५	३ ४३	६ ०५
28	१४	८ २५	१० २९	१२ १०	१३ ३५	१४ ५८	१६ ३०	१८ २५	२० ३९	२३ ०२	१ २१	३ ३९	६ ०१
29	१५	८ २१	१० २५	१२ ०६	१३ ३१	१४ ५४	१६ २७	१८ २१	२० ३५	२२ ५९	१ १८	३ ३६	५ ५७
30	१६	८ १७	१० २१	१२ ०२	१३ २७	१४ ५०	१६ २३	१८ १७	२० ३१	२२ ५५	१ १४	३ ३२	५ ५३
दिसं	१७	८ १३	१० १७	११ ५८	१३ २३	१४ ४६	१६ १९	१८ १३	२० २७	२२ ५१	१ १०	३ २८	५ ४९
2	१८	८ ०९	१० १३	११ ५४	१३ १९	१४ ४२	१६ १५	१८ ०९	२० २३	२२ ४७	१ ०६	३ २४	५ ४५
3	१९	८ ०५	१० ०९	११ ५०	१३ १५	१४ ३८	१६ ११	१८ ०५	२० १९	२२ ४३	१ ०२	३ २०	५ ४१
4	२०	८ ०१	१० ०५	११ ४६	१३ ११	१४ ३४	१६ ०७	१८ ०१	२० १५	२२ ३९	० ५८	३ १६	५ ३७
5	२१	७ ५७	१० ०१	११ ४२	१३ ०७	१४ ३०	१६ ०३	१७ ५७	२० ११	२२ ३५	० ५४	३ १२	५ ३३
6	२२	७ ५३	९ ५७	११ ३८	१३ ०३	१४ २६	१५ ५९	१७ ५३	२० ०७	२२ ३१	० ५०	३ ०८	५ २९
7	२३	७ ४९	९ ५३	११ ३४	१२ ५९	१४ २२	१५ ५५	१७ ४९	२० ०३	२२ २७	० ४६	३ ०४	५ २५
8	२४	७ ४५	९ ४९	११ ३०	१२ ५५	१४ १८	१५ ५१	१७ ४५	१९ ५९	२२ २३	० ४२	३ ००	५ २१
9	२५	७ ४१	९ ४५	११ २६	१२ ५१	१४ १४	१५ ४७	१७ ४१	१९ ५५	२२ १९	० ३८	२ ५६	५ १७
10	२६	७ ३८	९ ४२	११ २३	१२ ४८	१४ ११	१५ ४४	१७ ३८	१९ ५२	२२ १६	० ३५	२ ५३	५ १४
11	२७	७ ३४	९ ३८	११ १९	१२ ४४	१४ ०७	१५ ४०	१७ ३४	१९ ४८	२२ १२	० ३१	२ ४९	५ १०
12	२८	७ ३०	९ ३४	११ १५	१२ ४०	१४ ०३	१५ ३६	१७ ३०	१९ ४४	२२ ०८	० २७	२ ४५	५ ०६
13	२९	७ २६	९ ३०	११ ११	१२ ३६	१३ ५९	१५ ३२	१७ २६	१९ ४०	२२ ०४	० २३	२ ४१	५ ०३
14	३०	७ २२	९ २६	११ ०७	१२ ३२	१३ ५५	१५ २८	१७ २२	१९ ३६	२२ ००	० १९	२ ३७	४ ५९
15	पौ.	७ १८	– –	– –	– –	– –	– –	– –	– –	– –	– –	– –	– –

दैनिक लग्नसारणी-शिमला (हि.प्र.) में लग्न समाप्तिकाल (भा. स्टै. टा.)

दिसंबर	पौष प्रवि	पौष (दिसम्बर-जनवरी)											
		धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक
		घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
15	१	९ २२	११ ०३	१२ २८	१३ ५१	१५ २४	१७ १८	१९ ३२	२१ ५६	० १५	२ ३३	४ ५४	७ १४
16	२	९ १८	१० ५९	१२ २४	१३ ४७	१५ २०	१७ १४	१९ २८	२१ ५२	० ११	२ २९	४ ५०	७ १०
17	३	९ १४	१० ५५	१२ २१	१३ ४३	१५ १६	१७ १०	१९ २४	२१ ४८	० ०७	२ २५	४ ४६	७ ०६
18	४	९ १०	१० ५२	१२ १७	१३ ३९	१५ १२	१७ ०६	१९ २०	२१ ४४	० ०३	२ २१	४ ४२	७ ०२
19	५	९ ०६	१० ४८	१२ १३	१३ ३५	१५ ०८	१७ ०२	१९ १६	२१ ४०	२३ ५९	२ १७	४ ३८	६ ५८
20	६	९ ०२	१० ४४	१२ ०९	१३ ३१	१५ ०४	१६ ५८	१९ १२	२१ ३६	२३ ५५	२ १३	४ ३४	६ ५४
21	७	८ ५८	१० ४०	१२ ०५	१३ २७	१५ ००	१६ ५४	१९ ०८	२१ ३२	२३ ५१	२ १०	४ ३०	६ ५०
22	८	८ ५४	१० ३६	१२ ०१	१३ २३	१४ ५६	१६ ५०	१९ ०५	२१ २८	२३ ४७	२ ०६	४ २६	६ ४६
23	९	८ ५०	१० ३२	११ ५७	१३ १९	१४ ५२	१६ ४६	१९ ०१	२१ २४	२३ ४३	२ ०२	४ २२	६ ४२
24	१०	८ ४७	१० २८	११ ५३	१३ १५	१४ ४८	१६ ४३	१८ ५७	२१ २०	२३ ३९	१ ५८	४ १८	६ ३८
25	११	८ ४३	१० २४	११ ४९	१३ ११	१४ ४४	१६ ३९	१८ ५३	२१ १६	२३ ३५	१ ५४	४ १४	६ ३५
26	१२	८ ३९	१० २०	११ ४५	१३ ०८	१४ ४०	१६ ३५	१८ ४९	२१ १२	२३ ३१	१ ५०	४ १०	६ ३१
27	१३	८ ३५	१० १६	११ ४१	१३ ०४	१४ ३७	१६ ३१	१८ ४५	२१ ०८	२३ २७	१ ४६	४ ०७	६ २७
28	१४	८ ३१	१० १२	११ ३७	१३ ००	१४ ३३	१६ २७	१८ ४१	२१ ०४	२३ २३	१ ४२	४ ०३	६ २३
29	१५	८ २७	१० ०८	११ ३३	१२ ५६	१४ २९	१६ २३	१८ ३७	२१ ००	२३ १९	१ ३८	३ ५९	६ १९
30	१६	८ २३	१० ०४	११ २९	१२ ५२	१४ २५	१६ १९	१८ ३३	२० ५६	२३ १५	१ ३४	३ ५५	६ १५
31	१७	८ १९	१० ००	११ २५	१२ ४८	१४ २१	१६ १५	१८ २९	२० ५२	२३ ११	१ ३०	३ ५१	६ ११
जन.	१८	८ १५	९ ५६	११ २१	१२ ४४	१४ १७	१६ ११	१८ २५	२० ४८	२३ ०७	१ २६	३ ४७	६ ७
2	१९	८ ११	९ ५२	११ १७	१२ ४०	१४ १३	१६ ०७	१८ २१	२० ४४	२३ ०३	१ २२	३ ४३	६ ३
3	२०	८ ०७	९ ४८	११ १३	१२ ३६	१४ ०९	१६ ०३	१८ १७	२० ४०	२२ ५९	१ १८	३ ३९	५ ५९
4	२१	८ ०३	९ ४४	११ ०९	१२ ३२	१४ ०५	१५ ५९	१८ १३	२० ३६	२२ ५५	१ १४	३ ३५	५ ५५
5	२२	७ ५९	९ ४०	११ ०५	१२ २८	१४ ०१	१५ ५५	१८ ०९	२० ३२	२२ ५१	१ १०	३ ३१	५ ५१
6	२३	७ ५५	९ ३६	११ ०१	१२ २४	१३ ५७	१५ ५१	१८ ०५	२० २८	२२ ४७	१ ०६	३ २७	५ ४७
7	२४	७ ५१	९ ३२	१० ५७	१२ २०	१३ ५३	१५ ४७	१८ ०१	२० २४	२२ ४३	१ ०२	३ २३	५ ४३
8	२५	७ ४७	९ २८	१० ५३	१२ १६	१३ ४९	१५ ४३	१७ ५७	२० २०	२२ ३९	० ५८	३ १९	५ ३९
9	२६	७ ४३	९ २४	१० ४९	१२ १२	१३ ४५	१५ ३९	१७ ५३	२० १६	२२ ३५	० ५४	३ १५	५ ३५
10	२७	७ ३९	९ २०	१० ४५	१२ ०८	१३ ४१	१५ ३५	१७ ४९	२० १२	२२ ३१	० ५०	३ ११	५ ३१
11	२८	७ ३५	९ १६	१० ४१	१२ ०४	१३ ३७	१५ ३१	१७ ४५	२० ०८	२२ २७	० ४६	३ ०७	५ २७
12	२९	७ ३१	९ १२	१० ३७	१२ ००	१३ ३३	१५ २७	१७ ४१	२० ०४	२२ २३	० ४२	३ ०३	५ २३
13	३०	७ २७	९ ०८	१० ३३	११ ५६	१३ २९	१५ २३	१७ ३७	२० ००	२२ १९	० ३८	२ ५९	५ १९
14	मा.	७ २३	- -	- -	- -	- -	- -	- -	- -	- -	- -	- -	- -

जनवरी	माघ प्रवि	माघ (जनवरी-फरवरी)											
		मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु
		घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
14	१	९ ०४	१० २९	११ ५२	१३ २५	१५ १९	१७ ३३	१९ ५६	२२ १५	० ३४	२ ५५	५ १५	७ १९
15	२	९ ००	१० २५	११ ४८	१३ २१	१५ १५	१७ २९	१९ ५२	२२ ११	० ३०	२ ५१	५ ११	७ १५
16	३	८ ५७	१० २२	११ ४५	१३ १८	१५ १२	१७ २५	१९ ४९	२२ ८	० २७	२ ४७	५ ७	७ ११
17	४	८ ५३	१० १८	११ ४१	१३ १४	१५ ८	१७ २१	१९ ४५	२२ ४	० २३	२ ४३	५ ३	७ ७
18	५	८ ४९	१० १४	११ ३७	१३ १०	१५ ४	१७ १८	१९ ४१	२२ ०	० १९	२ ३९	४ ५९	७ ३
19	६	८ ४५	१० १०	११ ३३	१३ ६	१५ ००	१७ १४	१९ ३७	२१ ५६	० १५	२ ३५	४ ५६	६ ५९
20	७	८ ४१	१० ०६	११ २९	१३ २	१४ ५६	१७ १०	१९ ३३	२१ ५२	० ११	२ ३१	४ ५२	६ ५५
21	८	८ ३७	१० २	११ २५	१२ ५८	१४ ५२	१७ ९	१९ २९	२१ ४८	० ७	२ २७	४ ५७	६ ५२
22	९	८ ३३	९ ५८	११ २१	१२ ५४	१४ ४८	१७ २	१९ २५	२१ ४४	० ३	२ २३	४ ४४	६ ४८
23	१०	८ २९	९ ५४	११ १७	१२ ५०	१४ ४४	१६ ५८	१९ २१	२१ ४०	२३ ५९	२ १९	४ ४०	६ ४४
24	११	८ २५	९ ५०	११ १३	१२ ४६	१४ ४०	१६ ५४	१९ १८	२१ ३६	२३ ५५	२ १६	४ ३६	६ ४०
25	१२	८ २१	९ ४६	११ ९	१२ ४२	१४ ३६	१६ ५०	१९ १४	२१ ३२	२३ ५१	२ १२	४ ३२	६ ३६
26	१३	८ १८	९ ४३	११ ६	१२ ३९	१४ ३३	१६ ४७	१९ १०	२१ २९	२३ ४८	२ ८	४ २८	६ ३२
27	१४	८ १४	९ ३९	११ २	१२ ३५	१४ २९	१६ ४३	१९ ६	२१ २५	२३ ४४	२ ४	४ २४	६ २८
28	१५	८ १०	९ ३५	१० ५८	१२ ३१	१४ २५	१६ ३९	१९ २	२१ २१	२३ ४०	२ ०	४ २०	६ २४
29	१६	८ ०६	९ ३१	१० ५४	१२ २७	१४ २१	१६ ३५	१८ ५८	२१ १७	२३ ३६	१ ५६	४ १६	६ २०
30	१७	८ २	९ २७	१० ५०	१२ २३	१४ १७	१६ ३१	१८ ५४	२१ १३	२३ ३२	१ ५२	४ १३	६ १७
31	१८	७ ५८	९ २३	१० ४६	१२ १९	१४ १३	१६ २७	१८ ५०	२१ ९	२३ २८	१ ४८	४ ९	६ १३
फर	१९	७ ५४	९ १९	१० ४२	१२ १५	१४ ९	१६ २३	१८ ४६	२१ ५	२३ २४	१ ४४	४ ५	६ ९
2	२०	७ ५०	९ १५	१० ३८	१२ ११	१४ ५	१६ १९	१८ ४२	२१ १	२३ २०	१ ४०	४ १	६ ५
3	२१	७ ४६	९ ११	१० ३४	१२ ७	१४ १	१६ १५	१८ ३८	२० ५७	२३ १६	१ ३६	३ ५७	६ १
4	२२	७ ४२	९ ७	१० ३०	१२ ३	१३ ५७	१६ ११	१८ ३४	२० ५३	२३ १२	१ ३२	३ ५३	५ ५७
5	२३	७ ३८	९ ३	१० २६	११ ५९	१३ ५३	१६ ७	१८ ३०	२० ५०	२३ ८	१ २८	३ ४९	५ ५३
6	२४	७ ३४	८ ५९	१० २२	११ ५५	१३ ४९	१६ ३	१८ २६	२० ४६	२३ ४	१ २५	३ ४५	५ ४९
7	२५	७ ३०	८ ५५	१० १८	११ ५१	१३ ४५	१५ ५९	१८ २२	२० ४२	२३ ०	१ २१	३ ४१	५ ४५
8	२६	७ २६	८ ५१	१० १४	११ ४७	१३ ४१	१५ ५५	१८ १८	२० ३८	२२ ५६	१ १७	३ ३७	५ ४१
9	२७	७ २२	८ ४७	१० १०	११ ४३	१३ ३७	१५ ५१	१८ १५	२० ३४	२२ ५२	१ १३	३ ३३	५ ३७
10	२८	७ १८	८ ४३	१० ६	११ ३९	१३ ३३	१५ ४७	१८ ११	२० ३०	२२ ४८	१ ९	३ २९	५ ३३
11	२९	७ १४	८ ३९	१० २	११ ३५	१३ २९	१५ ४३	१८ ७	२० २६	२२ ४४	१ ५	३ २५	५ २९
12	फा.	७ १०	- -	- -	- -	- -	- -	- -	- -	- -	- -	- -	- -

दैनिक लग्नसारणी-शिमला (हि.प्र.) में लग्न समाप्तिकाल (भा. स्टैं. टा.)

फाल्गुन (फरवरी-मार्च)

फरवरी	फाल्गुन	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर
		घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
12	१	८ ३५	९ ५८	११ ३१	१३ २५	१५ ३९	१८ ०३	२० २२	२२ ४०	१ ०१	३ २१	५ २५	७ ०७
13	२	८ ३१	९ ५४	११ २७	१३ २१	१५ ३५	१७ ५९	२० १८	२२ ३६	० ५७	३ १७	५ २१	७ ३
14	३	८ २७	९ ५०	११ २३	१३ १७	१५ ३१	१७ ५५	२० १४	२२ ३२	० ५३	३ १३	५ १७	६ ५९
15	४	८ २३	९ ४६	११ १९	१३ १३	१५ २७	१७ ५१	२० १०	२२ २८	० ४९	३ ९	५ १३	६ ५५
16	५	८ १९	९ ४२	११ १५	१३ ९	१५ २३	१७ ४७	२० ६	२२ २४	० ४५	३ ५	५ ९	६ ५१
17	६	८ १५	९ ३८	११ ११	१३ ५	१५ १९	१७ ४३	२० २	२२ २०	० ४१	३ १	५ ६	६ ४७
18	७	८ ११	९ ३४	११ ७	१३ १	१५ १५	१७ ३९	१९ ५८	२२ १६	० ३७	२ ५७	५ २	६ ४३
19	८	८ ७	९ ३०	११ ३	१२ ५७	१५ ११	१७ ३५	१९ ५४	२२ १२	० ३३	२ ५३	४ ५८	६ ३९
20	९	८ ४	९ २७	११ ०	१२ ५३	१५ ७	१७ ३१	१९ ५०	२२ ८	० २९	२ ४९	४ ५४	६ ३५
21	१०	८ ०	९ २३	१० ५६	१२ ५०	१५ ४	१७ २७	१९ ४६	२२ ४	० २५	२ ४६	४ ५०	६ ३१
22	११	७ ५६	९ १९	१० ५२	१२ ४६	१५ ०	१७ २३	१९ ४२	२२ ०	० २१	२ ४२	४ ४६	६ २७
23	१२	७ ५२	९ १४	१० ४८	१२ ४२	१४ ५६	१७ १९	१९ ३८	२१ ५६	० १८	२ ३८	४ ४२	६ २३
24	१३	७ ४८	९ १०	१० ४४	१२ ३८	१४ ५२	१७ १५	१९ ३४	२१ ५२	० १४	२ ३४	४ ३८	६ १९
25	१४	७ ४४	९ ०६	१० ४०	१२ ३४	१४ ४८	१७ ११	१९ ३०	२१ ४८	० १०	२ ३०	४ ३४	६ १५
26	१५	७ ४०	९ ०२	१० ३६	१२ ३०	१४ ४४	१७ ०७	१९ २६	२१ ४४	० ०६	२ २६	४ ३०	६ ११
27	१६	७ ३६	८ ५८	१० ३२	१२ २६	१४ ४०	१७ ०३	१९ २२	२१ ४०	० ०२	२ २२	४ २६	६ ०७
28	१७	७ ३२	८ ५४	१० २८	१२ २२	१४ ३६	१६ ५९	१९ १८	२१ ३६	२३ ५८	२ १८	४ २२	६ ०३
मार्च	१८	७ २८	८ ५१	१० २४	१२ १८	१४ ३२	१६ ५५	१९ १४	२१ ३२	२३ ५४	२ १४	४ १८	६ ०
2	१९	७ २४	८ ४७	१० २०	१२ १४	१४ २८	१६ ५१	१९ १०	२१ २८	२३ ५०	२ १०	४ १४	५ ५६
3	२०	७ २१	८ ४४	१० १७	१२ ११	१४ २५	१६ ४७	१९ ६	२१ २४	२३ ४६	२ ६	४ १०	५ ५२
4	२१	७ १७	८ ४०	१० १३	१२ ७	१४ २१	१६ ४३	१९ २	२१ २०	२३ ४२	२ २	४ ६	५ ४८
5	२२	७ १३	८ ३६	१० ९	१२ ३	१४ १७	१६ ३९	१८ ५८	२१ १६	२३ ३९	१ ५८	४ ३	५ ४४
6	२३	७ ९	८ ३२	१० ५	११ ५९	१४ १३	१६ ३५	१८ ५४	२१ १२	२३ ३५	१ ५४	३ ५९	५ ४०
7	२४	७ ५	८ २८	१० १	११ ५५	१४ ९	१६ ३१	१८ ५०	२१ ९	२३ ३१	१ ५०	३ ५५	५ ३६
8	२५	७ १	८ २४	९ ५७	११ ५१	१४ ५	१६ २७	१८ ४६	२१ ५	२३ २७	१ ४६	३ ५१	५ ३२
9	२६	६ ५७	८ २०	९ ५३	११ ४७	१४ १	१६ २४	१८ ४३	२१ १	२३ २३	१ ४३	३ ४७	५ २८
10	२७	६ ५३	८ १६	९ ४९	११ ४३	१३ ५७	१६ २०	१८ ३९	२० ५७	२३ १९	१ ३९	३ ४३	५ २४
11	२८	६ ४९	८ १२	९ ४५	११ ३९	१३ ५३	१६ १७	१८ ३५	२० ५३	२३ १५	१ ३५	३ ३९	५ २०
12	२९	६ ४५	८ ८	९ ४१	११ ३५	१३ ४९	१६ १३	१८ ३२	२० ४९	२३ १२	१ ३२	३ ३५	५ १७
13	३०	६ ४१	८ ४	९ ३७	११ ३१	१३ ४५	१६ ९	१८ २८	२० ४५	२३ ८	१ २८	३ ३२	५ १३
14	चैत्र	६ ३७	– –	– –	– –	– –	– –	– –	– –	– –	– –	– –	– –

चैत्र (मार्च-अप्रैल)

मार्च	चैत्र प्रवि	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ
		घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
14	१	८ ००	९ ३३	११ २७	१३ ४१	१६ ५	१८ २४	२० ४१	२३ ७	१ २४	३ २८	५ ९	६ ३३
15	२	७ ५६	९ २९	११ २३	१३ ३७	१६ १	१८ २०	२० ३७	२३ ०	१ २०	३ २४	५ ५	६ २९
16	३	७ ५२	९ २५	११ १९	१३ ३३	१५ ५७	१८ १६	२० ३३	२२ ५६	१ १६	३ २०	५ १	६ २५
17	४	७ ४८	९ २१	११ १५	१३ २९	१५ ५३	१८ १२	२० २९	२२ ५२	१ १२	३ १६	४ ५७	६ २१
18	५	७ ४४	९ १७	११ ११	१३ २५	१५ ४९	१८ ८	२० २५	२२ ४८	१ ८	३ १२	४ ५३	६ १७
19	६	७ ४०	९ १३	११ ७	१३ २१	१५ ४५	१८ ४	२० २१	२२ ४४	१ ४	३ ८	४ ४९	६ १३
20	७	७ ३६	९ ९	११ ३	१३ १८	१५ ४१	१८ ०	२० १७	२२ ४०	१ ०	३ ४	४ ४५	६ ९
21	८	७ ३२	९ ५	१० ५९	१३ १४	१५ ३७	१७ ५६	२० १३	२२ ३६	० ५६	३ ००	४ ४१	६ ५
22	९	७ २८	९ १	१० ५५	१३ १०	१५ ३३	१७ ५२	२० ९	२२ ३२	० ५२	२ ५६	४ ३७	६ १
23	१०	७ २५	८ ५७	१० ५२	१३ ६	१५ २९	१७ ४८	२० ५	२२ २८	० ४८	२ ५२	४ ३३	५ ५७
24	११	७ २१	८ ५३	१० ४८	१३ २	१५ २५	१७ ४४	२० १	२२ २४	० ४४	२ ४८	४ ३०	५ ५३
25	१२	७ १७	८ ४९	१० ४४	१२ ५८	१५ २१	१७ ४०	१९ ५७	२२ २०	० ४०	२ ४४	४ २६	५ ४९
26	१३	७ १३	८ ४५	१० ४०	१२ ५४	१५ १७	१७ ३६	१९ ५४	२२ १६	० ३६	२ ४०	४ २२	५ ४५
27	१४	७ ९	८ ४२	१० ३६	१२ ५०	१५ १३	१७ ३२	१९ ५०	२२ १२	० ३२	२ ३६	४ १८	५ ४१
28	१५	७ ५	८ ३८	१० ३२	१२ ४६	१५ ९	१७ २८	१९ ४६	२२ ८	० २८	२ ३३	४ १४	५ ३७
29	१६	७ १	८ ३४	१० २८	१२ ४२	१५ ५	१७ २४	१९ ४२	२२ ४	० २४	२ २९	४ १०	५ ३४
30	१७	६ ५७	८ ३०	१० २४	१२ ३९	१५ १	१७ २०	१९ ३८	२२ ०	० २०	२ २५	४ ६	५ ३०
31	१८	६ ५३	८ २६	१० २०	१२ ३५	१४ ५७	१७ १६	१९ ३४	२१ ५६	० १६	२ २१	४ २	५ २६
अप्रै	१९	६ ४९	८ २२	१० १६	१२ ३१	१४ ५३	१७ १२	१९ ३०	२१ ५२	० १२	२ १७	३ ५८	५ २२
2	२०	६ ४५	८ १८	१० १२	१२ २७	१४ ४९	१७ ८	१९ २६	२१ ४८	० ८	२ १३	३ ५४	५ १८
3	२१	६ ४१	८ १४	१० ८	१२ २३	१४ ४५	१७ ४	१९ २२	२१ ४४	० ४	२ ९	३ ५०	५ १४
4	२२	६ ३७	८ १०	१० ४	१२ १९	१४ ४१	१७ ०	१९ १९	२१ ४०	२४ ००	२ ५	३ ४६	५ १०
5	२३	६ ३३	८ ०६	१० ०	१२ १५	१४ ३७	१६ ५६	१९ १५	२१ ३७	२३ ५७	२ १	३ ४२	५ ६
6	२४	६ ३०	८ ३	९ ५६	१२ ११	१४ ३३	१६ ५२	१९ ११	२१ ३३	२३ ५३	१ ५७	३ ३८	५ २
7	२५	६ २६	७ ५९	९ ५३	१२ ७	१४ २९	१६ ४९	१९ ७	२१ २९	२३ ४९	१ ५३	३ ३४	४ ५८
8	२६	६ २२	७ ५५	९ ४९	१२ ३	१४ २५	१६ ४५	१९ ३	२१ २५	२३ ४५	१ ४९	३ ३०	४ ५४
9	२७	६ १८	७ ५१	९ ४५	११ ५९	१४ २१	१६ ४१	१८ ५९	२१ २१	२३ ४१	१ ४५	३ २६	४ ५१
10	२८	६ १४	७ ४७	९ ४१	११ ५५	१४ १७	१६ ३७	१८ ५५	२१ १७	२३ ३७	१ ४१	३ २२	४ ४७
11	२९	६ १०	७ ४३	९ ३७	११ ५१	१४ १४	१६ ३३	१८ ५१	२१ १३	२३ ३३	१ ३७	३ १८	४ ४३
12	३०	६ ६	७ ३९	९ ३३	११ ४७	१४ १०	१६ २९	१८ ४७	२१ ९	२३ २९	१ ३४	३ १४	४ ३९
13	वै.	६ २	– –	– –	– –	– –	– –	– –	– –	– –	– –	– –	– –

भारत के प्रमुख नगरों के दैनिक सूर्योदय–सूर्यास्त (भा. स्टैं. टा.)–2020 ई.

नीचे भारत के कुछ प्रमुख नगरों के सूर्योदयास्त दिए गए हैं जो किरण–वक्री भवन संस्कार रहित है। जो सूर्योदयादि इष्ट, ज्योतिष शास्त्रीय एवं धार्मिक अनुष्ठानादि कृत्यों के लिए समान रूप से उपयोगी होते हैं। किसी नगर के सूर्योदय में लगभग ३/४ मिनट घटाने तथा अस्त में ३/४ मिनट जोड़ने से किरण वक्री संस्कार सहित (Upper Limb) अर्थात् दृश्यमान सूर्योदय–सूर्यास्त होंगे।

तारीख	अमृतसर		लुधियाना		अम्बाला		रोहतक		कैथल		जयपुर		फरीदाबाद		हरिद्वार		करनाल		सोनीपत		कठुआ		तारीख
	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	
जन.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	जन.
1	7 34	17 33	7 28	17 30	7 23	17 29	7 21	17 32	7 24	17 32	7 20	17 40	7 17	17 31	7 17	17 24	7 21	17 30	7 19	17 17	7 33	17 30	1
2	35	34	29	31	23	30	21	33	24	32	20	41	17	32	17	25	21	31	20	18	34	30	2
3	35	35	29	32	23	31	21	34	24	33	21	43	17	32	17	25	22	31	20	18	34	31	3
4	35	36	29	33	24	32	22	35	24	34	21	43	18	33	18	26	22	32	20	19	34	32	4
5	35	36	29	34	24	32	22	35	24	34	21	43	18	34	18	27	22	33	20	20	34	33	5
6	35	37	29	35	24	33	22	36	25	35	21	44	18	35	18	28	22	34	20	21	34	33	6
7	35	38	29	36	24	34	22	37	25	36	22	45	18	35	18	28	22	34	20	21	34	34	7
8	35	39	29	36	24	35	22	38	25	37	22	46	18	36	18	29	22	35	21	22	34	35	8
9	35	40	29	37	24	36	22	39	25	38	22	46	18	37	18	30	22	36	21	23	34	36	9
10	35	40	29	38	24	37	22	39	25	38	22	47	18	38	18	31	22	37	21	24	34	37	10
11	35	41	29	39	24	38	22	40	25	39	22	48	18	38	18	32	22	38	21	25	34	38	11
12	35	42	29	39	24	39	22	41	25	40	22	49	18	39	18	32	22	38	21	25	34	38	12
13	35	43	29	40	24	40	22	42	25	41	22	50	18	40	18	33	22	39	21	26	34	39	13
14	35	44	29	41	24	40	22	43	25	42	21	50	18	41	18	34	22	40	21	27	34	40	14
15	34	45	29	42	24	41	22	44	25	43	21	51	18	42	18	35	22	41	21	28	34	41	15
16	34	46	29	43	24	42	22	45	24	43	21	52	18	42	18	36	22	42	20	29	33	42	16
17	34	46	29	44	24	42	21	46	24	44	21	53	18	43	18	37	22	43	20	30	33	43	17
18	34	47	28	46	23	43	21	46	24	45	21	53	18	44	17	38	22	43	20	30	33	44	18
19	34	48	28	47	23	44	21	47	24	46	21	54	18	45	17	39	21	44	20	31	33	45	19
20	33	49	28	46	23	45	21	48	24	47	21	55	17	46	17	40	21	45	20	32	32	46	20
21	33	50	27	47	23	46	20	48	23	48	20	56	17	47	17	41	21	46	19	33	32	47	21
22	33	51	27	48	22	47	20	49	23	49	21	56	17	47	16	42	20	47	19	34	32	48	22
23	32	52	27	49	22	48	20	50	23	49	20	57	17	48	16	43	20	48	19	35	31	49	23
24	32	53	27	50	21	49	20	51	22	50	20	58	16	49	16	43	20	49	19	36	31	49	24
25	32	54	26	51	21	49	19	52	22	51	19	17 59	16	50	15	44	19	49	18	36	30	50	25
26	31	55	26	52	21	50	19	53	22	52	19	18 00	16	51	15	44	19	50	18	37	30	51	26
27	31	56	25	53	20	51	19	54	21	53	18	01	15	52	14	46	19	51	17	38	29	52	27
28	30	56	25	54	20	52	18	55	21	54	18	01	15	52	14	46	18	52	17	39	29	53	28
29	30	57	24	55	19	53	18	56	20	55	18	02	14	53	13	47	18	53	17	40	28	54	29
30	29	17 58	23	56	19	54	17	56	20	55	17	03	14	54	13	48	17	54	16	41	28	55	30
31	7 28	17 59	7 23	17 57	7 18	17 55	7 17	17 57	7 19	17 56	7 17	18 03	7 13	17 55	7 12	17 49	7 17	17 55	7 16	17 42	7 27	17 56	31
फर.	28	18 00	7 22	17 57	7 18	17 56	7 16	17 58	7 19	17 57	7 16	18 04	7 13	17 56	7 12	17 50	7 16	17 55	7 15	17 56	7 26	17 57	फर.
2	27	01	22	58	17	56	15	59	18	58	16	05	12	57	11	50	15	56	14	57	26	58	2
3	27	02	21	17 59	17	57	15	17 59	18	17 59	15	06	12	57	11	51	15	57	14	58	25	59	3
4	26	03	21	18 00	16	58	14	18 00	17	18 00	15	06	11	58	10	52	14	58	13	17 59	24	18 00	4
5	25	04	20	01	15	17 59	14	01	16	01	14	07	11	17 59	09	53	14	17 59	13	17 59	24	01	5
6	25	05	21	02	15	18 00	13	02	16	01	14	08	10	18 00	09	54	13	18 00	12	18 00	23	02	6
7	24	06	19	02	14	01	13	03	15	02	14	08	09	01	08	55	12	00	11	01	22	02	7
8	7 23	18 07	7 18	18 03	7 13	18 02	7 12	18 04	7 14	18 03	7 13	18 09	7 09	18 01	7 07	17 56	7 11	18 01	7 11	18 02	7 21	18 03	8

तारीख	अमृतसर		लुधियाना		अम्बाला		रोहतक		कैथल		जयपुर		फरीदाबाद		हरिद्वार		करनाल		सोनीपत		कठुआ		तारीख
	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	
फर.	घं.मिं.	घं. मिं.	घं.मिं.	घं. मिं.	घं.मिं.	घं. मिं.	घं.मिं.	घं. मिं.	घं.मिं.	घं. मिं.	घं.मिं.	घं. मिं.	घं.मिं.	घं. मिं.	घं.मिं.	घं. मिं.	घं.मिं.	घं. मिं.	घं.मिं.	घं. मिं.	घं.मिं.	घं. मिं.	फर.
9	7 22	18 08	7 17	18 04	7 12	18 03	7 11	18 05	7 14	18 04	7 12	18 10	7 08	18 02	7 07	17 56	7 11	18 02	7 10	18 03	7 20	18 04	9
10	21	08	16	05	11	04	10	06	13	05	11	11	07	03	06	57	10	03	09	03	20	05	10
11	20	09	15	06	11	05	09	06	12	05	10	12	07	04	05	58	09	04	09	04	19	06	11
12	20	10	14	07	10	06	09	07	11	06	10	12	06	04	04	17 59	08	04	08	05	18	07	12
13	19	11	13	08	09	06	08	08	10	07	09	13	05	05	03	18 00	08	05	07	06	17	08	13
14	17	12	12	09	08	07	07	09	10	08	08	14	04	06	03	00	07	06	06	06	16	09	14
15	18	13	11	10	07	08	06	09	09	09	07	14	04	07	02	01	06	07	05	07	15	10	15
16	16	14	10	11	06	09	06	10	08	09	06	15	03	07	01	02	05	08	04	08	14	10	16
17	15	14	10	11	05	09	05	11	07	10	06	16	02	08	7 00	03	04	08	04	09	13	11	17
18	13	15	09	12	04	10	04	12	06	11	05	16	01	09	6 59	04	03	09	03	09	12	12	18
19	14	16	08	13	03	11	03	13	05	12	04	17	7 00	09	58	04	02	10	02	10	11	13	19
20	12	17	07	13	02	11	02	13	04	12	03	18	6 59	10	57	05	01	11	01	11	10	14	20
21	11	18	06	14	01	12	01	14	03	13	02	18	58	11	56	06	7 00	11	7 00	12	09	15	21
22	10	18	05	15	7 00	13	7 00	14	02	14	01	19	57	12	55	07	6 59	12	6 59	12	08	16	22
23	09	19	04	16	6 59	13	6 59	15	01	15	7 00	20	56	12	54	07	58	13	58	13	07	16	23
24	08	20	03	17	58	14	58	15	7 00	15	6 59	20	55	13	53	08	57	14	57	14	06	17	24
25	07	21	02	18	57	15	57	16	6 59	16	59	21	55	14	52	09	56	14	56	14	05	18	25
26	06	22	01	19	56	15	56	16	58	17	58	21	54	14	51	09	55	15	55	15	03	19	26
27	05	22	7 00	20	55	16	55	17	57	18	57	23	53	15	50	10	54	16	54	16	02	20	27
28	7 04	23	6 59	20	54	17	54	18	56	18	56	23	52	16	49	11	53	16	53	16	01	20	28
29	7 02	18 24	6 58	18 20	6 54	18 17	6 54	18 19	6 55	18 19	6 56	18 23	6 51	18 16	6 48	18 12	6 53	18 17	6 52	18 17	7 01	18 21	29
मार्च	7 02	18 24	6 57	18 20	6 53	18 18	6 53	18 19	6 54	18 20	6 55	18 23	6 49	18 17	6 47	18 12	6 52	18 17	6 51	18 18	7 00	18 21	मार्च
2	01	25	56	21	52	19	52	19	53	20	54	24	48	18	46	13	51	18	50	18	6 59	22	2
3	7 00	26	55	22	51	19	51	20	52	21	53	24	47	18	45	14	50	18	49	19	58	23	3
4	6 58	26	54	23	50	20	50	21	51	22	52	25	46	19	44	14	49	19	48	20	56	23	4
5	57	27	53	23	49	20	49	22	50	22	51	26	45	19	43	15	48	20	47	20	56	24	5
6	56	28	51	24	48	21	48	22	48	23	50	26	44	20	41	16	47	20	46	21	54	25	6
7	55	29	50	25	47	21	47	23	47	24	49	27	43	21	40	18	46	21	45	22	53	26	7
8	54	29	49	25	45	22	45	23	46	24	48	27	42	21	39	17	44	22	43	22	52	27	8
9	53	30	48	26	44	23	44	24	45	25	46	28	41	22	38	18	43	22	42	23	50	27	9
10	51	31	46	27	43	23	43	24	44	26	45	28	40	22	37	18	42	23	41	23	49	28	10
11	50	31	45	27	42	24	42	25	43	26	44	29	39	23	36	19	41	24	40	24	48	29	11
12	49	32	44	28	41	25	41	26	42	27	43	30	38	24	35	20	40	24	39	25	47	29	12
13	48	33	43	29	40	26	40	27	40	27	42	31	36	24	33	20	39	25	38	25	45	30	13
14	46	34	42	29	39	27	38	27	39	28	41	31	35	25	32	21	37	25	37	26	44	31	14
15	45	34	40	29	38	27	37	28	38	29	40	32	34	25	31	21	36	26	35	26	43	32	15
16	44	35	39	30	36	28	36	28	37	29	39	32	33	26	30	22	35	27	34	27	41	32	16
17	43	36	38	31	35	28	35	29	36	30	38	33	32	26	29	23	34	27	33	28	40	33	17
18	41	36	36	31	34	29	34	29	34	31	37	33	31	27	27	23	33	28	32	28	39	34	18
19	40	37	35	32	33	30	33	30	33	31	36	34	30	28	26	24	32	29	31	29	38	35	19
20	39	38	34	33	31	31	31	30	32	32	35	34	28	28	25	25	30	29	30	29	36	35	20
21	38	38	33	34	30	31	30	31	31	32	33	35	27	29	24	25	29	30	28	30	35	36	21
22	36	39	32	34	29	32	29	31	30	33	32	35	26	29	23	26	28	30	27	30	34	37	22
23	35	40	31	34	28	32	28	32	28	34	31	36	25	30	21	26	27	31	26	31	32	37	23
24	34	40	30	35	26	33	26	32	27	34	30	36	24	30	20	27	26	32	25	32	31	38	24
25	32	41	28	36	25	33	25	33	26	35	29	37	23	31	19	28	24	32	24	32	30	39	25
26	31	42	27	37	24	34	24	33	25	35	28	37	22	31	18	28	23	33	23	33	28	39	26
27	6 30	18 42	6 25	18 37	6 23	18 34	6 23	18 34	6 24	18 36	6 27	18 38	6 20	18 32	6 17	18 29	6 22	18 34	6 21	18 33	7 27	18 40	27

तारीख	अमृतसर		लुधियाना		अम्बाला		रोहतक		कैथल		[illegible]		[illegible]		[illegible]		करनाल		पानीपत		कठुआ		तारीख
	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	
मार्च	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. पिं.	घं. मिं.	मार्च
28	6 29	18 43	6 24	18 38	6 21	18 35	6 22	18 35	6 22	18 37	6 26	18 38	6 19	18 33	6 15	18 29	6 21	18 34	6 20	18 34	7 26	18 41	28
29	27	44	23	39	20	35	21	36	21	37	25	38	18	33	14	30	20	35	19	34	25	42	29
30	26	44	22	39	19	36	20	36	20	38	24	39	17	18 34	13	31	18	35	18	35	23	42	30
31	6 25	18 45	6 21	18 40	6 18	18 37	6 19	18 37	6 19	18 38	6 23	18 39	6 16	18 34	6 12	18 31	6 17	18 36	6 17	18 36	6 22	18 43	31
अप्रै.	6 23	18 46	6 19	18 41	6 16	18 38	6 17	18 37	6 18	18 39	6 22	18 40	6 15	18 35	6 10	18 32	6 16	18 36	6 16	18 36	6 21	18 44	अप्रै.
2	22	46	18	42	15	38	16	38	16	40	21	40	14	35	09	32	15	37	14	37	19	44	2
3	21	47	17	42	14	39	15	38	15	40	20	41	12	36	08	33	14	38	13	37	18	45	3
4	20	48	16	43	13	40	14	39	14	41	19	41	11	36	07	34	12	38	12	38	17	46	4
5	19	48	15	43	12	40	13	39	13	41	18	42	10	37	06	34	11	39	11	38	16	46	5
6	17	49	13	44	11	41	12	40	12	42	16	42	09	37	05	35	10	39	10	39	14	48	6
7	16	50	12	44	10	41	11	40	11	43	15	43	08	38	03	35	09	40	09	40	13	48	7
8	15	50	11	45	09	82	09	41	09	43	14	43	07	39	02	36	08	40	08	40	12	48	8
9.	14	51	10	46	08	42	08	42	08	44	13	44	06	39	01	37	07	41	06	41	11	49	9
10	16	52	09	47	06	43	07	43	07	44	12	44	05	40	6 00	37	06	42	05	41	09	50	10
11	11	52	07	47	05	43	06	43	06	45	11	45	04	40	5 59	38	04	42	04	42	08	51	11
12	10	53	06	48	03	44	05	44	05	46	10	45	02	41	58	39	03	43	03	42	07	51	12
13	09	54	05	48	02	44	04	44	04	46	09	46	01	41	57	39	02	44	02	43	06	52	13
14	08	54	04	49	01	45	03	45	03	47	08	46	6 00	42	55	40	01	44	01	44	04	53	14
15	07	55	03	50	6 00	45	02	45	02	47	08	46	5 59	43	55	40	6 00	45	6 00	44	03	53	15
16	05	56	01	50	5 59	46	01	46	6 00	48	06	47	58	43	52	42	5 59	45	5 59	45	02	54	16
17	04	56	6 00	51	48	47	6 00	46	5 59	49	05	48	57	44	52	42	58	46	58	45	01	55	17
18	03	57	5 59	52	57	48	5 59	47	58	49	04	48	56	44	51	42	57	47	57	46	00	55	18
19	02	58	57	53	56	48	58	47	57	50	03	49	55	45	51	42	56	47	56	47	00	56	19
20	01	58	56	54	55	49	57	48	56	51	02	49	54	45	49	43	55	48	55	47	5 57	57	20
21	6 00	18 59	55	55	54	50	56	49	55	51	01	50	53	46	49	44	54	48	54	48	56	58	21
22	5 59	19 00	54	55	54	50	56	49	54	52	6 01	50	52	47	49	45	53	49	53	48	55	58	22
23	58	00	53	56	52	51	54	50	53	52	5 59	51	51	47	47	45	52	50	52	49	54	59	23
24	57	01	52	57	51	51	53	51	52	53	59	52	50	48	46	46	51	50	51	50	53	19 00	24
25	56	02	51	57	50	52	52	51	51	54	58	52	49	48	45	46	50	51	50	50	52	00	25
26	55	02	50	57	49	53	51	52	50	54	57	53	48	49	44	47	49	52	49	51	51	01	26
27	54	03	49	58	48	53	50	52	49	55	56	53	48	49	43	47	48	52	48	51	50	02	27
28	53	04	48	58	47	54	49	53	48	56	55	54	47	50	42	48	47	53	47	52	49	03	28
29	52	04	47	18 59	46	55	48	53	47	56	54	54	46	51	41	49	46	53	46	53	48	03	29
30	5 51	19 05	5 46	19 00	5 45	18 55	5 47	18 54	5 47	18 57	5 53	18 55	5 45	18 51	5 40	18 49	5 45	18 54	5 45	18 53	5 47	19 04	30
मई	5 50	19 06	5 45	19 01	5 44	18 56	5 46	18 54	5 46	18 57	5 53	18 55	5 44	18 52	5 34	18 50	5 44	18 55	5 44	18 54	5 47	19 05	मई
2	49	06	45	02	43	57	45	55	45	58	52	56	43	52	38	51	43	55	44	54	45	06	2
3	48	07	43	03	43	57	44	56	44	59	51	56	42	53	37	51	42	56	43	55	45	06	3
4	47	08	43	03	42	58	44	57	43	18 59	50	57	42	54	36	52	41	57	42	56	43	07	4
5	46	09	42	04	42	59	43	57	42	19 00	50	57	41	54	36	53	41	57	41	56	42	08	5
6	45	09	41	05	41	18 59	43	58	42	01	49	58	40	55	35	53	40	58	40	57	41	08	6
7	44	10	40	05	40	19 00	42	58	41	01	48	59	39	55	34	54	39	59	40	58	40	09	7
8	44	11	40	05	39	00	41	18 59	40	02	47	18 59	39	56	33	55	38	59	39	58	40	14	8
9	43	11	39	07	38	01	41	19 00	39	03	47	19 00	38	57	32	55	38	19 00	38	59	39	11	9
10	42	12	38	07	38	02	40	01	39	03	46	00	37	57	32	56	37	00	38	59	38	11	10
11	41	13	37	07	37	02	39	01	38	04	46	01	37	58	31	56	36	01	37	19 00	37	12	11
12	5 41	19 13	5 37	19 08	5 36	19 03	5 39	19 02	5 37	19 05	5 45	19 01	5 36	18 58	5 30	18 57	5 35	19 02	536	19 01	5 36	19 13	12

तारीख	अमृतसर		लुधियाना		अम्बाला		रोहतक		कैथल		जयपुर		फरीदाबाद		हरिद्वार		करनाल		सोनीपत		कठुआ		तारीख
	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	
मई	घं.मिं.	घं. मिं.	घं.मिं.	घं. मिं.	घं.मिं.	घं. मिं.	घं.मिं.	घं. मिं.	घं.मिं.	घं. मिं.	घं.मिं.	घं. मिं.	घं.मिं.	घं. मिं.	घं.मिं.	घं. मिं.	घं.मिं.	घं. मिं.	घं.मिं.	घं. मिं.	घं.मिं.	घं. मिं.	मई
13	5 40	19 14	36	19 09	5 36	19 04	5 38	19 02	5 36	18 05	5 44	19 02	5 35	18 59	5 30	18 58	5 35	19 02	536	19 01	5 36	19 13	13
14	39	15	35	10	35	04	38	03	36	06	44	02	35	19 00	29	58	34	03	35	02	35	14	14
15	38	15	34	11	34	05	37	03	35	06	43	03	34	00	28	18 59	33	04	34	03	34	15	15
16	38	16	34	11	33	06	36	04	35	07	43	04	34	01	28	19 00	33	04	34	03	33	16	16
17	37	17	33	12	33	06	36	04	34	08	42	04	33	01	27	00	32	05	33	04	33	16	17
18	37	17	33	12	32	07	35	05	33	08	42	05	33	02	26	01	32	06	33	04	32	17	18
19	36	18	32	13	32	08	34	06	33	09	41	05	32	03	26	02	31	06	32	05	32	18	19
20	35	19	32	13	31	08	34	07	32	10	41	06	32	03	25	02	31	07	32	06	31	18	20
21	35	20	31	14	31	09	33	07	32	10	40	06	31	04	25	03	30	07	31	06	30	19	21
22	34	20	31	15	30	09	33	08	32	11	40	07	31	04	24	03	30	08	31	07	30	20	22
23	34	21	30	15	30	10	32	08	31	11	40	07	30	05	24	04	29	09	30	07	29	20	23
24	33	22	30	16	29	10	32	09	31	12	39	08	30	06	23	05	29	09	30	08	29	21	24
25	33	22	29	16	29	11	31	09	30	13	39	08	29	19 06	23	05	28	10	30	08	28	22	25
26	33	23	29	17	29	11	31	10	30	13	39	09	29	19 07	23	06	28	10	29	09	28	22	26
27	32	24	28	18	28	12	30	10	30	14	38	10	29	07	22	06	28	11	29	10	28	23	27
28	32	24	28	18	27	13	30	11	29	14	38	10	29	08	22	07	27	11	29	10	27	24	28
29	31	25	27	19	27	14	30	11	29	15	38	11	28	08	22	08	27	12	28	11	27	24	29
30	31	26	27	19	27	14	29	12	29	15	37	11	28	09	21	08	27	13	28	19 11	26	25	30
31	5 31	19 26	5 27	19 20	5 27	19 15	5 29	19 12	5 28	19 16	5 37	19 12	5 28	19 09	5 21	19 09	5 27	19 13	5 28	1912	5 26	19 25	31
जून	5 31	19 26	5 27	19 20	5 27	19 15	5 29	19 13	5 28	19 16	5 37	19 12	5 28	19 10	5 21	19 09	5 26	19 13	5 28	19 12	5 26	19 26	जून
2	30	27	26	21	26	16	28	13	28	17	37	12	27	10	21	10	26	14	27	13	26	26	2
3	30	27	26	22	26	16	28	14	28	18	37	13	27	11	20	10	26	15	27	13	25	27	3
4	30	28	26	23	26	17	28	14	28	18	37	13	27	11	20	11	26	15	27	14	25	28	4
5	30	28	27	23	26	17	28	15	27	18	36	14	28	12	20	11	26	16	27	14	25	28	5
6	30	29	26	23	26	18	28	15	27	19	36	14	27	12	20	12	25	16	27	15	25	29	6
7	29	29	26	24	26	18	28	16	27	19	36	15	27	13	20	12	25	16	27	15	25	29	7
8	29	30	26	24	25	19	28	16	27	20	36	15	27	13	20	13	25	17	27	16	25	30	8
9	29	30	26	24	25	19	28	17	27	20	36	15	27	13	20	13	25	17	27	16	24	30	9
10	29	30	26	25	25	19	28	17	27	21	36	16	27	14	20	13	25	18	27	16	24	30	10
11	29	31	26	25	25	20	28	18	27	21	36	16	27	14	19	14	25	18	27	17	24	31	11
12	29	31	26	26	25	20	28	18	27	21	36	16	27	15	19	14	25	19	27	17	24	31	12
13	29	32	26	26	25	20	28	19	27	22	36	17	27	15	20	15	25	19	27	17	24	32	13
14	29	32	26	26	25	21	28	19	27	22	36	17	27	15	20	15	25	19	27	18	24	32	14
15	29	32	26	27	25	21	28	19	27	22	36	17	27	16	20	15	25	19	27	18	24	32	15
16	29	33	26	27	25	21	28	19	27	23	37	18	27	16	20	15	25	20	27	18	25	33	16
17	30	33	26	27	25	22	28	20	28	23	37	18	27	16	20	15	26	20	27	19	25	33	17
18	30	33	26	27	25	22	28	20	28	23	37	18	27	17	20	16	26	21	27	19	25	33	18
19	30	34	26	27	25	22	29	20	28	24	37	19	28	17	20	16	26	21	27	19	25	34	19
20	30	34	26	28	26	23	29	21	28	24	37	19	28	17	20	17	26	21	28	20	25	34	20
21	30	34	27	28	26	23	29	21	28	24	37	19	28	18	20	17	26	21	28	20	25	34	21
22	30	34	27	28	26	23	30	21	29	24	37	20	28	18	20	17	26	21	28	20	26	34	22
23	31	34	27	28	26	23	30	22	29	24	38	20	28	18	20	17	27	22	28	20	26	34	23
24	31	35	27	29	27	23	30	22	29	25	38	20	29	18	21	18	27	22	29	20	26	35	24
25	31	35	28	29	27	23	30	22	29	25	39	20	29	18	21	18	27	22	29	20	26	35	25
26	31	35	28	29	27	23	31	22	30	25	39	20	29	18	22	18	27	22	29	20	27	35	26
27	31	35	28	29	27	24	31	22	30	25	39	20	30	18	22	18	28	22	29	21	27	35	27
28	5 32	19 35	5 28	19 29	5 27	19 24	5 31	19 22	5 30	19 25	5 39	19 20	5 30	19 18	5 22	19 18	5 28	19 22	5 30	19 21	5 27	19 35	28

तारीख	अमृतसर		लुधियाना		अम्बाला		[illegible]		[illegible]		[illegible]		[illegible]		[illegible]		करनाल		सोनीपत		कठुआ		तारीख
	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	
जून	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	जून
29	5 32	19 35	5 29	19 29	5 28	19 24	5 32	19 22	5 31	19 25	5 40	19 20	5 30	19 18	5 23	19 18	5 28	19 22	5 30	19 21	5 28	19 35	29
30	5 33	19 35	5 29	19 29	5 28	19 24	5 32	19 22	5 31	19 25	5 40	19 20	5 31	19 18	5 23	19 18	5 29	19 22	5 30	19 21	5 28	19 35	30
जुला	5 33	19 35	5 30	19 29	5 29	19 24	5 32	19 22	5 31	19 25	5 41	19 21	5 31	19 18	5 23	19 18	5 29	19 22	5 31	19 21	5 28	19 35	जुला
2	34	35	29	29	30	24	32	22	32	25	41	21	31	18	24	18	30	22	31	21	29	35	2
3	34	35	30	29	30	24	33	22	32	25	41	21	32	18	24	18	30	22	32	21	29	35	3
4	34	35	30	29	31	24	34	22	33	25	41	21	32	18	25	18	30	22	32	21	30	35	4
5	35	35	31	29	31	24	34	22	33	25	42	21	33	18	25	18	31	22	32	20	30	35	5
6	35	35	31	29	31	23	34	22	33	25	43	20	33	18	26	18	31	22	33	20	31	35	6
7	36	35	33	29	32	23	32	22	34	24	42	21	33	18	25	18	32	22	33	20	31	34	7
8	36	34	33	29	32	23	35	21	34	24	43	20	34	18	26	18	32	22	34	20	32	34	8
9	37	34	33	29	3	23	35	21	35	24	43	20	34	17	27	17	33	22	34	20	32	34	9
10	37	34	34	2	33	22	36	21	35	24	44	20	35	17	27	17	33	21	35	20	33	34	10
11	38	34	3	28	34	22	36	21	36	24	44	20	35	17	28	17	34	21	35	19	33	33	11
12	38	33	35	28	34	22	37	20	36	23	45	20	36	17	28	17	34	21	36	19	34	33	12
13	39	33	36	27	35	22	38	20	37	23	45	19	36	16	29	17	35	21	36	19	34	33	13
14	39	33	36	27	35	21	38	20	37	23	46	19	37	16	29	16	35	20	37	19	35	32	14
15	40	32	37	27	36	21	39	20	38	22	46	19	37	16	30	16	36	20	37	18	35	32	15
16	41	32	37	26	36	21	39	19	39	22	47	18	38	16	30	16	36	20	38	18	36	32	16
17	41	32	37	26	37	21	40	19	39	22	47	18	38	16	31	15	37	19	38	18	37	31	17
18	42	31	38	26	38	20	40	19	40	21	48	18	39	15	32	15	37	19	39	17	37	31	18
19	42	31	39	25	38	20	41	18	40	21	48	17	39	14	32	14	38	18	39	17	38	30	19
20	43	30	39	25	39	20	41	18	41	20	49	17	40	14	33	14	38	18	40	16	38	30	20
21	44	30	39	24	39	19	42	17	41	20	49	17	40	14	33	13	39	18	41	16	39	29	21
22	44	29	40	24	40	19	42	17	42	19	50	16	41	13	34	13	40	17	41	15	40	29	22
23	45	29	41	23	40	18	43	16	42	19	50	16	42	13	34	12	40	17	42	15	40	28	23
24	45	29	41	23	41	18	43	16	43	18	51	15	42	12	35	12	41	16	42	14	41	28	24
25	46	28	42	22	42	17	44	15	44	18	51	15	43	11	36	11	41	15	43	14	42	27	25
26	47	27	43	22	42	17	44	15	44	17	52	14	43	11	36	11	42	15	43	13	42	26	26
27	47	26	44	21	42	16	45	14	45	17	32	14	44	10	37	10	42	14	44	13	43	26	27
28	48	26	44	21	43	16	45	14	45	16	53	13	44	10	37	10	43	14	45	12	44	25	28
29	48	25	44	20	44	15	46	13	46	15	53	13	45	09	38	09	44	13	45	11	44	24	29
30	49	24	45	19	45	14	46	13	47	15	54	12	45	08	39	08	44	12	46	11	45	23	30
31	5 50	19 23	5 46	19 18	5 45	19 13	5 47	19 12	5 47	19 14	5 54	19 12	5 46	19 08	5 39	19 08	5 45	19 12	5 46	19 10	5 46	19 23	31
अग.	5 50	19 23	5 46	19 18	5 46	19 13	5 47	19 12	5 48	19 13	5 55	19 11	5 47	19 07	5 40	19 07	5 45	19 11	5 47	19 09	5 46	19 22	अग.
2	51	22	47	17	46	12	48	11	48	12	55	10	47	06	40	06	46	10	47	09	47	21	2
3	52	21	48	16	47	11	49	10	49	12	56	10	48	06	41	05	47	09	48	08	48	20	3
4	52	20	49	15	47	10	50	09	50	11	56	09	48	05	42	05	47	09	49	07	48	19	4
5	53	20	49	15	48	10	50	09	50	10	57	08	49	04	42	04	48	08	49	06	49	19	5
6	54	19	49	13	49	09	51	08	51	09	57	08	49	03	43	03	48	07	50	05	50	18	6
7	54	18	50	12	49	08	51	07	51	08	58	07	50	03	43	02	49	06	50	05	50	17	7
8	55	17	51	11	50	07	52	06	52	08	58	06	50	02	44	01	50	05	51	04	51	16	8
9	55	16	51	11	51	06	52	05	53	07	59	05	51	01	45	00	50	05	51	03	52	15	9
10	56	15	52	05	51	05	53	04	53	06	5 59	04	52	19 00	45	19 00	51	04	52	02	52	14	10
11	57	14	53	09	52	04	53	03	54	05	6 00	04	52	18 59	46	18 59	51	03	53	01	53	13	11
12	57	14	54	08	52	03	54	02	54	04	00	03	53	58	46	58	52	02	53	19 00	54	12	12
13	58	12	54	07	53	92	54	01	55	03	01	02	53	57	47	57	52	01	54	18 59	54	11	13
14	5 59	19 11	5 55	19 06	5 54	19 01	5 55	19 00	5 55	18 02	6 01	19 01	5 54	18 57	5 48	18 56	5 53	19 00	5 54	18 58	5 55	19 10	14

तारीख	अमृतसर		लुधियाना		अम्बाला		रोहतक		कैथल		जयपुर		फरीदाबाद		हरिद्वार		करनाल		सोनीपत		कठुआ		तारीख
	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	
अग.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	अग.
15	5 59	19 10	5 56	19 04	5 55	18 59	5 57	18 58	5 56	19 01	6 02	18 59	5 54	18 56	5 49	18 54	5 54	18 59	5 55	18 58	5 56	19 09	15
16	6 00	09	56	04	55	59	57	58	57	19 00	02	59	55	55	49	54	54	58	55	57	56	08	16
17	01	08	56	03	55	58	57	57	57	18 59	03	58	55	54	49	53	55	57	56	56	57	07	17
18	01	07	56	02	56	57	58	56	58	58	04	58	56	53	50	52	55	56	56	55	58	06	18
19	02	06	57	19 01	56	56	58	55	58	57	04	57	56	52	50	51	56	55	57	54	58	04	19
20	02	05	59	18 59	57	55	59	54	5 59	56	05	56	57	51	51	50	56	54	57	53	59	03	20
21	03	04	59	59	58	54	5 59	53	5 59	55	05	55	57	50	52	49	57	53	58	52	6 00	02	21
22	04	03	5 59	58	58	53	6 00	52	6 00	54	05	54	58	49	52	48	58	52	5 59	50	00	01	22
23	04	02	6 00	57	59	52	00	51	01	53	06	53	5 59	48	53	47	58	51	5 59	49	01	19 00	23
24	05	19 00	01	55	5 59	51	01	50	01	52	07	52	5 59	47	53	46	59	50	6 00	48	02	18 59	24
25	06	18 59	01	55	6 00	50	01	49	02	51	07	51	6 00	46	54	54	59	49	6 00	47	02	57	25
26	06	58	02	54	00	49	02	48	02	49	07	50	6 00	44	54	43	6 00	48	01	46	03	56	26
27	07	57	03	52	01	47	02	47	03	48	08	49	6 01	43	55	42	00	46	01	45	04	55	27
28	07	54	04	50	01	46	48	27	03	47	08	47	01	42	56	40	01	45	02	44	04	54	28
29	08	54	04	49	02	45	03	45	04	46	08	47	02	41	56	40	01	44	02	43	05	53	29
30	09	53	04	49	03	44	04	44	04	45	09	46	02	40	57	39	02	43	03	42	05	51	30
31	6 09	18 52	6 05	18 48	6 04	18 43	6 04	18 42	6 05	18 44	6 09	18 465	6 03	18 39	5 57	18 39	6 02	18 42	6 03	18 41	6 06	18 50	31
सितं.	6 10	18 51	6 06	18 46	6 04	18 42	6 05	18 41	6 06	18 42	6 10	18 44	6 03	18 38	5 50	18 36	6 03	18 41	6 04	18 39	6 07	18 49	सितं.
2	10	50	06	46	05	41	05	40	06	41	10	42	04	37	51	35	04	40	04	38	07	48	2
3	11	48	06	45	05	40	06	39	07	40	11	41	04	36	51	34	04	38	05	37	08	46	3
4	12	47	07	43	06	39	06	33	07	39	11	40	05	34	52	33	05	37	05	36	09	45	4
5	12	46	09	41	06	37	07	37	08	38	11	39	05	33	52	32	05	36	06	35	09	44	5
6	13	45	08	41	07	36	07	36	08	37	12	38	05	32	53	30	06	35	06	34	10	42	6
7	13	43	09	40	07	35	08	34	09	35	12	37	06	31	53	29	06	34	07	32	10	41	7
8	14	42	10	38	08	34	08	32	09	34	13	36	06	30	54	28	07	32	07	31	11	40	8
9	15	41	11	36	08	32	09	31	10	33	13	35	07	29	54	27	07	31	08	30	12	39	9
10	15	39	11	35	09	31	09	30	10	32	14	34	07	27	55	26	08	30	08	29	12	37	10
11	16	38	12	18 34	09	29	10	29	11	30	14	33	08	26	55	24	08	29	09	28	13	36	11
12	16	37	12	17 33	10	28	10	28	11	29	14	31	08	25	56	23	08	27	09	26	14	35	12
13	17	36	13	18 31	10	27	11	27	12	28	15	30	09	24	57	22	09	26	10	25	14	33	13
14	17	34	13	31	11	26	11	26	12	27	15	29	09	23	57	21	10	25	10	24	15	32	14
15	18	33	13	30	11	24	12	25	13	25	16	28	10	21	58	19	10	24	11	23	15	31	15
16	19	32	14	28	12	23	12	24	14	24	16	27	10	20	58	18	11	23	11	22	16	29	16
17	19	30	15	25	12	22	13	22	14	23	17	26	11	19	5 59	17	12	21	12	20	17	28	17
18	20	29	15	25	13	21	13	21	15	22	17	25	11	18	6 00	16	12	20	12	19	17	27	18
19	20	28	16	24	13	19	14	20	15	20	17	23	12	17	01	14	13	19	13	18	18	25	19
20	21	26	17	22	14	18	14	19	16	19	18	22	12	15	01	13	13	18	13	17	18	24	20
21	22	25	18	20	14	17	15	18	16	18	18	21	13	14	02	12	14	16	14	16	19	23	21
22	22	24	18	19	15	16	15	17	17	17	19	20	13	13	02	11	14	15	14	14	19	21	22
23	23	23	18	19	16	14	16	16	17	16	19	19	14	12	03	09	15	14	15	13	20	20	23
24	23	21	19	18	16	13	16	14	18	14	20	18	14	11	03	08	15	13	15	12	21	18	24
25	24	20	20	15	17	12	17	13	18	13	20	17	15	10	04	07	16	11	16	11	21	17	25
26	25	19	20	14	17	11	17	12	19	12	20	15	15	08	04	06	16	10	16	09	22	16	26
27	25	17	21	13	18	09	18	11	19	11	21	14	16	07	12	04	17	09	17	08	22	15	27
28	26	16	21	12	18	08	18	09	20	09	21	13	16	06	12	03	17	08	17	07	23	13	28
29	27	15	22	10	19	07	19	08	21	08	22	12	17	05	13	02	18	06	18	06	24	12	29
30	6 27	18 13	6 23	18 10	6 19	18 06	6 19	18 07	6 21	18 07	6 22	18 11	6 17	18 04	6 13	18 01	6 19	18 05	6 19	18 05	6 25	18 11	30

तारीख	अमृतसर		लुधियाना		अम्बाला		[illegible]		[illegible]		[illegible]		[illegible]		[illegible]		करनाल		सोनीपत		कठुआ		तारीख
	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	
अक्तू	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	अक्तू
अक्तू	6 28	18 12	6 23	18 08	6 20	18 04	6 20	18 06	6 22	18 06	6 23	18 10	6 18	18 02	6 14	17 59	6 19	18 04	6 19	18 03	6 25	18 09	अक्तू
2	28	11	24	07	21	03	20	05	22	04	23	09	18	01	15	58	6 20	03	20	02	26	08	2
3	29	10	25	05	21	02	21	03	23	03	24	08	19	18 00	15	47	20	02	20	18 01	27	07	3
4	30	08	25	04	22	01	21	18 01	23	02	24	06	19	17 59	16	56	20	00	21	18 00	28	05	4
5	30	07	25	02	22	18 00	22	17 00	24	01	25	05	20	58	16	55	21	17 59	21	17 59	28	04	5
6	31	06	26	02	23	17 58	23	59	25	18 00	25	04	20	57	17	53	22	58	22	58	29	03	6
7	32	05	27	00	23	57	24	58	25	17 59	26	03	21	56	18	52	23	57	22	57	30	02	7
8	32	03	27	18 00	24	56	24	57	26	57	26	02	21	55	18	51	23	56	23	55	30	18 00	8
9	33	02	27	17 59	25	55	25	56	26	56	27	01	22	53	19	50	24	55	24	54	31	17 59	9
10	34	01	29	57	25	54	25	55	27	55	27	18 00	23	52	19	49	24	53	24	53	32	58	10
11	34	18 00	30	55	26	53	26	54	28	54	28	17 59	23	51	20	48	25	52	25	52	33	57	11
12	35	17 59	30	55	27	51	26	53	28	53	28	58	24	50	21	46	26	51	25	51	33	55	12
13	36	57	31	54	27	50	27	52	29	52	29	57	24	49	21	45	26	50	26	50	34	54	13
14	36	56	32	52	28	49	27	51	29	51	29	56	25	48	22	44	27	49	26	49	35	53	14
15	37	55	33	51	29	48	28	50	30	50	30	55	25	47	23	43	27	48	27	48	35	52	15
16	38	54	33	50	29	47	28	49	31	48	30	54	26	46	23	42	28	47	28	47	36	51	16
17	39	53	33	49	30	46	29	48	31	47	31	53	27	45	24	41	29	46	28	46	37	49	17
18	39	52	34	48	30	45	30	47	32	46	31	52	27	44	24	40	29	45	29	45	38	48	18
19	40	50	35	48	31	44	31	46	33	45	32	51	28	43	25	39	30	44	30	44	38	47	19
20	41	49	35	46	32	43	31	45	33	44	33	50	29	42	26	38	31	43	30	43	39	46	20
21	42	48	36	45	32	42	32	44	34	43	33	49	29	41	26	37	31	42	31	42	40	45	21
22	42	47	37	44	33	41	33	43	35	42	34	48	30	40	27	36	32	41	32	41	41	44	22
23	43	46	38	42	34	40	34	42	35	41	34	47	30	39	28	35	33	40	32	40	41	43	23
24	44	45	39	42	35	39	34	41	36	40	35	47	31	38	29	34	33	39	33	39	42	42	24
25	45	44	40	41	35	38	35	40	37	39	36	45	32	37	29	33	34	38	34	38	43	41	25
26	45	43	40	39	36	37	35	39	38	39	36	45	32	36	30	32	35	37	34	37	44	40	26
27	46	42	41	38	37	36	36	38	38	38	37	44	33	36	31	31	35	36	35	36	45	39	27
28	47	41	42	37	37	35	36	37	39	37	37	43	34	35	31	31	36	35	36	35	45	38	28
29	48	40	42	37	38	34	37	36	40	36	37	42	34	34	31	30	37	34	36	34	46	37	29
30	49	39	43	36	39	35	38	35	40	35	39	42	35	33	33	28	38	33	37	34	47	36	30
31	6 49	17 38	6 45	17 33	6 40	17 32	6 39	17 34	6 41	17 34	6 40	17 40	6 36	17 32	6 34	17 27	6 38	17 32	6 38	17 33	6 48	17 35	31
नवं.	6 50	17 38	6 45	17 33	6 40	17 32	6 39	17 34	6 42	17 33	6 40	17 40	6 37	17 32	6 34	17 27	6 39	17 32	6 38	17 32	6 49	17 34	नवं.
2	51	37	45	33	41	31	40	34	43	33	41	39	37	31	34	26	40	31	39	31	50	33	2
3	52	36	47	32	42	31	41	33	43	32	41	39	38	30	36	25	41	30	40	31	50	32	3
4	53	35	48	31	43	30	42	32	44	31	42	38	39	29	37	24	41	29	41	30	51	31	4
5	53	34	48	31	43	30	42	32	45	30	42	38	39	29	37	24	42	29	41	29	52	30	5
6	54	33	48	30	44	29	43	31	46	30	44	37	40	28	38	23	43	28	42	28	53	30	6
7	55	33	50	30	45	28	44	30	47	29	44	36	41	27	39	22	44	27	43	28	54	29	7
8	56	32	51	29	46	27	45	29	47	28	45	36	42	27	40	21	45	27	44	27	55	28	8
9	57	31	52	28	47	27	45	29	48	28	46	35	42	26	41	21	45	26	45	27	56	27	9
10	58	31	52	27	47	26	46	28	49	27	46	35	43	26	41	20	46	25	45	26	57	27	10
11	6 59	30	53	27	48	25	47	28	50	27	47	34	44	25	42	20	47	25	46	25	57	26	11
12	7 00	29	54	26	49	24	48	27	51	26	48	33	45	25	43	19	48	24	47	25	58	25	12
13	00	29	54	26	50	23	48	27	51	25	49	33	46	24	44	18	49	24	48	24	59	25	13
14	01	28	55	26	51	23	49	26	52	25	49	33	46	24	45	18	49	23	48	24	7 00	24	14
15	02	28	56	25	52	22	50	26	53	24	50	32	47	23	46	17	50	23	49	23	01	24	15
16	7 03	17 27	6 58	17 24	6 53	17 22	6 51	17 25	6 54	17 24	6 51	17 32	6 48	17 23	6 46	17 17	6 51	17 22	6 50	17 23	7 02	17 23	16

तारीख	अमृतसर		लुधियाना		अम्बाला		रोहतक		कैथल		जयपुर		फरीदाबाद		हरिद्वार		करनाल		सोनीपत		कठुआ		तारीख
	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	
नवं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	नवं.
17	7 04	17 26	6 58	17 24	6 53	17 21	6 52	17 24	6 55	17 24	6 52	17 31	6 49	17 22	6 47	17 16	6 52	17 22	6 51	17 23	7 03	17 23	17
18	05	26	6 59	23	54	21	53	24	56	23	52	31	49	22	48	16	53	21	52	22	04	22	18
19	06	26	7 00	23	55	21	54	23	56	23	53	31	50	22	49	16	53	21	52	22	05	22	19
20	07	25	01	22	56	21	55	23	57	22	54	30	51	21	50	15	54	21	53	22	05	21	20
21	07	25	01	22	57	20	55	23	58	22	55	30	52	21	51	15	55	20	54	21	06	21	21
22	08	24	02	22	57	20	56	22	6 59	22	55	30	53	21	51	15	56	20	55	21	07	20	22
23	09	24	04	22	58	20	57	22	7 00	22	56	30	53	21	52	14	57	20	56	21	08	20	23
24	10	24	05	21	6 59	20	58	22	01	21	57	29	54	20	53	14	58	19	57	21	09	20	24
25	11	23	06	21	7 00	19	6 59	22	01	21	58	29	55	20	54	14	58	19	57	20	10	20	25
26	12	23	06	21	01	19	7 00	22	02	21	58	29	56	20	55	14	59	19	58	20	11	19	26
27	13	23	07	21	02	19	01	22	03	21	6 59	29	57	20	55	13	7 00	19	6 59	20	12	19	27
28	14	23	08	20	03	19	02	22	04	21	7 00	29	57	20	56	13	01	19	7 00	20	13	19	28
29	14	23	08	20	03	19	02	21	05	21	01	29	58	20	57	13	02	19	7 01	20	13	19	29
30	7 15	17 23	7 09	17 20	7 04	17 19	7 03	17 21	7 05	17 21	7 02	17 29	6 59	17 20	6 58	17 13	7 02	17 18	7 01	17 20	7 14	17 19	30
दिसं.	7 16	17 22	7 10	17 20	7 05	17 19	7 03	17 21	7 06	17 20	7 02	17 29	7 00	17 20	6 59	17 13	7 03	17 18	7 02	17 20	7 15	17 18	दिसं.
2	17	22	11	20	06	19	04	21	07	20	03	29	01	20	6 59	13	04	18	03	20	16	18	2
3	18	22	11	20	06	19	04	21	08	21	04	29	01	20	7 00	13	05	18	04	20	17	18	3
4	19	22	12	20	07	19	05	21	09	21	05	29	02	20	01	13	06	18	04	20	18	18	4
5	19	22	13	20	08	19	06	21	09	21	06	29	03	20	02	13	06	18	05	20	18	18	5
6	20	22	14	20	09	19	07	21	10	21	07	29	03	20	03	13	07	19	06	20	19	18	6
7	21	22	14	20	09	19	07	21	11	21	07	29	04	20	03	13	08	19	07	20	20	19	7
8	22	23	15	20	10	19	08	22	12	21	08	30	05	20	04	13	09	19	07	20	21	19	8
9	22	23	16	20	11	19	09	22	12	21	09	30	06	21	05	13	09	19	08	21	21	19	9
10	23	23	17	20	12	19	10	22	13	21	09	30	06	21	06	14	10	19	09	21	22	19	10
11	24	23	18	20	12	19	10	22	14	22	09	30	07	21	06	14	11	19	09	21	23	19	11
12	25	23	19	21	13	20	11	23	14	22	10	30	08	21	07	14	11	19	10	21	24	19	12
13	25	24	19	21	14	20	12	23	15	22	11	31	08	22	08	14	12	20	11	22	24	20	13
14	26	24	20	21	14	20	13	23	16	23	11	31	09	22	08	15	13	20	11	22	25	20	14
15	27	24	21	22	15	21	13	24	16	23	12	31	10	22	09	15	13	21	12	22	26	20	15
16	27	25	22	22	16	21	14	24	17	23	13	32	10	23	10	15	14	21	13	23	26	21	16
17	28	25	22	22	16	21	14	24	17	24	13	32	11	23	10	16	15	21	13	23	27	21	17
18	28	25	23	23	17	22	15	25	18	24	14	32	11	24	11	16	15	22	14	23	28	21	18
19	29	26	23	23	17	22	15	25	19	24	14	33	12	24	11	17	16	22	14	24	28	22	19
20	30	26	24	23	18	23	16	26	19	25	14	33	12	24	12	17	16	23	15	24	29	22	20
21	30	27	24	24	18	23	16	26	20	25	15	34	13	25	12	17	17	23	15	25	29	23	21
22	13	27	25	25	19	14	17	27	20	26	16	34	13	25	13	18	17	24	16	25	30	23	22
23	31	28	25	25	19	24	17	27	21	26	16	35	14	26	13	18	18	24	16	26	30	24	23
24	32	28	25	26	20	25	18	28	21	27	17	35	14	27	14	19	18	25	17	26	31	24	24
25	32	29	25	26	20	26	18	28	21	28	17	36	15	27	14	20	19	25	17	27	31	25	25
26	32	29	26	27	21	26	19	29	22	28	18	37	15	28	15	20	19	26	18	28	31	25	26
27	33	30	26	27	21	27	19	29	22	29	18	37	16	28	15	21	19	26	18	28	32	26	27
28	33	31	27	28	21	27	20	30	23	29	18	38	16	29	15	21	20	27	18	29	32	27	28
29	33	31	27	28	22	28	20	30	23	30	19	38	16	30	16	22	20	28	19	29	33	27	29
30	34	32	28	29	22	28	21	31	23	31	19	39	17	30	16	23	21	28	19	30	33	28	30
31	7 34	17 33	7 28	17 30	7 22	17 28	7 21	17 31	7 24	17 31	7 20	17 40	7 17	17 31	7 16	17 23	7 21	17 29	7 19	17 31	7 33	17 29	31

चन्द्रमा-स्पष्ट [illegible] काल जानना

नीचे चन्द्रमा के अंश-कला की तालिका के सामने चन्द्र संचार की मेषादि बारह राशियों की तालिका तथा उनके द्वारा केतु, सूर्य, भौमादि ग्रहों द्वारा भोग्य दशा वर्षों की सारिणी लिख रहे हैं। **ध्यान रहे,** आपके द्वारा किया गया चन्द्र स्पष्ट नितान्त शुद्ध होना चाहिए। चन्द्र स्पष्ट निकालने की सरल विधि हमारे कार्यालय से प्रकाशित ज्योतिष तत्त्व का अवलोकन करें॥

सारिणी नं० I (क)

चंद्र स्पष्ट		चन्द्र राशि मेष-सिंह-धनु				चन्द्र राशि वृष-कन्या-मकर				चन्द्र राशि मिथुन-तुला-कुम्भ				चन्द्र राशि कर्क-वृश्चिक-मीन			
अंश-कला		भोग्य	वर्ष	मास	दिन	भोग्य	वर्ष	मास	दिन	भोग्य	वर्ष	मास	दिन	भोग्य	वर्ष	मास	दिन
००	००	केतु	७	०	०	सूर्य	४	६	०	मंग	३	६	०	गुरु	४	०	०
०	१०		६	१०	२९		४	५	३		३	४	२८		३	९	१८
०	२०		६	९	२७		४	४	६		३	३	२७		३	७	६
०	३०		६	८	२६		४	३	९		३	२	२५		३	४	२४
०	४०		६	७	२४		४	२	१२		३	१	२४		३	२	१२
०	५०		६	६	२३		४	१	१५		३	०	२२		३	०	०
१	००		६	५	२१		४	०	१८		२	११	२१		२	९	१८
१	१०		६	४	२०		३	११	२१		२	१०	१९		२	७	६
१	२०		६	३	१८		३	१०	२४		२	९	१८		२	४	२४
१	३०		६	२	१७		३	९	२७		२	८	१६		२	२	१२
१	४०		६	१	१५		३	९	०		२	७	१५		२	०	०
१	५०		६	०	१४	*	३	८	३		२	६	१३		१	९	१८
२	००		५	११	१२		३	७	६		२	५	१२		१	७	६
२	१०		५	१०	११		३	६	९		२	४	१०		१	४	२४
२	२०		५	९	९		३	५	१२		२	३	९		१	२	१२
२	३०		५	८	८		३	४	१५		२	२	७		१	०	०
२	४०		५	७	६		३	३	१८		२	१	६		०	९	१८
२	५०		५	६	५		३	२	२१		२	०	४		०	७	६
३	००		५	५	३		३	१	२४		१	११	३		०	४	२४
३	१०		५	४	२		३	०	२७		१	१०	१	गुरु	०	२	१२
३	२०		५	३	००		३	०	०		१	९	०	शनि	१९	०	०
३	३०		५	१	२९		२	११	३		१	७	२८		१८	९	४
३	४०		५	०	२७		२	१०	६		१	६	२७		१८	६	९
३	५०		४	११	२६		२	९	९		१	५	२५		१८	३	१३
४	००		४	१०	२४		२	८	१२		१	४	२४		१८	०	१८
४	१०		४	९	२३		२	७	१५		१	३	२२		१७	९	२२
४	२०		४	८	२१		२	६	१८		१	२	२१		१७	६	२७
४	३०		४	७	२०		२	५	२१		१	१	१९		१७	४	१
४	४०		४	६	१८		२	४	२४		१	०	१८		१७	१	६
४	५०		४	५	१७		२	३	२७		०	११	१६		१६	१०	१०
५	००		४	४	१५		२	३	०		०	१०	१५		१६	७	१५
५	१०		४	३	१४		२	२	३		०	९	१३		१६	४	१९
५	२०		४	२	१२		२	१	६		०	८	१२		१६	१	२४
५	३०		४	१	११		२	०	९		०	७	१०		१५	१०	२८
५	४०		४	०	९		१	११	१२		०	६	९		१५	८	३
५	५०		३	११	८		१	१०	१५		०	५	७		१५	५	७
६	००		३	१०	६		१	९	१८		०	४	६		१५	२	१२
६	१०		३	९	५		१	८	२१		०	३	४		१४	११	१६
६	२०		३	८	३		१	७	२४		०	२	३		१४	८	२१
६	३०		३	७	२		१	६	२७	मंग	०	१	१		१४	५	२५
६	४०		३	६	०		१	६	०	राहु	१८	०	०		१४	३	०
६	५०		३	४	२९		१	५	३		१७	९	९		१४	०	४
७	००		३	३	२७		१	४	६		१७	६	१८		१३	९	९
७	१०		३	२	२६		१	३	९		१७	३	२७		१३	६	१३
७	२०		३	१	२४		१	२	१२		१७	१	६		१३	३	१८
७	३०	केतु	३	०	२३	सूर्य	१	१	१५	राहु	१६	१०	१५	शनि	१३	०	२२
७	४०	केतु	२	११	२१	सूर्य	१	०	१८	राहु	१६	७	२४	शनि	१२	९	२७
७	५०		२	१०	२०		०	११	२१		१६	५	३		१२	७	१
८	००		२	९	१८		०	१०	२४		१६	२	१२		१२	४	६
८	१०		२	८	१७		०	९	२७		१५	११	२१		१२	१	१०
८	२०		२	७	१५		०	९	०		१५	९	०		११	१०	१५
८	३०		२	६	१४		०	८	३		१५	६	९		११	७	१९
८	४०		२	५	१२		०	७	६		१५	३	१८		११	४	२४
८	५०		२	४	११		०	६	९		१५	०	२७		११	१	२८
९	०		२	३	९		०	५	१२		१४	१०	६		१०	११	३
९	१०		२	२	८		०	४	१५		१४	७	१५		१०	८	७
९	२०		२	१	६		०	३	१८		१४	४	२४		१०	५	१२
९	३०		२	०	५		०	२	२१		१४	२	३		१०	२	१६
९	४०		१	११	३		०	१	२४		१३	११	१२		९	११	२१
९	५०		१	१०	२	सूर्य	०	०	२७		१३	८	२१		९	८	२५
१०	०		१	९	०	चंद्र	१०	०	०		१३	६	०		९	६	०
१०	१०		१	७	२९		९	१०	१५		१३	३	९		९	३	४
१०	२०		१	६	२७		९	९	०		१३	०	१८		९	०	९
१०	३०		१	५	२६		९	७	१५		१२	९	२७		८	९	१३
१०	४०		१	४	२४		९	६	०		१२	७	६		८	६	१८
१०	५०		१	३	२३		९	४	१५		१२	४	१५		८	३	२२
११	००		१	२	२१		९	३	०		१२	१	२४		८	०	२७
११	१०		१	१	२०		९	१	१५		११	११	३		७	१०	१
११	२०		१	०	१८		९	०	०		११	८	१२		७	७	६
११	३०		०	११	१७		८	१०	१५		११	५	२१		७	४	१०
११	४०		०	१०	१५		८	९	०		११	३	०		७	१	१५
११	५०		०	९	१४		८	७	१५		११	०	९		६	१०	१९
१२	००		०	८	१२		८	६	०		१०	९	१८		६	७	२४
१२	१०		०	७	११		८	४	१५		१०	६	२७		६	४	२८
१२	२०		०	६	९		८	३	०		१०	४	६		६	२	३
१२	३०		०	५	८		८	१	१५		१०	१	१५		५	११	७
१२	४०		०	४	६		८	०	०		९	१०	२४		५	८	१२
१२	५०		०	३	५		७	१०	१५		९	८	३		५	५	१६
१३	०		०	२	३		७	९	०		९	५	१२		५	२	२१
१३	१०	केतु	०	१	२		७	७	१५		९	२	२१		४	११	२५
१३	२०	शुक्र	२०	०	०		७	६	०		९	०	०		४	९	०
१३	३०		१९	९	०		७	४	१५		८	९	९		४	६	४
१३	४०		१९	६	०		७	३	०		८	६	१८		४	३	९
१३	५०		१९	३	०		७	१	१५		८	३	२७		४	०	१३
१४	००		१९	०	०		७	०	०		८	१	६		३	९	१८
१४	१०		१८	९	०		६	१०	१५		७	१०	१५		३	६	२२
१४	२०		१८	६	०		६	९	०		७	७	२४		३	३	२७
१४	३०		१८	३	०		६	७	१५		७	५	३		३	१	१
१४	४०		१८	०	०		६	६	०		७	२	१२		२	१०	६
१४	५०		१७	९	०		६	४	१५		६	११	२१		२	७	१०
१५	०		१७	६	०		६	३	०		६	९	०		२	४	१५
१५	१०	शुक्र	१७	३	०	चंद्र	६	१	१५	राहु	६	६	९	शनि	२	१	१९

चंद्र स्पष्ट		चन्द्र राशि मेष-सिंह-धनु				चन्द्र राशि वृष-कन्या-मकर				चन्द्र राशि मिथुन-तुला-कुम्भ				चन्द्र राशि कर्क-वृश्चिक-मीन			
अंश	कला	भोग्य	वर्ष	मास	दिन	भोग्य	वर्ष	मास	दिन	भोग्य	वर्ष	मास	दिन	भोग्य	वर्ष	मास	दिन
१५	२०	शुक्र	१७	०	०	चन्द्र	६	०	०	राहु	६	३	१८	शनि	१	१०	२४
१५	३०		१६	९	०		५	१०	१५		६	०	२७		१	७	२८
१५	४०		१६	६	०		५	९	०		५	१०	६		१	५	३
१५	५०		१६	३	०		५	७	१५		५	७	१५		१	२	७
१६	०		१६	०	०		५	६	०		५	४	२४		०	११	१२
१६	१०		१५	९	०		५	४	१५		५	२	३		०	८	१६
१६	२०		१५	६	०		५	३	०		४	११	१२		०	५	२१
१६	३०		१५	३	०		५	१	१५		४	८	२१	शनि	०	२	२६
१६	४०		१५	०	०		५	०	०		४	६	०	बुध	१७	०	०
१६	५०		१४	९	०		४	१०	१५		४	३	९		१६	९	१३
१७	०		१४	६	०		४	९	०		४	०	१८		१६	६	२७
१७	१०		१४	३	०		४	७	१५		३	९	२७		१६	४	१०
१७	२०		१४	०	०		४	६	०		३	७	६		१६	१	२४
१७	३०		१३	९	०		४	४	१५		३	४	१५		१५	११	७
१७	४०		१३	६	०		४	३	०		३	१	२४		१५	८	२१
१७	५०		१३	३	०		४	१	१५		२	११	३		१५	६	४
१८	०		१३	०	०		४	०	०		२	८	१२		१५	३	१८
१८	१०		१२	९	०		३	१०	१५		२	५	२१		१५	१	१
१८	२०		१२	६	०		३	९	०		२	३	०		१४	१०	१५
१८	३०		१२	३	०		३	७	१५		२	०	९		१४	७	२८
१८	४०		१२	०	०		३	६	०		१	९	१८		१४	५	१२
१८	५०		११	९	०		३	४	१५		१	६	२७		१४	२	२५
१९	०		११	६	०		३	३	०		१	४	६		१४	०	९
१९	१०		११	३	००		३	१	१५		१	१	१५		१३	९	२२
१९	२०		११	०	०		३	०	०		०	१०	२४		१३	७	६
१९	३०		१०	९	०		२	१०	१५		०	८	३		१३	४	१९
१९	४०		१०	६	०		२	९	०		०	५	१२		१३	२	३
१९	५०		१०	३	०		२	७	१५	राहु	०	२	२१		१२	११	१६
२०	०		१०	०	०		२	६	०	गुरु	१६	०	०		१२	९	०
२०	१०		९	९	०		२	४	१५		१५	९	१८		१२	६	१३
२०	२०		९	६	०		२	३	०		१५	७	६		१२	३	२७
२०	३०		९	३	०		२	१	१५		१५	४	२४		१२	१	१०
२०	४०		९	०	०		२	०	०		१५	२	१२		११	१०	२४
२०	५०		८	९	०		१	१०	१५		१५	०	०		११	८	७
२१	०		८	६	०		१	९	०		१४	९	१८		११	५	२१
२१	१०		८	३	०		१	७	१५		१४	७	६		११	३	४
२१	२०		८	०	०		१	६	०		१४	४	२४		११	०	१८
२१	३०		७	९	०		१	४	१५		१४	२	१२		१०	१०	१
२१	४०		७	६	०		१	३	०		१४	०	०		१०	७	१५
२१	५०		७	३	०		१	१	१५		१३	९	१८		१०	४	२८
२२	०		७	०	०		१	०	०		१३	७	६		१०	२	१२
२२	१०		६	९	०		०	१०	१५		१३	४	२४		९	११	२५
२२	२०		६	६	०		०	९	०		१३	२	१२		९	९	९
२२	३०		६	३	०		०	७	१५		१३	०	०		९	६	२२
२२	४०		६	०	०		०	६	०		१२	९	१८		९	४	६
२२	५०		५	९	०		०	४	१५		१२	७	६		९	१	१९
२३	०		५	६	०		०	३	०		१२	४	२४		८	११	३
२३	१०		५	३	०	चंद्र	०	१	१५		१२	२	१२		८	८	१६
२३	२०		५	०	०	मंग	७	०	०		१२	०	०		८	६	०
२३	३०		४	९	०		६	१०	२९		११	९	१८		८	३	१३
२३	४०		४	६	०		६	९	२७		११	७	६		८	०	२७
२३	५०		४	३	०		६	८	२६		११	४	२४		७	१०	१०
२४	०		४	०	०		६	७	२४		११	२	१२		७	७	२४
२४	१०		३	९	०		६	६	२३		११	०	०		७	५	७
२४	२०	शुक्र	३	६	०	मंग	६	५	२१	गुरु	१०	९	१८	बुध	७	२	२१

चंद्र स्पष्ट		चन्द्र राशि मेष-सिंह-धनु				चन्द्र राशि वृष-कन्या-मकर				चन्द्र राशि मिथुन-तुला-कुम्भ				चन्द्र राशि कर्क-वृश्चिक-मीन			
अंश	कला	भोग्य	वर्ष	मास	दिन	भोग्य	वर्ष	मास	दिन	भोग्य	वर्ष	मास	दिन	भोग्य	वर्ष	मास	दिन
२४	३०	शुक्र	३	३	०	मंग	६	४	२०	गुरु	१०	७	६	बुध	७	०	४
२४	४०		३	०	०		६	३	१८		१०	४	२४		६	९	१८
२४	५०		२	९	०		६	२	१७		१०	२	१२		६	७	१
२५	०		२	६	०		६	१	१५		१०	०	०		६	४	१५
२५	१०		२	३	०		६	०	१४		९	९	१८		६	१	२८
२५	२०		२	०	०		५	११	१२		९	७	६		५	११	१२
२५	३०		१	९	०		५	१०	११		९	४	२४		५	८	२५
२५	४०		१	६	०		५	९	९		९	२	१२		५	६	९
२५	५०		१	३	०		५	८	८		९	०	०		५	३	२२
२६	०		१	०	०		५	७	६		८	९	१८		५	१	६
२६	१०		०	९	०		५	६	५		८	७	६		४	१०	१९
२६	२०		०	६	०		५	५	३		८	४	२४		४	८	३
२६	३०	शुक्र	०	३	०		५	४	२		८	२	१२		४	५	१६
२६	४०	सूर्य	६	०	०		५	३	०		८	०	०		४	३	०
२६	५०		५	११	३		५	१	२९		७	९	१८		४	०	१३
२७	००		५	१०	६		५	०	२७		७	७	६		३	९	२७
२७	१०		५	९	९		४	११	२६		७	४	२४		३	७	१०
२७	२०		५	८	१२		४	१०	२४		७	२	१२		३	४	२४
२७	३०		५	७	१५		४	९	२३		७	०	०		३	२	७
२७	४०		५	६	१८		४	८	२१		६	९	१८		२	११	२१
२७	५०		५	५	२१		४	७	२०		६	७	६		२	९	४
२८	०		५	४	२४		४	६	१८		६	४	२४		२	६	१८
२८	१०		५	३	२७		४	५	१७		६	२	१२		२	४	१
२८	२०		५	३	०		४	४	१५		६	०	०		२	१	१५
२८	३०		५	२	३		४	३	१४		५	९	१८		१	१०	२८
२८	४०		५	१	६		४	२	१२		५	७	६		१	८	१२
२८	५०		५	०	९		४	१	११		५	४	२४		१	५	२५
२९	०		४	११	१२		४	०	९		५	२	१२		१	३	९
२९	१०		४	१०	१५		३	११	८		५	०	०		१	०	२२
२९	२०		४	९	१८		३	१०	६		४	९	१८		०	१०	०६
२९	३०		४	८	२१		३	९	५		४	७	६		०	७	१९
२९	४०		४	७	२४		३	८	३		४	४	२४		०	५	०३
२९	५०		४	६	२७		३	७	२		४	२	१२		०	२	१७
३०	०	सूर्य	४	६	०	मंग	३	६	०	गुरु	४	०	०	बुध	०	०	०

सारिणी नं० II (ख)

अनुपातिक चन्द्र कलाओं के अनुसार शेष भोग्य दशा

कला	केतु		शुक्र		सूर्य		चन्द्र		मंगल		राहु		गुरु		शनि		बुध		कला
	मा.	दि.	मा.	दि.	मा.	दि.	मा.	दि.	मा.	दि.	मा.	दि.	मा.	दि.	मा.	दि.	मा.	दि.	
१	०	०३	०	०९	०	०३	०	०५	०	०३	०	०८	०	०७	०	०९	०	०८	१
२	०	०६	०	१८	०	०५	०	०९	०	०६	०	१६	०	१४	०	१७	०	१५	२
३	०	०९	०	२७	०	०८	०	१४	०	०९	०	२४	०	२२	०	२६	०	२३	३
४	०	१३	१	०६	०	११	०	१८	०	१३	१	०२	०	२९	१	०४	१	०१	४
५	०	१६	१	१५	०	१४	०	२३	०	१६	१	११	१	०६	१	१३	१	०८	५
६	०	१९	१	२४	०	१६	०	२७	०	१९	१	१९	१	१३	१	२१	१	१६	६
७	०	२२	२	०३	०	१९	१	०२	०	२२	१	२७	१	२०	२	००	१	२४	७
८	०	२५	२	१२	०	२२	१	०६	०	२५	२	०५	१	२८	२	०८	२	०१	८
९	०	२८	२	२१	०	२४	१	११	०	२८	२	१३	२	०५	२	१७	२	०९	९
१०	१	०१	३	००	०	२७	१	१५	१	०१	२	२१	२	१२	२	२६	२	१७	१०

ग्रहों की दशाऽन्तर्दशा का ज्ञान

नीचे लिखे चक्रों में अपने जन्म नक्षत्र देखें। जिस ग्रह के नीचे जन्मनक्षत्र होगा, उसी ग्रह की दशा जन्म समय में होगी और प्रत्येक ग्रह की दशा के वर्ष भी चक्र में लिखे हुए हैं। दशा का भुक्त भोग्य ज्ञान–जन्म समय जो नक्षत्र हो उसका भयात (जन्म समय तक जितना नक्षत्र व्यतीत हो गया हो) और भभोग (कुल नक्षत्र) बनाओ फिर उसके पलादि बनाकर भयात के पलों को जन्म दशा के वर्षों से गुणा कर दो और भभोग के पलों से भाग दो, लब्ध व्यतीत दशा के वर्ष आवेंगे। शेष को 12 से गुणा कर भभोग से भाग दो लब्ध मास निकलेंगे, शेष को 30 से गुणा कर भभोग से भाग दो, लब्ध दिन आवेंगे, शेष को 60 से गुणा कर भभोग से भाग दो, लब्ध घड़ी आवेंगी, शेष को 60 से गुणा कर भभोग से भाग दो, लब्ध पल इत्यादि आवेंगे। यह भुक्त दशा के वर्ष मासादि आवेंगे, जन्म समय की दशा के कुल वर्षों में से घटा दो, लब्ध भोग्य दशा आवेगी, इसमें आगामी ग्रहों की दशा के वर्षों को जोड़ते जाने से दशा चक्र हो जाएगा। अधिक सूक्ष्म रूप से दशाऽन्तरदशा का ज्ञान करने के लिए हमारे कार्यालय से 'ज्योतिष तत्त्व' पुस्तक मंगवाकर पढ़ें। मूल्य 150 रु.

सूर्यदशावर्ष ६				चन्द्रदशावर्ष १०				भौमदशावर्ष ७			
कृति उ.फा. उ.षा.				रोहि. हस्त श्रवण				मृग. चित्रा. धनि.			
ग्रह	वर्ष	मा.	दि.	ग्रह	वर्ष	मा.	दि.	ग्रह	वर्ष	मा.	दि.
सू.	०	३	१८	चं.	०	१०	०	मं.	०	४	२७
चं.	०	६	०	मं.	०	७	०	रा.	१	०	१८
मं.	०	४	६	रा.	१	६	०	बृ.	०	११	६
रा.	०	१०	२४	बृ.	१	४	०	श.	१	१	९
गु.	०	९	१८	श.	१	७	०	बु.	०	११	२७
श.	०	११	१२	बु.	१	५	०	के.	०	४	२७
बु.	०	१०	६	के.	०	७	०	शु.	१	२	०
के.	०	४	६	शु.	१	८	०	सू.	०	४	६
शु.	१	०	०	सू.	०	६	०	चं.	०	७	०

राहुदशावर्ष १८				गुरुदशावर्ष १६				शनिदशावर्ष १९			
आर्द्रा. स्वा. शत.				पुन. विशा. पू.भा.				पुष्य. अनु. उ. भा.			
ग्रह	वर्ष	मा.	दि.	ग्रह	वर्ष	मा.	दि.	ग्रह	वर्ष	मा.	दि.
रा.	२	८	१२	गु.	२	१	१८	श.	३	०	३
बृ.	२	४	२४	श.	२	६	१२	बु.	२	८	९
श.	२	१०	६	बु.	२	३	६	के.	१	१	९
बु.	२	६	१८	के.	०	११	६	शु.	३	२	०
के.	१	०	१८	शु.	२	८	०	सू.	०	११	१२
शु.	३	०	०	सू.	०	९	१८	चं.	१	७	०
सू.	०	१०	२४	चं.	१	४	०	मं.	१	१	९
चं.	१	६	०	मं.	०	११	६	रा.	२	१०	६
मं.	१	०	१८	रा.	२	४	२४	बृ.	२	६	१२

बुधदशावर्ष १७				केतुदशावर्ष ७				शुक्रदशावर्ष २०			
श्ले. ज्ये. रेवती				मघा. मूल. अश्वि				पू. फा. पू. षा. भर.			
ग्रह	वर्ष	मा.	दि.	ग्रह	वर्ष	मा.	दि.	ग्रह	वर्ष	मा.	दि.
बु.	२	४	२७	के.	०	४	२७	शु.	३	४	०
के.	०	११	२७	शु.	१	२	०	सू.	१	०	०
शु.	२	१०	०	सू.	०	४	६	चं.	१	८	०
सू.	०	१०	६	चं.	०	७	०	मं.	१	२	०
चं.	१	५	०	मं.	०	४	२७	रा.	३	०	०
मं.	०	११	२७	रा.	१	०	१८	बृ.	२	८	०
रा.	२	६	१८	बृ.	०	११	६	श.	३	२	०
बृ.	२	३	६	श.	१	१	९	बु.	२	१०	०
श.	२	८	९	बु.	०	११	२७	के.	१	२	०

योगिनीदशाऽन्तर्दशाज्ञान के लिए चक्र

मंगला १			पिंगला २			धान्या ३			भ्रामरी ४		
मा.	१२	चं.	मा.	२४	सू.	मा.	३६	बृ.	मा.	४८	मं.
मं.	०	१०	पिं.	१	१०	धा.	३	०	भ्रा.	५	१०
पिं.	०	२०	धा.	२	०	भ्रा.	४	०	भ.	६	२०
धा.	१	०	भ्रा.	२	२०	भ.	५	०	उ.	८	०
भ्रा.	१	१०	भ.	३	१०	उ.	६	०	सि.	९	१०
भ.	१	२०	उ.	४	०	सि.	७	०	सं.	१०	२०
उ.	२	०	सि.	४	२०	सं.	८	०	मं.	१	१०
सि.	२	१०	सं.	५	१०	मं.	१	०	पि.	२	२०
सं.	२	२०	मं.	०	२०	पिं.	२	०	धा.	४	०
श्रवण,आर्द्रा चित्रा			पुन. स्वा. धनि.			पुष्य, विशा शत.			श्ले. अनु. पू.भा. अश्वि		

भद्रिका ५			उल्का ६			सिद्धा ७			संकटा ८		
मा.	६०	बु.	मा.	७२	श.	मा.	८४	शु.	मा.	९६	के.
भ.	८	१०	उ.	१२	०	सि.	१६	१०	सं.	२१	१०
उ.	१०	०	सि.	१४	०	सं.	१८	२०	मं.	२	२०
सि.	११	२०	सं.	१६	०	मं.	२	१०	पिं.	५	१०
सं.	१३	१०	मं.	२	०	पिं.	४	२०	धा.	८	०
मं.	१	२०	पि.	४	०	धा.	७	०	भ्रा.	१०	२०
पि.	३	१०	धा.	६	०	भ्रा.	९	१०	भ.	१३	१०
धा.	५	०	भ्रा.	८	०	भ.	११	२०	उ.	१६	०
भ्रा.	६	२०	भ.	१०	०	उ.	१४	०	सि.	१८	२०
मघा. ज्ये. उ.भा. भर.			पू.फा. मूल रेव, कृति			उ.फा. पू.षा. रोह			हस्त उ.षा. मृग		

योगिनी दशा विचार–योगिनी दशा कुल ३६ वर्ष की होती है। प्रत्येक ३६ वर्षों के पश्चात् पुनः उसी दशा की पुनरावृत्ति होती है। योगनी दशाओं में क्रमशः मंगला, पिंगला, धान्या, भ्रामरी, भद्रिका, उल्का, सिद्धा और संकटा–ये आठ नाम हैं। इनकी वर्ष संख्या भी क्रमानुसार 1+2+3+4+5+6+7+8=36 वर्ष होते हैं। मंगला, पिंगला आदि योगिनी दशाएँ अपने नामानुसार ही शुभाशुभ फल प्रदान करती हैं।

योगिनी दशा की विधि–अश्विनी नक्षत्र से आरम्भ करके अपने जन्म नक्षत्र तक की संख्या में ३ जोड़कर ८ द्वारा भाग देने पर शेष १ बचे तो मंगला, २ बचें तो पिंगला, ३ बचे तो धान्या एवं च शेष ८ या ० बचे तो संकटा की दशा होगी। उदाहरणार्थ–यदि जन्म नक्षत्र अनुराधा हो, तो अश्विनी से अनुराधा तक गिनने पर १७ की संख्या हुई। इनमें ३ जमा करने पर कुल योग २० मिला। इसको ८ द्वारा भाग देने पर २ लब्धि तथा शेष ४ बचे। पूर्वोक्त क्रमानुसार मंगला से गिनने पर चौथी दशा–अर्थात् भ्रामरी की दशा (जन्मकाल से) प्रारम्भ होगी। योगिनी की भुक्त-भोग्य दशा अन्तरदशा जानने के लिए ज्योतिष तत्त्व पढ़ें।

अन्तर्दशामासादि शुभ दशा–मंगला, धा. भ. सि., **नेष्टदशा**–पिंगला, भ्रामरी, उल्का, संकटा।

अन्तर्दशा निकालने की विधि–जब किसी ग्रह की अन्तरदशा निकालनी हो तो उस ग्रह के वर्षों को पृथक २ हर एक ग्रह की दशा के वर्षों से गुणा कर महादशा के वर्षों से भाग दें (विंशोत्तरी १२०) (अष्टोत्तरी १०८) (योगिनी ३६) भाग देने से जो अंक आवे अन्तरदशा के वर्ष, मासादि आवेंगे।

ग्रहों की अन्तरदशा से प्रत्यन्तर दशा ज्ञात करना

भारतीय ज्योतिष में फलित कथन के लिए विभिन्न प्रकार की दशाओं का वर्णन मिलता है। परन्तु वर्तमान काल में केवल तीन प्रकार की दशाओं का प्रचलन मिलता है। **विंशोत्तरी दशा, योगिनी दशा** और **अष्टोतरी** दशा। अष्टोत्तरी दशा की अवधि 108 वर्ष की होती है। योगिनी दशा की एक आवृत्ति 36 वर्ष की ओर विंशोत्तरी दशा का कुल मान **120 वर्षों** का होता है। अष्टोत्तरी दशा दक्षिण भारत, महाराष्ट्र आदि में, **योगिनी दशाओं** का प्रचलन उत्तर भारत-विशेष रूप से हिमाचल प्रदेश में अधिक पाया जाता है, जबकि **विंशोतरी दशा** पद्धति का प्रचलन समस्त भारत वर्ष में पाया जाता है। प्रस्तुत चक्रों में विंशोत्तरी में प्रत्येक ग्रह की अन्तर-दशा में प्रत्यन्तर दशाएँ निकालने की प्रक्रिया बतलाई गई है। किसी ग्रह की प्रत्यन्तर दशा निकल आने से फलादेश में और अधिक सूक्ष्मता आ जाती है। दशाऽन्तरदशाओं के फलादेश का वर्णन आप हमारी पुस्तक **ज्योतिष तत्त्व फलित खण्ड भाग (दो)** में पढ़ सकते हैं। विंशोतरी दशा पद्धति के अन्तर्गत ग्रहों की महादशा एवं अन्तर्दशाओं के चक्र गत पृष्ठों में लिख चुके हैं। यहाँ पर पुनरावलोकन कर सकते हैं-

ग्रह	सूर्य	चन्द्र	मंग.	राहु	गुरू	शनि	बुध	केतु	शुक्र
वर्ष	6	10	7	18	16	19	17	7	20

सूर्यान्तर दशा चक्र–6 वर्ष

ग्रह	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.
वर्ष	0	0	0	0	0	0	0	0	1
मास	3	6	4	10	9	11	10	4	0
दिन	18	0	6	24	18	12	6	6	0

सूर्य मध्ये सूर्य का प्रत्यन्तर

ग्रह	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.
मास	0	0	0	0	0	0	0	0	0
दिन	5	9	6	16	14	17	15	6	18
घंटे	9	0	7	4	9	2	7	7	00
मिन्ट	36	0	12	48	36	24	12	12	00

सूर्य मध्ये चन्द्र का प्रत्यन्तर

ग्रह	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.
मास	0	0	0	0	0	0	0	1	0
दिन	15	10	27	24	28	25	10	0	9
घंटे	0	12	0	0	12	12	12	0	0
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

सूर्य मध्ये मंगल का प्रत्यन्तर

ग्रह	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.
मास	0	0	0	0	0	0	0	0	0
दिन	7	18	16	19	17	7	21	6	10
घंटे	8	21	19	22	20	8	0	7	12
मिन्ट	24	36	12	48	24	24	0	12	0

सूर्य मध्ये राहु का प्रत्यन्तर

ग्रह	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.
मास	1	1	1	1	0	1	0	0	0
दिन	18	13	21	15	18	24	16	27	18
घंटे	14	4	7	21	21	0	4	0	21
मिन्ट	24	48	12	36	36	0	48	0	36

सूर्य मध्ये गुरु का प्रत्यन्तर

ग्रह	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.
मास	1	1	1	0	1	0	0	0	1
दिन	8	15	10	16	18	14	24	16	13
घंटे	9	14	19	19	0	9	0	19	4
मिन्ट	36	24	12	12	0	36	0	12	48

सूर्य मध्ये शनि का प्रत्यन्तर

ग्रह	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.
मास	1	1	0	1	0	0	0	1	1
दिन	24	18	19	27	17	28	19	21	15
घंटे	3	10	22	0	2	12	22	7	14
मिन्ट	36	48	48	0	24	0	48	12	24

सूर्य मध्ये बुध का प्रत्यन्तर

ग्रह	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.
मास	1	0	1	0	0	0	1	1	1
दिन	13	17	21	15	25	17	15	10	18
घंटे	8	20	0	7	12	20	21	19	10
मिन्ट	24	24	0	12	0	24	36	12	48

सूर्य मध्ये केतु का प्रत्यन्तर

ग्रह	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.
मास	0	0	0	0	0	0	0	0	0
दिन	7	21	6	10	7	18	16	19	17
घंटे	8	0	7	12	8	21	19	22	20
मिन्ट	24	0	12	0	24	36	12	48	24

सूर्य मध्ये शुक्र का प्रत्यन्तर

ग्रह	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.
मास	2	0	1	0	1	1	1	1	0
दिन	0	18	0	21	24	18	27	21	21
घंटे	0	0	0	0	0	0	0	0	0

चंद्र की अन्तर्दशाएँ (10 वर्ष)

ग्रह	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.
वर्ष	०	०	१	१	१	१	०	१	०
मास	१०	७	६	४	७	५	७	८	६
दिन	०	०	०	०	०	०	०	०	०

चंद्र मध्ये चंद्र का प्रत्यन्तर

ग्रह	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.
मास	0	0	1	1	1	1	0	1	0
दिन	25	17	15	10	17	12	17	20	15
घंटे	0	12	0	0	12	12	12	0	0
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

चंद्र मध्ये मंगल का प्रत्यन्तर

ग्रह	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.
मास	0	1	0	1	0	0	1	0	0
दिन	12	1	28	3	29	12	5	10	17
घंटे	6	12	0	6	18	6	0	12	12
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

चंद्र मध्ये राहु का प्रत्यन्तर

ग्रह	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.
मास	2	2	2	2	1	3	0	1	1
दिन	21	12	25	16	1	0	27	15	1
घंटे	0	0	12	12	12	0	0	0	12
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

चंद्र मध्ये गुरू का प्रत्यन्तर

ग्रह	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.
मास	2	2	2	0	2	0	1	0	2
दिन	4	16	8	28	20	24	10	28	12
घंटे	0	0	0	0	0	0	0	0	0
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

चंद्र मध्ये शनि का प्रत्यन्तर

ग्रह	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.
मास	3	2	1	3	0	1	1	2	2
दिन	0	20	3	5	28	17	3	25	16
घंटे	6	18	6	0	12	12	6	12	0
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

चंद्र मध्ये बुध का प्रत्यन्तर

ग्रह	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.
मास	2	0	2	0	1	0	2	2	2
दिन	12	29	25	25	12	29	16	8	20
घंटे	6	18	0	12	12	18	12	0	18
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

चंद्र मध्ये केतु का प्रत्यन्तर

ग्रह	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.
मास	0	1	0	0	0	1	0	1	0
दिन	12	5	10	17	12	1	28	3	29
घंटे	6	0	12	12	6	12	0	6	18
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

चंद्र मध्ये शुक्र का प्रत्यन्तर

ग्रह	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.
मास	3	1	1	1	3	2	3	2	1
दिन	10	0	20	5	0	20	5	25	5
घंटे	0	0	0	0	0	0	0	0	0
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

चंद्र मध्ये सूर्य का प्रत्यन्तर

ग्रह	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.
मास	0	0	0	0	0	0	0	0	1
दिन	9	15	10	27	24	28	25	10	0
घंटे	0	0	12	0	0	12	12	12	0
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

मंगल की अन्तर्दशाएँ (7 वर्ष)

ग्रह	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.
वर्ष	०	१	०	१	०	०	१	०	०
मास	४	०	११	१	११	४	२	४	७
दिन	२७	१८	६	९	२७	२७	०	६	०

मंगल मध्ये मंगल का प्रत्यन्तर

ग्रह	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.
मास	0	0	0	0	0	0	0	0	0
दिन	8	22	19	23	20	8	24	7	12
घंटे	13	1	14	36	19	13	12	8	6
मिन्ट	48	12	24	36	48	48	0	24	0

मंगल मध्ये राहु का प्रत्यन्तर

ग्रह	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.
मास	1	1	1	1	0	2	0	1	0
दिन	26	20	29	23	22	3	18	1	22
घंटे	16	9	20	13	1	0	21	12	1
मिन्ट	48	36	24	12	12	0	36	0	12

मंगल मध्ये गुरू का प्रत्यन्तर

ग्रह	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.
मास	1	1	1	0	1	0	0	0	1
दिन	14	23	17	19	26	16	28	19	20
घंटे	19	4	14	14	0	19	0	14	9
मिन्ट	12	48	24	24	0	12	0	24	36

मंगल मध्ये शनि का प्रत्यन्तर

ग्रह	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.
मास	2	1	0	2	0	1	0	1	1
दिन	3	26	23	6	19	3	23	29	23
घंटे	4	12	6	12	22	6	6	20	4
मिन्ट	12	36	36	00	48	0	36	24	48

मंगल मध्ये बुध का प्रत्यन्तर

ग्रह	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.
मास	1	1	1	0	0	0	1	1	1
दिन	20	20	29	17	29	20	23	17	26
घंटे	13	19	12	20	18	19	13	14	12
मिन्ट	48	48	0	24	00	48	12	24	36

मंगल मध्ये केतु का प्रत्यन्तर

ग्रह	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.
मास	0	0	0	0	0	0	0	0	0
दिन	8	24	7	12	8	22	19	23	20
घंटे	13	12	8	6	13	1	14	6	19
मिन्ट	48	00	24	0	48	12	24	36	48

मंगल मध्ये शुक्र का प्रत्यन्तर

ग्रह	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.
मास	2	0	1	0	2	1	2	1	0
दिन	10	21	5	24	3	26	6	29	24
घंटे	0	0	0	12	0	0	12	12	12
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

मंगल मध्ये सूर्य का प्रत्यन्तर

ग्रह	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.
मास	0	0	0	0	0	0	0	0	0
दिन	6	10	7	18	16	19	17	7	21
घंटे	7	12	8	21	19	22	20	8	0
मिन्ट	12	0	24	36	12	48	24	24	0

मंगल मध्ये चंद्र का प्रत्यन्तर

ग्रह	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.
मास	0	0	1	0	1	0	0	1	0
दिन	17	12	1	28	3	29	12	5	10
घंटे	12	6	12	0	6	18	6	0	12
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

राहु की अन्तर्दशाएँ (18 वर्ष)

ग्रह	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.
वर्ष	२	२	२	२	१	३	०	१	१
मास	८	४	१०	६	०	०	१०	६	०
दिन	१२	२४	६	१८	१८	०	२४	०	१८

राहु मध्ये राहु का प्रत्यन्तर

ग्रह	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.
मास	4	4	5	4	1	5	1	2	1
दिन	25	9	3	17	26	12	18	21	26
घंटे	19	14	21	16	16	0	14	0	16
मिन्ट	12	24	36	48	48	0	24	0	48

राहु मध्ये गुरू का प्रत्यन्तर

ग्रह	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.
मास	3	4	4	1	4	1	2	1	4
दिन	25	16	2	20	24	13	12	20	9
घंटे	4	19	9	9	0	4	0	9	14
मिन्ट	48	12	36	36	0	48	0	36	24

राहु मध्ये शनि का प्रत्यन्तर

ग्रह	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.
मास	5	4	1	5	1	2	1	5	4
दिन	12	25	29	21	21	25	29	3	16
घंटे	10	8	20	0	7	12	20	21	19
मिन्ट	48	24	24	0	12	0	24	36	12

राहु मध्ये बुध का प्रत्यन्तर

ग्रह	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.
मास	4	1	5	1	2	1	4	4	4
दिन	10	23	3	15	16	23	17	2	25
घंटे	1	13	0	21	12	13	16	9	8
मिन्ट	12	12	0	36	0	12	48	36	24

राहु मध्ये केतु का प्रत्यन्तर

ग्रह	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.
मास	0	2	0	1	0	1	1	1	1
दिन	22	3	18	1	22	26	20	29	23
घंटे	1	0	21	12	1	16	9	20	13
मिन्ट	12	0	36	00	12	48	36	24	12

राहु मध्ये शुक्र का प्रत्यन्तर

ग्रह	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.
मास	6	1	3	2	5	4	5	5	2
दिन	0	24	0	3	12	24	21	3	3
घंटे	0	0	0	0	0	0	0	0	0
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

राहु मध्ये सूर्य का प्रत्यन्तर

ग्रह	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.
मास	0	0	0	1	1	1	1	0	1
दिन	16	27	18	18	13	21	15	18	24
घंटे	4	0	21	14	4	7	21	21	0
मिन्ट	48	0	36	24	48	12	36	36	0

राहु मध्ये चंद्र का प्रत्यन्तर

ग्रह	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.
मास	1	1	2	2	2	2	1	3	0
दिन	15	1	21	12	25	16	1	0	27
घंटे	0	12	0	0	12	12	12	0	0
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

राहु मध्ये मंगल का प्रत्यन्तर

ग्रह	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.
मास	0	1	1	1	1	0	2	0	1
दिन	22	26	20	29	23	22	3	18	1
घंटे	1	16	9	20	13	1	0	21	12
मिन्ट	12	48	36	24	12	12	0	36	0

गुरू की अन्तर्दशाएँ (16 वर्ष)

ग्रह	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.
वर्ष	2	2	2	0	2	0	1	0	2
मास	1	6	3	11	8	9	4	11	4
दिन	18	12	6	6	0	18	0	6	24

गुरू मध्ये गुरू का प्रत्यन्तर

ग्रह	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.
मास	3	4	3	1	4	1	2	1	3
दिन	12	1	18	14	8	8	4	14	25
घंटे	9	14	19	19	0	9	0	19	4
मिन्ट	36	24	12	12	0	36	0	12	48

गुरू मध्ये शनि का प्रत्यन्तर

ग्रह	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.
मास	4	4	1	5	1	2	1	4	4
दिन	24	9	23	2	15	16	23	16	1
घंटे	9	4	4	0	14	0	4	19	14
मिन्ट	36	48	48	0	24	0	48	12	24

गुरू मध्ये बुध का प्रत्यन्तर

ग्रह	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.
मास	3	1	4	1	2	1	4	3	4
दिन	25	17	16	10	8	17	2	18	9
घंटे	14	14	0	19	0	14	9	19	4
मिन्ट	24	24	0	12	0	24	36	12	48

गुरू मध्ये केतु का प्रत्यन्तर

ग्रह	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.
मास	0	1	0	0	0	1	1	1	1
दिन	19	26	16	28	19	20	14	23	17
घंटे	14	0	19	0	14	9	19	4	14
मिन्ट	24	0	12	0	24	36	12	48	24

गुरू मध्ये शुक्र का प्रत्यन्तर

ग्रह	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.
मास	5	1	2	1	4	4	5	4	1
दिन	10	18	20	26	24	8	2	16	26
घंटे	0	0	0	0	0	0	0	0	0
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

गुरू मध्ये सूर्य का प्रत्यन्तर

ग्रह	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.
मास	0	0	0	1	1	1	1	0	1
दिन	14	24	16	13	8	15	10	16	18
घंटे	9	0	19	4	9	14	19	19	0
मिन्ट	36	0	12	48	36	24	12	12	0

गुरू मध्ये चंद्र का प्रत्यन्तर

ग्रह	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.
मास	1	0	2	2	2	2	0	2	0
दिन	10	28	12	4	16	8	28	20	24
घंटे	0	0	0	0	0	0	0	0	0
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

गुरू मध्ये मंगल का प्रत्यन्तर

ग्रह	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.
मास	0	1	1	1	1	0	1	0	0
दिन	16	20	14	23	17	19	26	16	28
घंटे	14	9	19	4	14	14	0	19	0
मिन्ट	24	36	12	48	24	24	0	12	0

गुरू मध्ये राहु का प्रत्यन्तर

ग्रह	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.
मास	4	3	4	4	1	4	1	2	1
दिन	9	25	16	2	20	24	13	12	20
घंटे	14	4	19	9	9	0	4	0	9
मिन्ट	24	48	12	36	36	0	48	0	36

शनि की अन्तर्दशाएँ (19 वर्ष)

ग्रह	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.
वर्ष	३	२	१	३	०	१	१	२	२
मास	०	८	१	२	११	७	१	१०	६
दिन	३	९	९	०	१२	०	९	६	१२

शनि मध्ये शनि का प्रत्यन्तर

ग्रह	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.
मास	5	5	2	6	1	3	2	5	4
दिन	21	3	3	0	24	0	3	12	24
घंटे	11	10	4	12	3	6	4	10	9
मिन्ट	24	12	12	0	36	0	12	48	36

शनि मध्ये बुध का प्रत्यन्तर

ग्रह	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.
मास	4	1	5	1	2	1	4	4	5
दिन	17	26	11	18	20	26	25	9	3
घंटे	6	12	12	10	18	12	8	4	10
मिन्ट	36	36	0	48	0	36	24	48	12

शनि मध्ये केतु का प्रत्यन्तर

ग्रह	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.
मास	0	2	0	1	0	1	1	2	1
दिन	23	6	19	3	23	29	23	3	26
घंटे	6	12	22	6	6	20	4	4	12
मिन्ट	36	0	48	0	36	24	48	12	36

शनि मध्ये शुक्र का प्रत्यन्तर

ग्रह	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.
मास	6	1	3	2	5	5	6	5	2
दिन	10	27	5	6	21	2	0	11	6
घंटे	0	0	0	12	0	0	12	12	12
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

शनि मध्ये सूर्य का प्रत्यन्तर

ग्रह	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.
मास	0	0	0	1	1	1	1	0	1
दिन	17	28	19	21	15	24	18	19	27
घंटे	2	12	22	7	14	3	10	22	0
मिन्ट	24	0	48	12	24	36	48	48	0

शनि मध्ये चंद्र का प्रत्यन्तर

ग्रह	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.
मास	1	1	2	2	3	2	1	3	0
दिन	17	3	25	16	0	20	3	5	28
घंटे	12	6	12	0	6	18	6	0	12
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

शनि मध्ये मंगल का प्रत्यन्तर

ग्रह	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.
मास	0	1	1	2	1	0	2	0	1
दिन	23	29	23	3	26	23	6	19	3
घंटे	6	20	4	4	12	6	12	22	6
मिन्ट	36	24	48	12	36	36	0	48	0

शनि मध्ये राहु का प्रत्यन्तर

ग्रह	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.
मास	5	4	5	4	1	5	1	2	1
दिन	3	16	12	25	29	21	21	25	29
घंटे	21	19	10	8	20	0	7	12	20
मिन्ट	36	12	48	24	24	0	12	0	24

शनि मध्ये गुरु का प्रत्यन्तर

ग्रह	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.
मास	4	4	4	1	5	1	2	1	4
दिन	1	24	9	23	2	15	16	23	16
घंटे	14	9	4	4	0	14	0	4	19
मिन्ट	24	36	48	48	0	24	0	48	12

बुध की अन्तर्दशाएँ (17 वर्ष)

ग्रह	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.
वर्ष	२	०	२	०	१	०	२	२	२
मास	४	११	१०	१०	५	११	६	३	८
दिन	२७	२७	०	६	०	२७	१८	६	९

बुध मध्ये बुध का प्रत्यन्तर

ग्रह	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.
मास	4	1	4	1	2	1	4	3	4
दिन	2	20	24	13	12	20	10	25	17
घंटे	19	13	12	8	6	13	1	14	6
मिन्ट	48	48	0	24	0	48	12	24	36

बुध मध्ये केतु का प्रत्यन्तर

ग्रह	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.
मास	0	1	0	0	0	1	1	5	1
दिन	20	29	17	29	20	23	17	26	20
घंटे	19	12	20	18	19	13	14	12	13
मिन्ट	48	0	24	0	48	12	24	36	48

बुध मध्ये शुक्र का प्रत्यन्तर

ग्रह	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.
मास	5	1	2	1	5	4	5	4	1
दिन	20	21	25	29	3	16	11	24	29
घंटे	0	0	0	12	0	0	12	12	12
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

बुध मध्ये सूर्य का प्रत्यन्तर

ग्रह	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.
मास	0	0	0	1	1	1	1	0	1
दिन	15	25	17	15	10	18	13	17	21
घंटे	7	12	20	21	19	10	8	20	0
मिन्ट	12	0	24	36	12	48	24	24	0

बुध मध्ये चंद्र का प्रत्यन्तर

ग्रह	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.
मास	1	0	2	2	2	2	0	2	0
दिन	12	29	16	8	20	12	29	25	25
घंटे	12	18	12	0	18	6	18	0	12
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

बुध मध्ये मंगल का प्रत्यन्तर

ग्रह	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.
मास	0	1	1	1	1	0	1	0	0
दिन	20	23	17	26	20	20	29	17	29
घंटे	19	13	14	12	13	19	12	20	18
मिन्ट	48	12	24	36	48	48	0	24	0

बुध मध्ये राहु का प्रत्यन्तर

ग्रह	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.
मास	4	4	4	4	1	5	1	2	1
दिन	17	2	25	10	23	3	15	16	23
घंटे	16	9	8	01	13	0	21	12	13
मिन्ट	48	36	24	12	12	0	36	0	12

बुध मध्ये गुरू का प्रत्यन्तर

ग्रह	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.
मास	3	4	3	1	4	1	2	1	4
दिन	18	9	25	17	16	10	8	17	2
घंटे	19	4	14	14	0	19	0	14	9
मिन्ट	12	48	24	24	0	12	0	24	36

बुध मध्ये शनि का प्रत्यन्तर

ग्रह	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.
मास	5	4	1	5	1	2	1	4	4
दिन	3	17	26	11	18	20	26	25	9
घंटे	10	6	12	12	10	18	12	8	4
मिन्ट	12	36	36	0	48	0	24	36	48

केतु की अन्तर्दशाएँ (7 वर्ष)

ग्रह	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.
वर्ष	0	1	0	0	0	1	0	1	0
मास	4	2	4	7	4	0	11	1	11
दिन	27	0	6	0	27	18	6	9	27

केतु मध्ये केतु का प्रत्यन्तर

ग्रह	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.
मास	0	0	0	0	0	0	0	0	0
दिन	8	24	7	12	8	22	19	23	20
घंटे	13	12	8	6	13	1	14	6	19
मिन्ट	48	0	24	0	48	12	24	36	48

केतु मध्ये शुक्र का प्रत्यन्तर

ग्रह	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.
मास	2	0	1	0	2	1	2	1	0
दिन	10	21	5	24	3	26	6	29	24
घंटे	0	0	0	12	0	0	12	12	12
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

केतु मध्ये सूर्य का प्रत्यन्तर

ग्रह	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.
मास	0	0	0	0	0	0	0	0	0
दिन	6	10	7	18	16	19	17	7	21
घंटे	7	12	8	21	48	22	20	8	0
मिन्ट	12	0	24	36	0	48	24	24	0

केतु मध्ये चंद्र का प्रत्यन्तर

ग्रह	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.
मास	0	0	1	0	1	0	0	1	0
दिन	17	12	1	28	3	29	12	5	10
घंटे	12	6	12	0	6	18	6	0	12
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

केतु मध्ये मंगल का प्रत्यन्तर

ग्रह	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.
मास	0	0	0	0	0	0	0	0	0
दिन	8	22	19	23	20	8	24	7	12
घंटे	13	1	14	6	19	13	12	8	6
मिन्ट	48	12	24	36	48	48	0	24	0

केतु मध्ये राहु का प्रत्यन्तर

ग्रह	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.
मास	1	1	1	1	0	2	0	1	0
दिन	26	20	29	23	22	3	18	1	22
घंटे	16	9	20	13	1	0	21	12	1
मिन्ट	48	36	24	12	12	0	36	0	12

केतु मध्ये गुरु का प्रत्यन्तर

ग्रह	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.
मास	1	1	1	0	1	0	0	0	1
दिन	14	23	17	19	26	16	28	19	20
घंटे	19	4	14	14	0	19	0	14	9
मिन्ट	12	48	24	24	0	12	0	24	36

केतु मध्ये शनि का प्रत्यन्तर

ग्रह	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.
मास	2	1	0	2	0	1	0	1	1
दिन	3	6	23	6	19	3	23	29	23
घंटे	4	12	6	12	22	6	6	20	4
मिन्ट	12	36	36	0	48	0	36	24	48

केतु मध्ये बुध का प्रत्यन्तर

ग्रह	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.
मास	1	0	1	0	0	0	1	1	1
दिन	20	20	29	17	29	20	23	17	26
घंटे	13	19	12	20	18	19	13	14	12
मिन्ट	48	48	0	24	0	48	12	24	36

शुक्र की अन्तर्दशाएँ (20 वर्ष)

ग्रह	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.
वर्ष	३	१	१	१	३	२	३	२	१
मास	४	०	८	२	०	८	२	१०	२
दिन	०	०	०	०	०	०	०	०	०

शुक्र मध्ये शुक्र का प्रत्यन्तर

ग्रह	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.
मास	6	2	3	2	6	5	6	5	2
दिन	20	0	10	10	0	10	10	20	10
घंटे	0	0	0	0	0	0	0	0	0
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

शुक्र मध्ये सूर्य का प्रत्यन्तर

ग्रह	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.
मास	0	1	0	1	1	1	1	0	2
दिन	18	0	21	24	18	27	21	21	0
घंटे	0	0	0	0	0	0	0	0	0
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

शुक्र मध्ये चंद्र का प्रत्यन्तर

ग्रह	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.
मास	1	1	3	2	3	2	1	3	1
दिन	20	5	0	20	5	25	5	10	0
घंटे	0	0	0	0	0	0	0	0	0

शुक्र मध्ये मंगल का प्रत्यन्तर

ग्रह	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.
मास	0	2	1	2	1	0	2	0	1
दिन	24	3	26	6	29	24	10	21	5
घंटे	12	0	0	12	12	12	0	0	0
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

शुक्र मध्ये राहु का प्रत्यन्तर

ग्रह	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.
मास	5	4	5	5	2	6	1	3	2
दिन	12	24	21	3	3	0	24	0	3
घंटे	0	0	0	0	0	0	0	0	0
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

शुक्र मध्ये गुरु का प्रत्यन्तर

ग्रह	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.
मास	4	5	4	1	5	1	2	1	4
दिन	8	2	16	26	10	18	20	26	24
घंटे	0	0	0	0	0	0	0	0	0
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

शुक्र मध्ये शनि का प्रत्यन्तर

ग्रह	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.
मास	6	5	2	6	1	3	2	5	5
दिन	0	11	6	10	27	5	6	21	2
घंटे	12	12	12	0	0	0	12	0	0
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

शुक्र मध्ये बुध का प्रत्यन्तर

ग्रह	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.
मास	4	1	5	1	2	1	5	4	5
दिन	24	29	20	21	25	29	3	16	11
घंटे	12	12	0	0	0	12	0	0	12
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

शुक्र मध्ये केतु का प्रत्यन्तर

ग्रह	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.
मास	0	2	0	1	0	2	1	2	1
दिन	24	10	21	5	24	3	26	6	29
घंटे	12	0	0	0	12	0	0	12	12
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

पण्डित देवी दयालु ज्योतिष
संस्थान वालों की

श्री दशवर्षीय
पंचाँग

(दैनिक ग्रह स्पष्ट सहित)
संवत् 2051 से संवत् 2060 तक
(सन् 1994 से 2003-04 ई. तक)

सम्पादकः पण्डित पन्ना लाल ज्योतिषी

हमारे ज्योतिष संस्थान से गत वर्ष से प्रकाशित 'अर्ध शताब्दी पंचाँग'-(सं. 2001 से सं. 2050 तक) को ज्योतिष के विद्वानों द्वारा हृदय से सराहा गया है, जिसके कारण प्रथम संस्करण हाथों हाथ बिका है। द्वितीय संशोधित संस्करण भी छप गया है। ज्योतिष विद्वानों के विशेष अनुरोध पर अब संवत् 2051 से 2060 तक वर्षों की दस वर्षीय पंचाँग भी आकर्षक बढ़िया जिल्द में छपकर तैयार हो चुकी है। मूल्य 250/-

अब संवत् 2061 से 2070 (सन् 2004-2014 ई. तक) दशवर्षीय पंचांग भी छपकर तैयार है। मूल्य 400 ₹

शीघ्र प्रकाश्य
संवत् २०७१ से २०८०तक

मंगवाने का पता-
जनरल बुक डिपो (पब्लिशर्ज़)
अड्डा होशियारपुर, जालन्धर शहर (पं.)
(पिन-144008)
फोन : (0181) 2457959 (Office)

स्वप्न-शकुन का शुभाशुभ फल विचार

दैनिक जीवन में मनुष्य की जो वासनाएँ अतृप्त अथवा अपूर्ण रहती हैं, वही स्वप्न रूप में येन-केन प्रकारेण पूर्ति का आभास कराती हैं। सूर्योदय के कुछ पूर्व अथवा ब्रह्म मुहूर्त्त में देखे गए स्वप्न का फल दस दिनों में, रात्रि के प्रथम प्रहर में देखे गए स्वप्न का फल एक वर्ष के पश्चात्, रात्रि के दूसरे प्रहर में देखे गए का फल छ: मास में, तृतीय प्रहर में देखे गए स्वप्न का फल तीन मास के बाद, रात्रि के अन्तिम प्रहर में देखे गए स्वप्न का फल एक मास में प्रकट होता है, जबकि दिन में देखे गए स्वप्न विश्वसनीय नहीं होते। शुभ सांकेतिक स्वप्न देखने के पश्चात् सोना नहीं चाहिए, शेष रात्रि भजन, चिंतन में बितानी चाहिए तथा किसी को अपना स्वप्न बताना भी नहीं चाहिए। इसके विपरीत अशुभ स्वप्न देखने के बाद फिर सो जाएं तथा प्रात:काल यदि उस अशुभ स्वप्न की स्मृति ताजी रहे तो गुरुजनों को उसे बतला दें। अशुभ निवारण के लिए गायत्री पाठ, स्नानदानादि, अनुष्ठानादि कार्यों का सम्पादन करें। अधिक जानकारी हेतु हमारे कार्यालय से स्वप्न ज्योतिष विज्ञान सम्बन्धी पुस्तक मंगवाएँ।

स्वप्न	फल	स्वप्न	फल	स्वप्न	फल	स्वप्न	फल	स्वप्न	फल
अंगूठी पहनना	धन लाभ व प्रसन्नता	कुत्ता देखना	उत्तम मित्र प्राप्त हो	छाता देखना	चिन्ताओं से छुटकारा	तर्पण करते देखना	मृत्यु की सूचना	धुआं देखना	कार्य में विघ्न
आम का वृक्ष देखना	सन्तान सुख	कढ़ाई करते देखना	प्रेम या व्यापार में सफलता	छंटनी देखना	पदोन्नति	तारे देखना	मनोरथ सिद्धि	धूप देखना	पदोन्नति, लाभ हो
अतिथि देखना	आकस्मिक विपत्ति	कबाब खाना	अपयश/विवाद	जख्म देखना	परेशानियां	तूफान देखना	परेशानी बढ़े	नदी में गिरना	फिक्र, चिन्ता
आकाश से गिरना	मान हानि, चिन्ता	कब्रिस्तान देखना	प्रतिष्ठा वृद्धि	जादूगर देखना	अशुभ लक्षण	तीर्थ देखना	धार्मिक खींच	नंगा देखना	कष्ट प्राप्ति
अर्थी देखना	रोग मुक्त	खून करना	संकट आना	जहाज देखना	परेशानी दूर हो	तोता देखना	धन लाभ	नदी का पानी पीना	राज्य से लाभ
अग्नि देखना	पित्त सम्बन्धी रोग	खिलौना देखना	सुख शान्ति	जिन्दा जलना	धन की प्राप्ति	तलाक होते देखना	दाम्पत्य सुख में बाधा	न्यायालय देखना	झगड़े में सफलता
अपने को मृत देखना	आयु वृद्धि	खेत देखना	संकट पूर्ण	जल देखना	मान सम्मान	तरक्की होते देखना	योजनाओं में सफलता	नदी देखना	आकांक्षा पूर्ति
आग जलाकर पकड़ना	व्यर्थ व्यय हो	खरगोश देखना	स्त्री से मिलाप	ज्वर पीड़ित	स्वास्थ्य ठीक	तराजू देखना	व्यापार लाभ	नवयौवना देखना	प्रेम सम्बन्ध
आत्महत्या करना	दीर्घायु	गुरु देखना	कार्य सफलता	जुआ खेलना	धन हानि	ताश खेलना	व्यापार लाभ	नाखून काटना	रोग से मुक्ति
आपरेशन देखना	रोग के चिन्ह	गोबर देखना	पशु लाभ हो	जेब काटना	धन हानि	ताला बन्द देखना	कार्यों में रुकावट	नाव में बैठना	झूठा आरोप लगे
अस्त्र-शस्त्र देखना	दु:खों से निपटारा हो	गंगा देखना	शेष जीवन सुखी	जनाजा दखना	धन लाभ/तरक्की	तरबूज देखना	परेशानी	नाग देखना	सुख प्राप्ति
इन्द्रिय देखना	सन्तान सुख	ग्रहण देखना	रोग व चिन्ता	झगड़ा देखना	प्रसन्नता मिले	थूक देना	परेशानी बढ़े	नृत्य देखना	धन प्राप्ति
इम्तहान में फेल होना	शुभ फल प्राप्ति	गोली चलते देखना	विपत्ति निवारण	झाड़ू देखना	नुकसान हो	थप्पड़ मारना	कलह क्लेश	प्यासा होना	कार्य बाधा
ईमारत बनाना	धन लाभ, तरक्की	गुलाब देखना	मनोकामना पूर्ण हो	झण्डा देखना	सुयश/धन लाभ	थप्पड़ खाना	शुभ	पुल देखना	शुभ यात्रा हो
ईंजन देखना	योजनाएं असफल	गरीबी देखना	सुख समृद्धि	झांकी देखना	अशुभ	दूध पीना	खुशी प्राप्ति	परछाई देखना	अशुभ होना
ईमली खाना	पुत्र प्राप्ति	गर्भपात	गम्भीर रोग	झोंपड़ी देखना	सुरक्षा सूचक	दरवाजा बन्द देखना	परेशानियां हो	पशु देखना	व्यापार में लाभ
इन्द्रधनुष देखना	जीवन में परिवर्तन	घोड़े से गिरना	परेशानी, चिन्ता	झरना देखना	दु:ख दूर हो	दान करना	शुभ	पहाड़ देखना	उन्नति का सूचक
उल्लू देखना	रोग अथवा शोक हो	घाट पर नहाना	तीर्थ यात्रा	टाट देखना	सम्मानजनक स्थिति	दर्जी देखना	काम बिगड़ना	पान खाना	प्रिय से मिलाप
उल्टा लटके देखना	अपमान मिले	घायल देखना	संकट से मुक्त होना	टेलीफोन करना	शुभ समाचार	दांत गिरते देखना	दु:ख एवं झंझट	परीक्षा देते देखना	असफलता
ऊँट देखना	अंग घात	घर बनाना	प्रसिद्धि प्राप्त हो	टापू देखना	संकट लक्षण	दलदल देखना	व्यर्थ चिन्ता बढ़े	पहलवान देखना	स्वास्थ्य लाभ
ऊँचाई पर चढ़ना	तरक्की व मान	घड़ी देखना	यात्रा का संकेत	टोपी देखना	प्रगति हो	दवाई पीना	रोग नाश	पपीता देखना	धन लाभ
ऐनक देखना (काली)	निराशा	घोड़े पर बैठना	सफलता का सूचक	ठग मिलना	धन हानि	दुकान (भरी) देखना	धन लाभ	पुजारी देखना	उन्नति का संकेत
कैंची चलाना	व्यर्थ विवाद	चोट लगना	स्वास्थ्य लाभ	ठिठुरना	उज्ज्वल भविष्य	दुकान (खाली) देखना	धन हानि	पूर्वज देखना	शुभ फल प्राप्ति
कौआ बोलते देखना	बुरा समाचार मिले	चावल खाना	शुभ समाचार	डॉक्टर देखना	रोग उत्पत्ति	देवी देवता देखना	खुशी प्राप्ति	पखाना करना	कष्ट मिले
कंघी करना	इच्छा पूर्ण हो	चोर देखना	धन प्राप्ति	डूबते देखना	कठिनाईयों का सामना	दरिया में नहाना	रोग नाश	पानी बरसते देखना	शुभ कारक
काला नाग	राज्य सम्मान	चांदी के जेवर	सम्बन्ध विच्छेद	डोली देखना	कोई परेशानी हो	दीवार गिरना	धन हानि	पिंजरे में पक्षी देखना	सुख प्राप्ति
किला देखना	तरक्की पाना	चौकीदार देखना	धनागमन का संकेत	डाकिया देखना	समाचार प्राप्त हो	दाह संस्कार देखना	दीर्घायु	पगड़ी देखना	प्रतिष्ठा प्राप्ति
कोढ़ी देखना	रोग सूचक	चीखें मारना	परेशानी व कष्ट	डाकू देखना	धन हानि	धन देखना	धन की प्राप्ति	प्रणय सबन्ध देखना	दाम्पत्य सुख प्रतीक
कन्या देखना	तीर्थ यात्रा	चुनरी देखना	सौभाग्य प्रतीक	ढोलक बजाना	किसी व्यक्ति से भेंट	धूल देखना	यात्रा पड़े	प्रेत देखना	सौभाग्य वर्द्धक
कोयला देखना	व्यर्थ का झगड़ा	छुरी मारना	परिवार से वाद विवाद	तलवार चलाना	शत्रु पर विजय	धमकी देना	शत्रु पर विजय	फुलवाड़ी देखना	खुशी मिले
कीचड़ में फंसना	कष्ट हो, व्यय हो	छिपकली देखना	अचानक धन लाभ	तपस्वी देखना	आत्म उन्नति	धार्मिक कार्य करना	पारिवारिक सुख	फव्वारा देखना	चिन्ता दूर हो
कटा सिर देखना	चिन्ता परेशानी	छींकना	कार्य बाधा	तैरते देखना	आयु में वृद्धि	धोबी देखना	सफलता हो	फेल होना	सफलता का सूचक

स्वप्न	फल
फकीर देखना	शुभ फलदायक
बहन देखना	सौभाग्य वृद्धि
बकरी देखना	शुभ यात्रा लाभ
बूढ़ी स्त्री देखना	दु:ख प्राप्ति
बाग देखना	सुख मिले
बाढ़ देखना	धन की हानि
बिच्छू देखना	चिन्ताकारक
बारिश देखना	रोग व कलह
बन्दूक देखना	संकट आवे
बिल्ली देखना	लड़ाई के चिन्ह
बाजार देखना	दरिद्रता दूर हो
बर्फ देखना	प्रिया से मिलाप
बारात देखना	चिन्ता व परेशानी
भूकम्प देखना	सन्तान कष्ट
भाषण देना/सुनना	वाद विवाद
भूखा देखना (स्वयं को)	यात्रा लाभ
भिखारी देखना	यात्रा पड़े
मिठाई खाना	मान व तरक्की
मुर्दे के साथ खाना	दु:ख दूर हो
मुर्दे से बात करना	मुराद पुरी हो
मछली देखना	धन व स्त्री प्राप्ति
मोर देखना	खुशी प्राप्ति
महल देखना	कष्ट से छुटकारा
माली देखना	खुशी मिले
मुर्दे हंसते देखना	फिक्र व चिन्ता
मृत्यु देखना	भाग्योदय
मुण्डन कराना	सुखी गृहस्थी
मन्दिर देखना	इच्छा पूर्ण हो
मंगनी देखना	विवाह में देरी
महात्मा देखना	धन प्राप्ति
यात्रा करना	यात्रा द्वारा धन लाभ
यज्ञ देखना	सौभाग्यसूचक
युद्ध देखना	सफलता के संकेत
यम देखना	आयु वृद्धि
रोटी खाना	इच्छा पूर्ण हो
रोते हुए देखना	प्रसन्नता का प्रतीक
रोगी देखना	दु:ख निवृत्ति
रसोईघर देखना	धन धान्य का प्रतीक
रेल देखना	कष्टकारी यात्रा
राख देखना	सफलता की प्राप्ति
रेत पर चलना	शत्रु से हानि
रिश्वत लेना	अपमान हो
राक्षस देखना	कष्ट से छुटकारा
रखैल देखना	सन्तान कष्ट
लकड़ी उठाना/देखना	अकारण वाद-विवाद
लोहा देखना	स्वास्थ्य हानि
लाटरी का टिकट	सौभाग्य पद
लंगर देखना	धन सम्पदा वृद्धि
विष खाना	परेशानी बढ़े
वृक्ष काटना	धन हानि
विदाई देखना	धन वृद्धि
वध दिखाई देना	आकस्मिक विपत्ति
विवाह देखना	दुर्भाग्य सूचक
विधवा देखना	हानि
विदेश यात्रा देखना	परिवारिक विवाद
वर्षगांठ मनाना	आयु में कमी
वर्षा देखना	मान-सम्मान
विमान देखना	सौभाग्य सूचक
शेर देखना	शत्रु नाश
शीशा देखना	रोग नाश
शत्रु देखना	सफलता हो
शव देखना	शुभ फल
श्राद्ध करना	पितरों की प्रसन्नता
शिकार करना	पारिवारिक कष्ट
शिशु देखना	सुखी दाम्पत्य जीवन
शोक समूह देखना	आनन्द का प्रतीक
शमशान घाट	दीर्घायु
शराब पीना	वाद विवाद
साँप देखना/पकड़ना	शत्रु पर विजय
सागर देखना	धन वृद्धि
सुन्दरी देखना	धन लाभ
स्टेशन देखना	यात्रा शुभ होगी
सेहरा देखना	गृह क्लेश
सुन्दर वस्त्र देखना	बीमार होना
स्नान करते देखना	व्यवसाय में लाभ
हवालात देखना	मान सम्मान
हंसते हुए देखना	खुशी का प्रतीक
हड्डियाँ देखना	डूबे धन की प्राप्ति
हत्या देखना	परेशानी
हरी फुलवारी देखना	धन-जन वृद्धि
हाथी देखना	व्यवसाय वृद्धि

अंगों पर छिपकली गिरने का फल

अंग फल पल्ली (किरली) पतन पर आवश्यक कर्त्तव्य

शरीर पर छिपकली गिरते समय, उस समय जो भी वस्त्र पहने हों, उन्हें पहिने हुए ही स्नान करना चाहिए। तत्पश्चात् तिल, उड़द, घृत में छाया-पात्र का दान एवं यथाशक्ति धन का दान करके "**महामृत्युञ्जय मन्त्र**" का पाठ करना चाहिए।

अंग	फल
मस्तक (सिर)	राज्य लाभ
कपाल	ऐश्वर्य प्राप्ति
नाक	सौभाग्य वृद्धि
दाहिना कान	आयु वृद्धि
बायां कान	भूषण लाभ
दाईं भुजा	मान-सम्मान
बाईं भुजा	धन-हानि, राज भय
कण्ठ	शत्रु नाश
पीठ के मध्य	क्लह-क्लेश
बाईं पीठ	रोग भय
दायीं पीठ	सुख लाभ
दायें कन्धे	विजय, सफलता
बायें कन्धे	दुश्मनों से भय
कमर	रोग भय
दाईं जाँघ	धन हानि
बाईं जाँघ	पुत्र से लाभ
दायें हाथ	धन लाभ
बायें हाथ	धन हानि
नाभि	पुत्र प्राप्ति
हृदय	सुख-यश प्राप्ति
गुदा	रोग भय
गुप्तांग	मित्र से भेंट
दायें पाँव	यात्रा (भ्रमण)
बायें पाँव	रोग-क्लेश
पावों की उंगलियों	यात्रा
गर्दन	यश, लाभ

स्वप्न एवं अन्य शकुन सम्बन्धी विस्तृत जानकारी के लिए हमारे कार्यालय से **स्वप्न-ज्योतिष विज्ञान** नामक पुस्तक मँगवाकर पढ़ें। –जनरल बुक डिपो जालन्धर

अंगस्फुरण फल

सिर	पृथ्वी लाभ
माथा	स्थान लाभ
वामभुज	प्रिय प्राप्ति
नेत्र	प्रियदर्शन
भृकुटियां	लक्ष्मी दर्शन
कपोल	स्त्री सुख
नासा	गन्ध सुख
ऊपर का होंठ	स्त्री चुम्बन
कण्ठ	भूषण प्राप्ति
ग्रीवा	शत्रु भय
पीठ	पराजय
कन्धा	मित्र समागम
बाहुप्रदेश	प्रिय प्राप्ति
बाहुमध्य	धनागम:
कर (हाथ)	धन प्राप्ति
छाती	विजय
पार्श्व	उत्तम प्रीति
नाभि	यात्रा से लाभ
उदर पेट	कोष प्राप्ति:
वृष्ण	पुत्र लाभ
जानु (घुटना)	रिपु (शत्रु) सन्धि
जंघा	हानिप्रद
चरण के ऊपर	स्थान प्राप्ति
चरण के नीचे	लाभप्रद:
दक्षिण कर्ण	दीर्घायु
कण्ठे	शत्रुनाश

शरीर में तिल और उनके शुभाशुभ फल

अंग	फल
माथे पर तिल	धनवान होवे
माथे के दाहिने ओर	मान प्रतिष्ठा में वृद्धि
दोनों भौंह के मध्य में	यात्रा कारक है
बायीं आंख पर	औरत से कलह
दाहिनी आँख पर	औरत से विशेष प्यार रहे
ठोडी पर तिल हो	औरत से प्यार कम हो
बायें गाल पर	धन का अपव्यय
दाहिने गाल पर	धन की बढ़ोतरी हो
ऊपर के होंठ पर	विषयवासना में रत रहे
नीचे के होंठ पर	धन की कमी रहे
कान पर तिल हो	आयु मध्यम रहे
गर्दन पर तिल हो	आराम प्राप्त हो
दाहिनी भुजा पर हो	मान-प्रतिष्ठा प्राप्त हो
नाक पर तिल हो	यात्रा कारक है
बायीं भुजा पर हो	झगड़ा होवे
बायीं छाती पर हो	औरत से झगड़ा हो
दाहिनी छाती पर हो	औरत से प्यार रहे
दोनों छातियों के मध्य	जीवन सुखमय रहे
हृदय पर हो	बुद्धिमान हो
पसली पर तिल हो	डरपोक स्वभाव हो
पीठ पर तिल हो	यात्रा में रहा करे
पेट पर तिल हो	श्रेष्ठ भोजन की इच्छा रहे
बगल में तिल हो	दूसरों को हानि पहुंचावे
कमर पर तिल हो	मन अशान्त रहे
बायें हाथ की पीठ पर	व्यय अधिक हो
दाहिनी हथेली पर	धनवान् हो
बायीं हथेली पर	व्यय कारक है
दाहिने पैर में तिल हो	यात्रा कारक है
बायें पैर पर	अपव्यय कारक
पाँव के तलुवे में	यात्रा अधिक

॥ अथ नक्षत्रकष्टावलीय ॥

नक्षत्र चरण	चरण				कष्ट लक्षणानि	देवता	दानद्रव्याणि	जप संख्या	जपार्थ नक्षत्र मन्त्राणि	बलिदान
	१	२	३	४						
	रोग दिन संख्या									
अश्विनी १	०९	११	१०	२०	अर्ध गात्र पीड़ा वातज्वर निद्राभंग	अश्विनी देवता	घृत कुंभ सुवर्ण ब्राह्मण भोजन	५ हजार	ॐ अश्विनौ तेजसाचक्षुः प्राणेन सरस्वती वीर्य्यम् वाचेन्द्रो बलेनेन्द्राय दधुरिन्द्रियम्॥ ॐ अश्विनीकुमाराभ्यो नमः।	कुमकुम, श्वेत चंदन, चम्पक पुष्प तंदुल मोदक नैवैद्य गुड़, क्षीर, कमल पुष्प, धूप तिल दीपः
भरणी २	दि ००	दि ८०	दि ४०	दि ११	छर्दरोग तीव्रज्वर तंद्रा अनेक रोग	यम देवता	शर्करा घृत अजा गौ महिषी, छायापात्र	१० हजार	ॐ यमायत्वा मखायत्वा सूर्य्यस्यत्वा तपसे देवस्यत्वा सवितामध्वा नक्तु पृथिव्या स Ω स्पृशस्पाहिअर्चिरसि शोचिरसि तपोसि ॥२॥	अगर गन्ध करवीरपुष्प गुग्गुल धूप गुड़ोदन नैवैद्य धूप दीप क्षेत्रपाल पूजा
कृतिका ३	दि ००	दि ११	दि १६	दि २८	रक्तनेत्र उरु शूल नेत्र पीड़ा अतिदाह	अग्नि देवता	सुवर्ण गौदान ग्रह शांति	१० हजार	ॐ अयमग्नि सहस्रिणो वाजस्य शांति Ω वनस्पतिः मूर्द्धा कबोरयीणाम् ॥ ३ ॥ अग्नये नमः॥	चन्दन गंध पुष्प नैवेद्य गुग्गुलधूपघृत दीप तिलमाष गुडोदन पायस नैवेद्य, दशांग
रोहिणी ४	दि ०७	दि ०९	दि १८	दि ३०	शिर दर्द ज्वर पीड़ा कुक्षिशूल प्रलाप	प्रजापति देवता	सप्तधान्य सुवर्ण कृष्ण गौदुग्धखड	५ हजार	ॐ ब्रह्मजज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्विसीमतः सूरुचोवेन आवः सबुध्न्या उपमा अस्यविष्टाः सतश्रचयोनिमसतश्चविधः ॥४॥ ॐ ब्रह्मणे नमः॥	चन्दन गन्ध पुष्प नैवेद्य अष्टगन्ध दूध मोदक धूप घृत क्षीर नैवेद्य, दीप, दशांग
मृगशिर ५	दि ०९	दि ०५	दि ०७	दि १०	अर्ध शरीर पीड़ा महाघोर कष्ट	सोम देवता	दधितडुलगोवत्सा दान ब्राह्मण भोजन	१० हजार	ॐ सोमोधनु Ω सोमाअवन्तुमाशु Ω सोमोवीरः कर्मणयन्ददाति यदत्यविदध्य Ω सभेयम्पितृ श्रवणयोम ॐ चन्द्रमसे नमः ।५॥	चन्दन गंध सौरभ पुष्प गुग्गुल धूप पायस नैवेद्य मधु घृतदुग्धदध्योदन बलि, दशांग
आर्द्रा ६	दि ००	दि १८	दि ००	दि ००	ज्वर सर्वांगपीड़ा निद्रानाश त्रिदोष	रुद्र देवता	कृष्ण वृषभादि दान कृष्ण वस्त्रादि	१० हजार	ॐ नमस्ते रुद्र मन्यवऽउतोत इषवे नमः बाहुभ्यां मुतते नमः॥६॥ ॐ रुद्राय नमः॥	हरिद्रा कुमकुम गन्ध सवन्तिका पुष्प अष्ट गंधतिलपिष्ट धूप नैवेद्य घृत मिष्ठान्न दशांग
पुनर्वसु ७	दि ०७	दि १४	दि ०२	दि २१	अर्ध शरीर पीड़ा शिर पीड़ा ज्वर	अदिति देवता	सुवर्ण कमलदान ५ कन्याभोजनवस्त्र	१० हजार	ॐ अदितिद्यौरदितिरन्तरिक्षमदिति र्माताः स पिता स पुत्रः विश्वेदेवा अदितिः पंचजना अदितिजातम अदितिरर्जनित्वम् ॥७॥ ॐ आदित्याय नमः॥	कुंमकुम गंध वारिज पुष्प गुग्गुल धूप घृत पायस नैवेद्य मोदक गुड़बलि पीत वर्णान्न
पुष्य ८	दि ०७	दि ०७	दि १०	दि २१	ज्वर पीड़ा शूल अतिकठिन रोग	बृहस्पति देवता	पीत वस्त्र सुवर्ण गौदान पक्वान्नदान	१० हजार	ॐ बृहस्पते अतियदर्यौ अर्हाद्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु। यदी दयच्छ वसत्रृतप्रजातदस्मासुद्रविणं धेहि चित्रम् ॥ ॐ गुरवे नमः ॥	कुमकुम अगर गंध अगस्त पुष्पघृतगुग्गुल धूपक्षीर नैवेद्यदध्योदन, शक्कर बलिदानम्
आश्लेषा ९	दि ००	दि ००	दि ११	दि ००	सर्व गात्र पीड़ा मृत्युतुल्य कष्ट	सर्प देवता	कुलमातृ योगिनी पूजा गोशय्यादान	१० हजार	ॐ नमोऽस्तु सर्पेभ्योये के च पृथिवीमनुः। ये अन्तरिक्षे यो दिवितेभ्यः सर्पेभ्यो नमः ॥९॥ ॐ सर्पेभ्यो नमः	चन्दन गन्धचम्पक पुष्प गुग्गुल घृतधूप क्षीर मिष्टान्नहविनैवेद्य तिल घृत दुग्धबलि कुंकुम,
मघा १०	दि १५	दि ०७	दि १७	दि २०	अर्धगात्र पीड़ा शीत जन्यरोगभय शिर पीड़ा	पितर देवता	तिल तंडुलमाष वस्त्रदान	१० हजार	ॐ पितृभ्यः स्वधायिभ्यः स्वाधानमः पितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधानमः। प्रपितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः अक्षन्न पितरोऽमीमदन्तः पितरोतितृपन्तः पितरःशुन्धध्वम् ॥१०॥ ॐ पितरेभ्ये नमः॥	चन्दन गन्ध चम्पक पुष्प गुग्गुल धूप घृत मिष्ठान्नहविनैवेद्य तिल घृत दुग्धबलि, दीप, नैवेद्य, दीपादि
पूर्वाफाल गुणी ११	दि ००	दि १५	दि ००	दि ३०	सर्वगात्रे पीड़ा ज्वर अर्धशिररोग	भग देवता	पित्तल पात्र यव माष गोस्वर्णदान	१० हजार	ॐ भगप्रणेतर्भगसत्यराधो भगे मां धियमुदवाददन्नः। भगप्रजननाय गोभिरश्वैर्भगप्रणेतृभिर्नुवन्तः स्यामः ॥११॥ ॐ भगाय नमः॥	चन्दन गंध चम्पक पुष्पगुग्गुलघृतधूप शर्करामोदक पूपोदन घृत पायसनैवेद्य बिल्व
उत्तरा फाल्गु. १२	दि ००	दि १४	दि ०७	दि ६०	शिर रोग महाज्वर कुक्षिशूलरोग	अर्यमा देवता	सुवर्णरजत अन्न गो वस्त्र दान	५ हजार	ॐ दैव्या वद्धर्व्यू च आगत Ω रथेन सूर्य्यत्वचा। मध्वायज्ञ Ω समञ्जायेतं प्रत्नया यं वेनश्चित्रं देवानाम् ॥१२॥ ॐ अर्यमणे नमः॥	कपूरकुंकुमगंध अर्कपुष्पघृत गुग्गुल धूप घृतपायसनैवेद्य घृतान्नहोम केशर गंध
हस्त १३	दि १५	दि १७	दि १५	दि ००	सर्वाङ्ग पीड़ा उदर शूल प्रस्वेद अफारा	सविता देवता	गोदानछाया पात्र रक्तवस्त्र सुवर्ण	५ हजार	ॐ विभ्राडवृहन्पिवतु सोम्यं मध्वार्य्युदधज्ञ पत्त व विहुतम् वातजूतोयो अभि रक्षतित्मना प्रजा पुपोषः पुरुधाविराजति ॥ ॐ सावित्रे नमः॥	कुकुमरक्तचन्दन गंध कमल पुष्पसुगन्ध गुग्गुलधूपः घृत पायसनैवेद्य दीप, केशर
चित्रा १४	दि ११	दि ०९	दि ०९	दि १६	विविधरोग भय महादारुण कष्ट	त्वष्टा देवता	विचित्रवृषभ गुड़ तिल छाया पात्र	५ हजार	ॐ त्वष्टातुरीयो अद्भुत इन्द्राग्नी पुष्टिवर्द्धनम्। द्विपदापदायाः च्छन्द इन्द्रियमुक्षा गौत्र वयोदधुः ॥१४॥ त्वष्ट्रेनमः ॥ ॐ विश्व कर्मणे नमः॥	कुंकुम दीप अगरगन्ध विचित्र पुष्पगुग्गुल धूपमोदक घृत विचित्रान्नहविनैवेद्य, केशर

नक्षत्र चरण	चरण				कष्ट लक्षणानि	देवता	दानद्रव्याणि	जप संख्या	जपार्थ नक्षत्र मन्त्राणि	बलिदान
	१	२	३	४						
स्वाती १५	रोग दिन संख्या ६०	१७	३०	००	अनेक तरह के रोग ज्वर, कष्ट	वायु देवता	लाल गो सुवर्ण पक्वात्र दान	५ हजार	ॐ वायरन्नरदि बुधः सुमेध श्वेतः सिषीक्तिनो युतामभि श्री तं वायवे सुमनसा वितस्थुर्विश्वेनरः स्वपत्थ्या निचक्रुः ॥१५॥ ॐ वायवे नमः॥	चन्दनगंध कमल पुष्प अगर गुग्गुल धूप, दीप पायस शर्करा घृत नैवेद्य।
विशाखा १६	दि १५	दि ००	दि ०४	दि १३	कुक्षिशूल रोग सर्व गात्र पीड़ा	इन्द्राग्नी देवता	रक्त पीत वस्त्र कृष्णवृषभ दान	१० हजार	ॐ इन्द्राग्नी आगत Ω सुतं गार्भिर्नमो वरेण्यम्। अस्य पातं घियोषिता ॥१६॥ ॐ इन्द्राग्नीभ्यॉं नमः॥	श्री खण्ड चन्दन गंध कमल पुष्प देवदारु धूपधृत पायस नैवेद्य, दीपक केशर।
अनुराधा १७	दि ६०	दि १२	दि ३६	दि ३०	तीव्र ज्वर महारोग शिर पीड़ा	मित्र देवता	अन्न सुवर्ण गो दान छायापात्र	१० हजार	ॐ नमो मित्रस्यवरुणस्य चक्षसे महो देवाय तदृत Ω सपर्यत दूरंदृशे देव जाताय केतवे दिवस्पुत्राय सूर्योयश Ω सत ॥१८॥ ॐ मित्राय नमः॥	कुंकुमगंध कमल पुष्प चन्दन धूपः पायस घृत पुष्प मोदक नैवेद्य, केशर, गंध।
ज्येष्ठा १८	दि ५९	दि ०९	दि ०६	दि ०४	पित्तरोग शरीर कांपना व्याकुलता	इन्द्र देवता	सुवर्ण नील वस्त्र तैल छायापात्रदान	५ हजार	ॐ त्रातारभिंद्रमबितारमिंद्र Ω हवे हवेसुहव Ω शूरमिंद्रम् वहयामि शक्रं पुरुहूतभिंद्र Ω स्वास्ति नो मधवा धात्विन्द्रः। ॐ इन्द्राय नमः॥	चन्दन गंध सुगंध पुष्प कपूर धूप विचित्रान्न नैवेद्य, चम्पा पुष्प पायस, नारियल।
मूला १९	दि ००	दि ०९	दि १५	दि ०६	ज्वरशूलसत्रिपात महाकठिन रोग	निर्ऋति देवता	सप्तधान्य सुवर्ण कृष्णगोछायापात्र	५ हजार	ॐ मातेवपुत्रं पृथिवी पुरीष्यमग्नि Ω स्वयोनावभारुषा तां विश्वेदैवऋतुभिः संविदानः प्रजापति विश्वकर्मा विमुञ्चत। ॐ निर्ऋतये नमः॥	कृष्ण अगर गंध नील पद्म पुष्प कृष्ण अगर धूप मिष्ठात्रहवि माष नैवेद्य।
पूर्वाषाढ़ा २०	दि ००	दि १५	दि २४	दि १०	शरीरपीड़ा कंपरोग शिररोग महाकष्ट	जल देवता	श्वेतवस्त्रतंडुलसु–वर्णजलकुंभ	५ हजार	ॐअपाघ मम कील्वषम पकृल्यामपोरपः अपामार्गत्वमस्मद यदुः स्वपन्य–सुवः ॥२०॥ ॐ अद्भ्यो नमः॥	चन्दनगन्ध पद्म पुष्प गुग्गुल धूप घृत पायस नैवेद्य।
उत्तराषाढ़ा २१	दि ३०	दि २४	दि २६	दि १६	कटिपीड़ा प्रलाप उदर शूलरोग युक्त	विश्वेदेवा देवता	ब्राह्मण भोजन अन्न सुवर्ण दान	१० हजार	ॐ विश्वे अद्य मरुत विश्वऽउतो विश्वे भवत्यग्नयः समिद्धाः विश्वेनोदेवा अवसागमन्तु विश्वेमस्तु द्रविणं बाजो अस्मै॥२१॥	चन्दन गंध मालती गुग्गुल पुष्प पायस नैवेद्य।
श्रवण २२	दि ६०	दि २४	दि ०६	दि ०९	वातापित्तकफरोग अतिसारसर्वगात्रपी	गोविन्द देवता	सुवर्णगेदानब्राह्मणभोजनछायापात्र	१० हजार	ॐ विष्णोरराटमसि विष्णो श्नपत्रेस्थो विष्णो स्युरसिविष्णो ध्रुवोसि वैष्णवमसि विष्णवेत्वा ॥२२॥ ॐ विष्णवे नमः॥	चन्दन गंध मालतीपुष्प कपूर गुग्गुल धूप ओदन पायस षडरम नैवेद्य।
धनिष्ठा २३	दि १५	दि २	दि २०	दि २१	मूत्रकृच्छ ज्वर रक्त अतिसार कंपरोग	वसु देवता	छत्री जूता सुवर्ण गोछायापात्रदान	१० हजार	ॐ वसोःपवित्र मसि शतधारंवसोः पवित्रमसि सहस्रधारम्। देवस्त्वासविता पुनातुवसोः पवित्रेणशतधारेण सुप्वाकामधुक्षः। ॐ वसुभ्यो नमः॥	अगर गंध कमल पुष्प अगर धूप घृत पायस नैवेद्य, दीपक, ताम्र बर्तन।
शतभिषा २४	दि ००	दि ४५	दि ०३	दि २२	वायु रोग से भय सत्रिपातज्वरपीड़ा	वरुण देवता	तिलसुवर्ण घृत तैल अजागोदान	१० हजार	ॐ वरुणस्योत्तम्भनमसिवरुणस्यस्कुं मसर्जनी स्थोवरुणस्य ऋत सदन्य सि वरुण स्यऋतमदन ससि वरुणस्यऋतसदनमसि। ॐ वरूणाय नमः॥	कुकम अगर गन्ध कमल पुष्प अगर धूप घृत धूप नैवेद्य।
पूर्वाभाद्र– –पद २५	दि ००	दि १२	दि २१	दि १९	सर्वगात्रपीड़ाछर्दी चिन्ताव्याकुलता	ऽजेकपाद देवता	सुवर्ण रजतश्वेत वस्त्र धृत दुग्ध	५ हजार	ॐ उतनाऽहिर्वुध्न्यः शृणोत्वज एकपापृथिवी समुद्रःविश्वे देवा ऋता वृधो हुवाना स्तुतामंत्राः कविशस्ता अवन्तु॥ ॐ अजैकपदे नमः॥	कंकुम चन्दनगन्धश्वेतार्क पुष्प सर्वोषधी मिश्र धूप दधि पायस नैवेद्य।
उत्तराभा– –द्रपद २६	दि १०	दि २०	दि ०९	दि १५	कामलारोगअतिसा ज्वरवायुशूलभ्रम	अहिर्बुध्न देवता	रजत कृष्ण वस्त्र तिल सुवर्ण दान	१ हजार	ॐ शिवोनामासिस्वधितिस्तो पिता नमस्तेऽस्तुमामाहि Ω सो निवर्त्तयाम्यायुषेऽत्राद्याय प्रजननायर रायम्पोषाय (सुप्रजास्वाय ॥२६॥) ॐ अहिबुर्धाय नमः॥	कपूरचन्दनगन्ध पद्म पुष्प विल्व गुग्गुल धूप दधि पायस नैवेद्य।
रेवती २७	दि १८	दि १०	दि ०९	दि २०	वातपित्तज्वर भ्रम उरू शूलपीडा	पूषा देवता	पित्तल पात्र रक्त वृषभवस्त्रछायापात्र	१० हजार	ॐ पूषन् तव व्रते वय नरिष्येभ कदाचन। स्तोतारस्तेइहस्मसि ॥२७॥ ॐ पूष्णेनमः॥	रक्त चन्दन गन्ध चम्पक पुष्प घृत गुग्गल धूप घृत पायस नैवेद्य।

रोग-त्रिनाड़ी चक्र

आर्द्रा	पू.फा.	उ.फा.	अनु	ज्ये०	धनि	शत०	भरणी	कृत्ति
पुर्न	मघा	हस्त	विशा	मूल	श्रव०	पू.भा.	अश्वि.	रोहि
पुष्य	आश्ले.	चित्रा	स्वाती	पू.षा.	उ.षा.	उ.भा.	रेवती	मृग.

मंगलवार १।६।११ तिथि कृत्तिका नक्षत्र। बुधवार २।७।१२ तिथि आश्लेषा नक्षत्र। गुरुवार ३।८।१३ तिथि मघाहस्तनक्षत्र। शुक्रवार ४।९।१४ तिथि–आर्द्रा धनिष्टा नक्षत्र। शनिवार ५।१०।१५ तिथि–भरणीनक्षत्र। इन तीन योगों में रोग का प्रारम्भ हो तो मृत्यु या मृत्युतुल्य कष्ट जानना। (रोग के दिन नक्षत्र से नाम का नक्षत्र ५।१४।२३ संख्या पर काल का मुंह होता है और १०, १८वें नक्षत्र काल की दंष्ट्र (दाढ़) होती हैं, मुख वा दंष्ट्रा में जिस दिन नक्षत्र प्राप्त हो उस दिन अत्यंत रोगग्रसित पुरुष की मृत्यु तुल्य कष्ट जानना। सूर्य जिस नक्षत्र में हो, वह नक्षत्र, चन्द्र नक्षत्र और नाम का नक्षत्र जिस दिन एक नाड़ी में हो उसी दिन असाध्य रोगी की मृत्यु जानना।

।। अथ बालकष्टावली पूतना विधान ।।

मंत्र को २१ बार पढ़कर सात बार रूग्ण बालक के सिर पर घुमाकर चौरस्ते (चौराहे) पर मौन होकर रख आवे ॥

जन्म से			पूतना नाम	ग्रसित लक्षण	मूर्तिद्रव्य	बलि द्रव्य तथा समय	धूप	मन्त्र
दि ०१	मा १	व ०१	१ योगिनी २ मातृका ३ नंदिनी	ज्वर गात्रशोष अनाहार वमन मूर्छा कांपना हीन ज्वर उदर पीड़ा	नदी का मिट्टी का पुतला ३ दिन विधान	उबले चावल सफेद चंदन का लेप सफेदफूल ध्वजा ५ चिलिड़ियां (पूड़े) ५ दीपक ५ प्रात: समय पूर्व दिशा में तीन दिन बलि देवे।	सरसों बालछड़ आक बिल्वपत्र तिल्ली और मनुष्य के केश नीम घी का धूप	ॐ नमो भक्तवत्सले मोचिनी स्वाहा
दि ०२	मा ०२	व ०२	१ सुनंदिनी २ योगिनी ३ स्तनदा	ज्वर हाथ पांव संकोचदांतो का पीसना आँखें मीचना ज्वरादि रोदन आँखें दुखना	सेर चावल की पीठी का पुतला ३ दिन दिन विधान	उबले चावल सेर पर आटे के पूड़े मच्छी और बकरे का मांस ध्वजा १३ दीपक १३ पश्चिम दिशा में सन्ध्या समय ३ दिन बलि देवे।	पूर्ववत् सब वस्तुओं का धूप देना	ॐ नमो भगवती स्वाहा
दि ०३	मा ०३	व ०३	१ पूतना	ज्वर कम्प न प्रलाप अरुचि आँखें मीचना वमन रोमांच	पूर्ववत मूर्ति	लाल चावल लाल ध्वजा लाल चन्दन लालफूल सायंकाल उत्तर दिशा में ३ दिन बलि देवे।	गोश्रृङ्ग और सांप को कांचली का धूप देना	ॐनमो भगवती स्वाहा
दि ०४	मा ०४	व ०४	१ मुखमंडिका २ आकाशयोगिनी	ज्वर गात्र भग आंखमीचना शिर झुकाना श्वास श्याम ता अरुचि नींद न आना	चावल के चूर्ण का पुतला विल्ब के कांटे से रेखा	सफेद चंदन का लेप सफेद फूल सफेद ध्वजा सेर भर आटे के पूड़े तीनों सन्ध्या समय पश्चिम दिशा में बलि ३ दिन देवें।	लहसन नीम के पत्ते मनुष्य के और बिल्ली के बाल गो घृत धूप देना।	ॐ नमो पूतने मातवीर्लि भक्ष सुशोभने बालंकमुचंसुयोगेन बलिदाने नहर्षयेत्
दि ०५	मा ०५	व ०५	विडालिका	ज्वर हिक्का श्वास शूल गात्र संकोच अरुचि उदर पीड़ा	सेर भरचावलों की पीठी का पुतला	उबले चावल ध्वजा ५ दीपक ५ सफेद चन्दन सफेद फूल अपरान्ह के समय वृक्ष के मूल में पश्चिम दिशा में ३ दिन बलि देवे।	पूर्ववत धूप देना	ॐ सुभगे सुभलेदेवि सर्व शत्रु निवारिणी। कुरु शांति शिशो: स्वस्थं जीव दानेन राक्षसि
दि ०६	मा ०६	व ०६	शकुनी	ज्वर गात्र संकोच अरुचि श्वास लेने में कठिनाई उदर पीड़ा	सेर चावलों की पीठी का पुतला बनाना	कृष्णोदन ध्वजा ५ दीपक ५ काले फूल मच्छी का मांस बकरे का मांस पायस दूध आधसेर आटे को पूड़े अपरान्ह पश्चिमदिशा में तीन दिन बलि देवे	कूठ गुग्गुल सफेद चन्दन सरसों हाथी का दांत गो घृत धूप देना।	ॐ राक्षसि त्व महाभागे बालमुंच शुभानने। क्षेम कुरु जगत्य स्मिन् शोभावान वरं कुरु
दि ०७	मा ०७	व ०७	शुष्करेवती	ज्वर देह संकोच अरुचि कांपना रोदन करना	पूर्ववत मूर्ति	सफेद ध्वजा ७ दीपक ७ सफेद फूल सफेद चंदन सायंकाल पश्चिम दिशा में ३ दिन बलि देवे।	गोश्रृङ्ग और लहसन से पूर्ववत धूप देना।	ॐ नमो पद्मपत्राक्षि विशालाक्षि बन शिव। सगृहाँ बलि माषञ्च बाले मुँच सुशोभने।
दि ०८	मा ०८	व ०८	विडालिका	ज्वर गात्र संकोच आँखें मीचना रोना जिव्हाशोष शिर पीड़ा अरुचि	पूर्ववत मूर्ति	पायस (खीर) दूध घी लाजा मध्यान्ह व पूर्व संध्या समय दक्षिण दिशा में ३ दिन बलि देवे	गुग्गुल में घृत मिलाकर उपरोक्त धूप देना।	ॐ नमो सर्व भूतेशि शोभने त्वं पिशाचिनी। बलिचैवा सुरी कृत्य त्वरितं मुंच बालकम्
दि ०९	मा ०९	व ०९	मनोन्मत्ता	ज्वर वमन तृष्णा श्वास अफारा देह संकोच उदर शूल	पूर्ववत मूर्ति	उबले चावल मच्छी का मांस पापड़ गन्ना संध्या समय उत्तर दिशा में ३ दिन बलि देवे।	गोश्रृङ्ग को घृत में घिसकर पूर्ववत धूप देना	ॐ नमो भगवते वासुदेवाय हुं फट स्वाहा।
दि १०	मा १०	व १०	रेवती	ज्वर वमनाकास श्वास पीड़ा	पूर्ववत मूर्ति	गुड़ उबले चावल घी ध्वजा २५ पूड़े २५ लालफूल २५ सफेद फूल ४४ संध्यासमय दक्षिण में ३ दिन बलिदेवे	गोश्रृङ्ग लहसन को घृत में मिलाकर धूप देना।	ॐ नमो भगवते वासुदेवाय फट स्वाहा।
दि ११	मा ११	व ११	सुदर्शना	ज्वर अरुचि मुखशोष गात्र पीड़ा रोदन	माष उड़द की पीठी	उबले चावल सफेद चंदन लेपन सफेद फूल ध्वजा २५ दीपक २५ पूड़े २५ बलि संध्या समय दक्षिण दिशा में बलि देवे।	पूर्ववत धूप देना	ॐ नमो भगवते रावणाय चंद्रहास वज्रहस्ताय ॐ हुं फट स्वाहा।
दि १२	मा १२	व १२	अद्भुता	ज्वर रोदन पसीना आँखें दुखना सन्ताप रोमांच शरीर पीड़ा	सेर चावल की पीठी का पुतला	ध्वजा १३ पूड़े मच्छी का मांस बकरे का मांस पापड़ संध्या समय दक्षिण में ३ दिन बलि देवे	गोश्रृङ्ग को घृत में घिस कर पूर्ववत धूप देना।	ॐनमो नारायणाय प्रज्वल २ ताप हर २ शोषय २ मर्दय २ हन दुष्टान् हुं फट स्वाहा

वर्षफल बनाने की सारिणी (सूर्य सिद्धान्तीय)

वर्ष	०१	०२	०३	०४	०५	०६	०७	०८	०९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५
वार	०१	०२	०३	०५	०६	००	०१	०३	०४	०५	०६	०१	०२	०३	०४	०६	००	०१	०२	०४	०५	०६	००	०२	०३
घड़ी	१५	३१	४६	०२	१७	३३	४८	०४	१९	३५	५०	०६	२१	३७	५२	०८	२३	३९	५४	१०	२६	४१	५७	१२	२८
पल	३१	०३	३४	०६	३७	०९	४०	१२	४३	१५	४६	१८	४९	२१	५२	२४	५५	२७	५८	३०	०१	३३	०४	३६	०७
विपल	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०

वर्ष	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०
वार	०४	०५	००	०१	०२	०४	०५	०६	००	०२	०३	०४	०५	००	०१	०२	०३	०५	०६	००	०१	०३	०४	०५	०६
घड़ी	४३	५९	१४	३०	४५	०१	१६	३२	४७	०३	१८	३४	४९	०५	२१	३६	५२	०७	२३	३८	५४	०९	२५	४०	५६
पल	३९	१०	४२	१३	४५	१६	४८	१९	५१	२२	५४	२५	५७	२८	००	३१	०३	३४	०६	३७	०९	४०	१३	४३	१५
विपल	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००

वर्ष	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५
वार	०१	०२	०३	०४	०६	००	०१	०३	०४	०५	०६	०१	०२	०३	०४	०६	००	०१	०२	०४	०५	०६	००	०२	०३
घड़ी	११	२७	४२	५८	१३	२९	४४	००	१५	३१	४७	०२	१८	३३	४९	०४	२०	३५	५१	०६	२२	३७	५३	०८	२४
पल	४६	१८	४९	२१	५२	२४	५५	२७	५८	३०	०१	३३	०४	३६	०७	३९	१०	४२	१३	४५	१६	४८	१९	५१	२२
विपल	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०

वर्ष	७६	७७	७८	७९	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	९०	९१	९२	९३	९४	९५	९६	९७	९८	९९	१००
वार	०४	०५	००	०१	०२	०३	०५	०६	००	०१	०३	०४	०५	००	०१	०२	०३	०५	०६	००	०१	०३	०४	०५	०६
घड़ी	३९	५५	१०	२६	४२	५७	१३	२८	४४	५९	१५	३०	४६	४३	१७	३२	४८	०३	१९	३४	५०	०५	२१	३६	५२
पल	५४	२५	५७	२८	००	३१	०३	३४	०६	३७	०९	४०	१२	३०	१५	४६	१८	४९	२१	५२	२४	५५	२७	५८	३०
विपल	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००

वर्ष फल साधन

जिस संवत् या वर्ष का वर्ष लग्न निकालना हो, उस संवत् में से जातक के जन्म का सम्वत् घटाने से जो वर्ष शेष बचेंगे वह **गतवर्ष** होंगे फिर वर्षफल सारणी में गत वर्षों के नीचे लिखे वार, घड़ी पलादि के ध्रुवांक को जातक के जन्म, वार, घड़ी, पलादि में जमा कर लेने पर आगामी वर्ष का वार एवं वर्षेष्ट काल निकल आएगा। अब इस वर्षेष्ट को स्थानिक लग्न सारणी की सहायता से जन्म लग्न की भान्ति ही वर्ष लग्न ज्ञात कर सकते हैं। फिर वर्ष प्रवेश के वर्षेष्ट अनुसार ही ग्रहस्थापना कर लेंवे। उदाहरण सहित इसका स्पष्टीकरण हमारी प्रकाशित **वर्षफल चन्द्रिका** में पढ़ें।

मुन्था–जन्म लग्न राशि की संख्या में से गतवर्ष की संख्या को जोड़कर जो योगफल आए, उसे १२ से भाग देकर जो संख्या शेष रहे, उसी राशि अंक पर मुंथा स्थापित करनी चाहिए। **मुन्था जन्म** लग्न से प्रति वर्ष एक राशि आगे चलती है।

त्रिपताकी चक्र–त्रिपताकी का **चन्द्रमा** निकालने के लिए वर्ष प्रवेश की संख्या को ९ द्वारा भाग दें। जो शेष बचे जन्मकुण्डली में जिस राशि में चन्द्रमा स्थित है, उससे आगे उतने भाव गिनकर प्राप्त राशि अंक पर चन्द्रमा लगावें। शेष ग्रहों के लिए वर्ष प्रवेश संख्या में ४ द्वारा भाग दें। शेष को जन्मस्थान के ग्रहों से जहां वे स्थित हैं, उतना आगे गिनकर चक्र में लिखें।

मुद्दा दशा निकालना–गत वर्ष में जन्म नक्षत्र जोड़कर उसमें से दो घटावें, ९ द्वारा भाग देने से जो शेष बचे तदनुसार दशा जाननी चाहिए। यदि १ बचे तो **सूर्य** की, २ बचें तो **चन्द्रमा**, ३ बचें तो **मंगल**, ४ से **राहु**, ५ बचें तो **गुरु**, ६ बचें तो **शनि**, ७ से **बुध**, ८ से **केतु**, ९ अथवा ० बचे तो **शुक्र** की दशा जाननी चाहिएं।

मुद्दा दशा के दिनादि–**सूर्य** के १८ दिन, **चन्द्रमा** के ३०, **मंगल** के २१ दिन, **राहु** के ५४ दिन, **गुरु** के ४८ दिन, **शनि** के ५७ दिन, **बुध** के ५१ दिन, **केतु** के २१ दिन तथा **शुक्र** के ६० दिन **मुद्दा दशा में होते हैं।**

स्थानबल–सूर्य वर्ष लग्न से ९वें, चन्द्रमा ३रे, मंगल ६ठे, बुध १, गुरु ११वें, शुक्र ५, शनि १२वें स्थान में हो तो ५ हर्ष बल देते हैं।

स्वभोच्चबल–सूर्य १।५, चन्द्रमा २।४, मंगल १।८।१०, बुध ३।६, बृहस्पति १२।४, शुक्र २।७।१२, शनि १०।११।७–इन राशियों में ५ बल देते हैं।

पुरुष-स्त्री ग्रहः–स्त्री ग्रह लग्न से १।२।३।७।८।९, घरों में ५ बल देते हैं और पुरुषग्रह लग्न से ४।५।६।१०।११।१२ घरों में ५ बल देते हैं। दिन के समय पुरुष ग्रह तथा रात्रि के इष्ट में स्त्री ग्रह ५ बल देते हैं।

त्रिराशिपति चक्र

मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.	राशि
सू.	शु.	श.	शु.	बृ.	चं.	बु.	मं.	श.	मं.	बृ.	चं.	दिनपति
बृ.	चं.	बु.	मं.	सू.	शु.	श.	शु.	श.	मं.	बृ.	चं.	रात्रिपति

वर्ष लग्न की जो राशि हो उसकी ऊपर की पंक्ति में राशि के सामने देखो और उसके नीचे यदि इष्ट दिन का हो तो दिनपति के सामने रात्रि का हो तो रात्रिपति के सामने और वर्ष लग्न की राशि के नीचे जो ग्रह हैं वही त्रिराशिपति होगा।

वर्ष कुण्डली में दृष्टि चक्र

ग्रह	सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.
प्रत्यक्ष मित्र	५–९	५–९	५–९	५–९	५–९	५–९	५–९
गुप्त मित्र	३–११	३–११	३–११	३–११	३–११	३–११	३–११
प्रत्यक्ष शत्रु	१–७	१–७	१–७	१–७	१–७	१–७	१–७
गुप्त शत्रु	४–१०	४–१०	४–१०	४–१०	४–१०	४–१०	४–१०

वर्ष कुण्डली में जो ग्रह जिस भाव में पड़ा हो वह उस भाव से पांचवें और ९वें भाव को प्रत्यक्ष मित्र दृष्टि से देखता है। तीसरे ग्यारहवें गुप्तमित्र दृष्टि से, पहले सातवें प्रत्यक्ष शत्रु दृष्टि से और ४-१० गुप्त शत्रु दृष्टि से देखते हैं।

(१) प्रत्यक्ष मित्र दृष्टि शुभ और बलवान् होती है। (२) गुप्त मित्र दृष्टि सम है। (३) गुप्त शत्रु दृष्टि अशुभ है। (४) शत्रु दृष्टि अशुभ है।

दृष्टि फल

प्रत्यक्ष मित्र दृष्टि–इस का फल कार्य में शीघ्र सफलता, सम्बन्धियों से सुख-प्रेम और लाभ इत्यादि इस से जिन मनुष्यों के साथ पहिले शत्रुता होती है उन से प्रेम उत्पन्न होता है तथा नए सम्बन्ध स्थापित होते हैं।

गुप्त शत्रु दृष्टि–यह प्रत्यक्ष दृष्टि से कुछ कम फलदायक है। अर्थात् कार्य बड़ी कठिनता से सफलता को प्राप्त होता है, यह प्रत्यक्ष रूप में सहायता करने वाली होती है, परन्तु गुप्त रूप से शत्रुता करने वाली होती है।

गुप्त मित्र दृष्टि–इसका फल प्रत्यक्ष मित्र दृष्टि से कम होता है। यह भी कार्य में सफलता व लाभदायक है, परन्तु प्रत्यक्ष भाव से नहीं, गुप्त भाव से सफलता व कार्य सिद्ध होता है।

प्रत्यक्ष शत्रु दृष्टि–इसका फल शत्रुता उत्पन्न करना, बनता कार्य बिगाड़ना, मित्र से वैर, धन हानि, मानसिक परेशानी, निकट बंधुओं से मन-मुटाव इत्यादि हैं।

वेध-सिद्ध नवीन मतानुसार वर्ष प्रवेश सारिणी

एक सौर वर्ष में सूर्य द्वारा उसी राशि, अंश, कला, विकला पर घूमकर पुन: जितना समय लगता है, उसकी अवधि (Duration) के सम्बन्ध भिन्न-भिन्न मत पाए जाते रहे हैं। ''सूर्य सिद्धान्तानुसार'' उक्त समय ३६५ दिन, १५ घड़ी, ३१ पल ३० विपल है, जबकि आधुनिक वेधशालाओं द्वारा प्रमाणित यह समयावधि ३६५ दिन, १५ घड़ी २२ पल और साढ़े ५३ विपल होते हैं। इस प्रकार दोनों मतों में लगभग ८।३० पल अथवा ३ मिन्ट २७ सेकिण्ड का अन्तर पाया जाता है। प्रत्येक शताब्दि (वर्ष) यह अन्तर बढ़ता जाता है। फलस्वरूप वर्ष प्रवेश इष्ट एवं कभी-कभी एक-दो लग्नों का भी अन्तर पड़ जाता है। गत पृष्ठों में हमने सूर्य सिद्धान्तानुसार वर्ष सारिणी पहिले की भान्ति ही दी हुई है। अब आजकल कुछ विद्वान नवीन वेधसिद्ध वर्ष सारिणी का प्रयोग करने लगे हैं। इससे फलादेश में भी अधिक सूक्ष्मता आ जाती है। अधिक जानकारी हेतु हमारे ज्योतिष कार्यालय से **'वर्षफल चन्द्रिका'** लेखक पण्डित पन्ना लाल गणितकर्त्ता (संशोधित संस्करण) मंगवा कर पढ़ें। यद्यपि परम्परानुगामी सूर्य-सिद्धान्तीय वर्ष सारिणी का ही प्रयोग कर रहे हैं।

गताब्द	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
वार	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३	४	६	०	१	२	४	५	६	०	२	३	४	५	०	१	२
घटी	१५	३०	४६	१	१६	३२	४७	३	१८	३३	४९	४	१९	३५	५०	६	२१	३६	५२	७	२३	३८	५३	९	२४	३९	५५	१०	२६	४१
पल	२२	४५	८	३१	५४	१७	४०	३	२५	४८	११	३४	५७	२०	४३	६	२९	५१	१४	३७	०	२३	४६	९	३२	५४	१७	४०	३	२६
विपल	५३	४६	३९	३२	२५	१८	११	०४	५७	५०	४३	३६	२९	२२	१५	८	०१	५४	४७	४०	३३	२६	१९	१२	०५	५८	५१	४४	३७	३०

गताब्द	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
वार	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३	४	६	०	१	२	४	५
घटी	५६	१२	२७	४२	५८	१३	२९	४४	५९	१५	३०	४६	१	१६	३२	४७	२	१८	३३	४९	४	१९	३५	५०	५	२१	३६	५२	७	२२
पल	४९	१२	३५	५८	२०	४३	६	२९	५२	१५	३८	१	२३	४६	९	३२	५५	१८	४१	४	२७	४९	१२	३५	५८	२१	४४	७	३०	५३
विपल	२३	१६	९	२	५५	४८	४१	३४	२७	२०	१३	६	५९	५२	४५	३८	३१	२४	१७	१०	०३	५६	४९	४२	३५	२८	२१	१४	७	०

गताब्द	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	९०
वार	६	०	२	३	४	५	०	१	२	३	५	६	०	२	३	४	५	६	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१
घटी	३८	५३	९	२४	३९	५५	१०	२५	४१	५६	१२	२७	४२	५८	१३	२८	४४	५९	१५	३०	४५	०१	१६	३२	४७	०२	१८	३३	४८	०४
पल	१५	३८	१	२४	४७	१०	३३	५६	१८	४१	४	२७	५०	१३	३६	५९	२२	४४	७	३०	५३	१६	३९	२	२५	४७	१०	३३	५६	१९
विपल	५३	५६	३९	३२	२५	१८	११	४	५७	५०	४३	३६	२९	२२	१५	८	१	५४	४७	४०	३३	२६	१९	१२	०५	५८	५१	४४	३७	३०

वर्ष कुण्डली में मुंथा का महत्त्व

वर्ष कुण्डली में नवग्रहों के समान मुंथा की भी स्थापना की जाती है। मुंथा यद्यपि कोई ग्रह नहीं है, तो भी इसका फल ग्रह के समान ही महत्त्वपूर्ण है। मुंथा जन्म लग्न से प्रति वर्ष एक-एक राशि आगे चलती है। वर्ष कुण्डली में ४, ६, ७, ८ एवं १२वें भाव में स्थित मुंथा अशुभ फलदायक होती है। यदि ४, ६, ७, ८, १२वें भाव में शुभ ग्रह युक्त हो तो इतनी अधिक अनिष्टकारी नहीं होती। लग्नादि द्वादश भावों में मुंथा का फल इस प्रकार होगा—(१) **लग्न भाव में मुंथा** स्थित हो तो उस वर्ष शत्रुओं का नाश, भाग्य में वृद्धि, सवारी का सुख, यदि चर राशि में हो तो स्थान परिवर्तन के भी योग बनते हैं। (२) **द्वितीय भावस्थ मुंथा** हो तो कठिन परिश्रम द्वारा धन लाभ एवं धन प्राप्ति के साधन बनते हैं। मनोरंजन एवं सुख साधनों पर व्यय भी बढ़ता है। (३) **तृतीय भावस्थ मुंथा** होने से शत्रुओं का नाश, भाइयों, मित्रों या उच्च पद प्राप्त महानुभावों का सहयोग प्राप्त होता है। (४) **चतुर्थ भावस्थ मुंथा** शरीर कष्ट, वायु विकार, अपने-परायों से विरोध, गुप्त चिन्ताएँ, नौकरी और व्यवसाय में अनेक प्रकार के विघ्न, स्थान परिवर्तन आदि अशुभ फल घटित होते हैं। (५) **पंचमस्थ मुंथा** अत्यन्त शुभ फल देने वाली होती है। सर्विस अथवा व्यापार में लाभ, धन, पुत्र एवं विद्या का लाभ, नए उद्योग से सफलता मिले। (६) **षष्ठस्थ मुंथा** हो तो शरीर कष्ट, शत्रुओं का भय, चित्त में अशान्ति, नानके पक्ष को हानि, स्वभाव में चिड़चिड़ापन रहता है। (७) **सप्तमस्थ मुंथा** अशुभ रहती है। स्त्री अथवा निकट बन्धुओं की ओर से कलह-क्लेश, परिवारिक सदस्यों को कष्ट, बने बनाए कार्य बिगड़ना आदि अशुभ फल घटित होते हैं। (८) **अष्टमस्थ मुंथा** होने से आशाओं में निराशा, पेट तथा अन्य गुप्त रोगों का भय, स्थान परिवर्तन, अनावश्यक यात्राओं तथा स्वास्थ्य पर भी अपव्यय होता है। (९) **नवमस्थ मुंथा** उत्तम फल देती है। नौकरी में पदोन्नति अथवा व्यवसाय में लाभ-वृद्धि, परिवारिक सुख एवं भाग्योन्नति होती है। (१०) **दशमस्थ मुंथा** होने से आर्थिक लाभ, सरकारी क्षेत्र में यदि कोई कार्य रुका होगा तो पूरा होगा (अर्थात् लाभ होगा) तथा सोचे हुए कार्यों में सफलता प्राप्त होगी। (११) **ग्यारवें भाव में मुंथा** होने से धन लाभ सुख-प्राप्ति, व्यापार और क्रय-विक्रय के कार्यों से लाभ होगा। (१२) **द्वादशस्थ मुंथा** आने से नया व्यापार तथा यात्रा करने से हानि, स्थान परिवर्तन के योग बनेंगे। (विस्तृत फलादेश के लिए देखें हमारी पुस्तक **'वर्षफल चंद्रिका'**) **मूल्य 110/- रु. मात्र**

वेध सिद्ध शुद्ध वर्ष प्रवेश सारिणी (घण्टा-मिनटों में)

सूर्य सिद्धान्तानुसार 365 दिन, 15 घटी, 31 पल, 30 विपलों में-**अर्थात्** 365 दिन, 6 घण्टे, 12 मिनट एवं 36 सैकिंडों में सूर्य पुनः उसी स्थान या बिन्दु पर आ जाता है। जबकि नवीन एवं आधुनिक अनुसंधानों से यह सिद्ध हो चुका है कि सूर्य (पृथ्वी) को पुनः उसी बिन्दु पर आने में 365 दिन, 6 घण्टे, 9 मिनट एवं 9 सैकिंड लगते हैं। इस प्रकार दोनों मतों में लगभग साढ़े तीन मिनटों अर्थात् 3 मिनट 27 सैकिंड (प्रतिवर्ष) का अन्तर पड़ता है तथा वर्षमान सारिणी में यह अन्तर प्रतिवर्ष बढ़ता जाता है। 40 वर्षों के अंतराल में यह अन्तर 2 घण्टे 18 मिनट का हो जाएगा। जिससे प्राचीन सूर्य सिद्धान्तीय सारणी से एक/दो लग्नों का अतर हो जाना स्वाभाविक है।

आजकल अधिकांश ज्योतिषी वेध सिद्ध सूक्ष्म वर्ष प्रवेश सारिणी का प्रयोग करने लगे हैं। आधुनिक कम्प्यूटर प्रणाली द्वारा भी नवीन वर्ष प्रवेश सारिणी का ही अनुमोदन किया जाता है। गत वर्षों से पंचांग दिवाकर में नवीन सूक्ष्म वर्ष प्रवेश सारिणी घड़ी/पलात्मक में दे चुके हैं। आगे वेद्ध सिद्ध सूक्ष्म वर्ष-प्रवेश सारिणी घण्टा/मिनटों में दे रहे हैं। **वर्ष-लग्न** निकालने के लिए इसका प्रयोग **और भी अधिक सरल** है।

	वार	घंटे	मिनट
जन्म वार समयादि	4	5	30
सारिणी से प्राप्त संख्या	+ 1	19	02
	5	24	32
अर्थात् (गुरुवार)	5 वार	24	32

प्रस्तुत सारिणी की प्रयोग विधि–आपको जिस साल का वर्ष प्रवेश ज्ञात करना हो, उस वर्ष में से जन्म वर्ष निकाल देने से हम **गताब्द** अर्थात् गतवर्ष मिलेंगे। गतवर्ष के सामने के वार एवं घंटा/मिंट को अपने जन्म वार एवं जन्म समय (स्टैं. टा.) में जमा कर देंगे से हमें नववर्ष प्रवेश कालीन वार एवं घण्टा-मिनट भा. स्टैं. टाईम में मिल जाएगा। नववर्ष प्रवेश स्टैं. घंटा/मिंट को दैनिक लग्न में देखने से हमें लग्न ज्ञात हो जाएगा। **ध्यान रहे,** सारिणी में जमा करने से जोड़ यदि 24 घं. से अधिक आ जाए, तो उसमें से 24 घटा दें, तथा 1 वार जमा कर लेवें। वार की गणना रविवार से की जाती है।

उदाहरण–मान लो किसी जातक का जन्म 2 अक्तूबर, 1974 ई० में, बुधवार की प्रातः साढ़े पाँच (5/30) बजे हुआ। यदि हमने उस जातक का सन् 2020 ई. की वर्ष कुण्डली तैयार करनी है, तो 2020 ई. में से जन्म वर्ष घटा देने पर हमें 46 गतवर्ष प्राप्त हुए। आगे दी गई वर्ष प्रवेश सारिणी में गतवर्ष 46 के सामने हमें 1 वार, 19 घण्टे एवं 02 मिनट मिले। इनको जातक के जन्मवार एवं जन्म समय (5/30) में जमा कर देने से हमें 5 वार, 24 घण्टे, 32 मिनट प्राप्त हुए। हमें 5 वार अर्थात् गुरुवार की रात्रि 12 बजकर, 32 मिनट प्राप्त हुए।

जन्त्री/पंचाँग में दी गई दै. लग्न सारिणी से देखने पर 1 अक्तू., गुरुवार की रात्रि 12 बजकर 32 मिनट पर हमें **'मिथुन' वर्ष लग्न** प्राप्त हुआ। वर्ष लग्न मिथुन में सं. २०७७ की पंचांग से 2 अक्तूबर, 2020 ई. रात्रि 24/32 स्टै. टा. के ग्रह स्थापन करके हमें नववर्ष प्रवेश की कुण्डली प्राप्त होगी। मुंथा लगाने के लिए जातक के जन्म लग्न राशि में गतवर्ष जमा करके प्राप्त संख्या को 12 से भाग देने जो संख्या शेष बचे उसी राशि पर **मुंथा** स्थापित की जाती है।

वर्ष लग्न के अंश, कला, विकला जानने के लिए हमें वर्षेष्ट, सूर्य स्पष्ट तथा (जातक द्वारा वर्तमान में स्थायी तौर पर रह रहे) नगर की लग्न सारिणी का प्रयोग करना होगा। अधिक जानकारी एवं फलादेश के लिए हमारी प्रकाशित **'वर्षफल चन्द्रिका'** पुस्तक का अध्ययन करें। मूल्य केवल 110 रु.।

गत वर्ष	वार	घंटे	मिंट	गत वर्ष	वार	घंटे	मिंट	गत वर्ष	वार	घंटे	मिंट	गत वर्ष	वार	घंटे	मिंट
1	1	6	9	**26**	4	15	58	**51**	1	01	47	**76**	4	11	36
2	2	12	18	**27**	5	22	07	**52**	2	07	57	**77**	5	17	46
3	3	18	27	**28**	0	04	17	**53**	3	14	06	**78**	6	23	55
4	5	00	37	**29**	1	10	26	**54**	4	20	15	**79**	1	06	04
5	6	6	46	**30**	2	16	35	**55**	6	02	24	**80**	2	12	13
6	0	12	55	**31**	3	22	44	**56**	0	08	33	**81**	3	18	22
7	1	19	04	**32**	5	04	53	**57**	1	14	42	**82**	5	00	31
8	3	01	13	**33**	6	11	02	**58**	2	20	51	**83**	6	06	41
9	4	07	23	**34**	0	17	32	**59**	4	03	01	**84**	0	12	50
10	5	13	32	**35**	1	23	21	**60**	5	09	10	**85**	1	18	59
11	6	19	41	**36**	3	05	30	**61**	6	15	19	**86**	3	01	08
12	1	01	50	**37**	4	11	39	**62**	0	21	28	**87**	4	07	17
13	2	07	59	**38**	5	17	48	**63**	2	03	37	**88**	5	13	26
14	3	14	08	**39**	6	23	57	**64**	3	06	43	**89**	6	19	36
15	4	20	17	**40**	1	06	07	**65**	4	15	56	**90**	1	01	45
16	6	02	27	**41**	2	12	16	**66**	5	22	05	**91**	2	07	54
17	0	08	36	**42**	3	18	25	**67**	0	04	14	**92**	3	14	03
18	1	14	45	**43**	5	00	34	**68**	1	10	23	**93**	4	20	12
19	2	20	54	**44**	6	06	43	**69**	2	16	32	**94**	6	02	21
20	4	03	03	**45**	0	12	42	**70**	3	22	41	**95**	0	08	30
21	5	9	12	**46**	1	19	02	**71**	5	04	51	**96**	1	14	40
22	6	15	22	**47**	3	01	11	**72**	6	11	00	**97**	2	20	49
23	0	21	31	**48**	4	07	20	**73**	0	17	09	**98**	4	20	58
24	2	03	40	**49**	5	13	29	**74**	1	23	18	**99**	5	09	07
25	3	09	49	**50**	6	19	38	**75**	3	05	27	**100**	6	15	16

दैनिक लग्न सारणी जनवरी भा. स्टै. टा. समाप्ति काल दिल्ली DELHI

जनवरी	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक
ता.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
1	8 10	9 53	11 21	12 45	14 21	16 16	18 30	20 50	23 09	1 25	3 43	6 02
2	8 06	9 49	11 17	12 41	14 17	16 12	18 26	20 47	23 05	1 21	3 39	5 58
3	8 02	9 45	11 13	12 37	14 13	16 08	18 22	20 43	23 01	1 17	3 35	5 54
4	7 58	9 41	11 09	12 33	14 09	16 04	18 18	20 39	22 57	1 13	3 31	5 50
5	7 54	9 37	11 05	12 29	14 05	16 00	18 14	20 35	22 53	1 09	3 27	5 46
6	7 50	9 33	11 01	12 25	14 01	15 56	18 10	20 31	22 49	1 05	3 23	5 42
7	7 46	9 29	10 57	12 21	13 57	15 52	18 06	20 27	22 45	1 01	3 19	5 38
8	7 42	9 25	10 53	12 17	13 53	15 48	18 02	20 23	22 41	0 57	3 15	5 34
9	7 38	9 21	10 49	12 13	13 49	15 44	17 58	20 18	22 37	0 53	3 11	5 30
10	7 34	9 17	10 45	12 09	13 45	15 40	17 54	20 15	22 33	0 49	3 07	5 26
11	7 30	9 13	10 41	12 05	13 41	15 36	17 50	20 11	22 29	0 45	3 03	5 22
12	7 26	9 09	10 37	12 01	13 37	15 32	17 46	20 07	22 25	0 41	2 59	5 18
13	7 22	9 05	10 33	11 57	13 33	15 28	17 42	20 04	22 22	0 37	2 55	5 14
14	7 18	9 01	10 29	11 53	13 29	15 24	17 38	20 00	22 18	0 33	2 51	5 10
15	7 14	8 57	10 25	11 49	13 25	15 20	17 34	19 56	22 14	0 29	2 47	5 6
16	7 10	8 54	10 22	11 46	13 22	15 17	17 31	19 52	22 10	0 26	2 43	5 2
17	7 06	8 50	10 18	11 42	13 18	15 13	17 27	19 48	22 06	0 22	2 39	4 58
18	7 02	8 46	10 14	11 38	13 14	15 09	17 23	19 44	22 02	0 18	2 35	4 54
19	6 58	8 42	10 10	11 34	13 10	15 05	17 19	19 40	21 58	0 14	2 31	4 51
20	6 54	8 38	10 06	11 30	13 06	15 01	17 15	19 36	21 54	0 10	2 27	4 47
21	6 50	8 34	10 02	11 26	13 02	14 57	17 11	19 32	21 50	0 6	2 23	4 43
22	6 47	8 30	9 58	11 22	12 58	14 53	17 07	19 28	21 46	0 2	2 19	4 39
23	6 43	8 26	9 54	11 18	12 54	14 49	17 03	19 24	21 42	23 58	2 15	4 35
24	6 39	8 22	9 50	11 14	12 50	14 45	16 59	19 20	21 38	23 54	2 12	4 31
25	6 35	8 18	9 46	11 10	12 46	14 41	16 55	19 16	21 34	23 50	2 08	4 27
26	6 31	8 15	9 43	11 07	12 43	14 38	16 52	19 13	21 31	23 47	2 04	4 23
27	6 27	8 11	9 39	11 03	12 39	14 34	16 48	19 09	21 27	23 43	2 00	4 19
28	6 23	8 07	9 35	10 59	12 35	14 30	16 44	19 05	21 23	23 39	1 56	4 16
29	6 19	8 03	9 31	10 55	12 31	14 26	16 40	19 01	21 19	23 35	1 52	4 12
30	6 15	7 59	9 27	10 51	12 27	14 22	16 36	18 57	21 15	23 31	1 48	4 08
31	6 12	7 55	9 23	10 47	12 23	14 18	16 32	18 53	21 11	23 27	1 44	4 04
फर	6 08	——	——	——	——	——	——	——	——	——	——	——

दैनिक लग्न सारणी फरवरी भा. स्टै. टा. समाप्ति काल दिल्ली DELHI

फरवरी	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु
ता.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
1	7 51	9 19	10 43	12 19	14 14	16 28	18 49	21 07	23 23	1 40	4 00	6 04
2	7 47	9 15	10 39	12 15	14 10	16 24	18 45	21 03	23 19	1 36	3 56	6 00
3	7 43	9 11	10 35	12 11	14 06	16 20	18 41	20 59	23 15	1 32	3 52	5 56
4	7 39	9 07	10 31	12 07	14 02	16 16	18 37	20 55	23 11	1 28	3 48	5 52
5	7 35	9 03	10 27	12 03	13 58	16 12	18 33	20 52	23 07	1 24	3 44	5 48
6	7 31	8 59	10 23	11 59	13 54	16 08	18 29	20 48	23 03	1 21	3 40	5 44
7	7 27	8 55	10 19	11 55	13 50	16 04	18 25	20 44	22 59	1 17	3 36	5 40
8	7 23	8 51	10 15	11 51	13 46	16 00	18 21	20 40	22 55	1 13	3 32	5 36
9	7 19	8 47	10 11	11 47	13 42	15 56	18 18	20 36	22 51	1 09	3 28	5 32
10	7 15	8 43	10 07	11 43	13 38	15 52	18 14	20 32	22 47	1 05	3 24	5 28
11	7 11	8 39	10 03	11 39	13 34	15 48	18 10	20 28	22 43	1 01	3 20	5 24
12	7 07	8 35	9 59	11 35	13 30	15 44	18 06	20 24	22 39	24 57	3 16	5 20
13	7 04	8 31	9 55	11 31	13 26	15 40	18 02	20 20	22 35	24 53	3 12	5 16
14	7 00	8 27	9 51	11 27	13 22	15 36	17 58	20 16	22 31	24 49	3 08	5 12
15	6 56	8 23	9 47	11 23	13 18	15 32	17 54	20 12	22 27	24 45	3 04	5 08
16	6 52	8 19	9 43	11 19	13 14	15 28	17 50	20 08	22 23	24 41	3 00	5 04
17	6 48	8 15	9 39	11 15	13 10	15 24	17 46	20 04	22 19	24 37	2 56	5 01
18	6 44	8 11	9 35	11 11	13 06	15 20	17 42	20 00	22 15	24 33	2 52	4 57
19	6 40	8 07	9 31	11 07	13 02	15 16	17 38	19 56	22 11	24 29	2 48	4 53
20	6 36	8 04	9 28	11 04	12 58	15 13	17 34	19 52	22 07	24 25	2 44	4 49
21	6 32	8 00	9 24	11 00	12 55	15 09	17 30	19 48	22 03	24 21	2 41	4 45
22	6 28	7 56	9 20	10 56	12 51	15 05	17 26	19 44	21 59	24 17	2 37	4 41
23	6 24	7 52	9 16	10 52	12 47	15 01	17 22	19 40	21 55	24 14	2 33	4 37
24	6 21	7 49	9 13	10 49	12 44	14 58	17 19	19 37	21 52	24 11	2 30	4 34
25	6 18	7 46	9 10	10 46	12 41	14 55	17 16	19 34	21 49	24 08	2 27	4 31
26	6 14	7 42	9 06	10 42	12 37	14 51	17 12	19 30	21 45	24 04	2 23	4 27
27	6 11	7 39	9 03	10 39	12 34	14 48	17 09	19 27	21 42	24 01	2 20	4 24
28	6 08	7 36	9 00	10 36	12 31	14 45	17 06	19 24	21 39	23 58	2 17	4 21
29	6 04	7 32	8 56	10 32	12 27	14 41	17 02	19 20	21 35	23 54	2 13	4 17
मार्च	6 00	——	——	——	——	——	——	——	——	——	——	——

दैनिक लग्न सारणी मार्च भा. स्टै. टा. समाप्ति काल दिल्ली DELHI

मार्च	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर
ता.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं.मिं.	घं. मिं.
1	7 28	8 53	10 28	12 23	14 37	16 58	19 16	21 31	23 50	2 09	4 13	5 57
2	7 24	8 49	10 24	12 19	14 33	16 54	19 12	21 27	23 46	2 05	4 09	5 53
3	7 21	8 45	10 21	12 16	14 30	16 50	19 08	21 23	23 42	2 01	4 05	5 49
4	7 17	8 41	10 17	12 12	14 26	16 46	19 04	21 19	23 38	1 57	4 01	5 45
5	7 13	8 37	10 13	12 08	14 22	16 42	19 00	21 15	23 35	1 53	3 58	5 41
6	7 09	8 33	10 09	12 04	14 18	16 38	18 56	21 11	23 31	1 49	3 54	5 37
7	7 05	8 29	10 05	12 00	14 14	16 34	18 52	21 08	23 27	1 45	3 50	5 33
8	7 01	8 25	10 01	11 56	14 10	16 30	18 48	21 04	23 23	1 41	3 46	5 29
9	6 57	8 21	9 57	11 52	14 06	16 27	18 45	21 00	23 19	1 38	3 42	5 25
10	6 53	8 17	9 53	11 48	14 02	16 23	18 41	20 56	23 15	1 34	3 38	5 21
11	6 49	8 13	9 49	11 44	13 58	16 19	18 37	20 52	23 11	1 30	3 34	5 17
12	6 45	8 09	9 45	11 40	13 54	16 15	18 33	20 48	23 08	1 26	3 30	5 14
13	6 41	8 05	9 41	11 36	13 50	16 11	18 29	20 44	23 04	1 23	3 27	5 10
14	6 37	8 01	9 37	11 32	13 46	16 07	18 25	20 40	23 00	1 19	3 23	5 06
15	6 33	7 57	9 33	11 28	13 42	16 03	18 21	20 36	22 56	1 15	3 19	5 02
16	6 29	7 53	9 29	11 24	13 38	15 59	18 17	20 32	22 52	1 11	3 15	4 58
17	6 25	7 49	9 25	11 20	13 34	15 55	18 13	20 28	22 48	1 07	3 11	4 54
18	6 21	7 45	9 21	11 16	13 30	15 51	18 09	20 24	22 44	1 03	3 07	4 50
19	6 17	7 41	9 17	11 12	13 26	15 47	18 05	20 20	22 40	0 59	3 03	4 46
20	6 13	7 37	9 13	11 08	13 23	15 43	18 01	20 16	22 36	0 55	2 59	4 42
21	6 09	7 33	9 09	11 04	13 19	15 39	17 57	20 12	22 32	0 51	2 55	4 38
22	6 05	7 29	9 05	11 00	13 15	15 35	17 53	20 08	22 28	0 47	2 51	4 34
23	6 01	7 26	9 01	10 56	13 11	15 31	17 49	20 04	22 24	0 43	2 47	4 30
24	5 57	7 22	8 57	10 53	13 07	15 27	17 45	20 00	22 20	0 39	2 43	4 27
25	5 53	7 18	8 53	10 49	13 03	15 23	17 41	19 56	22 16	0 35	2 39	4 23
26	5 49	7 14	8 49	10 45	12 59	15 19	17 37	19 53	22 12	0 31	2 35	4 19
27	5 45	7 10	8 46	10 41	12 55	15 15	17 33	19 49	22 08	0 27	2 31	4 15
28	5 41	7 06	8 42	10 37	12 51	15 11	17 29	19 45	22 04	0 23	2 28	4 11
29	5 37	7 02	8 38	10 33	12 47	15 07	17 25	19 41	22 00	0 19	2 24	4 07
30	5 34	6 58	8 34	10 29	12 44	15 03	17 21	19 37	21 56	0 15	2 20	4 03
31	5 30	6 54	8 30	10 25	12 40	14 59	17 17	19 33	21 52	0 11	2 16	3 59
अप्रै	5 26	——	——	——	——	——	——	——	——	——	——	——

दैनिक लग्न सारणी अप्रैल भा. स्टै. टा. समाप्ति काल दिल्ली DELHI

अप्रैल	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ
ता.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं.मिं.	घं. मिं.
1	6 50	8 26	10 21	12 36	14 55	17 13	19 29	21 48	0 07	2 12	3 55	5 22
2	6 46	8 22	10 17	12 32	14 51	17 09	19 25	21 44	0 03	2 08	3 51	5 18
3	6 42	8 18	10 13	12 28	14 47	17 05	19 21	21 40	23 59	2 04	3 47	5 14
4	6 38	8 14	10 09	12 24	14 43	17 01	19 18	21 36	23 55	2 00	3 43	5 10
5	6 34	8 10	10 05	12 20	14 39	16 57	19 14	21 33	23 52	1 56	3 39	5 06
6	6 31	8 07	10 01	12 16	14 35	16 53	19 10	21 29	23 48	1 52	3 35	5 02
7	6 27	8 03	9 58	12 12	14 31	16 49	19 06	21 25	23 44	1 48	3 31	4 58
8	6 23	7 59	9 54	12 08	14 27	16 46	19 02	21 21	23 40	1 44	3 27	4 54
9	6 19	7 55	9 50	12 04	14 23	16 42	18 58	21 17	23 36	1 40	3 23	4 51
10	6 15	7 51	9 46	12 00	14 20	16 38	18 54	21 13	23 32	1 36	3 19	4 47
11	6 11	7 47	9 42	11 56	14 16	16 34	18 50	21 09	23 28	1 32	3 15	4 43
12	6 07	7 43	9 38	11 52	14 12	16 30	18 46	21 05	23 24	1 28	3 11	4 39
13	6 03	7 39	9 34	11 48	14 08	16 26	18 42	21 01	23 20	1 24	3 07	4 35
14	5 59	7 35	9 30	11 44	14 04	16 22	18 38	20 57	23 16	1 20	3 03	4 31
15	5 55	7 31	9 26	11 41	14 00	16 18	18 34	20 53	23 12	1 16	2 59	4 27
16	5 51	7 27	9 22	11 37	13 56	16 14	18 30	20 49	23 08	1 12	2 55	4 23
17	5 47	7 23	9 18	11 33	13 52	16 10	18 26	20 45	23 04	1 08	2 51	4 19
18	5 43	7 19	9 15	11 29	13 49	16 06	18 23	20 41	23 00	1 04	2 47	4 15
19	5 39	7 15	9 11	11 25	13 45	16 02	18 19	20 37	22 56	1 00	2 43	4 11
20	5 35	7 11	9 07	11 21	13 41	15 58	18 15	20 33	22 52	00 56	2 39	4 07
21	5 31	7 07	9 03	11 17	13 37	15 54	18 11	20 29	22 49	00 52	2 35	4 03
22	5 27	7 03	8 59	11 13	13 33	15 50	18 07	20 25	22 45	00 48	2 31	3 59
23	5 23	6 59	8 55	11 09	13 29	15 46	18 03	20 22	22 41	00 44	2 27	3 55
24	5 19	6 55	8 51	11 05	13 25	15 42	17 59	20 18	22 37	00 40	2 23	3 51
25	5 15	6 51	8 47	11 01	13 21	15 38	17 55	20 14	22 33	00 36	2 19	3 47
26	5 11	6 47	8 43	10 57	13 17	15 34	17 51	20 10	22 29	00 32	2 15	3 43
27	5 07	6 44	8 39	10 53	13 13	15 30	17 47	20 06	22 25	00 28	2 11	3 39
28	5 03	6 40	8 35	10 49	13 10	15 26	17 43	20 02	22 21	00 24	2 07	3 35
29	4 59	6 36	8 31	10 45	13 06	15 22	17 39	19 58	22 17	00 20	2 03	3 31
30	4 55	6 32	8 27	10 41	13 02	15 19	17 35	19 54	22 13	00 17	1 59	3 27
मई	4 51	——	——	——	——	——	——	——	——	——	——	——

अप्र 5 26

दैनिक लग्न सारणी मई भा. स्टै. टा. समाप्ति काल दिल्ली DELHI

ता.	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं.मिं.	घं. मिं.
1	6 28	8 23	10 37	12 58	15 15	17 31	19 50	22 09	00 13	1 56	3 23	4 47
2	6 24	8 19	10 33	12 54	15 11	17 27	19 46	22 05	00 09	1 52	3 19	4 44
3	6 20	8 15	10 29	12 50	15 7	17 24	19 42	22 01	00 05	1 48	3 16	4 40
4	6 16	8 11	10 25	12 46	15 3	17 20	19 38	21 57	00 01	1 44	3 12	4 36
5	6 12	8 07	10 21	12 42	14 59	17 16	19 34	21 53	23 57	1 40	3 08	4 32
6	6 08	8 03	10 17	12 38	14 55	17 12	19 30	21 49	23 53	1 36	3 04	4 28
7	6 04	7 59	10 13	12 34	14 51	17 08	19 26	21 45	23 49	1 32	3 00	4 24
8	6 00	7 55	10 09	12 30	14 47	17 04	19 22	21 41	23 45	1 28	2 56	4 20
9	5 56	7 51	10 05	12 26	14 43	17 00	19 18	21 37	23 41	1 24	2 52	4 16
10	5 52	7 47	10 01	12 22	14 39	16 56	19 14	21 33	23 37	1 20	2 48	4 12
11	5 48	7 44	9 57	12 18	14 35	16 52	19 10	21 29	23 33	1 16	2 44	4 08
12	5 44	7 40	9 53	12 14	14 31	16 48	19 06	21 25	23 29	1 12	2 40	4 04
13	5 40	7 36	9 49	12 10	14 28	16 44	19 02	21 21	23 25	1 08	2 36	4 00
14	5 36	7 32	9 45	12 06	14 24	16 40	18 58	21 17	23 21	1 04	2 32	3 56
15	5 32	7 28	9 41	12 02	14 20	16 36	18 54	21 13	23 17	1 00	2 28	3 52
16	5 28	7 24	9 37	11 58	14 16	16 32	18 50	21 09	23 13	24 56	2 24	3 48
17	5 24	7 20	9 33	11 54	14 12	16 28	18 46	21 05	23 09	24 52	2 20	3 44
18	5 20	7 16	9 29	11 50	14 08	16 24	18 42	21 01	23 05	24 48	2 16	3 40
19	5 16	7 12	9 25	11 46	14 04	16 20	18 38	20 57	23 01	24 44	2 12	3 36
20	5 12	7 08	9 21	11 42	14 00	16 16	18 34	20 53	22 57	24 40	2 09	3 32
21	5 08	7 04	9 17	11 38	13 56	16 12	18 30	20 49	22 53	24 36	2 05	3 28
22	5 04	7 00	9 13	11 34	13 52	16 08	18 26	20 45	22 49	24 32	2 01	3 24
23	5 00	6 56	9 09	11 30	13 48	16 04	18 22	20 41	22 45	24 28	1 57	3 20
24	4 56	6 52	9 05	11 26	13 44	16 01	18 19	20 38	22 42	24 25	1 53	3 16
25	4 52	6 48	9 01	11 22	13 40	15 57	18 15	20 34	22 38	24 21	1 49	3 12
26	4 48	6 44	8 58	11 18	13 36	15 53	18 11	20 30	22 34	24 17	1 45	3 08
27	4 44	6 40	8 54	11 14	13 32	15 49	18 07	20 26	22 30	24 13	1 41	3 04
28	4 40	6 36	8 50	11 10	13 28	15 45	18 03	20 22	22 26	24 09	1 37	3 01
29	4 36	6 32	8 46	11 06	13 24	15 41	17 59	20 18	22 22	24 05	1 33	2 57
30	4 33	6 28	8 42	11 02	13 20	15 37	17 55	20 14	22 18	24 01	1 29	2 53
31	4 29	6 24	8 38	10 58	13 16	15 33	17 51	20 10	22 14	23 57	1 25	2 49
जून	4 25	——	——	——	——	——	——	——	——	——	——	——

दैनिक लग्न सारणी जून भा. स्टै. टा. समाप्ति काल दिल्ली DELHI

ता.	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष
	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं.मिं.	घं. मिं.
1	6 20	8 35	10 54	13 12	15 29	17 47	20 06	22 10	23 53	1 21	2 45	4 21
2	6 16	8 31	10 50	13 08	15 25	17 43	20 02	22 06	23 49	1 17	2 41	4 17
3	6 12	8 27	10 46	13 04	15 21	17 39	19 58	22 02	23 45	1 13	2 37	4 13
4	6 08	8 23	10 42	13 00	15 17	17 35	19 54	21 58	23 41	1 09	2 33	4 09
5	6 04	8 19	10 38	12 56	15 13	17 31	19 50	21 54	23 37	1 05	2 29	4 05
6	6 00	8 15	10 34	12 52	15 09	17 27	19 46	21 50	23 33	1 01	2 25	4 01
7	5 57	8 11	10 31	12 48	15 05	17 23	19 42	21 46	23 29	24 57	2 21	3 58
8	5 53	8 07	10 27	12 44	15 01	17 19	19 39	21 43	23 26	24 53	2 17	3 54
9	5 49	8 03	10 23	12 40	14 58	17 16	19 35	21 39	23 22	24 49	2 13	3 50
10	5 45	7 59	10 19	12 37	14 54	17 12	19 31	21 35	23 18	24 46	2 09	3 46
11	5 41	7 55	10 15	12 33	14 50	17 08	19 27	21 31	23 14	24 42	2 05	3 42
12	5 37	7 51	10 11	12 29	14 46	17 04	19 23	21 27	23 10	24 38	2 02	3 38
13	5 33	7 47	10 07	12 25	14 42	17 00	19 19	21 23	23 06	24 34	1 58	3 34
14	5 29	7 43	10 03	12 21	14 38	16 56	19 15	21 19	23 02	24 30	1 54	3 30
15	5 25	7 39	9 59	12 17	14 34	16 52	19 11	21 15	22 58	24 26	1 50	3 26
16	5 21	7 35	9 55	12 13	14 30	16 48	19 07	21 11	22 54	24 22	1 46	3 22
17	5 17	7 31	9 51	12 09	14 26	16 44	19 03	21 07	22 50	24 18	1 42	3 18
18	5 13	7 27	9 47	12 05	14 22	16 40	18 59	21 03	22 46	24 14	1 38	3 14
19	5 09	7 23	9 43	12 02	14 18	16 36	18 55	20 59	22 42	24 10	1 34	3 10
20	5 05	7 19	9 39	11 58	14 14	16 32	18 51	20 55	22 38	24 06	1 30	3 06
21	5 01	7 15	9 36	11 54	14 10	16 28	18 47	20 51	22 34	24 02	1 26	3 02
22	4 57	7 11	9 32	11 50	14 06	16 24	18 43	20 47	22 30	23 58	1 22	2 58
23	4 53	7 07	9 28	11 46	14 02	16 20	18 39	20 43	22 26	23 54	1 18	2 54
24	4 49	7 03	9 24	11 42	13 58	16 16	18 36	20 39	22 22	23 51	1 15	2 50
25	4 46	6 59	9 20	11 38	13 54	16 13	18 32	20 35	22 18	23 47	1 11	2 46
26	4 42	6 55	9 16	1 134	13 50	16 09	18 28	20 31	22 14	23 43	1 07	2 43
27	4 38	6 51	9 12	11 30	13 46	16 05	18 24	20 27	22 10	23 39	1 03	2 39
28	4 34	6 47	9 09	11 26	13 43	16 01	18 20	20 23	22 06	23 35	24 59	2 35
29	4 30	6 43	9 05	11 23	13 39	15 57	18 16	20 20	22 02	23 31	24 55	2 31
30	4 26	6 39	9 01	11 19	13 35	15 54	18 13	20 16	21 59	23 28	24 52	2 28
जुला	——	——	——	——	——	——	——	——	——	——	——	——

दैनिक लग्न सारणी जुलाई भा. स्टै. टा. समाप्ति काल दिल्ली DELHI

जुलाई	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष
ता.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
1	6 35	8 57	11 15	13 31	15 50	18 09	20 13	21 56	23 24	24 48	2 24	4 18
2	6 31	8 53	11 11	13 27	15 46	18 05	20 9	21 52	23 20	24 44	2 20	4 14
3	6 27	8 49	11 07	13 23	15 42	18 01	20 5	21 48	23 16	24 40	2 16	4 10
4	6 24	8 46	11 04	13 19	15 38	17 57	20 01	21 44	23 12	24 36	2 12	4 06
5	6 20	8 42	11 00	13 15	15 34	17 53	19 57	21 40	23 08	24 32	2 08	4 02
6	6 16	8 38	10 56	13 11	15 30	17 49	19 53	21 36	23 04	24 28	2 04	3 58
7	6 12	8 34	10 52	13 07	15 26	17 46	19 49	21 32	23 00	24 24	2 00	3 55
8	6 09	8 30	10 48	13 04	15 22	17 42	19 46	21 28	22 56	24 21	1 56	3 51
9	6 05	8 26	10 44	13 00	15 18	17 38	19 42	21 24	22 53	24 17	1 53	3 47
10	6 01	8 22	10 40	12 56	15 15	17 34	19 38	21 21	22 49	24 13	1 49	3 43
11	5 57	8 18	10 36	12 52	15 11	17 30	19 34	21 17	22 45	24 09	1 45	3 39
12	5 53	8 14	10 32	12 48	15 07	17 26	19 30	21 13	22 41	24 05	1 41	3 36
13	5 49	8 10	10 28	12 45	15 03	17 22	19 26	21 09	22 37	24 01	1 37	3 32
14	5 45	8 06	10 25	12 41	14 59	17 18	19 22	21 05	22 34	23 57	1 33	3 28
15	5 41	8 03	10 21	12 37	14 55	17 14	19 19	21 02	22 30	23 54	1 30	3 24
16	5 37	7 59	10 17	12 33	14 51	17 10	19 15	20 58	22 26	23 50	1 26	3 20
17	5 34	7 55	10 13	12 29	14 47	17 06	19 11	20 54	22 22	23 46	1 22	3 16
18	5 30	7 51	10 09	12 25	14 43	17 02	19 07	20 50	22 18	23 42	1 18	3 12
19	5 26	7 47	10 05	12 21	14 40	16 58	19 03	20 46	22 14	23 38	1 14	3 08
20	5 22	7 43	10 02	12 17	14 36	16 54	18 59	20 42	22 10	23 34	1 10	3 04
21	5 18	7 39	9 58	12 13	14 32	16 51	18 55	20 38	22 06	23 30	1 06	3 00
22	5 15	7 35	9 54	12 09	14 28	16 47	18 51	20 34	22 02	23 26	1 02	2 56
23	5 11	7 32	9 50	12 05	14 24	16 43	18 47	20 30	21 58	23 22	2458	2 53
24	5 07	7 28	9 46	12 01	14 20	16 39	18 43	20 26	21 55	23 18	2454	2 49
25	5 03	7 24	9 42	11 58	14 16	16 35	18 40	20 23	21 51	23 14	2450	2 45
26	5 00	7 20	9 38	11 54	14 12	16 31	18 36	20 19	21 47	23 10	2446	2 41
27	4 56	7 16	9 34	11 50	14 08	16 27	18 32	20 15	21 43	23 06	2442	2 37
28	4 52	7 12	9 30	11 46	14 04	16 23	18 28	20 11	21 39	23 02	2438	2 34
29	4 48	7 08	9 27	11 42	14 00	16 19	18 24	20 07	21 35	22 58	2435	2 30
30	4 44	7 04	9 23	11 38	13 56	16 15	18 20	20 03	21 31	22 54	2431	2 26
31	4 40	7 00	9 19	11 34	13 53	1612	18 16	19 59	21 27	22 50	2427	2 22
अग	4 36	——	——	——	——	——	——	——	——	——	——	——

दैनिक लग्न सारणी अगस्त भा. स्टै. टा. समाप्ति काल दिल्ली DELHI

अगस्त	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन
ता.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
1	6 56	9 15	11 31	13 49	16 08	18 12	19 55	21 23	22 47	24 23	2 18	4 32
2	6 52	9 11	11 27	13 45	16 05	18 09	19 51	21 19	22 43	24 19	2 14	4 28
3	6 48	9 07	11 23	13 42	16 01	18 05	19 47	21 15	22 39	24 15	2 10	4 24
4	6 44	9 03	11 19	13 38	15 57	18 01	19 44	21 11	22 35	24 11	2 06	4 20
5	6 40	9 00	11 15	13 34	15 53	17 57	19 40	21 08	22 31	24 08	2 02	4 16
6	6 36	8 56	11 12	13 30	15 49	17 53	19 36	21 04	22 28	24 04	1 58	4 13
7	6 32	8 52	11 08	13 26	15 45	17 49	19 32	21 00	22 24	24 00	1 54	4 09
8	6 29	8 48	11 04	13 22	15 41	17 45	19 28	20 56	22 20	23 56	1 50	4 05
9	6 25	8 44	11 00	13 18	15 37	17 42	19 24	20 52	22 16	23 52	1 46	4 01
10	6 21	8 41	10 56	13 14	15 33	17 38	19 21	20 48	22 12	23 48	1 43	3 57
11	6 17	8 37	10 53	13 10	15 29	17 34	19 17	20 44	22 08	23 44	1 39	3 54
12	6 13	8 33	10 49	13 06	15 25	17 30	19 13	20 40	22 04	23 40	1 35	3 50
13	6 09	8 29	10 45	13 02	15 21	17 26	19 09	20 36	22 00	23 36	1 32	3 46
14	6 05	8 25	10 41	12 59	15 17	17 22	19 05	20 33	21 56	23 32	1 28	3 42
15	6 01	8 21	10 37	12 55	15 14	17 18	19 01	20 29	21 53	23 29	1 24	3 38
16	5 57	8 17	10 33	12 51	15 10	17 14	18 57	20 25	21 49	23 25	1 20	3 34
17	5 54	8 13	10 29	12 47	15 06	17 10	18 53	20 21	21 45	23 21	1 16	3 30
18	5 50	8 09	10 25	12 43	15 02	17 06	18 49	20 17	21 41	23 17	1 12	3 26
19	5 46	8 05	10 21	12 39	14 58	17 02	18 45	2013	21 37	23 13	1 08	3 22
20	5 42	8 02	10 17	12 35	14 54	16 58	18 41	20 09	21 33	23 09	1 04	3 18
21	5 39	7 58	10 13	12 31	14 50	16 54	18 37	20 05	21 29	23 05	1 00	3 14
22	5 35	7 54	10 09	12 27	14 46	16 50	18 33	20 01	21 25	23 01	0 56	3 10
23	5 31	7 50	10 05	12 23	14 42	16 46	18 21	19 57	21 21	22 57	0 52	3 06
24	5 27	7 46	10 02	12 19	14 38	16 42	18 25	19 53	21 17	22 53	0 48	3 02
25	5 23	7 42	9 58	12 15	14 34	16 38	18 21	19 49	21 13	22 49	0 44	2 58
26	5 19	7 38	9 45	12 11	14 30	16 34	18 17	19 45	21 09	22 45	0 41	2 54
27	5 15	7 34	9 50	12 08	14 27	16 31	18 14	19 42	21 06	22 42	0 37	2 50
28	5 11	7 30	9 46	12 04	14 23	16 27	18 10	19 38	21 02	22 38	0 33	2 46
29	5 07	7 26	9 42	12 00	14 19	16 23	18 06	19 34	20 58	22 34	0 29	2 42
30	5 03	7 22	9 38	11 56	14 15	16 19	18 02	19 30	20 54	22 30	0 25	2 38
31	4 59	7 18	9 34	11 52	14 11	16 15	17 58	19 26	20 50	22 26	0 21	2 34
सितं	4 55	——	——	——	——	——	——	——	——	——	——	——

अग 4 36 —— —— —— —— ——

दैनिक लग्न सारणी सितंबर भा. स्टै. टा. समाप्ति काल दिल्ली DELHI

सितंबर	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क
ता.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं.मिं.	घं. मिं.
1	7 14	9 30	11 48	14 07	16 11	17 54	19 22	20 46	22 22	0 17	2 31	4 52
2	7 10	9 26	11 44	14 03	16 07	17 50	19 18	20 42	22 18	0 13	2 27	4 48
3	7 06	9 22	11 40	13 59	16 03	17 46	19 14	20 38	22 14	0 09	2 23	4 44
4	7 02	9 18	11 36	13 55	15 59	17 42	19 10	20 34	22 10	0 05	2 19	4 40
5	6 58	9 14	11 32	13 51	15 55	17 38	19 06	20 30	22 06	0 01	2 15	4 36
6	6 54	9 10	11 28	13 47	15 51	17 34	19 02	20 26	22 02	23 57	2 11	4 32
7	6 50	9 06	11 24	13 43	15 47	17 30	18 58	20 22	21 58	23 53	2 07	4 28
8	6 46	9 02	11 20	13 39	15 43	17 26	18 54	20 18	21 54	23 49	2 03	4 24
9	6 42	8 58	11 16	13 35	15 39	17 22	18 50	20 14	21 50	23 45	1 59	4 20
10	6 38	8 54	11 12	13 31	15 35	17 18	18 46	20 10	21 46	23 41	1 55	4 16
11	6 34	8 50	11 08	13 27	15 31	17 14	18 42	20 06	21 42	23 37	1 51	4 12
12	6 30	8 46	11 04	13 23	15 27	17 10	18 38	20 02	21 38	23 33	1 47	4 08
13	6 26	8 42	11 00	13 19	15 23	17 06	18 34	19 58	21 34	23 29	1 43	4 04
14	6 22	8 38	10 56	13 15	15 19	17 02	18 30	19 54	21 30	23 25	1 39	4 00
15	6 18	8 34	10 52	13 11	15 15	16 58	18 26	19 50	21 26	23 21	1 35	3 56
16	6 14	8 30	10 48	13 07	15 11	16 54	18 22	19 46	21 22	23 17	1 31	3 52
17	6 10	8 26	10 44	13 03	15 07	16 50	18 18	19 42	21 18	23 13	1 27	3 48
18	6 06	8 22	10 40	12 59	15 03	16 46	18 14	19 38	21 14	23 09	1 23	3 44
19	6 02	8 18	10 36	12 55	14 59	16 42	18 10	19 34	21 10	23 05	1 19	3 40
20	5 58	8 14	10 32	12 51	14 55	16 38	18 06	19 30	21 06	23 01	1 15	3 36
21	5 54	8 10	10 28	12 47	14 51	16 34	18 02	19 26	21 02	22 57	1 11	3 32
22	5 50	8 06	10 24	12 43	14 47	16 30	17 58	19 22	20 58	22 53	1 07	3 28
23	5 46	8 02	10 20	12 39	14 43	16 26	17 54	19 18	20 54	22 49	1 03	3 24
24	5 42	7 58	10 16	12 35	14 39	16 22	17 50	19 14	20 50	22 45	0 59	3 20
25	5 38	7 54	10 12	12 31	14 35	16 18	17 46	19 10	20 46	22 41	0 55	3 16
26	5 34	7 50	10 08	12 27	14 31	16 14	17 42	19 06	20 42	22 37	0 51	3 12
27	5 30	7 46	10 04	12 23	14 27	16 10	17 38	19 02	20 38	22 33	0 47	3 08
28	5 26	7 42	10 00	12 19	14 23	16 06	17 34	18 58	20 34	22 29	0 43	3 04
29	5 22	7 38	9 56	12 15	14 19	16 02	17 30	18 54	20 30	22 25	0 39	3 00
30	5 18	7 34	9 53	12 12	14 16	15 59	17 27	18 51	20 27	22 22	0 36	2 57
अक्तू.	5 15	——	——	——	——	——	——	——	——	——	——	——

दैनिक लग्न सारणी अक्तूबर भा. स्टै. टा. समाप्ति काल दिल्ली DELHI

अक्तूबर	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह
ता.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं.मिं.	घं. मिं.
1	7 30	9 49	12 08	14 12	15 55	17 23	18 47	20 23	22 18	0 32	2 53	5 11
2	7 26	9 45	12 04	14 08	15 51	17 19	18 43	20 19	22 14	0 28	2 49	5 07
3	7 23	9 42	12 00	14 04	15 47	17 15	18 39	20 15	22 10	0 24	2 45	5 03
4	7 19	9 38	11 56	14 00	15 43	17 11	18 35	20 11	22 06	0 20	2 41	4 59
5	7 15	9 34	11 52	13 56	15 39	17 07	18 31	20 07	22 02	0 16	2 37	4 55
6	7 11	9 30	11 48	13 52	15 35	17 03	18 27	20 03	21 58	0 12	2 33	4 51
7	7 07	9 26	11 44	13 48	15 31	16 59	18 23	19 59	21 54	0 08	2 29	4 47
8	7 03	9 22	11 40	13 44	15 27	16 55	18 19	19 55	21 50	0 04	2 25	4 43
9	6 59	9 18	11 36	13 40	15 23	16 51	18 15	19 51	21 46	24 00	2 21	4 39
10	6 55	9 14	11 32	13 36	15 19	16 47	18 11	19 47	21 42	23 56	2 17	4 35
11	6 51	9 10	11 28	13 32	15 15	16 43	18 07	19 43	21 38	23 52	2 13	4 31
12	6 47	9 06	11 24	13 28	15 11	16 39	18 03	19 39	21 34	23 48	2 09	4 27
13	6 43	9 02	11 20	13 24	15 07	16 35	17 59	19 35	21 30	23 44	2 05	4 23
14	6 39	8 58	11 16	13 20	15 03	16 31	17 55	19 31	21 26	23 40	2 01	4 19
15	6 35	8 54	11 12	13 16	14 59	16 27	17 51	19 27	21 22	23 36	1 57	4 15
16	6 31	8 50	11 08	13 12	14 55	16 23	17 47	19 23	21 18	23 32	1 53	4 11
17	6 27	8 46	11 04	13 08	14 51	16 19	17 43	19 19	21 14	23 28	1 49	4 07
18	6 23	8 42	11 00	13 04	14 47	16 15	17 39	19 15	21 10	23 24	1 45	4 03
19	6 19	8 38	10 56	13 00	14 43	16 11	17 35	19 11	21 06	23 20	1 41	3 59
20	6 15	8 34	10 52	12 56	14 39	16 07	17 31	19 07	21 02	23 16	1 37	3 55
21	6 11	8 30	10 48	12 52	14 35	16 03	17 27	19 03	20 58	23 12	1 33	3 51
22	6 07	8 26	10 44	12 48	14 31	15 59	17 23	18 59	20 54	23 08	1 29	3 47
23	6 03	8 22	10 40	12 44	14 27	15 55	17 19	18 55	20 50	23 04	1 25	3 43
24	5 59	8 18	10 36	12 40	14 23	15 51	17 15	18 51	20 46	23 00	1 21	3 39
25	5 56	8 15	10 33	12 37	14 20	15 48	17 12	18 48	20 43	22 57	1 17	3 36
26	5 52	8 11	10 29	12 33	14 16	15 44	17 08	18 44	20 39	22 53	1 13	3 32
27	5 48	8 07	10 25	12 29	14 12	15 40	17 04	18 40	20 35	22 49	1 09	3 28
28	5 44	8 03	10 21	12 25	14 08	15 36	17 00	18 36	20 31	22 45	1 06	3 24
29	5 40	7 59	10 17	12 21	14 04	15 32	16 56	18 32	20 27	22 41	1 02	3 20
30	5 36	7 55	10 13	12 17	14 00	15 28	16 52	18 28	20 23	22 37	2458	3 16
31	5 33	7 51	10 09	12 13	13 56	15 24	16 48	18 24	20 19	22 33	2454	3 12
नवं.	5 29	——	——	——	——	——	——	——	——	——	——	——

दैनिक लग्न सारणी नवंबर भा. स्टै. टा. समाप्ति काल दिल्ली DELHI

नवंबर

ता.	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या
ता.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं.मिं.	घं. मिं.
1	7 47	10 6	12 10	13 53	15 21	16 44	18 20	20 15	22 29	0 50	3 08	5 25
2	7 43	10 2	12 06	13 49	15 17	16 40	18 16	20 11	22 25	0 46	3 04	5 21
3	7 39	9 58	12 02	13 45	15 13	16 37	18 13	20 08	22 22	0 43	3 00	5 17
4	7 35	9 54	11 58	13 41	15 09	16 33	18 09	20 04	22 18	0 39	2 56	5 13
5	7 31	9 50	11 54	13 37	15 05	16 29	18 05	20 00	22 15	0 35	2 52	5 09
6	7 27	9 46	11 50	13 33	15 01	16 25	18 01	19 56	22 10	0 31	2 48	5 05
7	7 24	9 42	11 46	13 29	14 57	16 21	17 57	19 52	22 06	0 27	2 45	5 01
8	7 20	9 38	11 42	13 25	14 53	16 17	17 53	19 48	22 02	0 23	2 41	4 57
9	7 16	9 34	11 38	13 21	14 49	16 13	17 49	19 44	21 58	0 19	2 37	4 53
10	7 12	9 30	11 34	13 17	14 45	16 09	17 45	19 40	21 54	0 15	2 33	4 49
11	7 08	9 26	11 30	13 13	14 41	16 05	17 41	19 36	21 50	0 11	2 29	4 45
12	7 04	9 22	11 26	13 09	14 37	16 01	17 37	19 32	21 46	0 07	2 25	4 41
13	7 00	9 18	11 22	13 05	14 33	15 57	17 33	19 28	21 42	0 03	2 21	4 37
14	6 56	9 14	11 28	13 01	14 29	15 53	17 29	19 24	21 38	23 59	2 17	4 33
15	6 52	9 10	11 14	12 57	14 25	15 49	17 25	19 20	21 34	23 55	2 13	4 29
16	6 48	9 06	11 10	12 53	14 21	15 45	17 21	19 16	21 30	23 51	2 09	4 25
17	6 43	9 02	11 06	12 49	14 17	15 41	17 17	19 12	21 26	23 47	2 05	4 21
18	6 39	8 58	11 02	12 45	14 13	15 37	17 23	19 08	21 22	23 43	2 01	4 17
19	6 35	8 54	10 58	12 41	14 09	15 33	17 09	19 04	21 18	23 39	1 57	4 13
20	6 31	8 50	10 54	12 37	14 05	15 29	17 05	19 00	21 14	23 35	1 53	4 09
21	6 27	8 46	10 50	12 33	14 01	15 25	17 01	18 56	21 10	23 31	1 49	4 05
22	6 23	8 43	10 47	12 30	13 58	15 22	16 58	18 53	21 07	23 28	1 46	4 02
23	6 20	8 39	10 43	12 26	13 54	15 18	16 54	18 49	21 03	23 24	1 42	3 58
24	6 16	8 35	10 39	12 22	13 50	15 14	16 50	18 45	20 59	23 20	1 38	3 54
25	6 12	8 31	10 35	12 18	13 46	15 10	16 46	18 41	20 55	23 16	1 34	3 50
26	6 08	8 28	10 31	12 14	13 42	15 06	16 42	18 37	20 51	23 12	1 30	3 46
27	6 04	8 23	10 27	12 10	13 38	15 02	16 38	18 33	20 47	23 08	1 26	3 42
28	6 00	8 19	10 23	12 06	13 34	14 58	16 34	18 29	20 43	23 04	1 22	3 38
29	5 56	8 16	10 20	12 03	13 31	14 55	16 31	18 26	20 40	23 01	1 19	3 35
30	5 53	8 12	10 16	11 59	13 27	14 51	16 27	18 22	20 36	22 57	1 15	3 31
दिसं	5 49	——	——	——	——	——	——	——	——	——	——	——

दैनिक लग्न सारणी दिसंबर भा. स्टै. टा. समाप्ति काल दिल्ली DELHI

दिसंबर

ता.	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला
ता.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं.मिं.	घं. मिं.
1	8 08	10 12	11 55	13 23	14 47	16 23	18 18	20 32	22 53	1 11	3 27	5 45
2	8 04	10 08	11 51	13 19	14 43	16 19	18 14	20 28	22 49	1 07	3 23	5 41
3	8 00	10 04	11 47	13 15	14 39	16 15	18 10	20 24	22 45	1 03	3 19	5 37
4	7 56	10 00	11 43	13 11	14 35	16 11	18 06	20 20	22 41	0 59	3 15	5 33
5	7 52	9 56	11 39	13 07	14 31	16 07	18 02	20 16	22 37	0 55	3 11	5 29
6	7 48	9 52	11 35	13 03	14 27	16 03	17 58	20 12	22 33	0 51	3 07	5 25
7	7 44	9 48	11 31	12 59	14 23	15 59	17 54	20 08	22 29	0 47	3 03	5 21
8	7 40	9 44	11 27	12 55	14 19	15 55	17 50	20 04	22 25	0 43	2 59	5 17
9	7 36	9 40	11 23	12 51	14 15	15 51	17 46	20 00	22 21	0 39	2 55	5 13
10	7 33	9 37	11 20	12 48	14 12	15 48	17 43	19 57	22 18	0 36	2 52	5 10
11	7 29	9 33	11 16	12 44	14 08	15 44	17 39	19 53	22 14	0 32	2 48	5 06
12	7 25	9 29	11 12	12 40	14 04	15 40	17 35	19 49	22 10	0 28	2 44	5 02
13	7 21	9 25	11 08	12 36	14 01	15 36	17 31	19 45	22 06	0 24	2 40	4 58
14	7 17	9 21	11 04	12 32	13 56	15 32	17 27	19 41	22 02	0 20	2 36	4 54
15	7 13	9 17	11 00	12 28	13 52	15 28	17 23	19 37	21 58	0 16	2 32	4 50
16	7 09	9 13	10 56	12 24	13 48	15 24	17 19	19 33	21 54	0 12	2 28	4 46
17	7 05	9 09	10 52	12 21	13 44	15 20	17 15	19 29	21 50	0 08	2 24	4 42
18	7 11	9 05	10 49	12 17	13 41	15 16	17 11	19 25	21 46	0 04	2 20	4 38
19	6 58	9 01	10 45	12 13	13 36	15 12	17 07	19 21	21 42	0 00	2 16	4 34
20	6 53	8 57	10 41	12 09	13 32	15 08	17 03	19 17	21 38	23 56	2 12	4 30
21	6 49	8 53	10 37	12 05	13 28	15 04	16 59	19 13	21 34	23 52	2 09	4 26
22	6 45	8 49	10 33	12 01	13 24	15 00	16 55	19 10	21 30	23 49	2 05	4 22
23	6 41	8 45	10 29	11 57	13 20	14 56	16 51	19 06	21 26	23 45	2 01	4 18
24	6 37	8 42	10 25	11 53	13 16	14 52	16 48	19 02	21 23	23 41	1 57	4 14
25	6 33	8 38	10 21	11 49	13 12	14 48	16 44	18 58	21 19	23 37	1 53	4 10
26	6 30	8 34	10 17	11 45	13 09	14 44	16 40	18 54	21 15	23 33	1 49	4 06
27	6 26	8 30	10 13	11 41	13 05	14 41	16 36	18 50	21 11	23 29	1 45	4 03
28	6 22	8 26	10 09	11 37	13 01	14 37	16 32	18 46	21 07	23 25	1 41	3 59
29	6 18	8 22	10 05	11 33	12 57	14 33	16 28	18 42	21 03	23 21	1 37	3 55
30	6 14	8 18	10 01	11 29	12 53	14 29	16 24	18 38	20 59	23 17	1 33	3 51
31	6 10	8 14	9 57	11 25	12 49	14 25	16 20	18 34	20 55	23 13	1 29	3 47
जन.	6 06	——	——	——	——	——	——	——	——	——	——	——

(मुहूर्त) और फल ज्ञान

दिस 5 49

अनुकूल कार्य सिद्धि के लिए होरा ज्ञान चक्र (मुहूर्त) और फल ज्ञान

सर्वकार्य सिद्धि के लिए होरा मुहूर्त श्रेयस्कर है। होरा मुहूर्त के अनुसार कार्यारम्भ करके प्रत्येक मनुष्य अशुभ समय में से होरा के अनुसार अपना कार्य सिद्ध कर सकता है। सात ग्रहों के सात होरे हैं। **सूर्य की होरा**-टेंडर देने व नौकरी व राजकार्य के चार्ज लेने-देने के लिए अच्छी होती है। **चंद्रमा की होरा**–सब कार्यों के लिए अच्छी होती है। **मंगल की होरा**-युद्ध, यात्रा, कर्ज़ देने, सभा-सोसाईटी में आना-जाना और मुकद्दमा के कार्यों में अच्छी होती है। **बुध की होरा**–में विद्यारम्भ, कोष संग्रह करना, नवीन व्यापार, नवीन लेख, पुस्तक प्रकाशन, प्रार्थना पत्र प्रस्तुत करने के लिए अच्छी होती है। **गुरु की होरा**–विवाह सम्बन्धी कार्यक्रम, बड़ों से मिलना, कोषसंग्रह, नवीन काव्य लेखन आदि के लिए शुभ है। **शुक्र की होरा**–यात्रा, भूषण, नवीन वस्त्र धारण, प्रवास, सौभाग्यवर्धक कार्य के लिए शुभ है। **शनि की होरा**–भूमि, मकान की नींव, नूतन गृहारम्भ, मशीनरी, मिल्स कार्यारम्भ समस्त स्थिर कार्य शुभ होते हैं।

प्रत्येक होरा १ घण्टे का होता है। जिस दिन जो 'वार' होता है, उस वार के आरम्भ (अर्थात् सूर्योदय के समय) से १ घण्टा तक उसी वार को होरा रहता है। इसके बाद १ घण्टे का दूसरा होरा उस वार से छठे वार का होता है। इसी प्रकार दूसरे होरे के वार से छठे वार का होरा तीसरे घण्टे तक रहता है। इस क्रम से २४ घण्टे में २४ होरे बीतने पर अगले वार के सूर्योदय समय उसी (अगले) वार का होरा आ जाता है। जिस कार्य की सिद्धि के लिए ऊपर जो होरा उपयुक्त लिखी है, उसके अनुसार ही उस होरा में (१ घण्टे) में वह कार्य करेंगे तो अवश्य सफलता मिलेगी। ऋषियों ने होरा को 'क्षणवार' कहा है। वार से भी क्षण वार में प्रधानता मानी गई है। इसलिए यदि वार और 'क्षणवार' दोनों अनुकूल हों, तभी किसी कार्य को करना चाहिए। आवश्यकता में, यदि वार अनुकूल नहीं हो तो 'क्षणवार' अर्थात् होरा की अनुकूलता के अनुसार कार्य करना चाहिए। **जैसे**–पश्चिम की यात्रा रविवार में करने की आवश्यकता हो तो वार के अनुसार दिक्शूल पड़ेगा। इसलिए जिस समय सोम की होरा (क्षणवार) हो उस समय रविवार में पश्चिम की यात्रा की जा सकती है। नीचे चक्र के अनुसार रविवार को सोम की होरा सूर्योदय समय से ४, ११, १८ घण्टे बाद के एक-एक घण्टे तक आप सोम की होरा में जा सकते हैं। इसी प्रकार अन्य दिनों के होराओं के विषय में भी समझ लें।

वार	होरा १	होरा २	होरा ३	होरा ४	होरा ५	होरा ६	होरा ७	होरा ८	होरा ९	होरा १०	होरा ११	होरा १२	होरा १३	होरा १४	होरा १५	होरा १६	होरा १७	होरा १८	होरा १९	होरा २०	होरा २१	होरा २२	होरा २३	होरा २४
रवि.	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध
सोम.	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु
मंगल	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र
बुध	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि
गुरु	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि
शुक्र	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम
शनि	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल

॥ चौघड़ियां मुहूर्त ॥

दिन की चौघड़ियां

रवि	चन्द्र	मंगल	बुध	बृह	शुक्र	शनि	समय
उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	6:00
चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	7:30
लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	9:00
अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	10:30
काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	12:00
शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	13:30
रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	15:00
उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	16:30

।चौघड़ियां मुहूर्त ॥

रात्रि की चौघड़ियां

रवि	चन्द्र	मंगल	बुध	बृह	शुक्र	शनि	समय
शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	18:00
अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	19:30
चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	21:00
रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	22:30
काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	24:00
लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	25:30
उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	27:00
शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	28:30

शीघ्रता में कोई मुहूर्त न मिलता हो तो, तथा अचानक यात्रा करनी पड़ी तो, उस समय चौघड़ियां मुहूर्त का उपयोग करना श्रेयस्कर रहता है। दिन और रात्रि के आठ-आठ बराबर भाग करने से एक-एक चौघड़ियां मुहूर्त होता है। जब दिन और रात्रि बराबर अर्थात् 12 घण्टे का दिन तथा 12 घण्टे की रात्रि हो, तब एक चौघड़ियां मुहूर्त 1½ घण्टे अर्थात् पौने चार घटी का होगा। इसलिए इसका नाम चौघड़ियां मुहूर्त पड़ा। रविवार, चंद्रवार आदि वार सूर्योदय से प्रारम्भ होकर अगले दिन सूर्योदय तक रहता है। प्रत्येक वार के सूर्योदय से सूर्यास्त तक का समय उस वार का दिनमान तथा सूर्यास्त से अग्रिम सूर्योदय तक का समय 'रात्रिमान' होता है। दिनमान और रात्रिमान में सू. उ. तथा सू. अ. के अन्तर आने के कारण घटते-बढ़ते रहते है। परन्तु 'वार सदैव' 24 घण्टा अर्थात् 60 घटी का होता है। रात्रिमान जानने के लिए पंचांगदिवाकर में दिए गए दिनमान को 60 घटी में घटा दें। जिस दिन यात्रा करनी हो उस दिन के दिनमान के अष्टप्मांश घटी पल का घण्टा मिन्ट बनाकर उस दिन के सूर्योदय समय में जोड़ते जाएं तो क्रमश: उस दिन की आठों चौघड़ियों का समय ज्ञात हो जाएगा। इसी प्रकार जिस दिन रात्रि में यात्रा करनी हो तो उस दिन के रात्रिमान के अष्टमांश घटी-पल का घण्टा मिन्ट बनाकर सूर्यास्त समय में जोड़ते जाने से क्रमाश: रात्रि की प्रत्येक चौघड़ियों का समय ज्ञात हो जाएगा तथा शुभाशुभ जानने के लिए प्रत्येक वार के नीचे तथा चौघड़ियां के सामने तालिका में देखें। **टिप्पणी**–सदैव चर, लाभ, अमृत एवं शुभ चौघड़ियों में ही शुभ कार्य का आरम्भ करना श्रेष्ठ रहता है।

किसी ग्रह के अंश कलादि स्पष्ट के द्वारा नक्षत्र-पाद (चरण) आरम्भ ज्ञात करना (प्रारम्भ काल)

सूर्य चन्द्रादि ग्रह अश्विनी आदि २७ नक्षत्रों के क्रांतिवृत्त (Zodiac = 360°) को पूरा परिभ्रमण करने में अलग-अलग समय लेते हैं। ३६० अंश को२७ द्वारा भाग देने से प्रति नक्षत्र का मध्यम मान १३ अंश २० कला बनता है तथा एक नक्षत्र के चार चरण (पाद) होने से प्रत्येक नक्षत्र पाद को भोग्य मान ३°-२०' (अंश कला) होगा (१३°-२०') ÷ 4 = 3°-20' शून्य से प्रारम्भ होकर प्रत्येक ग्रह इसी भान्ति क्रमानुसार नक्षत्र चरण राशि आदि परिवर्तन करता है। अधिक व्याख्या हेतु देखें ज्योतिष तत्त्व।

रा. अं. क.	नक्षत्रपाद राशि	रा. अं. क.	नक्षत्रपाद राशि	रा. अं. क.	नक्षत्रपाद राशि
०–००–००	अश्विनी (१) मेषे	४–००–००	मघा (१) सिंहे	८–००–००	मूल (१) धनु
०–०३–२०	.. (२) ..	४–०३–२०	.. (२) ..	८–०३–२०	.. (२) ..
०–०६–४०	.. (३) ..	४–०६–४०	.. (३) ..	८–०६–४०	.. (३) ..
०–१०–००	.. (४) ..	४–१०–००	.. (४) ..	८–१०–००	.. (४) ..
०–१३–२०	भरणी (१) ..	४–१३–२०	पू.फा. (१) ..	८–१३–२०	पू.षा. (१) ..
०–१६–४०	.. (२) ..	४–१६–४०	.. (२) ..	८–१६–४०	.. (२) ..
०–२०–००	.. (३) ..	४–२०–००	.. (३) ..	८–२०–००	.. (३) ..
०–२३–२०	.. (४) ..	४–२३–२०	.. (४) ..	८–२३–२०	.. (४) ..
०–२६–४०	कृतिका (१) मेषे	४–२६–४०	उ.फा. (१) ..	८–२६–४०	उ.षा. (१) ..
१–००–००	.. (२) वृषे	५–००–००	.. (२) कन्या	९–००–००	उषा (२) मक
१–०३–२०	.. (३) ..	५–०३–२०	.. (३) ..	९–०३–२०	.. (३) ..
१–०६–४०	.. (४) ..	५–०६–४०	.. (४) ..	९–०६–४०	.. (४) ..
१–१०–००	रोहिणी (१) ..	५–१०–००	हस्ते (१) ..	९–१०–००	श्रव (१) ..
१–१३–२०	.. (२) ..	५–१३–२०	.. (२) ..	९–१३–२०	.. (२) ..
१–१६–४०	.. (३) ..	५–१६–४०	.. (३) ..	९–१६–४०	.. (३) ..
१–२०–००	.. (४) ..	५–२०–००	.. (४) ..	९–२०–००	.. (४) ..
१–२३–२०	मृगशिर (१) ..	५–२३–२०	चित्रा (१) ..	९–२३–२०	धनि (१) ..
१–२६–४०	.. (२) ..	५–२६–४०	.. (२) ..	९–२६–४०	.. (२) ..
२–००–००	.. (३) मिथुन	६–००–००	चित्रा (३) तुला	१०–००–००	.. (३) कुंभे
२–०३–२०	.. (४) ..	६–०३–२०	.. (४) ..	१०–०३–२०	.. (४) ..
२–०६–४०	आर्द्रा (१) ..	६–०६–४०	स्वाती (१) ..	१०–०६–४०	शतभिषा (१)..
२–१०–००	.. (२) ..	६–१०–००	.. (२) ..	१०–१०–००	.. (२) ..
२–१३–२०	.. (३) ..	६–१३–२०	.. (३) ..	१०–१३–२०	.. (३) ..
२–१६–४०	.. (४) ..	६–१६–४०	.. (४) ..	१०–१६–४०	.. (४) ..
२–२०–००	पुनर्वसु (१) ..	६–२०–००	विशाखा (१) ..	१०–२०–००	पूभा (१) ..
२–२३–२०	.. (२) ..	६–२३–२०	.. (२) ..	१०–२३–२०	.. (२) ..
२–२६–४०	.. (३) ..	६–२६–४०	.. (३) ..	१०–२६–४०	.. (३) ..
३–००–००	पुनर्वसु (४) कर्के	७–००–००	.. (४) वृश्चिके	११–००–००	पूभा (४) मीने
३–०३–२०	पुष्ये (१) ..	७–०३–२०	अनुराधा (१) ..	११–०३–२०	उ.भा. (१) ..
३–०६–४०	.. (२) ..	७–०६–४०	.. (२) ..	११–०६–४०	.. (२) ..
३–१०–००	.. (३) ..	७–१०–००	.. (३) ..	११–१०–००	.. (३) ..
३–१३–२०	.. (४) ..	७–१३–२०	.. (४) ..	११–१३–२०	उ.भा. (४) ..
३–१६–४०	आश्ले (१) ..	७–१६–४०	ज्ये. (१) ..	११–१६–४०	रेवती (१) ..
३–२०–००	.. (२) ..	७–२०–००	.. (२) ..	११–२०–००	.. (२) ..
३–२३–२०	.. (३) ..	७–२३–२०	.. (३) ..	११–२३–२०	.. (३) ..
३–२६–४०	.. (४) ..	७–२६–४०	.. (४) ..	११–२६–४०	रेवती (४) ..
				००–००–००	अश्वि (१) मेषे

दैनिक लग्न सारणी में वार्षिक संस्कार

आगामी पृष्ठों में दी गई दैनिक लग्न सारणी 31°-19′ अक्षांश जालन्धर, एवं 24°-08′ अयनांश पर आधारित है। इसमें प्रत्येक लग्न का समाप्तिकाल अंग्रेज़ी तारीखों के मुताबक, भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम में लिखा गया है। सूर्योदयास्त एवं लग्नों के प्रारम्भ तथा समाप्तिकाल का आधार मुख्यत: अंग्रेज़ी तारीखें ली गई हैं। चूंकि पृथ्वी की अयनगति में प्रतिवर्ष परिवर्तन होता है, इसके अतिरिक्त तीन वर्षों के पश्चात् हर चौथे वर्ष **लीप वर्ष** (अर्थात् **फरवरी मास** के दिन 28 की अपेक्षा 29 होते हैं) होने के कारण लग्नों के मान में प्रति वर्ष कुछ स्थूलता आ जाती है। इसको सूक्ष्म बनाने के लिए वार्षिक संस्कार सारणी दी जा रही है। यह वार्षिक संस्कार (+ या –) करने से अभीष्ट सन् एवं तारीख (Desired date and Year) का सूक्ष्मतम लग्न समाप्तिकाल प्राप्त होगा। वार्षिक संस्कार सारणी में लीप वर्ष (Leap Year) दो बार लिखा गया है। जिस सन् ईसवी के साथ (A) का निशान दिया गया है, उस संस्कार तालिका को जनवरी की 1 तारीख से 28 फरवरी तक के लिए जाने तथा जिस सन् के साथ (B) का निशान है, उस संस्कार तालिका का प्रयोग **1 मार्च से 31 दिसंबर** तक की अवधि के लिए करें।

29 फरवरी के लग्न मान के लिए 28 फरवरी के प्रत्येक लग्न (कुम्भ से मकर तक) समा. काल में से २/२ मिनट हीन (कम) कर देवे। लीप रहित जिस सन् के आगे कोई निशान नहीं दिया गया उस **संस्कार** तालिका का प्रयोग **१ जनवरी** से ३१ दिसंबर तक के महीनों के लिए करें। **उदाहरणार्थ**–ता. 16 अप्रैल, 2016 को मेष लग्न समाप्ति देखना है तो सारिणी में ता. 16 अप्रैल को 7/29 पर मेष लग्न समाप्त हुआ। अब इसमें वार्षिक संस्कार तालिका से हमें –1 मिनट प्राप्त हुए।

अत: सन् 2016 में **मेष लग्न** 7/28 पर समाप्त होगा।

दैनिक लग्न सारिणी में वार्षिक संस्कार तालिका

सन् ई.	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
2004^{A}	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३
2004^{B}	−१	−१	०	०	०	०	०	०	०	−१	−१	−१
2005	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
2006	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१
2007	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२
2008^{A}	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३
2008^{B}	−१	−१	०	०	०	०	०	०	०	−१	−१	−१
2009	+०	+०	+०	+०	+०	+०	+०	+०	+०	+०	+०	+०
2010	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१
2011	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२
2012^{A}	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३
2012^{B}	−१	−१	०	०	०	०	०	०	०	+०	−१	−१
2013	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
2014	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१
2015	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२
2016^{A}	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३
2016^{B}	−१	−१	०	०	०	०	०	०	०	−१	−१	−१
2017	+०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
2018	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१
2019	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२
2020^{A}	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३
2020^{B}	−१	−१	०	०	०	०	०	०	०	−१	−१	−१
2021	+०	+०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०

दैनिक लग्न सारणी **अप्रैल-मई (वैशाख)** भा.स्टैं.टा. समाप्ति काल जालन्धर

अप्रैल	वैशाख	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
		घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
13	१	७ ४१	९ ३५	११ ४९	१४ १२	१६ ३२	१८ ५०	२१ १२	२३ ३२	१ ३७	३ १८	४ ४३	६ ०४
14	२	७ ३७	९ ३१	११ ४५	१४ ०८	१६ २८	१८ ४६	२१ ०८	२३ २८	१ ३३	३ १४	४ ३९	६ ००
15	३	७ ३३	९ २७	११ ४२	१४ ०४	१६ २४	१८ ४२	२१ ०४	२३ २४	१ २९	३ १०	४ ३५	५ ५६
16	४	७ २९	९ २३	११ ३८	१४ ००	१६ २०	१८ ३८	२१ ००	२३ २०	१ २५	३ ०६	४ ३१	५ ५२
17	५	७ २५	९ १९	११ ३४	१३ ५७	१६ १७	१८ ३४	२० ५६	२३ १६	१ २१	३ ०२	४ २७	५ ४८
18	६	७ २१	९ १६	११ ३०	१३ ५३	१६ १३	१८ ३१	२० ५२	२३ १२	१ १७	२ ५८	४ २३	५ ४४
19	७	७ १७	९ १२	११ २६	१३ ४९	१६ ०९	१८ २७	२० ४८	२३ ०८	१ १३	२ ५४	४ १९	५ ४०
20	८	७ १३	९ ०८	११ २२	१३ ४५	१६ ०५	१८ २३	२० ४४	२३ ०४	१ ०९	२ ५०	४ १५	५ ३६
21	९	७ ०९	९ ०४	११ १८	१३ ४१	१६ ०१	१८ १९	२० ४०	२३ ०१	१ ०५	२ ४६	४ ११	५ ३२
22	१०	७ ०५	९ ००	११ १५	१३ ३७	१५ ५७	१८ १५	२० ३६	२२ ५७	१ ०१	२ ४२	४ ०७	५ २८
23	११	७ ०१	८ ५६	११ ११	१३ ३३	१५ ५३	१८ ११	२० ३३	२२ ५३	०० ५७	२ ३८	४ ०३	५ २४
24	१२	६ ५७	८ ५२	११ ०७	१३ २९	१५ ५०	१८ ०७	२० २९	२२ ४९	०० ५३	२ ३४	३ ५९	५ २१
25	१३	६ ५३	८ ४८	११ ०३	१३ २५	१५ ४६	१८ ०३	२० २५	२२ ४५	०० ४९	२ ३०	३ ५५	५ १७
26	१४	६ ४९	८ ४४	१० ५९	१३ २१	१५ ४२	१७ ५९	२० २१	२२ ४१	०० ४५	२ २७	३ ५१	५ १३
27	१५	६ ४६	८ ४०	१० ५५	१३ १७	१५ ३८	१७ ५५	२० १७	२२ ३७	०० ४१	२ २३	३ ४७	५ ०९
28	१६	६ ४२	८ ३६	१० ५१	१३ १४	१५ ३५	१७ ५१	२० १३	२२ ३३	०० ३७	२ १९	३ ४३	५ ०५
29	१७	६ ३८	८ ३२	१० ४७	१३ १०	१५ ३१	१७ ४७	२० ०९	२२ २९	०० ३३	२ १५	३ ३९	५ ०१
30	१८	६ ३४	८ २८	१० ४३	१३ ०६	१५ २७	१७ ४४	२० ०५	२२ २५	०० २९	२ ११	३ ३५	४ ५७
मई	१९	६ ३०	८ २४	१० ३९	१३ ०२	१५ २३	१७ ४०	२० ०१	२२ २१	०० २५	२ ०७	३ ३२	४ ५३
2	२०	६ २६	८ २०	१० ३५	१२ ५८	१५ १९	१७ ३६	१९ ५७	२२ १७	०० २१	२ ०३	३ २८	४ ५०
3	२१	६ २२	८ १६	१० ३१	१२ ५४	१५ १५	१७ ३२	१९ ५३	२२ १३	०० १८	१ ५९	३ २४	४ ४६
4	२२	६ १८	८ १२	१० २७	१२ ५०	१५ ११	१७ २८	१९ ४९	२२ ०९	०० १४	१ ५५	३ २०	४ ४२
5	२३	६ १४	८ ०८	१० २३	१२ ४६	१५ ०७	१७ २४	१९ ४५	२२ ०५	०० १०	१ ५१	३ १६	४ ३८
6	२४	६ १०	८ ०४	१० १९	१२ ४२	१५ ०३	१७ २०	१९ ४१	२२ ०१	०० ०६	१ ४७	३ १२	४ ३४
7	२५	६ ६	८ ००	१० १५	१२ ३८	१४ ५९	१७ १६	१९ ३७	२१ ५७	०० ०२	१ ४३	३ ०८	४ ३०
8	२६	६ २	७ ५६	१० ११	१२ ३४	१४ ५५	१७ १२	१९ ३३	२१ ५३	२३ ५८	१ ३९	३ ०४	४ २६
9	२७	५ ५८	७ ५२	१० ०७	१२ ३०	१४ ५१	१७ ०८	१९ २९	२१ ४९	२३ ५४	१ ३५	३ ००	४ २२
10	२८	५ ५४	७ ४८	१० ०३	१२ २६	१४ ४७	१७ ०४	१९ २५	२१ ४५	२३ ५०	१ ३१	२ ५६	४ १८
11	२९	५ ५०	७ ४५	९ ५९	१२ २२	१४ ४३	१७ ००	१९ २२	२१ ४१	२३ ४६	१ २७	२ ५२	४ १४
12	३०	५ ४६	७ ४१	९ ५५	१२ १८	१४ ३९	१६ ५६	१९ १७	२१ ३७	२३ ४२	१ २३	२ ४८	४ १०
13	३१	५ ४२	७ ३७	९ ५१	१२ १५	१४ ३५	१६ ५२	१९ १३	२१ ३३	२३ ३८	१ १९	२ ४४	४ ०६
14	ज्ये	५ ३९	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —

दैनिक लग्न सारणी **मई-जून (ज्येष्ठ)** भा.स्टैं.टा. समाप्ति काल जालन्धर

मई	ज्येष्ठ	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष
		घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
14	१	७ ३३	९ ४८	१२ ११	१४ ३१	१६ ४९	१९ १०	२१ ३०	२३ ३४	०१ १५	२ ४०	४ ०२	५ ३५
15	२	७ २९	९ ४४	१२ ०७	१४ २७	१६ ४५	१९ ०६	२१ २६	२३ ३०	०१ ११	२ ३६	३ ५८	५ ३१
16	३	७ २५	९ ४०	१२ ०३	१४ २३	१६ ४१	१९ ०२	२१ २२	२३ २६	०१ ०७	२ ३२	३ ५४	५ २७
17	४	७ २२	९ ३६	११ ५९	१४ १९	१६ ३७	१८ ५८	२१ १८	२३ २२	०१ ०३	२ २८	३ ५०	५ २३
18	५	७ १८	९ ३२	११ ५५	१४ १५	१६ ३३	१८ ५४	२१ १४	२३ १८	०० ५९	२ २४	३ ४६	५ १९
19	६	७ १४	९ २८	११ ५१	१४ ११	१६ २९	१८ ५०	२१ १०	२३ १५	०० ५६	२ २०	३ ४२	५ १५
20	७	७ १०	९ २४	११ ४७	१४ ०७	१६ २५	१८ ४६	२१ ०६	२३ ११	०० ५२	२ १७	३ ३८	५ ११
21	८	७ ०६	९ २०	११ ४३	१४ ०३	१६ २१	१८ ४२	२१ ०२	२३ ०७	०० ४८	२ १३	३ ३४	५ ०७
22	९	७ ०२	९ १६	११ ३९	१३ ५९	१६ १७	१८ ३८	२० ५८	२३ ०३	०० ४४	२ ०९	३ ३०	५ ०३
23	१०	६ ५९	९ १३	११ ३६	१३ ५६	१६ १४	१८ ३५	२० ५५	२३ ००	०० ४१	२ ०५	३ २७	५ ००
24	११	६ ५५	९ ०९	११ ३२	१३ ५२	१६ १०	१८ ३१	२० ५१	२२ ५६	०० ३७	२ ०२	३ २३	४ ५६
25	१२	६ ५१	९ ०५	११ २८	१३ ४८	१६ ०६	१८ २७	२० ४७	२२ ५२	०० ३३	१ ५८	३ १९	४ ५२
26	१३	६ ४७	९ ०१	११ २४	१३ ४४	१६ ०२	१८ २३	२० ४३	२२ ४८	०० २९	१ ५४	३ १५	४ ४८
27	१४	६ ४३	८ ५७	११ २०	१३ ४०	१५ ५८	१८ १९	२० ३९	२२ ४४	०० २५	१ ५०	३ ११	४ ४४
28	१५	६ ३९	८ ५३	११ १६	१३ ३६	१५ ५४	१८ १५	२० ३५	२२ ४०	०० २१	१ ४६	३ ०७	४ ४०
29	१६	६ ३५	८ ४९	११ १२	१३ ३२	१५ ५०	१८ ११	२० ३१	२२ ३६	०० १७	१ ४२	३ ०३	४ ३६
30	१७	६ ३१	८ ४५	११ ०८	१३ २८	१५ ४६	१८ ०७	२० २७	२२ ३२	०० १३	१ ३८	२ ५९	४ ३२
31	१८	६ २७	८ ४१	११ ०४	१३ २४	१५ ४२	१८ ०३	२० २३	२२ २८	०० ०९	१ ३४	२ ५५	४ २८
जून	१९	६ २३	८ ३७	११ ००	१३ २०	१५ ३८	१७ ५९	२० १९	२२ २४	०० ०५	१ ३०	२ ५१	४ २४
2	२०	६ १९	८ ३३	१० ५६	१३ १६	१५ ३४	१७ ५५	२० १५	२२ २०	०० ०१	१ २६	२ ४७	४ २०
3	२१	६ १५	८ २९	१० ५२	१३ १२	१५ ३०	१७ ५१	२० ११	२२ १६	२३ ५७	१ २२	२ ४३	४ १६
4	२२	६ ११	८ २५	१० ४८	१३ ०८	१५ २६	१७ ४७	२० ०७	२२ १२	२३ ५३	१ १८	२ ३९	४ १२
5	२३	६ ०७	८ २१	१० ४४	१३ ०४	१५ २२	१७ ४३	२० ०३	२२ ०८	२३ ४९	१ १४	२ ३५	४ ०८
6	२४	६ ०३	८ १८	१० ४१	१३ ०१	१५ १९	१७ ४०	२० ००	२२ ०५	२३ ४६	१ १०	२ ३२	४ ०४
7	२५	५ ५९	८ १४	१० ३७	१२ ५७	१५ १५	१७ ३६	१९ ५६	२२ ०१	२३ ४२	१ ०६	२ २८	४ ०१
8	२६	५ ५५	८ १०	१० ३३	१२ ५३	१५ ११	१७ ३२	१९ ५२	२१ ५७	२३ ३८	१ ०२	२ २४	३ ५७
9	२७	५ ५१	८ ०६	१० २९	१२ ४९	१५ ०७	१७ २८	१९ ४८	२१ ५३	२३ ३४	०० ५८	२ २०	३ ५३
10	२८	५ ४७	८ ०२	१० २५	१२ ४५	१५ ०३	१७ २४	१९ ४४	२१ ४९	२३ ३०	०० ५४	२ १६	३ ४९
11	२९	५ ४३	७ ५८	१० २१	१२ ४१	१४ ५९	१७ २०	१९ ४०	२१ ४५	२३ २६	०० ५०	२ १२	३ ४५
12	३०	५ ३९	७ ५४	१० १७	१२ ३७	१४ ५५	१७ १६	१९ ३६	२१ ४१	२३ २२	०० ४६	२ ०८	३ ४१
13	३१	५ ३५	७ ५०	१० १३	१२ ३३	१४ ५१	१७ १२	१९ ३२	२१ ३७	२३ १८	०० ४२	२ ०४	३ ३७
14	आ	५ ३१	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —

दैनिक लग्न सारणी जून-जुलाई (आषाढ़) भा.स्टैं.टा. समाप्ति काल जालन्धर

जून	आषाढ़	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष
		घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.
14	१	७ ४६	१० ०९	१२ २९	१४ ४७	१७ ०८	१९ २८	२१ ३३	२३ १४	०० ३९	२ ००	३ ३३	५ २८
15	२	७ ४२	१० ०५	१२ २५	१४ ४३	१७ ०४	१९ २४	२१ २९	२३ १०	०० ३५	१ ५६	३ २९	५ २४
16	३	७ ३८	१० ०१	१२ २१	१४ ३९	१७ ००	१९ २०	२१ २५	२३ ०६	०० ३१	१ ५२	३ २५	५ २०
17	४	७ ३४	९ ५७	१२ १७	१४ ३५	१६ ५६	१९ १६	२१ २१	२३ ०२	०० २७	१ ४८	३ २१	५ १६
18	५	७ ३०	९ ५३	१२ १३	१४ ३१	१६ ५२	१९ १२	२१ १७	२२ ५८	०० २३	१ ४४	३ १७	५ १२
19	६	७ २६	९ ४९	१२ ०९	१४ २७	१६ ४८	१९ ०८	२१ १३	२२ ५४	०० १९	१ ४०	३ १३	५ ०८
20	७	७ २२	९ ४५	१२ ०५	१४ २३	१६ ४४	१९ ०४	२१ ०९	२२ ५०	०० १५	१ ३६	३ ०९	५ ०४
21	८	७.१८	९ ४१	१२ ०१	१४ १९	१६ ४०	१९ ००	२१ ०५	२२ ४६	०० ११	१ ३२	३ ०५	५ ००
22	९	७ १५	९ ३७	११ ५७	१४ १५	१६ ३६	१८ ५६	२१ ०१	२२ ४२	०० ०७	१ २८	३ ०१	४ ५६
23	१०	७ ११	९ ३३	११ ५३	१४ ११	१६ ३२	१८ ५२	२० ५७	२२ ३८	०० ०३	१ २४	२ ५७	४ ५२
24	११	७ ०७	९ २९	११ ४९	१४ ०७	१६ २८	१८ ४८	२० ५३	२२ ३४	२३ ५९	१ २०	२ ५३	४ ४८
25	१२	७ ०३	९ २५	११ ४५	१४ ०३	१६ २४	१८ ४४	२० ४९	२२ ३०	२३ ५५	१ १६	२ ४९	४ ४४
26	१३	६ ५९	९ २१	११ ४१	१३ ५९	१६ २०	१८ ४०	२० ४५	२२ २६	२३ ५१	१ १२	२ ४५	४ ४०
27	१४	६ ५५	९ १८	११ ३८	१३ ५६	१६ १७	१८ ३७	२० ४२	२२ २३	२३ ४८	१ ०९	२ ४२	४ ३७
28	१५	६ ५१	९ १४	११ ३४	१३ ५२	१६ १३	१८ ३३	२० ३८	२२ १९	२३ ४४	१ ०५	२ ३८	४ ३३
29	१६	६ ४७	९ १०	११ ३०	१३ ४८	१६ ०९	१८ २९	२० ३४	२२ १५	२३ ४०	१ ०१	२ ३४	४ २९
30	१७	६ ४३	९ ०६	११ २६	१३ ४४	१६ ०५	१८ २५	२० ३०	२२ ११	२३ ३६	०० ५७	२ ३०	४ २५
जुला.	१८	६ ३९	९ ०२	११ २२	१३ ४०	१६ ०१	१८ २१	२० २६	२२ ०७	२३ ३२	०० ५३	२ २६	४ २१
2	१९	६ ३५	८ ५८	११ १८	१३ ३६	१५ ५७	१८ १७	२० २२	२२ ०३	२३ २८	०० ४९	२ २२	४ १७
3	२०	६ ३१	८ ५४	११ १४	१३ ३२	१५ ५३	१८ १३	२० १८	२१ ५९	२३ २४	०० ४५	२ १८	४ १३
4	२१	६ २७	८ ५०	११ १०	१३ २८	१५ ४९	१८ ०९	२० १४	२१ ५५	२३ २०	०० ४१	२ १४	४ ०९
5	२२	६ २३	८ ४६	११ ०६	१३ २४	१५ ४५	१८ ०५	२० १०	२१ ५१	२३ १६	०० ३८	२ ११	४ ०५
6	२३	६ १९	८ ४२	११ ०२	१३ २०	१५ ४१	१८ ०१	२० ०६	२१ ४७	२३ १२	०० ३४	२ ०७	४ ०१
7	२४	६ १६	८ ३९	१० ५९	१३ १७	१५ ३८	१७ ५८	२० ०३	२१ ४४	२३ ०९	०० ३१	२ ०४	३ ५८
8	२५	६ १२	८ ३५	१० ५५	१३ १३	१५ ३४	१७ ५४	१९ ५९	२१ ४०	२३ ०५	०० २७	२ ००	३ ५४
9	२६	६ ०८	८ ३१	१० ५१	१३ ०९	१५ ३०	१७ ५०	१९ ५५	२१ ३६	२३ ०१	०० २३	१ ५६	३ ५०
10	२७	६ ०४	८ २७	१० ४७	१३ ०५	१५ २६	१७ ४६	१९ ५१	२१ ३२	२२ ५७	०० १९	१ ५२	३ ४६
11	२८	६ ००	८ २३	१० ४३	१३ ०१	१५ २२	१७ ४२	१९ ४७	२१ २८	२२ ५३	०० १५	१ ४८	३ ४२
12	२९	५ ५६	८ १९	१० ३९	१२ ५७	१५ १८	१७ ३८	१९ ४३	२१ २४	२२ ४९	०० ११	१ ४४	३ ३८
13	३०	५ ५२	८ १५	१० ३५	१२ ५३	१५ १४	१७ ३४	१९ ३९	२१ २०	२२ ४५	०० ०७	१ ४०	३ ३४
14	३१	५ ४८	८ ११	१० ३१	१२ ४९	१५ १०	१७ ३०	१९ ३५	२१ १६	२२ ४१	०० ०३	१ ३६	३ ३०
15	३२	५ ४४	८ ०७	१० २७	१२ ४५	१५ ०६	१७ २६	१९ ३१	२१ १२	२२ ३७	२३ ५९	१ ३२	३ २६
16	श्रा.	५ ४०	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —

दैनिक लग्न सारणी जुला.-अग. (श्रावण) भा.स्टैं.टा. समाप्ति काल जालन्धर

जुलाई	श्रावण	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन
		घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.
16	१	८ ०३	१० २३	१२ ४१	१५ ०२	१७ २२	१९ २७	२१ ०८	२२ ३३	२३ ५५	१ २८	३ २२	५ ३६
17	२	७ ५९	१० १९	१२ ३७	१४ ५८	१७ १८	१९ २३	२१ ०४	२२ २९	२३ ५१	१ २४	३ १८	५ ३२
18	३	७ ५५	१० १५	१२ ३३	१४ ५४	१७ १४	१९ १९	२१ ००	२२ २५	२३ ४७	१ २०	३ १४	५ २८
19	४	७ ५२	१० १२	१२ ३०	१४ ५१	१७ ११	१९ १६	२० ५६	२२ २१	२३ ४३	१ १७	३ १०	५ २४
20	५	७ ४८	१० ०८	१२ २६	१४ ४७	१७ ०७	१९ १२	२० ५२	२२ १८	२३ ४०	१ १३	३ ६	५ २०
21	६	७ ४४	१० ०४	१२ २२	१४ ४३	१७ ०३	१९ ८	२० ४८	२२ १४	२३ ३६	१ ०९	३ ०२	५ १६
22	७	७ ४०	१० ००	१२ १८	१४ ३९	१६ ५९	१९ ०४	२० ४४	२२ १०	२३ ३२	१ ०५	२ ५८	५ १२
23	८	७ ३६	९ ५६	१२ १४	१४ ३५	१६ ५५	१९ ००	२० ४०	२२ ०६	२३ २८	१ ०१	२ ५४	५ ०८
24	९	७ ३२	९ ५२	१२ १०	१४ ३१	१६ ५१	१८ ५६	२० ३६	२२ ०२	२३ २४	० ५७	२ ५०	५ ०४
25	१०	७ २८	९ ४८	१२ ६	१४ २७	१६ ४७	१८ ५२	२० ३२	२१ ५८	२३ २०	० ५३	२ ४६	५ ००
26	११	७ २४	९ ४४	१२ ०२	१४ २४	१६ ४४	१८ ४८	२० २९	२१ ५४	२३ १६	० ४९	२ ४२	४ ५६
27	१२	७ २०	९ ४०	११ ५८	१४ २०	१६ ४०	१८ ४४	२० २५	२१ ५०	२३ १२	० ४५	२ ३८	४ ५२
28	१३	७ १६	९ ३६	११ ५५	१४ १६	१६ ३६	१८ ४०	२० २१	२१ ४६	२३ ०८	० ४१	२ ३४	४ ४९
29	१४	७ १२	९ ३२	११ ५१	१४ १२	१६ ३२	१८ ३६	२० १७	२१ ४२	२३ ०४	० ३७	२ ३०	४ ४५
30	१५	७ ०८	९ २८	११ ४७	१४ ८	१६ २८	१८ ३२	२० १३	२१ ३८	२३ ००	० ३३	२ २७	४ ४१
31	१६	७ ०४	९ २४	११ ४३	१४ ०४	१६ २५	१८ २८	२० ९	२१ ३४	२२ ५६	० २९	२ २३	४ ३७
अग.	१७	७ ००	९ २०	११ ३९	१४ ००	१६ २१	१८ २४	२० ०५	२१ ३०	२२ ५२	० २५	२ १९	४ ३३
2	१८	६ ५६	९ १६	११ ३५	१३ ५६	१६ १७	१८ २०	२० ०१	२१ २६	२२ ४८	० २१	२ १५	४ २९
3	१९	६ ५२	९ १२	११ ३१	१३ ५२	१६ १३	१८ १६	१९ ५७	२१ २२	२२ ४४	० १७	२ ११	४ २५
4	२०	६ ४८	९ ०९	११ २७	१३ ४८	१६ ९	१८ १२	१९ ५३	२१ १८	२२ ४१	० १३	२ ०७	४ २१
5	२१	६ ४४	९ ०५	११ २४	१३ ४५	१६ ५	१८ ९	१९ ५०	२१ १४	२२ ३८	० १०	२ ०४	४ १७
6	२२	६ ४०	९ ०१	११ २०	१३ ४१	१६ ०१	१८ ५	१९ ४६	२१ ११	२२ ३४	० ०६	२ ००	४ १४
7	२३	६ ३७	८ ५७	११ १६	१३ ३७	१५ ५७	१८ ०१	१९ ४२	२१ ७	२२ ३०	० ०२	१ ५६	४ १०
8	२४	६ ३३	८ ५३	११ १२	१३ ३३	१५ ५४	१७ ५७	१९ ३९	२१ ०३	२२ २६	२३ ५८	१ ५२	४ ०६
9	२५	६ २९	८ ४९	११ ८	१३ २९	१५ ५०	१७ ५३	१९ ३५	२० ५९	२२ २२	२३ ५४	१ ४८	४ ०२
10	२६	६ २५	८ ४५	११ ४	१३ २५	१५ ४६	१७ ४९	१९ ३१	२० ५५	२२ १८	२३ ५०	१ ४४	३ ५८
11	२७	६ २१	८ ४१	११ ००	१३ २१	१५ ४२	१७ ४५	१९ २७	२० ५१	२२ १४	२३ ४६	१ ४०	३ ५४
12	२८	६ १७	८ ३७	१० ५६	१३ १७	१५ ३८	१७ ४१	१९ २३	२० ४८	२२ १०	२३ ४२	१ ३७	३ ५०
13	२९	६ १३	८ ३३	१० ५२	१३ १३	१५ ३४	१७ ३७	१९ १९	२० ४४	२२ ०६	२३ ३८	१ ३३	३ ४७
14	३०	६ ०९	८ २९	१० ४८	१३ ०९	१५ ३०	१७ ३३	१९ १५	२० ४०	२२ ०२	२३ ३४	१ २९	३ ४३
15	३१	६ ०५	८ २५	१० ४४	१३ ०५	१५ २६	१७ २९	१९ ११	२० ३६	२१ ५८	२३ ३०	१ २५	३ ३९
16	भाद्र	६ ०१	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —

भा.स्टैं.टा. समाप्ति काल जालन्धर

दैनिक लग्न सारणी अग.-सितं. (भाद्रपद) भा.स्टैं.टा. समाप्ति काल जालन्धर

अगस्त	भाद्रपद	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क
		घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
16	१	८ २१	१० ४०	१३ ०१	१५ २२	१७ २५	१९ ०७	२० ३२	२१ ५४	२३ २६	१ २१	३ ३५	५ ५७
17	२	८ १७	१० ३६	१२ ५७	१५ १८	१७ २१	१९ ०३	२० २८	२१ ५०	२३ २२	१ १७	३ ३१	५ ५३
18	३	८ १३	१० ३३	१२ ५३	१५ १४	१७ १७	१८ ५९	२० २४	२१ ४६	२३ १८	१ १३	३ २७	५ ४९
19	४	८ ९	१० २९	१२ ४९	१५ १०	१७ १३	१८ ५५	२० २०	२१ ४२	२३ १४	१ ०९	३ २३	५ ४५
20	५	८ ६	१० २५	१२ ४६	१५ ०६	१७ ०९	१८ ५१	२० १६	२१ ३८	२३ १०	१ ०५	३ १९	५ ४१
21	६	८ ०२	१० २१	१२ ४२	१५ ०२	१७ ०६	१८ ४७	२० १२	२१ ३४	२३ ०७	१ ०१	३ १५	५ ३७
22	७	७ ५८	१० १७	१२ ३८	१४ ५८	१७ ०२	१८ ४४	२० ८	२१ ३०	२३ ०३	० ५७	३ ११	५ ३३
23	८	७ ५४	१० १३	१२ ३४	१४ ५४	१६ ५८	१८ ४०	२० ४	२१ २६	२२ ५९	० ५३	३ ०७	५ २९
24	९	७ ५०	१० ०९	१२ ३०	१४ ५०	१६ ५४	१८ ३६	२० ०१	२१ २२	२२ ५५	० ५०	३ ०३	५ २५
25	१०	७ ४६	१० ५	१२ २६	१४ ४६	१६ ५०	१८ ३२	१९ ५७	२१ १९	२२ ५१	० ४६	३ ००	५ २२
26	११	७ ४२	१० ०१	१२ २३	१४ ४३	१६ ४६	१८ २८	१९ ५३	२१ १५	२२ ४७	० ४२	२ ५६	५ १८
27	१२	७ ३८	९ ५७	१२ १९	१४ ३९	१६ ४३	१८ २४	१९ ४९	२१ ११	२२ ४३	० ३८	२ ५२	५ १४
28	१३	७ ३४	९ ५३	१२ १५	१४ ३५	१६ ३९	१८ २०	१९ ४५	२१ ७	२२ ३९	० ३४	२ ४८	५ १०
29	१४	७ ३०	९ ४९	१२ ११	१४ ३१	१६ ३५	१८ १६	१९ ४१	२१ ०३	२२ ३५	० ३०	२ ४४	५ ६
30	१५	७ २६	९ ४५	१२ ०७	१४ २७	१६ ३१	१८ १२	१९ ३७	२० ५९	२२ ३१	० २६	२ ४०	५ ०२
31	१६	७ २२	९ ४१	१२ ०३	१४ २३	१६ २७	१८ ०८	१९ ३३	२० ५५	२२ २७	० २२	२ ३६	४ ५८
सितं	१७	७ १८	९ ३७	११ ५९	१४ १९	१६ २३	१८ ०४	१९ २९	२० ५१	२२ २३	० १८	२ ३२	४ ५४
2	१८	७ १४	९ ३४	११ ५५	१४ १५	१६ १९	१८ ००	१९ २५	२० ४७	२२ १९	० १४	२ २८	४ ५०
3	१९	७ १०	९ ३०	११ ५१	१४ ११	१६ १५	१७ ५६	१९ २१	२० ४३	२२ १६	० १०	२ २४	४ ४६
4	२०	७ ०६	९ २६	११ ४७	१४ ०७	१६ ११	१७ ५२	१९ १७	२० ३९	२२ १२	० ६	२ २०	४ ४२
5	२१	७ ०२	९ २२	११ ४३	१४ ०३	१६ ०७	१७ ४८	१९ १३	२० ३५	२२ ८	० ०२	२ १६	४ ३८
6	२२	६ ५९	९ १८	११ ३९	१३ ५९	१६ ०३	१७ ४४	१९ ९	२० ३१	२२ ०४	२३ ५८	२ १२	४ ३४
7	२३	६ ५५	९ १४	११ ३५	१३ ५५	१५ ५९	१७ ४०	१९ ५	२० २७	२२ ००	२३ ५४	२ ०८	४ ३०
8	२४	६ ५१	९ १०	११ ३१	१३ ५१	१५ ५५	१७ ३६	१९ ०१	२० २३	२१ ५६	२३ ५०	२ ०४	४ २६
9	२५	६ ४७	९ ०६	११ २७	१३ ४७	१५ ५१	१७ ३२	१८ ५७	२० १९	२१ ५२	२३ ४६	२ ००	४ २२
10	२६	६ ४३	९ ०२	११ २३	१३ ४३	१५ ४७	१७ २८	१८ ५३	२० १५	२१ ४८	२३ ४२	१ ५६	४ १८
11	२७	६ ३९	८ ५८	११ १९	१३ ३९	१५ ४३	१७ २४	१८ ४९	२० ११	२१ ४४	२३ ३८	१ ५२	४ १४
12	२८	६ ३५	८ ५४	११ १५	१३ ३५	१५ ३९	१७ २०	१८ ४५	२० ७	२१ ४०	२३ ३४	१ ४८	४ १०
13	२९	६ ३१	८ ५०	११ ११	१३ ३१	१५ ३५	१७ १६	१८ ४१	२० ०३	२१ ३६	२३ ३०	१ ४४	४ ६
14	३०	६ २७	८ ४६	११ ७	१३ २७	१५ ३१	१७ १२	१८ ३७	१९ ५९	२१ ३२	२३ २६	१ ४०	४ ०२
15	३१	६ २३	८ ४२	११ ०३	१३ २३	१५ २७	१७ ०८	१८ ३३	१९ ५५	२१ २८	२३ २२	१ ३६	३ ५८
16	आ	६ २३	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —

दैनिक लग्न सारणी सितं.-अक्तू. (आश्विन) भा.स्टैं.टा. समाप्ति काल जालन्धर

सितंबर	आश्विन	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह
		घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
16	१	८ ३८	१० ५९	१३ १९	१५ २३	१७ ०४	१८ २९	१९ ५१	२१ २४	२३ १८	१ ३२	३ ५५	६ १५
17	२	८ ३४	१० ५५	१३ १५	१५ १९	१७ ००	१८ २५	१९ ४७	२१ २०	२३ १४	१ २८	३ ५१	६ ११
18	३	८ ३०	१० ५१	१३ ११	१५ १५	१६ ५६	१८ २१	१९ ४३	२१ १६	२३ १०	१ २४	३ ४७	६ ०७
19	४	८ २६	१० ४७	१३ ०७	१५ ११	१६ ५२	१८ १७	१९ ३९	२१ १२	२३ ०६	१ २०	३ ४३	६ ०३
20	५	८ २२	१० ४३	१३ ०३	१५ ०७	१६ ४८	१८ १३	१९ ३५	२१ ०८	२३ ०२	१ १६	३ ३९	५ ५९
21	६	८ १८	१० ३९	१२ ५९	१५ ०३	१६ ४४	१८ ०९	१९ ३१	२१ ०४	२२ ५८	१ १२	३ ३५	५ ५५
22	७	८ १४	१० ३५	१२ ५५	१४ ५९	१६ ४०	१८ ०५	१९ २७	२१ ००	२२ ५४	१ ०८	३ ३१	५ ५१
23	८	८ १०	१० ३१	१२ ५१	१४ ५५	१६ ३६	१८ ०१	१९ २३	२० ५६	२२ ५०	१ ०४	३ २७	५ ४७
24	९	८ ६	१० २७	१२ ४७	१४ ५१	१६ ३२	१७ ५७	१९ १९	२० ५२	२२ ४६	१ ००	३ २३	५ ४३
25	१०	८ ०२	१० २३	१२ ४३	१४ ४७	१६ २८	१७ ५३	१९ १५	२० ४८	२२ ४२	०० ५७	३ १९	५ ३९
26	११	७ ५८	१० २०	१२ ४०	१४ ४४	१६ २५	१७ ५०	१९ १२	२० ४४	२२ ३८	०० ५३	३ १५	५ ३५
27	१२	७ ५४	१० १६	१२ ३६	१४ ४०	१६ २१	१७ ४६	१९ ८	२० ४०	२२ ३५	०० ४९	३ ११	५ ३१
28	१३	७ ५०	१० १२	१२ ३२	१४ ३६	१६ १७	१७ ४२	१९ ०४	२० ३६	२२ ३१	०० ४५	३ ०७	५ २७
29	१४	७ ४६	१० ०८	१२ २८	१४ ३२	१६ १३	१७ ३८	१९ ००	२० ३२	२२ २७	०० ४१	३ ०३	५ २३
30	१५	७ ४२	१० ०४	१२ २४	१४ २८	१६ ०९	१७ ३४	१८ ५६	२० २८	२२ २३	०० ३७	२ ५९	५ १९
अक्तू	१६	७ ३८	१० ०	१२ २०	१४ २४	१६ ०५	१७ ३०	१८ ५२	२० २४	२२ १९	०० ३३	२ ५५	५ १५
2	१७	७ ३४	९ ५६	१२ १६	१४ २०	१६ ०१	१७ २६	१८ ४८	२० २१	२२ १५	०० २९	२ ५२	५ ११
3	१८	७ ३०	९ ५२	१२ १२	१४ १६	१५ ५७	१७ २२	१८ ४४	२० १७	२२ ११	०० २५	२ ४८	५ ०७
4	१९	७ २६	९ ४८	१२ ०८	१४ १२	१५ ५३	१७ १८	१८ ४०	२० १३	२२ ०७	०० २१	२ ४४	५ ०३
5	२०	७ २२	९ ४४	१२ ०४	१४ ८	१५ ४९	१७ १४	१८ ३६	२० ०९	२२ ०३	०० १७	२ ४०	५ ००
6	२१	७ १८	९ ४०	१२ ००	१४ ४	१५ ४५	१७ १०	१८ ३२	२० ०५	२१ ५९	०० १३	२ ३६	४ ५६
7	२२	७ १४	९ ३६	११ ५६	१४ ००	१५ ४१	१७ ०६	१८ २८	२० ०१	२१ ५५	०० ०९	२ ३३	४ ५२
8	२३	७ १०	९ ३२	११ ५२	१३ ५६	१५ ३७	१७ ०२	१८ २४	१९ ५७	२१ ५१	०० ०५	२ २९	४ ४८
9	२४	७ ०६	९ २८	११ ४८	१३ ५२	१५ ३३	१६ ५८	१८ २०	१९ ५३	२१ ४७	०० ०१	२ २५	४ ४४
10	२५	७ ०३	९ २५	११ ४५	१३ ४९	१५ ३०	१६ ५५	१८ १७	१९ ४९	२१ ४४	२३ ५८	२ २१	४ ४१
11	२६	६ ५९	९ २१	११ ४१	१३ ४५	१५ २६	१६ ५१	१८ १३	१९ ४५	२१ ४०	२३ ५४	२ १७	४ ३७
12	२७	६ ५५	९ १७	११ ३७	१३ ४१	१५ २२	१६ ४७	१८ ९	१९ ४१	२१ ३६	२३ ५०	२ १३	४ ३३
13	२८	६ ५१	९ १३	११ ३३	१३ ३७	१५ १८	१६ ४३	१८ ०५	१९ ३७	२१ ३२	२३ ४६	२ ०९	४ २९
14	२९	६ ४७	९ ०९	११ २९	१३ ३३	१५ १४	१६ ३९	१८ ०१	१९ ३३	२१ २८	२३ ४२	२ ०५	४ २५
15	३०	६ ४३	९ ०५	११ २५	१३ २९	१५ १०	१६ ३५	१७ ५७	१९ २९	२१ २४	२३ ३८	२ ०१	४ २१
16	३१	६ ३९	९ ०१	११ २१	१३ २५	१५ ०६	१६ ३१	१७ ५३	१९ २५	२१ २०	२३ ३४	१ ५७	४ १७
17	का.	६ ३५	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —

दैनिक लग्न सारणी अक्तू.-नवं. (कार्तिक) भा.स्टैं.टा. समाप्ति काल जालन्धर

अक्टूबर	कार्तिक	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या
		घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.
17	१	८ ५७	११ १७	१३ २१	१५ ०२	१६ २७	१७ ४९	१९ २१	२१ १६	२३ ३०	१ ५३	४ १३	६ ३१
18	२	८ ५३	११ १३	१३ १७	१४ ५८	१६ २३	१७ ४५	१९ १७	२१ १२	२३ २६	१ ४९	४ ०९	६ २७
19	३	८ ४९	११ ०९	१३ १३	१४ ५४	१६ १९	१७ ४१	१९ १३	२१ ०८	२३ २२	१ ४५	४ ०५	६ २३
20	४	८ ४५	११ ०५	१३ ०९	१४ ५०	१६ १५	१७ ३७	१९ ०९	२१ ०४	२३ १८	१ ४१	४ ०१	६ १९
21	५	८ ४१	११ ०१	१३ ०५	१४ ४६	१६ ११	१७ ३३	१९ ०५	२१ ००	२३ १४	१ ३७	३ ५७	६ १५
22	६	८ ३७	१० ५७	१३ ०१	१४ ४२	१६ ०७	१७ २९	१९ ०१	२० ५६	२३ १०	१ ३३	३ ५३	६ ११
23	७	८ ३३	१० ५३	१२ ५७	१४ ३८	१६ ०३	१७ २५	१८ ५७	२० ५२	२३ ०७	१ २९	३ ५०	६ ७
24	८	८ २९	१० ४९	१२ ५३	१४ ३४	१५ ५९	१७ २१	१८ ५३	२० ४८	२३ ०३	१ २५	३ ४६	६ ४
25	९	८ २६	१० ४६	१२ ५०	१४ ३०	१५ ५५	१७ १८	१८ ५०	२० ४४	२२ ५९	१ २२	३ ४२	६ ००
26	१०	८ २२	१० ४२	१२ ४६	१४ २७	१५ ५२	१७ १४	१८ ४६	२० ४१	२२ ५५	१ १८	३ ३९	५ ५६
27	११	८ १८	१० ३८	१२ ४२	१४ २३	१५ ४८	१७ १०	१८ ४२	२० ३७	२२ ५१	१ १४	३ ३५	५ ५२
28	१२	८ १४	१० ३४	१२ ३८	१४ १९	१५ ४४	१७ ०६	१८ ३८	२० ३३	२२ ४७	१ १०	३ ३१	५ ४८
29	१३	८ १०	१० ३०	१२ ३४	१४ १५	१५ ४०	१७ ०२	१८ ३४	२० २९	२२ ४३	१ ०६	३ २७	५ ४४
30	१४	८ ०६	१० २६	१२ ३०	१४ ११	१५ ३६	१६ ५८	१८ ३०	२० २५	२२ ३९	१ ०२	३ २३	५ ४१
31	१५	८ ०२	१० २२	१२ २६	१४ ०७	१५ ३२	१६ ५४	१८ २६	२० २१	२२ ३५	० ५८	३ १९	५ ३७
नवं.	१६	७ ५८	१० १८	१२ २२	१४ ०३	१५ २८	१६ ५०	१८ २२	२० १७	२२ ३१	० ५४	३ १५	५ ३३
2	१७	७ ५४	१० १४	१२ १८	१३ ५९	१५ २४	१६ ४६	१८ १८	२० १३	२२ २७	० ५०	३ ११	५ २९
3	१८	७ ५०	१० १०	१२ १४	१३ ५५	१५ २०	१६ ४२	१८ १५	२० ०९	२२ २३	० ४६	३ ०७	५ २५
4	१९	७ ४६	१० ०६	१२ १०	१३ ५१	१५ १६	१६ ३८	१८ ११	२० ०५	२२ १९	० ४२	३ ०३	५ २१
5	२०	७ ४२	१० ०२	१२ ०६	१३ ४७	१५ १२	१६ ३४	१८ ०७	२० ०१	२२ १५	० ३८	२ ५९	५ १७
6	२१	७ ३८	९ ५८	१२ ०२	१३ ४३	१५ ०८	१६ ३०	१८ ०३	१९ ५७	२२ ११	० ३४	२ ५५	५ १३
7	२२	७ ३५	९ ५४	११ ५८	१३ ३९	१५ ०४	१६ २६	१७ ५९	१९ ५३	२२ ०७	० ३०	२ ५१	५ ९
8	२३	७ ३१	९ ५०	११ ५४	१३ ३५	१५ ००	१६ २२	१७ ५५	१९ ४९	२२ ०३	० २६	२ ४७	५ ५
9	२४	७ २७	९ ४६	११ ५०	१३ ३१	१४ ५६	१६ १८	१७ ५१	१९ ४५	२१ ५९	० २२	२ ४३	५ ०१
10	२५	७ २३	९ ४२	११ ४६	१३ २७	१४ ५२	१६ १४	१७ ४७	१९ ४२	२१ ५६	० १८	२ ३९	४ ५७
11	२६	७ १९	९ ३८	११ ४२	१३ २४	१४ ४९	१६ ११	१७ ४३	१९ ३८	२१ ५२	० १४	२ ३५	४ ५३
12	२७	७ १५	९ ३४	११ ३९	१३ २०	१४ ४५	१६ ०७	१७ ३९	१९ ३४	२१ ४८	० ११	२ ३१	४ ४९
13	२८	७ ११	९ ३१	११ ३५	१३ १६	१४ ४१	१६ ०३	१७ ३५	१९ ३०	२१ ४४	० ०७	२ २७	४ ४५
14	२९	७ ०७	९ २७	११ ३१	१३ १२	१४ ३७	१५ ५९	१७ ३१	१९ २६	२१ ४०	० ०३	२ २३	४ ४१
15	मा.	७ ०३	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —

दैनिक लग्न सारणी नवं.-दिसं. (मार्गशीर्ष) भा.स्टैं.टा. समाप्ति काल जालन्धर

नवम्बर	मार्ग.	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला
		घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.
15	१	९ २३	११ २७	१३ ०८	१४ ३३	१५ ५५	१७ २७	१९ २२	२१ ३६	२३ ५९	२ १९	४ ३७	६ ५९
16	२	९ १९	११ २३	१३ ०४	१४ २९	१५ ५१	१७ २३	१९ १८	२१ ३२	२३ ५५	२ १५	४ ३३	६ ५५
17	३	९ १५	११ १९	१३ ००	१४ २५	१५ ४७	१७ १९	१९ १४	२१ २८	२३ ५१	२ ११	४ २९	६ ५१
18	४	९ ११	११ १५	१२ ५६	१४ २१	१५ ४३	१७ १५	१९ १०	२१ २४	२३ ४७	२ ०७	४ २५	६ ४७
19	५	९ ०७	११ ११	१२ ५२	१४ १७	१५ ३९	१७ ११	१९ ०६	२१ २०	२३ ४३	२ ०३	४ २१	६ ४३
20	६	९ ०३	११ ०७	१२ ४८	१४ १३	१५ ३५	१७ ०७	१९ ०२	२१ १६	२३ ३९	१ ५९	४ १७	६ ३९
21	७	८ ५९	११ ०३	१२ ४४	१४ ०९	१५ ३१	१७ ०३	१८ ५८	२१ १२	२३ ३५	१ ५५	४ १३	६ ३५
22	८	८ ५५	१० ५९	१२ ४०	१४ ०५	१५ २७	१७ ००	१८ ५५	२१ ०९	२३ ३१	१ ५२	४ १०	६ ३२
23	९	८ ५१	१० ५५	१२ ३६	१४ ०१	१५ २३	१६ ५६	१८ ५१	२१ ०५	२३ २७	१ ४८	४ ६	६ २८
24	१०	८ ४७	१० ५१	१२ ३२	१३ ५७	१५ १९	१६ ५२	१८ ४७	२१ ०१	२३ २३	१ ४४	४ ०२	६ २४
25	११	८ ४४	१० ४८	१२ २९	१३ ५४	१५ १६	१६ ४८	१८ ४३	२० ५७	२३ १९	१ ४०	३ ५८	६ २०
26	१२	८ ४०	१० ४४	१२ २५	१३ ५०	१५ १२	१६ ४४	१८ ३९	२० ५३	२३ १६	१ ३६	३ ५४	६ १६
27	१३	८ ३६	१० ४०	१२ २१	१३ ४६	१५ ०८	१६ ४०	१८ ३५	२० ४९	२३ १२	१ ३२	३ ५०	६ १२
28	१४	८ ३२	१० ३६	१२ १७	१३ ४२	१५ ०४	१६ ३६	१८ ३१	२० ४५	२३ ०८	१ २८	३ ४६	६ ०८
29	१५	८ २८	१० ३२	१२ १३	१३ ३८	१५ ००	१६ ३३	१८ २७	२० ४१	२३ ०५	१ २५	३ ४३	६ ०४
30	१६	८ २४	१० २८	१२ ०९	१३ ३४	१४ ५६	१६ २९	१८ २३	२० ३७	२३ ०१	१ २१	३ ३९	६ ००
दिसं	१७	८ २०	१० २४	१२ ०५	१३ ३०	१४ ५२	१६ २५	१८ १९	२० ३३	२२ ५७	१ १७	३ ३५	५ ५६
2	१८	८ १६	१० २०	१२ ०१	१३ २६	१४ ४८	१६ २१	१८ १५	२० २९	२२ ५३	१ १३	३ ३१	५ ५२
3	१९	८ १२	१० १६	११ ५७	१३ २२	१४ ४४	१६ १७	१८ ११	२० २५	२२ ४९	१ ०९	३ २७	५ ४८
4	२०	८ ०८	१० १२	११ ५३	१३ १८	१४ ४०	१६ १३	१८ ०७	२० २१	२२ ४५	१ ०५	३ २३	५ ४४
5	२१	८ ०४	१० ०८	११ ४९	१३ १४	१४ ३६	१६ ०९	१८ ०३	२० १७	२२ ४१	१ ०१	३ १९	५ ४०
6	२२	८ ००	१० ०४	११ ४५	१३ १०	१४ ३२	१६ ०५	१७ ५९	२० १३	२२ ३७	०० ५७	३ १५	५ ३६
7	२३	७ ५६	१० ००	११ ४१	१३ ०६	१४ २८	१६ ०१	१७ ५५	२० ०९	२२ ३३	०० ५३	३ ११	५ ३२
8	२४	७ ५२	९ ५६	११ ३७	१३ ०२	१४ २४	१५ ५७	१७ ५१	२० ०५	२२ २९	०० ४९	३ ७	५ २८
9	२५	७ ४८	९ ५२	११ ३३	१२ ५८	१४ २०	१५ ५३	१७ ४७	२० ०१	२२ २५	०० ४५	३ ०३	५ २४
10	२६	७ ४५	९ ४९	११ ३०	१२ ५५	१४ १७	१५ ५०	१७ ४४	१९ ५८	२२ २२	०० ४२	३ ००	५ २१
11	२७	७ ४१	९ ४५	११ २६	१२ ५१	१४ १३	१५ ४६	१७ ४०	१९ ५४	२२ १८	०० ३८	२ ५६	५ १७
12	२८	७ ३७	९ ४१	११ २२	१२ ४७	१४ ०९	१५ ४२	१७ ३६	१९ ५०	२२ १४	०० ३४	२ ५२	५ १३
13	२९	७ ३३	९ ३७	११ १८	१२ ४३	१४ ०५	१५ ३८	१७ ३२	१९ ४६	२२ १०	०० ३०	२ ४८	५ ९
14	३०	७ २९	९ ३३	११ १४	१२ ३९	१४ ०१	१५ ३४	१७ २८	१९ ४२	२२ ०६	०० २६	२ ४४	५ ०५
15	पौ.	७ २५	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —

दैनिक लग्न सारणी दिसं.-जन. (पौष) भा.स्टैं.टा. समाप्ति काल जालन्धर

दिसम्बर	पौष	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक
		घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
15	१	९ २१	११ १०	१२ ३५	१३ ५७	१५ ३०	१७ २४	१९ ३८	२२ ०२	०० २२	२ ४०	५ ०१	७ २१
16	२	९ २५	११ ०६	१२ ३१	१३ ५३	१५ २६	१७ २०	१९ ३४	२१ ५८	०० १८	२ ३६	४ ५७	७ १७
17	३	९ २१	११ २	१२ २८	१३ ४९	१५ २२	१७ १६	१९ ३०	२१ ५४	०० १४	२ ३२	४ ५३	७ १३
18	४	९ १७	१० ५९	१२ २४	१३ ४५	१५ १८	१७ १२	१९ २६	२१ ५०	०० १०	२ २८	४ ४९	७ ९
19	५	९ १३	१० ५५	१२ २०	१३ ४१	१५ १४	१७ ८	१९ २२	२१ ४६	०० ०६	२ २४	४ ४५	७ ५
20	६	९ ९	१० ५१	१२ १६	१३ ३७	१५ १०	१७ ४	१९ १८	२१ ४२	०० ०२	२ २०	४ ४१	७ १
21	७	९ ५	१० ४७	१२ १२	१३ ३३	१५ ६	१७ ००	१९ १४	२१ ३८	२३ ५८	२ १७	४ ३७	६ ५७
22	८	९ ०१	१० ४३	१२ ८	१३ २९	१५ २	१६ ५६	१९ ११	२१ ३४	२३ ५४	२ १३	४ ३३	६ ५३
23	९	८ ५७	१० ३९	१२ ४	१३ २५	१४ ५८	१६ ५२	१९ ०७	२१ ३०	२३ ५०	२ ९	४ २९	६ ४९
24	१०	८ ५४	१० ३५	१२ ००	१३ २१	१४ ५४	१६ ४९	१९ ३	२१ २६	२३ ४६	२ ५	४ २५	६ ४५
25	११	८ ५०	१० ३१	११ ५६	१३ १७	१४ ५०	१६ ४५	१८ ५९	२१ २२	२३ ४२	२ १	४ २१	६ ४२
26	१२	८ ४६	१० २७	११ ५२	१३ १४	१४ ४६	१६ ४१	१८ ५५	२१ १८	२३ ३८	१ ५७	४ १७	६ ३८
27	१३	८ ४२	१० २३	११ ४८	१३ १०	१४ ४३	१६ ३७	१८ ५१	२१ १४	२३ ३४	१ ५३	४ १४	६ ३४
28	१४	८ ३८	१० १९	११ ४४	१३ ६	१४ ३९	१६ ३३	१८ ४७	२१ १०	२३ ३०	१ ४९	४ १०	६ ३०
29	१५	८ ३४	१० १५	११ ४०	१३ २	१४ ३५	१६ २९	१८ ४३	२१ ०६	२३ २६	१ ४५	४ ६	६ २६
30	१६	८ ३०	१० ११	११ ३६	१२ ५८	१४ ३१	१६ २५	१८ ३९	२१ ०२	२३ २२	१ ४१	४ २	६ २२
31	१७	८ २६	१० ०७	११ ३२	१२ ५४	१४ २७	१६ २१	१८ ३५	२० ५८	२३ १८	१ ३७	३ ५८	६ १८
जन.	१८	८ २२	१० ०३	११ २८	१२ ५०	१४ २३	१६ १७	१८ ३१	२० ५४	२३ १४	१ ३३	३ ५४	६ १४
2	१९	८ १८	९ ५९	११ २४	१२ ४६	१४ १९	१६ १३	१८ २७	२० ५०	२३ १०	१ २९	३ ५०	६ १०
3	२०	८ १४	९ ५५	११ २०	१२ ४२	१४ १५	१६ ९	१८ २३	२० ४६	२३ ०६	१ २५	३ ४६	६ ६
4	२१	८ १०	९ ५१	११ १६	१२ ३८	१४ ११	१६ ५	१८ १९	२० ४२	२३ ०२	१ २१	३ ४२	६ २
5	२२	८ ६	९ ४७	११ १२	१२ ३४	१४ ०७	१६ १	१८ १५	२० ३८	२२ ५८	१ १७	३ ३८	५ ५८
6	२३	८ ०२	९ ४३	११ ८	१२ ३०	१४ ०३	१५ ५७	१८ ११	२० ३४	२२ ५४	१ १३	३ ३४	५ ५४
7	२४	७ ५८	९ ३९	११ ४	१२ २६	१३ ५९	१५ ५३	१८ ७	२० ३०	२२ ५०	१ ९	३ ३०	५ ५०
8	२५	७ ५४	९ ३५	११ ००	१२ २२	१३ ५५	१५ ४९	१८ ३	२० २६	२२ ४६	१ ५	३ २६	५ ४६
9	२६	७ ५०	९ ३१	१० ५६	१२ १८	१३ ५१	१५ ४५	१७ ५९	२० २२	२२ ४२	१ ०१	३ २२	५ ४२
10	२७	७ ४६	९ २७	१० ५२	१२ १४	१३ ४७	१५ ४१	१७ ५५	२० १८	२२ ३८	०० ५७	३ १८	५ ३८
11	२८	७ ४२	९ २३	१० ४८	१२ १०	१३ ४३	१५ ३७	१७ ५१	२० १४	२२ ३४	०० ५३	३ १४	५ ३४
12	२९	७ ३८	९ १९	१० ४४	१२ ०६	१३ ३९	१५ ३३	१७ ४७	२० १०	२२ ३०	०० ४९	३ १०	५ ३०
13	३०	७ ३४	९ १५	१० ४०	१२ ०२	१३ ३५	१५ २९	१७ ४३	२० ०६	२२ २६	०० ४५	३ ०६	५ २६
14	मा.	७ ३०	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —

दैनिक लग्न सारणी जन.-फर. (माघ) भा.स्टैं.टा. समाप्ति काल जालन्धर

जनवरी	माघ	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु
		घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
14	१	९ ११	१० ३६	११ ५८	१३ ३१	१५ २५	१७ ३९	२० ०२	२२ २२	०० ४१	३ ०२	५ २२	७ २६
15	२	९ ०७	१० ३२	११ ५४	१३ २७	१५ २१	१७ ३५	१९ ५८	२२ १८	०० ३७	२ ५८	५ १८	७ २२
16	३	९ ०४	१० २९	११ ५१	१३ २४	१५ १८	१७ ३२	१९ ५५	२२ १५	०० ३४	२ ५४	५ १४	७ १८
17	४	९ ००	१० २५	११ ४७	१३ २०	१५ १४	१७ २८	१९ ५१	२२ ११	०० ३०	२ ५०	५ १०	७ १४
18	५	८ ५६	१० २१	११ ४३	१३ १६	१५ १०	१७ २४	१९ ४७	२२ ०७	०० २६	२ ४६	५ ०६	७ १०
19	६	८ ५२	१० १७	११ ३९	१३ १२	१५ ६	१७ २०	१९ ४३	२२ ०३	०० २२	२ ४२	५ ०३	७ ०६
20	७	८ ४८	१० १३	११ ३५	१३ ८	१५ २	१७ १६	१९ ३९	२१ ५९	०० १८	२ ३८	४ ५९	७ ०२
21	८	८ ४४	१० ९	११ ३१	१३ ४	१४ ५८	१७ १२	१९ ३५	२१ ५५	०० १४	२ ३४	४ ५५	६ ५९
22	९	८ ४०	१० ०५	११ २७	१३ ००	१४ ५४	१७ ०८	१९ ३१	२१ ५१	०० १०	२ ३०	४ ५१	६ ५५
23	१०	८ ३६	१० ०१	११ २३	१२ ५६	१४ ५०	१७ ४	१९ २७	२१ ४७	०० ०६	२ २६	४ ४७	६ ५१
24	११	८ ३२	९ ५७	११ १९	१२ ५२	१४ ४६	१७ ००	१९ २४	२१ ४३	०० ०२	२ २३	४ ४३	६ ४७
25	१२	८ २८	९ ५३	११ १५	१२ ४८	१४ ४२	१६ ५६	१९ २०	२१ ३९	२३ ५८	२ १९	४ ३९	६ ४३
26	१३	८ २५	९ ५०	११ १२	१२ ४५	१४ ३९	१६ ५३	१९ १६	२१ ३६	२३ ५५	२ १५	४ ३५	६ ३९
27	१४	८ २१	९ ४६	११ ०८	१२ ४१	१४ ३५	१६ ४९	१९ १२	२१ ३२	२३ ५१	२ ११	४ ३१	६ ३५
28	१५	८ १७	९ ४२	११ ०४	१२ ३७	१४ ३१	१६ ४५	१९ ०८	२१ २८	२३ ४७	२ ०७	४ २७	६ ३१
29	१६	८ १३	९ ३८	११ ००	१२ ३३	१४ २७	१६ ४१	१९ ०४	२१ २४	२३ ४३	२ ०३	४ २३	६ २७
30	१७	८ ०९	९ ३४	१० ५६	१२ २९	१४ २३	१६ ३७	१९ ००	२१ २०	२३ ३९	१ ५९	४ २०	६ २४
31	१८	८ ५	९ ३०	१० ५२	१२ २५	१४ १९	१६ ३३	१८ ५६	२१ १६	२३ ३५	१ ५५	४ १६	६ २०
फर.	१९	८ १	९ २६	१० ४८	१२ २१	१४ १५	१६ २९	१८ ५२	२१ १२	२३ ३१	१ ५१	४ १२	६ १६
2	२०	७ ५७	९ २२	१० ४४	१२ १७	१४ ११	१६ २५	१८ ४८	२१ ०८	२३ २७	१ ४७	४ ०८	६ १२
3	२१	७ ५३	९ १८	१० ४०	१२ १३	१४ ०७	१६ २१	१८ ४४	२१ ०४	२३ २३	१ ४३	४ ०४	६ ८
4	२२	७ ४९	९ १४	१० ३६	१२ ०९	१४ ०३	१६ १७	१८ ४०	२१ ००	२३ १९	१ ३९	४ ००	६ ०४
5	२३	७ ४५	९ १०	१० ३२	१२ ०५	१३ ५९	१६ १३	१८ ३६	२० ५७	२३ १५	१ ३५	३ ५६	६ ००
6	२४	७ ४१	९ ०६	१० २८	१२ ०१	१३ ५५	१६ ०९	१८ ३२	२० ५३	२३ ११	१ ३२	३ ५२	५ ५६
7	२५	७ ३७	९ ०२	१० २४	११ ५७	१३ ५१	१६ ०५	१८ २८	२० ४९	२३ ७	१ २८	३ ४८	५ ५२
8	२६	७ ३३	८ ५८	१० २०	११ ५३	१३ ४७	१६ ०१	१८ २४	२० ४५	२३ ०३	१ २४	३ ४४	५ ४८
9	२७	७ २९	८ ५४	१० १६	११ ४९	१३ ४३	१५ ५७	१८ २१	२० ४१	२२ ५९	१ २०	३ ४०	५ ४४
10	२८	७ २५	८ ५०	१० १२	११ ४५	१३ ३९	१५ ५३	१८ १७	२० ३७	२२ ५५	१ १६	३ ३६	५ ४०
11	२९	७ २१	८ ४६	१० ०८	११ ४१	१३ ३५	१५ ४९	१८ १३	२० ३३	२२ ५१	१ १२	३ ३२	५ ३६
12	फा.	७ १७	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —

सूर्य संक्रान्तियों में प्रतिवर्ष परिवर्तन के कारण देशी प्रविष्टे एवं अंग्रेज़ी तारीखों में कई बार परस्पर एक दिन का अन्तर पड़ जाता है। सूक्ष्मता के लिए सारिणी का प्रयोग अंग्रेज़ी तारीखानुसार करें।

दैनिक लग्न सारणी फर.-मार्च (फाल्गुन) भा.स्टैं.टा. समाप्ति काल जालन्धर

फरवरी	फाल्गुन	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर
		घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
12	१	८ ४२	१० ०४	११ ३७	१३ ३१	१५ ४५	१८ ०९	२० २९	२२ ४७	१ ०८	३ २८	५ ३२	७ १४
13	२	८ ३८	१० ००	११ ३३	१३ २७	१५ ४१	१८ ०५	२० २५	२२ ४३	१ ०४	३ २४	५ २८	७ १०
14	३	८ ३४	९ ५६	११ २९	१३ २३	१५ ३७	१८ ०१	२० २१	२२ ३९	१ ००	३ २०	५ २४	७ ०६
15	४	८ ३०	९ ५२	११ २५	१३ १९	१५ ३३	१७ ५७	२० १७	२२ ३५	० ५६	३ १६	५ २०	७ ०२
16	५	८ २६	९ ४८	११ २१	१३ १५	१५ २९	१७ ५३	२० १३	२२ ३१	० ५२	३ १२	५ १६	६ ५८
17	६	८ २२	९ ४४	११ १७	१३ ११	१५ २५	१७ ४९	२० ०९	२२ २७	० ४८	३ ०८	५ १३	६ ५४
18	७	८ १८	९ ४०	११ १३	१३ ०७	१५ २१	१७ ४५	२० ०५	२२ २३	० ४४	३ ०४	५ ०९	६ ५०
19	८	८ १४	९ ३६	११ ०९	१३ ०३	१५ १७	१७ ४१	२० ०१	२२ १९	० ४०	३ ००	५ ०५	६ ४६
20	९	८ ११	९ ३३	११ ०६	१२ ५९	१५ १४	१७ ३७	१९ ५७	२२ १५	० ३६	२ ५६	५ ०१	६ ४२
21	१०	८ ०७	९ २९	११ ०२	१२ ५६	१५ १०	१७ ३३	१९ ५३	२२ ११	० ३२	२ ५३	४ ५७	६ ३८
22	११	८ ०३	९ २५	१० ५८	१२ ५२	१५ ०६	१७ २९	१९ ४९	२२ ०७	० २८	२ ४९	४ ५३	६ ३४
23	१२	७ ५९	९ २१	१० ५४	१२ ४८	१५ ०२	१७ २५	१९ ४५	२२ ०३	० २५	२ ४५	४ ४९	६ ३०
24	१३	७ ५५	९ १७	१० ५०	१२ ४४	१४ ५८	१७ २१	१९ ४१	२१ ५९	० २१	२ ४१	४ ४५	६ २६
25	१४	७ ५१	९ १३	१० ४६	१२ ४०	१४ ५४	१७ १७	१९ ३७	२१ ५५	० १७	२ ३७	४ ४१	६ २२
26	१५	७ ४७	९ ०९	१० ४२	१२ ३६	१४ ५०	१७ १३	१९ ३३	२१ ५१	० १३	२ ३३	४ ३७	६ १८
27	१६	७ ४३	९ ०५	१० ३८	१२ ३२	१४ ४६	१७ ०९	१९ २९	२१ ४७	० ०९	२ २९	४ ३३	६ १४
28	१७	७ ३९	९ ०१	१० ३४	१२ २८	१४ ४२	१७ ०५	१९ २५	२१ ४३	० ०५	२ २५	४ २९	६ १०
मार्च	१८	७ ३५	८ ५७	१० ३०	१२ २४	१४ ३८	१७ ०१	१९ २१	२१ ३९	० ०१	२ २१	४ २५	६ ०७
2	१९	७ ३१	८ ५३	१० २६	१२ २०	१४ ३४	१६ ५७	१९ १७	२१ ३५	२३ ५७	२ १७	४ २१	६ ०३
3	२०	७ २८	८ ५०	१० २३	१२ १७	१४ ३१	१६ ५३	१९ १३	२१ ३१	२३ ५३	२ १३	४ १७	५ ५९
4	२१	७ २४	८ ४६	१० १९	१२ १३	१४ २७	१६ ४९	१९ ०९	२१ २७	२३ ४९	२ ०९	४ १३	५ ५५
5	२२	७ २०	८ ४२	१० १५	१२ ०९	१४ २३	१६ ४५	१९ ०५	२१ २३	२३ ४६	२ ०५	४ १०	५ ५१
6	२३	७ १६	८ ३८	१० ११	१२ ०५	१४ १९	१६ ४१	१९ ०१	२१ १९	२३ ४२	२ ०१	४ ६	५ ४७
7	२४	७ १२	८ ३४	१० ०७	१२ ०१	१४ १५	१६ ३७	१८ ५७	२१ १६	२३ ३८	१ ५७	४ ०२	५ ४३
8	२५	७ ०८	८ ३०	१० ०३	११ ५७	१४ ११	१६ ३३	१८ ५३	२१ १२	२३ ३४	१ ५३	३ ५८	५ ३९
9	२६	७ ०४	८ २६	९ ५९	११ ५३	१४ ०७	१६ ३०	१८ ५०	२१ ०८	२३ ३०	१ ५०	३ ५४	५ ३५
10	२७	७ ००	८ २२	९ ५५	११ ४९	१४ ०३	१६ २६	१८ ४६	२१ ०४	२३ २६	१ ४६	३ ५०	५ ३१
11	२८	६ ५६	८ १८	९ ५१	११ ४५	१३ ५९	१६ २३	१८ ४२	२१ ००	२३ २२	१ ४२	३ ४६	५ २७
12	२९	६ ५२	८ १४	९ ४७	११ ४१	१३ ५५	१६ १९	१८ ३९	२० ५६	२३ १९	१ ३८	३ ४२	५ २४
13	३०	६ ४८	८ १०	९ ४३	११ ३७	१३ ५१	१६ १५	१८ ३५	२० ५२	२३ १५	१ ३५	३ ३९	५ २०
14	चैत्र	६ ४४	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —

दैनिक लग्न सारणी मार्च-अप्रैल (चैत्र) भा.स्टैं.टा. समाप्ति काल जालन्धर

मार्च	चैत्र	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ
		घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
14	१	८ ०६	९ ३९	११ ३३	१३ ४७	१६ ११	१८ ३१	२० ४८	२३ ११	१ ३१	३ ३५	५ १६	६ ४०
15	२	८ ०२	९ ३५	११ २९	१३ ४३	१६ ०७	१८ २७	२० ४४	२३ ०७	१ २७	३ ३१	५ १२	६ ३६
16	३	७ ५८	९ ३१	११ २५	१३ ३९	१६ ०३	१८ २३	२० ४०	२३ ०३	१ २३	३ २७	५ ०८	६ ३२
17	४	७ ५४	९ २७	११ २१	१३ ३५	१५ ५९	१८ १९	२० ३६	२२ ५९	१ १९	३ २३	५ ०४	६ २८
18	५	७ ५०	९ २३	११ १७	१३ ३१	१५ ५५	१८ १५	२० ३२	२२ ५५	१ १५	३ १९	५ ००	६ २४
19	६	७ ४६	९ १९	११ १३	१३ २७	१५ ५१	१८ ११	२० २८	२२ ५१	१ ११	३ १५	४ ५६	६ २०
20	७	७ ४२	९ १५	११ ०९	१३ २४	१५ ४७	१८ ०७	२० २४	२२ ४७	१ ०७	३ ११	४ ५२	६ १६
21	८	७ ३८	९ ११	११ ०५	१३ २०	१५ ४३	१८ ०३	२० २०	२२ ४३	१ ०३	३ ०७	४ ४८	६ १२
22	९	७ ३४	९ ०७	११ ०१	१३ १६	१५ ३९	१७ ५९	२० १६	२२ ३९	०० ५९	३ ०३	४ ४४	६ ०८
23	१०	७ ३१	९ ०३	१० ५८	१३ १२	१५ ३५	१७ ५५	२० १२	२२ ३५	०० ५५	२ ५९	४ ४०	६ ४
24	११	७ २७	८ ५९	१० ५४	१३ ८	१५ ३१	१७ ५१	२० ०८	२२ ३१	०० ५१	२ ५५	४ ३७	६ ००
25	१२	७ २३	८ ५५	१० ५०	१३ ४	१५ २७	१७ ४७	२० ०४	२२ २७	०० ४७	२ ५१	४ ३३	५ ५६
26	१३	७ १९	८ ५१	१० ४६	१३ ०	१५ २३	१७ ४३	२० ०१	२२ २३	०० ४३	२ ४७	४ २९	५ ५२
27	१४	७ १५	८ ४८	१० ४२	१२ ५६	१५ १९	१७ ३९	१९ ५७	२२ १९	०० ३९	२ ४३	४ २५	५ ४८
28	१५	७ ११	८ ४४	१० ३८	१२ ५२	१५ १५	१७ ३५	१९ ५३	२२ १५	०० ३५	२ ४०	४ २१	५ ४४
29	१६	७ ०७	८ ४०	१० ३४	१२ ४८	१५ ११	१७ ३१	१९ ४९	२२ ११	०० ३१	२ ३६	४ १७	५ ४१
30	१७	७ ०३	८ ३६	१० ३०	१२ ४५	१५ ०७	१७ २७	१९ ४५	२२ ७	०० २७	२ ३२	४ १३	५ ३७
31	१८	६ ५९	८ ३२	१० २६	१२ ४१	१५ ०३	१७ २३	१९ ४१	२२ ०३	०० २३	२ २८	४ ०९	५ ३३
अप्रै.	१९	६ ५५	८ २८	१० २२	१२ ३७	१४ ५९	१७ १९	१९ ३७	२१ ५९	०० १९	२ २४	४ ०५	५ २९
2	२०	६ ५१	८ २४	१० १८	१२ ३३	१४ ५५	१७ १५	१९ ३३	२१ ५५	०० १५	२ २०	४ ०१	५ २५
3	२१	६ ४७	८ २०	१० १४	१२ २९	१४ ५१	१७ ११	१९ २९	२१ ५१	०० ११	२ १६	३ ५७	५ २१
4	२२	६ ४३	८ १६	१० १०	१२ २५	१४ ४७	१७ ०७	१९ २६	२१ ४७	०० ०७	२ १२	३ ५३	५ १७
5	२३	६ ३९	८ १२	१० ०६	१२ २१	१४ ४३	१७ ०३	१९ २२	२१ ४४	०० ०४	२ ०८	३ ४९	५ १३
6	२४	६ ३६	८ ०९	१० ०२	१२ १७	१४ ३९	१६ ५९	१९ १८	२१ ४०	२४ ००	२ ०४	३ ४५	५ ०९
7	२५	६ ३२	८ ०५	९ ५९	१२ १३	१४ ३५	१६ ५६	१९ १४	२१ ३६	२३ ५६	२ ००	३ ४१	५ ०५
8	२६	६ २८	८ ०१	९ ५५	१२ ०९	१४ ३१	१६ ५२	१९ १०	२१ ३२	२३ ५२	१ ५६	३ ३७	५ ०१
9	२७	६ २४	७ ५७	९ ५१	१२ ०५	१४ २७	१६ ४८	१९ ०६	२१ २८	२३ ४८	१ ५२	३ ३३	४ ५८
10	२८	६ २०	७ ५३	९ ४७	१२ ०१	१४ २४	१६ ४४	१९ ०२	२१ २४	२३ ४४	१ ४८	३ २९	४ ५४
11	२९	६ १६	७ ४९	९ ४३	११ ५७	१४ २०	१६ ४०	१८ ५८	२१ २०	२३ ४०	१ ४४	३ २५	४ ५०
12	३०	६ १२	७ ४५	९ ३९	११ ५३	१४ १६	१६ ३६	१८ ५४	२१ १६	२३ ३६	१ ४१	३ २१	४ ४६
13	वै.	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —

भारत के प्रमुख नगरों में लग्नों का प्रारम्भ एवं समाप्तिकाल जानना

इस पंचांग के गत पृष्ठों में जो दैनिक लग्नसारणी दी गई है, वह जालन्धर के अक्षांश 31°-19′ पर आधारित है। भारत के किसी अन्य नगर में लग्नारम्भ अथवा समाप्तिकाल जानने के लिए नीचे दी गई तालिका में मेष, वृषादि राशियों के नीचे लिखे संस्कार अनुसार जालन्धर सारणी में जमा (+) करने अथवा (–) देने से आपको अभीष्ट तारीख एवं नगर में लग्नों का समाप्तिकाल भा. स्टै. टाईम में ज्ञात हो जाएगा। **उदाहरणस्वरूप**–मान लो आपने 16 जुलाई, 2020 ई. को दिल्ली में कन्या लग्न का समाप्तिकाल जानना है, तो सर्व प्रथम जालन्धर की दैनिक लग्न सारणी में देखने पर हमें 16 जुलाई को कन्या लग्न १२।४१ पर समाप्ति काल लिखा मिला है। तदनन्तर आगे सारणी में **दिल्ली** के आगे कन्या लग्न के नीचे देखने पर हमें –८ मिनट मिले। इन्हें जालन्धर में कन्या ल. समा., १२।४१ (घं. मिं.) में से और घटाने पर हमें **१२।३३ (घं. मिं.)** पर **कन्या लग्न** समाप्ति काल प्राप्त हुआ। **कन्या लग्न** का समाप्ति काल ही **तुला लग्न** का **प्रारम्भकाल** होगा। **नोट**–नीचे **लग्न संस्कार तालिका** में यदि किसी अभीष्ट नगर का नाम न मिले, तो आप अपने निकटस्थ नगर का संस्कार ग्रहण कर सकते हैं। पं. विवेक शर्मा.

नाम शहर	मेष मिन्ट	वृष मिन्ट	मिथु. मिन्ट	कर्क मिन्ट	सिंह मिन्ट	कन्या मिन्ट	तुला मिन्ट	वृश्चि. मिन्ट	धनु मिन्ट	मकर मिन्ट	कुम्भ मिन्ट	मीन मिन्ट
अमृतसर	+२	+२	+२	+२	+३	+२	+३	+३	+३	+३	+२	+२
अम्बाला	–५	–५	–५	–३	–३	–६	–५	–५	–४	–५	–५	–५
अजमेर	+१२	+१२	+१३	+१०	+६	+४	–१	–३	–४	–१	+६	+१०
अबोहर	+५	+५	+५	+६	+५	+५	+६	+६	+६	+६	+५	+५
अहमदाबाद	+२६	+३०	+३०	+२५	+१७	+७	–१	–५	–४	+२	+११	+१८
अलाहाबाद	–१५	–१२	–१३	–१५	–२१	–२९	–३४	–३७	–३६	–३२	–२६	–२०
अलीगढ़	–४	–३	–४	–६	–१०	–१४	–१७	–१८	–१८	–१५	–१२	–७
अयोध्या	–१८	–१८	–१५	–१९	–२१	–२५	–२८	–३०	–२८	–२७	–२४	–१६
अलवर	+२	+३	+३	+०	+१	–४	–६	–७	–७	–४	+१	+४
अल्मोड़ा (उ.ख.)	–१५	–१५	–१५	–१६	–१७	–१७	–१९	–१९	–१९	–१८	–१८	–१६
आगरा	–४	–२	–३	–६	–१०	–१४	–१७	–१९	–१९	–१५	–१२	–७
अगरतला	–५०	–४७	–४६	–५३	–६०	–६७	–७५	–७८	–७६	–७३	–६४	–५३
अल्मोड़ा	–१५	–१५	–१५	–१६	–१७	–१७	–१९	–१९	–१९	–१८	–१८	–१६
इन्दौर	+१३	+१७	+१५	+१०	–१	–९	–१६	–२१	–१९	–१२	–३	+५
ऊना (हि. प्र.)	–३	–३	–३	–३	–२	–२	–२	–२	–२	–२	–२	–३
उधमपुर	–२	–२	–२	+११	+३	+४	+७	+७	+७	+६	+५	+२
उज्जैन	+७	+१६	+१४	+८	+०	–७	–१४	–१९	–१७	–१०	–३	+६
उदयपुर	+१९	+२१	+२०	+१५	+७	+२	–४	–८	–६	–१	+६	+१३
उत्तरकाशी	–११	–११	–११	–११	–१२	–१२	–१२	–१२	–१२	–१२	–१२	–११
करनाल	–५	–५	–५	–५	–५	–६	–६	–७	–७	–५	–४	–३
कालका	–५	–५	–५	–४	–४	–५	–६	–६	–७	–७	–४	–३
कुरुक्षेत्र	–४	–३	–३	–४	–५	–६	–६	–७	–७	–५	–३	–३
करतारपुर	+१	+१	+०	+०	–१	–१	+१	–०	–०	–०	–०	–१
कोटखाई	–७	–७	–७	–७	–७	–८	–७	–७	–७	–६	–६	–७
कोटा (राज.)	+९	+११	+१०	+५	–१	–६	–११	–१४	–१३	–८	–२	+४
कपूरथला	+१	+१	+०	–०	–०	–१	+०	–०	–०	–०	–०	–१
काठमण्डू	–३२	–३१	–३१	–३०	–३३	–३८	–४०	–४२	–४२	–४०	–३६	–३३
कोलकत्ता	–३७	–३२	–३५	–४०	–४९	–५८	–६४	–६९	–६८	–६१	–५३	–४४
कानपुर	–११	–१०	–१०	–१४	–१८	–२२	–२८	–३०	–२९	–२५	–२१	–१६
कांगड़ा	–५	–५	–५	–५	–५	–५	–५	–५	–४	–४	–४	–४

नाम शहर	मेष मिन्ट	वृष मिन्ट	मिथु. मिन्ट	कर्क मिन्ट	सिंह मिन्ट	कन्या मिन्ट	तुला मिन्ट	वृश्चि. मिन्ट	धनु मिन्ट	मकर मिन्ट	कुम्भ मिन्ट	मीन मिन्ट
कुल्लू	–७	–७	–७	–६	–६	–६	–५	–४	–४	–४	–५	–५
कठुआ	–२	–२	–२	–१	–०	+१	+२	+२	+२	+२	+२	+१
कटड़ा	+३	+३	+२	+४	+६	+७	+७	+७	+७	+६	+६	+३
किश्तवाड़	–१	–१	–१	–०	+१	+१	+१	+२	+२	+२	+१	+१
खन्ना (पंजा.)	–२	–३	–३	–२	–२	–३	–३	–३	–३	–२	–२	–३
ग्वालियर	–२	+१	–१	–५	–१०	–१५	–१९	–२२	–२१	–१७	–१२	–७
गुरदासपुर	–१	–१	–१	+०	+१	+०	+१	+१	+१	+१	+१	+०
गोरखपुर	–२३	–२१	–२२	–२४	–२७	–३२	–३५	–३७	–३६	–३२	–२७	–२४
गुड़गांव	–१	–१	–१	–३	–३	–७	–१०	–११	–११	–९	–६	–४
गुवाहाटी	–५५	–४८	–५३	–५५	–६१	–६८	–७२	–७५	–७३	–६९	–६४	–६०
गाज़ियाबाद	–२	–२	–३	–५	–८	–१०	–१२	–१३	–१३	–११	–०९	–६
गंगानगर	+६	+६	+६	+७	+७	+६	+६	+६	+६	+७	+७	+६
गया (बिहार)	–२६	–१८	–२३	–२७	–३३	–४२	–४७	–५१	–४१	–४४	–३७	–३२
चण्डीगढ़	–५	–५	–५	–५	–६	–६	–६	–६	–६	–६	–६	–५
चिन्तपूर्णी	–२	–१	–२	–२	–३	–३	–३	–२	–२	–२	–२	–१
चम्बा	–६	–६	–६	–५	–४	–२	+१	+२	+१	+०	+३	–४
जयपुर	+७	+८	+७	+३	+२	–३	–७	–९	–९	–७	–२	+३
ज्वालामुखी	–५	–५	–६	–५	–५	–५	–५	–५	–४	–४	–४	–४
जम्मू	–१	–२	–१	–१	+१	+४	+६	+७	+६	+५	+२	+१
जोधपुर	+१९	+२१	+२०	+१५	+१०	+५	+१	–२	–१	+४	+९	+१३
जीन्द	+०	+२	+१	–१	–३	–५	–६	–७	–७	–५	–४	–१
जैसलमेर	+२६	+२८	+२७	+२३	+१८	+१४	+१०	+९	+१०	+१३	+१७	+२२
झाँसी	–२	+१	+०	–६	–११	–१७	–२२	–२५	–२३	–१८	–१३	–७
जगन्नाथपुरी	–२२	–१६	–१३	–२६	–३७	–४९	–५९	–६४	–६३	–५५	–४४	–३२
दिल्ली	–२	–१	–१	–४	–४	–८	–११	–१२	–१२	–१०	–७	–५
दुर्ग (३६गढ़)	–६	–०	–२	–१०	–१९	–२७	–३७	–४२	–४२	–३१	–२१	–१४
देहरादून	–१०	–१०	–९	–१०	–११	–११	–१२	–१२	–१२	–११	–११	–१०
धर्मशाला	–५	–५	–६	–५	–५	–५	–५	–५	–४	–४	–४	–४

नाम शहर	मेष मिन्ट	वृष मिन्ट	मिथु. मिन्ट	कर्क मिन्ट	सिंह मिन्ट	कन्या मिन्ट	तुला मिन्ट	वृश्चि. मिन्ट	धनु मिन्ट	मकर मिन्ट	कुम्भ मिन्ट	मीन मिन्ट
नाहन(हि.प्र.)	-६	-६	-६	-५	-५	-६	-६	-७	-७	-५	-५	-६
नंगल (पंजा.)	-३	-३	-३	-४	-४	-४	-४	-४	-३	-३	-३	-३
नैनीताल	-१३	-१२	-१३	-१४	-१६	-१७	-१८	-२०	-१९	-१७	-१७	-१४
नवलगढ़	+७	+९	+९	+८	+६	+३	+१	+२	-२	-१	+४	+४
नवांशहर	-२	-२	-२	-२	-३	-३	-२	-२	-३	-३	-२	-२
नागपुर	+३	+७	+५	+४	-१४	-२३	-३२	-३५	-३३	-२७	-७	-६
नदौन(हि.प्र.)	-३	-३	-३	-४	-४	-४	-४	-३	-३	-३	-३	-३
नाभा (पंजा.)	-२	-२	-२	-२	-२	-२	-३	-३	-२	-२	-२	-२
पटियाला	-३	-३	-३	-४	-३	-३	-५	-५	-४	-३	-३	-३
पानीपत	-६	-६	-६	-६	-६	-७	-७	-७	-६	-६	-६	-५
पठानकोट	-४	-३	-३	-२	-२	-२	-२	-२	-१	-१	-१	-१
पुंछ	-१	-२	-१	+१	+४	+८	+१२	+१४	+१२	+९	+६	+३
प्रयाग	-१६	-१४	-१५	-२०	-२४	-३०	-३५	-३७	-३७	-३१	-२७	-२१
पूना (महा.)	+२८	+३५	+३७	+२४	+११	-२	-१३	-१९	-१७	-९	+३	+१७
पंचकूला	-५	-५	-५	-४	-४	-६	-६	-६	-५	-५	-५	-५
पटना	-२९	-२६	-२३	-३०	-३५	-४२	-४७	-४९	-४९	-४६	-४०	-३३
पालमपुर	-६	-६	-६	-५	-५	-५	-६	-६	-५	-५	-५	-५
फरीदकोट	+३	+४	+४	+३	+३	+२	+४	+३	+३	+३	+२	+२
फगवाड़ा	-१	-१	-१	-१	-२	-२	-२	-१	-१	-१	-१	-१
फाजिल्का	+५	+५	+६	+६	+५	+५	+६	+६	+६	+६	+५	+५
फिरोज़पुर	+४	+४	+५	+४	+३	+३	+४	+४	+४	+४	+३	+३
फरीदाबाद	-३	-३	-२	-५	-८	-९	-१२	-१३	-१३	-११	-१०	-६
बटाला	+१	+१	+१	+२	+१	+१	+२	+२	+२	+२	+१	+१
वाराणसी	-२०	-१८	-१९	-२३	-३०	-३४	-३९	-४२	-४१	-३७	-३१	-२५
बिलासपुर	-५	-५	-५	-४	-४	-५	-४	-४	-४	-३	-३	-४
बंगलौर	+२१	+२९	+२७	+१३	-१	-२१	-३६	-४४	-४१	-२८	-११	+६
बरेली	-११	-११	-११	-१३	-१६	-१८	-२०	-२१	-२१	-१९	-१८	-१४
बीकानेर	+१३	+१५	+१५	+१४	+१३	+९	+८	+६	+६	+८	+११	+१४
बड़ौदा	+२६	+३०	+२९	+२३	+१६	+७	+२	-५	-५	+१	+११	+११
बुलन्दशहर	-५	-५	-५	-७	-९	-१२	-१४	-१५	-१५	-१३	-१२	-८
बरनाला	-१	-१	-२	-१	-१	-१	-१	-१	-०	-०	-०	-०
विशाखापटनम	-९	-१	+१	-१३	-२६	-४०	-५२	-५८	-५६	-४७	-३४	-२०
भटिण्डा	+३	+३	+३	+३	+३	+२	+४	+३	+३	+३	+२	+२
भुवनेश्वर	-२३	-१८	-२०	-२८	-३६	-४९	-५८	-६३	-६२	-५४	-४३	-३२
भरतपुर	-२	+०	+०	-५	-८	-१२	-१५	-१७	-१७	-१२	-१०	-५
भोपाल	+६	+१०	+७	+१	-६	-१३	-२०	-२६	-२४	-१७	-९	-१
मेरठ(उ.प्र.)	-६	-५	-६	-७	-९	-११	-१२	-१२	-१२	-१०	-९	-७

नाम शहर	मेष मिन्ट	वृष मिन्ट	मिथु. मिन्ट	कर्क मिन्ट	सिंह मिन्ट	कन्या मिन्ट	तुला मिन्ट	वृश्चि. मिन्ट	धनु मिन्ट	मकर मिन्ट	कुम्भ मिन्ट	मीन मिन्ट
मुज़फ्फरनगर	-६	-५	-६	-७	-९	-११	-१२	-१३	-१३	-११	-१०	-७
मुरादाबाद	-१०	-९	-१०	-११	-१४	-१५	-१६	-१८	-१८	-१६	-१३	-१२
मण्डी(हि.प्र.)	-७	-७	-७	-७	-७	-६	-४	-४	-४	-६	-६	-६
मोगा	+१	+१	+१	+२	+१	+१	+२	+२	+२	+२	+१	+१
मथुरा	-२	-१	-२	-४	-८	-१२	-१५	-१६	-१६	-१३	-१०	-५
मद्रास	+१०	+१८	+१६	+१	-१३	-३१	-४६	-५५	-५२	-४०	-२३	-०५
मैसूर	+२६	+३६	+३७	+१९	+२	-१७	-३३	-४१	-३९	-२६	-९	+१०
मुक्तसर	+४	+४	+३	+४	+४	+३	+५	+४	+४	+४	+३	+३
मलेरकोटला	-१	-१	-१	-१	-१	-२	+०	-१	-१	-१	-२	-२
मुम्बई	+३१	+३७	+३५	+२५	+१७	+३	-८	-१४	-१२	-३	+९	+२१
रोपड़	-४	-३	-३	-४	-३	-४	-४	-४	-४	-४	-४	-३
राँची	-२५	-२१	-२३	-२८	-३६	-४५	-५१	-५७	-५५	-४८	-३९	-३१
रायपुर (छत्ती.)	-८	-२	-४	-१२	-२१	-२९	-३९	-४४	-४४	-३४	-२३	-१६
रोहतक	-१	+१	+१	-२	-२	-६	-९	-१०	-१०	-८	-५	-३
रूड़की	-७	-७	-७	-८	-९	-१०	-११	-११	-११	-१०	-१०	-८
लुधियाना	-२	-२	-१	-२	-१	-२	-२	-२	-२	-१	-१	-२
लखनऊ	-१४	-१२	-१४	-१६	-२१	-२४	-२९	-३०	-३०	-२६	-२३	-१८
शिलांग	-५५	-४९	-५२	-५५	-६१	-६९	-७४	-७६	-७५	-७१	-६५	-६१
श्रीनगर	-३	-३	-३	-१	+२	+८	+११	+१२	+११	+७	+४	+१
शिमला	-६	-६	-६	-६	-७	-७	-७	-७	-७	-७	-७	-६
सोलन	-६	-५	-६	-६	-६	-६	-५	-५	-६	-६	-६	-६
सोनीपत	-२	-२	-२	-२	-३	-७	-१०	-११	-११	-९	-७	-५
सहारनपुर	-६	-६	-५	-७	-८	-९	-१०	-१०	-१०	-९	-९	-७
सागर(म.प्र.)	-१	-२	+०	-५	-१३	-१८	-२५	-२९	-२८	-२२	-१५	-७
सुन्दरनगर	-६	-६	-६	-५	-४	-४	-४	-४	-४	-४	-४	-५
सूरत	+२८	+३३	+३१	+२४	+१५	+४	-४	-९	-८	+१	+१२	+२१
शहडोल(म.प्र.)	-१०	-७	-९	-१५	-२३	-३०	-३७	-४२	-४०	-३२	-२५	-१६
शाहपुर	-४	-४	-५	-५	-४	-४	-४	-४	-३	-३	-३	-३
हरिद्वार	-८	-८	-८	-९	-९	-१२	-१३	-१३	-१३	-१२	-१२	-१०
हैदराबाद	+११	+१८	+१५	+४	-७	-२१	-३३	-३९	-३७	-२८	-१५	-१
होशियारपुर	-३	-४	-३	-३	-२	-२	-१	-१	-१	-१	-२	-३
हमीरपुर(हि.प्र.)	-५	-५	-४	-४	-३	-३	-२	-२	-२	-२	-२	-४
हाँसी	+२	+२	+३	+२	+०	-४	-५	-७	-५	-४	-१	+२
हिसार	+२	+३	+२	+१	+०	-२	-३	-४	-४	-२	-२	+१

अनिष्ट ग्रहों की शान्ति के लिए उपयोगी रत्न (नग) एवं उपरत्न

लेखक–पं. विवेक शर्मा ज्योतिषी (M.A., LLB.)

शुभ ग्रहों के प्रभाव में वृद्धि और अनिष्ट ग्रहों के कुप्रभाव के निवारण हेतु उपयुक्त ग्रह रत्न (नग) धारण करना अत्यन्त लाभदायक सिद्ध होते हैं। अपनी जन्म कुण्डली में स्थित ग्रहों की स्थिति एवं अपनी राशि के अनुसार ही उपयुक्त रत्न (नग) का चयन करना चाहिए, **अन्यथा कई बार लाभ की अपेक्षा गलत नग धारण करने से हानि की सम्भावना हो जाती है।** उनका परिचय से पूर्व यदि सुयोग्य ज्योतिषी से परामर्श कर लिया जावे तो लाभप्रद होगा। धारण करने की विधि, उपयोगादि का **संक्षिप्त विवरण** लिख रहे हैं–

सूर्य रत्न माणक (RUBY)

संस्कृत में इसे माणिक्य, पद्यमराग, हिन्दी में माणक, **मानिक**, **अंग्रेज़ी** में रूबी कहते हैं। सूर्य रत्न होने से इस ग्रह रत्न का अधिष्ठाता सूर्यदेव है।

पहचान विधि–(1) असली माणिक्य लाल सुर्ख वर्ण का पारदर्शी, स्निग्ध-कान्तियुक्त और कुछ भारीपन वज़न लिए होते हैं। अर्थात् हथेली में रखने से हल्की ऊष्णता एवं सामान्य से कुछ अधिक वज़न का अनुभव होता है। (2) **कांच के पात्र में** रखने से इसकी हल्की लाल किरणें चारों ओर से निकलती दिखाई देंगी। (3) **गाय के दूध में** असली माणिक्य रखा जाये तो दूध का रंग गुलाबी दिखलाई देगा।

धारण विधि–माणिक्य रत्न रविवार को सूर्य की होरा में, कृतिका, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा नक्षत्रों, **रविपुष्य योग में सोने अथवा ताँबे की अंगूठी में जड़वा कर तथा सूर्य के बीजमन्त्रों द्वारा अंगूठी अभिमन्त्रित करके अनामिका अंगुली में धारण करना चाहिए। इसका वजन ३, ५ ७ अथवा ९ रत्ति के क्रम से होना चाहिए।**

सूर्य बीज मन्त्र–ॐ ह्रां, ह्रीं, ह्रौं सः सूर्याय नमः

धारण करने के पश्चात् गायत्री मन्त्र की ३ माला का पाठ, हवन एवं **सूर्य भगवान को** विधिपूर्वक अर्घ्य प्रदान करना तथा ताम्र बर्तन, कनक, नारियल, मानक, गुड़, लाल वस्त्रादि सूर्य से सम्बन्धित वस्तुओं का दान करना चाहिए।

विधिपूर्वक माणिक्य धारण करने से राजकीय क्षेत्रों में प्रतिष्ठा, भाग्योन्नति, पुत्र संतान लाभ, तेजबल में वृद्धिकारक तथा हृदय रोग, चक्षुरोग, रक्त विकार, शरीर दौर्बल्यादि में लाभकारी होता है।

मेष, कर्क, सिंह तुला, वृश्चिक एवं धनु राशि अथवा इसी लग्न वालों को मानक धारण करना शुभ लाभप्रद रहता है अथवा जिनकी चन्द्र कुण्डली में सूर्य योगकारक होता हुआ भी प्रभावी न हो रहा हो, उन्हें भी माणिक्य धारण शुभ रहता है।

चन्द्र–रत्न मोती (PEARL)

चन्द्र-रत्न मोती को संस्कृत में मौक्तिक, चन्द्रमणि इत्यादि, **हिन्दी-पंजाबी** में मोती एवं **अंग्रेज़ी** में पर्ल **(Pearl) कहा जाता है। मोती या मुक्ता रत्न का स्वामी चन्द्रमा है।**

पहचान–शुद्ध एवं श्रेष्ठ मोती गोल, श्वेत, उज्ज्वल, चिकना,चन्द्रमा के समान कान्तियुक्त, निर्मल एवं हल्कापन लिए होता है।

परीक्षा–(1) गोमूत्र को किसी मिट्टी के बर्तन में डालकर उसमें मोती रात भर रखें, यदि वह अखण्डित रहे तो मोती को शुद्ध (सुच्चा) समझें। (2) पानी से भरे शीशे के गिलास में मोती डाल दें यदि पानी से किरणें सी निकलती दिखलाई पड़ें, तो मोती असली जानें। सुच्चा मोती के अभाव में **चन्द्रकान्त मणि** अथवा **सफेद पुखराज** धारण किया जा सकता है।

असली शुद्ध मोती धारण करने से **मानसिक शक्ति का विकास, शारीरिक सौन्दर्य की वृद्धि, स्त्री एवं धनादि सुखों की प्राप्ति होती है। इसका प्रयोग स्मरण शक्ति में भी वृद्धिकारक होता है।**

रोग शान्ति–चिकित्सा शास्त्र में भी मोती या मुक्ता भस्म का उपयोग मानसिक रोगों, मूर्छा-मिरगी, उन्माद, रक्तचाप, उदर-विकार, पत्थरी, दन्तरोगादि में।

धारण विधि–मोती चाँदी की अंगूठी में शुक्ल पक्ष के सोमवार को पूर्णिमा के दिन, चन्द्रमा की होरा में गंगा जल, कच्चा दूध व पाण्डुलादि में डूबोते हुए **'ॐ श्रां श्रीं श्रौं सः चन्द्रमसे नमः'** के बीजमन्त्र का पाठ ११००० की संख्या में करने के पश्चात् धारण करना चाहिए। तदुपरान्त चावल, चीनी, क्षीर, श्वेत फल एवं वस्त्रादि का दान करना शुभ होगा।

मोती २, ४, ६ अथवा ११ रत्ति का कनिष्ठका अंगुली में **हस्त, रोहिणी अथवा श्रवण** नक्षत्र में सुयोग्य ज्योतिषी द्वारा बताए गए मुहूर्त्त में धारण करना चाहिए। **मेष, वृष, मिथुन, कर्क, कन्या, तुला, वृश्चिक, मीन राशि/लग्न वालों को मोती शुभ रहता है।**

चन्द्रमा का उपरत्न–चन्द्रकान्त मणि (Moon Light Stone)–यह उपरत्न चाँदनी जैसे चमक लिए हुए चन्द्रमा का 'उपरत्न' (मोती का पूरक) माना जाता है। इसको हिलाने से, इस पर एक दुधिया जैसी प्रकाश रेखा चमकती है। यह रत्न भी मानसिक शान्ति, प्रेरणा, स्मरण शक्ति में वृद्धि तथा प्रेम में सफलता प्रदान करता है। लाभ की दृष्टि से चन्द्रकान्त मणि मलाई के रंग का (सफेद और पीले के बीच का) उत्तम माना जाता है। **इसे चाँदी में ही धारण करना चाहिए।**

मंगल–रत्न मूंगा (CORAL)

इसे **संस्कृत** में अंगारकमणि तथा **अंग्रेज़ी** में **कोरल** (Coral) कहते हैं।

गोल, चिकना, चमकदार एवं औसत से अधिक वज़नी, सिन्धूरी से मिलते-जुलते रंग का मूंगा श्रेष्ठ माना जाता है। इसका स्वामी ग्रह **मंगल** है।

परीक्षा–(१) **असली मूंगे को** खून में डाल दिया जाये तो उसके चारों ओर गाढ़ा रक्त जमा होने लगता है। (२) **असली मूंगा यदि** गौ के दूध में डाल दिया जाए तो उसमें लाल रंग की झाई सी दीखने लगती है।

श्रेष्ठ जाति का मूंगा धारण करने से **भूमि, पुत्र एवं भ्रातृ सुख, नीरोगता** आदि की प्राप्ति होती है। इसके **अतिरिक्त रक्त-विकार, भूत-प्रेत बाधा, दुर्बलता, मन्दाग्नि, हृदय-रोग, वायु-कफादि विकार, पेट विकारादि में मूंगे की भस्म अथवा मिट्टी** का प्रयोग किया जाता है। **मेष, कर्क, सिंह, तुला, वृश्चिक, मकर, कुम्भ व मीन राशि एवं लग्न** वालों को सुयोग्य ज्योतिषी के परामर्शानुसार धारण करना लाभप्रद होगा।

धारण विधि–शुक्ल पक्ष के मंगलवार को प्रातः मंगल की होरा में मृगशिर, चित्रा या धनिष्ठा

नक्षत्र में सोने या तांबे के अंगूठी में जड़वा कर, बीज मन्त्र द्वारा अभिमन्त्रित करके अनामिका अंगुली में ६,८,१० या १२ रत्ति के वज़न में धारण करना कल्याणकर होता है। धारणोपरान्त मंगल स्तोत्र एवं मंगल ग्रह का दान करना शुभ होता है।

भौम बीज मन्त्र–ॐ क्रां, क्रीं, क्रौं सः भौमाय नमः

शारीरिक स्वास्थ्य एवं कुं. में मंगल नीच राशिस्थ हो तो सफेद मूँगा भी धारण किया जाता है।

बुध रत्न पन्ना (EMERALD)

''पन्ना'' बुध ग्रह का मुख्य रत्न है। **संस्कृत** में मरकतमणि, फारसी में जमरूद व अंग्रेज़ी में इमराल्ड (Emerald)। पन्ना रत्न हरे रंग, स्वच्छ, पारदर्शी कोमल, चिकना व चमकदार होता है।

परीक्षा–(1) शीशे के गिलास में साफ पानी और पन्ना डाल दिया जाए तो हरी किरणें निकलती दिखाई देंगी। (2) शुद्ध पन्ने को हाथ में लेने पर वह हल्का, कोमल व आँखों को शीतलता प्रदान करता है।

गुण–'**पन्ना**' धारण करने से **बुद्धि तीव्र एवं स्मरण शक्ति बढ़ती है। विद्या, बुद्धि, धन एवं व्यापार में वृद्धि के लिए लाभप्रद** माना जाता है। पन्ना सुख एवं **आरोग्यकारक** भी है। **यह रत्न जादू-टोने, रक्त विकार, पथरी, बहुमूत्र, नेत्र रोग, दमा, गुर्दे के विकार, पाण्डु, मानसिक विकलतादि रोगों में लाभकारी माना जाता है।**

धारण विधि–यह नग शुक्ल पक्ष के बुधवार को अश्लेषा, ज्येष्ठा, रेवती, पू.फा. अथवा पुष्य नक्षत्रों में अथवा बुध की होरा में सोने की अंगूठी में दाएं हाथ की कनिष्ठिका (छोटी) अंगुली में बुधग्रह के बीजमन्त्र से अभिमंत्रित करते हुए धारण करना चाहिए। इसका वज़न ३, ६, ७ रत्ति होना चाहिए।

बुध बीज मन्त्र–ॐ ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः

वृष, मिथुन, सिंह, कन्या, मकर व मीन राशि वालों को विशेष लाभप्रद रहता है।

गुरु-रत्न पुखराज (TOPAZ)

पुखराज गुरु (बृहस्पति) ग्रह का मुख्य रत्न है। **संस्कृत में** इसे पुष्प राजा, **हिन्दी में पुखराज**, व अंग्रेज़ी में टोपाज (Topaz) कहते हैं।

पहचान विधि–जो **पुखराज** स्पर्श में **चिकना**, हाथ **में लेने पर कुछ भारी लगे, पारदर्शी, प्राकृतिक चमक से युक्त** हो वह **उत्तम कोटि** का माना जाता है।

परीक्षा–(i) जहां किसी विषैले कीड़े ने काटा हो, वहां पर असली पुखराज घिस कर लगाने से विष उतर जाता है। (ii) चौबीस घण्टे कच्चे दूध में रखने के बाद यदि चमक में अन्तर न पड़े तो पुखराज असली होगा। इत्यादि।

गुण–पुखराज धारण करने से **बल, बुद्धि, स्वास्थ्य एवं आयु** की वृद्धि होती है। **वैवाहिक सुख, पुत्र सन्तान कारक एवं धर्म-कर्म** में प्रेरक होता है। प्रेत-बाधा का निवारण एवं स्त्री के **विवाहसुख की बाधा को दूर करने में** सहायक होता है।

औषधी प्रयोग–इसको वैद्य के परामर्शानुसार केवड़ा एवं शहदादि के साथ देने से **पीलिया, तिल्ली, पाण्डु रोग, खांसी, दन्त रोग, मुख की दुर्गन्ध, बवासीर, मन्दाग्नि, पित्त-ज्वरादि** में लाभदायक होता है।

धारण विधि–पुखराज रत्न ३,५,७,९ या १२ रत्ति के वजन का सोने की अंगूठी में जड़वा कर तर्जनी अंगुली में धारण करें, सुवर्ण या ताम्र बर्तन में कच्चा दूध, गंगाजल, पीले पुष्पों से एवं ''**ऊँ ऐं क्लीं बृहस्पतये नमः**'' के बीज मन्त्र द्वारा अभिमन्त्रित करके धारण करना चाहिए। मन्त्र संख्या १९ हजार।

यह नग शुक्ल पक्ष के गुरुवार की होरा में, अथवा गुरुपुष्य योग में या पुनर्वसु, विशाखा, पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र में धारण करना चाहिए।

पुखराज धनु, मीन राशि के अतिरिक्त मेष, कर्क, वृश्चिक राशि वालों को लाभप्रद रहता है। धारण करने के पश्चात् गुरू से सम्बन्धित वस्तुओं का दान करना शुभ होता है।

गुरु का उपरत्न–सुनैला–इसे पुखराज का उपरत्न माना जाता है। पुखराज मूल्यवान होने के कारण सुनैला को उसके पूरक के रूप में धारण किया जा सकता है। श्रेष्ठ सुनैला हल्के पीले रंग (सरसों के जैसा पीलापन) का होता है। कई बार पुखराज से अधिक पीलापन लिए होता है तथा आंशिक मात्रा में पुखराज के समान ही उपयोगी होता है। धारण विधि पुखराज के समान ही होगी।

शुक्र-रत्न 'हीरा' (DIAMOND)

शुक्र ग्रह का मुख्य प्रतिनिधित्व '**हीरा**' है।

संस्कृत में इसे वज्रमणि, हिन्दी में हीरा तथा अंग्रेज़ी में डायमण्ड (Diamond) कहते हैं।

हीरा अत्यन्त चमकदार प्रायः श्वेत वर्ण का होता है।

पहचान–अत्यन्त चमकदार, चिकना, कठोर, पारदर्शी एवं किरणों से युक्त हीरा असली होता है।

परीक्षा–(i) धूप में यदि हीरा रख दिया जाये तो उसमें से इन्द्रधनुष जैसी किरणें दिखाई देती हैं। (ii) तोतले बच्चे के मुंह में रखने से बच्चा ठीक से बोलने लगता है। (iii) अन्धेरे में जुगनू की भान्ति चमकता है।

गुण–हीरे में **वशीकरण करने की विशेष शक्ति होती है।** इसके पहनने से **वंश-वृद्धि, धन-लक्ष्मी व सम्पत्ति की वृद्धि, स्त्री एवं सन्तान सुख की प्राप्ति व स्वास्थ्य** में लाभ होता है। **वैवाहिक सुख** में भी वृद्धिकारक माना जाता है।

औषधीय गुण–हीरे की भस्म शहद-मलाई आदि के साथ ग्रहण करने से अनेक रोगों में लाभ होता है जैसे–दौर्बल्यता, नपुंसकता, वायु प्रकोप, मन्दाग्नि, वीर्य विकार, प्रमेह दोष, हृदय रोग, श्वेत प्रदर, विषैला व्रण, बच्चों में सूखा रोग, मानसिक कमज़ोरी इत्यादि।

धारण विधि–शुक्ल पक्ष के शुक्रवार वाले दिन, शुक्र की होरा में, **भरणी, पुष्य, पूर्वाफाल्गुनी, पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र**, एक रत्ति या इससे अधिक वजन का हीरा सोने की अंगूठी में जड़वा कर शुक्र के बीज मन्त्र (ॐ द्रां, द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः) का 16 हज़ार की संख्या में जाप करके शुभ मुहूर्त में धारण करना चाहिए। हीरा मध्यमा अंगुली में धारण करना चाहिए। धारण करने के दिन शुक्र ग्रह से सम्बन्धित वस्तुएं जैसे दूध, चाँदी, दही, मिश्री, चावल, श्वेत वस्त्र, चन्दनादि का दान यथाशक्ति करना चाहिए।

हीरा (धारण करने की तिथि से) सात वर्ष पर्यन्त प्रभावकारी बना रहता है। **हीरा वृष, मिथुन, कन्या, तुला, मकर, कुम्भ राशि वालों को लाभदायक रहता है।**

शुक्र के उपरत्न–(i) फिरोजा–नीले आकाशीय रंग जैसा यह नग शुक्र का उपरत्न माना गया है। यह रत्न भूत, प्रेत, दैवी आपदा तथा आने वाले कष्टों से धारक की रक्षा करता है। यदि इस रत्न को कोई भेंटस्वरूप प्राप्त करके पहनेगा तो अधिक प्रभावशाली रहेगा। हल्के-प्रखर चमकदार रंग वाला रत्न उत्तम होता है। कोई भी कष्ट या रोग आने से पहले यह रत्न अपना रंग बदल लेता है। नेत्र रोग, सौन्दर्य, सिर दर्द, विषादि रोगों में विशेष लाभकारी रहता है।

(ii) ओपल (Opel)- यह भी शुक्र का अन्य उपरत्न है, इसको धारण करने से सदाचार, सदचिन्तन तथा धार्मिक कार्यों की ओर रुचि रहती है। अधिक लोकप्रिय नहीं है। इसके अतिरिक्त शुक्र के अन्य भी बहुत से उपरत्न प्रचलित हैं।

शनि रत्न नीलम (SAPHIRE)

नीलम शनिग्रह का मुख्य रत्न है। **हिन्दी** में नीलम तथा अंग्रेज़ी में सैफायर (Saphire) कहते हैं।

पहचान-असली नीलम चमकीला, चिकना, मोरपंख के समान वर्ण जैसा, नीली किरणों से युक्त एवं पारदर्शी होगा।

परीक्षा-(i) असली **नीलम को गाय के दूध में डाल दिया जाए तो** दूध का रंग नीला लगता है। (ii) पानी से भरे कांच के गिलास में डाला जाए नीली किरणें दिखाई देंगी। (iii) सूर्य की धूप में रखने से **नीले रंग की किरणें दिखाई देंगी।**

गुण-नीलम धारण करने से **धन-धान्य, यश-कीर्ति, बुद्धि चातुर्य, सर्विस एवं व्यवसाय तथा वंश में वृद्धि होती है। स्वास्थ्य सुख का लाभ होता है।**

ध्यान रहे, बहुधा नीलम चौबीस घण्टे के भीतर ही प्रभाव करना शुरू कर देता है। यदि नीलम अनुकूलन न बैठे तो भारी नुक्सान की आशंका हो जाती है। अतएव परीक्षा के तौर पर कम से कम ३ दिन तक पास रखने पर यदि बुरे स्वप्न आएं, रोग-उत्पन्न हो या चेहरे की बनावट में अन्तर आ जाए तो नीलम मत पहनें।

रोग शान्ति-नीलम धारण करने या औषधि रूप में ग्रहण करने से दमा, क्षय, कुष्ट रोग, हृदय रोग, अजीर्ण, मूत्राशय सम्बन्धी रोगों में लाभकारी है।

धारण विधि-नीलम ५, ७, ९, १२ अथवा अधिक रत्ति के वजन का, पंचधातु, लोहे अथवा सोने की अंगूठी में शनिवार को शनि की होरा में एवं **पुष्य, उ.भा., चित्रा, स्वा, धनि या शतभिषा नक्षत्रों** में शनि के **बीज मन्त्र ॐ प्रां. प्रीं. प्रौं. सः शनये नमः** मन्त्र से २३००० की **संख्या में अभिमन्त्रित** करके धारण करें। तत्पश्चात् शनि की वस्तुओं का दान दक्षिणा सहित करना कल्याणकारी होगा।

राहु रत्न-गोमेद (ZIRCON)

राहु रत्न गोमेद को संस्कृत में गोमेदक, अंग्रेज़ी झिरकन (Zircon) कहते हैं। गोमेद का रंग गोमूत्र के समान हल्के पीले रंग का, कुछ लालिमा तथा श्यामवर्ण होता है। स्वच्छ, भारी, चिकना गोमेद उत्तम होता है तथा उसमें शहद के रंग की झांई भी दिखाई देती है।

पहचान विधि-सामान्यतः गोमेद उल्लू अथवा बाज की आँख के समान होता है तथा गोमूत्र के समान, दल रहित अर्थात् जो परतदार न हों, ऐसे गोमेद उत्तम होंगे। (१) शुद्ध गोमेद को २४ घण्टे तक गोमूत्र में रखने से गोमूत्र का रंग बदल जाएगा।

धारण विधि-गोमेद रत्न शनिवार को शनि की होरा में, स्वाती, शतभिषा, आर्द्रा अथवा रविपुष्य योग में पंचधातु अथवा लोहे की अंगूठी में जड़वाकर तथा राहु के बीज मन्त्र द्वारा अंगूठी अभिमन्त्रित करके दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करना चाहिए। इसका वजन ५, ७, ९ रत्ती का होना चाहिए।

राहु बीज मन्त्र-**"ॐ भ्रां भ्रीं, भ्रौं सः राहवे नमः"**

धारण करने के पश्चात् बीजमन्त्र का पाठ हवन एवं सूर्य भगवान को अर्घ्य प्रदान कर नीले रंग का वस्त्र, कम्बल, तिल, बाजरा आदि दक्षिणा सहित दान करें।

विधिपूर्वक गोमेद धारण करने से अनेक प्रकार की बीमारियां नष्ट होती हैं, धन-सम्पत्ति-सुख, सन्तान वृद्धि, वकालत व राजपक्ष आदि की उन्नति के लिए अत्यन्त लाभकारी है। शत्रु-नाश हेतु भी इसका प्रयोग प्रभावी रहता है।

जिनकी जन्म कुण्डली में राहु १, ४, ७, ९, १० वें भाव में हो, उन्हें गोमेद रत्न पहनना चाहिए। मकर लग्न वालों के लिए गोमेद शुभ होता है।

केतु रत्न लहसनिया (CAT'S EYE STONE)

केतु-रत्न लहसनिया को संस्कृत में वैदूर्य, हिन्दी में लहसनिया, अंग्रेज़ी में Cat's eye Stone कहते हैं। यह नग अन्धेरे में बिल्ली की आंखों के समान चमकता है। लहसनिया चार रंगों में पाया जाता है। काली तथा श्वेत आभा युक्त लहसनिया जिस पर यज्ञोपवीत के समान तीन धारियां खिंची हों, वह वैदूर्य ही उत्तम होता है।

पहचान-(१) असली लहसनिया को यदि हड्डी के ऊपर रख दिया जाए तो वह २४ घण्टे के भीतर हड्डी के आर-पार छेद कर देता है। (२) असली वैदूर्य में ढाई या तीन सफेद सूत्र होते हैं, जो बीच में इधर-उधर घूमते हिलते रहते हैं।

धारण विधि-लहसनिया रत्न बुधवार के दिन अश्विनी, मघा, मूला नक्षत्रों में, रविपुष्य योग में पंचधातु की अंगूठी में कनिष्ठका अंगुली में धारण करें। धारण करने से पूर्व केतु के बीज मन्त्र द्वारा अंगूठी अभिमन्त्रित करें। ५ रत्ती से कम वज़न का नहीं होना चाहिए। प्रत्येक ३ वर्ष पश्चात् नई अंगूठी में लहसनिया जड़वाकर उसे अभिमन्त्रित कर धारण करना चाहिए।

केतु बीज मन्त्र-"ॐ स्त्रां स्त्रीं, स्त्रौं, सः केतवे नमः"

रत्न धारण करने के पश्चात् बुधवार को ही किसी श्रेष्ठ ब्राह्मण को तिल, तेल, कम्बल, धूर्मवर्ण का वस्त्र, सप्तधान्य (अलग-अलग रूप में) यथाशक्ति दक्षिणा सहित दान करें।

विधिपूर्वक लहसनिया धारण करने से भूत प्रेतादि की बाधा नहीं रहती है। सन्तान सुख, धन की वृद्धि एवं शत्रु व रोग नाश में सहायता प्रदान करता है।

अधिक विस्तृत जानकारी के लिए हमारे यहाँ 'आपका भाग्यारत्न' पुस्तक 60 रु॰ भेजकर मंगवा सकते हैं। **बृहदरत्न शास्त्र, मूल्य 150 रुपये, जनरल बुक डिपो, अड्डा होशियारपुर, जालन्धर।**

घर बैठे ही अपना भविष्य जानें

(सही फलादेश का आधार वैज्ञानिक ढंग से निर्मित शुद्ध जन्मपत्री है।)

जन्म कुण्डली टेवा : संक्षिप्त रूप से अपना भविष्य जानने के लिए अपनी जन्म तारीख, जन्म समय, जन्म स्थान, पिता का नाम, दादा का नाम, गौत्र लिखें भेजें जिसकी फीस 801 रुपए होगी।

वर्षफल : आपके लिए यह वर्ष कैसा रहेगा। यह जानने के लिए जन्म कुण्डली की नकल अवश्य भेजें। यदि जन्म कुण्डली नहीं है तो पत्र लिखने का समय अंग्रेज़ी तारीख, स्थान तथा अपनी पारिवारिक व कारोबारी समस्या स्पष्ट लिखते हुए मनपसन्द फूलका नाम भी लिखें। विस्तारपूर्वक फलादेश के लिए फीस 800 रुपए होगी। कृपया पूर्ण राशि अग्रिम भेजें। विदेश के लिए 25 पौंड अथवा 31 डालर होंगे।

वृहद् जन्मपत्री : इसमें आपके जीवन में होने वाली महत्त्वपूर्ण घटनाओं, नौकरी, व्यवसाय, शिक्षा, विवाहादि के सम्बन्ध में विस्तृत रूप से विवरण दिया जाएगा जिसकी फीस 1500) रुपए होगी। जन्मपत्री बनवाने के लिए जन्म समय, जन्म स्थान, जन्म तारीख, गौत्र, प्रसिद्ध नाम, पिता का नाम, दादा का नाम लिख भेजें। विदेश में पैदा होने वाले सज्जनों के लिए फीस 1600 रुपए से 3100 रुपए होगी। कृपया पूरी राशि अग्रिम भेजें। विदेश के लिए 25 पौंड अथवा 50 डालर होंगे। डाक व्यय अलग होगा।

कम्प्यूटर द्वारा जन्मपत्री बनाने की दक्षिणा शुल्क 1300 रुपए होगी।

पं. विवेक शर्मा ज्योतिषी, अड्डा होशियारपुर चौंक, जालन्धर-8 (पंजाब) ☎ 2457959

द्वादश लग्नों एवं राशियों का फल [ज्योतिष तत्त्व (फलित खण्ड) से उद्धृत]

मेष लग्न–मेष लग्न (राशि) का स्वामी **मंगल** है। जातक का मध्यम कद, मुख का वर्ण लाल अथवा गेहुँआ होगा। राशिपति मंगल की स्थिति शुभ होने से रक्तवर्ण नेत्रों वाला, चंचल एवं उग्र स्वभाव, अत्यन्त साहसी, सतर्क एवं महत्वाकांक्षी होगा। जातक उद्यमी, तीव्र बुद्धि, स्वतन्त्र विचारों वाला, अस्थिर किन्तु तेज़ स्मरण शक्ति वाला, अत्यधिक उत्साही, स्पष्टवादी एवं भ्रमणप्रिय व्यक्ति होगा। प्राय: अपने परिश्रम के बल पर आय एवं धन के साधन जुटा लेगा। सगे सम्बन्धियों की ओर से सहायता व सुख कम होगा। यह राशि चर और अग्नि तत्त्व प्रधान होने के कारण मेष राशि (लग्न) का जातक परिवर्तनशील प्रकृति, अस्थिर स्वभाव तथा शीघ्र क्रोधित हो जाने वाला एवं शीघ्र ही मान जावे। व्यवसाय में अनेक कठिनाईयों के बावजूद उन्नति के लिए प्रयास करता रहता है। जायदाद एवं व्यवसाय में कई प्रकार के झंझट (उलझनें) आती हैं और इन्हीं कामों के द्वारा लाभ भी होता रहता है। पित्त, कफ, सिर दर्द, रक्त विकार, नेत्र विकार, त्वचा आदि रोगों का भय रहता है। मंगल शुभ होने पर जातक को खेल-कूद व संगीतादि में भी विशेष शौक रहता है। सामान्यत: **मूंगा** मेष लग्न वालों के लिए शुभ रहता है, परन्तु योग्य ज्योतिषी से परामर्श के बाद धारण करना चाहिए। **भाग्योदयकारक** वर्ष १६, २२, २८, ३२, ३६वें होंगे।

वृष लग्न–वृष लग्न का **स्वामी शुक्र** है। यदि शुक्र शुभ हो तो जातक सुन्दर, सुगठित शरीर व मध्यम कद वाला होगा। गोल, बड़ी व चमकदार आँखें, सुन्दर वर्ण एवं आकर्षक व्यक्तित्व वाला होगा। जातक परिश्रमी, हँसमुख एवं सौम्य प्रकृत्ति वाला, धीर, शान्त एवं दृढ़ स्वभाव का होता है। जातक उदारहृदय, प्रसन्नहृदय और प्रभावशाली व्यक्ति होगा। स्वावलम्बी, उच्चाभिलाषी तथा भौतिक सुखों के लिए कठोर परिश्रम से भी पीछे नहीं हटेगा। जातक मधुरभाषी, सौन्दर्य प्रेमी, संगीत कला-साहित्यादि कार्यों में विशेष रुचि रखने वाला होगा। घर-दफ्तर आदि स्थानों पर सजावट रखेगा तथा ऐश्वर्य साधनों में निरन्तर वृद्धि करते रहने का प्रयास करेगा। जातक प्राय: अपनी इच्छानुसार ही कार्य करने वाला, ऐश्वर्ययुक्त जीवनयापन का इच्छुक, विपरीत योनि वालों के साथ मैत्री करने का आकांक्षी, व्यवहार कुशल तथा कठिन परिस्थितियों में भी अपना कार्य निकालने में कुशल होगा। जातक प्राय: चन्द्र-बुध की स्थिति शुभ होने पर कामर्स, गणित, बैंकिंग, एक्टिंग, वस्त्र उद्योग, क्रय-विक्रय (Trading) आदि में सफलता प्राप्त कर लेता है। **शुभ नग हीरा** है। भाग्योदायकारक वर्ष २८, ३६, ४२ एवं ४८वें होंगे।

मिथुन लग्न–मिथुन लग्न (राशि) का स्वामी बुध है। मिथुन लग्न वाला जातक, गौरवर्ण, चंचल आँखों वाला, सामान्य एवं ऊँचे कद वाला होगा। जातक अस्थिर किन्तु मौलिक विचारों से युक्त, तीव्र बुद्धि, परिवर्तनशील प्रकृति, मित्रों को हर प्रकार से सहायक तथा नीति के अनुसार आचरण करने वाला, तर्क-वितर्क करने में कुशल, दूर-दूर के स्थानों की यात्राएँ करने का सौभाग्य प्राप्त करेगा। जातक में बुद्धि तत्त्व एवं भाव तत्त्व दोनों प्रबल होने के कारण पठन-पाठन, कानूनी कार्य, व्यापार सम्बन्धी और लेखन सम्बन्धी कार्यों को बड़ी गम्भीरता से करेगा, मज़बूत हृदय वाला परन्तु नर्म स्वभाव होने के कारण कमज़ोर समझा जाता है। द्विस्वभाव होने से एक ही समय पर एक से अधिक कार्य शुरू करने की प्रवृत्ति रहेगी, अपने कार्य-क्षेत्र (व्यवसाय) में प्राय: परिवर्तन करता रहता है तथा प्राय: अपने परिश्रम, बुद्धि एवं चातुर्य के बल पर जीवन में सफलता प्राप्त कर लेगा। नए-नए मित्र बनाने में कुशल, बातचीत करने की कला में निपुण होगा। क्रय-विक्रय, पुस्तक-लेखन, लेखाकार (Accounts), बैंक, वकालत, अध्यापन, इंजीनियरिंग, कल-पुर्जों के कार्य-व्यवसाय में सफलता प्राप्त हो सकती है। **शुभ नग पन्ना है, स्त्रियों के लिए पुखराज** भी अच्छा होगा। भाग्योदयकारक वर्ष २२, ३२, ३५, ३६, ४२ वें होंगे।

कर्क लग्न–कर्क लग्न (राशि) का स्वामी चन्द्रमा है। जल तत्त्व प्रधान एवं चर राशि होने से जातक सुन्दर एवं आकर्षक मुखाकृति, गोल चेहरा और मध्यम कद होगा। **चन्द्र-मंगल** शुभ हो तो जातक बुद्धिमान, संवेदनशील, भावुकहृदय, नयायप्रिय व दयालु स्वभाव वाला होगा। सामान्यत: परिवर्तनशील स्वभाव, चंचल, जलीय वस्तुओं (Liquids) का प्रिय, उच्च कल्पनाशील, समयानुकूल काम निकालने में कुशल, मिलनसार प्रकृति होगी। यदि चन्द्रमा अशुभ हो तो चिड़चिड़ा स्वभाव, वातावरण से शीघ्र प्रभावित होने वाला होगा। प्राकृतिक सौन्दर्य, कला-संगीत व साहित्य में विशेष रुचि रखे तथा सौन्दर्यानुभूति भी विशेष रूप से रहे। ऐसा जातक परिस्थितिनुसार ढल जाने वाला, प्यार सम्बन्धों में सच्चा, ईमानदार और सहृदय दयालु प्रकृति का होगा। ऐसा जातक दिल से जिस काम को करना चाहे कर ही लेता है। कल्पना (विचार) शक्ति प्रबल होती है, अन्य पुरुष के भावों को शीघ्र समझ लेने की विशेष क्षमता होती है। कर्क राशि वालों को मकर, बृश्चिक, मीन राशि वालों के साथ मित्रता शुभ रहती है। **शुभ** नग **सुच्चा मोती** तथा **सफेद पुखराज** है। भाग्योदयकारक वर्ष २४, २५, २८, ३२, ३६, ४० होंगे।

सिंह लग्न–सिंह लग्न (राशि) का स्वामी सूर्य है। इस लग्न (राशि) में जन्म लेने वाला जातक सुन्दर-पुष्ट शरीर वाला, चौड़ा मस्तक, सुगठित, आकर्षक एवं प्रभावशाली व्यक्तित्व वाला होगा। जातक बुद्धिमान, उद्यमी, कर्मठ, निडर, स्वतन्त्र विचारों वाला, पराक्रमी, व्यवहार कुशल, नीति के अनुसार आचरण करने वाला, उच्चाकांक्षी, खानपान का शौकीन, देश-विदेश में भ्रमण करने वाला, शीघ्र क्रुद्ध हो जाने की प्रकृति होने पर भी अपने बुद्धि-चातुर्य से स्थिति को सम्भाल लेने वाला होगा। छोटी-छोटी एवं मामूली बातों को उपेक्षा की दृष्टि से देखने वाला होगा तथा बड़े-बड़े कामों को भी अपने उद्यम द्वारा पूरा करने से तत्पर हो जाएगा। भाई-बन्धु होने पर भी उनका सुख कम रहता है। उच्चाभिलाषी होने के कारण प्रत्येक कार्य-व्यवसाय को बड़े पैमाने एवं उच्चस्तर पर करना पसन्द करेगा। उच्चस्तरीय, वैभवशाली एवं रईसी जीवन-यापन करने की प्रबल इच्छा रखेंगे जिसके कारण अपनी सीमा से बढ़कर भी खर्च कर डालते हैं। इस लग्न वाले जातक का बाह्य रूप में आकर्षक रूप एवं अच्छा स्वास्थ्य रहता है। **शुभ नग माणिक्य है। सिंह लग्न (राशि) वालों को सूर्य उपासना** करनी चाहिए। भाग्योन्नति वर्ष १६, २२, २४, २६, २८, ३२ होते हैं।

कन्या लग्न–कन्या लग्न (राशि) वाले जातक का मध्यम कद, कोमल शरीर, सुन्दर व आकर्षक आँखें, लम्बी नाक, वाणी तेज़ और बारीक होगी। जातक प्रियभाषी, हर कार्य में सहायक, लज्जाशील प्रकृति, नर्म स्वभाव और नीति के अनुकूल काम करने वाला होगा। कल्पनाशील, सूक्ष्मदर्शी, एवं संवेदनशील (Senstivie) स्वभाव होगा। शान्तचित्त एवं एकान्तप्रिय प्रवृत्ति होगी। परन्तु कठिन एवं विपरीत परिस्थितियों में भी स्वयं को ढालने का सामर्थ्य होगा। एक ही समय पर अनेक यात्राएँ एवं विषयों में पारंगत होने की चेष्टा करेगा। संगीत, कला एवं साहित्य की ओर विशेष दिलचस्पी रखेगा। द्विस्वभाव एवं परिवर्तनशील प्रकृति होने के कारण एक विषय पर चिरकाल तक स्थिर नहीं हो पाता। **बुध-शुक्र** का शुभ योग होने से लेखा-गणित, (Account), संगीत, कला, अध्यापन, लेखन, क्रय-विक्रय आदि की ओर विशेष झुकाव रहेगा तथा सफलता भी होगी। धन की अपेक्षा बौद्धिक कार्यों में विशेष रुचि रहती है। बुद्धिमान, तीव्र स्मरणशक्ति एवं अध्ययनशील प्रकृति होगी। **शुभ नग पन्ना** है। भाग्योन्नतिकारक वर्ष २५, ३२ तथा ३५, ३६, ४२ वें वर्ष होते हैं.

होगा। भाग्योदयकारक वर्ष २२, ३२, ३५, ३६, ४२ व होगा।

तुला लग्न–तुला लग्न (राशि) का स्वामी शुक्र है। तुला लग्न (राशि) में उत्पन्न जातक श्वेत व सुन्दर वर्ण, मध्यम अथवा लम्बा कद, सौम्य एवं हंसमुख प्रकृति होगी। जातक/जातिका न्यायप्रिय, हंसमुख, व्यवहारशील एवं नीति के अनुसार कार्य करने में कुशल होगा। ईमानदार, मिलनसार, नए-नए मित्र बनाने में कुशल होगा। सौंदर्यानुभूति विशेष होगी, संगीत, कला, नाट्य की ओर विशेष झुकाव होगा। रहन-सहन का ढंग रईसी एवं प्रभावपूर्ण होगा। जातक पर संगीत का प्रभाव जल्दी होगा। **चन्द्र-शुक्र** शुभ हों, तो मानसिक एवं कल्पनाशक्ति प्रबल होगी, परन्तु मन की केन्द्रीय शक्ति बहुत देर तक नहीं रहती। जब तक किसी कार्य में लगा रहे तब तक दिलोजान और मजबूत दिल से करे, परन्तु अपने विचार व योजना में परिवर्तन करने में भी शीघ्र तैयार हो जाएगा। जातक को देश-विदेशों में अनेक स्थानों पर भ्रमण करने के अवसर प्राप्त होते हैं। बुद्धिमान्, तर्कशील, सावधान एवं सतर्क रहने वाला, मध्यस्थता एवं न्याय करने में कुशल, विपरीत योनि (Sex) के प्रति विशेष झुकाव रखे। इनको **हीरा** (Diamond) अथवा **श्वेत मोती शुभ नग** है जोकि किसी सुयोग्य ज्योतिषी के परामर्शानुसार धारण करने चाहिएं। जीवन के २५, २७, ३२, ३३, ३५ एवं ४७वें वर्ष भाग्य वृद्धिकारक होंगे।

वृश्चिक लग्न–वृश्चिक लग्न (राशि) का स्वामी मंगल है। इस लग्न (राशि) में उत्पन्न जातक सुन्दर मुख वाला, परिश्रमी, अपने सामर्थ्य पर ही भरोसा करने वाला, धार्मिक प्रवृत्ति होगी। **मंगल** शुभ हो तो उत्साही, उदार, परिश्रमी, साहसी, ईमानदार, स्पष्टवादी, परोपकारी, व्यवहार-कुशल, कर्त्तव्यनिष्ठ, दृढ़ संकल्प शक्ति वाला होगा। भाई बहनों अथवा सम्बन्धियों की सहायता कम मिलती है, निजी पुरुषार्थ द्वारा ही निर्वाह योग्य आय के संसाधन जुटा पाते हैं। तनिक विरुद्ध बात हो जाने पर शीघ्र उत्तेजित हो जाएंगे, परन्तु सच्चाई अथवा सुपात्रता की दृष्टि से सुयोग्य जन की सहायता करने में अपने स्वार्थ की भी बलि देने से पीछे नहीं हटेंगे। जातक जिस कार्य को करने का निश्चय कर लेता है, उसे दृढ़तापूर्वक पालन करने का प्रयास करता है। कैमिस्ट, इंजीनियर, वकील, पुलिस, सेना विभाग, अध्यापन, ज्योतिष, अनुसंधानकर्त्ता के क्षेत्र में विशेष सफलता प्राप्त करेंगे। **शुभ नग मूँगा** है। शुभ रंग लाल, संतरी, पीला, हल्का गुलाबी (Pink) है। अपनी आयु के २४, २८, ३२, ३६, ४४वें वर्ष विशेष भाग्योन्नति कारक होंगे।

धनु लग्न–धनु लग्न (राशि) का स्वामी गुरु है। इस लग्न (राशि) में उत्पन्न जातक का ऊँचा मस्तक, कान बड़े, लग्न भाव में क्रूर ग्रह होने की स्थिति में सिर मध्य अल्पबाल अथवा गंजा हो सकता है। **गुरु-बुध** की स्थिति शुभ हो तो सौम्य एवं शान्त, सरल स्वभाव, धार्मिक प्रकृत्ति, उदार हृदय, परोपकारी, संवेदनशील, करुणा-दया आदि भावनाओं से युक्त होगा। दूसरों के मनोभावों को जान लेने की विशेष क्षमता होगी, इस लग्न (राशि) प्रभावित व्यक्ति में बौद्धिक एवं मानसिक शक्ति की प्रबलता के साथ-साथ अश्व जैसी तीव्रता, उत्साह एवं उत्तेजना से कार्य करने की क्षमता होगी। द्विस्वभाव राशि के कारण शीघ्र कोई निर्णय नहीं ले पाएं और इनको क्रोध जल्दी नहीं आता, परन्तु जब आता है तो देर तक क्रोधित रहते हैं। अग्नि तत्त्व प्रधान होने के कारण कठिन से कठिन समस्याओं को अपने सब, साहस एवं परिश्रम के द्वारा सुलझा लेंगे तथा निजी पुरुषार्थ द्वारा जीवन के हर क्षेत्र में उन्नति करने वाला, धन, सम्पदा, भूमि-जायदाद व सवारी आदि सुखों को प्राप्त करने में सफल होगा। **मंगल-गुरु** शुभ हो तो उच्च व्यवसायिक विद्या के योग है। शिक्षक, धर्म-प्रचारक, राजनीतिक, वैद्य-डॉक्टर, वकील, पुस्तक व्यवसाय आदि के क्षेत्र में सफलता प्राप्त होगी। **शुभ नग पुखराज** है। अपनी आयु के २३, २७, ३२, ३६वें वर्ष विशेष भाग्योन्नति कारक होंगे।

मकर लग्न–मकर लग्न (राशि) का स्वामी शनि है। इस लग्न (राशि) में जन्म लेने वाले जातक का मध्यम कद, नयन नक्श तीखे, सुन्दर मुखाकृति, काले घने बाल एवं पतली कमर वाला होगा। जातक गम्भीर, भावुक, हृदय, संवेदनशील, उच्चाभिलाषी, सेवाधर्मी, मननशील एवं धार्मिक प्रवृत्ति वाला होगा। बुध व शुक्र शुभ होने पर व्यवहार-कुशल, गहन विचार एवं सूक्ष्म विश्लेषण के पश्चात् ही महत्त्वपूर्ण निर्णय लेते है। क्षमाशील प्रायः कम होते हैं तथा इन्हें बदले एवं शत्रुता की भावना भुला पाना अत्यन्त कठिन होता है। चर राशि एवं लग्न होने से जातक की मानसिक एवं आत्मिक शक्ति प्रबल होगी। **गुरु-शनि** शुभ हो तो, जातक नर्म स्वभाव (विनम्र), विनयशील, व्यवहार-कुशल, नीति के अनुकूल आचरण करने वाला, तर्कशील, भली-बुरी बात की पहचान करने में कुशल, विश्वसनीय, मित्रता स्थापित करने में अत्यन्त सावधान (Selective) तथा ईमानदार होंगे। तर्क-वितर्क करने में कुशल, अपने विरुद्ध बात को हृदय से भुला पाना कठिन होता है। खांसी तथा वायु रोग से सावधानी बरतें। **शुभ नग नीलम** है। भाग्योन्नति वर्ष २२, २४, २८ एवं ३२, ४६ होते हैं।

कुम्भ लग्न–लग्नेश (राशिपति) शनि शुभ अवस्था में हो तो जातक मध्यम अथवा ऊँचे कद वाला, सुन्दर प्रभावशाली व्यक्तित्त्व होगा। बुद्धिमान, साधन सम्पन्न, तीव्र स्मरण शक्ति एवं गम्भीर प्रकृत्ति वाला होगा। दूसरों के प्रति दयाभाव रखने वाला, परोपकारी मित्रों एवं सगे-सम्बन्धियों के लिए हर प्रकार से सहायक होगा। व्यावहार कुशल, मिलनसार, स्पष्टवादी एवं निस्वार्थ भाव से सेवा करने में तत्पर होगा। जातक स्वाभिमानी, स्वतन्त्रताप्रिय एवं नए-नए मित्र बनाने में भी पीछे नहीं हटेगा। उद्योगी, उद्यमी, परिश्रमी प्रकृति एवं प्रबन्धात्मक योग्यता विशेष होगी एवं उपयुक्त साधन उपलब्ध होने पर देश-विदेशों में जाने के सुअवसर प्राप्त होंगे। महत्त्वकांक्षी होते हुए भी क्रियात्मक दृष्टिकोण रखेंगे तथा अनेक विघ्न-बाधाओं व कठिनाइयों के होने पर भी जीवन में उच्च स्थिति, धन पदादि प्राप्त करने में सफल होंगे। कुम्भ लग्न मे यदि गुरु मित्र क्षेत्री या शुभ में हो तो जातक उच्चाधिकारी, उच्चपदासीन, क्रय-विक्रय, प्रोफेसर, जज-वकील अथवा उच्च एवं धनी-व्यापारी होगा, प्रारम्भिक जीवन में आर्थिक क्षेत्र में विशेष संघर्ष होगा। आर्थिक क्षेत्र में विशेष संघर्ष व कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा। **शुभ नग नीलम** है। **स्त्रियों के लिए पुखराज नग शुभ** होगा।

मीन लग्न–मीन लग्न (राशि) का स्वामी गुरु है। मीन लग्न (राशि) में उत्पन्न जातक बुद्धिमान्, गम्भीर एवं सौम्य प्रकृति, परोपकारी कार्य करने में तत्पर, ईमानदार, सत्यप्रिय, धार्मिक, धर्म-कर्म एवं फिलास्फी, साहित्य एवं गूढ़ विद्याओं की ओर विशेष अभिरुचि रखेगा। उच्चाभिलाषी, उच्चाकांक्षी एवं स्वाभिमानी प्रकृति, अपनी मान-मर्यादा एवं प्रतिष्ठा का विशेष ध्यान रखें। सेवाभाव रखने वाला, तीव्र बुद्धि, परिश्रमी, उद्यमी, दूरदर्शी, व्यवहार कुशल एवं नीति के अनुसार आचरण करने वाला, विश्वसनीय, ईमानदार तथा हर प्रकार से मित्रों एवं सगे-सम्बन्धियों के लिए सहायक होगा। परिस्थितियों के अनुसार स्वयं को ढाल लेने की अपूर्व क्षमता होगी। देव तुल्य प्रकृति होती है। दूसरों पर न तो अन्याय करेंगे न ही किसी भान्ति अन्याय को सहन करेंगे। जातक कलाकार, चल-चित्र, व्यवसाय, खाने-पीने की वस्तुओं से सम्बन्धित, समाज सुधारक, अध्यापन सम्बन्धी कार्यों में सफल होते हैं। **शुभ नग पुखराज** है। शुभ वैवाहिक जीवन के लिए **पन्ना रत्न** धारण करें। भाग्योन्नतिकारक वर्ष २४, २८, ३३, ३८, ४५ वर्ष होते हैं।

ज्योतिष तत्त्व–(लेखक पं. पन्ना लाल ज्योतिषी) इसमें भारतीय ज्योतिष के प्रारम्भिक इतिहास से लेकर ज्योतिष सम्बन्धी प्रारम्भिक ज्ञान–सम्पूर्ण बड़ी जन्म पत्री निर्माण शैली, ग्रहों के सप्तवर्गी बलाबल निकालना। भावों, राशियों एवं ग्रहों तथा फलादेश सम्बन्धी मूलभूत सिद्धान्तों को अत्यन्त सरल शैली में प्रस्तुत किया गया है। नवीन संशोधित संस्करण (मूल्य 150 रुपये)

वर्षफल चन्द्रिका–(नवीन संशोधित संस्करण) इसमें अब प्राचीन सूर्य सिद्धान्तीय वर्ष सारणी के अतिरिक्त नवीन वेध सिद्ध सारिणी का भी समावेश किया गया है। जातक फल, प्रश्नफल एवं गोचर फल कथन की विशेष रीतियों का विशद वर्णन किया गया है। इसके अतिरिक्त वर्षफल बनाने और वर्ष भर की सटीक फलादेश कहने के लिए उत्तम पुस्तक है। **(मूल्य 150 रुपये)**

ज्योतिष तत्त्व फलित (दो खण्डों में) द्वादश लग्नों में ग्रहों के राशिगत एवं भाव सम्बन्धी विस्तृत फलादेश दिए गए हैं। विशोंत्तरी दशाओं के फलादेश, दो-तीन-चतुर्ग्रही एवं पंचग्रही योगों के फल इत्यादि अनेक विषयों का समावेश किया गया है। इन दो खण्डों के पास होने से आप एक सफल ज्योतिषी बन सकते हैं। **(मूल्य 300 रु.प्रत्येक)**

पुस्तकों के महासागर में से मोती रूप पुस्तकें वी. पी. द्वारा मंगवाएँ

कुछ उपयोगी ग्रन्थ

श्रीमद्देवी भागवत पुराण	301/-
श्री विष्णु पुराण	300/-
श्री विश्वकर्मा महापुराण	300/-
धर्मसिन्धु (भाषा टीका)	500/-
निर्णयसिन्धु (भाषा टीका)	1200/-
निर्णयसिन्धु (भा.टी.)	800/-
कर्मठगुरु (भा.टी.)	**450/-**
मंत्र महोदधि	750/-
षोडश संस्कार रहस्य	190/-
मन्त्र सागर	180/-
योग वशिष्ठ महारामायण	300/-
सामुद्रिक शास्त्र (दो भाग)	660/-
विशाल भृगु संहिता	360/-
चन्द्र हस्त विज्ञान	**395/-**
विवाहपद्धति देवीदयालु	**90/-**
दुर्गा सप्तशती (भा. टी.)	**80/-**
सूर्य पुराण भाषा	300/-
रामायण तर्ज राधेश्याम	250/-
दुर्गार्चन रहस्यम्	200/-
श्रीगणेश महापुराण	300/-
मनुस्मृति	200/-
देवी-देवता सिद्धि	125/-
भजन सरोवर	150/-
शिव मंत्रावली	180/-

चारों वेद (भा.टी.)

ऋग्वेद-4 खण्डों में, यजुर्वेद-1 खण्ड, अर्थववेद-2 खण्ड, सामवेद-1 खण्ड में उपलब्ध हैं जिसमें संस्कृत भाषा के साथ हिन्दी में भी विस्तार से समझाया गया है। जिसे प्रत्येक भारतीय को अवश्य पढ़ना चाहिए। आज ही मंगवाएँ। मूल्य **सम्पूर्ण सैट-1600 रु.। सम्पूर्ण चार भाग (केवल हिन्दी भाषा) 600 रु.**

सम्पूर्ण 'कार्तिक माहात्म्य'

पं. पन्ना लाल ज्यो. द्वारा संकलित प्रस्तुत पुस्तक में कार्तिक मास में व्रत, स्नान, पूजन आदि के विशेष नियम, तुलसी एवं श्रीगङ्गा की उत्पत्ति, तुलसी, आँवला, पीपल, करवा-चौथ, अहोई व्रत तथा कार्तिक मास में दीप दान एवं मार्जन का महत्त्व, मुख्य पर्वों जैसे-एकादशी, धन, त्र्योदशी, दीपावली, अन्नकूट, भाई-दूज, भीष्मपंचक, कार्तिक व्रत उद्यापन, तुलसी विवाह विधि, तुलसी स्तोत्र एवं आरती और भगवान की आरतियां संग्रहीत हैं। **(हिन्दी) मूल्य-50 रु.**

चिकित्सा सम्बन्धी पुस्तकें

एलोपैथिक चिकि. (कोकचा)	500 रु.
वृहद् होम्योपैथिक चिकित्सा	500 रु.
अमृतसागर	200 रुपए
माधवनिदान	200 रुपए
स्वदेशी चिकित्सा सार	125 रुपए
घर का वैद्य	100 रुपए
रसराज महोदधि	300 रुपए
आयुर्वेदिक गाईड	360 रुपए
अनुपम आयुर्वेदिक गाईड	200 रुपए
एलोपैथिक मैडी. गाईड	350 रुपए
होम्योपैथी द्वारा ईलाज	150 रुपए
योगासन एवं साधना	100 रुपए
वृहद् बूटी प्रचार	150 रुपए
जड़ी-बूटियाँ	200 रुपए
आयुर्वेद सार संग्रह (वैद्यनाथ)	320 रु.
ईलाजुलगुर्बा	120 रु.
दादी माँ के नुस्खे	100 रु.
भोजन द्वारा चिकित्सा	100 रु.
महत्त्वपूर्ण जड़ी-बूटियां	300 रु.
रसेन्द्र सार संग्रह	295 रु.
आयुर्वेदिक पेटेण्ट चिकित्सा	150 रु.
होम्योपैथिक चिकित्सा	120 रु.
भावप्रकाश निघन्टु	195 रु.
घरेलू इलाज	100 रु.
चरक संहिता (सम्पूर्ण)	600 रु.
आयुर्वेद भास्कर	350 रु.
योगासन व स्वास्थ्य	100 रु.

यन्त्र-मन्त्र-तन्त्र

काली किताब	650 रु.
काली किताब (छोटी)	300 रु.
महाइन्द्रजाल	600 रु.
असली प्राचीन इन्द्रजाल	200 रु.
शाबर मंत्र विद्या	120 रु.
तंत्र-मंत्र-यंत्र रहस्य	300 रु.
यंत्र-मंत्र-तंत्र महाशास्त्र	1000 रु.
काला ईल्म	120 रु.
इस्लामी तंत्र शास्त्र	125 रु.
हिन्दू तंत्र शास्त्र	120 रु.
श्री दुर्गा साधना तंत्र	150 रु.
भारतीय तंत्र विद्या	250 रु.
अनुभूत यंत्र तंत्र ओर टोटके	150 रु.
बगुलामुखी रहस्यम्	125 रु.
कालिका सिद्धि	150 रु.
सिद्ध शावर मन्त्र	150 रु.
तांत्रिक सिद्धियां	100 रु.
काली तंत्र शास्त्र	100 रु.
तारा तन्त्रम्	500 रु.
तांत्रिक मुद्रा विज्ञान	105 रु.
तंत्र विद्या के अद्भुत प्रयोग	80 रु.
यंत्र-मंत्र-तंत्र टोटके	100 रु.
छिन्नमस्तका तंत्र शास्त्र	125 रु.
ब्रह्मास्त्र विद्या व बगुलामुखी साधना	800 रु.
महाकाल संहिता	600 रु.
11000 गंडे ताबीज और टोटके	300 रु.
महाशक्तिशाली टोने टोटके	300 रु.
मंत्र रहस्य	120 रु.
यंत्र विधान	280 रु.
यंत्र विद्या के 121 प्रयोग	200 रु.
धन प्रदायक साधनाएं	100 रु.
श्री यन्त्रम् महिमा	100 रु.
मनोकामना सिद्धि	80 रु.
वशीकरण सिद्धियां, साधना	120 रु.
चीन बंगाल का जादू	60 रु.
सूर्य तन्त्रम्	70 रु.
कामाख्या उपासना	250 रु.
रुद्रायमल तंत्र (बड़ा)	200 रु.
परमसिद्ध 121 चमत्कारी यन्त्र	100 रु.

कर्मकाण्ड सम्बन्धी पुस्तकें

गण्डमूल नक्षत्र शांति प्रयोग	75 रु.
कार्तिक स्त्री प्रसूता शांति	40 रु.
जन्मदिन पूजा पद्धति	40 रु.
कर्मकाण्ड प्रदीप:	175 रु.
विवाह पद्धति	90 रु.
शिवरात्रि व्रत कथा (भा. टी.)	40 रु.
पौरोहित्यक कर्म-विधि	350 रु.
दुर्गा सप्तशती (भा. टी.)	85 रु.
नित्यपूजा (क्यों और कैसे ?)	150 रु.
कर्मकाण्ड भास्कर	225 रु.
कर्मकाण्ड भारती	250 रु.
पूजा रहस्यम्	100 रु.
पूजा भास्कर	120 रु.
हवन रहस्यम्	150 रु.
नवग्रह पूजा विधान (नवग्रह उपायों सहित)	40 रु.
नित्यकर्म व देवपूजा पद्धति	120 रु.
रुद्राष्टाध्यायी भा. टी.	90 रु.
श्रीसूक्तम् व कनकधारा	30 रु.
सन्तान गोपाल स्तोत्र	25 रु.
गरुड़ पुराण (भाषा टीका)	150 रु.
गरुड़ पुराण (भाषा) बड़ा	220 रु.
षोडश संस्कार रहस्य	190 रु.
श्राद्ध विवेक	200 रु.
नित्यकर्म पद्धति	150 रु.
कर्मठगुरु [भा.टी.]	450 रु.
सर्वदेव प्रतिष्ठा प्रकाश	350 रु.
सम्पूर्ण हवन विधि	150 रु.
वशिष्ठी हवन पद्धति	50 रु.
आदित्य हृदय स्तोत्र (भा.टी.)	30 रु.
अन्त्येष्टि कर्म रहस्यम्	80 रु.
सर्व व्रतोद्यापन रहस्यम्	200 रु.
नित्यकर्म पूजा प्रकाश	200 रु.
दुर्गार्चन पद्धति	200 रु.

शिवरात्रि व्रत कथा (भा.टी.)

शिवरात्रि पूजन कैसे करें ?

श्रीमहाशिवरात्रि का व्रत सब व्रतों में उत्तम एवं कल्याणकारी है। जैसे गंगा जी के समान कोई तीर्थ नहीं है। भगवान् शंकर के समान कोई दूसरा देवता नहीं है तथा शिवरात्रि से बढ़कर दूसरा कोई व्रत एवं तप नहीं है।

व्याख्याकार पं. पन्ना लाल द्वारा प्रणीत इस महाशिवरात्रि व्रत कथा में **माहात्म्य, आध्यात्मिक रहस्य** एवं **सम्पूर्ण पूजन विधि**, उद्यापन, व्रत कथा, रुद्राष्टक, शिव पंचाक्षर, शिव चालीसा, शिव षड्क्षर स्तोत्र, शिवमानस पूजा, आरती सहित बहुत सरल एवं सुबोधगम्य ढंग से प्रस्तुत की गई है जिससे शिव भगत स्वयं शिवरात्रि पूजन कर पुण्य लाभ ले सकें।

पुस्तक खरीदते समय व्याख्याकार **पं. पन्ना लाल ज्योतिषी** का नाम तथा **जनरल बुक डिपो** का पता अवश्य देख लें। अथवा सीधे वी.पी.पी. द्वारा मंगवाएं। **मूल्य 40/-** (डाक व्यय अलग)

अपने आर्डर केसाथ 100/-रु. पेशगी अवश्य भेजें। वी.पी. द्वारा मंगवाने का पता-

जनरल बुक डिपो

अड्डा होशियारपुर, जालन्धर
शहर। फोन-2457959

'पं. देवी दयालु' संस्थान के कुछ अमूल्य प्रकाशन

''सुतभाव प्रकाश''

(अर्थात् ज्योतिष एवं सन्तान-योग)-पं. पन्ना लाल ज्योतिषी

भारतीय समाज में पुत्र जन्म को एक उत्सव के रूप में ग्रहण किया जाता है। भारतीय धर्म मान्यताओं के अनुसार देव-ऋषि, पितृ आदि ऋणों से मुक्ति हेतु तथा वंश परम्परा को चलाने के लिए पुत्रोत्पत्ति आवश्यक मानी जाती है। पुत्र प्राप्ति के लिए हमारे प्राचीन ज्योतिष एवं आयुर्वेदाचार्यों ने अपने आवश्यक-नियमों एवं उपायों का वर्णन किया है, जिनका उल्लेख पुस्तक के भीतर किया गया है, जैसे-**वृतोवासों द्वारा पुत्र सन्तति प्राप्त करना, मन्त्र जाप से पुत्र प्राप्ति,** जपनीय मंत्र, **श्री दुर्गासप्तशती पाठ** से पुत्र सन्तति सुख, **पितृ-मातृ आदिशाप** की शान्ति एवं **कालसर्प** आदि दोषों के लिए उपाय, गर्भदोष निवारक उपाय, **हरिवंश, भागवतादि सद्ग्रंथों के पाठ से पुत्र लाभ,** यन्त्र धारण द्वारा एवं जड़ी/बूटी धारण एवं स्नान से संतान सुख तथा स्तोत्र पाठ से पुत्र संतान सुख लाभ होने की विधि लिखी गई है। आशा है हमारे द्वारा उल्लिखित शास्त्रीय उपाय ज़रूरतमंद दम्पत्तियों तथा ज्योतिषीयों के लिए लाभप्रद होंगे। मूल्य-135/- रु.

गण्डमूल नक्षत्र शान्ति प्रयोग (भा.टी.)

व्याख्याकार :-पं. पन्ना लाल ज्यो.

गण्डमूल नक्षत्रों की शान्ति करवाने का प्रचलन प्राचीनकाल से ही चला आ रहा है। फलित दृष्टि से भी ज्येष्ठा, मूलादि गण्डमूलक षड्-नक्षत्रों के अरिष्ट प्रभाव का उल्लेख फलित ग्रन्थों में सर्वत्र मिलता है।

अश्विनी, आश्लेषा, मघा, ज्येष्ठा-मूल एवं रेवती-सभी छः गण्डमूलक नक्षत्रों पर छपी अत्यन्त उपयोगी पुस्तक जिसमें नक्षत्र, ग्रहों के आवाहन, पूजन, हवन, दान आदि की व्याख्या शास्त्र विधि-विधान के साथ एवं हिन्दी व्याख्या सहित दी गई है। गण्डमूल के सभी छः नक्षत्रों पर ऐसी उपयोगी पुस्तक पहिले आपने नहीं देखी होगी। कर्मकाण्डी पण्डितों एवं नव-विद्यार्थियों के लिए अत्यन्त लाभदायक पुस्तक है।

मूल्य 75 रुपये।

शिव-मन्त्रावली

लेखक--पं. पन्ना लाल ज्योतिषी

(भगवान् शिव व अन्य प्रमुख देवी-देवताओं के मन्त्र-यन्त्रादि साधना में दुर्लभ पुस्तक)

अनेक वर्षों से दुर्लभ एवं अप्राप्य शिव-मन्त्रावली नामक पुस्तक अब हमारे कार्यालय से छपकर तैयार है। इसमें
भगवान् शिव तथा अन्य देवी--देवताओं से सम्बन्धित अनेक प्राचीन एवं दुर्लभ मन्त्रों का विनियोग सहित वर्णन तथा उन्हें
सिद्ध करने की विधियां दी गई हैं। मन्त्र-जपानुष्ठान के अतिरिक्त मन्त्र शास्त्र का सैद्धान्तिक एवं शास्त्रीय विवेचन भी
दिया गया है, जिसके अन्तर्गत शिवलिङ्ग प्राकट्य, सृष्टिक्रम का रहस्य, कुण्डलिनी आदि षड्चक्रों का ज्ञान, भगवान्
शिव का सत्यं, शिवं-सुन्दरम् स्वरूप तथा शिव-शक्ति का रूप, कलियुग में शिव नाम का महत्त्व, मन्त्रानुष्ठान के शुभ
मुहूर्त, मन्त्र सिद्धि न होने के कारण, मन्त्र उत्कीलन स्तोत्र, ईश्वर में श्रद्धा और प्रेम रखना, नाम राशि व मन्त्र राशि
में अनुकूलता, मन्त्रों के दस संस्कार, मन्त्र-जप सम्बन्धी आवश्यक सावधानियाँ, जप--पूजन में प्राणायाम का महत्त्व,
शिवलिङ्ग एवं शिव पूजन विधान, जपादि अनुष्ठान में विभिन्न मालाओं का प्रयोग, रुद्राक्ष का महत्त्व, भगवान् शिव के
विविध कल्याणकारी मन्त्र, महामृत्युञ्जय मन्त्रों एवं यन्त्रों के विभिन्न स्वरूप, मन्त्र हवन प्रयोग, मन्त्रों में विनियोग,
अङ्गन्यास आदि का महत्त्व, बीजाक्षरों का महत्त्व, पूजन में मुद्राओं का प्रयोग, उपांशु, मानस आदि जप का महत्त्व,
वशीकरण, यक्षिणी--सिद्धि प्रयोग, यन्त्र रचना एवं प्राण प्रतिष्ठा, भगवान् शिव के रहस्यपूर्ण प्रतीक चिह्न, जैसे--
अर्धनारीश्वर रूप, गङ्गा, त्रिनेत्र, त्रिशूल, सर्प, डमरू आदि। मूल्य 180/-

अनिष्ट ग्रहों के चमत्कारी उपाय एवं टोटके

(उपायों सम्बन्धी प्रामाणिक पुस्तक)

लेखक-पं. पन्ना लाल ज्योतिषी

प्रस्तुत पुस्तक में व्रत-धारण, मंत्र-यन्त्र प्रयोग, दुर्लभ स्तोत्र, ग्रह राशि अनुसार उपयुक्त रत्न, जड़ी-बूटी धारण विधि, सरल विधियां दी गई हैं। इसके अतिरिक्त ग्रहों, नक्षत्रों एवं राशियों से सम्बन्धी ज्योतिष की प्रारम्भिक जानकारी, ग्रहों की शुभाशुभ स्थिति का निर्णय, लड़के/लड़की के विवाह में विलम्ब के कारण व उपाय, **मंगलीक दोष, कालसर्प योग,** संतान में बाधाकारक योग, पितृदोष योग, विदेश यात्रा आदि योगों में विघ्न एवं उनके **शास्त्रसम्मत** उपाय व दुर्लभ स्तोत्रों का विवरण दिया गया है जोकि उपरोक्त दोषों के लिए विशिष्ट, शास्त्रसम्मत एवं अचूक उपाय माने जाते हैं। इस पुस्तक में ज्योतिष जगत में चर्चित 'लालकिताब' के अनुसार विशेष उपायों का भी समावेश किया गया है। ज्योतिष में रुचि रखने वाले, विद्यार्थियों, ज्योतिषियों एवं कर्मकाण्डी पण्डितों के लिए उपयोगी सिद्ध होगी। मूल्य 200 रु.

जन्मदिन पूजा पद्धति

(जन्मदिन संस्कार सम्बन्धी शास्त्र प्रामाणिक उपयोगी पुस्तक)

इस पुस्तक में जन्मदिन पूजन का शास्त्रीय विधान, प्रातः स्मरणीय मंत्र, औषधि-स्नान, स्वस्तीवाचन, श्रीगणेश-अम्बिका, षोडश मातृकाएँ, नवग्रह शान्ति, कलश-पूजन, सप्तर्षि-अष्टचिरंजीवी एवं षष्ठी देवी पूजन और षष्ठी देवी महिमा कथासार, षष्ठीदेवी स्तोत्र तथा संक्षिप्त हवन प्रक्रिया दी गई है। मूल्य 40 रु.

श्री दुर्गा सप्तशती (हिन्दी भाषा में)

श्री दुर्गासप्तशती मात्र धर्मग्रन्थ ही नहीं, बल्कि एक सिद्ध ग्रंथ है। पं. पन्ना लाल ज्योतिषी द्वारा प्रणीत श्री दुर्गा-सप्तशती के प्रस्तुत सरल हिन्दी संस्करण में अनेक उपयोगी विषयों का समावेश किया गया है। इस पुस्तक में श्री दुर्गा यन्त्र, संक्षिप्त पाठ एवं संकल्प विधि, श्रीदेवी कवच, श्री अर्गलास्तोत्र, श्री कीलक स्तोत्र, रात्रिसूक्त, नवार्णमन्त्र, 13 पाठ अध्याय, श्री चण्डी पूजा एवं स्तोत्र, एवं आरतियों सहित वर्णन किया है।

ध्यान रहे-बिना संकल्प विधि के किया जप-पाठ एवं कोई भी अनुष्ठान पूर्ण फल नहीं देता। मार्कीट में बिकने वाली अधिकांश हिन्दी भाषी सप्तशतियों में संकल्पविधि, पूजन विधि आदि आवश्यक विषयों का अभाव मिलता है। श्रद्धापूर्वक सही विधि द्वारा श्री दुर्गा जी के चरित्रों का विधिपूर्वक पाठ करने से मनुष्यों के पाप नष्ट होकर उन्हें धन-धान्य, सौभाग्यादि की प्राप्ति एवं मनोवांछित कामनाओं की सहज पूर्ति होती है। **भेंट-100 रु०**

नोट-आज ही स्थानीय पुस्तक विक्रेता से खरीदें अथवा पत्र लिखकर वी.पी. द्वारा मंगवाकर एवं पाठ कर लाभान्वित हों।

पता-जनरल बुक डिपो

अड्डा होशियारपुर, जालन्धर शहर।
फोन--0181-2457959

ज्योतिष सम्बन्धी प्रामाणिक पुस्तकें वी० पी० द्वारा मंगवाएँ

पं० देवी दयालु ज्यो०, जालन्धर द्वारा प्रकाशित पुस्तकें

श्री अर्द्धशताब्दी पंचांग	900 रु.
श्रीदशवर्षीय पंचांग (1994-04 ई.)	250 रु.
दशवर्षीय पंचांग (2004-14 ई.)	400 रु.
मुफीद आलम जन्त्री (हिन्दी-उर्दू-पंजाबी)	85 रु.
वर्षफल चन्द्रिका	110 रु.
ज्योतिष तत्त्व (गणित खंड)	150 रु.
ज्यो. तत्व (फलित खण्ड-I)	300 रु.
ज्यो. तत्व (फलित खण्ड-II)	300 रु.
सुतभाव (सन्तान) प्रकाश	135 रु.
शिव मन्त्रावली	180 रु.
अनिष्ट ग्रहों के चमत्कारी उपाय-टोटके	200 रु.
विवाह पद्धति	90 रु.
दुर्गा सप्तशती (हिन्दी-भाषा)	100 रु.
श्री दुर्गासप्तशती (भा.टी.)	85 रु.
गण्डमूल शान्ति प्रयोग	75 रु.
कार्तिक स्त्री प्रसूता शान्ति	40 रु.
नवग्रह पूजा विधान	40 रु.
जन्मदिन पूजा पद्धति	40 रु.
श्री सूक्तम्-कनकधारा स्तोत्र भा.टी.	30 रु.
कार्तिक माहात्म्य (भाषा)	40 रु.
55 चालीसा आरती संग्रह(जिल्द)	70 रु.
लघु पंचांग दिवाकर	35 रु.
शिवरात्रि व्रत कथा-भा.टी.	40 रु.
षड्वर्गीय जन्मपत्रिका (28 पृ.)	14 रु.
जन्माङ्ग पत्रिका (16 पृ.)	10 रु.
जन्माङ्ग पत्रिका (12 पृ.)	10 रु.
टेवा फार्म छपा/प्लेन	180 रु. सैंकड़ा
ज्यो० ज्ञान शास्त्र (पंजाबी)	100 रु.
लाल किताब (पंजाबी)	120 रु.
फलित ज्योतिष (पंजाबी)	400 रु.
राशिफल सन् 2020 ई. (पृष्ठ 295 भी देखें।)	60 रु.

अन्य प्रकाशनों की ज्योतिष सम्बन्धी प्रामाणिक पुस्तकें

योग-पारिजात (धन योग)	400 रु.
योग-पारिजात (भाग्य योग)	450 रु.
योग-पारिजात (राज-योग)	450 रु.
योग-पारिजात (अनुपम योग)	450 रु.
गणेश होरा शास्त्रम्	500 रु.
राशिफल विचार	160 रु.
परमायु दशा	150 रु.
आयु आकलन	500 रु.
आयु निर्णय	120 रु.
शनि-साढ़ेसति से छुटकारा	80 रु.
मंगलीक योग-भ्रान्ति निदान	135 रु.
पुत्रेष्टि अनुष्ठान	495 रु.
ज्यो. और रोग (2 भाग)	300 रु.
षड्वर्ग फलम्	200 रु.
भारतीय ज्यो.-नेमिचंद शास्त्री	420 रु.
भृगु संहिता	360 रु.
बुद्धि विद्या विचार	400 रु.
भावफल विचार (2 भाग)	300 रु.
षड्बल रहस्य	120 रु.
आजीविका विचार (2 भाग)	500 रु.
जैमिनी ज्योतिष	150 रु.
राहु-केतु	180 रु.
ज्योतिष और दाम्पत्य जीवन	200 रु.
उत्तर-कालामृत	300 रु.
फलित सूत्रम्	250 रु.
प्रश्न दर्पण	120 रु.
प्रश्न रहस्य	120 रु.
नक्षत्रफल	250 रु.
अष्टकवर्ग सिद्धान्त-प्रयोग	120 रु.
ज्यो. में नवांश का महत्त्व	300 रु.
भावार्थ रत्नाकर	180 रु.
सत्यजातकम्	180 रु.
ग्रह-युति फल दर्पण	280 रु.
गोचर फल विचार	130 रु.
गोचर फल दर्पण	175 रु.

शनि संहिता	400 रु.
दीपावली एवं महालक्ष्मी पूजन	120 रु.
विवाह एवं सन्तान	350 रु.
वैवाहिक सुख में शनि प्रमुख	400 रु.
जातक सारावली (प्रथम भाव)	400 रु.
जातक सारावली (द्वितीय भाव)	400 रु.
जातक सारावली (सप्तम भाव)	400 रु.
जातक सारावली (दशम भाव)	400 रु.
परिणय निर्णय (वैवाहिक)	400 रु.
परिणय निर्णय (मुहूर्त्त मीमांसा)	400 रु.
परिणय निर्णय (मंगली दोष)	400 रु.
परिणय निर्णय (विवाह समय)	400 रु.
शिशु चिन्तन	450 रु.
कुण्डली मिलान	125 रु.
नक्षत्र विचार	250 रु.
मृत्युंजय मन्त्र संकलन	400 रु.
शनि दशा दिग्दर्शन	180 रु.
मन्त्र मधुबन	350 रु.
मानसागरी	200 रु.
मुहूर्त्त-चिन्तामणि	140 रु.
मुहूर्त्त-मार्त्तण्ड	235 रु.
शक्ति-कुंज	350 रु.
सत्य जातकम्	180 रु.
होरा-रत्नम (2 भाग)	800 रु.
व्याधि-विभावरी	400 रु.
व्याधि-वीथिका	400 रु.
मंगल दशाफलदीपिका	500 रु.
लग्नचन्द्र प्रकाश	495 रु.
सारावली	275 रु.
बृहज्जातकम्	255 रु.
वृद्ध यवनजातकम् (2 भाग)	600 रु.
ग्रहयोग-संक्षेपिका	400 रु.
ज्योतिर्विदाभरणम्	345 रु.
जातक, जीवन और ज्यो.	100 रु.
ज्यो. द्वारा कामना सिद्धि	80 रु.
समृद्धि सुधा	500 रु.

समृद्धि सूत्र (2 भाग)	925 रु.
वृहत्पराशर होराशास्त्र (2 भाग)	800 रु.
जातक पारिजात (2 भाग)	620 रु.
ज्योतिष रत्नाकर	325 रु.
फलदीपिका	245 रु.
मुहूर्त चिन्तामणि (पीयूषधारा)	295 रु.
शनि शमन (दो भाग)	600 रु.
शत्रुशमन	195 रु.
कालसर्प योग कारणनिवारण	300 रु.
ज्योतिष सर्वस्व	300 रु.
केवल ज्ञान प्रश्न चूड़ामणि	100 रु.
काली किताब	650 रु.
काली किताब	300 रु.
लाल किताब (वृहद्)	2500 रु.
लाल किताब (बड़ी)	800 रु.
लाल किताब टोटके व उपाय	150 रु.
रावण संहिता (वृहद्)	2500 रु.
रावण संहिता (बड़ी)	800 रु.
पितृदोष कारण-निवारण	150 रु.
मंगलीदोष कारण-निवारण	150 रु.
जातक निर्णय (दो भाग)	490 रु.
गोचर विचार	100 रु.
जातकालंकार	100 रु.
प्रश्न मार्ग (दो-खण्ड)	400 रु.
शनि दशा फलदीपिका	550 रु.
दशाफल विचार	200 रु.
विंशोत्तरी दशा तरंगिणी	200 रु.
नक्षत्र जातकम्	150 रु.
मेदिनी ज्योतिष	300 रु.
वैदिक उपचारीय ज्यो.	160 रु.
वित्त विचार	350 रु.
मन्त्र मन्दाकिनी	380 रु.
वित्त वृद्धि	300 रु.
व्यावसायिका	450 रु.
व्यवसाय रत्नाकर	450 रु.
व्यवसाय विमर्श	450 रु.

रत्न ज्योतिष	80 रु.
रत्न पहने भाग्य बदलें	100 रु.
रत्न प्रदीप	120 रु.
सम्पूर्ण रत्न विज्ञान	150 रु.
रत्न रुद्राक्ष और भाग्य	250 रु.
रत्नों का रहस्यमय संसार	200 रु.
आपका भाग्यरत्न	80 रु.
अंक विद्या रहस्य	80 रु.
अंकों में छिपा भविष्य	80 रु.
अंकों का अद्भुत संसार	150 रु०
अंक ज्योतिष (कीरो)	100 रु.

वास्तुशास्त्र विज्ञान पर

सम्पूर्ण वास्तुशास्त्र	150 रु.
वास्तुशास्त्रानुसार भवन निर्माण	150 रु.
बिना तोड़-फोड़ वास्तुशास्त्र	125 रु.
रेमिडियल वास्तुशास्त्र	150 रु.
व्यावहारिक वास्तुशास्त्र	100 रु.
वास्तुकला और भवन निर्माण	250 रु.
वास्तुशास्त्र रहस्य	400 रु.
वास्तुशास्त्र रहस्य (2 भाग)	450 रु.
फेंगशुई 151 स्वर्णिम सूत्र	120 रु.
गृह वास्तु संहिता-2 भाग	580 रु.

ज्योतिष की दुर्लभ

"लाल किताब"

(उर्दू भाषा में फोटोस्टेट) असली अब उपलब्ध है। मूल्य 2500 रु. (डाक व्यय सहित)

पुस्तकें मंगवाने का पता :

अग्रिम राशि मनीआर्डर द्वारा भेजना अनिवार्य है।

जनरल बुक डिपो,
अड्डा होशियारपुर चौंक,
जालन्धर शहर (पंजाब)
फोन-0181-2457959

स्थापित
सन्
1875 ई०

सर्वप्राचीन प्रतिष्ठित मशहूर आलम पण्डित देवी दयालु ज्योतिष संस्थान

पंचाँगदिवाकर ज्योतिष कार्यालय के नियम

गौरवमयी वर्ष
प्रवेश
145 वाँ

परम पिता परमात्मा की असीम कृपा से उत्तरी भारत में सर्वप्राचीन एवं सुप्रतिष्ठित मशहूर पण्डित देवी दयालु ज्योतिष संस्थान से छपने वाली सुप्रसिद्ध पंचाँग दिवाकर व मुफीद-आलम जन्त्री, उर्दू, हिन्दी, पंजाबी एवं अन्य ज्योतिष व धार्मिक प्रकाशनों को, पंचाँग प्रवर्त्तक पं० देवी दयाल [illegible] तक की दीर्घावधि में राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर जो ख्याति प्राप्त हुई है, वह हमारे सुविज्ञ पाठकों से छिपी नहीं।

हमारे ज्योतिष कार्यालय में प्रामाणिक जन्मपत्री एवं वर्षफल आदि शुद्ध गणित द्वारा तैयार किए जाते हैं जिससे आप घर बैठे ही अपना भविष्य जान सकते हैं। **ध्यान रहे,** सही फलादेश का आधार वैज्ञानिक ढंग से बनी शुद्ध जन्मपत्री है। जीवन के महत्त्वपूर्ण पक्षों जैसे विद्या में सफलता, व्यवसाय एवं कैरियर सम्बन्धी प्रश्न, भाग्योदय, विवाह-सन्तानादि, पारिवारिक सुख, विदेश गमन योग इत्यादि प्रश्नों के उत्तर जन्मपत्री एवं ग्रहों के आधार पर अनुशीलन करके भेजे जाते हैं। यदि ग्रहों सम्बन्धी कोई विघ्न बाधाएं हों, तो अनिष्ट ग्रहों के उपाय भी शास्त्रोक्त विधि पर आधारित बतलाए जाते हैं।

मध्यम जन्मपत्री–संक्षिप्त रूप से अपना भविष्य जानने के लिए जन्म तारीख, जन्म समय, जन्म स्थान, पिता का नाम, दादा का नाम, गोत्र आदि लिखें। जिसकी फीस 801/- रु. होगी। विदेश में उत्पन्न जातक की जन्मपत्री के लिए 1600/- रु.

वृहद् जन्मपत्री– आपके जीवन के महत्त्वपूर्ण पक्ष जैसे–नौकरी, व्यवसाय, शिक्षा, विवाहादि के सम्बन्ध में विशेष रूप से विवरण तथा हस्तलिखित उपाये दिए जाते हैं। बड़ी हस्तलिखित जन्मपत्री बनवाने के लिए जन्म समय, जन्म स्थान, जन्म तारीख, गोत्र, प्रसिद्ध नाम, पिता तथा माता का नाम, दादा का नाम, वर्तमान व्यवसाय आदि लिख भेजें। **वृहद् जन्मपत्री की फीस 1600/- रु. होगी।** विदेश में उत्पन्न जातक के लिए फीस 2500/- रु. अथवा 31 पौंड होगी। डाक व्यय अलग। वृहद् सप्तवर्गी (40 पृष्ठ) जन्मपत्री की फीस 2200/- रु. होगी जिसमें कैरियर सम्बंधी विशेष मार्गदर्शन एवं विशिष्ट उपायों का विवरण होगा।

कम्प्यूटर (Computerized) शुद्ध / वैज्ञानिक जन्मपत्री– लेटैस्ट प्रामाणिक सौफ्टवेयर से तैयार कम्प्यूटर जन्मपत्री फलादेश एवं हस्तलिखित उपायों सहित 1100/- रु.

वर्षफल–[illegible] वर्ष कैसा रहेगा? इसके लिए जन्म कुण्डली की फोटो कापी अवश्य साथ भेजें। यदि जन्मपत्री नहीं है, तो जन्म समय, तारीख, सन् ई०, व्यवसाय अंग्रेज़ी तारीख, स्थान तथा अपनी पारिवारिक व कारोबारी समस्या स्पष्ट लिखते हुए मनपसन्द फूल का नाम लिखें। फलादेश के लिए फीस 750/-रुपए अग्रिम भेजनी होगी। कृपया पूर्ण राशि अग्रिम भेजें। विदेश के लिए 21 पौंड होगी। डाक व्यय अलग।

वायदा एवं शेयर व्यापारियों को विशेष सूचना

वायदा व हाज़िर व्यापारियों के लिए रुई, सोना, चाँदी, कापर, बिनौले, खल, सरसों, गुड़, चने आदि के लिए दैनिक चाँस की एडवांस (Advance) रूप में अर्थात् आने वाले महीने की खास मासिक रिपोर्ट तैयार की जाती है। **एक मास की प्रति (एक) जिन्स की फीस 751/-रु. होगी।** जोकि मनीआर्डर या ड्राफ्ट आने पर लिखित रूप में एक महीने की एडवांस रिपोर्ट भेजी जाएगी।

जो सज्जन/व्यापारी प्रतिदिन रिपोर्ट के अतिरिक्त फोन पर भी बातचीत कर किसी जिन्स या शेयर बाज़ार का रूख जानना चाहते हैं, उनके लिए फीस 2500/-रु. मासिक होगी। फीस (Advance) आने पर ही आगामी मास की रिपोर्ट भेजी जाएगी।

शेयर-बाज़ार–शेयर बाजार के उतार-चढ़ाव तथा प्रमुख शेयरों में तेज़ी के चाँस के लिए शेयर बाजार की दैनिक अर्थात् एडवांस मासिक रिपोर्ट की फीस 751/-रु.। विस्तृत विज्ञापन **'व्यापारिक वस्तुओं व शेयरों में मन्दा-तेजी'** लेख के प्रारम्भ में देखें। प्रतिदिन फोन पर रुख जानने के लिए फीस 2500/-रु. मासिक होगी।

नोट : गुरुवार और रविवार को अवकाश रहता है। अतः दूर से आने वाले सज्जन फोन द्वारा पहले सम्पर्क करके समय निश्चित कर लें।

M.O./ ड्राफ्ट भेजने के लिए पता : पं. विवेक शर्मा (गणितकर्त्ता) सुपुत्र स्व. पं. पन्ना लाल ज्योतिषी
पंचांगदिवाकर ज्योतिष कार्यालय (पं. देवी दयालु ज्योतिषी एण्ड सन्ज़), चौंक अड्डा होशियारपुर, जालन्धर (पंजाब)-पिन 144008, फोन-0181-2457959

पण्डित देवी दयालु ज्योतिष संस्थान द्वारा ज्योतिषियों एवं ज्योतिष में रूचि रखने वालों के लिए आवश्यक संग्रहणीय ग्रन्थ

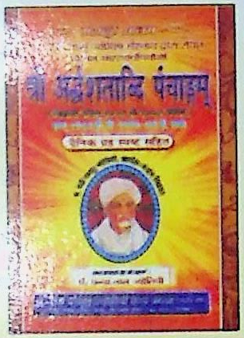

पं. देवीदयालु ज्योतिष संस्थान द्वारा प्रकाशित पुरातन पंचांगों (संवत् २००१ से [illegible] प्रामाणिक संग्रह ग्रन्थ है। इसमें तिथि, नक्षत्र, योग आदि घड़ी-पलों के साथ-साथ सभी ग्रहों के राशि-परिवर्तनों का विवरण अलग-से घण्टा-मिनटों में दिया गया है। इसके अतिरिक्त प्रसिद्ध नगरों के अक्षांश-रेखांश, विश्व के सभी [illegible] जानने की मध्यम सूर्यादयास्त [illegible] उपयोगी विषयों का समावेश किया गया है।

अर्द्धशताब्दि पंचांग (दैनिक ग्रह स्पष्ट सहित)

वि. संवत् २००१ से २०५० तक
(अर्थात् सन् 1944 से 1993-94 ई. तक) मूल्य 900/- रु.

दशवर्षीय पंचांग (दैनिक ग्रहस्पष्ट सहित)

वि. संवत् २०५१ से २०६० तक
(अर्थात् सन् 1994 से 2003-04 ई. तक) मूल्य 250/- रु.

दशवर्षीय पंचांग (दैनिक ग्रह स्पष्ट सहित)

वि. संवत् २०६१ से २०७० तक
(अर्थात् सन् 2004 से 2013-14 ई. तक) मूल्य 400/- रु.

अनिष्ट ग्रहों के चमत्कारी उपाय व टोटके

अनिष्ट ग्रहों के शास्त्र सम्मत उपायों तथा लाल किताब सम्बंधी विशेष उपायों व टोटकों का विस्तृत वर्णन। सर्वोपयोगी पुस्तक मूल्य 200/- रु.

नोट– 200/- ₹ एडवांस मनीआर्डर द्वारा भेजना आवश्यक है। शेष की वी. पी. कर दी जाएगी। (डाक व्यय लगभग 50/-₹ अलग) इसलिए आज ही घर बैठे वी. पी. द्वारा मंगवाकर लाभान्वित हों।

पं देवी दयालु ज्योतिषी एण्ड सन्ज़ की अनुपम प्रस्तुति

'देवीदयालु कालदर्शक शुद्ध पंचांग' (बहुरंगी)

एवं 'दिवाकर' शुद्ध कालदर्शक पंचांग (दो रंगी)

इस कालदर्शक कैलेण्डर में मुख्य अंग्रेज़ी तारीख के अतिरिक्त दैनिक तिथि ◆देशी प्रविष्टे ◆पूर्णिमा, अमावस, एकादशी, संक्रांति तथा सभी व्रत, गुरुपर्व, त्यौहार, छुट्टियां इत्यादि की प्रामाणिक जानकारी ◆तिथि-नक्षत्र-योगों का समाप्ति काल ◆जम्मू-दिल्ली-चण्डीगढ़-मुम्बई के दैनिक सूर्योदयास्त ◆ग्रह-संचार एवं ग्रहों के उदय-अस्त ◆गण्डमूल एवं पंचक विचार ◆विवाह मुहूर्त्त ◆मुण्डन, गृह-प्रवेश, गृहारम्भ (नींव) मुहूर्त्त, व्यवसाय शुरु करने के लिए मुहूर्त्त ◆सर्वार्थ सिद्धि योग, अमृतसिद्धि योग ◆द्वि एवं त्रिपुष्कर योग आदि ◆राशिफन ◆दूध-अखबार हिसाब का कोष्टक ◆देवी-देवताओं के बहुरंगी चित्र, ◆सूर्य-चन्द्र ग्रहण विवरण ◆व्रत, उपायों से सम्बन्धित संक्षिप्त जानकारी आदि अनेक उपयोगी सामग्री व विषयों से सुसज्जित है। **मूल्य-40 ₹**

◆बढ़िया सफेद कागज़ पर छपा ◆ बहुरंगी पृष्ठ ◆ साइज-28×44 से.मी.

आज ही अपने स्थानीय बुकसेलर से मांग करें।

श्री दुर्गा सप्तशती सम्पूर्ण (अब हिन्दी भाषा में)

श्री दुर्गा सप्तशती मात्र धर्म-ग्रंथ नहीं, अपितु कल्याणकारी सिद्धग्रंथ है। यह सप्तशती हमारी पूर्वत: छपी संस्कृत-हिन्दी (भा. टी.) का संशोधित हिन्दी संस्करण है। इसमें श्री दुर्गा पाठ के (१३ अध्यायों की) **संकल्प विधि** (जो कि नवरात्र-दुर्गा पाठ में आवश्यक होती है), सप्तश्लोकी दुर्गा, देवी कवच, नव दुर्गा महिमा, देवी सूक्त, कुजिंका स्तोत्र, सिद्ध मन्त्रों व स्तोत्रों सहित सरल हिन्दी भाषा में प्रस्तुत की गई है। **मूल्य-100 ₹**

मंगवाने का पता :- **जनरल बुक डिपो (पब्लिशर्ज़)**
चौंक अड्डा होशियारपुर, जालन्धर (पिन 144008) (पंजाब)
फोन : 0181-2457959

यह पञ्चा[illegible]र्नमेंट आफ इण्डिया से रजिस्टर्ड हो चुका है अतः कोई महाशय इसके किसी [illegible] की नकल करने का साहस न करें। रजिस्टर्ड नं० [illegible]८४५

॥ ॐ ॥

श्रीबघाटमहीमहेन्द्र "धर्ममार्तण्ड"

पँवारकुलभूषण श्रीमद्राजाधिराज
श्री१०५ दुर्गासिंहजी बहादुर C.I.E.
सोलन

हृदन्तरज्ञानतमोवितान-निवारणं पण्डितमण्डलीडयम्।
त्रिकालदर्शि प्रसरन्मयूखं 'मार्तण्डपञ्चांग' मिदं चकास्तु॥

सार्वदेशिक सर्वोत्तम सर्वाङ्गशुद्ध पञ्चाङ्ग

श्रीगणेशाय नमः

मार्तण्ड के उदय से जगमग हुआ आकाश।
क्या तारा क्या चन्द्रमा सबका छुपे प्रकाश॥

श्रीलक्ष्म्यै नमः

राजा चन्द्रः

मन्त्री चन्द्रः

बघाटमहीमहेन्द्र धर्ममार्तण्ड श्री १०५ मद्दुर्गासिंहवर्मभिः संरक्षितम्

रूपगढ़ीया (रूपड़) क्षवृत्तीयं दृग्गणितैक्यविषयै।

1953–54

अलंकृतम्, धर्मशास्त्रसम्मतं

भारत के विख्यात पञ्चाङ्गकर्ता
एवं ग्रन्थकार

दैवज्ञरत्नराजज्योतिषी
श्रीपं०मुकुन्दवल्लभ मिश्र ज्योतिषाचार्य
कुराली (पंजाब)

BAGHAT श्रीमार्तण्डपञ्चाङ्गम् PANCHANG

श्रीविक्रमार्कीय सं० २०१०, शके १८७५, सन् १९५३–५४ ई०, जयहिन्द सं० ६, (१५ अगस्त से ७)

श्रीजयपुरमहाराजाश्रितगुरुवर्य श्री ६ पूज्यपाद कै० वा० गोविन्द सदाशिव आपटे एम. ए. बी. एस. सी. गणकचक्रचूडामणीत्याद्युपाधिधारिणाम् एवञ्च सिद्धान्तपञ्चाननपूज्यश्री ६ पं० केदारनाथसाहित्यभूषणज्योतिषयन्त्रालयाध्यक्षाणां शिष्येण श्रीमद्दैवज्ञवर्य पं०रामचन्द्रात्मजेन पञ्चाम्बुदेशान्तर्गतकुरालीनिवासिना बघाटनरेशाश्रित ज्योतिषाचार्येण श्रीमुकुन्दवल्लभशर्मणा विरचितम्। गणितकर्तारौ—साहित्याचार्यश्रीसत्यव्रत-प्रियव्रतशास्त्रिणौ।

बांकीपुर
मोतीलाल बनारसिदास पुस्तक विक्रेता, पो० बक्स ७५, नेपालीखपरा बनारस
किनारी बाजार
देहली